हिन्दी-रत्न-कोष

(हिन्दी-संस्करण)

ब्रजभाषा, अवधी आदि, तथा आधुनिक हिन्दी (खड़ी बोली),
अरबी, फ़ारसी, तुर्की एवं हिंदी-साहित्य में व्यवहृत
संस्कृत, अँग्रेज़ी आदि भाषाओं के शब्दों
का संग्रह, उपसर्गों का विशेष-विवरण,
शब्द बनाने के नियम, अदालती
शब्द तथा आवश्यक
मुहावरों सहित।



शब्द संख्या ४६२६१, मुहावरा सं० १०६३



सम्पादक

दामोदरस्वरूपगुप्त

रचयिता

राजनैतिकभारत, आदर्शस्त्रियाँ आदि

प्रकाशक

विश्व-विद्यालय-परीक्षा-बुकडिपो,

पानदरीबा, इलाहाबाद।

चतुर्थ संस्करण] [मूल्य सजिल्द ४)

प्रस्तावना

भाषा राष्ट्र की जननी है, उसका भूषण है और है उसका गौरव। जिस प्रकार सुयोग्य माता, अपनी संतान को योग्य बनाकर, उन्नति के शिखर तक पहुँचा देती है, उसी प्रकार सत्साहित्यमय-भाषा से देश हरा, भरा और विकसित रहता है। हमारी हिन्दी (हिन्दुस्तानी) राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर आसीन है। इसका साहित्य पूर्ण विकास पर है, और इसका कलेवर अब इतना विशाल हो गया है कि देश के प्रत्येक भाग में यह व्यवहृत की जाने लगी है। नित्यप्रति नये-नये भाव और शब्द-भांडार की वृद्धि से तो इसकी उन्नति में चार चाँद से लग गये हैं। कहना न होगा कि, ऐसी समुन्नत और समृद्धिशील भाषा के लिए या यों कहिए कि इस साहित्य के अगाध सागर को तरने के लिए एक ऐसे कोष रूपी पोत की आवश्यकता है, जो भावों की गहनता और बढ़ते हुए शब्द-भांडार रूपी झंझानिल के संतरण में सहायक हो सके। अस्तु, प्रस्तुत पुस्तक इसी उद्देश्य की पूरक है।

इसका प्रतिपादन कहाँ तक उपयुक्त हुआ है, इसका निर्णय तो पाठक ही करेंगे; किन्तु "गागर में सागर" भरने की भाँति इसे सर्वाङ्ग उपयोगी बनाने की चेष्टा अवश्य की गयी है। प्रचलित पत्र-पत्रिकाओं एवं नवीन साहित्य का अध्ययन करके इसमें हजारों नवीन शब्दों का समावेश किया गया है। उपसर्गों का विशेष विवरण तथा शब्द बनाने के खास-खास नियमों का भी उल्लेख कर दिया है जिससे कि साहित्य में प्रयुक्त होने वाले नवीन शब्दों के समझने में साहाय्य मिले। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन की बोलचाल तथा उर्दू साहित्य में प्रयुक्त होने वाले उर्दू भाषा (अरबी, फ़ारसी) के ऐसे बहुसंख्यक शब्दों और मुहावरों का इसमें संग्रह है, जिससे कि गाँधीजी की योजना के अनुसार यह कोष हिंदुस्तानी की भी पूर्ति करता है।

इस कोष की उपयोगिता के विषय में केवल इतना ही कहना है कि इसका प्रथम संस्करण यू० पी०, सी० पी०, बरार आदि की शिक्षण-संस्थाओं के लिए स्वीकृत किया जा चुका है, द्वितीय और तृतीय संस्करण से ऊँची से ऊँची परीक्षा के परीक्षार्थियों ने लाभ उठाया है। चतुर्थ संस्करण सामने है। आशा है, विद्यार्थिवर्ग इसे पसंद करेगा।

संपादक—

यों तो इस कोष के जितने संस्करण हुए हैं, वे सभी पाठकों को बहुत पसन्द आये हैं, किन्तु इस संस्करण की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं—

नवीन शब्दों और मुहावरों को तो इसमें स्थान दिया ही गया है, उल्लेखनीय बात यह है कि उर्दू और अँग्रेजी के बहुसंख्यक अदालती तथा व्यावहारिक शब्दों के अर्थ शुद्ध हिन्दी में (परिशिष्ट भाग में) दे दिये गये हैं। इस प्रकार यह कोष तीन कोषों—हिन्दी, उर्दू, अँग्रेजी-की आवश्यकता की पूर्त्ति करता है। उर्दू तथा अँग्रेजी जानने वाले इससे अधिक लाभ उठा सकते हैं।

अगस्त १९४९ ई० 111022 प्रकाशक—

उपसर्ग

'उपसर्ग' शब्दों की विशेष निधि है। इनके संयोग से शब्दों के अर्थ में बहुत अन्तर हो जाता है; जैसे प्रहार, आहार, विहार, आदि। अतः इनका ज्ञान भाषाविदों के लिए अत्यावश्यक है। संस्कृत उपसर्गों का विवरण यथास्थल पाद-टिप्पणी में सविस्तार दे दिया गया है; फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए, उनकी सूची यहाँ दी जाती है। उपसर्ग ये हैं:—

"अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत् (उद्) उप, दुर् (दुस्, दुः), नि, निर् (निस्, निः), परा, प्र, परि, प्रति, वि, सम् और सु"

संस्कृत शब्दों में कुछ अव्यय तथा विशेषण भी ऐसे हैं जिनका व्यवहार उपसर्गों की ही भाँति होता है:—

अ-अभाव। जैसे, अधर्म, अनीति, अज्ञान

अधः-भीतर। जैसे, अधःपतन, अधोगति

अंतर-नीचे। जैसे, अंतःकरण।

कु—बुरा। जैसे, कुकर्म, कुप्रभाव।

का—बुरा, कायर। जैसे, कापुरुष।

कदा—बुरा। जैसे, कदाचार।

चिर्—बहुत। जैसे, चिरसंचित।

न—अभाव। जैसे, नपुंसक।

पुरस्-आगे, सामने। जैसे, पुरस्कार, पुरोहित।

पुरा—पहले। जैसे, पुरावृत्त।

पुनर्—फिर। जैसे, पुनर्विवाह।

बहिर्-बाहर। जैसे, बहिर्गत, बहिष्कार।

स-सहित। जैसे, सफल, सगोत्र,

सत्-अच्छा। जैसे, सत्कर्म, सज्जन

सह-साथ। जैसे, सहोदर,

स्व—अपना। जैसे, स्वदेश

हिन्दी तथा उर्दू उपसर्ग

अध—हिं० आधा। जैसे, अधपका।
औ—हिं० निषेध। जैसे, औगुन।
कम—उ० थोड़ा। जैसे, कमज़ोर, कमक़ीमत।
ख़ुश—उ० अच्छा। जैसे, ख़ुशबू, ख़ुशदिल।
ग़ैर—उ० भिन्न। जैसे, ग़ैरवाजिब।
ना—उ० अभाव। जैसे, नालायक़।
नि—हिं० नहीं। जैसे, निडर।
ब—उ० सहित, में, अनुसार। जैसे, बख़ूबी, बइजलास, बदस्तूर।

बद—उ० बुरा। जैसे, बदनाम।
बा—उ० साथ, जैसे, बाज़ाब्ता।
बे—हिं० उ० बिना। जैसे, बेईमानी, बेजड़। [भरसक।
भर—हिं० पूरा, ठीक। जैसे, भरपेट,
ला—(अरबी शब्द) 'अभाव' अर्थमें शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होताहै; जैसे लाइलाज, लाकलाम आदि।
सर-उ० मुख्य, जैसे। सरहद, सरताज।
हर—हिं० उ० प्रत्येक। जैसे, हरसाल हरकाम।

कृदन्त तथा तद्धित

जिस प्रकार उपसर्गों के योग से शब्दों की वृद्धि होती हैं, उसी प्रकार कृदन्त तथा तद्धित भी शब्द-भंडार की वृद्धि करते हैं। अतः पाठकों की जानकारी के लिए संक्षेप में इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला जाता है। कृदन्त के शब्द क्रियाओं से और तद्धित के संज्ञाओं से बनते हैं :—

कृदन्त—(उदाहरण)

१—अन—(सं०) 'करने' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—रमण, दमन, शमन।
२—अनीय (सं०) 'योग्य' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—रमणीय, करणीय।
३—आ—(हि०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—जोड़ना से जोड़ा, फेरना से फेरा। [लिखना से लिखाई।
४—आई—(हिं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—तैरना से तैराई,
५—इया—(हिं०) 'करने' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—जड़ना से जड़िया, धुनना से धुनिया। [घटिया, बढ़ना से बढ़िया।
६—इया—(हिं०) 'विशेषता' के अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—घटना से
७—क—(सं०) 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—गायक, नायक, ग्राहक। [से खपत।
८—त—(हि०) 'भाव' अर्थ में प्रयुक्त होती है; जैसे—बचना से बचत, खपना-

९—त (सं०)—'भूत, अर्थ में प्रत्यय होती है। जैसे—प्रकटित, स्थित, विगत।
१०—तव्य—(सं०) 'योग्य' अर्थ में प्रयुक्त होती है। जैसे—कर्त्तव्य, प्रष्टव्य, पठितव्य।
११—ता—(सं०) 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय होती है। जैसे—कर्त्ता, भर्त्ता, [नेता, द्रष्टा।
१२—ति—(सं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे, कृति धृति, भृति।
१३—य—(सं०) 'योग्य' अर्थ में प्रत्यय होती हैं। जैसे—पेय, गेय,।
१४—लु—(सं०) 'शील' अर्थ में प्रत्यय होती है। जैसे—श्रद्धालु, निद्रालु।
१५—हट—(हिं०) 'भाव' अर्थ स्त्रीलिंग में प्रत्यय होती है। जैसे—घबराहट, चिल्लाहट।

तद्धित (संज्ञाओं से प्रत्यय)

१—अ—(सं०)'विकार' या 'अवयव'। अर्थ में प्रत्यय। जैसे—ओषधि से औषध, मृत्तिका से मार्त्तिक।
२—अ—(सं०) 'करने' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—मक्षिका से माक्षिक (मधु), क्षुद्र से क्षौद्र। पाणिनि से पाणिनीय।
३—अ—(सं०) 'आगत' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—मथुरा से आया हुआ 'माथुर।' कलिंग से 'कालिंग', आकर से 'आकरिक' (सुवर्ण आदि)। समुद्र से 'सामुद्र'।
४—अ—(सं०) 'संतान' वाचक अर्थ में प्रत्यय। जैसे—मनु से मानव, रघु से राघव।
५—इ—(सं०) 'संतान' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—दशरथ से दाशरथि, मरुत् से मारुति।
६—इक—(सं०) 'विशेषण' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—वर्ष से वार्षिक, धर्म से धार्मिक।
७—इमा—(सं०) 'विशेषण शब्दों से 'भाव' में प्रत्यय। जैसे—लाल से लालिमा, काला से कालिमा।
८—एय—(सं०) 'संतान' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—गंगा से गांगेय, कुन्ती से [कौन्तेय।
९—क—(सं०) 'विशेषण' में प्रत्यय। जैसे—काया से कायिक, मनसा से मानसिक।
१०—क—(स०) 'स्वार्थ' में प्रत्यय। जैसे—बाल से बालक।
११—कार—(सं०) 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कुम्भकार, चर्मकार।
१२—गर—(उ०) 'बनाने वाला' या 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कारीगर, कुंदीगर।
१३—ज—(सं०) 'उत्पन्न' होने अर्थ में प्रत्यय। जैसे—काम से कामज।
१४—ज्ञ—(सं०) 'जानने वाला' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—सर्वज्ञ, अल्पज्ञ।
१५—तम—(सं०) 'सब से अधिक' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—श्रेष्ठतम।
१६—तर—(स०) 'अपेक्षाकृत अधिक' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—श्रेष्ठतर।
१७—ता, त्व—(सं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कविता (स्त्री०), कवित्व (पु०)।

हिन्दी तथा उर्दू उपसर्ग

अध—हिं०आधा। जैसे, अधपका।
औ—हिं०निषेध।जैसे,औगुन।
कम—उ० थोड़ा।जैसे, कमज़ोर, कमक़ीमत।
.खुश—उ० अच्छा। जैसे, .खुशबू, .खुशदिल।
ग़ैर—उ० भिन्न।जैसे, ग़ैरवाजिब।
ना—उ० अभाव।जैसे, नालायक़।
नि—हिं० नहीं। जैसे, निडर।
ब—उ० सहित, में, अनुसार। जैसे, बख़ूबी, बइजलास, बदस्तूर।

बद—उ० बुरा। जैसे, बदनाम।
बा—उ० साथ, जैसे, बाज़ाब्ता।
बे—हिं० उ० बिना। जैसे, बेईमानी, बेजड़। [भरसक।
भर—हिं० पूरा,ठीक। जैसे,भरपेट,
ला—(अरबी शब्द)'अभाव' अर्थमें शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होताहै;जैसे लाइलाज, लाकलाम आदि।
सर-उ०मुख्य,जैसे।सरहद,सरताज।
हर—हिं०उ० प्रत्येक। जैसे,हरसाल हरकाम।

कृदन्त तथा तद्धित

जिस प्रकार उपसर्गों के योग से शब्दों की वृद्धि होती हैं, उसी प्रकार कृदन्त तथा तद्धित भी शब्द-भंडार की वृद्धि करते हैं। अतः पाठकों की जानकारी के लिए संक्षेप में इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला जाता है। कृदन्त के शब्द क्रियाओं से और तद्धित के संज्ञाओं से बनते हैं :—

कृदन्त—(उदाहरण)

१—अन—(सं०) 'करने' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—रमण, दमन, शमन।
२—अनीय (सं०) 'योग्य' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—रमणीय, करणीय।
३—आ—(हिं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—जोड़ना से जोडा, फेरना से फेरा। [लिखना से लिखाई।
४—आई—(हिं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—तैरना से तैराई,
५—इया—(हिं०) 'करने' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—जड़ना से जड़िया, धुनना से धुनिया। [घटिया,बढ़ना से बढ़िया।
६—इया—(हिं०) 'विशेषता' के अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—घटना से
७—क—(स०) 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे—गायक, नायक, ग्राहक। [से खपत।
८—त—(हिं०) 'भाव' अर्थ में प्रयुक्त होती है; जैसे—बचना से बचत, खपना-

९—त (सं०)—'भूत, अर्थ में प्रत्यय होती है। जैसे—प्रकटित, स्थित, विगत।

१०—तव्य—(सं०) 'योग्य' अर्थ में प्रयुक्त होती है। जैसे—कर्त्तव्य, प्रष्टव्य, पठितव्य। [नेता, द्रष्टा।

११—ता—(सं०) 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय होती है। जैसे—कर्त्ता, भर्त्ता,

१२—ति—(सं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय होती है; जैसे, कृति धृति, भृति।

१३—य—(सं०) 'योग्य' अर्थ में प्रत्यय होती हैं। जैसे—पेय, गेय,।

१४—लु—(सं०) 'शील' अर्थ में प्रत्यय होती है। जैसे—श्रद्धालु, निद्रालु।

१५—हट—(हि०) 'भाव' अर्थ स्त्रीलिंग में प्रत्यय होती है। जैसे—घबराहट, चिल्लाहट।

तद्धित (संज्ञाओं से प्रत्यय)

१—अ—(सं०)'विकार' या 'अवयव'। अर्थ में प्रत्यय। जैसे—ओषधि से औषध, मृत्तिका से मार्त्तिक।

२—अ—(सं०) 'करने' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—मक्षिका से माक्षिक (मधु), क्षुद्र से क्षौद्र। पाणिनि से पाणिनीय।

३—अ—(सं०) 'आगत' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—मथुरा से आया हुआ 'माथुर।' कलिंग से 'कालिंग', आकर से 'आकरिक' (सुवर्ण आदि)। समुद्र से 'सामुद्र'।

४—अ—(सं०) 'संतान' वाचक अर्थ में प्रत्यय। जैसे—मनु से मानव, रघु से राघव।

५—इ—(सं०) 'संतान' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—दशरथ से दाशरथि, मरुत् से मारुति।

६—इक—(सं०) 'विशेषण' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—वर्ष से वार्षिक, धर्म से धार्मिक।

७—इमा—(सं०) 'विशेषण शब्दों से 'भाव' में प्रत्यय। जैसे—लाल से लालिमा, काला से कालिमा। [कौन्तेय।

८—एय—(सं०) 'संतान' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—गंगा से गांगेय, कुन्ती से-

९—क—(सं०) 'विशेषण' में प्रत्यय। जैसे—काया से कायिक, मनसा से मानसिक।

१०—क—(सं०) 'स्वार्थ' में प्रत्यय। जैसे—बाल से बालक।

११—कार—(सं०) 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कुम्भकार, चर्मकार।

१२—गर—(उ०) 'बनाने वाला' या 'करने वाला' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कारीगर, कुंदीगर।

१३—ज—(सं०) 'उत्पन्न' होने अर्थ में प्रत्यय। जैसे—काम से कामज।

१४—ज्ञ—(सं०) 'जानने वाला' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—सर्वज्ञ, अल्पज्ञ।

१५—तम—(सं०) 'सब से अधिक' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—श्रेष्ठतम।

१६—तर—(सं०) 'अपेक्षाकृत अधिक' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—श्रेष्ठतर।

१७—ता, त्व—(सं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कविता (स्त्री०), कवित्व (पु०)।

१८—दार—(हिं०) 'कर्त्ता' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—कामदार।
१९—धर—(स०) 'कर्त्ता' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—महीधर। [शतधा, बहुधा।
२०—धा—(सं०) 'प्रकार' अर्थ में संख्या वाचक शब्दों से प्रत्यय। जैसे—
२१—प—(सं०) 'पालन' अर्थ में प्रत्यय। जैसे, महीप। [अंगुलीय।
२२—य—(सं०) 'भाव' (होने) अर्थ में प्रत्यय। जैसे ग्रीवा से ग्रैवेय, अंगुली से
२३—य—(सं०) 'भाव' अर्थ में प्रत्यय। जैसे, माधुर्य, पांडित्य, धैर्य।
२४—वंत—(हिं०) 'विशेषण' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—गुणवंत, धनवंत।
२५—वत्—(सं०) 'तरह' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—आत्मवत्।
२६—वान्, मान्—(सं०) 'कर्त्ता' अर्थ में प्रत्यय। जैसे—प्रतापवान्, दीप्तिमान्।
२७—वाल, वाला—(हिं०) 'कर्त्ता' अर्थ में प्रत्यय। जैसे,—प्रयागवाल, प्रयत्न वाला।
२८—शः—(सं०) 'अधिक' या 'प्रकार' अर्थ में प्रत्यय। जैसे क्रमशः, बहुशः।

नोट—प्रायः आकारान्त संस्कृत स्त्रीलिंग के 'आ' को ह्रस्व करके उसके आगे 'या' जोड़ देने से क्रिया विशेषण शब्द बन जाता है। जैसे, उत्तमता से उत्तमतया।

प्रचीन भाषा-संबंधी शुद्धाशुद्ध अक्षरों की तालिका

विकृताक्षर	शुद्धाक्षर	विकृतरूप	शुद्धरूप
अ	आ	अलाप	आलाप
इ	ऐ	रइनि	रैनि
इ	य	सहाइ	सहाय
ई	य	स्थाई	स्थायी
उ	औ	जउबन	यौवन
उ	व	ताउ	ताव
ख	क्ष	जाखिनी	यक्षिणी
ख	ष	जोखिता	योषिता
ग	क	जक्त	जगत्
गन	ग्न	अगन	अग्नि
च्छ	क्ष	विचच्छन	विचक्षण
छ	क्ष	तीछन	तीक्ष्ण
ज	य	जउबन	यौवन
ठ	ष्ट	अठग	अष्टांग
त	त्र	तंतमंत	तंत्रमंत्र
तर	त्र	तंतरी	तंत्री

त्त	त्व	तत्त	तत्व
तु	त्व	तुरा	त्वरा
थ	स्त	थंभन	स्तंभन
द, दु	द्व	दंद दुंद	द्वंद्व
दर	द्र	दरब	द्रव्य
न	ण	कोन	कोण
पर	प्र	परताप	प्रताप
व	व	जोबन	यौवन
ब	व्य	दिब	दिव्य
र	ल	थर	थल
रम	र्म	धरम	धर्म
व	य	पिव	पिय, प्रिय
स	श	प्रकास	प्रकाश

नोट—१—यदि कोष में कोई अपभ्रंश शब्द न मिले तो पाठकों को उसका शुद्ध रूप ही देखना उचित है।

२—प्राचीन भाषा से तात्पर्य, ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि भाषाओं से है।

संकेतांक-सूची

१—शब्द के अन्त में 'पन' जोड़ देने से भाव-अर्थ-वाची शब्द बन जाता है, जैसे अक्खड़ का भाव अक्खड़पन ।

२—अकारांत शब्द के अंत में 'अ' की जगह 'ई' कर देने से भाव अर्थ-वाची शब्द बन जाता है; जैसे अक़्लमन्द से अक़्लमन्दी ।

३—शब्द के अंत में, स्त्रीलिंग में 'ता' और पुंल्लिग में 'त्व' जोड़ देने से भाव-वाची शब्द बन जाता है। जैसे-पुंस से पुंसता (स्त्री०), पुंसत्व (पु०)।

४—अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में आकारान्त होते हैं; जैसे कनिष्ठ से कनिष्ठा । [प्रदायिनी, वनचारी से वनचारिणी।

५—स्त्रीलिंग में 'ई' की जगह 'इनी' (इणी) होती है; जैसे प्रदायी से,

६—अकारान्त या आकारान्त संज्ञा शब्दों के अंतिम स्वर के स्थान में 'ईय' जोड़ देने से 'योग्य, अर्थ में विशेषण शब्द बन जाता है; जैसे अपहरण से अपहरणीय । [अपावनी।

७—अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में ईकारान्त हो जाता है; जैसे अपावन से-

८—अकारान्त शब्द 'कर्त्ता' अर्थ में ईकारान्त होते हैं; और 'वाला'

'रहने वाला' 'करने वाला' आदि अर्थों को प्रकट करते हैं; जैसे,परदेश से परदेशी, अंगूर से अंगूरी।

९—अकर्मक क्रिया के 'ना' के पूर्व व्यंजन के 'अकार' को 'आकार' कर देने से क्रिया सकर्मक हो जाती है; जैसे अड़ना; से अड़ाना। किन्तु सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया होती है;जैसे करना से कराना। [से कर्त्री।

१०—शब्द का अंतिम 'ता' स्त्रीलिंग में 'त्री' होता है, जैसे कर्त्ता-

११—'वाला'अर्थ में'वान्'प्रत्यय होती है;जैसे,प्रकाश'से 'प्रकाशवान्

१२–'करने वाला' अर्थ में 'क' प्रत्यय होती है;जैसे न्याय से 'न्यायक।'

१३—स्त्रीलिंग में 'वान्' का 'वती' और 'मान' का 'मती' होता है; जैसे 'प्रकाशवान्' से प्रकाशवती',दीप्तिमान्' से 'दीप्तिमती'।

१४—स्त्रीलिंग में अंतिम 'अक' का 'इका' हो जाता है; जैसे'पाठक' से 'पाठिका'।

संकेताक्षर-सूची

अं—अँग्रेजी	फा०—फ़ारसी
अ०—अरबी	बहु०—बहुवचन
अक्रि०—अकर्मक क्रिया	यू०—यूनानी
अव्य०—अव्यय	यौ०—यौगिक
उ०—उर्दू	वा०—वाक्य
उप०—उपसर्ग	वि०—विशेषण
उभ०—उभय	विभ०—विभक्ति
क्रि० वि०—क्रियाविशेषण	सं०—संस्कृत
तु०—तुर्की	सक्रि०—सकर्मक-क्रिया
दे०—देखो	सर्व०—सर्वनाम
पु०—पुँल्लिग (संज्ञा)	स्त्री०—स्त्रीलिंग (संज्ञा)
प्रत्य०—प्रत्यय	हिं०—हिन्दी

नोट—कोष में'[' इस चिन्ह के भीतर शब्द का संबंध उसके नीचे वाली पंक्ति से है।

२—'क ष' के संयोग से क्ष, 'त' र' के संयोग से त्र, और 'ज, ञ' के संयोग से ज्ञ बनता है, अतः इन संयुक्ताक्षरों से प्रारंभ होने वाले शब्दों को क, त और ज की सूची में देखना चाहिए।

हिन्दी-रत्न-कोष

—:-०-:—

१—अ

अ—हिन्दी वर्णमाला का पहिला अक्षर है। यह व्यञ्जनपूर्व शब्दों के प्रथम जोडने से निषेध-सूचक अथवा उलटा अर्थ प्रकट करता है; जैसे अस्थायी, अश्लील, आदि। परन्तु स्वरपूर्व शब्दों के प्रथम 'अ' के बदले प्रायः 'अन्' जोड़ा जाता है; जैसे अनध्याय।

अंक—पु० (वि० अङ्क्य) अक्षर। संख्या का चिह्न। निशान। भाग्य। नाटकका अंश। गोद। बार।

अंकक—पु० हिसाब-लेखक।

अंकगणित—पु० संख्याओं का हिसाब, रियाज़ी।

अंकटा—पु० छोटा कंकड़।

अँकड़ा—स्त्री० कटिया, हुक।

अंकन—पु० चिह्न करना। लिखना।

अंकनीय—वि० लेखनीय।

अंकपालिका—स्त्री० धाय, दाई।

अंकपाली—स्त्री० धाय, दाई।

अंकमाल—पु० आलिङ्गन। छोटीमाला।

अंकमालिका—स्त्री० दे० 'अंकमाल'।

अँकरा—पु० धान विशेष।

अँकरोरी, अँकरौरी—स्त्री० ककड़ी।

अँकवार—स्त्री० गोद। भेंट।

अँकवारना—सक्रि० भेंटना।

अँकवारी—स्त्री० गोद।

अँकाई—स्त्री० अंदाज़ा।

अँकाना—सक्रि० अंदाज़ कराना।

अँकाव—पु० जाँचना।

अंकावतार—पु० नाटक में एक अंक के अंत मे दूसरे अंक के अभिनय की सूचना देना। [लिखित।

अंकित—वि० चिह्नित,

अँकुड़ा७—पु० लोहे का हुक। पशुओं के पेट का दर्द।

अंकुर—पु० कल्ला, कोंपल।

अंकुरक—पु० घोंसला।

अँकुरना९—अक्रि० उगना।

अंकुरित—वि० अंकुर निकला हुआ। [काँटा।

अंकुश—पु० हाथी हाँकने का

अंकुशग्रह—पु० महावत।

अँकुसी—स्त्री० कँटिया।

अंकोट—पु० पिस्ता।

अँकोड़ा—पु० बड़ी कँटिया।

अँकोर—पु० गोद। रिश्वत। भेंट। कलेवा।

अँकोरा—स्त्री० दे० 'अँकोर'।

अँकोल—पु० एक पहाड़ी वृक्ष। [योग्य।

अंक्य—पु० मृदंग। वि० लिखने

अँखिया—स्त्री० आँख। नक्काशी करने की क़लम।

अँखुआ—पु० अंकुर, कोंपल।

अंग—पु० शरीर। भाग। भेद। प्रकार। तरफ़। उपाय। पक्ष। सहायक। छः की संख्या।

अंगज*—वि० शरीर से उत्पन्न। पु० पसीना। बाल। कामदेव। मद।

नोट—१—कोष में आये हुए तमाम पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द संज्ञा हैं, अतः शब्दों के आगे 'संज्ञा' लिखने की आवश्यकता नहीं समझी गयी।

२—विशेषण का लिंग विशेष्य के अनुसार होता है।

३*—जन्म लेने अर्थ में 'ज' प्रत्यय होता है, और यह 'जान्त' शब्द विशेषण होता है।

रोग। लड़का। काम, क्रोधादि विकार।
अंगजा—स्त्री० कन्या, पुत्री।
अंगजात—वि० दे० 'अंगज'।
अंगड़-खंगड़—पु० टूटा फूटा-सामान।
अँगड़ाई—स्त्री० देह टूटना।
अँगड़ाना—अक्रि० अँगड़ाई लेना।
अंगण—पु० आँगन, सहन।
अंगत्राण—पु० अँगरखा। कवच। [पुत्र।
अंगद—पु० बाज़ूबन्द। वालि-
अंगदान—पु० युद्ध से भागना।
अंगधारी—पु० प्राणी।
अँगना—पु० आँगन।
अंगना—स्त्री० सुन्दरी, कामिनी। स्त्री।
अँगनाई—स्त्री० आँगन।
अँगनैया—पु० आँगन।
अंगन्यास—पु० मंत्रोच्चारण-सहित अंगस्पर्श।
अंगपाक—पु० रोग विशेष।
अंगभंग—वि० अपाहिज।
अंगभंगी—स्त्री० मुग्ध करने की चेष्टा। हावभाव।
अंगभू—वि० अंग से उत्पन्न। भीतर।
अंगमर्द—पु० हड़फूटन।
अँगरखा—पु० चपकन।
अंगराग—पु० महावर। उबटन। सुगन्धित लेप।
अंगराज—पु० राजा कर्ण।
अँगरी—स्त्री० कवच।
अँगरेज़—पु० इंगलैंडवासी।
अंगवना—सक्रि० सहना।
अंगविकृति—स्त्री० मृगी, मूर्छा आदि रोग।
अंगविक्षेप—पु० मटकना। नृत्य। [विद्या।
अंगविद्या—स्त्री० सामुद्रिक-
अंगशोष—पु० सुखंडी रोग
अंगसंग—पु० संभोग।
अंगसंस्कार—पु० उबटन आदि लगाना। देह सजाना।
अंगसिहरी—स्त्री० कँपकँपी।
अंगहार—पु० नाचना। मटकना।
अंगहीन—वि० बिना अंग का। पु० कामदेव।
अंगांगिभाव—पु० अंग के एक अंश का सम्पूर्ण के साथ सम्बन्ध।
अंगा—पु० अँगरखा।
अंगाकड़ी—स्त्री० बाटी।
अंगार, अंगारा—पु० जलता हुआ कोयला या कंडा।
अंगारक—पु० अंगारा। मंगल ग्रह। भँगरैया।
अंगारकमणि—पु० मूँगा।
अंगारधानिका—स्त्री० अँगीठी। [पेड़।
अंगारपुष्प—पु० हिंगोट का-
अंगारवल्ली—स्त्री० गुंजा।
अंगारशकटी—स्त्री० अंगीठी, बरोसी। [बरोसी।
अंगारिणी—स्त्री० अँगीठी,
अँगारी—स्त्री० ईख के सिरे पर का टुकड़ा।
अंगारी—स्त्री० अँगीठी।
छोटा-अंगारा।
अंगिका—स्त्री० चोली।
अँगिया—स्त्री० स्त्रियों की चोली।
अंगिरस—पु० एक प्राचीन ऋषि। बृहस्पति। कटीला-गोंद, कतीरा।
अंगिरा—पु० दे० 'अंगिरस' बृहस्पति के पिता।
अंगी—पु० प्राणी। प्रधान।
अंगीकार—पु० स्वीकार, ग्रहण।
अंगीकृत—वि० स्वीकृत।
अँगीठी—स्त्री० गोरसी।
अँगुरी—स्त्री० दे० 'उँगली'।
अंगुल—पु० आठ जौ की लम्बाई।
अंगुलित्राण—पु० गोह के चमड़े का बना हुआ दस्ताना। [जोड़।
अंगुलिपर्व—पु० उँगली का-
अंगुलिमुद्रा—स्त्री० मुहर करने की अँगूठी।
अंगुली—स्त्री० उँगली।
अंगुलीयक—पु० छल्ला, अँगूठी।
अंगुश्त—पु० उँगली।
अंगुश्तनुमा—वि० प्रसिद्ध।
अंगुश्तनुमाई—स्त्री० (फ़ा०) किसी की ओर उँगली उठाना।
अंगुश्तरी—स्त्री० अँगूठी।
अंगुश्ताना—पु० उँगली पर की पीतल की टोपी। आरसी।
अंगुष्ठ—पु० अँगूठा।

अँगुसी—स्त्री० हल का फाल।
अँगूठा—पु० तर्जनी के पास की सबसे मोटी उँगली।
अँगूठी—स्त्री० उँगली में पहनने का छल्ला विशेष।
अंगूर—पु० एक फल।
अंगूरी—वि० अंगूर का बना। पु० हलका हरा रंग।
अँगेजना—सक्रि० सहना। स्वीकार करना।
अँगेठा—पु० बड़ी अँगीठी।
अँगेरना—सक्रि० दे० 'अँगेजना'।
अँगोछना—अक्रि० देह पोंछना।
अँगोछा—पु० तौलिया, गमछा। [स्वीकार करना।
अँगोजना—सक्रि० सहना।
अँगोरा—पु० मच्छर।
अंघस—पु० पाप।
अँघिया—स्त्री० अँगिया। आटा छानने की चलनी।
अंघ्रि—पु० पैर, चरण।
अंघ्रनामक—पु० जड़।
अंघ्रिप—पु० वृक्ष।
अँचरा—पु० पल्ला, अंचल।
अंचल—पु० साड़ी का छोर, पल्ला। [करना।
अँचवना—अक्रि० आचमन-
अंचित—वि० पूजित।
अंछर—पु० एक मुख रोग। अक्षर। जादू।
अंज—पु० कमल।
अंजन—पु० सुरमा। लेप। रात्रि। माया। नदी।
अंजनकेश—पु० दीपक।
अंजनशलाका—स्त्री० सुरमा लगाने की सलाई। [हुआ।
अंजनसार—वि० सुरमा लगा
अंजनहारी—स्त्री० आँख के पलक के पास की फुंसी। गुहेरी। भृंगी कीड़ा।
अंजना—स्त्री० हनुमान् जी की माता। बिलनी। सक्रि० आँजना।
अंजनानन्दन—पु० हनुमान्।
अंजनी—स्त्री० हनुमान् जी की माता। गुहेरी, बिलनी।
अंजर-पंजर—पु० देह की ठठरी।
अंजरि, अंजलि, अंजली—स्त्री० दोनों हथेलियों के मिलाने से बना हुआ गड्ढा। [आया हुआ।
अंजलिगत—वि० अंजली में-
अंजलिपुट—पु० अंजली। [हुए।
अंजलिबद्ध—वि० हाथ जोड़े
अंजवाना—सक्रि० सुरमा-लगवाना। [से।
अंजसा—क्रि० वि० शीघ्रता-
अंजही—स्त्री० अनाज की मंडी। [नतीजा।
अंजाम—पु० (फ़ा०) फल,
अंजामकार—क्रि० वि० अंत में। [हुए। पूजित।
अंजित—वि० अंजन लगाए-
अंजीर—पु० एक मेवा।
अंजुमन—स्त्री० (फ़ा०) सभा।
अँजुरी—स्त्री० दे० 'अंजलि'।
अँजोर—पु० उजाला।
अँजोरना—सक्रि० बटोरना। प्रकाशित करना।
अँजोरा—वि० रोशनी वाला।
अँजोरी—स्त्री० प्रकाश, चाँदनी।
अंझा—पु० तातील, नागा।
अँटना—सक्रि० समाना।
अंटा—पु० बड़ी गोली। सूत का लच्छा। [का घर।
अंटाघर—पु० गोली खेलने-
अंटाचित—क्रि० वि० पीठ के बल, सीधा, स्तंभित।
अँटिया—स्त्री० गँठिया। लच्छी। [करना।
अँटियाना—सक्रि० ग़ायब-
अंटी—स्त्री० उँगलियों के बीच की घाई। लच्छी। शरारत। गाँठ।
अंठी—स्त्री० गुठली।
अंड—पु० अंडा। अंडकोश। ब्रह्मांड। मृगनाभि। पिंड।
अंडकटाह—पु० ब्रह्मांड। संसार।
अंडकोश—पु० फोता। ब्रह्मांड।
अंडज—वि० अंडे से उत्पन्न।
अंडबंड—स्त्री० अनाप-शनाप बात।
अंडस—स्त्री० असुविधा।
अंडा—पु० वह गोला जिसमें से पक्षियों के बच्चे निकलते हैं। [रेशमी कपड़ा।
अंडी—स्त्री० एरंड का पेड़।
अँडुआ—पु० बधिया न किया गया पशु। [करना।
अँडुआना—सक्रि० बधिया-
अंडैल—वि० स्त्री० अंडेवाली।
अँडोरना—सक्रि० उँड़ेलना।
अंतःकरण—पु० मन, हृदय।
अंतःपटी—स्त्री० नाटक का पर्दा।

अंतःपुर—पु० ज़नानख़ाना ।
अंतःपुरिक—पु० अंतःपुर का रक्षक ।
अंतःराष्ट्रीय—वि० सब राष्ट्रों से संबंध रखने वाला ।
अंतःशय्या—स्त्री० मृत्यु-शय्या ।
अंतःसंज्ञा—पु० जो प्राणी अपने सुख, दुःख को प्रकट न कर सकें; यथा वृक्ष ।
अंत—पु० आख़ीर । सीमा । नतीजा । भेद । मृत्यु ।
अंतक—पु० यमराज । शिव ।
अंतकारी—पु० नाश करने-वाला ।
अंतकाल—पु० मृत्यु ।
अंतक्रिया—स्त्री० अन्त्येष्टि-कर्म ।
अंतग—वि० निपुण । [दशा ।
अंतगति—स्त्री० अन्तिम-
अंतघाई—पु० अंत में धोखा देने वाला, दग़ाबाज़ ।
अँतड़ी—स्त्री० आँत । [ढकना ।
अंतच्छद—पु० भीतरी-
अंततः—क्रि० वि० आखिरकार ।
अंततोगत्वा—क्रि० वि० आखिरकार ।
अंतपाल—पु० पहरेदार ।
अंतरंग—वि० भीतरी । पु० आत्मीय ।
अंतर*—पु० भेद, फ़र्क़ । फ़ासला । आड़ । बीच । भीतर । अंतःकरण । क्रि० वि० भीतर ।
अंतरपट—पु० परदा । कप-ड़ौटी । छिपाव ।
अंतरशायी—पु० जीवात्मा ।
अंतरस्थ—वि० भीतरी ।
अँतरा—पु० नागा, बीच ।
अंतरा—क्रि० वि० पृथक् । निकट । अतिरिक्त । मध्य ।
अंतरात्मा—पु० जीवात्मा । अन्तःकरण । [पृथक् करना ।
अँतराना—सक्रि० भीतर या-
अंतरापत्या—स्त्री० गर्भिणी ।
अंतराय—पु० बाधा, विघ्न ।
अंतराल—पु० मध्य । मंडल
अंतरिक्ष—पु० आकाश, शून्य-स्थान ।
अंतरित—वि० छिपा हुआ ।
अंतरीप—पु० पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो ।
अंतरीय—पु० धोती । वि० भीतरी ।
अंतरौटा—पु० अस्तर । साड़ी के नीचे पहिनने का कपड़ा ।
अंतर्गत—वि० शामिल ।
अंतर्गति—स्त्री० मन का भाव ।
अंतर्गृही—स्त्री० तीर्थ-स्थान के भीतरी, प्रधान स्थलों की यात्रा ।
अंतर्घट—पु० अंतःकरण ।
अंतर्जानु—वि० हाथ घुटनों के बीच में किये हुए ।
अंतर्ज्ञान—पु० भीतरी ज्ञान ।
अंतर्दशा—स्त्री० फलित-ज्योतिष में एक ग्रह के भीतर दूसरे ग्रह की दशा ।
अंतर्दाह—पु० हृदय की जलन ।
अंतर्दिशा—स्त्री० दो दिशा-ओं के बीच की दिशा—नैऋत्य, वायव्य आदि ।
अंतर्दृष्टि—स्त्री० भीतरी ज्ञान ।
अंतर्द्धान, अंतर्द्धि—पु० लोप । वि० लुप्त । [द्वार ।
अंतर्द्वार—पु० खिड़की । गुप्त-
अंतर्निविष्ट—वि० हृदयस्थ ।
अंतर्पट—पु० परदा । आड़ ।
अंतर्बोध—पु० आत्मज्ञान ।
अंतर्भाव—पु० आंतरिक-इच्छा । [मनन ।
अंतर्भावना—स्त्री० ध्यान ।
अंतर्भूत—वि० अंतर्गत । शामिल ।
अंतर्मना—वि० उदास ।
अंतर्मल—पु० हृदय का दोष ।
अंतर्मुख—वि० भीतर की ओर मुख वाला ।
अंतर्यामी—पु० ईश्वर ।
अंतर्लापिका—स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसी के अक्षरों में हो ।
अंतर्लीन—वि० भीतर छिपा-हुआ । विलीन ।
अंतर्वती, अंतरवत्नी—स्त्री० गर्भवती स्त्री ।
अंतर्वर्ण—पु० शूद्र ।
अंतर्वाणि—पु० शास्त्रज्ञ ।
अंतर्वृत्ति—स्त्री० हृदय का झुकाव ।
अंतर्वेद—पु० ब्रह्मावर्त,

दोआबा। [रक्षक।
अंतर्वंशक—पु० अन्तःपुर-
अंतर्हित—वि० गुप्त, अदृश्य।
अंतश्छद—दे० 'अन्तच्छद'।
अंतस—पु० अन्तःकरण।
अंतसद—पु० शिष्य।
अंतस्तल—पु० हृदय।
अंतस्ताप—पु० मानसिक-
दुःख। [र, ल, व, वर्ण।
अंतस्थ—वि० भीतरी। य,
अंतस्सलिला—वि० स्त्री०
गुप्तजल प्रवाह वाली नदी।
अंताराष्ट्रीय—वि०सब राष्ट्रों
से संबंध रखने वाला।
अंतावली—स्त्री० आँतों का
समूह।
अंतावशायी—पु० गाँव की
सीमा पर रहने वाला।
अंतावसायी ५—पु० नाई,
नाऊ।
अंतिक—वि० निकट।
अंतिकतम—पु०अतिनिकट।
अंतिका—स्त्री० बड़ी बहिन।
चूल्ही।
अंतिम—वि० अन्त का।
अंतिमयात्रा—स्त्री०आखिरी-
सफर। मृत्यु।
अंतेवासी—पु० शिष्य।
चांडाल।
अंत्य—वि० अन्त का।
अंत्यकर्म—पु० अंत्येष्टिक्रिया
अंत्यज—पु० शूद्र।
अंत्या—स्त्री० चांडाली।
अंत्याक्षर—पु० पद के अंत
में आने वाला अक्षर।
अंत्याक्षरी—स्त्री० कथित-
पद्य के अन्तिम अक्षर से
आरम्भ होने वाला दूसरा
पद्य पढ़ना। [तुक।
अंत्यानुप्रास—पु० तुकान्त,
अंत्येष्टि—पु० मृतककर्म।
अंत्र—पु० आँत।
अंत्री—स्त्री० अंतड़ी।
अंथऊ—पु० जैनियों का
संध्या के समय का भोजन।
अंदर—क्रि० वि० भीतर।
अँदरसा—पु० एक मिठाई।
अंदरूनी—वि० भीतरी।
अंदलीब—स्त्री० (अ०) बुल-
बुल।
अंदाज़, अंदाज़ा—पु० अनु-
मान, अटकल। [से
अंदाज़न्—क्रि० वि०अंदाज
अंदु, अंदुक—पु० पाजेब।
अंदुआ—पु० हाथियों के पैर
में डालनेका लकड़ीका यंत्र।
अंदेशा—वि० चिंता करने
वाला।
अंदेशा—पु०सन्देह, चिंता।
अंदोर—पु० हलचल, शोर।
अंदोह—पु० शोक, दुःख।
अंदोहगीन—वि० (फ़ा०)
दुःखी।
अंध—वि० नेत्रहीन। पु०
जल। उल्लू। चमगादड़।
अंधक—पु० अंधा व्यक्ति।
अंधकरिपु—पु०शिव। सूर्य।
चंद्र।
अंधकार—पु०अँधेरा। [कुआँ।
अंधकूप—पु० अँधेरा। सूखा-
अंधखोपड़ी—स्त्री० मूर्ख।
अंधड़—पु० तूफ़ान।
अंधतमस—पु०महाअंधकार।
अंधधुंध—पु० अन्याय।
अँधेरा।
अंधपरंपरा—पु०बिना समझे
पुरानी चाल का अनुसरण।
अँधबाई—स्त्री० आँधी।
अँधरा—पु० अंधा।
अंधविश्वास—पु० बिना
विचारे किसी बात का
विश्वास करना।
अंधस—पु० भात।
अंधा—वि०नेत्रहीन। मूर्ख।
अंधाधुंध—पु० अंधेर।
अँधारी—स्त्री० आँधी।
अँधियारा—पु० अँधेरा।
अंधिसंधि—स्त्री० छेद। माँ
वा गढा।
अंधु—पु० कुआँ।
अंधेर—पु० अन्याय।
अंधेरखाता—पु० कुप्रबन्ध।
अँधेरा ७—पु० अंधकार।
अँधेरी—स्त्री० अंधकार।
घोड़े या बैलों के आँख पर
डालने का परदा।
अँधौटी—स्त्री०बैल या घोड़े
की आँख का परदा।
अंध्यार ७—पु० अंधकार।
अंध्र—पु० शिकारी। एक
प्रांत।
अंब—स्त्री० माता। आम।
अंबक—पु० आँख। पिता।
ताँबा। [मेघ।
अंबर—पु० वस्त्र। आकाश।
अंबरडंबर—पु० सूर्यास्त के
समय की लाली।
अंबरबेलि—स्त्री०अमरबेल।

अँबराई—स्त्री० आम का बगीचा। [सूर्यवंशी राजा।
अंबरीष—पु० अयोध्या का—
अंबरौक—पु० देवता।
अंबल—पु० खट्टी वस्तु।
अंबष्ठ—पु० (स्त्री० अंबष्ठा) महावत। एक जाति। ब्राह्मण पति और वैश्य पत्नी से उत्पन्न व्यक्ति।
अंबष्ठ—स्त्री० जूही। पेठा। अम्जोना या चूक।
अंबा—स्त्री० माता। पार्वती, दुर्गा। काशिराज की बड़ी लड़की। आम।
अंबापोली—पु० अमावट।
अंबार—पु० ढेर, राशि।
अंबारख़ाना—पु० भंडार।
अंबारी—स्त्री० हथी का हौदा।
अंबालिका—स्त्री० माता। काशिराज की छोटी लड़की।
अंबिका—स्त्री० दे० 'अंबा,' काशिराज की मध्यमा-लड़की। पार्वती।
अंबिकेय—पु० अंबिका-पुत्र। गणेश। कार्त्तिकेय। धृतराष्ट्र
अँबिया—स्त्री० बहुत छोटा-आम।
अंबिरथा—वि० वृथा।
अंबु—पु० जल।
अंबुकंटक—पु० मगर।
अंबुकण—पु० फुहारा। ओस।
अंबुज—पु० कमल। बेंत। बज्र। ब्रह्मा। शंख।
अंबुद—पु० बादल।
अंबुधर—पु० बादल।
अंबुधि—पु० समुद्र।
अंबुनिधि—पु० समुद्र।
अंबुप, अंबुपति—पु०समुद्र। वरुण।
अंबुभृत—पु०बादल। समुद्र।
अंबुराशि—पु० समुद्र।
अंबुरुह—पु० कमल।
अंबुवा—पु० आम।
अंबुवाह—पु० बादल।
अंबुशायी—पु० विष्णु।
अंबुसरण—पु० सोता।
अंबूकृत—पु० थूक सहित-बोलना।
अंबोह—पु० जमघट।
अंभ—पु० पानी। पितर-लोक। देव।
अंभसार—पु० मोती।
अंभोज—पु०कमल। मोती। चन्द्रमा।
अंभोधर—पु० बादल, मेघ।
अंभोनिधि—पु० समुद्र।
अंभोराशि—पु० समुद्र।
अंभोरुह—पु० कमल।
अंमारी—दे० 'अंबारी'।
अंश—पु० कला। भाग। कंधा। परिधि का ३६० वाँ भाग।
अंशक—पु० भाग। हिस्सेदार वि० बाँटने वाला।
अंशपत्र—पु०शराकतनामा।
अंशसुता—स्त्री० यमुना।
अंशी—वि० हिस्सेदार।
अंशु—पु०सूत। किरण। तेज।
अंशुक—पु०कपड़ा। डुपट्टा। दसर, रेशमी वस्त्र।
अंशुमती—स्त्री०बिदारीगंध।
अंशुमत्फला—पु० केला।
अंशुमान—पु० सूर्य। अयोध्या का एक राजा।
अंशुमाली—पु० सूर्य।
अंस—पु० कंधा। [पूर्ण।
अँसुवाना—वि० स्त्री० अश्रु-
अंसल—वि० बलवान्।
अँसुवा—पु० आँसू।
अंह, अंहस—पु०पाप। विघ्न।
अंहति—स्त्री० दान।
अंह्रि—पु० चरण, पैर।
अकंटक—वि० निर्विघ्न।
अकंपन—वि० न काँपने वाला।
अइल—पु० छेद, मुँह।
अऊत—वि० पुत्र-विहीन।
अऊलना—सक्रि० तप्त होना, जलना।
अएरना-सक्रि०ग्रहण करना।
अक—पु० पाप। दुःख।
अकउआ—पु० मदार।
अकच-वि० बालों से रहित। पु० केतु। [नंगा।
अकच्छ—वि० व्यभिचारी।
अकड़—स्त्री० ऐंठ। हठ।
अकड़ना—अक्रि० ऐंठना।
अकड़बाई—स्त्री० वातरोग।
अकड़बाज़—वि०शेख़ीबाज।
अकड़ाव—पु०ऐंठन, तनाव।
अकड़ैत—वि० दे० 'अकड़-बाज़'।
अकत—वि०समूचा, पूर्ण।
अकथ, अकथनीय—वि० न कहे जाने योग्य। [योग्य।
अकथ्य—वि० न कहने-

अक़दस—वि०(अ०) पवित्र।
अकधक—पु० आगा-पीछा।
अकनना—सक्रि० सुनना।
अकना—अक्रि० ऊबना।
अकनि—सक्रि० सुनकर।
अकबक—स्त्री०निरर्थकवाक्य। वि० भौचक्का।
अकबकाना—अक्रि० घबराना। चकित होना।
अकबर—वि०(फ़ा०)महान्।
अकबरी—स्त्री०एक मिठाई। लकड़ी की नक्क़ाशी।
अकर—वि० न करने योग्य। खान। बिना महसूल का।
अकरकरा—पु० एक दवा।
अकरखना—सक्रि० खींचना।
अकरण—वि० कारण-रहित पु० ईश्वर।
अकरणि—स्त्री०शाप।[योग्य।
अकरणीय—वि० न करने·
अक़रब—पु० (अ०) बिच्छू।
अक़रबा—पु०(अ०) स्वजन।
अकरा—वि० महँगा। श्रेष्ठ।
अकराथ—वि० फ़िज़ूल।
अकराल—वि० सुन्दर।
अकरास—पु० आलस्य।
अकरासू—वि० स्त्री० गर्भवती
अकरी—स्त्री० हल में लगा लकड़ी का चोंगा।
अकरुण—वि०करुणा-रहित।
अकर्ण—वि० बहरा।
अकर्तृक—पु०बिना कर्त्ता का।
अकर्म—पु० बुरा काम।
अकर्मक—पु० वह क्रिया जिसमें कर्म न हो।[निकम्मा।
अकर्मण्य—वि० आलसी,
अकर्मा—वि० बेकाम।
अकर्मी—पु० पापी।
अकलंक—वि० निष्कलंक। पु० दोष।
अकलंकित—वि० निर्दोष।
अकल—वि० समूचा। निराकार। व्याकुल। स्त्री० अक़्ल।
अकल्पित—वि० प्राकृतिक।
अकवन—पु० मदार।
अकस—पु० द्वेष।
अकसना—सक्रि०वैर करना।
अक़साम—पु० बहु० (अ०) क़िस्म, प्रकार।
अकसी—पु० दुश्मन।
अकसीर—वि० गुणकारी। पु० रसायन। [नक।
अकस्मात्—क्रि० वि० अचा-
अकह—व० दे० 'अकथ्य'।
अकांड—वि० बिना शाखा का। क्रि० वि० अकस्मात्।
अकांडतांडव—पु० व्यर्थ की बकवाद।
अका—वि० मूर्ख।
अकाज न—पु० हर्ज। क्रि० वि० व्यर्थ। [होना।
अकाजना—अक्रि० हानि-
अकाट्य—वि० दृढ़। न काटने योग्य। मज़बूत।
अकाथ—क्रि० वि० वृथा।
अकाम—वि० इच्छाविहीन। जितेन्द्रिय।
अकाय—वि० बिना शरीर वाला, निराकार।
अक़ायद—पु० बहु०(अ०) अक़ीदा। विश्वास।
अकार—पु० 'अ' अक्षर।
अकारण—वि०कारण-रहित। व्यर्थ। क्रि० वि० बिना कारण के।
अकारथ—क्रि०वि० फ़िज़ूल
अकाल—पु० दुर्भिक्ष। घाटा। महँगी। कुसमय।
अकालकुसुम—पु०बे मौसिम की चीज़।
अकालपुरुष—पु० सिक्ख-ग्रंथों में ईश्वर का नाम।
अकालमृत्यु—स्त्री० असामयिक मृत्यु।
अकालिक—वि० बे मौक़े का।
अकाली—पु० नानकपंथी।
अकास—पु० आकाश।
अकासी—स्त्री०चील। ताड़ी।
अकिंचन ३—वि० निर्धन, दरिद्र।
अकिंचित्कर—वि० असमर्थ
अक़िरबा—पु० (अ०) रिश्तेदार।
अकिल्बिष—वि० निर्मल।
अक़ीदत—स्त्री०(अ०) धार्मिक-विश्वास।
अक़ीदा—पु०(अ०) विश्वास
अकीर्त्ति—स्त्री० बदनामी।
अक़ील—वि०(अ०) बुद्धिमान्।
अकुंठ—वि० चोखा, तेज़।
अकुताना—अक्रि० ऊबना।
अकुल—वि०नीच।पु० नीच-कुल।
अकुलाना—अक्रि०घबराना। ऊबना। मग्न होना। [क्षुद्र।
अकुलीन—वि० कमीना।
अकूत—वि० बेअंदाज़।
अकूपार—पु० समुद्र।

अक़ूबत—स्त्री० (अ०) सज़ा।
अक्लहल—वि० असंख्य।
अकृच्छ्र—वि० आसान।
अकृत१—वि० बिना किया हुआ।
अकृतज्ञ—वि० किये हुए उपकार को न मानने वाला। कृतघ्न।
अकृती—वि० निकम्मा।
अकृत्रिम—वि०स्वाभाविक।
अकृष्णकर्मा—पु० पुण्यात्मा
अकेतन—वि० घर-रहित।
अकेला, अकेला-वि०निराला। अद्वितीय।
अकेले—क्रि० वि० सिर्फ़।
अकैया—स्त्री० खुर्जी।
अकोट-वि० करोड़ों। [एक।
अकोतरसौ—वि० एक सौ-
अकोर ७—पु०गोद। भेंट।
अकोरना—सक्रि० तलना।
अकोविद—वि० मूर्ख। पु० ऊख के ऊपर का हिस्सा।
अकोसना—सक्रि०कोसना।
अकौआ—पु० आक।
अक्खड़ १—वि० उजड्ड, असभ्य। [उजड्डपना।
अक्खड़पन—पु० अशिष्टता,
अक्खा—स्त्री० खुर्जी। गोन।
अक्त—वि० गीला।
अक़्द—पु० (अ०) विवाह। वचन। इक़रार।
अक़्दनामा—पु० (अ०) इक़रारनामा। विवाहपत्र।
अक्रता—स्त्री० शिथिलता।
अक्रम—वि० बेसिलसिले। पु० व्यतिक्रम।

अक्रिय—वि० क्रिया-रहित।
अक्रूर३ वि० सरल। पु० श्रीकृष्ण का चाचा।
अक्रौर्य—पु० अक्रूरता।
अक़्ल—स्त्री०बुद्धि। [अक़्ल से।
अक़्लन्—क्रि० वि० (अ०)
अक़्लमंद—वि० बुद्धिमान्।
अक़्लमंदी—स्त्री०बुद्धिमानी।
अक्लिष्ट—वि०सुगम।
अक़्ली—वि० (अ०) बुद्धि-संबंधी। उचित।
अक्ष—पु० [स्त्री० अक्षा] चौसर का पाँसा। तराज़ू की डंडी। आँख। रुद्राक्ष। बहेड़ा। तूतिया। सोलह-माशे की तौल। पहिये की धुरी। आत्मा। सर्प। केन्द्र।
अक्षकूट-पु० आँख कीपुतली।
अक्षक्रीड़ा—स्त्री० चौसर। पाँसे का खेल।
अक्षत—पु०बिना टूटा हुआ-चावल जौ। वि०समूचा।
अक्षतयोनि—स्त्री० कन्या।
अक्षता—वि० स्त्री० वह स्त्री जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो।
अक्षदर्शक—पु० पंच।
अक्षदेवी—पु० जुआरी।
अक्षधूर्त्त—पु० जुआरी।
अक्षपाद—पु०गौतम ऋषि। वि०नैयायिक।
अक्षवध—पु० वह विद्या जिससे पास के लोग कुछ देख नहीं सकते।
अक्षम३—वि० असमर्थ।

अक्षय—वि० अविनाशी।
अक्षयतृतीया—स्त्री० वैशाख शुक्ल तृतीया।
अक्षयनवमी—स्त्री० कार्तिक शुक्ला नवमी।
अक्षयवट—पु० सदा रहने वाला वटवृक्ष। [हो।
अक्षय्य—वि०जिसका क्षय न-
अक्षर—पु० अकारादि वर्ण। आत्मा। ब्रह्म। मोक्ष। धर्म। आकाश। जल। वि० अविनाशी।
अक्षरचण—पु० लेखक।
अक्षरचुंचु—पु० लेखक।
अक्षरविन्यास—पु० लेख, लिपि।
अक्षरशः—क्रि०वि० पूर्णतया
अक्षरेखा—स्त्री० वह लंबायमान रेखा जो वृत्त के केन्द्र से गुज़रे।
अक्षरौटी—स्त्री० वर्णमाला। बरतनी। वे पद्य जो वर्णमाला के क्रम से आरम्भ होते हैं।
अक्षवती—स्त्री० जुआ।
अक्षवाट्—पु० जुआ खेलने का स्थान।
अक्षवार—पु० जुआखाना।
अक्षांति—स्त्री० ईर्ष्या।
अक्षांश—पु०भूगोल के ३६० अंशों पर से जाने वाली भूमध्य रेखा के समानांतर रेखा।
अक्षाग्रकीलक—पु० कुलाबा
अक्षि—स्त्री० आँख, नेत्र।
अक्षिकूटक—पु० हाथी के

नेत्रों की गोलाई।
अक्षिगत—वि० वैर करने-योग्य। [घुमाना।
अक्षिविभ्रम—पु० आँख-
अक्षीव—वि० धीर। शान्त। पु० समुद्र का नमक।
अक्षुण्ण—वि० बिना टूटा हुआ।
अक्षोट—पु० पहाड़ी अखरोट।
अक्षोभ—पु० शांति। वि० शांत। निडर।
अक्षोर—पु० अखरोट।
अक्षौहिणी—स्त्री० वह सेना जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और २१,८७० हाथी हों।
अक्स—पु० (अ०) छाया। तसवीर। [बहुधा।
अक्सर—क्रि० वि० (अ०)
अखंग—वि० अविनाशी।
अखंड—वि० संपूर्ण। खंड-रहित।
अखंडनीय—वि० जिसका टुकड़ा न हो सके। युक्ति-युक्त। [सम्पूर्ण।
अखंडल—वि० अखंड।
अखंडित—वि० खंड-रहित। समूचा। निर्विघ्न।
अख़गर—पु० (फ़ा०) चिन-गारी।
अखज—वि० अखाद्य।
अखड़ैत—वि० बलवान्।
अख़ना—स्त्री०(अ०)शोरवा।
अख़बार—पु० समाचारपत्र।
अख़बारनवीस—पु० संपादक
अखर—पु० अक्षर।
अखरना—सक्रि०बुरा लगना।
अखरा—वि० बनावटी।
अखरावट, अखरावटी—स्त्री० दे० 'अक्षरौटी'।
अख़रोट—पु० एक फल।
अखर्व—वि० बड़ा। [चार।
अख़लाक़—पु० (अ०) शिष्टा-
अख़वान—पु० बहु० (अ०) भाई।
अखाड़ा—पु० कुश्ती लड़ने की जगह। मंडली।
अखात—पु० झील। खाड़ी।
अखाद्य—वि० न खाने योग्य।
अखानी—स्त्री० टेढ़ी लकड़ी या छुरी।
अखिल—वि० संपूर्ण, अखंड
अखीन—वि० जो क्षीण न हो।
अख़ीर—पु० अंत।
अखुट—वि० बहुत। अखंड।
अखैबर—पु० अक्षयवट।
अखोर—वि०अच्छी प्रकृति का।
अखोह—पु० असमतल भूमि।
अखौट, अखौटा—पु० चक्की के बीच की खूँटी।
अख़्तर—पु० (अ०) तारा।
अख़्तियार—पु० अधिकार।
अगंड—पु०कर,पद विहीन। रुंड।
अग—वि० स्थावर। पु० पहाड़। पेड़। सर्प।
अगज—वि०पर्वत से उत्पन्न। पु० हाथी। शिलाजात।
अगटना—अक्रि०इकट्ठा होना
अगड़—स्त्री० अकड़।
अगड़धत्ता—वि० लम्बा-तड़ंगा, ऊँचा। श्रेष्ठ।
अगण—पु० जगण, रगण, सगण, तगण—ये छन्द के आदि में अशुभ माने जाते हैं।
अगणनीय—वि०न गिनने-योग्य। असंख्य।
अगणित—वि० असंख्य।
अगण्य—वि० सामान्य। तुच्छ। असंख्य।
अगत, अगति—स्त्री० दुर्दशा, नरक। स्थिरता।
अगतिक—वि० अशरण।
अगती—वि०पापी। पेशगी। क्रि० वि० पहले से।
अगत्या—क्रि० वि० अन्त में। सहसा।
अगदंकार—पु० वैद्य।
अगद—पु० औषध। वि० स्वस्थ।
अगन—स्त्री०अग्नि [अगणित।
अगनी—स्त्री० अग्नि। वि०
अगनू—स्त्री० आग्नेय-कोण।
अगनेउ—पु० दे० 'अगनू'।
अगम—वि० अथाह। जहाँ कोई न जा सके।
अगमन—क्रि० वि० आगे।
अगमानी—पु०अगुआ। सर-दार। स्त्री० अगवानी।
अगम्य×—वि० दे० 'अगम'।
अगर—पु०एक सुगंधित पेड़। अव्य० जो।
अगरई—स्त्री० सब्ज़ी रंग।
अगरचे—अव्य० यद्यपि।
अगरना—अक्रि०आगे जाना।
अग़राज़—स्त्री० बहु० (अ०) ग़रज़, मतलब।
अगरी—स्त्री० अर्गल का

अौंड़ा । घास विशेष ।
अगरु—पु० अगर लकड़ी ।
अगल-बगल—क्रि० वि० दोनों ओर ।
अगला—वि० आगे का । दूसरा । पु० पुरखा ।
अगवना—सक्रि०सभालना ।
अगवाई—स्त्री० अगवानी ।
अगवाड़ा—पु० घर के आगे का भाग । [करने वाला ।
अगवान—पु० अगवानी-
अगवानी—स्त्री० पेशवाई । आगे जाकर स्वागत करना।
अगवार—पु० घर के सामने का भाग। अन्न का वह भाग जो हलवाहे आदि के लिये अलग कर दिया जाता है।
अगसारी—क्रि० वि० आगे।
अगस्त्य—पु० समुद्र सोखने वाले एक ऋषि। एक तारा। एक पेड़।
अगस्त्यकूट—पु० दक्षिण का एक पर्वत ।
अगह—वि०अग्राह्य । चंचल ।
अगहन—पु० कार्तिक के बाद का महीना ।
अगहनी—स्त्री० अगहन में काटी जाने वाली फ़सल ।
अगहर—क्रि० वि० पहले ।
अगहुड़—क्रि० वि० आगे ।
अगाउनी—क्रि०वि० आगे ।
अगाऊ—वि० अग्रिम । अगला । पेशगी । क्रि० वि० आगे ही ।
अगाड़ी—क्रि० वि० आगे ।
अगाध—वि० अथाह । दुर्बोध पु० छेद । गड्ढा ।
अगामै—क्रि० वि० आगे ।
अगार—क्रि० वि० आगे ।
अगास—पु० आकाश । दरवाज़े के आगे का चबूतरा ।
अगासी—स्त्री० पगड़ी ।
अगाह—वि०अथाह । बहुत ।
अगिनबोट—पु० स्टीमर ।
अगियाना—अक्रि० जल-उठना ।
अगिया बैताल—पु० विक्रमादित्य का एक बैताल । क्रोधी मनुष्य ।
अगियारी—स्त्री० अग्नि में धूप आदि डालने की क्रिया ।
अगियासन—पु० एक चर्म-रोग । एक काढ़ा ।
अगीठा—पु०आगे का भाग ।
अगीतपछीत—पु०आगे पीछे का भाग ।
अगुआ—पु० नेता । मुखिया
अगुआई—स्त्री० नेतृत्व । अगवानी ।
अगुआना—सक्रि० अगुआ-बनाना । [मूर्ख ।
अगुण—वि० गुणरहित ।
अगुताना—अक्रि० ऊबना ।
अगुमन—क्रि० वि० आगे ।
अगुरु—वि० हलका । पु० अगर वृक्ष । शीशम का वृक्ष । [बढ़ना ।
अगुसरना—अक्रि० आगे-
अगुसारना—सक्रि० आगे बढ़ाना ।
अगूठना—सक्रि० घेरना ।
अगूठा—पु० घेरा ।
अगूढ़—वि० जो छिपा न हो, प्रकट । [आगे ।
अगूता—क्रि० वि० सामने ।
अगेन्द्र—पु० सुमेरुपर्वत ।
अगेह—वि० बेठिकाने का ।
अगोचर—वि० जो इन्द्रियों से न जाना जा सके ।
अगोट—पु० आड़ । आश्रय । वि० अकेला ।
अगोटना—सक्रि० रोकना । अंगीकार करना । अक्रि० रुकना । फँसना ।
अगोता—स्त्री० अगवानी । क्रि० वि० सामने ।
अगोरदार—पु० पहरेदार ।
अगोरना—सक्रि० राह-देखना ।
अगोरा—वि० रखवाला ।
अगोरिया—वि० रखवाला ।
अगौढ़—पु० पेशगी ।
अगौनी—क्रि० वि० आगे । स्त्री० पेशवाई । [ओर ।
अगौहैं—क्रि० वि० आगे की-
अग्नायी—स्त्री० अग्नि की स्त्री । [शक्ति ।
अग्नि—स्त्री० आग । पाचन-
अग्निकण—पु० चिनगारी ।
अग्निकर्म—पु० अग्निहोत्र । शवदाह । [कीड़ा ।
अग्निकीट—पु० अग्नि का-
अग्निकुंड—पु०अग्नि जलाने का गड्ढा ।
अग्निकुमार—पु०कार्तिकेय।
अग्निकोण—पु० पूर्व और दक्षिण का कोना ।

अग्निक्रीडा—स्त्री० आतिशबाज़ी
अग्निगर्भ—पु० सूर्यकांत-मणि। आतिशी शीशा।
अग्निचित्—पु० अग्नि बटोरने वाला।
अग्निचूर्ण—पु० बारूद।
अग्निजिह्व—पु० देवता।
अग्निजिह्वा—स्त्री० आग की लपट।
अग्निज्वाला—स्त्री० आग की लपट। धायपुष्प।
अग्नित्रय—पु० यज्ञ की तीनों प्रकार की अग्नि।
अग्निदाह—पु० जलाना। शवदाह। [को बढ़ाने वाला।
अग्निदीपक—त्रि० जठराग्नि-
अग्निदीपन—पु० पाचन-शक्ति की वृद्धि।
अग्निपरीक्षा—स्त्री० आग में तपाकर परखना।
अग्निबीज—पु० सोना।
अग्निभू—पु० कार्तिकेय।
अग्निमथ—पु० अरणी।
अग्निमणि—पु० आतशी-शीशा। सूर्यकांतमणि।
अग्निमांद्य—पु० अजीर्ण।
अग्निमुख—पु० देवता। प्रेत। ब्राह्मण।
अग्निमुखी—स्त्री० भिलावा।
अग्निवल्लभ—पु० साखू का पेड़ या गोंद।
अग्निशिख—पु० केसर।
अग्निशिखा—स्त्री० आग की लपट। [परीक्षा।
अग्निशुद्धि—स्त्री० अग्नि-
अग्निसंस्कार—पु० जलाना। अग्निस्पर्श करना। दाह-क्रिया।
अग्निहोत्र—पु० हवन।
अग्निहोत्री—पु० हवन-कर्त्ता। [से आग निकले।
अग्न्यस्त्र—पु० वह अस्त्र जिस-
अग्न्युत्पात—पु० आग लगना। आकाश से आग बरसना।
अग्यारी—स्त्री० धूपदान।
अग्र—पु० अगला हिस्सा। क्रि० वि० आगे। वि० प्रथम। ['अग्रगण्य'।
अग्रगणनीय—वि० दे०
अग्रगण्य—वि० प्रधान। श्रेष्ठ।
अग्रगामी—त्रि० आगे जाने वाला। प्रधान। अगुआ।
अग्रज—पु० बड़ा भाई। अगुआ। ब्राह्मण। वि० श्रेष्ठ।
अग्रजन्मा—पु० ब्राह्मण। ब्रह्मा। बड़ा भाई।
अग्रणी—वि० नेता। श्रेष्ठ।
अग्रतः—वि० पहला। सामने।
अग्रतस्सर—वि० अग्रगामी।
अग्रमांस—पु० कलेजा।
अग्रशोची—पु० दूरदर्शी।
अग्रसर—पु० अगुआ। मुखिया।
अग्रहायण—पु० अगहन मास।
अग्रहार—पु० ब्राह्मण को दी गयी माफ़ी भूमि।
अग्राशन—पु० भोजन का देव अंश।
अग्राह्य—वि० त्याज्य। तुच्छ।
अग्रिम—वि० पेशगी। प्रधान।
अग्रिय, अग्रीय—पु० बड़ा भाई। वि० प्रधान। [वाला।
अग्रेसर—वि० आगे चलने-
अग्र्य—पु० दे० 'अग्रिय'।
अघ—पु० पाप। दुःख। अघासुर।
अघट—वि० कठिन। न होने-योग्य। जो कम न हो।
अघटित—त्रि० असंभव। अमिट। बहुत अधिक।
अघमर्षण—पु० सर्व पाप-नाशक एक जाप। [करना।
अघवाना—सक्रि० सन्तुष्ट-
अघाऊ—पु० तृप्ति, संतोष।
अघाना—अक्रि० तृप्त होना, छकना। थकना। [श्रीकृष्ण।
अघारि—पु० पापनाशक।
अघासुर—पु० कंस का सेना-पति अघ दैत्य।
अघी—वि० पापी।
अघोर—वि० बहुत भयंकर। सुहावना। एक सम्प्रदाय।
अघोरनाथ—पु० शिव।
अघोरपंथ—पु० अघोरियों का एक सम्प्रदाय।
अघोरी—पु० [स्त्री० अघोरिन] अघोरपंथी। वि० घृणित।
अघोष—पु० कवर्गादि पाँचों वर्गों का पहला और दूसरा अक्षर और श, ष, स। वि० शब्द-रहित।
अघौघ—पु० पापों का समूह।
अघ्न्या—स्त्री० गाय।
अघ्रानना—सक्रि० सूँघना।
अचडी—स्त्री० साधी गाय।
अचभव—पु० आश्चर्य।
अचभा—पु० आश्चर्य।

अचंभित—वि० विस्मित।
अच—पु० स्वर।
अचक—वि० भरपूर। पु० विस्मय।
अचकन—पु० लंबा अँगरखा।
अचकाँ—क्रि० वि० अचानक।
अचक्का—वि० अनजान।
अचगरा—वि० उत्पाती।
अचगरी—स्त्री० छेड़-छाड़।
अचना—सक्रि० आचमन-करना।
अचपली—स्त्री० अठखेली।
अचभौन—पु० अचभा।
अचर—वि० स्थावर। जड।
अचरज—पु० आश्चर्य।
अचल—वि० चिरस्थायी। ध्रुव। पु० पहाड़।
अचला—स्त्री० पृथ्वी। वि० स्थिर। [शुक्ला सप्तमी।
अचलासप्तमी—स्त्री० माघ-
अचवना—सक्रि० आचमन-करना।
अचवाई—वि० स्वच्छ।
अचवाना—सक्रि० आचमन-करना।
अचाका—क्रि० वि० सहसा।
अचानक—क्रि० वि० अकस्मात्।
अचार—पु० मसालों के संसर्ग में कुछ दिन रक्खे गये फल, आम, नीबू आदि। पु० दे० 'आचार'।
अचारी—पु० आचार-विचार से रहने वाला व्यक्ति। स्त्री० अचार।
अचाहा—वि० इच्छा-रहित।
अचाही—वि० इच्छा-रहित।
अचिंत—वि० बेफ़िक्र।
अचिंतनीय—वि० विचार में न आने योग्य। अज्ञेय
अचिंतित—वि० चिन्ता-रहित।
अचिंत्य—वि० दे० 'अचिंतनीय'। [रूक्ष।
अचिक्कण—वि० प्रेम-रहित,
अचित्—पु० जड़ प्रकृति।
अचिर—क्रि० वि० जल्दी।
अचीता—वि० असंभावित। अधिक।
अचूक—वि० जो न चूके। क्रि० वि० अवश्य।
अचेत—वि० बेसुध। पु० अज्ञान। माया।
अचेतन—वि० संज्ञाहीन। पु० जड़-वस्तु। [पु० बेचैनी।
अचैतन्य—वि० चेतनारहित।
अचैन—वि० व्याकुल।
अचौना—पु० आचमन करने का बर्तन। [आँख।
अच्छ—वि० स्वच्छ। पु०
अच्छभल्ल—पु० भालु
अच्छर—पु० अक्षर। ईश्वर
अच्छरा, अच्छरी—स्त्री० अप्सरा।
अच्छा१—वि० ठीक। सुन्दर। अव्य० स्वीकार-सूचक शब्द।
अच्छाई—स्त्री० उत्तमता।
अच्छात—वि० बहुत।
अच्युत—वि० जो गिरा न हो। पु० विष्णु। कृष्ण।
अच्युताग्रज—पु० बलदेव।
अछक—वि० अतृप्त। भूखा।
अछत—क्रि० वि० रहते हुए। सम्मुख।
अछत्र—वि० राज्यच्युत।
अछन—क्रि० वि० धीरे-धीरे। पु० दीर्घकाल। [रहना।
अछना—अक्रि० मौजूद-
अछप—वि० प्रकट, ज़ाहिर।
अछरा, अछरी—स्त्री० अप्सरा
अछवाई—स्त्री० सफ़ाई।
अछवाना—सक्रि० सँवारना।
अछवानी—स्त्री० प्रसूता स्त्री को सोहर में दी जाने वाली दवाई।
अछाम—वि० मोटा, हृष्टपुष्ट।
अछूत, अछूता—वि० अस्पृष्ट। कोरा। पवित्र। न छूने योग्य। पु० अन्त्यज।
अछेद्य—वि० जिसका छेदन न हो सके, अखंड्य।
अछेव—वि० निर्दोष।
अछेह—क्रि० वि० लगातार। वि० बहुत।
अछोप—वि० नंगा। तुच्छ
अछोह—पु० दे० 'अक्षोभ'।
अछोही—वि० निर्दयी।
अजगम—पु० एक छंद। वि० स्थिर।
अजंभ—पु० मेंढक।
अज—वि० जन्म-रहित। ब्रह्मा। विष्णु। महेश। कामदेव। दशरथ के पिता। बकरा। भेंड़ा। माया।
अज़—अव्य० (फ़ा०) से।
अज़कार—पु० बहु० (अ०) ज़िक्र। [स्वयं।
अज़ख़ुद—क्रि० वि० (फ़ा०)
अजगर—पु० बहुत मोटा-साँप।

अजगरी—स्त्री०बिना परिश्रम की वृत्ति ।
अजगव—पु० शिव-धनुष ।
अजगुत—पु० अयुक्त बात । वि० आश्चर्य-जनक ।
अज़ग़ैब—पु० अदृष्ट-स्थान ।
अज़ग़ैबी—वि० (फ़ा०) गुप्त ।
अज़दहा—पु० अजगर ।
अजन—त्रि० अजन्मा ।
अजनबी—वि० (अ०) अपरिचित ।
अजनास—पु० बहु० (अ०) जिंस, सामान । [अनादि ।
अजन्मा—वि० जन्म-रहित ।
अजन्य—पु० उत्पात ।
अजपा—पु० गड़रिया । एक मंत्र । वि० न जपने योग्य ।
अजब—वि० (अ०) अनोखा ।
अज़ब—पु० (अ०) तलवार ।
अज़बर—क्रि० वि० (फ़ा०) ज़बानी । [प्पन ।
अज़मत—स्त्री० (अ०) बड़-
अज़माना—सक्रि० जाँचना ।
अजमोद—पु० एक दवा ।
अजमादा—स्त्री० अजवायन
अजय—पु०हार । वि०अजेय ।
अजया—स्त्री०भाँग । बकरी ।
अजर—त्रि० बुढ़ापा-रहित । जो न पचे । [टिकाऊ ।
अजरामर—वि० पक्का,
अजराल—वि० बलवान् ।
अज़रूए—क्रि० वि० (फ़ा०) अनुसार ।
अजल—स्त्री० (अ०) मौत ।
अज़ल—पु० (अ०) आदि । उद्गम । आराम ।
अज़ली—वि० (अ०) आदि-का । हमेशा रहने वाला ।
अजवायन—स्त्री०एक मसाले का पौधा या उसके बीज ।
अजस—पु०अपयश ।
अज़सरे-नौ—क्रि० वि० (फ़ा०) नये सिरे से ।
अजसाम—पु० बहु०जिस्म ।
अजस्र—क्रि० वि० सदा, हमेशा ।
अजहत्स्वार्थी—स्त्री० एक लक्षणा, जिसने अपना अर्थ न छोड़ा हो । [अधिक ।
अज़हद—क्रि० वि० (फ़ा०)
अजहुँ—क्रि० वि० अभी तक ।
अजा—वि० स्त्री० जन्म-रहित । स्त्री० शक्ति । दुर्गा । बकरी ।
अजाचक, अजाची—पु० न माँगने वाला ।
अजाजी—स्त्री० सफ़ेदज़ीरा ।
अजाजीव—पु० गडरिया ।
अजात—त्रि० अजन्मा ।
अजातशत्रु—वि०शत्रु-विहीन । पु० राजायुधिष्ठिर । शिव ।
अजान—पु० नादान ।
अज़ान—स्त्री० (अ०) नमाज़-की पुकार । बाँग ।
अज़ाब—पु० (अ०) पीड़ा ।
अजाय—वि० बेजा ।
अजायबख़ाना—पु० अद्भुत-वस्तुसंग्रहालय, म्यूज़ियम ।
अजाया—वि० मरा हुआ ।
अजार—पु० बीमारी ।
अजिऔरा—पु० दादी का घर ।
अजित—वि० जो जीता न गया हो ।
अजितेन्द्रिय—वि० जो इन्द्रियों के वश में हो । [चर्म ।
अजिन—पु०मृग तथा व्याघ्र-
अजिनपत्रा—स्त्री० चमगादड़ी ।
अजिनयोनि—पु० हरिण ।
अजिर—पु० आँगन । वायु । मेंढक । [रहित । सीधा ।
अजिह्म—वि० कुटिलता-
अजिह्मग—पु० बाण ।
अजीगर्त—पु० एक ऋषि ।
अजीतवर्ण—पु० कोढ़ ।
अज़ीज़—वि० (अ०) प्रिय ।
अज़ीज़दारी—स्त्री०रिश्तेदारी ।
अजीत—वि० जो जीता न गया हो । अजेय ।
अजीब—वि०(अ०)विचित्र ।
अज़ीम—वि० (अ०) पूज्य । बहुत बड़ा ।
अज़ीमउश्शान—वि० बहुत-शानदार । [अत्याचार ।
अज़ीयत—स्त्री० (अ०)
अजीव—वि०अचेतन । मृत ।
अजीर्ण—पु० अपच । [बात ।
अजुगुत—पु० युक्ति-विरुद्ध-
अजूबा—वि० अद्भुत ।
अजूरा—त्रि० अलग । पु० मज़दूरी ।
अजूह—पु० युद्ध ।
अजेय—वि०नजीतने योग्य ।
अजोता—पु०चैत्र की पूर्णिमा ।
अजोरना—सक्रि० बटोरना ।
अजौं—क्रि० वि० अब भी । अब तक । [वेश्या ।
अज्जुका—स्त्री० नाचनेवाली-

अज्ञ २—वि० अज्ञानी।
अज्ञात—वि० अविदित।
अज्ञातनामा—वि० अप्रसिद्ध।
अज्ञातयौवना—स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान न हो।
अज्ञातवास—पु० गुप्तनिवास
अज्ञान २—पु० मूर्खता। वि० मूर्ख।
अज्ञानी—वि० मूर्ख।
अज्ञेय—वि० समझ में न आने योग्य।
अज़्म—पु०(अ०)दृढ़ विचार।
अज्यों—क्रि० वि० अब भी। अब तक।
अझोरी—स्त्री० थैली जो कंधे से लटके।
अटंबर—पु० ढेर, राशि।
अट—स्त्री० शर्त, क़ैद।
अटक—स्त्री० अड़चन। संकोच। [उलझना।
अटकना—अक्रि० रुकना,
अटकल—स्त्री० अनुमान।
अटकलपच्चू—पु० अंदाज़, कल्पना।
अटका—स्त्री० रुकावट।
अटकाना—सक्रि० रोकना। फँसाना।
अटकाव—पु०रुकावट।बाधा।
अटखट—वि० गड़बड़।
अटट—वि० मोटा। दृढ़।
अटन—पु० घूमना। काफ़ी होना।
अटना—अक्रि० घूमना।
अटनी—स्त्री० धनुष का कोना।

अटपट ७—वि० कठिन। अंड बंड।
अटपटाना—अक्रि०लड़खड़ाना
अटम्बर—पु० आडम्बर। कुटुम्ब।
अटम—पु० ढेर।
अटल—वि० स्थिर। दृढ़।
अटवाटीखटवाटा—स्त्री० खाट-खटोला।
अटवी—स्त्री०बन, जंगल।
अटहर—पु०राशि। पगड़ी।
अटा—पु० अटारी। ढेर।
अटाउ—पु० शरारत।
अटाट्या—स्त्री०विदेश-भ्रमण।
अटाटूट—वि० बेशुमार।
अटारी—स्त्री० ऊपर का कोठा।
अटाल—पु० बुर्ज।
अटाला—पु०ढेर। सामान।
अटया—स्त्री० झोंपड़ी। लच्छी। [अखंड।
अटूट—वि०मज़बूत। अजेय।
अटक—वि० टेक-रहित।
अटेरन—पु०सूतकीलच्छ बनाने की चर्खी।
अटेरना—सक्रि० अटेरन पर सूत की लच्छी बनाना।
अटोक—वि० बेरोक-टोक।
अट्ट—पु० कोठा, अटारी।
अट्टसट्ट—वि०अनाप शनाप।
अट्टहास—पु०ज़ोर की हँसी।
अट्टा,अट्टालिका—स्त्री०अटारी, ऊपर का कोठा।
अट्टी—स्त्री० लच्छी।
अट्ठा—पु०आठ का समूह।
अट्ठाइस—वि० २८।

अट्ठानबे—वि० ९८।
अट्ठावन—वि० ५८।
अठंग—पु० अष्टांग-योग।
अठकौसल—पु० पंचायत। सलाह।
अठखेली—स्त्री० विनोद। क्रीड़ा। चपलता। चुलबुलाहट।
अठत्तर—वि० ७८।
अठन्नी—स्त्री० आठ आने का सिक्का। [वाली।
अठपहला—वि० आठकोने-
अठपाव—पु० शरारत।
अठलाना—अक्रि० इतराना। खिल्ली करना।
अठवना—अक्रि० जमना।
अठवांसा ७—वि० आठ महीने का।
अठवारा—पु० सप्ताह।
अठाई—वि० उत्पाती।
अठान—पु०न ठानने योग्य-कार्य। बैर। झगड़ा।
अठाना—सक्रि० सताना। ठानना।
अठारह—वि० १८।
अठासी—वि० ८८।
अठिलाना—अक्रि० इतराना।
अठेल—वि० बलवान्।
अठोठ—पु० ढोंग।
अठोतरसौ—वि० १०८।
अठोतरी—स्त्री० १०८ दानों की माला।
अड़ंगा—पु० अड़चन।
अड़—स्त्री० ज़िद।
अड़काना—सक्रि०उलझाना।
अडग—वि०न डिगने वाला।

अड़गोड़ा—पु० पशुओं के गले में बाँधी गयी लकड़ी।
अड़चन—स्त्री० दिक्कत।
अडतल—पु० शरण।
अडतालीस—वि० ४८।
अडतीस—वि० ३८।
अडदार—वि० अड़ियल।
अडना१—अक्रि०हठ करना। देना। [खाना।
अड़पना—सक्रि० डाँटना।
अड़बंगा—वि० बेढंगा।
अड़बंध—पु० कोपीन।
अडसठ—वि० ६८।
अड़हुल—पु० जवा पुष्प।
अडान—स्त्री० पड़ाव।
अड़ाना—दे० 'अड़काना'।
अड़ानी—स्त्री० छाता। बड़ा पंखा। [तिरछा।
अडार—पु० ढेर। वि०
अडिग—वि० जो न डिगे।
अड़ियल—वि०हठी। सुस्त।
अड़ोखंभ—वि० बलवान्।
अडीठ—वि० दे० 'अदृष्ट'।
अड़ूलना—सक्रि० उड़ेलना।
अड़ूसा—पु० एक पौधा।
अडोर—पु० शोरगुल।
अडोल—वि० अटल।
अड़ोसपड़ोस—पु० आसपास
अड्डा—पु० केन्द्र। डेरा।
अढ़उल—पु० अड़हल का फूल।
अढ़तिया—पु० आढ़ती।
अढ़न—स्त्री० मर्यादा।
अढ़वना—सक्रि० आज्ञा-

अढ़ुकना—अक्रि० ठोकर-
अढ़िया—पु० काठ का या पत्थर का बर्त्तन। [पहाड़ा।
अढ़ैया—पु०ढैया। ढैया का-
अणक—वि० अधम।
अणद—पु० आनन्द।
अणि, अणी—स्त्री० नोंक। अनी। कुलाबा। सीमा।
अणिमा—स्त्री० अष्ट सिद्धियों में पहिली तिथि
अणीय—वि० अतिसूक्ष्म।
अणु—पु० कण, ज़र्रा।
अणुभा—स्त्री० बिजली।
अणुवाद—पु० वह सिद्धांत जिसमें जीवात्मा अणु माना गया है।
अणुवादी—पु० नैयायिक।
अणुवीक्षणयंत्र—पु० ख़ुर्दबीन। सूक्ष्मदर्शक-यंत्र।
अतद्रिक—वि०आलस्य-रहित
अतः—क्रि० वि० इसलिए।
अतएव—क्रि०वि०इसीलिए।
अतट—पु० बीहड़ स्थान।
अतथ्य—वि० झूठ।
अतद्गुण—पु० एक काव्यालंकार।
अतन—वि० अशरीरी।
अतर—पु० इत्र।
अतरदान—पु० इत्रदान।
अतरसो—क्रि० वि० परसों के पहले, या बाद का दिन।
अतर्कित—वि० बे सोचा-समझा। [योग्य न हो।
अतर्क्य—वि० जो तर्क के
अतल—पु० पाताल।
अतलस—स्त्री० एक मुलायम रेशमी कपड़ा।
अतलस्पर्शी—वि० अथाह।
अतवान—वि० अधिक।
अतसी—स्त्री० अलसी।
अता—स्त्री० (अ०) बख्शिश।
अताई—वि० चालाक। शैतान। गँवार।
अतालीक़—पु०(अ०) उस्ताद
अति*—एक उपसर्ग। वि० बहुत।
अतिकाय—वि० मोटा।
अतिकाल—पु० विलम्ब।
अतिक्रम—पु० उल्लंघन। क्रमभंग।
अतिक्रमण—पु०हद के बाहर बढ़ जाना। उल्लघन।
अतिक्रांत—हद के बाहर गया हुआ।
अतिगत—वि०बहुत अधिक।
अतिगति—स्त्री०उत्तम गति।
अतिच्छत्रा—स्त्री० सौंफ़।
अतिजव—वि०अति वेगवाला।
अतिथि—पु० मेहमान।
अतिथियज्ञ—पु० अतिथि का आदर-सत्कार।
अतिदेव—पु० बड़ा देवता। विष्णु, शिव।
अतिनिहारी—स्त्री० मन को अत्यन्त हरने वाली सुगन्ध

नोट*—'अति' उपसर्ग प्रकर्ष, उल्लंघन, अत्यंत और पूजन अर्थों में प्रयुक्त होता है। यथा—अत्युत्तम, अतिक्रांत' अतिवृष्टि, अत्याहत।

अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।
अतिनु—पु० वह जल-स्थान जिसमें नाव न चल सके। वि० बड़ा तैराक। [राजपथ।
अतिपंथा—पु० बड़ा मार्ग।
अतिपतन, अतिपात—पु० गड़बड़ी। बाधा।
अतिपथ न—पु० सुन्दर मार्ग।
अतिपर—पु० बड़ा शत्रु।
अतिपातक—पु० क्रमोल्लंघन। भारी पाप।
अतिप्रसिद्ध—पु० प्रकाश। धूप-खिलना। वि० बहुत मशहूर।
अतिबल—वि० प्रबल।
अतिमात्र—वि० अतिशय। बारम्बार। [बेअंदाज़।
अतिमित—वि० अपरिमित।
अतिमुक्त—वि० विषयवासना से रहित। पु० एक लता।
अतिरंजना—स्त्री० अत्युक्ति। किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना।
अतिरथी—पु० महायोद्धा।
अतिरिक्त—क्रि०वि० सिवाय। वि० शेष।
अतिरेक—पु० अधिकता।
अतिरोग—पु० क्षय।
अतिवक्ता—पु० अधिक बोलने वाला, वाक्पटु। [डींग।
अतिवाद—पु० सच्चा बात।
अतिवाहिक—वि० पाताल-निवासी।
अतिविषा—पु० अतीस।
अतिवेल—वि० असीम।
अतिव्याप्ति—स्त्री० न्याय में किसी लक्षण के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।
अतिशक्तिता—स्त्री० महापराक्रम।
अतिशय—वि० बहुत ज़्यादा।
अतिशयोक्ति—स्त्री० एक अलंकार जिसमें बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया जाता है।
अतिशस्त—वि० सुयोग्य। बड़ा। प्रधान। प०लौठा। पु० ज्येष्ठ मास। [सुन्दर।
अतिशोभन—वि० श्रेष्ठ। बहुत-
अतिसंध—पु० प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना।
अतिसंधान—पु० विश्वासघात। धोखा।
अतिसर्जन—पु० अतिदान।
अतिसार—पु० संग्रहणी रोग।
अतिसौरभ—पु० सुगंधित आम।
अतींद्रिय—वि० इन्द्रियों से न जाना हुआ। अप्रत्यक्ष, परोक्ष।
अतीक्ष्ण—वि० कोमल।
अतीत—वि० बीता हुआ। क्रि०वि० परे। पु० सन्यासी।
अतीतना—अ क्रि० बीतना।
अतीव—वि० अत्यन्त।
अतीस—पु० एक पौधा।
अतुराई—स्त्री० शीघ्रता। चंचलता। [होना।
अतुराना—अक्रि० आतुर-
अतुल, अतुलित—वि० अत्यधिक। अनुपम।
अतुलनीय—वि० अपरिमित।
अतुलित—वि० 'अतुल'।
अतुल्य—वि० अनुपम।
अतूथ—वि० अपूर्व।
अतूल—वि० दे० 'अतुल'।
अतृप्त—वि० भूखा या असंतुष्ट।
अतोर—वि० मज़बूत।
अतोल—वि० दे० 'अतुल'।
अत्त, अत्ति—स्त्री० अधिकता
अत्ता—स्त्री० माता। बड़ा-बहिन। सास।
अत्तार—पु० दवा बेचनेवाला
अत्तिका—स्त्री० बड़ी बहिन
अत्नु—पु० सूर्य।
अत्यंत—वि० बहुत अधिक।
अत्यंतकोपन—पु० महाक्रोधी
अत्यंतिक—वि० समीपी। बहुत घूमने वाला।
अत्यंतीन—पु० बारबार चलने वाला।
अत्यम्ल—पु० इमली। वि० बहुत खट्टा।
अत्यय—पु० मौत। नाश। उल्लंघन। दुःख। दोष।
अत्यर्थ—वि० अतिशय।
अत्याचार—पु० ज़्यादती।
अत्याचारी—वि० ज़ालिम।
अत्यावश्यक—वि० बहुत-ज़रूरी।
अत्याहित—पु० महाभीति।
अत्युक्ति—स्त्री० बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करना।
अत्युत्तर—पु० सिद्धांत।
अत्र—क्रि०वि० यहाँ। पु० अस्त्र।
अत्रक—वि० यहाँ का।
अत्रप—वि० बेशर्म।
अत्रभवान्—वि० श्रेष्ठ, पूज्य।

अत्रस्थ—वि० यहाँ का निवासी। [एक ऋषि।
अत्रि—पु० ब्रह्मा के पुत्र।
अथ—अव्य० मंगल तथा आरम्भ का वाची।
अथक—वि० बिना थके हुए। घोर। अश्रान्त।
अथकचा—पु० लपेटन।
अथच—अव्य० और भी।
अथना—अक्रि० अस्त होना।
अथयना—अक्रि०अस्त होना।
अथरी—स्त्री० नाँद, कूँड़ा।
अथर्व—पु० चौथा वेद। वि० बहुत बुड्ढा।
अथर्वनी—पु० कर्मकाण्डी।
अथल—पु० लगान पर जोती-जाने वाली ज़मीन।
अथवना—अक्रि०अस्त होना।
अथवा—अव्य० या, किंवा।
अथाई—स्त्री० चौपाल। बैठक। (सक्रि० थाहलेना।
अथाना—अक्रि० डूबना।
अथावत—वि० डूबा हुआ।
अथाह—वि० बहुत गहरा।
अथोर—वि०बहुत।
अदंक—पु० भय, डर।
अदंड—वि० सज़ा या कर से बरी। [चारी।
अदंडमान—वि० स्वेच्छा-
अदंड्य—वि० दण्ड न पाने-योग्य।
अदंत—वि०बिना दाँत का।
अदग—वि० बेदाग़। [कन्या।
अदत्ता—स्त्री० अविवाहिता-
अदद—पु० (अ०) संख्या।
अदन—पु० भक्षण। स्वर्ग-का बग़ीचा।।
अदना—वि० (अ०) तुच्छ।
अदब—पु०(अ०)शिष्टाचार।
अदबदाकर—क्रि० वि० अवश्य।
अदंभ्र—वि० बहुत।
अदम—पु०(अ०)होना,अभाव।
अदम्य—वि० न होने योग्य। प्रचण्ड। [या गाँठ।
अदरक—पु०एक चरपरी जड़-
अदर्शन—पु०लोप। विनाश।
अदर्शनीय—वि० न देखने-योग्य।
अदल—पु० (अ०) इन्साफ़।
अदल-बदल—पु० हेरफेर।
अदली—वि० न्यायी।
अदवान—स्त्री० पैंताने की रस्सी।
अदहन—पु० गरम पानी (दाल आदि के पकाने का।)
अदांत—वि० उद्दंड। दन्तविहीन।
अदा—वि० चुकता। स्त्री० हावभाव। [होशियार।
अदाई—वि० चालाक,
अदात, अदान—वि०कृपण।
अदाना—वि० कंजूस। मूर्ख।
अदायगी—स्त्री० चुकता-करना।
अदायाँ—वि० प्रतिकूल।
अदालतन—स्त्री० न्यायालय, कचहरी।
अदावतन—स्त्री० शत्रुता।
अदाह—स्त्री० हावभाव।
अदित—पु० रविवार। सूर्य।
अदिति—स्त्री० देवताओं की माता। पृथ्वी। प्रकृति।
अदितिनंदन—पु० देवता।
अदितिसुत—पु० देवता। सूर्य।
अदिव्य—वि० लौकिक, साधारण।
अदिष्ट—पु० विपत्ति। भाग्य।
अदिष्ट्री५—वि०अविचारी।
अदीठ—वि० अदृष्ट।
अदीन—वि० उदार। उग्र।
अदीब—पु० (अ०) साहित्य-का जानने वाला।
अदीम—वि० (अ०) नष्ट। अप्राप्य। [जाय।
अदीयमान—वि०जो न दिया-
अदीर—वि० सूक्ष्म।
अदीह—वि० छोटा।
अदुंद—वि० बिना झंझट का।
अदू—पु० (अ०) दुश्मन।
अदूजा—वि० अद्वितीय।
अदूषण—वि० निर्दोष।
अदूषित—वि०निर्दोष, शुद्ध।
अदृक्—वि० अंधा। [दे।
अदृश्य—वि० जो दिखाई न-
अदृष्ट—वि०न देखा हुआ। पु० भाग्य।
अदृष्टपूर्व—वि० जो पहिले न देखागया हो। विलक्षण।
अदृष्टवाद—पु० परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूपण करने वाला सिद्धांत।
अदृष्टि—स्त्री० क्रूर दृष्टि।
अदेख—वि० अदृश्य। गुप्त।
अदेखी—वि० द्वेषी।
अदेय—वि० न देने योग्य।
अदेव—पु० राक्षस।
अदेस—पु० आदेश। प्रणाम।

अदेह—वि० शरीर-रहित।
अदोखिल—वि० निर्दोष।
अदोष—वि० निर्दोष।
अदौरी-स्त्री०बरी।कुहँड़ौरी।
अद्ध, अद्धा—वि० आधा।
अद्भुत—वि० अनोखा।
अद्भुतोपमा—स्त्री० एक उपमालंकार।
अद्यर—वि० पेट्ट।
अद्य-क्रि०वि०आज। अभी।
अद्यतन-वि०आधुनिक।
अद्यापि-क्रि० वि०आज भी।
अद्रक-पु०अदरक। [दरिद्र।
अद्रव्य—पु० अभाव। वि०
अद्रि—पु० पहाड़।
अद्रिकीला—स्त्री० पृथ्वी।
अद्रिछिद्—पु०वज्र। बिजली।
अद्रिजा—स्त्री० पार्वती।
अद्रितनया—स्त्री० पार्वती।
अद्रिसार—पु० लोहा।
अद्वयवादी—पु० जिन या बुद्ध। [लासानी।
अद्वितोय-वि० बेजोड़,
अद्वैत-वि० अकेला। बेजोड़, पु० ईश्वर, ब्रह्म।
अद्वैतवाद-पु० वेदान्त-मत। वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु की सत्ता नहीं मानी जाती।
अद्वैतवादी ५-पु० वेदान्ती।
अधः, अध-क्रि० वि० नीचे।
अधःपतन, अधःपात—पु० अवनति, नीचे गिरना।
अधकचरा—वि० अधूरा। अपरिपक्व।
अधकछार—पु० पहाड़ के अंचल की ढलवाँ भूमि।
अधकपारी—स्त्री० आधा-सीसी का दर्द। [हुआ।
अधखिला-वि० आधा खिला-
अधगो-पु०नीचे की इन्द्रिय।
अधघट-वि० कठिन। [हुआ।
अधचरा—वि० आधा खाया-
अधड़ा७-वि० बे सिलसिले। निराधार।
अधन—वि० दरिद्र।
अधन्ना-पु०दो पैसे का सिक्का।
अधन्य—वि० अभागा।
अधप—पु० भूखा सिंह।
अधपई-स्त्री०दो छटाँकका बाट।
अधफर—पु० बीच,अधर।
अधबर—पु० बीच।
अधबुध-वि० अर्द्ध-शिक्षित।
अधबैसू—स्त्री० मध्यम अवस्था की स्त्री।
अधम ३—वि० नीच।
अधमई—स्त्री० नीचता।
अधमरा—वि० मरणतुल्य।
अधमर्ण—पु० क़र्ज़दार।
अधमांग—पु० पाँव।
अधमाई—स्त्री० अधमता।
अधमादूती—स्त्री० कटु बातें कह कर, नायक का संदेश नायिका के पास पहुँचाने वाली दूती।
अधमाधम—वि०महानीच।
अधमानायिका—स्त्री० नायक हितकारी होने पर भी उसके प्रति कुव्यवहार करने वाली नायिका। [मरा'।
अधमुआ—वि० दे० 'अध-
अधमुख-वि० औंधा। उलटा
अधरंगा—वि० आधे रंग-का। पु० एक फूल।
अधर—पु० नीचे का ओंठ। ओंठ। अन्तरिक्ष। वि० तुच्छ। [लाली।
अधरज—पु० ओठों की-
अधरपान—पु० ओठों का-चुम्बन।
अधरबिंब—पु० कुंदरू के फल के समान लाल ओंठ।
अधरबुद्धि—वि० नीच बुद्धि-वाला। [ओंठ।
अधराधर—पु० नीचे का-
अधरामृत-पु०ओठों का रस।
अधरीकृत—वि० तिरस्कृत।
अधरोत्तर-वि० ऊँचा-नीचा।
अधर्म-पु० कुकर्म।
अधर्मी ५—पु० पापी।
अधवा—स्त्री० विधवा।
अधवाई-स्त्री० आधी चीज़।
अधसेरा-पु० आधा सेर तौल-का मान।
अधस्तल—पु० तहख़ाना।
अधान—पु० तेल आदि।
अधार-पु० सहारा। कलेवा।
अधारी-स्त्री० आश्रय। साधुओं के आश्रय की लकड़ी। मुसाफ़िरी थैला। [हुआ दूध।
अधावट—पु० आधा औटा-
अधि*-एक उपसर्ग।
अधिकंतु—अव्य० और।

नोट*—'अधि' उपसर्ग आधार, सामने, ऐश्वर्य, प्रधान, अधिक और संबंध अर्थों में प्रयुक्त होता है,जैसे—अधिकरण, अधिक्षेप, अधिराज, अधिपति, अधिमास, आध्यात्मिक आदि।

अधिक—वि० बहुत । पु० लाभ ।
अधिकता—स्त्री० बहुतायत ।
अधिकमास—पु०मलमास ।
अधिकरण—पु० आधार, सहारा । सातवाँ कारक ।
अधिकर्द्धि—वि० भरा-पुरा ।
अधिकांग—पु०कमर-पट्टा जो बख्तर के ऊपर बाँधी जाती है । वि०वह व्यक्ति जिसमें अंग का कोई विशेष अवयव हो; यथा छंगा ।
अधिकांश—पु०अधिक भाग । क्रि०वि० ज़्यादातर ।
अधिकाई—स्त्री० बहुतायत ।
अधिकाना—अक्रि० अधिक होना । बढ़ना ।
अधिकार—पु०हक़ । क़ब्ज़ा ।
अधिकारपत्र—पु० हक़नामा, सनद । [हक़दार ।
अधिकारी—पु० मालिक ।
अधिकृत—वि० अधिकार में आया हुआ ।
अधिक्रम—पु० चढ़ाई ।
अधिक्षिप्त—वि० आक्षेप या निन्दा पाया हुआ ।
अधिक्षेप—पु०कटाक्ष । फेंकने की क्रिया । निन्दा ।
अधिगत—वि०प्राप्त । ज्ञात ।
अधिगुप्त—वि०रक्षित, छिपाया-हुआ ।
अधिज्य—पु०युद्धार्थी । वीर ।
अधित्यका—स्त्री० टीला । पहाड़के ऊपर की समभूमि ।
अधिदेव—पु० इष्टदेव ।
अधिदैव—वि० आकस्मिक । देव-सम्बन्धी । [संबंधी ।
अधिदैवत—त्रि० देवता-
अधिनाथ—पु० सरदार । मालिक ।
अधिनायक—पु० (स्त्री० अधिनायिका) सरदार, मुखिया । डिक्टेटर ।
अधिप—पु०स्वामी, प्रभु, अध्यक्ष । [राजा ।
अधिपति—पु०स्वामी ।
अधिपांग—पु० कमरपट्टी ।
अधिपुरुष—पु० ईश्वर ।
अधिविन्ना—स्त्री० प्रथम विवाह की स्त्री ।
अधिभू—पु० स्वामी ।
अधिमांस—पु० आँख का फोड़ा । [महीना ।
अधिमास—पु० लौंद का-
अधिया—स्त्री० आधा भाग ।
अधियान—पु० गोमुखी ।
अधियाना—सक्रि० आधा-करना । [मालिक ।
अधियार—पु० आधे का-
अधिरथ-पु० सारथी । राजा कर्ण के पोषक पिता ।
अधिराज-पु०राजा । सम्राट् ।
अधिराज्य—पु०साम्राज्य । डोमिनियन,अधीनस्थराज्य ।
अधिरूढ़—वि०सवार ।
अधिरोहण—पु०चढ़ना ।
अधिरोहणी—स्त्री० काठ की सीढ़ी ।
अधिलोक—पु०संसार ।
अधिवास—पु०निवास स्थान । उबटन । देर तक ठहरना ।
अधिवासन—पु० सुगन्ध पुष्प आदि धारण करना ।
अधिवासी५—पु०निवासी ।
अधिवेत्ता—पु० पहली स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह-करने वाला पुरुष ।
अधिवेदन—पु० स्त्री रहते विवाह करना ।
अधिवेशन—पु० बैठक, जलसा । [सीढ़ी ।
अधिश्रयणी—स्त्री०चूल्हा ।
अधिष्ठाता—पु० (स्त्री० अधिष्ठात्री) मुखिया । अध्यक्ष । ईश्वर ।[अधिकार ।
अधिष्ठान—पु०पड़ाव,शासन ।
अधिष्ठानशरीर—पु०मृत्यु के बाद जीवात्मा के रहने का सूक्ष्म शरीर । [स्थापित ।
अधिष्ठित—वि० नियुक्त,
अधीत—त्रि० पढ़ा हुआ ।
अधीन—त्रि० मातहत । आश्रित ।
अधीनता—स्त्री० परवशता ।
अधीर३—वि०घबराया हुआ । कातर ।
अधीरज—पु० घबराहट ।
अधीरा—स्त्री०एक नायिका ।
अधीश, अधीश्वर ७—पु० मालिक, स्वामी ।
अधुना—क्रि० वि० अभी ।
अधुनातन—वि० हाल का ।
अधून—वि०निडर । ढीठ ।
अधूरा७—त्रि० अपूर्ण ।
अधृष्ट-वि०शर्मिन्दा । सभ्य ।
अधेड़-वि०ढलती जवानी का ।
अधेला—पु०आधा पैसा ।
अधेली—स्त्री० अठन्नी ।
अधैर्य—पु० व्याकुलता ।
अधोक्षज-पु० विष्णु । कृष्ण ।
अधो—अव्य०दे० 'अध' ।

अधोगत—वि॰अवनत।
अधोगति—स्त्री॰अवनति।
अधोगमन—पु॰ अवनति।
अधोगामी५—वि॰नीचे जाने वाला। [का कपड़ा।
अधोतर॰पु—दुहरी बिनावट—
अधोधम—वि॰अति नीच।
अधोभुवन—पु॰ पाताल।
अधोमार्ग—पु॰ गुदा।सुरंग का रास्ता। [मुँह किये हुए।
अधोमुख—वि॰औंधा। नीचे
अधोर्द्ध—क्रि॰वि॰ऊपर-नीचे
अधोलंब—पु॰लम्ब।
अधोवायु—पु॰गुदा की वायु।
अधौड़ी—स्त्री॰ आधा चरण। निम्न श्रेणी का चमड़ा।
अध्मान—पु॰पेट का अफ़रा।
अध्यक्ष—पु॰ मुखिया।
अध्यक्षर—पु॰ ओंकार।
अध्यग्नि—पु॰एक स्त्रीधन।
अध्ययन—पु॰ पठन-पाठन।
अध्यवसाय—पु॰ उद्योग। उत्साह। लगातार परिश्रम।
अध्यवसायी५—वि॰ उद्योगी
अध्यशन—पु॰ अजीर्ण।
अध्यस्त—वि॰वह जिसका भ्रम अन्य में हो;जैसे रस्सी में सर्प का भ्रम हो।
अध्यात्म—पु॰ ब्रह्म-विचार।
अध्यात्मा—पु॰ईश्वर।
अध्यात्मदृश—पु॰ ऋषिमुनि।
अध्यादेश—पु॰ सामयिक-विधान, आर्डिनेंस।
अध्यापक—पु॰ शिक्षक।
अध्यापकी—स्त्री॰मुदर्रिसी।
अध्यापन—पु॰ पढ़ाना।
अध्यापिका—स्त्री॰ शिक्षिका।
अध्याय—पु॰ परिच्छेद। सर्ग
अध्यारोप—पु॰दोष, लांछन।
अध्यारोहण—पु॰ चढ़ना।
अध्यास—पु॰ मिथ्याज्ञान।
अध्यासन—पु॰ बैठना।
अध्यासीन—वि॰ बैठा हुआ।
अध्याहरण—पु॰तर्क-वितर्क-करना। [विचार।
अध्याहार—पु॰ तर्क-वितर्क।
अध्यूढ़ा—स्त्री॰ वह स्त्री जिस का पति दूसरा विवाह कर ले। [हिता स्त्री।
अध्यूढ़ा—स्त्री॰ प्रथम विवा-
अध्यूषित—वि॰ बसा हुआ।
अध्येता—पु॰ अध्ययन करने वाला, विद्यार्थी।
अध्येय—वि॰ पढ़ने-योग्य।
अध्येषणा—स्त्री॰ याचना।
अध्रुव—वि॰ चंचल।
अध्व—पु॰ मार्ग।
अध्वग—पु॰ पथिक।
अध्वनीन—पु॰ पथिक, राही।
अध्वन्य—पु॰पथिक, राही।
अध्वर—पु॰ यज्ञ। [ज्ञाता।
अध्वर्यु—पु॰ यजुर्वेद का-
अध्वांत—पु॰ संध्याकाल।
अध्वा—पु॰ मार्ग। गली।
अनंग—पु॰कामदेव। [संभोग
अनंगक्रीड़ा—स्त्री॰ रति।
अनंगना—अक्रि॰ देह की सुध भुलाना।
अनगारि—पु॰ शिव।
अनंगी—पु॰ कामदेव। ईश्वर। वि॰शरीर-रहित।
अनंत—वि॰ असीम। पु॰ आकाश। विष्णु। शेषनाग। लक्ष्मण। बलराम।
अनंतचतुर्दशी—स्त्री॰ भाद्र-शुक्ला चतुर्दशी।
अनंतमूल—पु॰ एक पौधा या बेल। [लगातार।
अनंतर—क्रि॰ वि॰ पीछे।
अनंतरज—वि॰ दोगला।
अनंतवीर्य—वि॰बड़ा पराक्रमी।
अनंता—स्त्री॰ जिसका अंत न हो। पृथ्वी। पार्वती। दूब। पीपर। अनन्तसूत्र।
अनंदना—अक्रि॰ आनंदित होना। [निर्विघ्न।
अनंदी—पु॰ एक धान।
अनंभ—वि॰ बिना पानी का।
अनंश—पु॰जो पैतृकसम्पत्ति का अधिकारी न हो।
अनः—पु॰ गाड़ी।
अन—अव्य॰ वि॰ वग़ैर।
अनअहिवात—पु॰ वैधव्य,
अनइस—वि॰ बुरा।
अनऋतु—स्त्री॰ बे मौसम।
अनक—पु॰ डंका। [सुनना।
अनकना—सक्रि॰ छिपकर-
अनक़रीब—क्रि॰ वि॰ (अ॰) लगभग, प्रायः।
अनकहा७—वि॰ अकथित।
अनक्षर—पु॰ निन्दा।
अनख—पु॰ क्रोध। चिढ़। ईर्ष्या। डिठौना। वि॰ बिना नख का। [करना।
अनखना९—अक्रि॰ क्रोध-
अनखनाहट—स्त्री॰ नाराज़गी
अनखी५—वि॰ क्रोधी।
अनखौंहा—वि॰ क्रोधित।

अनगढ़–त्रि०बिना गढ़ा हुआ। निराकार।
अनगन—वि० बेगिनती।
अनगवना, अनगाना–अक्रि० जानबूझ कर देर करना।
अनगिन—वि०बे तादाद।
अनगिनत—त्रि० असंख्य।
अनगैरी—वि० ग़ैर।
अनग्नि—वि० यज्ञ-रहित।
अनघ—वि० निष्पाप।
अनघरी—स्त्री० कुसमय।
अनघैरी—वि० अनिमंत्रित।
अनघोर-पु० अन्धेर। [नक।
अनघोरी—क्रि० वि० अचा-
अनचहा–वि० बेचाहा हुआ।
अनचाहत—वि० निर्मोही।
अनचीन्हा—त्रि० अज्ञात।
अनचैन—स्त्री० बेचैनी।
अनच्छ—पु० मैला जल।
अनछता–त्रि०बिना इच्छा का
अनजान—वि० अज्ञानी।
अनट—पु० अनीति। गाँठ।
अनडीठ-त्रि० बिना देखा।
अनड्वान्—पु० बैल।
अनत—क्रि० वि० अन्यत्र।
अनति—वि० थोड़ा।
अनतु—क्रि० वि० अन्यत्र।
अनदेखा—वि० बिना देखा-हुआ। [का न हो।
अनद्यतन—वि० जो आज-
अनधिकार—पु० अधिकार का न होना। बेबसी।
अनधिकारी५–त्रि०अयोग्य। अधिकारहीन।
अनधिगत—वि० अज्ञात।
अनध्याय-पु०छुट्टी का दिन।
अनन्नास—पु० एक पौधा।
अनन्य४—वि० एकनिष्ठ।
अनन्यज—पु० कामदेव।
अनन्यवृत्ति—पु० जिसका मन एकाग्र हो।
अनन्वय-पु०एककाव्यालंकार।
अनन्वित—वि० असम्बद्ध।
अनपच—पु० अजीर्ण।
अनपढ़—वि० बेपढ़ा।
अनपत्य—वि० निःसन्तान।
अनपत्रप—वि० निर्लज्ज।
अनपाय–त्रि०अक्षय। स्थायी।
अनपायी५—वि० अचल, स्थिर। [स्वाधीन।
अनपेक्ष—वि० बेपरवा।
अनपेक्षित—त्रि० जिसकी चाह न हो।
अनपेक्ष्य—त्रि० जो किसी की परवा न करे।
अनफाँस—स्त्री० मुक्ति।
अनबन—स्त्री० बिगाड़।
अनबिधा–वि०बिना छेद का।
अनबोल, अनबोला—वि० गूँगा, न बोलने वाला।
अनभल—पु०बुराई, हानि।
अनभावता—त्रि०अरुचिकर।
अनभिगमन—पु० भयंकर-स्थान में गमन।
अनभिज्ञ३—वि० अनजान।
अनभिग्रह—वि० भेद-शून्य।
अनभिमत—त्रि० नापसन्द।
अनभिव्यक्त—वि० अस्पष्ट, गुप्त, अप्रकट।
अनभीष्ट—वि० अवांछित।
अनभेदी—त्रि० भेद न जानने वाला।
अनभो—पु० आश्चर्य। वि० अनोखा, अद्भुत्।
अनभोरी—स्त्री० भुलावा।
अनभ्यस्त—वि० अभ्यास-रहित। [अभाव।
अनभ्यास-पु० अभ्यास का-
अनम—वि० उद्दंड।
अनमद-वि० निरभिमानी।
अनमन—वि० उदास।
अनमना—वि० उदास।
अनमापा—त्रि० न नापने-योग्य।
अनमिख–क्रि० वि० एकटक। पु० देवता। मछली।
अनमितंपच—वि० कृपण।
अनमिलता–वि०अप्राप्य।
अनमीलना—सक्रि० आँख-खोलना।
अनमेल–वि०विशुद्ध। बेजोड़।
अनमोल—त्रि० अमूल्य।
अनय–पु०अमंगल। अनीति।
अनयन—वि० अंधा।
अनयस—त्रि० बुरा।
अनरथ—पु० दे० 'अनर्थ'।
अनरना—सक्रि० अनादर-करना।
अनरस—पु० रसहीनता।
अनरसना—अक्रि० उदास-होना
अनरसा—वि० उदास।
अनराता–वि० बिना रँगा-हुआ, सादा।
अनरीति—स्त्री० कुरीति।
अनरूप–वि०कुरूप। असमान
अनर्गल—वि०व्यर्थ,अंडबंड।
अनर्घ३–वि०क़ीमती। सस्ता।

अनर्घ्य—वि० अपूजनीय। बेशक़ीमती। [अर्थ।
अनर्थ—पु० नुक़सान। उलटा-
अनर्थक—वि० बेफ़ायदा।
अनर्ह—वि० अयोग्य।
अनल—पु० अग्नि। चीता। भिलावा। तीन की संख्या।
अनलख, अनलेख—वि० जो दिखाई न पड़े।
अनलपक्ष—पु० एक पक्षी जो हमेशा आकाश में उड़ा करता है।
अनलमुख—पु० देवता। ब्राह्मण। [फुर्तीला।
अनलस—वि०आलस्य-रहित।
अनलायक—वि० अयोग्य।
अनल्प—वि० बहुत।
अनवकाश—पु० फ़ुरसत का न होना। [जुड़ा हुआ।
अनवच्छिन्न—वि० अटूट,
अनवट—पु० पैर के अँगूठे का छल्ला। कोल्हू के बैल की आँखों का ढक्कन।
अनवद्य-वि०निर्दोष। सुन्दर।
अनवधान३—पु० असावधानी, लापरवाही।
अनवधि—वि० असीम। क्रि० वि० सदैव।
अनवरत—क्रि० वि०निरंतर।
अनवसर—पु० बेमौक़ा।
अनवस्कर—वि० दूर किया हुआ। मल-रहित।
अनवस्था—स्त्री० कुव्यवस्था।
अनवस्थित—वि० चंचल, अधीर।
अनवाँसना—सक्रि० नए बर्तन को प्रथम बार काम में लाना।
अनवाँसा—पु० कटी हुई फ़सल का एक मूँठा।
अनवाँसी—स्त्री०बिस्वांसी का बीसवाँ भाग।
अनवाद—पु० दुर्वचन।
अनशन—पु० उपवास।
अनश्वर—वि० अविनाशी।
अनसखरी—स्त्री० पक्का भोजन जो घी में बना हो।
अनसहत—वि० असहनीय।
अनसाना—अक्रि० क्रोध-करना।
अनसुना७—वि० बे सुना।
अनसूया—स्त्री० पराए गुण में दोष न देखना। अत्रि ऋषि की धर्म-पत्नी।
अनस्तित्व—पु० अविद्यमानता।
अनहद नाद—पु० योग का एक साधन। वह शब्द जो कान बन्द करने पर भी भीतर सुनाई देता है।
अनहित—पु० बुराई। शत्रु।
अनहोता—वि० दरिद्र। अलौकिक। असम्भव।
अनहोनी—वि०स्त्री०असंभव। अलौकिक।
अनाकानी—स्त्री० टालमटोल।
अनाखर—वि० बेडौल।
अनागत—वि० न आया हुआ, भावी। क्रि० वि० अचानक।
अनागम—पु० न आना।
अनाघात—पु० एक ताल।
अनाचार८—पु० दुराचार। कुरीति।
अनाचारिता—स्त्री० दुश्चरित्रता।
अनाज—पु० अन्न, ग़ल्ला।
अनाड़ी—वि० ना समझ।
अनाढ्य—वि० दरिद्री।
अनातप—पु० छाया।
अनातुर—वि० शांत। धीर।
अनात्म—वि० आत्मरहित, जड़।
अनाथ—वि० असहाय।
अनाथालय—पु०यतीमख़ाना।
अनाथाश्रम—पु० अनाथालय।
अनादर—पु० निरादर।
अनादि—पु० जिसका आदि न हो, जो सब दिन से हो।
अनादिल—स्त्री० बहु० (अ०) बुलबुल।
अनादिष्ट—वि० बिना-आज्ञा का।
अनादृत—वि० अपमानित।
अनाना—सक्रि० मँगाना।
अनापशनाप—पु० निरर्थक-बकवाद।
अनापा—वि० बे नाप का।
अनाप्त—वि० जो प्राप्त न हो। अविश्वस्त। असत्य। अनाड़ी। जोआत्मीय न हो।
अनाम—वि० बे नाम का। अप्रसिद्ध।
अनामक—पु० बवासीर।
अनामय—वि० तन्दुरुस्त। पु० तन्दुरुस्ती।
अनामा—वि० अप्रसिद्ध। 'अनामिका'।
अनामिका—स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की

उँगली।
अनायत्त—वि० स्वतंत्र।
अनायास—क्रि० वि० बिना प्रयास। अचानक।
अनार—पु० एक फल।
अनारदाना—पु० खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना।
अनारत—वि० नित्य। क्रि० वि० लगातार।
अनारी—वि० अनार के रंग का। अनाड़ी।
अनार्जव—पु० टेढ़ापन।
अनार्तव—पु० मासिक-धर्म की रोक। वि० बे ऋतु का।
अनार्य३—पु० वह जो आर्य न हो। म्लेच्छ।
अनार्यजुष्ट—पु० अनार्यों का काम।
अनावश्यक३—वि० ग़ैर-ज़रूरी।
अनाविल—वि० स्वच्छ।
अनावृत—वि० जो ढका न हो, खुला हुआ।
अनावृष्टि—स्त्री० सूखा।
अनाश्रय—वि० अनाथ।
अनाश्रित—वि० बेसहारा।
अनास्था—स्त्री० अनादर।
अनाह—पु० अफ़रा।
अनाहक—क्रि० वि० नाहक़। अव्यर्थ।
अनाहत—वि० जिस पर आघात न हुआ हो।
अनाहार—पु० लंघन।

अनाहूत-वि० बिना बुलाया हुआ।
अनिंद्य—वि० उत्तम।
अनिआई—वि० अन्यायी।
अनिकेत—वि० बिना घर का।
अनिगीर्ण—वि० अकथित।
अनिग्रह—वि० बन्धन-रहित, असीम। नीरोग।
अनिच्छा—स्त्री० अरुचि।
अनिच्छित—वि० बे चाहा।
अनित्य३—वि० नश्वर, जो सब दिन न रहे।
अनित्यवादी—पु० वह दार्शनिक, जो किसी वस्तु को स्थायी न माने।
अनिद्र—वि० निद्रारहित।
अनिप—पु० सेनापति।
अनिभृत—वि० प्रकट।
अनिमिष, अनिमेष—वि० स्थिर दृष्टि। क्रि० वि० एकटक। पु० देवता। मछली।
अनियंत्रित—वि० बिना रोक-टोक का।
अनियमित—वि० नियम-रहित।
अनियाउ—पु० अन्याय।
अनियारा७—वि० नुकीला। पैना। बहादुर।
अनिरुद्ध—वि० बेरोक। पु० श्रीकृष्ण के पौत्र।
अनिर्दिष्ट—वि० जो बताया न गया हो। अनिश्चित। असीम।
अनिर्बंध—वि० बन्धनरहित।

अनिर्वचनीय—वि० अवर्णनीय।
अनिर्वृत्त—वि० दुःखित।
अनिल—पु० वायु, हवा।
अनिलकुमार—पु० हनुमान्।
अनिवारित—वि० बाधारहित।
अनिवार्य—वि० न टलनेवाला।
अनिश—क्रि० वि० निरंतर।
अनिश्चित—वि० जिसका निश्चय न हो, अनिर्दिष्ट।
अनिष्ट—वि० अवांछित। पु० अहित, हानि।
अनी—स्त्री० नोंक, सिरा।
अनीक—पु० सेना। समूह। वि० बुरा।
अनीकस्थ—पु० राज-रक्षक। सेना-रक्षक।
अनीकिनी—स्त्री० सेना। कमलिनी।
अनीठ—वि० बुरा।
अनीठी—स्त्री० बुराई, क्रोध।
अनीत, अनीति—वि० अन्याय, अन्धेर।
अनीप्सित—वि० अनिच्छित।
अनीश ४—वि० अनाथ। पु० जीव। माया।
अनीश्वर, अनीश्वरवादी—वि० नास्तिक।
अनीस—पु० (अ०) दोस्त।
अनीह—वि० इच्छा-रहित।
अनु*—एक उपसर्ग। क्रि० वि० अब, आगे। अव्य० हाँ।

नोट*—'अनु' उपसर्ग शब्दों के पूर्व लक्षण, पश्चात् सदृश, साथ, प्रत्येक, क्रम और छोटा अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे अनुगंग, अनुगामी, अनुरूप या अनुकरण, अनुपान, अनुक्षण, अनुज्येष्ठ, अनुशाखा आदि।

अनुकंपा—स्त्री० कृपा, दया।
अनुक—पु० कामुक, पुंश्चल।
अनुकथन—पु० कथोपकथन, बातचीत।
अनुकरण—पु० नक़ल।
अनुकरणीय—वि० नक़लकरने-योग्य। [का काठ, सुगन।
अनुकर्ष—पु० रथ के नीचे-
अनुकर्षण—पु० खींच, टान।
अनुकल्प—पु० गौण विधि।
अनुकांक्षा—स्त्री० इच्छा।
अनुकामीन—पु० स्वतंत्रता-से गमन करने वाला।
अनुकार—वि० अनुसार।
अनुकूल—वि० सहायक। प्रसन्न। अनुरूप। क्रि०वि० तरफ़। [होना,पक्ष में होना।
अनुकूलना—सक्रि० प्रसन्न-
अनुकृत—वि० नक़ल किया-हुआ। [देखा-देखी कार्य।
अनुकृति—स्त्री० नक़ल।
अनुक्त४—वि० अकथित। दृष्टान्त। [परिपाटी।
अनुक्रम—पु० सिलसिला।
अनुक्रमणिका—स्त्री० सिल-सिला। पुस्तक-सूची।
अनुक्रोश—पु० दया, कृपा।
अनुक्षण—क्रि० वि० प्रति-क्षण, निरंतर।
अनुखाल—पु० खाई।
अनुग, अनुगत—पु० सेवक। अनुगामी। [सहवास।
अनुगमन—पु० अनुसरण।
अनुगामी५—वि०आज्ञाकारी। पीछे चलने वाला।
अनुगृहीत—वि० कृतज्ञ।
अनुग्रह—पु० कृपा।
अनुग्राहक—वि० (स्त्री० अनु-ग्राहिका)अनुग्रह करने वाला।
अनुग्राही५—वि० कृपालु।
अनुचर७—पु०साथी। नौकर
अनुचिंतन—पु० भूली हुई बात का मनन करना।
अनुचित—वि० बे मुनासिब।
अनुज४—पु० छोटा भाई।
अनुजीवी५—पु०सेवक। वि० आश्रित। [मति।
अनुज्ञा—स्त्री०आज्ञा। अनु-
अनुज्ञात—वि०आज्ञा-प्राप्त।
अनुतप्त—वि० तपा हुआ। रंजीदा। [मद्यपानपात्र।
अनुतर्षण—पु० मद्यपान।
अनुताप—पु० पछतावा। दुःख। जलन।
अनुत्क—वि०उत्सुकता-रहित।
अनुत्तम—वि०प्रधान।अच्छा। खराब।
अनुत्तर—वि०ला जवाब।बुरा।
अनुदय—पु० सवेरा।
अनुदर—वि० दुबला।
अनुदात्त—वि० तुच्छ, छोटा।
अनुदार—वि० कृपण।
अनुदिन—क्रि०वि० प्रतिदिन।
अनुद्धत—वि०शांत, सौम्य।
अनुद्वाह—पु० कुँआरापन।
अनुद्यमी—वि० आलसी।
अनुद्विग्न, अनुद्वेग—वि० व्याकुलता-रहित।
अनुधावन—पु० अनुसरण। चिंतन। खोज।
अनुध्यान—पु०मंगल-चिंतन।
अनुनय—पु० विनय।
अनुनाद—पु० प्रतिध्वनि।
अनुनादित—वि०प्रतिध्वनित
अनुनासिक—वि० जिसका उच्चारण मुख और नासिका से हो।
अनुपगत—वि० दूर का।
अनुपद—पु०सेवक।अनुगामी।
अनुपदीना—स्त्री० मोज़ा।
अनुपपत्ति स्त्री० असिद्धि, अप्राप्ति। असमर्थता।
अनुपम३—वि० बे जोड़।
अनुपमेय—वि० जो उपमा के योग्य न हो, अपूर्व।
अनुपयुक्त३—वि० अयोग्य।
अनुपयोगिता—स्त्री० निर-र्थकता। अयोग्यता।
अनुपयोगी५—वि०व्यर्थ का।
अनुपल—पु० पल का साठवाँ हिस्सा।
अनुपस्थित—वि० ग़ैर-हाज़िर। [मौजूदगी।
अनुपस्थिति—स्त्री० ग़ैर-
अनुपात—पु० समानभाव। त्रैराशिक क्रिया।
अनुपातक—पु० महापाप।
अनुपान—पु०औषध के साथ सेवन करने योग्य वस्तु। पथ्य। [दीक्षा न ली हो।
अनुपेत—वि०जिसने गुरु से-
अनुप्राणित—वि० जीवित।
अनुप्राशन—पु० खाने का कार्य।
अनुप्रास—पु०वर्णमैत्री। तुक।
अनुप्रेक्षा—स्त्री० ध्यान से देखना या किसी विषय का मनन करना।

अनुप्लव—वि० सहायक।
अनुबंध—पु०मित्र। संबंध। बन्धन। लगाव।
अनुबोध—पु० गयी गंध को फिर से प्रकट करना।
अनुभव—पु० तजुरबा।
अनुभवना—सक्रि० अनुभव करना। [रखने वाला।
अनुभवी—वि० अनुभव-
अनुभाव—पु०महिमा,प्रभाव। भाव-सूचक चेष्टा।
अनुभूत—वि० परीक्षित।
अनुभूति—स्त्री० अनुभव।
अनुभाग—पु० माफ़ीज़मीन।
अनुमति-स्त्री०आज्ञा। सम्मति।
अनुमती—स्त्री०अनुगामिनी।
अनुमरण—पु० साथ-साथ मरना।
अनुमान—पु० अन्दाज़ा।
अनुमानपत्र—पु० बजट।
अनुमानना—सक्रि०अनुमान करना। [निश्चय का हेतु।
अनुमापक—पु० निर्णायक।
अनुमित—वि० अनुमान किया हुआ।
अनुमिति—स्त्री० अनुमान।
अनुमेय—वि० अनुष्ठान के योग्य। [प्रसन्न होना।
अनुमोदन—पु० समर्थन।
अनुयायी—वि० पीछे चलने वाला। पु०सेवक। शिष्य।
अनुयोग—पु०प्रश्न। जिज्ञासा।
अनुयोजन४ पु०दे०'अनुयोग'
अनुयोज्य—वि० पूछने-योग्य। बुरा।
अनुरंजन४—पु० अनुराग।
अनुरंजित—वि०लालवर्ण।
अनुरक्त—वि०आसक्त, लीन।
अनुरत—वि०लीन,आसक्त।
अनुराग—पु० प्रीति, प्रेम।
अनुरागना—अक्रि०प्रेम करना
अनुरागी५—वि०प्रेमी।
अनुराध—पु० अनुरोध। याचना। [करना।
अनुराधना—सक्रि०प्रार्थना-
अनुराधा—स्त्री०नक्षत्र-विशेष।
अनुरूप—वि० अनुकूल। सदृश।
अनुरूपक—पु०सदृश वस्तु।
अनुरूपना—सक्रि० सदृश बनाना। [प्रेरणा।
अनुरोध—पु०आग्रह।प्रार्थना।
अनुलाप—पु० बार२ कथन।
अनुलिप्त—वि०लेप किया हुआ
अनुलेपन—पु० लेपन। उबटन करना।
अनुलोम—पु० अवरोही। साधा। उतार का सिलसिला
अनुलोमविवाह—पु० उच्च वर्ण के पुरुष का नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।
अनुवर्तन—पु० अनुकूलता।
अनुवर्ती५—वि०अनुगामी।
अनुवा—पु० कुएँ के ऊपर का चौरस भाग।
अनुवाक—पु०वेद का अवयव।
अनुवाद—पु० पुनरुक्ति। उल्था। [करने वाला।
अनुवादक१४—पु० अनुवाद-
अनुवादित—वि० अनुवाद किया हुआ।
अनुवृत्ति-स्त्री०दूसरी जीविका
अनुवेदना—स्त्री०सहानुभूति।
अनुशय—पु० पश्चात्ताप। महाद्वेष।
अनुशयाना—स्त्री० वह परकीया नायिका जो मिलन-स्थान के नष्ट होने से दुःखित हो।
अनुशाखा—स्त्री०छोटी टहनी।
अनुशासक—पु० आदेश करने वाला। हाकिम।
अनुशासन—पु० आज्ञा। उपदेश। नियंत्रण।
अनुशास्ता—पु० उपदेष्टा।
अनुशीलन—पु० चिन्तन, मनन। अभ्यास।
अनुशोक—पु० शोक, खेद।
अनुषंग—पु०दया। संबंध। लगाव।
अनुष्टुप—पु० ३२ अक्षरों का एक वर्ण छन्द।
अनुष्ण—वि० आलसी।
अनुष्ठान—पु० कार्यारम्भ। प्रयोग। फल के निमित्त किसी देवता की आराधना।
अनुष्ठेय—वि०करने योग्य।
अनुसंधान—पु० खोज। तहक़ीक़ात। प्रयत्न।
अनुसंधानना—सक्रि० ढूँढना। विचारना। [साज़िश।
अनुसंधि—स्त्री० षड्यन्त्र
अनुसर-वि०अनुसार,समान।
अनुसरण—पु० अनुकरण। अनुगमन।
अनुसरना—सक्रि०अनुगमन करना। [समान।
अनुसारन—वि० अनुकूल।

अनुसारना—सक्रि० अनुगमन करना।
अनुसाल—पु०दुःख, पीड़ा।
अनुस्वार—पु० स्वर के ऊपरकी बिन्दी।
अनुहरण—पु० नक़ल।
अनुहरन—वि० अनुसार।
अनुहरना—सक्रि० समानताकरना। [वि० सदृश।
अनुहरिया—स्त्री० आकृति।
अनुहार—वि०समान। अनुसार। उपयुक्त। स्त्री०प्रकार। रूप। सादृश्य।
अनुहारना—सक्रि० तुलनाकरना। समान करना।
अनुहारी५—वि० सदृश। अनुकरण करने वाला।
अनुहार्य—पु०मासिक-श्राद्ध।
अनुअर—क्रि०वि० लगातार।
अनूक—पु० स्वभाव। वंश।
अनूजरा—वि० मैला।
अनूठा७—वि० अनोखा।
अनूढ़ा—स्त्री०अविवाहिता स्त्री जो दूसरे से प्रेम करे।
अनूदित—वि० कहा हुआ। अनुवादित, भाषान्तरित।
अनून—वि० पूर्ण। बहुत।
अनूनक—वि० दे० 'अनून'।
अनूप—वि० अनोखा। पु० सजल देश।
अनूरु—पु०सूर्य का सारथी।
अनूह—पु० विचारहीन।
अनृजु—वि० कपटी।
अनृत—पु० मिथ्या, झूठ।
अनेक—वि० बहुत। कई।
अनेकप—पु० हाथी।
अनेकलोचन—पु० इन्द्र।
अनेड—वि०निकम्मा। टेढ़ा।
अनेरा७-वि०झूठा।अन्यायी। क्रि० वि० व्यर्थ।
अनेस—वि० बुरा।
अनेह—पु० विरक्ति।
अनै—वि० बुरा।
अनैक्य-पु० एका न होना।
अनैम—पु०बुराई। वि० बुरा।
अनैसना-अक्रि० रूँठना या बुरा मानना।
अनैसा७—वि०अप्रिय, बुरा।
अनैसे—क्रि०वि०बुरे भाव से।
अनैहा—पु० उत्पात।
अनोकह७—पु०वृक्ष, पेड़।
अनोखा७—वि० अनूठा। निराला।
अनोसर—पु० भगवान् को शयन कराना। [युक्तता।
अनौचित्य—पु० अनुप-
अन्†—अव्य० अभाव या निषेध-सूचक।
अन्न—पु०अनाज। वि०दूसरा। खाया हुआ।
अन्नकूट—पु० दीपावली के अगले दिन का त्यौहार।
अन्नकोष्ठ—पु० अन्न रखने का स्थान।
अन्नक्षेत्र—पु० वह स्थान जहाँ भूखों को भोजन दिया जाता है।
अन्नजल—पु० जीविका।
अन्नदाता*—वि० परवरिश-करने वाला, रक्षक।
अन्नपूर्णा—स्त्री० एक देवी।
अन्नप्राशन—पु० बच्चों को अन्न चटाने की रस्म।
अन्नसत्र—पु० दे० 'अन्नक्षेत्र'।
अन्ना—स्त्री० दाई, धाय। (तु०) माता, माँ।
अन्नाद—पु०अन्नहारी।ईश्वर।
अन्य—वि० दूसरा। और।
अन्यतः—अव्य० और किसी से। किसी और स्थान से।
अन्यतर—वि० भिन्न, दूसरा।
अन्यत्र—क्रि०वि०दूसरी जगह।
अन्यथा—वि०विपरीत।अव्य० नहीं तो।
अन्यपुरुष—पु० व्याकरण में तीसरा पुरुष; जैसे यह, वह आदि।
अन्यपुष्ट—पु० कोकिल।
अन्यपूर्वा—स्त्री० दुबारा-ब्याही हुई स्त्री।
अन्यभृत—पु०कौआ। कोयल
अन्यमनस्क३—वि० उदास।
अन्यान्य—वि० भिन्न-भिन्न। और-और।
अन्याय—पु० अनीति।
अन्यायी५—वि० अन्याय-

नोट*स्त्रीलिंग में 'दाता' का 'दात्री' हो जाता है। जैसे 'अन्नदाता' से 'अन्नदात्री'।
†—शब्दों के पूर्व 'अन्' का प्रयोग 'अभाव' अर्थ में होता है। जैसे-अनुचित, अनपढ़।

करने वाला । [नुकीला ।
अन्यारा—वि० निराला ।
अन्यास–क्रि०वि०अकस्मात्।
अन्योक्ति—स्त्री० वह कथन जिसका अर्थ कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर भी घट सके ।
अन्योन्य—सर्व० परस्पर ।
अन्योन्याश्रय—पु० एक दूसरे की अपेक्षा या सहारा
अन्वक, अन्वक्ष–अव्य०पीछे ।
अन्वय—पु०[वि० अन्वयी] परस्पर-सम्बन्ध । मेल । वंश।
अन्वर्थ—वि० सार्थक ।
अन्ववाय—पु० वंश ।
अन्वित–वि०युक्त । शामिल ।
अन्विष्ट—वि० ढूँढा हुआ।
अन्वीक्षण–पु०विचार। खोज।
अन्वीक्षा—स्त्री० ध्यानपूर्वक-देखना ।
अन्वेषक—वि० (स्त्री० अन्वेषिका') खोजने वाला ।
अन्वेषण४—पु० खोज ।
अन्वेषित—वि० ढूँढा हुआ ।
अन्वेषी५–वि०खोजने वाला ।
अन्हवाना–सक्रि० नहलाना।
अपंग–वि०अंगहीन। लँगड़ा ।
अप*–एक उपसर्ग ।पु०जल । सर्व० आप, (अपस्वार्थी में)
अपकर्त्ता—पु० (स्त्री० अपकर्त्री)हानि पहुँचाने वाला। पापी ।
अपकर्म–पु० पाप । दुष्कर्म ।
अपकर्ष—पु० पतन । अपमान । अवनति ।
अपकाजी—वि० स्वार्थी ।
अपकार—पु० बुराई । निरादर । [करने वाला ।
अपकारक—वि० अपकार-
अपकारगी—वि० अपकारी ।
अपकारी५–वि०हानिकारक ।
अपकारीचार—वि० हानिकर्त्ता, विघ्नकर्त्ता ।
अपकीर्ति—स्त्री० अपयश, निन्दा, बदनामी । [हुआ ।
अपकृत–वि० अपकार किया-
अपकृष्ट३–वि० पतित । बुरा।
अपक्रम—पु० क्रमभंग । भागना । [पका हुआ ।
अपक्व३—वि० बिना-
अपक्षिप्त—वि० फेंका हुआ ।
अपगत—वि० भागा हुआ । नष्ट । मरा हुआ ।
अपगा—स्त्री० नदी ।
अपघन—पु० शरीर । वि० मेघरहित ।
अपघात–पु०हिंसा । विश्वासघात । आत्महत्या ।
अपघातक—वि० हिंसक । आत्महत्या करने वाला ।
अपघाती—वि० दे० 'अपघातक' ।
अपच–पु० अजीर्ण । [पूजा ।
अपचय–पु० हानि । कमी ।
अपचायित—वि० पूजित ।
अपचार—पु०निन्दा । बुरा-बर्ताव । अपयश । कुपथ्य ।
अपचारी५—वि० अपचार-करने वाला ।
अपचाल—पु० कुचाल ।
अपचित—वि० आदृत ।
अपचिति—स्त्री० पूजा ।
अपची—स्त्री० एक प्रकार का गंडमाला रोग ।
अपछरा—स्त्री० अप्सरा ।
अपजय—स्त्री० हार ।
अपटन—पु० उबटन ।
अपटी—स्त्री० क़नात, तंबू ।
अपटु–पु० अकुशल । रोगी ।
अपठ—वि० मूर्ख । अपढ़ ।
अपठमान—वि० जो न पढ़ा-जाय ।
अपठित–वि०बिना पढा हुआ।
अपडर—पु० शंका । भय ।
अपडाना–अक्रि० झगड़ना ।
अपडाव—पु० झगड़ा ।
अपढ़—वि० अनपढ़, मूर्ख ।
अपन—त्रि० बिना पत्ती का । नग्न । निर्लज्ज । पापी ।
अपतई—स्त्री० निर्लज्जता । ढिठाई । चंचलता ।
अपताना—पु० झंझट ।
अपति—स्त्री० विधवा । वि० पापी । स्त्री० दुर्गति ।
अपतियारा—वि० कपटी ।
अपतोस—पु० अफ़सोस ।

नोट*—शब्दों के पूर्व 'अप' उपसर्ग निषेध, अपकर्ष, विकृति, विशेषता, विकार आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे, अपमान, अपयश या अपवाद, अपांग, अपहरण, अपकार आदि ।

अपत्य—पु० संतान।
अपत्यशत्रु—पु० केंकड़ा।
अपत्रप—वि० निर्लज्ज।
अपत्रपा—स्त्री० पिता आदि के आगे उपजी हुई लज्जा।
अपत्रपिष्णु—वि० लज्जाशील।
अपथ—पु० बुरा मार्ग।
अपथ्य—वि० हानिकारी।
अपद—पु० बिना पैर के रेंगने वाले जन्तु, जैसे सर्पादि। क्रि०वि०अनुचितरूप से।
अपदांतर—वि० संयुक्त।
अपदिश—पु० दिशाओं का कोना।
अपदेखा—वि० घमंडी।
अपदेश—पु० बहाना। छल। प्रदेश। निशाना। हेतु।
अपद्रव्य—पु० बुरा धन।
अपद्वार—पु० छिपा हुआ-दरवाज़ा।
अपध्वंस—पु० पराजय। नाश। निरादर। [हुआ।
अपध्वस्त—वि० धिक्कारा-
अपन—सर्व० अपना। हम।
अपनपौ—पु० अपनापन।
अपनयन—पु० दूर करना।
अपना—सर्व० निज का। पु०आत्मीय। [में करना।
अपनाना—सक्रि०अपने पक्ष-
अपनाम—पु० बदनामी।
अपनायत—पु० अपनापन। नाता।
अपनीत—वि० दूर किया-हुआ।

अपनेआप—यौ०स्वयं, ख़ुद।
अपनोद—पु० दूर करना।
अपभय—वि० निडर। पु० निडरता।
अपभ्रंश—पु० शब्दों का-विकृतरूप। पतन। विगाड़।
अपभ्रंशित—वि० बिगड़ा-हुआ।
अपमान—पु० निरादर।
अपमानना सक्रि० निरादर या निंदा करना।
अपमानित—वि०निन्दित।
अपमानी—वि० तिरस्कार-करने वाला।
अपमार्ग—पु० कुमार्ग।
अपमुख—वि० टेढ़े मुँह-वाला। [मृत्यु।
अपमृत्यु—स्त्री० अकाल-
अपयश—पु० अपकीर्ति।
अपयान—पु० भागना, पलायन।
अपयोग—पु० कुचाल। कुयोग। [फिर भी।
अपरंच—अव्य० और भी।
अपरंपार—वि०अनन्त।
अपर—वि० पूर्व का। अन्य। पिछला।
अपरछन—वि०दे०'अप्रच्छन्न'।
अपरता—स्त्री० अपनापन। परायापन।
अपरती—स्त्री० स्वार्थ। बेईमानी।
अपरदिशा—स्त्री० पच्छिम।
अपरना—स्त्री०पार्वती।
अपरबल—वि० प्रचंड, बलशाली।

अपरस—वि० अलग। पु० न छूने योग्य। चर्मरोग। [दिशा।
अपरांत—पु० पश्चिम का-
अपरा—स्त्री०लौकिक विद्या। पश्चिम-दिशा।
अपराजिता—स्त्री०कोयल। दुर्गा। विष्णुकांता लता।
अपराद्धपृषत्क—पु०वह व्यक्ति जिसका तीर निशाने से चूक जाय।
अपराध—पु० क़सूर।
अपराधी—वि० दोषी।
अपराह्न—पु०तीसरा पहर।
अपरिगृहीता—स्त्री०कुलस्त्री।
अपरिग्रह—पु० अस्वीकार। विराग। दान का त्याग।
अपरिचित—वि० बे जाना-हुआ।
अपरिच्छिन्न—वि०जुड़ाहुआ, जिसका विभाग न हो। असीम। [शून्य।
अपरिणत—वि० विकार-
अपरिणामी—वि० बिना-परिणाम का, व्यर्थ।
अपरिमित—वि० असीम। असंख्य, अगणित।
अपरिमेय—वि० बेअन्दाज़।
अपरिष्कृत—वि० परिष्कार-शून्य। भद्दा।
अपरिहार्य—वि० अत्याज्य।
अपरुद्ध—वि० क्षुब्ध, व्याकुल
अपरूप—वि० बदशकल।
अपर्णा—स्त्री० पार्वती।
अपलक—क्रि०वि० एकटक।
अपलक्षण—पु०ख़राब लक्षण।
अपलज्ज—वि०बेहया।

अपलाप—पु० मुकर जाना। मना करना। बकवाद।
अपलोक—पु० बदनामी।
अपवर्ग—पु० मोक्ष। दान।
अपवर्जित—वि० त्यागा हुआ।
अपवर्त्तन—पु० पलटना।
अपवश—वि० अपने वश का। बेबस।
अपवाचा—स्त्री० निंदा।
अपवाद—पु० खण्डन। बदनामी।
अपवादक १४—पु० विरोधी। निन्दक। [रोक।
अपवारण—पु० दूर करना।
अपवारित—वि० दूर किया हुआ।
अपवित्र३—वि० नापाक।
अपविद्ध—वि० त्यागा हुआ।
अपव्यय—पु० फिज़ूल खर्ची।
अपव्ययी ५—वि० व्यर्थ-खर्च करने वाला।
अपशकुन—पु० असगुन।
अपशद—वि० नीच। [गाली।
अपशब्द—पु० बुरा शब्द।
अपष्ठु—वि० विपरीत।
अपसद—वि० नीच।
अपसना, अपसवना—अक्रि० सरकना, चला जाना।
अपसर—वि० आप ही आप। मनमाना।
अपसर्जन—पु० त्याग।
अपसर्प—पु० दूत। [विपरीत।
अपसव्य—वि० उलटा,
अपसरित—वि० हटाया गया।
अपसौन—पु० अशकुन।
अपसौना—अक्रि० पहुँचना।
अपस्कर—ताँगा।
अपस्नान—पु० मृत्युस्नान।
अपस्मार—पु० मिरगी रोग।
अपस्वार्थी—वि० मतलबी।
अपहत—वि० मारा हुआ। नष्ट किया हुआ।
अपहनन—पु० हत्या।
अपहरण—पु० छीनना। चोरी।
अपहरना—सक्रि० चुराना, छीनना, लूटना।
अपहर्त्ता १०—पु० छीननेवाला। चोर।
अपहा—वि० हिंसक।
अपहारक—पु० छीनना।
अपहारी ५—वि० छीननेवाला। चोर।
अपहार्य—वि० छीनने या चोरी करने योग्य।
अपहास—पु० उपहास।
अपहृत—वि० अपहरण किया-हुआ, छीना हुआ।
अपह्नव—पु० छिपाव, बहाना।
अपह्नुति—स्त्री० दे० 'अपह्नव'।
अपांग—पु० कटाक्ष। आँख-की कोर। वि० अंगहीन।
अपांपति—पु० समुद्र।
अपा—स्त्री० गर्व। आत्मभाव।
अपाक—पु० अजीर्ण।
अपाकरण—पु० अलगाना या हटाना।
अपाटव—पु० मूर्खता। शराब। वि० रोगी।
अपात्र—वि० अयोग्य, कुपात्र।
अपादान—पु० व्याकरण में पाँचवाँ कारक। अलगाव।
अपान—पु० आत्मज्ञान। आत्मगौरव। सुध-बुध। अधोवायु, गुदा का वायु।
अपामार्ग—पु० चिचड़ा।
अपाय—पु० हानि। अलगाव। नाश। वि० अपाहिज।
अपार—वि० सीमारहित।
अपार्थ—पु० कविता में वाक्य का अर्थ स्पष्ट न होने का दोष।
अपाव—पु० अनरीति।
अपावन७—पु० अपवित्र।
अपावृत—वि० स्वतंत्र।
अपाश्रय—वि० अनाथ।
अपासन—पु० वध, मारना।
अपाहिज—वि० अंगभंग। आलसी। असमर्थ।
अपिंडी—वि० बे शरीर का।
अपि—अव्य० ही। भी।
अपिच—अव्य० और भी।
अपिगीर्ण—वि० स्तुति किया-हुआ।
अपितु—अव्य० किन्तु, बल्कि।
अपिधान—पु० ढक्कन।
अपिनद्ध—वि० कवचधारी।
अपीच—वि० अच्छा।
अपीन—वि० कृश। हल्का।
अपील—स्त्री० (अं०) निवेदन।
अपीलांट—वि० निवेदन-करने वाला।
अपुत्र—वि० निःसंतान।
अपूठना—सक्रि० नष्ट करना।
अपूठा—वि० अस्फुट। अन-जान। अपुष्ट। [अपुत्र।
अपूत—वि० अपवित्र।

अपूप—पु० पिट्ठी से बना-हुआ, पुवा।
अपूर—वि० पूरा।
अपूरना—सक्रि०पूरा करना, भरना। हवा भरकर बजाना।
अपूरा—वि० भरा हुआ।
अपूर्ण३—वि०अधूरा। कम।
अपूर्णभूत—पु० भूतकालिक वह क्रिया जिसमें समाप्ति न पाई जाय; जैसे 'जाता था।'
अपूर्व३—वि० अनोखा।
अपूर्वरूप-पु० एक काव्या-लंकार।
अपेक्षा—स्त्री० इच्छा। आव-श्यकता। तुलना। [में।
अपेक्षाकृत—अव्य० मुक़ाबले-
अपेक्षित-वि० आवश्यक। तुलनाकियाहुआ। इच्छित।
अपेय—वि० न पीने-योग्य।
अपेल—वि० अटल। दृढ़।
अपैठ—वि० अगम।
अपोगंड—वि० सोलह वर्ष से अधिक का, बालिग़।
अपोह—पु० जुदाई।
अपोहन—पु० तर्क द्वारा बुद्धि परिमार्जित करना।
अप्पति—पु० वरुण।
अप्पित्त—पु० अग्नि।
अप्रकांड—पु० डाल रहित-वृक्ष।
अप्रकाशित—वि० अंधकार-मय। गुप्त। बिना छपा।
अप्रकाश्य—वि० गोपनीय।
अप्रकृत—वि० दिखाऊ। कृत्रिम।
अप्रगुण—वि० व्याकुल।
अप्रचलित—वि० चलन में न आया हुआ।
अप्रतिभ—वि०प्रतिभाशून्य।
अप्रतिम३—त्रि० अनुपम।
अप्रतिरथ—पु० सैनिक-गमन। योद्धा
अप्रतिष्ठा—स्त्री० अनादर।
अप्रतिहत—वि० काता-हुआ। जयी।
अप्रतुल—वि० जिसकी तुलना न हो सके।
अप्रत्यक्ष—वि०गुप्त, छिपा।
अप्रत्याशित—वि० आशा-रहित।
अप्रथा—स्त्री० अव्यवहार।
अप्रमेय-वि०नापने न योग्य। अपार।
अप्रयुक्त—वि० जो प्रयोग में न लाया गया हो।
अप्रसन्न३—वि० असन्तुष्ट।
अप्रस्तुत—वि० अनुपस्थित। पु० उपमान।
अप्रहत—पु०बिना जोता-खेत। [लिग़।
अप्राप्तव्यवहार—त्रि०नाबा-
अप्राप्य—वि०प्राप्त न होने-योग्य। [सबूत।
अप्रामाणिक७—वि० बे-
अप्रासंगिक—वि० प्रसंग-विरुद्ध।
अप्रिय—पु० अरुचिकर।
अप्सरस-पु० एक देवयोनि।
अप्सरा—स्त्री० परी। स्वर्ग-की वेश्या।
अफ़आल—पु० बहु० (अ०) कार्रवाइयाँ।
अफ़ई-पु०(अ०)काला नाग।
अफ़ग़ान—पु० क़ाबुल का निवासी।
अफ़ज़ल—वि० (अ०) कृपालु। [वाला।
अफ़ज़ा—त्रि० (अ०) बढ़ाने-
अफ़ज़ाइश—स्त्री० (अ०) बढ़ोतरी।
अफ़ज़ूं-पु०(अ०)अधिकता।
अफ़ताला—पु० यात्रा में विश्राम आदि का पहले से ही प्रबन्ध करने वाला-कर्मचारी।
अफ़नाना—अक्रि०उबलना।
अफ़यून—स्त्री० अफ़ीम।
अफ़रा—पु० पेट फूलना।
अफल—वि०बे फल का,व्यर्थ।
अफ़लातून—पु० यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक।
अफ़वाह—स्त्री०उड़ती ख़बर।
अफ़शाँ—स्त्री० (फ़ा०) जलकण।
अफ़सर—पु० हाकिम।
अफ़सरी—स्त्री० अधिकार। शासन।
अफ़साना—पु० (फ़ा०) क़िस्सा, कहानी।
अफ़सुरदा—वि० (फ़ा०) दुःखित। [टोना।
अफ़सूं—पु० (तु०) जादू,
अफ़सोस—पु० रंज। [वस्तु।
अफ़ीम—स्त्री० एक नशाली-
अफ़ीमची—पु० अफ़ीम का नशा करने वाला व्यक्ति।
अब—क्रि० वि० इस समय।

अवकर्त्तन—पु० चरखा ।
अवख़रा—पु० (अ०) पानी की भाप ।
अवतरर—वि०(अ०) दुर्दशा को प्राप्त । [नित्य ।
अवदी—वि० (अ०)अनादि,
अवद्ध—पु०अर्थ-शून्य-वचन । वि०बंधन-रहित,स्वच्छन्द ।
अवद्धमुख७—वि० अप्रिय-वादी । [संन्यासी ।
अवधू—वि० मूर्ख । पु०
अवध्य४—वि० जो मारने के योग्य न हो । [भौंडर ।
अवर—वि०बलहीन ।
अवरक—पु०एक सफ़ेद धातु, भौंडर ।
अवरन—वि० अवर्णनीय ।
अवरस—पु०घोड़े का एक रंग ।
अवरा—पु० लिहाफ़,तोशक के ऊपर का पल्ला । वि० कमज़ोर ।
अवरी—स्त्री०एक प्रकार का धारीदार काग़ज़ ।
अवरू—स्त्री० (फ़ा०)भौं ।
अवरेशम—पु० (फ़ा०) कच्चा रेशम ।
अवल—वि० कमज़ोर ।
अवलक़—वि० चितकबरा ।
अवलखा—पु० एक काला-पक्षी ।
अवला—स्त्री० स्त्री ।
अववाब—पु० (अ०) वह कर जो मालगुज़ारी पर लगता है । [व्यथ ।
अवस—वि० बेवस । क्रि० वि०
अवाँह—वि० अनाथ ।
अवाक़बा—पु०एक पहनावा ।
अवाती—वि० वायु-रहित ।
अवाद—वि० निर्विवाद ।
अवादानर—वि० भरापुरा ।
अवाध—वि० निर्विघ्न । अपार ।
अवाधित—वि० स्वच्छन्द ।
अवाध्य—वि० निर्विघ्न ।
अवान—वि० निहत्था ।
अवाबील—स्त्री०काले रंग की एक चिड़िया । [शीघ्र ।
अवार—स्त्री०देर । क्रि० वि०
अवाल—वि० पूर्ण। युवा ।
अवास—पु०भवन ।
अविद्ध—वि०विना बेधा हुआ ।
अविरल—वि० अभिन्न ।
अवीर—पु०अबरक का चूर ।
अवीरी—वि० अवीर के रँग का ।
अवुध—वि०मूर्ख । [उठना ।
अवुहाना—अ०क्रि० बक-
अवूझ—वि० नासमझ ।
अवूत—क्रि० वि० वृथा ।
अवेध—वि० बिना-बिंधा ।
अवेर—स्त्री० विलम्ब ।
अवेश—वि० बहुत ।
अवैन—वि०मौन। मूक ।
अवोध—वि० मूर्ख ।
अवोल—वि०विना बोले हुए। चुप । पु० दुर्वचन ।
अब्ज—पु०.कमल । चंद्रमा । शंख । कपूर । अरब की संख्या । [माला ।
अब्जद—पु० (अ०) वर्ण-
अब्जयोनि—पु०ब्रह्मा ।
अब्जा—स्त्री०लक्ष्मी ।
अब्द—पु०वर्ष । मेघ । (अ०) दास, ग़ुलाम ।
अब्दाल—पु०(अ०) धार्मिक-व्यक्ति। मुहम्मद के उत्तराधिकारी ।
अब्धि—पु०समुद्र । सरोवर ।
अब्धिकफ़—पु०समुद्र-फेन ।
अब्धिज४—पु०समुद्र से पैदा हुई वस्तु । शंख, चन्द्रमा आदि ।
अब्बर—वि० निःशक्त।
अब्बा—पु० (फ़ा०) पिता ।
अब्बास—पु०(अ०)गुल़ाबाँस ।
अब्बासी—स्त्री०एक प्रकार का लाल रंग ।
अभ्र—पु० बादल, मेघ ।
अब्रह्मण्य—पु० वह कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो ।अवध्य-वचन ।
अब्रू—स्त्री०(फ़ा०)भौंह।
अब्लक़ा—स्त्री०एक चिड़िया ।
अभंग—वि० अखंड । पूर्ण।
अभंगी—वि० दे० 'अभंग' ।
अभंजन—वि० बिना टूटा ।
अभक्त—वि० भक्ति-शून्य । संपूर्ण ।
अभक्ष्य—वि०न खाने योग्य ।
अभगत—वि० अभक्त ।
अभग्न—वि०अखंड । [बेहूदा।
अभद्र ३—वि० अशिष्ट ।
अभय४—वि० निर्भय । पु० खस । [वचन देना ।
अभयदान—पु० रक्षा का-
अभयपद—पु० मुक्ति ।
अभया—स्त्री० हड़ । वि०

बे ख़ौफ़।
अभर—वि०न ढोने योग्य।
अभरन—पु०आभरण। वि० अपमानित।
अभरम—वि०निःशंक।
अभाऊ—वि० अशोभित।
अभागा—वि० भाग्यहीन।
अभागी५—वि० भाग्यहीन।
अभाग्य—पु० दुर्भाग्य।
अभाजन—पु० कुपात्र।
अभाव८—पु० न होना। कमी।
अभावना—वि०अरुचिकर।
अभावनीय—वि०अचिंत्य।
अभाषण—पु० मौन।
अभि*—एक उपसर्ग।
अभिक—वि० लम्पट।
अभिक्रम—पु०निडर होकर शत्रु पर चढ़ाई करना।
अभिक्रमण—पु० धावा।
अभिख्या—स्त्री० नाम। शोभा।
अभिगमन—पु०पास जाना। सहवास,संभोग।
अभिगम्य—वि० समीप या कठिनता से जाने योग्य।
अभिगामी५—पु०पास जाने वाला। संभोग या सहवास करने वाला।
अभिग्रह—पु०अभियोग। लड़ाई का आह्वान। चढ़ाई, चोरी, गौरव।
अभिग्रहण—पु०चोरी।
अभिघात८—पु०प्रहार।
अभिघातक—वि०प्रहारक।
अभिघार—पु० छिड़काव।
अभिचर—पु०सहाय,साथी। नौकर।
अभिचार८—पु०मंत्रादि द्वारा हिंसा कर्म। पुरश्चरण।
अभिचारी५—पु०मंत्र द्वारा मारण,उच्चाटन कर्म करने वाला।
अभिजन—पु०वंश। जन्म-भूमि। घर में सब से बड़ा। ख्याति।
अभिजन्य—वि०जन्मभूमि-संबंधी। पारिवारिक।
अभिजात—वि० कुलीन। पंडित। श्रेष्ठ। सुन्दर।
अभिजित—वि० विजयी।
अभिज्ञ—वि०जानकार,विज्ञ।
अभिज्ञान—पु० स्मृति। लक्षण, निशानी। [हुआ।
अभिज्ञात—वि० पहचाना-
अभिधा—स्त्री० वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द अपने ठीक ठीक अर्थों को प्रकट करता है। नाम।
अभिधान—पु० नाम। शब्दकोश। कथन।
अभिधायक—वि०नाम रखने-वाला। कहने वाला।
अभिधेय—पु० नाम। नाम-लेने योग्य।
अभिध्या—स्त्री० पराये धन लेने की इच्छा।
अभिनंदन३—पु० आनन्द। प्रशंसा। नम्र-प्रार्थना।
अभिनंदनपत्र—पु० वह प्रशंसापत्र जो किसी नवागन्तुक बड़े आदमी के सम्मान में दिया जाय।
अभिनंदित—वि०प्रशंसित।
अभिनंदिनी—स्त्री० आनंद-देने वाली।
अभिनय—पु० नाट्य-क्रिया। स्वाँग, नक़ल।
अभिनव—वि० नया, ताज़ा।
अभिनवोद्भिद्—पु० अंकुर।
अभिनिर्मुक्त—वि० सूर्यास्त-में सोने वाला। [गमन।
अभिनिर्याण—पु० यात्रा,
अभिनिविष्ट—वि० धँसा-हुआ, लिप्त।
अभिनिवेश—पु० मनोयोग। तत्परता। प्रवेश। गति।
अभिनीत—वि० सुसज्जित। अभिनय किया हुआ। न्याय-पूर्वक लिया हुआ। युक्त, उचित।
अभिनेता१०—पु० अभिनय करने वाला व्यक्ति, ऐक्टर।
अभिनेय—वि० अभिनय-करने योग्य। [न हो
अभिन्न३—वि० जो भिन्न-

नोट*—'अभि' उपसर्ग शब्दों के पूर्व, बुरा, समीप, बारंबार, अच्छीतरह, दूर, ऊपर, सामने, इच्छा, समन्तात् (चारों ओर) अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे—अभिशाप, अभिगमन, अभीक्षण, अभिरुचि, अभिसंधि, अभिमान, अभिमुख, अभीष्ट, अभियान आदि।

अभिन्नपद—पु०एक अलकार ।
अभिपन्न—वि० आपत्ति ग्रस्त । मुजरिम, अपराधी । पापी
अभिप्राय—पु० आशय, मतलब, प्रयोजन ।
अभिप्रेत—वि० अभीष्ट । अभिप्राय रक्खे हुए ।
अभिभव—पु० पराजय ।
अभिभावक३—वि० पराजित-करने वाला । रक्षक ।
अभिभाषण—पु० भली भाँति-लेकचर आदि देना ।
अभिभूत—वि० पराजित, वशीभूत । व्याकुल ।
अभिमंत्रण—पु० मंत्र द्वारा-संस्कार ।[पवित्र कियाहुआ।
अभिमंत्रित—वि० मंत्र से-
अभिमत—वि० वाञ्छित । पु० सम्मति । [विचार । इच्छा ।
अभिमति—स्त्री० अभिमान ।
अभिमनन्—पु० कोर्टशिप ।
अभिमन्यु—पु०अर्जुनका पुत्र ।
अभिमर—पु० दूत ।
अभिमर्षण—पु० मनन । पर-स्त्री-गमन ।
अभिमान—पु० अहंकार ।
अभिमानी५—वि० घमंडी ।
अभिमुख—क्रि० वि० सामने ।
अभियान—पु० चारों ओर से हमला करना । ज़ोरदार-हमला ।
अभियुक्त—वि० प्रतिवादी ।
अभियोक्ता—पु० (स्त्री० अभियोक्त्री) मुद्दई, वादी ।
अभियोग—पु० मुक़दमा । दावा । लगन ।
अभियोगी—वि० फ़रयादी, मुद्दई ।
अभिरत—वि० अनुरक्त ।
अभिरना—सक्रि० भिड़ना ।
अभिराम४—वि० मनोहर । पु० आनन्द । [प्रवृत्ति ।
अभिरुचि—स्त्री०अति चाह ।
अभिरूप—पु० पंडित । सुन्दरस्वरूप । विष्णु । शिव । चंद्रमा । कामदेव ।
अभिलषण—पु० इच्छा ।
अभिलषित—वि० चाहा-हुआ, इष्ट । [हना ।
अभिलाखन—सक्रि० चा-
अभिलाप—पु० कथन ।
अभिलाष—पु० इच्छा ।
अभिलाषा—स्त्री० इच्छा ।
अभिलाषी ५—वि० इच्छा-करने वाला ।
अभिलापुक—वि० लोभी ।
अभिवंदन६—पु० वन्दना, स्तुति ।
अभिवंद्य—वि०वंदनाके योग्य।
अभिवचन—पु० प्रतिज्ञा, वादा ।
अभिवांछित—वि० इच्छित ।
अभिवादक१,४—वि० वंदना-करने वाला । [स्तुति ।
अभिवादन—पु० वंदना,
अभिव्यंजक—वि० प्रचार या प्रकट करने वाला ।
अभिव्यंजन४—पु०प्रकट करना।
अभिव्यक्त—वि० प्रकट, प्रकाशित ।
अभिव्यक्ति—स्त्री०प्रकाशन । स्पष्टीकरण । [व्याप्ति ।
अभिव्यापी—वि० सर्वत्र-
अभिशंसन—पु० व्यभिचार का मिथ्या दोष लगाना ।
अभिशप्त—वि० शाप दिया-हुआ ।
अभिशस्त—वि०चोरी,छिनारा आदि लोकापवाद से दूषित
अभिशस्ति—स्त्री० याचना ।
अभिशाप—पु० मिथ्यारोप । श्राप, बददुआ ।
अभिशापित—वि० जिसे शाप दिया गया हो ।
अभिषंग—पु० पराजय । निंदा । आलिंगन । शपथ ।
अभिषव—पु० मद्य बनाना ।
अभिषिक्त४—वि० जिसका अभिषेक हुआ हो ।
अभिषेक—पु० छिड़काव । विधिपूर्वक राजतिलक करना । राजतिलक ।
अभिषेणन—पु० शत्रु के ऊपर सेना की चढ़ाई ।
अभिष्टुत—वि०स्तुति किया-गया । [दुखना ।
अभिष्यंद—पु०बहाव । आँख-
अभिसंधान—पु० धोखा, जाल । [षड्यंत्र, साज़िश ।
अभिसंधि ३—स्त्री० धोखा,
अभिसंपात—पु० युद्ध ।
अभिसर—पु० साथी, मित्र । सहायक । [सहारा ।
अभिसरण—पु० आगे जाना ।
अभिसार ८—पु०प्रिया-मिलन-के लिये संकेत-स्थान को जाना । सहारा । सहाय ।
अभिसारना—अक्रि० प्रिय से मिलने के लिए निश्चित स्थान पर जाना ।

अभिसारिका—स्त्री० संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिए जाने वाली नायिका।
अभिसारिणी—स्त्री० दे० 'अभिसारिका'।
अभिसारी५—वि० सहायक। प्रिय से मिलने के लिये निश्चित स्थान पर जाने वाला। [करने वाला।
अभिहारी ५—वि० हरण-
अभिहित—वि०कहा हुआ।
अभी—क्रि०वि०इसी समय।
अभीक-वि०निर्भय। निडर।
अभीक्ष्ण—क्रि० वि० बार-म्बार, निरन्तर।
अभीप्सित—वि० अभीष्ट।
अभीर—पु० अहीर।
अभीषु—पु०किरण। लगाम।
अभीष्ट—वि० चाहा हुआ।
अभुआना—अक्रि० भूत आदि के भय से हाथ-पैर पटकना
अभुक्त—वि० भोग में न आया हुआ, अछूता।
अभूत—वि० जो न हुआ। वर्त्तमान। अनोखा।
अभूतपूर्व—वि० जो पहले न हुआ हो। अनोखा।
अभेद ६—पु० अभिन्नता। एक रूप। [न हो सके।
अभेद्य—वि० जिसका भेदन
अभेय,अभेव-पु०दे०'अभेद'।
अभेरना—सक्रि० भिड़ाना।
अभेरा—पु०मुठभेड़। धक्का।
अभोगी—वि० विरक्त।
अभौतिक—वि०जो पंचभूत-का बना न हो। अगोचर।
अभ्यंग—पु० आपाद-मस्तक-तैलमर्द्दन।
अभ्यंजन—पु० उबटन।
अभ्यंतर—पु०मध्य। हृदय। क्रि० वि० भीतर।
अभ्यग्र—पु०समीप, निकट।
अभ्यमित—वि० रोगी।
अभ्यमित्र्य—पु० सामर्थ्य से शत्रु के सम्मुख लड़ने के लिए जाने वाला।
अभ्यर्ण—पु०समीप, निकट।
अभ्यर्थना ६—स्त्री०प्रार्थना। स्वागत।
अभ्यर्हित—वि० पूजित।
अभ्यवकर्षण—पु० युक्ति पूर्वक हथियार निकालना।
अभ्यवस्कंदन—पु० धोखे से-दबा लेना।
अभ्यवहृत—वि० भक्षित।
अभ्यसित, अभ्यस्त—वि० अभ्यास किया हुआ। दक्ष, निपुण।
अभ्यांत—वि० रोगी।
अभ्यख्यान—पु० मिथ्या-भियोग।
अभ्यागत—वि० अतिथि।
अभ्यागम—पु० युद्ध।
अभ्यागारिक—वि० कुटुम्ब-पालन में तत्पर।
अभ्यादान—पु० आरम्भ।
अभ्यामर्द—पु० युद्ध।
अभ्याश—पु०समीप,निकट।
अभ्यास—पु०मश्क़, आदत।
अभ्यासादन—पु० धोखे से दबा लेना। [करने वाला।
अभ्यासी५—वि० अभ्यास-
अभ्युत्थान—पु० उठना। उन्नति। [वृद्धि। उदय।
अभ्युदय—पु० उत्पत्ति।
अभ्युदित—वि० सूर्योदय में सोने वाला।
अभ्युपगम—पु० प्रतिज्ञा। अंगीकार। प्राप्ति।
अभ्युपपत्ति—स्त्री० कृपा।
अभ्यूष—पु० धूप आदि में भुना हुई वस्तु।
अभ्रंकष—वि०गगनस्पर्शी, बहुत ऊंचा।
अभ्र—पु० मेघ। आकाश।
अभ्रक—पु० अबरक।
अभ्रपुष्प—पु० बेंत।
अभ्रमातंग—पु० इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
अभ्रांत—वि० भ्रान्ति-रहित।
अभ्रिय—वि० मेघ से उत्पन्न।
अभ्रेष—पु० न्याय।
अमंगल—वि० अशुभ।
अमंद—वि० श्रेष्ठ। उद्योगी। जो धीमा न हो।
अमका—पु० अमुक।
अमचूर—पु० सुखाए हुए-कच्चे आम का चूर्ण।
अमजद—वि०(अ०) गुरुजन।
अमड़ा—पु० एक फल।
अमद-वि०मदहीन, शांत।
अमत्र—पु० बर्त्तन।
अमन—पु०शांति। रक्षा।
अमन-अमान-पु० चैनचान।
अमनस्क—वि० उदासीन।
अमनिया—पु० रसोई का कच्चा सामान, सीदा। वि० पवित्र।

अमनैक—पु० सरदार। अधिकारी। वि० धृष्ट।
अमर ३—वि० जो न मरे। पु० देवता। पारा।
अमरख७—पु० क्रोध। रंज।
अमरत्व—पु० देवत्व।
अमरपख—पु० पितृपक्ष।
अमरपति—पु० इन्द्र।
अमरपद—पु० मुक्ति।
अमरपुर ७—पु० देवताओं का नगर।
अमरबेल—स्त्री० एक पीली लता, आकाश बेल।
अमरलोक—पु० इन्द्रपुरी।
अमरवल्ली—स्त्री० अमरबेल।
अमरस—पु० दे० 'अमावट'
अमरसो—वि० सुनहला।
अमराई—स्त्री० आम का बाग़।
अमराउ—पु० आम का बाग़।
अमराज़—पु० बहु० (अ०) बहुत से मर्ज़।
अमरालय—पु० स्वर्ग।
अमरावती—स्त्री० इन्द्रपुरी।
अमरी—स्त्री० देव-कन्या।
अमरुत—वि० शान्त।
अमरू—पु० एक रेशमी कपड़ा।
अमरूद—पु० फल विशेष।
अमरेश—पु० इन्द्र।
अमर्त्य—पु० देवता।
अमर्ष—पु० (वि० अमर्षित) क्रोध असहिष्णुता।
अमर्षण—पु० क्रोध।
अमर्षी ५—वि० असहनशील। क्रोधी।
अमल ३—वि० निर्मल। निर्दोष। पु० व्यसन। अधिकार। नशा। समय।
अमलतास—पु० एक पेड़।
अमलदारी—स्त्री० अधिकार। शासन। दख़ल।
अमलपट्टा—पु० अधिकार-पत्र।
अमलबेत—पु० एक दवा।
अमला—स्त्री० लक्ष्मी। पु० (अ०) कर्मचारी।
अमलाफ़ेला—पु० (अ०) कचहरी के कर्मचारी।
अमली—वि० (अ०) व्यावहारिक। [घास।
अमलोनी—स्त्री० नोनियाँ-
अमहर—स्त्री० कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
अमहल—वि० व्यापक।
अमांस—वि० दुर्बल।
अमा—स्त्री० अमावस्या की कला। [दिना।
अमातना—सक्रि० आमंत्रण-
अमात्य—पु० मंत्री, वज़ीर।
अमान—वि० निरभिमान। बेअदाज़। (अ०) शान्ति। रक्षा।
अमानत—स्त्री० धरोहर।
अमानतदार—पु० धरोहर-रखने वाला। [हर पत्र।
अमानतनामा—पु० धरो-
अमाना—अक्रि० समाना।
अमानी—वि० निरभिमान। स्त्री० (अ०) तनख़ाह पर काम कराना। वह ज़मीन जिसकी ज़मींदार सरकार हो। [की शक्ति से परे।
अमानुषिक—वि० मनुष्य-
अमानुषी—वि० पैशाचिक।
अमाप—वि० अपरिमित।
अमामा—पु० (अ०) पगड़ी।
अमाय, अमाया—वि० निश्छल। माया-रहित।
अमारी—स्त्री० हाथी का हौदा।
अमाल—पु० शासक।
अमावट—स्त्री० आम का सुखाया हुआ रस।
अमावना—अक्रि० अमाना।
अमावस्या—स्त्री० अमावस।
अमाह—पु० आँख के ढेले से निकला हुआ मांस।
अमिख—पु० मांस।
अमिट—वि० जो न मिटे।
अमित—वि० अधिक।
अमिताभ—पु० बुद्ध देव।
अमिताशन—वि० बहुत-खाने वाला। पु० अग्नि।
अमित्र—पु० शत्रु।
अमिय—पु० अमृत।
अमिय-मूरि—स्त्री० संजीवनी-बूटी। [बेमेल।
अमिल—वि० अप्राप्य।
अमिली—स्त्री० वैमनस्य।
अमिश्रराशि—स्त्री० इकाई-से लेकर नौ तक के अंक।
अमिश्रित—वि० बेमेल, ख़ालिस।
अमिष—वि० निश्छल।
अमी—पु० दे० 'अमृत'।
अमीकर—पु० चन्द्रमा।
अमीत—पु० शत्रु।
अमीन—पु० एक अदालती-कर्मचारी। [धनी।
अमीर २—पु० सरदार।
अमीर-उलबहर—पु० (अ०)

जल सेना का सेनापति।
अमीरज़ादा—पु० राज-कुमार, शहज़ादा। [का सा।
अमीराना—वि० अमीरों-
अमीरी—वि० अमीराना।
अमीव—पु० पाप। दुःख।
अमुक—वि० फलाँ।
अमुत्र—अव्य० परलोक। परकाल।
अमूर्त—पु० आकाश। वायु। परमेश्वर। वि० निराकार।
अमूर्तिमान—वि० निराकार। अगोचर। [जड़हीन।
अमूल—पु० प्रकृति। वि०
अमूलक—वि० असत्य। बे जड़ का। अनमोल।
अमूल्य—वि० बेशक़ीमती।
अमृणाल—पु० खस।
अमृत—पु० मृतक को जीवित करने वाली वस्तु। घृत। मोक्ष। जल। बिना माँगे मिली हुई वस्तु।
अमृतकर—पु० चन्द्रमा।
अमृतकुंडली—स्त्री० एक बाजा तथा एक छंद।
अमृतगति—स्त्री० एक छंद।
अमृतगर्भ—पु० ईश्वर।
अमृततरंगिणी—स्त्री० चाँदनी।
अमृतत्व—पु० मोक्ष, मुक्ति।
अमृतदान—पु० कटोरदान।
अमृतफल—पु० परवर।
अमृतफला—स्त्री० दाख। अंगूर।
अमृतबान—पु० रोग़न किया-हुआ एक प्रकार का पात्र।
अमृतयोग—पु० फलित ज्योतिष का एक योग।
अमृतवल्ली—स्त्री० गुरुच की बेल। [मक्खन।
अमृतसार—पु० अंगूर। घी।
अमृतांध—पु० देवता।
अमृतांशु—पु० चन्द्रमा।
अमृता—स्त्री० हड़। आँवला। गिलोय।
अमृती—स्त्री० लुटिया।
अमृष्य—वि० असह्य।
अमेजना—सक्रि० मिलना।
अमेठना—सक्रि० मरोड़ना।
अमेधा—वि० मूर्ख।
अमेध्य—पु० अपवित्र वस्तु। यज्ञ के अयोग्य वस्तु। वि० अपवित्र।
अमेय—वि० असीम। अज्ञेय।
अमेव—वि० बेहद।
अमोघ—वि० अचूक। अव्यर्थ।
अमोघा—स्त्री० हड़।
अमोरी—स्त्री० छोटा आम।
अमोल, अमोलक—वि० क़ीमती।
अमोला—पु० आम का नया निकला पौधा। [विरक्त।
अमोही—वि० मोह-रहित,
अमौआ—पु० आम के रस के रंग का वस्त्र।
अम्मय—पु० जल-विकार।
अम्माना—पु० एक प्रकार का साफ़ा। [हौदा।
अम्मारी—स्त्री० हाथी का-
अम्र—पु० (अ०) बात। काम। आज्ञा। घटना।
अम्ल—वि० खट्टा। पु० तेज़ाब।
अम्लजन—पु० आक्सिजन।
अम्लपित्त—पु० रोग विशेष।
अम्लसार—पु० खटाई। अमलबेत। आमलासार-गंधक।
अम्लान—वि० जो उदास न हो। साफ़।
अम्लिका—स्त्री० इमली।
अम्हौरी—स्त्री० अँधोरी नामक छोटी छोटी फुंसियाँ, मरोरी।
अयः—पु० लोहा।
अयःप्रतिमा—पु० लोहे की मूर्त्ति। [अयोग्य।
अयथा—वि० मिथ्या।
अयन—पु० गति। मार्ग। घर। थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।
अयनकाल—पु० छः महीने का समय।
अयनसंक्रांति—स्त्री० मकर और कर्क की संक्रांति।
अयत्र—पु० कृष्णपक्ष। पितृ-कर्म। शुक्र।
अयश—पु० निंदा।
अयस्—पु० लोहा।
अयस्कांत—पु० चुंबक।
अयाँ—वि० (अ०) ज़ाहिर।
अयाचक—वि० न माँगने वाला। संतुष्ट।
अयाची—वि० अयाचक।
अयाचित—वि० बिना माँगे-हुए।

अयाच्य—वि० भरापुरा।
अयान७—वि०दे० 'अजान'।
अयानप—पु० भोलापन।
अयाल—पु० घोड़े और सिंह की गर्दन के बाल। केसर।
अयालदार—पु० बाल बच्चे-वाला आदमी।
अयालदारी—स्त्री०घर-गृहस्थी।
अयि—अव्य० अरे, हे।
अयुक्त—वि० अनुचित।
अयुक्ति—स्त्री० गड़बड़ी।
अयुग, अयुग्म—वि०विषम। अकेला।
अयुत—पु० दस हज़ार की [संख्या।
अयुध—पु० अस्त्र-शस्त्र।
अये—अव्य० सम्बोधन का वाची।
अयोग—पु० बुरायोग। [बुरा। त्रि०
अयोग्य—वि० ना क़ाबिल।
अयोघन—पु० हथोड़ा।
अयोनि—वि० अजन्मा।
अयोनिज—पु० वृक्ष। ब्रह्मा। विष्णु।
अय्याम—पु० बहु० (अ०) [दिन।
अरंग—पु० सुगन्धि।
अरंभना—सक्रि० बोलना। आरम्भ होना। सक्रि० आरम्भ करना।
अर—क्रि० वि० शीघ्र। स्त्री० अड़, हठ। आरा।
अरई—स्त्री० बैल हाँकने की कीलदार छड़ी।
अरक़—पु० आसव।
अरकना—अक्रि० टकराना। फटना। गिरना।
अरकाटी—पु० कुली भरती कराकर बाहर भेजने वाला व्यक्ति।
अरकान—पु० सरदार।
अरगजा द—पु० सुगंधित-उबटन।
अरगट—वि० पृथक्, अलग।
अरगल—पु० किवाड़ बन्द करने की लकड़ी, ब्योंड़ा।
अरगवानी—पु० लाल रंग। वि० लाल।
अरगला—पु० रोग। संयम।
अरगाना—सक्रि० अलग होना। चुप होना। सक्रि० अलग करना।
अरघट्ट—पु० रहट, गड़ारी।
अरघा—पु० अर्घपात्र।
अरघान—स्त्री० गंध।
अरचना—सक्रि०पूजा करना।
अरचल—स्त्री० रुकावट।
अरचि—स्त्री० दे० 'अर्चि'।
अरज़—स्त्री० निवेदन। चौड़ाई। ज़मीन।
अरज़ल—पु०ऐबीघोड़ाविशेष। वर्णसंकर।
अरज़ाँ—त्रि० (फ़ा०) सस्ता।
अरझना—अक्रि० उलझना।
अरणा—स्त्री० जंगली भैंस।
अरणि, अरणी—स्त्री० एक वृक्ष। सूर्य्य।
अरण्य—पु० वन, जगल।
अरण्यरोदन—पु० निष्फल-रोना।
अरण्यानी—स्त्री० बड़ा वन।
अरत—वि० विरक्त।
अरति—स्त्री० विराग।
अरथाना—सक्रि० समझाना।
अरथी—स्त्री० मुर्दा ले जाने की टिखटी।
अरदन—पु० विनाश। माँगना।
अरदली—पु० साथ में रहने वाला चपरासी।
अरदावा—पु० भरता, चोखा।
अरदास—स्त्री० विनती, प्रार्थना। भेंट।
अरना—अक्रि० अड़ना।
अरनी—स्त्री०दे० 'अरणी'।
अरपना—सक्रि० अर्पण-करना।
अरब—पु० सौ करोड़। पु० घोड़ा। इन्द्र। एक देश।
अरबर—पु० घबराहट।
अरबराना—अक्रि० घबराना। लडखड़ाना।
अरबरी—स्त्री० घबराहट।
अरबी—वि० अरब देश का।
अरबोला—वि० ऊटपटाँग।
अरब्बी—पु० एक बाजा।
अरभक—पु० दे०'अर्भक'
अरमान—पु० इच्छा, लालसा।
अरराना—अक्रि० टूटने या गिरने का शब्द करना।
अरवा—पु० कच्चे धान से निकलाचावल। पु० आला।
अरवाती—स्त्री० ओरौनी।
अरवाह—स्त्री० बहु० (अ०) रूहें, आत्माएँ।
अरविंद—पु०कमल। सारस।
अरवी—स्त्री० घुइयाँ।
अरस—पु० आकाश। आलस्य। छत। महल।

वि० नीरस। अनाड़ी।
अरसना—अक्रि० ढीला-पड़ना।
अरस परस—पु० छुआ-छुई का खेल। मिलना, भेंटना।
अरसा—पु०(अ०)समय, देर।
अरसात—पु० २४ अक्षरों का एक छन्द।
अरसीला—वि० आलस्यपूर्ण।
अरसौहा—वि० आलसी।
अरस्तू—पु० यूनान का प्राचीन काल का एक विद्वान्।
अरहट—पु० कुएँ से पानी निकालने का रहट नामक यंत्र।
अरहन—पु० बेसन।
अरहना—स्त्री० पूजा।
अरहर—स्त्री० एक अनाज।
अराअरी—स्त्री० होड़।
अराजक—वि० राज्य का विरोधी। [हलचल।
अराजकता—स्त्री० अशांति,
अराज़ी—स्त्री०(अ०) ज़मीन।
अरात, अराति—पु० शत्रु।
अराबा—पु० रथ। तोप-लादने की गाड़ी।
अराम—पु० बाग़।
अरारा—त्रि०दरदरा।
अरारोट—पु० एक क़न्द का आटा।
अराल—त्रि० टेढ़। पु० राल। मतवाला-हाथी।
अरिंद—पु० शत्रु, वैरी।
अरिंदम—वि० शत्रु को दमन करने वाला।
अरि—पु० शत्रु।
अरित्र—पु० पतवार।
अरिमेद—पु०दुर्गन्धित कत्था।
अरियाना—सक्रि० तिरस्कार-करना। [एक छन्द।
अरिल्ल—पु०सोलह मात्रा का-
अरिवन—पु० गगरा आदि फँसाने का रस्सी का फंदा।
अरिष्ट—पु० उपद्रव। दुःख। मरने का चिह्न। विघ्न। सूतिकागृह। रीठा। नीम। लहसुन। वृषभासुर। कौआ। उजलचील। शराब। तक्र। वि० शुभ। अशुभ।
अरिष्टदुष्टधी—पु० मृत्यु के लक्षणों से दूषित व्यक्ति।
अरिष्टनेमि—पु० कश्यप प्रजापति का एक पुत्र।
अरिहा, अरिहन—वि०शत्रु-नाशक। पु० शत्रुघ्न।
अरी—स्त्री०स्त्रियोंकासंबोधन।
अरीज़—वि० (अ०) अधिक-चौड़ा।
अरीज़ा—वि०(अ०)निवेदित।
अरुंतुद—वि० दुःखदायी।
अरुंधती—स्त्री० बसिष्ठ मुनि की स्त्री। दक्ष की कन्या।
अरुः—पु० घाव।
अरु—अव्य० और।
अरुई—स्त्री० अरवी, घुइयाँ।
अरुचि—स्त्री० अनिच्छा।
अरुज—वि० नीरोग।
अरुझना९—अक्रि० उलझना, फँसना, रुकना।
अरुण४—वि० थोड़ा लाल, रक्त। पु० सूर्य। सूर्य का सारथी। सन्ध्याराग। कुष्ट-भेद। सिंदूर। केसर।
अरुणचूड़—पु० कुक्कुट, मुर्ग़ा।
अरुणप्रिया—स्त्री० अप्सरा।
अरुणलोचन—पु० लाल-नेत्र। कबूतर। कोकिल।
अरुणशिखा—पु० मुर्ग़ा।
अरुणा—स्त्री० अतीस।
अरुणाई—स्त्री० लालिमा।
अरुणिमा—स्त्री० लालिमा।
अरुणोदधि—पु० मिश्र और अरब के बीच का लाल-सागर।
अरुणोदय—पु० प्रातःकाल।
अरुणोदल—पु० पद्मराग-मणि। [मणि।
अरुणोपल—पु०'लाल'नामक
अरुरना—अक्रि० लचकना।
अरुष्कर—पु०भिलावा। घाव करने वाला।
अरूरना—अक्रि०दुःखीहोना
अरूलना—अक्रि० पीड़ित-होना। चुभना।
अरे—अव्य० संबोधन-सूचक शब्द।
अरेब—पु० पाप। अपराध।
अरेरना—अक्रि० रगड़ना।
अरोक—वि० निस्तेज।
अरोगना—अक्रि० खाना।
अरोच—पु० अरुचि।
अरोहना—अक्रि०सवारहोना
अर्क—पु० सूर्य। इन्द्र। मदार। पंडित। बिल्लौर-पत्थर। [पसीना।
अर्क़—पु० (अ०) आसव।
अर्क़गीर—पु०घोड़े की ज़ीन

के नीचे का वस्त्र ।
अर्कज—पु०सूर्य-पुत्र । कर्ण । सुग्रीव । शनि । यम ।
अर्कजा—स्त्री० यमुना ।
अर्कपर्ण—पु० मदार ।
अर्कबंधु—पु० गौतम बुद्ध ।
अर्क़रेज़ी—स्त्री० अधिक श्रम ।
अर्काह्व—पु० मदार ।
अर्कोपल—पु० सूर्यकांतमणि ।
अर्गल—पु०किवाड बंद करने की लकडी । तरंग । बादल
अर्गला—स्त्री० सिटकिनी, किवाड़ बन्द करने का ब्योंडा । [मूल्य, भेंट ।
अर्घ—पु० जलदान ।
अर्घा—पु०अर्घ देने का पात्र ।
अर्घ्य—वि० पूजनीय ।
अर्चक१४—वि० पूजक ।
अर्चन—पु०पूजन, सत्कार ।
अर्चनीय—वि० पूजनीय ।
अर्चमान—वि० पूजनीय ।
अर्चा—स्त्री० पूजा । मूर्त्ति ।
अर्चि—स्त्री० अग्नि-ज्वाला । प्रकाश । शोभा । किरण ।
अर्चित—वि० पूजित ।
अर्चिष्मान्—वि०दीप्तिमान् । पु० सूर्य । अग्नि ।
अर्च्य—वि० पूज्य ।
अर्ज़—स्त्री०विनय । चौड़ाई ।
अर्ज़क़—वि० (अ०) नीला ।
अर्जक-वि०पैदा करने वाला । पु० उजली बबई (दवा) ।
अर्ज़क़चश्म—वि० नीली-आँखों वाला ।
अर्जनद्द—पु० पैदा करना ।
अर्ज़मंद-वि० (फ़ा०) अच्छे-पद पर प्रतिष्ठित ।
अर्ज़ाँ—वि० (फ़ा०) सस्ता ।
अर्ज़ानी—स्त्री०(फ़ा०)सस्तापन-
अर्जित—वि०संगृहीत । पैदा किया हुआ ।
अर्ज़ी—स्त्री०(अ०) प्रार्थनापत्र
अर्ज़ीदावा—पु० दावा करने का निवेदनपत्र । [का लेखक
अर्ज़ीनवीस—पु०प्रार्थनापत्र
अर्जुन—पु० एक वृक्ष । काहू । मोर । युधिष्ठिर का छोटा-भाई । पीले से मिला सफ़ेद वर्ण । तृण ।
अर्जुनी—स्त्री० गाय ।
अर्ण—पु०वर्ण ।अक्षर । जल ।
अर्णव—पु० समुद्र । सूर्य ।
अर्तन—पु० करुणा । निन्दा ।
अर्त्ति—स्त्री० पीड़ा । धनुष का अग्रभाग ।
अर्थ८—पु० अभिप्राय, मत-लब । धन । हेतु ।
अर्थकर७—वि० धनोपार्जन-करने वाला । लाभदायक ।
अर्थकृच्छ्र—पु० दरिद्रता ।
अर्थदंड—पु० जुर्माना ।
अर्थना—सक्रि० माँगना । स्त्री० याचना, माँगना ।
अर्थपति—पु० कुबेर । राजा ।
अर्थप्रयोग—पु० ब्याज ।
अर्थमंत्री—पु० धन संबंधी-मामलों की देखभाल करने वाला । खज़ांची ।
अर्थवेद—पु० शिल्प-शास्त्र ।
अर्थशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति तथा रक्षा के उपाय हों ।
अर्थसचिव—पु० अर्थमंत्री ।
अर्थांतरन्यास—पु०एक काव्या-लंकार ।
अर्थात्—अव्य० यानी ।
अर्थाना—सक्रि० अर्थ-समझाना ।
अर्थापत्ति—स्त्री० एक प्रमाण जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात की सिद्धि स्वतः हो जाती है ।
अर्थालंकार—पु० चमत्कृत-अर्थवाला एक अलंकार ।
अर्थी५—वि० इच्छुक । पु० मुद्दई । धनी । याचक । सेवक । स्त्री० मुरदा उठाने की टिकटी ।
अर्थ्य—पु०गेरू । शिलाजीत । धनी । आत्मज्ञानी ।
अर्दन४—पु०पीड़न । माँगना ।
अर्दना—सक्रि०कष्ट पहुँचाना ।
अर्दावा—पु० दलिया ।
अर्दित—वि०पीडित । याचित ।
अर्द्ध—वि० आधा । चंद्रिका ।
अर्द्धचंद्र—पु० आधा चाँद ।
अर्द्धजल—पु० शव-स्नान ।
अर्द्धनारीश—पु० शिव ।
अर्द्धरात्र—पु० आधीरात ।
अर्द्धर्च—पु० आधी ऋचा या वेद का भाग ।
अर्द्धहार—पु० बारह लड का-हार । [लक़वा रोग ।
अर्द्धांग—पु० आधा अंग ।
अर्द्धांगिनी—स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
अर्द्धांगी५—पु० शिव । वि० आधे अंग का रोगी ।
अर्द्धाली—स्त्री० चौपाई के

दो चरण । [स्थापन ।
अर्पण—पु० देना । भेंट ।
अर्पना—सक्रि० भेंट करना ।
अर्पित—वि० भेंट किया हुआ।
अर्ब—वि० दस करोड़ ।
अर्ब-खर्ब—वि० असंख्य ।
अर्ब-दर्ब—पु० धन-दौलत ।
अर्बुद—पु० दशकोटि । अरावली पहाड़ ।
अर्भ—पु० शिष्य, बालक । सागपात । शिशिर ।
अर्भक—पु० बच्चा। वि० छोटा ।
अर्म—पु० एक नेत्र रोग ।
अर्य—पु० वैश्य । स्वामी ।
अर्य्यमा—पु० सूर्य । मदार।
अर्या—स्त्री० वैश्य जाति में उत्पन्न स्त्री ।
अर्याणी—स्त्री० दे० 'अर्या'।
अर्राना—सक्रि० एकबारगी-गिर पड़ना ।
अर्व४—पु० अधम ।
अर्वा—पु० घोड़ा ।
अर्वाचीन—वि० पीछे का । आधुनिक, नया ।
अर्श—पु० बवासीर । स्वर्ग । आकाश ।
अर्शमुअल्ला—पु० (अ०) सब से ऊँचा स्वर्ग । [रोग ।
अर्शस—पु० बवासीर का-
अर्शोघ्न—पु० जिमीकन्द ।
अर्हत—पु० बुद्ध । जिन ।
अर्ह—वि० पूज्य । योग्य ।
अर्हणा—स्त्री० पूजा ।
अर्हित—वि० पूजित ।
अर्ह्य—वि० पूज्य ।
अलं—अव्य० अलंकार । परिपूर्णता । सामर्थ्य । निषेध ।
अलंकरिष्णु—पु० अलंकार-का इच्छुक ।
अलङ्कर्त्ता—पु० आभूषण बनाने या सजाने वाला । [समर्थ ।
अलंकर्मीण—वि० कार्य में-
अलंकार—पु० आभूषण । चमत्कारिक भाषा ।
अलंकित, अलंकृत—वि० आभूषण पहने हुए ।
अलंक्रिया—स्त्री० सजाना या शृंगार करना ।
अलंग—पु० दिशा, तरफ़ ।
अलंघ्य—वि० न लाँघने योग्य ।
अल—पु० विष । बिच्छू का डंक । भूषण ।
अलक—पु० घुँघराले बाल । लट । घूँघट ।
अलक़त—वि० (अ०) काटा या रद्द किया हुआ । समाप्त ।
अलकतरा—पु० कोलटार ।
अलकलड़ैत—वि० दुलारा ।
अलकसलोरा७—वि० लाड़ला।
अलका—स्त्री० कुबेर की नगरी । आठ और दश वर्ष के बीच की लड़की ।
अलकापति—पु० कुबेर ।
अलक़ाब—पु० बहु० (अ०) उपाधियाँ ।
अलक़ाबोआदाब—पु० बहु० (अ०) उपाधियाँ और शिष्टाचार । [गूँथी हुई लट ।
अलकावली—स्त्री० वेणी ।
अलकिस्सा—क्रि०वि० (अ०) दे० 'अलग़रज़'। [महावर ।
अलक्त—पु० लाख। चपड़ा ।
अलक्षित—वि० अदृश्य ।
अलक्षेन्द्र—पु० सिकंदर
अलक्ष्मी—स्त्री० नरक की अशोभा ।
अलक्ष्य—वि० ग़ायब ।
अलख—वि० जो न दिखाई पड़े । [पुकारने वाला ।
अलखधारी—पु० अलख-
अलखित—वि० गुप्त । अदृश्य ।
अलग—वि० जुदा, भिन्न ।
अलगनी—स्त्री० कपड़े टाँगने का रस्सी । [मतलब यह कि ।
अलग़रज़—क्रि०वि० (अ०)
अलग़रज़ी—वि० (अ०) बेपरवा । स्वार्थी ।
अलगर्द—पु० पानी का साँप । [करना ।
अलगाना—सक्रि० अलग-
अलगोज़ा—पु० (अ०) बाँसुरी-विशेष ।
अलगौझा—पु० बँटवारा ।
अलता—पु० महावर ।
अलपाका—पु० वस्त्र । ऊँट की तरह का प्राणी ।
अलफ़ाज़—पु० बहु० (अ०) बहुत से लफ़्ज़, या शब्द ।
अलबत्ता—अव्य० निःसंदेह ।
अलबम—पु० चित्र रखने की पुस्तक, चित्राधार ।
अलबेला७—वि० बाँका, छैला । सुन्दर । बेपरवाह ।
अलभ्य—वि० न मिलने-योग्य ।
अलम्—अव्य० यथेष्ट, पर्याप्त । सामर्थ्य । निषेध । [झंडा ।
अलम—पु० (अ०) रंज । दुःख ।

अलमस्त ७—वि० (फ़ा०) मतवाला।
अलमारी—स्त्री० दीवार के सहारे खड़ी की जाने वाली ख़ानेदार संदूक़।
अलर्क—पु० सफ़ेद मदार। पागल कुत्ता।
अललख़सूस—वि० (अ०) विशेषरूप में।
अललटप्पू—वि० अंड बंड।
अललहिसाब—क्रि० वि० बिना हिसाब किये हुए।
अललाना—अक्रि० ज़ोर से चिल्लाना।
अलवाँती—वि० स्त्री० ज़च्चा।
अलवान—पु० ऊनी चादर।
अलविदा—पु० (अ०) 'रमज़ान' का अख़ीरी शुक्रवार। बिदा का सलाम। वि० अच्छा। [संतान।
अलवी—पु० (अ०) अली की-
अलस—वि० आलसी। कातर। मूर्ख।
अलसान, अलसानी—स्त्री० आलस्य। [होना।
अलसाना—अक्रि० निद्रा में-
अलसी—स्त्री० तीसी।
अलसेट—स्त्री० ढिलाई, अड़चन।
अलसेटिया—वि० अड़चन-करने वाला। [उनींदा।
अलसौहाँ ७—वि० शिथिल।
अलस्सुबह—वि० (अ०) बहुत-तड़के।
अलहक़—क्रि० वि० (अ०) वास्तव में। अव्य० हाँ।
अलहदा—वि० (अ०) पृथक्।
अलहम्द—स्त्री० (अ० क़ुरान का पहला पद।
अलात—पु० दोनों ओर जलने वाली लकड़ी। आग।
अलान—पु० हाथी बाँधने का खूँटा। [खुल्लमखुल्ला।
अलानिया—क्रि० वि० (अ०)
अलापना—अक्रि० तान-लगाना। गाना।
अलापी—वि० बोलने वाला। तान लगाने वाला।
अलाबू—स्त्री० लौकी।
अलाम—वि० मिथ्यावादी।
अलामत—स्त्री० (अ०) निशानी।
अलार—पु० किवाड़। भट्टा।
अलाल—वि० आलसी।
अलालत—स्त्री० (अ०) बीमारी।
अलाव—पु० आग का ढेर।
अलावा—अक्रि० अतिरिक्त।
अलिंजर—पु० मटका, माँट।
अलिंद—पु० भौंरा। छज्जा।
अलि—पु० (स्त्री० अलिनी) कोयल। कौआ। बिच्छू। भौंरा। स्त्री० सखी।
अलिक—पु० ललाट, माथा।
अली—स्त्री० सखी। पंक्ति। पु० भौंरा।
अलीक—पु० मस्तक। वि० मिथ्या। अप्रतिष्ठित।
अलीजा—वि० बहुत।
अलीन—पु० चौखट का बाज़ू। वि० अयोग्य।
अलीपित—वि० अलिप्त।
अलीम—वि० (अ०) इल्म-का ज्ञाता।
अलील—वि० (अ०) बीमार।
अलीह—वि० मिथ्या।
अलुटना—अक्रि० लोटना।
अलूप—वि० लुप्त।
अलूला—पु० लपट। उद्गार।
अलेख—वि० दुर्बोध। अदृश्य। बेहिसाब।
अलेखा—वि० बेहिसाब।
अलेखी—वि० बे हिसाब। अन्यायी।
अलोक—वि० अदृश्य। एकान्त। पुण्यरहित। पु० परलोक। कलंक। निंदा।
अलोकना—सक्रि० देखना।
अलोना ७—वि० फीका।
अलोप—वि० लुप्त, अदृश्य।
अलोल—वि० स्थिर।
अलोलिक—पु० स्थिरता।
अलौकिक—वि० अद्भुत।
अल्टिमेटम—पु० (अं०) अंतिम-सूचना।
अल्तमिश—पु० (तु०) सेना का अफ़सर। [कृपा।
अल्ताफ़—पु० बहु० (अ०)
अल्प ४—वि० थोड़ा, कम।
अल्पज्ञ—वि० नासमझ।
अल्पता—स्त्री० कमी, न्यूनता।
अल्पप्राण—पु० व्यंजनों के वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ तथा य र ल व अक्षर। [का साग।
अल्पमारिष—पु० चौलाई-
अल्पवयस्क—वि० छोटी उम्र-वाला। [धीरे। क्रमशः।
अल्पशः—क्रि० वि० धीरे-
अल्पसर—पु० छोटी तलैया।

अल्पायु—त्रि० थोड़ी उम्र-
वाला।
अल्पिष्ठ—वि० बहुत थोड़ा।
अल्पीय—वि० बहुत थोडा।
अल्ल—पु०उपगोत्र। [चिल्लाना।
अललाना—अ क्र० ज़ोर से-
अल्लामा—पु० (अ०) बहुत-
विद्वान् और बुद्धिमान्।
अल्लाह—पु० (अ०) ईश्वर।
अल्लाहताला—पु० (अ०)
सर्वश्रेष्ठ ईश्वर।
अल्लाहबेली—वा० (अ०)-
ईश्वर सहायक है।
अल्लाहो अकबर—वा०
(अ०) ईश्वर बड़ा है।
अल्हजा—स्त्री० गप्प।
अल्हड़—वि० मनमौजी।
गँवार। [खटाई
अवंतिसोम—पु० काँजी,
अवंती—स्त्री० उज्जैन।
अव*—एक उपसर्ग। अव्य०
और। [स्तुति।
अवकथन—पु० उपासना।
अवकर—पु० कूड़ा।
अवकर्त्तन—पु० चरखा।
अवकर्षण—पु० उद्धार।
बाहर खींचना।
अवकलन—पु० सूझ।
देखना। जानना। ग्रहण।
अवकलना—अक्रि० सूझना।
अवकलित—त्रि० सूझा हुआ।
अवकार—पु० कूड़ा।

अवकाश—पु० रिक्तस्थान।
आकाश। फ़ुर्सत, छुट्टी।
अवकीर्ण—वि० छितराया-
हुआ, बखेरा हुआ।
अवकीर्णी५—वि० अयोग्य
वस्तु सेवी। जिसका ब्रह्म-
चर्य खंडित हो गया हो।
अवकुंचन—पु०मोड़ना। टेढ़ा-
करना। समेटना।
अवकुंठिन—वि० भयभीत।
अवकृष्ट४—वि० निकाला-
हुआ।
अवकेशी—स्त्री० बाँझ। त्रि०
निःसंतान। [रोना।
अवक्रंदन—पु० चिल्लाना।
अवक्रय—पु० मोल।
अवक्रांति—स्त्री० नीचे को
ओर जाना।
अवक्रुष्ट—वि० निन्दित।
अवक्रोश—पु० निन्दा,
कोसना।
अवखात—पु०गहरा गड्ढा।
अवगणित—वि० अनादृत।
अवगत—वि० विदित।
गिरा हुआ। [गति।
अवगति—स्त्री० बुद्धि। बुरी-
अवगाढ़—वि० गाढ़ा।
अवगारना—सक्रि०समझाना।
अवगाह—वि० अथाह।
कठिन। पु० जलप्रवेश।
अवगाहना—अक्रि० पानी में
घुस कर स्नान करना।

अवगीत—पु० अति-निन्दित।
अवगुंठन—पु० घूँघट। [हुए
अवगुंठित—वि० घूँघट काढ़े-
अवगुंफित—वि०गुँथा हुआ।
अवगुण—पु० दोष। ऐब।
अवग्रह—पु० बाधा। अना-
वृष्टि। शाप।
अवघट—वि०विकट, दुर्गम।
अवघात—पु० चोट।
अवचट—क्रि०वि० अकस्मात्।
अवचय—पु० तोडकर-
चुनना [हुआ।
अवचूर्णित—वि० पिसा-
अवचेष्टा—स्त्री० मंदचेष्टा।
अवच्छद—पु० ढकन।
अवच्छिन्न—वि०अलग किया-
हुआ. पृथक्।
अवच्छेद—पु० (वि० अव-
च्छेद्य) अलगाव। सीमा।
विभाग। निश्चय।
अवच्छेदक—वि० भेदकारी।
अवछंग—पु० गोदी।
अवज्ञा—स्त्री० अपमान।
अवज्ञात—वि० अपमानित।
अवज्ञेय—वि० अपमान के-
योग्य। [का गड्ढा।
अवट, अवटि—पु० पृथ्वी-
अवटना—सक्रि० मथना।
औटाना। अक्रि० घूमना,
फिरना। [वाला।
अवटीट—वि० चपटी नाक-
अवडेर—पु० फेर, बखेड़ा।

नोट—* 'अव' उपसर्ग शब्दों के पूर्व लगने से 'प्रतिबंध, निन्दा, स्वच्छता, निश्चय, कमी, निचाई, व्याप्ति तथा विशेष,' अर्थों की विशेषता प्रकट करता है। जैसे—अवरोध, अवज्ञा, अवदात, अवधारण, अववात, अवतार, अवकाश, अवकथन आदि।

अवडेरना—सक्रि० त्याग-करना। झंझट में फँसाना।
अवडेरा—वि० बेढब। चक्कर-दार। [दया करने वाला।
अवंदर—वि० नीच पर भी·
अवतंस—पु० (वि० अवतं-सित) कर्णभूषण। मुकुट। श्रेष्ठ व्यक्ति। दूल्हा।
अवतमस—पु० थोड़ा-अंधकार। [निकल।
अवतरण—पु० उतरना।
अवतरणिका—स्त्री० भूमिका।
अवतरणी—स्त्री० भूमिका। रीति। [होना।
अवतरना—अक्रि० प्रकट-
अवतार—पु०उतरना। जन्म।
अवतारण—पु० उद्धरण।
अवतारना—सक्रि० उत्पन्न-करना। [शक्ति वाला।
अवतारी—वि० अलौकिक-
अवतीर्ण—वि० उत्तीर्ण। उत्पन्न।
अवतोका—स्त्री० वह गाय जिसका गर्भ गिर गया हो।
अवदंश—पु० मद्य पीने के समय का रुचिकर भोजन।
अवदात—वि० उज्ज्वल। स्वच्छ। श्वेत।
अवदान—पु०निवेदन।खंडन। उत्सर्ग। शुद्धाचरण। सुकर्म।
अवदान्य—वि० पराक्रमी। कृपण।
अवदारण—पु० विदारण-करना। पु० कुदाल।
अवदारित—वि० विदीर्ण-किया हुआ।
अवदाह—पु० खस।
अवदीर्ण—वि० पिघला हुआ।
अवदोह—पु० दूध दुहना।
अवद्य—त्रि० अधम। त्याज्य।
अवध—वि० अवध्य। पु० अवधि। अयोध्या
अवधान—पु० मनोयोग। गर्भ। पेट। सावधानी।
अवधारण ६—पु० निश्चय।
अवधारना—सक्रि० धारण-करना। मानना।
अवधारित—वि० निश्चित।
अवधार्य—वि० निश्चय के-योग्य।
अवधि—स्त्री० सीमा। अंत-समय। अव्य० तक।
अवधिमान—पु० समुद्र।
अवधी-स्त्री०अवध की बोली।
अवधूत—पु०संन्यासी। योगी।
अवधेय—वि० विचारणीय।
अवध्वंस—पु० त्याग।
अवध्वस्त—वि० पिसा हुआ।
अवन—पु० तृप्ति, अघाना।
अवनत—वि०नीचा। हानि-किया गया।
अवनति—स्त्री०हानि, घटती।
अवना—अक्रि० आना।
अवनाट—पु० चपटी नाक-वाला। [जाना या गिरना।
अवनाय—पु० नीचे ले-
अवनि—स्त्री० पृथ्वी।
अवनिप—पु० राजा।
अवनेजन—पु०मार्जन। [वृक्ष।
अवन्ध्य—पु० फलने वाला-
अवपात—पु० पतन। गड्ढा।
अवबोध—पु० ज्ञान। जागृति।
अवबोधक—पु० रात में पहरा-देने वाला। सूर्य। चारण।
अवबोधन—पु० चेतावनी।
अवभास—पु० प्रकाशन। माया। ज्ञान।
अवभृथ—पु० यज्ञांतस्नान।
अवभ्रट—पु० चपटी नाक-वाला व्यक्ति।
अवम—पु०मलमास। तिथि·का क्षय। वि० अधम।
अवमत—वि० अपमान किया-हुआ।
अवमर्द—पु० देश के उपद्रव-आदि से उत्पन्न संकट।
अवमर्दन—पु०दुःख। दलन।
अवमर्षण—पु० लोप।
अवमान—पु० अपमान, दुर्नाम।
अवमानना—स्त्री० अनादर।
अवमूर्द्ध—पु० अधः शिर।
अवयव—पु० अंश, भाग।
अवयवी—वि० बहुत से अव-यव वाला। संपूर्ण। पु० शरीर। देश।
अवर—वि० कनिष्ठ। क्षुद्र। पु० हाथी के पिछले भाग का नाम।
अवरज ४—पु० छोटा भाई।
अवरत—वि० अलग।
अवरति—स्त्री० निवृत्ति।
अवरवर्ण—पु० शूद्र।
अवराधक—पु० उपासक।
अवराधन—पु० उपासना।
अवरीण—वि० निन्दित।
अवरुद्ध ४—वि० रुका हुआ।
अवरूढ़—त्रि० उतरा हुआ।

अवरेखना—सक्रि० लिखना। देखना। कल्पना करना।
अवरेब—पु० तिरछी-चाल। उलझन।
अवरोध अवरोधन—पु० रुकावट। अनुरोध। अन्तःपुर।
अवरोधक१४—पु० रोकनेवाला।
अवरोधी ५—वि० अवरोध-करने वाला।
अवरोपण—पु० उन्मूलन।
अवरोहन—पु० उतार। अवनति।
अवरोहक—वि० उतरने-वाला।
अवरोहण—पु० नीचे की ओर जाना। पतन।
अवरोहना—अक्रि० उतरना। चढ़ना।
अवरोहित—वि० पतित। [उतरा हुआ।
अवर्ण—वि० बुरे रंग का। पु० निन्दा, बुराई।
अवर्ण्य—वि० अवर्णनीय।
अवर्त्त—पु० भँवर। नांद।
अवर्षण—पु० अनावृष्ट।
अवलंघना—सक्रि० लांघना।
अवलंब न—पु० आश्रय।
अवलंबन—पु० सहारा।
अवलंबित—वि० निभर। आश्रित।
अवलक्ष—पु० सफ़ेद वर्ण।
अवलग्न—पु० कमर। वि० लगा हुआ
अवलिप्त—वि० पोता हुआ। तल्लीन। घमंडी।
अवली—स्त्री० पंक्ति। समूह।
अवलोक—वि० शुद्ध। निर्दोष।
अवलुंचित—वि० कटा हुआ।
अवलुंठन—पु० लोटना।
अवलेखना—सक्रि० खुरचना। लाइन खींचना। [घमंड
अवलेप, अवलेपन—पु० उबटन।
अवलेह—पु० चटनी।
अवलेह्य—वि० चाटने-योग्य।
अवलोकन६—पु० देखना। जाँच। [दृष्टि।
अवलोकनि—स्त्री० चितवन,
अवलोकित—वि० जाँचा-हुआ। देखा हुआ। [करना।
अवलोचना—सक्रि० दूर-
अवाद—पु० आज्ञा।
अवश—वि० विवश।
अवशिष्ट—वि० शेष।
अवशेष—वि० बचा हुआ।
अवश्यभावी—वि० अवश्य-होने वाला।
अवश्य—क्रि० वि० ज़रूर। [ही।
अवश्यमेव—क्रि० वि० अवश्य-
अवश्याय—पु० पाला, हिम।
अवष्टब्ध—वि० आश्रित, बँधा हुआ।
अवसथ—पु० गाँव। छात्रा-लय। निवास-स्थान।
अवसन्न३—वि० दुःखी, उदास।
अवसर—पु० समय, मौक़ा।
अवसाद—पु० नाश। विषाद।
अवसान—पु० अंत। विराम। सायंकाल।
अवसित—वि० समाप्त। विदित।
अवसेख—वि० अवशिष्ट।
अवसेचन—पु० सींचना। पसीजना।
अवसेर—स्त्री० देर। क्लेश। चिंता। चाह। पु० प्रतीक्षा।
अवसेषित—वि० अवशिष्ट।
अवस्कर—पु० विष्ठा।
अवस्था—स्त्री० दशा। समय उम्र। गति।
अवस्थाता—पु० अधिष्ठाता।
अवस्थान—पु० स्थान।
अवस्थापन—पु० स्थापित-करना।
अवस्थित—वि० मौजूद।
अवस्थिति—स्त्री० स्थिति।
अवहार—पु० घड़ियाल, नाका।
अवहित—वि० विज्ञात।
अवहित्था—स्त्री० दुःखादि-छिपाना। छद्म वेष।
अवहेलना—स्त्री० तिरस्कार।
अवहेला—स्त्री० अनादर।
अवहेलित—वि० अपमानित।
अवाँ, अवा—पु० भट्टी।
अवांतर—वि० अंतर्गत। पु० मध्य। [जोताई।
अवाई—स्त्री० आना। गहरी-
अवाक्—वि० मौन। स्तब्ध।
अवाक्पुष्पी—स्त्री० सौंफ़।
अवागा—वि० चुप।
अवाग्र—वि० नीचे मुख-किये हुए। [शरमिंदा।
अवाङ्मुख—वि० अधोमुख।
अवाची—स्त्री० दक्षिण दिशा।
अवाच्य—वि० न कहने योग्य। नीच। पु० गाली।
अवाम—पु० बहु० (अ०) आम लोग।
अवाम-उन्नास—पु० आम लोग।
अवाय—वि० उद्धत। अनिवार्य।
अवायल—वि० (अ०) आरं-भिक, पहले का।

अवार—पु० इस पार। दूसरा किनारा।
अवारजा—पु० (अ०) जमा-बंदी। लेखा-बही।
अवारना—सक्रि० रोकना, मना करना। स्त्री० किनारा।
अवास—पु० वासस्थान।
अवि—पु० सूर्य्य। भेंडा। पर्वत। स्त्री० रजस्वला।
अविकल—वि० ज्यों का त्यों, पूर्ण। शांत।
अविकल्प—वि० निश्चित।
अविकारी५—वि० विकार-रहित। [हुआ।
अविकृत—वि० बिना बिगड़ा-
अविगत—वि० अज्ञात।
अविगीत—वि० प्रशंसा के-योग्य।
अविघ्न—पु० करौंदा।
अविचर—वि०स्थिर, अटल।
अविचल—वि० अचल।
अविचारी ५—वि० विचार-हीन। [लगातार।
अविच्छिन्न—वि० अटूट।
अविच्छेद—वि० विच्छेद-रहित, अटूट।
अविछीन—वि० अटूट।
अविज्ञ ३—वि० अनभिज्ञ।
अविज्ञात—वि० अनजाना।
अविज्ञेय—वि० न जानने-योग्य। [रक्षित।
अवित—वि० पाला हुआ।
अवितत—वि०अविस्तृत।
अवितथ—पु० यथार्थ।
अवितर्कित—वि० निश्चित।
अविद—वि० मूर्ख।
अविदग्ध—वि० अनभिज्ञ।
अविद्ध—वि० अनुपस्थित। भ्रष्ट। [अज्ञान।
अविद्या—स्त्री० मोह। माया।
अविनय—पु० ढिठाई।
अविनाशी५—वि० अक्षय। नित्य।
अविनीत४—वि० ढीठ।
अविबुध—वि० मूर्ख।
अविभक्त—वि० मिला हुआ।
अविभाज्य—वि० विभक्त-न करने योग्य। [पु०कनपटी।
अविमुक्त—वि०जो मुक्त न हो।
अविरत—क्रि० वि० निरंतर। वि०लगा हुआ। [न होना।
अविरति—स्त्री० निवृत्ति का-
अविरथा—क्रि० वि० वृथा।
अविरल—वि० मिला हुआ। घना, गाढ़ा।
अविराम—वि० बेरोक।
अविरुद्ध—वि० अनुकूल।
अविरोध—पु० अनुकूलता, मेल।
अविलंबित—क्रि० वि० शीघ्र।
अविवादी—वि०मेली। शांत।
अविवाहित४—वि० कुँआरा।
अविवेक—पु० नासमझी।
अविवेकी५—वि० अज्ञानी।
अविशेष—वि० सामान्य।
अविश्रांत—वि० बिना थके-हुए। [का अभाव।
अविश्वास८—पु० विश्वास-
अविषय—वि० जिसका वर्णन न किया जा सके।
अविस्पष्ट—वि० अप्रकटित।
अविहड़—वि०अखंड। बीहड़।
अविहित—वि० अनुचित।
अवीचि—स्त्री० नर्क का-एक भेद। [रहित स्त्री।
अवीरा—स्त्री० वि० पति-पुत्र-
अवेक्षण८—पु० देखना, निरीक्षण करना। [देखना,
अवेक्षा—स्त्री० वस्तुओं का-
अवेक्षित—वि० देखा हुआ।
अवेज—पु० बदला। [का।
अवैतनिक—वि०बिना वेतन-
अवैदिक—वि० वेद-विरुद्ध।
अव्यक्त—वि० अप्रत्यक्ष। पु० ईश्वर। [गणित।
अव्यक्तगणित—पु० बीज-
अव्यक्तराग—वि० थोड़ा-लाल।
अव्यथा—स्त्री० हड़।
अव्यय—वि० विकार-रहित। पु० बिना खर्च का। व्याकरण में वह शब्द जिसका लिंग तथा वचन में कोई परिवर्तन न हो।
अव्याघात—वि० बेरोक।
अव्ययीभाव—पु० वह समास-जिसमें अव्यय का योग किसी शब्द के साथ हो।
अव्यर्थ—वि०सार्थक,अचूक।
अव्यवस्था—स्त्री० गडबड़ी।
अव्यवस्थित—वि० व्यवस्था-रहित।
अव्यवहार्य—वि० जो व्यवहार के योग्य न हो।कठिन।
अव्यवहित—वि० व्यवधान-रहित।
अव्याप्ति—स्त्री० लक्षण का पूरा-पूरा न बैठना।

अव्यावृत–क्रि०वि० निरंतर।
अव्याहत–त्रि० बेरोक।
अव्युत्पन्न—वि० अनाड़ी। व्युत्पत्ति-रहित (शब्द)।
अव्वल–वि० (अ०) पहला। प्रधान। श्रेष्ठ।
अशंक—वि० निर्भय।
अशंभु—पु० अमंगल।
अशआर—पु० बहु० (अ०) शेर, कविता। [शक्लें।
अशकाल—पु० बहु० (अ०)
अशकुन—पु० बुरा शकुन।
अशक्त—त्रि० असमर्थ।
अशक्य–वि० न होने योग्य।
अशख़ास—पु० बहु० (अ०) शख्स, मनुष्य।
अशजार—पु० बहु० (अ०) शजर, वृक्ष। [सख्त।
अशद–वि० (अ०) बहुत तेज़।
अशन—पु० भोजन।
अशनाया—स्त्री० भूख।
अशनायित—वि० भूखा।
अशनि—पु० बज्र।
अशम–पु० लोभ। अशान्ति।
अशर–पु०(अ०)दशवाँ भाग।
अशरण—त्रि० अनाथ।
अशरफ़—वि० (फ़ा०) बहुत-शरीफ़।
अशरफ़ी–स्त्री०(फ़ा०) मोहर।
अशरा–पु० (अ०) दस दिन।
अशराफ़—वि० बहु० (अ०) शरीफ़। [असंतुष्ट।
अशांत—वि० अस्थिर।
अशांति—स्त्री० असंतोष।
अशालीन—वि० धृष्ट।
अशिक्षित—वि० अनपढ़।
अशित—वि० भोजन किया-हुआ।
अशिया–स्त्री०(अ०)शै,चीज़।
अशिर—पु० हीरा। अग्नि। सूर्य।
अशिरस्क—पु० धड़।
अशिश्विका, अशिश्वी–स्त्री० संतानहीन स्त्री।
अशिष्ट३—वि० उजड्ड। असभ्य [ग़लत।
अशुद्ध३—त्रि० अपवित्र।
अशुद्धि—स्त्री० ग़लती।
अशुन–पु० अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ—पु० अमंगल।
अशेष–वि० समूचा। बहुत।
अशोक—वि० दुःख-शून्य। पु० एक पेड़।
अशौच—पु० अपवित्रता।
अश्क—पु० (फ़ा०) आँसू।
अश्ग़ाल—पु० (अ०) बहु० शग़ल।
अश्मंत—पु० चूल्हा। [मेघ।
अश्म—पु० पत्थर। पर्वत।
अश्मकुट्ट—पु० वानप्रस्थ-संन्यासियों की एक क़िस्म।
अश्मगर्भ—पु० पन्ना।
अश्मज–पु० गेरू। शिलाजीत।
अश्मपुष्प–पु० शिलाजीत।
अश्मरी—स्त्री० पथरी रोग।
अश्मसार—पु० लोहा।
अश्रद्धा—स्त्री० अभक्ति।
अश्रय—पु० राक्षस।
अश्रांत—वि० जो थका न हो। क्रि० वि० लगातार।
अश्राव्य—वि० सुनने के
अश्रि–स्त्री० धार। पैनापन।
अश्रु—पु० आँसू।
अश्रुत—वि० बिना सुना हुआ। अप्रसिद्ध।
अश्रुपात—पु०आँसू गिराना।
अश्रुमुख–वि०रुआँसा (चेहरा)।
अश्लिष्ट—वि० असंबद्ध।
अश्लील ३—वि० भद्दा।
अश्लेषा–स्त्री० एक नक्षत्र।
अश्व ४—पु० घोड़ा।
अश्वकर्णक—पु० सालवृक्ष।
अश्वगंधा—स्त्री० असगंध।
अश्वतर ७—पु० नागराज। खच्चर।
अश्वत्थ–पु०पीपल।[के पुत्र।
अश्वत्थामा—पु०द्रोणाचार्य-
अश्वपति—पु० रिसालदार।
अश्वपाल—पु० साईस।
अश्वमेध—पु०प्राचीन समय का एक यज्ञ जिसमें जय-पत्र बाँध कर घोड़ा छोड़ जाता था।
अश्वमेधीय—वि० वह घोड़ा जिसका एक कान काला व सारा अंग उजला हो।
अश्वयुक्–पु०अश्विनीनक्षत्र।
अश्वशाला–स्त्री० अस्तबल।
अश्वसेन–पु०तक्षक का पुत्र।
अश्वाभरण—पु० घोड़ों का गहना। [घुड़सवार।
अश्वारोह,अश्वारोही—वि०
अश्विन–पु०अश्विनीकुमार।
अश्विनी—स्त्री० घोड़ी। एक नक्षत्र।
अश्विनीकुमार,अश्विनीसुत–

अश्वीय—पु० घोड़ों का समूह ।
अषाढ़—पु० आषाढ़ मास ।
अष्टंगी—वि० आठ अंग वाला ।
अष्ट—वि० आठ ।
अष्टक—पु० आठ का संग्रह ।
अष्टदल—पु० आठ पत्ते का-कमल । [से बना हुआ ।
अष्टधाती—वि० आठ धातुओं
अष्टधातु—स्त्री० सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, राँगा, सीसा, पारा, जस्ता, (आठ धातुएँ) ।
अष्टपटल—वि० अठपहला ।
अष्टपदी—स्त्री० आठ पद का गीत ।
अष्टप्रकृति—स्त्री० राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी—सुमंत्र । मंत्री । विद्वान् । सर्दार । न्यायाधीश । प्रतिनिधि । अमात्य । सचिव ।
अष्टभुजा—स्त्री० दुर्गा ।
अष्टम—वि० आठवाँ ।
अष्टमी—स्त्री० आठवीं तिथि ।
अष्टांग ८—पु० योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि । प्राणायाम, के आठ अंगः—जानु, चरण । हाथ, छाती, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि । वि० आठ-अवयवों वाला । [का मंत्र ।
अष्टाक्षर—पु० आठ अक्षरों-
अष्टादश—वि० अठारह १८
अष्टापद—पु० सोना । मकड़ी । धतूरा । सिंह । कृमि ।
अष्टावक्र—पु० एक ऋषि ।
अष्टि—स्त्री० गुठली । बीज ।
अष्ठीवत्—पु० जानु, घुटना ।
असंख्य—वि० अनगिनत ।
असंख्यात—वि० बेशुमार ।
असंग—वि० अकेला । निर्लिप्त ।
असंगत—वि० बे ठीक ।
असंगति—स्त्री० बेसिलसिलापन ।
असंतुष्टि—स्त्री० असंतोष ।
असंबद्ध—वि० बेमेल ।
असंभव—वि० नामुमकिन ।
असंभार—वि० अपार । विशाल । [सम्भावना-रहित ।
असंभावित—वि० अप्रतिष्ठित ।
असंभाव्य—वि० अनहोना ।
असंभाष्य—वि० न कहे जाने योग्य ।
असंयत—वि० संयम-रहित ।
अस—वि० ऐसा । [होना ।
असकताना—अक्रि० आलसी-
असकृत्—क्रि० वि० बार-बार ।
असक्त—वि० दे० 'आसक्त' ।
असगंध—पु० एक दवा ।
असगुन—पु० अपशकुन ।
असती—स्त्री० कुलटा, छिनाल ।
असत्—वि० सत्ता-रहित । बुरा ।
असत्य ३—वि० मिथ्या ।
असद—पु० (अ०) शेर, सिंह ।
असनाद—स्त्री० बहु० (अ०) सनदें, प्रमाणपत्र ।
असब—पु० (अ०) शरीर का अगला भाग ।
असबर्ग—पु० (फ़ा०) खुरासान की रेशम रँगने वाली घास ।
असबाब—पु० (अ०) सामान । बहु० सबब, कारण ।
असबाबेख़ानादारी—पु० (अ०) गृहस्थी का सामान ।
असभई—स्त्री० असभ्यता ।
असभ्य ३—वि० अशिष्ट ।
असमंजस—स्त्री० दुविधा ।
असमंत—पु० चूल्हा ।
असम—वि० जो सम न हो ।
असमत—पु० (अ०) सतीत्व, पवित्रता ।
असमतफ़रोशी—स्त्री० सतीत्व-बेचना, व्यभिचार ।
असमय—क्रि० वि० बेमौक़ा ।
असमर्थ—वि० सामर्थ्य हीन ।
असमशर—पु० कामदेव ।
असमीक्ष्यकारी—पु० बिना विचारे कार्य करने वाला-व्यक्ति ।
असयाना—वि० सीधा सादा । मूर्ख । भोला ।
असर—पु० (अ०) प्रभाव ।
असरार—क्रि० वि० निरंतर । पु० (अ०) भेद । गुप्त बातें । बहु० सिर ।
असल—वि० (अ०) सच्चा । पु० जड़ । मूलधन ।
असलह—पु० (अ०) शस्त्र ।
असलहख़ाना—पु० शस्त्रागार ।
असला—क्रि० वि० ज़रा भी, हरगिज़ । [सच्चाई ।
असलियत—स्त्री० (अ०)
असली—वि० (अ०) खरा, शुद्ध ।
असलेऊ—वि० असहनीय ।
असवार—पु० सवार ।

असह—वि० असह्य।
असहनशील—वि० असहिष्णु।
असहनीय—वि० न सहने-योग्य।
असहयोगन—पु० मिलकर काम न करना। साथ न देना।
असहाय—वि० निःसहाय।
असहिष्णु—वि० चिड़चिड़ा।
असही—वि० ईर्ष्यालु।
असह्य—वि० न सहने योग्य।
असाँच, असा—वि० झूठा।
असाढ़ी—वि० असाढ़ का। स्त्री० खरीफ़ फ़सल।
असाधारण—वि० ग़ैरमामूली, विशेष।
असाध—वि० असाधु। बुरा।
असाध्य—वि० कठिन।
असामयिक—वि० जो ठीक-समय पर न हो।
असामी—पु०(अ०) व्यक्ति। काश्तकार। जिससे लेन-देन किया जाता हो। मुद्दालेह।
असार—वि० निःसार। तुच्छ।
असालत—स्त्री०(वि०) असलियत, सच्चाई।
असालतन—क्रि० वि० खुद, स्वयं।
असावधानता, असावधानी—स्त्री० लापरवाही।
असावरी—स्त्री० एक रागिनी।
असास—स्त्री०(अ०) बुनियाद
असि—स्त्री० तलवार, खड्ग।
असिक्नी—स्त्री० रनिवास की जवान सेविका।
असित—वि० दुष्ट। काला।
असिद्ध—वि० अप्रमाणित।
असिद्धि—स्त्री० अप्राप्ति। असफलता।
असिव—वि० अशुभ।
असिधेनुका, असिपुत्री—स्त्री० छुरी, चाकू।
असिपुच्छ—पु० मगर।
असिस्टेंट—वि० (अं०) सहायक।
असिहेति—पु० तलवार से-लड़ने वाला।
असीम—वि० बेहद।
असीर—वि० (फ़ा०) क़ैदी।
असीरी—स्त्री० (फ़ा०) क़ैद-होना।
असील—वि०(अ०) खरा, सुशील।
असीसना—सक्रि० आशीर्वाद-देना।
असु—पु० प्राण। अश्व। चित्त। क्रि० वि० शीघ्र।
असुग—वि० शीघ्रगामी। पु० वायु। तीर।
असुधारण—पु० जीवात्मा।
असुर—पु० राक्षस।
असुराई—स्त्री० नीचता।
असुरारि—पु० देवता। विष्णु।
असुविधा—स्त्री० कठिनाई।
असुहाती—वि० स्त्री० बुरी।
असूझ—वि० अँधेरा। अपार।
असूत—वि० विरुद्ध।
असूया—स्त्री० ईर्ष्या, जलन।
असूक्षण—पु० अनादर।
असूर्यपश्या—वि० जिसको सूर्य भी न देख सके। कठिन परदे में रहने वाला।
असृक्—पु० रुधिर, खून।
असृग्धरा—स्त्री० चर्म, खाल।
असेचनक—वि० बहुत सुंदर।
असेसर—पु० वह व्यक्ति जो फ़ौजदारी के मुक़दमे में राय देने के लिए चुना जाता है।
असैंज्ञा—वि० कुमार्गी।
असोच—वि० निश्चिंत।
असोज—पु० आश्विन मास।
असोस—वि० न सूखने वाला।
असौंध—पु० दुर्गंधि, बदबू।
असौम्यस्वर—पु० रुक्षस्वर वाला (कौआ आदि)।
अस्कर—पु० (अ०) सेना, फ़ौज।
अस्तंगत—वि० अस्त को-प्राप्त, नष्ट।
अस्त—वि० छिपा हुआ। पु० अस्ताचल।
अस्तबल—पु०(अ०) घुड़साल।
अस्तमन—पु० अस्त होना।
अस्तमित—वि० डूबा हुआ। नष्ट।
अस्तर—पु० (फ़ा०) नीचे-की तह।
अस्तरकारी—स्त्री० पलस्तर।
अस्तव्यस्त—वि० तितर-बितर। विक्षिप्त।
अस्तावल—पु० सूर्यास्त-का स्थान।
अस्ति—स्त्री० भाव। सत्ता।
अस्ति अस्ति—अव्य० वाह-वाह। हाँ-हाँ।
अस्तित्व—पु० विद्यमानता।
अस्तु—अव्य० निन्दा पूर्वक-स्वीकार अर्थ का वाची, जो हो, खैर।
अस्तुति—स्त्री० अप्रशंसा।
अस्तेय—पु० चोरी का त्याग।
अस्तोक—वि० बहुत।

अस्त्र—पु० फेंक कर चलाया-जाने वाला हथियार।
अस्त्र-चिकित्सक—पु० जर्राह।
अस्त्रचिकित्सा—स्त्री० चीर-फाड़ का इलाज, सर्जरी।
अस्त्रवेद—पु० धनुर्वेद।
अस्त्रशाला—स्त्री० अस्त्र रखने-का स्थान।
अस्त्रागार—पु० अस्त्रशाला।
अस्त्री५—वि० हथियारबन्द।
अस्थायी—वि० जो स्थायी-न हो।
अस्थि—स्त्री० हड्डी।
अस्थिर—वि० चंचल।
अस्थिसार—पु० मज्जा।
अस्थून—वि० सूक्ष्म।
अस्थैर्य—पु० अधीरता, चंचलता। [का समय।
अस्नाय—पु० (अ०) बीच-
अस्पताल—पु० दवाखाना।
अस्पृश्य—वि० न छूने योग्य।
अस्फुट—वि० जो स्पष्ट न हो।
अस्फुटवाक्—वि० साफ़ न बोलने वाला।
अस्र—पु० रुधिर। पानी। आँसू। कोना। (अ०) समय।
अस्रप—पु० राक्षस। जोंक
अस्रु—पु० आँसू।
अंस्व—वि० निर्धन।
अस्वप्न—पु० देवता।
अस्वर—वि० रुक्षस्वर-वाला (कौआ आदि)।
अस्वस्थ—वि० रोगी।
अस्वाभाविक—वि० बनावटी।
अस्वीकार—पु० इनकार।
अस्वीकृत—वि० नामंज़ूर।

अस्सी—वि० ८०
अहं—सर्व० मैं।
अहंकार—पु० अभिमान।
अहंकारी५—वि० घमंडी।
अहंता—स्त्री० अहंकार। गर्व
अहंपद—पु० गर्व।
अहंमति—स्त्री० अज्ञान। अहंकार।
अहंमन्यता—स्त्री० अहंकार।
अहंयु—वि० अहंकारी।
अहंवाद—पु० डींग मारना।
अहक—स्त्री० इच्छा।
अहकना—अक्रि० इच्छा-करना। [तुच्छ।
अहक़र—वि० (अ०) अति-
अहकाम—पु० बहु० (अ०) आज्ञाएँ।
अहटाना—अक्रि० आहट-लगना। पता चलना।
अहतमाल—पु० (अ०) ख़तरा।
अहतिमाम—पु० (अ०) प्रबन्ध। [सावधानी।
अहतियात—स्त्री० (अ०)
अहथिर—वि० स्थिर।
अहद—पु० (अ०) प्रतिज्ञा।
अहदनामा—पु० (अ०) प्रतिज्ञा-पत्र।
अहदपैमान—पु० (अ०) क़रार। शासन। शासन-काल।
अहदशिकन—पु० अहदशिकनी—स्त्री० (अ०) प्रतिज्ञाभंग।
अहदियत—स्त्री० (अ०) एक-होना। [आलसी।
अहदी—वि० (अ०) बड़ा-
अहना—अक्रि० होना।

अहन्—पु० दिन।
अहनिसि—अव्य० दिनरात।
अहबाब—पु० बहु० (अ०) मित्रगण।
अहमक़—वि० (अ०) बेवकूफ़।
अहमहमिका—स्त्री० अपने मुँह से अपनी बड़ाई करना, मिथ्याभिमान।
अहमिति—स्त्री० अहंकार।
अहमेव—पु० गर्व, घमंड।
अहर—पु० पोखरा।
अहरन—स्त्री० (फ़ा०) निहाई।
अहरह—अव्य० प्रतिदिन।
अहरा—पु० कंडे का ढेर।
अहरी—स्त्री० हौज़। पौशाला।
अहर्निश—अव्य० दिन-रात।
अहर्पति—पु० सूर्य, भानु।
अहर्मुख—पु० प्रातःकाल।
अहल—वि० (अ०) सुशील। पु० व्यक्ति। स्वामी।
अहलकार—पु० कर्मचारी।
अहलना—अक्रि० हिलना।
अहलमद—पु० अदालत का एक कर्मचारी।
अहलिया—स्त्री० पत्नी। [सेवी।
अहलेक़लाम—पु० साहित्य-
अहलेख़ाना—पु० घर के लोग (बाल बच्चे आदि)। स्त्री० गृहिणी। [पंडित।
अहलेज़बान—पु० भाषा का-
अहल्या—स्त्री० गौतम ऋषि-की स्त्री।
अहवाल—पु० बहु० (अ०) समाचार। [नेक।
अहसन—वि० (अ०) बहुत-
अहसान—पु० कृतज्ञता।

अहस्कर—पु० सूर्य, भानु।
अहह—अव्य० खेद-सूचक।
अहाता—पु० (अ०) घेरा, बाड़ा। [चपकाना।
अहारना—सक्रि० खाना।
अहार्य—पु० पर्वत।
अहाली—पु० बहु० (अ०) साथ के लोग।
अहालीमवाली—पु० (अ०) साथ रहने वाले नौकर-चाकर आदि।
अहाहा—अव्य० हर्ष सूचक।
अहिंसा—स्त्री० किसी को दुःख न देना। हिंसा का अभाव।
अहिंस्र—वि० जो हिंसा न करे।
अहि—पु० साँप। वृत्रासुर।
अहिछार—पु० साँप का विष। [हानि।
अहित—वि० शत्रु। पु०
अहितुंडक—पु० सपेरा।
अहिनाथ—पु० शेषनाग।
अहिनी—स्त्री० सर्पिणी।
अहिफेन—पु० अफ़ीम।
अहिबेल—स्त्री० नाग-बेल। पान।
अहिभय—पु० अपने सहायकों (पक्षवालों) से उत्पन्न भय।
अहिभुक्—पु० मोर। [बेल'।
अहिवल्ली—स्त्री० दे० अहि-
अहिवात—पु० सोहाग।
अहिवाती—स्त्री० सोहागिन।
अहीर—पु० (स्त्री० अहीरिन) ग्वाला।
अहीश—पु० शेषनाग।
अहुटना९—अक्रि० हटना।
अहुठ—वि० साढ़े तीन।
अहेतु—वि० व्यर्थ। बिना-कारण।
अहेतुक—वि० दे० 'व्यर्थ'।
अहेर—पु० शिकार।
अहेरिया—पु० शिकारी।
अहेरी—पु० शिकारी।
अहो—अव्य० विस्मय अर्थ-का वाची।
अहोरात्र—पु० दिन-रात।
अहोरा-बहोरा—पु० विवाह की एक रीति। क्रि० वि० बार-बार।

२—आ

आँक—पु० अंक। चिह्न। अदद। अक्षर। मदार। लकीर। गोद। क्रि० वि० निश्चय ही। [हुक।
आँकड़ा—पु० अंक, अदद।
आँकना—सक्रि० अंदाज़ करना, परखना। [अधिक।
आँकर—वि० गहरा। बहुत-
आँकरी—स्त्री० वाण की नोक। अंकुश।
आँकुस—पु० अंकुश।
आँख—स्त्री० नेत्र। दृष्टि। ध्यान। विवेक। परख। कृपादृष्टि। संतान। मोरपंख।
आँखड़ा—स्त्री० दे० 'आँख'.
आँखमिचौनी, आँखमुँचाई—स्त्री० लड़कों का एक खेल।
आँखा—स्त्री० खुर्जी, थैला।
आँग—पु० अंग, शरीर।
आँगन—पु० अँगनाई, चौक।
आंगिक—वि० शरीर-संबंधी।
आंगिरस—पु० बृहस्पति।
आँगी—स्त्री० चोली।
आँगुर, आँगुल—पु० उँगली।
आँगुरिया—स्त्री० उँगली।
आँवा—स्त्री० मैदा छानने-की चलनी। [हानि।
आँच—स्त्री० आग। चोट।
आँचना—सक्रि० जलाना।
आँचर—पु० पल्ला, छोर।
आँजन—पु० अंजन।
आँजना—सक्रि० अंजन-लगाना।
आंजनेय—पु० हनुमानजी।
आँट—स्त्री० तर्जनी और अँगूठे के बीच की जगह। गाँठ। लाग-डाँट [समाना।
आँटना—अक्रि० दे० 'अँटना'।
आँट-साँट—स्त्री० साझा। साज़िश। [तृणों का पूला।
आँटी—स्त्री० सूत का लच्छा।
आँठी—स्त्री० मलाई आदि का लच्छा। गुठली। बीज।
आँड़ा—स्त्री० कंद। सिरा। गाँठ।
आँत—स्त्री० पेट के भीतर-की लंबी नली।
आँदू—पु० बेड़ी, बंधन।
आंदोलन—पु० हलचल, धूम।
आँध—स्त्री० रतौंधी। अँधेरा।
आँधना—अक्रि० ज़ोर से झपटना।

आँधारंभ—पु० अंधेर ।
आँधी—स्त्री० बहुत तेज़ हवा।
आँय-बाँय—स्त्री० व्यर्थ-की बात ।
आँब—पु० (फ़ा०) आम ।
आँव—पु० पेचिश का रोग।
आँवठ—पु० किनारा ।
आँवड़ना—अक्रि० उमडना ।
आँवल—स्त्री० गर्भ के बच्चे के चारों ओर की झिल्ली ।
आँवला—पु० एक पेड़ तथा उसके फल ।
आँवलासारगंधक—स्त्री० खूब-साफ़ की हुई गंधक ।
आँवाँ—पु० कुम्हार के बरतन पकाने का गड्ढा । [थोड़ा ।
आंशिक—वि० अंश-संबंधी।
आँस—पु० आँसू । कष्ट । सूत । रेशा ।
आँसी—स्त्री० भाजी, बैना ।
आँसू—पु० रोने में आँख से निकलने वाला पानी ।
आँहड़—पु० बरतन ।
आ*—अव्य० प्रायः गत्य-र्थक धातुओं के पहले लगने से उनके अर्थों को पलट देता है; जैसे आगमन, आनयन, आदान आदि । एक उपसर्ग ।
आइंदा—वि० (फ़ा०) आने-वाला । क्रि० वि० आगे । भविष्य में ।
आई—स्त्री० आयु ।
आईन—पु०(फ़ा०)क़ानून। नियम । सजावट ।
आईनबदी—स्त्री० राजा आदि के आगमन के समय नगर की सजावट आदि ।
आईना—पु० (फ़ा०) दर्पण ।
आईनासाज़ २—पु० शीशा बनाने वाला ।
आउ, आऊ—स्त्री० उम्र । आयु । [बाजा ।
आउज—पु० ताशा नामक-
आउबाउ—पु० निरर्थक-बकवाद ।
आकंपन—पु० काँपना ।
आकंपित—वि० कँपाया हुआ ।
आक—पु० मदार ।
आक़—पु० (अ०) माता-पिता- का द्रोही ।
आक़नामा—पु० अयोग्यपुत्र को उसके उत्तराधिकार से वंचित कराने का लेख या पत्र ।
आक़बत—स्त्री० (अ०) मरने के बाद की दशा । परलोक ।
आकबाक—पु० अंडबंड बात ।
आकर—पु० खानि । ख़ज़ाना । भेद । वि० श्रेष्ठ । दक्ष ।
आकरखना—सक्रि० खींचना ।
आकरिक—वि० खान खोदने-वाला ।
आकरी—स्त्री० खान खोदने का काम । व्याकुलता ।
आकर्ण—वि० कान तक ।
आकर्णचक्षु—पु० विशाल-नेत्र ।
आकर्ष—पु० खिंचाव, टान । नोंक । पासा । बिसात । चौपड़ । कसौटी। [पु० चुम्बक।
आकर्षक—वि० खींचने वाला ।
आकर्षण ६—पु० खिंचाव ।
आकर्षना—सक्रि० खींचना ।
आकर्षित—वि० खींचा हुआ ।
आकलन ६—पु० ग्रहण । संग्रह । संपादन । [संगृहीत।
आकलित—वि० सम्पादित ।
आकली—स्त्री० बेचैनी ।
आकल्प—पु० अलंकार द्वारा की गयी शोभा ।
आकस्मिक—वि० अचानक-होने वाला ।
आकांक्षा—स्त्री० इच्छा ।
आकांक्षित—वि० इच्छित ।
आकांक्षी ५—वि० इच्छुक ।
आक़ा—पु०(अ०) मालिक।
आकार—पु० शक्ल । बनावट । इशारा
आकारणा—स्त्री० बुलाना ।
आकारी ५—वि० बुलाने वाला ।
आकालिक—वि० बे मौसम का।
आकाश—पु० आसमान ।
आकाशकुसुम—पु० अन-होनी बात ।
आकाशगंगा—स्त्री० आकाश-में उत्तर-दक्षिण फैला हुआ-तारों का समूह । गङ्गानदी ।
आकाशजल—पु० ओस । मेह का पानी ।
आकाशदीप—पु० वह दीपक जो बाँस के सिरे पर बाँध-कर जलाया जाता है ।

नोट—*'आ' उपसर्ग शब्दों के पूर्व 'व्याप्ति, अवधि, ईषत् (थोड़ा) और अतिक्रमण' अर्थों में प्रयुक्त होता है; जैसे आजन्म, आसमुद्र, 'आपिंगल' आकालिक ।

आकाशबेल—स्त्री० अमरबेल।
आकाशभाषित—पु० नाटक के खेल में आकाश की ओर देखकर प्रश्नोत्तर करना।
आकाशमंडल—पु० आसमान का घेरा।
आकाशलोचन—पु० वह स्थान जहाँ से ग्रहों की गति देखी जाती है, मानमन्दिर।
आकाशवाणी—स्त्री० देववाणी। [दैवत-आमदनी।
आकाशवृत्ति—स्त्री० अनि।
आकाशी—स्त्री० चँदोवा। चाँदनी।
आकिंचन—पु० दरिद्रता।
आक़िब—वि० (अ०) पीछे आने वाला। सहायक।
आक़िल—वि० (अ०) बुद्धिमान्। [भरा हुआ।
आकीर्ण—वि० व्याप्त। पूर्ण।
आकुंचन—पु० सिकुड़न।
आकुंचित—वि० तिरछा। सिकुड़ा हुआ।
आकुंठन—पु० गुठला या कुंद होना। लज्जा।
आकुंठित—वि० कुन्द। लज्जित।
आकुल३—वि० कातर। घबराया हुआ [व्याप्त।
आकुलित—वि० व्याकुल।
आकूत—पु० अभिप्राय।
आकूति—स्त्री० उत्साह। आशय। [सूरत, शक्ल।
आकृति—स्त्री० बनावट।
आकृष्ट—वि० खींचा हुआ।
आक्रंद, आक्रन्दन—पु० रोना। चिल्लाना। चीखना।
आक्रम—पु० पराक्रम। चढ़ाई।
आक्रमण—पु० हमला। चढ़ाई। बलात्कार।
आक्रमित ४—वि० जिसपर आक्रमण किया गया हो।
आक्रांत-वि० जिस पर आक्रमण किया गया हो। विवश।
आक्रीड—पु० राजा का बाग़।
आक्रोश—पु० कोसना। किसी पुरुष या स्त्री से मैथुन के लिए वार्तालाप करना।
आक्रोशन—पु० कोसना।
आक्लांत—वि० दुःखी। श्रान्त।
आक्षारित—वि० लोकापवाद से दूषित। [निंदित।
आक्षिप्त—वि० फेंका हुआ।
आक्षीव—पु० सहँजना।
आक्षेप—पु० फेंकना। दोष लगाना। निन्दा। व्यंग्य।
आक्षेपक—वि० आक्षेप करनेवाला। निंदक।
आखंड—वि० संपूर्ण।
आखंडल—पु० इन्द्र।
आखः—पु० खंती, कुदाली।
आखत—पु० दे० 'अक्षत'।
आखता—वि० बधिया।
आखन—क्रि० वि० हर घड़ी।
आखना—सक्रि० कहना। देखना। चाहना।
आखर—पु० अक्षर।
आखा—पु० मैदा छानने की चलनी। वि० अक्षय। [झील।
आखात—पु० जलाशय।
आख़िज़—वि० (अ०) ग्रहण या उद्धृत करने वाला।
आख़िर—वि० (फ़ा०) अंतिम। पु० अंत। क्रि० वि० अंत में। [अंत में।
आख़िरकार—क्रि० वि०
आख़िरत—पु० (अ०) मृत्यु का दिन।
आख़िरी—वि० अंतिम।
आख़िरुल्अमर—वि० (अ०) अंतिम।
आखु—पु० चूहा।
आखुपाषाण—पु० चुम्बक-पत्थर। संखिया। [बिल्ली।
आखुभुक्—पु० बिलार,
आख़ून—पु० (फ़ा०) शिक्षक।
आखेट—पु० शिकार।
आखेटक—पु० शिकारी।
आखेटी५—पु० शिकारी।
आखोट—पु० अख़रोट।
आख़ोर—पु० (फ़ा०) घोड़ों के रहने का स्थान। कूड़ा-करकट।
आख़्ता—वि० (फ़ा०) वह जिसके अंडकोश चीर कर निकाले गये हों।
आख्या—स्त्री० नाम। यश।
आख्यात—वि० प्रसिद्ध। कहा हुआ।
आख्याति—स्त्री० शुहरत।
आख्यान—पु० वर्णन, कथा।
आख्यानक—पु० कथा, कहानी।
आख्यायिका—स्त्री० कथा, कहानी। उपन्यास।
आगंतु—पु० मेहमान।
आगंतुक—पु० अतिथि। वि०

आने वाला।
आग—स्त्री०अग्नि। जलन। ईर्ष्या। अपराध। पाप।
आगत४—वि० आया हुआ।
आगतपतिका—स्त्री० वह नायिका जिसका पति परदेश से वापिस आया हो।
आगत स्वागत—पु०सत्कार।
आगम—पु० आगमन। भविष्यकाल। वेद। शास्त्र।
आगमजानी, आगमज्ञानी—वि० भविष्य की जानने-वाला।
आगमन—पु० आना।
आगमपायी५—वि०नश्वर।
आगमवाणी—स्त्री० भविष्य-वाणी। [विद्या।
आगमविद्या—स्त्री० वेद-
आगमसोची—वि० अग्रसोची।
आगमी ५—पु० ज्योतिषी।
आगर ७—पु० खान। समूह। कोष। घर। वि० चतुर।
आगरी—पु० लोनिया।
आगल—पु० ब्योंड़ा। वि० अगला।
आगलांत—वि० गले तक।
आगवन—पु० आना।
आगा—पु० आगे का भाग। भविष्य। छाती। आँचल। परिणाम।
आगा—पु० (तु०) मालिक। प्रतिष्ठित। क़ाबुलिया।
आग़ाज़—पु०(फ़ा०)आरंभ।
आगान—पु० प्रसंग, हाल।
आगापीछा—पु० हिचक। दुविधा। नतीजा। [भविष्य।
आगामी ५—वि० भावी।
आगार—पु०घर। ख़ज़ाना। स्थान।
आगाह—वि० (फ़ा०) वाक़िफ़ पु० होनहार।
आगाही—स्त्री० (फ़ा०)परिचय, ज्ञान। पहले से मिलने वाली सूचना।
आगि, आगी—स्त्री० अग्नि।
आगिल—वि०,दे०'अगला'।
आगिवर्त्त—पु० बादल-विशेष।
आगू—क्रि० वि० आगे।
आगे—क्रि० वि० सामने। भविष्य में। बाद। पहले।
आग्नीध्र—पु० यज्ञ। अग्नि-रखने का स्थान।
आग्नेय७—वि० अग्नि-संबंधी। जलाने वाला। पु० सुवर्ण। रुधिर। कार्त्तिकेय। ज्वालामुखी पर्वत। बारूद।
आग्नेयास्त्र—पु० वह अस्त्र जिसमें से अग्नि निकले।
आग्नेयी—स्त्री० पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।
आग्रह—पु० हठ। तत्परता।
आग्रहायण—पु० अगहन।
आग्रहायणी—स्त्री० मृगशिरा।
आग्रही ५—पु० हठी। ज़िद्दी।
आघ, आघु—पु० मूल्य।
आघरस—पु० शृङ्गार।
आघात—पु० चोट। प्रहार।
आघार—पु० धूप। घृत। हवि। छिड़काव।
आघूर्ण—वि०हिलता हुआ।
आघूर्णन—पु० घूमना, फिरना।
आघूर्णित—वि०घूमता हुआ।
आघोषण—पु० मुनादी। ऐलान। [अघाना।
आघ्राण—पु० सूँघना।
आघ्रात—वि० सूँघा हुआ।
आघ्रेय—वि०सूँघने के योग्य।
आचमन६—पु० जल पीना।
आचमनी—स्त्री० बहुत छोटा-चम्मच। [किया हुआ।
आचमित—वि० आचमन-
आचरज—पु० आश्चर्य।
आचरण६—पु० व्यवहार, चलन। [करना।
आचरना—अक्रि० आचरण-
आचरित—वि० किया हुआ। व्यवहृत।
आचान—क्रि० वि० अचानक।
आचाम—पु० भात का माँड़।
आचार११—पु० व्यवहार। चलन। चरित्र।
आचारवान्—वि० शुद्ध-आचारका।[सहन।शुद्धाचरण।
आचार-विचार—पु० रहन-
आचारी५—वि० चरित्रवान्। पु०आचार्य। [र्याणी,गुरु।
आचार्य४—पु० (स्त्री०) आचा-
आचिंत्य—वि० चिंतन में न आने योग्य। ईश्वर।
आचित—पु० गाड़ी भर-बोझ। दस भारों की तौल।
आच्छन्न—वि० छिपा हुआ।
आच्छादक१४—पु०ढकने वाला।
आच्छादन—पु० ढकना।

छिप जाना। वस्त्र।
आच्छादित–वि०ढका हुआ।
आच्छोदन—पु०शिकार।
आछत—क्रि०वि०रहते हुए।
आछना—अक्रि० रहना।
आछा४—वि० अच्छा।
आज—पु०(अ०)हाथी-दाँत।
क्रि० वि० वर्त्तमान दिन।
आजक–पु०बकरों का समूह।
आजकल—क्रि० वि० इस समय।
आजगव—पु० शिव-धनुष।
आजन्म–क्रि०वि० जन्म भर।
आज़मंद—वि० (फ़ा०) लालची [बड़ा।
आज़म—वि० (अ०) बहुत·
आज़मा—वि० (फ़ा०) आज़माने वाला।
आज़माइश—स्त्री० (फ़ा०) जाँच परीक्षा, परख।
आज़माना–सक्रि० परखना।
आज़मूदा—वि० (फ़ा०) परीक्षित। [अनुभवी।
आज़मूदाकार—वि० (फ़ा०)
आजा ७—पु० बाबा।
आज़ा—पु० (अ०) शरीर के हिस्से और जोड़।
आज़ाएतनासुल—पु० (अ०) पुरुषेन्द्रिय, लिंग। [निडर।
आज़ाएरईसा—पु० (अ०) हृदय,मस्तक,जिगर आदि।
आज़ाद–वि० (फ़ा०)स्वतंत्र।
आज़ादी—स्त्री० स्वतंत्रता।
आजानु–वि०घुटने तक लंबा।
आजानेय—पु० अच्छी नस्ल का घोड़ा।

आज़ार–पु०(फ़ा०) बीमारी।
आजि–स्त्री० युद्ध, लड़ाई।
आज़िज़ २—वि० (अ०) परेशान।
आजीव—पु० जीविका।
आजीवन—क्रि०वि० जीवन-पर्यंत।
आजीविका—स्त्री० रोज़ी।
आजीवी—वि० उपजीवी
आज़ुर्दगी—स्त्री० (फ़ा०) रंज। दुःख। नाराज़गी।
आज़ुर्दह–वि०(फ़ा०)दुःखी।
पु०नरकमें ज़बर्दस्ती फेंकना।
आजू—वि० अवैतनिक।
आज्ञप्ति—स्त्री० आज्ञा।
आज्ञा—स्त्री० हुक्म।
आज्ञाकारी ५—वि० आज्ञा-मानने वाला। [उदूली।
आज्ञातिक्रम—पु० हुक्म-
आज्ञापक–वि०(स्त्री०)आज्ञा-पिका)। आज्ञा देने वाला।
आज्ञापत्र—पु०हुक्मनामा।
आज्ञापन—पु० जताना।
आज्ञापालन—पु० आज्ञानु-सार काम करना। [हुआ।
आज्ञापित—वि० जताया·
आज्य—पु० हवि घृत।
आटना—सक्रि० दबाना।
आटा—पु० पिसान, चून।
आटि, आटी—स्त्री० तीतर।
आटोप—पु० गर्व। फैलाव।
आठ—वि० ८।
आठें—स्त्री० अष्टमी।
आडंबर—पु० तड़क-भड़क। ढोंग। तम्बू। आनन्द। आच्छादन।

आड़—स्त्री० परदा। रक्षा।
आड़न—स्त्री० ढाल।
आड़ना—सक्रि० रोकना। गिरों रखना।
आड़बंद—पु० लंगोट।
आड़ा—वि० बेंड़ा, तिरछा।
आडि–स्त्री०हठ। [वि०रक्षक।
आड़ी—स्त्री० पक्ष, तरफ़।
आड़ू—पु० एक फल।
आढ—पु० सहारा, ओट।
आढक—पु०चारसेर परिमाण।
आढकिक—वि० ढक-सम्बन्धी।
आढकी—स्त्री० अरहर।
आढ़त—स्त्री० बिक्री करने-का काम।
आढ़तिया—वि० कुछ कमी-शन लेकर बेचने वाला।
आढ्य—वि० संपन्न। युक्त।
आणक—पु० आना।
आतंक—पु० रोब। भय।
आतंचन—पु० जावन (दूध में जमाने के लिए छोड़ा गया दही,मट्ठा आदि) वेग। तप करना।
आत–पु० सीताफल का पेड़।
आततायी५—पु० ज़ालिम।
आतप—पु० धूप। गर्मी।
आतपत्र—पु० छाता।
आतपी–पु०सूर्य। वि०धूप का।
आतर–पु० उतराई, खेवाई।
आतर्पण—पु० पीडन। तृप्ति।
आतशक—पु० गर्मी का रोग।
आतशज़नी—स्त्री० (फ़ा०) आग लगाने का काम।
आतशदान—पु० (फ़ा०)

अँगीठी। [अग्निपूजक।
आतशपरस्तर—वि० (फ़ा०)
आतशबाज़ी—स्त्री० (फ़ा०) बारूद के बने हुए खिलौनों का जलना।
आतशी—वि०अग्नि-संबंधी।
आतापि—स्त्री० चील।
आतिथेय—पु० सत्कार की वस्तु। वि० सत्कार करने वाला, मिज़मान।
आतिथ्य—पु०मेहमानदारी।
आतिदेशिक—वि० दूसरे देश से प्राप्त।
आतिफ़—वि०(अ०)कृपालु।
आतिफ़त—स्त्री०(अ०) कृपा।
आतिश—स्त्री०(फ़ा०)आग। प्रकाश। क्रोध।
आतिशकदा—पु० (फ़ा०) अग्नि-मंदिर।
आतिशज़दगी—स्त्री०(फ़ा०) आग लगना। [क्रोधी।
आतिशमिज़ाजर—वि०(फ़ा०)
आतिशीशीशा—पु० (फ़ा०) वह शीशा जिस पर सूर्य की किरणें पड़ने से अग्नि पैदा होती है।
आतिशय्य—पु० ज़्यादती।
आतीपाती—स्त्री०लड़कों का एक खेल।
आतुर३—वि०(स्त्री०आतुरी) व्याकुल। दुःखी। अधीर। क्रि०वि०जल्दी। [का बाजा
आतोद्य—पु० एक प्रकार-
आत्तगर्व—वि० तिरस्कृत।
आत्मंभरि—वि०स्वार्थी। पेटू।
आत्म—वि० अपना।

आत्मगौरव—पु० अपनी बड़ाई।
आत्मघात—पु०अपनी हत्या।
आत्मघोष—पु० कौआ।
आत्मज४—पु०पुत्र। कामदेव।
आत्मज्ञान—पु० जीवात्मा-परमात्मा-विषयक ज्ञान।
आत्मतुष्टि—स्त्री० संतोष। आनंद। [त्याग।
आत्मत्याग—पु० स्वार्थ-
आत्मबोध—पु० आत्मज्ञान।
आत्मभू—वि०स्वयमेवउत्पन्न। पु० ब्रह्मा। विष्णु। महेश। कामदेव। [रक्षा।
आत्मरक्षा—स्त्री० अपनी-
आत्मरति—स्त्री०आत्मज्ञान।
आत्मवंचक—वि० कृपण। पापी। [समान।
आत्मवत्—वि० अपने-
आत्मविद्या—स्त्री०ब्रह्मविद्या।
आत्मसंयम—पु० इच्छाओं को वश में रखना।
आत्मसात—पु० पचाना। हड़पना।
आत्मसिद्धि—स्त्री० मोक्ष।
आत्महत्या—स्त्री० ख़ुदकुशी।
आत्महन्—वि० आत्मघात-करने वाला।
आत्मा—स्त्री०जीव। ईश्वर।
आत्मानुभव—पु० निजी-तजुरबा। [सम्मत।
आत्माभिमत—वि० आत्म-
आत्माराम—पु०तोता। जीव। ब्रह्म। आत्मज्ञानी।
आत्मिक ४—वि० आत्मा-सम्बन्धी। मानसिक।

आत्मीकृत—वि० अपनाया-हुआ। [रिश्तेदार।
आत्मीय४—वि०अपना। पु०
आत्मीयता—स्त्री०मित्रता।
आत्मोत्कर्ष—पु० अपनी-बड़ाई। [लिये स्वार्थ त्याग।
आत्मोत्सर्ग—पु० दूसरे के-
आत्मोद्धार—पु० मोक्ष, छुटकारा।
आत्यंतिक—वि०बहुत ज़्यादा।
आत्रेय—वि० अत्रि-गोत्र-वाला। दुर्वासा ऋषि।
आत्रेयी—स्त्री०रजस्वला स्त्री।
आथर्वण—पु० अथर्ववेद-का ज्ञाता।
आथि—स्त्री० पूंजी।
आद—पु०आदि।
आदत—स्त्री० (अ०) स्वभाव। अभ्यास।
आदतन्—क्रि०वि०आदत से
आदम—पु० (अ०) मनुष्यों का आदि पिता। आदमी।
आदमख़ोर—पु० मनुष्य-भक्षक।
आदमज़ाद—पु० (अ०) आदम की संतान।
आदमियत—स्त्री०मनुष्यता।
आदमी—पु०(अ०)मनुष्य।
आदर—पु० सम्मान।
आदरणीय—वि०आदरयोग्य।
आदरना—सक्रि० सम्मान-करना।
आदरभाव—पु० सत्कार।
आदरस—पु० आदर्श।
आदर्श—पु०दर्पण। नमूना।
आदानप्रदान—पु० लेनादेना।

आदाब—पु० बहु० (अ०) नमस्कार। शिष्टाचार।
आदि—वि० प्रथम। अव्य० वग़ैरह।
आदिक—अव्य० आदि।
आदिकारण—पु०मूल कारण।
आदितेय—पु० देवता।
आदित्य—पु०सूर्य। देवता।
आदित्यवार—पु० रविवार।
आदिदेव—पु० विष्णु।
आदिम—वि० पहला।
आदिल—वि०(अ०) न्यायी।
आदिष्ट—वि० आदेश पाया-हुआ। [अदरक।
आदी—वि० अभ्यस्त। स्त्री०
आदीनव—पु० क्लेश।
आदृत—वि० सम्मानित।
आदेय—वि० लेने-योग्य।
आदेश—१२—पु० आज्ञा। उपदेश।
आदौ—क्रि०वि० आदि में।
आद्यंत—क्रि० वि० शुरू से आख़िर तक।
आद्य—वि० पहला।
आद्यमाषक—पु० माशा।
आद्या—स्त्री० दुर्गा।
आद्यून—वि०मरभुखा।
आद्यापांत—क्रि० वि० दे० 'आद्यंत'।
आर्द्रा—स्त्री० एक नक्षत्र।
आधा—वि० किसी वस्तु के बराबर के दो भागों में से एक।
आधान—पु०स्थापन।गिरवीं। गर्भधारण।
आधार—पु० सहारा।
आधारी—वि० सहारे पर रहने वाला। साधुओं के टेकने की लकड़ी।
आधासीसी—स्त्री० आधे सिर का दर्द।
आधि—स्त्री०मानसिक-पीड़ा।
आधिक—वि० आधा।
आधिकारिक—पु०दृश्यकाव्य में मूल कथा-वस्तु।
आधिक्य—पु० अधिकता।
आधिदैविक—वि० दैवकृत।
आधिपत्य—पु० प्रभुत्व।
आधिभौतिक—वि० शरीरधारियों द्वारा प्राप्त।
आधिवेदनिक—वि० द्वितीय विवाह करने के प्रथम पहली स्त्री को दिया हुआ धन।
आधि-व्याधि—स्त्री० शारीरिक और मानसिक विपत्ति।
आधीन—वि०अधीन।
आधुनिक—वि०आज कल का।
आधूत—वि०कुपित। व्याकुल। पागल।
आधेक—वि०अधिक। लगभग आधा।
आधेय—वि०रखने-योग्य।
आधोरण—पु० महावत।
आध्मान—पु०पेट का अफरा।
आध्यात्मिक—वि० आत्मा-संबंधी। ब्रह्म और जीव-सम्बन्धी। [स्मरण।
आध्यान—पु०ध्यान। चिन्ता।
आध्वनीन—पु० पथिक।
आनंत्य—वि० असंख्य।
आनंद—पु० हर्ष, सुख।
आनंदन—पु० कुशल-प्रश्न-पूछने से प्राप्त हुआ आनंद।
आनंदना—अक्रि० आनंदित होना।
आनंदवन—पु० बनारस।
आनंदथु—पु०हर्ष।[का वस्त्र।
आनंद-पट—पु० नवोढा-
आनंद-मंगल—पु०अत्यानंद।
आनंद-संमोहिता—स्त्री०वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनन्द में मग्न हो।
आनंदित—वि० प्रसन्न।
आनंदी—वि०प्रसन्न,सुखी।
आन—स्त्री०मर्यादा। शपथ। घोषणा। हठ। शान। शर्म। वि० अन्य। [हुआ बादल।
आनक—पु०डंका। गरजता-
आनक-दुंदुभी—पु० बड़ा-नगाड़ा। वसुदेव।
आनत—वि० झुका हुआ।
आनतान—स्त्री० मर्यादा। असम्बद्ध बात। [जोड़ा हुआ।
आनद्ध—पु० नगाड़ा। वि०
आनन—पु० मुख।
आनन-फ़ानन—क्रि० वि० (अ०) तुरन्त। [द्वारका।
आनर्त्त पु०नाचघर। युद्ध।
आनना—सक्रि० लाना।
आनन्त्य—वि०बहुत अधिक।
आनबान—स्त्री० सजधज। ठसक।
आनयन—पु० लाना। उपनयन संस्कार।
आनर—पु०(अं०) प्रतिष्ठा।
आनरेबिल—वि० (अं०) सम्माननीय।
आनरेरी—वि० (अं०)अवैतनिक। संमानित।

आनर्त्त—पु० नाचघर। युद्ध।
आनर्त्तक—वि० योद्धा। नृत्यशाला का स्वामी।
आना—अक्रि० पहुँचना। प्राप्त होना। उत्पन्न होना। आमदनी होना। पु० रुपये का सोलहवाँ भाग।
आनाकानी—स्त्री० टालमटूल।
आनाय—पु० जाल।
आनाह—पु० मलबद्ध रोग।
आनि—स्त्री० दे० 'आन'।
आनी-जानी—वि० अस्थिर।
आनीत—त्रि० लेआया हुआ।
आनुकूल्य—पु० अनुकूलता।
आनुगत्य—पु० अनुगामी होना, अनुसरण।
आनुपूर्व—वि० क्रमागत।
आनुपूर्वी—स्त्री० परिपाटी। एक के बाद दूसरा।
आनुमानिक—त्रि० अन्दाज़न्।
आनुवंशिक—वि० परंपरागत। खानदानी।
आनुश्रविक—वि० जिसे परंपरा से सुनते चले आये हों।
आनुषंगिक—वि० गौण। अप्रधान। प्रसंगाधीन।
आनेता—पु० लेआने वाला।
आन्तारक—वि० अन्तःकरण-संबंधी, मानसिक।
आन्धासक—पु० रसोइया।
आन्वीक्षिकी—स्त्री० तर्कविद्या। न्याय।
आप—सर्व० स्वयं (तीनों पुरुषों में प्रयुक्त होता है) पु० जल। ईश्वर।
आपक्व—पु० मुरमुरा। वि० तला हुआ।
आपगा—स्त्री० नदी।
आपण—पु० बाज़ार। दूकान। प्रचलन। व्यवहार।
आपणिक—पु० दूकानदार।
आपत्ति—स्त्री० दुःख। उज्र।
आपथ—पु० छोटा मार्ग। कुमार्ग।
आपद, आपदा—स्त्री० विपत्ति।
आपद्धर्म—पु० विपत्ति-काल का धर्म या व्यवसाय।
आपन—सर्व० अपना। पु० अपनापन।
आपनपो—पु० आत्मभाव।
आपना—सक्रि० देना। मढ़ना।
आपनिक—पु० पन्ना। नीलमणि। इन्द्र।
आपनिधि—पु० समुद्र।
आपन्न—वि० विपत्ति-ग्रस्त।
आपन्नसत्वा—स्त्री० गर्भिणी।
आपमित्यक—पु० वायदे पर ली हुई वस्तु।
आपया—स्त्री० नदी। [ईश्वर।
आपरूप—वि० साक्षात्। पु०
आपरेशन—पु० (अं०) चीर-फाड़।
आपस—पु० संबंध।
आपस्तंब—पु० एक ऋषि।
आपा—पु० अहंकार। सुध-बुध। स्वत्व।
आपाक—पु० पँजावा।
आपात—पु० पतन। अंत।
आपाततः—क्रि० वि० अकस्मात्। निदान। [सिर तक।
आपादमस्तक—वि० पैर से-
आपाधापी—स्त्री० अपनी-अपनी चिंता। खींचातानी।
आपान—पु० शराब पीने का स्थान अथवा शराबियों का समूह।
आपापंथी—वि० स्वेच्छाचारी। कुमार्गी।
आपिंगल—त्रि० थोड़ा पीला।
आपिंजर—पु० स्वर्ण।
आपी—पु० पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।
आपीड़—पु० शिरोभूषण। मुकुट। [वि० मोटा। बड़ा।
आपीन—पु० गौ का स्तन।
आपु—सर्व० आप।
आपूपिक—पु० पुआ आदि बनाने वाला। पुओं का समूह।
आपूरना—अक्रि० भरना।
आपूर्त्ति—स्त्री० भली भाँति पूर्त्ति।
आपूष—पु० राँगा।
आपेक्षिक—वि० अपेक्षा रखने वाला, आश्रित।
आप्त—वि० प्राप्त। कुशल। प्रामाणिक। पु० ऋषि।
आप्तकाम—वि० पूर्ण काम।
आप्ति—स्त्री० प्राप्ति।
आप्य—पु० जल-विकार।
आप्यायन—पु० वृद्धि। संतोष। तर्पण। पौष्टिक वस्तु।
आप्यायित—वि० संतुष्ट, तृप्त।
आप्रच्छन्न—त्रि० परस्पर का कुशल-प्रश्न।
आप्लव—पु० स्नान। [भिगोना।
आप्लावन—पु० डुबाना।
आप्लावित—त्रि० भीगा हुआ।
आप्लुत—वि० स्नान किया-

हुआ, भीगा हुआ ।
आफ़त—स्त्री०(अ०)विपत्ति।
आफ़ताब—पु० (फ़ा०)सूर्य ।
आफ़ताबा—पु०(फ़ा०)टोंटी-दार लोटा ।
आफ़ताबी—वि०गोल । सूर्य-सम्बन्धी।पु०छोटा सायबान या उसारा । आतिशबाज़ी-विशेष ।
आफ़रीं—स्त्री० (फ़ा०) शाबाश । वाह-वाह ।
आफ़ाक़—क्रि० वि० (अ० बहु०) क्षितिज में। संसार के चारों ओर। पु० संसार
आफ़ात—स्त्री० बहु० (अ०) विपत्तियाँ [राज़ीख़ुशी ।
आफ़ियत—स्त्री० (अ०)
आफ़िस—पु०(अं०) दफ़्तर ।
आफ़ू—स्त्री० अफ़ीम ।
आबंध—पु० जुआ बाँधने की रस्सी, जोत ।
आब—स्त्री० (फ़ा०) चमक । पानी । शोभा । प्रतिष्ठा ।
आबकार—पु० (फ़ा०) शराब बनाने या बेचने वाला ।
आबकारी—स्त्री०(फ़ा०)शराब-ख़ाना । नशीली वस्तुओं का सरकारी महकमा ।
आबख़ाना—पु०(फ़ा०)पाख़ाने का स्थान । [तट ।
आबख़ोर—पु०(फ़ा०)किनारा,
आबख़ोरद—पु०(फ़ा०)अन्न-जल ।
आबख़ोरा—पु०(फ़ा०)पानी पीने का बर्तन, गिलास आदि ।
आबगार—पु० (फ़ा०)पानी का गड्ढा । तलैया ।
आबजोश—पु० (फ़ा०) मांस का शोरबा । [दमक ।
आबताब—स्त्री०(फ़ा०)चमक-
आबदस्त—पु०(फ़ा०)सौंचना।
आबदान—पु० (फ़ा०) पानी-रखने का पात्र ।
आबदाना—पु०(फ़ा०)जीविका।
आबदार२—वि० चमकदार ।
आबदीदा—वि० (फ़ा०) अश्रु-पूर्ण ।
आबद्ध—वि० बँधुआ, क़ैदी ।
आबनाए—स्त्री० जल डमरू मध्य ।
आबनूस—पु०(वि०)आब-नूसी , एक जंगली पेड़ जिस-के हीर की लकड़ी अधिक काली होती है । [सिंचाई ।
आबपाशी—स्त्री० (फ़ा०)
आबरू—स्त्री० (फ़ा०) प्रतिष्ठा ।
आबला—पु० (फ़ा०) फफोला, छाला [सोता ।
आबशार—पु०(फ़ा०)झरना,
आबहवा-स्त्री०(फ़ा०) जलवायु
आबाद—वि०(फ़ा०) बसा हुआ
आबादानी—स्त्री० (फ़ा०) बसावट । सभ्यता । वैभव
आबादी—स्त्री०(फ़ा०)बस्ती।
आबिद-पु०(अ०)भक्त। पुजारी
आबी—वि०(फ़ा०) फीका ।
आबेख़िज़्र, आबेबक़ा—पु० (फ़ा०) अमृत ।
आबेरवाँ—स्त्री०(फ़ा०)बहुत-बारीक मलमल । पु० बहता हुआ पानी
आबेज़र—पु०(फ़ा०)सोने का पानी,मुलम्मा । [पानी ।
आबेशोर—पु०(फ़ा०) खारा-
आबेहयात—पु०(फ़ा०)अमृत
आब्दिक—वि० वार्षिक ।
आभ—स्त्री० शोभा । पु०जल ।
आभरण—पु०(वि०आभरित)। गहना । परवरिश
आभा—स्त्री०कांति, शोभा ।
आभार—पु०भार । अहसान।
आभारी—वि० अहसानमन्द।
आभाषण—पु० कथन ।
आभास—पु०पता । झलक।
आभिचारक—वि०हिंसा कर्म का प्रयोग करने वाला ।
आभिजात्य—पु०कुलीनता । वि० अच्छे कुल में उत्पन्न
आभीर७—पु० अहीर ।
आभीरपल्ली—पु० अहीरों की नगरी ।
आभील—पु०शरीर की पीड़ा।
आभूषण—पु०गहना ।[हुए ।
आभूषित४—वि० गहनापहने-
आभोग—पु०सर्प का फन । परिपूर्णता । पद्य के बीच में कवि का नामोल्लेख ।
आभ्यंतर—वि० भीतरी ।
आभ्यंतरिक—वि०भीतरी ।
आभ्यासिक—वि० अभ्यास-कर्त्ता । [शाली ।
आभ्युदयिक—वि० सौभाग्य-
आमंत्रण—पु०निमंत्रण ।
आमंत्रित—वि० निमंत्रित ।
आम—पु० एक फल । वि० (अ०)जनसाधारण,जनता ।
आमख़ास—पु० राज-सभा।

आमगंधि—स्त्री० दुर्गंध ।
आमड़ा—पु० एक फल ।
आमद—स्त्री०(फ़ा०) आगमन
आमदनी—स्त्री० (फ़ा०) आय । आयान ।
आमदरफ़्त—स्त्री० (फ़ा०) आना जाना ।
आमनस्य—पु० मनोवेदना।
आमना—अक्रि० आना ।
आमना-सामना—पु० मुक़ाबला । [के समझने योग्य ।
आमफ़हम—वि० हर एक-
आमय—पु० रोग ।
आमयावी—पु० रोगी ।
आमरक्तातिसार—पु० आँव तथा लहू के साथ दस्त ।
आमरख—पु० क्रोध। [पर्यंत।
आमरण—क्रि० वि० मृत्यु-
आमर्दन—पु० मालिश करना।
आमर्दित—वि० मालिश किया हुआ ।
आमर्श—पु० परामर्श ।
आमर्षण—पु० क्रोध ।
आमलक—पु० आँवला ।
आमलकी—स्त्री० छोटी जाति का आँवला ।
आमला—पु० आँवला ।
आमवात—पु० आँव गिरने का रोग ।
आमशूल—पु० पेट का दर्द ।
आमातिसार—पु० आँव के कारण दस्तों का मरोड़ देकर होना ।
आमात्य—पु० मन्त्री ।
आमादगी—स्त्री० (फ़ा०) मुस्तैदी।
आमादा—वि०(फ़ा०)उद्यत।
आमान्न—पु० कच्चा अन्न ।
आमाल—पु०(अ०)करतूत ।
आमालनामा—पु० (अ०) नौकरों के चाल-चलन दर्ज करने का रजिस्टर ।
आमाशय—पु० पेट के भीतर भोजन पचने का स्थान ।
आमास—स्त्री०(फ़ा०)सूजन।
आमाहल्दी—स्त्री० एक प्रकार की हल्दी ।
आमिख—पु० दे० 'आमिष'।
आमिल—पु०(अ०) अमल-करने वाला । अधिकारी । कारीगर । [वस्तु ।
आमिष—पु० मांस । भोग्य-
आमिषाशी—वि० मांस-खाने वाला [आम ।
आमी—स्त्री० बहुत छोटा-
आमीन-अव्य०(अ०)तथास्तु। भगवान् ऐसाही करे । [हुए।
आमुक्त—वि० कवच पहने-
आमुख—पु० प्रस्तावना ।
आमूल—क्रि० वि० जड़ तक। बिल्कुल । पूर्ण रूप से ।
आमूदा—वि० (फ़ा०) सजा-हुआ । [हुआ ।
आमृष्ट—वि० मर्दन किया-
आमेज़—वि० (फ़ा० मिला-हुआ ।
आमेजना—सक्रि० मिलाना ।
आमेज़िश—पु० (फ़ा०) मिलावट ।
आमोख़्ता—पु० पाठ दुहराना।
आमोदन—पु० आनन्द । सुगन्धि ।
आमोद-प्रमोद—पु० भोग-विलास । हँसी-खुशी ।
आमोदित—वि० प्रसन्न ।
आम्नाय—पु० वेद । शास्त्र । उपदेश । अभ्यास । परंपरा।
आम्मः—वि०(अ०) सार्व-जनिक ।
आम्र—पु० आम (फल) ।
आम्रकूट—पु० अमरकंटक-पर्वत ।
आम्रेडन—पु० पुनरुक्ति ।
आम्रेडित—वि० बार-बार-कहा हुआ ।
आय—स्त्री० आमदनी ।
आयत—वि० विशाल । स्त्री० कुरान का वाक्य । पु० वह क्षेत्र जिसके आमने-सामने की भुजाएँ बराबर हों और चारों कोण समकोण हों ।
आयतन—पु० मकान, मन्दिर । लंबाई-चौड़ाई ।
आयति—स्त्री० भविष्य ।
आयत्त—वि० अधीन ।
आयत्ति—स्त्री० अधीनता ।
आयद—वि० (अ०) लागू ।
आयस—पु० लोहा ।
आयसी—वि० लोहे का बना। पु० कवच ।
आयसु—स्त्री० आज्ञा ।
आया—अव्य० (फ़ा०)क्या । स्त्री० दाई ।
आयात—पु० बाहर से आया-हुआ माल। वि० आया हुआ।
आयाम—पु० विस्तार ।
आयास—पु० परिश्रम ।
आयु—स्त्री० उम्र, अवस्था ।

आयुध—पु० हथियार ।
आयुधिक—वि०अस्त्रधारी ।
आयुधीय—वि० अस्त्रधारी ।
आयुर्बल—पु० उम्र ।
आयुर्वेद—पु० चिकित्सा-शास्त्र । [वेद का ।
आयुर्वेदीय—वि० आयु-
आयुष्कर—वि० आयुवर्द्धक ।
आयुष्काम—वि० दीर्घजीवी ।
आयुष्मान् १३—वि० दीर्घायु ।
आयुष्य—पु० अवस्था ।
आयोगव—पु० शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न । बढ़ई । [उद्योग । सामान ।
आयोजन४—पु०प्रबन्ध ।
आयोजित—वि० आयोजन-किया हुआ ।
आयोधन—पु० युद्ध ।
आरंभ—पु० शुरू ।
आर—पु० हठ । कोना । खराब लोहा । (अ०) शर्म ।
आरकूट—पु० पीतल ।
आरक्त—वि० लाल ।
आरचा—स्त्री० मूर्ति-पूजा ।
आरचेस्ट्रा—पु० (अ०) थियेटर आदि में दर्शकों के बैठने का खास स्थान ।
आरज—पु० आर्य । वि० श्रेष्ठ ।
आरज़ा—पु० (अ०) रोग ।
आरज़ी—वि० (अ०) अना-वश्यक ।
आरज़ू—स्त्री०(फ़ा०)इच्छा । विनय । [इच्छुक ।
आरज़ूमन्द—वि० (फ़ा०)

आरण्य—वि० बन का ।
आरण्यक७—वि० जंगली ।
आरत—वि० दुःखी ।
आरति—स्त्री० विरक्ति । दुःख । [मंगल-दीप ।
आरती—स्त्री० मंगल-स्तुति ।
आरद—पु० (फ़ा०) आरा ।
आरन—पु०जंगल । [ओर ।
आरपार—क्रि० वि० दोनों-
आरब्ध—वि०आरंभ किया-हुआ । [की चेष्टा ।
आरभटी—स्त्री०क्रोध आदि·
आरव—पु०शब्द । आहट ।
आरषी—वि० ऋषि-सबंधी ।
आरस—पु० आलस्य ।
आरसी—स्त्री० आईना ।
आरा७—पु० लकड़ी चीरने का औज़ार । [सजावट ।
आराइश—स्त्री० (फ़ा०)
आराकश—वि० आरा-खींचने वाला । [ज़मीन ।
आराज़ी—स्त्री०(अ०) खेत ।
आराति—पु० शत्रु ।
आराधक—वि० उपासक ।
आराधन४—पु० सेवा ।
आराधित—वि० पूजित ।
आराध्य—वि० सेव्य,पूज्य ।
आराबा—पु० (फ़ा०,बैल-गाड़ी ।
आराम—पु०उपवन । सुख । (फ़ा०) चैन, सुख ।
आरामगाह—पु० (फ़ा०) शयनगृह ।[मार । आलसी।
आरामतलब५—वि० सुकु-
आरालिक—पु० रसोइया ।
आराव—पु० शब्द ।

आरासता—वि०सुसज्जित ।
आरास्तगी—स्त्री०(फ़ा०) सजावट ।
आरास्ता—वि० सुसज्जित ।
आरि—स्त्री० ज़िद, हठ ।
आरिज़—वि०(अ०)उन्नति-शील । पु० गाल ।
आरिफ़—वि० (अ०) संतोषी । [मँगनी ।
आरियत—स्त्री० (अ०)
आरियती—वि० (अ०) मँगनी-माँगा हुआ ।
आरी—स्त्री० लकड़ी चीरने का दाँतिदार एक औज़ार । वि० (अ०) नंगा । शिथिल । [रोकना ।
आरूँधना— स्त्री० साँस-
आरूढ़—वि० चढ़ा हुआ ।
आरेस—पु० ईर्ष्या । [करना ।
आरोगना—सक्रि० भोजन-
आरोग्य३—वि० तन्दुरुस्त ।
आरोधना—सक्रि० रोकना ।
आरोप, आरोपण—पु० स्थापित करना । भ्रम । मँढ़ना । [लगाना ।
आरोपना—सक्रि० बैठाना ।
आरोपित४—वि० स्थापित-किया हुआ, लगाया हुआ ।
आरोप्य—वि०रोपने योग्य ।
आरोह—पु० चढ़ाव । आक्रमण । [सीढ़ी ।
आरोहण—पु० चढ़ना ।
आरोही५—वि० चढ़ने-वाला । सवार ।
आरोही-अवरोही—पु० चढ़ाव-उतार ।

आर्जव—पु० सरलता।
आर्ट—पु०(अं०) दस्तकारी।
आर्टिकल—पु०(अं०) लेख। वस्तु।
आर्टिस्ट—वि०(अं०) दस्तकार।
आर्डर—पु० (अं०) माँग। सिलसिला। आज्ञा।
आर्डिनरी—पु० (अं०) मामूली।
आर्डिनेंस—पु० (अं०) अस्थायी क़ानून।
आर्त३—वि० पीड़ित।
आर्तनाद-स्वर—पु० दुःख-सूचक-शब्द।
आर्त्तव—पु० स्त्री का रज। वि० सामयिक।
आर्त्ति—स्त्री० दुःख।
आर्त्विज्य—पु० ऋत्विज का काम।
आर्थिक—वि० धन-संबंधी।
आर्द्र—वि०गीला।
आर्द्रक—पु० अदरक।
आर्द्रा—स्त्री० नक्षत्र विशेष।
आर्म-पु० (अं०) हथियार।
आर्मपुलीस—स्त्री० (अं०) सशस्त्र-पुलिस।
आर्मी—स्त्री०(अं०) फ़ौज।
आर्य—वि० श्रेष्ठ। पूज्य।
आर्यपुत्र—पु० पति को पुकारने का शब्द।
आर्यमिश्र—वि० पूज्य।
आर्यसमाज—पु० स्वामी दयानंद जी द्वारा स्थापित आर्यों की एक संस्था।
आर्या—स्त्री० पार्वती। सास। दादी। पूज्या। एक छंद।
आर्यावर्त्त—पु० उत्तरी-भारत।
आर्ष—वि० ऋषि-संबंधी।
आर्षभ्य-वि० बधिया करने-योग्य।
आर्षविवाह-पु० एक प्रकार का विवाह जिससे कन्या का पिता वर से दो बैल लेता था।
आलंकारिक—वि०अलंकार-युक्त। चमत्कारिक। अलंकार के ज्ञाता।
आलंब, आलंबन—पु० सहारा।
आलंबित—वि० आश्रित।
आलंभ—पु०स्पर्श। वध।
आल—पु० झंझट। आँसू। हरताल। वंश। कद्दू। एक कीड़ा। लड़की की संतान।
आलकस—पु० आलस्य।
आलजाल—वि० अंडबंड।
आलन—पु०साग में मिलाया जाने वाला आटा आदि।
आलत—स्त्री० (अ०) औज़ार आदि। पुरुषेन्द्रिय।
आलना—पु० घोंसला।
आलपीन—स्त्री० एक घुंडी-दार सुई।
आलबाल—पु० थाला।
आलम—पु०(अ०) संसार। अवस्था, दशा। भीड़। एक नाच।
आलमगीर—वि० विजयी। विश्व-विजयी।
आलमेग़ैब—पु०(अ०) स्वर्ग।
आलमेबाला—पु० (अ०) स्वर्ग।
आलय—पु० स्थान। घर।
आलस—पु० सुस्ती।
आलसी—वि० सुस्त।
आलस्य—पु० सुस्ती।
आला—पु० (अ०) ताक़। वि० बड़ा। बढ़िया। श्रेष्ठ।
आलाइश—स्त्री० (फ़ा०) गन्दी वस्तु। शरीरस्थ-गन्दगी।
आलात—पु० (अ०) हथियार।
आलान—पु०बन्धन। हाथी का खूँटा।
आलाप१२—पु० बातचीत। तान।
आलापचारी—स्त्री० स्वर-साधना।
आलापना—सक्रि० गाना। सुर खींचना।
आलापिनी—स्त्री० बाँसुरी।
आलापी५—वि० बोलने-वाला। गायक।
आलारासी—वि० लापर-वाह। मौजी।
आलिंगन—पु० भेंटना।
आलिंगना—सक्रि० भेंटना।
आलिंग्य—पु० मृदंग।
आलि—स्त्री० सखी। भौंरी। पंक्ति। बिच्छू।
आलिखित—वि० लिखा-हुआ। चित्रित।
आलिम—वि० (अ०) विद्वान्। पंडित।
आलिमाना—वि० (अ०) विद्वानों का सा।
आली—स्त्री० सखी। पंक्ति। वि० (अ०) बड़ा, श्रेष्ठ।
आलीजनाब—वि० (अ०)

उच्चपदस्थ।
आलीजाह—वि० शानवाला।
आलीढ—पु० वाण छोड़ने के समय का आसन।
आलीशान—वि० (अ०) शानदार। विशाल।
आलु—स्त्री० कठौती।
आलुञायित—वि० बन्धन-रहित।
आलू—पु० एक कन्द।
आलूवा—पु० फल विशेष।
आलूदगी—स्त्री० (फ़ा०) अपवित्रता।
आलूदा—वि० (फ़ा०) बिलकुल सना हुआ।
आलूबुखारा—पु० सुखाया हुआ आलूवा।
आलेख—पु० लिखावट।
आलेख्य—पु० चित्र। वि० लिखने-योग्य। [कारी।
आलेख्यविद्या—स्त्री० चित्र-
आलेप, आलेपन—पु० लेप। पलस्तर। [दर्शन।
आलोक—पु० प्रकाश।
आलोकन—पु० देखना।
आलोचक—वि० देखने-वाला। आलोचना करने-वाला।
आलोचन४—पु० किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार।
आलोच्य—वि० आलोचना-योग्य। [विचार
आलोड़न—पु० मंथन।
आलोल—वि० चंचल।
आल्हर—वि० अला। ताज़ा।
आल्हा—पु० महोबे का एक प्रसिद्ध वीर। एक छन्द।
आवज—पु० ताशा नामक-बाजा।
आवटना—पु० अस्थिरता। सक्रि० गर्म करना।
आवन—पु० आगमन। [सत्कार।
आवभगत—स्त्री० आदर,
आवरण—पु० ढकना, परदा।
आवरणपत्र—पु० पुस्तक की जिल्द पर लगा कागज़।
आवरित—वि० ढँका हुआ।
आवर्जित—वि० छुटा हुआ।
आवर्त्त—वि० घूमा हुआ। पु० पानी का भँवर। चिन्ता। संसार। पानी न बरसाने वाला बादल।
आवर्त्तन—पु० चक्कर। घुमाव, फिराव।
आवर्दा—वि० (फ़ा०) कृपापात्र। [श्रेणी।
आवलि—स्त्री० पंक्ति,
आवश्यक३—वि० ज़रूरी।
आवश्यकीय—वि० ज़रूरी।
आवसथ—पु० भवन, गृह।
आवाँ—पु० बरतन पकाने की भट्टी। [जाना।
आवागमन—पु० आना-
आवाज़—स्त्री० (फ़ा०) शब्द।
आवाज़ा—पु० (फ़ा०) ताना, व्यंग्य। प्रसिद्धि।
आवाजाही—स्त्री० आवागमन। जन्म-मरण।
आवाप—पु० थाला।
आवारगी—स्त्री० (फ़ा०) आवारापन।
आवारजा—पु० जमा-खर्च-बही।
आवारा—वि० (फ़ा०) निकम्मा। व्यर्थ घूमने-वाला।
आवारागर्द—वि० निकम्मा।
आवाल—पु० थाला। स्त्री० पंक्ति, क़तार।
आवास—पु० निवास। [हुआ।
आवाहित—वि० बुलाया-
आवाहन—पु० बुलाना।
आवाहना—सक्रि० बुलाना।
आविद्ध—वि० भेदा हुआ। टेढ़ा, प्रेरित।
आविध—पु० बरमा।
आविर्भाव—पु० उत्पत्ति। प्रकाश।
आविर्भूत—वि० उत्पन्न।
आविल३—वि० गन्दा। कलुषित।
आविलता—स्त्री० गन्दगी।
आविष्कर्त्ता१०—पु० आवि-ष्कारक। [प्रचलन, ईजाद।
आविष्कार१२—पु० नवीन-
आविष्कृत—वि० आविष्कार-किया हुआ।
आविष्क्रिया—स्त्री० आविष्कार।
आविष्ट—वि० लीन। आवेशयुक्त।
आवुक—पु० पिता।
आवुद—वि० (फ़ा०) बनावटी। [लाया हुआ।
आवुर्दा—वि० (फ़ा०)
आवृत—वि० छिपा हुआ।
आवृत्ति—स्त्री० दुहराना।
आवेग—पु० जोश। घबराहट।
आवेगी—स्त्री० कृपापात्र।

विधारा।
आवेज़—वि० (फ़ा०) लटकता हुआ।
आवेज़ा—पु० (फ़ा०) कानों का लटकन विशेष।
आवेदक—वि० निवेदक।
आवेदन—पु० निवेदन।
आवेदनपत्र—पु० अर्ज़ी।
आवेद्य—वि० निवेदन करने-योग्य।
आवेश—पु० जोश। दौरा। प्रवेश। व्याप्ति। भूत-बाधा।
आवेशन—पु० शिल्पशाला।
आवेशिक—पु० मेहमान।
आवेष्टन—पु० छिपाना। लपेटन। ढकन। [डर।
आशंका—स्त्री० सन्देह।
आशंसा—स्त्री० प्रार्थना। इच्छा।
आशंसु—त्रि० इच्छाशील।
आशकार—वि० (फ़ा०) ज़ाहिर।
आशना—उभ०(फ़ा०)प्रेमी।
आशनाई—स्त्री० (फ़ा०) प्रेम। नाता। [इच्छा।
आशय—पु० अभिप्राय,
आशर—पु० राक्षस। अग्नि।
आशा—स्त्री० उम्मीद।
आशातीत—वि० आशा से अधिक। [आसक्त।
आशिक़र—वि० (अ०) प्रेमी।
आशिक़मिज़ाज—वि० (अ०) विनोदी।
आशिक़ाना—वि० (अ०) आशिक़ों की तरह का।
आशियाँ, आशियाना—पु० (फ़ा०) बसेरा। घोंसला।
आशिष—स्त्री० आशीर्वाद।
आशी—वि० भक्षक। स्त्री० हित की चाहना। साँप की दंष्ट्रा।
आशीर्वचन—पु०शुभवचन।
आशीर्वाद—पु० दुआ। आशीष।
आशीविष—पु०साँप।
आशु—क्रि० वि० शीघ्र।
आशुकवि—पु० वह कवि जो शीघ्र कविता बना ले।
आशुग—पु० वायु। बाण।
आशुतोष—वि० शीघ्र प्रसन्न-होने वाला। पु० महादेव।
आशुफ़्तगी—स्त्री० (फ़ा०) परेशानी, बेचैनी।
आशुफ़्ता—वि० (फ़ा०) परेशान।
आशोब—पु० (फ़ा०) व्याकुलता। सूजन।
आश्कार—वि० (फ़ा०) प्रत्यक्ष। स्पष्ट। [आम।
आश्कारा—क्रि० वि० खुले-
आश्चर्य—पु० अचम्भा।
आश्चर्यित—वि० चकित।
आश्रम—पु० कुटी। तपो-वन। ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम।
आश्रय—पु० सहारा।
आश्रयण—पु० सहारा।
आश्रयभूत—वि० शरण में आया हुआ।
आश्रयास—पु० अग्नि
आश्रव—पु० प्रतिज्ञा।
आश्रित—वि० भरोसे पर रहने वाला। अधीन।
आश्रुत—त्रि० अंगीकृत।
आश्लष—पु० आलिंगन।
आश्लेषण—पु० मेल।
आश्लेषा—पु० एक नक्षत्र।
आश्लिष्ट—वि० सटा हुआ।
आश्व—पु० घोड़ों का समूह।
आश्वत्थ—पु० पीपल का-फल।
आश्वस्त—वि० आशायुक्त। दिलासा दिया हुआ।
आश्वास, आश्वासन—पु० दिलासा, तसल्ली।
आश्वासित—वि० दे० 'आश्वस्त'। [महीना।
आश्विन—पु० क्वार का-
आश्वीन—पु० घोड़े के एक दिन तै करने का मार्ग।
आश्विनेय-पु०अश्विनीकुमार।
आषाढ—पु०चौथा महीना। (ज्येष्ठ के बाद) ढाक की लकड़ी का ब्रह्मचारियों का दण्ड। [की पूर्णिमा।
आषाढ़ी—स्त्री०आषाढ मास-
आसंग—पु०सङ्ग। सम्बन्ध। क्रि० वि० लगातार।
आसंदी—स्त्री० कुर्सी।
आस-स्त्री०आशा। कामना।
आसकत—पु० आलस्य।
आसक्त—वि० अनुरक्ति।
आसक्ति—स्त्री० अनुरक्ति।
आसत्ति—स्त्री० सैत्य। मुक्ति।
आसते—क्रि०वि०धीरे-धीरे।
आसन्ति—स्त्री० समीपता।
आसन—पु०बैठने की विधि। दशा। चौकी।

आसना—अक्रि० होना। स्त्री० आसन।
आसनी—स्त्री०छोटा आसन।
आसन्न—वि० निकट आया-हुआ।
आसन्नभूत—पु० वह भूत-कालिक क्रिया जिसमें वर्त्तमान की समीपता पाई जाय।
आस-पास—क्रि० वि० निकट। चारों ओर।
आसमान—पु० आकाश।
आसमानी—वि०हलका नीला।
आसमुद्र—वि०समुद्र-पर्यंत।
आसर—पु० असुर, राक्षस।
आसरना—सक्रि०आश्रय लेना
आसरा—पु० सहारा। प्रतीक्षा। [अर्क।
आसव—पु० मदिरा। मधु।
आसवी—वि०शराबी।
आसा—पु० सोने, चाँदी का डंडा। स्त्री० आशा।
आसाइश—स्त्री० (फ़ा०) आराम। सुख।
आसादन—पु० आक्रमण। लाभ। [मिलित।
आसादित—वि० प्राप्त।
आसानर—वि०(फ़ा०)सहज।
आसामी—वि० (अ०) देनदार। काश्तकार।
आसायश—स्त्री० (फ़ा०) आराम, सुख।
आसार-पु० निरन्तर पानी-बरसना। सेना का विस्तार।
आसार—पु० (अ०) चिह्न। इमारत की नींव तथा दीवार की चौड़ाई।
आसावरी-स्त्री०एक रागनी।
आसावसन—वि० नङ्गा।
आसिद्ध—वि० बन्दी।
आसिया—स्त्री० (फ़ा०) आटा पीसने की चक्की।
आसिरवचन-पु० आशीर्वाद-सूचक शब्द।
आसी-पु० (अ०) वैद्य। वि० मुजरिम। पापी।
आसीन—वि० बैठा हुआ।
आसीस—स्त्री० दुआ।
आसीसा—पु० तकिया।
आसुग—पु० वायु।
आसुन—पु० आश्विन।
आसुरी—वि० असुर-संबंधी। स्त्री० राक्षस की स्त्री।
आसूदगी—स्त्री० (फ़ा०) सन्तोष। [सम्पन्न। सुखी।
आसूद—वि० (फ़ा०)संतुष्ट।
आसेब—पु० (फ़ा०) प्रेत-बाधा। कष्ट। हानि।
आसोज—पु० आश्विनमास।
आसौं—क्रि०वि० इस वर्ष।
आस्कंद—पु० युद्ध।
आस्कंदित—पु० घोड़े की एक चाल।
आस्तर, आस्तरण-पु० हाथी की झूल। बिछौना।
आस्तान-पु०(फ़ा०) ड्योढ़ी।
आस्तिक—वि० ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाला।
आस्तिक्य-पु० आस्तिकता।
आस्तीक—पु० एक ऋषि।
आस्तीन—स्त्री० (फ़ा०) कपड़े की बाँह।
आस्था—स्त्री० श्रद्धा। सभा।
आस्थान—पु०सभा। आश्रम।
आस्पद—पु० स्थान। प्रतिष्ठा। वंश। अल्ल।
आस्फालन—पु० घमंण्ड। रगड़।
आस्फोट—पु०आक,मदार।
आस्फोटन—पु० विकास। प्रकाश। [क्रान्ता।
आस्फोटा—स्त्री० विष्णु-
आस्य—पु० मुँह। चेहरा।
आस्या—स्त्री० आसन।
आस्रव—पु० उबलते हुए चावल का झाग। इन्द्रिय-द्वार। क्लेश। [ज़ायका।
आस्वाद, आस्वादन—पु०
आस्वादु—वि० स्वादिष्ट।
आह—स्त्री० (अ०) कष्ट-सूचक-श्वास।
आहट—स्त्री० खटका। आवाज़। पता, टोह।
आहत—वि० घायल। ज़ख्मी। गुणा किया हुआ। पु० अयोग्य वचन।
आहतलक्षण—वि०शौर्य आदि गुणों से युक्त।
आहति—स्त्री० चोट।
आहन—पु० (फ़ा०) लोहा।
आहनगर—पु०(फ़ा०)लोहार।
आहनी—वि०(फ़ा०)लोहे का।
आहार—पु० समय। युद्ध।
आहरण—पु० छीनना। हरना।
आहर्तव्य—वि० ग्रहणीय।
आहर्त्ता—वि० हरने वाला।
आहव—पु० युद्ध। यज्ञ।

आह्वन—पु० यज्ञ करना।
आह्वनीय—पु० यज्ञ की-अग्नि। [हर्ष सूचक शब्द।
आहा—अव्य० आश्चर्य तथा-
आहार—पु० भोजन।
आहारविहार—पु० खाना-पीना। रहन-सहन।
आहारी—वि० खाने वाला।
आहार्य—वि० खाने-योग्य।
आहाव—पु० क्षुद्र जलाशय। चहबच्चा।
आहित—वि० स्थापित। गिरवीं रक्खा हुआ।
आहितलक्षण—वि० गुणों से प्रसिद्ध।
आहितुंडिक—वि० साँप-पकड़ने वाला। [धीमापन।
आहिस्तगी—स्त्री० (फ़ा०)
आहिस्ता—क्रि० वि० धीरे-धीरे। [सरकार।
आहुत—पु० आतिथ्य-
आहुति—स्त्री० हवन। हवन में डालने की सामिग्री।
आहू—पु० (फ़ा०) हिरन।
आहूत—वि० निमंत्रित।
आहूति—स्त्री० पुकार।
आहृत—वि० लाया हुआ।
आहेय—पु० साँप का विष। साँप की हड्डी। केंचुल।
आह्निक—वि० दैनिक।
आह्लाद—पु० हर्ष। आनंद।
आह्लादित—वि० हर्षयुक्त।
आह्वय—पु० नाम।
आह्वान—पु० बुलावा।

इ—इ

इंक—स्त्री० [अं०] स्याही।
इंग, इंगन—पु० संकेत।
इंगर्नी—स्त्री० धातु का एक मोर्चा जो काँच की हरियाली दूर करती है। [नाड़ी।
इंगला—स्त्री० इडा नामक-
इँगलिश—स्त्री०(अं०)अँग्रेज़ी।
इंगवै—पु० सूअर का दाँत।
इंगित—वि० संकेत, इशारा।
इंगुद७—पु० हिंगोट-वृक्ष।
इंगुर—पु० दे० 'ईंगुर'।
इंगुरौटी—स्त्री० सिंधोरा।
इंच—पु० फ़ुट का बारहवाँ-भाग।
इंचना—अक्रि० खिंचना।
इंजन—पु० कल। भाप या बिजली से चलने वाली गाड़ी।
इंज़ाल—पु०(अ०)वीर्यपात।
इंजीनियर—पु० मशीन आदि का बनाने या चलाने वाला। इमारतें, सड़क, पुल आदि की विद्या जानने वाला एक आफ़िसर।
इंजील—स्त्री० ईसाइयों की मज़हबी पुस्तक। [सर्वराष्ट्रीय
इंटरनैशनल—वि० (अं०)
इंटरव्यू—वि० (अं०) भेंट।
इंडस्ट्रियल—वि० (अं०) दस्तकारी-सम्बन्धी।
इंडहर—पु० एक खाद्य-पदार्थ जो उर्द की दाल से बनता है।
इंडुरी—स्त्री० गेंडुरी।
इंतक़ाम—पु० (अ०) बदला-लेना।
इंतक़ाल—पु० (अ०) मृत्यु।
इंतख़ाब—पु०(अ०) निर्वाचन।
इंतज़ाम—पु०(अ०) प्रबन्ध।
इंतज़ामकार—पु० प्रबन्धक।
इंतज़ार—पु० (अ०)प्रतीक्षा।
इंतशार—पु० (अ०) फैलना, बिखरना। दुर्दशा।
इंतहा—पु० (अ०) अंत। सीमा। [होना।
इंदराज—पु० (अ०) दर्ज-
इंदव—पु० एक छन्द।
इँदारा—पु० कुआँ।
इँदारुन—पु० इंद्रायन।
इंदिया—स्त्री० (अ०) सम्मति, विचार।
इंदिरा—स्त्री० लक्ष्मी।शोभा।
इंदीवर—पु० नीलकमल।
इंदीवरी—स्त्री० शतावरी।
इंदु—पु० चंद्रमा। कपूर।
इंदुकांत—पु० चन्द्रकान्त-मणि।
इंदुकांता—स्त्री० रात्रि।
इंदुदह—पु० चंद्रकुंड।
इंदुमती—स्त्री० उजाली रात। पौर्णमाशी। राजा अज की स्त्री।
इंदुर—पु० चूहा।

इंद्र—पु० देवराज। सूर्य। राजा। रात्रि।जीव। वि० श्रेष्ठ। बड़ा। [पर्वत।
इंद्रकील—पु० मंदराचल·
इंद्रकोश—पु० छज्जा। खाट।
इंद्रगोप—पु०वीरबहूटी कीड़ा।
इंद्रजव—पु० कौरैया का-बीज। [नट विद्या।
इंद्रजाल—पु० जादूगरी,
इंद्रजालिक, इंद्रजाली—वि० मायावी। बाज़ीगर।
इंद्रजीत—पु० मेघनाद।
इंद्रदमन—पु० मेघनाद। बाढ़ के दिनों में गंगा जी के जल का किसी पीपल या बरगद के वृक्ष तक पहुँचना।
इंद्रधनुष—पु० वर्षा ऋतु में आकाश में दिखाई देने वाला सात रंगों का एक अर्द्ध वृत्त
इंद्रनील—पु० नीलम।
इंद्रनीलक—पु० पन्ना।
इंद्रप्रस्थ—पु० पांडवों द्वारा बसाया हुआ एक नगर, वर्त्तमान दिल्ली।
इंद्रफल—पु० इन्द्र जौ।
इंद्रयव—पु०कौरैया का बीज।
इंद्रलोक—पु० स्वर्ग।
इंद्रवंशा—पु० एक वृत्त।
इंद्रवज्रा—पु० एक वृत्त।
इंद्रवधू—स्त्री० वीरबहूटी।
इंद्रा,इंद्राणी—स्त्री० इंद्र की स्त्री। इन्द्रायन। बड़ी-इलायची। दुर्गा। एक मातृका
इंद्रानुज—पु० विष्णु। श्रीकृष्ण।
इंद्रायन—पु० एक लता।
इंद्रायुध—पुं० इन्द्र धनुष।
वज्र।
इंद्रारि—पु० राक्षस, असुर।
इंद्रावरज—पु० विष्णु।
इंद्रासन—पु०इन्द्र का सिंहासन।
इंद्रिय पु० वह शक्ति या शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा भिन्न २ कर्म किये जाते है; आँख, कान, नाक, मुँह इत्यादि [से जानने योग्य।
इंद्रियगोचर—वि० इन्द्रियों·
इंद्रियजित्—वि०जो इन्द्रियों के वशीभूत न हो, ज्ञानी।
इंद्रियनिग्रह—पु० इन्द्रियों को वश में रखना।
इंद्रियार्थ—पु०रूप, रस आदि पाँचो तत्व इकट्ठे होना।
इंद्री—स्त्री० दे० 'इन्द्रिय'।
इंद्रीजुलाब—पु० वे औषधियाँ जिनसे पेशाब अधिक आता है।
इंधन—पु० जलावन।
इँनारुन—पु० इन्द्रायन।
इंश्योरेंस—पु० (अं०)बीमा।
इंसान—पु० (अ०)मनुष्य।
इंसानियत—स्त्री०मनुष्यता।
इंसाफ़—पु० (अ०) न्याय, फैसला। [होना।
इंसिराम—पु० (अ०) अलग-
इंस्टीट्यूट—स्त्री० (अं०)सभा, संस्था। [सभा, सस्था।
इंस्टीट्यूशन—स्त्री० (अ०)
इंस्ट्रुमेंट—पु०(अं०)औज़ार।
इंस्पेक्टर—पु० अं० (स्त्री० इंस्पेक्ट्रेस) निरीक्षक।
इआनत—स्त्री०(अ०)मदद,दया।
इकंक—क्रि०वि० निश्चय ही।
इकंग—वि० एक तरफ़ा।
इकंत—पु० निर्जन स्थान। वि० अकेला।
इक—वि० एक। [साथ।
इकजोर—क्रि० वि० एक-
इकटक—पु० टकटकी बाँधकर देखना।
इकट्ठा—वि० जमा, एकत्रित।
इकतरा—पु०अँतरिया ज्वर।
इक़तदार—पु०(अ०)अधिकार। सामर्थ्य।
इक़तबास—पु०(अ०)जलाना।
इकता,इकताई—स्त्री०एकता।
इकतान—वि० एकसा।
इकतार—वि० एकरस। क्रि० वि० लगातार।
इकतारा—पु० सितार की तरह का एक बाजा जिसमें एक तार रहता है।[करना।
इक़तिदा—स्त्री०(अ०) पैरवी-
इक़तिसाम—पु०(अ०)बाँटना।
इकतीस,इकत्तीस—वि०३१।
इकत्र—क्रि० वि० एकत्र।
इक़दाम—पु०(अ०) इरादा।
इकबारगी—क्रि०वि०सहसा।
इकबाल—पु० (अ०)प्रताप। भाग्य। धन। स्वीकार।
इक़बालमंद—वि०प्रतापशाली।
इकरस—वि० एक समान।
इक़राम—पु०(अ०) इनाम। इज्ज़त।
इक़रार—पु०(अ०) वादा।
इक़रारनामा—पु० प्रतिज्ञापत्र।
इकलाई—स्त्री० अकेलापन।

एक पाट की बारीक धोती।
इकलौता-पु०अकेला लड़का।
इकल्ला—वि० अकेला।
इकसठ—वि० ६१।
इकसर—वि०अकेला। सदृश।
इक़साम-पु०बहु०(अ०)क़िस्म
इकसूत—वि० एक साथ। इकट्ठा, एकत्र।
इकहरा—वि० एक तह का।
इकहाई—क्रि० वि० एक साथ। अचानक।
इक़ामत—स्त्री०(अ०)बसना।
इकैठ—वि० इकट्ठा।
इकोतर—वि० एक अधिक।
इकौंज—स्त्री० प्रथम जनने के बाद बाँझ हो जाने वाली स्त्री।
इकौनी—स्त्री० अनुपम, बेजोड़
इकौसी—वि० एकान्त।
इक्का—पु० एक घोड़े की-गाड़ी। वि० अकेला। बेजोड़। [दुकेला
इक्कादुक्का—वि० अकेला-
इक्कीस—वि० २१।
इक्यावन—वि० ५१।
इक्यासी—वि० ८१।
इक्षु—स्त्री० ईख, गन्ना।
इक्षुकांड—पु० ईख का वृक्ष।
इक्षुगंधा—स्त्री० तालमखाना। गोखरू। कोहँड़ा। काँस।
इक्षुज—पु० चीनी, खाँड़। शक्कर। गुड़।
इक्षुप्र—पु० वाण।
इक्षु-प्रमेह—पु० मधुमेह।
इक्षुर—पु० तालमखाना।
इक्षुसार—पु० खाँड़। गुड़।

इक्ष्वाकु—पु० सूर्यवंशी एक राजा जो श्रीरामचंद्रजी के पूर्वज थे। [काँसा। मूंज
इक्ष्वालिका—स्त्री० सरपत।
इखद—वि० ईषत्, थोड़ा।
इख़राज—पु० (अ०) बाहर-निकलना।
इख़राजात-पु० बहु० (फ़ा०) खर्चा। [मित्रता, प्रेम।
इख़लास-पु० (अ०)
इख़लासमंद-वि० प्रेम करने-वाला।
इखु—पु० वाण। [इकार।
इख़्तराअ-पु० (अ०) आवि
इख़्तलात—पु० (अ०) घनिष्ठता। प्रेम।
इख़्तलाफ़-पु०(अ०)विरोध।
इख़्तसार-पु० (अ०) खुलासा, संक्षेप।
इख़्तियार पु०(अ०)अधिकार।
इग़माज़—पु० (अ०) उपेक्षा।
इच्छना—सक्रि० चाहना।
इच्छा—स्त्री० चाह।
इच्छाचारी—वि० मनमौजी।
इच्छावती—स्त्री० धन आदि की इच्छा करने वाली स्त्री।
इच्छित-वि० चाहा हुआ।
इच्छु—पु० ईख। वि० चाहने-वाला।
इच्छुक—वि०चाहने वाला।
इजतमा—पु० (अ०) जमा-होना।
इज़तराबर-पु०(अ०)उतावली
इजतिनाब—पु०(अ०)बचना, दूर रहना।
इज़दहाम—पु०(फ़०) भीड़,

इज़दिवाज-पु०(अ०)विवाह।
इजमालन—पु०(अ०) साझा। इकट्ठा करना।
इज़राईल—पु० (अ०) मृत्यु-का दूत। [करना।
इजराय—पु० (अ०) जारी-
इजलाल-पु० (अ०) बुजुर्गी।
इजलास—पु० (अ०) बैठक। न्यायालय।
इज़हार—पु०(अ०) ज़ाहिर-करना। बयान। [आज्ञा।
इजाज़त-स्त्री०(अ०)स्वीकृति।
इजाबत-स्त्री०(अ०) स्वीकार।
इज़ाफ़त—स्त्री० (अ०) एक का दूसरे के साथ संबंध. स्थापित करना।
इज़ाफ़ा—पु० (अ०) बढ़ती।
इज़ार-स्त्री०(फ़ा०) पायजामा
इज़ारदार—वि० अधिकारी। ठेकेदार।
इजारबंद—पु० पाजामे आदि का नारा, कमरबन्द।
इजारा—पु०(अ०)अधिकार। ठेका। स्वत्व।
इजारादार—पु० ठेकेदार।
इज्ज़—पु० (अ०) नम्रता। प्रतिष्ठा।
इज्ज़त-स्त्री० (अ०) आदर।
इज्ज़तदार—वि० प्रतिष्ठित।
इज्य-पु० बृहस्पति। गुरु। पूज्य।
इज्या—स्त्री० यज्ञ। पूजा।
इज्याशील-पु० बारंबार यज्ञ-करने वाला।
इट्चर—पु० साँड़।
इठलाना—अक्रि० इतराना नखरा करना।

इठलाहट—स्त्री० इतराना। ठसक, ऐंठ।
इठाई—स्त्री० प्रीति, रुचि।
इड़ा—स्त्री० पृथिवी। गाय। बाईं ओर की नाड़ी।
इडुरी—स्त्री० गेंड़री, ऐंडुरी।
इत—क्रि० वि० इधर।
इतक़ाद—पु० (अ०) विश्वास
इतना—वि० इस क़दर।
इतमाम—पु० (अ०) प्रबन्ध।
इतमीनान—पु० (अ०) विश्वास। संतोष। [पु० इत्र।
इतर—वि० दूसरा। साधारण।
इतराजी—स्त्री० ऐतराज़।
इतराना—अ क्रि० गर्व करना। इठलाना।
इतराहट—स्त्री० गर्व।
इतरेतर—क्रि० वि० परस्पर। अन्यान्य।
इतरेतराभाव—पु० एक के गुणों का दूसरे में न होना (न्याय)
इतरेतराश्रय—पु० एक दूसरे के आश्रय।
इतरेद्युः—क्रि० वि० दूसरे दिन।
इतरौहाँ—वि० इतराने वाला।
इतलाक़—पु० (अ०) छोड़ना, मुक्त करना।
इतवार—पु० रविवार।
इतस्ततः—क्रि० वि० इधर-उधर। [मानना।
इताअत—स्त्री० (अ०) आज्ञा-
इताति—स्त्री० आज्ञा पालना।
इताब—पु० (अ०) अप्रसन्नता।
इति—अव्य० समाप्ति-सूचक-शब्द। स्त्री० समाप्ति।
इतिकथा—स्त्री० अर्थ-शून्य-कथा।
इतिकर्त्तव्यता—स्त्री० परिपाटी।
इतिवृत्त—पु० प्राचीन-कथा।
इतिश्री—स्त्री० समाप्ति, ख़ातमा।
इतिहास—पु० बीती हुई घटनाओं का सिलसिले-वार वर्णन, तवारीख़।
इतेक—वि० इतना।
इतो—वि० इतना।
इत्तफ़ाक़—पु० (अ०) मेल। संयोग। मौक़ा। [संयोग से
इत्तफ़ाक़न्—क्रि० वि० (अ०)
इत्तफ़ाक़िया—वि० आकस्मिक
इत्तसाल—पु० (अ०) संबंध, लगाव।
इत्तिला—स्त्री० सूचना।
इत्तिलानामा—पु० सूचनापत्र।
इत्तिहाम—पु० (अ०) दोष।
इत्तिहाद—पु० (अ०) एकता, मेल। दोस्ती।
इत्थं—क्रि० वि० इस प्रकार।
इत्थभूत—वि० ऐसा।
इत्यादि, इत्यादिक—अव्य० वग़ैरह। इसी प्रकार और।
इत्र—पु० पुष्पों का सार-भाग, 'अतर'। [पात्र।
इत्रदान—पु० इत्र रखने का-
इत्रयात—स्त्री० (अ०) सुगंधित चीज़ें।
इत्रीफल—पु० शहद में त्रिफला से बनाई हुई चटनी।
इत्वरी—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।
इदबार—पु० (अ०) दुर्भाग्य।
इदराक—स्त्री० (अ०) बुद्धि। समझ।
इदानीम्—क्रि० वि० इस समय।
इद्ध—वि० चमकीला। पु० चमक। धूप। प्रकाश।
इधर—क्रि० वि० इस ओर।
इध्म—पु० ईंधन।
इन—सर्व० 'इस' का बहुवचन। पु० सूर्य। स्वामी।
इनकम—स्त्री० (अं०) आय।
इनकमटैक्स—पु० (अं०) आय-कर। [रद्दोबदल।
इनक़लाब—पु० (अ०) क्रांति।
इनक़साम—पु० (अ०) बँटवारा।
इनकार—पु० (अ०) अस्वीकार।
इनक़ामर्र—वि० (अ०) भेदिया।
इनफ़िसाल—पु० (अ०) निर्णय
इनफ़्लुएँज़ा—पु० (अं०) जाड़े का बुख़ार [बीज क।
इनवायस—पु० (अं०)
इनसालवेंट—वि० (अं०) दिवालिया, मुफ़लिस। [होना।
इनहिदाम—पु० (अ०) नष्ट।
इनहिराफ़—पु० (अ०) विद्रोह
इनाद—पु० (अ०) बैर।
इनान—पु० (अ०) लगाम।
इनाम—पु० बख़्शीश।
इनायत—स्त्री० (अ०) दया।
इनारा—पु०, पक्का कुआँ।
इनारुन—पु० इंद्रायन।
इनेगिने—वि० कुछ, चुने-हुए।
इन्क़ज़ा—पु० (अ०) बीतना।
इन्कशाफ़—पु० (अ०) रहस्योद्घाटन।
इन्कसार—पु० (अ०) नम्रता।
इन्फ़ाज़—पु० (अ०) जारी-करना। [क्रिया।
इन्सा—स्त्री० (अ०) लेखन-

इन्शाअल्लाह—क्रि० वि० ईश्वर ने चाहा तो।
इन्शापरदाज़र—पु० लेखक।
इप्सु—वि० इच्छुक। लोभी।
इफ़रात—स्त्री० (अ०) बहुतायत।
इफ़लास—पु०(अ०)ग़रीबी।
इफ़लाह—पु०(अ०) भलाई।
इफ़शा—वि०(फ़ा०) प्रकट।
इफ़ाक़ा—पु० (अ०) रोग-आदि की कमी।
इफ़्तख़ार—पु०(अ०) अभिमान करना। [तोहमत।
इफ़्तरा—पु० (अ०) कलङ्क,
इफ़्तार—पु० (अ०) रोज़े में संध्या काल का जलपान।
इफ़्फ़त—स्त्री०(अ०)सदाचार।
इबरत—पु० (अ०) शिक्षा-ग्रहण करना।
इबरतअंगेज़—वि०शिक्षाप्रद।
इबरानी—स्त्री० फ़िलिस्तीन की प्राचीन भाषा। वि० यहूदी।
इबलीस—पु० (अ०)शैतान।
इबादत—स्त्री० (अ०) पूजा, प्रार्थना।
इबादतगाह—स्त्री०प्रार्थनागृह।
इबारत—स्त्री० (अ०) लेख।
इब्तिदा—स्त्री०(अ०)आरंभ।
इब्तिदाई—वि०(फ़ा०)आरंभ-का। [मुसकराना।
इब्तिसाम—पु० (अ०)
इब्न—पु०(अ०) पुत्र।
इब्नत—स्त्री० (अ०) पुत्री।
इभ—पु० हाथी।
इभपालक—वि० महावत।
इमकान—पु० (अ०) शक्ति, सामर्थ्य। बश।
इमदाद—स्त्री०(अ०)सहायता।
इमरती—स्त्री० एक मिठाई।
इमली—स्त्री० एक पेड़ तथा उसका फल। [आज।
इमरोज़—क्रि० वि० (फ़ा०)
इमला—पु०लेखन-अभ्यास।
इमशब—क्रि० वि० (अ०) आज की रात।
इमसाल—क्रि० वि० (अ०) इस साल।
इमाम—पु० (अ०) अगुआ। धार्मिक कार्य करने वाला-मुसलमान व्यक्ति।
इमामदस्ता—पु० लोहे या पीतल का खरल।
इमामबाड़ा—पु० वह अहाता जहाँ शियाओं के ताज़िये दफ़न होते हैं
इमामा—पु० बड़ी पगड़ी।
इमारत—स्त्री० (अ०) भवन, पक्का बड़ा मकान।
इमि—क्रि०वि० इस प्रकार।
इम्तना—पु० (अ०) मनाही।
इम्तनाई—वि० (अ०) मनाही से सम्बन्ध रखने वाला।
इम्तयाज़—स्त्री० (अ०) तमीज़ करना, पहचानना।
इम्तिहान—पु०परीक्षा, जाँच।
इम्पीरियल—वि० (अं०) शाही।
इम्पोर्ट—पु० (अं०) व्यापार-के लिए विदेश से आया हुआ माल। [खिलना।
इम्बिसात—पु०(अ०)प्रसन्नता।
इयत्ता—स्त्री० सीमा, हद।
इरंमद—पु० बज्राग्नि।
इरक़ाम—पु० (अ०) रक़म।
इरम—पु०(अ०) एक स्वर्ग।
इरशाद—स्त्री०(अ०)आज्ञा।
इरसाल—पु० (अ०)भेजना, रवाना।
इरषा, इरिषा—स्त्री० ईर्ष्या।
इरा—स्त्री० पृथ्वी। वाणी। जल। कश्यप ऋषि की स्त्री।
इरादा—पु० विचार, संकल्प।
इर्द-गिर्द—क्रि० वि० चारों-ओर, आस-पास।
इर्षना—स्त्री० बलवती इच्छा।
इल्ज़ाम—पु० (अ०) दोष। जुर्म।
इलमास—पु० (फ़ा०) हीरा।
इलविला—स्त्री० कुबेर की-माता।
इलहाक़—पु०(अ०)मिलाना।
इलहान—पु०(अ०) सङ्गीत।
इलहाम—पु० (अ०) देव-वाणी। आकाशवाणी।
इलहियात—स्त्री० (अ०) ईश्वर-सम्बन्धी बातें।
इला—स्त्री०वैवस्वत मुनिकी कन्या। पृथ्वी। गौ। बुद्धि-मती स्त्री। [सम्बन्ध।
इलाक़ा—पु० (अ०)रियासत।
इलाज—पु० दवा, चिकित्सा।
इलाम—पु० सूचना। हुक्म।
इलायची—स्त्री० एक पेड़ तथा उसके फल। [मिठाई।
इलायचीदाना—पु० एक-
इलावर्त्त—पु० जम्बूद्वीप का एक खण्ड।

इलाही—पु० (अ०) ईश्वर, वि० ईश्वरीय। [पैग़म्बर।
इलियास—पु० (अ०) एक
इल्तिजा—स्त्री०(अ०)प्रार्थना।
इल्तिमास—पु० (अ०) निवेदन। [हुनर।
इल्म—पु० (अ०) विद्या,
इल्मदाँ—पु० इल्म का ज्ञाता।
इल्मेअख़लाक़—पु० (अ०) नीति-शास्त्र। नीति।
इल्मेअदब—पु० (अ०) साहित्य। [ब्रह्म-विद्या।
इल्मेइलाही—पु० (अ०)
इल्मेउरूज़—पु० (अ०) छन्दः शास्त्र।
इल्मेक़याफ़ा—पु० (अ०) सामुद्रिक-शास्त्र।
इल्मेजमादात—पु० (अ०) खनिज-विज्ञान।
इल्मेदीन—पु० (अ०) धर्म-शास्त्र। [शास्त्र।
इल्मेबहस—पु० (अ०) तर्क-
इल्मेमन्तक़—पु० (अ०) न्याय-शास्त्र।
इल्लत—स्त्री० (अ०) रोग। झंझट। कारण। कमी।
इल्ला—पु० मस्सा।
इल्लिल्लाह—(अ०) हे ईश्वर सहायता कर।
इव—अव्य० समान। तरह
इशरत—स्त्री० (अ०) सुख-भोग।
इशा—स्त्री० (अ०) रात का पहला पहर। [बाज़ा।
इशारत—स्त्री० (अ०) इशारा-
इशारतन्—क्रि० वि० इशारे से। [मुहब्बत।
इश्क़—पु० (अ०) प्रेम,
इश्क़बाज़र—पु० प्रेमी।
इश्तबाह—पु०(अ०) सन्देह।
इश्तराक—पु०(अ०) साझा।
इश्तियाक़—पु०(अ०) शौक़।
इश्तिहार—पु० (अ०) विज्ञापन, सूचना।
इष—पु० क्वार का महीना।
इषण—स्त्री० कामना।
इषीका—स्त्री० वाण।
इषु—पु० वाण।
इषुधी—पु०तरकस। [वाला।
इषुमान्१३—वि०तीर चलाने
इष्ट३—वि०इच्छित। हकीकी। पूजित। पु० शुभ-कर्म। अनुग्रह। मित्र। ईंट।
इष्टका—स्त्री० ईंट। [द्रव्य।
इष्टगंध—पु० अति सुगंधित-
इष्टदेव—पु० पूज्य देव।
इष्टापत्ति—स्त्री० प्रतिवादी द्वारा किया गया ऐतराज़।
इष्टार्थोद्युक्त—वि० अभीष्ट वस्तु के प्राप्त करने में तत्पर, उत्सुक।
इष्टालाप—पु० कथोपकथन।
इष्टि—स्त्री० इच्छा। यज्ञ।
इष्य—पु० वसन्त ऋतु।
इष्वास—पु० धनुष।
इस—सर्व०'यह'का विभक्ति के पूर्व का रूप; जैसे, इसने, इस पर।
इसपंज—पु० सामुद्रिक कीड़े द्वारा बनाया हुआ रुई के समान छिद्रदार कोमल पिंड जो पानी अधिक जज़्ब करता है।
इसपात—पु० सख़्त लोहा।
इसराईल—पु० (अ०) एक पैग़म्बर।
इसराफ़—पु०(अ०) अपव्यय।
इसरार—पु० (अ०) हठ।
इसलाम—पु० (अ०) मुसलमानी मज़हब। [संशोधन।
इसलाह—पु० (अ०)
इसारत—स्त्री० इशारा।
इस्तक़बाल—पु० (अ०) स्वागत। [पक्का करना।
इस्तक़रार—पु०(अ०) ठहरना।
इस्तक़लाल—पु० (अ०) धैर्य, दृढ़ता।
इस्तग़ासा—पु० (अ०) फ़रियाद करना, दावा।
इस्तदलाल—पु० (अ०) दलील, तर्क।
इस्तदुआ—स्त्री० (अ०) निवेदन, प्रार्थना।
इस्तफ़हाम—पु० (अ०) पूछना। [स्थायी।
इस्तमरारी—वि० (अ०)
इस्तहक़ाक़—पु०(अ०) हक़, स्वत्व।
इस्तिरी—स्त्री० कपड़े की शिकन दूर करने का धोबियों का औज़ार। स्त्री।
इस्तिलाह—स्त्री० (अ०) परिभाषा। [त्यागपत्र।
इस्तीफ़ा—पु० (अ०)
इस्तेमाल—पु० (अ०) प्रयोग।
इस्तेमाली—वि०(अ०) प्रयोग-में लाया हुआ।
इस्त्री—स्त्री० दे० 'इस्तिरी'।

इस्पंद—पु० राई।
इस्म—पु० (अ०) नाम।
इस्मेआज़म—पु० (अ०) ईश्वर। [ईश्वर।
इस्मेजलाली—पु० (अ०)
इह—क्रि० वि० यहाँ।
इहतियात—स्त्री० (अ०) सावधानी।

४—ई

ईंगुर-पु० सिंगरफ़। सिंदूर।
ईंचना—सक्रि० खींचना।
ईंटा—स्त्री० ईंट।
ईंडरी—स्त्री०गेंडुरी,कुंडली।
ईंधन—पु० जलावन।
ई—अव्य० ही। सर्व० यह। स्त्री० लक्ष्मी।
ईक्ष—पु० दर्शन।
ईक्षक१४—वि० दर्शक।
ईक्षण्द—पु० देखना। आँख। विचार। आँच।
ईक्षणिका—स्त्री० शुभाशुभ-फल जानने वाली।
ईक्षित—वि० देखा हुआ।
ईक्ष्य—वि० दर्शनीय।
ईख—स्त्री० गन्ना।
ईखना-सक्रि० देखना। स्त्री० इच्छा।
ईछन—पु० आँख।
ईछना—सक्रि० चाहना।
ईछा—स्त्री० इच्छा।
ईजति—स्त्री० इज्ज़त।
ईज़ा-स्त्री० दुःख।[आविष्कार।
ईजाद—पु० (अ०)
ईजान—पु० यजमान।
ईज़िद—पु० (फ़ा०) ईश्वर।
ईठ७—पु० मित्र। वि० प्यारा, इष्ट।
ईठना-सक्रि० इच्छा करना।
ईठा—स्त्री० स्तुति, प्रशंसा।
ईठि—स्त्री० प्रीति।
ईठी—स्त्री० भाला। यत्न। चाह। प्यारी।
ईडा—स्त्री० स्तुति।
ईडित—वि० प्रशंसित।
ईढ़—स्त्री० ज़िद, हठ।
ईढ़ी—वि० ज़िद्दी।
ईतर—वि० नीच। ढीठ।
ईति—स्त्री० खेती को हानि-पहुँचाने वाले विघ्न आदि-उपद्रव। दुःख। बाधा।
ईथर-पु० (अं०) एक सूक्ष्म और लचीला पदार्थ जो आकाश में व्याप्त है।
ईद—स्त्री० (अ०)मुसलमानों का एक त्यौहार।
ईदउलजुहा—स्त्री० (अ०) बकरीद का त्यौहार
ईदउलफ़ितर—स्त्री० (अ०) ईद का त्यौहार।
ईदगाह—स्त्री० (अ०) ईद के दिन नमाज़ पढ़ने का स्थान।
ईदृश७—वि० ऐसा। क्रि० वि० इस प्रकार।
ईप्सा—स्त्री० इच्छा।
ईप्सित—वि० इच्छित।
ईप्सु—वि० इच्छुक।
ईफ़ा—पु० (अ०) वचन का पालन करना।
ईफ़ाय-डिगरी—स्त्री०डिगरी-का रुपया अदा कर देना
ईमा—पु० (अ०) इशारा।
ईमान—पु०(अ०)विश्वास। धर्म। सत्य। [सच्चा।
ईमानदार२—वि० विश्वासी,
ईरिण—स्त्री० ऊसर भूमि।
ईरमद—पु० वज्र, बिजली।
ईरान—पु० फ़ारस-देश।
ईरित—वि० प्रेरित।
ईर्म—पु० घाव।
ईर्वारु—स्त्री० ककड़ी।
ईर्षणा—स्त्री०डाह, जलन।
ईर्षा, ईर्ष्या—स्त्री० डाह।
ईर्षालु—वि०ईर्षा करने वाला।
ईल—पु० जन्तु।
ईलित—वि० प्रशंसित।
ईली—स्त्री० गुप्ती(तलवार)।
ईश३—पु०स्वामी। ईश्वर। महादेव। राजा। ग्यारह-की संख्या।
ईशा—स्त्री० ऐश्वर्य। दुर्गा।
ईशान—पु० पूर्व और उत्तर के बीच का कोना। शिव। ईश।
ईशित्व—पु० प्रभुत्व।
ईश्वर—पु० स्वामी। शिव। परमेश्वर।

ईश्वरप्रणिधान—पु० ईश्वर में भक्ति और श्रद्धा।
ईश्वरसखा—पु० कुबेर।
ईश्वरा, ईश्वरी—स्त्री०पार्वती।
ईश्वरीय—वि० ईश्वर-सम्बन्धी।
ईषण—पु० देखना, दृष्टि।
ईषणा, ईषना—स्त्री०लालसा।
ईषत्—वि० थोड़ा, कम।
ईषत्स्पृष्ट—पु० य, र, ल, व वर्ण।
ईषिका—स्त्री० चित्रकार की कूँची या लेखनी। हाथी के नेत्रों की गोलाई।
ईषु—पु० बाण।
ईसर—पु०ऐश्वर्य। महादेव।
ईसवी—वि० (अ०) ईसा-सम्बन्धी। [के संस्थापक।
ईसा—पु० (अ०)ईसाई धर्म-
ईसाई—पु०ईसाई-धर्मावलम्बी।
ईसार—पु० नम्रता।
ईस्ट—पु० (अं०)पूर्व।
ईस्टर—पु० (अं०) एक अँग्रेज़ी त्यौहार।
ईहा—स्त्री० इच्छा। लोभ।
ईहामृग—पु०भेड़िया। 'रूपक' का एक भेद।
ईहावृक—पु० लकड़बग्घा।
ईहित—वि० इच्छित।

५—उ

उंगल—पु० अँगुल।
उँगली—स्त्री० हथेली या पावों के छोरों से जुड़े हुए फलियों के सदृश पाँच अवयव।
उँघाई—स्त्री० झपकी।
उंचन—स्त्री० अदवायन।
उँचना—सक्रि० अदवायन-कसना।
उँचान—पु० ऊँचाई।
उँचाना—सक्रि०ऊँचा करना।
उँचाव-ऊँचास—पु० ऊँचाई।
उंचास—वि० ४९।
उंछ—स्त्री०सीला बीनना।
उंछवृत्ति—स्त्री० खेत में गिरे हुए अनाज को चुन कर जीवन निर्वाह का कर्म।
उंछशील—वि० उंछवृत्ति-वाला।
उंछित—वि० त्यक्त।
उँजरिया—स्त्री० चाँदनी।
उँजियार—वि० प्रकाशवाला। पु० प्रकाश।
उंदुर—पु० चूहा।
उँदरी—स्त्री० गंजा होना।
उंदुर—पु० चूहा।
उ—अव्य० भी। पु०ब्रह्मा।
उअना—अक्रि० उगना।
उआना—सक्रि० उगाना। मारने के लिए हथियार तानना।
उऋण—वि० ऋणमुक्त।
उकवन—पु०मुचकुंद का फूल।
उकचना१—अक्रि०उखड़ना। अलग होना। हट जाना।
उकटना—सक्रि० बीती बात को कहना, बार-बार कहना
उकटा—वि० अहसान जताने-वाला। ताना देने वाला।
उकठना—अक्रि० सूखकर ऐंठना, सूखना।
उकठा—वि० सूखा हुआ।
उकड़ूँ—पु० घुटने मोड़कर-बैठने का एक तरीक़ा।
उकताना—अक्रि०ऊबना।
उकतारु—वि० उकसाऊ।
उकति—स्त्री० उक्ति।
उक़बा—पु०(अ०) परलोक। सृष्टि का अंतिम काल।
उक़दा—पु० (अ०) कठिन-समस्या, गाँठ। [खुलना।
उकलना१—अक्रि० उधड़ना,
उकलाई—स्त्री० वमन, क़ै।
उकलाना—अक्रि०क़ै करना।
उकवथ—पु० दाद जैसा एक-चर्म रोग।
उकसना१—अक्रि० उभरना, निकलना, ऊपर को उठना।
उकसनि—स्त्री० उभाड़।
उकसावा—पु० बढ़ावा।
उकसौंहा७—वि० उभड़ता-हुआ, उठता हुआ।
उकाब—पु० गरुड़। गिद्ध।
उकालना—सक्रि० उखाड़ना।
उकासी—स्त्री० छुट्टी। खुल-जाना। उत्सव।

उकील—पु० वकील।
उकुति—स्त्री० उक्ति।
उकुति जुगुति—स्त्री० सलाह और उपाय।
उकुसना—सक्रि० उधेड़ना, उचाड़ना। [सना'
उकेलना—सक्रि० दे० 'उकु-
उकौना—पु०गर्भिणी स्त्री की-इच्छा।
उक्त—वि० कथित। [वाक्य।
उक्ति—स्त्री०कथन। अनोखा-
उक्लैदस—स्त्री०रेखागणित।
उखटना—सक्रि० कुतरना। अक्रि० लड़खड़ाना।
उखड़ना—अक्रि० अपने स्थान से अलग होना, हटना। चिह्न पड़ जाना।
उखम—पु० गर्मी।
उखमज—पु० गर्मी का जीव।
उखर—पु० ऊख बोने के बाद हल की पूजा।
उखली—स्त्री० ओखली।
उखा—स्त्री०बटलोई। उषा।
उखाड़ना—सक्रि०उपारना।
उखाड़ू—वि० चुग़लख़ोर। उखाड़ने वाला।
उखारी—स्त्री०ईख का खेत।
उखालिया—पु०व्रत के पूर्वरात्रि के तीसरे पहर का भोजन।
उखेरना, उखेलना—सक्रि० लिखना, चित्र खींचना।
उख्य—वि०बटलोई में पका।
उगटना—अक्रि०ताना मारना।
उगना९—अक्रि० उपजना, जमना। उदय होना।
उगरना—अक्रि० निकलना या बाहर होना।
उगलना, उगलाना—सक्रि० बाहर निकालना, प्रकट-करना। [उत्पन्न करना।
उगवना—सक्रि० उगाना।
उगसाना—सक्रि०उकसाना।
उगसारना—सक्रि० कहना, प्रकट करना।
उगहना—सक्रि० उगाहना।
उगार,उगाल—पु० थूक,कफ़।
उगालदान—पु०पीकदान।
उगाहना—सक्रि०वसूल करना।
उगाही—स्त्री०वसूली।
उग्र—वि० प्रचंड, तेज़। पु० महादेव। विष्णु। सूर्य।
उग्रकांड—पु० करेला।
उग्रगंध—पु०हींग। लहसुन। कायफल। [वायन।
उग्रगंधा—स्त्री० वच। अज-
उग्रधन्वा—पु० शिव। इन्द्र।
उग्रशेखरा—स्त्री० गङ्गा।
उग्रता—स्त्री०प्रचंडता।
उग्रह—पु० उद्धार।
उग्रा—स्त्री० दुर्गा। लड़ाकी-स्त्री। अजवाइन। धनिया।
उघटना—अक्रि०ताल देना। ताना देना। बीती बात-कहना। [वाला।
उघटा—वि०अहसान जताने-
उघटापेची—स्त्री० उलहना।
उघड़ना, उघरना९—अक्रि० खुलना। भंडा फूटना।
उघाड़ना—सक्रि० खोलना। आवरण हटाना। रहस्योद्-घाटन करना।
उघरारा—वि० खुला हुआ।
उघेलना—सक्रि० खोलना।
उचकना९—अक्रि०एड़ी के बल खड़ा होना। ऊपर उठना। सक्रि० उछल कर लेना।
उचका—क्रि० वि० सहसा।
उचक्का७—वि० ठग।
उचटना९—अक्रि० भड़कना, ऊबना।
उचड़ना९—अक्रि०अलग होना
उचना—अक्रि० उचकना। सक्रि० ऊँचा करना।
उचनि—स्त्री० उठान।
उचरंग—पु० पतिङ्गा।
उचरना—सक्रि० बोलना।
उचाट—पु० उदासीनता।
उचाटन—पु० विरक्ति।
उचाटना—सक्रि०विरक्त करना। उच्चाटन करना।
उचाटा—स्त्री० विरक्ति।
उचाड़ना—सक्रि० उखाड़ना।
उचाना—सक्रि० उठाना। ऊँचा करना।
उचापत—स्त्री० उधार।
उचारना—सक्रि० उच्चारण-करना।
उचित—वि० मुनासिब।
उचेलना—सक्रि०उचाड़ना।
उचौहाँ—वि० उभड़ा हुआ।
उच्चंड—वि० शीघ्र।
उच्च३—वि० श्रेष्ठ। ऊँचा।
उच्चतम*—वि०सर्वोच्च। सर्वोत्तम।
उच्चरण—पु०उच्चारण।

नोट*—विशेषण के आगे 'तम' का प्रयोग 'अत्यधिक' अर्थ मे होता है; जैसे, उच्चतम।

उच्चरना—सक्रि० उच्चारण-करना। [क्रिया हुआ।
उच्चरित—वि० उच्चारण-
उच्चस्वर—पु० ऊँची आवाज़।
उच्चाट,उच्चाटन—पु० विरक्ति, उदासीनता।
उच्चार—पु० कथन। विष्ठा।
उच्चारण—पु० मुँह से शब्द-निकालना, बोलना
उच्चारित—वि० बोला हुआ।
उच्चार्य—वि० बोलने-योग्य
उच्चैःश्रवा—पु० इन्द्र या सूर्य का सफ़ेद घोड़ा। वि० बहरा।
उच्चैर्घुष्ट—पु० घोषणा।
उच्छन्न—वि० लुप्त। दबा-हुआ।
उच्छरना—अक्रि० उछलना।
उच्छव—पु० उत्सव।
उच्छाव,उच्छाह—पु० उत्साह।
उच्छास—पु० साँस।
उच्छिन्न—वि० खंडित, नष्ट।
उच्छिष्ट—वि० जूठा।
उच्छू—स्त्री० एक प्रकार की-खाँसी। [स्वेच्छा-चारी।
उच्छृंखल३—वि० उद्दंड।
उच्छेद,उच्छेदन—पु० नाश। खण्डन। [परिमाण।
उच्छ्रय,उच्छ्राय—पु० उच्च
उच्छ्रित—वि० ऊँचा, उन्नत।
उच्छ्वसित, उच्छ्वासित—वि० साँस लेता हुआ। खिला हुआ।
उच्छ्वास—पु० उसाँस, श्वास। प्रकरण।
उछंग—पु० गोद।

उछकना—अक्रि० चौंकना। होश में आना।
उछरना—अक्रि० उछलना।
उछलकूद—स्त्री० हलचल।
उछलना९—अक्रि० नीचे से-ऊपर उठना, कूदना। प्रसन्न होना।
उछाँटना—सक्रि० उदासीन-करना। चुनना, छाँटना।
उछाल—स्त्री० सहसा ऊपर-उठना। वमन।
उछालना—सक्रि० ऊपर की ओर फेंकना। प्रकट-करना।
उछाला—पु० जोश। वमन।
उछाव—पु० उमङ्ग।
उछाह—पु० उत्साह। उत्सव। इच्छा। आनन्द।
उछाही५—वि० उत्साही।
उछिन्न—वि० खण्डित।
उछिष्ट—वि० जूठा।
उछीनना—सक्रि० नष्ट करना।
उछीर—पु० अवकाश। छिद्र।
उछेद—पु० दे० 'उच्छेद'।
उजट—पु० झोंपड़ी, उटज।
उजड़ना—अक्रि० नष्ट होना। उखड़ना। बिखरना।
उजड़वाना—सक्रि० उजाड़ने का काम दूसरे से कराना।
उजड्ड१—वि० मूर्ख, गँवार।
उज़बक—वि० (तु०) मूर्ख।
उजरत—स्त्री० (अ०) मज़दूरी, पारिश्रमिक।
उजरना ९—अक्रि० दे० 'उजडना'।
उजरा७—वि० उजला।

उजराई—स्त्री० स्वच्छता। श्वेतता।
उजराना—सक्रि० साफ़-कराना।
उजलत—स्त्री० (अ०) जल्दी।
उजला—वि० स्वच्छ, साफ़।
उजागर—वि० प्रसिद्ध, प्रकाशित। [जङ्गल।
उजाड़—वि० वीरान। पु०
उजाड़ना—सक्रि० वीरान-करना, बरबाद करना।
उजान—क्रि० वि० नदी के चढ़ाव की तरफ़।
उजार—वि० उजाड़। पु० शून्य-स्थान।
उजालना—सक्रि० जलाना। प्रकाशित करना। निखारना।
उजारा, उजाला ७—पु० प्रकाश।
उजास—पु० प्रकाश। चमक।
उजासना—अक्रि० प्रकाशित-होना।
उजियरिया—स्त्री० चाँदनी।
उजियाना—सक्रि० उत्पन्न-करना। प्रकट करना।
उजियार—वि० उजला।
उजियारना—सक्रि० प्रकाशित-करना। जलाना। [उजाला।
उजियारा, उजियाला७—पु०
उजीना—पु० प्रकाश।
उजीर—पु० वज़ीर।
उज़ुर—पु० उज्र, आपत्ति।
उजृंभित—वि० प्रफुल्ल, विकसित।
उजेर—पु० प्रकाश, उजाला।
उजेला—पु० रोशनी।

उज्जर—वि० उज्ज्वल।
उज्ज्ल—क्रि०वि०दे०'उजान'। पु० उज्जवल।
उज्जासन—पु०मारण, वध।
उज्जयिनी—स्त्री० उज्जैन।
उज़्म—पु० (अ०) बड़प्पन।
उज़्मा—पु०(अ०) बुज़ुर्गलोग।
उज्यारा—पु० उजाला।
उज़्र—पु० (अ०) बाधा, ऐतराज़, आपति।
उज़्रदारी—पु० आपत्ति-जनक-कार्यवाही।
उज़्रबेगी—पु० (अ०) बाद-शाह के सामने प्रार्थनापत्र उपस्थित करने वाला-कर्मचारी।
उज्ज्वल ३—वि० स्वच्छ। निर्मल, चमकदार।
उज्ज्वला—स्त्री० बारह अक्षरों की एक वृत्ति।
उज्ज्वलित—त्रि० प्रदीप्त।
उज्यारा ७—पु० उजाला।
उज्यास—पु०दे० 'उजास'।
उज्वालना—सक्रि०जलाना।
उझकना—अक्रि०उचकना। चौंकना।
उझपना९—अक्रि० खुलना।
उझरना—सक्रि०ऊपर उठाना।
उझलना—अक्रि० उभड़ना।
उझाँकना—सक्रि०उझकना।
उझिला—स्त्री० उबटन के लिये भुनी हुई सरसों।
उटंग—वि०पहनने में छोटा-वस्त्र। [घास।
उटगन—पु० चौपतिया-
उटंगित—वि० चिह्नित।
उटकना—सक्रि० अनुमान-करना। [खाबड़।
उटक-नाटक—त्रि० ऊबड़-
उट—पु० तृण। [कुटो।
उटज—पु० झोंपड़ी। पर्ण
उटड़पा, उटड़ा—पु० जुए के नीचे की वह लकड़ी जिस पर गाड़ी ठहरती है।
उठँगन—पु० आड़, टेक।
उठँगना—अक्रि० सहारा आदि लेकर बैठना।
उठना९—अक्रि० जागना। खड़ा होना। हटना।
उठल्लू—वि० निकम्मा, आवारा।
उठवाना—सक्रि० उठाने का काम दूसरे से कराना।
उठाईगीरा—वि० आँख बचाकर माल चुराने वाला, उचक्का।
उठान—स्त्री०उठना। आरंभ।
उठाव—पु० उठा हुआ भाग।
उठौनी—स्त्री० उठाने की क्रिया। पेशगी। [उठल्लू।
उठौवा—वि० अस्थिर।
उड़ंकू—वि० उड़ने वाला।
उडगण—पु० नक्षत्र-समूह।
उड़ती—स्त्री० अफ़वाह।
उड़न खटोला—पु० विमान।
उड़नछू—वि० ग़ायब।
उड़ना ९—अक्रि० आकाश-मार्ग से जाना। भागना। लुप्त होना।
उड़नफ़ाख़्ता—वि० मूर्ख।
उड़पति,उड़राज-पु०चन्द्रमा।
उड़वाना—सक्रि० उड़ने में प्रवृत्त कराना।
उड़सना९—अक्रि०नष्ट होना।
उड़ाऊ—त्रि० ख़र्चीला।
उड़ाका, उड़ाकू—वि० उड़ने-वाला। [क्रिया।
उड़ान—स्त्री० उड़ने की
उड़ायक—वि०उड़ने वाला।
उड़ास—स्त्री० निवास-स्थान।
उड़ासना—सक्रि० उजाड़ना।
उड़िया—पु०उड़ीसा देश का निवासी। स्त्री० वहाँ की भाषा।
उड़ियाना—पु० एक छन्द।
उड़िस—पु० खटमल।
उडुंबर—पु० गूलर। [जल।
उडु—स्त्री० तारा। पक्षी।
उडुप—पु०चन्द्रमा। नौका।
उडुपति,उडुराज—पु०चन्द्रमा।
उडुस—पु० खटमल।
उड़ेलना—सक्रि० किसी बर्तन में गिराना।
उड़ैनी—स्त्री०जुगनू, खद्योत।
उड़ौहा—वि० उड़ने वाला।
उड्डयन—पु० उड़ना।
उड्डीन—पु० उड़ना।
उड्डीयमान ४—त्रि० उड़ता-हुआ।
उढ़कना ९—सक्रि० अड़ना। सहारा लेना। [लना।
उढ़ना—सक्रि० बाहर निका-
उढ़रना—अक्रि० विवाहिता-स्त्री का परपुरुष के साथ भाग जाना।
उढ़री—स्त्री०रखैल स्त्री।
उढ़ाना—सक्रि० ओढ़ाना।
उढ़ारना—सक्रि० दूसरे की

स्त्री को लेकर भाग जाना।
उढ़ावनी—स्त्री० चादर।
उतंक—पु० एक ऋषि। वि० बहुत ऊँचा।
उतंग—वि० ऊँचा। श्रेष्ठ।
उतंत—वि० उत्पन्न।
उत—क्रि० वि० उधर। पु० बिना हुआ वस्त्र।
उतना—क्रि० वि०उस मात्रा में। वि० उस मात्रा का।
उतपानना—सक्रि० उत्पन्न-करना।
उतमंग—पु० उत्तम अंग।
उतर—पु० उत्तर
उतरन—पु० पहना हुआ-कपड़ा।
उतरना—अक्रि० ऊपर से नीचे आना। समाप्ति पर-होना। डेरा डालना। सक्रि० पार उतरना।
उतरवाना—सक्रि० उतारने का काम अन्य से कराना।
उतराई—स्त्री० उतरने की क्रिया। पार उतारने का-महसूल।
उतराना—अक्रि० तैरना। उफान खाना। [उतरन।
उतरायल—वि०पहना हुआ,
उतरारी—वि० स्त्री० उत्तर-की (हवा)।
उतराव—पु० उतार, ढाल।
उतराहों—वि० उत्तर का। क्रि० वि० उत्तर की ओर।
उतरिन—वि० उऋण।
उतवंग—पु० उत्तम अंग।
उतकंठा—स्त्री० उत्कंठा।
उतान—वि० सीधा, चित्त।
उतायल२—वि० शीघ्रता-युक्त।
उतार—पु०उतरने की क्रिया। ढाल। घटाव। न्यौछावर।
उतारन—पु० दे० 'उतरन'।
उतारना—सक्रि०ऊँचे स्थान से नीचे आना। दूर करना। तोड़ना। पहनी हुई चीज़ को अलग करना। ठहराना। पार उतारना।
उतारा—पु० डेरा डालना। नदी पार होने का कार्य। रोगी के चारों ओर घुमायी हुई वस्तु। उतरने की जगह।
उतारिद—पु० (अ०) बुधग्रह।
उतारू—वि० तत्पर, तैयार।
उताल—क्रि०वि०शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता।
उतालता—स्त्री० शीघ्रता।
उताली—स्त्री०शीघ्रता। क्रि० वि० शीघ्रता से।
उतावल—क्रि०वि०शीघ्रता से।
उतावला २-७—वि० व्यग्र। जल्दबाज़। चंचल।
उताहल—क्रि०वि०शीघ्रता से।
उतै—क्रि० वि० उधर।
उत्कंठ—वि० ऊँची गर्दन-वाला।
उत्कठा—स्त्री०लालसा।
उत्कंठित४—वि० उत्सुक।
उत्कंठिता—स्त्री० वह नायिका जो संकेत-स्थान पर प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करे।
उत्कंप—पु० कँपकँपी।
उत्क—वि०उन्मना। इच्छुक।
उत्कट—वि० प्रचंड, उग्र। प्रबल।
उत्कर—पु० अनाज आदि का ढेर [रक्षक।
उत्कर्ण—वि०बड़े कान वाला।
उत्कर्ष३—पु०बड़ाई। श्रेष्ठता। समृद्धि, बढ़ती।
उत्कल—पु० उड़ीसा देश।
उत्कलिका—स्त्री० उत्कंठा। तरंग। कली।
उत्का—वि० स्त्री०उत्कंठिता।
उत्कीर्ण—वि० खुदा हुआ। छिदा हुआ। लिखा हुआ।
उत्कीर्तन—पु० प्रशंसा।
उत्कुण—पु० खटमल।
उत्कृति—स्त्री० छब्बीस की-संख्या।
उत्कृष्ट ३—वि० श्रेष्ठ।
उत्कोच—पु० रिश्वत।
उत्क्रम—पु० विपर्यय।
उत्क्रांति—स्त्री० ऊपर की या पूर्णता की ओर जाना। मृत्यु।
उत्क्रोश—पु० टिटहरी।
उत्क्षिप्त—वि० ताड़ित। फेंका-हुआ [मूसल। चोरा।
उत्क्षेपण—पु० पंखा। सूप।
उत्खनन—पु० खोदना।
उत्खात—वि० उजाड़ा हुआ।
उत्खाता१०—वि० खोदने-वाला।
उत्तंग—वि० बहुत ऊँचा।
उत्तंस—पु० दे० 'अवतंस'।
उत्त—पु० आश्चर्य। सन्देह। क्रि० वि० उधर।
उत्तप्त—वि० अधिक तपा

हुआ। दुःखी।
उत्तम—३-४-वि० श्रेष्ठ, अच्छा, भला।
उत्तमगंधा—स्त्री० चमेली।
उत्तमतया—क्रि०वि०अच्छी-तरह से।
उत्तमत्व—पु० उत्तमता।
उत्तमपुरुष—पु० वह सर्व-नाम जो बोलने वाले को प्रकट करता है।
उत्तमर्ण—पु० महाजन।
उत्तमश्लोक—वि०विख्यात। पु० विष्णु। [अंग।
उत्तमांग—पु० सिर। उत्तम-
उत्तमा—स्त्री० उत्तम गुणों तथा मर्यादा वाली स्त्री।
उत्तमादूती—स्त्री० वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से मना लावे।
उत्तमानायिका—स्त्री० अपने पति में अनुराग रखने वाली स्त्री।
उत्तमोत्तम—वि०सब से श्रेष्ठ।
उत्तमौजा—वि०उत्तम तेज-वाला।
उत्तर—पु० दक्षिण के प्रति-कूल दिशा। जवाब। बदला। वि० बाद का। क्रि० वि० पीछे। [देश।
उत्तर-कोशल—पु० अवध-
उत्तरक्रिया—स्त्री० अन्त्येष्टि-क्रिया।
उत्तरच्छद—पु० पलंगपोश।
उत्तरदाता१०—वि० ज़िम्मे-दार, जवाबदेह।
उत्तरदायित्व-पु०ज़िम्मेदारी।
उत्तरदायी५—वि० दे० 'उत्तरदाता'।
उत्तरपक्ष—पु० जवाब की दलील। प्रश्न आदि का उत्तर देने वाला।
उत्तरपथ—पु० देवयान।
उत्तरपट—पु० चादर।
उत्तर-प्रत्युत्तर—पु० तर्क। वाद-विवाद [दर्शन।
उत्तरमीमांसा—स्त्री० वेदांत-
उत्तरवयस—पु० बुढ़ापा।
उत्तरा—स्त्री० अभिमन्यु की स्त्री। [का उत्तरीय देश।
उत्तराखंड—पु० भारतवर्ष-
उत्तराधिकार—पु० किसी की मृत्यु के बाद उसके धन का हक़।
उत्तराधिकारी५—पु० वह व्यक्ति जो किसी की मृत्यु के बाद सम्पत्ति का हक़दार हो
उत्तरापथ—पु० भारत के उत्तर का प्रदेश। [नक्षत्र।
उत्तराफाल्गुनी—स्त्री० एक-
उत्तराभाद्रपदा—स्त्री० एक-नक्षत्र। [उत्तर।
उत्तराभास—पु० ऊटपटाँग-
उत्तरायण—पु० सूर्य की उत्तर दिशा में गति।
उत्तरार्द्ध—पु० पीछे का आधा-हिस्सा।
उत्तराषाढ़—पु० एक नक्षत्र।
उत्तरासंग-पु०दुपट्टा,अँगोछा।
उत्तरीय—वि० उत्तर दिशा-का। पु० चादर, दुपट्टा।
उत्तरोत्तर—क्रि० वि० एक के बाद एक, क्रमशः,लगातार।
उत्तान—वि० सीधा, चित्त।
उत्तानपात्र—पु० तवा।
उत्तानपाद—पु० एक राजा।
उत्ताप—पु० गर्मी। दुःख। रंज।
उत्तापित—वि०दे० 'उत्तप्त'-
उत्ताल—वि० उत्कट। भया-नक। [गया हुआ।
उत्तीर्ण—वि० सफल। पार-
उत्तुंग—वि० बहुत ऊँचा।
उत्तू—वि० बदहवास। पु० बेल बूटे के निशान डालने का यन्त्र। [प्रेरक।
उत्तेजक-वि० उसकाने वाला।
उत्तेजन—पु० उत्तेजना।
उत्तेजना—स्त्री० बढ़ावा। प्रेरणा। जोश।
उत्तेजित—वि० प्रोत्साहित।
उत्तोलन—पु० ऊपर उठाने का कार्य।
उत्थवना—सक्रि०आरंभकरना
उत्थान—पु०उठान। बढ़ती।
उत्थानि—स्त्री० आरंभ।
उत्थापन—पु० ऊपर उठाना। जगाना। [उत्पन्न।
उत्थित—वि० उठा हुआ।
उत्पट—पु० दुपट्टा।
उत्पतन—पु०उड़ना। [हुआ।
उत्पतित—वि० ऊपर गया-
उत्पतिष्णु—वि० उछलनेवाला।
उत्पत्ति—स्त्री० जन्म। आरंभ।
उत्पथ—पु० कुमार्ग।
उत्पन्न४—वि० पैदा हुआ।
उत्पल—पु० कमल जो रात में खिलता। कूट नामक-दवा।

उत्पाटन—पु० उखाड़ना ।
उत्पाटित—वि० उखाड़ा हुआ।
उत्पात—पु० उपद्रव ।
उत्पाती५—वि० उपद्रवी ।
उत्पादक१४—वि० पैदा-करने वाला ।
उत्पादन—पु० पैदा करना ।
उत्पादित—वि० पैदा किया ।
उत्पीडन—पु० सताना ।
उत्पीडित—वि०सताया हुआ।
उत्प्रेक्षा—स्त्री० एक काव्यालंकार । आरोप । अनुमान । उपमा ।
उत्प्लवन—पु० लाँघना ।
उत्फाल—पु० उछलकूद ।
उत्फुल्ल—वि० खिला हुआ ।
उत्संग—पु०गोद । मध्य का भाग । वि० विरक्त ।
उत्स—पु० झरना, सोता । पर्वतीय कुंड । [हुआ ।
उत्सन्न—वि० नष्ट । उजड़ा-
उत्सर्ग—पु० त्याग, दान ।
उत्सर्गी,उत्सर्ग्य—वि० त्याज्य।
उत्सर्जन६—पु० विसर्जन ।
उत्सर्जित—वि० त्यक्त।
उत्सर्पण—पु० चढ़ाव । उल्लंघन ।
उत्सर्पिणी—स्त्री० वह समय जिसमें रूप, रस, गंध स्पर्श की क्रम से वृद्धि हो ।
उत्सव—पु०जलसा । पर्व । आनन्द । महफ़िल ।
उत्सादक-वि०नष्ट करने वाला
उत्सादन—पु० विनाश ।
उत्सादित—वि० विनाशित।
उत्सारक—पु० द्वारपाल ।
उत्साहन—पु०उमंग। जोश । साहस । [वाला ।
उत्साहित४—वि० उत्साह-
उत्साहिल—वि० उत्साह-पूर्ण ।
उत्साही—वि० उत्साह से भरा हुआ ।
उत्सुक३—वि० उत्कंठित ।
उत्सूर—पु० शाम ।
उत्सृष्ट—वि० त्यक्त ।
उत्सेक—पु० सींचना । गर्व ।
उत्सेध—पु० उन्नति । ऊँचाई । वि० ऊँचा, श्रेष्ठ।
उथपना—सक्रि० उजाड़ना । उठाना ।
उथलना—अक्रि० डगमगाना ।
उथल-पुथल—स्त्री० उलट-पलट ।
उथला—स्त्री० छिछला ।
उदंत—पु० वृत्तांत । वि० जिसके दाँत न जमे हों ।
उदक—पु० जल ।
उदकअद्रि—पु० हिमालय ।
उदक क्रिया—स्त्री० जल-तर्पण
उदकना९—अक्रि० कूदना ।
उदक्या—स्त्री० रजस्वला ।
उदगरना—अक्रि० निकलना ।
उदगर्गल—पु० जल की गहराई नापने की विद्या ।
उदगार—पु०दे० 'उद्गार'।
उदगारना—सक्रि० बाहर निकालना । प्रगट करना । डकार लेना ।
उदग्ग—वि० उन्नत । उजड्ड ।
उदग्र—वि० ऊँचा ।
उदघटना—अक्रि० प्रगटहोना, ज़ाहिर होना ।
उदघाटना—सक्रि० खोलना ।
उदज—पु० गाय भैंस आदि पशुओं का खदेड़ना ।
उदथ—पु० सूर्य ।
उदधि—पु० समुद्र ।
उदधिमेखला—स्त्री० पृथ्वी ।
उदधिवस्त्रा—स्त्री० पृथ्वी ।
उदधिसुत४—पु० समुद्र से निकले पदार्थ । चंद्रमा । अमृत । शंख । ऐरावत ।
उदधिसुता—स्त्री० लक्ष्मी ।
उदधीय—वि०समुद्र-संबंधी ।
उदन्या—स्त्री० प्यास ।
उदपान—पु० कमंडलु । तट । कुएँ के पास का गड्ढा ।
उदबर्त्तन—पु० व्यवहार । उबटन ।
उदबस—वि० सूना, उजाड़ ।
उदबासना—सक्रि० उजाड़ना ।
उदबेग—पु० घबराहट, भय ।
उदभट—वि० प्रबल, श्रेष्ठ ।
उदभौत—पु० अद्भुत वस्तु । अचंभा ।
उदमदना—अक्रि० पागल-होना, आपे में न रहना ।
उदमादन—पु० पागलपन ।
उदमान४—वि० मतवाला ।
उदय—पु० प्रकट होना । उद्गम । उन्नति, वृद्धि ।
उदयना—अक्रि० उदय होना ।
उदयाचल—पु० एक कल्पित पर्वत जहाँ सूर्य का उदय होता है । [तक ।
उदयास्त—वि० उदय से अस्त-
उदरंभर—वि० पेटू ।
उदर—पु० पेट ।

उदरना—अक्रि० गिरना, फटना
उदरावर्त्त—पु० नाभि।
उदर्क—पु० आगामी फल।
उदवना—अक्रि० उगना।
उदवसित—पु० घर।
उदवासना—सक्रि० भगाना।
उदवाह—पु० विवाह।
उदसना—अक्रि० उजड़ना।
उदात्त—वि० दयाशील। उच्च स्वरोच्चारित। श्रेष्ठ।
उदान—पु० एक प्राण वायु जो कंठ में रहती है।
उदाम—वि० दे० 'उद्दाम'।
उदायन—पु० उद्यान।
उदार ३-त्रि० दाता। श्रेष्ठ।
उदारचरित ४—त्रि० शीलवान्। [वाला।
उदारचेता-त्रि० उदार चित्त-
उदारना—सक्रि० फाड़ना।
उदाराशय-त्रि० उच्च विचारों-वाला।
उदावर्त्त—पु० गुदा से काँच निकलने का रोग, काँच।
उदास-वि० दुःखी। विरक्त।
उदासना—सक्रि० उजाड़ना।
उदासिल—वि० उदास।
उदासी—पु० गुरु नानक के कुलदीपक श्रीचंद के चलाये हुए मत के अनुयायी साधु। स्त्री० खिन्नता। [विरक्त।
उदासीन ३-४-वि० निष्पक्ष।
उदाहर—वि० भूरा।
उदाहरण—पु० मिसाल।
उदाहार—पु० चिंता। उदाहरण। [हुआ।
उदाहृत-वि० मिसाल दिया-
उदित ४—वि० प्रकटित।
उदितयौवना—स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसके यौवन का विकास हो चुका हो, युवती।
उदियाना—अक्रि० घबराना।
उदीची—स्त्री० उत्तर दिशा।
उदीच्य—वि० उत्तर दिशा का रहने वाला। [हुआ।
उदीयमान—वि० उदय होता-
उदीरण—पु० कथन।
उदीरित—वि० कथित।
उदुंबर—पु० गूलर।
उदू—पु० (अ०) शत्रु।
उदूखल—पु० ओखली।
उदूल—पु० (अ०) अवज्ञा-करना। न मानना।
उदूल-हुक्मी—स्त्री० (अ०) आज्ञोल्लंघन।
उदै—पु० उदय। उन्नति।
उदो, उदौ—पु० उदय।
उदोत ८—पु० प्रकाश।
उदोतकर—वि० प्रकाश-करने वाला।
उदौ—पु० प्रकट होना।
उद्*—अव्य० एक उपसर्ग।
उद्गत—वि० उदित, प्रकट।
उद्गम—पु० उदय, उद्भव+
उद्गाढ—वि० अतिशय।
उद्गाता—पु० यज्ञ में सामवेद के मंत्रों का गान करने वाला प्रधान यज्ञकर्त्ता
उद्गार—पु० उबाल। डकार। कफ। हृदय का भाव।
उद्गारी ५—त्रि० प्रकट करने वाला। उगलने वाला।
उद्गिरण—पु० उगलना।
उद्गीथ—पु० सामवेद का एक भाग। ओंकार।
उद्ग्राह—पु० डकार।
उद्गीर्ण—वि० निकला हुआ।
उद्गीति—स्त्री० छन्द विशेष।
उद्ग्रीव—त्रि० उठी हुई-गर्दन वाला। उत्सुक।
उद्घाट—पु० चौकी। [illegible]घर।
उद्घाटक १४—त्रि० खोलने-वाला।
उद्घाटन ६—पु० खोलना।
उद्घाटित—वि० खोला हुआ।
उद्घात—पु० ठोकर। धक्का। आरम्भ।
उद्घातक १४—वि० धक्का-देने वाला। आरंभ-कर्ता।
उद्घोष—पु० उच्च-स्वर से बोलना। [कहा हुआ।
उद्घोषित—वि० उच्च स्वर से
उद्दंड ३—वि० उजड्ड, प्रचंड।

नो*—'उद्' उपसर्ग शब्दों के प्रायः 'उठना, पूर्व उत्कर्ष, शक्ति, निन्दा, स्वच्छन्दता, उत्पत्ति और उन्नति' अर्थों में प्रयुक्त होता है; जैसे उद्योग, उद्यम, उत्साह, उत्पथ, उच्छृंखल, उत्पन्न और उन्नत आदि।

उद्दंश—पु० मशक, मच्छर।
उद्दत—वि० उठाया हुआ, उद्यत।
उद्दान—पु० बंधन।
उद्दाम—वि० बिना बंधन का, स्वतंत्र। पु० वरुण।
उद्दाल—पु० लसोड़ा।
उद्दालक—पु० एक ऋषि।
उद्दित—वि० उदित। उद्धत।
उद्दिम—पु० उद्यम।
उद्दिष्ट—वि० अभीष्ट। दिखाया-हुआ। लक्ष्य।
उद्दीपक १४—वि० उत्तेजक।
उद्दीपन ६—पु० उत्तेजन। उभाड़।
उद्दीपित—वि० उत्तेजित।
उद्दीप्त—वि० उभाड़ा हुआ। प्रकाशित।
उद्दीप्य—वि० उभाड़ने के-योग्य। [इष्ट।
उद्देश—पु० अभिप्राय। हेतु।
उद्देश्य—वि० लक्ष्य। पु० आशय। [प्रकाशित।
उद्दोत—पु० प्रकाश। वि०
उद्दोतिताई—स्त्री० प्रकाश।
उद्ध—क्रि० वि० ऊपर।
उद्धत १—वि० प्रचंड। उजड्ड। निडर।
उद्धना—अक्रि० फैल जाना। ऊपर उठना।
उद्धरण ६—पु० उद्धार। किसी लेख के अंश को ज्यों का त्यों नक़ल कर देना।
उद्धरणी—स्त्री० पठित पाठ को बार बार पढ़ना।
उद्धरना—सक्रि० उबारना। अक्रि० मुक्त होना।
उद्धर्ष—पु० उत्सव।
उद्धव—पु० उत्सव। यज्ञाग्नि। श्रीकृष्ण जी के मित्र।
उद्धान—पु० चूल्हा।
उद्धार—पु० मुक्ति, छुटकारा।
उद्धारना—सक्रि० उद्धार-करना। [हुआ।
उद्धृत—वि० उद्धरण किया-
उद्ध्वस्त—वि० नष्ट, टूटा फूटा।
उद्बंधन—पु० फाँसी देना।
उद्बुद्ध—वि० चैतन्य। विकसित।
उद्बुद्धा—स्त्री० अपनी इच्छा से पर पुरुष से प्रेम-करने वाली स्त्री।
उद्बोध—पु० स्मरण। ज्ञान।
उद्बोधक १४—वि० ज्ञान करने वाला, जगाने वाला।
उद्बोधन ६—पु० जगाना। ज्ञान कराना। [या गया।
उद्बोधित—वि० बोध करा-
उद्भट३—वि० प्रबल। प्रचंड।
उद्भव—पु० उत्पत्ति। वृद्धि।
उद्भवना—स्त्री० कल्पना। उत्पत्ति, सृष्टि।
उद्भास ६—पु० प्रकाश।
उद्भासित—वि० प्रकाशित। प्रकट, ज्ञात।
उद्भिज्ज—पु० वनस्पति।
उद्भूत—वि० पैदा हुआ।
उद्भेद, उद्भेदन६—पु० अंकुर-निकलना।
उद्भ्रम—पु० ऊबना।
उद्भ्रांत—वि० भूला हुआ। घूमता हुआ। चकित।
उद्यत—वि० तैयार।
उद्यम—पु० धंधा, यत्न; मेहनत।
उद्यमी—वि० परिश्रमी।
उद्यान—पु० उपवन। [क्रिया।
उद्यापन—पु० व्रत समाप्ति-
उद्युक्त—वि० तत्पर।
उद्योग—पु० परिश्रम, यत्न।
उद्योगी६—वि० परिश्रमी।
उद्योत—पु० प्रकाश।
उद्र—पु० जल-बिलाव।
उद्रिक्त—वि० बढ़ा हुआ।
उद्रेक—पु० बढ़ती। अधिकता।
उद्वर्त्तन—पु० उबटन। बर्तना।
उद्वह ४—पु० पुत्र।
उद्वहन—पु० विवाह। ऊपर की ओर खिंचना।
उद्वांत—पु० साधारण हाथी।
उद्वासन ६—पु० भागना। उजाड़ना। मारना।
उद्वासक—पु० छुड़ाने या-उजाड़ने वाला। [हुआ।
उद्वासित—वि० भगाया-
उद्वास्य—वि० उद्वासन के-योग्य।
उद्वाह, उद्वाहन—पु० विवाह। ऊपर ले जाना। हटाना।
उद्वाहित—वि० विवाहित।
उद्वाही५—वि० विवाह करने-वाला।
उद्वाह्य—वि० विवाह के योग्य
उद्विग्न ३—वि० व्यग्र।
उद्वृत्त—वि० मर्यादा का उल्लंघन करने वाला।
उद्वेग—पु० जोश। घबराहट।
उद्वेलित—वि० हिला हुआ।

उधड़ना—अक्रि० खुलना।
उधर–क्रि० वि० उस ओर।
उधरना-सक्रि०उद्धार पाना।
उधराना—अक्रि० बिखरना। ग़ायब होना।
उधार—पु० ऋण, मँगनी।
उधारक१४—वि० छुड़ाने-वाला। [करना।
उधारना—सक्रि० उद्धार-
उधारी५-वि० उद्धार करने-वाला। [खोलना।
उधेड़ना—सक्रि० सिलाई-
उधेड़बुन–स्त्री०सोच-विचार।
उनंत—वि० अवनत।
उन-सर्व०'उस' का बहुवचन।
उनका—पु० एक कल्पित-पक्षी।
उनचास—वि० ४९।
उनतीस—वि० २९।
उनदौंहा—वि० उनींदा।
उनमना—वि० उदास।
उनमाथना—सक्रि० मथना।
उनमाथी—वि०मथने वाला।
उनमान—पु० अनुमान। नाप। वि० समान।
उनमानना—सक्रि० अनुमानना, विचारना।
उनमुना ७—वि० मौन।
उनमुनी—स्त्री० हठ योग-का एक आसन।
उनमूलना—सक्रि० जड़ से उखाडना, नष्ट करना।
उनमेख—पु० खुलना। प्रकाश।
उनमेखना—अक्रि०खुलना।
उनमेद—पु० माँजा।

उनरना९—अक्रि०उमड़ना।
उनवना ९—अक्रि० झुकना।
उनवर—वि० न्यून। क्षुद्र।
उनसठ—वि० ५९।
उनहत्तर—वि० ६९।
उनहानि—स्त्री० समानता।
उनहार—वि० समान।
उनहारि—स्त्री० समानता, एक-रूपता।
उनाना—सक्रि० झुकाना।
उनारना–सक्रि० उकसाना, बढ़ाना।
उनासी—वि० ७९।
उनींद—स्त्री० उँघाई।
उनींदा ७–वि०ऊँघता हुआ।
उन्क़ा–वि० (अ०) अप्राप्य। पु० एक कल्पित पक्षी।
उन्दुरु—पु० चूहा।
उन्नत—वि० ऊँचा, बढ़ा-हुआ, समृद्ध।
उन्नतमना—वि० उदार। उच्च विचार का।
उन्नति–स्त्री०वृद्धि। ऊँचाई।
उन्नमित—वि० ऊपर उठाया-गया।
उन्नय, उन्नयन—पु० ऊपर ले जाना। उन्नति।
उन्नाब–(अ०) एक फल।
उन्नाबी–पु० (अ०) कालापन-लिये लाल रंग। गहरा-लाल रंग। [ऊपर ले जाना।
उन्नाय—पु० सोच-विचार।
उन्नायक १४—वि० आगे की ओर ले जाने वाला। उन्नति-कर्ता। [विकसित।
उन्निद्र—वि० निद्रा-रहित।

उन्नीस—वि० १९।
उन्मत्त३—वि० मतवाला।
उन्मद—वि०पागल, सिड़ी।
उन्मज्जन—पु० प्रकटता।
उन्मना—वि० उदास। उन्मत्त।
उन्माथ—पु० वध, क़तल।
उन्माद८—पु० पागलपन।
उन्मादक–१४वि० पागल करने वाला। नशीला।
उन्मादन ६—पु० उन्माद।
उन्मार्ग ८—पु० कुमार्ग।
उन्मिषित—वि० प्रफुल्ल।
उन्मीलक–वि०खिलने वाला।
उन्मीलन ६—पु० खिलना।
उन्मीलना—सक्रि० खोलना।
उन्मीलित—वि० खुला, खिला हुआ। एक अलंकार।
उन्मुक्त—वि० छूटा हुआ, खुला हुआ।
उन्मुख ४—वि० ऊपर मुँह किये हुए। तैयार।
उन्मूलक—वि० समूल नष्ट-कर्ता। [उखाड़ना।
उन्मूलन—पु० जड़ से,
उन्मूलनीय—वि० उखाड़ने-के योग्य। [हुआ।
उन्मूलित—वि०समूल उखाड़ा-
उन्मेष-पु० खिलना। उदय।
उन्मोचन—पु०त्याग करना।
उन्वान—पु० (अ०) शीर्षक, शिरनामा। भूमिका। तर्ज़।
उन्स—पु० (अ०) मुहब्बत।
उन्सियत—पु० (अ०) प्रेम।
उन्हानि—स्त्री० बराबरी।
उन्हारि—स्त्री० रूप, शक्ल।

उपंग—पु० एक बाजा।
उपत—त्रि० उत्पन्न।
उप*-अव्य० एक उपसर्ग।
उपकंठ—त्रि० समीप, पास।
उपकरण—पु० सामिग्री।
उपकरना—सक्रि० उपकार-करना। [करने वाला।
उपकर्त्ता १०—वि० भलाई
उपकार १२—पु० भलाई।
उपकारिका—स्त्री० उपकार-करने वाली। तंबू।
उपकारिता—स्त्री० भलाई।
उपकारी ५—वि० उपकार-करने वाला।
उपकार्य—वि० उपकार किये जाने योग्य।
उपकार्या—स्त्री० राजघर। डेरा, तंबू।
उपकुर्वाण—पु० विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी।
उपकुलपति—पु०वाइसचांसलर।
उपकूप—पु० चरहा।
उपकृत—वि० कृतज्ञ।
उपकृति—स्त्री० उपकार।
उपक्रम—पु० भूमिका। आरंभ। कार्यारंभ करने का आयोजन।
उपक्रमणिका—स्त्री० पुस्तक का विषय-सूची।
उपक्रांत—त्रि० प्रस्तुत। आरंभ किया हुआ।
उपक्रिया—स्त्री० उपकार।
उपक्रोश—पु० निन्दा। भर्त्सना।
उपक्षेप—पु० नाटक के आरंभ में समस्त वृतान्त का सारांश। आक्षेप।
उपखान—पु० पुरानी कथा।
उपगंता १०—वि० पहुँचाने-वाला।
उपगत—वि०प्राप्त। स्वीकृत। ज्ञात। [कार। प्राप्ति।
उपगति—स्त्री० ज्ञान। स्वी-
उपगमन—पु० ज्ञान।
उपगार ८—पु० उपकार।
उपगीति—स्त्री० छन्द विशेष।
उपगूहन—पु० आलिंगन।
उपग्रह—पु०छोटा ग्रह। क़ैद।
उपग्राह्य—पु० नज़र, भेंट।
उपघात८—पु नाश। रोग।
उपचक्षु—पु० चश्मा।
उपचय—पु० वढ़ती, संचय।
उपचरण—पु० सेवा।
उपचरित—वि० सेवित।
उपचर्या—स्त्री० चिकित्सा। सेवा, ख़िदमत।
उपचार१२ (स्त्री० उपचारिका) इलाज। सेवा। व्यवहार।
उपचार-छल—पु० किसी वाक्य में असली अर्थ से भिन्न अर्थ निकालना। [में लाना।
उपचारना—सक्रि०व्यवहार-
उपचारी५—वि० उपचार-करने वाला।
उपचार्य—वि० उपचार के योग्य।
उपचित—वि०समृद्ध, संचित।
उपचित्रा—स्त्री० १६ मात्राओं का एक छंद।
उपज—स्त्री०पैदावार। सूझ।
उपजत—स्त्री० पैदावार।
उपजना ९—अक्रि० उत्पन्न-होना, पैदा होना।
उपजाऊ—वि०उर्वरा, ज़रख़ेज।
उपजित—वि० उपजा हुआ।
उपजीवन—पु० रोज़ी।
उपजीवी५—त्रि० पराश्रयी।
उपजीव्य—पु० जीवन का सहारा।
उपज्ञा—स्त्री० प्रथम-ज्ञान।
उपटन—पु०निशान। उबटन।
उपटना—अक्रि० चिह्न पड़ना उखड़ना।
उपटा—पु० ठोकर। बाढ़।
उपटाना—सक्रि० उबटन-लगवाना। हटाना।
उपटारना—सक्रि० हटाना।
उपड़ना—अक्रि० उखड़ना।
उपढौकन—पु० भेंट, नज़र, पारितोषिक।
उपताप—पु० रोग।
उपत्यका—स्त्री० पर्वत के पास की भूमि, घाटी।
उपदंश—पु० गर्मी, सुजाक।
उपदर्शक—पु० द्वारपाल।

नोट—*'उप' उपसर्ग शब्दों के पूर्व प्रायः समीपता, सादृश्य, पूजा, वृद्धि, आरंभ, दान, शिक्षा, निन्दा, विश्राम तथा गौणता या न्यूनता अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे—उपकूल, उपमान, उपचार, उपचय, उपक्रम, उपहार, उपदेश, उपालंभ, उपरत और उपमंत्री आदि।

उपदा—स्त्री० भेंट।
उपदिशा—स्त्री० कोण।
उपदिष्ट४—वि० शिक्षित।
उपदेश—पु० शिक्षा।
उपदेशक१४—वि० उपदेश-देने वाला।
उपदेशना—सक्रि०शिक्षादेना।
उपदेश्य—वि०उपदेश के योग्य।
उपदेष्टा—वि० (स्त्री० उपदेष्ट्री) उपदेशक।
उपद्रव—पु० उत्पात।
उपधरना—अक्रि०अंगीकार-करना। सहारा देना।
उपधर्म—पु० पाखंड।
उपधा—स्त्री० छल। शब्द के अंतिम अक्षरका पहलाअक्षर
उपधातु—स्त्री०अप्रधान धातु; जैसे काँसा आदि।
उपधान—पु० तकिया।
उपधायक—वि० जन्मदाता।
उपधारा—पु० तहती दफ़ा।
उपधि—स्त्री० छल, कपट।
उपधृत—वि० अंगीकृत।
उपधृति—स्त्री० किरण।
उपनगर—पु०छोटा शहर। बड़ेशहर के आसपासका शहर।
उपनद्ध—वि० बँधा हुआ।
उपनना—अक्रि०उत्पन्न होना।
उपनय—पु०समीप ले जाना। उपनयन संस्कार।
उपनयन-पु०यज्ञोपवीत संस्कार।
उपनाना—सक्रि०पैदा करना।
उपनाम—पु० दूसरा नाम। उपाधि।
उपनिधि—स्त्री० धरोहर।
उपनिविष्ट—वि० उपनिवेश में बसा हुआ।
उपनिवेश—पु० अन्य स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती।
उपनिषद्—पु० वेदान्त-शास्त्र। वि० एकान्त।
उपनिष्ठिका—स्त्री०अनामिका-उँगली। [उपस्थित।
उपनीत—वि० कृतोपनयन।
उपनेता१०—वि०लानेवाला। आचार्य, गुरु।
उपन्यस्त—वि०कथा में कहा-हुआ। निक्षिप्त। धरोहर-रक्खा हुआ। [कहानी।
उपन्यास—पु० कल्पित-कथा,
उपपति—पु० यार, जार।
उपपत्ति—स्त्री० समाधान। हेतु। सिद्धि। आधार।
उपपन्न—वि० युक्त। सिद्ध।
उपपातक—पु० छोटा पाप।
उपपादन६—पु० संपादन। सिद्ध करना।
उपपादित—वि० सपादित। प्रमाणित [के योग्य।
उपपाद्य—वि० साबित करने-
उपपुराण—पु०छोटा पुराण।
उपप्लव—पु० बाढ़। विघ्न। डर। राहु।
उपबरहन—पु० तकिया।
उपभुक्त—वि०उपभोग किया-हुआ। [करने वाला।
उपभोक्ता१०—वि०उपभोग-
उपभोग—पु० बर्तना।
उपभोग्य—वि० उपभोग के योग्य।
उपमंत्री५—पु०सहायक मंत्री।
उपमा—स्त्री०समानता, तुलना।
उपमाता१०—पु०उपमा देने-वाला। स्त्री० दाई।
उपमान—पु० वह वस्तु जिस से उपमा दी जाय।
उपमाना—सक्रि०उपमा देना।
उपमित—स्त्री०जिसकी उपमा-दी गई हो।
उपमिति—स्त्री० उपमा।
उपमेय—वि०उपमा के योग्य।
उपमेयोपमा—स्त्री० एक-अर्थालंकार। [वाला।
उपयंता१०—पु० विवाह करने-
उपयना—अक्रि० उड़ जाना।
उपयम—पु०विवाह। संयम।
उपयाम—पु० विवाह।
उपयुक्त३—वि० मुनासिब।
उपयोग—पु० व्यवहार। आवश्यकता।
उपयोगवाद—पु० प्राणियों को अत्यधिक सुख पहुँचाने का सिद्धान्त।
उपयोगिता—स्त्री० अनुकूलता, लाभ। [काम का।
उपयोगी५—वि० लाभदायक,
उपरंजन—पु० रँगना।
उपरक्त—वि० पीड़ा-ग्रस्त। राहु द्वारा ग्रहण।
उपरक्षण—पु० पहरा।
उपरत—वि० विरक्त। मृत।
उपरति—स्त्री० विरक्ति। मृत्यु। [रत्न।
उपरत्न—पु० कम क़ीमती-
उपरना—पु० दुपट्टा।
उपरफट्टू—वि० ऊपरी।
उपरम—पु० विरक्ति।
उपरस—पु० पारे के समान

गुणकारी पदार्थ, जैसे—गंधक।
उपरहित—पु० पुरोहित।
उपरांत—क्रि० वि० बाद।
उपराग—पु० सूर्य, चन्द्र का ग्रहण। वासना। वर्ण।
उपराज—पु० राजप्रतिनिधि। वायसराय।
उपराजना—सक्रि० उत्पन्न करना, बनाना।
उपराना—अक्रि० ऊपर आना।
उपराम—पु० विराम। त्याग।
उपराला—पु० बचाव, रक्षा।
उपरावटा—वि० अकड़ा-हुआ। [वि० श्रेष्ठ।
उपराही—क्रि०वि० ऊपर।
उपरि—क्रि० वि० ऊपर।
उपरिष्ट—पु० पराँठा।
उपरिस्थ—वि० ऊपर का।
उपरुद्ध—वि० रक्षित।
उपरूपक—पु० नाट्य-क्रिया का एक भेद।
उपरैना७—पु० दुपट्टा।
उपरोक्त—वि०ऊपर कहा हुआ।
उपरोध—पु० रोक, ढकना।
उपरोधक—वि० बाधक। पु० भीतर की कोठरी।
उपरोहित२—पु० पुरोहित।
उपरौटा—पु०ऊपर का पल्ला।
उपर्युक्त—वि०दे० 'उपरोक्त'।
उपलंभ—पु० अनुभव, साक्षात्कार।
उपल—पु० पत्थर। ओला। रत्न। [करने वाला।
उपलक्षक१४—वि० अनुमान-
उपलक्षण—पु० संकेत।
उपलक्षित—वि० संकेत किया हुआ। [संकेत। चिह्न। स्मृति
उपलक्ष्य—पु० उद्देश्य।
उपलब्ध—वि० प्राप्त। ज्ञात।
उपलब्धि—स्त्री०प्राप्ति। मति।
उपला ७—पु० कंडा। स्त्री० बालू। चीनी।
उपलिप्त—वि० लीपा हुआ।
उपलेप—पु० लेप या लेप की वस्तु।
उपलेपन ६—पु० लीपना।
उपलेपित—वि० लेप किया-हुआ।
उपलेप्य—वि०लीपने के योग्य।
उपल्ला७—पु० ऊपर का पर्त्त।
उपवन—पु० बाग़।
उपवना—अक्रि० उदय होना। उड जाना।
उपवर्त्तन—पु० देश।
उपवर्ह—पु० तकिया।
उपवर्हण—पु० तकिया।
उपवसथ—पु० बस्ती।
उपवास—पु० लंघन।
उपवासी ५—वि० फ़ाक़ा-करने वाला।
उपविद्य—पु० शिल्पी।
उपविष—पु० हल्का विष।
उपविष्ट४—वि० बैठा हुआ।
उपवीत८—पु० जनेऊ। खोला-हुआ। जल्दी छोड़ा हुआ।
उपवेद—पु०धनुर्वेद,आयुर्वेद, उपनिषद् आदि।
उपवेशन—पु० बैठना।
उपवेशित—वि० बैठा हुआ।
उपवेशी५—वि०बैठने वाला।
उपवेश्य—वि० बैठने-योग्य।
उपवेष्टन—पु० लपेटना।
उपशम, उपशमन ६—पु० शान्ति, निवारण।
उपशमित—वि० शांत, निवारण किया हुआ।
उपशम्य—त्रि० शांत या निवारण के योग्य।
उपशल्य—पु०भाला। नगर के पास की भूमि। [शिष्य।
उपशिष्य—पु० शिष्य का-
उपश्रुत—वि० स्वीकृत।
उपसंपादक१४—पु० सहायक-संपादक।
उपसंहार—पु० नाश। समाप्ति। सारांश।
उपस—स्त्री०बदबू। [होना।
उपसना—अक्रि० दुर्गन्धित-
उपसर—पु० पहले पहल गर्भ-धारण करना।
उपसर्ग—पु० प्र, परा आदि २२ शब्द हैं जो किसी शब्द के पूर्व लग कर उनमें किसी अर्थ की विशेषता करते हैं।
उपसर्जन—वि० अप्रधान।
उपसागर—पु० खाड़ी।
उपसाना—सक्रि० सड़ाना।
उपसुंद—पु० एक राक्षस जो सुंद का छोटा भाई था।
उपसूर्यक—पु०सूर्य, चन्द्र का मंडल। [शारदा।
उपसेचन—पु० छिड़काव।
उपस्कर—पु० सामिग्री। दाल का मसाला। हिंसा।
उपस्थ—पु० नीचे या मध्य का भाग। लिंग। भग। त्रि० पास बैठा हुआ।

उपस्थल७—पु० चूतड़। पेडू।
उपस्थाता१०—पु० सेवक।
उपस्थान६—पु०पास आना। पूजा का स्थान। खड़े होकर पूजा करना। [आना।
उपस्थापन—पु० पास ले-
उपस्थित—वि० हाज़िर।
उपस्थिति—स्त्री० हाज़िरी।
उपस्पर्श—पु० आचमन। स्नान।
उपस्वत्व—पु० किसी रियासत की आय का अधिकार।
उपहत—वि० नष्ट। आपत्ति-ग्रस्त। [गया।
उपहसित—वि० हास्य किया-
उपहार—पु० भेंट, नज़र।
उपहास—पु० हँसी, निन्दा।
उपहासास्पद—वि० हँसी-करने योग्य।
उपहासी—स्त्री० हँसी,निन्दा। वि० हँसी करने वाला।
उपहित—वि० स्थापित।
उपहो—वि० अपरिचित, परदेशी। [ले आया गया।
उपहृत—वि० दिया गया।
उपांग—पु०शरीर का अवयव। तिलक, टीका।
उपांत—पु० दे० 'उपांत्य'। छोटा किनारा।
उपांत्य—वि०अंतिम के पास का या पहले का।
उपाइ, उपाय—पु० उपाय।
उपाकरण—पु० संस्कार-पूर्व वेदाध्ययन आरंभ-करना। उपक्रम।

उपाकृत—पु० यज्ञ का पशु।
उपाख्यान—पु० प्राचीन-वृतांत। अन्तर्कथा।
उपाटना—सक्रि०उखाड़ना।
उपात्त—वि० गृहीत। प्राप्त।
उपाति—स्त्री० उत्पत्ति।
उपात्यय—पु० अतिक्रम।
उपादान—पु० प्राप्ति। बोध। स्वीकार। वह कारण जो स्वयं कार्य का रूप धारण कर ले।
उपादेय—वि० ग्रहण करने-योग्य। उत्कृष्ट। [विनाश।
उपाधि—स्त्री० छल,धूर्त्तता।
उपाधी५—वि० उपद्रवी।
उपाध्याय४-७—पु० अध्यापक। ब्राह्मणों का एक भेद। गुरु। [पिका।
उपाध्यायानी—स्त्री० अध्या-
उपानत, उपानन, उपानह—पु० जूता।
उपाना—सक्रि०उत्पन्न करना।
उपायन—पु० प्रयत्न, युक्ति।
उपायन—पु० भेंट, नज़र।
उपारना—सक्रि० उखाड़ना।
उपार्जन६—पु०पैदा करना।
उपार्जित—वि० पैदा किया हुआ।
उपालंभ, उपालंभन—पु० उलहना,ताना। [दिया गया।
उपालब्ध—वि० उलहना-
उपाव—पु० उपाय।
उपावृत—पु०पृथ्वी में लोटना।
उपासंग—पु० तरकस।
उपास—पु०अनशन। इष्टदेव।

उपासक१४—त्रि० उपासना-करने वाला।
उपासन—पु० बाण छोड़ने का अभ्यास।
उपासना६—स्त्री०पूजा, सेवा। सक्रि०पूजा करना। [हुआ।
उपासित—वि० सेवा किया-
उपासी५—वि० उपासक। भूखा। स्त्री० उपासना।
उपास्य—वि० आराध्य, पूज्य। [मिलाया हुआ।
उपाहित—पु० धूमकेतु। वि०
उपेंद्र—पु० इन्द्र का छोटा-भाई। विष्णु।
उपेंद्रवज्रा—स्त्री० एक छंद।
उपेक्षक१४—वि० उपेक्षा-करने वाला।
उपेक्षण६—पु०घृणा,अनादर।
उपेक्षा—स्त्री० लापरवाही। विरक्ति। तिरस्कार।
उपेक्षित—वि० तिरस्कृत।
उपेक्ष्य—वि० उपेक्षा के योग्य।
उपेखना—सक्रि० उपेक्षा-करना। [योग्य।
उपेय—वि० उपाय करने-
उपैना७—वि० नग्न, खुला।
उपोद्घात—पु० भूमिका।
उपोषण—पु० अनाहार।
उपोसथ—पु० विश्वास।
उप्तकृष्ट—वि० बो कर जुता हुआ (खेत)।
उफ़—अव्य०(अ०)अफ़सोस। आह। आश्चर्य-सूचक-अव्यय।
उफ़क़—पु० (अ०) क्षितिज।

उफड़ना—अक्रि० उबलना।
उफ़तादा—वि०(फ़ा० परती-पड़ा खेत।
उफ़तादगी—स्त्री० (फ़ा०) [नम्रता।
उफनना९—अक्रि० उबलना, उमड़ना।
उफ़ान—पु० उबाल।
उफाल—स्त्री० लंबी डग।
उबकना—अक्रि० वमन-करना।
उबकाई—स्त्री०जी मिचलाना।
उबट—पु० ऊँचा-नीचा-मार्ग। [का लेप विशेष।
उबटन—पु०शरीर पर लगाने-
उबटना—अक्रि० उबटन-लगाना। [ऊपर उठना।
उबना—अक्रि० ऊबना।
उबरना—अक्रि०उद्धार पाना।
उबरा—वि० बचा हुआ।
उबलना—अक्रि० खौलना।
उबसना—अक्रि० सड़ना।
उबहन—स्त्री० पानी निकालने की डोरी।
उबहना, उबाहना—सक्रि० शस्त्र उठाना। पानी-उलीचना। खेत जोतना। वि० बिना जूते का।
उबाँत—स्त्री० वमन।
उबाना—वि०नंगे पैर। राछ के बाहर का सूत।
उबार—पु० उद्धार, रक्षा।
उबारना—सक्रि० उद्धार-करना।
उबाल—पु० उफ़ान।
उबालना—सक्रि०खौलाना।
उबासी—स्त्री० जँभाई।
उबीठना—सक्रि० अच्छा न लगाना। अक्रि० ऊबना।
उबीधना—अक्रि० बिंधना। गड़ना। फँसना।
उबीधा—वि० बिंधा हुआ।
उबूर—पु०(अ०) नदी आदि पार करना। किसी मार्ग से होकर जाना।
उबेना—वि० बिना जूते पहने।
उबेरना—सक्रि० उबारना।
उबेहना—सक्रि० बैठाना।
उभ—पु० ऊपर। वि० दो।
उभक—पु० रीछ।
उभड़ना—अक्रि०ऊपर उठना।
उभना—अक्रि० उठना।
उभय—वि० दोनों।
उभयतः—क्रि० वि० दोनों-ओर से। [तरफ़।
उभयत्र—क्रि० वि० दोनों-
उभरना—अक्रि० उभड़ना। अभिमान करना।
उभरौहा—वि०उभड़ा हुआ।
उभा—स्त्री० चिन्ता।
उभाड़—पु० उठान। वृद्धि।
उभाडदार—वि० उभड़ा हुआ। भड़कीला।
उभाड़ना—सक्रि०उकसाना।
उभाना—सक्रि० सर हिलाना। उठाना। खड़ा करना।
उभिटना—अक्रि० हिचकना।
उमंग—स्त्री० मौज,आनन्द। जोश। उभाड़।
उमँगना९—अक्रि० उल्लसित-होना। उभड़ना।
उमंड—पु० वेग।
उमक़—पु० (अ०) गहराई।
उमग, उमगन—स्त्री० उमंग।
उमचना९—अक्रि० हुमचना, चौंकना, सावधान होना।
उमड़—पु० बाढ़। धावा।
उमड़ना९—अक्रि०उभड़ना। फैलना। वेग से बहना।
उमदना९—अक्रि०उमड़ना।
उमर—स्त्री० दे० 'उम्र'।
उमरती—स्त्री० एक बाजा।
उमरा—पु०(अ०) सर्दार। प्रतिष्ठित व्यक्ति। बहु० 'अमीर' का।
उमराव—पु० रईस, सर्दार।
उमस—स्त्री० हवा न चलने में पैदा हुई गर्मी।
उमहना९—अक्रि०उमड़ना।
उमा—स्त्री० पार्वती। कीर्ति। हल्दी।
उमाकना—सक्रि०नष्ट करना।
उमाकिनी—वि० स्त्री० खोद-कर फेंक देने वाली।
उमाचना—सक्रि० उभाड़ना।
उमाद—पु० उन्माद।
उमाधो—पु० शिवजी।
उमापति—पु० शिव।
उमाह—पु० उत्साह, उमंग।
उमाहना—अक्रि० उमड़ना।
उमाहल—वि० उत्साह-सम्पन्न। [साधारणतया।
उमूमन्—क्रि० वि० (अ०)
उमूर—पु० (अ०) बहु० 'अम्र' का। आज्ञाएँ।
उमेठन५—स्त्री० मरोड़, ऐंठना, पेच।
उमेठना, उमेड़ना—सक्रि०

उमेलना—सक्रि० प्रकट करना।
उमेश—पु० शिव, शंकर।
उम्दगी—स्त्री० (अ०) अच्छाई।
उम्दा—वि० अच्छा।
उम्म—स्त्री० (अ०) माता।
उम्मत—स्त्री० (अ०) धार्मिक जमाअत। फ़िरक़ा।
उम्मती—पु० (अ०) किसी धार्मिक जमाअत का व्यक्ति।
उम्मस—स्त्री० तकलीफ।
उम्मी—स्त्री० (अ०) गेहूँ आदि की हरे दानों की बाल। अशिक्षित। जिसका पिता बाल्यकाल में मर गया हो। उम्मत का व्यक्ति।
उम्मीद, उम्मेद—पु० आशा।
उम्मेदवार २—वि० आशावान्। नामज़द।
उम्र—स्त्री० आयु, अवस्था।
उम्रतबई—स्त्री० (अ०) मनुष्य का १२० वर्ष का स्वाभाविक जीवन।
उरंग, उरंगम—पु० साँप।
उरःसूत्रिका—स्त्री० मोतियों से गुँथी हुई कंठी।
उर—पु० छाती, हृदय।
उरई—स्त्री० ख़स, उशीर।
उरकना९—अक्रि० ठहरना।
उरग—पु० साँप। [करना।
उरगना—सक्रि० स्वीकार-
उरगाद, उरगारि—पु० गरुड़।
उरगाय—पु० विष्णु। सूर्य। प्रशंसा। वि० प्रशंसित,
उरगिनी—स्त्री० साँपिनी।
उरग्र—स्त्री० भेड़ी।
उरज—पु० स्तन, कुच।
उरजात—पु० दे० 'उरज'।
उरझना९—अक्रि० उलझना।
उरझेर—पु० झकोरा।
उरण—पु० भेड़ा, मेढ़ा।
उरद७—पु० एक अन्न, माष।
उरदाबेगनी—स्त्री० राजमहलों में सशस्त्र पहरा देने वाली स्त्री।
उरदावन—स्त्री० अदवान।
उरध—वि० ऊर्ध्व।
उरधारना—सक्रि० उधेड़ना। बिखराना।
उरना—अक्रि० दे० 'उड़ना'।
उरबसी—स्त्री० दे० 'उर्वशी'।
उरबी—स्त्री० पृथ्वी।
उरभ्र—पु० मेढ़ा, भेड़ा।
उरमना ९—अक्रि० लटकना।
उरमाल—पु० रूमाल।
उरमी—स्त्री० पीड़ा। दुःख।
उररी—स्त्री० स्वीकार।
उररीकृत—वि० स्वीकृत।
उरला—वि० पिछला। बिरला।
उरविज—पु० मंगलग्रह।
उरविजा—स्त्री० सीता जी।
उरस—वि० फीका। पु० हृदय। [करना।
उरसना—सक्रि० उथल-पुथल-
उरसिज—पु० स्तन।
उरसिल—वि० बड़ी छातीवाला।
उरस्क—पु० छाती।
उरस्त्राण—पु० कवच।
उरस्य—पु० सगी संतान।
उरहन, उरहना—पु० उपालम्भ, शिकायत।
उरा—स्त्री० पृथ्वी।
उराऊ, उराव—पु० उमंग।
उत्साह। [जाना।
उराना—अक्रि० समाप्त हो-
उराय, उराव—पु० उमंग, चाह।
उरारा—वि० विस्तृत, बड़ा।
उरिण, उरिन—पु० दे० 'उऋण'
उरियाँ—वि० (अ०) नंगा।
उरिष्ठ—पु० रीठा।
उरु—पु० जाँघ। वि० विस्तीर्ण।
उरुक्रम—वि० लंबा क़दम रखने वाला। बली।
उरुगाय—पु० श्रीकृष्ण। विष्णु। सूर्य। स्तुति।
उरुज—पु० वैश्य।
उरुझना—अक्रि० उलझना।
उरुवा—पु० उल्लू की जाति का एक पक्षी।
उरूज—पु० (अ०) बढ़ती।
उरूस—उभ० (अ०) दूल्हा। दुलहिन, वधू।
उरूसी—स्त्री० (अ०) निकाह-प्रणाली का विवाह।
उरे—क्रि०वि० उस पार, दूर।
उरेखना—सक्रि० दे० 'अवरेखना।' [धूर्त्तता मय।
उरेब—वि० (फ़ा०) टेढ़ा।
उरेव—स्त्री० ठगई।
उरेह—पु० चित्रकारी। [करना
उरेहना—सक्रि० चित्रित-
उरोज—पु० स्तन।
उर्जित—वि० उन्नत, वर्द्धित।
उर्ण—स्त्री० ऊन।
उर्दू—स्त्री० (तु०) फ़ारसी लिपि में लिखी जाने वाली एक भाषा। लश्कर।
उर्दू बाज़ार—पु० वह बाज़ार जहाँ सब चीज़ें मिलें।

छावनी का बाज़ार।
उर्फ़—पु० (अ०) उपनाम।
उर्मि—स्त्री० दे० 'ऊर्मि'।
उर्मिला—स्त्री० लक्ष्मण जी की स्त्री। [ज़रखेज़।
उर्वरा—वि० उपजाऊ,
उर्वशी—स्त्री० एक अप्सरा।
उर्वारु—पु० ककड़ी। ख़रबूज़ा।
उर्वी—स्त्री० पृथ्वी।
उर्विजा, उर्वीजा—स्त्री० सीताजी। [नाग।
उर्वीधर—पु० पर्वत। शेष-
उर्स—पु० (अ०) मुसलमान पीर आदि की मृत्यु तिथि। विवाह तथा मृत्यु तिथि के अवसरों पर दिया जाने वाला भोजन।
उलंग—वि० नंगा।
उलंघना—सक्रि० लाँघना। अवज्ञा करना।
उलका—स्त्री० दे० 'उल्का'।
उलचना—सक्रि० दे० 'उलीचना'। [उलीचना।
उलछना—सक्रि० छितराना।
उलझन—स्त्री० फँसाव। बाधा। चिन्ता, फेर।
उलझना ९—अक्रि० फँसना।
उलझारना—सक्रि० छितराना।
उलझाव—पु० अटकाव। झंझट।
उलझेटा—पु० झंझट। [वाला।
उलझौंहा ७—वि० फँसाने-
उलटना ९—अक्रि० पलटना।
उलट-पलट—पु० रद्दोबदल। गड़बड़ी।
उलट-फेर—पु० परिवर्त्तन। गडबड़ी।
उलटा ७—वि० औंधा। विपरीत। पु० चीला।
उलटा-पलटा—वि० क्रमविरुद्ध
उलटा-पलटी—स्त्री० अदल-बदल। [घुमाव।
उलटाव—पु० पलटाव,
उलटी—स्त्री० वमन।
उलटे—क्रि०वि० विरुद्ध ढँग से
उलथना—अक्रि० उछलना। उथल-पुथल होना।
उलथा—पु० अनुवाद। कलाबाज़ी। नाच का एक प्रकार। चौपायों का करवट बदलना।
उललना—अक्रि० ढरकना।
उलद—स्त्री० वर्षा, झड़ी।
उलदना—सक्रि० उड़ेलना, गिराना।
उलप—पु० बहुत लंबी बेल।
उलमना—अक्रि० लटकना, झुकना। [लेटना।
उलरना—अक्रि० कूदना।
उललना—अक्रि० ढरकना।
उलवी—वि० (अ०) आकाश अथवा स्वर्ग से संबंध-रखने वाला। [होना।
उलसना ९—अक्रि० शोभित-
उलहना—अक्रि० उमड़ना। पु० शिकायत।
उलाँक—पु० डाक
उलाँकपत्र—पु० पोस्टकार्ड।
उलाँकी—पु० डाकिया।
उलाँघना—सक्रि० लाँघना। अवज्ञा करना।
उला—पु० भेड़ का बच्चा।
उलार—वि० पीछे की ओर झुका हुआ।
उलारना—सक्रि० उछालना।
उलाहना—पु० शिकायत।
उलीचना—सक्रि० पानी निकाल कर दूसरी ओर फेंकना।
उलुग़—पु० (तु०) महापुरुष।
उलूक—पु० उल्लू पक्षी।
उलूखल—पु० ओखली।
उलूखलक—पु० गूगुल।
उलेड़ना—सक्रि० उडेलना।
उलूपी—स्त्री० नागकन्या। अर्जुन की स्त्री।
उलूम—पु० (अ०) बहु० इल्म का
उलेल—स्त्री० उमंग। बाढ़। वि० लापरवाह।
उल्का—स्त्री० प्रकाश। तारा-टूटना। अग्निपिंड। मसाल।
उल्कापात—पु० तारा टूटना। उपद्रव। विघ्न।
उल्कापती ५—वि० उपद्रवी।
उल्कामुख ७—पु० गीदड़। शिवजी। अगिया बैताल।
उल्था—पु० अनुवाद।
उल्फ़त—स्त्री० (अ०) प्रेम।
उल्मुक—पु० कोयला, अंगारा।
उल्लंघन—पु० लाँघना, अतिक्रमण।
उल्लसन ६—पु० हर्ष।
उल्लसित—वि० हर्षित।
उल्लाप्य—पु० गीत विशेष। उपरूपक का एक भेद।
उल्लाला—पु० एक मात्रिक-छंद।

उल्लास१२—पु० प्रकाश। हर्ष। परिच्छेद।
उल्लासन६—पु०हर्षित होना।
उल्लासित—वि०हर्षित।
उल्लासी५—वि०प्रसन्न होनेवाला।
उल्लिखित—वि० ऊपर लिखा हुआ, खोदा हुआ।
उल्लू—पु० एक पक्षी। वि० बेवक़ूफ़। [वर्णन।
उल्लेख, उल्लेखन—पु० लेख।
उल्लेखनीय—वि० लिखने के योग्य।
उल्लोच—पु० चाँदनी।
उल्लोल—स्त्री०भारी लहर।
उल्व—पु० गर्भ-वेष्टन-चर्म।
उल्वण—वि० स्पष्ट, साफ़।
उवना—अक्रि०दे०'उगना'।
उवनि—अक्रि० उगना।
उशना—पु० शुक्राचार्य।
उशबा—पु० (अ०) एक पेड़ जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।
उशीर—पु०खस। [आशिक़।
उश्शाक़—पु० बहु (अ०)
उषणा—स्त्री० पीपली।
उषर्बुध—पु० अग्नि।
उषा—स्त्री० प्रातःकाल। सूर्योदय की लाली। बाणासुर की कन्या।
उषाकाल—पु० प्रातःकाल।
उषापति—पु० अनिरुद्ध।
उषित—वि० जला हुआ।
उष्ट्र—पु० ऊँट।
उष्ण ३—वि० गर्म।
उष्णक—पु०गर्मी का मौसम। सूर्य। ज्वर। वि० गर्म।
उष्णकटिबंध—पु० कर्क और मकर रेखा के बीच पृथ्वी का वह भाग जहाँ गर्मी अधिक पड़ती है।
उष्णत्व—पु० गर्मी।
उष्णरश्मि—पु० सूर्य।
उष्णिका—स्त्री० लप्सी।
उष्णीष—पु०मुकुट। साफ़ा।
उष्म४—पु० गर्मी।
उष्मक—पु० ग्रीष्म ऋतु।
उष्मज—पु०पसीने आदि से उत्पन्न छोटे २ जन्तु।
उस—सर्व० 'वह' का विभक्ति लगने का पूर्व रूप, जैसे उसको।
उसकना९—अक्रि०उकसना। सक्रि० चढ़ाना, ऊपर उठाना।
उसनना—सक्रि० उबालना।
उसनीस—पु० दे० 'उष्णीष'
उसमा—पु० बटना।
उसरना, उसलना९—अक्रि० हटना। भूल जाना। तैरना। उखड़ना।
उसलूब—पु०(अ०) तरीक़ा।
उससना—सक्रि०साँस लेना।
उसाँस—पु०लम्बी साँस।
उसाना—सक्रि० भूसा उड़ाकर अनाज निकाला।
उसारना, उसालना—सक्रि० उजाड़ना। भगाना।
उसारा—पु० दालान।
उसारि—स्त्री० ओसारा।
उसासी—स्त्री० अवकाश, आराम।
उसीजना—अक्रि० पकना।
उसीला—पु० वसीला। वि० सहायक। [नकिया।
उसीस,उसीसा—पु०सिरहाना,
उसूल—पु० (अ०) सिद्धान्त।
उस्तख्वान—स्त्री० (फ़ा०) हड्डी।
उस्तरा—पु० (फ़ा०) छुरा।
उस्तवा—पु० (अ०) बराबरी।
उस्तवार२—वि०(फ़ा०)दृढ़। सरल।
उस्ताद—पु०(फ़ा०)शिक्षक। वि० चतुर। [चालाकी।
उस्तादी—स्त्री० चतुराई,
उस्तानी—स्त्री० गुरुपत्नी।
उस्तुरलाव—स्त्री० (यूनानी) नक्षत्र जानने का यन्त्र।
उस्र—पु० सूर्य-किरण।
उस्रा—स्त्री० गाय।
उस्वास—स्त्री० उसाँस।
उहदा—पु० ओहदा।
उहवाँ—क्रि० वि० वहाँ।
उहार—पु० (फ़ा०) पर्दा।
उहिया—पु० योगियों के पहनने का हाथ का कड़ा।
उहूल—स्त्री० तरंग।
उहै—सर्व० वही।

६—ऊ

ऊँग—स्त्री० ऊँघ।
ऊँघ, ऊँघन—स्त्री० ऊँघाई।
ऊँघना—अक्रि० झपकी लेना।
ऊँच३—वि० ऊँचा।
ऊँचा ७—वि० ऊपर उठा-हुआ। उन्नत। श्रेष्ठ।
ऊँचाई—स्त्री० उच्चता। गौरव।
ऊँचे—क्रि० वि० उच्चस्वर से।
ऊँछ—पु० एक राग।
ऊँछना—अक्रि० बाल काढ़ना।
ऊँट—पु० पशु विशेष।
ऊँटकटारा—पु० एक कँटीली-झाड़ी।
ऊँड़ा—पु० तहखाना। ज़मीन में गाडा जाने वाला धन का बर्त्तन।
ऊँदर—पु० चूहा।
ऊँहूँ—अव्य० नहीं।
ऊ—सर्व० वह। अव्य० भी।
ऊअना—अक्रि० उदय होना।
ऊआबाई—वि० अंडबंड।
ऊक—पु० टूटता हुआ तारा। जलन।
ऊकना—अक्रि० भूल-करना।
ऊख—पु० गन्ना। गर्मी। वि० गर्म।
ऊखम—पु० गर्मी।
ऊखल—पु० ओखली।
ऊगना—अक्रि० उगना।
ऊचट—वि० नीरस।
ऊज—पु० उपद्रव, अंधेर।
ऊजड़—वि० वीरान।
ऊजर—वि० ऊजड़। उज्ज्वल।
ऊजरा—वि० उज्ज्वल।
ऊटकनाटक—पु० व्यर्थ का काम।
ऊटना—अक्रि० तर्क-वितर्क-करना। उमंग में भरना।
ऊटपटाँग—वि० व्यर्थ।
ऊड़ी—स्त्री० एक चिड़िया। निशाना। डुबकी।
ऊढ़—वि० विवाहित।
ऊढ़ना—अक्रि० तर्क या सोच विचार करना। विवाह-करना।
ऊढ़ा—स्त्री० विवाहिता स्त्री। वह विवाहिता स्त्री जो अपने पति के अतिरिक्त अन्य से प्रेम करे। [उजड्ड।
ऊत—वि० निःसंतान।
ऊतर—पु० उत्तर।
ऊतला७—वि० उतावला।
ऊद—पु० (अ०) अगर का पेड। अगर। ऊदबिलाव।
ऊदबिलाव—पु० एक जंतु।
ऊदल—पु० महोबा का एक वीर।
ऊदसोज़—पु० (अ० फ़ा०) अगर जलाने का पात्र।
ऊदा—वि० बैंगनी। [संबंधी।
ऊदी—वि० (अ०) अगर-
ऊधम ८—पु० उपद्रव।
ऊधव, ऊधो—पु० उद्धव जो श्रीकृष्ण के सखा थे।
ऊन—पु० भेड़ या बकरी का रोयाँ। ग्लानि। वि० न्यून।
ऊना—वि० कम, तुच्छ। पु० दुःख, रंज।
ऊनी—वि० ऊन का बना हुआ। स्त्री० रंज। थोडा, कम।
ऊपना—अक्रि० पैदा होना।
ऊपर—क्रि० वि० ऊँचाई पर। आधार पर। [दिखा-
ऊपरी—वि० ऊपर का। दिखा-[वटी।
ऊब—स्त्री० घबराहट। उमंग।
ऊबट—वि० ऊँचा-नीचा।
ऊबड़-खाबड़—वि० दे० 'ऊबट'।
ऊबना—अक्रि० उकताना।
ऊबर—वि० अधिक।
ऊभरना—अक्रि० दे० 'उबरना'।
ऊभ—वि० ऊँचा। स्त्री० गर्मी। व्याकुलता। हौसला।
ऊभट—वि० दे० 'ऊबट'।
ऊभना—अक्रि० उठना।
ऊमक—पु० वेग। झोंक।
ऊमना—अक्रि० उमडना।
ऊमर—पु० गूलर।
ऊमस—पु० दे० 'उमस'।
ऊर—पु० सीमा, अन्त।
ऊरध—वि० दे० 'ऊर्ध्व'।
ऊरधरेता—वि० ऊर्ध्वरेता।
ऊरव्य—पु० वैश्य।
ऊरीकृत—वि० अंगीकृत।
ऊरु—पु० जंघा।
ऊरुज—पु० वैश्य।
ऊरुपर्वा—पु० जानु।
ऊरुस्तंभ—पु० वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं। [मास।
ऊर्ज—पु० शक्ति। कार्तिक-

ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी५—वि० बलवान्, प्रतापी।
ऊर्ण—पु० ऊन।
ऊर्णनाभ—पु० मकड़ी। रेशम का कीड़ा।
ऊर्णा—स्त्री० भेड़े का बाल, भौंहों का घेर। [वस्त्र।
ऊर्णायु—पु० कंबल। ऊनी·
ऊर्ध्व—क्रि० वि० ऊपर। वि० ऊँचा। खड़ा। [भेद।
ऊर्ध्वक—पु० मृदंग का एक-
ऊर्ध्वगति—स्त्री० मुक्ति।
ऊर्ध्वगामी—वि० ऊपर को जाने वाला, पुण्यात्मा।
ऊर्ध्वचरण—पु० वह तपस्वी जो सिर के बल खड़े होकर तप करता है।
ऊर्ध्वजानु, ऊर्ध्वज्ञु—पु० ऊँचे-घुटने वाला।
ऊर्ध्वदेव—पु० विष्णु।
ऊर्ध्वद्वार—पु० ब्रह्मरंध्र।
ऊर्ध्वपाद—पु० टिड्डी।
ऊर्ध्वपुंड्र—पु० वैष्णवी तिलक।
ऊर्ध्वबाहु—पु० वह तपस्वी जो अपनी एक बाँह ऊपर को उठाये रहते हैं।
ऊर्ध्वरेता—पु० ब्रह्मचारी, वीर्यवान्।
ऊर्ध्वलोक—पु० वैकुंठ, स्वर्ग।
ऊर्ध्वश्वास—पु० श्वास की कमी, दमा।
ऊर्मि—स्त्री० लहर। पीड़ा।
ऊर्मिका—स्त्री० छल्ला या अँगूठी।
ऊर्मिमत्—वि० टेढ़ा।
ऊर्मिमाली—पु० समुद्र।
ऊलजलूल—वि० अंडबंड।
ऊलना—अक्रि० उछलना।
ऊष—पु० लोना मिट्टी।
ऊषण—पु० मिर्च।
ऊषा—स्त्री० दे० 'उषा'।
ऊषापति—पु० अनिरुद्ध।
ऊष्म—पु० गरमी। भाप। श, ष, स, ह (वर्ण)।
ऊष्मा—स्त्री० ग्रीष्मकाल।
ऊष्मागम—पु० ग्रीष्मकाल (ज्येष्ठ तथा आषाढ़)।
ऊसर—पु० बंजर भूमि।
ऊह, ऊहा—पु० अनुमान। तर्क। अव्य० दुःख या आश्चर्य सूचक शब्द। ओह।
ऊहापोह—पु० सोच-विचार।

७—ऋ

ऋक—स्त्री० वेदमंत्र। पु० ऋग्वेद।
ऋक्थ—पु० सम्मति।
ऋक्ष—पु० भालु। तारा।
ऋक्षगंधा—स्त्री० विधारा।
ऋक्षपति—पु० चद्रमा। जाम्बवान्।
ऋक्षवान्—पु० नर्मदा के किनारे का एक पर्वत।
ऋग्वेद—पु० एक वेद। [ज्ञाता।
ऋग्वेदी—वि० ऋग्वेद का·
ऋचा—स्त्री० वेदमंत्र। स्तोत्र।
ऋच्छ—पु० रीछ।
ऋच्छरा—स्त्री० वेश्या।
ऋजीष—पु० तवा।
ऋजु३—वि० सरल, प्रसन्न।
ऋजुभुजक्षेत्र—पु० सरल रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र।
ऋण—पु० क़र्ज, उधार।
ऋणदाता१०—पु० महाजन।
ऋणपत्र—पु० तमस्सुक।
ऋणमार्गण—पु० ज़मानतदार।
ऋणिक—वि० कर्ज़दार।
ऋणी—वि० कर्ज़दार। अनुगृहीत।
ऋत४—वि० सत्य। [मार्ग।
ऋति—स्त्री० निन्दा। गति।
ऋतीया—स्त्री० घृणा, निन्दा।
ऋतु—स्त्री० मौसम।
ऋतुकर—पु० शिवजी।
ऋतुकाल—पु० रजोदर्शन के बाद के सोलह दिन।
ऋतुगमन—पु० ऋतुकाल का स्त्री-प्रसग।
ऋतुचर्य्या—स्त्री० ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।
ऋतुदान—पु० गर्भाधान।
ऋतुमती—स्त्री० रजस्वला।
ऋतुराज—पु० वसंत ऋतु।
ऋतुवती—स्त्री० रजस्वला।
ऋतुस्नान—पु० रजोदर्शन के चतुर्थ दिन का स्नान।
ऋतुस्नाता—स्त्री० ऋतुस्नान करने वाली स्त्री।

ऋत्विज—पु० यज्ञ करानेवाला या यज्ञ में जिसका वरण किया जाय।
ऋद्ध—वि० समृद्ध।
ऋद्धि—स्त्री० समृद्धि, विभव। [और सफलता।
ऋद्धिसिद्धि—स्त्री० समृद्धि,
ऋनिया—वि० ऋणी।
ऋभु—पु०देवता। एक गण-देवता।
ऋमुक्ष४—पु० इंद्र। स्वर्ग। वज्र। [वि० श्रेष्ठ।
ऋषभ—पु०बैल। जैन देव।
ऋषभध्वज—पु० शिवजी।
ऋषभी—स्त्री० पुरुष के रंग-रूप वाली स्त्री।
ऋषि—पु० महान् व्यक्ति। तपसी। तत्वदर्शी।
ऋषीक—पु०ऋषि का पुत्र।
ऋषीश—पु० श्रेष्ठ ऋषि।
ऋष्टि—स्त्री०शोभा। तलवार।
ऋष्य—पु०चितकबरा हिरन।
ऋष्यकेतु—पु० अनिरुद्ध।
ऋष्यप्रोक्ता—स्त्री०शतावरी।
ऋष्यमूक—पु० एक पर्वत।
ऋष्यशृंग—पु० एक महर्षि जो हरिणी के गर्भ से पैदा हुए थे।

८—ए

एँचपेंच—पु० उलझन,घात।
एंजिन—पु० (अं०) इंजन।
एँडबेंडा—वि० बेतरतीब।
एँड़ी—स्त्री० रेशम का एक कीड़ा। मूँगा।
एँडुआ—पु०गेंडुरी। कुंडली।
एकंग—वि० अकेला।
एकंगा७—वि०एक तरफ़ का।
एकंत—वि० निराला।
ए—पु०विष्णु। अव्य० अय। अरे। सर्व० यह।
एक—वि० कोई। अद्वितीय। प्रथम संख्या।
एकक—वि० अकेला।
एकचक्र—पु० सूर्य का रथ। वि० चक्रवर्ती। [युक्त।
एकचक्षु—पु० कारण व्यक्ति।
एकछत्र—वि०पूर्ण अधिकार-
एकज—पु० शूद्र। राजा। वि० एकही।
एकजद्दी—वि० सगोत्र।
एकजन्मा—पु०शूद्र। राजा।
एकजाई—स्त्री० पहलौठी स्त्री।
एकटक—क्रि०वि० एकदृष्टि से
एकड़—पु० पृथ्वी की $1\frac{3}{5}$ बीघा की नाप।
एकडाल—पु० वह कटार जिसका फल और बेंटा एक ही लोहे का हो।
एकतंत्री—वि० एक मतावलम्बी। [ओर से।
एकतः—क्रि० वि० एक-
एकत—क्रि० वि० एकत्र।
एकतरफ़ा—वि०एक पक्षीय।
एकता—स्त्री०मेल। समानता।
एकतान—वि० एकाग्रचित्त। एक स्वर। [का सितार।
एकतारा—पु० एक तार-
एकतीर्थी—पु० सहपाठी।
एकत्र—क्रि०वि०एक जगह।
एकत्रित—वि० इकट्ठा।
एकत्रीकरण—पु० इकट्ठा-करना।
एकदंत—पु० गणेश जी।
एकदा—क्रि०वि० एक बार।
एकदेशीय४—वि० एक देश का। एक स्थल, एक समय तथा एक देश से संबंधित।
एकधा—क्रि० वि० एक-प्रकार से।
एकनयन—वि०एक नेत्रका।
एकनिष्ठ४—वि० एक ही में श्रद्धा रखने वाला।
एकपक्षीय—वि०एक ओर का।
एकपत्नी—स्त्री० पतिव्रता।
एकपदी—स्त्री०सड़क, मार्ग। पगडंडी।
एकपिंग—पु० कुबेर।
एकबारगी—क्रि० वि० अचानक, एक साथ।
एकबाल—पु०प्रताप। भाग्य।
एकभुक्त४—वि० एक बार भोजन करने वाला।
एकमत—वि० एक राय का।
एकमात्रिक—वि०एकमात्रा का।
एकयोनि—वि० एक माँ का।

एकरंग—वि० समान, साफ़-दिल का।
एकरदन—पु० गणेशजी।
एकरस—वि० एक सा।
एकरूप ३—वि० एक सा।
एकल,एकला—वि० अकेला।
एकलव्य—पु० निषाद-पुत्र जो द्रोणाचार्य का शिष्य था।
एकलिंग—पु० शिवजी।
एकलौता—वि० एक मात्र।
एकवचन—पु० वह शब्द जिससे एक का बोध हो।
एकवेणी—वि० स्त्री० एक वेणी वाली। विधवा।
एकशफ—पु० एक खुर वाला पशु (घोड़ा)।
एकसर—वि०अकेला। तमाम
एकसर्ग—वि० एकाग्रचित्त।
एकसाँ—वि० समान।
एकहरा२—वि०एक परत का।
एकांग, एकांगी—वि० एक-तरफ़ा। जिद्दी, हठी।
एकांत३—पु०निर्जन-स्थान। वि० अत्यंत।
एकांतर—क्रि० वि० एक-ओर। [में रहना।
एकांतवास—पु० अकेले-
एकांतिक—वि०एक स्थान का।
एका—पु०मेल। स्त्री०दुर्गा।
एकाई—स्त्री० एक का भाव। गणना में प्रथम अंक का स्थान।
एकाउंट—पु०(अं०)हिसाब।
एकाउंटेंट—पु०(अं०)मुनीम।
एकाएक ७—क्रि० वि० अकस्मात्।
एकाकार—वि० एक स्वरूप, समान।
एकाकी ५—वि० अकेला।
एकाक्ष, एकाक्षी—वि०काना, एक आँख का। शुक्र। कौआ।
एकाक्षरी—वि०एक अक्षर का।
एकाग्र ३—वि० एकचित्त।
एकाग्रचित्त३—वि० स्थिरचित्त
एकातपत्र—वि० चक्रवर्ती। सार्वभौम।
एकात्मता—स्त्री० एकता।
एकादश—वि० ग्यारह।
एकादशाह—पु०मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य।
एकादशी—स्त्री०शुक्ल, कृष्ण-पक्ष की ग्यारहवीं तिथि।
एकाधिपत्य—पु०पूर्णप्रभुत्व।
एकाब्दा—स्त्री० एक वर्ष की गाय।
एकायन—वि० एकाग्रचित्त।
एकार्थक—वि० समानार्थक।
एकावली—स्त्री० एक लड़ का हार। एक अलंकार।
एकाश्रित—वि० एक ही के सहारे पर रहने वाला।
एकाह—वि० एक दिन में पूरा होने वाला।
एकीकरण—पु० मिलाना।
एकीकृत—वि० मिश्रित।
एकीभूत—वि०मिलाया हुआ।
एकोतरसौ—वि० १०१।
एकेडेमी—स्त्री० (अं०) शिक्षा-णालय, मकतब।
एकोद्दिष्ट-श्राद्ध—पु० श्राद्ध जो एक के उद्देश से किया जाय।
एकौझा—वि० अकेला।
एक्का—वि० अकेला।
एक्की—स्त्री० एक बैल या घोड़े की गाड़ी।
एक्ज़ीक्युटिव—वि० (अं०) प्रबन्ध-कर्त्ता।
एक्ज़ीबिशन-पु०(अं०)नुमायश
एक्सचेंज—पु०(अं०)बदला।
एक्सपर्ट—वि०(अं०) चतुर।
एक्सपोर्ट—पु० (अं०)बाहर-के लिए भेजा हुआ माल।
एक्साइज़—पु० (अं०) चुंगी, महसूल।
एख़नी—स्त्री० (फ़ा०) मांस-का शोरबा। [एकता।
एगानगी—स्त्री० (फ़ा०)
एजुकेशन—पु०(अं०)शिक्षा।
एजुकेशनल—वि० (अं०) शिक्षा-संबंधी।
एजेंट—वि०(अं०) गुमाश्ता।
एजेंडा—पु०(अं०)कार्यक्रम।
एजेंसी—स्त्री० (अं०) आढ़त।
एड—वि० बहरा।
एड़—स्त्री० एड़ी।
एड़क—पु० भेड़ा। मेंढ़ा।
एडमूक—वि० गूँगा-बहिरा (दोनों)। [भाग, एड़ी।
एड़ी—स्त्री० पैर का पिछला-
एण—पु० काला मृग।
एत४—वि० चितकबरा।
एतक़ाद—पु०(अ०) विश्वास।
एतकाफ़—पु० (अ०) संसार से सम्बन्ध विच्छेद करना।
एतदर्थ—क्रि०वि० इसलिए।
एतदाद—पु०(अ०) गणना।

एतदाल—पु० (अ०) मध्यम-मार्ग। संयम।
एतद्—सर्व० यह।
एतद्देशीय–वि० इस देश का।
एतनाई—स्त्री० (अ०) सहानुभूति।
एतबार–पु० (अ०)विश्वास।
एतमाद–पु० (अ०)विश्वास।
एतराज़–पु० (अ०) विरोध, आपत्ति।
एतराफ़—पु०(अ०)इक़रार।
एतर्हि—अव्य० इसी समय।
एता—वि० इतना।
एतादृश—वि० ऐसा।
एतिक—वि० स्त्री० इतनी।
एधा—स्त्री० वृद्धि।
एन—पु० पाप।
एन—पु० धन। दे० 'एण'।
एफ़िडेविट—पु० (अं०) हलफ़नामा।
एम्बुलेंस–पु० (अं०) बीमार और घायलों को ले जाने वाली गाड़ी। फ़ौजी दौरे में रहने वाला अस्पताल।
एरंड–पु० रेंड़। [जहाज़।
एरोप्लेन—पु० (अं०)हवाई-
एलची–पु०(फ़ा०)राजदूत,दूत।
एला—स्त्री० इलायची।
एलार्म—पु० (अं०)ख़तरे के पहुँच की ख़बर। शोरगुल।
एलुवा—पु० एक दवा।
एलेक्शन—पु०(अं०)चुनाव।
एवं—क्रि० वि० ऐसा ही। अव्य० और।
एव—अव्य० ही। भी।
एवज़—पु० (अ०) बदला।
एवज़ी–स्त्री०स्थानापन्न पुरुष।
एशिया—पु० एक महाद्वीप।
एषणा–स्त्री० इच्छा। खोज।
एषणिका–स्त्री० सोना तौलने का काँटा।
एसिड—पु० (अं०) तेज़ाब।
एसेंबली–स्त्री० (अं०)सभा, मजलिस, जमाव।[समिति।
एसोसियेशन—पु० (अं०)
एस्टिमेट—पु०(अं०)अंदाज़ा।
एह—सर्व० यह।
एहतमाम–पु० (अ०) प्रबन्ध, कोशिश।
एहतमाल—पु० (अ०) बरदाश्त। आशंका, भय।
एहतराज़—पु० (अ०) दूर-रहना, बचना। [वैभव।
एहतशाम—पु०(अ०)प्रतिष्ठा
एहतियाज—पु० (अ०) हाजत, आवश्यकता।
एहतियात—स्त्री०सावधानी।
एहसान—पु०(अ०)उपकार।
एहि—सर्व० इसको।
एहो—अव्य० हे, अरे।

९—ऐ

ऐंगुद—पु० इंगुदी का फल।
ऐंच—पु० खिंचाव।
ऐंचना—सक्रि० खींचना।
ऐंच-पेंच—पु० उलझन।
ऐंचाताना—वि० जिसकी आँख की पुतली दूसरी ओर को फिर जाय।
ऐंचातानी–स्त्री०खींचाखींची।
ऐंछना–सक्रि०बाल झाड़ना।
ऐंठ स्त्री० अकड़, गर्व।
ऐंठन—स्त्री० लपेट, मरोड़।
ऐंठना—सक्रि० मरोड़ना। अक्रि० अकड़ना। [यंत्र।
ऐंठा—पु० रस्सी बटने का-
ऐंड़—पु० ऐंठ। पानी का भँवर।
ऐंड़दार—वि० घमंडी।
ऐंड़ना—अक्रि० अँगड़ाना। गर्व करना।
ऐंडबैंड़—वि टेढ़ा। [हुआ।
ऐंड़ा ७—वि० टेढ़ा, ऐंठा-
ऐंड़ाना—अक्रि० बदन-तोड़ना। ऐंठ दिखाना।
ऐंढ़ा—पु० गँड़ासा।
ऐंदव, ऐंद्र–वि०इन्द्र-संबंधी।
ऐंद्रजालिक—वि० मायावी।
ऐंद्रियक—वि० इन्द्रियों से जाना हुआ। [यन्त्री।
ऐंद्री—स्त्री० इन्द्राणी। इला-
ऐकमत्य—पु० एकमत।
ऐकांतिक–वि० एकान्तवासी। एक तरफ़ा। पूर्ण।
ऐकागारिक—पु० चोर।
ऐक्ट—पु० (अं०) क़ानून।
ऐक्टर—पु० [अं० स्त्री० ऐक्ट्रेस]। अभिनेता। नट।

ऐक्टिंग—स्त्री० (अ०) नाट्य-क्रिया ।
ऐक्य—पु० एकता, मेल ।
ऐच्छिक—वि० स्वेच्छाधीन ।
ऐज़न—पु० (अ०) वैसा ही ।
ऐजाज़—पु० (अ०) करामात । परेशानी ।
ऐज़ाज़—पु० (अ०) आदर ।
ऐडमिनिस्ट्रेशन—पु० (अं०) शासन । व्यवस्था ।
ऐडवाइज़र—वि० (अ०) परामर्शदाता ।
ऐडविड—पु० कुबेर ।
ऐडवोकेट—पु० (अं०) वकील ।
ऐडीशनल—वि० (अ०) अतिरिक्त ।
ऐड्रेस—पु० (अं०) पता ।
ऐण—पु० मृगचर्म । [वाला ।
ऐणिक—त्रि० हिरन मारने-
ऐणेय—पु० हरिणी का चाम, हड्डी आदि ।
ऐतराज़—पु० आपत्ति, विरोध ।
ऐतिहासिक—वि० इतिहास-संबंधी । इतिहास का ज्ञाता ।
ऐतिह्य—पु० परम्परा से चला आया उपदेश ।
ऐन—पु० घर । वि० ठीक । (अ०) नेत्र । एण ।
ऐनक—स्त्री० आँख का चश्मा ।
ऐना—पु० आइना ।
ऐपन—पु० हल्दी के साथ पिसा हुआ गीला चावल ।
ऐब—पु० (अ०) दोष ।
ऐबक—पु० (अ०) प्रिय । सेवक ।
ऐबगोई—स्त्री० (अ० फ़ा०) दूसरों की निन्दा करना ।
ऐबजोई—स्त्री० ऐब ढूँढ़ना ।
ऐबदार—वि० (अ०) ऐबी ।
ऐबपोशर—पु० (अ० फ़ा०) दोषों को छिपाने वाला ।
ऐबारा—पु० भेड़, बकरियों का बाड़ा ।
ऐमाल—पु० बहु० (अ०) कार्रवाइयाँ ।
ऐमालनामा—पु० (अ०) मनुष्य के अच्छे बुरे कार्यों की विवरण पुस्तक ।
ऐयाम—पु० (बहु० अ०) दिन । समय, ज़माना ।
ऐयार२—पु० धूर्त, चालाक ।
ऐयाश—वि० (अ०) विषयासक्त ।
ऐयाशी—स्त्री० (अ०) विषय-भोग ।
ऐरागैरा—वि० (अ०) अजनबी ।
ऐरापति—पु० ऐरावत हाथी ।
ऐरावण—पु० रावण का एक पुत्र । ऐरावत हाथी ।
ऐरावत—पु० इन्द्र का हाथी । नारंगी ।
ऐरावती—स्त्री० बिजली ।
ऐल—पु० बाढ़ । इला-पुत्र । पुरुरवा ।
ऐलविल—पु० कुबेर ।
ऐलान—पु० (अ०) घोषणा, मुनादी । [खुला ।
ऐलानियाँ—क्रि० वि० खुल्लम-
ऐवान—पु० (फ़ा०) महल ।
ऐश—पु० (अ०) आराम, सुख ।
ऐशगाह—पु० आरामगाह ।
ऐशो-इशरत—यौ० भोग-विलास ।
ऐश्वर्य—पु० प्रभुत्व, विभव ।
ऐश्वर्यवान्१३—त्रि० वैभव-शाली । [वान् ।
ऐश्वर्यशाली५—वि० भाग्य-
ऐसा—वि० इस तरह का ।
ऐसे—क्रि० वि० इस रीति से ।
ऐहिक—वि० सांसारिक ।

१०—ओ

ओं—अव्य० हाँ । [करना ।
ओंछना—सक्रि० निछावर-
ओंकना—अक्रि० ऊबना । कै करना
ओंकार—पु० ईश्वर का सूचक-शब्द । [मैं तेज देना ।
ओंगना—अक्रि० गाड़ी की धुरी ।
ओंठ—पु० होंठ
ओंड़ा—वि० गहरा । पु० गड्ढा ।
ओक—पु० घर । आश्रम । अंजलि । स्त्री० कै ।
ओकना—अक्रि० कै करना ।

ओकपति—पु० सूर्य। चन्द्रमा।
ओकाई—स्त्री० क़ै, वमन।
ओखली—स्त्री० ऊखल।
ओखा—पु० बहाना। वि० खोटा। झीना। कठिन। टेढ़ा
ओग—पु० कर। चंदा। गोद।
ओगरा—पु० खिचड़ी।
ओघ—पु० समूह। शीघ्रता से होने वाला नृत्य। जल-प्रवाह। नृत्य का उपदेश।
ओछना—सक्रि० बालों में कंघी करना।
ओछा१—वि० छोटा, नीच।
ओछाई—स्त्री० नीचता।
ओज—पु० तेज, प्रताप।
ओजना—सक्रि० सहना।
ओजस्विता—स्त्री० कांति, तेज।
ओजस्वी ५—वि० तेजस्वी, प्रतापी।
ओजित—वि० शक्तिशाली।
ओझ—पु० अँतड़ी।
ओझर—पु० पाकाशय, पेट।
ओझल—पु० ओट, आड़।
ओझा—पु० ब्राह्मणों की एक जाति। भूत-प्रेत झाड़नेवाला। [वृत्ति।
ओझाई—स्त्री० ओझा की-
ओट—स्त्री० आड़। शरण।
ओटना—सक्रि० चरखी द्वारा कपास से रुई निकालना।
ओटनी, ओटी—स्त्री० रुई निकालने की चरखी।
ओटा७—पु० कपास ओटनेवाला। आड़। [लैना।
ओठँगना१—अक्रि० सहारा-
ओठगन—पु० आधार।
ओड़न—पु० ढाल। [सहना।
ओडना—सक्रि० रोकना।
ओढ़ना१—सक्रि० वस्त्र से शरीर ढकना। पु० दुपट्टा।
ओढ़नी—स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र।
ओढ़र—पु० बहाना।
ओढ़ौनी—स्त्री० ओढ़नी।
ओत—स्त्री० बचत, लाभ। आराम।
ओत-प्रोत—वि० भली-भाँति-मिला जुला। गुँथा हुआ।
ओता—क्रि० वि० उतना।
ओतु—पु० बिलार।
ओतुप्लुत—वि० विपरीत।
ओद—वि० गीला। पु० गीलापन।
ओदन—पु० भात।
ओदर—पु० उदर।
ओदरना—सक्रि० फटना।
ओदा—वि० गीला। [करना।
ओदारना—सक्रि० विदीर्ण-
ओधना—अक्रि० उलझना, बँधना
ओनंत—वि० झुका हुआ।
ओनचन—स्त्री० पैताने की रस्सी। [कसना।
ओनचना—सक्रि० अदवायन-
ओनवना—अक्रि० झुकना।
ओना—पु० पानी का निकास।
ओनाना—सक्रि० कान लगा कर सुनना। [रारम्भ।
ओनामासी—स्त्री० अक्ष-
ओप—स्त्री० शोभा, चमक।
ओपची—पु० कवचधारी-सैनिक।
ओपना—सक्रि० चमकाना। अक्रि० चमकना।
ओपनी—स्त्री० बर्त्तन माँजने की वस्तु विशेष। [वाली।
ओपनिवारी—स्त्री० चमकने-
ओफ़—अव्य० आश्चर्य या दुःख सूचक शब्द।
ओबरी—स्त्री० तंग कोठरी।
ओम्—पु० ओंकार।
ओर—स्त्री० तरफ़, पक्ष।
ओरती—स्त्री० ओलती।
ओरदावन—पु० दे० 'उरदावन'। [कना।
ओरमना१—अक्रि० लट-
ओरमा—पु० इकहरी सिलाई।
ओरा—पु० ओला, पत्थर।
ओरी—स्त्री० ओलती।
ओलंभा—पु० उलहना।
ओल—पु० सूरन। स्त्री० गोद। पर्दा। बहाना। वि० गीला। [का बर्त्तन।
ओलचा—पु० पानी उलीचने-
ओलती—स्त्री० दे० 'ओरी'।
ओलना—सक्रि० ओढ़ना, परदा करना। चुभाना।
ओलरना१—अक्रि० लेटजाना।
ओला—पु० मेंह में बरसा हुआ पत्थर। पर्दा। वि० बहुत ठंढा।
ओलिक—पु० पर्दा, आड़।
ओली—स्त्री० गोद, अंचल।
ओल्यो—पु० बहाना।
ओवरकोट—पु० (अं०) एक किस्म का लंबा कोट।
ओवरसियर—पु० (अं०) इंजिनियरी विभाग का एक

कर्मचारी।
ओष—पु० जलाना।
ओषधि,ओषधी—स्त्री०दवा।
ओषधिपति, ओषधीष—पु० चंद्रमा। कपूर।
ओष्ठ—पु० होंठ।
ओष्ठपुट—पु० ओठों का ऊपरी भाग, ओठ, लब।
ओष्ठी—स्त्री० कुँदरू।
ओष्ठ्य—वि० होंठ-संबंधी।
ओस—स्त्री० पाला, शीत।
ओसर—स्त्री० बिना ब्याही-भैंस या गाय।
ओसरी—स्त्री० पारी।
ओसाना—सक्रि०भूसा अलग करने के लिए, ग़ल्ले को हवा में उड़ाना।
ओसार—पु० विस्तार।
ओसारा—पु० दालान।
ओसीसा—पु० सिरहाना, तकिया। [दुःखसूचकशब्द।
ओह—अव्य० आश्चर्य या-
ओहट—स्त्री० ओट, आड़।
ओहदा—पु० (अ०) पद।
ओहदेदार—पु० पदाधिकारी।
ओहर—स्त्री० ओझल।
ओहरी—स्त्री० थकावट।
ओहा—पु० गाय का थन।
ओहार—पु० पालकी का परदा।
ओहो—अव्य० आश्चर्य या आनन्द-सूचक शब्द।

११—औ

औंगना—सक्रि०दे० 'ओंगना'।
औंगा २—वि० गूँगा।
औंघना, औंघाना—अक्रि० अलसाना, ऊँघना।
औंघाई—स्त्री० झपकी।
औंजना—अक्रि० अकुलाना।
औंठ—स्त्री० ओंठ।
औंड़—पु० बेलदार।
औंड़ा—वि०गहरा। [होना।
औंदना९—अक्रि० व्याकुल-
औंधना ९—अक्रि० उलटा-होना। सक्रि०उलट देना।
औंधा७—वि० उलटा, नीचा।
औंस—पु०(अं०) एक अँग्रेज़ी-तौल (ढाई तोला)।
औ—अव्य० और।
औक़ात—स्त्री० (अ०) हैसियत। 'वक्त'का बहु०,समय।
औक़ातबसर२—पु० जीवन-निर्वाह।
औक्षक—पु० बैलों का समूह।
औगत—स्त्री० दुर्दशा।
औगी—स्त्री० पैना, चाबुक। पशु पकड़ने का गड्ढा।
औगुन—पु० दोष।
औघट—वि० दुर्गम।
औघड—पु० अघोरी। मनमौजी। वि० अंडबंड।
औघर—वि० विचित्र।
औचक—क्रि० वि०अचानक।
औचट—स्त्री०कठिनाई। क्रि० वि० सहसा।
औचित—वि० निश्चित।
औचिती—स्त्री० औचित्य।
औचित्य—पु० उपयुक्तता।
औज—स्त्री० ओज।
औज़ार—पु०(अ०) हथियार।
औझक—क्रि०वि० अचानक।
औझड़—क्रि० वि० लगातार। पु० धक्का।
औटना९—अक्रि०खौलाना।
औटोक्रेट—पु०(अं०) स्वेच्छा-चारी-शासक।
औठपायन्—पु० शरारत।
औढर—वि० थोड़े में प्रसन्न-होने वाला, मनमौजी।
औतरना—अक्रि० अवतार-लेना।
औतार—पु०अवतार। सृष्टि।
औत्कर्ष्य—पु० श्रेष्ठता।
औत्तानपादि—पु० ध्रुव।
औत्सुक्य—पु० उत्सुकता।
औथरा—वि० छिछला।
औदकना—अक्रि० चौंकना।
औदनिक—वि० रसोइया।
औदरिक—वि०उदर-संबंधी, पेटू।
औदसा—स्त्री० दुर्दशा।
औदान—पु० घलुआ।
औदार्य—पु० उदारता।

औद्योगिक—वि० उद्योग-संबंधी।
औद्वाहिक—वि० ससुराल से प्राप्त। विवाह-संबंधी।
औध—पु० अवध देश।
औधारना—सक्रि० प्रारम्भ करना। अवधारना।
औधि—स्त्री० अवधि, सीमा।
औना-पौना—वि० थोड़ा-बहुत।
औनि—स्त्री० दे० 'अवनि'।
औनिप—पु० राजा। [संबंधी।
औपचारिक—वि० उपचार-
औपटी—वि० स्त्री० अंडबड।
औपनिवेशिक—वि० उपनिवेश-संबंधी।
औपन्यासिक—वि० उपन्यास-संबंधी। अनोखा। पु० उपन्यास का लेखक।
औपम्य—पु० समता। [योग्य।
औपयिक—वि० न्याययुक्त।
औपवस्त—पु० उपवास।
औपशमिक—वि० उपशम करने वाला। [संबंधी।
औपसर्गिक—वि० उपसर्ग-
औबट—वि० कठिन, दुर्गम।
औम—स्त्री० क्षय हुई तिथि।
औरंग—पु० (फ़ा०) दीपक। राजसिंहासन। बुद्धि। कपट।
औरंगज़ेब—पु० पाँचवाँ मुग़ल-सम्राट्। राज्यसिंहासन की शोभा बढ़ाने वाला।
और—अव्य० दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द। वि० अन्य।
औरत—स्त्री० स्त्री।
औरना—अक्रि० अग्रसर होना। सक्रि० सूझना।
औरभ्रक—पु० भेड़ों का समूह।
औरस४—पु० विवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र।
औरसना—अक्रि० रुष्ट होना।
औरस्य—पु० स्वपुत्र। [बेढङ्गा।
औरासा—वि० विचित्र।
औरेब—पु० टेढ़ी चाल।
और्ध्वदेहिक—पु० मृतक के लिए, मरण दिन से दश दिन पर्यंत जो पिंडदान आदि दिया जाता है।
और्व—पु० बड़वानल।
औलना—अक्रि० गर्म पड़ना।
औलाद—स्त्री० (अ०) सन्तान।
औला-मौला—वि० मनमौजी।
औलिया—पु० पहुँचा हुआ फ़क़ीर।
औलूक—पु० उल्लू समुदाय।
औशीर—पु० चँवर-दंड। पीढ़ा। ख़स की टट्टी।
औषध—स्त्री० दवा। इलाज।
औषधालय—पु० दवाख़ाना।
औष्ट्रक—पु० ऊँटों का समूह।
औसत—पु० (अ०) परता। बीच का। समानता। वि० साधारण। [अनुसार।
औसतन्—क्रि० वि० परते के-
औसना—अक्रि० सड़ना।
औसर—पु० अवसर।
औसान—पु० अवसान। नतीजा। सुधबुध।
औसाना—सक्रि० फल आदि का पाल द्वारा पकाना।
औसाफ़—पु० बहु० (अ०) सद्गुण।
औहत—स्त्री० दुर्गति।
औहाती—स्त्री० सोहागिन।

व्यञ्जन

१—क

क—पु० अग्नि। जल। शिर। कंचन।
कंक४-७—पु० सफ़ेद चील।
कंकटक—पु० कवच।
कंकड़—पु० पत्थर का टुकड़ा।
कंकड़ीला—वि० कंकड़ मिला।
कंकण—पु० कंगन, कड़ा।
कंकतिका, कंकती—स्त्री० कंघी।
कंकपत्र७—पु० उड़ने वाला-बाण, बाण। [विशेष।
कंकपृष्ठी—स्त्री० मछली-
कंकरीट—स्त्री० छोटी कंकड़ी।
कंकरैत—वि० कँकड़ीला।
कंकाल—पु० अस्थिपंजर।
कंकालमाली—पु० शिव।
कंकाली५—वि० स्त्री० कर्कशा।
कंकेरु—पु० कौआ।
कँखौरी—स्त्री० काँख की

औ
औ
वा
औठँग
औठगन

फोड़िया। काँख।
कंगन, कंगना—पु० कंकण।
कँगनी—स्त्री० छोटा कंगन। एक अन्न।
कंगला, कंगाल५—वि० निर्धन।
कंगु—स्त्री० ककुनी।
कँगुरिया—स्त्री० सब से छोटी उँगली। [चोटी।
कँगूरा—पु० (फ़ा०) बुर्ज़,
कंघा७—पु० बाल साफ़ करने की कंघी।
कँघेरा—पु० कघा बनाने वाला।
कंच—पु० काँच।
कंचन—पु० सोना। धतूरा।
कंचनी—स्त्री० वेश्या।
कचु—पु० चोली, अँगिया।
कंचुक—पु० अचकन। कवच। केंचुल। चोली।
कंचुका—स्त्री० चोली। केंचुली। पु० द्वारपाल। साँप। अंतःपुर-रक्षक।
कंचुरि—स्त्री० केंचुल।
कँचुवा—पु० चोला।
कँचेरा—पु० काँच का काम करने वाला। [किरा।
कंज—पु० कमल। ब्रह्मा।
कंजई—वि० ख़ाकी।
कंजज—पु० ब्रह्मा।
कंजड़—पु० एक जाति।
कंज़रवेटिव—वि० (अं०) पुरानी लकीर का फ़क़ीर। अपरिवर्त्तनवादी। [वाला पुरुष।
कंजा७—पु० भूरी आँखों-
कँजियाना—अक्रि० मुरझाना।
कंजूस२—वि० कृपण।
कंट, कंटक—पु० काँटा। सुई की नोंक। छोटा शत्रु। कृपण।
कंटकारी—स्त्री० भटकटैया।
कंटकाशन—पु० ऊँट।
कंटकित—वि० रोमांचित। काँटेदार।
कंटका—वि० काँटेदार।
कंटाइन—स्त्री० चुड़ैल।
कँटिया—स्त्री० काँटी। सिर का एक गहना।
कँटीला७—वि० काँटेदार।
कंटूनमेंट—पु० (अं०) सेना के रहने का स्थान, छावनी।
कंटोप—पु० टोपी विशेष।
कंट्रैक्ट—पु० (अं०) ठेका।
कंट्रैक्टर—पु० (अं०) ठेकेदार।
कंट्रोल—पु० (अं०) नियंत्रण।
कंठ—पु० गला।
कंठकूजिका—स्त्री० वीणा।
कंठगत—वि० गले में आया-हुआ। [गहना।
कंठभूषा—पु० हार, गले का
कंठमाला—स्त्री० गले का एक रोग। गले का गहना।
कँठला—पु० कंठा।
कंठसिरी—स्त्री० गले का एक गहना, कंठी।
कंठस्थ—वि० ज़ुबानी।
कंठहरिया—स्त्री० कंठी।
कंठा७—पु० गले का एक गहना। तोते आदि के गले की कंठीनुमा रेखाएँ।
कंठाग्र—वि० कंठस्थ।
कंठिधारी—पु० वैरागी, भगत।
कंठीरव—पु० सिंह। व्याघ्र। कबूतर। मत्त हाथी।
कंठ्य—वि० कंठ से उत्पन्न।
कडहार—पु० कर्णधार।
कंडा७—पु० गोबर का उपला।
कंडाल—पु० नरसिंहा बाजा।
कंडिका—स्त्री० वेद-ऋचा-समूह।
कंडिहरिया—पु० कर्णधार।
कंडील—स्त्री० काग़ज़ की लालटेन।
कंडु—स्त्री० खुजली।
कडोल—पु० टोकरी।
कंडोरा—पु० कडों का ढेर।
कंत—पु० पति। ईश्वर।
कंथ—पु० कत, स्वामी।
कंथा—स्त्री० गुदड़ी।
कंद—स्त्री० गूदेदार जड़। बादल। [सफ़ेद चीनी।
क़ंद—पु० साफ़ की हुई-
कंदन—पु० नाश। नाशक।
कंदना—सक्रि० नष्ट करना।
कदर—पु० गुफ़ा। कंद, जड़।
कंदरा—स्त्री० गुफ़ा।
कंदराकार—पु० पर्वत।
कंदरिया, कंदरी—स्त्री० नरा-डंठल।
कंदर्प—पु० कामदेव।
कंदसार—पु० इन्द्र की वाटिका। एक प्रकार का हिरन।
कंदा—पु० घुइयाँ। शकरक़न्द।
कंदु, कंदुक—पु० गेंद। सुपारी।
कँदैला—वि० मैला।
कँदोरा—पु० करधनी।
कंध—पु० कंधा।
कंधनी—स्त्री० करधनी।
कंधर—पु० गर्दन, कन्धा।
कंधा—पु० स्कन्ध।
कंधार, कंधारी—पु० मल्लाह।

कँधावर—स्त्री० कंधे पर डालने को चद्दर। ताशे की रस्सी।
कंधि—पु० समुद्र। मेघ।
कँधेला—पु० कंधे पर डाला जानेवाला साड़ी का छोर।
कंप, कंपन—पु० काँपना।
कँपकँपी—स्त्री० काँपना।
कँपना९—अक्रि० काँपना।
कंपनी—स्त्री० (अं०) टोली, संघ।
कंपा—पु० चिड़ियों को फँसाने की बाँस की पतली तीलियाँ।
कंपाउंडर—वि० (अं०) औषध बनाने वाला। [हुआ।
कंपायमान४—वि० हिलता-
कंपास—पु० कुतुबनुमा।
कंपित—वि० काँपा हुआ।
कंपू—पु० छावनी, डेरा।
कंपोज़—पु० (अं०) टाइप के अक्षरों को जोड़ना।
कंपोज़ीटर—वि० (अं०) कंपोज़ करने वाला।
कंप्य—वि० काँपने योग्य।
कंबख़्त—वि० अभागा।
कंबल—पु० ऊन की मोटी-चादर।
कंबु, कंबुक-पु० शंख। हाथी।
कंबुग्रीव-वि० शंख के समान कंठ वाला।
कँवल—पु० कमल।
कंस—पु० काँसा। कटोरा। मथुरा का राजा जो श्रीकृष्ण का मामा था।
कंसताल—पु० झाँझ।
कंसाराति—पु० श्रीकृष्ण।
कंसारी—पु० श्रीकृष्ण।
कइनी—स्त्री० टहनी।
कई—वि० अनेक।
ककई—स्त्री० कंघी।
ककड़ी—स्त्री० एक लंबा फल।
ककना—पु० कंगन। विवाह की एक रस्म।
ककनी—स्त्री० पहुँची, कंकण।
ककनू—पु० एक पक्षी।
ककरेजा—पु० बैंजनी रँग।
ककहरा—पु० 'क' से 'ह' तक के वर्ण। आरंभिक बातें।
ककही—स्त्री० कंघी।
ककुत्स्थ—पु० एक राजा जो इक्ष्वाकु वंश का था।
ककुद—पु० बैल की गर्दन के पास का कूबड़। राज-चिह्न।
ककुद्मती—स्त्री० कमर।
ककुद्मान—पु० बैल।
ककुभ४—पु० एक राग। दिशा। चम्पक पुष्प की माला। काकपक्ष। बाल-गुच्छ। बाँसुरी के अंत की टेढ़ी छोटी-लकड़ी। धरातल।
ककोड़ा—पु० तरकारी विशेष।
ककोरना—सक्रि० खरोंचना।
कक्खट—वि० क्रूर, कठोर।
कक्ष—पु० बग़ल। कछार। दर्जा। कमरा। [काँख।
कक्षा—स्त्री० परिधि। श्रेणी।
कक्ष्या—स्त्री० आँगन। महल। उद्योग। हौदा।
कखरी—स्त्री० बग़ल।
कखौरी—स्त्री० काँख का फोड़ा।
कगर७—पु० ऊँचा किनारा। मेंड़। क्रि० वि० किनारे पर।
कगार—पु० ऊँचा किनारा।
कच—पु० बाल। झुंड। मेघ।
कचकच—स्त्री० बकवाद।
कचनार—पु० एक पेड़।
कचपची—स्त्री० कृत्तिका-नक्षत्र। चमकीली बिन्दी। छोटे-छोटे तारों का समूह।
कचर-कचर—पु० बकवाद।
कचरना—सक्रि० रौंदना, पाँव से दबाना।
कचरा—पु० कूड़ा-करकट।
कचरी—स्त्री० कचरी के तले हुए टुकड़े।
कचलोंदा—पु० लोई।
कचलोन—पु० काला नमक।
कचलोहू—पु० घाव का पानी।
कचवाट—स्त्री० चिढ़।
कचहरी—स्त्री० न्यायालय, दरबार।
कचाई—स्त्री० कच्चापन।
कचाना—अक्रि० कच्चा होना। आगा पीछा करना।
कचायँध—स्त्री० कच्चेपन की महँक।
कचारना—सक्रि० कपड़ा धोना।
कचालू—पु० बंडा अरुई।
कचियाना—अक्रि० हिचकिचाना।
कचीची—स्त्री० जबड़ा।
कचुल्ला—पु० प्याला।
कचूमर—पु० भरता। कुचली हुई वस्तु।
कचूर—पु० कटोरा। एक पौधा।
कचोटना—अक्रि० चुभना।
कचोना—सक्रि० चुभाना।
कचोरा—पु० कटोरा।
कचौड़ी—स्त्री० पिट्ठी भरी

हुई पूड़ी।
कच्चर—पु० मलिन वस्तु।
कच्चा७—वि० बिना पका। कमज़ोर।
कच्चाकाग़ज़—पु० बिना रजिस्ट्री की हुई दस्तावेज़।
कच्चाचिट्ठा—पु० पूरा और ठीक ब्यौरा।
कच्चामाल—पु० वह पदार्थ जिससे व्यवहार की चीज़ें बनती हैं। [हाथ।
कच्चाहाथ—पु० अनभ्यस्त-
कच्चाहाल—पु० पूरा और ठीक ब्यौरा।
कच्छ—पु०कछार। कछुआ।
कच्छप७—पु० कछुआ।
कच्छपी—स्त्री० सरस्वती की वीणा।
कच्छुर—पु० वह व्यक्ति जिसे खाज का रोग हो।
कच्छू—पु० कछुआ।
कछना—सक्रि०धारण करना।
कछनी—स्त्री० छोटी धोती।
कछरा—पु० मिट्टी का बर्त्तन (चौड़े मुँह का)।
कछवाहा—पु० राजपूतों की एक जाति।
कछार—पु० नदी-तट की नीची भूमि, खादर।
कछु, कछुक—वि० थोड़ा।
कछुआ—पु० कच्छप।
कछोटा७—पु० छोटी धोती।
कज—पु० कमल। ऐब। (फ़ा०)टेढ़ापन। वि० टेढ़ा।
कजक—पु०हाथी का अंकुश।
कजकोल—स्त्री० (फ़ा०) भिक्षा का बर्त्तन। सुन्दर उक्तियों का संग्रह।
कजरा—पु० काजल।
कजराई—स्त्री० कालापन।
कजरारा७—वि० काजल वाला।
कजरौटा—पु० काजल रखने की डिबिया।
क़ज़लबाश—पु० (तु०)सैनिक।
कजलाना—अक्रि० काला- पड़ना। सक्रि० आँजना।
कजली—स्त्री० कालिख। एक तरह का गीत।
कजलीवन—पु०केले का वन।
कजा—स्त्री० माँड़। काँजी।
क़ज़ा—स्त्री० (अ०) मौत।
क़ज़ाक़—पु० (अ०) डाकू।
क़ज़ाकार—क्रि०वि० (अ० फ़ा०) अचानक।
क़ज़ात—स्त्री० (अ०) विवाद। झगड़ा। [अचानक।
क़ज़ारा—क्रि० वि० (फ़ा०)
कजावा—पु० (फ़ा०) ऊँट की काठी।
क़ज़िया—पु०(अ०) झगड़ा। व्यर्थ की बातचीत।
कजी—स्त्री०(फ़ा०)टेढ़ापन।
कज्जल—पु०काजल। [हुए।
कज्जलित—वि०काजल लगाये-
क़ज़्ज़ाकर—वि०लुटेरा, डाकू।
कट—स्त्री० कमर। चटाई। पु०हाथी का गंडस्थल।
कटक—पु० सेना। एक देश। कंकण।
कटकई, कटकाई—स्त्री० सेना।
कटकटाना—अक्रि० दाँत- पीसना।
कटकवाला—पु० मियादी बै या बिक्री।
कटकोल—पु० पीकदान।
कटखना—वि० काटने वाला।
कटघरा—पु० जंगलेदार काठ का घर।
कटज़ीरा—पु०काला ज़ीरा।
कटताल—पु० करताल।
कटती—स्त्री० बिक्री। खपत।
कटना—अक्रि० छुरी आदि से टुकड़ा हो जाना। नष्ट- होना। बीतना।
कटनास—पु० नीलकंठ।
कटनि—स्त्री० काट। प्रीति।
कटनी—स्त्री० दे० 'कटती'। दराँती। [चमड़ा आदि।
कटपीस—पु० दाग़ी कपड़ा,
कटभी—स्त्री० मालकाँगनी।
कटर—पु० एक प्रकार की नाव।
कटरा—पु० छोटा बाज़ार। भैंस का बछड़ा।
कटवाँ—वि० काँटेदार।
कटसरैया—स्त्री० एक कँटीला- पौधा। [उसका फल।
कटहल—पु० एक वृक्ष या-
कटहा ७—वि० कटखना।
कटा—पु० मारकाट। प्रहार।
कटाइक—पु० काटने वाला।
कटाऊ—पु० काट-छाँट।
कटाकटी—स्त्री० मारकाट।
कटाक्ष—पु० तिरछी चितवन। व्यंग्य।
कटाक्षपात—पु० भाव पूर्ण या टेढ़ी दृष्टि से देखना।
कटाछनी—स्त्री० मारकाट।

कटान—स्त्री० काटने का कार्य।
कटार७—पु० एक क़िस्म का दुधारा हथियार।
कटाल—पु० ज्वार। [ब्योंत।
कटाव—पु० काट, कतर-
कटास—पु० बनबिलाव।
कटाह—पु० कड़ाह। कछुए की पीठ।
कटि, कटी—स्त्री० कमर।
कटिजेब—स्त्री० करधनी।
कटितट—पु० नितम्ब।
कटिप्रोथ—पु० पेड़ू के दोनों ओर की हड्डी, कूल्हा।
कटिबंध—पु० कमरबन्द। पृथ्वी के पाँच कल्पित भागों में से कोई एक।
कटिबद्ध—वि० तैयार।
कटिवस्त्र—पु० धोती।
कटिसूत्र—पु० तगडी, करधनी। [नुकीला।
कटीला ७—वि० तीक्ष्ण,
कटु३—वि० कड़ुआ, अप्रिय। कुटकी।
कटुक—वि० कड़ुआ।
कटुकीट—पु० मच्छर।
कटुतुंबी—स्त्री० कड़वी लौकी।
कटुत्व—पु० कड़ुआपन।
कटुभद्र—पु० अदरक।
कटुरव—पु० मेंढक।
कटूक्ति—स्त्री० अप्रिय बात।
कटेरी—स्त्री० भटकटैया।
कटैया—पु० काटने वाला।
कटोरदान—पु० ढक्कनदार-बर्तन विशेष।
कटोरा ७—पु० प्याला।
कटौती—स्त्री० कमीशन।

कट्टर१—वि० अंधविश्वासी।
कट्टहा—पु० महापात्र।
कट्ठा—पु० पाँच हाथ चार अंगुल की नाप।
कट्फल—पु० कायफल।
कट्याना—अक्रि० कंटकित-होना।
कठघरा—पु० काठ का पिंजड़ा।
कठपुतली—स्त्री० नचाने वाली काठ की मूर्ति।
कठफोड़वा—पु० एक पक्षी।
कठबंधन—पु० हाथी के पैर की काठ की बेड़ी।
कठबाप—पु० सौतेला पिता।
कठमलिया—पु० झूठा संत।
कठमस्त—वि० लंपट। मोटा-ताज़ा, हट्टाकट्टा।
कठला—पु० कंठ की माला।
कठहास्य—पु० सूखी हँसी।
कठारा—पु० नदी आदि का किनारा।
कठारी—पु० कमंडलु।
कठिन ३—वि० कड़ा, दुष्कर।
कठिनाई—स्त्री० मुश्किल।
कठिया—वि० कड़े छिल्के का।
कठिल्लक—पु० करेला।
कठुला—पु० माला, हार।
कठैठा—वि० कड़ा, दृढ़।
कठैला—पु० काठ का पात्र।
कठोर ३-१—वि० कठिन। निष्ठुर, निर्दय। [बरतन।
कठौता७—पु० काठ का बड़ा-
कडंगर—पु० मोटा भुस।
कड़क—स्त्री० कड़कड़ाहट की आवाज़। गर्जन। कसक।
कड़कड़—पु० घोर शब्द।

कड़कना—अक्रि० गरजना।
कड़कड़ाना—अक्रि० कड़कड़-शब्द करना।
कड़कड़ाहट—स्त्री० गर्जन।
कड़खा—पु० वीरों को उत्ते-जित करने वाला गायन।
कड़खैत—पु० भाट, चारण।
कड़ा ७—वि० कठोर।
कड़ाई—स्त्री० कठोरता।
कड़ाका—पु० कड़ी वस्तु टूटने का शब्द। लंघन।
कड़ाबीन—स्त्री० बन्दूक।
कड़ार—पु० एक पीला रंग।
कड़ाहा—स्त्री० बड़ी कड़ाही।
कड़िहर—स्त्री० कमर।
कड़िहार—वि० काढ़ने वाला।
कड़ी—स्त्री० जंजीर का छल्ला। गीत का एक पद।
कड़ुआ—वि० कटु (ज़ायक़ा)। क्रोधी। [लगना।
कड़ुआना—अक्रि० कड़ुआ-
कड़ुआहट—स्त्री० कड़ु-आपन।
कड़ेरा—पु० खरादने वाला।
कढ़ना९—अक्रि० निकलना। उदय होना। [रस्सी।
कढ़नी—स्त्री० मथानी की-
कढ़लाना—सक्रि० घसीटना।
कढ़वाना—सक्रि० निकलवाना।
कढ़ाई—स्त्री० कड़ाही। क़सीदे का काम या मज़दूरी।
कढ़ाव—पु० बेल-बूटे का काम।
कढ़ी—स्त्री० बेसन तथा दही से बना हुआ एक व्यंजन।

कढ़ोलना—सक्रि० घसीटना।
कण—पु० किनका, रवा।
कणप—पु० भाला।
कणा—स्त्री० पिप्पली।
कणाद—पु० सुवर्णकार। वैशेषिक-दर्शन के रचयिता-एक ऋषि।
कणमात्र—वि० बहुत थोड़ा।
कणिका—स्त्री० किनका।
कणिश—पु० अनाज की बाल।
कण्व—पु० शकुन्तला के पालक एक ऋषि।
कत, कतक—क्रि० वि० क्यों।
कत—पु० (अ०) क़लम का अग्र भाग। [हरगिज़।
क़तअन्—अव्य० (अ०)
कतई—अव्य०(अ०) बिल्कुल।
क़तईगज़—पु० (अ० फ़ा०) दर्ज़ियों का गज़।
क़तब—पु० (अ०) लेख।
कतरन—स्त्री०काग़ज़ इत्यादि की कटन। [काटना।
कतरना९—सक्रि० कैंची से।
कतरनी—स्त्री० कैंची।
कतरवाना—सक्रि० कटवाना।
कतरब्योंत—स्त्री० काट-छाँट। युक्ति, सोच-विचार।
कतरा—पु० टुकड़ा। [खंड।
क़तरा—पु० (अ०) बूँद।
कतरी—स्त्री० कोल्हू का पाट।
क़तल—पु० हत्या।
क़तलबाज़—पु० बधिक।
क़तला—पु० (अ०) टुकड़ा।
क़तलाम—पु० सर्वसंहार।
कतवार—पु० कूड़ा-करकट। वि० कातने वाला।
कतहुँ—क्रि० वि० कहीं।
कता—स्त्री० आकार। काट-छाँट। पंक्ति। ढंग।
कताई—स्त्री० कातने का काम। [कतवाना।
कताना—सक्रि० दूसरे से-
क़तार—स्त्री० (अ०) पंक्ति। समूह।
कतारा—पु०(फ़ा०) कटारी।
कतारी—स्त्री० ढँग। क़तार।
कति—वि० कितने।
कतिक—वि० कितना।
कतिपय—वि० कई एक, कुछ।
कतीरा—पु० गोंद विशेष।
क़तील—वि० (अ०) क़त्ल किया गया।
कतेब—पु० धर्मग्रंथ।
कतौनी—स्त्री० कताई।
कत्तल—पु०पत्थर का टुकड़ा।
कत्ता—पु० छोटी तलवार। छुरी। [चारिणी स्त्री।
क़त्तामा—स्त्री० (अ०) व्यभि-
क़त्ताल—वि० (अ०) क़त्ल करने वाला।
कत्ती—स्त्री० सोने-चाँदी के तार काटने की कतरनी।
कत्थई—वि० कत्थे के रँग का।
कत्थक—पु० एक जाति जो गाने बजाने का काम करती है।
कत्था—पु० खैर
क़त्ल—पु० (अ०) हत्या।
क़त्लेआम—पु० (अ०) सर्व-संहार।
क़त्लगाह—स्त्री० फाँसी-घर।
कथंचित्—क्रि०वि० शायद।
कथक—पु० वक्ता, कथा का कहने वाला।
कथक्कड़—वि० अधिक कथा-कहने वाला।
कथन७—पु० वर्णन,बात।
कथना—सक्रि० कहना।
कथनीय—वि० कहने योग्य।
कथरी—स्त्री० गुदड़ी।
कथा—स्त्री० कहानी। धर्म-विषयक आख्यान। [कथा।
कथानक—पु० कहानी। छोटी-
कथामुख—पु० प्रस्तावना।
कथावस्तु—स्त्री०प्लाट, ढाँचा।
कथा-सचिव—वि० सम्मति-दाता।
कथित—वि० कहा हुआ।
कथितव्य—वि० कहने के योग्य।
कथीर, कथील—पु० राँगा।
कथोद्घात—पु०प्रस्तावना। अभिनय का प्रारंभ।
कथोपकथन—पु० बातचीत।
कथ्य—वि०कथनीय। [समूह।
कदंब—पु० दे० 'कदम'।
कदंबक—पु०सरसों। समूह।
कदंबु—पु० बुरा जल।
कदंश—पु० बुरा अंश।
कद—स्त्री० (अ०) बुराई। हठ। परिश्रम।
क़द—पु० (अ०) डीलडौल।
कदध्वा—पु० बुरा मार्ग।
कदन—पु० नाश। हत्या। छुरी।
कदन्न—पु०मोटा अन्न। [पेड़।
कदम—पु० एक सदाबहार-
क़दम—पु० पाँव, डग।

क़दमचा—पु० पाख़ाने आदि में बना पैर रखने का स्थान।
क़दमबाज़—वि० (अ० फ़ा०) क़दम-चाल चलने वाला (घोड़ा)।
क़दमबोस २—वि० (अ०) पैर चूमना। [प्रतिष्ठा।
क़दर—स्त्री० (अ०) मान,
कदराई—स्त्री० कायरता।
कदरज—त्रि० कंजूस। पु० एक प्रसिद्ध पापी।
क़दरदान२—वि० (अ०फ़ा०) क़दर करने वाला, गुण-ग्राहक।
कदरमस—स्त्री० मारपीट।
कदराई—स्त्री० कायरपन।
कदराना—अक्रि० डरना, हिचकना।
कदरो—स्त्री० एक पक्षी।
कदर्थ—पु० कूड़ा-करकट।
कदर्थना—स्त्री०दुर्गति, दुर्दशा।
कदर्थित—वि० दुर्गति किया-हुआ।
कदर्य३—वि० कंजूस, कृपण।
कदला, कदली—स्त्री० केला।
क़दह—पु० (अ०) प्याला। भिक्षापात्र। खंडन।
कदा—क्रि० वि० कब।
कदाकार८—वि० बदसूरत।
कदाख्य—त्रि० बदनाम।
कदाच,कदाचन—अव्य०कभी।
कदाचार८—पु० दुराचार।
कदाचि, कदाचित्—क्रि० वि० कभी, शायद।
कदापि—अव्य० कभी। [नता।
क़दामत—स्त्री० (अ०) प्राची-

कदी—वि० ज़िद्दी, हठी। क्रि० वि० कभी।
क़दीम—वि०(अ०)पुराना।
क़दीमी—वि०(अ०)पुराना।
कदुष्ण—त्रि० थोड़ागर्म।
कदूरत—पु० (अ०) रंजिश। गंदगी।
कदे—क्रि० वि० कभी।
क़दे आदम—वि०(अ०)आदमी के बराबर ऊँचा।
कद्दावर—वि० (फ़ा०) बड़े डोल-डौल का।
कद्दू—पु० लौकी।
कद्दूकश—पु० लौकी रगड़ने वाली लोहे या पीतल की छिद्रदार चौकी।
कद्दूदाना—पु० (फ़ा०) मल के साथ गिरने वाले पेट के भीतर के छोटे छोटे सफ़ेद कीड़े।
क़द्र—स्त्री० (अ०) क़दर।
कद्रू—स्त्री० नागमाता।
कद्रूज—पु० सर्प।
कद्वद ४—वि० कुभाषी।
कधी—क्रि० वि० कभी।
कर्नक—पु० सोना।
कन—पु० छोटा टुकड़ा।
कनउँड़ी—स्त्री० दासी।
कनउड़—त्रि० काना। अहसा-नमंद।
कनक—पु० सोना। धतूरा।
कनकफली—स्त्री० कान की 'लौंग' नामक अभूषण।
कनककशिपु—पु० प्रह्लाद का पिता।
कनकक्षार—पु० सुहागा।

कनकचंपा—पु० एक वृक्ष।
कनकटा—वि० जिसके कान कटे हों।
कनकना७—वि० चिड़चिड़ा।
कनकनाना—अक्रि० चौकन्ना-होना। चुनचुनाना।
कनकनाहट—स्त्री० चिड़-चिड़ाहट। [धतूरा।
कनकफल—पु० जमालगोटा।
कनकालुका—स्त्री० सुवर्ण-पात्र।
कनकाह्वय—पु० धतूरा।
कनकी—स्त्री० छोटा कण।
कनकैया—स्त्री० पतंग।
कनकौआ—पु० पतंग।
कनखजूरा—पु० कानसलाई-कीड़ा। [नज़र से देखना।
कनखियाना—सक्रि०तिरछी-
कनखी, कनखैया—स्त्री० तिरछी नज़र से ताकना। आँख का इशारा।
कनगुरिया—स्त्री० सब से छोटी उँगली।
कनछेदन—पु०कान छिदाना।
कनटोप—पु० कानों को भी ढकने वाली टोपी।
कनपटी—स्त्री० कान और आँख के बीच का स्थान।
कनबतिया—स्त्री० कान में कही गयी बात। [वाला।
कनफुँका७—वि० दीक्षा देने-
कनफुसका—पु०कान में बात कहने वाला। चुग़लख़ोर।
कनमनाना—अक्रि० सोये हुए आदमी का कुलबुलाना।
कनय—पु० दे० 'कनक'।

कनरस—पु० कर्णगोचर-आनन्द।
कनरसिया—वि०गाना-बजाना सुनने का शौक़ीन। [दौड़धूप।
कनवैसिंग-स्त्री०(अं०)उद्योग,
कनवोकेशन-पु०(अं०) ग्रेजुएटों को डिप्लोमा वितरण करने के लिए यूनीवर्सिटी के प्रधानों का जल्सा।
कनसार—पु० ताम्रपत्र पर लेख खोदने वाला।
कनसुई—स्त्री० आहट, टोह।
कनस्तर-पु० टीन का पीपा।
कनहार—पु० मल्लाह, केवट।
क़नाअ़त—स्त्री० (अ०) संतोष, सब्र।
कनाउड़ा—वि०दे०'कनौड़ा'।
कनागत—पु० पितृपक्ष।
क़नात—स्त्री० (अ०) मोटे कपड़े का दीवारनुमा परदा।
कनिआरी—स्त्री० कनकचंपा।
कनिक—पु० गेहूँ या गेहूँ का आटा।
कनिका—स्त्री०दे० 'कणिका'।
कनिगर—पु० प्रतिष्ठा की रक्षा करने वाला।
कनियाँ—स्त्री०गोद, उछंग।
कनियाना—अक्रि० आँख-बचाकर निकलजाना। गोद-लेना। उड़ते में काग़ज़ की पतंग का एक ओर को झुकना। [पु० छोटा भाई।
कनिष्ठ४—वि० सबसे छोटा।
कनिष्ठा, कनिष्ठिका—स्त्री० सबसे छोटी उँगली।
कनिहार—पु० मल्लाह।
कनी—स्त्री० बहुत छोटा-टुकड़ा। बूँद। मींगी।
कनीज़—स्त्री०(फ़ा०) बाँदी।
कनीनिका—स्त्री०सबसे छोटी-उँगली। आँख का तारा।
कनीय—वि० बहुत थोड़ा।
कनीर—पु० कनेर वृक्ष।
कनूका—पु०अनाज का दाना।
कने—क्रि० वि० निकट।
कनेठा—वि०काना,ऐंचाताना।
कनेठी—स्त्री० कान ऐंठना।
कनेर—पु०एक फूल का पेड़।
कनोई—पु० कान का मैल।
कनौखा—वि० कटाक्षयुक्त।
कनौखी—स्त्री०टेढ़ी चितवन।
कनौठा—पु०किनारा। पट्टी दार, भाईबन्धु।
कनौडा—वि०काना। अपंग। तिरस्कृत। पु० क्रीतदास।
कनौती—स्त्री० कान की नोंक या बाली। पशु का कान।
कन्दाकार—वि०(फ़ा०)खोद-कर बेलबूटे बनाने वाला।
कन्दन—पु०(फ़ा०)खोदना। बेलबूटे बनाना।
कन्ना७—पु० पतंग बाँधने का डोरा। किनारा, हाशिया।
कन्यका—स्त्री० कन्या।
कन्यकाजात—वि० कन्या से उत्पन्न।
कन्यकापति—पु० दामाद।
कन्या—स्त्री० क्वारी पुत्री।
कन्यादान—पु० विवाह में वर को कन्या समर्पण करने की रस्म।
कन्याधन—पु० कन्या अवस्था में मिला हुआ धन।
कन्यापुर—पु० ज़नानख़ाना।
कन्यारासी—वि० निर्बल।
कन्यावेदी—पु० दामाद।
कन्हावर—पु०कंधा पर डालने का दुपट्टा। [व्यक्ति।
कन्हैया—पु०श्रीकृष्ण। प्रिय-
कपट८—पु० छल।
कपटना—सक्रि०कपट करना।
कपटी—वि० धूर्त, ठग।
कपड़कोट—पु० तम्बू।
कपड़छन—पु० कपड़े में छानना।
कपड़द्वार—पु० वस्त्रागार।
कपड़विण—पु० दर्ज़ी।
कपड़ा, कपरा—पु० वस्त्र।
कपर्द, कपर्दक—पु० शिव की जटा। कौडी।
कपर्दिका—स्त्री० कौड़ी।
कपर्दिनी—स्त्री० दुर्गा।
कपर्दी—पु० शिवजी।
कपाट—पु० किवाड़।
कपाल—पु० सिर।
कपालअस्त्र—पु० ढाल।
कपालक्रिया-स्त्री० जलते हुए शव केसिर कोबाँस से फोड़ना।
कपालभृत्—पु० शिवजी।
कपालमाली—पु० शिव।
कपालिका—स्त्री० खोपड़ी। काली देवी।
कपालिनी—स्त्री० दुर्गा।
कपाली—पु० शिव। भैरव।
कपालीय—वि०भाग्यवान्।
कपास—स्त्री०रुई का पौधा।
कपासी—पु० हलका पीला-रँग वि०कपास के रंग का।

कपिंजल—पु० पपीहा। तीतर।
कपि—पु० बंदर। सूर्य। हाथी।
कपिकंदुक—पु० खोपड़ी।
कपिकेतु—पु० अर्जुन।
कपित्थ—पु० कैथ।
कपिध्वज—पु० अर्जुन।
कपिप्रिय—पु० कैथा।
कपिरथ—पु० रामचंद्र। अर्जुन।
कपिल—वि० सफ़ेद। पीला। पु० सांख्य-शास्त्रकर्त्ता एक मुनि। अग्नि। चूहा। शिव। सूर्य।
कपिला—वि० स्त्री० सफ़ेद या भूरे रंग की। स्त्री० भोली गाय।
कपिलाश्व—पु० इन्द्र।
कपिश४—वि० मटमैला।
कपिशा—पु० क़साई। स्त्री० कश्यप मुनि की स्त्री।
कपिस—पु० रेशमी वस्त्र।
कपीतन—पु० अमरा, आँवला। सिरसा।
कपूतर—पु० दुष्ट लड़का।
कपूर—पु० काफ़ूर।
कपूरी—पु० हलका पीला रँग।
कपोत७—पु० कबूतर।
कपोतपालिका—स्त्री० कबूतर-ख़ाना। [इलायची।
कपोतवर्णी—स्त्री० छोटी-
कपोतवृत्ति—स्त्री० आकाश-वृत्ति।
कपोतव्रत—पु० दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहना।
कपोतसार—पु० सुरमाधातु।
कपोतांघ्रि—स्त्री० माल-काँगिनी।
कपोल—पु० गाल।
कपोल-कल्पना—स्त्री० मनगढ़ंत।
कपोल-कल्पित—वि० बनावटी। [जहाज़ का आफ़िसर।
कप्तान—पु० दल का नायक।
कफ़—पु० (फ़ा०) बलग़म।
कफ़गीर—पु० (फ़ा०) कलछी।
कफ़चा—पु० (फ़ा०) सर्प का फन। [वस्त्र।
कफ़न—पु० मुर्दा लपेटने का-
कफ़नखसोटर—वि० कृपण।
कफ़नाना—सक्रि० मुर्दे को कफ़न में लपेटना।
कफ़नी—स्त्री० (फ़ा०) मुर्दे या साधुओं के गले में डाला जाने वाला वस्त्र। [बंदीगृह।
कफ़स—पु० (अ०) पिंजरा।
कफ़ालत—स्त्री० (अ०) ज़मानत।
कफ़ील—पु० (अ०) ज़ामिन।
कफ़्शपाई—स्त्री० (फ़ा०) जूता।
कफोणि—स्त्री० कुहनी।
कफ़्फ़ारा—पु० (अ०) पापों का प्रायश्चित्त।
कफ़्श—स्त्री० (फ़ा०) जूता।
कफ़्शख़ाना—पु० (फ़ा०) ग़रीब का स्थान। जूता-घर
कबंध—पु० रुंड। केतु। एक राक्षस। पेट। मेघ।
कब—क्रि० वि० किस समय।
कबड्डी—स्त्री० एक खेल।
कबरा—वि० चितकबरा।
कबरी—स्त्री० चोटी, वेणी।
क़बा—स्त्री० (अ०) एक लंबा ढीला पहनावा।
कबाड़ा—पु० बखेड़ा।
कबाड़िया—पु० रद्दी चीज़ों का सौदागर।
कबाब—पु० (फ़ा०) सीख़ों पर भूना हुआ मांस।
कबाबचीनी—स्त्री० मिर्च के समान छोटा फल।
क़बाय—पु० एक प्रकार का ढीला वस्त्र।
क़बायल—पु० बहु० (अ०) परिवार के लोग। [कीर्त्तन।
कबार—पु० व्यापार। यश-
क़बाला—पु० (अ०) वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय। बैनामा।
कबाहत—स्त्री० (अ०) दिक्क़त।
कबीर—वि० (अ०) बड़ा, श्रेष्ठ।
कबीरपंथी—वि० कबीर के संप्रदाय का।
कबीरा—पु० (अ०) बड़ा पाप।
क़बील—पु० (अ०) जाति।
क़बीला—स्त्री० (अ०) स्त्री, पत्नी कुटुंब के लोगों का समूह।
कबूतर—पु० (फ़ा०) एक पक्षी, कपोत।
क़बूद—वि० (फ़ा०) आसमानी।
क़बूल२—पु० (अ०) स्वीकार।
क़बूलना—सक्रि० स्वीकार करना। [का।
क़बूलसूरत—वि० सुन्दर शकल-
क़बूलियत—स्त्री० (अ०) स्वीकृति-पत्र जो असामी की ओर से लिखा जाता है।
कब्क—पु० (फ़ा०) चकोरपक्षी।

क़ब्ज़—पु० (अ०) पेट का अजीर्ण। [की रसीद।
क़ब्ज़उलवसूल—स्त्री० प्राप्ति-
क़ब्ज़ा—पु०(अ०) अधिकार।
क़ब्ज़ियत—स्त्री० अजीर्ण।
क़ब्ज़ुलवसूल—पु० (फ़ा०) जिस काग़ज़ पर वेतन-भोगियोंका चुकता लिखाहो।
क़ब्र—स्त्री० (अ०) मुर्दा दफ़न करने का गड्ढा।
क़ब्रिस्तान—पु० वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।
कब्ल—क्रि०वि० (अ०)पूर्व।
कभी—क्रि० वि० किसी-समय।
कमंगर२—पु० (फ़ा०) कमान-बनाने वाला। वि०चितेरा। निपुण। [का एक औज़ार।
कमंचा—पु० (फ़ा०) बढ़ई-
कमंडली—वि० साधु। पाखंडी
कमंडलु—पु० संन्यासियों का जलपात्र।
कमंद—पु० (फ़ा०) कबंध। रस्सी का फंदा।
कम—वि० (फ़ा०) थोड़ा।
कमअसल—वि० दोगला।
कमक़ीमत—वि०(फ़ा०) सस्ता।
कमख़र्च—वि० मितव्ययी।
कमख़ाब—पु०(फ़ा०)एक मोटा रेशमी कपड़ा जिस पर कला-बत्तू का काम होता है।
क़मची—स्त्री० (तु०) टहनी। छड़ी।
कमज़र्फ़—वि०(फ़ा०) कमीना।
कमज़ात—वि० (फ़ा०) ओछा, कमीना।
कमज़ोर२—वि० (फ़ा०) दुर्बल।
कमठ७—पु०कछुआ। साधुओं का तुंबा।
कमठा—पु०धनुष, कमान।
कमतर—वि० (फ़ा०) बहुत-कम।
कमतरीन—पु० (फ़ा०) तुच्छ-सेवक। वि० बहुत कम।
कमती—स्त्री० कमी। वि० कम।
कमन—वि० कामी, पुंश्चल।
कमनसीब२—वि० (फ़ा०) अभागा।
कमना—अक्रि० कम होना।
कमनी, कमनीय—वि०सुन्दर।
कमनैत२—पु० तीरंदाज़।
कमबख़्त२—वि० भाग्यहीन।
कमयाब—वि० (फ़ा०) दुष्प्राप्य।
कमरंग—पु० कमरख।
कमर—स्त्री० (फ़ा०) पीठ के नीचे तथा चूतड़ के ऊपर का भाग।
क़मर—पु० (फ़ा०) चाँद।
कमरकोट—पु० क़िलों के ऊपर की छोटी दीवार।
कमरख—स्त्री० एक पेड़ या उसका फल।
कमरबन्द—पु० (फ़ा०) पेटी। इज़ारबन्द। वि० मुस्तैद।
कमरबस्ता—वि०(फ़ा०)तैयार।
कमरा—पु० कोठरी।
कमरिया—पु० बौना हाथी।
कमरी—स्त्री० छोटा कंबल।
कम व कास्त—वि० (फ़ा०) किसी में कम और किसी में ज़्यादा।
कमर्शल—वि० (अं०) व्या-पारिक।
कमल—पु०पानी में होने वाला एक पौधा, पंकज। जल। मृग। ताँबा। बाहुओं का मध्यस्थान। आकाश।
कमलगट्टा—पु० कमल-बीज।
कमलज—पु० ब्रह्मा।
कमलनयन७—वि० कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाला
कमलनाभ—पु०विष्णु। [डंडी
कमलनाल—स्त्री० कमल की
कमलयोनि—पु० ब्रह्मा।
कमला—स्त्री०लक्ष्मी। नारंगी।
कमलाकर—पु०समुद्र। सरोवर
कमलाक्ष—पु० दे० 'कमल-नयन'। कमल का बीज।
कमलापति—पु० विष्णु।
कमलालया—स्त्री० लक्ष्मी।
कमलासन—पु० ब्रह्मा। पद्मा-सन। [कमल।
कमलिनी—स्त्री० छोटा-
कमलिनी-कुलवल्लभ—पु० सूर्य। [छोटा कंबल।
कमली—पु०ब्रह्मा। स्त्री०
कमवाना—सक्रि० नीचवृत्ति द्वारा पैसा पैदा कराना।
कमसख़ुन—वि० (फ़ा०) मित-भाषी।
कमसमझ२—वि० मूर्ख।
कमसरियट—पु०(अं०) सेना के भंडारे का महकमा।
कमसिन७—वि० (फ़ा०) कम उम्र का।
कमांडर—पु० सेनापति।

कमांडर-इनचीफ़—पु० (अं०) प्रधान सेनापति।
कमाँदार—पु० (फ़ा०) धनुर्धर।
क़माइच—स्त्री० सारंगी बजाने की कमानी।
कमाऊ—वि० कमाने वाला।
कमाची—स्त्री० तीली।
कमान—स्त्री० (फ़ा०) धनुष।
कमानचा—पु० (फ़ा०) छोटा धनुष। छत जो महराबदार हो।
कमाना—सक्रि० पैदा करना।
कमानियाँ—पु० तीरंदाज़।
कमानिया—वि० मेहराबदार।
कमानी—स्त्री० लोहे इत्यादि की लचीली तीली। चमड़े की पेटी। कमान की तरह जो हो। [चातुर्य।
कमाल—पु० (अ०) कौशल,
कमालियत—स्त्री० निपुणता।
कमासुत—वि० कमाऊ।
कमिता१०—वि० कामी।
कमिश्नर—पु० (अं०) माल का एक बड़ा अफ़सर।
कमी—स्त्री० (फ़ा०) न्यूनता।
क़मीज़—स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार का कुरता।
कमीन—स्त्री० (अ०) शिकार की खोज में छिपना तथा छिपने का वह स्थान।
कमीना१—वि० (फ़ा०) नीच।
कमीवेशी—स्त्री० (फ़ा०) कम या अधिक।
कमीशन—पु० (अं०) दस्तूरी।
कमुकंदर—पु० धनुभंजक राम।
कमेटी—स्त्री० (अं०) सभा।
कमेरा७—पु० मज़दूर।
कमेला—पु० वधस्थान।
कमोड—पु० (अं०) पाख़ाना फिरने का गमला।
कमोदिक—पु० गवैया।
कमोदिन—स्त्री० कुमुदिनी।
कमोरी—स्त्री० मटकी।
कम्युनिक—पु० (अं०) सरकारी विज्ञप्ति।
कम्युनिज़्म—पु० (अं०) वह तजवीज़ जिससे तमाम मालियत प्रजा पर बराबर तौर पर तक़सीम हो जावे।
कम्युनिस्ट पु० (अं०) कम्युनिज़्म के सिद्धान्त का माननेवाला।
कम्र—वि० सुन्दर। इच्छुक।
कयपूती—स्त्री० एक सदाबहार पेड़। [आम।
कयरी—स्त्री० बहुत छोटा
कया—स्त्री० काया, शरीर।
क़याफ़ा—पु० (अ०) शक्ल।
क़याफ़ा शिनास२—वि० (अ० फ़०) शक्ल देखकर मनोवृत्ति का जानने वाला।
क़याम—पु० (अ०) ठहराव।
क़यामत—स्त्री० (अ०) प्रलय। विपत्ति। हलचल।
क़यास—पु० (अ०) अनुमान।
क़यासी—वि० (अ०) कल्पित।
करंक—पु० मस्तक। अस्थिपंजर।
करंज—पु० कजा। मुर्ग़ा।
करंजा—वि० भूरी आखों वाला। पु० एक पेड़।
करंड—पु० शहद का छत्ता। तलवार। बाँस की टोकरी। हथियार पैनाने का पत्थर।
कर—पु० हाथ। सूँड़। किरण। महसूल। प्रत्य० का।
करक—पु० कमंडलु। ठठरी। अनार। स्त्री० पीड़ा।
करकच—पु० समुद्री नमक।
करकट—पु० कूड़ा।
करकना—अक्रि० तड़कना। चटकना, कसकना।
करकर—पु० समुद्री नमक।
करकरा—वि० खुरखुरा।
करकराहट—स्त्री० खुरखुराहट। कड़ापन।
करका—पु० ओला। [आना।
करखना—अक्रि० जोश में
करखा—पु० बढ़ावा। कालिख।
करख़्त—वि० (फ़ा०) कड़ा, सख़्त।
करगत—वि० हस्तगत, प्राप्त।
करगता—स्त्री० करधनी।
करगस—पु० तीर। गिद्ध।
करगहना—पु० भरेठा, छज्जा।
करगी—स्त्री० बाढ़।
करग्रह—पु० ब्याह। [यंत्र।
करघा—पु० कपड़ा बिनने का
करचंग—पु० डफ़। [सी गाय।
करछैयाँ—स्त्री० कुछ काली
करछुलद—पु० बड़ा चम्मच।
करज—पु० नख। उँगली।
करट७—पु० कौआ। [मंडली।
करटावली—स्त्री० कौओं की
करटी—पु० हाथी। राँगा।
करण—पु० तृतीयकारक। हथियार। हेतु।
करणीय—वि० करने योग्य।
करतबद—पु० काम।

करतरी—स्त्री० छुरी । कैंची ।
करतल—पु० हथेली ।
करतार—पु० ईश्वर । मँजीरा ।
करतारी—स्त्री० थपोड़ी ।
करतूत—स्त्री० कर्म । हुनर ।
करतोया—स्त्री० पार्वती जी के विवाह में शिवजी के हाथ से गिरे जल से उत्पन्न नदी ।
करद—वि० करदाता । अधीन ।
करदा—वि० (फ़ा०) किया-हुआ । (हिं०) कटौती ।
करधनी—स्त्री० कमर का आभूषण ।
करधर—पु० बादल । [गहना ।
करनफूल—पु० कान का एक-
क़रनबीक़—पु० (अ०) अर्क़ खींचने का भवका ।
करना—पु० सुदर्शन का पौधा । एक बड़ा नीबू । १ सक्रि० संपादित करना ।
करनाई—स्त्री० तुरही ।
करनाटकी—पु० करनाटक-देश का रहने वाला । जादूगर । कलाबाज़ ।
करनाल—पु० नरसिंहा बाजा । बड़ा ढोल । तोप ।
करनी—स्त्री० करतूत ।
करपत्र—पु० आरा ।
करपर—स्त्री० खोपड़ी । वि० कञ्जूस । [पकौड़ी ।
करपरी—स्त्री० पिट्ठी की-
करपल्लव—पु० उँगली ।
करपल्लवी—स्त्री० एक विद्या-जो उँगलियों के इशारे से प्रकट की जाती है ।
करपाल—पु० तलवार ।
करपालिका—स्त्री० खाँडा, गुप्ती (तलवार) ।
करपीड़न—पु० विवाह ।
करपृष्ठ—पु० हथेली के पीछे का भाग ।
करबला—पु० (अ०) ताज़िया-दफ़नाने का स्थान । अरब का वह स्थान जहाँ हज़रत अली के छोटे लड़के हुसेन दफ़नाये गये थे ।
करबालिका—स्त्री० छुरी ।
करफूल—पु० दौना ।
करबुर—पु० दे० 'कर्बुर' ।
करबूस—पु० घोड़े की ज़ीन में टँकी हुई वह रस्सी जिसमें हथियार लटकाये जाते हैं ।
करभ७—पु० करपृष्ठ । ऊँट या हाथी का बच्चा । कटि ।
करभीर—पु० सिंह ।
करभूषण—पु० कंकण, कड़ा ।
करभोरु—वि० स्त्री० सूँड़ की तरह जंघा वाली ।
करम—पु० (अ०) कृपा । (हिं०) कार्य । भाग्य ।
करमकल्ला—पु० पातगोभी ।
करमचंद—पु० भाग्य, कर्म ।
करमट्ठार२—वि० कंजूस ।
करमठ—वि० कर्मकांडी । कार्यशील ।
करमर्दक—पु० करौंदा ।
करमाली—पु० सूर्य ।
करमुहाँ—वि० कलंकी ।
कररना—अक्रि० कर्कश शब्द-करना । चरमरा कर टूटना ।
करराल—स्त्री० धनुःटकार ।
कररी—स्त्री० बन तुलसी ।
कररुह—पु० नख ।
करल—पु० कड़ाही ।
करला७—पु० कोमल पत्ता ।
करवट—पु० बाज़ू के बल । सोना ।
करवत—पु० आरा ।
करवर—स्त्री० विपत्ति । तलवार ।
करवरना—अक्रि० चहकना ।
करवा—पु० टोंटीदार बर्त्तन ।
करवाचौथ—स्त्री० कार्त्तिक-कृष्ण चौथ ।
करवानक—पु० गौरवा पक्षी
करवाल७—पु० नख ।
करविक—पु० एक पक्षी जो हिमालय में रहता है ।
करवीर—पु० कनेर का पेड़ । तलवार, खड्ग ।
करवील—पु० करील-वृक्ष ।
करशाखा—स्त्री० उँगली ।
करशाला—स्त्री० चुंगीघर ।
करशीकर—पु० हाथी की सूँड़ से निकला हुआ जल-कण ।
करश्मा—पु० (फ़ा०) चमत्कार ।
करष—पु० मनमोटाव । खिंचाव । [सुखाना ।
करषना—सक्रि० खींचना ।
करसायर—पु० कालामृग ।
करसी—स्त्री० कंडा । कंडे की आग । [कली ।
करह—पु० ऊँट । पुष्प की-
करहाट—पु० कमल की जड़ ।

करौंकुल—पु० क्रौंच पक्षी।
करा—स्त्री० दे० 'कला'।
कराई—स्त्री० कालापन। अरहर आदि की भूसी।
करात—पु० चार जौ की तौल।
क़राबत२—स्त्री० (अ०) समीपता। रिश्ता। [रिश्तेदार।
क़राबतदार२—पु० (अ०)
क़राबा—पु० (अ०) अर्क़ रखने का शीशे का बड़ा पात्र।
क़राबीन—स्त्री० (तु०) एक प्रकार की बंदूक़।
करामत—स्त्री०(अ०)बड़प्पन।
करामात८—स्त्री० (अ०) चमत्कार। [किनारा।
करार—पु० नदी का ऊँचा-
क़रार—पु० (अ०) वादा।
करारना—अक्रि०कर्कश शब्द निकालना।
करारा—पु० नदी का ऊँचा-किनारा। टीला। वि० सख्त। भयानक।
क़रारी—वि०(अ०) निश्चित-किया हुआ।
कराल ७—वि० डरावना।
कराव—पु० एक प्रकार का विवाह।
क़रावल—पु० (तु०) बंदूक़ से शिकार करने वाला। घुड़सवार।
करावली—स्त्री० किरण-समूह।
कराहना—अक्रि० दुःख सूचक-शब्द मुँह से निकालना।
कराहियत—स्त्री० (अ०) अप्रसन्नता। अरुचि।
करिंद—पु० उत्तम हाथी।

करि५—पु० हाथी।
करिखा—स्त्री० कालौंस।
करिण७—पु० हाथी।
करिया—पु० पतवार। मल्लाह। वि० काला।
करियाई—स्त्री० कालिख।
करियारो—स्त्री० लगाम।
करिल—पु० कोंपल। वि० काला।
करिवदन—पु० गणेश।
करिशावक—पु० हाथी का बच्चा।
करिष्णु—वि० करणशील।
करिष्यमाण—वि० यत्नवान्।
करिहाँ, करिहैयाँ—स्त्री० कमर।
करी—पु० हाथी। स्त्री० छत की कड़ी। कली।
क़रीन—वि० (अ०) निकट।
करीना—पु० केराना।
क़रीना—पु० (अ०) क्रम, ढंग। [पास, लगभग।
क़रीब—क्रि० वि० (अ०)
करीम—वि० (अ०) कृपालु। पु० ईश्वर। [झाड़ी।
करीर, करील—पु० टेंटी की-
करीश—पु० गजराज।
करीष—पु० सूखा गोबर।
करीह—वि० (अ०) घृणित।
करीहमंज़र—यौ० (अ०) बदशक्ल। [वि० कड़वा।
करुआ—पु० टोंटीदार लोटा।
करुआना—अक्रि० दुखना। कड़ुआ लगना।
करुखी—स्त्री० कनखी।
करुण—वि० दयालु।
करुणा—स्त्री० दया।

करुणानिधि, करुणानिधान—वि० अधिक दयालु।
करुणामय—वि० दयावान्।
करुणार्द्र—वि० दयालु, कृपालु।
करुर—वि० कड़ुआ।
करुवारि—स्त्री० पतवार।
करूला—पु० हाथ का कङ्कण।
करेंसी—पु० (अं०) जहाँ से सिक्के जारी होते हैं।
करेजा—पु० कलेजा, हृदय।
करेणु—पु० हाथी।
करेणुका—स्त्री० हथिनी।
करेथुवा—स्त्री० साग विशेष।
करेमू—पु० एक साग-वाली-घास।
करेर—वि० कठोर।
करेला—पु० एक तरकारी।
करेव—पु० एक रेशमी वस्त्र।
करैत—पु०एक काला ज़हरीला साँप। [काली मिट्टी।
करैल—स्त्री० एक तरह की-
करोंट—पु० करवट।
करोटि, करोटी—स्त्री० करवट। खोपड़ी।
करोड़, करोर—वि०सौ लाख।
करोड़ी—पु० रोकड़िया।
करोदना—सक्रि० खुरचना।
करोला—पु० करवा, गड़ुवा।
करौंछा७—वि० कुछ काला।
करौंदा—पु० एक कँटीली-झाड़ी तथा उसके फल।
करौंदिया—वि० करौंदा के रंग वाला।
करौत ७—पु० आरा।
करौला—पु० शिकारी।

करौली—स्त्री० (तु०) एक प्रकार की छुरी। शिकार का पीछा करना।
कर्कंधु—पु० बेरवृक्ष।
कर्क—पु० केंकड़ा। अग्नि। दर्पण। एक राशि।
कर्कट—पु० कर्कराशि। लौकी। केंकड़ा।
कर्कटक—पु० केकड़ा।
कर्कटी—स्त्री० ककड़ी। कछुई। साँप।
कर्करी—स्त्री० कठौती।
कर्कश३—पु० ऊख। खड्ग। वि० कठोर।
कर्कशा—स्त्री० लड़ाकी स्त्री।
कर्कारु—पु० कुम्हड़ा, गङ्गा-फल, पेठा।
कर्कोट—पु० बेल का पेड़।
कर्चूर—पु० सोना। कचूर।
क़र्ज़—पु० (अ०) ऋण।
क़र्ज़ख़ाह—वि० (फ़ा०) क़र्ज़ का इच्छुक। [वाला।
कर्ज़दार२—वि० ऋण लेने-
कर्ण—पु० कान। पतवार। कुंती का पुत्र। समकोण-त्रिभुज में सबसे बड़ी रेखा।
कर्णकटु—वि० सुनने में अप्रिय।
कर्णकुहर—पु० कान का छेद।
कर्णगूथ—पु० कान का मैल।
कर्णजलौका—स्त्री० गोजर, कँतर। [पतवार।
कर्णधार—पु० मल्लाह।
कर्णनाद—पु० कान में सुनाई देता हुआ शब्द। [बाली।
कर्णपाली—स्त्री० कान की-
कर्णमनोहर—वि० सुनने में मधुर। [रोग।
कर्णमूल—पु० एक तरह का-
कर्णवेष्टन—पु० कुंडल।
कर्णिका—स्त्री० मध्यमा-उँगली। क़लम। करन-फूल। [का पेड़।
कर्णिकार—पु० कनकचंपा-
कर्णी—पु० बाण।
कर्णीरथ—पु० पर्दादार डोला।
कर्णीसुत—पु० कंस।
कर्णेजप—पु० चुग़लख़ोर।
कर्त्तन—पु० काटना।
कर्त्तनी—स्त्री० क़ैंची।
कर्त्तरिका—स्त्री० क़ैंची।
कर्त्तरी—स्त्री० क़ैंची। कटारी।
कर्त्तव्य३—पु० काम। ड्यूटी। वि० करने योग्य।
कर्त्तव्यमूढ़३—वि० जिसे अपना कर्त्तव्य न सुझाई दे।
कर्त्ता१०—पु० करने वाला। ईश्वर। [वाला।
कर्त्तार—पु० ईश्वर। बनाने-
कर्तृक—वि० किया हुआ।
कर्तृत्व—पु० कर्त्ता का भाव।
कर्तृवाचक—वि० कर्त्ता का बोध कराने वाला। [पाप।
कर्द, कर्दम—पु० कीचड़।
कर्नल—पु० (अं०) एक फ़ौजी आफ़िसर। [भेद।
कर्नेता—पु० घोड़ों का एक-
कर्पट—पु० वस्त्र। गूदड़।
कर्पटी—पु० भिखारी।
कर्पण—पु० एक शस्त्र।
कर्पर८—पु० खप्पर।
कर्पास—पु० कपास।
कर्पूर—पु० कपूर।
कर्फर—पु० दर्पण।
कर्बुर—पु० सोना। धतूरा। राक्षस। वि० चितकबरा।
कर्मंदी—पु० संन्यासी।
कर्म—पु० काम। द्वितीय-कारक।
कर्मकर—पु० नौकर-चाकर।
कर्मकांड८—पु० धर्म-संबंधी-कृत्य। [कार। लुहार।
कर्मकार—पु० सेवक। सुवर्ण-
कर्मक्षम—वि० कार्य में समर्थ।
कर्मक्षेत्र—पु० कार्य करने का स्थान। [कारिंदा।
कर्मचारी—पु० कार्यकर्त्ता,
कर्मठ—वि० काम में चतुर। कार्यशील। कर्मकांडी
कर्मण्य३—वि० उद्योगी। कार्यदक्ष।
कर्मण्या—स्त्री० मज़दूरी।
कर्मधारय—पु० समानाधि-करण विशेष्य तथा विशेषण पदों का समास।
कर्मनाशा—स्त्री० एक नदी।
कर्मनिष्ठ—वि० क्रियावान्।
कर्मभूमि—स्त्री० आर्यावर्त्त।
कर्मभोग—पु० प्रारब्ध का फल।
कर्ममास—पु० सावनमास।
कर्मयुग—पु० काम करने का ज़माना।
कर्मरंग—पु० कमरख।
कर्मरेख—स्त्री० भाग्य-रेखा।
कर्मवाच्य—स्त्री० वह क्रिया जिसमें कर्म प्रधान हो।
कर्मवाद८—पु० कर्मयोग।
कर्मविपाक—पु० पूर्वजन्म के

कर्मों का फल ।
कर्मवृत्त—पु० सुकर्म ।
क़र्मशील—वि० पुरुषार्थी, उत्साही ।
कर्मशूर—वि० उद्योगी, साहसी।
कर्मसंन्यास—पु० कर्म के फल का त्याग ।
कर्मसचिव—पु० मंत्री से छोटा अन्य मुसाहिब ।
कर्मसाक्षी—पु० सूर्य,चन्द्र आदि देवता जो प्राणियों के कामों को देखते रहते हैं।
कर्मस्थान—पु० जन्म-कुंडली का दसवाँ स्थान ।
कर्महीन ४—त्रि० अभागा ।
कर्मा—वि० कर्म करनेवाला ।
कर्मार—पु० बाँस । लुहार ।
कर्मिष्ठ—वि०कर्मकरनेवाला ।
कर्मीर—पु० नारंगी रंग ।
कर्मेंद्रिय—स्त्री० काम करने वाली इन्द्रियाँ—हाथ, पैर आदि ।
कर्र—पु० (अ०) वैभव ।
कर्रा—वि० कड़ा ।पु० सूत-की कताई ।
कर्रार—वि० (अ०) विजयी ।
कर्ष—पु० सोलह माशे की तौल । खिंचाव । खेती ।
कर्षक—पु० खींचने वाला । किसान ।[जोतना । टान ।
कर्षण६—पु० खींचना ।
कर्षना—सक्रि० खींचना ।
कर्षफल—पु० बहेड़ा ।
कर्षा—स्त्री० उत्साह । ईर्षा, विरोध । क्रोध ।
कर्षिणी—स्त्री० लगाम ।
कर्षित—वि० खींचा हुआ ।
कर्ष्य—वि०खींचने या जोतने-योग्य ।
कलंक—पु० दोष, दाग़ ।
कलंकित—वि० लांछित ।
कलंकी५—वि० दोषी । पु० कल्कि अवतार ।
कलंगी—स्त्री० शिरोभूषण । मुकुट में लगे हुए पंख ।
क़लंदर—पु० (अ०) मदारी ।
कलंब—पु० वाण। शाक की डंडी । [की नाड़ी ।
कलंबिका—स्त्री० गले के पीछे-
कल—पु० मधुर ध्वनि । वि० सुन्दर । क्रि० वि० आने वाला या बीता हुआ दिन ।
क़लई—स्त्री० (अ०)सफ़ेदी । चूना । मुलम्मा । राँगा । रहस्य ।
क़लईगर—वि० क़लई करने-वाला । [कोकिल । हंस ।
कलकंठ ७—पु० कबूतर ।
कलकंठता—स्त्री० मीठी-बोली ।
क़लक़—पु० (अ०) बेचैनी ।
कलकना—अक्रि० चिल्लाना ।
कलकल—पु०जल गिरने का शब्द । कोलाहल ।
कलकानि—स्त्री० परेशानी ।
कलक्टर—पु० (अं०) ज़िले का प्रबंधक हाकिम ।
कलक्टरी—स्त्री० (अं०) ज़िले की कचहरी जहाँ माल के मुक़दमे होते हैं ।
कलग़ी—स्त्री० (तु०) दे० 'कलंगी' ।
कलछा७—स्त्री० बड़ी डाँड़ी का चम्मच । [वाला ।
कलजिब्भा—वि०बुरा चेतने-
कलत्र—पु० स्त्री, पत्नी ।
कलदार—वि० कलवाला । पु० रुपया ।
कलधूत—पु० चाँदी ।
कलधौत—पु० चाँदी । सोना । मधुरध्वनि ।
कलन—पु०आचरण।गिनना। गणित की क्रिया । संबंध । कौर । ग्रहण । गर्भाधान की प्रथम रात्रि में होने वाला वह विकार जो वीर्य और शोणित के संयोग से होता है ।
कलप—पु० ख़िज़ाब । माँड़ी । चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की अवधि ।
कलपना१—अक्रि० विलाप-करना । सक्रि० काटना ।
कलफ़—पु० (अ०) माँड़ी । चेहरे की झाँई । [ग़ुल ।
कलबल—पु० उपाय । शोर-
कलबूत—पु० ढाँचा ।
कलभ—पु०हाथी का बच्चा।
कलम, क़लम—स्त्री० (अ०) लेखनी । चित्र भरने की कूँची । पौधे की टहनी । काटना। [काकार्य।नक्क़ाशी।
क़लमकारी—स्त्री० क़लम
कलमख—पु० पाप ।
क़लमतराश—पु० चाक़ू ।
क़लमदान—पु० क़लम, दावात रखने का बक्स ।
कलमना—सक्रि० काटना ।

कलमलाना—अक्रि० कुल-बुलाना। [मूलमंत्र। वाक्य।
कलमा—पु० इसलाम का-
क़लमी—वि० लिखित। क़लम लगाने से उत्पन्न।
कलमुहाँ७—वि० कलंकिन।
कलरव—पु० मधुर-शब्द।
कलरौ—पु० कलरव।
कलवार—पु० एक जाति।
कलविक—पु० तरबूज़। गौरैया। सफ़ेद चँवर।
कलश७—पु० घड़ा। मंदिर-आदि का शिखर।
कलहंस—पु०राजहंश। पर-मात्मा। बत्तख।
कलह—पु० लड़ाई-झगड़ा।
कलहकारी५, कलही—वि० झगड़ालू।
कलहप्रिय—वि० झगड़ालू।
कलहांतरिता—स्त्री० वह स्त्री जो पति का अपमान कर पीछे पछताती है।
कलहारी—वि०स्त्री०लड़ाकी।
कलाँ—वि० (फ़ा०) बड़ा।
कलांतार—पु० ब्याज, सूद।
कला—स्त्री० अंश। हुनर। शोभा। चन्द्र का सोलहवाँ तथा सूर्य का बारहवाँ भाग। बहाना। तेज, ज्योति। शिव। नौका। महिमा। छन्दःशास्त्र में 'मात्रा'। वृद्धि। जिह्वा। स्त्री का राज। खेल। छल। युक्ति। कलैया। नटों की कसरत। यंत्र।
कलाई—स्त्री० पहुँचा।
कलाक़ंद—पु० बरफ़ी।
कलाकर—पु० चन्द्रमा।
कलाकार—वि० हुनरमंद। आर्टिस्ट (अं०)।
कलाकुल—पु० विष। [शिल्प।
कलाकौशल—पु० कारीगरी,
कलाद—पु० सुनार।
कलादा—पु० हाथी की गर्दन पर महावत के बैठने का स्थान।
कलाधर—पु० चंद्रमा। शिव।
कलाना—सक्रि० भूनना।
कलानिधि—पु० चन्द्रमा।
कलाप—पु० समूह। दुःख। तरकश। बाण। मोर की पूँछ। व्यापार।
कलापक—पु०मोर। समूह।
कलापिनी—स्त्री० मोरनी। रात्रि। [कोकिल।
कलापी५—पु० मोर।
कलाबत्तू—पु० रेशम के साथ बटा हुआ सोने-चाँदी का तार।
कलाबाज़२—पु०(फ़ा०)नट।
कलाबाज़ी—स्त्री० ढेकली। कलैया। नट का खेल।
कलाभृत्—पु० चन्द्रमा।
कलाम—पु० (अ०) वचन, वाक्य।
कलामत—पु० गवैया।
कलामुख—पु० चन्द्रमा।
कलाय—पु० मटर।
कलार, कलाल७—पु० मद्य-बेचने वाला।
कलावंत—पु० गवैया। नट।
कलावा—पु० (फ़ा०) सूत का लच्छा। हाथी की गर्दन।
कलाविक—पु० मुर्ग़ा।
कलावान्१२—वि० हुनरमंद। शोभाशाली।
कलिंग—पु० एक चिड़िया। तरबूज़। उड़ीसा-प्रदेश।
कलिंद—पु० बहेड़ा। सूर्य। पर्वत विशेष जहाँ से यमुना निकलती हैं। तरबूज़।
कलिंदजा—स्त्री०यमुना नदी।
कलि—पु० कलह। पाप। कलियुग। युद्ध। स्त्री० संख्या। वि० काला।
कलिका—स्त्री०कली। मुहूर्त। अंश। मँगरैल।
कलिकान—स्त्री० परेशान।
कलिकाल—पु० कलियुग।
कलित—वि० सुन्दर। विदित।
कलिद्रुम—पु० बहेड़ा।
कलिमल—पु० पाप।
क़लिया—पु० (अ०) शोरबे-दार मांस।
कलियान—पु०(फ़ा०) एक प्रकार का हुक्क़ा।
कलियारी—स्त्री० एक वृक्ष।
कलियुग—पु० चौथा युग जिसकी अवस्था ४ लाख ३२ हज़ार वर्ष की है।
कलियुगाद्या—स्त्री० माघी पूर्णिमा (इसी तिथि से कलियुग का आरंभ हुआ था)।
कलियुगी५—वि० कुप्रवृत्ति-वाला। [पु० ढेर।
कलिल—वि०घना, मिश्रित।
कलींदा—पु० तरबूज़।

कली—स्त्री० बिना खिला-फूल । चूने की क़लई ।
क़लीच–पु० (फ़ा०) तलवार ।
कलीद—स्त्री० (फ़ा०) कुंजी ।
कलीम—वि० (अ०) वक्ता ।
कलीरा—स्त्री० कौड़ियों और छुहारों की माला ।
क़लील—वि० (अ०) थोड़ा ।
कलीसा—पु० (फ़ा०) गिरजाघर ।
कलीसिया—पु० ईसाइयों तथा यहूदियों की धर्म-मंडली । [दोष ।
कलुष—पु० मलीनता, पाप,
कलुषाई—स्त्री० मलीनता ।
कलुषित—वि० दूषित ।
कलुषिता—स्त्री०अपवित्रता ।
कलुषी—वि०स्त्री० पापिना । गंदी ।
कलूटा७—वि० काला, कुरूप ।
कलूना—पु० कुल्ला ।
कलेऊ—पु० नाश्ता ।
कलेकले—क्रि० वि० धीरे-धीरे ।
कलेजा–पु० हृदय । साहस ।
कलेवर—पु० शरीर ।
कलेवा—पु० जलपान ।
कलैंडर—पु० (अं०) तिथिपत्र ।
कलैया—स्त्री० कलाबाज़ी ।
कलोर—स्त्री०बिना ब्याही-गाय । बछड़ा ।
कलोल–पु० आमोद-प्रमोद । क्रीड़ा । तरंग । [करना ।
कलोलना—अक्रि० क्रीड़ा-
कलोलिनी—स्त्री० नदी ।
कलौंजी—स्त्री० मँगरैल ।
कल्क—पु० काढ़ा । लुकदी, पीठी । गूदा । मैल । बहेड़ा ।
कल्कि—पु० विष्णु का एक अवतार जो संभल में होगा ।
कल्प–पु० ब्रह्मा का एक दिन जिसमें ४,३२,००,००,००० वर्ष होते हैं । प्रलय । वेद-विहित-विधान । न्याय । वि० समान ।
कल्पक—पु० नाई । [रचना ।
कल्पना—स्त्री० अनुमान ।
कल्पनी—स्त्री० कैंची ।
कल्पवृक्ष, कल्पसाखी—पु० एक देववृक्ष जो मनोकामना का देने वाला है ।
कल्पवास—पु० माघ महीने भर गंगातट पर संयम से रहना ।
कल्पसूत्र—पु० ग्रन्थ विशेष जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान है ।
कल्पांत—पु० प्रलय ।
कल्पित—वि० फ़र्ज़ी, नक़ली ।
क़ल्ब—पु० (फा०) दिल । किसी वस्तु का मध्यभाग । बुद्धि । खोटा सोना या चाँदी ।
क़ल्बसाज़ २—पु० जाली-सिक्का बनाने वाला ।
क़ल्बी—वि० (अ०) नकली । हार्दिक ।
कल्मष—पु० पाप, मल ।
कल्माष—वि० चितकबरा ।
कल्य—पु० सबेरा । शराब ।
कल्यपाल—पु० कलवार ।
कल्या—स्त्री० शुभवाणी ।
कल्याण—पु० शुभ, भलाई ।
कल्याणी—वि०स्त्री० सुन्दरी ।
कल्योना—पु० कलेवा ।
कल्ल—वि० बधिर, बहरा ।
कल्लर—पु० ऊसर-भूमि ।
क़ल्लाँच—पु०निर्धन । गुंडा ।
कल्ला—पु० (फ़ा०) जबड़ा । अंकुर ।
कल्लातोड़—वि० मुँहतोड़ ।
कल्लादराज़ २—वि० मुँह-ज़ोर । [दर्द होना ।
कल्लाना—अक्रि० चोट का-
क़ल्लाश—पु०(तु०)निर्धन ।
कल्लोल—पु०तरंग । क्रीड़ा ।
कल्लोलिनी—स्त्री० लहर-वाली नदी । [नोनी मिट्टी ।
कल्हर—वि० बंजर । पु०
कल्हार—पु० पुष्प विशेष ।
कल्हारना—सक्रि० कड़ाह-में तलना । कराहना ।
कवक—पु० ग्रास ।
कवचन्द–पु० जिरह-बख्तर ।
कवन—सर्व० कौन ।
कवयित्री—स्त्री० स्त्री कवि ।
कवर—पु० (अं०) पुस्तक का टाइटल । (हिं०) कौर ।
कवरना—सक्रि० सेंकना ।
कवरी—स्त्री० चोटी, जूड़ा ।
कवर्ग—पु० 'क' से 'ङ' तक के अक्षर ।
कवल—पु० ग्रास ।
कवलिका—स्त्री० फोड़े पर बाँधी जाने वाली कपड़े की पट्टी ।
कवलित—वि०खाया हुआ ।

कवलीकृत—वि० भक्षित ।
कवाम—पु० चाशनी ।
क़वायद—स्त्री० (अ०)नियम। व्याकरण । युद्ध कला का अभ्यास । बहु०'क़ायदा' का
कवि—पु० कविता करने-वाला । शुक्र । पंडित। सूर्य।
कविका—स्त्री० लगाम ।
कविज्येष्ठ—पु० वाल्मीकि ।
कविता—स्त्री० शायरी ।
कवित्त—पु० ३१ अक्षरों का एक वृत्त ।
कवित्व—पु० काव्य रचना ।
कविराज—पु० श्रेष्ठ कवि । कविराय । भाट ।
कविलास—पु० कैलास । स्वर्ग । [शाली ।
क़वी—वि० (अ०) शक्ति-
कवीश्वर—पु० बड़ा कवि ।
कवेला—पु०कौए का बच्चा ।
कवोष्ण—वि० कुनकुना ।
कव्य—पु० पितरों को दिया जाने वाला अन्न ।
क़व्वाल२—वि० (अ०) क़व्वाली गाने वाला ।
कश४—पु० चाबुक, कोड़ा । खिंचाव ।
क़श्क़ा—पु० (फ़ा०) टीका, तिलक । [तानो ।
कशमकश—स्त्री०(फ़ा०)खींचा-
कशाकश—स्त्री० कशमकश ।
कशाघात—पु०कोड़े की मार ।
कशार्ह—वि० ताडना के योग्य । [आसन ।
कशिपु—पु०तकिया। बिछौना।
कशिश—स्त्री० (फ़ा०) आक-र्षण। खिंचाव । [मनमुटाव ।
कशीदगी—स्त्री० (फ़ा०)
कशीदा—पु० (फ़ा०) बेल-बूटे का काम । [हड्डी ।
कशेरुका—स्त्री० रीढ़ की-
कश्चित्—वि० कोई ।
कश्ती—स्त्री० (फ़ा०) दे० 'किश्ती' ।
कश्मल—पु० मोह, मूर्च्छा ।
कश्मीरज—पु० केसर ।
कश्य—पु० मदिरा । घोड़े का तंग । [ऋषि ।
कश्यप—पु० कछुआ । एक-
कष, कषण—पु० कसौटी, सान ।
कषा—स्त्री० चाबुक ।
कषाय—वि० कसैला । गेरू के रंग का ।
कष्ट—पु० पीड़ा, दुःख ।
कष्टकल्पना—स्त्री० कष्ट साध्य-युक्ति । [से करने योग्य ।
कष्टसाध्य—वि० कठिनता-
कस—पु० बल । परख । क्रि० वि० कैसे । (फ़ा०) व्यक्ति । सहायक ।
कसक—स्त्री० थोड़ा दर्द ।
कसना—अक्रि० खटकना, तकलीफ़ होना ।
कसकुट—पु० काँसा ।
कसना—सक्रि० दृढ़ता से बाँधना । [अँगिया ।
कसनी—स्त्री०रस्सी । कसौटी-
कसब—पु०परिश्रम । वेश्या-कर्म ।
कसबल—पु० ताक़त, साहस ।
क़सबा—पु० बड़ा गाँव ।
क़सबाती—वि० क़सबे का-निवासी ।
कसबी—स्त्री०(अ०) वेश्या ।
क़सम—स्त्री०(अ०) शपथ ।
कसमसाना—अक्रि०खलबली-होना [बुलाहट ।
कसमसाहट—स्त्री० कुल-
कसर—स्त्री०(अ०) कमी । द्वेष । घाटा । दोष ।
कसरत—स्त्री० (अ०) व्यायाम । [बड़ा बर्तन ।
कसहँड़ा—पु० काँसे का-
क़साई—पु० (अ०) बधिक ।
कसाना—सक्रि० कसैला हो जाना । कसवाना ।
कसाफ़त—स्त्री० (अ०) मोटाई । गंदगी ।
कसार—पु० पँजीरी, चूर्ण ।
कसाला—पु० दुःख, कष्ट ।
कसाव—पु० तनाव । कसैला-पन । कसाई । [रोकना ।
कसीटना—सक्रि० कसना ।
कसीदा—पु० दे०'कशीदा' ।
क़सीदा—पु० (अ०) उर्दू या फ़ारसी की एक तरह की कविता । [गंदा ।
कसीफ़—वि० (अ०) मोटा ।
क़सीर—वि० (अ०) भून-करने वाला । [धिक ।
कसीर—वि० (अ०) अत्य-
कसीर उल-औलाद—वि० (अ०) बहुत संतान वाला ।
कसीस—स्त्री० निर्दयता । कोशिश । एक लौहजन्य-पदार्थ ।

कसूँभा७—वि० कुसुम के रंग का।
कसून—पु० सुलेमानी घोड़ा।
क़सूर—पु० (अ०) ख़ता, दोष।
क़सूरमंद—वि० अपराधी।
क़सूरवार—वि० दोषी।
कसेरा—पु० ठठेरा। [जड़।
कसेरू—पु० मोथे की गठीली-
कसैली—स्त्री० सुपारी। कसैली-वस्तु।
कसोरा—पु० कटोरा, प्याला।
कसौंदा—पु० एक फल।
कसौटी—स्त्री० सोना परखने क पत्थर। जाँच।
कस्टमड्यूटी—स्त्री० (अं०) चुङ्गी, कर।
कस्त—पु० इरादा।
कस्तूरा—पु० कस्तूरी-मृग।
कस्तूरिका—स्त्री० कस्तूरी।
कस्तूरी—स्त्री० एक सुगंधित-द्रव्य जो पुष्कलक नामक मृग की नाभि से निकलता है।
क़स्द—पु० (अ०) इरादा।
क़स्दन्—क्रि० वि० (अ०) इरादे से।
कस्ब—पु० (अ०) पैदा करना। हुनर। पेशा। वेश्यावृत्ति।
क़स्बा—पु० (अ०) बड़ा गाँव।
क़स्बाती—वि० (अ०) क़स्बे का निवासी। [खाकर।
क़स्मियाँ—क्रि० वि० क़सम-
क़स्साब—पु० (अ०) क़साई।
क़स्साबा—पु० (अ०) औरतों के सिर पर बांधने का रूमाल।
क़स्साम—वि० (अ०) क़सम खाने वाला। तक़सीम करने वाला।
कहँ—क्रि०वि० कहाँ। प्रत्य० को, के लिए। [गंगा।
कहकशाँ—स्त्री० (फ़ा०) आकाश-
क़हक़हा—पु० (फ़ा०) ज़ोर की हँसी। [मिला गारा।
कहगिल—पु० (फ़ा०) भूसा-
क़हत—पु० (अ०) दुर्भिक्ष।
क़हतसाली—स्त्री० (अ०) दुर्भिक्ष। [कथा।
कहतूती—स्त्री० कहावत।
कहन—स्त्री० कथन।
कहना—स० क्रि० वर्णन करना।
कहनि—स्त्री० कथन।
कहनूत—स्त्री० कहावत।
क़हर—पु० (अ०) विपत्ति।
कहरना—अ० क्रि० कराहना।
कहरवा—पु० पाँच मात्राओं की एक ताल। वह गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है।
कहरी—स्त्री० क़हर ढाने वाला।
कहरुवा—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का गोंद जो कपड़े पर रगड़ने से तिनका को चुंबक की भाँति पकड़ लेता है। [कष्ट।
कहल—पु० उमस, गर्मी।
कहलना९—अ० क्रि० कसमसाना। अकुलाना।
कहवाँ, कहाँ—क्रि० वि० किस स्थान पर।
क़हवा—पु० एक पेड़ का बीज, काफ़ी।
कहवैया—वि० कहने वाला।
कहा—स्त्री० कथा। क्रि० वि० कैसे। सर्व० क्या। वि० कौन। पु० उपदेश, कथन।
कहाकही, कहासुनी—स्त्री० वादविवाद, झगड़ा।
कहानी—स्त्री० क़िस्सा।
कहार—पु० धीवर।
कहारा—पु० टोकरा।
कहावत—स्त्री० मसल।
कहासुना—पु० भूलचूक।
कहीं, कहुँ, कहूँ—क्रि० वि० किस स्थान पर। संभवतः।
कही—स्त्री० कथन।
कहुला—वि० काला। [कोंईं।
कह्लार—पु० सफ़ेद कमल,
कह्ल—पु० बगला।
काँइयाँ—वि० धूर्त, चालाक।
काँकर७—पु० कङ्कड़।
कांक्षा६—स्त्री० इच्छा।
कांक्षित—वि० इच्छित।
कांक्षी५—वि० चाहनेवाला।
काँख—स्त्री० बग़ल।
काँखना—अ० क्रि० कराहना।
काँखासोती—स्त्री० कन्धे पर दुपट्टा डालने का एक ढङ्ग।
काँगड़ी—स्त्री० एक प्रकार की गले में लटकाने की छोटी अँगीठी।
काँगही—स्त्री० कङ्घी।
काँकुरा—पु० कँगूरा।
काँगनी—स्त्री० धूनी। अँगीठी।
काँग्रेस—स्त्री० (अं०) राष्ट्रीय-महासभा।

काँच—पु०शीशा। स्त्री०काछ।
कांचन—पु०सोना। धतूरा।
कांचनी—स्त्री० हल्दी।
काँचली—स्त्री० साँप की केंचुल। चोली।
काँचा—वि० कच्चा।
काँची—स्त्री०करधनी। गोटा।
कांचीपद—पु० नितम्ब।
काँचुरी, काँचुली—स्त्री० केंचुल। [पहनना।
काँछना—सक्रि० सँवारना।
काँछा—स्त्री० दे० 'कांक्षा'।
काँजी—स्त्री० मट्ठे या दही का पानी।
कांजीहाउस—पु० चौपायों के क़ैद किये जाने का स्थान।
काँट, काँटा—पु०कील, तराज़ू
काँटी—स्त्री० कील।
काँठा—पु०कण्ठ। किनारा।
कांड—पु० डंठल। शाखा। बाण। समूह। घटना। परिच्छेद।
कांडपृष्ठ—वि० हथियारबन्द।
काँड़ना—सक्रि० कुचलना, रौंदना।
कांडवान्१३—पु०बाणधारी।
काँड़ी—स्त्री० लकड़ी का बड़ा डंडा। ओखली।
कांडीर—वि० बाणधारी।
कांडेक्षु—पु० तालमखाना।
कांत—पु०पति। शिव। विष्णु।
कांतलौह—पु० चुम्बक।
कांतसार—पु० फ़ौलाद।
कांता—स्त्री० पत्नी, प्रिया।
कांतार—पु० सघन जंगल। बाँस। छिद्र। दुर्गममार्ग।
कांतारक—पु० काला पौंडा।
कांति—स्त्री० शोभा, चमक।
कांतिमान्१३—वि० शोभायमान्। [छूरी।
कांती—स्त्री० तीव्र-व्यथा।
काँथरि—स्त्री० गुदड़ी।
काँदना—अक्रि० रोना।
काँदो—पु० कीचड़।
काँध, काँधा—पु० कन्धा।
काँधना—सक्रि० उठाना। धारण करना।
काँप—स्त्री० बाँस आदि की पतली तीली। [डरना।
काँपना—अक्रि० हिलना।
कांफ्रेंस—स्त्री० (अ०)सभा, जलसा।
काँवर—स्त्री० बहँगी।
काँवारिया—पु०काँवर लेकर चलने वाला तीर्थयात्री।
काँस—पु० घास विशेष।
काँसा७—पु० कसकुट।
कांस्टेबिल—पु०(अ०) पुलिस का सिपाही।
कांस्य—पु० काँसा।
कांस्यकार—पु० कसेरा।
का—सर्व० क्या। सम्बन्ध-कारक की विभक्ति।[घास।
काई—स्त्री० जल की महीन-
काउंसिल—स्त्री० (अं०) प्रांतीय-सरकारी-सभा।
काऊ—क्रि० वि० कभी। सर्व० कोई।
काक७—पु० कौआ। चाचा।
काकगोलक—पु० कौए की आँख की पुतली।
काकचिंचा, काकचिंचा— स्त्री० घुँघची।
काकजंघा—स्त्री० घुँघची।
काकणी—स्त्री० घुँघची।
काकतालीय—वि० संयोग से होने वाला।
काकदंत—पु०असंभव बात।
काकध्वज—पु० बड़वानल।
काकपक्ष—पु० ज़ुल्फ़।
काकपद—छूटे हुए शब्द का स्थान सूचक चिह्न (‸)
काकपाली—स्त्री० कोयल।
काकपुच्छ—पु० कोयल।
काकफल—पु० नीम।
काकबंध्या—स्त्री० वह स्त्री जिसके एक के बाद संतान न हो।
काकभीरु—पु० उल्लू।
काकभुशुंडि—पु० एक मुनि।
काकरेज़ी—पु० (फ़ा०) काले के संयोग से बना हुआ लाल रंग।
काकली—स्त्री० मधुर ध्वनि। गुंजा। साठी धान।
काका७—पु० चाचा।
काकाक्षिगोलकन्याय—पु० एक शब्द को उलटफेर कर दो भिन्न अर्थों में लगाना।
काकातुआ—पु० सफ़ेद रंग का एक तोता।
काकिणी, काकिनी—स्त्री० कौड़ी। प्राचीन काल का ताँबे का एक सिक्का जिसका मूल्य २० कौड़ियों के बराबर होता था, छदमची। घुँघची।

काकु—पु० व्यंग्य ।
काकुत्स्थ—पु० श्रीरामचन्द्र । ककुत्स्थ वंश का एक राजा।
काकुद—पु० तालु । [लट ।
काकुल—स्त्री० (फ़ा०) .जुल्फ़,
काकोदर—पु० साँप ।
काकोल—पु० साँप । कौआ । हलाहल विष । कनकौआ ।
काकोलूकिका—स्त्री० घोर शत्रुता । [मिट्टी ।
काक्षी—स्त्री० अरहर । खरी
काग—पु० कौआ । बोतल की डाट ।
काग़ज़—पु० (फ़ा०) लिखने का पत्र । [पत्र ।
काग़ज़ात—पु० बहु० काग़ज़-
काग़ज़ी—वि० (फ़ा०) काग़ज़ का बना हुआ ।
कागद—पु० काग़ज़ ।
कागर—पु० पंख । काग़ज़ ।
कागरी—वि० तुच्छ ।
कागा—पु० कौआ ।
कागाबासी—स्त्री० प्रातः काल की भाँग ।
कागारोल—पु० हुल्लड़ ।
कागौर—पु० श्राद्ध में कौए के लिए निकाला हुआ भाग।
काच—पु० सिकहर । छींका ।
काचलवण—पु० काला नमक ।
काचा—वि० कच्चा [हाँड़ी ।
काची—स्त्री० दूध रखने की
काछ—पु० धोती की लाँग ।
काछना—सक्रि० बनाना । पहनना । लाँग मारना ।
काछनी—स्त्री० घुटनों तक पहनी हुई धोती ।
काछा—पु० कछनी ।
काछी—पु० एक जाति ।
काछू—पु० कछुआ ।
काछे—क्रि० वि० निकट ।
काज—पु० कार्य, प्रयोजन ।
काजर, काजल—पु० दीपक की स्याही ।
काजरी—स्त्री० वह गाय जिसकी आँख के चारों ओर का भाग काला हो ।
क़ाज़ा—स्त्री० (फ़ा०) शिकारियों का शिकार के लिए छिपकर बैठने का गड्ढा ।
काज़िब—वि० (अ०) झूठा ।
क़ाज़ी—पु० (अ०) न्यायाधीश ।
काजू पु० एक मेवा ।
काट—स्त्री० तराश ।
काटकपट—पु० अनुचित-रीति से काटना ।
काटना—सक्रि० दो खंड-करना । बिताना ।
काटर—वि० कट्टर ।
काठ—पु० लकड़ी ।
काठड़ा७—पु० कठौता ।
काठिन्य—पु० कठौता ।
काठी—स्त्री० म्यान । ईंधन। लकड़ी । घोड़े की ज़ीन ।
काड़ा—पु० युवा भैंसा ।
काढ़ना—सक्रि० बाहर-निकालना ।
काढ़ा—पु० दवाओं का शरबत।
काण—वि० काना । पु० कौआ।
कातना—सक्रि० चरखा-चलाना ।
कातर३—वि० अधीर, डरपोक । [कथन ।
कातरोक्ति—स्त्री० डरपोक
काता—पु० सूत । छुरी ।
कातिक—पु० कार्तिक मास ।
कातिब—पु० (अ०) लेखक, मुंशी ।
क़ातिल—वि० (अ०) घातक ।
काती—स्त्री० क़ैंची, छुरी ।
कात्यायनी—स्त्री० दुर्गा, पार्वती ।
काथ—पु० कत्था । गुदड़ी ।
काथरी—स्त्री० गुदड़ी ।
कादंब—पु० बत्तख । कदंब का पेड़ । ईख । बाण ।
कादंबरी—स्त्री० कोयल । मैना । सरस्वती । मदिरा ।
कादंबिनी—स्त्री० मेघमाला।
कादर—वि० डरपोक, भीरु ।
कादाचित्क—वि० हमेशा न रहने वाला, अस्थायी ।
क़ादिर—वि० (अ०) बलवान् ।
क़ादिरमुतलक़—पु० (अ०) सर्वशक्तिमान् (ईश्वर) ।
कान—पु० श्रवणइंद्रिय । (फ़ा०) खानि ।
कानकन—पु० (फ़ा०) खान-खोदने वाला ।
कानड़ा—वि० काना ।
कानन—पु० जगल, वन ।
काना७—वि० एक आँख-वाला । [फूसी ।
कानाकानी—स्त्री० काना-
कानाफूसी—स्त्री० कान के पास धीरे-धीरे बातें कहना ।

कानि—स्त्री० प्रतिष्ठा, लोकलज्जा।
कानी—वि० खनिज। स्त्री० सब से छोटी उँगली।
कानीन—वि० कन्या से उत्पन्न। [नियम, आईन।
क़ानून—पु० (अं०) राज-
क़ानूनगो—पु० (अ० फ़ा०) पटवारियों के काग़ज़ों की जाँच करने वाला एक अधिकारी।
क़ानूनदाँ—वि० (अ० फ़ा०) क़ानून जानने वाला।
क़ानूनन्—क्रि० वि० (अ०) क़ानून के अनुसार।[संबंधी।
क़ानूनी—वि० (अ०) क़ानून-
कान्ह—पु० श्रीकृष्ण।
कान्हड़ा—पु० एक राग।
कापट्य—पु० कपटता।
कापथ—पु० कुमार्ग।
कापर—पु० कपड़ा।
कापाल—पु० प्राचीन समय का अस्त्र विशेष।
कापालिक—पु० शैव मत के साधु जो खोपड़ी लिए फिरते हैं।
कापाली५—पु० शिव।
कापिल—वि० सांख्यशास्त्र का अनुयायी। कपिल का। भूरा।
कापी—स्त्री०नकल। जिल्द।
कापीराइट—पु०(अं०) पुस्तक-प्रकाशन का अधिकार।
कापुरुष—पु० कायर।
कापोत—पु० कबूतरों का समूह।
कापोतांजन—पु० सुरमा।
क़ाफ़—पु०(अ०)एक कल्पित पर्वत जिस पर परियों का निवास माना जाता है। काले सागर में एक पर्वत।
क़ाफ़िया—पु० (अ०) तुक।
काफ़िर—पु० (अ०) निर्दय। विधर्मी। दुष्ट। अफ्रीका का एक प्रदेश।
काफ़िराना—वि० (फ़ा०) काफ़िरों के समान।
क़ाफ़िला—पु०(अ०)यात्रियों का झुंड। [क़हवा।
काफ़ी—वि०(अ०) पर्याप्त।
काफ़ूर—पु० (अ०) कपूर।
काफ़ूरी—वि० (अ०) कपूरी, कपूर-सम्बन्धी।
काब—स्त्री०(अ०)बड़ी रक़ाबी।
काबक—पु० (फ़ा०) पक्षियों के रहने का दरबा।
काबर—वि० चितकबरा। पु० एक प्रकार की ज़मीन।
काबा—पु०(अ०) मक्के शहर का एक पवित्र स्थान।
क़ाबिज़—वि० (अ०) अधिकारी। क़ब्ज़ करने वाला। मलरोधक।
क़ाबिल—वि० (अ०) योग्य।
क़ाबिलियत—स्त्री० (अ०) योग्यता।
काबिस—पु० पकाने के लिए मिट्टी के कच्चे बर्तन रँगने का एक रंग।
काबीन—पु० (अ०) विवाह के समय पति द्वारा पत्नी को दिया जाने वाला धन।
काबुक—स्त्री० कबूतरों का दरबा। [शहर का।
क़ाबुली—वि० क़ाबुल-
क़ाबू—पु०(तु०)वश,इख्तियार।
क़ाबूची—पु०(तु०)द्वारपाल।
काबूस—पु०(अ०)ख़तरनाक-स्वप्न।
कामंगामी—पु० स्वतंत्रता से गमन करने वाला।
काम—पु०इच्छा। प्रयोजन। कामदेव। दस्तकारी। व्यापार। [रति।
कामकर—पु० मज़दूर।
कामकला—स्त्री० मैथुन।
कामकाजी—वि० काम करने-वाला। [गामी।
कामकूट—पु० लंपट। वेश्या-
कामग—वि० स्वेच्छाचारी।
कामचर—वि० स्वेच्छाचारी।
कामचलाऊ—वि० जिससे काम निकल सके, अस्थायी।
कामचोर—वि० आलसी।
कामज—वि०वासनासेउत्पन्न।
कामजित्—पु० महादेव।
कामज्वर—पु० वह ज्वर जो अखंड ब्रह्मचर्य्य पालन करने से होता है।
कामड़िया—पु० रामदेव मत के अनुयायी,(चमार साधु)।
क़ामत—स्त्री०(अ०)आकार,क़द।
कामतरु—पु० कल्पवृक्ष।
कामता—पु० चित्रकूट।
कामद४—वि० मनोरथ पूर्ण-करने वाला। [विद्वान्।
कामदक—पु० एक भारतीय-
कामदमणि—पु० चिंतामणि।
कामदहन—पु० शिवजी।

कामदा—स्त्री० कामधेनु ।
कामदानी—स्त्री० ज़रदोज़ी का काम ।
कामदार—पु० कारिंदा। प्रबन्धक। वि० जिस पर कलाबत्तू आदि का काम हो।
कामदुहा—स्त्री० कामधेनु ।
कामदूती—स्त्री० परवर की बेल। [संभोगेच्छा ।
कामदेव—पु० एक देवता ।
काम-धाम—पु० काम-काज ।
कामधेनु—स्त्री० पुराणोक्त एक गाय जो इच्छित वस्तु दे ।
कामन—वि० कामी ।
कामनवेल्थ–पु० (अं०) प्रजा का राज्य ।
कामना—स्त्री० इच्छा ।
कामपाल—पु० महादेव । बलराम ।
कामभूरुह—पु० कल्पवृक्ष ।
कामयाब २—वि० (फ़ा०) सफल ।
कामयिता–पु०कामी,पुंश्चल।
कामरानर–वि०(फ़ा०)सफल।
कामरि,कामरिया–स्त्री० कम्बल
कामरिपु—पु० शिवजी ।
कामरी—स्त्री० कमली ।
कामरुचि—स्त्री० अस्त्रों को व्यर्थ करने वाला एक अस्त्र ।
कामरूप—पु० एक नगर जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है । वि०इच्छानुसार-रूप धारण करने वाला ।
कामरूपी—वि० बहुरूपिया । स्वेच्छाचारी । सुन्दर ।
कामर्स—पु०(अं०)वाणिज्य ।
कामल—पु०कमल रोग ।
कामलड़ी–स्त्री०दे०'कामरी' ।
कामवल्लभ—पु० आम ।
कामवल्लभा–स्त्री० चाँदनी ।
कामवाण—पु० कामदेव के ५वाण,(उन्मादन, सन्तपन, मोहन,शोषण और निश्चेष्ट-करण ।)
कामवान् १३—वि०काम,या संभोग की इच्छा रखने वाला ।
कामशर—पु० आम ।
कामशास्त्र—पु० वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री पुरुषों के समागम का वर्णन हो ।
कामसखा—पु० वसंत ।
कामांध—पु० कोयल । वि० विचार हीन । विषय-वासना में अंधा ।
कामा—स्त्री० कामिनी । पु० अल्प विराम (,)। [पीड़ित ।
कामातुर–वि०काम के वेगसे-
कामानुज—पु० क्रोध ।
कामायुध—पु० आम ।
कामारण्य–पु० सुन्दर बाग़।
कामारि—पु० शिव ।
कामार्त्त–वि०दे० 'कामातुर' ।
कामिनी—स्त्री० सुन्दरी । मदिरा । [समूचा ।
कामिल—वि०(अ०) योग्य ।
कामी५-वि०इच्छुक। विषयी ।
कामुक४-७–वि० दे०'कामी'
कामोद्दीपक---वि० कामेच्छा को प्रदीप्त करने वाला ।
कामोद्दीपन—पु० सहवास की उत्तेजना ।
काम्बल–वि० कम्बल से युक्त ।
काम्बविक—पु० चुड़िहार ।
काम्बोज—वि० कम्बोज देश का (घोड़ा आदि) ।
काम्बोजा—स्त्री० मूँग ।
काम्रेड—वि० (अ०)साथी ।
काम्य–वि० इच्छा के योग्य । सुन्दर । यज्ञ विशेष ।
काम्यदान—पु० बड़ा दान ।
काय, काया—स्त्री० शरीर ।
कायक—वि० शरीरी, देही । पु० शरीर ।
क़ायदा—पु० (अ०) नियम । रीति । विधान । व्यवस्था ।
कायनात—स्त्री० (अ०) संसार । पूँजी । मूल्य ।
कायफल—पु० एक वृक्ष तथा उसका फल ।
क़ायम—वि० (अ०) स्थिर ।
क़ायममिज़ाज—वि० (अ०) शान्त स्वभाव का, गंभीर ।
क़ायममुक़ाम—वि० (अ०) एवज़ी [पोक ।
कायर३—वि० भीरु, डर-
क़ायल२–वि०(अ०) स्वीकार-करने वाला, लाजवाब ।
क़ायली–स्त्री०लज्जा, ग्लानि ।
कायस्थ—पु० हिन्दुओं की एक जाति ।
कायस्था—स्त्री० हड़ ।
कायाकल्प—पु० औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को सशक्त करने की क्रिया ।
कायापलट—स्त्री० भारी हेर-फेर ।

कायिक—वि० शरीर-संबंधी।
कारंड, कारंडव—पु० हंस या बतख़ की जाति का एक पक्षी। [छोटी मोटर।
कार—पुं०कार्य। स्त्री०(अं०)
कारआज़मूदा—वि० (फ़ा०) अनुभवी। [उपयोगी।
कारआमद—वि० (फ़ा०)
कारक१४—वि०करने वाला।
कारकरदा—वि० (फ़ा०) तजुरबेकार। [प्रबन्धक।
कारकुन—वि०(फ़ा०)कारिंदा,
कारख़ाना-पु०(फ़ा०) अधिक मात्रा में चीज़ें तैयार करने की जगह। कारबार।
कारगर-वि०(फ़ा०)उपयोगी, प्रभावकारी।
कारगुज़ार२—वि० (फ़ा०) कर्तव्य-पालन करने वाला।
कारचोब२-पु०(फ़ा०) क़सीदे या ज़रदोज़ी का काम करने वाला।
कारचोबी—स्त्री० ज़रदोज़ी।
कारज़ार—पु० (फ़ा०) युद्ध।
कारटा—पु०कौआ।[चित्र।
कारटून—पु० (अं०) व्यंग्य-
कारण—पु० हेतु, सबब।
कारणा—स्त्री० तीव्रवेदना।
कारणिक—वि० पारखी।
कारणीभूत-वि०मूल कारण।
कारतूस—पु० गोली, बारूद युक्त वह नली जिसे बंदूकों में भर कर चलाते हैं।
कारद-स्त्री०(फ़ा०)चाकू,छुरी।
कारदाँ—वि० (फ़ा०) कुशल, चतुर।
कारन—पु० कारण। करुण-स्वर।
कारनामा—पु० (फ़ा०) किये हुए कार्यों का विवरण।
कारनिस—स्त्री० कगर।
कारपरदाज़—पु० (फ़ा०) कारिंदा। [कारिंदागिरी।
कारपरदाज़ी—स्त्री० (फ़ा०)
कारपेंटर—पु० (अं०) बढ़ई।
कारपोरेशन—पु० (अं०)बड़े शहरों की म्युनिसिपैलिटी।
कारबंद—वि० (फ़ा०) आज्ञाकारी।
कारबन-पु० (अं०) खलिस-कोयला। एक काग़ज़।
कारबार-पु० (फ़ा०) काम-काज, पेशा।
कारबारी—पु० कारिंदा। वि० कामकाजी।
कारखाई-स्त्री०उपाय, चाल, कार्य।
कारवल्ली—स्त्री० करेला।
कारवाँ—पु० (फ़ा०)यात्रियों का समूह।
कारवी—स्त्री० अजमोदा। मयूरशिखा। सौंफ़। काला-ज़ीरा। हींग की पत्ती।
कारवेल्ल—पु० करेला।
कारसाज़२-वि० (फ़ा०)काम पूरा करनेवाला। चालबाज़।
कारस्तानी—स्त्री०(फ़ा०)कार्य-वाही, चालबाज़ी।
कारा—स्त्री० क़ैद। वि० काला। पु० सर्प।
कारागार—पु० क़ैदख़ाना।
कारागृह—पु० क़ैदख़ाना।
कारावास—पु० क़ैद।
कारिंदा—पु० गुमाश्ता।
कारिका—स्त्री० सूत्र की व्याख्या। नटी। [कलंक।
कारिख—स्त्री० स्याही।
कारित—वि० कराया हुआ।
कारी५—पु० (फ़ा०) करने-वाला। वि० गहरा।
क़ारी—पु० (अ०) पाठक।
कारीगर२—पु०(फ़ा०) शिल्प-कार, दस्तकार। [समूह-
कारीष—पु० सूखे कंडों का-
कारु—पु०कारीगर, चितेरा।
कारुणिक—वि० कृपालु।
कारुण्य—पु० कृपा।
क़ारूँ—पु० (अ०) हज़रत मूसा का चचेरा भाई जो बहुत धनी तथा कंजूस था।
क़ारूरा—पु० (अ०) मूत्र।
कारोछ—पु० कालापन।
कारो—पु०सर्प। वि०काला।
कार्क—पु० (अं०) एक तरह की लकड़ी की छाल की डाट।
कार्कश्य—पु० कर्कशता।
कार्ड—पु० (अ०) मोटा-काग़ज़। ताश। [सहस्रबाहु।
कार्तवीर्य—पु० एक राजा—
कार्त्तस्वर-पु०सोना, सुवर्ण।
कार्त्तान्तिक—पु० ज्योतिषी।
कार्तिक, कार्त्तिकिक—पु० कातिक महीना।
कार्त्तिकेय—पु० महादेव जी के ज्येष्ठ पुत्र।
कार्पण्य—पु० कंजूसी।
कार्पास—पु० सूती कपड़ा।
कार्पासी—स्त्री० कपास।

कार्म७—पु० कर्मशील ।
कार्मण—पु० मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग ।
कार्मना—पु० तंत्र-मंत्र ।
कार्मिक—पु० जड़ाऊ-वस्त्र ।
कार्मुक—पु० धनुष ।
कार्य—पु० काम ।
कार्यकर्त्ता—पु० कर्मचारी ।
कार्यक्रम—पु०कार्य-विभाग । कार्य करने की प्रणाली या सिलसिला ।
कार्यदक्ष३—वि० कार्यकुशल ।
कार्यदर्शी५—पु०निरीक्षक ।
कार्यनिष्ठ४—वि० काम में लगा हुआ ।
कार्यपत्र—पु०सभा आदि के कार्यक्रमकी चिट्ठी,एजेंडा।[कर्त्ता
कार्यवाहक १४—पु० कार्य-
कार्यवाही—स्त्री० कारवाई ।
कार्यसूची—स्त्री० काम की फ़ेहरिस्त, एजेंडा ।
कार्याधीश—पु०स्वामी,प्रभु ।
कार्याध्यक्ष—पु० अफ़सर ।
कार्यार्थी५—वि० कार्य की सफलता चाहने वाला ।
कार्यालय—पु० दफ़्तर ।
कारवाई—स्त्री० (फ़ा०) काम । कार्य-विवरण । गुप्त-प्रयत्न ।
कार्श्य-पु० कृशता, दुर्बलता । बड़हर । सालवृक्ष ।
कार्षापण—पु० रुपया । ३२ रत्ती वज़न की तौल । [देव ।
कार्ष्णि—पु०कामदेव । शुक-
कार्ष्ण्य—पु० कालापन ।
काल—पु० समय । यमराज । दुर्भिक्ष । मृत्यु । श्यामवर्ण । क्रि० वि० कल ।
कालकंठ—पु० शिव । नील-कंठ । मोर ।
कालकवि-पु०अग्नि । [विष ।
कालकूट—पु० एक भयंकर-
कालकोठरी—स्त्री० जेल की तंग और अँधेरी कोठरी जो केवल एक क़ैदी के लिए ही होती है । [टाइमटेबुल ।
कालक्रम-पु० समय-विभाग,
कालक्षेप-पु०समय बिताना ।
कालखंड—पु०यकृत,जिगर ।
कालगंगा—स्त्री० यमुना ।
कालचक्र-पु०समय का फेर ।
कालज्ञ—पु० ज्योतिषी ।
कालधर्म—पु० मृत्यु ।
कालनाथ—पु० शिवजी ।
कालनिशा—स्त्री०प्रलय तथा दिवाली की रात ।
कालनेमि—पु० एक राक्षस ।
कालपाश—पु० यमपाश ।
कालपुरुष—पु० ईश्वर का विराट रूप । काल ।
कालप्रभात—पु० शरत्काल ।
कालपृष्ठ-पु०कर्ण का धनुष ।
कालबंजर—पु० बहुत दिनों से न बोई गयी भूमि ।
कालबुद, कालबूत—पु०(फ़ा०) जूता सीने का काठ का साँचा । मेहराब के नीचे का कच्चा भराव ।
कालभैरव—पु० शिव के एक गण । [पृष्ठ का एक भाग ।
कालम—पु० (अं०) खंभा ।
क़ाल-मक़ाल—स्त्री० (अ०) लम्बी चौड़ी बातें ।
कालयापन-पु०दिन काटना ।
कालर—पु० (अं०) गले का पट्टा । (हिं०)दे० "कल्लर"।
कालरा—पु० (अं०) हैज़ा ।
कालरात्रि—स्त्री०प्रलय, मृत्यु तथा दिवाली की रात । बहुत अँधेरी रात ।
कालवाचक,कालवाची—वि० समय-बोधक । [समाप्ति ।
कालविपाक—पु० समय की-
कालशेय—पु० मट्ठा ।
कालसूत्र—पु० एक नर्क ।
कालस्कंध—पु० तेंदुआ ।
काला—पु० रंग विशेष, (श्याम) । वि० कलंकित ।
कालाकलूटा-वि०बहुत काला ।
कालाक्षरी-वि०बड़ा विद्वान् ।
कालागुरु—पु०काला अगर ।
कालाग्नि—पु० प्रलय की अग्नि ।
कालाचोर—पु० बड़ा चोर ।
कालातीत—वि० जिसका समय बीत गया हो ।
कालानमक—पु० एक नमक ।
कालानुसार्य—पु० शिलाजीत । पीलाचन्दन । तगर ।
कालान्तर—क्रि० वि० कुछ समय के बाद । [का डंड ।
कालापानी—पु० देश निकाले-
कालायास—पु० लोहा ।
कालिंग—वि० कलिंग देश का । पु० सर्प । हाथी । तरबूज़ ।
कालिंदी—स्त्री०यमुना नदी ।
कालिंदीभेदन—पु० बलभद्र ।

कालि—क्रि० वि० कल।
कालिक—वि० कालसंबंधी।
कालिकाला—क्रि० वि० कदाचित्, कभी।
कालिका—स्त्री० कालीदेवी। मेघ। मदिरा। कालिमा।
कालिख—स्त्री० स्याही।
कालिदास—पु० संस्कृत के एक महाकवि।
क़ालिब—पु० (अ०) टोपी दुरुस्त करने का ढाँचा। शरीर।
कालिमा—स्त्री० कालापन।
काली—स्त्री० दुर्गा। पार्वती।
कालीदह—पु० वृन्दावन में यमुना के अन्दर वह कुंड, जहाँ कालियानाग रहता था।
कालीन—वि० काल-संबंधी।
क़ालीन—पु० (तु०) ग़लीचा।
कालीमिर्च—स्त्री० कालीमोल मिर्च।
कालेकोस—पु० बहुत दूर।
कालेज—पु० (अं०) महाविद्यालय।
कालेश्वर—पु० शिव।
कालोनी—स्त्री० (अं०) उपनिवेश।
कालौंछ—स्त्री० कालापन।
काल्पनिक—वि० मनगढ़ंत, कल्पित।
कावचिक—पु० कवचधारियों का समूह। [में चक्कर देना।
कावा—पु० घोड़े का एकवृत्त-
कावेरी—स्त्री० भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
काव्य—पु० रसात्मक रचना। शुक्राचार्य।
काव्या—स्त्री० बुद्धि। पूतना।
काश—अव्य० (फ़ा० ईश्वर करे। (हिं०) काँस।
क़ाश—स्त्री० (तु०) फाँक।
काशाना—पु० (फ़ा०) झोंपड़ा।
काशिका—स्त्री० प्रकाश करनेवाली। काशी नगरी।
काशी—स्त्री० बनारस शहर।
काशीफल—पु० कुम्हड़ा।
काशू—स्त्री० बरछी।
काश्त—स्त्री० (फ़ा०) खेती।
काश्तकार—पु० (फ़ा०) किसान। [खेती।
काश्तकारी—स्त्री० (फ़ा०)
काश्मरी—स्त्री० खंभारी।
काश्मीरा—पु० ऊनी कपड़ा-विशेष। [संतान।
काश्यप—पु० कश्यप ऋषि की-
काश्यपि—पु० सूर्य का सारथी।
काश्यपी—स्त्री० पृथ्वी। प्रजा।
काष—पु० सान रखने का पत्थर। एक ऋषि।
काषाय—वि० गेरुआ।
काष्ठ—पु० लकड़ी। ईंधन।
काष्ठा—स्त्री० हद। दिशा। ७२ क्षण का समय। बड़ाई, मर्यादा। दारुहल्दी। [डोंगी।
काष्ठाम्बुवाहिनी—स्त्री० नौका,
काष्ठी—स्त्री० फिटकरी।
काष्ठीला—स्त्री० केला।
कास—पु० खाँसी।
कासनी—स्त्री० (फ़ा०) एक पौधा। एक प्रकार का नीला रंग। [वाला।
कासबी—पु० कपड़ा बिनने-
कासर—पु० भैंसा।
कासा—पु० (अ०) प्याला।
कासार—पु० तालाब। एक पकवान।
क़ासिद—पु० (अ०) हरकारा। इरादा करने वाला।
क़ासिम—वि० (अ०) तक़सीम करने वाला।
क़ासिर—वि० (अ०) क़सूरवार।
कास्टिंगवोट—पु० (अं०) सभापति का वोट।
काह—स्त्री० (फ़ा०) सूखी घास, तिनका। (हिं०) क्या, कौन बात।
काहल—वि० गंदा।
काहि—सर्व० किसको।
काहिल२—वि० आलसी।
काहिश—स्त्री० (फ़ा०) कमी, ह्रास। [द्वारा।
काहीं—अव्य० को, पास।
काही—वि० (अ० फ़ा०) कालापन लिये हुए हरा।
काहू—सर्व० किसी। पु० (अ०) एक पौधा जिसके फल के बीज दवा के काम में आते हैं।
काहे—क्रि० वि० क्यों।
किंकर७—पु० सेवक, नौकर।
किंकर्त्तव्यविमूढ़—वि० घबराया हुआ।
किंकिणी—स्त्री० करधनी।
किंगरी—स्त्री० छोटी सारंगी।
किंचन—पु० थोड़ी चीज़।
किंचित्—वि० कुछ, थोड़ा।
किंचिन्मात्र—वि० बहुत-थोड़ा।

किंजल्क—पु० पद्मपराग वि० पीला।
किंतु—अव्य० लेकिन।
किंपचान—वि० कृपण।
किंपुरुष—पु० किन्नर। वर्ण-संकर।
किंवदंती—स्त्री० अफ़वाह।
किंवा—अव्य० अथवा।
किंशारु—पु० वाण। जौ का अग्रभाग।
किंशुक—पु० पलाश, ढाक।
कि—सर्व० क्या।(अव्य०)एक संयोजक शब्द। [चिल्लाना
किकियाना—अक्रि० रोना,
किकीदिवि—पु० नीलकंठ।
किचकिच—स्त्री० बकवाद।
किचकिचाना—अक्रि० दाँत पीसना। [किचाहट।
किचकिची—स्त्री० किच-
किचपिच—वि० क्रमरहित।
किछु—वि० कुछ।
किटकिट—पु० कहासुनी।
किटकिटाना—अक्रि० दाँत-पीसना।
किटि—पु० सूअर।
किटिभ—पु० जूं। [मैल।
किट्ट—पु० कान आदि का
कित—क्रि० वि० कहाँ, किधर। [कहीं।
कितक—क्रि० वि० कितना।
कितना—वि० किस तादाद का। ज्यादा। क्रि० वि० अत्यधिक।
कितव—पु० जुआरी। धूर्त।
क़िता—पु० (अ०) ब्योंत। संख्या। खंड। ज़मीन का टुकड़ा।
किताब—स्त्री० (अ०)पुस्तक।
किताबत—स्त्री० (अ०) लिखना।
किताबी—वि०(अ०)किताब-संबंधी। पु० मुसलिम मतानुसार यहूदी और ईसाई। [क़ुरान।
किताबे-इलाही—स्त्री० (अ०)
कितेक—वि० कितना। असंख्य। [किताब।
कितेब—पु० धर्मग्रन्थ।
कितै—अव्य० दे० 'कित'।
कितो—वि० कितना।
कित्ति—स्त्री० कीर्त्ति।
किधर—क्रि०वि०किस ओर।
किधौं—अव्य० अथवा।
किन—सर्व० 'किस' का बहु-वचन। क्रि० वि० क्यों न। पु० चिह्न। [का टुकड़ा।
किनका७—पु०चावल आदि-
किनाया—पु० (अ०)इशारा।
किनार—पु० (फ़ा०) किनारा, पार्श्व।
किनारदार—वि० (फ़ा०) जिसमें किनारा बना हो।
किनारा—पु०तीर। हाशिया।
किनाराकश—वि० (फ़ा०) अलग रहने वाला।
किनारी—स्त्री० (फ़ा०) कपड़ों के किनारे पर लगाया जाने वाला फ़ीता, गोट।
किन्नर७—पु० देवयोनि-विशेष। गाने बजाने वाली एक जाति।
किन्नरी—स्त्री०छोटी सारंगी, किंगरी।
किन्नरेश—पु० कुबेर।
किफ़ायत—स्त्री० (अ०) कमख़र्ची। बचत।
क़िबला—पु० पश्चिम दिशा। पिता। मक्का शहर। वि० पूज्य।
क़िबलाआलम—पु० (अ०) बादशाह तथा बड़ों के लिए संबोधन।
क़िबला-गाह—पु० (अ० फ़ा०) बड़ों एवं पिता के लिए संबोधन।
क़िबलानुमा—पु० (अ० फ़ा०) पश्चिम दिशा सूचक एक-यंत्र। [बड़प्पन, बुज़ुर्गी।
किब्र, किब्रिया—स्त्री० (अ०)
किम्—सर्व० क्या।
क़िमाम—पु० गाढ़ा शरबत।
क़िमार—पु० (अ०) जुआ।
क़िमारख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) जुआघर।
क़िमारबाज़२—पु० (अ० फ़ा०) जुआरी।
किमाश—पु० (अ०) तर्ज़।
किमि—क्रि० वि० कैसे, किस तरह। [प्रतिष्ठा।
किम्मत—स्त्री० युक्ति।
कियत्—वि०कितना। कुछ, थोड़ा।
किर, किरि—पु० सूअर।
क़िरअत—स्त्री० (अ०) क़ुरान-पढ़ना।
किरका—पु० कंकड़ी।

किरकिरा—वि० कँकरीला। बेमज़ा।
किरकिराहट—स्त्री० आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी तकलीफ़। [अप्रतिष्ठा।
किरकिरी—स्त्री० हेठी,
किरकिल—पु० गिरगिट। स्त्री० शरीर के भीतर की छींक लाने वाली वायु।
किरच, किरचक—स्त्री० कनिका। एक तलवार।
किरण—स्त्री० किरन।
किरणमाली—पु० सूर्य।
किरतम—स्त्री० सृष्टि।
किरदार—स्त्री० (फ़ा०) कार्य। ढंग, शैली।
किरम—पु० कीड़ा।
किरमाल—पु० तलवार।
किरमिच—पु० एक प्रकार का कपड़ा।
क़िरमिज़ी—वि० (अ०) मटमैले लाल रंग का।
किरराना—अक्रि० क्रोध से दाँत पीसना। 'किर्र किर्र' शब्द करना। [तलवार।
किरवान, किरवार—पु०
किराँची—स्त्री० लद्दू गाड़ी। मालगाड़ी का डिब्बा।
क़िरात—स्त्री० (अ०) ज्वाहरात की ४ जौ के बराबर की तौल।
किरात—पु०भील। साईस।
किरातपति—पु० शिव।
किराताशी—पु० गरुड़।
किरातिक्त—पु० चिरायता।
किरान—क्रि० वि० निकट।
किराना—पु० नमक, मसाला आदि चीज़ें।
किराया—पु० (अ०)भाड़ा।
किरायेदार—पु० किसी वस्तु को किराये पर लेने वाला व्यक्ति।
किरार—पु० एक जाति।
किरावल—पु० रणस्थल ठीक करने के लिए आगे जाने वाली सेना। [का तेल।
किरासिन—पु० (अं०) मिट्टी-
किरिम—पु० कीड़ा।
किरिमदाना—पु०कीड़ा विशेष।
किरिया—स्त्री० शपथ। मृत-कर्म। [मुकुट।
किरीट—पु० शिरोभूषण।
किरीटी—पु० अर्जुन। इन्द्र।
किरीरा—स्त्री० कीड़ा।
किरोलना—सक्रि०खुरचना।
किर्च—स्त्री० दे० 'किरच'।
कीर्तनिया—पु० कीर्तन-कर्त्ता।
किर्दगार—पु० (फ़ा०)ईश्वर।
किर्म—पु० (फ़ा०) कीड़ा।
किर्मीर—वि० चितकबरा।
किलक—स्त्री० किलकारी। (फ़ा०)पोलीलकड़ी क़लम-बनाने का नरकट।
किलकना—अक्रि० किलकारी-मार कर हर्ष प्रकट करना।
किलकार, किलकारी—स्त्री० हर्ष-ध्वनि। [से चिल्लाना।
किलकारना—अक्रि० ज़ोर-
किलकिंचित—पु० संयोग-शृङ्गार का एक भाव।
किलकिल—स्त्री० झगड़ा।
किलकिला—स्त्री०हर्षध्वनि। मच्छ-भक्षक पक्षी विशेष।
किलकिलाना—अक्रि० हर्ष-ध्वनि करना। किलकारी-मारना।
किलना—अक्रि० कीला-जाना। गति रुकना।
किलनी—स्त्री० एक कीड़ा
किलबिलाना—अक्रि० चंचल-होना।
किलवाना—सक्रि० कील-लगवाना। टोना कराना।
क़िला—पु०(अ०) दुर्ग, गढ़।
क़िलाबंदी—स्त्री०दुर्ग-निर्माण।
किलाया—स्त्री० हाथी की गर्दन की रस्सी।
किलासी५—वि० वह व्यक्ति जिसके सेंहुवा या सफ़ेद कोढ़ हो।
क़िलेदार—पु० (अ० फ़ा०) क़िले का अधिकारी। [हर्ष।
किल्लोल—पु० मौज। तरङ्ग।
किल्विष—पु० पाप, गुनाह।
क़िल्लत—स्त्री (अ०)तंगी, कमी। [खूँटा।
किल्ला—पु० बड़ी कील।
किल्ली—स्त्री०कील। कुञ्जी। सिटकिनी। [रोग।
किल्विष—पु० पाप, दोष।
किल्हाना—अक्रि० कल्लोल-करना।
किवाड़—पु०दरवाज़े का पट।
क़िवाम—पु० (अ०) गाढ़ा-अवलेह।
किशमिश—स्त्री० एक मेवा।
किशमिशी—वि० किशमिश के रङ्ग का।

किशलय—पु०कोंपल,कोमल-पत्ता।

किशोर७—पु० ११ से १५ वर्ष की अवस्था का पुत्र। बालक।

किशोरक—पु० बच्चा।

किश्त—स्त्री० (अ०) शतरंज के खेल में बादशाह को शह देना।

किश्तज़ार—पु० (फ़ा०)खेत।

किश्ती—स्त्री० (अ०) नाव।

किश्तीनुमा—वि० नाव की शक्ल का। [मल्लाह।

किश्तीबान—पु० (फ़ा०)

किश्वर—पु० (फ़ा०) देश।

किष्किंध—पु० मैसूर के इर्द-गिर्द के देश का प्राचीन-नाम।

किष्कु—पु० एक हाथ या बारह अंगुल की नाप।

किसनई—स्त्री० किसानी।

किसब—पु० कारीगरी, व्यवसाय।

किसबत—स्त्री० (अ०) नाई के औज़ार रखने की पेटी।

किसरा—पु०(फ़ा०) नौशेरवाँ तथा फ़ारस के बादशाहों की उपाधि।

किसलय—पु०दे० 'किशलय'।

किसान—पु० काश्तकार।

किसानी—स्त्री० खेती।

क़िस्त—स्त्री० (अ०) भाग। ऋण को थोड़ा-थोड़ा करके देने की क्रिया। इंस्टालमेंट (अं०)।

क़िस्तबंदी—स्त्री० क़िस्त रूप में रुपया चुकाने का तरीक़ा।

क़िस्तवार—क्रि० वि० (अ० फ़ा०) थोड़ा-थोड़ा करके।

क़िस्म—स्त्री० (अ०) भेद। प्रकार। तर्ज़।

क़िस्मत—स्त्री० (अ०)भाग्य। कमिश्नरी।

क़िस्मतवार—वि० (अ० फ़ा०) भाग्यशाली। [झगड़ेबाज़ी।

क़िस्सा—पु० (अ०)कहानी।

क़िस्साबाज़ी—स्त्री० झगड़ा।

किहुनी—स्त्री० बाहु और हाथ के जोड़ की हड्डी।

की—अव्य०वा,या,फिर। क्या।

कीक—पु० चिल्लाना।

कीकट—वि० धनहीन। पु० घोड़ा। मगधदेश का प्रचीन नाम।

कीकना—अक्रि० चीखना।

कीकड़—पु० बबूल।

कीकस—पु० हाड़, अस्थि।

कीका—पु० घोड़ा।

कीच, कीचड़—पु० पानी मिली हुई मिट्टी। आँख का मैल।

कीचक—पु० हवा से बजता हुआ बाँस। राजा विराट का साला।

कीट—पु० कीड़ा। मैल।

कीटभृंग—पु० न्याय में कई वस्तुओं की एकरूपता।

कीटमणि—पु०जुगनू ,खद्योत।

कीड़ा—पु० लघुजन्तु, कृमि।

कीड़ी—स्त्री० चींटी। छोटा कीड़ा। [कौन जाने।

कीदहुं,किधौं—अव्य० शायद।

कीनख़ाब—पु० एक तरह का मोटा रेशमी कपड़ा।

कीना—पु० (फ़ा०) द्वेष।

कीनाश—पु० यमराज। किसान। वि०क्रूर; अधम। अल्प।

कीप, कीफ़—स्त्री० (फ़ा०) बोतल आदि में तैलादि डालने की चोंगी।

क़ीमत—स्त्री० (अ०) मूल्य।

क़ीमती—वि० (अ०) बहु-मूल्य।

क़ीमा—पु० (अ०) छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा गोश्त।

कीमिया—स्त्री० (अ०) रसायन।

कीमियागर—वि० (अ० फ़ा०) रसायन बनाने वाला।

कीमुख़्त—पु० (अ०) घोड़े या गधे का हरा दानेदार-चमड़ा।

कीर—पु० बहेलिया। तोता।

क़ीरात—पु० (अ०) चार जौ की तौल।

कीरी—स्त्री० चींटी।

कीर्ण—वि० फैला हुआ।

कीर्तन—पु० गुणकथन। हरि-भजन।

कीर्ति—स्त्री० यश, बड़ाई।

कीर्तिमान्१३—वि० यशस्वी।

कीर्तिवान्१३—वि०यशस्वी।

कीर्तिस्तंभ—पु० कीर्ति की यादगारी के लिये बनाया गया स्तम्भ।

कील—स्त्री० काँटा। नाक की लौंग। आग की लौ।

कीलक—पु० खूँटी।
कीलन—पु० बन्धन।
कीलना—सक्रि० वशीभूत-करना।
कीला—पु० बड़ी कँटिया।
कीलाल—पु० अमृत। जल।
कीलित—त्रि० कीला हुआ, जड़ा हुआ। [की कील।
कीली—स्त्री० चक्र घूमने-
कीश—पु० बन्दर।
कीसा—पु०(अं०) जेब, थैली।
कुँअर—पु० लड़का। राज-कुमार।
कुँआरा—पु० बिन ब्याही।
कुँई—स्त्री० कुमुदिनी।
कुंकुम—पु० केसर। रोली।
कुंकुमा—पु० लाख का पेला-गोला जिसमें गुलाल भरकर मारते हैं।
कुंचन—पु० सिकुड़ना।
कुंचिका—स्त्री० बाँस की टेहनी।
कुंचित—वि० घुँघराला।
कुंची—स्त्री० चाभी।
कुंज—पु० लताच्छादित-स्थान। (फ़ा०) किनारा।
कुंजक—पु० कंचुकी। अंतःपुर का सेवक।
कुंजकुटीर—स्त्री० लतागृह।
कुंजगली—स्त्री० लतावृत्त-मार्ग। तंगगली।
कुँजड़ा७—पु० तरकारी बेचने वाला एक जाति।
कुंजर४-७—पु० बाल। हाथी।
कुंजरारि—पु० सिंह।
कुंजराशन—पु० पीपलवृक्ष।
कुंजल—पु० काँजी।
कुंजविहारी—पु० श्रीकृष्ण।
कुंजा—पु० कुल्हड़।
कुंजी—स्त्री० चाभी। टीका (पुस्तक की)।
कुंठ—वि० भोथरा। मूर्ख।
कुंठित—वि० मंद। गुठला, खोटा। [गड्ढा।
कुंड—पु० छोटा तालाब।
कुंडरा—पु० मटका।
कुंडल—पु० बाली। घेरा।
कुंडलाकर—वि० गोल।
कुंडलिका—स्त्री० कुंडलिया-छंद। [इमरती।
कुंडलिनी—स्त्री० जलेबी।
कुंडली—स्त्री० जन्मपत्री। पु० साँप। मोर।
कुंडा—पु० मटका। कोंढ़ा।
कुंडिका—स्त्री० कमंडलु। पथरी।
कुंडी—स्त्री० छोटी पथरी। ज़ंजीर की कड़ी। शिरस्त्राण-विशेष।
कुंत—पु० भाला। बरछी।
कुंतल—पु० केश। प्याला। जौ। हल।
कुंतिभोज—पु० कुंती को गोद लेने वाला एक राजा।
कुंती—स्त्री० युधिष्ठिर की माता। बरछी।
कुंद—पु० जूही की तरह का पौधा। कमल। पालक-साग। कुँदरू। पोई। त्रि० (फ़ा०)भोथरा, कुंठित, मंद।
कुंदन—पु० चोखा सोना।
कुँदरू—पु० बिंबाफल।
कुंदा—पु० (फ़ा०) बेंट। किवाड़ों का कोंढ़ा। लकड़ी का मोटा टुकड़ा।
कुंदी—स्त्री० कपड़ों की सिकुड़न आदि दूर करने के लिए मोंगरी से पीटने की क्रिया। [वाला।
कुंदीगर—पु० कुंदी करने-
कुँदेरना—सक्रि० खुरचना।
कुँदेरा—वि०खरादने वाला।
कुंभ—पु०घड़ा। एक राशि। एक पर्वत। हाथी का मस्तक।
कुंभकर्ण—पु० रावण का एक भाई।
कुंभकार—पु०मुर्गा। कुम्हार।
कुंभज, कुंभयोनि—पु० अगस्तमुनि।
कुंभशाला—स्त्री० घड़ौंची।
कुंभसभव—पु० अगस्त्यमुनि।
कुंभा—स्त्री० वेश्या।
कुंभिका—स्त्री० जलकुंभी। वेश्या। छोटा घड़ा।
कुंभिनी—स्त्री० पृथ्वी।
कुंभिल—पु० चोर। साला।
कुंभिलाना—अक्रि०मुरझाना।
कुंभी—पु० हाथी। मगर। छोटा घड़ा। जल का एक पौधा। स्त्री० एक नरक।
कुंभीक—पु० नपुंसक।
कुंभीनस४—पु० क्रूर साँप। रावण।
कुंभीपाक—पु० एक नरक।
कुंभीपुर—पु० हस्तिनापुर।
कुँभीर—पु० नक्र, मगर।
कुँवर—पु० लड़का। राजपुत्र।

कुँवरी, कुंवरी—स्त्री० कुमारि ।
कुँहकुँह—पु० केसर, कुंकुम ।
कुछ—स्त्री० पृथ्वी । अव्य० । एक उपसर्ग ।
कुअंक—पु० दुर्भाग्य ।
कुआँ—पु० कूप, इनारा ।
कुआँर—पु० आश्विन मास ।
कुइँ—स्त्री० छोटा कुआँ । कुमुदिनी । [टूँडा ।
कुकर—वि० टेढ़े हाथ वाला,
कुकटी—स्त्री० ललाईनुमा-प्राकृतिक रुई ।
कुकड़ना—अक्रि० सिकुड़ जाना, सिमिटना ।
कुकड़ी—स्त्री० कच्चे सूत का लच्छा । मुर्गी । भुट्टा ।
कुकनू—पु० एक गाने वाला कल्पित पक्षी ।
कुकरी—स्त्री० बनमुर्गी ।
कुकरौंधा—पु० एक पौधा ।
कुकर्म—पु० बुरा काम ।
कुकुंदर—पु० नितम्बों में टिकने वाले पृष्ठ वंश के निचले भाग में विद्यमान् गड्ढे ।
कुकुर७—पु० कुत्ता । यादवों की एक शाखा । एक प्रकार का साँप । मुर्गा । [खाँसी ।
कुकुरखाँसी—पु० सूखी-
कुकुरदंत—पु० आगे निकला-हुआ टेढ़ा दाँत ।
कुकुरदंता—वि० आगे निकले हुए टेढ़े दाँतों वाला ।
कुकुरमुत्ता—पु० कुकरौंधा नामक पौधा, छत्रक ।
कुकुही—स्त्री० बनमुर्गी ।
कुकूल—पु० भूसी की आग ।
कुक्कुट—पु० मुर्गा ।
कुक्कुभ—पु० बन-मुर्गा ।
कुक्कुर७—पु० कुत्ता । भटोरा ।
कुक्षिंभर—पु० अपना ही पेट भरने वाला, पेटू ।
कुक्षि—स्त्री० पेट, कोख । गुफा ।
कुख्याति—स्त्री० बदनामी ।
कुगति—स्त्री० दुर्गति ।
कुगहनि—स्त्री० अनुचित-आग्रह ।
कुघा—स्त्री० तरफ़, दिशा ।
कुघात—पु० छल, कपट ।
कुचंदन—पु० लालचन्दन ।
कुच—पु० स्तन । वि० कृपण ।
कुचकुचा—वि० कोंचा गया । मसला हुआ । [तार कोंचना ।
कुचकुचाना—सक्रि० लगा-
कुचक्र—पु० षड्यंत्र ।
कुचर—वि० निंदक ।
कुचलना—सक्रि० मसलना ।
कुचला—पु० एक प्रकार का विषैला बीज । [भाग ।
कुचाग्र—पु० स्तन का अग्र
कुचाल—स्त्री० दुष्टता ।
कुचाह—स्त्री० अशुभ बात ।
कुचिया—स्त्री० छोटी टिकिया ।
कुची—स्त्री० कुंजी । ब्रुश ।
कुचील७—वि० मैला कुचैला ।
कुचेष्ट४—पु० बुरी चेष्टा वाला ।
कुचैन—स्त्री० बेचैनी । वि० व्याकुल ।
कुचैला७—वि० मैला, गंदा ।
कुछ—वि० थोड़ा, तनिक ।
कुजंत्र—पु० बुरा यंत्र, टोना ।
कुज—पु० मंगलग्रह । वृक्ष । वि० लाल । [बन ।
कुजलीवन—पु० हथियारों का-
कुजा—स्त्री० सीता जी ।
कुजाति—स्त्री० बुरी जाति । पु० नीच व्यक्ति ।
कुजोगी—वि० असंयमी ।
कुज्जा—पु० मिट्टी का बर्तन ।
कटंत—स्त्री० मार, कुटाई ।
कुट—पु० घर । गढ़ । पेड़ ।
कुटका७—पु० छोटा टुकड़ा ।
कुटज—पु० कुरैया । अगस्त्य-मुनि ।
कुटनई—स्त्री० कुटनपन ।
कुटनहारी—स्त्री० धान इत्यादि कूटने वाली ।
कुटना—पु० चुग़लखोर । दूत । पाखंडवृत्ति ।
कुटनी—स्त्री० स्त्रियों को फुसला कर पर-पुरुष से मिलाने वाली स्त्री ।
कुटवाल—पु० कोतवाल ।
कुटाई—स्त्री० कूटने का काम या मज़दूरी ।
कुटास—स्त्री० मारपीट ।

नोट*—'कु' हिन्दी का एक उपसर्ग है, जो शब्दों के पूर्व बुरा, नीच, अल्पार्थ अर्थों में प्रयुक्त होता है । जैसे कुचाल, कुजाति, कवोष्ण आदि ।

कुटिया—स्त्री० झोंपड़ी।
कुटिल ३-४—वि० खोटा, कपटी।
कुटिलकीट—पु० सर्प।
कुटिलाई—स्त्री० खोटापन।
कुटिहा—पु० मज़ाक़ करने वाला।
कुटी, कुटीर—स्त्री० झोंपड़ी।
कुटीचक—पु० संन्यासियों का एक भेद जो शिखासूत्र नहीं त्यागता।
कुटीचर—पु० कपटी। यति।
कुटुंब—पु० परिवार।
कुटुंबी५—पु०परिवार वाला।
कुटेक—स्त्री० अनुचित हठ।
कुटेव—स्त्री० बुरी आदत।
कुटौनी—स्त्री० दे० 'कुटाई'।
कुट्टनी—स्त्री० दे० 'कुटनी'।
कुट्टिम—पु० फ़र्श।
कुट्टी—स्त्री० चारे को गँड़ासे से काटना।
कुट्मल—पु० कली, कलिका।
कुठर—पु० खंभा।
कुठला७—पु० अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।
कुठांव,कुठाय—पु०बुरी जगह।
कुठाट—पु० बुरा साज़।
कुठार ७—पु० कुल्हाड़ी। परशु। भंडार।
कुठारपाणि—पु०परशुराम।
कुठाहर—पु०दे० 'कुठाँव'।
कुठारी—पु० भंडारी। स्त्री० कुल्हाड़ी।
कुडंगक—पु०वृक्षलताओं का समूह। छावनी, घर।
कुड़कुड़ाना—अक्रि०मन ही-मन चिढ़ना।[मन चिढ़ना।
कुड़बुड़ाना—अक्रि० मन ही-
कुडमल—पु० फूल की कली।
कुडरी—स्त्री० बिड़ई, गेंडुरी।
कुडव—पु० बीस तोले का माप।
कुडौल—वि० भद्दा, कुरूप।
कुड्य, कुद्य—पु० भीत, दीवार।
कुढंगा७—वि० भद्दा, बेढंगा।
कुढ़न—स्त्री० चिढ़। अव्यक्त-क्रोध। [जलना।
कुढ़ना९—अक्रि० चिढ़ना,
कुणप—पु० शव। बरछा। दुर्गन्ध, राँगा। हिंगोटवृक्ष।
कुणपाशी—पु० मुर्दा भक्षी-जन्तु। एक प्रेत।
कुणाल—पु० सम्राट् अशोक का पुत्र। [वृक्ष।
कुणि—पु०पीपल-पत्र। नन्दी-
कुतका—पु० (तु०) डंडा। अँगूठा।
कुतना—अक्रि० कूता जाना।
कुतप—पु० सूर्य। अग्नि। द्विज। अतिथि। [काटना।
कुतरना—सक्रि० दाँत से-
कुतरा—पु० कुत्ता।
कुतरू—पु० कुत्ते का बच्चा।
कुतर्क८—पु० बुरा तर्क। वितंडावाद।
कुतल—पु० पृथ्वीतल।
कुतवाल—पु० कोतवाल।
कुतवाली—स्त्री० कोतवाल का दफ़्तर।
कुताही—स्त्री०कमी, कसर।
कुतुक—पु०कौतुक। इच्छा।
कुतुप—पु० कुप्पी।
कुतुब—पु० (अ०) ध्रुवतारा। बहुत सी पुस्तकें।
कुतुबख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) पुस्तकालय। [यन्त्र।
क़ुतुबनुमा—पु०(अ०)दिग्दर्शक-
कुतुबफ़रोश—पु०(अ० फ़ा०) पुस्तक-विक्रेता।
कुतू—पु० कुप्पा।
कुतूहल ८—पु० आश्चर्य। तमाशा।
कुत्ता—पु० एक पशु,श्वान।
क़ुत्ब—पु० (अ०) ध्रुवतारा। नेता, नायक। [व्यास।
क़ुत्र—पु० (अ०) वृत्त का-
कुत्र—क्रि० वि० कहाँ।
कुत्सा—स्त्री० निन्दा, बुराई। [नीच।
कुत्सित—वि० निन्दित,
कुथ—पु० कथरी। हाथी की भूल। [फाँदना।
कुदकना—अक्रि० कूदना-
क़ुदरत—स्त्री०(अ०)ईश्वरीय-शक्ति, प्रकृति। कारीगरी।
क़ुदरती—वि० (अ०) प्राकृतिक, ईश्वरीय।
कुदर्शन—वि० बदसूरत।
कुदलाना—अक्रि० कूदना।
कुदाँव—पु० कुघात, धोखा।
कुदाई—वि० छली, धोखे-बाज़।
कुदाउ—पु० धोखा। [कूदना।
कुदान—पु० बुरा दान।
कुदाना—सक्रि० कूदने में प्रवृत्त कराना।
कुदाम—पु० खोटा सिक्का।

कुदाल७—स्त्री० फावड़ा।
कुदिन—पु० आपत्ति का समय। [नता।
कुदूरत—स्त्री० (फ़ा०) मलि-
कुदृष्टि—स्त्री० बुरी नज़र।
कुदेव—पु०ब्राह्मण। राक्षस।
कुद्दाल—स्त्री० कुदारी। कचनार।
कुद्रव—पु० कोदों अन्न।
क़ुदस, क़ुदसी—वि० (अ०) पवित्र।
कुधर-पु० पहाड़। शेषनाग।
कुधातु—स्त्री० बुरी धातु, लोहा। [दुर्व्यवहार।
कुधारा—स्त्री० कुरीति,
कुन—वि० (फ़ा०) करने-वाला।
कुनकुना—वि० कुछ गरम।
कुनबा—पु० परिवार।
कुनबी—पु० कुर्मी जाति।
कुनबा—वि० खराद का-काम करने वाला।
कुनहन—स्त्री० (फ़ा०) बारीकी। तथ्य।
कुनाई—स्त्री० लकड़ी का-बुरादा।
कुनाशक—पु० जवासा।
कुनित—वि० बजता हुआ, शब्दायमान। [कुविचार।
कुनीति—स्त्री० अन्याय,
कुनैन—स्त्री० ज्वर की एक अँग्रेज़ी दवा।
कुन्नियत—स्त्री० (अ०) वंश का नाम।
कुपंथ—पु० बुरा मार्ग।
कुपढ़—वि० मूर्ख।
कुपथ—पु० बुरा मार्ग। अपथ्य। [आहार।
कुपथ्य—पु० हानिकारक-
कुपना—अक्रि० नाराज़ होना।
कुपाठ—पु० बुरी सलाह।
कुपात्र—वि० अयोग्य।
कुपार—पु० समुद्र।
कुपित—वि० क्रुद्ध। नाराज़।
कुपूत—वि० अधम।
कुप्पा७—पु० चमड़े का बड़ा-सुमा बर्तन। [द्रव्य।
कुप्य—पु० ताँबा आदि-
कुफ़्फ़ार—पु० (अ०) बहु० 'काफ़िर' का।
कुफ़्र—पु० (अ०) मुसलमानी मत से भिन्न मत।
कुफ़्ल— पु० (अ०) ताला।
कुबंड—पु० धनुष। वि० विकृतांग। [वाला।
कुबड़ा७—वि० टेढ़ी पीठ-
कुबत—स्त्री० बुरी बात।
कुबरी—स्त्री० कंस की दासी, मंथरा।
कुबाक—पु०शाप, बुरा वाक्य।
कुबानी—पु० बुरा व्यापार। बुरी टेव।
कुबुद्धि—स्त्री० मूर्खता। वि० मूर्ख।
कुबेर—पु० दे० 'कुवेर'।
कुबेला—स्त्री० बुरा समय।
कुब्ज४—वि० कुबड़ा।
कुब्जक—पु० मालती।
कुब्जिका—स्त्री० दुर्गा। अष्टवर्षीया कन्या।
क़ुब्बा—पु० (अ०) गुंबद। कलश।
कुभृत—पु० बुरा नौकर। शेषनाग। पहाड़।
कुमंठी—स्त्री० लचीली-पतली टहनी।
कुमक—स्त्री० (तु०) सहायता। पक्षपात।
कुमकुम—पु० (अ०) केसर। गुलाल भरने का लाख का पोला लट्टू।
कुमति—स्त्री० दुर्बुद्धि।
क़ुमरी—स्त्री० (अ०) पंडुक की जाति की एक चिड़िया।
कुमार७—वि० कार्त्तिकेय। पाँच वर्ष का लड़का। युवराज। वि०अविवाहित।
कुमारक-पु० वरुण, वरुणा।
कुमाच—पु० रेशमी वस्त्र-विशेष। [रसा-ग्रंथ।
कुमारतंत्र—पु० बालचिकि-
कुमारिका—स्त्री० कुमारी।
कुमारिल—पु०एक प्रसिद्ध-दार्शनिक पंडित।
कुमारी—स्त्री० कन्या, पुत्री। घीकुआर का पौधा।
कुमारीपूजन—पु० देवी की एक प्रकार की पूजा जिसमें कुमारी कन्याओं का पूजन किया जाता है। [बदचलन।
कुमार्गी५—वि० लंपट,
कुमुख७—वि० बदसूरत।
कुमुद—पु० कुँई। लाल-कमल। विष्णु। एक-बन्दर।
कुमुदबंधु—पु० चन्द्रमा।
कुमुदबांधव—पु० चन्द्रमा।
कुमुदिनी—स्त्री० कुँई।

कुमुदिनीपति—पु० चन्द्रमा।
कुमोद—पु०, कुमोदिनी—स्त्री० कुंई।
कुँमेरु—पु० दक्षिणी ध्रुव।
कुम्बा—पु० यज्ञादि में अन्य जाति की दृष्टि से बचाने के लिए लगायी गयी टट्टी।
कुम्मैत—पु०(अ०) कालापन लिये लाल रँग या इस रँग का घोड़ा।
कुम्हड़ा—पु० काशीफल।
कुम्हड़ौरी—स्त्री० कुम्हड़ा मिली पीठी की बरी।
कुम्हलाना—अक्रि०मुरझाना।
कुम्हार७—पु०मिट्टी के बर्त्तन बनाने वाला, कुंभकार।
कुम्ही—स्त्री०पानी पर फैलने वाला एक पौधा।
कुयोनि—स्त्री० नीच योनि, तिर्यग्योनि। [लक्षण।
कुरंग७—पु० मृग। बुरा-
कुरंगम—पु० हिरन, मृग।
कुरंगलांछन—पु० चन्द्रमा।
कुरंगसार—पु० कस्तूरी।
कुरंगिन—स्त्री० हरिनी।
कुरंटक—पु०पीले फूल वाली-कटसरैया।
कुरंड—पु० एक खनिज-पदार्थ।
कुरआ—पु०(अ०) जुआ या रमल का पाँसा। किसी बात के निर्णय के लिए उठाई जाने वाली गोली।
कुरकुट—पु० मुर्ग़ा। छोटा-टुकड़ा। [रवा।
कुरकुटा—पु०रोटी का टुकड़ा।
कुरकुरा७—वि० करारा, भुरभुरा।
कुरच—पु०टिटिहरी, क्रौंच।
कुरता७—पु० एक पहनावा।
कुरना—अक्रि० ढेर लगना। गिरना।
.कुरबत—स्त्री०(अ०)समीपता।
.कुरबान—वि०(अ०)निछावर-किया हुआ।
.कुरबानी—स्त्री० (अ०)बलि।
कुरमा—पु० परिवार।
कुरर—पु०बगला। क्रौंच-पक्षी।
कुररी—स्त्री०, कुररा—पु० टिटिहरी। [करना।
कुरलना—अक्रि० कलरव-
कुरला—पु०क्रीड़ा। कुल्ला।
कुरव—पु०बुरा शब्द। एक-वृक्ष। [चना।
कुरवारना—अक्रि० खरों-
कुरसी—स्त्री० (अं०) ऊँची-चौकी। पुश्त, पीढ़ी।
कुरसीनामा—पु० वंशावली, वंश-परंपरासूचक पत्र।
कुरहा—पु० (अ०) पीबदार-घाव।
कुरा—पु० कटसरैया।
.कुरान—पु० (अ०) मुसल-मानों का धर्मग्रंथ।
कुराहर—पु० शोरगुल।
कुराही—पु० कुमार्गी
कुरिया—स्त्री० झोंपड़ी। ढेर।
कुरियाल—स्त्री० चिड़ियों का मौज लेना।
कुरिहार—पु० कोलाहल।
कुरी—स्त्री० वंश। समूह। टुकड़ा। टीला।
कुरीति—स्त्री० कुचाल।
कुरु—पु० पांडु, धृतराष्ट्र के पूर्वज एक राजा।
कुरुकेतु—पु० दुर्योधन।
कुरुक्षेत्र—पु० महाभारत का युद्धस्थल। [क्रोधित।
कुरुख—वि० नाराज़।
कुरुख—स्त्री० वक्रदृष्टि।
कुरुम—पु० कछुवा।
कुरुरना—अक्रि० बोलना।
कुरुविंद—पु० शीशा। माणिक। मोथा। उरद।
कुरुविस्त—पु० एक पल तौल में सुवर्ण।
कुरूप३—वि० बदसूरत।
कुरेदना—सक्रि० खोदना।
कुरेर—पु० कल्लोल, क्रीड़ा।
कुरेलना—सक्रि० कुरेदना।
कुरैना—सक्रि०ढेर लगाना।
कुरैया—स्त्री०इन्द्र जौ का पेड़।
.कुरैश—पु० (अ०) अरब का एक सम्प्रदाय जिसके मुहम्मद साहब थे। [वंश का।
.कुरैशी—वि० (अ०) .कुरैश-
कुरौना—सक्रि०ढेर लगाना।
.कुर्क़२—वि० (अ०) ज़ब्त-किया हुआ।
कुर्क़अमीन—पु०(अ०)क़ुर्की-करने वाला सरकारी कर्मचारी
.कुर्क़नामा—पु० ज़ब्ती का परवाना। [चिड़िया।
कुर्रा—स्त्री० एक प्रकार की-
.कुर्ब—पु० (अ०) समीपता।
कुर्मुक—पु० सुपारी।
कुर्मी—पु० एकजाति।
.कुर्ब-ए-अर्ज़—पु० (अ०)

पृथ्वी का गोला।
.कुर्रम—पु० (तु०) भड़ुआ, वेश्याओं का दलाल।
.कुर्रा—पु०(अ०)गेंद या गेंद की तरह गोल वस्तु।
.कुर्स५—पु०(अ०)सूर्य-मंडल। एक सिक्का। टिकिया।
कुलंग—पु०मुर्ग़ा। लंबी गर्दन-वाला एक जल-पक्षी। छलाँग, चौकड़ी।
कुलंजन—पु० एक पौधा।
कुल—पु० वंश। सजातीय-जन्तुओं का समूह। वि० (अ०) सब।
कुलक—पु० कडुआ तेंदुआ या कुचला।परवर। शिल्पियों का मुखिया।
कुलकना—अक्रि०आनन्दित-होना। [मर्यादा।
कुलकानि—स्त्री० वंश की·
कुलकुलाना—अक्रि० कुलकुल-शब्द करना।
कुलक्षण४-७—वि० बुरे लक्षण-वाला, बदचलन।
कुलचा—पु० मूलधन।
कुलजा—स्त्री० कुलवती स्त्री।
.कुलज़ुम—पु० (अ०) लाल-सागर।
कुलझ—पु० राय, भाट।
कुलटा—स्त्री० वि० छिनाल, व्यभिचारिणी। [सुरमा।
कुलत्थिका—स्त्री० काला-
कुलथी—स्त्री० एक अन्न।
कुलधर—पु० पुत्र।
कुलधर्म—पु० कुलाचार।
कुलना—अक्रि० टीसना।
कुलपति—पु०घर का मालिक। वह ऋषि जो दस हज़ार छात्रों को पढ़ावे तथा अन्नदान दे। चांसलर। [स्त्री।
कुलपालिका—स्त्री० कुलवती-
कुलफ़—पु० ताला।
कुलफ़त—स्त्री०(अ०)चिंता।
कुलफ़ा—पु०(अ०)एक साग।
कुलफ़ी—स्त्री० चोंगे में जमाया हुआ बर्फ़।
कुलवधू—स्त्री० मर्यादा से रहने वाली स्त्री।
कुलबुलाना—अक्रि०डोलना। व्याकुल होना।[व्याकुलता।
कुलबुलाहट—स्त्री० चंचलता।
कुलमुख़्तार—पु० (फ़ा०) पूर्ण अधिकारी।
कुलवंत७—वि० कुलीन।
कुलवान्१३—वि० कुलीन।
कुलश्रेष्ठी—पु०कारीगरों का मुखिया।
कुलसंभव—वि० कुलीन।
कुलस्त्री—स्त्री० कुलवती।
कुलह, कुलहा—स्त्री० टोपी। शिकारी चिड़ियों की आँख पर का ढक्कन।
कुलही—स्त्री०बच्चों की टोपी।
कुलांगना—स्त्री०कुलीन स्त्री।
कुलांगार—पु० कुल-नाशक।
कुलांच—स्त्री० (फ़ा०)छलाँग, चौकड़ी।
कुलाचार—पु० कुलरीति।
कुलाचार्य—पु० पुरोहित।
कुलाधि—स्त्री० प.प।
.कुलाबा—पु० (अ०) चौखट के साथ किवाड़ में जड़ा-हुआ लोहे का काँटा।
कुलाय—पु० घोंसला।
कुलाल७—पु०कुम्हार।
कुलाली—स्त्री०कालासुरमा।
कुलाह—स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार की ऊँची टोपी।
कुलंग—पु०एक पक्षी।
कुलिक—पु० शिल्पकार। जाति का मुखिया।
कुलिया—स्त्री० तङ्ग गली।
कुलिश—पु० हीरा। वज्र।
कुली—पु० (तु०) मज़दूर। सं० भटकटैया।
कुलीन३—वि० अच्छे घराने का। पु० आर्य, सज्जन।
कुलीर—पु० केकड़ा।
कुलुफ़—पु० ताला।
कुलेल—स्त्री०क्रीड़ा, कलोल।
कुलेलना—अक्रि० किलोल-करना।
कुल्फ़ी—स्त्री० (अ०) चोंगे में जमाया हुआ दूध, मलाई आदि। [खिचड़ी।
कुल्माष—पु० अधपके जौ।
कुल्य—पु० हाड़, अस्थि।
कुल्या—स्त्री०नहर। नाला। कुलवती स्त्री।
कुल्ला—पु०मुँह में पानी भर कर फेंकना।
कुल्लियात—पु०(अ०) किसी ग्रंथकार की समस्त कृतियों का संग्रह।
कुल्ली—स्त्री०(अ०) कुल्ली-करना। काकुल, .ज़ुल्फ़। वि० सब।
कुल्हड़—पु० पुरवा, करई।

कुल्हरा—पु० बड़ा कुल्हड़।
कुल्हाड़ी—स्त्री०छोटाकुल्हाड़ा।
कुल्हिया—स्त्री०छोटा कुल्हड़।
कुव—पु० कमल।
कुवल—पु० कुमुद या साधारण कमल। बेर,बदरीफल।
कुवलय—पु० नील कमल। भूमंडल।
कुवलयापीड—पु० कंस का हाथी। एक राक्षस।
कुवाच्य—पु० गाली। वि० अश्लील। [भाषी।
कुवाद, कुवादी५—पु० अशुभ-
कुविंद—पु० जुलाहा, कोली जो कपड़ा बिनता है।
कुविचारी५—वि० बुरे विचार-वाला। [की टोकरी।
कुवेणी—स्त्री० मछली रखने-
कुवेर—पु० धनपति।
कुव्वत—स्त्री० शक्ति।
कुश४-७—पु० काँस की तरह की घास। लव के बड़े भाई। जुआ में बैल जोतने की रस्सी। [छोटे भाई।
कुशध्वज—पु०राजाजनक के-
कुशा—वि० (फ़ा०) खोलने या प्रसन्न करने वाला।
कुशान—पु० (अ०) तकिया।
कुशल४—वि० चतुर। पु० राज़ी ख़ुशी, कल्याण।
कुशलक्षेम—पु० राज़ी-ख़ुशी।
कुशलता—स्त्री० चतुराई। राज़ी-ख़ुशी।
कुशलाई—स्त्री० कुशलता।
कुशली—वि० राज़ी-ख़ुशी। चतुर।

कुशस्थली—स्त्री० द्वारकापुरी।
कुशाग्र—वि० तीव्र। नुकीला। पैना। [विस्तार।
कुशादगी—स्त्री० (फ़ा०)
कुशादा—वि०(फ़ा०) विस्तृत।
कुशिक—पु० विश्वामित्र। हल का फाल। साखू।
कुशी—स्त्री० लोहे की बनी वस्तु,फाल,फार। वाल्मीकि-ऋषि।
कुशीनार—पु० वह स्थान जहाँ पर बुद्ध का निर्वाण हुआ था। [गायक।
कुशीलव—पु० कवि। नट,
कुशूल—पु० कुठला।
कुशूलधान्यक—पु० वह गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष के लिए अन्न संचित हो। [कमल।
कुशेश,कुशेशय—पु०साधारण-
कुशोदक—पु० तर्पण।
कुश्ता—पु० (फ़ा०) धातु की भस्म। प्रेमी। वि० मारा गया।
कुश्ती—स्त्री०(फ़ा०)मल्लयुद्ध।
कुष्ठ—पु० कोढ़। कूट।
कुष्ठी५—पु० कोढ़ी।
कुष्मांड—पु० कुम्हड़ा, पेठा।
कुसंगति—स्त्री० बुरी सोहबत।
कुसंस्कार—पु०बुरी वासना।
कुस—स्त्री० (फ़ा०)योनि,भग।
कुसमय—पु० बुरा समय।
कुसलई—स्त्री० चतुरता।
कुसलाई—स्त्री० निपुणता। राज़ी-ख़ुशी।
कुसवार—पु० रेशम का कीड़ा या कोया।

कुसाइत—स्त्री० बुरा समय।
कुसाखी—पु० बुरा पेड़।
कुसियार—पु० अधिक रस-वाली ऊख।
कुसीद—पु० सूद। ब्याज पर दिया हुआ धन।
कुसीदिक—वि० सूदख़ोर
कुसुंभ—पु० कुसुम। केसर।
कुसुंभी—वि० लाल रंग का।
कुसुम—पु० फूल। रजो-दर्शन। [प्राचीन नाम।
कुसुमपुर—पु० पटना का
कुसुमबाण—पु० कामदेव।
कुसुमांजन—पु०अंजन विशेष।
कुसुमाकर—पु० वसंत। उद्यान।
कुसुमायुध—पु० कामदेव।
कुसुमावलि—स्त्री० फूलों का गुच्छा।
कुसुमित—वि० फूला हुआ।
कुसुमेषु—पु० कामदेव।
कुसूत—पु० बुरा सूत, कुप्रबंध।
कुसूफ़—पु०(अ०)सूर्यग्रहण। दुर्दशा।
कुसूर—स्त्री० बहु० 'कसर' का।
कुसृति—स्त्री० कपट
कुहँ कुहँ—पु० केसर
कुहँचा—पु० पहुँचा, कलाई।
कुहक—पु० धोखा। मुर्ग़े का शब्द। ['कुहुकना'।
कुहकना—अक्रि० दे०
कुहकिनि—स्त्री० मधुर-भाषिणी चिड़िया।
कुहना—सक्रि० मारना। पु० दम्भ आदि से किया

गया ध्यान। [की गाँठ।
कुहनी—स्त्री० बाहु के बीच-
कुहर—पु० राक्षस। [पक्षी।
कुहर—पु० छेद। एक शिकारी-
कुहरा—पु० वायु में मिले हुए जमी हुई भाप के जल-कण। [हाहाकार।
कुहराम—पु० रोना-पीटना।
कुहाड़ा—पु० बड़ी कुल्हाड़ी।
कुहाना—अक्रि० रिसाना।
कुहासा—पु० कुहरा।
कुही—स्त्री० बाज़ पक्षी।
कुहुकंठ—पु० कोकिल।
कुहुक—पु० पक्षियों का कूजना।
कुहुँकना—अक्रि० कूँजना।
कुहू—स्त्री० अमावस्या। मोर या कोयल की बोली।
अँधेरी रात। [कौंखना।
कूँख—स्त्री० कोख, गर्भ।
कूँचना—सक्रि० कुचलना।
कूँचा—पु० झाड़ू, बढ़नी।
कूँची—स्त्री० ब्रुश। कुर्जा।
कूँज—पु० क्रौंच पक्षी।
कूँजना—अक्रि० कुहुकना।
कूँड—पु० शिरस्त्राण। मिट्टी या लोहे का चौड़ा बर्तन।
कूँड़ा—पु० मिट्टी का गहरा बर्तन, गमला।
कूँड़ी—स्त्री० पथरी। गेंडुरी।
कूँथना—अक्रि० कराहना।
कूँदना—सक्रि० खरादना।
कू, कूए—पु०(फ़ा०) गली।
कूईं—स्त्री० कुमुदिनी।
कूक—स्त्री० सुरीली ध्वनि।
कूकना—अक्रि० चिल्लाना, बोलना, कुहुकना।
कूकर७—पु० कुत्ता।
कूकरकौर—पु० कुत्ते को दिया हुआ जूठा भोजन।
कूकस—पु० भूसी। [पंथ।
कूका—पु० सिक्खों का एक-
कूकुद—पु० वह पिता जो वर को वस्त्राभरण सहित आदरपूर्वक अपनी कन्या दान दे।
कूच—पु० (फ़ा०) प्रस्थान।
कूचा—पु० (फ़ा०) छोटा-रास्ता। झाड़ू। क्रौंच पक्षी।
कूचिका, कूची—स्त्री० ब्रुश। तूलिका।
कूज—स्त्री० मधुर-ध्वनि।
कूज़—वि० (फ़ा०) टेढ़ा।
कूजना—अक्रि० मधुर शब्द-करना।
कूज़पुश्त—वि० (फ़ा०) कुबड़ा।
कूज़ा—पु० बेले का फूल। कुल्हड़। कुल्हड़ में जमायी हुई मिश्री।
कूजित—वि० ध्वनित।
कूट३—पु० पहाड़ की ऊँची-चोटी। धोखा। गुप्त भेद। घड़ा। हथौड़ा। स्त्री० कुटी। वि० झूठा।
कूटकर्म—पु० छल, धोखा।
कूटकर्मा—वि० छली।
कूटता—स्त्री० छल, कपट।
कूटना—सक्रि० मारना। कुचलना।
कूटनीति—स्त्री० चाल। राज-नीतिक चालबाज़ी।
कूटनीतिक—वि० चालबाज़।
कूटपाश—पु० पक्षी पकड़ने का फन्दा।
कूटयंत्र—पु० कावक, पींजड़ा।
कूटयुद्ध—पु० वह युद्ध जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय।
कूटलेख १२—पु० जाली-लिखावट।
कूटसाक्षी—पु० झूठा गवाह।
कूटस्थ—वि० आला दर्जे का। गुप्त। अटल। अविनाशी।
कूट्टू—पु० अन्न फलाहार विशेष।
कूड़ा—पु० कनवार, कचड़ा।
कूडि—स्त्री० लोहे की टोपी।
कूढ़—वि० मूर्ख।
कूढ़मग़ज़—वि० मन्दबुद्धि।
कूत—स्त्री० अन्दाज़ा। [करना।
कूतना—सक्रि० अनुमान-
कूदना—अक्रि० लाँघ जाना।
कून—स्त्री० (फ़ा०) गुदा।
कूप—पु० कुआँ।
कूपक—पु० सूखी नदी का गड्ढा। नौका बाँधने का खूँटा।
कूपमंडूक—पु० कुएँ का मेंढक। वि० अनुभवहीन।
कूपमंडूकत्व—पु० अत्यल्प जानकारी।
कूपार—पु० समुद्र।
कूब, कूबड़—पु० टेढ़ापन।
कू-बकू—क्रि० वि० (फ़ा०) दर दर, गली-गली।
कूबरी—स्त्री० कंस और कैकेयी की दासी का नाम।
कूर १-३—वि० निर्दय। मूर्ख। [सैनिक।
कूरची—पु०(तु०) हथियारबंद-

कूरा ७—पु० ढेर। भाग, अंश।
कूर्च—पु० भौंहों के मध्य का स्थान। मोरपङ्ख। कूँची। मस्तक। झूठ।
कूर्चिका—स्त्री० कूँची। कुञ्जी।
कूर्दन—पु० गेंद खेलना।
कूर्पर—पु० कोहनी।
कूर्पासक—पु० स्त्रियों की चोली।
कूर्म—पु० कच्छप। पृथ्वी।
कूर्मपुराण—पु० एक पुराण।
कूर्मपृष्ठ—पु० कछुए की पीठ। ऊँची नीची भूमि।
कूल—पु० किनारा, समीप।
कूलद्रुम—पु० नदी तट का वृक्ष।
कूला—पु० चूतड़।
कूलिका—स्त्री० सितार के नीचे का भाग।
कूलिनी—स्त्री० नदी।
कूल्हा—पु० चूतड़।
कूवर—पु० रथ में सारथी के बैठने तथा जुआ बाँधने का स्थान। [एक ऋषि।
कूष्मांड—पु० कुम्हड़ा, पेठा।
कूह—स्त्री० चीख़।
कूही—स्त्री० पक्षी विशेष।
कृकलास—पु० गिरगिट।
कृकवाकु—पु० मुरग़ा।
कृच्छ्र—पु० कष्ट। वि० कष्ट-साध्य।
कृत—वि० किया हुआ। पु० करनी। सतयुग। चार की संख्या।
कृतक—वि० नक़ली।
कृतकर्मा—वि० प्रवीण, शिक्षित।
कृतकाम—वि० कृतार्थ।
कृतकार्य ६—वि० सफल।
कृतकृत्य ३—वि० कृतार्थ, सफल मनोरथ।
कृतघ्न३—वि० नमकहराम।
कृतघ्नी—वि० दे० 'कृतघ्न'।
कृतज्ञ ३—वि० अहसानमंद।
कृतदंड—पु० यमराज।
कृतपुंख—पु० अच्छा तीर-न्दाज़।
कृतमाल—पु० अमिलतास।
कृतमुख—वि० चतुर, विद्वान्।
कृतयत्न—वि० यत्नशील।
कृतयुग—पु० सत्ययुग।
कृतलक्षण—वि० गुणों से विख्यात। [का एक योद्धा।
कृतवर्मा—पु० महाभारतकाल-
कृतविद्य—वि० पंडित, शास्त्रज्ञ।
कृतवीर्य—पु० एक यदुवंशी-राजा।
कृतवेदी—वि० कृतज्ञ।
राजा। - [दाज़। चतुर।
कृतहस्त—वि० अच्छा तीरं-
कृतहीन—वि० कृतघ्न। [हुए।
कृतांजलि—वि० हाथ जोड़े-
कृतांत—पु० यमराज। मृत्यु।
कृताकृत—पु० सोना-चाँदी। अधूरा कार्य।
कृतात्मा—वि० शुद्धात्मा।
कृतात्यय—पु० सांख्यमतानुसार भोग द्वारा कर्मों का नाश।
कृताभिषेका—स्त्री० पटरानी।
कृतार्थ—वि० सफल मनोरथ, संतुष्ट। [पारंगत।
कृतास्त्र—वि० धनुर्विद्या में-
कृति—स्त्री० करतूत। रचना। प्रयत्न।
कृतिकर—पु० रावण।
कृतिजन्य—वि० अपने ही कार्य से बढ़ा हुआ।
कृतिशील३—वि० कार्यशील, उद्योगी।
कृती—वि० कुशल, पंडित। पुण्यवान्। प्रयत्नशील।
कृत्त—वि० खंडित, कटा हुआ।
कृत्ति—स्त्री० मृग का चमड़ा।
कृत्तिका—स्त्री० एक नक्षत्र। गाड़ी।
कृत्तिवास—पु० महादेव जी।
कृत्य—पु० कर्म।
कृत्यका—स्त्री० दुष्टा स्त्री।
कृत्या—स्त्री० दुष्टा स्त्री। एक तांत्रिक क्रिया।
कृत्रिम—वि० नक़ली।
कृत्स्न—वि० समग्र, संपूर्ण।
कृदंत—पु० 'कृत्' प्रत्ययांत-शब्द।
कृपण३—वि० कंजूस। नीच।
कृपनाई—स्त्री० कंजूसी।
कृपया—क्रि० वि० कृपापूर्वक।
कृपा—स्त्री० दया।
कृपाण—पु० तलवार।
कृपाणिका—स्त्री० कटारी।
कृपाणी—स्त्री० स्वर्ण-पत्र काटने की क़ैंची। [अधिकारी।
कृपापात्र—वि० कृपा का-
कृपायतन—वि० अतिकृपालु।
कृपालु३—वि० दयावान्।
कृपीटयोनि—पु० अग्नि।
कृमि—पु० छोटा कीड़ा।
कृमिकोशोत्थ—पु० रेशमी वस्त्र।

कृमिज—वि० कीड़े से उत्पन्न।
कृमिल—वि० कीड़ों से युक्त।
कृमिला—स्त्री० अधिक संतान पैदा करने वाली स्त्री।
कृश३—वि० दुबला। छोटा।
कृशताई—स्त्री० दुबलापन।
कृशर—पु० खिचड़ी। लोबिया मटर।
कृशरान्न—पु० खिचड़ी।
कृशांग७—वि० दुबला।
कृशाक्षि—स्त्री० मन्द दृष्टि।
कृशानु—पु० अग्नि।
कृशानुरेता—पु० शिवजी।
कृशाश्वी—पु० नट।
कृशित—वि० दुबला-पतला।
कृशोदरी—स्त्री० पतली कमर वाली स्त्री।
कृषक—पु० किसान।
कृषाण—पु० किसान।
कृषि—स्त्री० खेती।
कृषिक—पु० हल जोतने का फार।
कृषिकर्म—पु० खेती।
कृषिजीवी—पु० किसान।
कृषीवल—पु० किसान।
कृष्ट—पु० हल से जोता हुआ खेत।
कृष्टि—पु० पंडित, विद्वान्।
कृष्ण—पु० वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के अवतार थे। वि० काला। नीला।
कृष्णद्वैपायन—पु० व्यासजी।
कृष्णपक्ष—पु० अँधेरा पाख।
कृष्णफल—पु० करौंदा।
कृष्णला—स्त्री० घुँघची।
कृष्णलोहित—वि० कत्थई।
कृष्णलौह—पु० चुम्बक।
कृष्णवक्त्र—पु० लंगूर।
कृष्णवर्मा—पु० अग्नि।
कृष्णसार—पु० काला हिरन। शीशम।
कृष्णा—स्त्री० पिप्पली। द्रौपदी। आँख की पुतली।
कृष्णाग्रज—पु० बलराम।
कृष्णाफल—पु० काली मिर्च।
कृष्णाष्टमी—स्त्री० भादों। कृष्ण अष्टमी।
कृष्णिका—स्त्री० राई। श्यामा-चिड़िया। [भूमि)।
कृष्य—वि० खेती के योग्य-
कृसर—पु० खिचड़ा।
केंचली, केंचुली—स्त्री० सर्प के शरीर का झिल्लीदार-चमड़ा। [कीड़ा।
केंचुआ—पु० एक बरसाती-
केंद्र—पु० मध्य बिन्दु। प्रधान स्थान।
केंद्री—वि० केंद्र में स्थित।
केंद्रीभूत—वि० एकत्रित। संकीर्ण। [अधीन।
केंद्रीयकरण—वि० केन्द्र के-
के—सर्व० कौन।
केउ—सर्व० कोई वि० कोई।
केउर—पु० दे० 'केयूर'।
केक—पु० (अं०) चपाती, टिकिया।
केकड़ा—पु० एक जल-जन्तु।
केकय—पु० प्रचीन काल का एक देश। दशरथ के श्वसुर। [ताना।
केकर—वि० कंजा, ऐंचा-
केका—स्त्री० मोर की बोली।
केकी५—पु० मोर।
केड़ा—पु० कोंपल। अंकुर।
केत—पु० घर। ध्वजा। केतकी। [कितने, बहुत।
केतक—पु० केवड़ा। वि०
केतकी—स्त्री० केवड़े का फूल या पौधा।
केतन—पु० ध्वजा, चिह्न। घर, स्थान। निमंत्रण।
केतिक—वि० कितने।
केतु—पु० निशान, पताका। एक ग्रह। पुच्छल तारा।
केतुतारा—पु० पुच्छल तारा।
केतुमान्१३—वि० तेजवान्। ध्वजाधारी।
केतो—वि० कितना।
केदली—पु० कदली वृक्ष।
केदार—पु० कियारी, थाँवला। [एक तीर्थ।
केदारनाथ—पु० हिमालय में-
केना—पु० तरकारी। छोटा-मोटा सौदा।
केनाल—पु० (अं०) नहर।
केनिपातक—पु० पतवार।
केम—पु० कदंब का पेड़।
केमरा—पु० (अं०) फ़ोटोग्राफ़ का यंत्र।
केयूर—पु० भुजबंद।
केर७—पु० केला। (फ़ा०) पुरुषेंद्रिय, लिंग।
केरल—स्त्री० नवीन विद्या।
केराना—पु० नमक, मसाला आदि चीज़ें।
केराव—पु० मटर के सदृश एक अन्न।

केरोसिन—पु० (अं०)मिट्टी-का तेल ।
केला—पु०एक वृक्ष या उसका फल,कदली । केलि, क्रीड़ा ।
केलि—स्त्री० रति, क्रीड़ा ।
केलिकला—स्त्री० रति । सरस्वती की वीणा ।
केलिगृह—पु० नाटकशाला ।
केवट—पु० मल्लाह ।
केवड़ा—पु० एक सुगंधित पौधा या उसका फूल ।
केवल—क्रि० वि० सिर्फ़ । वि० श्रेष्ठ ।
केवलव्यतरेकी—पु० कार्य से कारण का अनुमान करना ।
केवलात्मा—पु० ईश्वर ।
केवलान्वयी—पु० कारण से कार्य का अनुमान ।
केवली—पु० मुक्ति का अधिकारी साधु । वि० एकाकी ।
केवाँच—स्त्री० सेम की तरह की एक बेल ।
केश—पु० कमल । केतकी, केवड़ा । बहाना । संकोच ।
केश—पु० किरण । वरुण । सूर्य । बाल । विश्व ।
केशकर्म—पु० बाल दुरुस्त करने की कला ।
केशकीट—पु० जूँ ।
केशट—पु० विष्णु । कामदेव का एक बाण । खटमल ।
केशपाश—पु० बालों की लट।
केशपाशी—स्त्री० चोटी ।
केशमार्जनी—स्त्री० कंघी ।
केशरंजन-पु० भँगरैया का पौधा ।
केशर—पु० दे० 'केसर' । फूलों की पंखुड़ी ।ज़ाफ़रान ।
केशराज—पु० भँगरैया ।
केशरी—पु० सिंह । घोड़ा ।
केशव—पु० कृष्ण, विष्णु ।
केशविन्यास—पु० बालों की सजावट ।
केशवेश—पु० केश बाँधने की रचना (पटिया) ।
केशांत—पु०मुंडन । [वाला ।
केशिक—वि० सुन्दर बाल-
केशिनी—स्त्री०सुन्दर बालोंवाली स्त्री । अप्सरा ।रावण की माता । दमयन्ती की सहेली ।
केशी—पु० घोड़ा । सिंह । कंस का एक राक्षस । वि० सुन्दर बालों वाला ।
केसर—पु० एक सुगंधित-द्रव्य। फूल के मध्य के रेशे । घोड़े की गर्दन के बाल । मौलसिरी ।
केसरिया—वि० केसर के रंग का, पीला ।
केसरी—पु० सिंह, शेर ।
केसारी—पु० एक कदन्न ।
केसू—पु० टेसू, पलाश का फूल ।
केहरिनहा—पु० बघनहा ।
केहरी—पु० सिंह । घोड़ा ।
केहा—पु०मोर । [की गाँठ
केहुनी—स्त्री० बाँह के बीच-
केहूँ—क्रि०वि०किसी प्रकार।
कैंकर्य—पु० ख़िदमत ।
कैंचा—वि० ऐंचाताना ।
क़ैंची—स्त्री० (तु०) कतरनी ।
कैंड़ा—पु० माप । ढङ्ग ।
कैंप—पु० (अं०) पड़ाव । छावनी ।
कैंसिल—वि० (अं०) रद्द ।
कै—वि० कितने । [वमन ।
क़ै—स्त्री० (अ०) उलटी,
कैकस—पु० राक्षस ।
कैकसी—स्त्री० रावण की माता । [की रानी ।
कैकेयी—स्त्री० राजा दशरथ-
कैटभ—पु० एक राक्षस ।
कैटभजित्—पु० विष्णु ।
कैटभारि—पु० विष्णु ।
कैटलाग-पु०(अं०) सूचीपत्र।
कैतव—पु० धोखा । जुआ । धतूरा । वि० धोखेबाज़ । जुआरी ।
क़ैतून—स्त्री० (अ०) एक प्रकार का सुनहली, रूपहली गोटा ,
कैथ, कैथा—पु० एक फ़ल ।
कैथी—स्त्री० लिपि विशेष ।
क़ैद—स्त्री० (अ०) कारावास ।
क़ैदख़ाना—पु० बंदीगृह ।
क़ैदतनहाई—स्त्री० (अ०) कालकोठरी की सज़ा ।
कैदार्य—पु० खेत-समूह ।
क़ैदी—पु० (अ०) बन्दी ।
कैधौं—अव्य० अथवा ।
कैप—स्त्री० (अं०) टोपी ।
कैपिटल—पु० (अं०) पूँजी । राजधानी ।
कैफ़—पु० (अ०) एक प्रकार का नशा । अव्य० क्योंकर ।
कैफ़ियत—स्त्री० (अ०)समाचार, तफ़सील ।

कैफ़ी—वि०(अ०) नशेबाज़।
कैबर—स्त्री० तीर का फल।
कैबा—क्रि० वि० कई बार।
कैबार—पु० किवाड़।
कैर—पु०करील। [ज्वारी।
कैरव७—पु०कुमुद। शत्रु।
कैरवाली—स्त्री० कुमुदिनी।
कैरवि—पु० चन्द्रमा।
कैरवी—स्त्री० चाँदनी। मेथी।
कैरा—पु० भूरा रँग। एक तरह का बैल। वि० भूरे रंग का। [टहनी।
कैल—पु० अंकुर, कोंपल।
कैलास—पु० हिमालय की एक चोटी।
कैलासपति—पु० शिवजी।
कैलासवास—पु० मृत्यु।
कैवत—पु० केवट।
कैवर्त—पु०मल्लाह।धीवर।
कैवल्य—पु०मुक्ति,निर्वाण।
कैश—पु० (अं०) नक़दी।
कैशियर—पु०(अं०)रोकड़िया।
कैश्य—पु० केशों का समूह।
क़ैस—पु० मजनूँ।
क़ैसर—पु० (अ०) सम्राट, बादशाह।
कैसा७—वि०किस प्रकार का।
कैसिक—क्रि० वि० किस-प्रकार, कैसे।
कोंछा—स्त्री०कमर में खोंसी जाने वाली आँचलकीगाँठ।
कोंई—स्त्री० कुमुदिनी।
कोंचना—सक्रि० चुभाना।
कोंचा—पु० बहेलियों की चिड़िया फँसाने की लंबी छड़।
कोंछ—पु० अंचल का एक भाग।
कोंछना, कोंछियाना—सक्रि० साड़ी का भाग चुनकर नाभि के नीचे खोंसना।
कोंढ़ा७—पु०लोहे का कुंडा।
कोंप—स्त्री० दे० 'कोंपल'।
कोंपर—पु० डाल का पका आम। [अंकुर।
कोंपल—स्त्री० नई पत्ती,
कोंवर—वि० कोमल, नरम।
कोंहड़ा—पु० काशीफल।
को—सर्व० कौन। कर्म, सम्प्रदान तथा सम्बन्ध कारक की विभक्ति।
कोआ—पु० रेशमी कीड़े का घर। आँख का कोना।
कोइरी—पु० काछी।
कोइल—स्त्री० कोयल।
कोइला—पु० दे० 'कोयला'।
कोइली—स्त्री० आम की गुठली।दाग़ी कच्चा आम।
कोई—सर्व० अज्ञात मनुष्य या वस्तु। वि० एक भी। क्रि० वि० लगभग।
कोउ—सर्व० वि० एक भी। क्रि० वि० लगभग। दे० 'कोई'
कोउक—सर्व० कोई एक।
कोक७—पु० चकवा पक्षी। विष्णु। मेंढक।कोकशास्त्र के रचयिता। [का नीला रंग।
कोकई—पु०गुलाब की झलक-
कोककला—स्त्री० रतिविद्या।
कोकदेव—पु० कोकशास्त्र के रचयिता एक पंडित।
कोकनद—पु० लाल कमल।
कोकनदच्छवि—पु० लाल कमल के समान वर्ण।
कोकशास्त्र—पु० कामशास्त्र।
कोका७—पु०चकवा। (फ़ा०) दूध भाई(एक ही दाई या माँ का दूध पीने वाले बच्चे)।
कोकाबेली—स्त्री० नीली-कुमुदिनी।
कोकाह—पु० सफ़ेद घोड़ा।
कोकिल४—स्त्री० कोयल।
कोकीन—स्त्री० एक मादक-द्रव्य।
कोको—पु० कौआ। [कुक्षि।
कोख—स्त्री० उदर, गर्भ,
कोखजली—वि० स्त्री० जिस की संतान जीवित न रहे।
कोखबंद—स्त्री० वि० बाँझ।
कोगी—पु० एक जानवर।
कोच—पु०घोड़ा-गाड़ी। गद्देदार पलंग। बेंच।
कोचक—वि० (फ़ा०) छोटा।
कोचवान—पु० घोड़ा गाड़ी-हाँकने वाला।
कोछा, कोछी—स्त्री० गोद।
कोजागर—पु० शरत्पूर्णिमा।
कोट—पु० दुर्ग। परकोटा। एक पहनावा। समूह।वि० करोड़।
कोटपाल—पु० दुर्गरक्षक।
कोटर—पु० पेड़ की खोंड़र।
कोटवार—पु० दुर्ग-रक्षक।
कोटवारण—पु०चारदीवारी।
कोटवी—स्त्री० नग्न स्त्री।
कोटि—स्त्री०धनुष का सिरा।

श्रेणी। समूह। उत्तमता।
वि० करोड़ (सौ लाख)।
कोटिक-वि०करोड़ों,अगणित।
कोटिशः—क्रि० वि० करोड़ों बार। अनेक प्रकार से।
कोटीश—वि० करोडपति।
कोठरी—स्त्री० छोटा कमरा।
कोठा—पु० बड़ी कोठरी।
कोठार—पु० भंडार।
कोठारी—पु० भंडारी।
कोठी—स्त्री० बड़ा तथा पक्का मकान। लेन-देन की बड़ी दूकान।
कोठीवाला—पु० बड़ा व्यापारी, साहूकार।
कोड़ना—सक्रि० खोदना।
कोड़ा-पु०चाबुक। चेतावनी।
कोड़ी-स्त्री०बीस का समूह।
कोढ़—पु० रोग विशेष।
कोण—पु० कोना। सोलह-रत्ती वज़न की तौल।
कोणस्थ—वि० कोने में बैठा-हुआ।
कोत—स्त्री० शक्ति। दिशा।
कोतल—पु० (फ़ा०)सजाया-हुआबिनासवारी का घोड़ा। राजा की सवारी का घोड़ा।
कोतवाल—पु० पुलिस का एक अफ़सर। [का दफ़्तर।
कोतवाली—स्त्री० कोतवाल-
कोता ७—वि० छोटा,थोड़ा।
कोताह—वि० (फ़ा०) कम, छोटा।
कोताह-गर्दन—वि० (फ़ा०) छोटी गर्दन वाला। धूर्त।
त्रुटि, कमी।
कोति—स्त्री० दिशा, तरफ़।
कोथली—स्त्री० थैली, बसनी।
कोदंड—पु० धनुष।
कोद, कोध—स्त्री० दिशा, तरफ़। [ख़राब अन्न।
कोदव, कोदों—पु० एक-
कोना—पु० नुकीला सिरा। कोण।
कोनिया—स्त्री० पटिया जो दीवार आदि के कोनों में लगायी जाती है।
कोप—पु० क्रोध।
कोपना९—अक्रि० क्रुद्ध होना। स्त्री०क्रोध करने वाली स्त्री।
कोपभवन—पु० नाराज़ मनुष्य के रहने का स्थान।
कोपर—पु० टपका आम। बड़ा थाल।
कोपि—वि० कोई भी।
कोपी—वि० क्रोधी।
कोपीन-पु० लँगोटी, काँछा। पाप, अनुचित-कार्य।
कोफ़्त—स्त्री० (फ़ा०) कष्ट, दुःख।
कोफ़्ता—पु० (फ़ा०) कूटे हुए मांस का बना हुआ एक प्रकार का क़बाब। वि० कूटा हुआ। [आम।
कोबर—पु० डाल का पका-
कोबा—पु० (फ़ा०) काठ की मोंगरी।
कोबी—स्त्री० दे० 'गोभी'।
कोमल ३—वि० नाज़ुक। सुन्दर। नरम, मृदुल।
प्रसाद गुण वाली वर्ण-योजना।
कोमलावृत्ति—स्त्री० प्रसाद गुणसम्पन्न वर्ण-योजना।
कोय—सर्व० कोई।
कोयल—स्त्री० कोकिला।
कोयला—पु० लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा।
कोयष्टिक—पु० टिटहरी।
कोया—पु० दे० 'कोआ'।
कोरंगी-स्त्री०छोटी इलायची।
कोरंजा-पु० मज़दूरी के एवज़ में दिया हुआ अन्न।
कोर—स्त्री० किनारा। द्वेष। पंक्ति, क़तार। वि० (फ़ा०) अन्धा।
कोरक—पु०कली। मृणाल।
कोरकसर—स्त्री०कमी, ऐब।
कोरनमक—वि० (फ़ा०) कृतघ्न।
कोरना—सक्रि० खोदना।
कोरमिश—स्त्री० (तु०) झुक कर सलाम करना।
कोरम—पु०(अं०) कार्यवाही के लिए किसी सभा के सदस्यों की निश्चित संख्या।
कोरमा—पु० (तु०) भुना हुआ मांस।
कोरवा—पु० गोद।
कोरस—पु० (अं०) थियेटर आदि में कई पात्रों का एक साथ मिल कर गाना।
कोरा १-७—वि० नया। बेदाग़। पु० गोद।
कोरि—वि० करोड़।

कोरी—पु० हिन्दू जुलाहा।
कोर्ट—पु० (अं०) कचहरी।
कोर्टशिप—स्त्री० (अं०) स्त्री से विवाह के लिए मुहब्बत पैदा करना।
कोर्स—पु० (अं०) पाठ्यक्रम।
कोल—पु० सूअर। एक जंगली-जाति। गोद। बेर-वृक्ष। बेड़ा या घन्नाई।
कोलक—पु० काली मिर्च।
कोलना—सक्रि० छेद करना।
कोलनडैश—पु० (अं०) एक चिह्न (:—)।
कोला—स्त्री० पीपली।
कोलाहल—पु० शोरगुल।
कोलिया—स्त्री० लम्बा खेत।
कोली—स्त्री० गोद। पु० कोरी (जुलाहा)।
कोल्हू—पु० तेल या रस निकालने की चर्खी।
कोविद ४—वि० पंडित, विद्वान्।
कोविदार—पु० कचनार।
कोश, कोष—पु० म्यान शब्दसंग्रह। अंडा। सोना-चाँदी। डिब्बा। खज़ाना।
कोशकार—पु० म्यान बनाने-वाला। शब्द-संग्रह-कर्त्ता। रेशम का कीड़ा।
कोशकीट—पु० रेशम का कीड़ा [रक्षक।
कोशपाल—पु० खज़ाने का-
कोशफल—पु० कबाबचीनी।
कोशल—पु०, कोशला—स्त्री० एक देश। अयोध्या नगरी।
कोशवृद्धि—पु० अंडकोश-वृद्धि रोग।
कोशागार—पु० खज़ाना।
कोशिश—स्त्री० (फ़ा०) प्रयत्न, उपाय।
कोषाध्यक्ष—पु० खज़ान्ची।
कोष्ठ—पु० कोठा। पाकाशय। कोष। [( ) चिह्न।
कोष्ठक—पु० खाना। यह-
कोष्ठबद्ध—पु० क़ब्ज़ियत।
कोष्ठबद्धता—स्त्री० क़ब्ज़ियत।
कोष्ठी—स्त्री० जन्मपत्री।
कोष्ण—वि० थोड़ा गरम।
कोस—पु० दो मील की दूरी। (फ़ा०) बड़ा नगाड़ा।
कोसना—सक्रि० अपशब्द-कहना। [रेशम।
कोसा—पु० एक तरह का-
कोसाकाटी—स्त्री० बद्दुआ।
कोहँड़ौरी—स्त्री० पीठी और कुम्हड़े की बरी।
कोह—पु० क्रोध। (फ़ा०) पहाड़, पर्वत।
कोहकन—पु० (फ़ा०) पर्वत का खोदने वाला। शीरीं का प्रेमी फ़रहाद।
कोहन—वि० (फ़ा०) पुराना।
कोहनी—स्त्री० बाँह के नीचे की गाँठ।
कोहनूर—पु० एक प्रसिद्ध हीरा जो भारत सम्राट् के मुकुट में शोभित है।
कोहबर—पु० विवाह के समय कुलदेवता की पूजा का घर।
कोहराम—पु० (अ० फ़ा०) विलाप करके रोना-पीटना।
कोहसार—पु० (फ़ा०) पहाड़ी-प्रदेश।
कोहाँर—पु० कुम्हार।
कोहान—पु० (फ़ा०) ऊँट की पीठ का कूबड़।
कोहाना—अक्रि० क्रोध करना, रूठना।
कोहिस्तान ८—पु० (फ़ा०) पहाड़ी देश।
कोही—वि० क्रोधी।
कौंकिर—स्त्री० हीरा या काँच की कनी।
कौंच—स्त्री० केवाँच। [वाला।
कौंतिक—पु० भाला चलाने-
कौंतेय—पु० कुन्ती-पुत्र।
कौंध, कौंधा—स्त्री० प्रकाश, दीप्ति। बिजली की चमक।
कौंधना—अक्रि० बिजली का चमकना।
कौंधनी—स्त्री० करधनी।
कौंल—पु० कमल।
कौंवरा—वि० कोमल।
कौंहर—पु० एक लाल फल।
कौ—विभ० को, का।
कौआ—पु० काक नामक पक्षी।
कौआना—अक्रि० चकबकाना। भौचक्का होना।
कौआपरी—स्त्री० कुरूपा स्त्री
कौआली—स्त्री० क़व्वाली।
कौकब—पु० (अ०) बड़ा और चमकीला तारा।
कौक्कुटिक—पु० दूरदर्शी।
कौक्षेयक—पु० तलवार।
कौटिक—पु० क़साई।
कौटिल्य—पु० कुटिलता। चाणक्य का एक नाम।
कौटुंबिक—वि० कुटुम्ब-

सम्बन्धी। [अलाव।
कौड़ा—पु० बड़ी कौड़ी।
कौड़िया—पु०कौड़िल्लापक्षी। वि० कौड़ी के रंग का।
कौड़ियाला—पु०साँप विशेष। कौड़िल्ला पक्षी। वि० कौड़ी के रंग का। कृपण-धनी।
कौड़ी—स्त्री० समुद्र का एक कीड़ा तथा उसका अस्थि-कोष।
कौणप—पु०राक्षस।एक नाग।
कौणपदंड—पु० भीष्म।
कौतुक—पु० आश्चर्य। तमाशा।
कौतुकिया—वि०कौतुक करने वाला। विवाह-संबन्ध तै करानेवालेपुरोहित आदि।
कौतूहल—पु०आश्चर्य।कुतूहल।
कौदन—पु० (अ०) दुबला-घोड़ा। वि० मूर्ख। [खेत।
कौद्रवीण—पु० कोदों का-
कौन—सर्व०एक प्रश्नवाचक-सर्वनाम।
कौनेन—पु० (अ०) लोक और परलोक।
कौपीन—पु०काछा,लँगोटी।
क़ौम—स्त्री० (अ०) जाति।
कौमार७—पु०कुमार-अवस्था।
कौमारी—स्त्री० शिव की एक मातृका। [जातीयता।
क़ौमियत—स्त्री० (अ०)
क़ौमी—वि०(अ०) जातीय। राष्ट्रीय। [कुमुदिनी।
कौमुदी—स्त्री० चाँदनी।
कौमोदी, कौमोदकी—स्त्री० विष्णु की गदा।
कौर—पु० ग्रास।
कौरना—सक्रि० सेंकना।
कौरव ७—पु० कुरुवंशज-दुर्योधन आदि।
कौरवपति—पु० दुर्योधन।
कौरी—स्त्री०गोद। आलिंगन।
कौल—पु०कमल। ग्रास। वि० कुलीन। वाममार्गी।
क़ौल—पु०(अ०)कथन।प्रतिज्ञा।
क़ौलनामा—पु०प्रतिज्ञा-पत्र।
कौलटेय—पु०कुलटा का पुत्र। सती भिक्षुकी का पुत्र।
कौलीन—पु० लोकनिंदा। पशु, सर्प तथा पक्षियों का युद्ध।
कौलेयक—पु० कुत्ता।
कौलों—क्रि० वि० कब तक।
कौवा ७—पु० काग पक्षी।
क़ौवाली—स्त्री० एक प्रकार-की ग़ज़ल।
कौवेरी—स्त्री० उत्तर दिशा।
कौशल—पु० कुशलता। कोशल देशवासी। [माता।
कौशल्या—स्त्री०रामचंद्र की-
कौशांबी—स्त्री०कुश की बसाई हुई एक प्राचीन नगरी।
कौशिक—पु० इंद्र। विश्वा-मित्र। नेवला। उल्लू।
कौशिकी—स्त्री० चंडिका। एक रागिनी। एक नदी।
कौशेय—वि० रेशमी। पु० -रेशमी वस्त्र। [धन-समूह।
क़ौस—स्त्री० (अ०) धनुष।
कौसर—पु० (अ०) स्वर्ग की एक कल्पित नहर। बड़ा-दानी। [का कपड़ा।
कौसुंभ—पु० कुसुमी रंग-
कौस्तुभ—पु० पुराणोक्त एक मणि जिसे विष्णु भगवान् अपने वक्षःस्थल पर धारण करते हैं।
कौहर—पु० इन्द्रायन।
क्या—सर्व० प्रश्नवाचक-सर्वनाम।
क्यार—विभक्ति'का'।
क्यारी—स्त्री० खेतों के छोटे-छोटे खाने।
क्यों—क्रि० वि० कैसे।
क्रंदन—पु० रोना, विलाप।
क्रंदित—वि० रोया हुआ।
क्रकच—पु० आरा। करील-वृक्ष। एक नरक।
क्रकर—पु० करील वृक्ष। एक प्रकार का तीतर।
क्रतु—पु० यज्ञ। संकल्प। विवेक।
क्रतुद्वेषी—पु० राक्षस।
क्रतुध्वंसी—पु० शिव।
क्रतुपशु—पु० घोड़ा।
क्रतुपुरुष—पु० विष्णु।
क्रतुभुज—पु देवता।
क्रथन—पु० वध, क़तल।
क्रम—पु०शैली। सिलसिला।
क्रमबद्ध—वि० सिलसिलेवार।
क्रमशः—क्रि० वि० धीरे-धीरे। क्रम से।
क्रमागत—कि० परंपरा से आया हुआ। [क्रम से।
क्रमानुसार—क्रि० वि० क्रम-
क्रमान्वय—क्रि० वि० एक

के बाद एक। [पूर्वक।
क्रमिक—क्रि० वि० क्रम-
क्रमेल, क्रमेलक—पु० ऊँट।
क्रयद्द—पु० खरीद।
क्रय-विक्रय—पु०लेवा-बेची।
क्रयारोह—पु०बाज़ार,मंडी।
क्रयिक—वि० ख़रीदार।
क्रयी—वि० ख़रीदार।
क्रय्य-वि०ख़रीदने के योग्य।
क्रवान—पु० तलवार।
क्रव्य—पु० मांस। [भक्षक।
क्रव्याद—पु०राक्षस। मांस-
क्रांत—वि० जिस पर आक्र-
मण हुआ हो। [फेर।गति।
क्रांति—स्त्री० भारी उलट-
क्रांतमंडल—पु० वह वृत्त
जिस पर सूर्य घूमता नज़र
आता है। [मार्ग।
क्रांतिवृत्त—पु० सूर्य का-
क्राइस्ट—पु० (अं०) ईसा-
मसीह।
क्राउन—पु०(अं०)राजा।मुकुट।
एकमाप १५इं०×२०इं०।
क्रायक—वि० ख़रीदार।
क्रिमि—पु० छोटा कीड़ा।
क्रिमिजा—स्त्री०लाह,चपड़ा।
क्रियमाण—वि० जो किया
जा रहा हो।
क्रिया—स्त्री०वह शब्द जिससे
किसी कार्य का होना या
करना पाया जाय। कर्म।
उपाय। अन्त्येष्टि क्रिया।
क्रियात्मक—वि० कार्य रूप
में होने वाला।
क्रियानिष्ठ—वि०नित्य कर्म-
[illegible]

क्रियान्वित—वि० कार्ययुक्त।
क्रियापटु—त्रि० चतुर।
क्रियापर—वि० कार्यशील।
क्रियावान् १३—वि० कर्म में
नियुक्त।
क्रियाविशेषण—पु०वह शब्द
जो क्रिया की विशेषता
बतलावे।
क्रिस्तान—पु० ईसाई।
क्रीट—पु० दे० "करीट"।
क्रीड़ना—अक्रि०खेल करना।
क्रीड़ा—स्त्री०खेल। किलोल।
क्रीडाशैल—पु० नकली-
पहाड़। [स्त्री० कीर्त्ति।
क्रीत—वि० ख़रीदा हुआ।
क्रीतक—पु०ख़रीदा हुआ पुत्र।
क्रीम—पु० (अं०) मलाई।
क्रुंच—पु०'कराकुल' नामक-
पक्षी।
क्रुद्ध—वि० नाराज़।
क्रुष्ट—पु० रोना। वि०
रोया हुआ।
क्रूर३ ४—वि० निर्दय, दुष्ट।
कर्कश, कठोर।
क्रूरदंती—स्त्री० दुर्गा।
क्रूरा—स्त्री० कौड़ी।
क्रूस—पु० सलीब। ईसाइयों
का धर्म चिह्न।
क्रेतव्य—त्रि० ख़रीदने योग्य।
क्रेता—वि० ख़रीदार।
क्रेय—वि० ख़रीदने-योग्य।
क्रोड़—पु०वक्षःस्थल।शूकर।
गोद।
क्रोड़पत्र—पु० पुस्तक या
समाचार-पत्र का पूर्ति-
कर्ता-पत्र।

क्रोध—पु० ग़ुस्सा।
क्रोधन—पु० क्रोधी।
क्रोधवंत७—वि० क्रोधी।
क्रोधातुर—त्रि०अति क्रोधी।
क्रोधित—वि० क्रुद्ध।
क्रोधी—वि० ग़ुस्सावर।
क्रोश—पु० कोस।
क्रोष्टा—पु० सियार। गधा।
क्रोष्टु—पु० सियार। गीदड़।
क्रौंच—पु० कराँकुल पक्षी।
एक अस्त्र।
क्रौंचदारण—पु०कार्त्तिकेय।
क्रौर्य—पु० क्रूरता।
क्लब—पु० (अं०) गोष्ठी।
मनोविनोद का स्थान।
क्लमथ—पु० ग्लानि, घृणा।
क्लांत—वि० थका हुआ।
क्लांति—स्त्री० परिश्रम।
थकावट। [श्रेणी।
क्लास—पु० (अं०) दर्जा,
क्लिन्न—वि० गीला।
क्लिशित—वि० दुःखी।
क्लिश्यमान—वि० पीड़ित।
क्लिष्ट ३—वि० कठिन।
दुःखी।
क्लिष्टत्व—पु० कठिनता।
दुःख। [डरपोक।
क्लीव ३—वि० नपुंसक।
क्लीवत्व—पु० नपुंसकता।
क्लेद१२—पु० पसीना।
गीलापन।
क्लेदित—त्रि० भीगा हुआ।
क्लेश—पु० दुःख।
क्लेशापह—वि०क्लेशनाशक।
क्लेशित—वि० दुःखित।
क्लैव्य—पु० नामर्दी।

क्लोम—पु० फेफड़ा।
क्लोरोफ़ार्म—पु० (अं०) एक औषध जिसके सूँघने से मनुष्य बेहोश हो जाता है।
क्वचित्–क्रि० वि० कोई ही। कहीं भी। [का शब्द।
क्वण—पु० घुँघरू या वीणा·
क्वणित—वि० ध्वनित। पु० शब्द, आवाज़।
क्वथित–पु० पका हुआ काढ़ा।
क्वाँरा—वि० अविवाहित।
क्वाथ—पु० काढ़ा।
क्वान—पु० झनकार।
क्वार्टर—पु० (अं०) डेरा।
क्वैला—पु० कोयला।
क्षतव्य—वि० क्षमा करने· योग्य।
क्षंता—पु० क्षमाशील।
क्षण—पु० पल, लहमा। मौक़ा।
क्षणदांध–वि० रात का अंधा।
क्षणदा—स्त्री० रात्रि।
क्षणदाकर—पु० चन्द्रमा।
क्षणद्युत—स्त्री० बिजली।
क्षणन—पु० क़तल।
क्षणप्रभा—स्त्री० बिजली।
क्षणभंगुर—वि० अनित्य।
क्षणवाद–पु० बौद्ध मतानुसार कोई वस्तु एक क्षण से अधिक स्थायी नहीं रहती।
क्षणिक—वि० क्षणभंगुर। अस्थायी।
क्षणिका—स्त्री० बिजली।
क्षणिनी—स्त्री० रात।
क्षत–वि० ज़ख़्मी। पु० घाव।
क्षतघ्नी—स्त्री० लाख।
क्षतज–वि० लाल। पु० पीप। रक्त।
क्षतविक्षत—वि० घायल।
क्षतव्रण—पु० आपरेशन· किया हुआ ज़ख़्म।
क्षतव्रत–वि० खंडित ब्रह्मचारी।
क्षति—स्त्री० हानि। नाश।
क्षत्ता–पु० दरबान। सारथि। दासीपुत्र। मछली।
क्षत्र—पु० बल। क्षत्रिय। राष्ट्र।
क्षत्रधारी—पु० राजा।
क्षत्रप, क्षत्रपति—पु० राजा।
क्षत्रयोग—पु० ज्योतिष में राजयोग।
क्षत्रवेद—पु० धनुर्वेद।
क्षत्राणी—स्त्री० क्षत्रिय· भार्या। [एक जाति।
क्षत्रिय४—पु० हिन्दुओं की·
क्षत्रियी–स्त्री० क्षत्रिय की स्त्री।
क्षपणक—वि० निर्लज्ज। पु० बौद्ध संन्यासी।
क्षपांत—पु० सबेरा।
क्षपा—स्त्री० रात। [कपूर।
क्षपाकर—पु० चन्द्रमा।
क्षपाचर७—पु० राक्षस।
क्षपानाथ—पु० चन्द्रमा।
क्षम३-६—वि० योग्य। समर्थ। [शक्ति।
क्षमा—स्त्री० माफ़ी। सहन·
क्षमाना–सक्रि० क्षमा करना।
क्षमापन—पु० माफ़ी।
क्षमावना—सक्रि० क्षमा करना। [करने वाला।
क्षमावान् १३—वि० क्षमा·
क्षमाशील४–वि० माफ़ करने· वाला।
क्षमिता१०–वि० क्षमाशील, ग़मख़ोर।
क्षमी५—वि० क्षमाशील। समर्थ। शान्त स्वभाव का।
क्षम्य—वि० क्षमा के योग्य।
क्षय—पु० ह्रास, नाश। प्रलय। यक्ष्मा रोग।
क्षयपक्ष—पु० कृष्णपक्ष।
क्षयमास—पु० मलमास।
क्षयित्व—पु० क्षय होने का भाव। [वाला।
क्षयिष्णु—वि० नाश होने·
क्षयी–वि० नाश होने वाला। क्षय का रोगी। पु० चन्द्रमा। यक्ष्मा।
क्षय्य—वि० क्षय के योग्य।
क्षर१३—वि० नाशवान्। पु० जल। शरीर।
क्षरण—पु० रस रस कर चूना। नष्ट होना।
क्षव—पु० छींक।
क्षवथु—पु० खाँसी।
क्षांत४—वि० सहनशील, क्षमाशील [क्षमा।
क्षांति—स्त्री० सहिष्णुता,
क्षा—स्त्री० पृथिवी।
क्षात्र—वि० क्षत्रियों का। पु० क्षत्रियत्व।
क्षाम४—वि० क्षीण, दुर्बल।
क्षार—पु० खार, सज्जी।
क्षारक—पु० नई कली।
क्षारमृत्तिका–स्त्री० लोनामिट्टी।
क्षारलवण—पु० खारी नमक।
क्षारित—वि० चोरी-छिनारा आदि से दूषित।
क्षारोद—पु० खारा समुद्र।

क्षालन—पु० धोना।
क्षालित—वि० धुला हुआ।
क्षिति—स्त्री० पृथिवी।
क्षितिज—पु० जहाँ आकाश और पृथिवी दोनों मिले हुए दिखाई पड़ें।
क्षितिधर—पु० पहाड़। कच्छप। दिग्गज।
क्षितिनाथ—पु० राजा।
क्षितिपति—पु० राजा।
क्षितिपाल—पु० राजा।
क्षितिमंडन—पु० ब्रह्मा। आदर्श पुरुष।
क्षितिरुह—पु० वृक्ष।
क्षिपक—वि० बहादुर।
क्षिपणी—स्त्री० नाव का डाँड़।
क्षिपा—स्त्री० फेंकना।
क्षिप्त—वि० फेंका हुआ। पतित। वि० मस्तिष्क-शून्य।
क्षिप्र३—क्रि० वि० शीघ्र। वि० चंचल।
क्षिप्रहस्त—वि० फुर्तीला।
क्षिया—स्त्री० हानि।
क्षीण३-४—वि० दुबला-पतला। [खीर।
क्षीर—पु० दूध। पानी।
क्षीरकंठ—पु० दुधमुहाँ-बालक। [कमल। दही।
क्षीरज—पु० चन्द्रमा। शंख।
क्षीरजा—स्त्री० लक्ष्मी।
क्षीरधि—पु० समुद्र।
क्षीरनिधि—पु० समुद्र।
क्षीरनीर—पु० मिलन।
क्षीरविकृति—स्त्री० खोया। छेना।
क्षीरसागर—पु० पुराणानुसार दूध का एक समुद्र।
क्षीरसार—पु० मक्खन।
क्षीरावी—स्त्री० दूधिया।
क्षीरिका—स्त्री० खिन्नी।
क्षीरोद—पु० क्षीरसागर।
क्षीव—वि० मतवाला।
क्षुण्ण—वि० खंडित। नष्ट।
क्षुनाभिजन—पु० राई।
क्षुत्—स्त्री० भूख।
क्षुद्र३—वि० कृपण। नीच। छोटा।
क्षुद्रघंटिका—स्त्री० घुँघरूदार-करधनी। घुँघरू। [वाला।
क्षुद्रबुद्धि—वि० नीच बुद्धि-
क्षुद्रशंख—पु० छोटा संख।
क्षुद्रा—स्त्री० वेश्या। नटी। मधुमक्षिका। [का।
क्षुद्राशय—वि० नीच प्रकृति-
क्षुधा—स्त्री० भूख।
क्षुधातुर—वि० बहुत भूखा।
क्षुधालु—वि० भूखा।
क्षुधावान्१३—वि० भूखा।
क्षुधित४—वि० भूखा।
क्षुप—पु० पौधा। झाड़ी।
क्षुब्ध—वि० व्याकुल, अधीर।
क्षुभित—वि० दे० 'क्षुब्ध'।
क्षुमा—स्त्री० अलसी।
क्षुर—पु० छुरा। उस्तुरा। खुर।
क्षुरप्र—पु० खुरपा। [पिटी।
क्षुरभांड—पु० नाइयों की-
क्षुरिका—स्त्री० छुरी।
क्षुरी—पु० नाई। स्त्री० चाकू, छुरी।
क्षुल्लक—वि० नीच।
क्षेत्र—पु० खेत। स्थान। शरीर।
क्षेत्रज्ञ—पु० जीवात्मा। परमात्मा। किसान। वि० निपुण।
क्षेत्रपति—पु० जीवात्मा। किसान। परमात्मा।
क्षेत्रपाल—पु० खेत का रक्षक। द्वारपाल।
क्षेत्रफल—पु० रकबा।
क्षेत्रविद्—पु० जीवात्मा।
क्षेत्राजीव—पु० किसान।
क्षेत्री—पु० खेत का स्वामी।
क्षेप—पु० फेंकना।
क्षेपक—वि० फेंकने वाला। पु० पुस्तक में बाद में जोड़ा गया भाग।
क्षेपण—पु० फेंकना। निंदा।
क्षेपणी—स्त्री० बल्ली।
क्षेम—पु० कल्याण। गंध-द्रव्य। [चोल विशेष।
क्षेमकरी—स्त्री० एक देवी।
क्षैत्र—पु० खेतों का समूह।
क्षोणि, क्षोणी—स्त्री० पृथिवी।
क्षोणिप—पु० राजा।
क्षोद—पु० पिसी धूल।
क्षोभ—पु० घबराहट। शोक। विचलता। [वाला।
क्षोभण—वि० क्षोभित करने-
क्षोभना—अक्रि० व्याकुल या भयभीत होना।
क्षोभित४—वि० व्याकुल। क्रुद्ध। विचलित।
क्षोभी५—वि० व्याकुल।
क्षौम—पु० अटारी।
क्षौणि, क्षौणी—स्त्री० पृथिवी।

क्षौद्र—पु० क्षुद्रता ।
क्षौम पु० रेशमी-वस्त्र । रेशम । अटारी । आलसी ।
क्षौर—पु० हजामत ।
क्षौरिक—पु० नाई ।
क्ष्णुत—वि० सान द्वारा तेज़ या पैना किया हुआ ।
क्ष्मा—स्त्री० पृथ्वी ।
क्ष्माभुक्—पु० राजा ।
क्ष्माभृत—पु० राजा ।
क्ष्वेड—पु० विष ।
क्ष्वेडा—स्त्री० गर्जना ।
क्ष्वेडित—पु० सिंहनाद ।

२—ख

खं—पु० आकाश । सूर्य । स्वर्ग । छिद्र । [ख़ाली ।
खंख, खंखी—वि० उजाड़ ।
खंखर—वि० वीरान ।
खंग—पु० तलवार । गैंडा ।
खँगना—अक्रि० कम होना ।
खंगर—पु० लोहे का मैल ।
खँगहा—पु० गैंडा । बाज़ । वि० दँतैल ।
खँगार—पु० जाति विशेष ।
खँगालना—सक्रि०थोड़ा धोना।
खँगी—स्त्री० कमी, घटी ।
खँगैल—वि० बड़ेदाँत वाला ।
खँचना९—अक्रि०चिह्न होना ।
खँचिया—स्त्री० झाबा ।
खंज—पु० एक पक्षी । रोग-विशेष । वि० लँगड़ा ।
खंजक—वि० लँगड़ा ।
खंजन—पु० एक पक्षी ।
ख़ंजर—पु० (अ०) कटार ।
खँजरी—स्त्री० बहुत छोटी-डफ़ली ।
खंजरीट—पु० खंजन पक्षी ।
खंड—पु० भाग । देश । वि० छोटा ।
खंडत—वि० खंडित ।
खंडनद-पु०नाश । तोड़ना ।
खंडना—सक्रि० नष्ट करना ।
खंडपरशु—पु० शिव । विष्णु । परशुराम ।
खंडपाल—पु० हलवाई ।
खंडप्रलय—पु० छोटा प्रलय ।
खंडर—पु० टूटे-फूटे मकान का अवशिष्ट भाग ।
खँडरना—सक्रि० खंडित-करना ।
खँडरा—पु० एक पकवान ।
खँडरिच—पु० खंजन पक्षी ।
ख़ँडरू—स्त्री० जाज़िम ।
खँडवानी—स्त्री० शर्बत ।
खँडविकार—पु० शक्कर ।
खँडसाल—पु० खाँड़ बनाने का कारख़ाना ।
खँडहर—पु० टूटे-फूटे मकान का अवशिष्ट भाग ।
खंडित—वि० टूटा हुआ ।
खंडिता—स्त्री० पति मेंअन्या-सक्ति के चिह्न देखकर दुःखित होनेवाली नायिका ।
खंडी—स्त्री० ग़ल्ले का एक परिमाण । कर, टैक्स ।
खँडौरा—पु० मिश्री का लड्डू । [छोटा गड्ढा ।
खंतरा—पु० दरार । कोना ।
खंता७—पु० कुदाल ।
ख़ंदक—स्त्री०(अ०)बड़ी खाई ।
खंदा—वि० खोदने वाला ।
खंदा—पु० (फ़ा०) हँसी ।
ख़ंदापेशानी, ख़ंदारू-वि० (फ़ा०) हँसमुख ।
ख़ंदी—स्त्री० (फ़ा०) कुलटा ।
खँधवना—सक्रि० ख़ाली-करना ।
खँधार—पु० तम्बू, पड़ाव ।
खंभ, खंभा—पु० स्तंभ । सहारा । [चिन्ता ।
खँभार—पु० डर, शोक,
खँसना—अक्रि० खसकना ।
ख—पु० आकाश ।
खई—स्त्री० झगड़ा ।
खक्खा—पु०ज़ोर की हँसी ।
खखरा—पु०बाँस की टोकरी । देग ।
खखार—पु० गाढ़ा कफ़ ।
खखारना—सक्रि०कफ़ बाहर निकालना ।
खखेटना—सक्रि० पीछा-करना । व्याकुल करना ।
खखेटा—पु० खटका ।
खखोरना—सक्रि० तलाश-करना ।

खग—पु० पक्षी। वाण।
खगउड़ा—पु०एक प्रकार का कड़ा।
खगकेतु—पु० गरुड़।
खगना—अक्रि० चुभना। चिन्हित होना। प्रभाव-पड़ना। लिप्त होना। अड़-रहना। [गरुड़।
खगनाथ, खगनायक—पु०
खगपति—पु० गरुड़। सूर्य।
खगहा—पु० गैंडा। बाज़।
खगांतक—पु० बाज़ पक्षी।
खगेश—पु० गरुड़।
खगेश्वर—पु० गरुड़।
खगोल-पु० आकाश-मंडल।
खगोलविद्या—स्त्री०ज्योतिष।
खग्ग-पु० तलवार।
खग्रास—पु० पूर्ण ग्रहण।
खचनद्द-पु०जड़ाव। अंकित-होना। [अंकित होना।
खचना९-अक्रि०जड़ा जाना।
खचर—पु० आकाशगामी (पक्षी, बादल, सूर्य आदि।)
खचरा—वि० दोगला।
खचा७—वि० खचित। जड़ाऊ।
खचाखच-क्रि०वि० ठसाठस।
खचाना—सक्रि० खींचना। शीघ्रतया लिखना।
खचित—वि० जड़ा हुआ। अंकित।
खचिया—स्त्री० टोकरी।
खच्चर—पु०गधा और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु।
खज—वि० खाने योग्य।
खजला—पु० खाजा।
खजहजा—पु० भक्षणीय-उत्तम फल।
खजाका—स्त्री० चम्मच।
ख़ज़ानची—पु० (फ़ा०) ख़ज़ाने का अधिकारी।
ख़ज़ाना—पु० (अ०) कोश, भंडार।
खजीना-पु०दे० 'ख़ज़ाना'।
खजुआ-पु०खजला मिठाई।
खजूर—पु० एक पेड़ या उसका फल।
खजूरा—पु० गोजर।
खजूरी—वि० खजूर का।
खट—पु० टूटने आदि का शब्द। कफ़। खाट। अंधकूप।
खटकना—अक्रि० खलना। आपस में झगड़ा होना।
खटका-पु० शंका। आवाज़।
खटकाना—सक्रि० खटखट शब्द करना।
खटकीड़ा—पु० खटमल।
खटखट-स्त्री०झंझट। ध्वनि-विशेष। [खड़ाना।
खटखटाना—सक्रि० खड़-
खटना—अक्रि० काम-काज में लगना। परेशान होना।
खटपट—स्त्री० अनबन।
खटपटिया—वि० झगड़ालू।
खटपद—पु० भौंरा।
खटपदी-स्त्री० छप्पय (छन्द)।
खटबुनां—पु० खाट बुनने-वाला।
खटमल-पु०खाट का कीड़ा।
खटमिट्ठा—वि० खट्टा, मीठा-युक्त।
खटरस—वि० खट्टा; मीठा कटु आदि छःरसों से युक्त।
खटराग—पु० झंझट।
खटला—पु० भार्या, पत्नी। परिवार। [खाट की पट्टी।
खटवाटी—स्त्री० रूँठना।
खटसे—क्रि० वि० तुरन्त।
खटाई—स्त्री० खट्टापन।
खटाका—पु०खटका आवाज़।
खटाखट—पु० 'खटखट' का शब्द। क्रि० वि० शीघ्र।
खटाना-अक्रि०निर्वाह होना। ठहरना। खट्टा होना।
खटापटी—स्त्री० खटपट।
खटाव—पु० निर्वाह।
खटास—स्त्री० खट्टापन।
खटिक, खटीक—पु० क़साई। शाकादि बोने, तथा बेचने वाली एक जाति
खटिका—स्त्री० खड़िया।
खटिया—स्त्री० चारपाई।
खटोलना—पु० खटोला।
खटोला७—पु० छोटी खाट।
खट्टा७—वि० तुर्श।
खट्टू—वि० कमाऊ।
खट्वांग-पु०खाट की पट्टी या पाया। शिव का एक अस्त्र।
खट्वा—पु० खाट। [फ़र्श।
खड़जा-पु०खड़ी हुई ईंटों का-
खड़—स्त्री० पयाल, तृण।
खड़क—पु० गोशाला।
खड़कना—अक्रि० खटकना।
खड़खड़ाना-सक्रि० खड़खड़-शब्द करना।
खड़खड़िया—स्त्री० पालकी।
खड़्ग—पु० खड्ग, तलवार।
खड़्गी, खड़्जी—पु०गैंडा।

खड़बड़ाना—अक्रि० घबराना । सक्रि० बेसिलसिले कर देना । [राहट ।
खड़बड़ाहट—स्त्री० घब-
खड़बड़ी—स्त्री० बाधा, गड़बड़ी ।
खड़मंडल—पु० गड़बड़ ।
खड़सान—पु० सान रखने का पत्थर । [हुआ ।
खड़ा ७—वि० ऊपर उठा-
खड़ाऊँ—स्त्री० पादुका ।
खड़ाका—पु० खटका ।
खड़िया, खड़ी—स्त्री० एक सफ़ेद मिट्टी । [हिन्दी ।
खड़ीबोली—स्त्री० वर्त्तमान-
खड्ग—पु०तलवार । गैंडा ।
खड्गकोष, खड्गपिधान–पु० म्यान । ढाल ।
खड्गी—वि० खड्ग धारण करने वाला । पु० गैंडा ।
खड्ड—पु० गड्ढा ।
खत—पु० चोट । घाव ।
ख़त—पु० (अ०) पत्र । हजामत ।
ख़तना—पु० (अ०) सुन्नत ।
ख़तम—वि० (अ०) समाप्त ।
ख़तमी—स्त्री० (अ०) एक पौधा या उसकी पत्तियाँ ।
ख़तरा—पु० (अ०) डर ।
ख़ता—स्त्री०(अ०)अपराध ।
खतान—स्त्री० खतौनी । हिसाब ।
ख़तावार—वि० अपराधी ।
खति—स्त्री० नुक़सान ।
खतियाना—सक्रि० रोकड़ से खाते में हिसाब लिखना ।
खतियौनी—स्त्री० खाता । खाते में चढ़ाने का कार्य ।
ख़तीब–पु० (अ०) किसी की प्रशंसा में कुछ कहने वाला ।
ख़ते-इस्तिवा—पु० (अ०) भूमध्य रेखा ।
ख़तेजदी—पु० (अ०) मकर-रेखा । [सुनेखन ।
ख़तेनस्तालीक़—पु० (अ०)
ख़तेमुतवाज़ी—पु० (अ०) समानांतर रेखा ।
ख़तेमुस्तक़ीम—पु० (अ०) सरल रेखा । [गोल रेखा ।
ख़तेमुस्तदीर—पु० (अ०)
ख़तेशिकस्त—पु० (अ०फ़ा०) शीघ्रता में लिखी लिखावट ।
ख़तेसरतान—पु० (अ०) कर्क रेखा ।
ख़तोकिताबत—पु० (अ०) पत्र-व्यवहार । [गड्ढा ।
खत्ता—पु० अन्न रखने का
ख़त्म–वि०(अ०) दे०'ख़तम'।
खत्री—स्त्री० पंजाब की एक जाति ।
खदंग,खदंगी–पु०(फ़ा०)बाण
खदबदाना—अक्रि० उबलते समय शब्द होना । [रद्दी ।
खदरा—पु० गड्ढा । वि०
ख़दशा—पु० (अ०) डर ।
खदान—पु० खान ।
खदिर—पु० कत्था । चन्द्रमा ।
ख़दीव—पु० (फ़ा०) ईश्वर । सम्राट् ।
खदुका—पु०क़र्ज़ लेने वाला ।
खदेड़—स्त्री० दौड़ ।
खदेड़ना—सक्रि०पीछे हटना ।
खद्दर—पु० गाढ़ा ।
खद्योत—पु० पटबीजना ।
खन—पु० दे० 'क्षण' । कपड़े का टुकड़ा ।
खनक—पु० खान । खान में काम करने वाला व्यक्ति । भूतत्ववेत्ता । चूहा ।
खनकना १—अक्रि० खनखनाना ।
खनखनाना—अक्रि० खनकना । सक्रि० खनकाना ।
खनन—पु०खुदाई ।
खनना—सक्रि० खोदना ।
खना—स्त्री० बराह-मिहिर की स्त्री जो ज्योतिःशास्त्र में अद्वितीय थी ।
खनि—स्त्री० खान ।
खनिज—वि० खान से निकला हुआ ।
खनित्र—पु०गैंता, कुदाली ।
खनियाना—सक्रि० खाली करना । [कुरेदना ।
खनोना—सक्रि० खोदना,
ख़न्नास—पु०(अ०) शैतान । भूत-प्रेत ।
खपची—स्त्री०बाँस की तीली ।
खपड़ा—पु० मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा । खप्पर ।
खपड़ी—स्त्री० दाना भूनने का पात्र ।
खपत—स्त्री० माल की बिक्री । गुंजाइश ।
खपना १—अक्रि० निभना । नष्ट होना । माल बिकना ।
खपरट—पु० खपड़े का टुकड़ा ।

खपरैल—स्त्री०खपड़े से छायी हुई छत या घर।
खपाट—पु० धौंकनी के मुँह पर लगे हुए डंडे।
खपुआ—वि० डरपोक।
खपुर—पु०सुपारी या उसका पेड़। स्वर्ग। गंधर्वपुरी।
खपुष्प—पु० आकाशकुसुम।
खप्पर—पु० भिक्षापात्र। देवी का पात्र।
ख़फ़क़ान—पु०(अ०)पागलपन।
ख़फ़गी—स्त्री० (फ़ा०) अप्रसन्नता।
ख़फ़ा—वि० (फ़ा०)नाराज़।
ख़फ़ीफ़—वि० (अ०) थोड़ा। हलका।
ख़फ़ीफ़ा—स्त्री० (अ०)छोटी-दीवानी-अदालत।
ख़बर—स्त्री० (अ०) समाचार। पता।
ख़बरगीर२—वि० (अ०फ़ा०) जासूस। संरक्षक।
ख़बरगीरी—स्त्री०देखभाल।
ख़बरदार२—वि० (अ० फ़ा०) होशियार।
खबसा—पु० कीचड़।
ख़बीस—पु० (अ०) क्रूर तथा भयङ्कर मनुष्य। भूत-प्रेत। कृपण। [सनक।
ख़ब्त—पु० (अ०) पागलपन,
ख़ब्ती—वि० (अ०) पागल, सनकी।
खभरना—सक्रि० मिश्रित-करना। हलचल मचाना।
खमसआ—पु० छिनाल का लड़का।
खमस—पु० उमस, गर्मी।
खमार—पु० दुःख। चिंता। डर। [ताल। भुआ।
ख़म—पु० (अ०) टेढ़ापन।
ख़मदम—पु० पुरुषार्थ।
ख़मदार—वि० (अ० फ़ा०) टेढ़ा।
ख़मियाज़ा—पु० (फ़ा०) अँगड़ाई लेना। जँभाई। फल भोग। [हुआ, टेढ़ा।
ख़मीदा—वि० (फ़ा) झुका-
ख़मीर—पु० (अ०) गूँधे हुए आटे का सड़ाव। माया। प्रकृति।
ख़मीरा७—वि०(अ०) ख़मीर उठा कर बनाया हुआ।
खय—स्त्री० क्षय।
ख़या—पु० भुजमूल।
ख़यानत—स्त्री० (अ०) बेई-मानी। धरोहर वस्तु का गबन।
ख़यारैन—पु० (अ०) ककड़ी तथा ख़रबूज़े के बीज।
ख़याल—पु०(अ०) स्मरण।
ख़यालात—पु० (अ०) बहु० 'ख़याल' का।
ख़याली—वि०(अ०) कल्पित।
खरंजा—पु० पक्की ईंटों का फ़र्श।
खर—पु० गधा। तृण। कौआ। सूर्पणखा का भाई। ३वि०कड़ा। तीक्ष्ण। चोखा।
ख़र—पु० (फ़ा०) गधा।
खरक—पु०बड़ा। चरागाह। गोशाला। बाँस का किवाड़।
खरकना—अक्रि० सटकना। कसकना। ['खरक'।
खरका—पु० तिनका। दे०
ख़रख़शा—पु० (फ़ा०) झगड़ा, झंझट।
खरग—पु० खङ्ग।
ख़रगोश—पु०(फ़ा०)खरहा।
खरचना—सक्रि०व्यय करना।
खरचा—पु० ख़र्च, व्यय।
ख़रची—स्त्री० (फ़ा०)व्यभि-चार में वेश्या को मिलने वाला धन।
खरतर—वि० बहुत तेज़।
खरतल—वि० खरा। [घास।
खरतुआ—पु० एक ख़राब-
खरत्व—पु० गधापन, मूर्खता।
ख़रदिमाग़—वि० (फ़ा०) मूर्ख।
खरदूषण—पु० धतूरा। सूर्य। खर और दूषण नामक, रावण के दो भाई।
खरधार—पु० पैनी धार का शस्त्र। [दुराचारी।
ख़रनफ़्स—वि० (फ़ा०)
खरब—पु० सौ अरब।
ख़रबूज़ा—पु०(फ़ा०)एकफल।
खरभर७—पु० खलबली। शोर। [होना।
खरभरना—अक्रि० क्षुब्ध-
खरभराना—अक्रि० शोर-करना। व्याकुल होना।
खरभरी—स्त्री० खलबली।
ख़रमस्ती—स्त्री० (फ़ा०) दुष्टता।
खरमास—पु० चैत्र या पौष मास। [कौड़ी।
खरमोहरा—पु० (फ़ा०)

खरल—पु० दवा कूटने की पत्थर की कूँड़ी।
ख़रसा—पु० एक पकवान।
ख़रसान—पु०धार तेज़ करने का पत्थर।
ख़रहरा७—पु० अरहर के डंठल की झाड़ू।
खरहरी—पु० छुहारा।
ख़रहा—पु० ख़रगोश।
खरांशु—पु० सूर्य।
खरा १—वि० तेज़। चोखा। सच्चा। साफ़। अधिक।
खराई—स्त्री० खरापन।
ख़रादन—पु० (फ़ा०) खरादने का कार्य। सतह चिकना करने का यन्त्र।
ख़रादना—सक्रि० खराद पर लकड़ी को चिकना करना।
ख़राब२—वि० (अ०) बुरा।
ख़राबा—पु० (अ०)विनाश।
ख़राबात—स्त्री०(अ०) कुलटा-स्त्रियों का स्थान। ऊजड़-स्थान। [बदबू।
खरायँध—पु० पेशाब की-
खरारि—पु० रामचन्द्र।
ख़राश—स्त्री० (फ़ा०) खरोंच।
ख़रास—स्त्री० (फा०) आटा की चक्की।
खरिका—पु० दे० 'खरक'।
खरिया—स्त्री० पतली रस्सी की जाली। खड़िया।
खरिहान—पु०दे०'खलियान'।
खरी—स्त्री० खली। खड़िया।
खरीक—पु० तिनका।
ख़रीता७—पु० (अ०) थैला। बड़ा लिफ़ाफ़ा। जेब।

ख़रीद—स्त्री० (फ़ा०) मोल लेने की क्रिया।
ख़रीदना—सक्रि०मोल लेना।
ख़रीदार२—पु० (फ़ा०) ख़रीदने वाला।
ख़रीफ़र—स्त्री० (अ०) आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाने वाली फ़सल।
खरेई, खरोई—क्रि० वि० वास्तव में। [जाने का चिह्न।
खरोंच, खरोंट—पु० छिल-
खरोंचना—सक्रि० छीलना, खुरचना।
खरोष्ट्री, खरोष्ठी—स्त्री० इस देश की फ़ारसी की तरह की एक प्राचीन लिपि।
ख़रोंटना—सक्रि०खरोंचना।
खरौंहा—वि० खारा।
खर्ग—पु० खड्ग।
ख़र्च, ख़र्चा—पु० (फ़ा०) व्यय, खपत।
खर्चीला—वि० अधिक व्यय करने वाला।
खर्जू—पु० खुजली।
खर्जूर, खर्जूरी—पु० खजूर।
खर्पर—पु०खप्पर। खोपड़ी।
खर्ब—पु० सौ अरब। वि० छोटा। अंगभंग।
खर्रा—पु० हिसाब का लंबा-कागज़। चिट्ठा, मसविदा। ख़सरा।
ख़र्राच—वि०(फ़ा०) उदार।
ख़र्राट—वि० चतुर। वृद्ध। व्ययी।
ख़र्राटा—पु०सोते समय नाक से निकलने का शब्द।

खर्वट—पु० पर्वत पर बसा हुआ गाँव।
खलंगा—पु० उपवन।
खल३—पु० दुष्ट।
खलई—स्त्री० दुष्टता।
खलक़—पु० दुनिया।
खलक़त—स्त्री० भीड़। सृष्टि।
खलकथा—स्त्री० चापलूसी।
खलड़ी—स्त्री० खाल।
खलना—अक्रि०बुरा लगना।
खलपू—पु०बुहारी आदि से साफ़ करने वाला।
खलफ़—पु० (अ०) पुत्र। वारिस। वि० सुशील।
खलबल७—स्त्री० हलचल।
खलबलाना—अक्रि०खौलना। घबरा उठना।
खलभल पु०, खलभली—स्त्री० शोर, हलचल। [रोक।
ख़लल—पु० (अ०) बाधा,
ख़ललअंदाज़—वि० (अ० फ़ा०) बाधक। [स्थान।
ख़लवत—स्त्री० (अ०) निर्जन-
ख़लवतख़ाना—पु० (अ० फ़ा०)स्त्रियों के रहने आदि का स्थान। परामर्श-सदन।
ख़ला—पु० (अ०) शून्य-स्थान। पाख़ाना।
खलाई—स्त्री० दुष्टता।
खलाना—सक्रि० ख़ाली-करना। [समस्त-प्राणी।
ख़लायक़—स्त्री० (अ०)
ख़लास—वि०(अ०) समाप्त। च्युत। पु० छुटकारा।
ख़लासी—स्त्री० (अ०) छुट-कारा। पु०जहाज़कानौकर।

खलित—वि० गिरा हुआ ।
खलिनी—स्त्री० खलिहानों का समूह ।
खलियान—पु० कटी हुई फ़सल रखने का स्थान ।
ख़लिश—स्त्री० (अ०) पीड़ा, कसक ।
खली—स्त्री० तेलहन की छूँछ ।
ख़लीक़—वि०(अ०) सज्जन ।
ख़लीज—स्त्री० (अ०) खाड़ी ।
ख़लीता—पु० (फ़ा०) जेब, थैली ।
खलीन—पु० लगाम ।
ख़लीफ़ा—पु०(अ०) अध्यक्ष । वृद्ध पुरुष । मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी । वि० बहुत चतुर । धूर्त्त । [दोस्त ।
ख़लील—पु० (अ०) सच्चा-
खलु—क्रि०वि० निश्चय ही ।
ख़लेरा—वि० (अ०) ख़ाला-सम्बन्धी । [सृष्टि ।
ख़ल्क़—पु० (अ०) संसार,
खल्या—स्त्री० दे० 'खलीन' ।
खल्लड़—पु० खरल । चमड़ा ।
खल्व—पु० गंज रोग ।
खल्वाट—वि० गंजा ।
खवा—पु० कंधा ।
खवाना—सक्रि० खिलाना ।
खवारा—वि० खोटा ।
ख़वास २—पु० (अ०) राजाओं तथा रईसों का ख़िदमतगार ।
ख़वासी—स्त्री० (अ०) हाथी के हौदे में पीछे बैठने का स्थान ।
खवैया—पु० खाने वाला ।
ख़शख़ाश—स्त्री०(फ़ा०) पोस्ते का दाना ।
ख़श्म—पु० (फ़ा०) क्रोध ।
ख़श्मगीं ख़श्मनाक—वि० (फ़ा०) क्रोधी ।
ख़स—पु० (फ़ा०) गाँडर घास की जड़, उशीर ।
खसकना९—अक्रि० स्थान से हटजाना ।
ख़सख़स—पु० पोस्ते का दाना ।
खसखसा—वि० भुरभुरा ।
ख़सख़ाना—पु० खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर ।
खसना९—अक्रि० खसकना ।
खसबो—स्त्री० सुगन्धि ।
ख़सम—पु०(अ०) पति । शत्रु ।
ख़सरा—पु० (अ०) हिसाब किताब का चिट्ठा । खुजली ।
खसर्प—पु० बुद्ध
ख़सलत—स्त्री०(अ०) आदत ।
ख़सायल—पु० (अ०) बहु० 'ख़सलत' का ।
ख़सासत—स्त्री० (अ०) कृपणता दुष्टता ।
ख़सिया—वि० बधिया । नपुंसक । पु० बकरा ।
ख़सी—स्त्री० (अ०) बकरा । हिजड़ा । बधिया-पशु । छोटी छाती वाली स्त्री ।
ख़सीस—वि० (अ०) कृपण । दुष्ट ।
खसोटना—सक्रि० नोंचना । उखाड़ना । लूटना ।
ख़स्ता—वि०(फ़ा०) भुरभुरा ।
ख़स्ताहाल—वि० (फ़ा०) दुर्दशाग्रस्त । [सूर्यमणि ।
खस्फटिक—पु० काँच ।
ख़स्सी—पु० दे० 'ख़सी' ।
ख़ाँ—पु० (फ़ा०) ख़ान ।
खाँखर—वि० पोला । झीना ।
खाँग—पु० काँटा । स्त्री० कमी ।
खाँगना—अक्रि० घटना ।
खाँगी—स्त्री० कमी, त्रुटि ।
खाँच—पु० संधि, जोड़ ।
खाँचना—सक्रि० खींचना ।
खाँचा७—पु० झाबा । [शक्कर ।
खाँड़—स्त्री० गड्ढा । कच्ची-
खाँड़ना—सक्रि० तोड़ना । चबाना ।
खाँड़र—पु० टुकड़ा ।
खाँडव—पु० एक बन जिसे अर्जुन ने जलाया था ।
खाँड़ा—पु० खड्ग । टुकड़ा ।
ख़ाँदगी—स्त्री०(फ़ा०) पढ़ाई ।
खाँधना—सक्रि० खाना ।
खाँभ—पु० खंभा । लिफ़ाफ़ा ।
खाँभना—सक्रि० लिफ़ाफ़े में रखना ।
खाँवाँ—पु० चौड़ी खाई ।
खाँसी—स्त्री० खाँसने का रोग ।
खाई—स्त्री० क़िले के चारों ओर का गड्ढा । [वाला ।
खाऊ—वि० अधिक खाने-
ख़ाक—स्त्री० (फ़ा०) धूल ।
ख़ाकनाए—स्त्री० (फ़ा०) स्थल-डमरूमध्य ।
ख़ाकरोब—पु० (फ़ा०) भंगी ।
ख़ाकसार२—पु० (फ़ा०) तुच्छ-व्यक्ति । [मसौदा ।
ख़ाका—पु० (फ़ा०) ढाँचा,
ख़ाकी—वि० (फ़ा०) भूरा ।
खाख—स्त्री० ख़ाक, धूल ।
खाखरा—पु० बाजा विशेष ।
खाग—पु० खड्ग । गैंडे का सींग ।

खागना—अक्रि० चुभना। कम होना।
खाज—स्त्री० खुजली।
खाजा—पु० एक मिठाई।
खाट—स्त्री० चारपाई।
खाड़—पु० गड्ढा।
खाड़ी—स्त्री० समुद्र का वह भाग जिसके तीन ओर स्थल हो। [खाद।
खात—पु० तालाब। गड्ढा।
खातक—पु० कर्ज़मंद। छोटा तालाब। [समाप्ति।
ख़ातमा—पु० (अ०) अंत,
खाता—पु० मद्द। मद्दवार-हिसाब लिखने की किताब।
ख़ातिर—स्त्री० (अ०) आदर।
ख़ातिरख़्वाह—क्रि० वि० (अ०) इच्छानुसार।
ख़ातिरजमा—स्त्री० (अ०) सन्तोष।
ख़ातिरदारी—स्त्री० (अ० फ़ा०) सम्मान।
ख़ातिरी—स्त्री० सम्मान। भरोसा।
खाती—स्त्री० गड्ढा। पु० बढ़ई।
ख़ातून—स्त्री० (तु०) शरीफ़-औरत।
खाद—स्त्री० पाँस। [क़र्ज़ी।
खादक—वि० खाने वाला।
खादनद्—पु० खाना।
खादर—पु० कछार, तराई।
खादित—वि० खाया हुआ।
ख़ादिम—पु० (अ०) सेवक।
खादी—स्त्री० हाथ का कता व बिना कपड़ा। वि० खाने-वाला।
खादुक—वि० हिंसक।
खाद्य—वि० खाने-योग्य।
खाधु, खाधुक—पु० भोजन। वि० खाने वाला। [भोजन।
खान—स्त्री० ख़ज़ाना। पु०
ख़ान—पु० (फ़ा०) सरदार। पठानों की उपाधि।
ख़ानए-ख़ुदा—पु० (फ़ा०) मसजिद। [वाला।
खानक—पु० खान खोदने-
ख़ानक़ाह—स्त्री० (अ०) मुसलिम साधुओं का मठ।
खानखर—पु० सुरंग। खोह।
ख़ानख़ाना—पु० (अ०) सरदारों का भी सरदार।
ख़ानगी—वि० (फ़ा०) घरेलू।
ख़ानज़ाद—पु० (फ़ा०) अमीर का लड़का।
ख़ानदान—पु० (फ़ा०) वंश।
ख़ानदानी—वि० (फ़ा०) कुलीन। पुश्तैनी।
खानपान—पु० खाना-पानी।
ख़ानम—स्त्री० (फ़ा०) भद्र-महिला।
ख़ानमान—पु० (फ़ा०) घर-गृहस्थी का सामान।
ख़ानसामा—पु० (फ़ा०) अँग्रेज़ों तथा मुसलमानों का बबर्ची।
खाना—सक्रि० भोजन करना। पु० भोजन। [विभाग।
ख़ाना—पु० (फ़ा०) घर,
ख़ानाख़राबर—वि० (फ़ा०) अवारा, लफ़ंगा।
ख़ानाजंगी—स्त्री० (फ़ा०) गृहक-लह।
ख़ानाज़ाद—पु० (फ़ा०) दास।
वि० घर में पैदा तथा पालन किया गया। [छानबीन।
ख़ानातलाशी—स्त्री० (फ़ा०)
ख़ानादारी—स्त्री० (फ़ा०) गृहस्थी का कार्य या प्रबन्ध।
ख़ानानशीन—वि० (फ़ा०) सब काम छोड कर घर में बैठा रहने वाला।
ख़ानापुरी—स्त्री० (फ़ा०) नक़शा भरना। [घर का।
ख़ानाबदोष—वि० (फ़ा०) बिना-
ख़ानाशुमारी—स्त्री० (फ़ा०) किसी बस्ती के घरों की गणना करना।
ख़ानासाज़—वि० (फ़ा०) घर में बना हुआ। पु० रसोइया।
खानि—स्त्री० खान, खदान।
खानिक—स्त्री० खदान। वि० खान से उत्पन्न।
खाप—स्त्री० म्यान।
खाबड़—वि० ऊँचा-नीचा।
खाम—पु० चिट्ठी का लिफ़ाफ़ा। खंभा। जोड़े। वि० घटा-हुआ।
ख़ाम—वि० (फ़ा०) बिना-पका, कच्चा। बुरा।
ख़ाम ख़याली—स्त्री० (फ़ा०) व्यर्थ के विचार।
ख़ामख़ाह—क्रि० वि० निरर्थक। अवश्य।
खामना—सक्रि० बर्त्तन का मुँह बन्द करना
ख़ामपारा—वि० स्त्री० छोटी अवस्था से ही समागम करने वाली स्त्री।

ख़ामी—स्त्री० (फ़ा०) कचाई, त्रुटि ।
ख़ामोश—वि०(फ़ा०) चुप ।
ख़ायन—वि० (अ०) ख़यानत-करने वाला ।
ख़ाया—पु०(फ़ा०)अंडकोश । मुरग़ी का अंडा ।
ख़ायाबरदार—वि० (फ़ा०) बहुत अधिक चापलूस ।
खार—पु० सज्जी । राख ।
ख़ार—पु०(फ़ा०)काँटा । द्वेष ।
खारक, खारिक—पु० छुहारा ।
ख़ारपुश्त—पु० (फ़ा०) साही-नामक जंतु ।
ख़ार व ख़स—पु० (फ़ा०) कूड़ा-कर्कट ।
खारा७—वि० खाँचा । जाली-दार थैला । वि० लोना ।
ख़ारिज—वि०(अ०)निकाला-हुआ ।
ख़ारिजी—वि० (अ०) बहि-ष्कार किया हुआ ।
ख़ारिश—स्त्री० (फ़ा०) खुजली ।
खारी—स्त्री० ३४ सेर की तौल । वि० खारयुक्त ।
खारुआ—पु० एक प्रकार का रंग । एक मोटा कपड़ा ।
खाल—स्त्री०चमड़ा । नीची-ज़मीन । खाड़ी । [का तिल ।
ख़ाल—पु०(अ०)मुख आदि-
ख़ालरि—स्त्री० खाल ।
ख़ालसा—वि० (अ०) राज्य का । पु० सिक्खों की एक मंडली ।
ख़ाला—स्त्री०(अ०) मौसी ।
ख़ालिक़—पु० (अ०) सृष्टि-कर्त्ता ।
ख़ालिस—वि०(अ०) विशुद्ध ।
ख़ाली—वि० (अ०) रीता । क्रि० वि० सिर्फ़ ।
ख़ालू—पु० (अ०) मौसा ।
ख़ाविंद—पु० (फ़ा०) पति, स्वामी । [आत्मीय ।
ख़ास—वि० (अ०) मुख्य ।
ख़ासकर—क्रि०वि० (फ़ा०) विशेषतः ।[निज का मुंशी ।
ख़ासक़लम—पु० (अ०)
ख़ासगी—वि० निजी ।
ख़ासदान—पु०(अ०)पानदान ।
ख़ासनवीस—पु० (अ० फ़ा०) प्राइवेट सेक्रेटरी ।
ख़ासमहल—वि० (अ०) विवाहिता स्त्री या रानी के रहने का महल ।
ख़ासमहाल—पु० (अ०) वह ज़िमींदारी जिसका प्रबन्ध स्वयं सरकार करे ।
ख़ास व आम—पु० (अ०) छोटे बड़े सब लोग ।
ख़ासा७—वि० सुन्दर,स्वस्थ । एक भीना कपड़ा ।
ख़ासियत—स्त्री० (अ०) स्वभाव, गुण ।
ख़ास्सा—पु० (अ०)विशेषता ।
ख़ाहिश—स्त्री०(फ़ा०) इच्छा ।
ख़ाहिशमंद—वि० इच्छुक ।
खिंचना९—अक्रि० चित्रित-होना । आकर्षित होना ।
खिंचवाना—सक्रि० खींचने का काम अन्य से कराना ।
खिंचाव—पु० खींचना ।
खिँडाना—सक्रि० छितराना ।
खिआल—पु० मज़ाक़ ।
खिखिंद—पु० किष्किन्धा-पहाड़ ।
खिचड़ी—स्त्री० सम्मिलित पके हुए दाल और चावल । वि० मिलाजुला ।[आसन ।
खिजड़ी—स्त्री० योगी का-
खिजना, खिझना९—अक्रि० झुँझलाना, चिढ़ना ।
खिजलाना—अक्रि०चिढ़ना । सक्रि० चिढ़ाना । [काल ।
ख़िज़ाँ—स्त्री० (फ़ा०) पतझड़-
ख़िज़ाब—पु० (अ०) बाल को काला करने की औषध ।
ख़िजालत—स्त्री० (अ०) शरमिंदगी ।
ख़िज्र—पु० (अ०) एक पैग़ंबर । मार्ग-दर्शक ।
खिझाना—सक्रि० चिढ़ाना ।
खिझुवर—पु० चिढ़ने वाला ।
खिड़कना९—अक्रि० खिसक-जाना । [जंगल ।
खिड़की—स्त्री० झरोखा,
ख़िताब—पु० (अ०) पदवी ।
ख़ित्ता—पु० (अ०) प्रान्त । स्थान । ज़मीन का टुकड़ा ।
ख़िदमत—स्त्री०(अ०) सेवा ।
ख़िदमतगार—पु० (अ०फ़ा०) सेवक ।['ख़िदमत' का ।
ख़िदमात—स्त्री० (अ०) बहु०
खिदिर—पु० चन्द्रमा । तपस्वी ।
खिद्यमान—वि० दुःखी ।
खिद्र—पु० दरिद्रता । रोग ।
खिन—पु० क्षण ।
खिन्न—वि० दुःखी, उदास ।

खिपना—अक्रि० खपना। मिल-जाना।
खियाना—अक्रि० घिस जाना।
खियाल—पु० ख्याल। हँसी, खेल।
खिरका—पु० दे० 'खरक'।
ख़िरका—स्त्री० (अ०) फ़क़ीरों के ओढ़ने की गुदड़ी।
ख़िरदमंद—वि० (फ़ा०) बुद्धिमान्।
ख़िरनी—स्त्री० एक फल।
ख़िरमन—पु० (फ़ा०) खलियान।
ख़िराज—पु० (अ०) कर।
ख़िरामाँ—वि० (फ़ा०) मस्तानी चाल से चलने वाला।
ख़िरामाँ-ख़िरामाँ—क्रि० वि० (फ़ा०) धीरे-धीरे अथवा मस्तानी चाल से (चलना)।
खिरिरना—सक्रि० अनाज को छानना या फटकना। खुरचना।
खिरौरा७—पु० केवड़े की सुगन्ध से बाँधी गई खैर की टिकिया। [करने वाला।
खिलंदरा—वि० खिलवाड़-
खिल—पु० अर्गल। धन्नी।
ख़िलअत—स्त्री० (अ०) उपहार। उपाधि। [भीड़।
ख़िलक़त—स्त्री० (अ०) सृष्टि।
खिलकौरी—स्त्री० खिलवाड़।
खिलखिलाना—अक्रि० ज़ोर से हँसना। [एक जाति।
ख़िलजी—पु० पठानों की-
ख़िलत—स्त्री० (अ०) सम्मान-सूचक पोशाक।
खिलना—अक्रि० विकसित होना, प्रसन्न होना।
ख़िलवत—स्त्री० (अ०) एकांत, तनहाई। [स्थान।
ख़िलवतख़ाना—पु० एकांत-
खिलवर्ती—पु० हक़ीक़ी दोस्त।
खिलवाड़—स्त्री० खेल, तमाशा। [काम।
खिलाई—स्त्री० खाने का-
खिलाड़ी—पु० खेलने वाला।
खिलाना—सक्रि० खेल कराना। भोजन कराना। विकसित या प्रसन्न कराना।
ख़िलाफ़—वि० (अ०) विरुद्ध।
ख़िलाफ़गोई—स्त्री० (फ़ा०) झूठ-बोलना।
ख़िलाफ़त—स्त्री० (अ०) ख़लीफ़ा का पद।
ख़िलाफ़वर्ज़ी—स्त्री० (फ़ा०) अवज्ञा। [दूरी।
ख़िलाल—स्त्री० (अ०) हार।
ख़िल्क़त—स्त्री० (अ०) पैदा-करना। जन-समूह।
ख़िल्क़ी—वि० (अ०) पैदायशी।
खिलैया—वि० खिलाड़ी।
खिलौना—पु० खेलने की मूर्ति।
खिल्ली—स्त्री० हँसी-मज़ाक़।
ख़िश्त—स्त्री० (अ०) ईंट।
खिसकना—अक्रि० खसकना।
खिसना—अक्रि० खिसकना।
खिसलना—अक्रि० फिसलना, गिर पड़ना।
खिसाना—अक्रि० कुढ़ना।
ख़िसारा—पु० (अ०) घाटा।
खिसियाना—अक्रि० शरमाना। नाराज़ होना। [खीज।
खिसियाहट—स्त्री० क्रोध,
खिसी—स्त्री० लज्जा।
खिसौहाँ७—वि० लज्जित।
ख़िस्सत—स्त्री० (अ०) कंजूसी।
खींचतान—स्त्री० खींचाखींची।
खींचना—सक्रि० घसीटना। आकर्षित करना। चित्रित करना। [खींची।
खींचातानी—स्त्री० खींचा-
खीज, खीझ—स्त्री० झुँझलाहट।
खीजना, खीझना—अक्रि० नाराज़ होना, झुँझलाना।
खीन३—वि० क्षीण, दुर्बल।
खीप—वि० लज्जाशील। एक पेड़।
ख़ीमा—पु० (अ०) तम्बू।
खीर—स्त्री० दूध में पकाया हुआ चावल। [प्राशन।
खीरचटाई—स्त्री० अन्न-
खीरा—पु० एक फल।
खीरी—स्त्री० खिरनी। [लौंग।
खील—स्त्री० लावा। कील।
खीला—पु० कील, काँटा।
खीली—स्त्री० पान का बीड़ा।
खीवन—स्त्री० मस्ती।
खीस—वि० नष्ट। व्यर्थ। स्त्री० अप्रसन्नता। हानि। शर्म।
खीसा७—पु० थैला, जेब।
खीह—स्त्री० रेह। सज्जी।
खुंभी—स्त्री० कान की लौंग।
खुंडला—पु० कोटर, खोखर।

ख़ुआरर—वि० बरबाद । प्रतिष्ठाहीन ।
खुक्ख—वि० ख़ाली ।
खुखड़ी—स्त्री० एक प्रकार की कटार ।
खुगीर—पु० चारजामा ।
खुचुर—स्त्री० निरर्थक दोष ।
खुजलाना—अक्रि० खुजाना ।
खुजलाहट—स्त्री० खुजली ।
खुजली—स्त्री० खुजलाहट, एक चर्म रोग ।
खुटक—स्त्री० खटका ।
खुटकना—सक्रि० ऊपर की पत्ती इत्यादि तोड़ना, नोंचना ।
खुटचाल८—स्त्री० दुष्टता । बुरा आचरण ।
खुटना—अक्रि० खुलना । ख़तम होना । अलग होना ।
खुटपन—पु० खोटापन ।
खुटाना—अक्रि० पूरा होना।
खुटिला—पु० नाक या कान में पहनने का एक गहना ।
खुड्डी—स्त्री० शौच के लिए बैठने का पायदान ।
ख़ुतका—पु० (फ़ा०) पुरुषेंद्रिय । डंडा ।
ख़ुतबा—पु० (फ़ा०) भाषण । गुण-वर्णन । घोषणा ।
ख़ुतूत—पु० (अ०) बहु० 'ख़त' का । [धरोहर ।
खुत्थी, खुथी—स्त्री० खूँटी,
ख़ुद—वि० (फ़ा०) स्वयम् ।
ख़ुदकरदा—वि० (फ़ा०) अपना किया हुआ ।
ख़ुदकाम—वि० (फ़ा०) स्वार्थी ।
ख़ुदकाश्त—स्त्री० (फ़ा०) वह भूमि जिसे मालिक स्वयं जोते बोवे ।
ख़ुदकुशी—स्त्री० (फ़ा०) आत्म हत्या ।
ख़ुदग़रज़र—वि० (फ़ा०) स्वार्थी ।
खुदना—अक्रि० खोदा जाना।
ख़ुदनुमा—वि० (फ़ा०) घमंडी । [स्वार्थी ।
ख़ुदपरस्त—वि० (फ़ा०)
ख़ुदपसंद—वि० (फ़ा०) अपने को अच्छा समझने वाला । [स्वतंत्र ।
ख़ुदमुख़्तार—वि० (फ़ा०)
खुदरा—पु० फुटकर वस्तु ।
ख़ुदराय—वि० (फ़ा०) स्वेच्छाचारी ।
खुदवाई—स्त्री० खुदाई ।
खुदवाना—सक्रि० खोदने का कार्य अन्य से कराना ।
ख़ुदा—पु० (फ़ा०) ईश्वर ।
ख़ुदाई—स्त्री० (फ़ा०) ईश्वरत्व । सृष्टि ।
खुदाई—स्त्री० खोदने का काम । [दयालु ।
ख़ुदातर्स—वि० (फ़ा०)
ख़ुदाताला—पु० (फ़ा०) ईश्वर ।
ख़ुदादाद—वि० (फ़ा०) ईश्वर का दिया हुआ ।
ख़ुदा न ख़ास्ता—अव्य० ख़ुदा ऐसा न करे ।
ख़ुदापरस्तर—वि० (फ़ा०) ईश्वर को मानने वाला ।
ख़ुदाया—अव्य० हे ईश्वर ।
ख़ुदावंद—पु० (फ़ा०) स्वामी । [अभिमान ।
ख़ुदी—स्त्री० (फ़ा०)
खुद्दी—स्त्री० चावल आदि के छोटे-छोटे टुकड़े ।
खुनखुना—पु० झुनझुना ।
खुनस८—स्त्री० क्रोध ।
ख़ुन्सा—पु० (अ०) हिजड़ा ।
खुनसाना—सक्रि० रिसाना ।
ख़ुफ़िया—वि० (अ०) गुप्त । पु० जासूस ।
खुबारु—वि० नष्ट ।
खुभना९—अक्रि० चुभना ।
खुभराना—अक्रि० इठलाते हुए घूमना ।
खुभी—स्त्री० कान में पहनने की लौंग । हाथी के दाँत पर लगा चाँदी-सोना आदि का पोला ।
ख़ुम—पु० (फ़ा०) घड़ा ।
ख़ुमरा—पु० (अ०) मुसलमान-फ़क़ीर विशेष ।
खुमान—वि० दीर्घजीवी । पु० शिवाजी ।
ख़ुमार, ख़ुमारी—स्त्री० (फ़ा०) नशे की थकावट । नशा । आलस्य ।
ख़ुमार-आलूदा—वि० (अ० फ़ा०) ख़ुमार से भरा हुआ ।
खुमी—स्त्री० हाथी के दाँतों पर जड़ा धातु का पोल । दाँतों में जड़ी सोने की कील ।
ख़ुम्र—स्त्री० (अ०) शराब ।

खुरंड—पु० सूखे घाव की पपड़ी।
खुर—पु० चौपायों की फटी-टाप।
खुरक—स्त्री० सोच, अंदेशा।
खुरखुर—पु० गले की घर-घराहट।
खुरखुरा—वि० खुरदरा।
खुरचन—पु० एक मिठाई।
खुरचना—अक्रि० छीलना।
खुरचनी—स्त्री० खुरचने का चम्मच।
खुरचाल—स्त्री० शरारत।
खुरजी—स्त्री० (फ़ा०) बड़ा-थैला।
.खुरदा—पु० (फ़ा०) छोटी-मोटी चीज़। रेज़गी। वि० खुदरा।
.खुरदाफ़रोश—पु० (फ़ा०) फुटकर बेचने वाला।
खुरपका—स्त्री० चौपयों का एक रोग। [का औज़ार।
खुरपा७—पु० घास छीलने-
.खुरमा—पु० (फ़ा०) छोहारा। एक मिठाई।
.खुरशैद—पु० (फ़ा०) सूर्य।
.खुराक-स्त्री०(फ़ा०)भोजन।
.खुराफ़ात—स्त्री० (अ०) बेहूदा बातचीत।
खुरिया—स्त्री० प्याली।
खुरी—स्त्री० टाप का चिन्ह।
.खुरूस—पु० (फ़ा०) मुर्ग़ा।
खुरेरना—सक्रि० खदेड़ना।
.खुर्द—वि० (फ़ा०) छोटा।
.खुर्दबीन—स्त्री० (फ़ा०) सूक्ष्म-दर्शक-यंत्र।

.खुर्द-बुर्द—वि० (फ़ा०) नष्ट भ्रष्ट। पु० अपव्यय। अनुचित रीति से प्राप्त किया हुआ धन।
.खुर्दमहल—पु० (अ०फ़ा०) रखनी स्त्री। रखेली स्त्रियों के रहने का महल।
.खुर्दसाल७—वि० (फ़ा०) अल्पवयस्क।
.खुर्दा—पु० छोटी मोटी-चीज़।
.खुर्दाफ़रोश—पु० बिसाती।
.खुर्रम२—वि० (फ़ा०) प्रसन्नचित्त।
.खुर्राट-वि० चालाक। वृद्ध।
.खुर्शेद—पु० (फ़ा०) सूर्य।
खुलना१—अक्रि०-आवरण-का हटना। प्रकट होना। बंधन का छूटना। शोभित-होना।
.खुलफ़ा—पु० (अ०) बहु० 'खलीफ़ा' का।
खुला—वि० बंधन-रहित।
.खुलासा—पु० (अ०) सारांश। वि० स्पष्ट।
खुली—स्त्री०थैली, कोथली।
खुल्लमखुल्ला—क्रि० वि० स्पष्टरीति से। ज़ाहिरा में।
खुवारी—स्त्री० ख़राबी।
.खुश२—वि० (फ़ा०) प्रसन्न।
.खुशअतवार—वि० (फ़ा०) व्यवहार का श्रेष्ठ। [वान्।
.खुशक़िस्मत२—वि० भाग्य-
.खुशख़त—वि० (फ़ा०) सुलेखक।

.खुशख़बरी—स्त्री० अच्छी-ख़बर।
.खुशगवार—वि० (फ़ा०) अच्छा लगने वाला।
.खुशज़बान—वि० (फ़ा०) अच्छी बातें कहने वाला।
.खुशदामन—स्त्री० (फ़ा०) सास। [चित्त।
.खुशदिल-वि०(फ़ा०) प्रसन्न-
.खुशनवीस—वि० (फ़ा०) .खुशख़त। [भाग्यशाली।
.खुशनसीब२—वि० (फ़ा०)
.खुशनुमा—वि० (फ़ा०) सुन्दर। [प्रसन्नता।
.खुशनूदी—स्त्री० (फ़ा०)
.खुशबयान—वि० (फ़ा०) सुवक्ता। सुगन्धि।
.खुशबू—स्त्री० (फ़ा०)
.खुशमिज़ाज—वि० (फ़ा०) प्रसन्नचित्त।
.खुशवक्त-वि०(फ़ा०) प्रसन्न, सुखी। [सुखी।
.खुशहाल२—वि० (फ़ा०)
.खुशामद८—स्त्री० (फ़ा०) चापलूसी। [आनंद।
.खुशी—स्त्री० (फ़ा०)
.खुश्क—वि०शुष्क, सूखा।
.खुश्कसाली—स्त्री० (फ़ा०) सूखा। दुर्भिक्ष।
.खुश्का—पु० (फ़ा०) भात।
.खुसर—पु० (फ़ा०) ससुर।
.खुसरू—पु० (फ़ा०) सम्राट्।
खुसामति—स्त्री० .खुशामद।
खुसाल—वि० .खुशहाल।
.खुसूफ़—पु० (अ०) चन्द्र-

ग्रहण। [तौर पर।
ख़ुसूसन—क्रि० वि० ख़ास-
ख़ुसूसियत—स्त्री० (अ०) विशेषता। [की पूर्वी।
खुही—स्त्री० कपड़े या कंबल-
ख़ूँख़ार—वि० (फ़ा०) ख़ूनी, भयंकर।
खूँट—पु० कोना, छोर।
खूँटना—सक्रि० टोकना। रोकना।
खूँटा७—पु० मेख़। [कूद।
खूँद—स्त्री० घोड़े की उछल-
खूँदना—अक्रि० पैरों से दबाना, कुचलना।
ख़ूँरेज़—वि० (फ़ा०) ख़ूनी।
ख़ूँरेज़ी—स्त्री० (फ़ा०) ख़ून बहाना।
खूक, खूख—पु० सूअर।
खूटना—अक्रि० घटना। बीतना।
खूद, खूदड़—पु० छान लेने पर बची हुई छूँछ।
ख़ून—पु० (फ़ा०) रुधिर। हत्या।
ख़ूनख़राबा७—पु० मारकाट।
ख़ूनी—वि० (फ़ा०) हत्यारा।
ख़ूब—वि० (फ़ा०) अच्छा। क्रि० वि० भलीभाँति।
ख़ूबरू—वि० (फ़ा०) सुंदर।
ख़ूबसूरतर—वि० (फ़ा०) सुन्दर।
ख़ूबानी—स्त्री० (फ़ा०) ज़रदालू नामक फल।
ख़ूबी—स्त्री० (फ़ा०) अच्छाई, विशेषता।
खूसट, खूसर—पु० उल्लू।
वि० बुड्ढा। मनहूस।
ख़ूराक—स्त्री० (फ़ा०) भोजन।
ख्रष्टीय—वि० ईसाई।
खेंडी—स्त्री० गर्भस्थ शिशु के चारों ओर की झिल्ली।
खेकसा—पु० एक तरकारी।
खेचर—पु० आकाश में घूमने-वाला।
खेट—वि० अधम।
खेटक—पु० शिकार। तारा। ढाल। गाँव। [भड्डरी।
खेटकी—पु० शिकारी।
खेड़ा, खेरा—पु० छोटा गाँव।
खेत—पु० रणभूमि। फ़स्ल-पैदा करने की भूमि।
खेतिहर—पु० किसान।
खेती—स्त्री० किसानी।
खेती-बारी—स्त्री० किसानी।
खेद—पु० दुःख।
खेदना—सक्रि० खदेरना।
खेदा—पु० शिकार।
खेदित—वि० दुःखित।
खेना—सक्रि० नाव चलाना।
खेप—स्त्री० एक बार का लादा हुआ बोझ।
खेपना—सक्रि० बिताना।
खेपा—वि० पागल। वातुल।
खेम—पु० कुशल। [तम्बू।
ख़ेमा—पु० (अ०) डेरा।
ख़ेमागाह—पु० (अ० फ़ा०) जहाँ बहुत से ख़ेमे लगे हों।
ख़ेमादोज़—पु० (अ० फ़ा०) ख़ेमा बनाने वाला।
खेय—पु० क़िले आदि के चारों तरफ़ बनाई हुई खाई।
खेरा—पु० खेड़ा। छोटा गाँव।
खेरौरा—पु० एक प्रकार का लड्डू। [बहलाव।
खेल—पु० तमाशा। मन-
खेलक—पु० खिलाड़ी।
खेलना९—अक्रि० मन बह-लाव करना।
खेलवाड़—पु० खेल-तमाशा।
खेला—स्त्री० क्रीड़ा, खेल।
खेलार—पु० खिलाड़ी।
खेवक—पु० केवट।
खेवट—पु० पटवारी का काग़ज़। केवट।
खेवरिया—पु० मल्लाह।
खेवा—पु० नाव खेना तथा उसका किराया।
खेवाई—स्त्री० दे० 'खेवा'।
ख़ेश—वि० (फ़ा०) संबंधी।
ख़ेशोअक़ारिब—वि० (फ़ा०) नाते-रिश्ते के लोग।
खेस—पु० मोटे सूत की चादर।
खेसारी—पु० एक मोटा अन्न।
खेह, खेहर—स्त्री० धूल।
खैंचना—सक्रि० खींचना।
ख़ैबर—पु० हिमालय की एक प्रसिद्ध घाटी।
ख़ैयात—पु० (अ०) दरज़ी।
ख़ैयाम—पु० (अ०) फ़ारसी का एक प्रसिद्ध कवि। ख़ेमे बनाने वाला।
खैर—पु० कत्था।
ख़ैर—अव्य० (फ़ा०) तथास्तु। जाने दो। स्त्री० भलाई।
ख़ैरअंदेश, ख़ैरख़्वाह—वि० (अ० फ़ा०) शुभचिंतक।

ख़ैर-आफ़ियत—स्त्री० कुशल-क्षेम। [चिन्तक।
ख़ैरख़ाह२—वि० शुभ-
ख़ैरबाद—पु० (फ़ा०) कुशल रहे।
खैर-भैर—पु०हलचल।
ख़ैरमक़दम—पु० (अ०) स्वागत।
खैरसार—पु० कत्था।
खैरा—वि० कत्थई।
ख़ैरात—स्त्री० (अ०) दान।
ख़ैरियत—स्त्री० (फ़ा०) कुशलक्षेम।
ख़ैल—पु० (अ०) झुंड।
खैला—पु०मथानी। बछड़ा।
ख़ैला १—स्त्री० (फ़ा०) फूहड़ स्त्री।
खोंइचा—पु० आँचल।
खोंखी—स्त्री० खाँसी।
खोंच—स्त्री० खरोंट।
खोंचना—सक्रि० चुभाना।
खोंचा—पु० चिड़िया फँसाने का बाँस।
खोंचिया—पु० भिखारी।
खोंची—स्त्री० भिक्षा। मुट्ठी-भर अन्न। [उखाड़ना।
खोंटना—सक्रि० नोचना।
खोंडर—पु० खोखला।
खोंड़ा—वि० जिसका कोई अंग भङ्ग हो।
खोंतल,खोंता—पु०घोंसला।
खोंप—स्त्री०सिला हुआ टाँका। कपड़े का फटा हुआ भाग।
खोंपा—पु० फाल लगी हल की लकड़ी। चोटी का जूड़ा।
खोंसना—सक्रि० अटकाना।
खोई—स्त्री० रस निकाले हुए गन्ने के डंठल।
खोखला—वि० पोला।
खोगीर—पु० ज़ीन।
खोज—स्त्री० तलाश, पता।
खोजना—सक्रि० तलाश-करना। [हिजड़ा।
खोजा—पु०(फ़ा०) नौकर।
खोट ३—पु० दोष।
खोटा १-७—वि० दोषी।
खोटाई—स्त्री० बुराई।
खोड—वि० लँगड़ा।
खोड़—स्त्री० प्रेतबाधा।
खोद—पु० (फ़ा०) लोहे का टोप जो सिर की रक्षा के लिए युद्ध में पहना जाता है।
खोदना—सक्रि० गड्ढा-करना। नक्क़ाशी करना।
खोद-विनोद—स्त्री० छान-बीन। [काम या मज़दूरी।
खोदाई—स्त्री० खोदने का-
खोना—सक्रि० गँवाना
खोपड़ा७—पु० सिर।
खोपरा—स्त्री० श्रीफल। गरी।
खोभरा—पु० खूँटी।
खोभार—पु० कूड़ा आदि फेंकने का गड्ढा। सूअर के रहने का स्थान।
खोम—पु० क़ौम। समूह।
खोया—पु०खोवा।[स्नान।
खोर—पु० तंग गली। स्त्री०
ख़ोर—वि० (फ़ा०) खाने-वाला।
खोरना—अक्रि० नहाना।
खोरा—पु०कटोरा। गिलास। वि० लँगड़ा।
खोरि, खोरी—स्त्री० तंग गली। दोष। चन्दन का तिलक। कटोरी।
खोरिया—पु० विवाहोत्सव में स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक उत्सव।
ख़ोल७—पु० ग़िलाफ़।
खोलना—सक्रि० आवरण-हटाना। रहस्योद्घाटन-करना।
ख़ोशा—पु० (फ़ा०) अनाज की बाल। छोटे फलों का गुच्छा।
खोसना—सक्रि० छीनना।
खोह—स्त्री० गुफ़ा, कंदरा।
खोही—स्त्री० धूल। वर्षा से बचने के लिए कम्बल, बोरे आदि की बनायी हुई घूघी।
खौंचा—पु० साढ़े छः का पहाड़ा।
खौं—पु० खुरंड।
ख़ौफ़—पु० (अ०) डर।
ख़ौफ़ज़दा—वि० (फ़ा०) भयभीत। [डरावना।
ख़ौफ़नाक—वि० (फ़ा०)
खौर—पु० स्त्रियों के सर का गहना। चन्दन का आड़ा-तिलक। [तिलक लगाना।
खौरना—सक्रि० चन्दन का-
खौरहा७—वि० गंजा। खौरा-रोग वाला। [खुजली।
खौंरा—पु०एक प्रकार की-
खौरी—स्त्री० दे० 'खौर'।
खौलना ९—अक्रि०उबलना।
खौहा—वि० पेटू।
ख्यात—वि० प्रसिद्ध।

ख्यातगर्हण—वि० निन्दित।
ख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि।
ख्यातिघ्न—वि० निन्दक।
ख्यातप्राप्त—वि० प्रसिद्ध।
ख्यापक—वि० प्रकाशक।
ख्यापन—पु० प्रकाश।
ख़्यान—पु० ध्यान।
ख़्याली—वि०कल्पित। खेल-करने वाला।
ख्रिष्टान—पु० ईसाई।
ख्रीष्ट—पु० ईसा-मसीह।
ख़्वाँ—वि० (फ़ा०) पढ़ने या कहने वाला।
ख़्वांदगी—स्त्री० पढ़ाई।
ख़्वांदा—वि०(फ़ा०) शिक्षित।
ख़्वाजा—पु०(फ़ा०) मालिक। मुसलमान फ़क़ीर। अन्तःपुर का नौकर (नपुंसक)।
ख़्वाजासरा—पु० (फ़ा०) महलों का सेवक (हिजड़ा)।
ख़्वान—पु० (फ़ा०) थाल।
ख़्वानपोश—पु० (फ़ा०) ख़्वान के ऊपर ढकने का कपड़ा।
ख़्वाब—पु० (फ़ा०) स्वप्न।
ख़्वाबगाह—स्त्री० (फ़ा०) शयनागार।
ख़्वार२—वि० (फ़ा०) ख़राब।
ख़्वास्तगार—वि० (फ़ा०) इच्छुक।
ख़्वाह—अव्य०(फ़ा०) अथवा। वि० चाहने वाला।
ख़्वाह-मख़्वाह—क्रि० वि० (फ़ा०) चाहे इच्छा हो चाहे न हो। अवश्य। [इच्छा।
ख़्वाहिश—स्त्री० (फ़ा०)
ख़्वाहिशमंद—वि० (फ़ा०) इच्छुक।

३—ग

गंग—स्त्री० गङ्गा।
गंगबरार—स्त्री० बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि।
गंगशिकस्त—पु० धारा से कटी हुई भूमि।
गंगा—स्त्री० एक नदी।
गंगागति—स्त्री० मुक्ति।
गंगा-जमनी—वि० मिला-हुआ। [एक रेशमी कपड़ा।
गंगाजल—पु०गंगा का पानी।
गंगाजली—स्त्री० गंगाजल भरने की सुराही।
गंगाद्वार—पु० हरद्वार।
गंगाधर—पु० शिवजी।
गंगापुत्र—पु० भीष्म। घाटिया।
गंगायात्रा—स्त्री० मृत्यु।
गंगाल—पु० जल का बड़ा-बर्तन।
गंगालाभ—पु० मृत्यु।
गंगासागर—पु० एक तीर्थ जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है। टोंटीदार झारी।
गंगाभून—वि० पवित्र।
गगोम्भ—पु० गंगाजल।
गंगोतरी—स्त्री० एक प्रधान तीर्थ जहाँ से गंगाजी निकली हैं।
गंगोदक—पु० गंगाजल।
गंगौटा—स्त्री० गंगातट की चिकनी मिट्टी।
गंज—पु० (फ़ा०) सिर के बाल उड़ने का रोग समूह। कोष। बाज़ार [गोला
गंजगुबारा—पु० बम का-
गंजन—पु० पीड़ा। नाश।
गंजना—सक्रि० नाश करना।
गंजा—पु० गंजरोग। वि० खल्वाट। स्त्री० मद्यशाला।
गंजाना—सक्रि० नाश-करना। ढेर लगाना।
गंजित—वि० अपमानित।
गँजिया—स्त्री० थैली। घास बाँधने की जाली।
गंजी—स्त्री० ढेर। बंडी। वि० गँजेड़ी।
गंजीफ़ा—पु० (फ़ा०) ताश का खेल जो ९६ पत्तों से खेला जाता है। [वाला।
गँजेड़ी—वि० गाँजा पीने-
गँठकटा—वि० जेबकतरा।
गँठजोड़ा, गठबंधन—पु० विवाह में वर बधू को गाँठ जोड़ने की एक रस्म।
गंड—पु० गाल। गाँठ। चिह्न।
गंडक—पु० गले में पहनने

का गडा । गैंड़ा । एक नदी।
गंडकाली—स्त्री० लजालू।
गंडमंडल—पु० कनपटी।
गंडमाला—स्त्री० कंठमाला।
गंडशैल—पु० पर्वत से गिरा- मोटा पत्थर। [गाल।
गंडस्थल—पु० कनपटी,
गंडा—पु० गाँठ। चार का समूह। जंतर का तागा, ताबाज़।
गंडाली—स्त्री० उजली दूब।
गँड़ासा७—पु० एक शस्त्र।
गंडार—पु० गन्ना, ऊख।
गंडुक, गंडूक—पु० चिल्लू। कुल्ला।
गंडूपद—पु० केंचुआ।
गंडूष—पु० कुल्ला, चुल्लू।
गँडरी—स्त्री० ईख का छोटा टुकड़ा।
गंतव्य—वि० जाने योग्य।
गंता—वि० गमन करने वाला।
गंतु, गंतुक—पु० पथिक।
गंत्री—स्त्री० गाड़ी।
गंदगी—स्त्री० (फ़ा०) मैलापन।
गँदला—वि० गन्दा।
गदा७—वि० (फ़ा०) मैला, अशुद्ध।
गदुम—पु० (फ़ा०) गेहूँ।
गंदुमी—वि० (फ़ा०) गेहूँ के रंग का।
गंध—स्त्री० महँक। लेश।
गंधक—स्त्री० एक खनिज- पदार्थ। [रङ्ग का।
गंधकी—वि० हलका पीले-

गंधन—पु० हिंसा। उत्साह। चुग़ली। सूचना देना।
गंधनाकुली—स्त्री० रास्ना नामक लता।
गंधपत्र—पु० सफ़ेद तुलसी। मरुवा। नारंगी। बेल।
गंधबिलाव—पु० नेवले के समान एक जीव।
गंधफली—स्त्री० ककुनी। चम्पा की कली।
गंधमादन—पु० एक पर्वत। भ्रमर। [मद्य।
गंधमादिनी—स्त्री० लाख।
गंधमार्जार—पु० गंधबिलाव।
गंधमूली—स्त्री० आँबाहलदी।
गंधराज—पु० चंदन। नख।
गंधर्व७—पु० गान कला में पटु देवयोनि विशेष। हिरण। घोड़ा। प्रेत। एक गायक जाति।
गंधर्वनगर—पु० मिथ्या भ्रम। आकाश में दिखाई देने वाला कल्पित ग्राम-समूह।
गंधर्वविद्या—स्त्री० गान- विद्या।
गंधर्वविवाह—पु० वर, वधू का अपनी इच्छानुसार विवाह कर लेना।
गंधर्ववेद—पु० संगीत-शास्त्र।
गंधर्वहस्तक—पु० एरंड, रेंड़।
गंधर्वी—स्त्री० दुर्गा।
गंधवणिक—पु० अत्तार।
गंधवह, गंधवाह—पु० हवा।
गंधवहा—स्त्री० नासिका, नाक।
गंधसार—पु० चन्दन।

गंधाना—अक्रि० महँकना।
गंधाबिरोज़ा—पु० चीड़ का गोंद। [पुराना नाम।
गंधार—पु० क़न्दहार का-
गंधाश्मा—पु० गंधक।
गंधिका—स्त्री० गंधक।
गंधिनी—स्त्री० शराब।
गंधी—पु० अत्तार। इत्र- फ़रोश।
गँधीला—वि० गँदला।
गंधोत्तमा—स्त्री० शराब।
गंधोली—स्त्री० बर्रे।
गंभारी—स्त्री० काश्मरी।
गंभीर—वि० गहरा। घना। शान्त।
गंमत—स्त्री० विनोद, हँसी।
गँव—स्त्री० घात। मतलब।
गँवई—स्त्री० छोटा गाँव।
गँवरमसला—पु० गँवारों की उक्ति।
गँवहियाँ—पु० अतिथि।
गँवाना—सक्रि० खोना।
गँवार७—वि० बेवक़ूफ़। देहाती।
गँवारू—वि० भद्दा। देहाती।
गँवेला—स्त्री० गँवारी।
गंस—पु० द्वेष। ताना। स्त्री० गाँसी।
गँसना—सक्रि० जकड़ना।
गँसीला—वि० गफ़। नोकदार।
गइंद—पु० बड़ा हाथी।
गईबहोर—वि० खोयी वस्तु को फिर प्राप्त करने वाला।
गऊ—स्त्री० गाय।
गवरिया—स्त्री० बार्टा।
गगन—पु० आकाश।

गगनचर—पु० आकाशगामी।
गगनचुंबी—वि० अत्यन्त ऊँचा।
गगनध्वज—पु० सूर्य। बादल।
गगनभेड़—पु० गिद्ध।
गगनभेदी, गगनस्पर्शी—वि० अत्यन्त ऊँचा।
गगन-विहारी—पु० आकाश में विहार करने वाले सूर्य, चन्द्र आदि।
गगरा७—पु० घड़ा।
गगरिया—स्त्री० छोटा घड़ा।
गच—पु० चूने, सुरखी का मसाला जिससे फ़र्श बनाया जाता है। पक्का फ़र्श।
गचकारी—स्त्री०गच का काम।
गचगार—पु० गच का काम करने वाला मिस्त्री। [मरना।
गचना—सक्रि० कस के
गचपच—स्त्री० भीड़भाड़।
गछना—अक्रि० चलना। सक्रि० गूँथना। बनाना। अपने ऊपर लेना।
गजंद—पु० हाथी।
गज—पु० हाथी
गज़—पु० १६ गिरह की लंबाई की माप। पुराने ढंग की बन्दूक भरने की छड़।
गज़क—स्त्री० (फ़ा०) चाट, जलपान। तिल-पपड़ी।
गजगामिनी—वि० स्त्री० हाथी के समान मन्द, चाल वाली।
गजगाह—पु० हाथी घोड़े का गहना। हाथी की झूल।
गजगौनी—स्त्री० हाथी की सी मंद चाल चलने वाली।
गजगौहर—पु० गजमुक्ता।
गजचर्म—पु० एक रोग।
गज़ट—पु० (अं०) विज्ञप्ति।
गजता—स्त्री० हस्तिसमूह।
गजदंती—वि० हाथी दाँत का बना हुआ।
गजदान—पु०हाथी का मद।
गजधर—पु० राज, मेमार।
गज़नफ़र—पु०(फ़ा०) सिंह, शेर।
गजना—अक्रि०गर्जनकरना।
गजनाल—स्त्री० बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।
ग़ज़न्द—पु० (फ़ा०) कष्ट। हानि।
गजपति—पु० श्रेष्ठ-हाथी। बहुत से हाथियों का मालिक।
गजपाटल—पु० मुरमा।
गजपाल—पु० महावत।
गजपिप्पली—स्त्री०एक पौधा।
गजपुट—पु० औषध पकाने का गड्ढा। [शाला।
गजबंधिनी—स्त्री० हस्ति-
ग़ज़ब—पु० (अ०) कोप। आपत्ति। अँधेरा। विलक्षण-बात। [क्रोध।
ग़ज़बनाक—वि० [अ०] बहुत-
गजबाँक,गजबाग—पु०अंकुश।
गजबोली—वि०स्त्री० ग़ज़ब-ढाने वाली।
गजभक्ष्या—स्त्री०साल वृक्ष।
गजमणि—स्त्री० दे० 'गज-मुक्ता।
गजमुक्ता—पु० हाथी के मस्तक से निकला हुआ मोती।
गजमुख—पु० गणेशजी।
गजमोचन—पु० विष्णु।
गजमोती—पु० गजमुक्ता।
गजर—पु० ग़ज़ल। घंटे की आवाज़।
गजरबजर—वि० अंडबंड।
गजरा—पु० घनी गुँथी हुई फूल-माला।
गजराज—पु० बड़ा हाथी।
ग़ज़ल—स्त्री० (अ०) उर्दू, फ़ारसी की एक कविता।
गजबदन, गजानन—पु० गणेशजी।
गजवान—पु० महावत।
गजवुसा—पु० केला।
गजशाला—स्त्री०फ़ीलख़ाना।
गजा—पु० नगाड़े की चोब। खुर्मा। खजूर।
गजाधर—पु० विष्णु।
गजानन—पु० गणेशजी।
गजारि—पु० शेर।
ग़ज़ाल—पु० (अ०) मृग-शावक। [पेड़।
गजाशन—पु० पीपल का-
गजी—स्त्री० हथिनी। गाढ़ा।
गज़ी—स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा।
गजेंद्र—पु० ऐरावत। श्रेष्ठ-हाथी।
गज्जर—पु० दलदल।
गज्जूह—पु० हस्ति-समूह।
गझिन—वि० मोटा, गफ़।
गटई, गटइया—स्त्री०गला।
गटकना—सक्रि० निगलना।

गटकीला—वि० गटकने-वाला।
गटना—अक्रि० बँधना।
गटपट—स्त्री० सहवास। मिलावट।
गटरमाला—स्त्री० बड़े दानों- [की माला।
गटा, गट्टा—पु० कलाई। बीज, गाँठ। गटरमाला।
गटापारचा—पु० एक प्रकार का गोंद।
गटी—स्त्री० गाँठ। समूह।
गट्ठर—पु० बड़ी गठरी।
गट्ठा७—पु० बड़ी गठरी।
गठन—स्त्री० बनावट।
गठना—अक्रि०सटना। मेल-होना।
गठबंधन—पु० विवाह में वर-वधू की गाँठ जोड़ना।
गठरी—स्त्री० पोटली।
गठवाँसी—स्त्री० बिस्वे का बीसवाँ हिस्सा।
गठाव—पु० गठन।
गठित—वि० गठा हुआ।
गठिया—पु० वात रोग। बोझ। [लगाना।
गठियाना—सक्रि० गाँठ-
गठीला७—वि० गाँठ युक्त। दृढ़। [दोस्ती। साज़िश।
गठौत, गठौती—स्त्री०
गड़क—पु० एक प्रकार की मछली।
गड़काना—सक्रि० डुबाना।
गड़गड़ा—पु० एक प्रकार का हुक्का।
गड़गड़ाना—अक्रि० गरजना।
गड़गड़ाहट—स्त्री० गर्जन।
गड़गड़ी—स्त्री० डुग्गी।
गड़गूदड़—पु० चिथड़ा।
गड़दार—पु० महावत। मतवाले हाथी के साथ भाला-लेकर चलने वाला नौकर।
गड़ना९—अक्रि० चुभना, धँसना। स्थिर होना।
गड़प—स्त्री० पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
गड़पना—सक्रि० निगलना।
गड़प्पा—पु० गड्ढा।
गड़बड़—वि० अंडबंड।
गड़बड़झाला—स्त्री०गड़बडी।
गड़बड़ाना—अक्रि० गड़बड़ी-में पड़ना। [करने वाला।
गड़बड़िया—वि० गड़बड़-
गड़बड़ी—स्त्री० गड़बड।
गड़रिया—पु० एक जाति जो भेड़ पालती है।
गड़हरी—स्त्री० लात।
गड़हा—पु० गड्ढा।
गड़ा—पु० ढेर। [धँसाना।
गड़ाना—सक्रि० चुभाना।
गड़ाप—पु० दे० 'गड़प'।
गड़ापा—पु० गहरा स्थान।
गड़ायत—वि० गड़ने वाला।
गड़ारी—स्त्री० पहिया, घिरनी। [घेरेदार।
गड़ारीदार—वि० गंडेदार।
गड़ासा—पु० करबी काटने का एक हथियार।
गड़ियार—वि० सुस्त।
गडुर—वि० कुबड़ा।
गडुरी—स्त्री० एक पक्षी।
गडुल—पु० कुबड़ा व्यक्ति।
गडुवा—पु० टोंटीदार लोटा।
गड़ेरदार—वि० घेरदार।
गड़ौना—पु० काँटा।
गड्ड७—पु० समूह, ढेर।
गड्डमगोल—पु० गड़बड़ी।
गड्डमड्ड—पु० घपला।
गड्डाम—वि० नीच, बदमाश।
गड्ढा—पु० गड़हा।
गढ़ंत—वि० कल्पित।
गढ़७—पु० क़िला। खाई।
गढ़न—स्त्री० बनावट।
गढ़ना—सक्रि० रचना, बनाना।
गढ़पति—पु० राजा।
गढ़वाल—पु० क़िले वाला।
गढ़ा—पु० गड्ढा।
गढ़ाना—सक्रि० गढ़वाना।
गढ़िया—वि० गढ़ने वाला। स्त्री० भाला, बरछी।
गढ़ी—स्त्री० छोटा क़िला।
गढ़ीश—पु०गढ़ का मालिक।
गढ़ैया—वि० बनाने वाला।
गढ़ोई—पु० गढ़पति।
गण३—पु० श्रेणी। समूह। दूत। भगण, जगण आदि।
गणक—पु०ज्योतिषी। हिसाब का ज्ञाता।
गणतंत्र—पु०प्रजातंत्र राज्य।
गणदेवता—पु०मिलेहुए देवता।
गणना—स्त्री०गिनती, संख्या।
गणनाथ—पु० गणेशजी।
गणनायक—पु० गणेशजी।
गणनीय—वि०गिनने योग्य।
गणपति—पु० गणेश, शिव।
गणपूरकसंख्या—स्त्री०कोरम।
गणराज्य—पु० प्रतिनिधि-सत्तात्मक राज्य।

गणरात्र—पु० रात्रि-समुदाय।
गणरूप—पु० मदार, आक।
गणाधिप—पु० गणेश।
गणाध्यक्ष—पु०गणेश।महंत।
गणिका—स्त्री० वेश्या। जूही।
गणित—पु० हिसाब।
गणितज्ञ—पु० ज्योतिषी। गणित का ज्ञाता।
गणेय—वि० गिनने योग्य।
गणेश—पु० शिव-पुत्र।
गणेशचतुर्थी—स्त्री० भादों सुदी चौथ।
गणेशभूषण—पु० सिन्दूर।
गण्य—वि० गिनने के योग्य।
गत—वि० बीता हुआ, पिछला। रहित। स्त्री०गति।
गतका—पु० लकड़ी खेलने का डंडा। खेल विशेष।
गतत्रप—वि० निर्लज्ज।
गतनासिक—वि० नकटा।
गतप्रभ—वि० प्रभाहीन।
गतवित्त—वि० निर्धन।
गतव्यथ—वि० व्यथा-रहित।
गतांक—वि० गया बीता। पिछली संख्या।
गताक्ष—वि० अंधा।
गतागत—पु० आमदरफ्त।
गतानुगतिक—वि० अनुकरण-कर्त्ता। [की रस्सी।
गतार—स्त्री० बोझ बाँधने-
गतार्तवा—स्त्री० बंध्या।
गति—स्त्री० चाल। मुक्ति। अवस्था। [रंगढंग।
गतिविधि—स्त्री० दशा।
गत्ता—पु० दफ़्ती, पुट्ठा।
गत्तालखाता—पु० बट्टाखाता।
गत्थ, गथ—पु०धन-सम्पत्ति।
गत्वर—वि० नाशवान्।
गथ—पु० पूँजी।
गथना—सक्रि० एक में दूसरा-जोड़ना या मिलाना।
गद—पु० विष। व्याधि। रोग।
गदका—पु० दे० 'गतका'।
गदकारा—वि० मुलायम।
गदगद—वि० पुलकित।
गदना—सक्रि० कहना।
ग़दर—पु० (अ०) बलवा, बग़ावत।
गदरा—वि० अधपका।
गदराना—अक्रि० पकने पर-आना।
गदला—वि० मैला।
गदशत्रु—पु०वैद्य। औषध।
गदहपचीसी—स्त्री० जवानी की उम्र।
गदहपन—पु० मूर्खता।
गदहा—पु० चिकित्सक। गधा। [का गधा।
गदहला—पु०बोझा लादने-
गदा—स्त्री० एक प्राचीन-अस्त्र। पु० (फ़ा०)फ़क़ीर।
गदाई—वि० (फ़ा०) तुच्छ, ख़राब, रद्दी। स्त्री०फ़क़ीरी।
गदाग्रज—पु० श्रीकृष्ण।
गदाधर—पु० विष्णु।
गदायुध—पु०लाठी। गदा।
गदाला—पु० मिट्टी खोदने का औज़ार। हाथी की पीठ का गद्दा।
गदित—वि० कहा हुआ
गदेला—पु० गद्दा। बच्चा।
गदोरी—स्त्री० हथेली।
गद्गद्—वि० अधिक हर्ष, प्रेम आदि के आवेश से पूर्ण।
गद्द—पु० किसी वस्तु के नरम जगह पर गिरने का शब्द। [मोटा गद्दा।
गद्दर—वि० अधपका।
गद्दा—पु० तोशक।
ग़द्दार—वि० (अ०) बड़ा-बेवफ़ा। भारी विद्रोही।
गद्दी—स्त्री० किसी अधिकारी या व्यापारी के बैठने का मुख्य स्थान। छोटा गद्दा।
गद्दीनशीन—वि० सिंहासन-स्थित।
गद्य—पु०लेख, जो पद्य न हो।
गद्यात्मक—वि० गद्य का।
गधा—पु० गर्दभ, खर। वि० मूर्ख।
गन—पु० दे० 'गण'।
गनगनाना—अक्रि० काँपना। रोमांचित होना। [तीज।
गनगौर—स्त्री० चैत्र सुदी-
गनना—अक्रि० गिनना। स्त्री० गणना।
गननाना—अक्रि० गूँजना।
गनाल—स्त्री० तोप विशेष।
गनिका—स्त्री०दे० 'गणिका'।
ग़नी—वि० (अ०) बड़ा-धनी। स्वतंत्र। [शत्रु।
ग़नीम—पु० (अ०) डाकू।
ग़नीमत—स्त्री० (अ०) अच्छाई। संतोष। लूट का माल।

गनोरिया—पु० (अ०) सूज़ाक ।
गन्ना—पु० ईख । [अफ़वाह ।
ग़प—स्त्री०(फ़ा०)झूठी बात ।
गपकना—सक्रि० चटपट-निगलना । [बात ।
गपड़चौथ—स्त्री० व्यर्थ की-
गपना—सक्रि०गप मारना ।
ग़पशप—स्त्री० झूठी सच्ची-बातें ।
गपिहा—वि० बकवादी ।
गपोड़—वि० गप्पी ।
गपोड़ा—पु० झूठी बात ।
गपोड़िया—पु० गप्पी ।
गप्पी—वि०गप मारने वाला ।
गप्फा—पु०बड़ा कौर । लाभ ।
गफ़—वि० (फ़ा०) घना ।
ग़फ़लत२—स्त्री० (अ०) असावधानी ।
ग़फ़ूर—वि० (अ०)क्षमाशील ।
ग़फ़्फ़ार—वि० (अ०) बड़ा-दयालु ।
गबड़ी, गबड्डी—स्त्री०कबड्डी-का खेल ।
ग़बन—पु० (अ०) पराये की थाती को हज़म करना ।
गबरगंड—वि० बेवकूफ़ ।
गबरहा—वि०गोबर मिला ।
गबरा—वि० धनी । घमंडी ।
गबरू—वि० जवान । भोला-भाला । पु०पति । [कपड़ा ।
ग़बरून—पु०एक प्रकार का-
गब्बर—वि०घमंडी । धनी ।
गब्र—पु० (फ़ा०) अग्नि का उपासक । पारसी ।
गभस्ति—पु०सूर्य । किरण ।
गभस्तिमान्—पु० सूर्य । एक द्वीप, एक पाताल ।
गभीर ३—वि० गहरा ।
गभुआर—वि०गर्भ के समय का बाल । कम समझ ।
गम—स्त्री० पहुँच । मार्ग । सहवास ।
ग़म—पु०(अ०) रंज , दुःख ।
गमक—पु० बतलाने वाला । तबले की गहरी ध्वनि । स्त्री० सुगन्धि ।
ग़मकदा—पु० (अ० फ़ा०) ग़मयुक्त स्थान । संसार ।
गमकना—अक्रि० महँकना ।
गमकीला—वि० महँकने-वाला ।
ग़मख़ार—पु० दोस्त । वि० सहिष्णु । [सहनशील ।
ग़मख़ोर२—वि० (अ० फ़ा०)
ग़मगीन—वि० (अ० फ़ा०) उदास । [हमदर्द ।
ग़मगुसार२—वि० (अ० फ़ा०)
ग़मज़दा, ग़मरसीदा —वि० (अ० फ़ा०)दुःखी, रंजीदा ।
गमथ—पु०पथिक । रास्ता । पेशा ।
गमन—पु० आना । संभोग ।
गमनपत्र—पु० चालान ।
गमना—अक्रि० जाना ।
ग़मनाक—वि० दुःखी ।
गमला—पु० फूल, पौधे लगाने का बर्त्तन ।
गमाना—सक्रि० खोना ।
गमार—वि० देहाती ।
गमिना—सक्रि० ग़म करना, ध्यान करना । [मृत्यु ।
ग़मी—स्त्री० (अ०) शोक ।
गम्मत—स्त्री० विनोद ।
ग़म्माज़र—पु० (अ०) निन्दक, चुग़लख़ोर ।
गम्य—वि० जाने योग्य ।
गयंद—पु० बड़ा हाथी ।
गय—पु० घर । आकाश । धन । पुत्र । हाथी । प्राण ।
गयनाल—पु० गजनाल ।
गयल—स्त्री० गली, रास्ता ।
गयशिर—पु० आकाश । गया तीर्थ ।
गया—पु०हिन्दुओं का प्रसिद्ध-तीर्थ । [पंडा ।
गयावाल—पु० गया का-
गर—*अव्य० (फ़ा०)यदि । (हिं०) रोग । विष । गला । अव्य० एक प्रत्यय ।
ग़रक़—वि० (अ०) डूबा-हुआ । [हुआ ।
ग़रक़ाब—वि० (अ०) डूबा-
ग़रक़ा—स्त्री० (अ०) बाढ़ ।
गरगज—पु०क़िले की दीवारों का बुर्ज । [यद्यपि ।
गरचे—अव्य० (फ़ा०)
गरज—स्त्री० गम्भीर-शब्द ।
ग़रज़—स्त्री० (अ०) मतलब ।

नोट—*उर्दू में 'गर' एक प्रत्यय है, जो 'बनाने वाला' या 'करने वाला' अर्थ में प्रयुक्त होती हैं, जैसे कारीगर, कुंदीगर ।

आवश्यकता।[शब्द करना।
गरजना—अक्रि० ज़ोर से·
ग़रज़मंद२—वि० (अ० फ़ा०) ग़रज़वाला।
गरजी, ग़रजू—वि० (अ०) ग़रज़मंद।
गरट्ट—पु० झुण्ड।
गर्द—स्त्री० धूलि
गरदन—स्त्री० (फ़ा०) गला, ग्रीवा।[पकड़कर निकालना।
गरदनियाँ—स्त्री० गरदन·
गरदनी—स्त्री० (फ़ा०)कुरते-आदि का गला। घोड़े के ओढ़ने का कपड़ा। गले में पहनने की हँसली।
गरदा—पु० (फ़ा०) धूल।
गरदान—स्त्री०(फ़ा०) घूमना, लौटना।[गिनना।लपेटना।
गरदानना—सक्रि०समझना।
गरदी—स्त्री०(फ़ा०) घूमना-फिरना। क्रांति। [गाड़ी।
गरदूँ—पु० (फ़ा०)आकाश।
गरध्वज—पु० अभ्रक।
गरना—अक्रि० गलना।
गरनाल—स्त्री० चौड़े मुँह की तोप।
गरप्रिय—पु० शिवजी।
गरब—पु० गर्व, घमंड।
ग़रब न—पु० (अ०) पश्चिम।
गरबई—स्त्री० घमंड।
गरबगहेला७—वि० घमंडी।
गरबीला७—वि० अभिमानी।
गरभाना—अक्रि० गर्भयुक्त होना।
गरमर—वि० उष्ण, तप्त।
गरमाई—स्त्री० गरमी, उष्णता। [सुनी, जोश।
गरमागरमी—स्त्री० कहा·
गरमाना—अक्रि० क्रोध करना।सक्रि०गरमकरना।
गरमाहट—स्त्री० गर्मी।
गरमीदाना—पु० अम्हौरी।
गरराना—अक्रि० गम्भीर-गरजन करना। [सिरोही।
गररी—स्त्री० एक चिड़िया,
गरल—पु० विष।
गरलारि—पु०पन्ना। [गला।
गरवा—वि० भारी। पु०
गरव्रत—पु० मोर।
गरह—पु० बाधा, ग्रह।
गरहन—पु० काली तुलसी। ग्रहण।
गराँ—वि० (फ़ा०) महँगा।
गराँख़ातिर—वि० (फ़ा०) अप्रिय। [बहुमूल्य।
गराँ-बहा—वि० (फ़ा०)
गराँमाया—वि० (फ़ा०) बहुमूल्य। [की रस्सी।
गराँव—पु० चौपायों के गले·
गराज—स्त्री० गर्जन।
गराड़ी—स्त्री० चरखी।
गरानी—स्त्री०(फ़ा०) महँगी।
ग़रायब—वि० (अ०) बहुत·विलक्षण।
गरारा—वि० बली, घमंडी।
ग़रारा—पु० (फ़ा०) कुल्ला, कुल्ली। [ढीली मोहरी का।
गरारेदार—वि० (फ़ा०)
गरासना—सक्रि० पकड़ना। निगलना।
गरिमा—स्त्री० महिमा। गुरुत्व। घमंड।
गरियाना—सक्रि०गाली देना।
गरियाल—वि० अड़ियल, सुस्त।
गरिष्ठ—वि० बहुत भारी। जल्द न पचने वाला।
गरी—स्त्री० नारियल के अन्दर का गूदा। [हुआ।
ग़रीक़—वि० (अ०) डूबा·
ग़रीज़न—पु० (अ०)स्वभाव।
ग़रीब२—वि० (अ०) नम्र। दरिद्र।
ग़रीब-उलवतन२—वि० (अ०) घरबार छोड़ कर परदेश में रहने वाला।
ग़रीबनिवाज—वि० (अ० फ़ा०) दीनदयालु।
ग़रीबपरवर—वि० (अ० फ़ा०) दीनपालक।
ग़रीबाना—वि० ग़रीबों जैसा।
ग़रीबामऊ—वि० ग़रीबों के योग्य।
गरीयस७—वि० महान्। बहुत भारी। [भारी।
गरुइ, गरुआ—वि० गुरु,
गरुआई—स्त्री० भारीपन।
गरुआना—अक्रि० भारी-होना। [एक पक्षी।
गरुड़—पु०विष्णु का वाहन।
गरुड़गामी—पु० विष्णु।
गरुड़ध्वज—पु० विष्णु।
गरुडाग्रज—पु० सूर्य का सारथी।
गरुडासन—पु० विष्णु।
गरुत्—पु० पंख।
गरुत्मान्—पु० गरुड़। पक्षी।
गरू—वि० भारी।

ग़रूर—पु० (अ०) घमंड ।
गरूरताई—स्त्री० अभिमान ।
गरूरा, ग़रूरी—वि० अभिमानी । [आदि का गला ।
गरेबान—पु० (फ़ा०) कुरते-
गरेरना—सक्रि० घेरना ।
गरेरा—पु० घेरा । वि० घुमावदार । [घुमावदार ।
गरेरी—स्त्री० गराड़ी । वि०
गरैयाँ—पु० गले की रस्सी ।
गरोह—पु० (फ़ा०) झुण्ड ।
ग़र्क़—वि० (अ०) डूबा-हुआ ।
गर्ग—पु० एक ऋषि । अग्रवालों का एक गोत्र ।
गर्गरी—स्त्री०मथने का पात्र ।
गर्जन—पु० भीषण-ध्वनि ।
गर्जित—वि० गर्जना किया-हुआ । पु० मेघ-गर्जना । मदवाला हाथी । [गुफ़ा ।
गर्त्त—पु० गड्ढा । दरार ।
गर्द—स्त्री० (फ़ा०) धूल ।
गर्दख़ोरा—पु० (फ़ा०) पायन्दाज़ ।
गर्दभ—पु० गधा । [चक्कर ।
गर्दिश—स्त्री०(फ़ा०) विपत्ति ।
गर्द्ध—पु० लोभ ।
गर्द्धन—पु० लोभी । लोभ ।
गर्द्धित—वि० लोभी ।
गर्भ—पु०हमल, कुक्षि।गर्भस्थ-प्राणी । शिशु ।
गर्भकंटक—पु० कटहल ।
गर्भक—पु० केशों के बीच में धरी फूलमाला ।
गर्भकाल—पु० ऋतुकाल ।
गर्भकेसर—पु० फूलों के अन्दर के पतले तन्तु ।
गर्भकोष—पु० गर्भाशय ।
गर्भगृह—पु० घर के बीच का भाग, आँगन ।
गर्भनाल—पु०फूलों के अंदर की पतली नाल ।
गर्भपात—पु०हमल गिरना ।
गर्भवती—स्त्री० वि० गर्भिणी ।
गर्भसंधि—स्त्री० नाटक में एक संधि ।
गर्भस्राव—पु० रुधिर के रूप में गर्भ का गिर जाना ।
गर्भांक—पु० नाटक का एक दृश्य । [भाग ।
गर्भागार—पु० घर का मध्य-
गर्भाधान—पु० गर्भस्थिति ।
गर्भाशय—पु० बच्चादानी ।
गर्भिणी—स्त्री० हामला-औरत । [पूर्ण ।
गर्भित—वि० गर्भयुक्त ।
गर्म २—वि० (फ़ा०) गर्मी ।
गर्रा—पु०गराड़ी । लाखी रङ्ग का घोड़ा । लाखी रङ्ग । वि० लाख के रङ्ग का ।
गर्ल—स्त्री० (अं०) लड़की ।
गर्लस्कूल—पु० (अं०) कन्यापाठशाला ।
गर्व—पु० घमंड ।
गर्वाना—अक्रि०घमंड करना ।
गर्विता—स्त्री० घमंड करने-वाली स्त्री ।
गर्विष्ठ ४—वि० घमंडी ।
गर्वी, गर्वीला—वि०घमंडी ।
गर्हक—वि० निन्दक ।
गर्हण—पु० निन्दा ।
गर्हा—स्त्री० निन्दा ।
गर्हित—वि० निन्दित ।
गर्ह्य—वि० निन्दनीय ।
गर्ह्यवादी—पु० कुभाषी ।
गलंतिका—स्त्री०करवा,गेडुआ ।
गल—पु० गला ।
गलकंबल—पु० गाय के गले में लटकी हुई खाल । लहर ।
गलका—पु० फोड़ा ।
गलगंज—पु० शोरग़ुल ।
गलगंजना—अक्रि० शोर-करना ।
गलगंड—पु० कंठमाला ।
गलगल—पु० एक चिड़िया ।
गलगला—वि० गीला, तर ।
गलगलिया—स्त्री० गलगल-चिड़िया ।
गलगुथना—वि० मोटा ।
गलग्रह—पु० मछली का काँटा कठिन-विपत्ति
गलझप—पु० गले की लोहे की झूल ।
ग़लत—वि० अशुद्ध, असत्य ।
गलतंस—पु० निःसंतान की सम्पत्ति । [अशुद्धि-पत्र ।
ग़लतनामा—पु० (अ० फ़ा०)
गलतनी—स्त्री० गलबंधन ।
ग़लतफ़हमी—स्त्री० (अ० फ़ा०) भ्रम से कुछ का कुछ समझना ।
गलता—पु० (फ़ा०) वस्त्र-विशेष । घूमता हुआ ।
ग़लता—पु० (फ़ा०) एक मोटा रेशमी कपड़ा । चमड़े की म्यान ।
गलतान—वि० घूमता हुआ ।
ग़लती—स्त्री० भूल, त्रुटि ।

गलन—पु० गलना। पिघलना।
गलना—अक्रि० घुलना।
गलबल—पु० कोलाहल।
ग़लबा—पु० (अ०) हल्ला। हमला।प्रधानता।[डालना।
गलबाहीं—स्त्री०गले में बाँह-
गलभंग—पु० बैठा हुआ कंठ।
गलमंदरी—स्त्री० निरर्थक-बकवाद। [रखाये हुए बाल।
गलमुच्छा—पु० गालों पर-
गलशुंडी—स्त्री० जीभ की जड़ के पास का जीभ के आकार का मांस का एक छोटा टुकडा। जीभी, कौआ। एक रोग।[गहना।
गलसिरी—स्त्री० गले का-
गलसुई—स्त्री० गाल के नीचे का तकिया। [का थन।
गलस्तन—पु०बकरी के गले-
गलस्तनी—स्त्री० बकरी।
गलही—स्त्री० नाव का ऊपर का अगला हिस्सा।
गला—पु० गर्दन। स्वर। गरेबान।
गलाना—सक्रि०खर्च करना। किसी धातु को गर्म करके द्रव रूप में लाना।
गलानि—स्त्री०दे०'ग्लानि'।
गलासी—स्त्री० पशु बाँधने की रस्सी। [नष्ट।
गलित—वि० गला हुआ।
गलितकुष्ट—पु० वह कुष्ट रोग जिसमें शरीर गलने लगता है।
गलितयौवना—स्त्री० ढलती-जवानी की स्त्री।

गलियारा७—पु० तंग रास्ता, गली।
गली—स्त्री० कूचा।
ग़लीचा—पु० क़ालीन।
ग़लीज़—वि०मैला। पु०गंदगी।
गलीत—वि० जीर्ण-शीर्ण।
गलेफ़—स्त्री० दोहरी चादर।
गलेबाज़—वि० अच्छे स्वर-वाला। [संधि।
गलोद्देश—पु० घोड़ों की-
गलौ—पु० दे० 'ग्लौ'।
गल्प—स्त्री० छोटी कहानी। गप। डींग।
गल्यारा—पु० तंग गली।
गल्ल—पु० गाल। [झुंड।
गल्ला—पु० शोर। पशुओं का-
ग़ल्ला—पु० (फ़ा०) अन्न।
गल्लाला—पु०कुल्ली का काढ़ा।
ग़ल्लाफ़रोश—वि० अन्न-विक्रेता। [गड़रिया।
गल्लेबान—पु० (फ़ा०)
गल्लेबानी—स्त्री० पशु पालना और चराना।
गवँ—स्त्री० अवसर, घात।
गवन—पु० प्रस्थान।
गवनचार—पु० गौना।
गवनना—अक्रि० जाना।
गवय७—पु० नील गाय।
गवर्नमेंट—स्त्री० (अं०) राज्य, शासन-सत्ता।
गवर्नर२—पु० (अं०) शासक, प्रबन्ध-कर्त्ता।
गवर्नर-जनरल—पु० (अं०) बड़ा हाकिम।
गवल—पु भैंस का सींग।
गवांव्रज—पु० गौओं का

झुण्ड। [खिड़की।
गवाक्ष—पु०झरोखा। छोटी-
गवाक्षी—स्त्री० जेठऊ ककड़ी।
गवामयन—पु० एक यज्ञ।
गवारा—वि०(फ़ा०) मंजूर, सह्य।
गवास—पु० क़साई।
गवाह२—पु०(फ़ा०) साक्षी।
गवीश—पु० साँड़। विष्णु। गोस्वामी। [मालिक।
गवीश्वर—पु० गौओं का-
गवेजा—स्त्री० बातचीत।
गवेडु, गवेधु—पु० सेहुँआ। ज्वार।
गवेरुक—पु० गेरू।
गवेल—वि० देहाती।
गवेषणा—स्त्री० खोज।
गवेषित—वि० ढूँढ़ा गया।
गवेषी५—पु० खोजने वाला।
गवेसना—सक्रि० खोजना।
गवैया—वि० गाने वाला।
गवैहाँ—वि० देहाती।
गव्य—वि० गाय से उत्पन्न। पु० पंचगव्य (दूध, दही, घी आदि)।
गव्या—स्त्री० गाय-समूह।
गव्यूति—स्त्री० दो कोस।
ग़श—पु० (अ०) मूर्छा।
गश्त८—पु० (फ़ा०) टहलना, दौरा।
गश्तीचिट्ठी—स्त्री० एक ही विषय का पत्र जो किसी सभा के सब सदस्यों के पास भेजा जाय, सरकुलर।
ग़सब—पु० (अ०) अपहरण।
गसीला७—वि० गफ़, घना।

गस्सा—पु० नेवाला।
गह—स्त्री० मूँठ, हत्था।
गहकना—स्त्री० जल्दी करना।
गहगड्ड—वि० गहरा।
गहगह—वि० प्रसन्न।
गहगहा—वि० प्रफुल्ल। क्रि० वि० धमाधम। [होना।
गहगहाना—अक्रि० आनंदित
गहगहे—क्रि० वि० आनंद-पूर्वक। [करना।
गहडोरना—सक्रि० गंदा
गहन—वि० कठिन। गहरा। पु० ग्रहण। गिरवीं।
गहना—पु० आभूषण। रेहन। सक्रि० पकड़ना।
गहनि—स्त्री० हठ।
गहबर—वि० दुर्गम। व्याकुल।
गहबरना९—अक्रि० व्याकुल होना, घबराना।
गहर—स्त्री० देर। वि० सघन।
गहरना—अक्रि० देर लगाना। झगड़ना।
गहरवार—पु० क्षत्रियों की एक जाति। [अधिक गाढ़ा।
गहरा१—वि० गम्भीर।
गहराई—स्त्री० गहरापन।
गहरु—पु० विलंब। [एकभेद।
गहलौत—पु० क्षत्रियों का
गहवा—पु० चिमटा।
गहवारा—पु० (फ़ा०) हिंडोला।
गहाई—स्त्री० पकड़।
गहागह—क्रि० वि० दे० 'गहगह'।
गहाना—सक्रि० पकड़ना।
गहासना—सक्रि० ग्रसना।
गहिला—वि० उन्मत्त।
गहीर—वि० गहरा, घना।
गहीला७—वि० घमंडी।
गहेजुआ—पु० छछूँदर।
गहेलरा—वि० पागल। मूर्ख।
गहेला७—वि० हठी, घमंडी।
गहैया—वि० ग्रहण करनेवाला। [व्याकुल।
गह्वर—पु० बिल, गुहा। वि०
गांग—वि० गंगा-संबंधी।
गांगेय—पु० भीष्म। षड़ानन।
गांगेरुकी—स्त्री० गँगेरन, ककही।
गाँज—पु० राशि, ढेर।
गाँजना—सक्रि० ढेर लगाना।
गाँजा—पु० एक मादक वस्तु।
गाँठ—स्त्री० गिरह। गठरी।
गाँठगठीला—वि० बहुत सी गाँठों वाला, उलझनदार।
गाँठगोभी—स्त्री० एक गोभी।
गाँठदार—वि० गँठीला।
गाँठना—सक्रि० गाँठ लगाना, मिलाना।
गाँठी—स्त्री० गाँठ। [घास।
गाँड़र—स्त्री० एक तरह की
गाँडा—पु० गन्ने का कटा हुआ टुकड़ा, ईख। [धनुष
गांडीव—पु० अर्जुन का
गांडीव-धर—पु० अर्जुन।
गांडीवी—पु० अर्जुन।
गाँथना—सक्रि० गूँथना।
गांधर्व—वि० गंधर्व-संबंधी पु० संगीतशास्त्र। एक प्रकार का विवाह।
गांधार—पु० क़न्दहार देश। कंठ-स्वर।
गांधी—स्त्री० गुजराती वैश्यों की एक जाति। पु० आधुनिक युग के एक नेता। गधी। एक कीड़ा।
गांभीर्य्य—पु० गंभीरता।
गाँव—पु० खेड़ा।
गाँस—स्त्री० बैर। गाँठ। रुकावट। निगरानी। अनी।
गाँसना—सक्रि० गूँथना। पकड़ में करना।
गाँसी—स्त्री० तीर या बर्छी की अनी। गाँठ। कपट।
गाइ, गाई—स्त्री० गाय।
गाइड—पु० (अं०) पथ-प्रदर्शक। निर्देशक-पत्रिका।
गाउन—पु० (अं०) एक प्रकार का लंबा, ढीला पहनावा।
गागर—स्त्री० घड़ा।
गाछ—पु० पौधा या पेड़।
गाछना—सक्रि० गूँथना।
गाछी—स्त्री० बाग़।
गाज—स्त्री० बिजली। शोर। पु० झाग। [प्रसन्न होना।
गाजना—अक्रि० गरजना।
गाजर—पु० एक जड़।
ग़ाज़ी—पु० (अ०) वह मुसलमान जो अपने धर्म के लिए दूसरों से लड़े। वीर, योद्धा।
ग़ाज़ीमियाँ—पु० (अ०) सैयद सालार जो सुलतान महमूद के भतीजे थे और अपनी वीरता के कारण पूजे जाते हैं।
गाड़—स्त्री० गड्ढा।

गाड़ना—सक्रि० दफ़नाना।
गाड़र—स्त्री० भेड़।
गाड़ा—पु० छकड़ा। गड्ढा।
गाड़ी—स्त्री० बैलगाड़ी।
गाड़ीवान्—पु० गाड़ी हाँकने-वाला।
गाढ़३—वि० मोटा। कठिन। अतिशय। स्त्री० संकट।
गाढ़ा७—वि० मोटा, घना। कठिन। पु० एक प्रकार का गफ़ कपड़ा। [मज़बूती से।
गाढ़े—क्रि० वि० अच्छी तरह से।
गाणपत्य—पु० गणेश का भक्त।
गाणिका—स्त्री० वेश्यासमूह।
गाणिक्य—पु० गणिका-समूह।
गात—पु० शरीर।
गाता१०—पु० गवैया।
गाती—स्त्री० शरीर में लपेटने का वस्त्र। [गवैया।
गातु—पु० पृथ्वी। पथिक।
गात्र—पु० शरीर।
गात्रानुलेपनी—स्त्री० पिसी हुई लेपन वस्तु।
गाथ—पु० यश।
गाथक—पु० गायक।
गाथना—सक्रि० गूँथना।
गाथा—स्त्री० कथा।
गाद—स्त्री० गाढ़ा चीज़। मैल।
गादड़—पु० सियार। भेड़ा। गरियाल बैल। वि० डरपोक। सुस्त। गदराया हुआ।
गादड़ी—स्त्री० गीदड़।
गादा—पु० कच्चा अन्न।
गादुर—पु० चमगादर।
गाध—वि० छिछला। पु० थाह। स्थान। अभिलाषा।
फूल। [पिता।
गाधि—पु० विश्वामित्र के
गाधेय—पु० विश्वामित्र।
गान—पु० गाना।
गाना—सक्रि० वर्णन करना। लय के साथ अलापना।
ग़ाफ़िल—वि० (अ०) बेसुध।
गाभ—पु० गर्भ। पेट।
गाभा—पु० कोंपल, अंकुर।
गाभिन—वि० स्त्री० गर्भिणी।
गाम—पु० गाँव।
गामक—वि० गमनकर्त्ता।
गामी ५—त्रि० जाने वाला।
गामुक—त्रि० चलने वाला।
गाय—स्त्री० गौ।
गायक ७—पु० गवैया।
गायगोठ—पु० गोशाला।
गायताल—वि० निकम्मा।
गायत्री—स्त्री० एक वैदिक मंत्र। कत्था। [गाने वाली।
गायन—पु० गाना। स्त्री०
ग़ायब—वि० (अ०) लुप्त।
गायबाना—क्रि० वि० (अ०) चुपके से। अनुपस्थिति में।
गायिनी—स्त्री० गाने वाली-स्त्री। गुफा।
गारंटी—स्त्री० (अं०) ज़मानत, संरक्षण। [गुफा
ग़ार—पु० (अ०) गहरा गढ्ढा।
गार—प्रत्य० (फ़ा०) 'करने वाला' अर्थ में प्रयुक्त होती है। हिं० गाली।
गारडू—पु० गारुड़ी।
ग़ारत—वि० (अ०) नष्ट।
ग़ारतगर—वि० (अ० फ़ा०) लुटेरा।
गारद—स्त्री० रक्षा के लिए सिपाहियों की एक टोली।
गारना—सक्रि० निचोड़ना।
गारा—पु० पलस्तर के लिए बना हुआ मसाला।
गारी—स्त्री० दे० 'गाली'।
गारुड़—पु० साँप का ज़हर उतारने का मंत्र। सोना। वि० गरुड़-संबंधी।
गारुड़िक—पु० सँपेरा।
गारुड़ी—त्रि० साँप का विष-उतारने वाला। [डाक्टर।
गारुत्मत—पु० पन्ना। गरु-
गारो—पु० अभिमान। घर। प्रतिष्ठा। [का समूह।
गार्गक—पु० गर्ग गोत्र संतान-
गार्गी—स्त्री० दुर्गा। [रक्षक।
गार्ड—पु० (अं०) निरीक्षक।
गार्डन—पु० (अं०) बाग़।
गार्डनपार्टी—स्त्री० (अं०) वह भोज जो किसी बाग़ीचे में दिया जाय।
गार्भिण—पु० गर्भिणी-स्त्रियों का समूह।
गार्हपत्य—पु० यज्ञाग्नि विशेष।
गार्हस्थ्य—पु० गृहस्थाश्रम।
गाल—पु० कपोल। बकवाद करने की आदत।
गालगूल—पु० व्यर्थ की बात।
गालना—अक्रि० बात करना।
गालमसूरी—स्त्री० एक मिठाई।
गालव—पु० एक ऋषि। लोध।
गाला—पु० प्यूनी।
ग़ालिब—वि० (अ०) विजेता।
ग़ालिबन्—क्रि० वि० (अ०) संभवतः।

गालिम—वि०दे० 'ग़ालिब'।
गाली—स्त्री० अपशब्द।
गालीगलौज—स्त्री० गाली-गुफ़्ता।
गालू—वि० बकवादी।
गाव—स्त्री० (फ़ा०) गौ।
गावकुशी—स्त्री० (फ़ा०) गोवध। [भ्रष्ट।
गावख़ुर्द—वि० (फ़ा०) नष्ट-
गावज़बान—स्त्री० (फ़ा०) फ़ारस देश की एक बूटी।
गावतकिया—पु० (फ़ा०) मसनद।
गावदी—वि० (फ़ा०) मूर्ख।
गावदुम—वि० (फ़ा०) जो ऊपर से पतला होता गया हो
गावन—पु०गाने की क्रिया।
गास—पु० आपत्ति।
गासिया—पु० ज़ीनपोश।
गाह—पु० ग्राहक। पकड़। मगर। (फ़ा०) जगह।
गाहक२—पु०ख़रीदने वाला। क़दरदान।
गाहकताई—स्त्री० क़दरदानी।
गाहन—पु० स्नान।
गाहना—सक्रि० थाह लेना।
गाहबगाह—क्रि०वि० (फ़ा०) कभी-कभी। [कभी-कभी।
गाहेबगाहे—क्रि०वि० (फ़ा०)
गाहा—स्त्री०गाथा। [हुआ।
गाहित—वि० स्नान किया-
गाही—स्त्री० पाँच-पाँच की संख्या।
गिंजना—अक्रि० सिकुड़ना।
गिंजाई—स्त्री०एक बरसाती-कीड़ा।

गिंडुरी—स्त्री० गेंडुरी।
गिंदौड़ा—पु० डबल रोटी की तरह जमाई हुई चीनी।
गिउ—पु०गला। [सड़ा हुआ।
गिचपिच—वि० अस्पष्ट।
गिचरपिचर—वि०दे० 'गिच-पिच।'
गिजगिजा—वि० गीला और मुलायम जो अच्छा न लगे।
ग़िज़ा—स्त्री०(अ०) भोजन।
गिज़ाफ़—पु० (फ़ा०) झूठ-बात। [शब्द।
गिटपिट—स्त्री० अर्थ रहित-
गिट्टक—स्त्री० गिट्टा। पु० चिलम में तंबाकू के नीचे रखने की कंकड़ी।
गिट्टी—स्त्री० ठीकरी।
गिड़गिड़ाना—अक्रि० दीन भाव से प्रार्थना करना।
गिड़गिड़ाहट—स्त्री०विनती।
गिद्ध—पु० एक मांसाहारी-पक्षी।
गिद्धराज—पु० जटायु।
गिनती—स्त्री० गणना।
गिनना—सक्रि०गणना करना।
गिनी—स्त्री० (अं०) सोने का एक सिक्का।
गिम—स्त्री० गर्दन।
गिय—स्त्री० गर्दन।
गिर—पु० पहाड़।
गिरगिट—पु० छिपकली के आकार का एक जीव।
गिरगिरी—स्त्री० खिलौना-विशेष। [प्रार्थना-गृह।
गिरजा—पु० ईसाइयों का-
गिरदा—पु० (फ़ा०) घेरा।

तकिया। ढाल। गोल थाल।
गिरदान—पु० गिरगिट।
गिरदाब—पु० (फ़ा०) पानी का भँवर।
गिरदावर२—पु०(फ़ा०) घूम-फिर कर जाँच करने वाला।
गिरधर—पु० श्रीकृष्ण। हनुमान्। [नीचे आना।
गिरना१—अक्रि० ऊपर से-
गिरफ़्त—स्त्री०(फ़ा०)पकड़ाव।
गिरफ़्तार२—वि०पकड़ा हुआ।
गिरफ़्तारी—स्त्री० (फ़ा०)बंदी-करण। [पत्र।
गिरमिट—पु० बरमा। प्रतिज्ञा-
गिरवर—पु० बड़ा पर्वत।
गिरवान—पु०देवता। कालर। गला।
गिरवाना—सक्रि० गिराने का काम दूसरे से कराना।
गिरवीं—वि० (फ़ा०) रेहन।
गिरवींदार—वि० जिसके यहाँ कोई चीज़ गिरवीं रक्खी जाती है। [लुभाया हुआ।
गिरवीदा—वि० (फ़ा०)
गिरह—स्त्री०(फ़ा०) गाँठ। जेब। कलैया। गज़ का सोलहवाँ भाग। [वाला।
गिरहकट—वि० जेब काटने-
गिरहदार—वि० (फ़ा०) गँठीला।
गिरहबाज़—पु०(फ़ा०)कला-खाने वाला कबूतर।
गिरही—पु० गृहस्थ।
गिराँ—वि० (फ़ा०) महँगा।
गिरा—स्त्री०वाणी। सरस्वती।
गिरानी—स्त्री०महँगी। अपना

गिरापति,गिरापितु—पु० ब्रह्मा।
गिरामी—वि०(फ़ा०)पूज्य।
गिरासना—सक्रि० सताना, ज़ोर से पकड़ना।
गिरि—पु० पहाड़।निगलना।
गिरिकंटक—पु० वज्र।
गिरिका—स्त्री० छोटी जाति का चूहा। [शिलाजीत।
गिरिज—पु० अभ्रक। गेरू।
गिरिजा—स्त्री० पार्वती।
गिरिजाबीज—पु० गंधक।
गिरित—वि० खाया हुआ।
गिरित्र—पु० शिव। समुद्र।
गिरिधर—पु० श्रीकृष्ण।
गिरिधातु—पु०गेरू। [गंगा।
गिरिनंदनी—स्त्री० पार्वती।
गिरिनाथ—पु० महादेवजी।
गिरिपीलु—पु० फ़ालसा।
गिरिमल्लिका—स्त्री० कुरैया।
गिरियाँ—वि० (फ़ा०) रोने-वाला। [रोना।
गिरिया—पु० (फ़ा०) शोक,
गिरिराज—पु० हिमालय।
गिरिश—पु० शिव।
गिरिव्रज—पु० केकय देश की राजधानी।
गिरिसुत—पु०मैनाक पर्वत।
गिरिसुता—स्त्री० पार्वती।
गिरींद्र—पु०हिमालय। शिव।
गिरी—स्त्री० नारियल आदि का गूदा। [शिव।
गिरीश—पु० बड़ा पहाड़।
गिरैयाँ—स्त्री० गले का छोटा-रस्सा। वि० गिरने वाला।
गिरों—वि०रेहन।
गिरोह—पु० टोली, संघ।

गिर्द—अव्य०आसपास। पु० चक्कर।
गिल—स्त्री० (फ़ा०) गारा।
गिलकार—वि० (फ़ा०) गारा या पलस्टर करने वाला।
गिलकारी—स्त्री०(फ़ा०)गारा लगाने का काम।
गिलगिल—पु० एक पक्षी।
गिलट—पु० एक धातु।
गिलटी—स्त्री० गाँठों की सूजन का एक रोग।
गिलना—सक्रि० निगलना।
गिलबिलाना—अक्रि० साफ़ न बोलना।
गिलम—स्त्री० (फ़ा०) ऊन का बना एक मुलायम क़ालीन। वि० कोमल।
ग़िलमाँ—पु० (अ०) बहु० 'ग़ुलाम' का। बहिश्त के सुन्दर बालक।
गिलहरा—पु० बाँस का पान रखने का डिब्बा।
गिलहरी—स्त्री०चूहे की भाँति का एक जन्तु।
गिलहिकमत—स्त्री० (फ़ा०) शीशी आदि को आग पर चढ़ाने से पहले गीली मिट्टी लगाना।
गिला—पु०(फ़ा०) शिकायत।
गिलान—स्त्री०ग्लानि,घृणा।
ग़िलाज़त—स्त्री० (अ०) गन्दगी।
ग़िलाफ़—पु० (अ०) ख़ोल। बड़ी रज़ाई। म्यान।
गिलावा—पु० (फ़ा०)गारा।
गिलास—स्त्री० पानी पीने का बर्त्तन।

गिलित—वि० खाया हुआ।
गिलोय—स्त्री० गुरुचि।
गिलोला—पु० मिट्टी की गोली जो गुलेल से फेंकी जाती है।
गिलौरी—स्त्री०पान का बीड़ा।
गिलौरीदान—पु० पानदान।
गिल्ली—स्त्री० दोनों ओर का नुकीला लकड़ी का छोटा टुकड़ा।
गिष्णु—पु० गाने वाला।
गींजना—सक्रि० मसलना।
गींउ, गीव—स्त्री० गर्दन।
गीड़, गीड़र—पु० आँख का मैल।
गीत—स्त्री० गाना।
गीतमोदी—पु० किन्नर।
गीता—स्त्री० भगवद्गीता। वार्त्ता। [परे हो।
गीतातीत—वि०जो गाने से-
गीति—स्त्री० गान।
गीतिका—स्त्री० गीत।
गीती—स्त्री० (फ़ा०) दुनिया।
गीदड़—पु० सियार। वि० कायर।
गीदी—वि० (फ़ा०) डरपोक।
गीध—पु० गिद्ध।
गीधना—अक्रि० परचना।
गीबत—स्त्री० गैरहाज़िरी। चुगुलख़ोरी।
गीर—स्त्री० वाणी। (फ़ा०) पकड़ने,रखने या लेने वाला।
गीर्ण पु०, गीर्णि—स्त्री० निगलना।
गीर्पति—पु० बृहस्पति।
गीर्वाण—पु० देवता।
गीला१-७—वि० भीगा हुआ।

गीवा—स्त्री० गर्दन।
गीष्पति–पु०पंडित। विद्वान्।
गुंग—पु० (फ़ा०) गूँगापन।
गुँगी—स्त्री० दो मुँह वाला सर्प। [तरह बोलना।
गुँगुआना—अक्रि० गूँगे की-
गुंचा—पु० (अ०) कली।
गुंची—स्त्री० घुँघची।
गुंज—स्त्री० गुंजार। घुँघची। पु० गुलदस्ता।
गुंजन–पु० गूँजने का शब्द।
गुंजना—अक्रि० भनभनाना।
गुंजनिकेतन—पु० भौंरा।
गुँजरना—अक्रि० गुंजार-करना। [का कड़ा।
गुँजहरा–पु०शिशुओं के हाथ-
गुंजा—स्त्री० घुँघची।
गुंजाइश—स्त्री० (फ़ा०) समाई।
गुंजान—वि० घना। [हुआ।
गुंजायमान—वि० गूँजता-
गुंजार—पु० भौंरों की गूँज। भनभनाहट।
गुंजिका—स्त्री० घुँघची।
गुंठा—पु० घोड़ा विशेष।
गुंठित—वि० धूल से भरा-हुआ। [एक राग।
गुंड—वि० पिसा हुआ। पु०
गुंडई—स्त्री० गुंडापन।
गुंडली—स्त्री० कुंडली।
गुंडा१—वि० बदमाश।
गुंडित—वि० धूल से भरा-हुआ।
गूँथना—सक्रि० एक साथ-मिलाकर बाँधना।
गुँधना—अक्रि०माँड़ा जाना। सक्रि० गूँथना।
गुंद्र—पु०सरकंडा। [मोथा।
गुंद्रा—स्त्री० ककुनी। नागर-
गुंधाई–स्त्री०गूँधने का काम।
गुंफ–पु० उलझन। गुच्छा। डाढ़ी।
गुंफन–पु०उलझाव। गूँथना।
गुंफित—वि० गुँथा हुआ।
गुंबज़—पु० (फ़ा०) गोल-ऊँची छत। [‘गुंबज’।
गुंबद—पु० (फ़ा०) दे०
गुंबा—पु० कड़ी सूजन।
गुंभी—स्त्री० अंकुर।
गुआ—पु० चिकनी सुपारी।
गुआरि—स्त्री० ग्वालिन।
गुइयाँ—पु० साथी। स्त्री० सखी। [सुगंधित पदार्थ।
गुग्गुल—पु०एक प्रकार का-
गुच्ची—स्त्री० गुल्ली डण्डा खेलने का बहुत छोटा-गड्ढा। [फुँदना।
गुच्छ, गुच्छक—पु० लड़ी।
गुच्छा—पु० झब्बा।
गुच्छार्ध, गुत्सार्ध—पु० २४ लड़ों का हार।
गुच्छेदार–वि०गुच्छा वाला।
गुज़र—पु०(फ़ा०) निर्वाह।
गुज़रगाह–पु०(फ़ा०) रास्ता।
गुज़रना—अक्रि० (फ़ा०) बीतना। कहीं से होकर जाना [निर्वाह।
गुज़र-बसर—पु० (फ़ा०)
गुजराती–वि० गुजरात देश का निवासी या वहाँ की भाषा।
गुजरान—पु० निर्वाह।
गुजरिया—स्त्री० ग्वालिन।
गुज़री—स्त्री० (फ़ा०) वह बाज़ार जो प्रायः सड़कों के किनारे तीसरे पहर लगता है।
गुजरी—स्त्री० दे० ‘गूजरी’।
गुजरेठी—स्त्री० गूजर की बेटी। [व्यतीत करना।
गुज़ारना—सक्रि० (फ़ा०)
गुज़ारा–पु० (फ़ा०) निर्वाह, वृत्ति। [निवेदन।
गुज़ारिश—स्त्री० (फ़ा०)
गुज़ाश्त—स्त्री० (फ़ा०) घटाना। माफ़ी या दान की-हुई ज़मीन। [हुआ।
गुज़िश्ता–वि०(फ़ा०) बीता-
गुझरौट, गुझौट–स्त्री० कपड़े की शिकन। [मिठाई।
गुझिया–स्त्री०एक प्रकार की-
गुटकना१—अक्रि० कबूतर की तरह बोलना। सक्रि० निगलना।
गुटका—पु० छोटी पुस्तक।
गुटकाना—सक्रि० तबला आदि बजाना। [बोली।
गुटरगूँ—स्त्री० कबूतर की-
गुटिका—स्त्री० गोली।
गुट्ट—पु० समूह, दल।
गुट्ठल—वि० गुठली वाला।
गुट्ठी—स्त्री० टखना।
गुठलाना—अक्रि० दाँत का खट्टा होना। [बीज।
गुठली—स्त्री० फल का बड़ा-
गुडंबा—पु० उबाल कर चाशनी में डाला हुआ

आम ।
गुड—पु० मिट्टी आदि का गोला । गेंद । ईख का विकार । [हुआ रस ।
गुड़—पु० ईख का पकाया-
गुड़गुड़ाना—अक्रि० गुड़गुड़ शब्द होना ।
गुड़गुड़ी—स्त्री० हुक्का विशेष ।
गुड़च—स्त्री० गिलोय ।
गुड़धानी—स्त्री० वह लड्डू जो गेहूँ को भून कर गुड़ से बनाया जाता है ।
गुड़पुष्प—पु० महुआ ।
गुड़मार—पु० एक औषध जो मधुमेह के रोगियों के लिए लाभदायक है ।
गुड़विल-पु० (अ०) पगड़ी, साख । [या फूल ।
गुड़हल—पु० जपा का पेड़
गुड़ा—स्त्री० सेंहुड़ । [तंबाकू ।
गुड़ाकू—पु० गुड़ मिश्रित-
गुडाकेश-पु० शिव । अर्जुन ।
गुड़िया—स्त्री० कपड़ों की बनी पुतली ।
गुड़ी—स्त्री० पतंग ।
गुड़ूची—स्त्री० गुरुच ।
गुड्डा—पु० बड़ी पतंग । कपड़े का पुतला ।
गुड्डी—स्त्री० पतंग ।
गुढ़ना—अक्रि० छिपना ।
गुण—पु० सिफ़त, हुनर । विशेषता । धनुष की डोरी । रसोईदार । रस्सी । रसगंध आदि । सत्व, रज, तम । स्वभाव । विद्या । विशेषण आदि । (सफ़ेद, लाल, पीला आदि)
गुणक-पु० गुणा करने वाला-अंक ।
गुणकारक—वि० लाभकारी ।
गुणकारी ५—वि० लाभदायक ।
गुणगान-पु० स्तुति, प्रशंसा ।
गुणगृह्य—वि० गुणी ।
गुणग्राहक३—वि० गुणियों का आदर करने वाला । क़दरदान । [ग्राहक ।
गुणग्राही५-वि० दे० 'गुण-
गुणज्ञ३—वि० गुण पहिचानने वाला ।
गुणदर्शी५—वि० सारग्राही ।
गुणधर्म—पु० सार पदार्थ ।
गुणन—पु० गुणा करना । मनन ।
गुणनफल—पु० वह संख्या जो गुणा करने से आवे ।
गुणना-सक्रि० गुणन करना ।
गुणवंत७—वि० गुणी ।
गुणवाचक—पु० विशेषण-शब्द ।
गुणवान्१३—वि० गुणी ।
गुणवृक्षक—पु० मस्तूल । नाव-बाँधने का खूँटा ।
गुणांक—पु० वह अंक जिस को गुणा करना हो । [ज़रब ।
गुणा-पु० गणित की क्रिया
गुणागुण—पु० गुण-दोष ।
गुणाढ्य—वि० गुण-पूर्ण ।
गुणानुवाद—पु० प्रशंसा ।
गुणित-वि० गुणा किया हुआ ।
गुणी५—वि० गुण वाला ।
गुणीन—वि० गुणा किया-हुआ । गिना हुआ ।
गुणोपेत—वि० गुणी ।
गुण्य—पु० दे० 'गुणांक' ।
गुत्थमगुत्था—पु० उलझाव । भिड़न्त ।
गुत्थी—स्त्री० गाँठ । उलझन ।
गुत्स, गुत्सक—पु० कलियों-का गुच्छा । २४ लड़ों का हार । [में पिरोया जाना ।
गुथना—अक्रि० एक गुच्छे-
गुद—पु० गुदा ।
गुदकार—वि० गूदेदार ।
गुदगुदा—वि० मुलायम । गूदेदार ।
गुदगुदाना—सक्रि० हँसने के लिए काँख आदि को सहलाना ।
गुदगुदी—स्त्री० अंगस्पर्श के कारण पैदा हुई सुरसुराहट । उमंग । [बिछावन ।
गुदड़ी—स्त्री० चीथड़ों का-
गुदड़ी बज़ार—पु० पुरानी चीज़ों की बिक्री का बाज़ार ।
गुदना९—अक्रि० चुभना । पु० गोदना ।
गुदभ्रंश—पु० काँच निकलने का रोग [हाज़िरी
गुदर—पु० राज-दरबार की-
गुदरना९—अक्रि० गुज़रना । सूचित करना ।
गुदरैन—स्त्री० परीक्षा ।
गुदांकुर—पु० बवासीर ।
गुदा—स्त्री० विष्ठा निकलने का मार्ग ।
गुदाज़—वि० (फ़ा०) गूदेदार ।

गुदाना—सक्रि० चुभाना ।
गुदारना—सक्रि० पढ़ना । सुनाना । [वि० गूदेदार ।
गुदारा—पु०नदी पार करना ।
गुद्दी—पु० गूदा । मींगी ।
गुन—पु० दे० 'गुण' ।
गुनगुना—वि० थोड़ा गर्म ।
गुनगुनाना—अक्रि० गुनगुन-शब्द करना । धीमे अस्पष्ट स्वर में गाना ।
गुनगौरि—स्त्री० पतिव्रता स्त्री ।
ग़ुनचा—पु०(फ़ा०) कली ।
ग़ुनचादहन—वि० (फ़ा०) जिसका मुख कली के समान सुन्दर हो । [विचारना ।
गुनना—सक्रि० गिनना ।
गुनहगार—वि०(फ़ा०) पापी ।
गुनावन—पु० विचार ।
गुनाह—पु० (फ़ा०) पापी ।
गुनाही५—वि० पापी ।
गुनिया—वि० गुणवान् । पु० राज, मेमार का दीवार की सिधाई नापने का यंत्र ।
गुनियाला—वि० गुणवान् ।
गुनी, गुनीला—वि० गुणी ।
ग़ुन्ना—पु०(अ०)अनुस्वार ।
गुपचुप—क्रि०वि० चुपचाप । पु० एक मिठाई ।
गुप्त४—वि० छिपा हुआ । रक्षित।पु०वैश्यों की उपाधि।
गुप्तगृह—पु० तहख़ाना ।
गुप्तचर—पु० खुफ़िया । जासूस ।
गुप्तवेश—वि० छली ।
गुप्ता—स्त्री० रखेली ।
गुप्ति—स्त्री० पृथ्वी के भीतर की गुफा । रक्षण । अधम । कूड़ाघर ।
गुप्ती—स्त्री० वह छड़ी जिसके अन्दर छुरी छिपी हुई हो ।
गुफ़ा—स्त्री० कंदरा ।
गुफित—वि० गुँथा हुआ ।
गुफ़्तगू, गुफ़्तार—स्त्री० (फ़ा०) वार्त्तालाप । [कीड़ा ।
ग़ुबरैला—पु० एक गोबर का
ग़ुबार—पु० (अ०) द्वेष । गर्दा ।
ग़ुब्बारा—पु० (अ०) काग़ज़ का बना हुआ थैला जो गर्म हवा भरने पर उड़ता है ।
गुम—वि० (फ़ा०) गुप्त, ग़ायब । [भीतर गूँजना ।
गुमकना—अक्रि० भीतर ही-
गुमची—स्त्री० घुँघची ।
गुमज़दा—वि०(फ़ा०) भूला-हुआ ।
गुमज़ी—स्त्री० छोटा गुंबज़ ।
गुमटा—पु० गूमड़ा ।
गुमटी—स्त्री०(फ़ा०) गुंबद । शिखर । सब से ऊपर उठी हुई छत ।
गुमना९—अक्रि०खो जाना ।
गुमनाम—वि०बिना नाम का ।
गुमर—पु०अभिमान । ग़ुबार ।
गुमराह—वि० (फ़ा०) भूला-हुआ ।
गुमान—पु० (फ़ा०) घमंड ।
गुमानी—वि०(फ़ा०) घमंडी ।
गुमाश्ता—पु० (फ़ा०) एजेंट मुनीम, लेखक ।
गुम्मट—पु० गुंबद ।
गुम्मा—वि० चुप्पा ।
गुरंड—पु० अँग्रेज़ ।
गुरंब—पु० दे० "गुड़ंबा" ।
गुर—पु०युक्ति । गुड़ । फूल ।
गुरगा७—पु०चेला । नौकर । गुप्तचर ।
गुरज, गुरज़—पु० गदा ।
गुरण—पु० उद्योग ।
गुरदा—पु० (फ़ा०) साहस । कलेजे के पास का एक अंग ।
गुरफ़ा—पु० (अ०) छत के ऊपर का कमरा । खिड़की ।
ग़ुरबत—स्त्री० (अ०) विदेश में रहना । मुसाफ़िरी । नम्रता ।
गुरबा—स्त्री०(फ़ा०)बिडाल ।
ग़ुरबा—पु० (अ०) बहु० 'ग़रीब' का ।
गुरुमुख—वि० दीक्षा-प्राप्त ।
गुरम्मर—पु० मीठे आम का पेड़ ।
गुरवी—वि० घमंडी ।
गुरसी—स्त्री० अँगीठी ।
गुराई—स्त्री० गौर वर्ण ।
गुराब—पु० तोप लादने की गाड़ी ।
गुरिंद—पु० गदा ।
गुरिया—स्त्री० माला का मनका । दाना ।
गुरीरा—वि० उत्तम, मीठा ।
गुरु३—वि० भारी । पु० शिक्षक, आचार्य । बृहस्पति ।
गुरुअन्त्य—पु०गुरु गोविन्द-सिंह ।
गुरुआई—स्त्री०गुरु का काम ।
गुरुआनी—स्त्री०गुरु की स्त्री।
गुरुकुल—पु०विद्या पढ़ने का

स्थान।
गुरुच—स्त्री० गिलोय।
गुरुज—पु० गदा।
गुरुजन—पु० बड़े लोग ।
गुरुडम—पु० गुरुपन ।
गुरुत्व–पु०भारीपन,बड़प्पन।
गुरुत्वाकर्षण—पु०वह शक्ति जिसके द्वारा वस्तुएँ स्वयं पृथ्वी पर खिंच आती हैं।
गुरुदक्षिणा—स्त्री० पढ़ने के उपरान्त गुरु को दी गयी-दक्षिणा।
गुरुदार—स्त्री० गुरुपत्नी।
गुरुदेव—पु०आचार्य।पिता। अभीष्ट देव ।
गुरुद्वारा—पु० गुरु के रहने का स्थान। सिक्खों का मन्दिर। [वाला ।
गुरुपाक—वि०देर से पचने-
गुरुपाप—पु० महापाप।
गुरुबिनी—स्त्री० गर्भवती ।
गुरुभाई—पु० सहपाठी ।
गुरुमंत्र—पु० इष्टमंत्र ।
गुरुमुख—वि०जिसने गुरुमंत्र लिया हो। [लिपि ।
गुरुमुखी—स्त्री०एक पंजाबी-
गुरुवार—पु० बृहस्पतिवार।
गुरुस—पु०(अं०) १२ दर्जन का समूह ।
गुरू—पु० अध्यापक।[होना।
गुरूब—पु० (अ०) अस्त-
गुरेज़—स्त्री० (फ़ा०)बचना।
गुरेरना—सक्रि० घूरना ।
गुरेरा—पु० गुलेला।
गुर्ग—पु० (फ़ा०) भेड़िया ।
गुर्गा—पु० दे० "मुरगा"।
गुर्ज़—पु०(फ़ा०) गदा बुर्ज़।
गुर्जबरदार—पु० गदाधारी।
गुर्जमार–पु० एक मुसलमान-फ़क़ीर।
गुर्जर७—पु० गुजराती।
गुर्दा—पु० एक प्रकार की छोटी तोप।
गुर्राना–अक्रि०क्रोध से बोलना।
गुर्विणी—स्त्री०गर्भिणी।
गुर्वी–वि०स्त्री०श्रेष्ठ।विशाल। गर्भवती ।
गुल—पु० (फ़ा०) गुलाब-पुष्प। फूल। तम्बाकू का जला भाग ।
गुल—पु० (अ०) शोर ।
गुलअब्बास—पु० (फ़ा०) गुलाबाँस।
गुलक़ंद—पु०(फ़ा०) चाशनी में मिले हुए गुलाब के फूल।
गुलकारी—स्त्री० (फ़ा०)बेल-बूटे का काम । [पौधा ।
गुलखैरू—पु० एक फूलदार-
गुलगपाड़ा—पु० शोर।
गुलगल—वि० नरम ।
गुलगश्त—पु० (फ़ा०) बाग़-की सैर।
गुलगीर—पु० (फ़ा०) चिराग़ की बत्ती या गुल काटने की क़ैंची। [एक मिठाई।
गुलला—वि० गुनरम। पु०
गुलगुलाना–सक्रि०गुदगुदाना।
गुलगुली—स्त्री० गुदगुदी।
गुलगूँ—वि०(फ़ा०) गुलाबी।
गुलगूना—पु० (फ़ा०) वह चूर्ण जो सुन्दरता के लिए स्त्रियाँ मुख पर लगाती हैं।
गुलचना—सक्रि० गाल पर हलका हाथ मारना।
गुलचा—पु०गालपर हलका-प्रहार।
गुलचीं—वि०(फ़ा०) माली। तमाशा देखने वाला।
गुलछर्रा—पु०अनुचित रीति से किया गया भोग-विलास।
गुलज़ार—पु० (फ़ा०) बाग़। वि० हराभरा। शोभा और आनंदयुक्त।
गुलझटी—स्त्री०कठिन गाँठ।
गुलथी—स्त्री० आटा, मैदा आदि की गाँठें जो पानी में घोलने से बनती हैं।
गुलदस्ता—पु०(फ़ा०)सुन्दर-पुष्पों और पत्तियों का गुच्छा। [दार पौधा।
गुलदाउदी—स्त्री० एक फूल-
गुलदान—पु० (फ़ा०) गुल-दस्ता रखने का पात्र।
गुलदार—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का कशीदा ।
गुलदम–पु० (फ़ा०) बुलबुल।
गुलदुपहरिया—पु०एक पौधा तथा उसका फूल।
गुलनार—पु० (फ़ा०) अनार का फूल । [कपड़ा।
गुलबदन—पु० एक रेशमी-
गुलफ़ाम–वि० (फ़ा०)सुंदर।
गुलबक़ावली—स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार का सुन्दर और सुगंधित फूल।
गुलबदन—पु० (फ़ा०) एक रेशमी कपड़ा ।
गुलबर्ग—पु० (फ़ा०) गुलाब

की पत्ती। [वाला पौधा।
गुलमेंहदी—स्त्री० एक फूलों-
गुलमेख़–स्त्री०(फ़ा०) फुलिया।
गुलरू–वि०(फ़ा०) ख़ूबसूरत।
गुलरेज़–पु०(फ़ा०) फुलझड़ी।
गुललाला—पु० (फ़ा०) एक फूल तथा उसका पौधा।
गुलशकरी—स्त्री० (फ़ा०) गुलक़ंद।
गुलशन–पु० (फ़ा०)वाटिका।
गुलशब्बो—स्त्री० रजनीगंधा-फूल।
गुलसम—पु० सुनारों का नक्क़ाशी करने का औज़ार।
गुलहज़ारा–पु०गेंदा विशेष।
गुलाब—पु० (फ़ा०) एक प्रसिद्ध फूल। [मिठाई।
गुलाबजामुन—स्त्री० एक-
गुलाबपाश—पु० (फ़ा०) गुलाब जल छिड़कने का पात्र।
गुलाबपाशी—स्त्री० (फ़ा०) गुलाबजल छिड़कना।
गुलाबी–वि० (फ़ा०) गुलाब के रंग का।। [नौकर।
ग़ुलाम—पु० (अ०) दास,
ग़ुलामगरदिश—पु० (अ० फ़ा०) मकान या ख़ेमे के आस पास नौकरों के रहने का स्थान।
ग़ुलामचोर—पु० ताश का-एक खेल। [बुकनी।
गुलाल–पु० एक लाल-
गुलाला–पु०दे० 'गुललाला'।
गुलियाना—सक्रि० बाँस के चोंगे में भर कर दवा आदि पिलाना।
गुलिस्ताँ—पु० (फ़ा०) बाग़। फ़ारसी का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।
गुलू—पु० (फ़ा०) गला, स्वर।
गुलूबन्द—पु० (फ़ा०) गले में लपेटने की एक ऊनी पट्टी। स्त्रियों के गले का एक आभूषण।
गुलेल—स्त्री० (अ०) वह कमान जिससे मिट्टी की गोलियाँ, फेंकी जाती हैं।
गुलेला, ग़ुल्ला—पु० (अ०) गुलेल में रक्खी जाने वाली मिट्टी की गोली।
गुल्फ़—पु० टख़ना।
गुल्म—पु० एक पौधा। ठूँठ (वृक्ष)। सेना का एक भाग। पेट का एक रोग।
गुल्मिनी—स्त्री० फैली हुई लता।
गुल्ला—पु० गुलेल,गुलेला। ऊख का टुकड़ा। शोर।
गुल्लाला–पु०एक लाल फूल।
गुल्ली–स्त्री०गुठली। लकड़ी की गिल्ली।
गुवा—पु० सुपारी।
गुवाक—पु० सुपारी।
गुसलख़ाना–पु०स्नानागार।
गुसाईं–पु०गौओं का स्वामी। ईश्वर। एक संप्रदाय। जितेन्द्रिय।
गुसार—वि० (फ़ा०) खाने या सहन करने वाला।
गुसैयाँ—पु० ईश्वर।
गुस्ताख़—वि० (फ़ा०) बेअदब। अशिष्ट।
गुस्ताख़ी—स्त्री० (फ़ा०) बेअदबी।
गुस्ल—पु० (अ०) स्नान।
ग़ुस्लख़ाना–पु०स्नानागार।
ग़ुस्लेमैयत६–पु०(अ०)मृतक-स्नान।
ग़ुस्सा—पु० (अ०) क्रोध।
ग़ुस्सावर—वि०क्रोधी।
गुस्सैल—वि० चिड़चिड़ा। क्रोधी।
गुह—पु०कार्त्तिकेय। घोड़ा। विष्णु। गुफा। राम का मित्र-निषाद। [एक राजा।
गुहक—पु० शृंगवेरपुर का-
गुहना९—सक्रि० गूँथना।
गुहर—पु० (फ़ा०) मोती।
गुहराना—सक्रि० पुकारना।
गुहांजनी—स्त्री० गुहेरी, बिलनी।
गुहा–स्त्री० गुफा। पिठवन।
गुहाई—स्त्री० गुँथाई।
गुहार–स्त्री०पुकार, दोहाई।
गुहेरा–पु० गोह नामक जंतु।
गुहेरी—स्त्री० बिलनी।
गुह्य—वि० गुप्त, गूढ़।
गुह्यक—पु० एक देवयोनि।
गुह्यकेश्वर—पु० कुबेर।
गुह्यपति—पु०कुबेर।
गूँगा७—वि० मूक।
गूँज—स्त्री० गुंजार। प्रति-ध्वनि। लट्टू की कील।
गूँजना–अक्रि० गुंजारकरना।
गूँजा—पु० बच्चों के हाथ का कड़ा।
गूँथना, गूँधना—सक्रि०

माँड़ना, सानना। गुहना।
गू—पु० मल, विष्ठा।
गूजर ७–पु० ग्वाला। जाट।
गूझा—वि० गुप्त।
गूढ़३—वि० कठिन। गुप्त।
गूढ़गेह—पु० यज्ञशाला।
गूढ़ज—पु० जारजपुत्र।
गूढ़स्थ—पु० अन्तःकरण।
गूढ़पद—पु० सर्प।
गूढ़पाद—पु० सर्प।
गूढ़पुरुष—पु० भेदिया।
गूथ—पु० विष्ठा।
गूथना—सक्रि० गुहना, पिरोना।
गूद–पु० गूदा। स्त्री०गड्ढा।
गूदड़७—पु० चिथड़ा।
गूदा–पु०फल का सारभाग।
गून—स्त्री० रस्सी, जिससे नाव खींचते हैं। पु० (फ़ा०) वर्ण, रंग।
गूनी—स्त्री० बड़ी थैली।
गूमड़ा—पु० चोट लगने से सिर का फूला हुआ भाग।
गूरण—पु० उद्यम।
गूलर–पु०बरगद तथा उसका फल।
गृंजन—पु० लहसुन।
गृध्नु—वि० लोभी।
गृद्ध—पु० गीध।
गृम—पु० गर्दन।
गृह—पु० घर। स्त्री।
गृहकन्या–स्त्री० घीकुँवारि।
गृहगोधिका–स्त्री०छिपकली।
गृहतटी—स्त्री० गली।
गृहधारी—पु० गृहस्थ।
गृहप,गृहपति—पु० घर का मालिक। कुत्ता। अग्नि।
गृहपत्नी—स्त्री० घर की स्वामिनी।
गृहपशु—पु० कुत्ता।
गृहमणि—पु० दीपक।
गृहमृग—पु० कुत्ता।
गृहयालु—वि० ग्रहणशील, लेने वाला।
गृहयुद्ध—पु०घरेलू झगड़ा। किसी देश में आपस की लड़ाई।
गृहसचिव–पु०स्वराष्ट्र मंत्री।
गृहस्थ३–पु० घरबार वाला।
गृहस्थी—स्त्री० खेती बाड़ी। घर-बार।
गृहागत—पु० अतिथि।
गृहाराम—पु० घर के पास बनाया हुआ बगीचा।
गृहालिका—स्त्री०छिपकली।
गृहावग्रहणी—स्त्री० देहली, चौकठ।
गृहिणी—स्त्री० घर की मालकिन। पत्नी।
गृही—पु० गृहस्थ।
गृहीत—वि० पकड़ा हुआ।
गृह्य—वि०घर का।
गृह्यक—पु० पालतू पशु पक्षी-आदि।
गृह्यग्रंथ–पु० कर्मकांड ग्रन्थ।
गृह्यसूत्र–पु० शास्त्र। स्मृति।
गेंउड़ा—पु० गाँव के पास की भूमि।
गेंड़ना—सक्रि० घेरना।
गेंडली—स्त्री० घेरा।
गेंड़ा—पु० ईख के ऊपर के पत्ते। एक जंगली पशु।
गेंडु, गेंडुक—पु० गेंद।
गेंडुआ—पु० तकिया। बड़ा गेंद।
गेंडुरी, गेंडुली—स्त्री० घड़ा रखने का रस्सी का मेंडरा। कुंडली। इंडुरी। [गोला।
गेंद—पु०कपड़े या रबड़ का-
गेंदतड़ी—स्त्री० परस्पर गेंद मारने का एक खेल।
गेंदबल्ला—पु० गेंद का एक खेल।
गेंदवा—पु० तकिया।
गेंदा—पु० एक पौधा।
गेंदुक—पु० गेंद।
गेंदुवा—पु० तकिया।
गेटिस—स्त्री० (अं०) मोज़ा बाँधने का फ़ीता।
गेती—स्त्री०(फ़ा०) संसार।
गेदा—पु० बिना पर का चिड़िया का बच्चा।
गेय—वि० गाने के योग्य।
गेरना—सक्रि० गिराना।
गेरुआ–वि० गेरू के रंग का।
गेरुई—स्त्री० एक रोग जो चैत की फ़सल में लगता है।
गेरू—पु० एक लाल कड़ी-मिट्टी।
गेली—स्त्री० (अं०) प्रेस में कंपोज़-मैटर रखने का तख़्ता। [काकुल।
गेसू—पु० (फ़ा०) लट,
गेह—पु० घर।
गेहनी—स्त्री० घरवाली।
गेही—पु० गृहस्थ।
गेहुँअन—पु० विषधर साँप-विशेष।

गेहुँआ—वि० गेहूँ के रंग का।
गेहूँ—पु० एक प्रसिद्ध अन्न।
गैंडा—पु० एक जंगली-जानवर। [एक औज़ार।
गैंती—स्त्री० मिट्टी खोदने का-
गैन—पु० रास्ता। गमन।
गैना—पु० नाटा बैल।
गैनी—स्त्री० गमन करने-वाली स्त्री।
ग़ैब—पु० (अ०) परोक्ष।
ग़ैबत—स्त्री० (अ०) चुग़ली, निन्दा। [श्रेष्ठ हाथी।
गैबर—पु० एक चिड़िया।
ग़ैबानी—स्त्री० (अ०) दुश्चरित्रा स्त्री। भारीआपत्ति।
ग़ैबी—वि० (अ०) गुप्त, गूढ़।
गैयर—पु० हाथी।
गैया—स्त्री० गाय। [निन्दा।
गैर—स्त्री० अंधेर। गैल।
ग़ैर—वि० (अ०) अन्य। अजनबी।
ग़ैरत—स्त्री० (अ०) शर्म।
ग़ैरतमंद—वि० (अ० फ़ा०) लज्जाशील।
ग़ैरमनक़ूला—वि० (अ०) अचल (सम्पत्ति)।
ग़ैरमनकूहा—वि० स्त्री० (अ०) अविवाहिता, रखेली।
ग़ैरमामूली—वि० (अ०) असाधारण। [अनुचित।
ग़ैरमिसिल—वि० (अ०)
ग़ैरमुनासिब—वि० अनुचित।
ग़ैरमुमकिन—वि० असम्भव।
ग़ैरवाजिब—वि० (अ०) अयोग्य।
ग़ैरसाबित—वि० (अ०) असिद्ध।
ग़ैरहाज़िर२—वि० (अ०) अनुपस्थित।
गैरिक—पु० सोना। गेरू।
गैरेय—पु० गेरू। शिलाजीत।
गैल—स्त्री० मार्ग।
गैलन—स्त्री० (अं०) पानी आदि द्रव पदार्थ नापने का ६ बोतल या ३ सेर का परिमाण।
गैलरी—स्त्री० (अं०) बैठने का सीढ़ीनुमा स्थान।
गैस—स्त्री० (अं०) एक तत्व।
गोंठ—स्त्री० मुर्री।
गोंठना—सक्रि० धार या नोंक को गुठला कर देना।
गोंठनी—स्त्री० गोंठने का औज़ार।
गोंड़—पु० एक जंगली जाति।
गोंड़ा—पु० आँगन। बाडा।
गोंद—पु० वृक्ष के तने से निकला हुआ पसेव।
गोंदी—स्त्री० गोंदनी नाम का वृक्ष।
गो—स्त्री० गाय। इंद्रिय। वाणी। पृथ्वी। दिशा। माता। सरस्वती। (फ़ा०) अव्य० यद्यपि।
गोइँठा—पु० उपला, कंडा।
गोइंदा—पु० (फ़ा०) जासूस।
गोइ—पु० गेंद, गोय।
गोईं—स्त्री० सखी, सहेली।
गोई—पु० गेंद, गोय। (फ़ा०) कथन।
गोऊ—वि० चुराने वाला।
गोकंटक—पु० गोखरू।
गोकन्या—स्त्री० कामधेनु।
गोकर्ण—पु० एक तीर्थ स्थान। वि० गाय के से कान वाला। मृग।
गोकर्णी—स्त्री० मूर्वा, धनुष की उपयोगी लता विशेष।
गोकि—अव्य० (फ़ा०) यद्यपि।
गोकुल—पु० गोवृन्द। गोशाला।
गोकोस—पु० उतनी दूर जहाँ तक गाय का शब्द जा रुके, छोटा कोस।
गोक्षर—पु० गोखरू।
गोक्षुरक—पु० गोखरू।
गोखग—पु० पशु। [काँटा।
गोखरू—पु० एक प्रकार का-
गोखा—पु० झरोखा।
गोखुरा—पु० काला साँप।
गोग्रास—पु० पके हुए अन्न का वह भाग जो गाय के लिए रख दिया जाता है।
गोघाती५—वि० गाय मारने-वाला।
गोघ्न—पु० क़साई। मेहमान।
गोचर—पु० वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों से हो सके। चराई का मैदान। क्रि० वि० सामने।
गोज़—पु० (फ़ा०) अपान-वायु, पाद।
गोजई—स्त्री० गेहूँ, जौ-मिश्रित अन्न।
गोजर—पु० कनखजूरा, काँतर।
गोजिह्वा—स्त्री० गोभी।
गोजी—स्त्री० लाठी।
गोझनवट—पु० साड़ी का पल्ला।
गोझा—पु० जेब। एक-मिठाई।

गोट—स्त्री० मगज़ी । किनारा । मंडली । चौपड़ की गोटी ।
गोटा—पु० सुनहरे या रुपहले काम का फ़ीता ।
गोटी—स्त्री० कंकड़ का छोटा टुकड़ा । चौपड़ का मुहरा ।
गोठ—स्त्री० गोशाला ।
गोठा—पु० सलाह ।
गोड़—पु० पैर ।
गोड़इत—पु० चौकीदार ।
गोड़ना—सक्रि० मिट्टी खोद कर उलटना ।
गोड़वारियाँ—स्त्री० पैताना ।
गोड़हरा—पु० पाव का कड़ा ।
गोड़ा—पु० चारपाई आदि का पाया । [आना जाना ।
गोड़ापाई—स्त्री० बार बार-
गोड़ारी—स्त्री० पैताना, जूता ।
गोड़ी—स्त्री० लाभ ।
गोडुंबा—स्त्री० जंटू ककड़ी ।
गोणी—स्त्री० थैला । भाना-कपड़ा ।
गोत—पु० कुल, वंश ।
ग़ोता—पु० (फ़ा०) डुबकी ।
ग़ोताख़ोर—पु० (फ़ा०) डुबकी लगाने वाला ।
गोतिन—स्त्री० सखी ।
गोती, गोत्री—वि० अपने वंश का । [परे हो ।
गोतीत—वि० जो इन्द्रियों से-
गोत्र—पु० वंश । पहाड़ ।
गोत्रभिद्—पु० इन्द्र ।
गोत्रसुता—स्त्री० पार्वती ।
गोत्रा—स्त्री० पृथ्वी । गौओं का समूह ।
गोद—स्त्री० गोदी । अंचल ।
गोदनहारी—स्त्री० गोदना-गोदने वाली स्त्री ।
गोदना—सक्रि० चुभाना ।
गोदा—पु० बड़, पीपल आदि के फल । गोदावरी नदी ।
गोदाम—पु० माल रखने का बड़ा स्थान ।
गोदारण—पु० हल ।
गोदी—स्त्री० कोरा, गोद ।
गोदुह—पु० अहीर ।
गोध, गोधा—स्त्री० गोह नामक जन्तु ।
गोधन—पु० गायों का झुण्ड । गोवर्द्धन पर्वत । गाय रूपी धन ।
गोधा—स्त्री० गोह ।
गोधि—स्त्री० ललाट, मस्तक ।
गोधिका—स्त्री० गोह ।
गोधिकात्मज—पु० विस-खोपड़ा ।
गोधूम—पु० गेहूँ । [समय ।
गोधूलि—स्त्री० संध्या का-
गोन—स्त्री० बोरा । मस्तूल में बाँधने की रस्सी ।
गोनरखा—पु० नाव का मस्तूल ।
गोनर्द—पु० सारस । नागर-मोथा । पतंजलि का जन्म-स्थान ।
गोनस—पु० छोटा साँप ।
गोना—सक्रि० छिपाना ।
गोनिया—स्त्री० राजगीरों का एक औज़ार जिससे इमारत की सिधाई नापी जाती है ।
गोनी—स्त्री० टाट का थैला ।
गोप७—पु० ग्वाला । एक-गहना । बहुग्रामाध्यक्ष । बड़ा ठेकेदार । गौ का दुहने वाला । गोपाल । गोशाला का स्वामी । [स्वामी ।
गोपक—पु० बहुत ग्रामों का-
गोपति—पु० शिव । कृष्ण । ग्वाला । राजा । साँड़ ।
गोपद—पु० गाय के खुर का चिह्न । [समान छोटा ।
गोपदी—स्त्री० गाय के खुर के-
गोपनद्-पु० छिपाव । रक्षा ।
गोपना—सक्रि० छिपाना ।
गोपर—वि० दे० 'गोतीत' ।
गोपांगना—स्त्री० गोप की स्त्री । [लता, काली सारिवा ।
गोपा—स्त्री० पापरि, श्याम-
गोपाल, गोपालक—पु० अहीर । श्रीकृष्ण । राजा ।
गोपालय—पु० ब्रज ।
गोपाष्टमी—स्त्री० कार्तिक-शुक्ला अष्टमी । [गोपी ।
गोपिका—स्त्री० अहीरिन ।
गोपित—वि० रक्षित । गुप्त ।
गोपी—स्त्री० ग्वालिनी । दे० 'गोपा' ।
गोपीचन्दन—पु० पीली मिट्टी-विशेष । [(खंजन) ।
गोपीत—पु० एक पक्षी-
गोपीनाथ—पु० श्रीकृष्ण ।
गोपुत्र—पु० कर्ण ।
गोपुर—पु० नगर का द्वार । फाटक, द्वार ।
गोप्ता१०—वि० रक्षक । पु० विष्णु । स्त्री० गंगा ।
गोप्य—वि० रक्षणीय ।

छिपाने योग्य। पु० दास।
गोप्यक—पु०दास। [समय।
गोप्रवेश—पु० गोधूली का-
गोफ़न—पु० ढेलावाँस।
गोफ़ा—पु० कोंपल। गुफ़ा।
नहख़ाना।
गोबर—पु० गाय का मल।
गोबरगणेश—वि०मूर्ख। भद्दा।
गोबरी—स्त्री०कंडा। [कीड़ा।
गोबरैला—पु० गोबर का एक-
गोभ, गोभा—स्त्री० लहर।
गोभिल—पु० एक ऋषि।
गोभी—स्त्री० एक साग।
गोभृत—पु० पहाड़।
गोम—पु० स्थान।
गोमक्षिका—स्त्री० डाँस।
गोमय—पु०गाय का गोबर।
गोमर—पु०क़साई।
गोमस्थ—पु०नौकर। [स्वामी।
गोमान्—पु० गौओं का-
गोमाय, गोमायु—पु०सियार।
गोमुख—पु० गाय का मुँह।
एक प्रकार का शंख।
गोमुखी—स्त्री० जप की
थैली। गंगा के निकलने
का स्थान।
गोमेद, गोमेदक—पु० एक
रत्न। शीतल चीनी।
गोमेध—पु० एक यज्ञ।
गोयँड़—पु० गाँव के पास-
की भूमि।
गोयंदा—वि०(फ़ा०)भेदिया।
कहने वाला।
गोय—पु०गेंद। [एक वंश।
गोयल—पु० अग्रवालों का-
गोया—क्रि० वि० (फ़ा०)
मानों।
गोयाई—स्त्री० (फ़ा०) वाक्-
शक्ति।
गोर—स्त्री०क़ब्र। वि० गोरा।
गोरकन—पु० (फ़ा०) क़ब्र-
खोदने वाला।
गोरखधंधा—पु० उलझन।
खिलौना विशेष। [हठयोगी।
गोरखनाथ—पु० एक प्रसिद्ध-
गोरखपंथी—पु० गुरु गोरख-
नाथ के पंथ का अनुयायी।
गोरख़र—पु० (फ़ा०) गधे की
जाति का एक जंगली पशु।
गोरखा—पु० नैपाली।
गोरज—पु० गाय के खुर से
उड़ी हुई धूल।
गोरटा ७—वि० गोरा।
गोरख—पु० उद्यम।
गोरस—पु० दूध, दही आदि।
इन्द्रिय-सुख। [वाला शिशु।
गोरसा—पु०गो-दुग्ध से पलने-
गोरसी—स्त्री० अँगीठी।
गोरा७-१—वि० उज्ज्वल-
वर्ण वाला।
गोराई—स्त्री० गोरापन।
गोरिल्ला—पु० विशालकाय-
वनमानुस। [क़ब्रिस्तान।
गोरिस्तान—पु० (फ़ा०)
गोरी—स्त्री० सुन्दरी। गौर
वर्ण की स्त्री।
ग़ोरी—वि० (फ़ा०) ग़ोर देश
का। स्त्री० तश्तरी।
गोरू—पु० चौपाया।
गोरोचन—पु०,गोरोचना—स्त्री०
पीले रंग का एक सुगंधित-
द्रव्य।
गोर्द—पु०मस्तक का गूदा।
गोलंदाज़—पु० तोपची।
गोलबर—पु०गोलाई। गुंबद
गोल—वि० चक्कर। वृत्ता-
कार। पु० वृत्त। छल्ला,
अँगूठी।
ग़ोल—पु० (अ०) दल।
गोलक—पु० गोलपिंड।
विधवा का जारज-पुत्र।
ग़ोलक—स्त्री० (फ़ा०) धन
रखने की सन्दूक़, गुल्लक।
गोलगप्पा—पु० फुलकी।
गोलमाल—पु० गड़बड़।
गोलमिर्च—स्त्री० कालीमिर्च।
गोलयंत्र—पु० ग्रह आदि
की गति जानने का यंत्र।
गोलयोग—पु०एक ही राशि
में कई ग्रहों का इकट्ठा होना
गोलविद्या—स्त्री०ज्योतिष का
एक अंग।
गोला—पु० घेरा। तोप का
गोला। बाज़ार। नारियल-
का गोला। [का।
गोलाकार—वि०गोल शकल-
गोलार्द्ध—पु०पृथ्वी का आधा-
भाग।
गोली—स्त्री० बटी, बटिका।
गोलोक—पु०कृष्णलोक, स्वर्ग।
गोलोमी—स्त्री० उजली दूब।
बच। जटामांसी।
गोल्ड—पु० (अं०) सोना।
गोवंदिनी—स्त्री० ककुनी।
गोवर्द्धन—पु० एक पर्वत।
गोवशा—स्त्री० बाँझ गाय।
गोविंद—पु० श्रीकृष्ण। विष्णु।
गोविट्—पु०गाय का गोबर।

गोश—पु० (फ़ा०) कान।
गोशगुज़ार—वि०(फ़ा०) सुना-हुआ। [हुआ।
गोशज़द—वि० (फ़ा०) सुना-
गोशमाली—स्त्री०(फ़ा०) कान-मरोड़ना।
गोशवारा—पु०(फ़ा०) जोड़, योग। कान का गहना। कलंगी। मुख्तसिर हिसाब।
गोशा—पु० (फ़ा०) कोना, किनारा।
गोशानशीन—पु० एकान्त में या परदे में रहने वाला।
गोशाला—स्त्री० गायों के रहने का स्थान।
गोशीर्ष—पु० कमल समान गंध वाला चन्दन।
गोश्त—पु० मांस।
गोश्तख्वार—पु० (फ़ा०) मांसाहारी।
गोष्ठ—पु० गोशाला। दल।
गोष्ठी—स्त्री०सभा। बातचीत।
गोष्पद—पु० गाय का खुर।
गोसंख्य—पु०अहीर,गोपाल।
गोसमावल—पु० पगड़ी में लटकने वाला मोतियों का गुच्छा।
गोसाईं—पु०गाय का मालिक। ईश्वर। साधु। [हार।
गोस्तन—पु०चार लड़ वाला·
गोस्तनी—स्त्री०दाख,मुनक्का।
गोस्थान—पु० गोशाला।
गोस्वामी—पु० जितेन्द्रिय। एक जाति।
गोह—स्त्री० एक जन्तु।
गोहन—पु० साथी। संग।
गोहरा—पु० कंडा।
गोहरौर—पु०कंडों का ढेर।
गोहार, गोहारी—स्त्री० पुकार, शोरगुल।
गोहराना—सक्रि०पुकारना।
गोहीं—स्त्री० गुप्त बात।
गोहेरा—पु० गोह।
गौं—स्त्री० घात। प्रयोजन।
गौ—स्त्री० गाय।
गौख—पु० झरोखा।
गौखा—पु०झरोखा। गोचर्म।
ग़ौग़ा—पु० (अ०) शोर। अफ़वाह।
ग़ौग़ाई—वि० (फ़ा०) शोर-मचाने वाला। व्यर्थ का।
गौचरी—स्त्री० गाय चराने-का कर। [चीत, गप्प।
ग़ौज़—स्त्री० (अ०) बात-
गौड़—पु०एक देश। ब्राह्मणों तथा कायस्थों की एक जाति।
गौड़िया—वि०गौड़ देश का।
गौड़ी—स्त्री० शराब विशेष।
गौण—वि०अप्रधान। सहायक।
गौणिक—वि० गुणद्योतक।
गौतम—पु० एक ऋषि। बुद्ध।
गौतमी—स्त्री० अहल्या। न्याय-दर्शन। गोदावरी-नदी। कृपा। दुर्गा।
गौदुमा—वि० गावदुम।
गौधार, गौधेय—पु० बिस-खोपड़ा।
गौन—पु० गमन।
गौनहर—स्त्री० गाने का पेशा करने वाली स्त्री।
गौनहाई—स्त्री० जिसका गौना हाल में हुआ हो।
गौनहार—स्त्री० दुलहिन के साथ ससुराल जाने वाली स्त्री।
गौनहारिन,गौनहारी—स्त्री० गाने का पेशा करने वाली।
गौना—पु०— द्विरागमन।
गौर१—वि० गोरा, सफ़ेद। पीला। [ध्यान।
ग़ौर—पु०(अ०)सोचविचार,
ग़ौरपरदाख्त—पु० (अ०) देखरेख, पालन-पोषण।
ग़ौरतलब—वि० (अ०) विचारणीय।
गौरव—पु०बड़प्पन, आदर।
गौरवान्वित—वि०प्रतिष्ठित।
गौरांग—पु०विष्णु। चैतन्य-महाप्रभु।[वर्ण। गोरोचन।
गौरा—स्त्री० पार्वती। गौर-
गौरिका—स्त्री० अष्टवर्षीय-कन्या।
गौरी—स्त्री० पार्वती। चमेली।
गौरीशंकर—पु० हिमालय की सबसे ऊँची चोटी। महादेव जी।
गौरैया—स्त्री० एक चिड़िया।
गौलपिक—पु० ३० सैनिकों का नायक।
गौष्ठीन—पु० वह स्थान जहाँ पहले गोशाला रही हो।
ग़ौस—पु०(अ०) फ़रियाद। मुसलिम फ़क़ीरों की एक उपाधि।
गौहर—पु० (फ़ा०) मोती। जवाहिरात। रत्न। बुद्धि-मानी।

ग्याति—स्त्री० जाति।
ग्यारस—स्त्री० एकादशी।
ग्यारह—वि० ११, दस-और एक।
ग्रंथ—पु० पुस्तक।
ग्रंथक—पु० ग्रन्थकर्त्ता।
ग्रंथकर्त्ता, ग्रंथकार–पु०पुस्तक रचयिता।
ग्रंथ-चुंबक—पु० अलज्ञ।
ग्रंथ-चुंबन—पु० पुस्तक को सरसरी नज़र से पढ़ना।
ग्रंथन, ग्रथन–पु० गूँथना।
ग्रंथना—सक्रि० गुहना।
ग्रंथसाहब—पु० सिक्खों की धर्म-पुस्तक।
ग्रंथि—स्त्री० गाँठ।
ग्रंथिक—पु० पिपरामूल।
ग्रंथित, ग्रथित—वि० गूँथा-हुआ।
ग्रंथिबंधन—पु० गँठबंधन।
ग्रंथिल—वि० गाँठदार।
ग्रंस—पु० छलछिद्र।
ग्रसना—सक्रि० पकड़ना। सताना। [पीड़ित।
ग्रसित—वि० पकड़ा हुआ।
ग्रस्त—वि० दे० 'ग्रसित'। अधकहा। खाया हुआ।
ग्रस्तास्त—पु० सूर्य, चंद्र का ग्रहण लगे हुए अस्त होना।
ग्रस्तोदय—पु० ग्रहण लगी अवस्था में उदय होना।
ग्रह–पु० ग्रहण। मंगल, बुध आदि तारे। ग्रहण। कृपा।
ग्रहण–पु०लेना। स्वीकार। सूर्य, चन्द्र पर पृथ्वी की छाया पड़ना।
ग्रहणशील—वि० ग्रहण करने के स्वभाव वाला।
ग्रहणी—स्त्री० संग्रहणी-नामक रोग। [योग्य।
ग्रहणीय–वि० ग्रहण करने-
ग्रहदशा—स्त्री० दुर्भाग्य।
ग्रहपति—पु० सूर्य।
ग्रहवेध—पु० ग्रह की स्थिति आदि जानना।
ग्रहीता१०–वि०ग्रहणकर्त्ता।
ग्रांडील—वि० (अं०) ऊँचे क़द का।
ग्राम—पु० गाँव। समुदाय।
ग्रामकूट—पु० शूद्र जाति।
ग्रामणी–पु०गाँव का मालिक।
ग्रामतक्ष–पु०गाँव के अधीन-बढ़ई।
ग्रामता–स्त्री०गाँवों का समूह।
ग्रामयाचक—पु० पुरोहित।
ग्रामर—पु०(अं०)व्याकरण।
ग्रामसिंह—पु० कुत्ता।
ग्रामांत—वि० गाँव के पास का।
ग्रामीण—वि० देहाती।
ग्रामीणा—स्त्री० काला रंग।
ग्रामोफ़ोन—पु० (अं०)रेकार्ड बजाने का बाजा।
ग्राम्य—वि० गाँव का।
ग्राम्यधर्म—पु० मैथुन।
ग्राम्या—स्त्री०तुलसी। नील-वृक्ष।
ग्राव—पु० पहाड़। पत्थर।
ग्रासन—पु० कौर। पकड़।
ग्रासना—सक्रि० ग्रसना।
ग्राह—पु० मगर। ग्रहण।
ग्राहक—पु० ख़रीदार।
ग्राही५—पु० ग्रहणकर्त्ता।
ग्राह्य–वि०ग्रहण करने योग्य।
ग्रीक—वि० यूनान-संबंधी। पु० ग्रीसवासी।
ग्रीवा—स्त्री० गर्दन।
ग्रीवी—पु० ऊँट।
ग्रीष्म—पु० गर्मी की ऋतु।
ग्रीस—पु०यूनान देश।
ग्रूप—पु० (अं०) झुंड।
ग्रेटब्रिटेन–पु० (अं०) इङ्ग-लैंड, वेल्स तथा स्काटलैंड।
ग्रेन—पु० (अं०) एक तौल।
ग्रेह—पु० गेह।
ग्रेही—वि० संसारी।
ग्रैजुएट—पु० (अं०) बी० ए० तथा एम० ए० पास।
ग्रैवेय, ग्रैवेयक—पु० कंठा।
ग्रोस–पु०(अं०)बारह दर्जन।
गौरांग—पु० अंग्रेज़।
ग्लस्त—वि० खाया हुआ।
ग्लह—पु० पण, बाज़ी।
ग्लान, ग्लास्नु—पु० रोग से क्षीण व्यक्ति।
ग्लानि—स्त्री०खेद। घृणा।
ग्लास—पु० (अं०) शीशा।
ग्लौ—पु० चन्द्रमा।
ग्वारपाठा–पु० घीकुआर।
ग्वाल—पु० अहीर।
ग्वालिन—स्त्री० अहीर। एक बरसाती कीड़ा।
ग्वाह—पु० गवाह।
ग्वैंठना—सक्रि० मरोड़ना।
ग्वैंठा—वि० ऐंठा हुआ।
ग्वैंड—स्त्री० सीमा।
ग्वैंडे—क्रि० वि० समीप।

४—घ

घँघरा—पु० लहँगा।
घँघोलना—सक्रि० हिलाकर घोलना। गंदा करना।
घंट—पु० घड़ा। घंटा।
घंटा—पु० ढाई घड़ी का समय। घड़ियाल नामक बाजा।
घंटाघर—पु० वह मीनार जिसमें बड़ी घड़ी रहती है।
घंटापथ—पु० प्रधान मार्ग।
घंटिका—स्त्री० घुँघुरू। छोटा-घंटा।
घंटी—स्त्री० छोटा घंटा या उसके बजने का शब्द। छोटी-लुटिया।
घंटेश्वर—पु० एक देवता।
घई—स्त्री० पानी का भँवर। वि० अथाह।
घघरा—पु० लहँगा।
घचाघच—वि० ठसाठस।
घट—पु० घड़ा। हृदय। कम। स्त्री० वाक़या, घटना।
घटक—पु० मध्यस्थ। घड़ा।
घटकना—सक्रि० पी जाना।
घटकर्ण—पु० कुंभकर्ण।
घटका—पु० दम निकलने की अवस्था में कफ का रुकना।
घटकार—पु० कुम्हार
घटज—पु० अगस्त्य मुनि।
घटती—स्त्री० कमी, न्यूनता।
घटदासी—स्त्री० कुटनी, दूती।
घटना—अक्रि० कम होना। स्त्री० वारदात, वाक़या। हाथियों का गिरोह या क़तार।
घटनाक्रम—पु० आकस्मिक-विपत्ति, गर्दिश। [स्थान।
घटनास्थल—पु० घटना होने का
घटनीय—वि० होने योग्य।
घटबढ़—स्त्री० कमी बेशी।
घटयोनि—पु० अगस्त्य मुनि।
घटवाई—पु० वाटवाल। रोकने वाला।
घटवार—पु० घाटिया। मल्लाह।
घटसंभव—पु० अगस्त्य मुनि।
घटा—स्त्री० समूह। मेघमाला।
घटाई—स्त्री० मानहानि।
घटाकाश—पु० घड़े के अन्दर का रिक्त स्थान।
घटाटोप—पु० बादलों का दल। पालकी का पर्दा।
घटाना—सक्रि० कम करना।
घटाव—पु० कमी।
घटिक—पु० घण्टा बजाने वाला।
घटिका—स्त्री० घड़ी। गगरी। २४ मिनट का समय।
घटित—वि० बना या गढ़ा हुआ
घटिताई—स्त्री० कमी।
घटिया—वि० सस्ता।
घटिहा—वि० नीच। चालाक।
घटी—स्त्री० घाटा। घड़ी।
घटीयंत्र—पु० रहट।
घटूका—पु० घटोत्कच।
घटो—पु० घड़ा।
घटोत्कच—पु० भीम का पुत्र
घट्ट—पु० घाट।
घट्टा—पु० घाटा। रगड़ का चिह्न। घटा
घट्ठा—पु० रगड़ने का चिह्न।
घड़घड़ाना—अक्रि० गड़गड़ाना।
घड़ना—सक्रि० गढ़ना।
घड़नैल—पु० घन्नई।
घड़ा—पु० कलसा। [बर्त्तन।
घड़िया—स्त्री० मिट्टी का छोटा-
घड़ियाल—पु० एक बड़ा जल-जन्तु। घण्टा।
घड़ियाली—पु० दे० 'घटिक'
घड़ी—स्त्री० समय सूचक यंत्र। चौबीस मिनट का समय।
घड़ीदिआ—पु० वह घड़ा जो घर के किसी व्यक्ति के मरने पर घर में १०-१२ दिन तक रखा जाता है।
घड़ीसाज़र—पु० घड़ी की मरम्मत करने वाला।
घड़ोला—पु० झज्झर।
घड़ौंची—स्त्री० पानी का घड़ा रखने की तिपाई।
घतिया—पु० घात करने वाला।
घतियाना—सक्रि० घात में लाना।
घन—पु० बादल। बड़ा हथौड़ा। समूह। झाँझ। मँजीरा आदि बाजा। मध्यम रीति से नृत्य होना। मुद्गर। वि० ३ घना।
घनक—स्त्री० गर्जन। [करना।
घनकना—अक्रि० गर्जन-
घनकारा—वि० गरजने वाला।
घनगोलक—पु० सोने चाँदी का सम्मिश्रण।
घनघनाना—अक्रि० घन-घन शब्द करना।
घनघेरा—पु० लहँगा।

घनघोर—वि० घना । भीषण-ध्वनि ।
घनचक्कर—पु० मूर्ख ।
घनता, घनत्व—पु० घनापन ।
घनतार—पु० झाँझ ।
घननाद—पु० मेघनाद ।
घनपदवी—स्त्री० आकाश ।
घनप्रिय—पु० मोर ।
घनफल—पु० लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल ।
घनबान—पु० बाण विशेष ।
घनबेल—वि० बेल बूटेदार ।
घनबेली—स्त्री० एक प्रकार का बेला । [घन का मूल अंक ।
घनमूल—पु० गणित में किसी·
घनरस—पु० कपूर । जल ।
घनवाहन—पु० इन्द्र ।
घनश्याम—पु० श्रीकृष्ण ।
घनसार—पु० कपूर ।
घना७—वि० सघन. घनिष्ट । पु० जंगल । घने पेड़ों का समूह ।
घनाक्षरी—स्त्री० छन्द विशेष ।
घनाघन—पु० इन्द्र । बरसने वाला बादल । मतवाला-हाथी । क्रूर ।
घनात्मक—वि० जिसकी लम्बाई चौड़ाई, मोटाई बराबर हो ।
घनाली—स्त्री० मेघमाला ।
घनिष्ठ—वि० घना । पास का ।
घनेरा७—वि० अधिक ।
घन्नई—स्त्री० घड़ों की नौका ।
घपचिआना—अक्रि० भ्रम में पड़ना ।
घपची—स्त्री० पंजों को मिलाकर दोनों हाथों से पकड़ना ।
घपला—पु० गड़बड़ ।
घप्पू—वि० मूर्ख ।
घबराना—अक्रि० व्याकुल-होना । [उतावली ।
घबराहट—स्त्री० व्याकुलता ।
घबरी—स्त्री० गुच्छा ।
घम—पु० घूँसा मारने का शब्द ।
घमक—स्त्री० घूँसा । चोट ।
घमकना—अक्रि० गरजना । घूँसा मारना ।
घमका—पु० घूँसा ।
घमंडन—पु० अभिमान ।
घमकना—अक्रि० गरजना ।
घमका, घमाका—पु० घूँसे का शब्द ।
घमघमाना—अक्रि० घमघम-शब्द होना । सक्रि० घूँसा-मारना ।
घमर—पु० गम्भीर-ध्वनि ।
घमस—स्त्री० तेज़ गर्मी ।
घमसान, घमासान—पु० घोर-युद्ध ।
घमाघम—स्त्री० धूमधाम ।
घमाना—अक्रि० धूप लेना ।
घमायल—वि० धूप से पका ।
घमौला—वि० घाम खाया हुआ ।
घमोई—पु० बाँस का रोग ।
घमोय—पु० सत्यानाशी नाम की झाड़ी ।
घमोरी—स्त्री० अम्हौरी ।
घर—पु० मकान ।
घरघराना—अक्रि० घरघर-शब्द करना । [वाला ।
घरघाल—वि० घर बिगाड़ने-
घरजाया—पु० गुलाम ।
घरदासी—स्त्री० पत्नी ।
घरद्वार—पु० ठौर-ठिकाना ।
घरनाल—स्त्री० तोप विशेष ।
घरनी—स्त्री० गृहिणी ।
घरफोरी—स्त्री० घर में झगड़ा-कराने वाली ।
घरबसा७—पु० प्रेमी ।
घरबारन—पु० घरद्वार ।
घरमकर—पु० सूर्य ।
घरमना—अक्रि० प्रवाह रूप में गिरना ।
घरवात—पु० घर का सामान ।
घरवाली—स्त्री० पत्नी ।
घरसा—पु० रगड़ा. पीछा ।
घरहाई—स्त्री० घर में कलंक, तथा विरोध फैलाने वाली ।
घराऊ—वि० आपस का ।
घराती—पु० कन्या के पक्ष के लोग ।
घराना—पु० वंश ।
घरिआर—पु० घंटा । मगर ।
घरियाना—सक्रि० तह करना ।
घरियारी—पु० घंटा बजाने-वाला । [घड़ी । समय ।
घरी—स्त्री० परत । घड़ा ।
घरीक—क्रि० वि० घड़ी भर ।
घरुआ—पु० घर । डिब्बा ।
घरू—वि० घर का ।
घरेलू—वि० पालतू । घर का ।
घरैया—वि० घर का ।
घरोवा—पु० प्रेम-सम्बन्ध ।
घरौंधा, घरौंदा—पु० बच्चों का बनाया हुआ मिट्टी या धूल का घर [ग्रीष्म ।
घर्म—पु० धूप । पसीना ।
घर्मद्युति—पु० सूर्य ।

घर्मबिंदु—पु० पसीना।
घर्मांशु—पु० सूर्य।
घर्रा–पु० गले की घरघराहट। एक प्रकार का अंजन।
घर्राटा—पु० खर्राटा।
घर्षण—पु० रगड़।
घर्षित—वि० रगड़ा हुआ।
घलना–अक्रि० फेंका जाना।
घलाघल, घलाघली—स्त्री० मारपीट।
घलुआ—पु० उचित तौल से ऊपर दी गयी वस्तु।
घवद–स्त्री० फलों का गुच्छा।
घवरि—स्त्री० फलों का गुच्छा।
घसखुदा—पु० अनाड़ी।
घसियारा७—पु० घास बेचने वाला। [हुआ लेख।
घसीट–स्त्री० जल्दी में लिखा·
घसीटना—सक्रि० जल्दी· लिखना। कढ़ेरना।
घस्मर—पु० भक्षक।
घस्र—पु० दिन, दिवस।
घहनाना—अक्रि० घंटे आदि का शब्द होना।
घहरना, घहराना—अक्रि० गरजना, मेघ-ध्वनि होना।
घहरानि—स्त्री० गरज।
घहरारा७—पु० गरज।
घाँ, घा–स्त्री० दिशा, तरफ।
घाँघरा—पु० लहँगा।
घांटिक—पु० घंटा बजाकर स्तुति करने वाला, घड़ियाली।
घाँटी—स्त्री० गला।
घाँटो—पु० गीत विशेष।
घाँह, घाँही—स्त्री० ओर।
घाइ—स्त्री० ज़ख़्म, चोट।
घाईं—स्त्री० तरफ़।
घाई—स्त्री० दो उँगलियों के बीच की जगह। घाव।
घाउ—पु० चोट, घाव।
घाऊघप–वि० चुपचाप हज़म करने वाला।
घाएँ—अव्य० तरफ़, ओर।
घाग, घाघ—पु० एक कवि। चतुर तथा अनुभवी व्यक्ति।
घाघरा—पु० लहँगा। स्त्री० एक नदी। [का जाल।
घाघी—स्त्री० मछली मारने·
घाट—पु० जलाशय, नदी आदि के किनारे स्नानादि के लिए बना स्थान विशेष। तंग पहाड़ी-मार्ग। वि० कम।
घाटपाल—पु० घाटिया।
घाटा—पु० नुक़सान। स्त्री० गले का ऊँचा भाग, घाँटी।
घाटारोह—पु० घाट रोकना।
घाटि—वि० न्यून, कम।
घाटिक—पु० दे० "घांटिक"।
घाटिका—स्त्री० गरदन का पीछे का हिस्सा।
घाटिया—पु० घाट का पंडा।
घाटी—स्त्री० पहाड़ों के बीच की भूमि।
घातन—पु० प्रहार। वध। दाँव। चालबाज़ी।
घातक—पु० मारने वाला।
घातिनी—स्त्री० हत्यारी।
घातिया—वि० नाशकर्त्ता।
घाती—वि० नाश करने· वाला।
घातुक—वि० हिंसक, क्रूर।
घात्य—वि० मारने-योग्य।
घान७—पु० कोल्हू, चर्खा, कड़ाही आदि में जितनी वस्तु एक बार डाली जाय। प्रहार।
घाना—सक्रि० मारना।
घापतघोल—पु० गड़बड़ी।
घाबरा—वि० व्याकुल।
घाम—पु० धूप।
घामड़—वि०—मूर्ख, भोंदू। घाम से व्याकुल।
घाय—पु० घाव।
घायक—वि० घातक।
घायल—वि० ज़ख़्मी।
घाल, घाला—पु० घलुआ।
घालक १४-३—पु० मारने-वाला।
घालन—पु० हनन।
घालना—सक्रि० बिगाड़ना, नाश करना।
घालमेल—पु० मिश्रण
घालित–वि० नष्ट किया हुआ।
घाव—पु० ज़ख़्म।
घावपत्ता—पु० घाव आदि पर लगायी जाने वाली एक लता।
घावरिया—पु० घावों की दवा करने वाला।
घास—स्त्री० तृण।
घासलेटी—वि० अश्लील।
घाह—पु० घाई।
घिआड़ा—पु० घी रखने का मिट्टी का पात्र।
घिउ—पु० घी।
घिग्घी—स्त्री० हिचकी।

घिघियाना—अक्रि० गिड़गिड़ाना । [स्त्री० सटाँव ।
घिचपिच—वि० सटा हुआ ।
घिन—स्त्री० अरुचि ।
घिनाना—अक्रि०घृणा करना ।
घिनावना—वि० घृणित ।
घिनौना—वि० घृणित ।
घिय, घिरत—पु० घी ।
घिया—स्त्री० लौकी ।
घियाकश—पु० कद्दूकश ।
घियातरोई—स्त्री० नेनुवाँ ।
घिरना—अक्रि० घेरे में आना ।
घिरनी—स्त्री० गराड़ी ।
घिरवाना—सक्रि० इकट्ठा-कराना ।
घिराई—स्त्री० घेरने की क्रिया, भाव तथा मज़दूरी ।
घिरायँद—पु० पेशाब की बदबू ।
घिराव—पु० घेरा । [कराना ।
घिरावना—सक्रि० इकट्ठा-
घिरिनपरेवा—पु० गिरहबाज़ कबूतर ।
घिरिया—स्त्री० वह जनमंडल जो शिकार घेरने के के लिए बनाया जाता है ।
घिरौरा—पु० घूस का बिल ।
घिरौना—सक्रि० घसीटना ।
घिसघिस—स्त्री० गड़बड़ी । देरी ।
घिसना—सक्रि० रगड़ना ।
घिसाई—स्त्री० घिसने की क्रिया ।
घिस्सा—पु० धक्का । रगड़ा ।
घींच—स्त्री० गर्दन ।
घी—पु० घृत ।
घीकुँवार—पु० एक पौधा ।
घीसा—पु० घिसना ।
घुँघची—स्त्री० गुंजा तथा उसकी बेल ।
घुँघनी—स्त्री० भिगोकर तला हुआ अन्न । [वाले ।
घुँघराले—वि० बहु० घूँघर-
घुँघरू—पु० धातु के बने पोले दाने जो नाचने में पैरों में बाँधे जाते हैं ।
घुँघवारा—वि० घूँघरवाला ।
घुंडी—स्त्री० गोलगाँठ ।
घुग्घी—स्त्री० वर्षा आदि से बचने के लिए विशेष प्रकार से लपेटा हुआ कम्बल, बोरा आदि, घूघी ।
घुग्घू—पु० उल्लू पक्षी ।
घुघरी—स्त्री० उबले, तले हुए चना, मटर आदि ।
घुघुआना—अक्रि० उल्लू का बोलना । बिल्ली का गुर्राना ।
घुट—पु० टखना या पैर की गाँठ ।
घुटकना—सक्रि० घूँट घूँट करके पीना । निगलना ।
घुटकी—स्त्री० गले की नली ।
घुटना७—पु०टाँग के बीच का जोड़ । अक्रि० साँस का दबना । [पाजामा ।
घुटन्ना—पु० घुटने तक का-
घुटवाना—सक्रि० घोटने का कार्य कराना । [‘घुट’ ।
घुटि, घुटिका—स्त्री० दे०
घुटी—स्त्री० बच्चों के पाचन की एक दवा । टखना ।
घुटुरुवन—क्रि० वि० घुटनों के बल ।
घुटुरू—पु० घुटना ।
घुड़कना—सक्रि० डाँटना ।
घुड़की—स्त्री० धमकी ।
घुड़चढ़ी—स्त्री० विवाह में दूल्हा के घोड़े पर चढ़ने की एक रीति ।
घुड़दौड़—स्त्री० घोड़े की दौड़ । एक प्रकार की बड़ी नाव ।
घुड़नाल—स्त्री० घोड़े पर लादने की एक तोप । [रथ ।
घुड़बहल—पु० घोड़ों का-
घुड़ला—पु० छोटा घोड़ा ।
घुड़साल—स्त्री० अस्तबल ।
घुण—पु० काठ का कीड़ा, घुन । [के ही प्राप्त ।
घुणाक्षर—वि० बिना उद्योग-
घुन—पु० एक छोटा कीड़ा ।
घुनघुना—पु० झुनझुना ।
घुनना—अक्रि० घुन लगने से खोखला होना ।
घुन्ना७—वि० चुप्पा ।
घुप—पु० अँधेरा ।
घुमंडना—अक्रि०दे०‘घुमड़ना’ ।
घुमक्कड़—वि० अधिक घूमनेवाला ।
घुमटा—पु० सिर का चक्कर ।
घुमड़ना—अक्रि० बादलों का इकट्ठा होना । [रोग ।
घुमड़ी—स्त्री०सिर घूमने का-
घुमनी—स्त्री० अधिक घूमनेवाली स्त्री ।
घुमराना—अक्रि०दे०‘घुमड़ना’
घुमरी—स्त्री० सिर चकराना । पानी का भँवर ।

घुमाना—सक्रि० फिराना। चक्कर देना।
घुमाव—पु० फेर। मोड़।
घुमावदार—वि० चक्करदार।
घुरघुरा—पु० झींगुर।
घुरघुराना—अक्रि० 'घुरघुर' शब्द करना।
घुरना—अक्रि० घुलना।
घुरबिनिया—स्त्री० घूरे पर से मैली-कुचैली वस्तु बीननेवाली। [घूमना।
घुरमना—अक्रि० चक्कर खाना।
घुराना—अक्रि० भर आना।
घुर्मित—वि० घूमता हुआ।
घुलना९—अक्रि० गलना।
घुवा, घूआ—पु० एक फली जिसमें से रुई के सदृश वस्तु निकलती है।
घुषना९—अक्रि० याद होना।
घुसना९—अक्रि०अन्दर जाना।
घुसपैठ—स्त्री० पहुँच, गति।
घुसेड़ना—सक्रि० गाड़ना, प्रवेश कराना। [परदा।
घूँघट—पु० आँचल का-
घूँघर—पु० बालों का मरोड़।
घूँचा—पु० घूँसा।
घूँट—पु० एक बार में पीने योग्य पानी आदि।
घूँटना—सक्रि० गले के भीतर पानी का ले जाना। [जोड़।
घूँटा—पु० टाँग के बीच का-
घूँटी—स्त्री० दे० 'घुटी'।
घूँस—पु० रिश्वत। एक प्रकार का चूहा।
घूँसा—पु० मुक्का।
घूआ—पु० किवाड़ की चूल अटकाने का छेद। काँस इत्यादि का रुई के सदृश फूल।
घूक—पु० उल्लू।
घूघ—स्त्री० लोहे की टोपी।
घूघू—पु० उल्लू। [दबाना।
घूटना—सक्रि० दे० 'पीना'।
घूड़ा—पु० दे० 'घूर'।
घूना७—वि० कपटी।
घूम—स्त्री० घेरा, घुमाव।
घूमघुमारा—वि० उन्मत्त। बड़े घेरे का।
घूमना—अक्रि० फिरना।
घूमनि—स्त्री० घेरा।
घूरना—अक्रि० आँख गड़ा कर देखना।
घूर, घूरा—पु०कूड़े का ढेर।
घूर्ण—पु० घूमना।
घूर्णित—वि० घुमाया गया।
घूर्भित—वि० घूमा हुआ।
घूस—स्त्री० रिश्वत। एक जानवर।
घृणा—स्त्री० नफ़रत।
घृणास्पद—वि० घिनौना।
घृणि—स्त्री० सूर्य-किरण।
घृणित—वि० घृणा के योग्य।
घृणी—वि० दयालु।
घृण्य—वि० घृणा के योग्य।
घृत—पु०घी। जल। अमृत।
घृतकुमारी—स्त्री० घीकुआँर।
घृताची—स्त्री० एक अप्सरा।
घृष्ट—वि० घिसा हुआ।
घृष्टि—पु० सूअर।
घेघा—पु० गले का एक रोग। गले की नली।
घेंटा—पु० सूअर का बच्चा।
घेघा—पु० गला। गले की नली।
घेर, घेरा—पु० घिराव, हाता। [क्रिया।
घेरघार—स्त्री० घेरने की-
घेरना—सक्रि० छेकना।
घेवर—पु० मिठाई विशेष।
घैया—स्त्री० ताज़े दूध की धार। घाव।
घैर—पु०शिकायत। निंदा।
घैला—पु० घड़ा, गगरा।
घोंघा—पु० एक कीड़ा। वि० मूर्ख।
घोंघाबसंत—वि० बड़ा मूर्ख।
घोंचा—पु० गुच्छा।
घोंचुआ—पु० घोंसला।
घोंटना—सक्रि० पीसना। घूँट घूँट पीना। [सुपारी।
घोंटा—स्त्री० बेर फल।
घोंपना—सक्रि० चुभाना।
घोंसला, घोंसुआ—पु० नीड़। पक्षियों के रहने का बिल।
घोखना—सक्रि० रटना।
घोट, घोटक—पु० घोड़ा। अश्वासुर।
घोटना—सक्रि० पीसना। अभ्यास करना। पु० लोढ़ा।
घोटा—पु० घोटने की वस्तु।
घोटाला—पु० गड़बड़ी।
घोड़ा७—पु० अश्व। बंदूक़ का खटका। [की एक नस।
घोड़ानस—स्त्री०एड़ी के ऊपर-
घोड़िया—स्त्री० घोड़ी। खूँटी।
घोणा—स्त्री० नासिका।

घोणी—पु० सूअर।
घोर—वि० भयानक। घना। स्त्री० गर्जन। [मैं मिलाना।
घोरना—अक्रि० गरजना। पानी-
घोरा—पु० घोड़ा। खूँटा।
घोरिला—पु० मिट्टी का खिलौना (घोड़ा)।
घोल—पु० घोलकर बनायी हुई चीज़, मट्ठा आदि।
घोलदही—पु० मट्ठा।
घोलना—सक्रि० पानी मैं मिलाना।
घोष—पु० अहीर। अहीरों की बस्ती। आवाज़।
घोषक—पु० सफ़ेद फूल की तोरई। [सूचना।
घोषणा—स्त्री० ऐलान,
घोषवती—स्त्री० वीणा।
घोषा—स्त्री० सौंफ़।
घोषित—वि० घोषणा किया-हुआ। [करना।
घोसना—सक्रि० घोषित-
घोसी—पु० अहीर। [गुच्छा।
घौद, घौर—पु० फलों का-
घ्राण—स्त्री० नाक। सुगन्धि।
घ्राणतर्पण—पु० उत्तमगंध।
घ्रात—वि० सूँघा हुआ।
घ्रातव्य, घ्रेय—वि० सूँघने-योग्य।
घ्रायक—वि० सूँघने वाला।

५—ङ।

६—च।

चंक—वि० तमाम, सारा।
चंक्रमण—पु० टहलना।
चंग—स्त्री०(फ़ा०)एक बाजा। पतंग।
चंगना—सक्रि० खींचना।
चंगा—वि० तन्दुरुस्त।
चंगु, चंगुल—पु० पंजा। पकड़। [डलिया।
चँगेर, चँगेरी—स्त्री० टोकरी।
चंच—पु० चोंच। [चषक।
चंचनाहट—स्त्री० टीस,
चंचरी—स्त्री० भ्रमरी।
चंचरीक७—पु० भौंरा।
चंचरीकावली—स्त्री० १३ अक्षरों का वर्ण वृत्त।
चंचल ३-४—वि० अस्थिर। चुलबुला।
चंचलताई—स्त्री० चंचलता।
चंचला—स्त्री०लक्ष्मी। बिजली
चंचलाहट—स्त्री० चपलता।
चंचा—स्त्री०घास का पुतला।
चंचु—स्त्री० चोंच। मृग। एरंड।
चंचुका—स्त्री० चोंच।
चंचुपुट—स्त्री० चोंच।
चंचुभृत—पु० पक्षी।
चंचुमान्—पु० पक्षी।
चंचुर—वि० निपुण।
चंचू—स्त्री० चोंच।
चँचोरना—सक्रि० चूसना।
चंट—वि० चालाक।
चंड४-३—वि०कठोर। तेज़।
चंडकर—पु० सूर्य।
चंडत्व—पु० चंडता।
चंडदीधिति—पु० सूर्य।
चंडांशु—पु० सूर्य।
चंडा—स्त्री० धनहरी नामक-गंध द्रव्य। कर्कशा स्त्री। सौंफ़। सोवा।
चँडाई—स्त्री० शीघ्रता।
चंडात—पु० कनेर वृक्ष।
चंडातक—पु० जाँघ तक का लहँगा, साया। चोली।
चंडाल—पु० ब्राह्मणी से शूद्र के योग से उत्पन्न। निषाद।
चंडालिका—स्त्री० दुर्गा। चंडालों की वीणा।
चंडावल—पु० पहरेदार। सेना का पिछला भाग।
चंडिकघंट—पु० शिवजी।
चंडिका, चंडी—स्त्री० दुर्गा। वि० कर्कशा। पार्वती।
चंडीपति—पु० शंकर।
चंडू—पु० एक नशे की चीज़।
चंडूख़ाना—पु० चंडू पीने का स्थान।
चंडूबाज़—पु०चंडू पीनेवाला।
चंडूल—पु० एक चिड़िया।
चंडोल—पु० पालकी। [थोड़ा।
चंद—पु० चन्द्र। वि० (फ़ा०)

चंदक—पु० दे० 'चंदूक'।
चंदकपुष्प—पु० लौंग।
चंदचूर—पु० शिवजी।
चंदन-पु०एक सुगन्धित वृक्ष।
चंदनपुष्प—पु० लौंग।
चंदनहार-पु० हार विशेष।
चंदना—पु० चन्द्रमा।
चँदनी—स्त्री० चाँदनी।
चंदनौता—पु० एक तरह का लहँगा।
चंदबान—पु० चंद्रवाण।
चँदराना—सक्रि० बहकाना।
चंदरोज़ा—वि० (फ़ा०) अस्थायी।
चँदला—वि० गंजा।
चँदवा-पु०चँदोवा, वितान।
चंदाँ-क्रि०वि०(फ़ा०) इतना।
चंदा—पु० चन्द्रमा। (फ़ा०) उगाही। अंशदान।
चंदावल—पु० (फ़ा०) रक्षा के लिए सेना के पीछे चलने वाला सैनिक दल।
चंदिनि—स्त्री० चाँदनी।
चँदिया—स्त्री० छोटी रोटी। सिर का मध्य भाग।
चंदिर-पु० चन्द्रमा। [जाति।
चंदेल—पु० क्षत्रियों की एक-
चँदोवा—पु० छोटा-मंडप।
चंद्र—पु०चन्द्रमा। कबीला। कपूर।सोना। यज्ञ की खीर। वासुदेव। शिव। ब्रह्मा।
चंद्रक-पु० चन्द्रमा। चाँदनी। नाखून। जल। माथे का एक गहना।
चंद्रकला—स्त्री० चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। माथे का एक गहना। एक मिठाई।
चंद्रकांत—पु० एक मणि।
चंद्रकांता—स्त्री० रात्रि।
चंद्रकांति—स्त्री० चाँदी।
चद्रकी—स्त्री० मोर।
चद्रकुमार—पु० बुध।
चंद्रगुप्त—पु० मौर्यवंशी एक राजा।
चंद्रचूड़—पु० शिवजी।
चंद्रजोत—स्त्री० चाँदनी। आतशबाज़ी। [चन्द्रकिरण।
चद्रद्युति—स्त्री० चंदन।
चद्रधनु—पु० चाँदनी रात में दिखाई पड़ने वाला इन्द्र-धनुष।
चंद्रधर—पु० शिव।
चंद्रपुष्पा—स्त्री० चाँदनी। सफ़ेद भटकटैया।
चंद्रप्रभ—वि० कांतिवान्।
चंद्रप्रभा—स्त्री० चाँदनी।
चंद्रवधूटी—स्त्री० वीर वहूटी नामक लाल रंग का कीड़ा।
चंद्रबिंदु-पु० अर्ध अनुस्वार।
चंद्रबिंब—पु० चन्द्रमंडल।
चंद्रभस्म—पु० कपूर।
चंद्रभागा-स्त्री० एक प्राचीन-नदी।
चंद्रभा—स्त्री० चाँदनी।
चंद्रभाल—पु० शिव।
चंद्रभूति—स्त्री० चाँदी।
चंद्रमणि—पु० एक मणि।
चंद्रमा—पु० शशि, इन्दु।
चंद्रमाललाम—पु० महादेव।
चंद्रमाला-स्त्री०२८ मात्राओं का एक छन्द।
चंद्रमौलि—पु० शिव।
चंद्ररेखा, चंद्रलेखा—स्त्री० दोज का चाँद। [एक वंश।
चंद्रवंश—पु० क्षत्रियों का-
चंद्रवधू—स्त्री० वीरबहूटी।
चंद्रवल्लरी—स्त्री० सोमलता, माधवी लता। ब्राह्मी।
चंद्रवाण—पु० वह वाण जिसका फल अर्द्ध चन्द्राकार हो।
चंद्रवार—पु० सोमवार।
चंद्रवाला—स्त्री० इलायची-बड़ी।
चंद्रशाला—स्त्री० सब से ऊपर की कोठरी। चाँदनी।
चंद्रशेखर—पु० शिवजी।
चंद्रसंज्ञ—पु० कपूर।
चंद्रहार—पु० हार, माला विशेष। [चाँदी।
चंद्रहास—पु० तलवार।
चंद्रा—स्त्री० चँदोवा। छोटी-इलायची। [चाँदनी।
चंद्रातप—पु० चँदोवा।
चंद्रापीड—पु० शिव।
चंद्रिका—स्त्री० चाँदनी।
चंद्रोदय—पु० वैद्यक में एक रस। चन्द्रमा का निकलना।
चंद्रोपल-पु०चद्रकांता मणि।
चंपई—वि० पीला। [फूल।
चंपक—पु० चंपा नामक-
चंपकमाला-स्त्री० चंपाकली। एक छन्द।
चंपत—वि० ग़ायब।
चँपना—अक्रि० बोझ, लज्जा आदि से दबना। [पौधा।
चंपा—पु० फूलों का एक-
चंपाकली—स्त्री० गले में

पहनने का एक गहना।
चंपू—पु० गद्य-पद्यमय काव्य।
चंबर—पु०(फ़ा०) चिलम-पोश।
चँवर७—पु० सुरा गाय की पूँछ के बालों का गुच्छा।
चँवरढार—पु०चँवर डुलाने-वाला।
चवर—पु०चँवर। [चबेना।
चबरा—पु०चावल का एक-
चक—पु०चकवा पक्षी। सट्टी। भूमि का टुकड़ा। अधिकार। पहिया। एक अस्त्र। एक-गहना। वि०चपकायाहुआ।
चकई—स्त्री० चकवी पक्षी। एक खिलौना।
चकचकाना—अक्रि० भीगना।
चकचका—स्त्री० खड़ताल।
चकचाना—अक्रि० चकाचौंध-लगना।
चकचाल—पु० चक्कर।
चकचाव—पु० चकाचौंध।
चकचून—वि० चकनाचूर।
चकचूरना—सक्रि० चूर चूर करना। [चुपड़ा।
चकचोहा७—वि० चिकना-
चकचौंधना—अक्रि० चका-चौंध होना।
चकचौंह—स्त्री० चकाचौंध।
चकड़वा-पु०बखेड़ा, झगड़ा।
चकडोर—स्त्री० चकई तथा उसकी डोरी। [सर्दार।
चकताई—पु० एक मुग़ल-
चकती—स्त्री० कपड़े कीपैंदी।
चकत्ता—पु० धब्बा। दाग़। वि० चग़ताई के वंश का।
चकना—अक्रि० चकित-होना। सशंक होना।
चकनाचूर—वि० चूर चूर।
चकनामा—पु० पट्टा।
चकपक, चकबक—वि० चकित। [चकित होना।
चकपकाना—अक्रि० चौंकना।
चकफेरी—स्त्री० परिक्रमा।
चकबंदी—स्त्री० भूमि का बँटवारा। [की हदबंदी।
चक़बस्त—पु० (फ़ा०) ज़मीन-
चक़मक़, चक़माक़—पु०(फ़ा०) एक प्रकार का पत्थर जिस पर चोट लगने से आग निकलती है।
चक़मा—पु०धोखा, भुलावा।
चकमूँदर—पु० एक जंतु।
चकर—पु० चक्रवाक पक्षी। चक्कर, फेरा।
चकरबा-पु—पु० असमंजस।
चकरा७—वि० फैला हुआ।
चकराना—अक्रि०चक्करखाना।
चकरी—स्त्री० चकई नामक खिलौना।
चकल—पु० वह मिट्टी लगा पौधा जो एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाया जाता है।
चकलई—स्त्री० चौड़ाई।
चकला—पु० गोल पाटा। डुरसा। दुश्चरित्रा स्त्रियों का अड्डा। चक्की। वि० चौड़ा।
चकलाना—सक्रि० मिट्टी-सहित पौधा उखाड़ना। चौड़ा करना।
चकली—स्त्री०होरसा।गड़ारी।
चकलेदार—पु०ताल्लुक़ेदार।
चकल्लस—स्त्री० असमंजस। बखेड़ा।
चकवँड—पु० कुम्हार का चाक के पास, हाथ भिगोने के लिए रक्खा हुआ पात्र।
चकवा७—पु० एक पक्षी।
चकवाना—अक्रि०चकपकाना।
चकवारि—पु० कछुआ।
चकवाह—पु० चकवापक्षी।
चकहा, चका—पु० पहिया।
चका—पु० चक्का, पहिया।
चकाचक—क्रि० वि० भली-भाँति से। [हट।
चकाचौंध—स्त्री० तिलमिला-
चकाना—अक्रि० चकराना।
चकाबू, चकाबूह—पु० चक्रव्यूह
चकासना—सक्रि० चमकना।
चकित—वि० विस्मित।
चकिताई—स्त्री० आश्चर्य।
चकुरी—स्त्री० हाँडी।
चकुला—पु० पक्षि-शावक।
चकृत—वि० चकित।
चकैया—स्त्री० चकवीपक्षी।
चकोटना—सक्रि० बकोटना।
चकोतरा—पु० एक प्रकार का नीबू।
चकोर ७, चकोरक—पु० तीतर की तरह का एक पक्षी।
चकोह—पु० भँवर।
चकौंध—स्त्री० चकाचौंध।
चक्क—पु०चक्रवाक। कुम्हार-का चाक [भुलावा।
चक्कर—पु० मंडल, घेरा।
चक्कवइ—वि० चक्रवर्ती।

चक्कवै—वि० चक्रवर्ती ।
चक्कस—पु० बुलबुल के बैठने का अड्डा ।
चक्का—पु० पहिया, चक्र ।
चक्काव्यूह—पु० चक्रव्यूह ।
चक्की—स्त्री० आटा पीसने का यंत्र ।
चक्की—स्त्री० बुलबुल आदि की लड़ाते समय की चुगाई । चरपरा खाद्य ।
चक्र—पु० पहिया, घेरा । पानी का भँवर । चकवा । सेना ।
चक्रतीर्थ—पु० दक्षिण में तुंगभद्रा नदी और ऋष्य मूक पर्वत के समीप का एक तीर्थ ।
चक्रदंष्ट्र—पु० सूअर ।
चक्रधर, चक्रधारी-पु० विष्णु, कृष्ण ।
चक्रपाणि—पु० विष्णु ।
चक्रपाद-पु० रथ, गाड़ी । हाथी ।
चक्रपूजा—स्त्री० तांत्रिकों की पूजा की एक विधि ।
चक्रबंध-पु० एक चित्रकाव्य ।
चक्रमर्दक—पु० बाकला ।
चक्रवर्तिनी—स्त्री० चक्रवत नामक औषधि ।
चक्रवर्ती५—वि० सार्वभौम ।
चक्रवाक—पु० चकवा पक्षी ।
चक्रवाड—पु० मंडल, घेरा ।
चक्रवात—पु० बवंडर ।
चक्रवाल-पु० मंडल । वह पर्वत जो पृथ्वी को घेरे हुए हैं ।
चक्रवृद्धि—स्त्री० सूद दर सूद ।
चक्रव्यूह—पु० सेना की चक्करदार स्थिति ।
चक्रांक-पु० चक्र की छाप ।
चक्रांकित—पु० जले लोहे से शरीर पर चिह्न लगाना ।
चक्रांग—पु० रथ । हंस ।
चक्रांगी—स्त्री० कुटकी ।
चक्रा—स्त्री० टोली । समूह ।
चक्राट—पु० धोखेबाज़ । साँप का विष उतारने वाला ।
चक्राकार—पु० घेरा ।
चक्रायुध—पु० विष्णु ।
चक्रिक—वि० घण्टा बजाकर स्तुति करने वाला ।
चक्रित—वि० चकित । [सर्प ।
चक्री—पु० विष्णु । कुम्हार ।
चक्रीवान्१३—पु० गधा ।
चक्षण—पु० गजक, चाट । कथन ।
चक्षु, चख—पु० आँख ।
चक्षुःश्रवा—पु० सर्प ।
चक्षुष्पति—पु० सूर्य ।
चक्षुष्य-वि० आँखों का हित-कारी । सुन्दर ।
चक्षुष्या-स्त्री० काला सुरमा ।
चख—पु० आँख । [शोर ।
चख़—पु० (फ़ा०) झगड़ा ।
चखचख—स्त्री० कहासुनी ।
चखना९—सक्रि० स्वाद-लेना ।
चखा—वि० चखने वाला ।
चख़ाचख़-पु० (फ़ा०) झगड़ा, कहासुनी ।
चख़ाचख़ी—स्त्री० लाग डाँट ।
चखोड़ा—पु० डिठौना, चंट
चगड़—वि० चालाक ।
चग़ताई—पु० एक मुग़ल-सरदार । [भाई ।
चचा७—पु० पिता का छोटा-
चचिया—वि० चचा के-समान सम्बन्ध वाला ।
चचींडा—पु० तोरई की तरह की एक तरकारी ।
चची—स्त्री० चाची । [लड़का ।
चचेरा७—वि० चचा का-
चचोरना—सक्रि० चूसना ।
चच्छु—पु० नेत्र ।
चट—क्रि० वि० जल्दी से । पु० धब्बा ।
चटक—पु० गौरैया । वि० चमकदार । क्रि०वि० शीघ्र ।
चटकदार—वि० चमकीला ।
चटकना९—अक्रि० चट कर के टूटना । कलियों का खिलना । पु० तमाचा ।
चटकनी—स्त्री० सिटकिनी ।
चटकमटक—स्त्री० तड़क-भड़क ।
चटका—पु० शीघ्रता ।
चटकाई—स्त्री० रौनक़, शोभा ।
चटकाना—सक्रि० चट चट शब्द निकलना । [चंचल ।
चटकारा—वि० चमकीला ।
चटकारी—स्त्री० चुटकी ।
चटकाली—स्त्री० चिड़ियों का झुंड ।
चटकीला७—वि० चमकीला ।
चटकोरा—पु० एक खिलौना ।
चटख़नी—स्त्री० सिटकनी ।
चटचटाना—अक्रि० चटचट-शब्द करना ।
चटचेटक—पु० जादू ।

चटनी—स्त्री० चाटने की चीज़।
चटपट—क्रि० वि० शीघ्र।
चटपटा७—वि० चरपरा।
चटपटाना—अक्रि०छटपटाना।
चटपटी—स्त्री० शीघ्रता।
चटरी—स्त्री० एक कदन्न।
चटशाला—स्त्री० पाठशाला।
चटसार—स्त्री० पाठशाला।
चटाई—स्त्री० तृण आदि का बिछावन।
चटाक, चटाख—स्त्री० उँगली आदि चटकाने का शब्द।
चटान—स्त्री० चट्टान।
चटाना—सक्रि० चटवाना।
चटापटी—स्त्री० शीघ्रता।
चटावन—पु० अन्नप्राशन।
चटिक—क्रि० वि० तुरन्त।
चटियल, चटैल—पु० खुला-हुआ मैदान।
चटी—स्त्री० चटशाला।
चटु—पु० खुशामद।
चटुल—वि०सुन्दर। चचल।
चटुला—स्त्री० बिजली।
चटोरा१·७—पु० स्वादलोलुप। लोभी।
चट्ट—वि० समाप्त। ग़ायब।
चट्टान—स्त्री० बड़ा पत्थर।
चट्टाबट्टा—वि० बाज़ीगर के गोले, गोलियां।
चट्टी—स्त्री० पड़ाव। चप्पल।
चट्टू—वि०चटोरा।[लँगोट।
चड्डी—स्त्री० एक तरह का-
चढ़त—स्त्री०देवता की भेंट।
चढ़ना९—अक्रि० नीचे से ऊपर को जाना। दर्ज होना।
चढ़ाई—स्त्री०चढ़ने की क्रिया। धावा, हमला।
चढ़ाऊपरी—स्त्री०लाग-डाँट।
चढ़ाव—पु० चढ़ाई। वृद्धि।
चढ़ावा—पु० भेंट।
चढ़ैत—वि० चढ़ने वाला।
चणक—पु० चना।
चतर—पु०(फ़ा०) छाता,छत्र।
चतुरंग—पु० शतरंज।
चतुरंगिणी—स्त्री० वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल हों।
चतुरंगुल—पु० अमिलतास।
चतुरंत—पु० पृथ्वी।
चतुर ४ ३—वि० होशियार।
चतुरब्दा—स्त्री० चार वर्ष की गाय।
चतुरस्र—वि० चौकोर।
चतुराई—स्त्री० होशियारी।
चतुरानन—पु० ब्रह्मा।
चतुर्गति—पु० कछुआ। ईश्वर। विष्णु।
चतुर्गुण—वि० चौगुना।
चतुर्थ—वि० चौथा।
चतुर्थांश—वि० चौथाई।
चतुर्थाश्रम—पु० संन्यास।
चतुर्थी—स्त्री० चौथ।
चतुर्दश ७—स्त्री० चौदस।
चतुर्दिक—पु०चारों दिशाएँ। क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्दोल—पु०पालकी,पालना।
चतुर्भुज—वि० विष्णु।
चतुर्भुजी—वि० चारभुजाओं वाला। वैष्णवों का एक सम्प्रदाय। [(बरसात)
चतुर्मास—पु० चौमासा
चतुर्मुख—पु० ब्रह्मा।
चतुर्युग—पु० चारों युगों का समूह। [का समय।
चतुर्युगी—स्त्री० चार युगों-
चतुर्वर्ग—पु० धर्म,अर्थ, काम और मोक्ष।[वैश्य, शूद्र।
चतुर्वर्ण—पु०ब्राह्मण, क्षत्रिय,
चतुर्विध—वि०चार प्रकार का।
चतुर्वेद—पु० चारों वेद। परमेश्वर। [एक जाति।
चतुर्वेदी—पु० ब्राह्मणों की-
चतुर्व्यूह—पु० चार चीज़ों का समूह। विष्णु।
चतुर्हायणी—स्त्री० चार वर्ष की गाय।
चतुश्शाल—पु० चौक।
चतुश्शाला—स्त्री० चौक।
चतुष्क—वि० चौपहला।
चतुष्कल—वि० चार कलाओं वाला।
चतुष्कोण—वि० चौकोना।
चतुष्टय—पु० चार की सख्या। चार चीज़ों का समूह।
चतुष्पथ—पु० चौराहा।
चतुष्पद—पु०चौपाया।[छंद।
चतुष्पदा—स्त्री० चार पद का-
चतुष्पदी—स्त्री० चौपाई।
चत्वर—पु० चौमुहानी। चबूतरा। आँगन। [विशेष।
चद्दर—स्त्री० चादर। तोप-
चनक—पु० चना।
चनकटा—पु० थप्पड़
चनकना—अक्रि० नाराज़ होना।
चनन—पु० चंदन।
चनवर—पु० ग्रास, कौर।

चना—पु० एक अन्न।
चनार—पु०(फ़ा०) एक वृक्ष।
चन्नि—स्त्री० चरनी।
चप—वि० (फ़ा०) बायाँ।
चपकन—स्त्री० अँगरखा।
चपकलश, चपकुलिश—स्त्री० (तु०) कोलाहल। भीड़। कठिनता। असि-युद्ध।
चपटना—अक्रि० चिपकना।
चपटा७—वि० बैठा हुआ।
चपटी—स्त्री० चुटकी। एक कीड़ा। [लाख।
चपड़ा—पु० साफ़ की हुई-
चपत—पु० थप्पड़।
चपना—अक्रि० दबना।
चपनी—स्त्री० कटोरी।
चपरगट्टू—वि० अभागा।
चपरना—सक्रि० चुपड़ना। अक्रि० शीघ्रता करना।
चपरास—स्त्री० (फ़ा०) कमर में बाँधने की दफ्तर का नाम खुदा हुआ पीतल की पट्टी। [प्यादा।
चपरासी—पु०नौकर,अरदली,
चपरि—क्रि० वि० तेज़ी से।
चपल३—वि० चंचल। चालाक। क्रि० वि० शीघ्र।
चपला—स्त्री०बिजली। लक्ष्मी। जीभ। दुश्चरित्रा स्त्री।
चपलाई—स्त्री० चपलता।
चपलाना—सक्रि० चलाना। अक्रि० चलना।
चप व रास्त—क्रि०वि०(फ़ा०) बाएँ और दाहिने।
चपवाना—सक्रि० दबवाना।
चपाकदे—क्रि०वि० अचानक।
चपाकसे—क्रि०वि०अचानक।
चपाती—स्त्री०(फ़ा०) पतली-रोटी।
चपाना—सक्रि० दबाना।
चपेट—स्त्री०दबाव। झोंका।
चपेटना—सक्रि० दबाना।
चपेटा—पु० दे० "चपेट।"
चपेटिका—स्त्री० हथेली। थप्पड़।
चपौटी—स्त्री० छोटी टोपी।
चप्पल—पु० एक जूता।
चप्पा—पु० चतुर्थांश($\frac{1}{4}$)। थोड़ी जगह। चार अंगुल की नाप।
चप्पी—स्त्री० अंगमर्दन।
चप्पू—पु०नाव खेने का डाँड़।
चबक—स्त्री० टीस। वि० डरपोक।
चबाई—पु० चुग़लख़ोर।
चबाना—सक्रि० दाँतों से कुचलना।
चबारा—पु० दे० "चौबारा।"
चबाव—पु० निन्दा। बन्द-नामी।
चबूतरा—पु० ज़मीन से ऊँची चौरस जगह।
चबेना—पु० भूँजा दाना।
चबेनी—स्त्री० जलपान का सामान।
चभक—पु० डंक, काँटा।
चभना—अक्रि० रौंदा जाना।
चभाना—सक्रि० भोजन-कराना।
चभोरना—सक्रि० भिगोना।
चमक—स्त्री०प्रकाश लचक।
चमकताई—स्त्री० चमक,आभा।
चमक दमक—स्त्री० तड़क-भड़क।
चमकदार—वि० चमकीला।
चमकना१९—अक्रि०दमकना।
चमकारा ७—पु० तेज, प्रकाश। वि० चमकीला।
चमकी—स्त्री० कारचोबी में लगने वाले चपटे टुकड़े।
चमकीला७—वि० चमकदार।
चमकौवल—स्त्री० चमकाने की क्रिया।
चमक्को—स्त्री० चमकने तथा मटकने वाली स्त्री। कुलटा स्त्री।
चमगादड़—पु० रात को उड़ने वाला एक जंतु।
चमचम—स्त्री० एक बँगला-मिठाई। वि० चमकदार।
चमचमाना—अक्रि० चम-कना।
चमचा७—पु० (तु०) करछुल।
चमजोई—स्त्री० एक छोटी-किलनी।
चमड़ा७—पु०खाल। छाल।
चमत्कार—पु० आश्चर्य। करामात। [पूर्ण।
चमत्कारी५—वि० चमत्कार-
चमत्कृत—वि० विस्मित, चकित।
चमत्कृति—स्त्री० चमत्कार।
चमन—पु०(फ़ा०)फुलवारी। छोटा बग़ीचा। रौनक़ की जगह।
चमर७—पु०चँवर। [चकती।
चमरख—स्त्री० मूँजकी-
चमरशिखा—स्त्री० घोड़े की

कलंगी। [से बना घाव।
चमरस—पु० चमड़े की रगड़-
चर्मारक—पु० कचनार।
चमरी—स्त्री० सुरागाय।
चमरौट-पु० चमार को दिया जाने वाला फ़सल का भाग।
चमरौधा—पु० चमड़े से सिला भद्दा जूता। [पात्र।
चमला—पु० भीख माँगने का-
चमस७—पु० चम्मच। यज्ञ-पात्र। [की चौंसी।
चमसी—स्त्री० उड़द के आटे-
चमाऊ—पु० चँवर।
चमाक—स्त्री० चमक।
चमाकना—अक्रि० चमकना।
चमाचम—क्रि० वि० झलक के साथ।
चमार-७—पु० चमड़े का काम करने वाली एक जाति।
चमू—स्त्री० सेना।[सिपाही।
चमूचर—पु० सेनापति।
चमूरु—पु० हरिण विशेष।
चमूहर—पु० शिवजी।
चमेली—स्त्री० एक पुष्प-वृक्ष।
चमोटा ७—पु० छुरा तेज़ करने का चमड़ा।
चमोटी—स्त्री० चाबुक।
चमौवा-पु० चमरौधा जूता।
चम्बर—पु० (फ़ा०) चिलम-पोश।
चम्मच—पु० छोटा चमचा।
चय—पु० समूह। चौकी। क़िले के इधर-उधर की मिट्टी।
चयन—पु० संचय।

चर३—पु० दूत। वि० चलनेवाला।
चरई—स्त्री० पशुओं के जल पीने का हौज़।
चरक—पु० दूत। पथिक। भिक्षुक। चिकित्सा का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।
चरकटा—पु० चारा काटने-वाला। तुच्छ व्यक्ति।
चरकना-अक्रि०दरकना,टूटना।
चरका—पु० धोखा, चकमा।
चरख़—पु० चाक, चक्कर। चरख़ा। एक शिकरी पक्षी। (फ़ा०) दे० 'चख़'।
चरख़कश—पु० खराद की डोरी खींचने वाला।
चरख़ा—पु० सूत कातने का यंत्र। [गड़ारी।
चरख़ी—स्त्री० छोटा चरख़ा।
चरग—पु० एक शिकारी-पक्षी। [पोतना।
चरचना—सक्रि० ताड़ लेना।
चरचराना—अक्रि० चर्राना।
चरचारी—पु० निन्दक।
चरचित—वि० पोता हुआ।
चरज—पु० एक पक्षी।
चरजना—सक्रि० बहकाना। अक्रि० अन्दाज़ लगाना।
चरण—पु०पैर। किसी छन्द का पद।
चरणतल—पु० तलुवा पैर का।
चरणदासी—स्त्री०जूती। पत्नी।
चरणपादुका—स्त्री० खड़ाऊँ।
चरणपीठ—पु० खड़ाऊँ।
चरणा—पु० काछा।
चरणामृत—पु० दूध, दही, घी,शक्करऔरशहद मिश्रित-जल, जिससे देव-मूर्ति का स्नान कराया जाता है।
चरणायुध—पु० मुर्ग़ा।
चरणारविंद—पु० कमल-सदृश चरण।
चरणि—पु० मनुष्य।
चरणोदक—पु० चरणामृत।
चरता—स्त्री० पृथ्वी।
चरती—पु० व्रत न करने-वाला व्यक्ति।
चरथ—वि० चलने वाला।
चरना—सक्रि० पशुओं का चारा खाना। अक्रि० विचारना।
चरनायुध—पु० मुर्ग़ा।
चरनि—स्त्री० चाल, गति।
चरनी—स्त्री० चरी, चारा।
चरपट—पु० किसी की चीज़ लेकर भागने वाला बदमाश।
चरपरा७—वि० तीता, तेज़।
चरपराहट—स्त्री० तीतापन।
चरफराना—अक्रि० तड़पना।
चरब—वि० तीखा।
चरबन—पु० चबैना।
चरबाँक-वि० चतुर। निडर।
चरबा—पु० (फ़ा०) नक़ल, ख़ाका। [मज्जा।
चरबी—स्त्री० (फ़ा०) मेद,
चरम—वि० अन्तिम।
चरमक्ष्माभृत्—पु०अस्ताचल।
चरमराना—अक्रि० 'चरमर' शब्द होना। [या मज़दूरी।
चरवाई-स्त्री०चराने का काम-
चरवाहा२—पु०चराने वाला।
चरवैया—पु० चरने या

चराने वाला।
चरस—पु० चमड़े का बड़ा-पात्र, पुरवट। नशे की चीज़।
चरसा—पु० मोट।
चरसी—पु०चरस पीने वाला। चरस से सिंचाई करनेवाला।
चरहा—पु० चरागाह।
चरागाह—पु० स्त्री० चरी। गोचर-भूमि।
चराचर—पु० जड़-चेतन। चलने तथा न चलने वाला।
चरान—पु० गोचर-भूमि। नमक का दलदल जो प्रायः समुद्र के तट पर होता है।
चराना—सकि० पशुओं को घास खिलाने के लिए ले जाना।
चरिंदा—पु० (फ़ा०) पशु।
चरित—पु० आचरण, कार्य।
चरितनायक—पु० वह प्रधान व्यक्ति जिसके चरित्र के आधार पर कोई पुस्तक लिखी जाती है।
चरितव्य—वि० आचरण-करने योग्य। [घटे।
चरितार्थ—वि० जो ठीक ठीक-
चरित्तर—पु० चालबाज़ी, ढोंग, बहाना, नक़ल।
चरित्र—पु० स्वभाव। कार्य।
चरित्रबंधक—पु० भाट, कवि।
चरित्रवान्१३—वि०सच्चरित्र।
चरिष्णु—पु० जंगम, चलने-वाला [भूमि।
चरी—स्त्री०पशुओं के चरनेकी-
चरु,चरू—पु० हवनीय-द्रव्य।
चरुआ—पु० ज़च्चा के जल औटाने का पात्र।
चरुखला—पु० चर्ख़ा।
चरेरा७—वि० कर्कश, रूखा।
चरेरू—पु० पक्षी।
चरोत्तर—पु० किसी को जीवन भर के लिए दी हुई भूमि।
चर्ख़—पु० (फ़ा०)आकाश। गोलाकार घूमनेवाली चीज़।
चर्च—पु० (अं०) गिरजाघर
चर्चक—पु०चर्चा करने वाला।
चर्चन—पु० ज़िक्र।
चर्चरी—स्त्री०आनन्दोत्सव। केश-रचना [सँवारना।
चर्चरीक—पु० शिव। बाल-
चर्चा—स्त्री०विचार। चंदन आदि से देह लेपन करना। ज़िक्र, बातचीत।
चर्चिका—स्त्री० चर्चा। दुर्गा। एक मातृका।
चर्चित—वि० पोता हुआ, ज़िक्र किया हुआ। चरपरा।
चर्पट—पु० थप्पड़।
चर्पटी—स्त्री० चपाती।
चर्ब—वि० (फ़ा०) चिकना। चपल। मोटा। [चापलूस।
चर्बज़बान—वि० (फ़ा०)
चर्म—पु० चमड़ा। ढाल।
चर्मकार७—पु० चमार।
चर्मकृत्ति—स्त्री० मृगचर्म।
चर्मज—पु० रोम। ख़ून।
चर्मदंड—पु० चाबुक।
चर्मपादुका—पु० जूता।
चर्मपुटक६—पु० कुप्पा।
चर्मप्रभेदिका—स्त्री० चमड़ा-काटने की आरी।
चर्मप्रसेविका—स्त्री० धौंकनी।
चर्मर—पु० चमार।
चर्मवसन—पु० शिवजी।
चर्मी—पु० भोजपत्र या उसका वृक्ष।
चर्य्य—वि० करने योग्य।
चर्य्या—स्त्री० आचरण, जीविका। ध्यान व मौन आदि में टिकना।
चर्राना—अकि०'चरचर'शब्द-करना। हल्की पीड़ा होना।
चर्वण—पु० चबैना, चबाना।
चर्वित—वि० चबाया हुआ।
चर्वित-चर्वण—पु० किसी काम या बात को दुहराना।
चर्व्य—वि०चबाने के योग्य।
चर्षणी—स्त्री० पुँश्चली।
चलंदरी—स्त्री० प्याऊ।
चल—वि० अस्थिर।
चलकना—अकि० चमकना।
चलकर्ण—पु० हाथी।
चलचाल—वि० चंचल।
चलाचत्त३—वि० चंचल।
चलचित्र—पु० चलती फिरती तस्वीर (सिनेमा आदि की)
चलचूक—स्त्री० धोखा।
चलता७—वि० प्रचलित। चालाक।
चलतू—वि० प्रचलित।
चलदल—पु० पीपल वृक्ष।
चलन—पु० रिवाज।
चलनकलन—पु० वह गणित जिससे दिन रात के घटने बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनसार—वि० टिकाऊ।
चलना—सक्रि०गमन करना।
चलनि—स्त्री० रिवाज। गति। [लँहगा।
चलनिका—स्त्री० झालर।
चलनी—स्त्री० छलनी।
चलपत्र—पु०पीपल का वृक्ष।
चलवत—पु० प्यादा।
चलविचल—वि० व्यतिक्रम। बेठिकाने।
चलसंपत्ति—स्त्री० हमेशा व्यवहार में आने वाला धन-रुपया, पैसा सोना आदि। [लक्ष्मी।
चला—स्त्री०बिजली। पृथ्वी।
चलाऊ—वि० टिकाऊ।
चलाक—वि० चालाक।
चलाका—स्त्री० बिजली।
चलाचल—वि०चञ्चल स्त्री० चाल। [हलचल।
चलाचली—स्त्री० तैयारी।
चलाना—सक्रि० प्रचलित- करना, शुरू करना, चलने के लिए प्रेरित करना।
चलायमान४—वि० विचलित।
चलाव—पु० यात्रा, प्रयाण।
चलावा—पु० रिवाज।
चलित—वि० चलता हुआ। पु० चलती सेना।
चलितव्य—वि० चलने योग्य।
चलौना—पु० दूध चलाने की कलछी।
चवना—अक्रि० चुअना।
चवन्नी—स्त्री० रुपये का चतुर्थांश सिक्का।
चवर्ग—पु० 'च' से 'ज' तक- के अक्षर। [वायु।
चवा—स्त्री० चौतरफ़ा की-
चवाई—पु० चुग़लख़ोर, निन्दक।
चवाव—पु० निन्दा,चुग़ली।
चविक४—पु० पीपल की लकड़ी। [लकड़ी।
चव्य४—पु० पीपल की-
चश्म—स्त्री० (फ़ा०) नेत्र।
चश्मक—स्त्री० (फ़ा०)ऐनक। कहासुनी। [से देखा हुआ।
चश्मदीद—वि०(फ़ा०) आँखों-
चश्मनुमाई—स्त्री० (फ़ा०) घुड़की, धमकाना।
चश्मपोशी—स्त्री० (फ़ा०) आँखचुराना।उपेक्षा।[स्रोत।
चश्मा—पु० (फ़ा०) ऐनक।
चष—पु० नेत्र। [मधु।
चषक—पु०मद्य पीने का पात्र।
चषचोल—पु० पलक।
चषण—पु० भोजन। वध।
चषाल—पु० खम्भा के ऊपर का कंकणाकार काष्ठ।
चसक—स्त्री० हलका दर्द।
चसकना—अक्रि० टीसना।
चसका—पु० शौक़, लत।
चसना—अक्रि० चिपकना।
चस्पाँ—वि० (फ़ा०) चिप- काया हुआ।
चस्पीदगी—स्त्री० (फ़ा०) चिपकाने की क्रिया।
चस्पीदा—वि० (फ़ा०) चिप- काया हुआ।
चह—स्त्री० गड्ढा, कुआँ।
चहक—स्त्री० पक्षी कलरव।
चहकना—अक्रि० चहचहाना। जलना। [फ़र्श।
चहका—पु०कीचड़। ईंटों का-
चहकारना—अक्रि० चह- कना, कलरव करना।
चहकारा—वि० कलरव- करने वाला।
चहचहा—पु०हँसी-दिल्लगी। पक्षियों का कलरव।
चहना—सक्रि० चाहना।
चहनि—स्त्री० चाह।
चहबच्चा—पु० हौज़। तह- ख़ाना [शोरगुल।
चहर—स्त्री० आनन्दोत्सव।
चहरना९—अक्रि० आन- न्दित होना। [पहल।
चहर-पहर—स्त्री० चहल-
चहल—पु० कीचड़।
चहलक़दमी—स्त्री० (फ़ा०) धीरे-धीरे घूमना। [उत्सव।
चहलपहल—स्त्री० रौनक़,
चहबच्चा—पु० छोटा तह- ख़ाना। छोटा हौज़।
चहला—पु० दलदल।
चहार—वि० (फ़ा०) चार।
चहारदाँग—स्त्री० (फ़ा०) चारों दिशाएँ।
चहारदीवारी—स्त्री० चारों ओर की दीवार। [बुधवार।
चहारशंबा—पु० (फ़ा०)
चहारुम—वि० (फ़ा०) चौथा।
चहुँ—वि० चारों। चार।
चहुँधा, चहूँघा—क्रि० वि० चारों ओर।
चहुटना—सक्रि०चोट लगना।
चहूटना—अक्रि० सटना।
चहेटना—सक्रि० निचोड़ना।

चहेता७—वि० प्यारा ।
चहोड़ना—अक्रि० सँभालना ।
चाँइयाँ—वि० ठग, धूर्त्त ।
चाँई—वि० चालाक, धूर्त ।
चाँकना—सक्रि० चिह्न लगाना ।
चाँगला—वि० स्वस्थ । चालाक ।
चाँगरी—स्त्री० चूक, खटाई ।
चाँचर, चाँचरि—स्त्री० होली आदि के गीत ।
चांचल्य—पु० चञ्चलता ।
चाँचु—पु० चोंच ।
चाँटा७—पु० चिऊँटा । तमाचा । [संतुष्ट ।
चाँड़—वि० प्रचण्ड । श्रेष्ठ ।
चाँड़ना—सक्रि० नष्ट करना ।
चांडाल७—पु० एक नीच-जाति । [की वीणा ।
चांडालिका—स्त्री० चंडालों
चाँड़िला—वि० प्रबल । उद्धत ।
चाँड़ी—स्त्री० चोंगी ।
चाँद—पु० चन्द्रमा । निशाने का लक्ष्य । स्त्री० खोपड़ी ।
चाँदना—पु० प्रकाश ।
चाँदनी—स्त्री० चन्द्र ज्योति । छत में तानने का सफ़ेद-कपड़ा । [एक गहना ।
चाँदबाला—पु० कान का-
चाँदमारी—स्त्री० निशाना लगाने का अभ्यास ।
चाँदी—स्त्री० रजत, रौप्य ।
चाँदी का जूता—पु० रिश्वत ।
चांद्र—वि० चन्द्रमा संबंधी । पु० अदरख । चंद्रकांतामणि ।
चांद्रक—पु० सोंठ ।
चांद्रायण—पु० एक व्रत ।
चाँप—स्त्री० दबाव ।
चाँपना—सक्रि० दबाना ।
चांपेय—पु० चम्पा । नाग-केसर ।
चाँवर—पु० चावल ।
चांसलर—पु० (अं०) यूनिव-र्सिटी का प्रधान अधिकारी ।
चाउ—पु० इच्छा, चाव ।
चाउर—पु० चावल ।
चाक—पु० पहिया । वि० स्वस्थ (अं०) खड़िया । (फ़ा०) कटा या फटा हुआ-स्थान । वि० कटा हुआ
चाकचक—वि० सुदृढ़ ।
चाकचक्य—स्त्री० शोभा ।
चाकदिल—पु० (फ़ा०) एक बुलबुल । [चिह्न लगाना ।
चाकना—सक्रि० हद खींचना,
चाकर२—पु० (फ़ा०) नौकर, सेवक । [मिठाई ।
चाकलेट—पु० एक अंग्रेज़ी-
चाकी—स्त्री० वज्र । चक्की ।
चाकू—पु० छुरी । [कुम्हार ।
चाक्रिक—पु० तेली । भाट ।
चाक्षुष—वि० नेत्र-संबंधी । प्रत्यक्ष ।
चाख—पु० नीलकंठ ।
चाखना—सक्रि० स्वाद लेना ।
चाचरी—स्त्री० योग की एक मुद्रा । [भाई ।
चाचा७—पु० बाप का छोटा-
चाट—स्त्री० इच्छा । चटपटी-वस्तु ।
चाटकी—वि० ऐंद्रजालिक ।
चाटकैर—पु० चटक पक्षी का बच्चा । [चखना ।
चाटना—सक्रि० जीभ से-
चाटु—पु० ख़ुशामद ।
चाटुकार२—वि० चापलूस ।
चाटुपटु—पु० भाँड़ ।
चाटुवादी—वि० ख़ुशामदी ।
चाड़—स्त्री० प्रेम, प्रबल-इच्छा ।
चाढ़ा७—पु० प्यारा व्यक्ति ।
चाणकीन—पु० चना का खेत ।
चाणक्य—पु० एक नीतिज्ञ पुरुष जो सम्राट् चन्द्रगुप्त का मन्त्री था ।
चाणाक्ष—वि० धूर्त्त ।
चाणूर—पु० कंस का एक पहलवान ।
चातक७—पु० पपीहा ।
चातुर३—वि० चतुर ।
चातुरिक—पु० सारथी ।
चातुर्मास्य—पु० चौमासा (आषाढ़ शुक्ल द्वादशी से कार्तिक शुक्ल द्वादशी तक का समय) ।
चातुर्य—पु० चतुरता ।
चातुर्वर्ण्य—पु० चारों वर्णों का धर्म । [का ज्ञाता ।
चातुर्वैद्य—वि० चारों वेदों-
चात्रिक—पु० पपीहा ।
चादर—स्त्री० (फ़ा०) ओढ़ने तथा बिछाने का बड़ा कपड़ा । धातु का चौखूँटा पत्तर ।
चान—पु० चन्द्रमा ।
चानक—क्रि० वि० अचानक ।
चानन—पु० चन्दन ।
चाप—पु० धनुष । परिधि का भाग । स्त्री० दबाव ।
चापकर्ण—पु० धनुष की प्रत्यंचा ।

चापड़—स्त्री० भूसी। वि० दबा हुआ। चौपट।
चापना—सक्रि० दबाना।
चापल३—वि० चंचल। पु० चपलता। [खुशामदी।
चापलूस२—वि० (फ़ा०)
चापल्य—पु० चपलता।
चापी—पु०धनुर्धारी। शिव। धनकोष।
चाब—स्त्री० डाढ़। एक-औषध। भीगे हुए चना, चावल आदि।
चाबना—सक्रि० दाँतों से कुचल कर खाना।
चाबुक—पु० (फ़ा०) कोड़ा, सोंटा। [फुर्तीला।
चाबुकदस्त—वि० चतुर,
चाबुकसवार—पु० घोड़े को चलना सिखाने वाला।
चाभी—स्त्री० कुञ्जी।
चाम—पु० चमड़ा, खाल।
चामचोरी—स्त्री० छिपकर पर-स्त्री गमन करना।
चामर४—पु० चँवर डुलाने-वाला।
चामरी—स्त्री० सुरागाय।
चामीकर—पु०सोना। धतूरा।
चामुंडा—स्त्री०एक देवी। दुर्गा।
चाय—स्त्री० एक पौधा तथा उसकी पत्ती। पु० चाव।
चायक—पु० प्रेमी। चुनने-वाला। [बंधन।
चार—पु० दूत। ४ का अंक।
चारआईना—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का कवच।
चारक१४—पु०चलाने वाला। चरवाहा। साईस।
चारकर्म—पु०छिपकर देखना।
चारख़ाना—पु० चारख़ाना-दार कपड़ा।
चारचक्षु—पु० राजा।
चारजामा—पु० ज़ीन।
चारटी—स्त्री० स्थल-कमलिनी।
चारण—पु० भाट।
चारदीवारी—स्त्री०परकोटा।
चारना—सक्रि० चराना।
चारनाचार—क्रि०वि० विवश-होकर।
चारपाई—स्त्री० खाट।
चारपाया—पु०चौपाया, पशु।
चारबाग़—पु०चौकोना बाग़।
चारयारी—स्त्री० एक चाँदी का सिक्का। मित्रमंडली।
चारा—पु० (फ़ा०) पशुओं का भोजन। उपाय।
चाराजोई—स्त्री० नालिश, फ़रियाद। उपाय।
चारित—वि० चलाया हुआ।
चारितु—पु० चारा।
चारित्र—पु० आचार।
चारित्र्य—पु० चरित्र।
चारी५—वि० चलने वाला।
चारु३—वि० सुन्दर।
चारुफला—स्त्री० दाख, किश-मिश। अंगूर।
चारुविक्रम—वि० बलवान्।
चारुशिला—स्त्री० हीरा। एक मणि।
चार्चिक्य—पु० चंदनादि से देह लेपन करना।
चार्ज—पु०(अं०) कार्यभार। सुपुर्दगी। मूल्य। [पत्र।
चार्टर—पु०(अं०) अधिकार-
चार्म—पु० चमड़े के परदों से ढका हुआ रथ।
चार्वाक—पु० नास्तिक।
चाल१२—स्त्री० व्यवहार। गति। चालाकी। रस्म।
चालक—पु० हाँकने वाला, ड्राइवर।
चालचलन—पु० आचरण।
चालढाल—स्त्री० व्यवहार।
चालना—सक्रि० छानना। हिलाना।
चालनी—स्त्री० चलनी।
चालबाज़२—वि०धूर्त, ठग।
चाला—पु० प्रस्थान।
चालाक२—वि०(फ़ा०) चतुर। धूर्त।
चालान—पु०बीजक, रवन्ना। न्यायालय में भेजने की क्रिया।
चालित—वि० चलाया हुआ।
चालिया—वि० चालबाज़।
चाली—वि० चालाक।
चालीस—वि० ४०।
चालीसा—पु०४० का समूह।
चालू—वि० प्रचलित।
चाल्हा—स्त्री०मछली विशेष।
चाल्ही—स्त्री० नाव पर मल्लाह के खेने का स्थान।
चाव—पु० इच्छा, शौक़।
चावड़ी—स्त्री० पड़ाव, चट्टी।
चावना—सक्रि० चाहना।
चावल—पु० एक अन्न।
चाष—पु० नीलकंठ। नेत्र।
चास—स्त्री० खेती।
चाशनी,चासनी—स्त्री०(फ़ा०)

खाँड़ का पका हुआ शर्बत।
चासा—पु० किसान।
चाह१२—स्त्री० इच्छा। पु० (फ़ा०) कुआँ। [स्त्री०चाह।
चाहना—सक्रि० इच्छाकरना।
चाहा—पु० चिड़िया विशेष।
चाहि—अव्य० अपेक्षा।
चाहिए—अव्य० उचित है।
चाहे—अव्य० इच्छा हो तो, अथवा।
चिआँ—पु०इमली का बीज।
चिऊँटा७—पु० एक कीड़ा।
चिंगना—पु० छोटा बच्चा।
चिंघाड़ना—अक्रि० चिल्लाना। हाथी का बोलना।
चिंचा—स्त्री०इमली का बीज।
चिंचिनी—स्त्री० इमली।
चिंची—स्त्री०घुँघुची। [जीव।
चिंजा७—पु०लड़का। चिरं-
चिंड—पु० नाच विशेष।
चिंत, चिंता—स्त्री० फ़िक्र।
चिंतक—वि० चिंतन करनेवाला।
चिंतन६—पु०ध्यान, विचार।
चिंतना—सक्रि०चिंतन करना।
चिंतनीय—पु० विचारणीय।
चिंतातुर—वि० चिंता से दुःखी। [एक मणि।
चिंतामणि—पु० परमेश्वर।
चिंतावेश्म—पु० मंत्रणागृह।
चिंतित—वि० चिंता-युक्त।
चिंत्य—वि० विचारणीय।
चिंदी—स्त्री० टुकड़ा, खंड।
चिउड़ा, चिउरा—पु० धान को उबाल तथा कूट कर बनाया हुआ चर्वेण।

चिक—स्त्री० (फ़ा०) तीलियों का परदा। पु० क़साई।
चिकट—वि० गंदा।
चिकटना—अक्रि० मैल से चिपचिपा हो जाना।
चिकन—स्त्री० (फ़ा०)क़सीदा-काढ़ा हुआ कपड़ा।
चिकना७-१—वि० जो साफ़ और बराबर हो।
चिकनाई—स्त्री० चिकनाहट।
चिकनाना—सक्रि० चिकना-करना।
चिकनाहट—स्त्री०चिकनाई।
चिकनियाँ—वि० छैला, सुन्दर, बनाठना।
चिकरना—अक्रि०चिल्लाना।
चिकवा—पु० एक रेशमी-कपड़ा। बूचड़।
चिकार—पु० चिल्लाहट।
चिकारना—अक्रि०चिल्लाना।
चिकारा ७—पु० सारंगी की तरह का एक बाजा।
चिकित्सक—पु०वैद्य, हकीम।
चिकित्सा—स्त्री० इलाज, दवा।
चिकित्सालय—पु० औषधालय। [योग्य।
चिकित्स्य—वि० चिकित्सा के-
चिकीर्षा—स्त्री० करने की चाहना।
चिकीर्षित—वि० वांछित, चाहा हुआ। [चिमटी।
चिकुटी, चिकोटी—स्त्री०
चिकुर—पु० बाल।
चिक्कण—वि० चिकना।

चिक्करना—अक्रि०चीत्कार-करना।
चिक्कस—पु० पीने का एक पात्र। यज्ञ में सोमपान का चिकना पात्र।
चिक्कार—पु० चिंघाड़।
चिखना—पु० चाट।
चिखुरन—स्त्री० जोतकर या निराकार निकाली हुई घास।
चिखुराई—स्त्री०चिखुरने की क्रिया या मज़दूरी।
चिखुरी—स्त्री० गिलहरी।
चिचान—पु० बाज़ पक्षी।
चिचियाना—अक्रि०चिल्लाना।
चिचोड़ना—सक्रि० चूसना।
चिजारा—पु० कारीगर।
चिट—स्त्री० रुक्क़ा, पुरज़ा।
चिटकना—अक्रि० फटना, दरकना।
चिटनवीस—पु० लेखक।
चिट्टा—वि० सफ़ेद। पु० झूठा बढ़ावा। [सूची।
चिट्ठा—पु० खाता, लेखा।
चिट्ठी—स्त्री० पुरज़ा, पत्री।
चिट्ठीपत्री—स्त्री० पत्र-व्यवहार।
चिट्ठीरसा—पु० डाकिया।
चिड़चिड़ा—वि० क्रोधी।
चिड़ा७—पु० चिड़िया(नर)।
चिड़िया—स्त्री० पक्षी।
चिड़ियाख़ाना—पु० वह स्थान जहाँ भाँति-भाँति के पशु, पक्षी रक्खे जाते हैं।
चिड़िहार, चिड़ीमार—पु० बहेलिया।

चिढ़—स्त्री० नफ़रत ।
चिढ़ना९—अक्रि० नाराज़ होना ।
चित—पु० मन । नज़र । वि०पीठ के बल लेटा हुआ ।
चितउन—स्त्री०दृष्टि, कटाक्ष ।
चितकबरा७—वि०रङ्गबिरङ्गा ।
चितचेता—वि० मनचाहा ।
चितचोर—पु० चित्त को चुरानेवाला, प्रिय व्यक्ति ।
चितरना—सक्रि० चित्र-बनाना । [करने वाला ।
चितरनहार—पु० चित्रण-
चितला—वि० चितकबरा ।
चितवन—स्त्री०दृष्टि,कटाक्ष ।
चितवना९—सक्रि० देखना ।
चिता—स्त्री० मुर्दा जलाने के लिए बना लकड़ियों का ढेर । [करना ।
चिताना—सक्रि० सचेत-
चिति—स्त्री० चिता। राशि ।
चितिका—स्त्री० तगड़ी, करधनी ।
चितेरा—पु० चित्रकार ।
चितैना, चितौना—सक्रि० देखना ।
चितौन—स्त्री० चितवन ।
चित्—स्त्री० चेतना, ज्ञान ।
चित्त—पु० मन ।
चित्तरसारी—स्त्री० चित्र-शाला ।
चित्तविक्षेप—पु०व्याकुलता ।
चित्तविभ्रम—पु० भ्रांति ।
चित्तवृत्ति—स्त्री० चित्त की गति ।
चित्तसमुन्नति-पु० बड़प्पन ।
चित्ताभोग—पु० सुखादि में मन लगना । [बुद्धि ।
चित्ति—स्त्री०ख्याति । कर्म ।
चित्ती—स्त्री० छोटा धब्बा ।
चित्या—स्त्री०चिता । समाधिस्थान ।
चित्र—पु० तसवीर । वि० अद्भुत् । चितकबरा ।
चित्रकंठ—पु० कबूतर ।
चित्रक—पु० चित्रकार । तिलक । [कार ।'
चित्रकर—पु० दे० 'चित्र-
चित्रकला—स्त्री० चित्रकारी ।
चित्रकाय-पु०चीता । [साज़ ।
चित्रकार२-पु० चितेरा, रंग-
चित्रकाव्य—पु० वह काव्य जिसके अक्षर चित्र में रखने योग्य हों ।
चित्रकूट—पु० एक पर्वत । चित्तौर का एक नाम ।
चित्रगुप्त—पु० यमराज जो प्राणियों के पाप-पुण्य का हिसाब रखते हैं ।
चित्रतंडुला—स्त्री० बाय-बिड़ंग । [करना ।
चित्रना—सक्रि० चित्रित-
चित्रनेत्रा—स्त्री० मैना ।
चित्रपक्ष—पु० तीतर ।
चित्रपट—पु० चित्रांकित-वस्त्र । थियेटर का पर्दा । तसवीर । फ़ोटो लेने का प्लेट ।
चित्रपटी—स्त्री० जिस पर चित्र बनाया जाय ।
चित्रबर्ह—पु० मोर ।
चित्रभानु—पु० सूर्य । अग्नि । [मृग, चीतल ।
चित्रमृग—पु० एक तरह का-
चित्ररथ—पु० सूर्य । एक गंधर्व । [रंग बिरंगा ।
चित्रल ४—वि० चितला,
चित्रलिखित—वि०निश्चेष्ट ।
चित्रलेखा—स्त्री० चित्र बनाने की कूँची । अप्सरा विशेष ।
चित्रलोचना—स्त्री० मैना ।
चित्रविचित्र—वि० रंग-बिरंगा । नक़ाशीदार ।
चित्रविद्या—स्त्री०चित्रकला ।
चित्रशाला—स्त्री० चित्र बनाने या सजाने का स्थान ।
चित्रशिखंडि—पु० सप्तर्षि (मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ)। [स्पति ।
चित्रशिखंडिज—पु० बृह-
चित्रसारी—स्त्री०सजा हुआ-कमरा ।
चित्रस्थ—वि० निश्चेष्ट ।
चित्रांग७—पु० चीता । सर्प ।
चित्रांगद—पु० शान्तनु का राजकुमार । [की स्त्री ।
चित्रांगदा—स्त्री० अर्जुन-
चित्रा—स्त्री० रागिनी-विशेष । खीरा । चितकबरी-गाय । श्रीकृष्ण की एक सखी ।
चित्राक्षी—स्त्री० मैना ।
चित्रिणी—स्त्री० स्त्रियों का एक भेद । [खींचा हुआ ।
चित्रित—वि० चित्र में-
चित्रेश—पु० चंद्रमा ।
चित्र्य—वि० पूज्य ।

चिथड़ा—पु० फटा पुराना-कपड़ा। [तिरस्कृत करना।
चिथाड़ना—सक्रि० फाड़ना।
चिदाकाश—पु० ब्रह्म। चैतन्य।
चिदात्मा—पु० ब्रह्म।
चिदानंद—पु० ब्रह्म।
चिदाभास—पु० ज्ञान का प्रकाश। परमात्मा का आभास। [आत्मा।
चिद्रूप—पु० परमेश्वर।
चिनक—स्त्री० जलन।
चिनगटा—पु० चिथड़ा।
चिनगारी, चिनगी—स्त्री० अग्नि-कण। [उठाना।
चिनना—सक्रि० दीवार-
चिनाना—सक्रि० चिनाई का काम अन्य से कराना।
चिनार—वि० दे० 'चिन्हार'।
चिनिया—वि० चीनदेश का। श्वेत। [का कपड़ा।
चिनियापोत—पु० एक प्रकार-
चिनियाबादाम—पु० मूँग-फली।
चिन्मय—पु० परमेश्वर।
चिन्ह—पु० निशान।
चिन्हानी—स्त्री० स्मारक।
चिन्हार२—वि० जान-पहचानी। [सटना।
चिपकना, चिपटना—अक्रि०
चिपचिपा,—वि० लसदार।
चिपटा७—वि० दबा हुआ।
चिपड़ी—स्त्री० उपली।
चिपिट, चिपिटक—पु० चरमल। [टुकड़ा।
चिप्पड़—पु० छाल इ० का-
चिप्पी—स्त्री० उपली।
चिबु, चिबुक—पु० ठोड़ी, दाढ़ी। [कना।
चिमटना१—अक्रि० चिप-
चिमटा—पु० आग पकड़ने का एक यंत्र। [चिमटा।
चिमटी—स्त्री० बहुत छोटा-
चिमनी—स्त्री० लालटेन आदि का शीशा। धुआँ निकलने की नली।
चिरंजीव, चिरंजीवी—वि० दीर्घायु।
चिरंटी—स्त्री० विवाहित युवती जो पिता के घर रहती हो।
चिरंतन—वि० पुराना।
चिर—वि० बहुत दिनों का।
चिरकना—अक्रि० थोड़ा-थोड़ा मल निकालना।
चिरकीन—वि० (फ़ा०) गंदा, मैला।
चिरकुट—पु० चिथड़ा।
चिरक्रय—वि० आलसी।
चिरक्रिया—स्त्री० आलस्य।
चिरचना—अक्रि० क्रुद्ध-होना। [अपामार्ग।
चिरचिटा—पु० चिचड़ा,
चिरना१—अक्रि० फटना।
चिरपरिचय—पु० पुरानी-जान पहचान।
चिरमिटा—स्त्री० घुँघुची।
चिरवाना—सक्रि० चीरने का का कार्य कराना।
चिरसूता—स्त्री० एक साल के बछड़े वाली गाय।
चिरस्थायी—वि० दीर्घकाल तक रहने वाला।
चिरहटा—पु० चिड़ीमार।
चिराक, चिराग़—पु० दीपक।
चिराग़दान—पु० (फ़ा०) दीवट।
चिराग़ी—स्त्री० (फ़ा०) किसी मज़ार पर चिराग़ के समय चढ़ाया जाने वाला धन।
चिराग़ेसहरी—पु० (फ़ा०) सबेरे का दीपक।
चिरातन—वि० पुराना।
चिरायँध—स्त्री० चरबी आदि के जलने की दुर्गन्धि।
चिरायता—पु० दवा के काम में आने वाला एक कड़ुवा पौधा।
चिरायु—वि० बड़ी उम्र का।
चिरैया—स्त्री० चिड़िया।
चिरौंटा—पु० दे० 'चिड़ा'।
चिरौंजी—स्त्री० एक मेवा।
चिर्म—पु० (फ़ा०) चमड़ा।
चिलक—स्त्री० चमक. टीस।
चिलका—पु० रुपया।
चिलग़ोज़ा—पु० (फ़ा०) एक मेवा [चमकना।
चिलचिलाना—अक्रि०
चिलड़ा—पु० चीला।
चिलता—पु० (फ़ा०) एक-प्रकार का कवच।
चिलबिला७—वि० चञ्चल।
चिलम—स्त्री० हुक्क़ा पर रखने का कटोरा के आकार का मिट्टी का एक पात्र।
चिलमची—स्त्री० (तु०) देग़ के आकार का एक पात्र।
चिलमन—स्त्री० (फ़ा०) पर्दा, चिक।

चिलमपोश—पु० चिलम का-ढक्कन। [फँसाने का फन्दा।
चिलवाँस—पु० चिड़िया-
चिल्ल—पु० चील।
चिल्लड़—पु० जूँ की तरह का एक कीड़ा।
चिल्लपों—स्त्री० शोर-गुल।
चिल्ला—पु० (फ़ा०) एक पेड़। चालीस दिन का समय। [से बोलना।
चिल्लाना—अक्रि०उच्च स्वर-
चिल्ली, चिल्लिका—स्त्री० बिजली, वज्र।
चिल्ही—स्त्री० चील।
चिहँक—स्त्री० चिड़ियों का बोलना।
चिहँकार—स्त्री० चिहक।
चिहुँकना—अक्रि० चौंकना।
चिहुँटना—अक्रि० चुटकी-काटना।
चिहुँटनी—स्त्री० घुँघुची।
चिहुर—पु० केश, बाल।
चिह्न—पु०निशान। ध्वजा।
चिह्नित—वि० चिह्न किया-हुआ। [बकवाद।
चींचपड़—स्त्री० व्यर्थ-
चींतना—सक्रि०चित्रित करना।
चींकट—पु० तलछट।
चीकना—अक्रि० चिल्लाना।
चीख़—स्त्री०(फ़ा०) चिल्लाना।
चीखल—पु० कीचड़।
चीखुर—पु० गिलहरी।
चीज़—स्त्री० (फ़ा०) वस्तु। आभूषण। गीत।
चीठ—स्त्री० मैल।
चीठा—पु० चिट्ठा, सूची।
चीड़—पु० वृक्ष विशेष।
चीत—पु० चित्त, मन।
चीतना—सक्रि० सोचना, विचारना।
चीतल—पु० सर्प। हिरन-विशेष। [चित्त।
चीता—पु० एक हिंसक पशु।
चीत्कार—पु० चिल्लाहट।
चीथड़ा—पु० फटा-पुराना-कपड़ा। [टुकड़े करना।
चीथना—सक्रि० टुकड़े-
चीदा—वि०(फ़ा०) बढ़िया।
चीफ़—वि० (अं०) प्रधान।
चीन—पु० हरिण विशेष। सूत। पताका।
चीनना—सक्रि० पहिचानना।
चीना—पु० चीनी कपूर।
चीनी—स्त्री० खाँड़, शक्कर।
चीन्हा—पु०चिह्न, निशानी।
चीप—स्त्री०मिट्टी का टुकड़ा
चीपड़—पु० आँख की कीचड़। [से न फटे।
चीमड़—वि० जो खींचतान-
चीयाँ—पु० इमली का बीज।
चीर—पु० वस्त्र। चिथड़ा।
चीरना—सक्रि० फाड़ना।
चीरफाड़—स्त्री० चीर-फाड़ का कार्य।
चीरा—पु० पगड़ी बनाने का एक तरह का लहरियादार-कपड़ा। चीरने से बना घाव।
चीरी, चीरुका—स्त्री० झींगुर।
चीर्ण—वि० प्राचीन।
चील—स्त्री०एक बड़ी चिड़िया।
चीला—पु० 'उलटा' नामक पकवान।
चील्ही—स्त्री० एक टोटका।
चीवर—पु० संन्यासियों के पहनने का वस्त्र विशेष।
चीस—स्त्री० टीस।
चीस्ताँ—स्त्री० (फ़ा०) पहेली।
चुंगल-पु०(फ़ा०)पंजा, पकड़।
चुंगी—स्त्री० बाहर से आने वाले माल पर लगने वाला महसूल।
चुंडित—वि० चोटी वाला।
चुंडी, चुंदी—स्त्री० चोटी।
चुँदरी—स्त्री० रंगीन बुँदकी-दार साड़ी। [होना।
चुँधलाना—अक्रि० चकाचौंध-
चुंधा—वि०छोटी आँखों वाला।
चुंबक—पु० कामुक। एक पत्थर जो लोहे को खींचे।
चुंबन६—पु० चूमना।
चुंबित—वि० चूमा हुआ।
चुअना अक्रि० टपकना।
चुआन—स्त्री० खाई, नहर।
चुआना—सक्रि० टपकाना।
चुक़ंदर—पु० (फ़ा०) एक तरकारी।
चुकट—पु० चुटकी।
चुकता७—वि० बेबाक़।
चुकना९—अक्रि० समाप्त-होना। [साँप।
चुकरैंड—पु० दो मुँह का-
चुकाना—सक्रि०अदा करना।
चुकारा—पु० भुगतान।
चुकिया—स्त्री० कुल्हिया।
चुक्कड़—पु० कुल्हड़।
चुक्र—पु० चूक, खटाई।

चुखाना—सक्रि० गाय दुहने के पूर्व बछड़े को दूध पिलाना।

चुग़द—पु० (फ़ा०) उल्लू-पक्षी। वि० मूर्ख। [वाला।

चुग़लर२—पु० चुग़ली करने-

चुग़लख़ोरर२—वि० दे० 'चुग़ल'।

चुगना१—सक्रि० दाना-बीनना। चोंच मे उठाकर खाना। [कारना।

चुचकारना—सक्रि० चुम-

चुचाना—अक्रि० निचुड़ना।

चुचुक—पु० स्तन का अग्रभाग।

चुचुकना—अक्रि० पचकना। सूखना। [चुटकी।

चुटक—पु० कोड़ा। स्त्री०

चुटकना—सक्रि० कोड़ा-मारना। चुटकी से तोड़ना।

चुटका—पु० चुटकी भर अन्न।

चुटकी—स्त्री० दो उँगलियों के मेल से बनी स्थिति।

चुटकुला—पु० अनोखी बात, लटका। [एक गहना।

चुटला—पु० चोटी पर का-

चुटिया—स्त्री० शिखा।

चुटियाना—सक्रि० ज़ख़मी-करना। [हुआ।

चुटीला—वि० चोट खाया-

चुटैल—वि० घायल। [वाला।

चुड़िहारा—पु० चूड़ी बेचने-

चुड़ैल—स्त्री० भूतनी। कर्कशा स्त्री।

चुत—वि० गिरा हुआ।

चुनचुना—पु० जलन।

चुनचुनाना—अक्रि० जलन-पैदा करना।

चुनट, चुनन—स्त्री० शिकन।

चुनना१—सक्रि० सजाना। बीनना। छाँटना।

चुनरी—स्त्री० रंगीन बुँदकी-दार ओढ़नी।

चुनाँचुनीं—स्त्री० इधर-उधर की बात। [अतः, इसलिए।

चुनाचे—अव्य० (फ़ा०)

चुनाव—पु० चुनने का काम।

चुनावट—स्त्री० चुनन।

चुनिंदा—वि० चुना हुआ।

चुनियाँ, चुनी—स्त्री० दे० 'चुन्नी'। [लिए लाल रंग।

चुनोटिया—स्त्री० कालापन-

चुनौटी—स्त्री० चूनादानी।

चुनौती—स्त्री० ललकार।

चुन्नन—स्त्री० चुनन।

चुन्नी—स्त्री० माणिक आदि का छोटा टुकड़ा।

चुप—वि० ख़ामोश।

चुपका७—वि० मौन।

चुपड़ना—सक्रि० पोतना। छिपाना। [होना।

चुपाना—अक्रि० ख़ामोश-

चुप्पा—वि० कम बोलने वाला।

चुप्पी—स्त्री० मौन।

चुबलाना—सक्रि० मुँह में रखकर स्वाद लेना।

चुभकना१—अक्रि० ग़ोता-खाना।

चुभकी—स्त्री० डुबकी।

चुभना१—अक्रि० गड़ना।

चुभीला—वि० चुभनेवाला।

चुमकार—स्त्री० पुचकार।

चुमकारना—सक्रि० पुचकारना।

चुर—पु० माँद। वि० बहुत।

चुरकना—अक्रि० चहकना।

चुरकुट—वि० चकनाचूर।

चुरकुस—पु० बुकनी।

चुरचुरा—वि० 'चुरचुर' शब्द के साथ टूटा हुआ।

चुरना१—सक्रि० पकना, उबलना।

चुरमुर—वि० कुरकुरा।

चुरमुरना१—अक्रि० 'चुरमुर' शब्द के साथ टूटना।

चुरमुरा—वि० कुरकुरा।

चुरस—स्त्री० सिकुड़न।

चुरा—पु० बुरादा, चूर्ण।

चुराना—सक्रि० चोरी करना।

चुरी—स्त्री० चूड़ी।

चुरुट—पु० सिगार।

चुरू—पु० चुल्लू।

चुल—स्त्री० खुजलाहट।

चुलचुली—स्त्री० खुजलाहट।

चुलबुला१-७—वि० चञ्चल।

चुलहारा—वि० कामातुर।

चुलुक, चुलूक—पु० चुल्लू। बड़ा दलदल।

चुल्लि, चुल्ली—स्त्री० चूल्हा।

चुल्लू—पु० अँगुलियों और हथेली से बना गड्ढा।

चुल्हौना—पु० चूल्हा।

चुवना—अक्रि० टपकना, चूना। सक्रि० चुगना।

चुवा—पु० चौपाया।

चुवाना—सक्रि० टपकाना।

चुसकी—स्त्री० घूँट।

चुसना१—अक्रि० चूसा जाना।

चुसनी—स्त्री० एक खिलौना। दूध पिलाने की शीशी।
चुस्त२—वि० (फ़ा०) कसा हुआ, गठीला।
चुहँटी—स्त्री० चुटकी।
चुहकना—सक्रि० चूसना।
चुहचुहा७—वि० रसीला। चुहचुहाता हुआ। [चिड़िया।
चुहचुही—स्त्री० एक छोटी-
चुहचुहाता—वि० रँगीला।
चुहचुहाना—अक्रि० चहचहाना। रस चुअना।
चुहटना—सक्रि० कुचलना।
चुहटी—स्त्री० चुटकी।
चुहल—स्त्री० हँसी, हर्ष, विनोद।
चुहलबाज़—वि० मज़ाक़िया।
चुहिया—स्त्री० छोटा चूहा।
चुहुकना—सक्रि० चूसना।
चुहुटना—सक्रि० चिमटना।
चुहुटनी—स्त्री० घुँघची।
चूँ—पु० चिड़ियों की आवाज़। क्रि० वि० (फ़ा०) इसलिए।
चूँकि—क्रि० वि० (फ़ा०) क्योंकि।
चूँच—स्त्री० चोंच।
चूँदरी—स्त्री० चूनरी।
चूँनी—स्त्री० चुन्नी। [खट्टा।
चूक—स्त्री० भूल। त्रि० बहुत-
चूकना—अक्रि० भूल करना।
चूची—स्त्री० स्तन।
चूचुक—पु० स्तनों का घुंडी-नुमा अग्रभाग।
चूज़ा—पु० (फ़ा०) मुर्ग़ी का बच्चा। नवयुवक।
चूड़ांत—वि० अत्यन्त। हद दर्जे का, संपूर्ण। [चिउड़ा।
चूड़ा—पु० कड़ा। चोटी।
चूड़ाकरण—पु० मुंडन।
चूड़ाकर्म—पु० मुँडन-संस्कार।
चूड़ामणि—पु० सर में पहनने का गहना, शीर्षफूल।
चूड़ी—स्त्री० स्त्रियों का कलाई पर पहनने का एक मंडलाकार गहना।
चूड़ीदार—त्रि० चूड़ी या घेरेदार। [भग।
चूत—पु० आम। योनि,
चूतड़—पु० गुदा के दोनों ओर का मांसल-भाग।
चूतिया—वि० बेवक़ूफ़।
चूतियापंथी—स्त्री० नासमझी।
चून—पु० आटा।
चूनर—स्त्री० चूनरी।
चूना—पु० कंकड़ की भस्म। अक्रि० टपकना।
चूनी—स्त्री० अन्न-कण।
चूपड़ी—वि० स्त्री० चुपड़ी हुई।
चूमना—सक्रि० बोसा लेना।
चूमा—पु० चुम्बन।
चूमाचाटी—स्त्री० चूमचाटकर प्रेम दिखाना।
चूर—पु० बुकनी। त्रि० तल्लीन।
चूरन—पु० बुकनी। चूर्ण-करने वाला।
चूरना—सक्रि० तोड़ना।
चूरमा—पु० घी, शक्कर मिला हुआ पूरी का चूर। [चिउड़ा।
चूरा—पु० चूर्ण। कड़ा।
चूर्ण—पु० बुकनी, आटा।
चूर्णकुंतल—पु० जुल्फ़, अलक।
चूर्णित—वि० चूर्ण किया हुआ।
चूल—पु० चोटी।
चूलिक—पु० लुचई।
चूलिका—स्त्री० हाथी की कनपटी। नाटक का एक अंग जिसमें किसी घटना की सूचना पर्दे की आड़ से दी जाती है। [की भट्टी।
चूल्हा—पु० भोजन बनाने-
चूषक—पु० चूसने वाला।
चूषण—पु० चूसना। [आदि।
चूषना—सक्रि० दूध पीना-
चूषा—स्त्री० हाथी की कमर में बाँधने की चमड़े की रस्सी।
चूष्य—वि० चूसने के योग्य।
चूहड़ा७—पु० चांडाल, भंगी।
चूहा—पु० भूसा।
चूहादंती—स्त्री० एक आभूषण। [का पिंजड़ा।
चूहादानी—स्त्री० चूहा फँसाने-
चेंचें—स्त्री० व्यर्थ की बकवाद। चिड़ियों की आवाज़।
चेंटुआ—पु० चिड़िया का बच्चा।
चेंबर—पु० (अं०) सभाभवन।
चेक—पु० (अं०) हुण्डी। रुक्क़ा।
चेकितान—पु० महादेव।
चेचक—स्त्री० (फ़ा०) शीतला-रोग।
चेजा—पु० छिद्र। [चेला।
चेट७—पु० दास। मसख़रा।
चेटक७—पु० सेवक। दूत। उपपति। नायक विशेष।
चेटका—स्त्री० श्मशान। चिता।
चेटकी५—पु० जादूगर।
चेटिका—स्त्री० दासी।

नायिका विशेष।
चेटिया—पु० शिष्य, छात्र।
चेड७—पु० दास, सेवक।
चेत—पु० होश। मन।
चेतकी—स्त्री० हड़।
चेतन—पु० प्राणी।
चेतना—स्त्री० बुद्धि, होश। अक्रि० होश में आना।
चेतावनी—स्त्री० सावधान-होने की सूचना।
चेतिका—स्त्री०चिता। श्मशान।
चेदि—स्त्री० जबलपुर तथा उसके आसपास के प्रदेश का प्राचीन कालीन नाम।
चेदिराज—पु० शिशुपाल।
चेन—स्त्री० (अं०) जंज़ीर।
चेना—पु० एक अन्न।
चेप—पु०लासा, चपचपाहट।
चेय—वि० चुनने-योग्य।
चेयर८—पु० (अं०) कुर्सी।
चेयरमैन—पु०(अं०)सभापति।
चेरा७—पु० नौकर। शिष्य।
चेराई—स्त्री० सेवा, दासता।
चेरि, चेरी—स्त्री० दासी।
चेल—पु० वस्त्र। [समूह।
चेलहाई—स्त्री० चेलों का-
चेला७—पु० शागिर्द।
चेष्टा—स्त्री० कोशिश, इच्छा।
चेहरा—पु० (फ़ा०) मुखड़ा।
चेहल—वि०(फ़ा०) चालीस।
चेहलुम—पु० (फ़ा०) मुहर्रम का चालीसवाँ दिन।
चै—पु० चय, ढेर।
चैत—पु० चैत्र मास।
चैतन्य—पु० चेतन, आत्मा, ज्ञान। वि० चेतनाशील।
चैती—स्त्री० रबी की फ़स्ल।
चैत्य—पु०मंदिर, घर। बौद्ध-भिक्षु। यज्ञशाला।
चैत्र—पु० फाल्गुन के बाद का महीना।
चैत्ररथ—पु०कुबेर का बाग़।
चैत्रिक—पु०चैत्र का महीना।
चैन—पु० आराम।
चैपला—पु० एक पक्षी।
चैल७—पु० कपड़ा, वस्त्र।
चैला—पु० लकड़ी का मोटा तथा छोटा टुकड़ा।
चैली—स्त्री० जलाने की चिरवाँ लकड़ी।
चैलेंज—पु०(अं०) ललकार।
चोंक—स्त्री० चुम्बन का चिह्न।
चोंखना—सक्रि० चूसना।
चोंगा७—पु० काग़ज़, टीन आदि की नली। वि० बेवकूफ़।
चोंचना—सक्रि० चुगना।
चोंच—स्त्री० पक्षियों के मुख का अग्रभाग।
चोंड़ा—पु०छोटा कच्चा कुआँ।
चोंथना—सक्रि० नोचना, बकोटना। मूर्ख। [वाला।
चोंधर—वि० छोटी आँखों-
चोंप—पु० चेंप।
चोआ—पु०दे० 'चोवा'।
चोई—स्त्री०दाल का छिलका।
चोकर—पु० भूसी। [शुद्ध।
चोख—स्त्री० शीघ्रता। वि०
चोखना—सक्रि० चूसना।
चोखनि—स्त्री०चोखने की क्रिया
चोखा—वि० खरा, सच्चा। पु० भरता।
चोग़ा—पु०(फ़ा०)लंबा अँग-रखा।
चोच—पु० खाये हुए फल का शेष। केला। [नख़रा।
चोचला—पु० हाव-भाव।
चोज—पु०चमत्कारिक उक्ति। व्यंग्यपूर्ण उपहास।
चोट—स्त्री० आघात। ज़ख्म।
चोटना-पोटना—सक्रि० मनाना, फुसलाना।
चोटहा—वि० ज़ख्मी।
चोटा—पु० राब का पसेव।
चोटार—वि०चोटखाया हुआ।
चोटिया—स्त्री०बालों की लट।
चोटी—स्त्री०शिखा। शिखर।
चोटीपोटी—स्त्री० बनावटी।
चोट्टा—पु० चोर।
चोथ—पु०एक बार का किया हुआ गोबर। [उमंग।
चोप—पु० रुचि, उत्साह,
चोपना—अक्रि०मुग्ध होना।
चोपी—वि० इच्छुक।
चोब—स्त्री०(फ़ा०) शामियाने का खंभा। नगाड़ा बजाने का डंडा। सोंटा। [का काम।
चोबकारी—स्त्री० कलाबत्तू-
चोबचीनी—स्त्री० (फ़ा०) एक काष्ठौषधि।
चोबदस्ती—स्त्री० (फ़ा०) हाथ की छड़ी।
चोबदार—पु०(फ़ा०)द्वारपाल।
चोबी—वि०(फ़ा०)काठ का।
चोर—पु०चोरी करने वाला।
चोरकट—पु० चोर।
चोरघर—पु० तहख़ाना।
चोरटा७—पु० चोर।

चोरदरवाज़ा—पु० गुप्तद्वार।
चोरना—सक्रि० चुराना।
चोरमहल—पु० प्रेमिका को छिपाकर रखने का महल।
चोरमिहीचनी—स्त्री० आँख-मिचौनी का खेल। [से।
चोरा-चोरी—क्रि०वि०चोरी-
चोरिका—स्त्री० चोरी।
चोल—पु० अँगिया।
चोलना—पु० जामा (वस्त्र)।
चोला—पु० शरीर।
चोली—स्त्री० अँगिया। काँचली। [पदार्थ।
चोवा—पु० एक सुगंधित-
चोषण—पु० चूसना।
चोषना—सक्रि० चूसना, दूध पीना।
चोष्य—वि० चूसने-योग्य।
चौंकना९—अक्रि० भड़कना, चकित होना, झिझकना।
चौंटना—सक्रि० चुटकी से तोड़ना।
चौंडल—पु०पर्देदार डोला।
चौंधना—अक्रि० चकाचौंध उत्पन्न करना। [चौंध होना।
चौंधियाना—सक्रि० चका-
चौंप—पु० इच्छा।
चौंर—पु० चँवर।
चौंराना-सक्रि०चँवर डुलाना।
चौंरी—स्त्री०वेणी बाँधने की डोरी। घोड़े के बालों का गुच्छा।
चौआ—पु० चौपाया। चार अंगुल की माप।
चौआई—स्त्री० अफ़वाह।
चौआना—अक्रि० चकित-होना।
चौक—पु०आँगन। बाज़ार। चौराहा। मंगल पूजन के निमित्त आटे आदि से बनाया गया चौकोर क्षेत्र।
चौकठा—पु०चौकोर ढाँचा।
चौकड़ा—पु० कान में पहनने की एक प्रकार की बाली। दावतों में शाक आदि परसने का चौमुखा-एक पात्र।
चौकड़ी—स्त्री० छलाँग। चार का समूह। चार घोड़ों की गाड़ी।
चौकन्ना—वि० सावधान।
चौकस-वि० सावधान, ठीक।
चौकसी—स्त्री० ख़बरदारी।
चौका—पु० सामने के चार दाँतों की पाँति। लीपा हुआ स्थान, जहाँ रोटी बनायी जाती है। शीशफूल। आटे की लकीरों से बना हुआ चौखूँटा चित्र।
चौकी—स्त्री० पायादारचौकोर-आसन। पहरा।
चौकीदार२—पु० पहरेदार।
चौकोन,चौकोर-वि०चौकोना
चौखट—स्त्री० देहरी।
चौखटा—पु० तस्वीर आदि का ढाँचा। [की सृष्टि।
चौखानि—स्त्री० चारों प्रकार-
चौखूंट-क्रि०वि०चारों ओर।
चौखूंटा—वि० चौकोर।
चौगान—पु० (फ़ा०) गेंद का एक खेल जो लकड़ी के बल्ले से खेला जाता है।
चौगिर्द-क्रि०वि०चारों ओर।
चौगोड़ा—पु० खरहा।
चौगोड़िया—स्त्री०एक प्रकार की ऊँची छोटी चौकी।
चौगोशिया—वि० चार कोने वाला।
चौघर-वि० सरपट। [गाड़ी।
चौघोड़ी-स्त्री० चार घोड़ों की-
चौचंद—वि० चौगुना। पु० शोर। निन्दा।
चौचंदहाई—वि० स्त्री० बदनामी करने वाली।
चौड़ान—स्त्री० चौड़ाई।
चौडोल—पु० एक बाजा। पालकी विशेष।
चौतनियाँ—स्त्री० चोली। बच्चों की टोपी। [टोपी।
चौतनी—स्त्री० चौकलिया-
चौतरका—पु० तम्बू।
चौताल—पु० एक गीत।
चौथ—स्त्री० चतुर्थी तिथि। मराठे राजाओं का एक कर।
चौथा—वि० चतुर्थ।
चौथापन—पु० बुढ़ापा।
चौथाई—पु० चतुर्थांश।
चौथिया—पु० चौथे दिन आने वाला ज्वर।
चौथी—स्त्री० विवाह के बाद चौथे दिन की एक रीति।
चौदस-स्त्री० १४ वीं तिथि।
चौदह—वि० १४।
चौदाँत—पु० हाथियों की लड़ाई। [पद।
चौधराई—स्त्री०मुखिया का-
चौधराना—पु० चौधरी का पद या पुरस्कार।

चौधरी—पु० प्रधान, मुखिया।
चौप—पु० दे० 'चोप'।
चौपट—वि० अरक्षित।
चौपटा—वि० नष्ट करनेवाला।
चौपड़—स्त्री० चौसर।
चौपताना—सक्रि० तह लगाना।
चौपथ—पु० चौराहा।
चौपद—पु० चौपाया।
चौपहला—वि० चार बाजुओं-वाला। [का एक छंद।
चौपाई—स्त्री० १६ मात्राओं-
चौपाया—पु० पशु।
चौपाल—पु० बैठक।
चौपुरा—पु० चार मोट चलने वाला कुआँ।
चौफेर—क्रि० वि० चारों ओर।
चौबंदी—स्त्री० चुस्त बंडी।
चौबाई—स्त्री० चारों ओर बहने वाली हवा। अफ़वाह।
चौबारा—पु० कोठे के ऊपर का खुला हुआ कमरा।
चौबोला—पु० एक छंद।
चौभड़—पु० चबाने का चौड़ा दाँत। [वाला मकान।
चौमंज़िला—वि० चार खंड-
चौमासा—पु० बरसात या चार महीने का समय।
चौमुख—क्रि० वि० चारों ओर
चौमुहानी—स्त्री० चौराहा।
चौमेंड़ा—पु० चार सीमाओं के मिलने का स्थान।
चौमेखा—वि० चार मेखों-वाला। [का एक ढंग।
चौरंग—पु० तलवार चलाने-
चौर—पु० चोर।
चौरस—वि० समतल।
चौरा ७—पु० चबूतरा।
चौरासी—वि० ८४।
चौरिका—स्त्री० चोरी।
चौरी—स्त्री० वेदी। छोटा-चौरा। [हुआ चावल।
चौरेठा—पु० भिगोकर पीसा-
चौर्य—पु० चोरी करना।
चौलकर्म—पु० मुंडन।
चौलड़ा—पु० चार लड़ का हार।
चौला—पु० चिउड़ा।
चौलाई—स्त्री० एक पौधा।
चौसई—स्त्री० गजी (कपड़ा)।
चौसर—पु० चौपड़ का खेल। चौलड़ा हार।
चौसिहा—पु० चार गाँवों की सीमाओं के मिलने की जगह।
चौहट्टा—पु० चौक। चौराहा।
चौहद्दी—स्त्री० चारों ओर की सीमा।
चौहरा—वि० चार तह वाला।
चौहान—पु० क्षत्रियों की एक शाखा।
चौहें—क्रि० वि० चारों ओर।
च्यवन—पु० टपकना। चुअना। एक ऋषि।
च्युत—वि० नष्ट। चूआ हुआ।
च्युति—स्त्री० पतन। चुअना।
च्यून—पु० आम का वृक्ष या फल।
च्योनो—पु० घरिया।

७—छ

छंग—पु० गोद।
छंगा—वि० छः अँगुलियों-वाला। [उँगली।
छँगुली—स्त्री० सबसे छोटी-
छँटना—अक्रि० अलग होना। चुना जाना।
छँटनी—स्त्री० सफ़ाई।
छँटा—वि० जिसके पिछले पैर रस्सी से बाँध दिये गये हों।
छँटाई—स्त्री० छाँटने का काम या मज़दूरी।
छँड़ना९—सक्रि० छोड़ना।
छंद—पु० पद्य। बंधन। स्वेच्छाचार। समूह। व्यवहार। [छली।
छंदक—पु० छल। वि०
छदबंद—पु० धोखा, कपट।
छँदना—अक्रि० पैरों का रस्सी से बाँधा जाना।
छंदानुवर्ती५—वि० आज्ञा-

नोट—'छ' से आरंभ होने वाले अधिकांश शब्द 'क्ष' से आरंभ होने वाले शब्दों के अपभ्रंश हैं।

पालक।
छंदी—वि० कपटी। [वाला।
छंदोबद्ध—वि० पद्य में होने-
छः—वि० ६
छक—स्त्री० नशा, तृप्ति।
छकड़ा—पु० सग्गड़।
छकड़िया—स्त्री० छः कहारों की पालकी। [समूह।
छकड़ी—स्त्री० छः का-
छकना१—अक्रि० तृप्त-होना। तंग होना। [तृप्त।
छकाछक—वि० परिपूर्ण।
छकीला—वि० छका हुआ, मस्त। [भाग।
छकुर—पु० फ़सल का छठवाँ-
छक्का—पु० छः का समूह। हाश।
छक्का पंजा—पु० होशहवास।
छग, छगड़ा—स्त्री० बकरा।
छगन—पु० नन्हा बच्चा।
छगल—पु० बकरा।
छगलक—पु० बकरा।
छगला—स्त्री० विधारा।
छगुनी—स्त्री० सबसे छोटी-उंगली। [पीने का पात्र।
छछिया—स्त्री० मट्ठा। मट्ठा-
छछूंदर—पु० चूहे की जाति का एक जंतु।
छजना—अक्रि० सोहना। ठीक जँचना।
छज्जा—पु० बरामदा। दीवार के आगे निकली हुई छत।
छटंकी—स्त्री० सेर का सोलहवाँ भाग। [दूर होना।
छटकना१—अक्रि० उछलना।
छटनी—स्त्री० कमी।
छटपटाना—अक्रि० तड़फड़ाना।
छटपटी—स्त्री० घबराहट।
छटाँक—स्त्री० सेर का सोलहवाँ भाग। [प्रकाश। लड़ी।
छटा—स्त्री० शोभा। बिजली।
छटाफल—पु० नारियल या सुपारी का पेड़।
छटाभा—स्त्री० बिजली।
छटैल—वि० छटा हुआ। धूर्त्त। [दिन।
छठी—स्त्री० जन्म से छठवाँ-
छड़—स्त्री० लंबा तथा पतला-टुकड़ा।
छड़ना—सक्रि० छोड़ना।
छड़ा—पु० पैर का एक गहना। [दरबान।
छड़िया, छड़ीदार—पु०
छड़ी—स्त्री० पतली डंडी।
छत—स्त्री० पाटन। पु० घाव, पीड़ा। क्रि०वि० रहते-हुए। [चाँदनी।
छतगीरी—स्त्री० चँदोवा।
छतना—पु० मधुमक्खियों का स्थान। छाता।
छतनार७—वि० फैला हुआ।
छतरी—स्त्री० छाता। चँदोवा।
छतवंत—वि० क्षतयुक्त।
छति—स्त्री० हानि।
छतिया—स्त्री० छाती।
छतियाना—सक्रि० सीने के पास ले जाना।
छतीसा—वि० चालबाज़, चतुर, धूर्त्त। भाई।
छत्ता—पु० दे० 'छतना'।
छत्तीसा—पु० दे० 'छतीसा'।
छत्तीसी—वि० स्त्री० कुलटा।
छत्र—पु० छाता।
छत्रक—पु० छाता। छाता-नुमा एक तृण।
छत्रचक्र—पु० नक्षत्र-मंडल।
छत्र-छाँह—स्त्री० रक्षा। शरण। [करने वाला।
छत्रधारी—वि० छत्रधारण-
छत्रपति—पु० राजा।
छत्रबंधु—पु० नीचे दर्जे का क्षत्रिय। [जकता।
छत्रभंग—पु० रँडापा। अरा-
छत्रा—स्त्री० सौंफ़। जल से उपजे तृण विशेष। धनियाँ।
छत्राकी—स्त्री० तुलसी का एक भेद।
छत्री—पु० क्षत्रिय।
छत्वर—पु० गृह। कुञ्ज। खोंड़र। [बहाना।
छदंन, छदम—पु० छल,
छद—पु० आवरण। पंख।
छदन—पु० पंख। पत्ता। आवरण।
छदाम—पु० पैसे का चौथाई।
छद्म—पु० छिपाव, छल।
छद्मतापस—पु० कपटी मुनि।
छद्मन—पु० कपट। उज्र। पत्ता। छप्पर।
छद्मवेश—पु० बनावटी वेश।
छद्मवेशी—वि० बनावटी वेश-रखने वाला। [वेशधारी।
छद्मी५—वि० छली। बनावटी-
छन—पु० क्षण। ['क्षण'।
छनक—स्त्री० झनकार। पु० दे०
छनकना१—अक्रि० पानी आदि का उड़ जाना। भड़कना।
छनकमनक—स्त्री० सजधज।

छनकाना—सक्रि० 'छनछन' शब्द करना। चौंकाना।
छनछनाना—अक्रि० झन-झनाना।
छनछबि—स्त्री० बिजली।
छनदा—स्त्री०रात्रि। बिजली।
छनदाकर—पु० चन्द्रमा।
छनना-पु०छानने का कपड़ा।
छनाना—सक्रि० छनवाना।
छनिक—वि० दे० 'क्षणिक'।
छन्न—वि० ढका हुआ।
छपका—पु० छापा। छींटा।
छपछपाना—अक्रि० 'छपछप' शब्द करना।
छपटाना—सक्रि० चिपटाना।
छपद—पु० भौंरा।
छपन—पु० नाश। [वाला।
छपनहार—वि० नाश करने-
छपना९-अक्रि०छापा जाना।
छपर-छपर—वि० तराबोर।
छपरबंद२—पु० छप्पर छाने वाला।
छपरी—स्त्री० झोंपड़ी।
छपवाना—सक्रि० छपाना।
छपा—स्त्री० दे० 'क्षपा'।
छपाई—स्त्री०छपाने का काम या मज़दूरी।
छपाकर—पु० चन्द्रमा।
छपाका—पु०पानी पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
छप्पय-पु०छः पदों का छंद।
छप्पर-पु०छान। [रहनेवाला।
छप्परबंध—वि०घर बनाकर-
छबड़ा७-पु० झौआ, टोकरा।
छबि—स्त्री० शोभा।
छबिवंत७-वि० शोभाशाली।
छबीला७—वि० शोभायुक्त।
छबुंदा-पु०एक विषैला कीड़ा।
छम—वि०समर्थ। पु०शक्ति।
छमकना—अक्रि० ठुमकना।
छमछम—स्त्री० घुँघरू आदि के बजने का शब्द।
छमछमाना-अक्रि०'छमछम' शब्द करना।
छमना—सक्रि०माफ़ करना।
छमाई—स्त्री० माफ़ी।
छमाछम—स्त्री० आभूषणों की झनकार।
छमाना-सक्रि०क्षमा करना।
छमापन—पु० माफ़ी।
छमाही—वि०छः मास का।
छमुख—पु० कार्तिकेय।
छर—पु० छल। [सुन्दर।
छरकीला—वि० लंबा तथा-
छरछंदी—वि० धूर्त, कपटी।
छरछराना-अक्रि०चुनचुनाना।
छरना-अक्रि०टपकना, बहना सक्रि० साफ़ करना। मोहित करना।
छरभार-पु०झंझट। [तीला।
छरहरा—वि० हलका, फुर-
छरा-पु०लड़ा। नारा।रस्सी।
छरिंदा—वि० अकेला।
छरीदार—पु० पहरे वाला।
छरोरा—पु० खरोंच।
छर्दन—पु० कै करना।
छर्दि—स्त्री० वमन, कै।
छर्रा—पु० लोहे या सीसे के छोटे टुकड़े।
छल—पु० कपट, धोखा।
छलकना९-अक्रि० उमड़ना, उछलकर गिरना।
छलकारी५—वि० ठग, धूर्त।
छलछंदद—पु० चालबाज़ी।
छलछाया—स्त्री०कपट जाल।
छलछिद्र—पु० कपट-व्यवहार। [स्त्री० धोखा।
छलना९—सक्रि० ठगना।
छलनी—स्त्री० चलनी।
छलबल—पु० कपट, धोखा।
छलहाई—वि०छली, कपटी।
छलाँग—स्त्री० चौकड़ी।
छलावा—पु० भूतादि की छाया। धोखा।
छलित—वि० ठगा गया।
छलिया, छली, छलीक—वि० कपटी, धोखेबाज़।
छल्ला-पु० अँगूठी। घेरा।
छल्लेदार—वि० घेरेदार।
छवड़ा७-पु०झौआ, टोकरा।
छवना७—पु० बच्चा।
छवा—पु० बछड़ा। एड़ी।
छवाई—स्त्री० छाने का काम या मज़दूरी।
छवि—स्त्री०शोभा, सजावट।
छवाना—सक्रि० छाने का काम कराना।
छहर—स्त्री० फैलाव।
छहरना९--अक्रि० छितराना।
छहियाँ—स्त्री० छाया।
छाँक—पु० दे० 'छाक'।
छाँगना—सक्रि० डालीआदि काटना।
छाँगुर—वि० छंगा। [कै।
छाँट—स्त्री० कतरन। भूसी।
छाँटना-सक्रि० काटकर अलग करना, चुनना। धोना।
छाँड़ना—सक्रि० छोड़ना।

छाँद—स्त्री० चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी ।[बाँधना ।
छाँदना—सक्रि० कसना,
छाँवड़ा७—पु० छोटा बच्चा।
छाँह, छाँहरि—स्त्री० छाया ।
छाँहगीर—पु०आईना । छत्र ।
छाक—स्त्री०कलेवा । नशा । तृप्ति ।
छाकना—अक्रि० अघाना ।
छाग७—पु० बकरा ।
छागरथ—पु० अग्नि ।
छागल—पु० बकरा । बकरे की खाल की बनी मशक । स्त्री० झाँझन ।
छागवाहन—पु० अग्नि ।
छागी—स्त्री० बकरी ।
छाछ—स्त्री० मट्ठा ।
छाज—पु० सूप ।
छाजन—पु० वस्त्र । स्त्री० छप्पर । अपरस ।
छाजना—अक्रि०शोभा देना ।
छाजित—वि० शोभित ।
छात—पु० छतरी । वि० दुर्बल । खडित, कटा-हुआ ।
छाती—स्त्री०सीना । स्तन । साहस ।
छात्र—पु० विद्यार्थी ।
छात्रगंड—पु० कुशाग्र बुद्धि-वाला विद्यार्थी ।
छात्रवृत्ति—स्त्री० वजीफा, पारितोषिक ।
छात्रालय—पु० विद्यार्थियों के रहने का स्थान ।
छादन—पु०ढकने का काम । आवरण ।
छादित—वि० ढका हुआ ।
छादी५—वि० ढँकने वाला ।
छाद्मिक—वि० बहुरूपिया ।
छानना—सक्रि० पानी, चूरन आदि को कपड़े या चलनी में निकालना । नशा पीना । जाँचना ।
छानबीन—स्त्री०जाँचपड़ताल ।
छाना—सक्रि० आच्छादित-करना । फैलाना ।
छाने-छाने—क्रि०वि०चुपके से।
छान्दस—पु० वेदपाठी ।
छाप—स्त्री० छापने से पड़ा हुआ चिह्न ।
छापक—वि० छोटा ।
छापना—सक्रि०मुद्रित करना ।
छापा—पु० ठप्पा । मुहर । आक्रमण। [छापने का स्थान।
छापाखाना—पु० पुस्तकें-
छाम—वि० दुबला ।
छाया—स्त्री०साया, प्रतिबिंब ।
छायाग्राही५—वि० आकर्षक ।
छायाचित्र—पु० छाया रूप में दिखलाया गया चित्र । सिनेमा का चित्र ।
छायापथ—पु० आकाश-गंगा ।
छायामान—पु० चन्द्रमा ।
छायामित्र—पु० छाता ।
छायामृत—पु० चन्द्रमा ।
छायायंत्र—पु० धूपघड़ी ।
छायावाद—पु० वह काव्य जिसमें अज्ञात के प्रति जिज्ञासा हो अथवा हल्के दार्शनिक भाव हों ।
छार—पु० नमक । राख ।
छालटी—स्त्री०छाल या पाट का बना वस्त्र ।
छालना—सक्रि० छानना । धोना । [फफोला ।
छाला—पु० चमड़ा ।
छालित—वि० धोया हुआ ।
छालिया—स्त्री०छोटी कटोरी ।
छाली—स्त्री० सुपारी ।
छावँ—स्त्री०छाया । आश्रय ।
छावना—सक्रि० छाना ।
छावनी—स्त्री० छप्पर । डेरा, सेना का पड़ाव । [शावक ।
छावरा—पु० छौना, पशु-
छावा—पु० बच्चा ।
छासठ—वि० ६६ ।
छाह—स्त्री० छाछ, मट्ठा ।
छिगुनी, छिगुली—स्त्री० सब से छोटी उँगली ।
छिछ—स्त्री० छींटा, बूँद ।
छिः, छि—अव्य० 'घृणा' सूचक शब्द ।
छिउँकी—स्त्री० चींटी विशेष ।
छिछकारना—सक्रि० छिड़-कना ।
छिछला७—वि० उथला ।
छिछली—स्त्री० एक खेल जिसमें लड़के पानी पर ठीकरे तैराते हैं ।
छिछोरा १-७—वि० ओछा ।
छिजाना—सक्रि० नष्ट होने-देना । [राना ।
छिटकना९—अक्रि० छित-
छिटनी—स्त्री० तीलियों की टोकरी ।
छिटवा—पु०टोकरा, झावा ।
छिड़कना—सक्रि० सींचना,

छिड़काव करना।
छिड़काई—स्त्री० छिड़कने का काम या उसकी मज़दूरी।
छिड़काव—पु० छिड़कने की क्रिया, सिंचाई। [होना।
छिड़ना—अक्रि० आरंभ-
छिड़ाना—सक्रि० छीनना।
छित—वि० कटा हुआ।
छितनी—स्त्री० छिछली-टोकरी। [सक्रि० बिखराना।
छितराना—अक्रि० बिखरना।
छिति—स्त्री० पृथिवी।
छितिरुह—पु० पेड़।
छित्वर—पु० धूर्त्त। शत्रु।
छिदना—अक्रि० चुभना। बिंधना।
छिदरा—वि० छेददार।
छिदाना—सक्रि० छेद-कराना।
छिद्र—पु० छेद। त्रुटि।
छिद्रात्मा—वि० कुटिल।
छिद्रान्वेषण—पु०दोष ढूंढ़ना।
छिद्रान्वेषी५—वि० पराया दोष ढूँढ़ने वाला। [हुआ।
छिद्रित—वि० छेद किया-
छिन—पु० क्षण।
छिनक—क्रि० वि० क्षणभर।
छिनछबि—स्त्री० बिजली।
छिनना—अक्रि०छीना जाना।
छिनभंग—वि० नाशवान्।
छिनरा—वि० व्यभिचारी।
छिनाल—वि० स्त्री० व्यभि-चारिणी।
छिनाला—पु० व्यभिचार।
छिनौछबि—स्त्री० बिजली-
छिन्न—वि० खंडित।
छिन्नभिन्न—वि० टूटा-फूटा। छितरबितर।
छिन्नरुहा—स्त्री० गिलोय।
छिपकली—स्त्री० बिसतुइया।
छिपना९—अक्रि० लुकना।
छिपारुस्तम—पु० वह क्षमता-शील व्यक्ति जिसके गुण दोष-प्रकट न हों।
छिपाव—पु० छिपाना।
छिपी—पु० दर्जी। छीपी।
छिप्र—क्रि० वि० शीघ्र।
छिमा—स्त्री० दे० 'क्षमा'।
छिया—स्त्री० घृणित वस्तु, मल।
छिरकना—सक्रि० छिड़कना।
छिरहा—वि० हठी। [भूसी।
छिलका—पु० बकला,
छिलछिला—वि० छिछला।
छिलना—अक्रि०खरोंचना। छिलके का अलग हो जाना।
छिहानी—स्त्री० मरघट।
छींक—स्त्री० नाक से शब्द के साथ वायु का निकलना।
छींकना—अक्रि०छींकना।
छींका, छीका—पु० सिकहर।
छींट—स्त्री० जलकण। बूटेदार कपड़ा।
छींटना—सक्रि० छितराना।
छींटा—पु० जलकण। गुप्त-आक्षेप।
छींदा—स्त्री० छीमी।
छी—अव्य० 'अरुचि' तथा 'घृणा' सूचक शब्द।
छीछड़ा—पु० मांस का बे-काम टुकड़ा।
छीछालेदर—स्त्री० दुर्गति।
छीज—स्त्री० घाटा, कमी।
छीजना—अक्रि० घटना।
छीटा—पु० खाँचा।
छीतना—सक्रि० डंक मारना।
छीति—स्त्री० हानि।
छीतिछान—वि० तितर-बितर। [वाला, झीना।
छीदा—वि० बहुत छिद्रों-
छीन३—वि० क्षीण, दुर्बल।
छीनना—सक्रि० अपहरण-करना।
छीना—सक्रि० छूना।
छीना-झपटी—स्त्री०छीन कर किसी वस्तु को ले लेना।
छीप—वि० तेज़। स्त्री० छाप, धब्बा।
छीपना—सक्रि० बाँस में मछली फँसा कर बाहर फेंकना।
छीपी—स्त्री० छपाई का काम करने वाली एक जाति।
छीवर—स्त्री० बेलबूटेदार-कपड़ा, मोटी छींट।
छीमी—स्त्री० फली।
छीर—पु० दूध। खीर।
छीरधि—पु० दूध का समुद्र।
छीरप—पु० बच्चा।
छीलक—पु० छिलका।
छीलना—सक्रि० छिलका-उतारना। खुरचना।
छीलर—पु० झील। वि० छिछला। [अँगूठी।
छुँगली—स्त्री० घुँघरूदार-
छुआछूत—स्त्री० छूत-छात का विचार।

छुआना—सक्रि०स्पर्श करना।
छुईमुई—स्त्री० 'लज्जावंती' नामक पौधा।
छुगुनू—पु० घुँघुरू।
छुच्छी—स्त्री० छोटी नली।
छुछुंदर—पु० चूहे की जाति का एक जानवर।
छुछुआना—अक्रि० छछूँदर की तरह मारे मारे फिरना।
छुट—अव्य० सिवाय।
छुटकाना—सक्रि० छोड़ना।
छुटकारा—पु०रिहाई, रक्षा।
छुटखेलार—वि० गुंडा, बदमाश।
छुटपन—पु० लकड़पन।
छुटाना—सक्रि०मुक्त कराना।
छुट्टा—वि० बंधन रहित, अकेला।
छुट्टी—स्त्री० अवकाश।
छुड़वाना—सक्रि० छुड़ाना।
छुड़ाई—स्त्री० छोड़ने की क्रिया। [मुक्त करना।
छुड़ाना—सक्रि० छीनना,
छुड़ैया—वि० छुड़ाने वाला।
छुतिहर—पु० कुपात्र।
छुतिहा—वि० छूत वाला।
छुद्र४—वि० दे० 'क्षुद्र'।
छुद्रघंट पु०, छुद्रघंटिका—स्त्री० करधनी।
छुद्रमेखला—स्त्री०करधनी।
छुद्रावलि—स्त्री० करधनी।
छुधित—वि० भूखा।
छुप—पु० झाड़ी। पौधा।
छुपना—अक्रि० छिपना।
छुपुक—पु०ठोढ़ी। [होना।
छुभिराना—अक्रि० चंचल-
छुरधार—स्त्री० पैनीधार।
छुरा ७—पु० बड़ी छुरी। उस्तुरा।
छुरिका, छुरी—स्त्री० चाकू।
छुरित—वि० खुदा हुआ। 'लास्य' नामक नृत्य।
छुलकना,छुलछुलाना-अक्रि० थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब करना। [कराना
छुवाना, छुवना-सक्रि०स्पर्श-
छुहना—अक्रि० छू जाना।
छुहाना—सक्रि० दया या प्रेम करना।
छुहारा—पु० खजूर के फल की भाँति का एक मेवा।
छुही—स्त्री० पोतने की सफ़ेद मिट्टी।
छूँछा७—वि० ख़ाली।
छूछू—वि० बेवकूफ़।
छूट—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा।
छूटना—अक्रि०अलग होना। मुक्त होना।
छूत—स्त्री० स्पर्श। नापाक चीज़ के छूने का दोष।
छूना—सक्रि० स्पर्श करना।
छेंकना—सक्रि० घेरना। रोकना।
छेक—पु० छेद, कटाव।
छेकानुप्रास—पु०एक शब्दालङ्कार। [लङ्कार।
छेकापह्नुति—स्त्री० अर्था-
छेकोक्ति—स्त्री० दो अर्थ रखने वाली लोकोक्ति।
छेटा—स्त्री० विघ्न, बाधा।
छेड़-स्त्री० चिढ़ाने, तङ्ग करने की क्रिया।
छेड़ख़ानी—स्त्री० छेड़-छाड़।
छेड़ना—सक्रि०उठाना। तंग-करना। शुरू करना।
छेत्र—पु० दे० 'क्षेत्र'।
छेद—पु० सुराख़।
छेदक-वि०काटने,छेदनेवाला।
छेदन—पु०चीर फाड़।
छेदनहार—वि०दे० 'छेदक'।
छेदना—सक्रि० बेधना। काटना। चुभाना।
छेदा—पु० घुन। छिद्र।
छेना—पु०फटेदूध का खोया। अक्रि० क्षीण होना।
छेनी—स्त्री० टाँकी।
छेम—पु० कल्याण।
छेमकरी—स्त्री०सफ़ेद चील।
छेरी, छेली—स्त्री० बकरी।
छेव,छेवा-पु०ज़ख्म। आघात
छेवन—पु० चाक से वर्त्तन अलग करने की कुम्हार की डोरी। [काटना।
छेवना—स्त्री०ताड़ी। सक्रि०
छेवा—पु० छेद, घाव।
छेह—पु० नाश।
छेहर—स्त्री० छाया।
छै—वि०६। पु०क्षय, नाश।
छैना—अक्रि० नष्ट होना।
छैया—पु० बच्चा।
छैल, छैला—पु० बना-ठना-आदमी, शौक़ीन।
छैलचिकनियाँ-पु० शौक़ीन।
छोंकरा,छोंकड़ा-पु०शमीवृक्ष।
छोंड़ा७-पु०मथानी। लड़का।
छो-पु०प्रेम। [निस्सार वस्तु।
छोई—स्त्री०ईखकी पत्तियाँ।
छोकड़ा१ ७—पु० लड़का।

छोटका—वि० छोटा।
छोटाई—स्त्री० छोटापन।
छोटापन—पु० लघुता।
छोड़छुट्टी—स्त्री० नाता टूटना।
छोड़ना९—सक्रि० मुक्त करना। अलग करना।
छोन—स्त्री० छूत।
छोनिप—पु० दे० 'क्षोणिप'।
छोनी—स्त्री० पृथिवी।
छोप—पु० प्रहार। छिपाव।
छोपना—सक्रि० ढकना।
छोभ—पु० घबराहट। खलबली।
छोभना—अक्रि० क्षुब्ध होना।
छोन—वि० चिकना मुलायम।
छोर—पु० किनारा, नोक।
छोरटी—स्त्री० लड़की।
छोरना—सक्रि० मुक्त करना।
छोरा७—पु० लड़का। [झपटी।
छोराछोरी—स्त्री० छीना-
छोलदारी—स्त्री० छोटा तम्बू।
छोलना—सक्रि० छीलना।
छोलनी—स्त्री० खुरचनी। खुरपी।
छोला—पु० चना।
छोह—पु० कृपा। ममता।
छोहना—अक्रि० प्रेम करना। विचलित होना। [छुहारा।
छोहरा ७—पु० लड़का।
छोहरिया—स्त्री० लड़की।
छोहाना—अक्रि० प्रेम-दिखाना। [सेना।
छोहिनी—स्त्री० अक्षौहिणी-
छोही५—वि० प्रेमी।
छोहू—पु० प्रीति।
छौंक—पु० बघार।
छौंकना—सक्रि० बघारना।
छौंकना—अक्रि० किसी जानवर का कूदना।
छौंडा—पु० गड्ढा।
छौना७—पु० छोटा बच्चा।
छौर—पु० हजामत। [रसिक।
छौलिया—वि० प्रसन्न।

७—ज

जंकशन—पु० (अं०) वह स्थान जहाँ दो या अधिक रेलवे लाइन तथा रास्ते मिलते हैं।
जंग—पु० (फ़ा०) लड़ाई।
ज़ंग-पु०(फ़ा०)लोहेका मोरचा
जंगम३—वि० चर, चल।
जंगमेतर—वि० स्थावर (वृक्ष आदि अचल पदार्थ)।
जँगरैत—वि० परिश्रमी।
जंगल—पु० वन।
जंगला—पु० कटहरा।
जंगलात—पु० बन-समूह।
जंगली—वि० जंगल का। उजड्ड। [ताँबे का कसाव।
ज़ंगार—पु० (फ़ा०) तूतिया,
ज़ंगारी—वि० (फ़ा०)नीला-रंग का। [बहुत बड़ा।
जंगी—वि०(फ़ा०)सेना का
ज़ंगी—पु० (फ़ा०) ज़ंग देश का निवासी, हब्शी।
जंघा—स्त्री० जाँघ।
जंघाकरिक—पु०जंघा के बल से कार्य करने वाला, हरकारा।
जंघार—पु० जाँघ का फोड़ा।
जंघाल—पु० दूत, पायक।
जँचना—अक्रि०जाँचा जाना। अच्छा ठहरना।
जंजबील—स्त्री० (अ०)सोंठ। स्वर्ग की एक नहर।
जंजर, जंजल—वि० बेकाम।
जंजाल८—पु० झंझट।
जंजालिया—वि० झंझटिया।
ज़ंजीर८—स्त्री० (फ़ा०) सिकड़ी, साँकल। बेड़ी।
ज़ंजीरा—पु० (फ़ा०) लहरियादार सिलाई।
जंतर—पु० यंत्र, ताबीज़।
जंतरी—स्त्री० तिथिपत्र।

नोट—'ज' से आरम्भ होने वाले अधिकांश शब्द 'य' से आरम्भ होने वाले शब्दों के अपभ्रंश हैं, अतः अप्राप्य शब्द 'यकार' की सूची में देखना उचित है।

जादूगर।
जँतसार—स्त्री० जाँता गाड़ने की जगह। [दिने वाला।
जंता७—पु०यंत्र। वि०यंत्रणा-
जंती—स्त्री० जंतरी।
जंतु—पु०प्राणी। [पु०हींग।
जंतुघ्न—वि० जीव-नाशक।
जंतुफल—पु० गूलर।
जंत्र—पु० यंत्र। ताला। तावीज़। [स्त्री०यंत्रणा।
जंत्रना—सक्रि० जकड़ना।
जंत्रमंत्र—पु० जादूटोना।
जंत्रित—वि० जकड़ा हुआ।
जंत्री—पु० बाजा। पत्रा।
जंद—पु० पारसी-धर्म-ग्रन्थ।
जंदरा—पु० यंत्र। जाँता।
जंपना—सक्रि० कहना।
जंबाल—पु०कीचड़। 'सेवार' नामक घास।
जंबालिनी—स्त्री० नदी।
जंबीर—पु० एक प्रकार का नीबू। बन-तुलसी।
जंबु, जंबू—पु० जामुन।
जंबुक—पु०सियार। जामुन।
जंबुद्वीप—पु० भारतवर्ष।
जंबूफल—पु० जामुन।
ज़ंबूर—पु० (अ०) तोप विशेष। सँड़सी।
ज़ंबूरची—पु० (फ़ा०) तोप दाग़ने वाला।
ज़ंबूरा—पु० (फ़ा०) तोप चढ़ाने का चर्ख़। एकप्रकार का बाजा। [दार कपड़ा।
ज़ंबूरी—पु० (फ़ा०) जाली-
जंभ—पु० जँभाई। दाढ़। महिषासुर का पिता।
जंभक—पु० एक प्रकार का नीबू। हिंसक। जँभाई लेने वाला। शिव।
जंभन—पु० रति, संभोग।
जंभभेदी—पु० इन्द्र।
जंभरिपु—पु० इन्द्र।
जंभल—पु० जंबीरी नीबू।
जंभा—स्त्री० जँभाई।
जँभाई—स्त्री० उबासी।
जँभाना—अक्रि० जँभाई-लेना।
जँभारि—पु० अग्नि। इन्द्र। वज्र। [विशेष।
जंभी, जंभीर—पु० नीबू-
ज—पु० जन्म। प्रत्य० उत्पन्न करने अर्थ में।
जई—स्त्री० एक अन्न।
ज़ईफ़—वि० (अ०) बुड्ढा। कमज़ोर। [कमअक़्ल।
ज़ईफ़-उल-अक़्ल—वि०(अ०)
जउबन—पु० यौवन।
जऊ—क्रि०वि० यद्यपि।
जकंद—स्त्री०उछाल,छलाँग।
जकंदनि—स्त्री० दौड़-धूप।
ज़क—स्त्री० (अ०) हार। इल्ज़ाम। हानि पराभव।
जकड़ना—सक्रि० कसना।
ज़क़न—पु० (अ०) ठोढ़ी।
जकना—अक्रि० आश्चर्य-करना। स्तंभित होना।
ज़कर—पु०(अ०)पुरुषेंद्रिय।
जकरना—सक्रि० बाँधना।
ज़कात—स्त्री० (अ०) कर, महसूल। दान, ख़ैरात।
ज़कावत—स्त्री० (अ०) बुद्धिमत्ता।
जकित—वि० चकित।
ज़की—वि०(अ०) बुद्धिमान्।
जक्त—पु० संसार।
ज़ख़मी—वि० घायल।
ज़ख़ामत—स्त्री०(अ०)मोटाई।
ज़ख़ीम—वि० (अ०) मोटा, भारी।
ज़ख़ीरा—पु० (अ०) ढेर, संग्रह, कोष, ख़ज़ाना।
ज़ख़्म—पु० (फ़ा०) घाव।
जग—पु० संसार।
जगकर—पु० ब्रह्मा।
जगचक्षु—पु० सूर्य।
जगजगा—वि० चमकीला।
जगजोनि—पु० ब्रह्मा।
जगड्वाल—पु० आडंबर।
जगण—पु० छन्दः शास्त्र का एक गण।
जगत—स्त्री०कुएँ के चारों ओर का चबूतरा। पु० संसार।
जगतसेठ—पु० बड़ा धनी।
जगती—स्त्री० दुनिया, पृथ्वी। एक प्रकारका छन्द।
जगतीतल—पु० संसार। ब्रह्मांड।
जगत्—स्त्री०संसार। प्राणी।
जगत्प्राण—पु० वायु।
जगदंतक—पु० मृत्यु।
जगदंबा—स्त्री० दुर्गा।
जगदाधार—पु० ईश्वर।
जगदीश—पु० परमेश्वर।
जगद्गुरु—पु० परमेश्वर।
जगद्धात्री—स्त्री० दुर्गा।
जगद्योनि—पु०ब्रह्मा। पृथ्वी।
जगद्वंद्य—वि० संसार में पूजनीय।

जगना९—अक्रि० जागना।
जगन्नियंता—पु० ईश्वर।
जगन्माता—स्त्री० लक्ष्मी। दुर्गा [माया।
जगन्मोहिनी—स्त्री० महा-
जगप्राण-पु०हवा। [पूज्य।
जगबंद—वि०संसार भर में-
जगबाय-पु०संसार की हवा।
जगमग—वि० चमकदार। प्रकाशित। [कना।
जगमगाना—अक्रि० दम-
जगर—पु० कवच।
जगरमगर—वि०प्रकाशित।
जगवल्लभा—स्त्री० वेश्या।
जगह—स्त्री० (फ़ा०)स्थान। पद। गुंजाइश। नौकरी।
जगाजोति—स्त्री०जगमगाहट।
जगात—पु० दान। कर।
जगाती-पु० कर वसूल करने वाला। दानी।
जगार—स्त्री० जागृति।
जगीर—स्त्री० जागीर।
जगीला—वि० उनींदा।
जग्ध—वि० खाया हुआ।
जग्धि—स्त्री० भोजन।
जघन—पु० चूतड़।
जघनचपला—स्त्री० वेश्या।
जघन्य—वि०नीच, निकृष्ट। अन्त्य, पिछला। शूद्र। गर्वित।पु०पुरुष का लिंग।
जघन्यज—पु० छोटा भाई। शूद्र। [स्त्री।
ज़च्चा—स्त्री० (फ़ा०)प्रसूता-
जच्छ—पु० यक्ष।
जज—पु०(अं०)न्यायाधीश।
जजना—सक्रि० पूजना, मानना।[कामना, भावना।
जज़बा—पु० (अ०) प्रवृत्ति,
जज़बात—पु० बहु० (अ०) प्रबल इच्छा, भावना।
जजमेंट—पु०(अं०) फैसला।
जज़र—पु० (अ०) वर्गमूल।
जज़र व मद—पु० (अ०) समुद्र का ज्वार-भाटा।
जज़ा—स्त्री० (अ०) बदला। परिणाम।
जज़ायर—पु० (अ०) बहु० जज़ीरा का। द्वीप-समूह।
जज़िया—पु० (अ०) एक कर जो मुसलमानों के राज्य में अन्य धर्म वालों से लिया जाता था। [टापू।
जज़ीरा—पु० (अ०) द्वीप,
जज़ीरानुमा—पु० (अ०) वह स्थल जो तीन ओर जल से घिरा हो, प्रायद्वीप।
जज़्ब—पु०(अ०) आकर्षण। शोषण।
जज़्बा—पु० (अ०) जोश। इच्छा, कामना। [जड़ना।
जटना९—सक्रि० ठगना।
जटल—स्त्री० गप्प।
जटा—स्त्री० उलझे हुए सिर के बड़े बड़े बाल। [समूह।
जटाजूट—पु० जटाओं का-
जटाधर,जटाधरी—पु०शिव।
जटाना—अक्रि० ठगा जाना।
जटामासी—स्त्री० एक पौधे की जड़ जो सुगंधित होती है।
जटायु—पु० रामचंद्र जी का मित्र एक गीध। [बट-वृक्ष।
जटाल—वि० जटावाला। पु०
जटासुर—पु० एक राक्षस।
जटित—वि० जड़ा हुआ। ठगा हुआ। [दुर्बोध।
जटिल ३—वि० जटावाला।
जटी—वि० जटाधारी।
जटुल, जडुल—पु० शरीर पर का काला लसुनाकार चिह्न।
जठर—पु०पेट। वि० बुड्ढा।
जठराग्नि—स्त्री० पेट की गरमी। [लड़का।
जठेरा—वि० बड़ा। पु०
जड़३—वि० मूर्ख। पु० पेड़ की मूल।
जड़क्रिय३-वि० दीर्घसूत्री।
जड़त्व—पु० मूर्खता।
जड़ना९—सक्रि० एक चीज़ को दूसरी चीज़ में बैठाना।
जड़बुद्धि—वि० मूर्ख।
जड़वाना, जड़ाना—सक्रि० नग आदि जड़ाने का काम कराना।
जड़ाई—स्त्री० जड़ने की क्रिया या मज़दूरी। [हुआ।
जड़ाऊ-वि० नग आदि जड़ा-
जड़ाव—पु० जड़ना।
जड़ावर-पु० जाड़े के कपड़े।
जड़ित—वि० जड़ा हुआ।
जड़िया—पु० जड़ने वाला।
जड़ी—स्त्री० जड़ (औषध)।
जड़ीभूत—वि० स्तम्भित, चकित। [बुख़ार।
जड़ैया—स्त्री० जाड़े का-
जत—वि० जितना।
जतनच—पु० उपाय।

जतलाना—सक्रि० सूचित करना।
जताना—सक्रि० बतलाना।
जतु—पु० लाख, महावर।
जतुक–पु०लाख,लाह। हींग।
जतुका—स्त्री० चमगादर।
जतुगृह–पु०लाख का बना घर।
जतुरस—पु० महावर।
जत्था—पु० मण्डली, समूह।
जत्रुका—स्त्री० हँसुली।
जथा—क्रि०वि०जिस प्रकार। पु० जत्था। स्त्री० पूँजी।
जद—पु० (अ०) बाबा। नाना। सौभाग्य। अव्य० यदि। क्रि० वि० जब।
ज़द—स्त्री० (फ़ा०) चोट। लक्ष्य। हानि।
ज़दगी—स्त्री० (फ़ा०) मारने या लगाने की क्रिया।
जदपि—क्रि० वि० यद्यपि।
जदल—पु० (अ०) युद्ध।
ज़दा—वि० (फ़ा०) जिस पर आघात लगा हो या प्रभाव पड़ा हो। [नानी।
जदा—स्त्री० (अ०) दादी।
जदीद—वि० (अ०) नया।
जद्द—वि० ज़्यादा। प्रबल। पु० (अ०) कोशिश।
जद्द व जहद–पु० प्रयत्न और दौड़-धूप। [दादे का।
जद्दी—वि० पैतृक, बाप-
जनंगम–पु०निषाद। चांडाल।
जन—पु० दास। लोग।
ज़न—स्त्री०(फ़ा०)धर्मपत्नी। औरत, स्त्री।
जनक—पु० बाप।

जनकप्राय—वि० पिता के समान।
जनकारी—पु० महावर।
जनकौर—पु० जनकपुर। जनक के वंशज।
ज़नख़ा–वि० (फ़ा०)हीजड़ा।
जन-गणना—स्त्री० मर्दुमशुमारी।
जनचक्षु—पु० सूर्य।
जनचर्चा—स्त्री० अफ़वाह।
जनतंत्र—पु० प्रजा का राज्य।
जनतंत्रीय—वि० जनतंत्र-सम्बन्धी। [का सिद्धान्त।
जनतंत्रवाद—पु०प्रजाराज्य-
जनता—स्त्री०सर्वसाधारण। जनों का समूह, पब्लिक।
जनधा—पु० अग्नि।
जनन६—पु० उत्पत्ति।
जनना९–सक्रि० जन्म देना।
जननि, जननी–स्त्री० माता।
जननेंद्रिय—स्त्री० भग।
जनपद—पु० देश। प्रजा। जनों का निवास स्थान।
जनप्रवाद—पु० अफ़वाह।
जनम—पु० जन्म। जीवन।
जनमत–पु० जनता की राय।
जनमना९—अक्रि० जन्म-लेना। सक्रि० जन्म देना।
जनमरक—पु० महामारी।
जनमरजक—पु० महामारी।
जनमसँघाती—पु० जन्म का साथी। [कराना।
जनमाना—सक्रि० प्रसव-
जनमारो—पु०जन्म, जीवन।
जनमेजय—पु० विष्णु। राजा परीक्षित का पुत्र।

जनयिता—पु० पिता।
जनयित्री—स्त्री० माता।
जनरल—पु० (अं०)सेनापति।
जनरव—पु० अफ़वाह।
जनवरी—पु०(अं०) अँग्रेज़ी साल का प्रथम महीना।
जनवाई—स्त्री० बच्चा पैदा कराने की मज़दूरी अथवा नेग।
जनवाना—सक्रि०बच्चा पैदा कराना। [की जगह।
जनवासा—पु०बरात टिकने-
जनश्रुत—वि० प्रसिद्ध।
जनश्रुति—स्त्री० अफ़वाह।
जनसंख्या—स्त्री० आबादी।
जनसाधारण—पु० आम-जनता।
जनस्थान—पु० दंडकवन।
जना—वि०पैदा किया हुआ।
जनाउ—पु० दे० 'जनाव'।
जनाज़ा—पु० (अ०) अरथी।
ज़नानख़ाना—पु० अंतःपुर।
ज़नाना१-७—वि०स्त्री-संबंधी। हीजड़ा।
जनाब—पु० महाशय।
जनाबआली—वि० महोदय।
जनार्दन—पु० विष्णु।
जनाव—पु० सूचना, ख़बर।
जनावर—पु० जानवर।
जनाश्रय—पु० सराय, धर्मशाला। [नहीं।
जनि—स्त्री० उत्पत्ति। अव्य०
जनिका—स्त्री० पहेली।
जनित—वि० पैदा हुआ।
जनिता१०—पु० पिता।
जनित्री—स्त्री० माता।
जनियाँ—वि०स्त्री० प्रेयसी।

जनी—स्त्री० दासी। माता। स्त्री।
जनु—क्रि० वि० मानों।
जनुक—अव्य० मानों।
जनूब—पु० (अ०) दक्षिण।
जनेऊ—पु० यज्ञोपवीत।
जनेत—स्त्री० बरात।
जनेरा—पु० ज्वार।
जनेश—पु० जनों का स्वामी, राजा। [कीर्त्ति।
जनोदाहरण—पु० यश,
ज़न्न—पु० (अ०) विचार। अनुभव। भ्रम।
जन्नत—स्त्री० (अ०) स्वर्ग।
जन्नती—वि०(अ०)स्वर्ग का।
जन्म—पु० पैदाइश। [पत्री।
जन्मकुंडली—स्त्री० जन्म-
जन्मपत्र—पु० जन्म-पत्रिका। स्त्री० ग्रह-स्थिति-सूचक जन्म का विवरण। [स्थान।
जन्मभूमि—स्त्री० जन्म क-
जन्मांतर—पु० अन्य-जन्म।
जन्माष्टमी—स्त्री० भादों कृष्ण अष्टमी। [जातीय।
जन्मी—पु० प्राणी।
जन्य—वि० उत्पन्न हुआ।
जन्यु—पु० शरीरी, प्राणी।
जप, जपन—पु० मन ही मन में भजन करने की क्रिया।
जपतप—पु० पूजा-पाठ।
जपना—सक्रि० जप करना।
जपनी—स्त्री० माला।
जपा—स्त्री० अड़हुल का पुष्प। [करने वाला।
जपिया, जपी—पु० जप
ज़फ़र—पु० (अ०) विजय।
जफ़ा—स्त्री० (फ़ा०) जुल्म।
जफ़ाकश—वि० सहनशील।
जफ़ील-स्त्री० सीटी (बजाने की)।
जब—क्रि० वि० जिस समय।
जबड़ा—पु० दाढ़।
ज़बर—वि० (अ०) बलशाली। फ़ारसी लिपि में अक्षरों के ऊपर 'अ' स्वर सूचित करने के लिए लगाया जाने वाला चिह्न।
ज़बरजंग—वि० (अ०) श्रेष्ठ, उच्च। बड़ा बलशाली।
ज़बरदस्त—वि० (अ० फ़ा०) बलवान्। [बल-पूर्वक।
ज़बरन्—क्रि० वि० (फ़ा०)
ज़बरा—वि० ज़बरदस्त।
ज़बरील—पु० (अ०) एक फ़रिश्ता। [क़लम।
ज़बह—पु० (अ०) हिंसा,
ज़बाँ—स्त्री० दे० 'ज़बान'।
ज़बाँदराज़—वि० (फ़ा०) बढ़ बढ़ कर बातें करने वाला।
ज़बान—स्त्री० (फ़ा०) जीभ। भाषा। प्रण।
ज़बानज़द—वि० (फ़ा०) प्रसिद्ध, प्रचलित।
ज़बानबंदी—स्त्री० (फ़ा०) मौन। लिखा हुआ वक्तव्य।
ज़बानी—वि० (फ़ा०) मौखिक।
ज़बीहा—पु० (अ०) नियम के अनुसार ज़बह किया जाने वाला पशु।
ज़बून—वि० (फ़ा०) बुरा।
ज़बूर—स्त्री० (अ०) मुसलमानों का एक धर्म-ग्रंथ जो हज़रत दाऊद ने लिखा था।
ज़ब्त—वि० (अ०) अधिकार से वंचित।
ज़ब्ती—स्त्री० ज़ब्त होना।
जब्बार—वि० (फ़ा०) अत्याचारी।
जब्र—पु० (अ०) ज़्यादती।
जम—पु० यमराज।
जमकात, जमकातर—पु० यम का शस्त्र।
जमघंट-पु० कार्त्तिक सुदी २।
जमघट—पु० भीड़।
ज़मज़म—पु० (अ०) काबे के पास का एक कुआँ।
ज़मज़मा—पु० (अ०) संगीत।
जमधर—पु० तलवार।
जमन—पु० जेमना, भोजन।
जमना१—अक्रि० द्रव पदार्थ का गाढ़ा होना, जमा होना। उगना।
जमनिका—स्त्री० परदा।
जमनौता—पु० वह रक़म जो ज़मानत करने के बदले में दी जाय।
जमवट—पु० कुएँ में जोड़ाई के नीचे रखने का गोल ढाँचा।
जमवार—पु० यमद्वार।
जमशेद—पु० (फ़ा०) फ़ारस का एक प्राचीन बादशाह।
जमहूर—पु० (अ०) जन-समूह। [तंत्र-संबन्धी।
जमहूरी—वि० (अ०) प्रजा-
जमा—वि० (अ०) संगृहीत। पु० पूँजी।
जमाई—पु० दामाद।
जमा खर्च—पु० आय-व्यय।
जमाजथा—स्त्री० पूँजी।

जमात—स्त्री० (अ०) दर्जा। भीड़।
जमाद—पु० (अ०) निर्जीव-पदार्थ; जैसे पत्थर, खनिज आदि।
जमादात—स्त्री० (अ०) बहु० प्राण-हीन पदार्थ।
जमादार२—पु० (अ०) सिपाहियों का प्रधान। [संबंधी।
जमादी—वि० (अ०) जमाद-
जमादी-उल्अव्वल—पु० (अ०) मुसलमानों का पाँचवाँ चान्द्र मास। [दारी।
ज़मानत—स्त्री०(अ०)ज़िम्मे-
ज़मानतदार—पु०(अ०फ़ा०) ज़मानत करने वाला।
ज़मानतन्—क्रि०वि० ज़मानत के तौर पर।
जमाना—सक्रि० द्रव पदार्थ को गाढ़ा करना। अच्छी तरह बैठाना। ठोस करना।
ज़माना—पु०(अ०) समय।
ज़मानासाज़—वि० (अ० फ़ा०) व्यवहार-कुशल।
जमाबंदी—स्त्री० (अ०फ़ा०) पटवारी का एक कागज़ जिसमें लगान आदि का ब्यौरा रहता है।
जमामार—वि० दूसरे का धन मारने वाला।
जमाल—पु०(अ०) खूबसूरती।
जमालगोटा—एक एक पौधे का बीज। [सूरत।
जमाली—वि० बहुत खूब-
जमाव—पु० भीड़भाड़।
जमावड़ा—पु० भीड़।
ज़मीं—स्त्री० दे० 'ज़मीन'।
ज़मींक़ंद—पु० सूरन।
ज़मींदार२—पु० (फ़ा०)ज़मीन का स्वामी।
ज़मींदोज़—वि० (फ़ा०) ज़मीन की भाँति समतल। ज़मीन के नीचे का।
जमी—वि० संयमी, यमी।
ज़मीन—स्त्री० (फ़ा०) भूमि।
ज़मीनी—वि० (फ़ा०) भूमि-संबंधी।
ज़मीमा—पु० (अ०) परिशिष्ट। क्रोड़पत्र। [मत।
जमीयत—स्त्री० (अ०) जमा-
ज़मीर—पु० (अ०) अंतःकरण। विवेक। व्याकरण में सर्वनाम [सुन्दर।
ज़मील—वि० (अ०)बहुत-
जमुकना—अक्रि० बिलकुल-पास होना। [रत्न।
ज़मुर्रद—पु० (फ़ा०) पन्ना-
ज़मुर्रदी—वि० (फ़ा०)नीलापन लिये हरा। [लेना
जमुहाना—अक्रि० जँभाई-
जमैयत—स्त्री०(अ०)जमात। मनस्तोष। सेना।
जमोगना—सक्रि० भार-सौंपना। जाँच कराना।
जम्म—वि० (अ०) बड़ा। समस्त।
जम्हावरि—स्त्री० जँभाई।
जम्पती—स्त्री० दे० 'दम्पती'।
जयंत ७—वि० विजयी। बहु-रूपिया। इन्द्र का पुत्र।
जयंती—स्त्री० वर्षगाँठ। ध्वजा। अरणी।
जय—स्त्री० जीत, फ़तह। अरणी।
जयजीव—पु०एक अभिवादन।
जयद्रथ—पु० दुर्योधन का-बहनोई।
जयन—पु० जीत, फ़तह।
जयना—सक्रि० जीतना।
जयपत्र—पु० विजय-सूचक पत्र।
जयमाला—स्त्री० वह माला जो किसी प्रतियोगिता में विजयी व्यक्ति को पहनाई जाती है। [वाला।
जयशील—वि०सदा जीतने-
जयश्री—स्त्री० लक्ष्मी स्वरूपा-विजय।
जयस्तंभ—पु०विजय के उपलक्ष में बनाया गया खंभा।
जयना—सक्रि० जीतना।
जया—स्त्री०दुर्गा। पार्वती। पताका। अरणी।
जयी—वि० विजयी।
जय्य—वि० जय के योग्य।
जर—पु०जल। जड़। ज्वर।
ज़र—पु०(फ़ा०) सोना, धन।
जरई—स्त्री० जौ आदि के-हरे हरे अंकुर। [ज़रीदार।
ज़रकस, ज़रकसी—वि०
ज़रकोब—पु० (फ़ा०) सोने, चाँदी के पत्तर बनाने वाला।
ज़रखेज़—वि० (फ़ा०) उपजाऊ।
ज़रगर२—पु०(फ़ा०)सुनार।
जरगा—पु० (तु०) भीड़।
जरजर—वि० बहुत पुराना, बेकाम।
जरठ—वि० बुड्ढा। कठोर।

जरठाई—स्त्री० बुढ़ापा ।
जरण—पु० सफ़ेद ज़ीरा ।
जरतार—पु० ज़री ।
जरतारी—स्त्री०ज़री का काम।
ज़रतुश्त—पु० (फ़ा०) पारसियों के धर्मगुरु ।
जरत्—पु० वृद्ध पुरुष ।
ज़रदा—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का पुलाव। पान के साथ खाने की सुरती । पीला घोड़ा ।
ज़रदार—वि० (फ़ा०) धनी।
ज़रदालू—पु०(फ़ा०)'ख़ुबानी' नामक फल ।
ज़रदुश्त—पु० (फ़ा०) पारसी धर्म का स्थापित करने वाला।
ज़रदोज़२—पु०(फ़ा०) सलमे सितारे का काम करने वाला ।
ज़रदोस्त—वि० (फ़ा०) धनप्रिय ।
जरद्गव७—पु० बूढ़ा बैल ।
जरनल—पु० (अं०) पत्रिका ।
जरनलिस्ट—वि० (अं०) पत्रकार ।
जरना—अक्रि० जलना ।
ज़रपरस्त—वि० (फ़ा०) धनलोलुप ।
जरब—स्त्री० चोट।
ज़रब—स्त्री० (अ०) चोट । गुणा ।
ज़रबाफ़र—पु० (फ़ा०) ज़रदोज़ी का काम करने वाला ।
जरबीला—वि० चमकदार।
जरमनसिलवर—पु० (अं०) जरमनी देश की एक प्रकार की चाँदी ।
ज़रर—पु० (अ०) हानि।
जरा—स्त्री० बुढ़ापा ।
ज़रा—वि० (अ०) थोड़ा ।
ज़राअत—स्त्री० (अ०) खेतीबारी ।
जराउ—वि० जड़ाऊ ।
जराग्रस्त—वि० बुड्ढा ।
जराजित—वि० जरा से जीता हुआ, बूढ़ा ।
जराना—सक्रि० जलाना।
ज़राफ़त—स्त्री० (अ०) सज्जनता । हँसी-मज़ाक़।
ज़राफ़तन्—क्रि० वि० (अ०) मज़ाक़ के तौर पर ।
जराय,जराव—पु० पच्चीकारी।
ज़राय—पु० (अ०) बहु० 'ज़रिया' का ।
जरायम—पु० (अ०) अनेक प्रकार के अपराध ।
जरायमपेशा—वि० (अ०) चोरी डाके आदि से जीविका चलाने वाला ।
जरायु—पु० गर्भाशय । जन्म के समय की बच्चे के शरीर पर लिपटी हुई झिल्ली।
जरायुज—पु० जरायु में लिपटा हुआ जीव ।
जरासंध—पु० मगध देश का एक प्रसिद्ध राजा।[सहारा।
ज़रिया—पु० (अ०) हेतु ।
जरी—वि० (अ०) वीर ।
ज़री—स्त्री० (फ़ा०) सोने के तार से बना हुआ काम ।
ज़रीदा—वि० (फ़ा०) एकाकी, अकेला । [बुद्धिमान्।
ज़रीफ़—पु० (अ०) मसख़रा।
जरीब—स्त्री० (अ०) ५५ या ६० गज़ की एक माप ।
जरीबकश२—वि० (अ० फ़ा०) खेत नापने वाला ।
ज़रीबाफ़—पु०.(फ़ा०) ज़री के कपड़े बिनने वाला ।
ज़रूर—क्रि० वि० (अ०) निश्चय । वि० आवश्यक ।
ज़रूरत—स्त्री० (अ०) आवश्यकता । [आवश्यकताएँ ।
ज़रूरियात—स्त्री० (अ०)
ज़रूरी—वि०(अ०)आवश्यक ।
ज़रेअस्ल—पु०(फ़ा०) मूलधन।
ज़रेजाफ़री—पु० (फ़ा०) बिलकुल शुद्ध सोना ।
ज़रेतावान—पु०(फ़ा०) हानि के बदले में दिया जाने वाला धन। [रुपया ।
ज़रेनक़द—पु०(फ़ा०) नक़द
ज़रेपेशगी—पु० (फ़ा०) बयाना ।
ज़रेमुतालबा—पु० (फ़ा०) पावना, बाक़ी रुपया ।
ज़रेसफ़ेद—पु० (फ़ा०) चाँदी।
ज़रेसुर्ख़—पु० (फ़ा०) सोना ।
जरौट—वि०जड़ाऊ । [क़ीला ।
ज़र्क़बर्क़—वि० (फ़ा०) भड़
जर्जर—वि० जीर्ण । [फूटा ।
जर्जरित—वि० पुराना । टूटा
ज़र्द२—वि० (फ़ा०) पीला ।
ज़र्दआलू—पु० ख़ुबानी ।
ज़र्दचोब—स्त्री०(फ़ा०) हल्दी ।
ज़र्दरू—वि० (फ़ा०) पीले रंग का । लज्जित ।
ज़र्ब-उल-मसल—स्त्री० (अ०)

कहावत ।
ज़र्र—पु० (अ०) नुक़सान।
ज़र्रा—पु० (अ०) कण ।
जर्रार—वि० (अ०) वीर, बहादुर । [का चिकित्सक।
जर्राह—पु०(अ०)चीर फाड़-
जलंगम—पु०चांडाल, निषाद।
जलंधर—पु० पेट में जलभर जाने का एक रोग। एक राक्षस ।
जल—पु० पानी । [भौंरा ।
जलअलि—पु० पानी का-
जलक़ंद—पु० केला।
जलक—पु० कौड़ी । सीप।
जलकाक—पु० ग़ोताख़ोर ।
जलकुंभी—स्त्री०दे०'कुम्ही'।
जलकुक्कुट—पु० मुर्ग़ाबी।
जलकूपी—स्त्री० हौज़ ।
जलकेतु—पु०पुच्छल तारा।
जलकौआ—पु० पक्षी विशेष।
जलकेश—पु० सेवार ।
जलक्रिया—स्त्री० पितृ-तर्पण।
जलक्रीड़ा—स्त्री०जलविहार।
जलखात—पु०तालाब, पोखर।
जलखानि—स्त्री०समुद्र। [जीव।
जलचर७—पु० पानी का-
जलचरकेतु—पु० कामदेव ।
जलचरी—स्त्री० मछली।
जलचारी—पु०जल का जंतु।
जलछत्र—पु०प्याऊ, पौसला
जलज—पु० कमल ।
ज़लज़ला—पु०(फ़ा०)भूकम्प ।
जलजात—पु० कमल ।
जलडमरूमध्य—पु० जल का वह पतला भाग जो दो समुद्रों को मिलता है ।
जलडिंब—पु० घोंघा ।
जलतरंग—पु० एक बाजा ।
जलत्र—पु० छाता ।
जलत्रास—पु० पागल कुत्ते के काटने से जल देखने पर उत्पन्न होने वाला भय।
जलथंभ—पु० मंत्र शक्ति से जल का रोकना।
जलद—पु० बादल।
जलदागम—पु० बरसात ।
जलदेवता—पु० वरुण ।
जलधर—पु० बादल।
जलधरी—स्त्री० जलहरी ।
जलधारा—स्त्री० झरना, स्रोत ।
जलधारी—पु० बादल।
जलधि—पु० समुद्र। जीव ।
जलन—स्त्री० ईर्ष्या । जलने की पीड़ा। [बरना।
जलना९—अक्रि० झुलसना,
जलनिधि—पु० समुद्र ।
जलनिर्गम—पु० मोरी ।
जलनीली—स्त्री० सेवार ।
जलपति—पु०वरुण । समुद्र।
जलपथ—पु० नाली। समुद्र-मार्ग ।
जलपना—अक्रि० डींग-मारना । बार बार कहना।
जलपाटल—पु० काजल ।
जलपात्र—पु० लोटा ।
जलपान—पु० नाश्ता ।
जलप्रदान—पु० तर्पण ।
जलप्रपात—पु० झरना ।
जलप्राय—वि० जलमय ।
जलप्रिय—पु०मछली। पपीहा
जलप्लावन—पु०पानी की बाढ़।
जलफल—पु० सिंघाड़ा।
जलबिंब—पु० बुलबुला ।
जलभूषण—पु० हवा ।
जलभृत्—पु० बादल ।
जलमल—पु० फेन, झाग ।
जलमुक्—पु० बादल ।
जलमोद—पु० ख़स ।
जलयंत्र—पु० फ़ौवारा। जलघड़ी ।
जलयान—पु० जहाज़ ।
जलरस—पु० नमक ।
जलराशि—पु० समुद्र ।
जलरुह—पु० कमल ।
जललता—स्त्री० लहर ।
जलवा—पु० (अ०) वैभव । शोभा । वधू का पहले पहल अपने पति के सामने मुँह खोलना ।
जलव्याल—पु० पनिहाँ साँप।
जलशायी—पु० विष्णु।
जलशुक्ति—स्त्री० घोंघा ।
जलसा—पु० (अ०) उत्सव । सभा। आनन्द का समारोह।
जलसिंह—पु० एक समुद्री-जंतु ।
जलसुन—पु०कमल। मोती ।
जलसूचि—पु०जोंक। कौआ। सिंघाड़ा।
जलस्तंभ—पु० स्तम्भ के आकार में बादल का झुकना।
जलहर—पु० जलाशय ।
जलहरी—स्त्री० शिवलिंग के ऊपर लटकने वाला जलपात्र।
जलहस्ती—पु० एक समुद्री-जीव ।
जलांजलि—स्त्री० पित्रादि के

लिये अंजलि में भरकर जल देने की क्रिया। [लू।
जलाक४—स्त्री० उदर-ज्वाल।
जलाकर—पु० स्रोत।
जलाकांक्ष—पु० हाथी।
जलाका—स्त्री० जोंक।
जलाजल—पु० गोटे आदि की झालर। वि० जलमय।
जलातन–वि०ईर्ष्यालु। क्रोधी।
जलाधार—पु०तालाब,झील।
जलाधिप—पु० वरुण।
जलाना—सक्रि० आग द्वारा किसी पदार्थ को भस्म कराना। ईर्ष्या पैदा कराना।
जलापा—पु० डाह।
जलाल–पु० (अ०)तेज, रोब।
जलालत–स्त्री०(अ०) बुजुर्गी।
ज़लालत—स्त्री० (अ०) बेइज्ज़ती। नीचता।
जलालिया—पु०(अ०) ईश्वर के तेज रूप का उपासक-फ़क़ीर। [विकराल।
जलाली–वि०(अ०)तेजयुक्त।
जलावतन—वि०(अ०) जिसे देश से निकाल दिया हो।
जलावतनी—स्त्री० (अ०) देश-निर्वासन।
जलावन—पु० ईंधन।
जलावर्त्त–पु०पानी का भँवर।
जलाशय–पु० सरोवर, झील। खस।
जलाहल—वि० जलमय।
जलिका—स्त्री० जोंक।
जली—वि० (अ०) स्पष्ट। स्त्री० वह लिपि जिसमें अक्षर मोटे और स्पष्ट हों।
जलील—वि० (अ०) बड़ा, बुज़ुर्ग।
ज़लील—वि० (अ०) नीच। बेइज़्ज़त। शर्मिंदा।
ज़लीलोख्वार—वि० (अ०) निकम्मा। [बैठने वाला।
जलीस—वि० (अ०) पास-
जलूका, जलोका—स्त्री०जोंक।
जलूस—पु० (अ०) उत्सव-भ्रमण। धूमधाम की सवारी।
जलेबी—स्त्री० एक मिठाई।
जलेश—पु० वरुण। समुद्र।
जलोच्छ्वास—पु० नहर।
जलोदर–पु०पेट का एक रोग।
जलौका—स्त्री० जोंक।
ज़ल्क़ –पु०(अ०)हस्तक्रिया।
जल्द–क्रि०वि०(अ०)शीघ्र।
जल्दबाज़—वि० (अ० फ़ा०) शीघ्रता करने वाला।
जल्प—पु० कथन।
जल्पक—वि० बकवादी।
जल्पना—स्त्री० कथन।
जल्पाक—पु० अति निन्दित भाषण करने वाला।
जल्पित—वि० कहा हुआ।
जल्लाद—पु० (अ०) घातक।
जव—पु० जौ। वेग।
जवन–पु० यवन। तेज़ चलने वाला घोड़ा। वेग। वेग से चलने वाला। [पर्दा।
जवनिका—स्त्री० नाटक का-
जवाँ—वि० (फ़ा०) जवान।
जवाँबख्त—वि० (फ़ा०) भाग्यवान्। [बहादुर।
जवाँमर्द—वि० (फ़ा०)
जवा—पु० जौ। लहसुन का दाना। जंज़ीरादार सिलाई।
जवाखार—पु० एक प्रकार का नमक।
जवादि–पु०सुगंधित उबटन।
जवान—वि० (फ़ा०) युवा।
जवानी—स्त्री०(फ़ा०)यौवन।
जवाब—पु० (अ०) उत्तर।
जवाबदावा—पु० (अ०) वह ऐतराज़ जो मुद्दई की नालिश के जवाब में मुद्दा-अलेह की ओर से अदालत में पेश किया जाता है।
जवाबदेह—वि० (अ०फ़ा०) उत्तरदायी।
जवाब-सवाल—पु० शंका-समाधान। [संबंधी।
जवाबी—वि०(अ०) जवाब,
जवार—पु० (अ०) आस-पास का स्थान। जुआर।
जवारा—पु० जौ का अंकुर।
जवारिश—स्त्री० (फ़ा०) उदर विकारों की दवा।
ज़वाल—पु० (अ०) अवनति, उतार। जञ्जाल। [पौधा।
जवासा—पु० एक काँटेदार-
जवाहर—पु० (अ०) रत्न।
जवाहरात—पु० (अ०) रत्नराशि।
जशन, जश्न—पु० (फ़ा०) उत्सव, जलसा। आनन्द।
जस—पु० यश। क्रि० वि० जैसा।
जसवंत—पु० एक फूल।
जसामत—स्त्री० (अ०) शरीर का आकार-प्रकार। स्थूल-होना।

जसारत—स्त्री०(अ०)दिलेरी।
जसीम—वि० (अ०) मोटा-ताज़ा, स्थूलकाय ।
जसोवै—स्त्री० यशोदा ।
जस्टिस—पु०(अं०) न्याय। न्यायाधीश।
जस्ई—वि०जस्ते के रँग का।
जस्ता—पु० एक धातु।
जहँ—क्रि० वि० जहाँ।
जहँ-तहँ—क्रि०वि० इधर-उधर।
जहँड़ना—अक्रि० हानि-उठाना। धोखे में पड़ना।
जहतिया—पु० लगान वसूल करने वाला।
जहदा—पु० कीचड़।
ज़ह—पु० (फ़ा०) प्रसव ।
जहद—स्त्री० (अ०) प्रयत्न, परिश्रम ।
ज़हन—पु०(अ०)बुद्धि,समझ।
जहना—सक्रि० त्यागना ।
जहन्नुमन—पु०(अ०) नरक।
ज़हमत—स्त्री०(अ०)झंझट, कष्ट।
ज़हर—पु० (फ़ा०) विष ।
ज़हरआलूदा—वि० (फ़ा०) विष-मिश्रित।
ज़हरबाद—पु० (फ़ा०)ज़हरीला फोड़ा जो रक्त विकार से होता है [विष-नाशक।
ज़हरमार—वि० (फ़ा०)
ज़हरमोहरा—पु० (फ़ा०) सांप का विष खींचने वाला एक पत्थर। [साहस।
ज़हरा—पु०(फ़ा०)पित्ताशय।
ज़हरीला—वि०(फ़ा०)विषैला।
जहल—पु० (अ०) अज्ञान ।
जहली—वि०(अ०)नादान। झगड़ालू।
जहाँ—पु० (फ़ा०) संसार। क्रि० वि० जिस जगह।
जहाँगीरी—स्त्री०एक जड़ाऊ-गहना। [अनुभवी।
जहाँदीद—वि० (फ़ा०)
जहाँपनाह—पु० (फ़ा०) संसार का रक्षक।
जहाज़—पु०(अ०) जलयान।
जहाज़ी—वि०(अ०) जहाज़-संबंधी। जहाज़ चलानेवाला।
जहादन—पु०(अ०)धर्मयुद्ध।
जहान—पु० (फ़ा०)संसार।
जहालत—स्त्री० (अ०) अज्ञानता। [समय।
जहिया—क्रि० वि० जिस-
ज़हीन—वि० (अ०)बुद्धिमान्।
ज़हीर—वि०(अ०)सहायक।
ज़हूर—पु० (अ०) प्रकाश।
ज़हूरा—पु० (अ०) प्रताप। प्रकाश।
जहेज़—पु० (अ०) दहेज।
जह्नुजा—स्त्री० गङ्गा।
जह्नुतनया—स्त्री० गङ्गा।
जाँकन—वि० (फ़ा०) प्राणघातक।
जाँगड़ा—पु० भाट।
जाँगर—पु० शरीर। अन्न-रहित डंठल।।
जाँगलू—वि० गँवार।
जांगुलिक—पु० सर्प-विष को दूर करने की विद्या-जानने वाला।
जाँघ—स्त्री० जंघा।
जाँघा—पु० गड़ारी का धुरा। गड़ारी रखने का कुएँ पर का खंभा।
जांघिक—वि० जंघा के बल से जीतने वाला।
जाँघिया—पु०लंगोट विशेष।
जांघिल—पु०वह बैल जिसका पिछला पैर लँगड़ा हो।
जाँच—स्त्री० परीक्षा।
जाँचकइ—पु० याचक।
जाँचना—सक्रि० माँगना।
जाँक—पु० आँधी-पानी।
जाँत, जाँता—पु० चक्की।
जांतवीय—वि० जन्तु सम्बन्धी।
जाँ-निवाज़—वि० (फ़ा०) दयालु।
जाँ-फ़िज़ा—पु०(फ़ा०) अमृत।
जाँ फ़िशानी—स्त्री० (फ़ा०) बहुत अधिक परिश्रम।
जाँब—पु० जामुन।
जाँबाज़—वि० (फ़ा०) जान पर खेलने वाला।
जांबूनद—पु०धतूरा। सोना।
जाँवत—क्रि० वि० जितना।
जाँवर—पु० गमन, प्रस्थान।
जा—स्त्री० (फ़ा०) जगह।
जाई—स्त्री० बेटी, कन्या।
जाउर—स्त्री० खीर।
जाक—पु० यक्ष।
जाकट—स्त्री० बंडी।
जाकड़—पु० वह माल जो वापिस करने की शर्त पर लिया जाता है।
ज़ाकिर—वि० (अ०) ज़िक्र-करने वाला।
जाखिनी—स्त्री० यक्षिणी।

जाग—पु० यज्ञ । स्त्री० जागरण । जगह ।
जाग़—पु० (फ़ा०) कौआ ।
जागना—अक्रि०सोकर उठना सावधान होना ।
जागर—पु० कवच ।
जागरण,जागरा—पु०जागना ।
जागरित—वि०जागा हुआ ।
जागरिता, जागरूक—वि० जागा हुआ । जागने के स्वभाव वाला ।
जागरूप—वि० स्पष्ट ।
जागर्त्ति—स्त्री० जागरण ।
जागर्या—स्त्री० जागरण ।
जागा—स्त्री० जगह ।
जागी—पु० बंदीजन ।
जागीर२—स्त्री० (फ़ा०) राज्य की ओर से मिली हुई भूमि, ताल्लुक़ा ।
जागीरदार२—पु० (फ़ा०) ताल्लुक़ेदार ।
जागृत, जाग्रत—वि० सजग ।
जागृति—स्त्री० जागरण ।
जाचक३—पु० मंगता ।
जाचना—सक्रि० माँगना ।
जाज़म—स्त्री०(फ़ा०)एक छपा हुआ बिछावन, शतरंजी ।
जाजरा—वि० जर्जर ।
जा-ज़रूर—पु० (फ़ा०) शौचागार, पाख़ाना ।
जाज़िब—वि०(फ़ा०) स्याही-सोख़ । [मान ।
जाज्वल्यमान—वि० प्रकाश-
जाट—पु० एक जाति ।
जाठ—पु० कोल्हू का लट्ठा ।
जाठर—पु० पेट । वि० पेट-सबंधी ।
जाठरानल—पु०पेट की अग्नि ।
जाड़ा—पु० जाड़ा, शीत ।
जाड्य—पु० जड़ता ।
जात४—वि०उत्पन्न । पु०जाति ।
ज़ात—स्त्री०(अ०) जाति ।
जातक—पु० बच्चा ।
जातकर्म—पु०जन्म-संस्कार ।
जातना—स्त्री०यातना, कष्ट ।
जातपाँत—स्त्री० बिरादरी ।
जातप्रतीत—वि०विश्वसनीय ।
जातरूप—पु०सोना । धतूरा ।
जातवेद, जातवेल—पु०सूर्य । अग्नि ।
जातापत्या—स्त्री० प्रसूता ।
जाति—स्त्री० बिरादरी । कुल । श्रेणी । [बाहर ।
जातिच्युत—वि० जाति से-
जाती—स्त्री०जुही का फूल ।
ज़ाती—वि० (अ०) व्यक्तिगत । निज का ।
जातीकोश—पु० जायफल ।
जातीफल—पु० जायफल ।
जातीय—वि० ज़ात का ।
जातोक्ष—पु० जवानबैल ।
जात्यंध—वि० जन्मांध ।
जात्य—वि० कुलीन, श्रेष्ठ ।
ज़ाद, ज़ादा—अव्य० (अ०) उत्पन्न, जैसे आदम-ज़ाद—आदम से उत्पन्न, आदमी ।
ज़ादबूम—स्त्री० (अ०)जन्मभूमि [व्यय ।
जादेराह—पु० (अ०) मार्ग-
जादू—पु० (फ़ा०) टोना । मोहनी । [करने वाला ।
जादूगर२—पु०(फ़ा०) जादू-
जान—स्त्री० जानकारी । (फ़ा०) प्राण । [वाला ।
जानकार२—पु० जानने-
जानकी—स्त्री० सीता ।
जानकीजान—पु० रामचन्द्र ।
जानदार—वि०(फ़ा०) सजीव ।
जाननहार—पु०जानने वाला ।
जानना—सक्रि० परिचित होना ।
जानपद—पु०देश । कर । लोग ।
जानपनी—स्त्री० चतुराई ।
जान बलब—वि० (फ़ा०) मरणासन्न ।
जानमनि—पु० ज्ञानी व्यक्ति ।
जा-नमाज़—स्त्री० (फ़ा०) नमाज़ पढ़ने की छोटी दरी ।
जानराय—पु० बुद्धिमान् ।
जानवर—पु०(फ़ा०)प्राणी ।
जानशीन—वि० (फ़ा०) उत्तराधिकारी ।
जानहार—वि० जाने वाला ।
जानहु—अव्य० मानों ।
जानाँ, जाननाँ—स्त्री०(फ़ा०) माशूक़, प्रिय ।
जानिब—स्त्री० (अ०) तरफ़, पक्ष । यौ० है-जानिब-सर्वहम । [ओर ।
जानिबैन—पु०(फ़ा०) दोनों-
ज़ानिया—स्त्री० (अ०)ज़िना करनेवाली यानी व्यभिचारिणी । [संबंधी ।
जानी—वि० (फ़ा०) जान-
ज़ानी—वि०(अ०)व्यभिचारी ।
जानु—पु० घुटना ।
जानुपानि—क्रि० वि० घुटनों और हाथों के बल ।

ज़ानूँ—पु० (फ़ा०) घुटना।
जानेमन—पु० स्त्री० (फ़ा०) मेरे प्राण।
जान्ह—स्त्री० जाँघ।
जाप—पु० जप।
जापक—पु० जपकर्त्ता।
जापा—पु० सौरी।
जाफ़—पु० बेहोशी।
जाफ़त—स्त्री० भोजन।
ज़ाफ़रान—पु०(अ०) केसर।
ज़ाफ़रानी—वि० (अ०) केसरिया, केसर-संबंधी।
ज़ाफ़री—स्त्री० (अ०) चीरे हुए बाँसों का परदा। गेंदा का एक फूल। [हर जगह।
जाबजा—क्रि० वि० (फ़ा०)
जाबर—पु० लौकी तथा चावल से तैयार किया हुआ खाद्य पदार्थ।
जाबाल—पु० गड़रिया।
ज़ाबित—वि० (अ०) सहनशील।
जाबिर—वि०(फ़ा०)जुल्मी।
ज़ाब्तगी—स्त्री० (अ०) नियमानुकूलता।
ज़ाब्ता—पु० (अ०) नियम।
ज़ाब्ता-दीवानी—पु० (फ़ा०) आर्थिक व्यवहार का क़ानून।
ज़ाब्ता-फ़ौजदारी—पु० (अ०) दंडनीय अपराधों से संबन्ध रखने वाला क़ानून।
जाम—पु० (फ़ा०) प्याला। पहर। [लगाने की बत्ती।
जामगी—स्त्री० तोप में आग-
जामदानी—स्त्री० (फ़ा०) कढ़ा हुआ एक प्रकार का फूलदार कपड़ा। [खट्टा पदार्थ
जामन—पु० दूध जमाने का
जामना—अक्रि० जमना।
जामा—पु०(अ०) पहनावा।
जामाता—पु० दामाद।
जामामसजिद—स्त्री० (अ०) प्रधान-मसजिद।
जामि—स्त्री० बहिन। कुलस्त्री।
जामिद—वि० (फ़ा०) जमा हुआ।
ज़ामिन—पु०(अ०) जि़म्मेदार।
जामी—स्त्री० ज़मीन।
जामुन—पु० एक फल।
जामे-जहाँनुमा—पु० (फ़ा०) एक कल्पित प्याला जिससे संसार की सब बातें जानी जाती हैं।
जामेसेहर—पु० (फ़ा०)सूर्य।
जाम्बव—पु० जामुन।
जाय—क्रि०वि० व्यर्थ। वि० उचित। स्त्री०(फ़ा०)जगह।
जायक—पु० पालाचन्दन।
ज़ायक़ा—पु०(अ०) स्वाद।
ज़ायचा—पु० (फ़ा०)जन्मपत्र।
जायज़—वि० (अ०) मुनासिब।
जायज़ा—पु० (अ०) जाँच-पड़ताल। पुरस्कार।
ज़ायद—वि०(फ़ा०) अधिक।
जायदाद—स्त्री०(फ़ा०)संपत्ति
जायदाद-मनकूला—स्त्री० चल-सम्पत्ति।
जायदाद-ग़ैरमनकूला—स्त्री० (फ़ा०) अचल-संपत्ति।
जायदादशौहरी—स्त्री० पति से मिला हुआ स्त्री धन।
जायनमाज़—स्त्री० वह दरी जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है।
जायफल—पु० एक फल।
जाया—स्त्री० पत्नी।
ज़ाया—वि० (फ़ा०) नष्ट।
जायाजीव—पु०नट। चारण।
जायानुजीवी—पु० नट। वेश्यापति। [दम्पति।
जायापती—स्त्री० स्त्री-पुरुष,
जायु—पु० औषध।
जार—पु० यार, उपपति। जाल। वि० नाशक।
ज़ार—वि० (फ़ा०) रोता-हुआ। दुःखी। पु० स्थान। क्रि० वि० बहुत अधिक।
जारकर्म्म—पु० व्यभिचार।
जारज—पु०जार से उत्पन्न-संतान।
जारण—पु० जलाना।
जारना—सक्रि० जलाना।
ज़ार व क़तार—क्रि० वि० (फ़ा०)निरन्तर, लगातार।
जारिणी—स्त्री० दुश्चरित्रा।
जारी—वि० (अ०) चालू।
ज़ारी—स्त्री० (फ़ा०) रोना-धोना।
जालंधरीविद्या—स्त्री०माया।
जालंध्र—पु०झरोखे की जाली।
जाल—पु० (अ०) फंदा झरोखा। युक्ति। समूह।
जालक—पु० घोंसला। झरोखा। जाल।
जालना—सक्रि० जलाना।
जालसाज़र—वि०(अ०फ़ा०) दग़ाबाज़।
जालरंध्र—पु० रोशनदान।

जाला—पु० मकड़ी का जाल।
जालिक—पु० मछुआ, बहेलिया ठग। मकड़ी। जादूगर।
जालिका—स्त्री० जाली समूह।
ज़ालिम—वि० (अ०) अत्याचारी।
जालिया—पु० दग़ाबाज़।
जाली—स्त्री० छोटे छोटे छेदों का समूह। वि० (अ०) बनावटी
जाल्म—वि० बिना विचारे काम करने वाला।
जावक—पु० महावर।
जावत—क्रि० वि० जहाँ तक।
जावन—पु० जामन।
जावा—पु० शराब बनाने का मसाला।
जावाल—पु० गड़रिया।
जावालि—पु० एक ऋषि।
जावित्री—स्त्री० जायफल का छिलका।
जाविदाँ—क्रि० वि० सदा। वि० सदा रहने वाला।
जाविदानी—स्त्री० (फ़ा०) सदा बना रहना, स्थायित्व।
जावेद—वि० (फ़ा०) दीर्घायु। स्थायी।
जासु—वि० जिसका।
जासूस२—पु० (अ०) भेदिया।
जाह—पु० (अ०) मान, रुतबा। [पद और वैभव।
जाह व जलाल—पु० (अ०)
ज़ाहिद—वि० (अ०) त्यागी, धर्मनिष्ठ। [प्रकट।
ज़ाहिर—वि० (अ०) प्रसिद्ध।
ज़ाहिरदार—वि० (अ० फ़ा०) दिखौआ। [दिखौवा।
ज़ाहिरदारी—स्त्री० (अ० फ़ा०)
ज़ाहिरपरस्त२—वि० (अ० फ़ा०)। ऊपरी तड़क भड़क का प्रेमी।
ज़ाहिरा—क्रि० वि० (अ०) प्रत्यक्ष में।
जाहिल—वि० (अ०) मूर्ख।
जाही—स्त्री० चमेली की भाँति का एक फूल।
जाह्नवी—स्त्री० गंगा।
जिंद—पु० भूत। [जीवन।
ज़िंदगानी—स्त्री० (फ़ा०)
ज़िंदगी—स्त्री० (फ़ा०) जीवन।
ज़िंदाँ—पु० (फ़ा०) क़ैदख़ाना।
ज़िंदा—वि० सजीव।
ज़िंदादिल२—वि० (फ़ा०) प्रसन्नचित्त। हँसमुख। रसिक। [तक रहना।
ज़िंदाबाद—पु० चिरकाल-
जिंस—स्त्री० (अ०) सामग्री। क़िस्म। प्रकार। चीज़।
ज़िंसख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) भंडार।
जिंसवार—पु० (अ० फ़ा०) वह काग़ज़ जिसमें पटवारी खेतों की फ़सल का ब्यौरा लिखता है।
जिउ—पु० जीव।
जिउकिया—पु० रोज़गारी।
ज़िक्र—पु० (अ०) चर्चा।
जिगर—पु० (फ़ा०) कलेजा। चित्त। जीव। साहस। गूदा, सार।
जिगरबंद—पु० (फ़ा०) हृदय और फेफड़ा आदि। पुत्र।
जिगरी—वि० (फ़ा०) दिली, घनिष्ट।
जिगीषा—पु० जीतने की इच्छा।
जिगीषु—वि० जय चाहने-वाला। [इच्छा।
जिघत्सा—स्त्री० भोजन की-
जिघत्सु—वि० भोजन का इच्छुक, भूखा।
जिघांसा—स्त्री० मारने की इच्छा।
जिघांसु—वि० मारने का इच्छुक।
ज़िच, ज़िच्च—स्त्री० (फ़ा०) लाचारी, बेबसी। शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें बादशाह को कहीं चलने की जगह न रहजाय।
जिज्ञासा—स्त्री० जानने की-इच्छा।
जिज्ञासु—वि० खोजने वाला।
जिज्ञास्य—वि० पूछने-योग्य।
जिठानी—स्त्री० पति के बड़े भाई की स्त्री। [वि० जिधर।
जित—वि० पराजित। क्रि०
जितना—वि० जिस मात्रा का।
जितवना—सक्रि० जताना।
जितवाना—सक्रि० जिताना।
जितवार—वि० जीतने वाला।
जितवैया—वि० जीतने वाला
जिताना—सक्रि० जीतने में सहायता देना। [विजयी।
जितामित्र—पु० विष्णु। वि०
जितेंद्रिय—वि० इन्द्रियों को वश में करने वाला।
जिते—वि० जितने।
जितै—क्रि० वि० जिधर।
जितैया—वि० जीतने वाला।
जितो—वि० जितना।
जित्—वि० जीतने वाला।
जित्वर—वि० विजयी।

जित्वरी—स्त्री० बनारस के व्यापारियों के व्यापार की भाषा।
ज़िद—स्त्री० (फ़ा०) हठ।
ज़िदाबदी—स्त्री० (फ़ा०) होड़, प्रतियोगिता। लड़ाई-झगड़ा।
जिदाल—पु० (अ०) युद्ध।
ज़िद्दी—वि० दुराग्रही।
जिधर—क्रि०वि०जिस तरफ़।
जिन—पु० भूत। जैनियों के तीर्थंकर। बुद्धदेव। [हरगिज़।
ज़िनहार—अव्य० (फ़ा०)
ज़िना—पु०(अ०)परस्त्रीगमन।
ज़िनाकार२—वि०(अ०फ़ा०) व्यभिचारी।
जिनिस—स्त्री०वस्तु, सामग्री।
जिन्नात—पु० (अ०) बहु० 'जिन्न' का।
जिन्नी—पु० (अ०) भूत-प्रेतों को वश में करने वाला।
ज़िबह—पु० (अ०) गला-काटना।
जिब्भा, जिभ्या—स्त्री० जीभ।
जिब्राईल—पु० (फ़ा०) एक फ़रिश्ता या देवदूत।
ज़िमन—पु० (अ०) भीतरी-भाग। खंड। दफ़ा, धारा।
जिमनास्टिक—पु० (अं०) एक व्यायाम। [प्रसंग।
जिमाअ़—पु० (अ०) स्त्री-
जिमाना—सक्रि० खिलाना।
जिमि—क्रि० वि० जैसे।
ज़िम्मा—पु० (अ०) उत्तर-दायित्व।
ज़िम्मी—पु० (अ०) मुसलमानी राज्य में रहने वाले अन्य धर्मी जिन्हें मुसलमान न होने के कारण 'जज़िया' कर देना पड़ता है।
ज़िम्मादार, ज़िम्मेदार२—वि० (अ०फ़ा०) उत्तरदायी।
ज़िम्मेवार २—वि० (अ०) उत्तरदाता, जवाबदेह।
जिय—पु० मन।
जियन—पु० ज़िन्दगी।
जियरा—पु० जीव, जी।
ज़ियान—पु० हानि।
जियाना—सक्रि०ज़िंदा करना।
ज़ियाफ़त—स्त्री० (अ०) आतिथ्य। बड़ी दावत।
ज़ियारत ८—स्त्री० (अ०) दर्शन। तीर्थयात्रा।
ज़ियारतगाह—पु० (अ०) तीर्थ-स्थान। [जीवन।
जियारी—स्त्री० साहस,
जिरगा—पु० (तु०) समूह।
जिरह—स्त्री०(अ०)तर्क,बहस।
ज़िरह—स्त्री०(फ़ा०) कवच।
ज़िरहपोश,ज़िरही—पु०(फ़ा०) कवचधारी।
ज़िरहबख्तर—पु०(फ़ा०)कवच।
ज़िराअ़त—स्त्री०(अ०)खेती।
जिरियान—पु०(अ०)सूज़ाक। जल आदि का बहना।
जिर्म—पु० (अ०) शरीर।
ज़िलहिज्ज—पु० (अ०) मुसलमानों का बारहवाँ महीना।
जिला—स्त्री० (अ०) चमक।
ज़िला—पु० (फ़ा०) प्रांत का एक भाग।
जिलाकार२—पु० (अ०फ़ा०) जिला (चमक)करने वाला।
ज़िलाधीश—पु० कलक्टर।
ज़िलाबोर्ड—पु०ज़िले के कर-दाताओं के प्रतिनिधियों की सभा। [करना।
जिलाना—सक्रि० ज़िन्दा-
जिलाह—पु० अत्याचार-करने वाला।
ज़िलेदार२—पु० (अ० फ़ा०) मालगुज़ारी वसूल करने-वाला एक कर्मचारी। ज़िले का अफ़सर।
जिल्द—स्त्री० (अ०) किताब के ऊपर चढ़ी हुई दफ़्ती। खाल। [दफ़्तरी।
जिल्दबंद२—पु० (अ० फ़ा०)
जिल्दसाज़२—पु० (अ० फ़ा०) जिल्द बनाने वाला।
ज़िल्ल—पु० (अ०) छाया। विचार। अधिक गर्मी। रात का अंधकार।
ज़िल्लत—स्त्री० (अ०) अप-मान। [करना।
जिवाना—सक्रि० जीवित-
जिष्णु—पु० इन्द्र। वि० जीतने वाला। [देह।
जिस्म—पु० (अ०) शरीर,
जिस्मानी—वि० (अ०) शारीरिक।
जिस्मी—वि०(अ०)व्यक्तिगत।
जिह—स्त्री० धनुष की डोरी, प्रत्यंचा। [समझ।
ज़िहन—पु० (अ०) बुद्धि,
जिहाद—पु० (अ०)धर्म-युद्ध।
जिह्म—वि० कपटी। टेढ़ा।
जिह्मग—पु० सर्प।

जिह्वल—वि० चटोरा।
जिह्वा—स्त्री० जीभ।
जींगन—पु० जुगुनू।
जी, जीय—पु० मन।
ज़ी—प्रत्य० (अ०) वाला।
जीउ—पु० जीव।
ज़ीक़—स्त्री० (अ०) तंगी। मानसिक कष्ट। अड़चन।
ज़ीक़ाद—पु० (अ०) मुसलमानों का ग्यारहवाँ महीना।
जीजा—पु० बड़ी बहिन का पति।
जीजी—स्त्री० बड़ी बहिन।
जीट—स्त्री० डींग।
जीत—स्त्री० विजय।
जीतना—सक्रि० विजयी होना।
जीता—वि० ज़िन्दा।
जीन—वि० जीर्ण। पु० काठी।
ज़ीन—पु०(फ़ा०) चारजामा। काठी। घोड़े की पीठ की गद्दी।
ज़ीनत—स्त्री०(फ़ा०) शोभा।
ज़ीनपोश—पु० (फ़ा०) ज़ीन का ढक्कन। ज़ीन के नीचे का कपड़ा।
ज़ीनसाज़र—वि० (फ़ा०) ज़ीन बनाने वाला।
जीना—अक्रि० ज़िंदा रहना।
ज़ीना—पु० (फ़ा०) सीढ़ीदार मार्ग। [की वस्तु।
जीभी—स्त्री० जीभ साफ़ करने-
जीमना—सक्रि० भोजन करना।
जीमूत—पु० इन्द्र। बादल।
जीयट—पु० हिम्मत।
जीयति—स्त्री० जीवन।
जीर—पु० ज़ीरा। केसर। खड्ग। कवच। वि० पुराना।
जीरक—पु० ज़ीरा। [फटना
जीरना—अक्रि० जीर्ण होना,
ज़ीरा—पु० एक मसाला।
जीर्ण३—वि० पुराना।
जीर्णज्वर—पु० पुराना बुख़ार।
जीर्णि—स्त्री० जीर्णता।
जीर्णोद्धार—पु० मरम्मत।
जीवंजीव—पु० पक्षी विशेष।
जीवंत—वि० जीता-जागता।
जीवंतिका—स्त्री० गिलोय, गुरुच। आकाश-बेल।
जीव—पु० वृहस्पति। जीवात्मा, रूह।
जीवक—पु० प्राणी। नौकर।
जीवट—पु० हिम्मत।
जीवति—स्त्री० जीविका।
जीवदान—पु० प्राणदान।
जीवधन—पु० पशुरूप धन। प्राणप्रिय।
जीवधारी—पु० प्राणी।
जीवन—पु० ज़िन्दगी।
जीवनचरित्र—पु० जीवन का हाल।
जीवनधन—पु० प्राण-प्रिय।
जीवनबूटी—स्त्री० संजीवनी।
जीवनमुक्त—वि० माया। मोह से दूर।
जीवनमूरि—स्त्री० संजीवनी।
जीवनमृत—वि० जो जीवित अवस्था में मृतवत् हो।
जीवनयंत्रिका—स्त्री० जीवन-शक्ति का परिचालन करने वाली शक्ति।
जीवनवृत्त—पु० जीवनी।
जीवनी—स्त्री० जीवन-चरित्र।
जीवनोपाय—पु० रोज़ी।
जीवनौषध—पु० संजीवनी बूटी।
जीवप्रभा—स्त्री० आत्मा, रूह।
जीववंद, जीवबंधु—पु० गुल-दुपहरिया का फूल।
जीवरा—पु० जीव।
जीवलोक—पु० पृथ्वी।
जीवांतक—पु० बहेलिया।
जीवा—स्त्री० प्रत्यंचा।
जीवाजून—पु० जीवजन्तु।
जीवातु—पु० संजीवनी बूटी।
जीवात्मा—पु० आत्मा, प्राण।
जीवाधम—पु० बिटामिन।
जीविका—स्त्री० रोज़ी।
जीवित—वि० ज़िन्दा।
जीवितेश—पु० प्राणेश्वर।
जीवी—वि० जीविका कमाने-वाला। जीवधारी।
जीवेश—पु० ईश्वर।
ज़ीशऊर—वि० शऊरदार।
ज़ीस्त—पु० (फ़ा०) जीवन।
जीह—स्त्री० जिह्वा।
ज़ीहयात—वि०(अ०) जीवित।
जुंग—पु० विधारा।
जुंबिश—स्त्री० (फ़ा०) हरकत, गति।
जुअती—स्त्री० युवती।
जुआँ—स्त्री० जूँ।
जुआ, जुवा—पु० द्यूत-क्रीडा। गाडी, हल आदि की लकड़ी जो बैल की गर्दन पर रक्खी जाती है।
जुआचोर२—वि० धोखेबाज़।
जुआर—स्त्री० एक अन्न।

जुआरी—पु० जुआ खेलने-वाला।
.जुकाम—पु०(अ०) सरदी।
जुग—पु० जोड़ा। १२ वर्ष का समय। [टिमाना।
जुगजुगाना—अक्रि० टिम-
जुगजुगी—स्त्री० शकरखोरा, पक्षी।
जुगत—स्त्री० युक्ति। यत्न।
जुगनी—स्त्री०खद्योत।माला आदि के बीच में लगा नग।
जुगनू—पु० पटबीजना।
जुगम—वि० युग्म, जोड़ा।
जुग़राफ़िया—पु० (अ०) भूगोल।
जुगल—त्रि०जोड़ा। [रखना।
जुगवना—सक्रि०रक्षा पूर्वक-
जुगार, जुगाली—स्त्री०पागुर।
जुगालना—अक्रि० पागुर-करना।
जुगाली—स्त्री० पागुर।
जुगुप्सक—वि० निन्दक।
जुगुप्सा—स्त्री०घृणा। निन्दा।
जुगुप्सित—वि० निंदित। घृणित।
जुज़—पु० (फ़ा०) हिस्सा। कागज़ के ताव। अव्य० सिवा, अतिरिक्त। [बस्ता।
जुज़दान—पु० (अ० फ़ा०)
जुज़बंदी—स्त्री० (अ० फ़ा०) किताब की एक प्रकार की सिलाई। [तुच्छ।
जुज़वी—वि० (अ०) सामान्य,
जुज़ामन—पु० (अ०) कोढ़।
जुज्झ—पु० युद्ध।
जुझवाना—सक्रि०लड़ा देना।
जुझाऊ—वि० लड़ाका, वीर।
जुझार—वि० लड़ाका।
जुट—स्त्री० गिरोह, जत्था
जुटना९—अक्रि० इकट्ठा-होना। जुड़ना।
जुटली—वि०लंबी लटों वाला।
जुट्टी—स्त्री० गड्डी।
जुठारना—सक्रि०जूठा करना।
जुठिहारा७—पु० जूठा खाने वाला।
जुड़ना—अक्रि० मिल जाना।
जुड़पित्ती—स्त्री० एक प्रकार की खुजली।
जुड़वाँ—वि० मिले हुए एक साथ उत्पन्न दो बच्चे।
जुड़वाना—सक्रि० ठंढा-करना। जोड़वाना।
जुड़ाना—अक्रि० शीतल-होना। तृप्त होना। सक्रि० मिलाना। [जाना।
जुतना—अक्रि० लगना। जोता-
जुतियाना—सक्रि० जूता-लगाना।
जुदा—वि० (फ़ा०) अलग, पृथक्, भिन्न।
जुदाई—स्त्री०(फ़ा०) वियोग।
जुदागाना—क्रि०वि०(अ०) स्वतंत्ररूप से। [अखाड़ा।
जुना—पु० साधुओं का-
जुनूनी—वि० पागल।
.जुन्नार—पु०(अ०) जनेऊ।
जुन्हाई—स्त्री० चाँदनी। चन्द्रमा।
जुफ़्त—पु० (फ़ा०) जोड़ा।
जुफ़्ता—पु० (फ़ा०) शिकन, बल। कपड़े के सूतों का अपने स्थान से हट जाना।
जुबादे—पु० कस्तूरी विशेष।
जुबिली—स्त्री० (अं०) किसी घटना की स्मृति में मनाया जाने वाला उत्सव।
जुब्बा—पु० (अ०) फ़क़ीरों का एक लंबा पहनावा।
जुमला—वि०(अ०)सम्पूर्ण। पु० वाक्य।
जुमा—पु० (अ०) शुक्रवार।
जुमेरात—स्त्री० (अ०) बृहस्पतिवार।
जुर—पु० बुख़ार। [दण्ड।
जुरमाना—पु० (फ़ा०) अर्थ-
जुरा—स्त्री० मृत्यु।
जुराना—अक्रि०एकत्र करना।
जुराफ़ा—पु० (अ०) अफ़रीका का ऊँट के सदृश एक पशु।
जुर्म—पु० (अ०) अपराध।
जुर्रत—स्त्री० (अ०) साहस।
जुर्रा—पु० पक्षी विशेष।
जुर्राब—स्त्री० (तु०) मोज़ा।
.जुल—पु० धोखा, झाँसा।
जुलाई—स्त्री० (अं०) अँग्रेज़ी वर्ष का सातवाँ महीना (३१ दिन का)।
जुलाब—पु० (अ०) दस्त की दवा, रेचन। दस्त[स्वच्छ।
जुलाल—वि० (अ०) शुद्ध,
जुलाहा—पु० कपड़ा बिनने वाला।
जुलूस—पु० (अ०) किसी उत्सव की यात्रा तथा उसका-समारोह।
जुलूसी—वि० (अ०) जिसका आरंभ किसी राजा के राज्या-

सीन होने की तिथि से हो।
जुलूस-सम्बन्धी।
जुलोक—पु० द्युलोक, बैकुंठ।
जुल्फ़—स्त्री० (फ़ा०) सिर के बाल। लट, पट्टा कुल्ला।
जुल्फ़िक़ार—स्त्री० (अ०) हज़रत अली की तलवार का नाम। [चार।
जुल्मद—पु० (अ०) अत्या-
जुल्मकेश—वि० (अ०) ज़ालिम।
जुल्मत—स्त्री० (अ०) अँधेरा।
जुल्मरसीदा—वि० (अ० फ़ा०) अत्याचार-पीड़ित।
जुस्तजू—स्त्री० (फ़ा०) तलाश।
जुहर—पु० (अ०) तीसरा पहर। [ग्रह।
जुहल—पु० (अ०) शनैश्चर-
जुहाना—सक्रि० संचय करना।
जुहार—पु० अभिवादन।
जुहू—पु० यज्ञ-पात्र, स्रुवा।
जूँ—स्त्री० चीलड़ (सर का कीड़ा)।
जू—स्त्री० (फ़ा०) नदी। नहर। जलाशय। (हिं०) आदर-सूचक शब्द।
जूझ—पु० लड़ाई।
जूट—पु० सन। जटा।
जूटना—अक्रि० लगे रहना।
जूँट—स्त्री० जोड़ी।
जूठन—स्त्री० उच्छिष्ट भोजन।
जूठा—वि० जुठारा हुआ।
जूड़—वि० प्रसन्न। शीतल।
जूड़ा—पु० चोटी। सिर के बालों की गाँठ।
जूड़ी—स्त्री० जाड़े का बुख़ार।
जूता—पु० पनही।
जूताख़ोर—वि० बेहया।
जूति—स्त्री० वेग।
जूथिका—स्त्री० पुष्प विशेष।
जून—पु० समय। (अ०) अँग्रेज़ी वर्ष का छठा महीना (३० दिन का)। [पिछला।
जूनियर—पु० (अं०) छोटा।
जूप—पु० जुआ। यूप।
जूफ़नून—वि० (अ०) बहुत से फ़न या कलाएँ जानने वाला।
जूमना—अक्रि० जुटना।
जूर—पु० संचय, राशि।
जूरी—पु० (अं०) एक प्रकार के पंच जो जज के फ़ैसले में सहायता देते हैं।
जूस—पु० रसा।
जूह—पु० समूह।
जूही—स्त्री० पुष्प विशेष।
जृम्भ—पु० जँभाई। [वाला।
जृम्भक—वि० जँभाई लेने-
जृम्भण—पु०, जृम्भा—स्त्री० जँभाई।
जेंगना—पु० जुगनू।
जेंवना—सक्रि० भोजन करना।
जेंवनार—स्त्री० रसोई, भोज।
जे—सर्व० बहु० 'जो' का।
जेठ—पु० ज्येष्ठ मास। वि० बड़ा।
जेठा—वि० ज्येष्ठ। श्रेष्ठ।
जेठानी—स्त्री० जेठ की स्त्री।
जेठी—वि० जेठ-सम्बन्धी।
जेठीमधु—स्त्री० मुलेठी।
जेठौत—पु० जेठ का पुत्र।
जेता—पु० विजयी। वि० जितना।
जेतिक—वि० जितना।
जेते—वि० जितने।
जेना—अक्रि० जेंवना।
जेब—स्त्री० (अ०) खलीता।
ज़ेब, ज़ेबा—स्त्री० (फ़ा०) शोभा।
जेबख़र्च—पु० ऊपरी-ख़र्च।
ज़ेब व ज़ीनत—स्त्री० (फ़ा०) शोभा और शृंगार।
ज़ेबाइश—स्त्री० (फ़ा०) सजावट, शोभा।
जेबी—वि० (अ०) जेब में रखने योग्य (छोटा)।
जेमन—पु० भोजन।
जेय—वि० जीतने-योग्य।
ज़ेर—पु० (फ़ा०) नीचे। 'उर्दू' लिपि का एक चिह्न जो अक्षरों के नीचे लगने से 'एकार' की ध्वनि प्रकट करता है। वि० गिरा हुआ।
ज़ेरतज्वीज़—वि० (फ़ा०) विचाराधीन। [पराजित।
ज़ेरदस्त—वि० (फ़ा०) अधीन।
ज़ेरना—सक्रि० पीडित करना।
ज़ेरबंद—पु० (फ़ा०) घोड़े के पेट पर बाँधा जाने वाला तस्मा [दुःखित।
ज़ेरबार—वि० (फ़ा०)
ज़ेर व ज़बर—पु० (फ़ा०) समय का उलट फेर।
ज़ेरसाया—क्रि० वि० (फ़ा०) किसी के संरक्षण में।
जेल—पु० कारागार।
जेवना—पु० भोजन।
जेवनार—स्त्री० भोज।

ज़ेवर—पु० गहना ।
जेवरा—पु० रस्सा ।
जेवरी, जेवड़ी—स्त्री०रस्सी ।
जेह—स्त्री० प्रत्यंचा का मध्य-भाग ।
जेहर—पु० पायजेब ।
जेहि—सर्व० जिसको ।
जैतवार—पु०जीतने वाला ।
जैत्र—वि० जो जीत सके, विजयी ।
जैनन—पु० एक सम्प्रदाय ।
जैनु—पु० भोजन ।
जैमिन—पु० पूर्वमीमांसा दर्शनके रचयिता एक ऋषि।
जैयद—वि०(अ०) बलवान् । बहुत बड़ा । अच्छा ।
ज़ैल—पु० (अ०) नीचे का भाग ।
जैवातृक—पु० चन्द्रमा ।
जोंक—स्त्री० पानी में रहने वाला एक कीड़ा ।
जोंकी—स्त्री० जोंक ।
जोंधैया—स्त्री० चाँदनी ।
जोअना—सक्रि० राह देखना ।
जोई—स्त्री० पत्नी । (फ़ा०) ढूँढ़ना ।
जोइसी—पु० ज्योतिषी ।
जोक—पु० (अं०) दिल्लगी ।
जोकर—पु० (अं०) मसख़रा ।
जोखना—सक्रि० तौलना, जाँचना ।
जोखा—पु० हिसाब ।
जोखिता—स्त्री० पत्नी ।
जोखिम—पु०ख़तरा,आपत्ति।
जोखौं—स्त्री० जोखिम ।
जोग—पु० योग । सुभीता । जोड़ । तप और ध्यान ।
जोगड़ा—पु० नक़ली योगी ।
जोगवना—सक्रि० दे० 'जुगवना' ।
जोगि, जोगिन—स्त्री० जोगी की स्त्री । एक रण देवी ।
जोगिया—वि० जोगी का । पु० जोगी ।
जोगी—पु० योगी ।
जोगीड़ा—पु०गाना विशेष । 'जोगीड़ा गाने वालों का समूह ।
जोगाटा—पु०दे० 'योगी' ।
जोजन—पु० दे० 'योजन' ।
जोट, जोटा—पु० जोड़ा ।
जोड़—पु०गाँठ। मेल। जोड़
जोड़ना—सक्रि० मिलाना । एक करना ।
जोड़वाँ—पु० एक साथ दो बच्चे पैदा होना, यमज ।
जोड़ा—पु०एक ही तरह की दो वस्तुएँ ।
जोड़ाई—स्त्री० जोड़ने की क्रिया या मज़दूरी ।
जोड़ू—स्त्री० स्त्री ।
जोत—स्त्री० ज्योति, रोशनी । जोतने वाली भूमि । तराजू तथा बैल आदि के गले की रस्सी । जोताई ।
जोतना—सक्रि० नाँधना । काम लेना ।
जोता—पु० जुए में पड़ी, बैलों के गले फँसाने की रस्सी ।
जोताई—स्त्री०जोतने का कार्य या मज़दूरी ।
जोति—स्त्री० प्रकाश ।
जोतिक—पु० ज्योतिषी ।
जोधा—पु० योद्धा, बली ।
जोना—सक्रि० देखना ।
जोन्ह,जोन्हाई—स्त्री०चाँदनी। चन्द्रमा ।
जोप—पु० दे० 'यूप' ।
जोपै—अव्य० यदि ।
ज़ोफ़—पु० (अ०) कमज़ोरी । मूर्च्छा ।
ज़ोफ़-बसारत—पु० (अ०) नेत्रों की दुर्बलता ।
जोबन—पु० यौवन । रूप । कुच । वि० युवा । [गर्व ।
ज़ोम—पु० (अ०) उत्साह ।
जोय—सर्व० जो । स्त्री० स्त्री ।
जोयना—सक्रि० देखना, जोहना । जलाना ।
जोया—वि० (फ़ा०) ढूँढ़ने-वाला । [ताक़त ।
ज़ोर—पु० (फ़ा०) बल,
ज़ोर-आज़माई—स्त्री०(फ़ा०) बल-परीक्षा ।
ज़ोरदार—वि० (फ़ा०) ताक़तवर, प्रबल ।
ज़ोरशोर—पु० अधिक ज़ोर ।
ज़ोराज़ोरी—स्त्री० (फ़ा०) ज़बरदस्ती । [बलवान् ।
ज़ोरावर—वि० (फ़ा०)
जोरी—स्त्री० जोड़ी ।
जोरू—स्त्री० पत्नी ।
जोल—पु० झुण्ड ।
जोलाहल—स्त्री० अग्नि, ज्वाला । [जोड़ ।
जोली—स्त्री० समानता ।
जोलो—पु० अन्तर ।
जोवना—सक्रि० जोहना ।

जोश—पु० (फ़ा०) उमंग। आवेश।
जोशन—पु० (फ़ा०) बाँह पर पहनने का एक आभूषण।
जोशाँदा—पु०(फ़ा०)सर्दी का एक काढ़ा।
जोशीला—वि० जोश-पूर्ण।
जोषा, जोषिता—स्त्री०पत्नी।
जोषी—पु० ज्योतिषी।
जोह, जोहन—स्त्री० प्रतीक्षा। खोज। [खोजना।
जोहना—सक्रि०राह देखना।
ज़ोहरा—पु०(अ०)बृहस्पतिवार।
जोहार—पु० प्रणाम।
जोहारना—सक्रि०नमस्कार करना।
जौं—अव्य० यदि।
जौंरे—क्रि०वि०आस पास।
जौ—पु० एक अन्न। अव्य० जब। यदि।
जौक़-पु०(तु०)सेना भीड़।
ज़ौक़—पु० (अ०) आनन्द। प्रसन्नता। [पूर्वक।
ज़ौक़ से—क्रि० वि० आनन्द-
जौख—पु० समूह, सेना।
ज़ौज—पु० (अ०) जोड़ा। पति, स्वामी।
ज़ौजा—स्त्री० (अ०) जोड़ा।
जौतुक—पु० दहेज़।
जौन—सर्व० जो।
जौन्ह—स्त्री० चाँदनी।
जौफ़—पु० (अ०) पेट। अवकाश। गड्ढा।
जौबति—स्त्री० युवती।
जौर—पु० (अ०) ज़ुल्म।
जौशन—पु० दे० 'जोशन'।
जौहर—पु०(फ़ा०)विशेषता। रत्न। एक प्रथा जिसके अनुसार युद्ध के समय राजपूतों के बच्चे और स्त्रियाँ अग्नि में कूद पड़ती थीं।
जौहरी—पु० रत्न-पारखी रत्न विक्रेता।
ज्ञ—पु० पंडित, ज्ञाता।
ज्ञपित—वि० जाना हुआ।
ज्ञप्त—वि० जाना हुआ।
ज्ञप्ति—स्त्री० जानकारी।
ज्ञात—वि० जाना हुआ।
ज्ञातव्य—वि० जानने-योग्य।
ज्ञातसिद्धांत—पु० शास्त्री, विद्वान्।
ज्ञाता १०—वि० जानकार।
ज्ञाति—स्त्री०जाति। [योग्य।
ज्ञातेय—वि० जाति से होने-
ज्ञान—पु०जानकारी। बोध।
ज्ञानगम्य—वि० ज्ञातव्य।
ज्ञानगोचर—पु० जानने के योग्य। [वाला
ज्ञानवान् १३—वि० ज्ञान-
ज्ञानवृद्ध—वि० अधिक ज्ञान रखने वाला।
ज्ञानी—वि० जानकार।
ज्ञानेंद्रिय-स्त्री० आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा पाँच इन्द्रियाँ।
ज्ञापन—पु०जताने का कार्य
ज्ञापित—वि०जनाया हुआ।
ज्ञाप्य—वि० जताने योग्य।
ज्ञेय—वि० जानने योग्य।
ज्या—स्त्री० धनुष की डोरी। माता। पृथ्वी।
ज़्यादती—स्त्री० अन्याय। अधिकता।
ज़्यादा—वि०(फ़ा०)अधिक।
ज्यान—पु० हानि।
ज्याना—सक्रि०जीवित करना।
ज्यानि—स्त्री० जीर्णता।
ज्याफ़त—स्त्री० दावत।
ज्यामिति—स्त्री० रेखागणित।
ज्यूँ, ज्यों—क्रि० वि० जिस-प्रकार। [तीसरा मास।
ज्येष्ठ३—वि० बड़ा। पु०
ज्येष्ठाधिकार-पु०वह अधिकार जो बड़े होने के नाते प्राप्त होता है, बड़प्पन।
ज्येष्ठाश्रम—पु०गृहस्थाश्रम।
ज्यो—पु० जीव, प्राण।
ज्योति—स्त्री०प्रकाश। दृष्टि।
ज्योतित—वि० प्रकाशित।
ज्योतिरिंगण—पु० खद्योत, जुगनू। [युक्त।
ज्योतिर्मय ७—वि० प्रकाश-
ज्योतिर्लिंग—पु०महादेवजी।
ज्योतिर्लोक—पु० ध्रुवलोक।
ज्योतिर्विद्—पु० ज्योतिषी।
ज्योतिर्विद्या-स्त्री० ज्योतिष।
ज्योतिष—स्त्री० ग्रह, नक्षत्र-विषयक विद्या।
ज्योतिषिक—पु० पंडित।
ज्योतिषी—पु० गणक।
ज्योतिष्क—पु० ग्रह, नक्षत्र आदि का समूह।
ज्योतिष्पथ-पु० आकाश।
ज्योतिष्पुंज-पु० नक्षत्रसमूह।
ज्योतिष्मती—स्त्री० रात्रि।
ज्योतिष्मान्—पु० प्रकाश-युक्त। सूर्य।
ज्योत्स्ना—स्त्री० चाँदनी।

ज्योनार—स्त्री० भोज।
ज्योहत—पु० प्राणत्याग।
ज्यौं—अव्य० जो, यदि।
ज्यौत्स्नी—स्त्री० उज्यिाली-रात।
ज्वर—पु० बुखार।
ज्वरा—स्त्री० मृत्यु।
ज्वलंत—वि० दीप्त। प्रकट।
ज्वलन—पु० दाह। अग्नि।
ज्वलित—वि० जला हुआ।
ज्वार—स्त्री० जोन्हरी। लहर का चढ़ाव।
ज्वारभाटा—पु० समुद्र की लहर का चढ़ाव-उतार।
ज्वारी—पु०जुआ खेलने वाला।
ज्वाल—पु०अग्नि की लपट।
ज्वाला—स्त्री०आग। लपट।
ज्वालामुखी—पु० वह पर्वत जिससे आग निकलती हो। स्त्री० देवांगना।
ज्वैना—सक्रि०प्रतीक्षा करना।

९—झ

झंकना—अक्रि० झींखना।
झंकाड़—पु०दे० 'झंखाड़'।
झंकार—स्त्री० झनझनाहट।
झंकारना—अक्रि०'झनझन' आवाज़ होना।
झंकृत—वि० ध्वनित।
झंखना—अक्रि० झींखना।
झंखाड़—पु०काँटेदार सघन-पौधा। पत्रहीन-वृक्ष।
झंगा—पु० बच्चों का ढीला-कुरता।
झँगुला७—पु०ढीला कुरता।
झँगुलिया—स्त्री०दे०'झँगुली'।
झंझ—पु० झाँझ।
झंझट—स्त्री०झगड़ा,बखेड़ा।
झंझनाना—अक्रि०झंकारना।
झँझरा७—वि० बहुत छेदों वाला।
झँझरी—स्त्री०जाली,झरोखा।
झंझा—पु०वर्षायुक्त आँधी। झाँझ।
झंझानिल—पु० आँधी।
झंझार—पु०आग की लपट।
झंझावात—पु०दे० 'झंझा'।
झँझोटी—स्त्री०एक रागिनी।
झँझोड़ना—सक्रि० झटके से हिलाना।
झंडा७—पु० ध्वजा।
झंडाबरदार—पु० झंडा-लेकर चलने वाला।
झँडूला—वि०सघन। जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों।
झंप—पु० उछाल, छलाँग।
झँपकना—अक्रि० पलक-गिराना। [लज्जित होना।
झँपना—अक्रि० ढँकना।
झँपरिया,झँपरी—स्त्री०पालकी पर डालने का वस्त्र।
झपान—पु० खटोलीदार-पहाड़ी सवारी।
झंपित—वि० आच्छादित।
झँपोला७—पु०झाबा, पिटारी।
झंब—पु० गुच्छा।
झँवकारा—वि० झाँवे के सदृश काला।
झँवराना—अक्रि०कुछ काला पड़ना। कुम्हलाना।
झँवा, झाँवा—पु० जली हुई ईंट।
झँवाना—अक्रि०झाँवे की तरह कालापड़ना। कुम्हलाना।
झँवावना—सक्रि० झाँवे से-रगड़वाना। [धन ले लेना।
झँसना—सक्रि० बहकाकर-
झई—स्त्री० दे० 'झाई'।
झक—स्त्री० सनक। धुन। वि० चमकीला।
झककेतु—पु० कामदेव।
झकझक—स्त्री० हुज्जत।
झकझका—वि० चमकीला।
झकझेलना, झकझोरना—सक्रि०किसी चीज़ को पकड़ कर झोंके से हिलाना।
झकझोर, झकझोरा—पु० झटका।
झकड़—पु०आँधी। [करना।
झकना—अक्रि० झगड़ा-
झका—वि० चमकदार।
झकाझक—वि० उज्ज्वल।
झकुराना—अक्रि० झूमना।
झकोर, झकोरा—पु० झोंका, झटका।

झक्कड़—पु० आँधी।
झक्की—वि० सनकी।
झख—स्त्री० झींखना। पु० मछली।
झखकेतु—पु० कामदेव।
झखना—अक्रि० दुःख पूर्वक पछताना।
झखी—स्त्री० मछली। [करना।
झगड़ना—अक्रि० झगड़ा-
झगड़ा—पु० तकरार, लड़ाई।
झगड़ालू—वि० झगड़ने वाला।
झगर—पु०, झगरी—स्त्री० झगड़ा। [कुरता।
झगला, झगा—पु० ढीला-
झगुलिया—स्त्री० दे० 'झँगुला'।
झज्झर—पु० मिट्टी का एक तरह का बरतन। [लाहट।
झझक—स्त्री० भड़क। झुँझ-
झझकना९—अक्रि० भड़कना। झुँझलाना। [टना।
झझकारना—सक्रि० डप-
झझिया—पु० दे० 'झिझिया'।
झट—क्रि० वि० तुरन्त।
झटकना—सक्रि० झटका देना।
झटका—पु० झोंका, धक्का।
झटकारना—सक्रि० फटकारना।
झटपट—क्रि० वि० तुरन्त।
झटास—स्त्री० बौछार।
झटिति—क्रि० वि० शीघ्र।
झड़, झड़ी—स्त्री० लगातार-वर्षा। ताँता।
झड़झड़ाना—सक्रि० झटके से हिलाना। [क्रिया।
झड़न—स्त्री० झड़ने की-
झड़प—स्त्री० मुठभेड़।

झड़पना९—अक्रि० झटकना।
झड़पाझड़पी—स्त्री० हाथा-पाई।
झड़बेरी—स्त्री० जंगली बेर।
झड़वाना—सक्रि० झाड़ने का काम कराना।
झड़ाका—क्रि० वि० फ़ौरन्।
झड़ाझड़—क्रि० वि० लगातार।
झड़ी—स्त्री० लगातार वर्षा। ताँता।
झड़ूला—वि० गर्भ का। गर्भ के बालों से युक्त। शिशु।
झन, झनक—स्त्री० झन-झनाहट।
झनकना—अक्रि० झन-कारना। नाराज़गी में बड़ बड़ाना। [की झनकार।
झनकमनक—स्त्री० आभूषण-
झनकवात—स्त्री० घोड़ों का एक रोग।
झनकार—स्त्री० झनझनाहट।
झनझनाना—अक्रि० झन-कारना।
झनझनाहट—स्त्री० झुनझुनी। 'झनझन' की आवाज़।
झनाझन—स्त्री० झङ्कार।
झँनिया—वि० झीना, महीन।
झन्नाहट—स्त्री० झनझनाहट।
झप—क्रि० वि० तुरन्त।
झपक—स्त्री० पलक, लहमा। झपकी। [गिरना। ऊँघना।
झपकना—अक्रि० पलक-
झपकाना—सक्रि० पलकों को बार बार गिराना।
झपकी—स्त्री० ऊँघना। धोखा।

झपकौंहा—वि० निद्रा-युक्त, उनींदा।
झपट—स्त्री० झपटने की क्रिया।
झपटना९—अक्रि० लपकना। आक्रमण करना।
झपट्टा—पु० झपट।
झपताल—पु० एक ताल।
झपना९—अक्रि० झेंपना। आँखों का बंद होना।
झपवाना—सक्रि० झपाने में प्रवृत्त करना।
झपसना—अक्रि० फुर्ती से जाना। फैलना (वृक्ष)।
झपाका—पु० शीघ्रता।
झपाटा—पु० झपट। आक्रमण।
झपित—वि० झपा हुआ। नींदयुक्त।
झपिया—स्त्री० पिटारी।
झपेटना—सक्रि० दबोचना।
झपेटा—पु० चपेट।
झपाला७—पु० पिटारी।
झप्पर—पु० थप्पड़।
झप्पान—पु० दे० झंपान'।
झबरा७—वि० जिसके लंबे तथा बिखरे हुए बाल हों।
झबरीला, झबरैरा—वि० बिखरा तथा घूमा हुआ (बाल)।
झबा—पु० गुच्छा।
झबिया—स्त्री० छोटा झब्बा।
झबूकना—अक्रि० चमकना।
झब्बा—पु० गुच्छा।
झमक—स्त्री० चमक, प्रकाश।
झमकना९—अक्रि० चमकना। 'झमझम' शब्द करना।
झमकारा—वि० 'झमझम'

शब्द के साथ बरसने वाला।
झमकीला—वि० चंचल।
झमझम—स्त्री० छमछम।
क्रि० वि० 'झमझम' करते हुए।
झमझमाना—अक्रि० चमकना। सक्रि० चमकाना।
झमना—अक्रि० झुकना।
झमाका—पु० पानी बरसने या गहनों के बजने का शब्द.
झमाझम—क्रि० वि० 'झमझम' शब्द सहित।
झमाना—अक्रि०छाना,घेरना।
झमेला—पु० बखेड़ा, झंझट।
झमेलिया—पु० झगड़ालू।
झर—स्त्री० झड़ी। झरना। पानी गिरने का स्थान। समूह। ज्वाला, तपन।
झरक—स्त्री० झलक, प्रतिबिम्ब।
झरकना—अक्रि०चमकना। डपट कर कहना।
झरझर—स्त्री० जल बरसने या हवा चलने का शब्द।
झरझराना—सक्रि० झरझर शब्द के साथ गिरना।
झरना—अक्रि०गिरना। टपकना। बजाना। पु०सोता।
झरप—स्त्री० झोंक। वेग। परदा।
झरपना—अक्रि० झोंका देना। आक्रमण करना।
झरफ—स्त्री० परदा, चिक
झरर—पु०झाड़ देने वाला।
झरसना—अक्रि०झुलसना।
झरहरना—अक्रि० 'झरझर' शब्द करना।
झरहरा—वि० जालीदार।
झरहराना—अक्रि०पत्ते आदि का खड़खड़ाना।
झराझर—क्रि०वि० 'झरझर' शब्द सहित। लगातार।
झरापना—सक्रि० झगड़ा करना।
झरिफ—स्त्री० परदा, चिक।
झरी—स्त्री० दे० 'झड़ी'।
झरोखा—पु० झँझरीदार छोटी खिड़की। [बाजा।
झर्झर—पु० 'झाँझ' नामक
झर्झरा—स्त्री०वेश्या। कुलटा।
झर्झरी—स्त्री० खँजरी।
झर्प—स्त्री० दे० 'झरप'।
झल—पु० जलन, आँच।
झलक—स्त्री०चमक,प्रकाश। प्रतिबिंब, छाया।
झलकदार—वि०चमकीला।
झलकना१—अक्रि०चमकना।
झलकनि—स्त्री० झलक।
झलका—पु० छाला।
झलकाना—सक्रि०चमकाना।
झलकी—स्त्री० चमक।
झलझल—स्त्री० चमक।
झलझलाना—अक्रि०चमकना। सक्रि० चमकाना।
झलझलाहट—स्त्री० चमक।
झलना१—सक्रि० हिलाना। (पंखा आदि)।
झलमल—पु० थोड़ा उजाला।
झलमला७—वि० चमकीला।
झलमलाना—अक्रि० चमचमाना।
झलरी—स्त्री०झाँझ(बाजा)।
झलहाया—पु० ईर्ष्यालु।
झला—पु० हलकी वर्षा। पंखा। बंदनवार। [हुआ।
झलाझल७—वि० चमचाता-
झलाबोर—पु० कारचोबी। चमक। वि० चमकदार।
झलामल—स्त्री० चमक।
झल्ल—स्त्री० सनक।
झल्लरी—स्त्री०'झाँझ' नाम का बाजा। झालर।
झल्ला—पु० बड़ा टोकरा।
झल्लाना—अक्रि० चिढ़ना। झुँझलाना।
झल्लिका—स्त्री० अँगोछा।
झवर, झवारि—स्त्री० झगड़ा।
झष—पु० मछली। [देव।
झषकेतु, झषकेतन—पु० काम-
झषराज—पु० नक्र, मगर।
झषांक—पु० अनिरुद्ध।
झषा—स्त्री० ककही, गँगेरन।
झहनना—अक्रि० झनझनाना।
झहनाना—सक्रि०झनकारना।
झहरना—अक्रि० 'झरझर' शब्द करना। शिथिल पड़ना। सक्रि०क्रुद्ध होना।
झहराना—अक्रि० शिथिल होकर गिरना। झलजाना।
झाँई—स्त्री० परछाईं। झलक। [ताकना।
झाँकना—अक्रि० आड़ से-
झाँकनी—स्त्री० झाँकी।
झाँकर—पु० झंखाड़।
झाँका—पु० झरोखा।
झाँकी—स्त्री० दर्शन। झरोखा।
झाँख—पु० एक बनैला मृग।

झाँखना—अक्रि० खीजना।
झाँखर—पु० कटिदार वनी-झाड़ियाँ।
झाँगला–वि०ढीला। [कुरता।
झाँगा—पु० बच्चों का ढीला-
झाँझ—स्त्री० एक बाजा। झाँझन। शैतानी।
झाँझड़ी—स्त्री० झाँझ।
झाँझन—स्त्री० पैर का एक-गहना।
झाँझर—स्त्री० झाँझन। छलनी। वि० पुराना। छिद्रयुक्त। [तथा गहना)।
झाँझरी—स्त्री०झाँझ (बाजा-
झाँझा—पु०झंझट। झाँझ। सेव आदि निकालने का पौना। [बजाने वाला।
झाँझिया—स्त्री० झाँझ-
झाँप—स्त्री०ढकने की वस्तु। झपकी। [अक्रि० झेंपना।
झाँपना—सक्रि० ढाँकना।
झाँपी–स्त्री०मूँज की पिटारी।
झाँवना—सक्रि० झाँवे से धोना।
झाँवर—स्त्री० डाबर। वि० शिथिल। झाँवा समान काला।
झाँवली—स्त्री० झलक। आँख का संकेत।
झाँवाँ--पु० जली हुई ईंट।
झाँसना-सक्रि० धोखा देना।
झाँसा--पु० धोखा।
झाँसिया—वि० झाँसा देने वाला।
झा—पु० ब्राह्मणों की एक उपाधि। [छाया।
झाँई—स्त्री० परछाईं,
झाऊ—पु० एक झाड़ी।
झाग—पु० फेन।
झागड़—पु० झगड़ा।
झाड़—पु० कँटीला सघन पेड़। एक प्रकार का लैम्प। ताँता। स्त्री० फटकार।
झाड़खंड—पु० जङ्गल।
झाड़झंखाड़—पु० कँटिदार-झाड़ियों का समूह। रद्दी-चीज़ें। [कँटीला।
झाड़दार—वि० सघन।
झाड़न–पु०झाड़नेका कपड़ा।
झाड़ना—सक्रि० छुड़ाना। साफ़ करना। डाँटना।
झाड़फ़ानूस—पु० शीशे के गिलास, हाँडियाँ जो रोशनी के काम में आती है।
झाड़फूँक—स्त्री० मंत्रादि द्वारा प्रेतबाधा दूर करने की क्रिया।
झाड़बुहार—स्त्री० सफ़ाई।
झाड़ा—पु० झाड़फूँक। तलाशी। मल।
झाड़ी—स्त्री० छोटे पेड़ों का समूह। टोंटीदार पात्र।
झाड़ू–पु० बुहारी। पुच्छल-तारा।
झाड़ूकश—पु० भङ्गी।
झाड़ूबरदार—पु० मेहतर।
झापड़—पु० थप्पड़।
झाबर—पु० दलदल।
झाबा—पु० टोकरा। झब्बा।
झाबुक—पु० झाऊ।
झाम—पु० गुच्छा। छल। बड़ा कुदाल।
झामर—वि० मलिन।
झामी—पु० छलिया।
झायँझायँ—स्त्री० सुनसान। स्थान की झनकार।
झार—वि० केवल। समस्त। पु० समूह। स्त्री० ईर्ष्या। अग्नि। [पर्वत।
झारखंड—पु० जंगल। एक-
झारझरस—स्त्री० उष्णता।
झारना—सक्रि०झटकारना। अलग करना। कङ्घी करना।
झारा—पु० तालाशी। सूप।
झारि—स्त्री० ज्वाला। जलन। वि० समस्त।
झारी—स्त्री०टोंटीदार पात्र। वि० समस्त। स्त्री०झाड़ी।
झाल—स्त्री०झाँझ। झड़ी। लपट। तीतापन। झौआ।
झालना—सक्रि० धातु की चीज़ों में टाँका लगाना।
झालर—स्त्री० हाशिये या किनारे पर लगाने की फुँदनेदार लड़ी। एक पकवान। झाँझ। घड़ियाल।
झालरना—अक्रि० फैलकर-छा जाना।
झावँ झावँ—स्त्री० बकवाद।
झावुक—पु० झाऊ।
झिगरना—अक्रि० झगड़ना।
झिगवा—स्त्री०एक मछली।
झिगुली—स्त्री० बच्चों का ढीला कुरता।
झिझिया—स्त्री० अधिक छिद्रों वाला घट।
झिंझी—स्त्री० झिल्ली।
झिंझोटी–स्त्री०एक रागिनी।
झिगरना–अक्रि० झगड़ना।

झिझक—स्त्री० झझक।
झिझकना—अक्रि० रुकना, ठिठकना, हिचकिचाना।
झिझकारना—सक्रि०दुत्कारना। उपेक्षा करना।
झिड़कना—सक्रि०घुड़कना।
झिड़की—स्त्री०घुड़की, डाट।
झिनवा—पु० एक धान। वि० झीना। [करना।
झिपाना—सक्रि० लज्जित-
झिर—स्त्री०कुएँ का सोता।
झिरझिर—क्रि० वि० 'झिर-झिर' शब्द के साथ मन्द-गति से। [पतला।
झिरझिरा७—वि० झँझरा,
झिरहर—वि० झँझरा।
झिलगा—पु० ढीली बुनी हुई खाट।
झिलना—अक्रि० प्रवेश-करना। सहा जाना। आक्रमण करना।
झिलम—स्त्री० एक प्रकार का शिरस्त्राण।
झिलमिल—स्त्री० हिलता-हुआ प्रकाश। लोहे का कवच। वि० चमचमाता हुआ। [चमकीला।
झिलमिला७—वि० महीन।
झिलमिलाना—अक्रि० रह-रह कर चमकना।
झिलमिली—स्त्री० परदा। कान का एक गहना।
झिल्लड़—वि०झीना (कपड़ा)।
झिल्लिका—स्त्री० झींगुर।
झिल्ली—पु०झींगुर। बहुत बारीक चमड़ा या तह।

झींक—पु० सिकहर, छींका।
झींखना—अक्रि० खीजना।
झींगा—पु० एक तरह की मछली।
झींगुर—पु० एक छोटा-कीड़ा।
झींवर—पु० धींवर, कहार।
झींसी—स्त्री०वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें।
झीठ—वि० झूठ।
झीड़ना—अक्रि० घुसना।
झीना—वि० पतला, सूक्ष्म।
झीनासारी—पु० एक चावल।
झीरुका—स्त्री० झींगुर।
झील—स्त्री० प्राकृतिक बड़ा-तालाब।
झीलर—पु० छोटी झील।
झीवर—पु०मल्लाह। धीवर।
झुँगना—पु० जुगनू।
झुँझना—पु० बजने वाला-खिलौना। [लाना।
झुँझलाना—अक्रि० खिझ-
झुंड—पु० समूह।
झुकना९—अक्रि० नवना।
झुकरना—अक्रि०झुँझलाना।
झुकराना—अक्रि० झोंका-खाना। [समय।
झुकामुखी—स्त्री० अंधेरे का-
झुकाव—पु० ढाल। रुख।
झुक्कावना—सक्रि०ठेलना।
झुटुंग—वि० जटाधारी।
झुठकाना—सक्रि० धोखा-देना। [बनाना।
झुठलाना—सक्रि० झूठा-
झुठवना—सक्रि० झूठा-बनाना।

झुठाई—स्त्री० झूठापन।
झुनक—पु०नूपुर का शब्द।
झुनकार७—वि० पतला।
झुनझुन—पु० नूपुर आदि का शब्द।
झुनझुना—पु० दे० 'झुँझना'।
झुनझुनाना—सक्रि० 'झुन-झुन' शब्द करना।
झुनझुनी—स्त्री० हाथ, पैर की एक प्रकार की सन-सनाहट। [एक गहना।
झुपझुपी—स्त्री० कान का-
झुपरी—स्त्री० झोंपड़ी।
झुमका, झूमका—पु० कान का एक गहना।
झुमिरना—अक्रि० झूमना।
झुरना९—अक्रि० सूखना।
झुरमुट—पु० पेड़, मनुष्य आदि का समूह।
झुरसना—अक्रि० झुलसना।
झुराना—सक्रि० सुखाना।
झुर्री—स्त्री० सिकुड़न।
झुलका—पु० घुनघुना।
झुलना—पु० झूला।
झुलनी—स्त्री० नथुनी का झुमका। [हुआ।
झुलमुला—वि० चमचमाता-
झुलसना९—अक्रि०झौंसना।
झुलाना—सक्रि० झूले में बैठाकर हिलाना। टालना।
झुलौआ—पु० कुरता।
झुहिरना—अक्रि०लादा जाना।
झूँक, झूक—पु० झोंका।
झूँखना—अक्रि० झींखना।
झूँझल—स्त्री० झुँझलाहट।
झूँटा—पु० केश-समूह।

झूसना—अक्रि० ठगना।
झूकटी—स्त्री०छोटी झाड़ी।
झूझ—पु० युद्ध।
झूझना—अक्रि०युद्ध करना।
झूठ—पु० असत्य बात।
झूठमूठ—क्रि० वि० व्यर्थ।
झूठा—वि० नक़ली। जूठा। मिथ्यावादी।
झूम—स्त्री०झूमने की क्रिया।
झूमक—पु० झूमर। गीत के साथ का स्त्रियों का नृत्य।
झूमकसाड़ी—स्त्री० वह साड़ी जिसमें मोती आदि के गुच्छे लगे हों।
झूमका—पु० गुच्छा। कान का एक गहना। [बात।
झूमड़झामड़—पु०व्यर्थ की
झूमना—अक्रि०झोंके खाना।
झूमर—पु० एक गीत। झुमका। [जलन।
झूर—वि०सूखा। ख़ाली। स्त्री०
झूरना—अक्रि० सूखना।
झूरा—पु० सूखा। घटी। वि० ख़ाली।
झूरै—क्रि० वि० व्यर्थ।
झूल—स्त्री० हाथी, घोड़े की पीठ का वस्त्र विशेष।

झूलन—पु० हिंडोला।
झूलना—पु० हिंडोला। एक छंद। अक्रि० इधर उधर हिलना।
झूलरि—स्त्री०लटकना हुआ झुमका। [गहना।
झला—पु० हिंडोला। एक-
झेंपना—अक्रि० शरमाना।
झेर—स्त्री० देर। झगड़ा।
झेरना—सक्रि० झेलना। अक्रि० शुरू करना।
झेरा—पु० झंझट।
झेल—स्त्री०विलम्ब। हिलोरा।
झेलना—सक्रि० सहना।
झोंक—स्त्री० प्रवृत्ति। वेग। झ का। [साथ फेंकना।
झोंकना—सक्रि० झटके के-
झोंका—पु०झटका। धक्का।
झोंकी—स्त्री० उत्तरदायित्व।
झोंटा७—पु०केश-समूह। पेंग।
झोंटिंग—वि० जटाधारी।
झोंटी—स्त्री०केश-समूह।
झोंपड़ा७—पु० कुटी।
झोंपा—पु० गुच्छा।
झोटा—पु०बालों का समूह।
झोर—पु० रसा, झोल।
झोरई—वि० रसेदार।

झोरना—सक्रि०झटका देकर हिलाना।
झोरि, झोरी—स्त्री०झोली।
झोल—पु०शोरबा। अंचल। गर्भ। भस्म। वि०ढीला। निकम्मा। [ढीला ढाला।
झोलदार—वि० रसेदार।
झोलना—सक्रि० जलाना।
झोला७—पु० कपड़े की बड़ी थैली। ढीला ढाला कुरता। धक्का।
झौंद—पु० पेट।
झौंर—पु० झुंड। झब्बा।
झौंरना—अक्रि० गूँजना। दौड़ कर पकड़ना।
झौंरा—पु० झुंड।
झौंराना—अक्रि० झूमना, हिलना। कुम्हलाना।
झौंसना—अक्रि० झुलसना।
झौड़,झौर—पु० हुज्जत, झगड़ा, फटकार।
झौरना—सक्रि०दबा लेना।
झौरा—पु० बखेड़ा।
झौरे—क्रि० वि० समीप। साथ।
झौवा—पु० छोटी टोकरी।
झौहाना—अक्रि० गुर्राना।

१०—ञ
११—ट

टंक—पु०चार माशे की तौल। सिक्का। छेनी। कुदाल।
टंकक—पु०चाँदी का सिक्का।
टंककशाला—स्त्री०टकसाल।

टंकण—पु० सुहागा। धातु की चीज़ में टाँका मारना।
टँकना९—अक्रि० टाँका जाना। सिला जाना।

टंकपति—पु० ख़ज़ानची।
टंकशाला—स्त्री० टकसाल।
टंका—स्त्री० जाँघ। एक प्राचीन सिक्का।

टँकाई–स्त्री० टाँकने की क्रिया या मज़दूरी।
टंकार–स्त्री० झनकार। धनुष की डोरी खींचने का शब्द।
टंकिका–स्त्री० छेनी। टाँकी।
टंकी–स्त्री० हौज़। पानी भरने का बड़ा बर्तन।
टंकोर–पु० धनुःटंकार।
टंकोरना–सक्रि० धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना।
टँकोरी–स्त्री० सोना तौलने का काँटा। [सुहागा।
टंग–पु० फ़रसा। टाँग।
टँगड़ी–स्त्री० टांग।
टँगना–अक्रि० लटकना।
टँगारी–स्त्री० कुल्हाड़ी।
टंच–वि० कंजूस। नीच। तैयार।
टंटघंट–पु० ढकोसला।
टंटा–पु० झगड़ा।
टँडिया–स्त्री० बहूँटा' नामक गहना। [मुखिया।
टँडैल–पु० मज़दूरों का
टई–स्त्री० युक्ति। काम।
टक–स्त्री० स्थिर-दृष्टि से देखना।
टकटका७–पु० दे० 'टक'।
टकटकाना–सक्रि० एक टक ताकना।
टकटोना, टकटोरना–सक्रि० टटोलना, खोजना।
टकटोहना–सक्रि०टटोलना
टकराना–अक्रि० किसी से वेग के साथ भिड़ना। मारा-मारा फिरना। सक्रि०टक्कर मारना।
टकसाल–स्त्री०सिक्का ढालने का स्थान।
टकसाली–वि० टकसाल-संबंधी। खरा। प्रामाणिक।
टकहाई–स्त्री० कुलटा स्त्री।
टका–पु० रुपया। अधन्ना।
टकासी–स्त्री०रुपये का सूद।
टकुआ–पु०चरखे का तकला। छेनी। तराज़ू के पलड़ों की रस्सी।
टकुली–स्त्री०छेनी। टाँकी।
टकैत–वि० धनी, संपन्न।
टकोर–स्त्री० टंकार।
टकोरना–सक्रि० सेंकना।
टकोरी–स्त्री० टक्कर।
टकौरी–स्त्री०दे० 'टँकोरी'।
टक्कर–स्त्री०ठोकर। मुठभेड़।
टखना–पु० पाँव का गट्ठा।
टगर–पु०क्रीड़ा। सुहागा। टीला।
टघरना९–अक्रि०पिघलना।
टचटच–क्रि०वि० 'धायँ धायँ' के साथ।
टटका–वि० ताज़ा, नया।
टटकाई–स्त्री० ताज़ापन।
टट्टावली–स्त्री० टिटिहरी।
टटिया–स्त्री० टट्टी।
टटीबा–पु० चक्कर।
टटीरी–स्त्री० टिटिहरी।
टटुआ–पु० टट्टू।
टटोलना–सक्रि० ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर हाथ फेरना। [टटोलना।
टटोहना–सक्रि०स्पर्श करना।
टट्टर–पु० टटिया।
टट्टरी–स्त्री० ठट्ठा। डींग। नगाड़े का शब्द।
टट्टी–स्त्री०पाखाना। टटिया।
टट्टू–पु० छोटा घोड़ा।
टड़िया–स्त्री० बाँह का एक गहना।
टन–पु० (अं०) २८ मन की तौल। (हिं०)घंटे की ध्वनि।
टनकना–अक्रि०टनटन बजना।
टनटन–स्त्री०घंटे का शब्द।
टनटनाना–अक्रि० टनटन-शब्द करना।
टनमन–पु० जादू।
टनमना–वि० चंगा।
टनाका–पु० घंटे का शब्द। वि० तेज़ (धूप)।
टनाटन–क्रि० वि० 'टनटन' शब्द के साथ। पु० निरंतर टनटन की आवाज़।
टप–पु० खुली गाड़ियों का ओहार, परदा।
टपकना९–अक्रि० बूँद-बूँद गिरना, चुअना। [गिरना।
टपका–पु० बूँदबूँद-
टपका-टपकी–स्त्री० एक एक करके गिरना।
टपरा–पु० छप्पर।
टपाटप–क्रि० वि० शीघ्रता से। लगातार।
टपाना–सक्रि० फँदाना।
टप्पा–पु० एक गाना। छलाँग। अंतर।
टब–पु० (अं०) नाँद के आकार का एक बरतन।
टब्बर–पु० परिवार।
टमकना–अक्रि० टपकना।
टमकी–स्त्री० डुग्गी।

टमटम—स्त्री० एक खुला हलकी घोड़ागाड़ी ।
टमटी—स्त्री० बर्त्तन विशेष।
टमाटर—पु० विलायती बैंगन ।
टर—स्त्री० कर्कश बोली । मेंढक का शब्द । हठ ।
टरकना१—अक्रि० खिसकना ।
टरकुल—वि० मामूली ।
टरटराना—अक्रि० टर-टर बोलना ।
टरना, टराना, टलना—अक्रि० हटना, खिसकना ।
टर्रा—वि० कटुवादी ।
टर्राना—अक्रि० कठोरता से बोलना ।
टलाटली—स्त्री० टालमटोल ।
टल्लेनवीसी—स्त्री० निठल्लापन । [अक्षर ।
टवर्ग—पु० 'ट' से 'ण' तक के
टवाई—स्त्री० बेमतलब घूमना
टस—स्त्री० किसी वस्तु के हटने की ध्वनि ।
टसक—स्त्री० कसक, टीस ।
टसकना—अक्रि० खिसकना । टीस मारना ।
टसकाना—सक्रि० हटाना ।
टसर—पु० एक मोटा रेशम ।
टस से मस—वि० ज़रा भी न हटा हुआ ।
टसुआ—पु० आँसू ।
टहकना—अक्रि० पिघलना । दर्द करना ।
टहटहा—वि० सुन्दर । ताज़ा ।
टहनी—स्त्री० डाली ।
टहरना—अक्रि० टहलना ।
टहल—स्त्री० सेवा ।
टहलटकोर—स्त्री० सेवा कर्म ।
टहलना१—अक्रि० घूमना, सैर करना ।
टहलनी—स्त्री० दासी ।
टहलुआ—पु० सेवक, नौकर ।
टहूका—पु० चुटकुला ।
टाँक—स्त्री० लिखावट । जाँच । चार माशे की तौल ।
टाँकना—सक्रि० जोड़ना । सीना । दर्ज करना ।
टाँका—पु० सिलाई । जोड़ । हौज़ ।
टाँकी—स्त्री० छेनी ।
टाँकीबंद—वि० दीवार आदि के पत्थर जो कील सीसे आदि से जोड़े जाते हैं ।
टाँग—स्त्री० एड़ी से घुटने तक का भाग ।
टाँगन—पु० पहाड़ी टट्टू ।
टाँगना—सक्रि० लटकाना ।
टाँगा७—पु० बड़ी कुल्हाड़ी ।
टाँघन—पु० पहाड़ी टट्टू ।
टाँच—स्त्री० टाँका, सियन ।
टाँचना—सक्रि० टाँकना, सीना ।
टाँचो—स्त्री० बसनी ।
टाँठ, टाँठा—वि० कड़ा । पुष्ट, दृढ़ ।
टाँड़—स्त्री० लकड़ी का पाटन । बाहु का एक गहना ।
टाँड़ा—पु० बनजारों, तथा व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड ।
टाँड़ी—स्त्री० टिड्डी ।
टाँय-टाँय—स्त्री० निरर्थकवाद ।
टाइटिल—पु० (अं०) पदवी । खिताब । पुस्तक का ऊपरी पृष्ठ । [ढले अक्षर ।
टाइप—पु० (अं०) सीसे के
टाइपराइटर—पु० (अं०) टाइप के अक्षर छापने की एक मशीन ।
टाइपिस्ट—पु० (अं०) टाइपराइटर पर काम करने वाला ।
टाइम—पु० (अं०) समय ।
टाइमटेबिल—पु० (अं०) समय-विभाग । [घड़ी ।
टाइमपीस—पु० (अं०) एक
टाउन—पु० (अं०) शहर ।
टाउनएरिया—स्त्री० (अं०) क़स्बे की म्युनिसिपैलिटी ।
टाउनड्यूटी—स्त्री० (अं०) चुंगी ।
टाउनहाल—पु० (अं०) नगर का प्रधान सभा-भवन ।
टाकू—पु० तकुआ ।
टाट—पु० सन का मोटा कपड़ा । बिछावन ।
टाटक—वि० ताज़ा, नया ।
टाटर—पु० टट्टर । खोपड़ी ।
टाटिका—स्त्री० टटिया ।
टाठी—स्त्री० थाली ।
टाड़—स्त्री० बाँह पर पहनने का एक गहना ।
टान—स्त्री० तनाव, खिंचाव ।
टानना—सक्रि० खींचना ।
टाप—स्त्री० घोड़े का सुम ।
टापड़—पु० परती । भूमि ।
टापना—अक्रि० हैरान होना । सक्रि० कूदना ।

टापा—पु० झाबा। मैदान। छलाँग।
टापू—पु० द्वीप।
टाबर—पु० बालक।
टामक—पु०. डुग्गी।
टामन—पु० टोटका।
टारना—सक्रि०दे०'टालना'।
टाल—स्त्री० ऊँचा ढेर। राशि।
टालटूल, टालमटूल—स्त्री० बहाना, टरकाना।
टालना—सक्रि० हटाना। दूर करना। स्थगित करना। बिताना। [की घंटी।
टाली—स्त्री०पशुओं के गले-
टावर—पु० (अं०) मीनार।
टाहला—पु०नौकर। [दवा।
टिंचर—पु०(अं०)एक अँग्रेज़ी
टिकट—पु०(अं०) कहीं जाने आने का अधिकार-पत्र।
टिकटिकी—स्त्री० टिकटी। एकटक देखना।
टिकठी—स्त्री० शव ले जाने की अर्थी। तिपाई।
टिकना०—अक्रि० ठहरना।
टिकरी—स्त्री० मोटी रोटी, टिकिया। एक पकवान।
टिकली—स्त्री०छोटी टिकिया। माथे की बेंदी।
टिकाऊ—वि० मज़बूत।
टिकान—स्त्री० पड़ाव।
टिकाव—पु० ठहराव, पड़ाव।
टिकासर—पु० वासस्थान।
टिकिया—स्त्री० गोल चपटा-टुकड़ा।
टिकुरी—स्त्री० तकली।
टिकैत—पु०युवराज। सरदार।

टिकोरा—पु० आम का नया तथा छोटा फल।
टिक्कड—पु० बाटी (रोटी)।
टिक्की—स्त्री०टिकिया। बाटी।
टिघलना—अक्रि० पिघलना।
टिचन—वि०तैयार, दुरुस्त।
टिट—स्त्री० टेक, हठ।
टिटिहरी—स्त्री० जल के पास रहने वाली एक चिड़िया।
टिटिहा—पु० टिटिहरी (नर)।
टिटिहारोर—पु०शोर, हल्ला।
टिट्टिभ,टिट्टिभक—पु०टिटिहा।
टिड्डी—स्त्री० एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा।
टिढ़बिंगा—वि० टेढ़ा मेढ़ा।
टिपका—पु० बिन्दु।
टिपवाना—सक्रि० दबवाना। लिखाना। [की टोपी
टिपारा—पु० ऊँची दीवार-
टिपुर—पु०ढोंग। अभिमान।
टिप्पणी—स्त्री० व्याख्या। वक्तव्य। कैफ़ियत।
टिप्पन—पु०टीका। व्याख्या। जन्मकुंडली। [प्रकाश देना।
टिमटिमाना—अक्रि० मंद-
टिमाक—पु० बनाव।
टिरफिस—स्त्री० विरोध। ढिठाई। [पन। बहाना।
टिल्लेनवीसी—स्त्री० निठाला
टिहुकना—अक्रि० रूँठना। चौंकना। पु० रूँठने वाला
टिहुक—स्त्री०चौंकना। चमक।
टिहुनी—स्त्री० कोहनी।
टी—स्त्री० (अं०) चाय।
टीक—स्त्री० सिर या गले में पहनने का एक गहना।

टीकना—सक्रि०टीका लगाना।
टीका—पु० तिलक। श्रेष्ठ-व्यक्ति। राज्यतिलक। सुई द्वारा चेप शरीर में प्रविष्ट कराने की क्रिया।
टीकाकार—पु० व्याख्या करने वाला।
टीचर—पु० (अं०) शिक्षक।
टीन—पु० क़लईदार लोहे की चद्दर। राँगा। [कुंडली।
टीप—स्त्री० दबाव। जन्म-
टीपटाप—स्त्री० सजावट।
टीपन—पु० जन्मपत्री।
टीपना—सक्रि० लिखना। दबाना। स्त्री० जन्मपत्री।
टीबा—पु० टीला। ऊँची-ज़मीन।
टीमटाम—स्त्री० तड़क-भड़क।
टीला—पु० पहाड़ी। ऊँची-भूमि।
टीस—स्त्री०रसक। [दर्द होना।
टीसना—अक्रि०रुक-रुक कर-
टुँगना—अक्रि० कुतरना।
टुच—वि० तुच्छ। [लूला।
टुंटा,टुंडा—वि० टूँठा।
टुंडि—स्त्री० नाभि। तोंद।
टुइयाँ—वि० नाटा। एक छोटा तोता।
टुक—वि० थोड़ा।
टुकड़तोड—वि० दूसरे के टुकड़ों पर जीवित रहने वाला व्यक्ति।
टुकड़ा—पु० खंड, भाग।
टुकड़ी—स्त्री० खंड। दल।
टुच्चा—वि० तुच्छ।
टुटका—पु० टोना।

टुटपुँजिया—पुं० कम पूँजी वाला व्यक्ति।
टुटरूटूँ—स्त्री० पंडुकी का शब्द। वि० अकेला।
टुड़ी—स्त्री० नाभि, तुंदी।
टुनगी—स्त्री० फुनगी।
टुनिहाई—स्त्री० टोना करने वाली, डायन।
टुर्रा—पु० डली, दाना, कण।
टूँगना—सक्रि० कुतरना।
टूँड़—पु० मच्छर आदि की सूँड़। जौ आदि के दाने के ऊपर का नुकीला भाग।
टूँड़ी—स्त्री० नाभि। नोक।
टूक—पु० टुकड़ा। [झपटना।
टूट, टूटा—वि० खंडित।
टूटना—अक्रि० टुकड़े होना।
टूटना—अक्रि० खंडित होना।
टूठना—अक्रि० संतुष्ट होना।
टूम—स्त्री० गहना। ताना।
टूरनामेंट—पु० (अं०) दंगल (खेल)।
टूस—पु० एक कपड़ा।
टूसी—स्त्री० कली, कोंपल।
टेंट—स्त्री० मुर्री। करील-वृक्ष या उसका फल।
टेंटर—पु० ढेंढर।
टेंटिहा—वि० हर बात में झगड़ने वाला। [पु० हुज्जती।
टेंटी—स्त्री० करील का फल।
टेंटुवा—पु० गला। अँगूठा।
टेंटें—स्त्री० तोते की बोली। व्यर्थ की बकवाद।
टेंपरेचर—पु० (अं०) तापमान।
टेउकी—स्त्री० लुढ़कने वाली वस्तु की रोक।
टेक—स्त्री० आश्रय। हठ। आदत। प्रतिज्ञा।
टेकना—सक्रि० सहारा लेना।
टेकरा७—पु० टीला, पहाड़ी।
टेकान—स्त्री० बोझ टिकाने की ऊँची जगह। चाँड।
टेकाना—सक्रि० दीवार आदि के सहारे खड़ा करना।
टेकी—पु० हठी।
टेकुआ—पुं० तकला।
टेकुरी—स्त्री० सूआ। तकली।
टेढ़, टेढ़ा७—वि० वक्र। असाधु। पेचीदा
टेना—सक्रि० धार तेज़ करने के लिए पत्थर पर घिसना।
टेनिस—पु० (अं०) गेंद का एक खेल।
टेबुल—पु० (अं०) मेज़।
टेम—स्त्री० दिये की लौ।
टेर—स्त्री० तान। पुकार।
टेरना—सक्रि० ऊँचे स्वर से पुकारना।
टेरी—स्त्री० शाखा।
टेलिग्राफ़—पु० (अं०) तार से समाचार भेजना।
टेलिग्राम—पु० (अं०) तार का समाचार। [दूरबीन।
टेलिसकोप—पु० (अं०)
टेलीफ़ून—पु० (अं०) शब्द को दूर भेजने की कल।
टेव—स्त्री० आदत।
टेवकी—स्त्री० खंभा, सहारा।
टेवा—पु० जन्मपत्री। [वाला।
टेवैया—पु० धार पैनी करने-
टेसू—पु० पलाश, ढाक।
टेहला—पु० विवाह की रीति-विशेष।
टैंटी—स्त्री० करील-फल।
टैक्स—पु० (अं०) महसूल।
टैक्सी—स्त्री० (अं०) किराये पर चलने वाली मोटर।
टोंचना—सक्रि० गड़ाना। पु० उलहना।
टोंट—स्त्री० चोंच। [हुई नली।
टोंटा७—पु० बरतन में लगी-
टोइयाँ—स्त्री० तोता (मादा)।
टोकना—सक्रि० बीच में बोलना। पु० झौवा।
टोकनी—स्त्री० देगची।
टोकरी—स्त्री० खँचिया।
टोटका—पु० टोना, मंत्र-तंत्र।
टोटकाहाई—स्त्री० टोटका-करने वाली। [मीज़ान।
टोटल—पु० (अं०) जोड़,
टोटा—पु० कारतूस। हानि।
टोनहा७—वि० जादू करने-वाला।
टोनहाई—स्त्री० जादूगरनी।
टोना—पु० जादू, मंत्रतंत्र।
टोप—पु० बड़ी टोपी। [खाेल।
टोपा—पु० बड़ी टोपी। शिर-
टोपी—स्त्री० सिर का पहनावा।
टोभ—पु० टाँका।
टोर—स्त्री० कटारी।
टोरना—सक्रि० तोड़ना।
टोल—स्त्री० मंडली। पाठ-शाला। रोड़ा, टुकड़ा। आघात, प्रहार।
टोला—पु० मुहल्ला।
टोली—स्त्री० छोटा मुहल्ला। समूह।

थूक—पु० मुँह से निकलने वाला एक रस।
थूकना—अक्रि० मुँह से थूक निकालना।
थूथन–पु० लंबा निकला हुआ- [मुँह।
थून–पु०, थूनी–स्त्री० खंभा।
थूरना—सक्रि० कूटना।
थूल—वि० मोटा।
थूला७—वि० मोटा।
थूली—स्त्री० दलिया। सूजी।
थूवा, थूहा—पु० टीला।
थूहड़—पु० सेंहुड़।
थूहा—पु० ढूह, टीला।
थैंथर—वि० हैरान, थका-हुआ।
थेगली—स्त्री० पैवंद।
थेबा–पु० नग, हीरा आदि।
थैला—पु० बड़ी थैली।
थैली—स्त्री० छोटा थैला।
थोक–पु० ढेर, राशि, समूह।
थोड़ा७—वि० अल्प।
थोथरा—पु० दे० 'थोथा'।
थोथा७—पु० पीला।
थोपड़ी—स्त्री० चपत।
थोपना—सक्रि० थापना।
थोबड़ा—पु० थूथन।
थोरिक—वि० थोड़ा सा।
थौंद—स्त्री० तोंद।
थ्यावस—पु० स्थिरता।
थ्रू—अव्य० (अं०) द्वारा।

१८—द

दंग—वि० (फ़ा०) विस्मित। पु० शंका।
दंगई—वि० फ़िसादी।
दंगल—पु० (फ़ा०) मल्लयुद्ध का स्थान। दल। मोटा-गद्दा। ऊधम।
दंगली—वि० उपद्रवी।
दंगा—पु० (फ़ा०) झगड़ा, उपद्रव।
दंड—पु० डंडा। कसरत। सज़ा। साठ पल का समय।
दंडक—पु० डंडा। शासक। एक वन।
दंडकारण्य—पु० विंध्याचल के दक्षिण का प्रदेश।
दंडधर—पु० शासनकर्त्ता। यति। यमराज। [संन्यासी।
दंडधार–पु० राजा। यमराज।
दंडनङ्—पु० शासन। सज़ा।
दंडना—सक्रि० दंड देना।
दंडनायक—पु० सेनापति। हाकिम।
दंडनीति—स्त्री० दंड द्वारा शासन में रखने की नीति। क़ानून फ़ौजदारी।
दंडनीय—वि० दंड देने-योग्य।
दंड-न्यायालय–पु० अदालत-फ़ौजदारी।
दंडपांशुल—पु० द्वारपाल।
दंडपाणि—पु० यमराज।
दंडपाशक—पु० जल्लाद।
दंडमान—वि० सज़ा पाया हुआ। सज़ा के योग्य।
दंडवत्–स्त्री० साष्टांग प्रणाम।
दंडविधि–स्त्री० दंड-सम्बन्धी-व्यवस्था।
दंडविष्कंभ—पु० रई बाँधने का डंडा। [सीधा खड़ा।
दंडायमान—वि० डंडा जैसा-
दंडालय—पु० न्यायालय।
दंडाश्रमन—पु० संन्यासी का धर्म।
दंडाहत—पु० मट्ठा।
दंडिका—स्त्री० बीस अक्षरों वाली वर्ण-वृत्ति। [हुआ।
दंडित—वि० दंड पाया-
दंडी—पु० दंड-धारक-संन्यासी, द्वार-रक्षक। शिवजी।
डंड्य—वि० दंडनीय।
दंत—पु० दाँत।
दंतकथा—स्त्री० जनश्रुति। कल्पित कथा।
दंतकाष्ठ—पु० दँतुवन।
दंतच्छद—पु० ओष्ठ।
दंतछत—पु० दाँत से काटने का घाव।
दंतधावन—पु० दतौन। दाँतुन करने की क्रिया।
दंतपत्र—पु० कुंडल।
दंतपिष्ट—वि० चबाया हुआ।
दंतबीज—पु० अनार।
दंतभाग—पु० हाथी के आगे का भाग।
दंतमांस—पु० मसूड़ा।

दंतशठ—पु० कैथा। जम्बीरी-नीबू।
दंतायुध—पु० जंगली सूअर।
दंतार—वि० बड़े दाँत वाला। पु० हाथी।
दंताल—पु० हाथी।
दंतालिका—स्त्री० लगाम।
दंतावल—पु० हाथी। [दाँत।
दंतिया—स्त्री० बच्चों के छोटे-
दंति, दंती—पु० हाथी।
दंतीफल—पु० पिस्ता।
दँतुरिया—स्त्री० बच्चों के छोटे-छोटे दाँत।
दँतुला—वि० जिसके दाँत निकले हों।
दंतोष्ठ्य—वि० दाँत और ओष्ठ से उच्चारण होने वाला वर्ण।
दंत्य—वि० दाँत-संबन्धी।
दंद—पु० झगड़ा। गरमी।
दंदन६—पु० दमन-कर्त्ता।
दंदाँ—पु० (फ़ा०) दाँत।
दंदान—पु० (फ़ा०) दाँत।
दंदाना—पु० (फ़ा०) दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति।
दंदारू—पु० फफोला।
दंदी—वि० झगड़ालू।
दंपति, दंपती—पु० पतिपत्नी।
दंपा—स्त्री० बिजली।
दंभ—पु० घमंड। पाखंड।
दंभी—वि० पाखंडी। अभिमानी।
दंभोलि—पु० वज्र।
दँवरी—स्त्री० बैलों से हँदवाना, दाँयँ।

दँवारि—स्त्री० वनाग्नि।
दंश१२—पु० दाँत। दाँत से काटने की क्रिया या घाव। व्यंग्य। डंक। डाँस।
दंशन—पु० डसना। [काटना
दंशना—सक्रि० दाँत से-
दंशित—वि० दाँत से काटा हुआ।
दंशी—पु० दंशक।
दंष्ट्र—पु० दाँत, दाढ़।
दंष्ट्रा—स्त्री० दाढ़। बड़ा-दाँत। [वाला।
दंष्ट्राल—वि० बड़े-बड़े दाँतों-
दंष्ट्री—वि० बड़े दाँतों वाला पु० सूअर। सर्प।
दइत—पु० दैत्य।
दई—पु० प्रारब्ध, दैव।
दईमारा७—वि० अभागा।
दक़ियानूस—पु० (अ०) फ़ारस और अरब का एक पुराना बादशाह। वि० बहुत बुड्ढा। पुराना।
दक़ियानूसी—वि० (अ०) पुराने विचार का। बहुत-पुराना।
दक़ीक़—वि० (अ०) बारीक। कोमल। कठिन।
दक़ीक़ा—पु० (अ०) उपाय। सूक्ष्म बात। बारीक।
दक़ीक़ारस—वि० (अ० फ़ा०) सूक्ष्मदर्शी।
दक्खिन—पु० दक्षिण।
दक्ष—वि० चतुर। दायाँ। पु० एक प्रजापति।
दक्षकन्या—स्त्री० सती।
दक्षजा—स्त्री० सती, उमा।
दक्षता—स्त्री० निपुणता।

दक्षा—स्त्री० निपुणता। पृथ्वी।
दक्षिण६—वि० दाहिना। अनुकूल। पु० उत्तर के सम्मुख की दिशा।
दक्षिणपरा—पु० नैर्ऋत्यकोण।
दक्षिणस्थ—पु० सारथी।
दक्षिणा—स्त्री० दक्षिण दिशा। दान, भेंट। [पर्वत।
दक्षिणाचल—पु० मलय-
दक्षिणाभिमुख—वि० दक्षिण की ओर जिसका रुख हो।
दक्षिणायन—वि० भूमध्य-रेखा से दक्षिण की ओर।
दक्षिणावह—पु० दक्खिनी-हवा। [दान के योग्य।
दक्षिणीय—वि० दक्षिणा का।
दख़ल—पु० (अ०) अधिकार। प्रवेश।
दख़लदिहानी—स्त्री० (अ०) दख़ल दिलाने का कार्य।
दख़लनामा—पु० (अ०) दख़ल दिलाने का आज्ञा-पत्र।
दखन—पु० दे० 'दक्षिण'।
दख़ील—वि० (अ०) दख़ल रखने वाला।
दख़ीलकार२—पु० (अ० फ़ा०) कम से कम बारह वर्ष तक ज़मीन पर दख़ल रखने वाला आसामी।
दगड़—पु० ढोल विशेष।
दग़दग़ा—पु० (अ०) डर, संदेह। काग़ज़ की बनी एक प्रकार की लालटेन। वि० चमकीला।
दगदगाना—अक्रि० चमकना। सक्रि० चमकाना।

दगदगाहट—स्त्री० चमक, प्रकाश।
दगधना—अक्रि० जलना। सक्रि० जलाना। ठगना।
दगना९—अक्रि० जलना। दागा जाना। सक्रि० दागना।
दगरा—पु० विलंब। मार्ग।
दग़ल—पु० (अ०) छल, कपट।
दगला६—पु० लबादा।
दगवाना—अक्रि० दगाना।
दगहा—वि० दाग़ी।
दग़ा—स्त्री० (अ०) छल, धोखा। [धोखेबाज़।
दग़ादार—पु० (फ़ा०)
दग़ाबाज़२—वि०(फ़ा०)छली।
दगैल—पु० दग़ाबाज़।
दग्ध—वि० जला हुआ। दुःखित। [पश्चिम-दिशा।
दग्धा—स्त्री० अशुभ तिथि।
दग्धाक्षर—पु० झ, ह, र, भ, ष, ये पाँच अक्षर छन्दारम्भ में निषिद्ध माने गये हैं।
दग्धित—वि० संतापित, दुःखी, जलाया हुआ।
दग्धोदर—वि० भूखा।
दचकना—अक्रि०धक्का खाना। दब जाना। सक्रि० धक्का-देना। दबाना।
दचका—पु० धक्का, ठोकर।
दचना—अक्रि० गिरना।
दच्छ—पु० दे० 'दक्ष'।
दच्छिन—दे० 'दक्षिण'।
दज्जाल—पु० (अ०) काना। दुष्ट। मुसलमानों के मतानुसार एक काना जो पजला नदी से उत्पन्न होगा।
दढ़ना—अक्रि० जलना।
दढ़ियल—वि० दाढ़ी वाला।
दतवन—स्त्री० दंतधावन।
दतारा—वि० बड़े दाँत वाला।
दतौन—स्त्री० दंतधावन।
दत्त—वि० दिया हुआ।
दत्तक—पु०गोद लिया हुआ पुत्र। [दिये हुए।
दत्तचित्त—वि० कार्य में चित्त-
दत्ता—स्त्री०विवाहिता कन्या।
दत्त रमा—पु० जो स्वयं किसी का दत्तक-पुत्र बने।
दत्तात्रेय—पु० अनुसूया के गर्भ से उत्पन्न एक ऋषि।
दत्रिम—पु० दत्तक-पुत्र।
ददा—पु० दादा। बड़ा भाई। (तु०) दाई।
ददियाससुर—पु० ससुर का पिता।
ददिहाल—पु० दादा का घर।
ददोरा—पु० चकत्ता।
दद्रु—पु० दाद।
दद्रुघ्न—पु० बाकला।
दधि—पु० दही। समुद्र।
दधिकाँदो—पु० एक उत्सव जिसमें दही एक दूसरे पर फेंका जाता है। [चन्द्रमा।
दधिजात—पु० मक्खन।
दधित्थ—पु० कैथा।
दधिफल—पु० कैथा।
दधिमुख—पु० सुग्रीव का मामा। शिशु।
दधिरिपु—पु० अगस्त्य-मुनि।
दधिसार—पु० मक्खन।
दधिसुत—पु०कमल। मोती। चन्द्रमा। मक्खन। विष। जालंधर दैत्य।
दधिसुता—स्त्री० सीप।
दधिस्नेह—पु० दही की मलाई।
दधिस्वेद—पु० मट्ठा।
दधीचि—पु०एक वैदिक ऋषि।
दनादन—क्रि० वि० 'दनदन' शब्द के साथ।
दनु—स्त्री०दानवों की माता।
दनुज३-४—पु० राक्षस।
दनुजराय—पु० दानवों का राजा।
दनुजात—पु० राक्षश।
दनुजारि—पु० देवता।
दनुजेंद्र—पु० रावण।
दपटना—सक्रि० डाँटना।
दपु—पु० दर्प, घमंड।
दफ़—स्त्री० (फ़ा०) 'डफ़' नाम का बाजा। पु०ज़हर। जोश। ग़ुस्सा। [पट्ठा।
दफ़्ती—स्त्री० (अ०) गत्ता,
दफ़न—पु० (अ०) मुरदे को ज़मीन में गाड़ने की क्रिया।
दफ़नाना—सक्रि० मुर्दा-गाड़ना।
दफ़ा—स्त्री० (अ०) बार। क़ानून का कोई भाग, धारा।
दफ़ातन्—क्रि० वि० (अ०) एकबारगी।
दफ़ादार—पु० (अ० फ़ा०) सैनिकों का अफ़सर।
दफ़ाली—पु० (फ़ा०)डफ़ला-ताशा आदि बजाने वाला।
दफ़ीना—पु० (अ०) गड़ा

हुआ घन।
दफ़्तर–पु०(फ़ा०)कार्यालय।
दफ़्तरी—पु० (फ़ा०) जिल्द-साज़।
दबंग–वि० रोबीला। गँवार।
दबक—स्त्री० सिकुड़न।
दबकना९—अक्रि० छिपना। सक्रि० डपटना।
दबगर—पु० ढाल तथा चमड़े के कुप्पे बनाने वाला।
दबदबा—पु०(अ०) आतंक।
दबना९—अक्रि० पीछे-हटना। बोझ के नीचे पड़ना। झुकना। [याभाव।
दबाव—पु०दबाने की क्रिया-
दबिस्ताँ—पु० (फ़ा०) शिक्ष-णालय। [मोटा।
दबीज़—वि० (अ०) मज़बूत,
दबीर—पु० (फ़ा०) मुंशी।
दबेपाँव—क्रि० वि० धीरे-धीरे। [वाला।
दबैल—वि० दबने या डरने-
दबोचना—सक्रि० दबाना। छिपाना।
दबोरना—सक्रि० दबाना।
दभ्र—वि० अल्प, सूक्ष्म।
दमंकना—अक्रि० चमकना।
दम—पु० (फ़ा०) साँस। प्राण। पल। [दमन-कर्त्ता।
दमक—स्त्री० चमक। पु०
दम-क़दम—पु० (फ़ा०) जीवन और अस्तित्व।
दमकना—अक्रि० चमकना।
दमकल—स्त्री० आग बुझाने का पंप।
दमकला—पु० रंग आदि छिड़कने की पिचकारी। दमचूल्हा। [प्राण।
दमख़म—पु० (फ़ा०) शक्ति,
दमचूल्हा—पु० एक प्रकार का जालीदार चूल्हा।
दमड़ी–स्त्री० पैसे का आठवाँ-भाग।
दमदमा८—पु० (फ़ा०) मोरचा। चापलूसी। पर-कोटा (क़िले का)। नगाड़ा। फ़रेब। [दार। मज़बूत।
दमदार—वि०(फ़ा०) जान-
दम-दिलासा–पु० (फ़ा०) तसल्ली, थोथी बातें।
दमन—पु० दंड। दबाने की क्रिया। द्रोण-पुष्प की बेल।
दमनक—वि० दमन करने वाला।
दमनशील३—वि० दमन-करने वाला।
दमना—सक्रि० दमन करना।
दमनी—स्त्री० शर्म, संकोच।
दमनीय—वि० दमन के योग्य। [धोखा।
दमपट्टी—स्त्री० झाँसा,
दमपुख़्त—वि० (फ़ा०) जो बरतन मुँह बन्द करके आग पर पकाया जाता है।
दम-ब-ख़ुद—वि० (फ़ा०) बिल्कुल मौन, चुप।
दम-ब-दम–क्रि० वि० (फ़ा०) थोड़ी थोड़ी देर पर।
दमबाज़—वि० (फ़ा०) धोखेबाज़।
दमयंती—स्त्री० राज नल की स्त्री।
दमसाज़—वि०(फ़ा०) दिली-दोस्त। [का रोग।
दमा—पु० (फ़ा०) साँस-
दमाद—पु० जामाता।
दमादम—क्रि० वि० लगा-तार। [समूह।
दमानक—पु० तोपों का-
दमामा—पु०(फ़ा०) नगाड़ा।
दमारि—स्त्री० दावानल।
दमावति—स्त्री० दमयंती।
दमी—वि० दमनीय। स्त्री० (फ़ा०) छोटा हुक़्क़ा विशेष।
दमेनक़द—क्रि० वि० (फ़ा०) अकेले। [वाला।
दमैया—वि० नाश करने-
दम्य—वि० दमन के योग्य।
दया—स्त्री० रहम, कृपा।
दयानत—स्त्री० (अ०) ईमान।
दयानतदार२—वि० (अ०) ईमानदार, सच्चा।
दयाना–अक्रि० दयालु होना।
दयानिधि, दयानिधान—पु० अति दयालु। [योग्य।
दयापात्र—पु० दया के-
दयामय—वि० दया से पूर्ण।
दयार—वि० दयावान्। पु० (अ०) प्रदेश।
दयार्द्र—वि० दयालु।
दयालु३—वि० दया करने-वाला। [योग्य।
दयावना७—वि० दया के-
दयावान्१३—वि० दयालु।
दयाशील—वि० दयालु।
दयासागर—पु० अत्यन्त-दयालु।

दयित४–पु०पति।वि० प्रिय।
दर—स्त्री० भाव। दल। मंज़िल, खंड। क़दर। पु० (फ़ा०) दरवाज़ा। अव्य० अन्दर, में।
दरआमद—स्त्री० (फ़ा०) आगमन, आयात।
दरक—वि० डरपोक। स्त्री० दरार। [चिरना।
दरकना१—अक्रि० फटना,
दरका—पु० दरार।
दरकार–स्त्री० (फ़ा०)ज़रूरत। वि० ज़रूरी।
दरकिनार–क्रि० वि० (फ़ा०) एक ओर। दूर।
दरकूच—क्रि० वि० बराबर-चलता हुआ। [चमकीला।
दरख़शाँ—वि० (फ़ा०)
दरख़ास्त—स्त्री० (फ़ा०) प्रार्थना। प्रार्थना-पत्र।
दरख़्त–पु० (फ़ा०)वृक्ष, पेड़।
दरगाह–स्त्री० (फ़ा०)चोखट।
दरगुज़र—वि० (फ़ा०) वंचित।
दरज—स्त्री० दराज़, छिद्र।
दरण—पु० विनाश। दलना या पीसना।
दरद—पु० पीड़ा। दया।
दर-दर—क्रि०वि०द्वार-द्वार।
दरदरा७—वि० मोटा पीसा-हुआ। [पीड़ित।
दरदवंत—वि० कृपालु।
दर-दामन—पु० (फ़ा०) सदरी पर बनाये जाने वाले बेल-बूटे।
दरन–वि०नाश करनेवाला।
दरना—सक्रि० दलना। मलना।
दरपन—पु०आईना, शीशा।
दरपना–अक्रि०क्रोध करना। गर्व करना।
दरपनी–स्त्री० छोटा शीशा।
दर-परदा–वि० (फ़ा०) परदे में, गुप्त रूप से।
दरपेश—क्रि० वि० (फ़ा०) आगे, सामने।
दर-पै—क्रि० वि० किसी के पीछे। किसी की तलाश में।
दरबंदी–स्त्री०दर का निश्चय।
दरब—पु० धन।
दरबा—पु० काबुक।
दरबान२—पु० (फ़ा०) द्वार-पाल। [सभा। द्वार।
दरबार—पु० (फ़ा०) राज-
दरबारआम—पु० (फ़ा० अ०) बादशाहों का वह दरबार जिसमें आमतौर से सब लोग शामिल हों।
दरबार-ख़ास—पु० (फ़ा० अ०) बादशाहों आदि का वह दरबार जिसमें ख़ास ख़ास लोग सम्मिलित हों।
दरबारदारी—स्त्री०हाज़िरी। चापलूसी।
दरबारी–पु० (फ़ा०) दरबार में बैठने वाला। वि० दर-बार-सम्बन्धी।
दरबी—स्त्री० करछुल।
दरभ–पु०दर्भ, कुश। बंदर।
दरमाँदा—वि०(फ़ा०)थका-हुआ।
दरमाहा—पु० (फ़ा०) मासिक-वेतन।
दरमियान–पु०(फ़ा०)मध्य। क्रि० वि० मध्य में।
दरमियानी—वि० (फ़ा०) मध्य का। मध्यस्थ।
दररना—अक्रि० रगड़ना। नष्ट करना।
दरराना—सक्रि० वेग से आ पहुँचना।
दरवाज़ा—पु०(फ़ा०) द्वार।
दरवी—स्त्री०साँप का फन। फन की शकल का बर्त्तन।
दरवेश२–पु० (फ़ा०) फ़क़ीर।
दरवेशाना—वि० (फ़ा०) फ़क़ीरों का सा।
दरशाना–अक्रि० देखपड़ना। सक्रि० दिखलाना। समझाना।
दरस—पु० दर्शन।
दरसना१—अक्रि० दिखाई-पड़ना। सक्रि० देखना।
दरसनिया—पु० शीतला या मरी की शान्ति के लिए पूजा करने वाला।
दरसनी—स्त्री० दर्पण।
दरहक़ीक़त—क्रि० वि० (फ़ा० अ०) वास्तव में।
दरहम–वि०(फ़ा०) रंजीदा। अव्यवस्थित।
दराँती—स्त्री० हँसिया।
दराज़—पु० (फ़ा०) दरार। मेज़ का सन्दूक़नुमा ख़ाना। वि० बड़ा, बहुत।
दरामद-पु० (अ०) आयात।
दरार—स्त्री०फटने से लकीर की तरह ख़ाली पड़ी जगह।

दराना—अक्रि० फटना।
दरारा—पु० धक्का। रगड़।
दरिंदा—पु०(फ़ा०) हिंसक जन्तु।
दरिद्र४—वि० निर्धन।
दरिद्रता—स्त्री० कंगाली।
दरिद्री—वि० दे० 'दरिद्र'।
दरिया—पु० (फ़ा०) नदी।
दरियाई—वि० (फ़ा०) नदी-संबन्धी। स्त्री० वस्त्र-विशेष।
दरियाईघोडा—पु० (फ़ा०) गैंड़े की तरह का एक घोड़ा।
दरियाउ, दरियाव—पु० दे० 'दरिया'।
दरियादासी—पु० निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय। [उदार।
दरियादिल२—वि० (फ़ा०)-
दरिया-बरामद—स्त्री० (फ़ा०) वह ज़मीन जो नदी के पीछे हट जाने से निकल आई हो।
दरियाफ़्त—वि० (फ़ा०) मालूम, ज्ञात।
दरियाबरार—पु० नदी की धारा हट जाने से निकली हुई भूमि।
दरियाबुर्द—स्त्री० (फ़ा०) वह भूमि जिसे कोई नदी काट कर बहा दे।
दरी—स्त्री० गुफा। शतरंजी।
दरीख़ाना—पु०(फ़ा०) बहुत दरवाज़ों वाला घर। शाही-दरबार। [खिड़की।
दरीचा७—पु० (फ़ा०)
दरीदा—वि० (फ़ा०) फटा-हुआ। [बाज़ार।
दरीबा—पु० पान का-
दरीभृत्—पु० पहाड़।
दरेग़—पु० (अ०) कमी। पश्चात्ताप। [झूठा।
दरेग़ गो—वि० (फ़ा०)
दरेरना—सक्रि० रगड़ना।
दरेरा—पु० रगड। चोट। धक्का। [मरम्मत।
दरेसी—स्त्री० दुरुस्ती,
दरैया—पु० नष्ट करने वाला। दलने वाला।
दरोग़—पु० (अ०) झूठ।
दरोग़-गो—वि० (फ़ा०) झूठा।
दरोग़हलफ़ी—स्त्री० (अ०) झूठी गवाही का जुर्म।
दर्ज—वि० (फ़ा०) लिखित।
दर्ज़—स्त्री० (फ़ा०) दरार।
दर्जन—पु० बारह का समूह।
दर्जा—पु० (अ०) श्रेणी। पद। खंड। ['दर्जा' का।
दर्जात—पु० (अ०) बहु०
दर्जावार—क्रि० वि० (फ़ा०) सिलसिलेवार।
दर्ज़ी—पु० (फ़ा०) कपड़ा सीने वाला। [करुणा।
दर्द—पु० (फ़ा०) दुःख।
दर्द-आमेज़—वि० (फ़ा०) दर्दनाक। [करुणा-जनक।
दर्दनाक—वि० (फ़ा०)
दर्दमंद२—वि० (फ़ा०) हम-दर्द। पीड़ित।
दर्दशरीक—वि० (फ़ा०) विपत्ति में साथ देने वाला।
दर्दुर—पु० मेंढक। बादल।
दर्दसरी—स्त्री० (फ़ा०) दिक्क़त।
दद्रु—पु० दाद।
दद्रुण—पु० दाद का रोगी।
दर्प—पु० घमंड।
दर्पक—पु० कामदेव।
दर्पण—पु० आईना।
दर्पित, दर्पी—वि० अभि-मानी।
दर्ब—पु० द्रव्य, धन।
दर्भ—पु० कुश।
दर्रा—पु० (फ़ा०) घाटी।
दर्राना—अक्रि० बेधड़क आगे जाना।
दर्विका—स्त्री० गोभी।
दर्वी—स्त्री० दे० 'दरवी'।
दर्वीकर—पु० साँप।
दर्श—पु० दर्शन। अमा-वस्या। [वाला।
दर्शक—पु० देखने या दिखाने-
दर्शन—पु० भेंट। अवलोकन। एक शास्त्र। [ज़ामिन।
दर्शन-प्रतिभू—पु० हाज़िर-
दर्शनीहुंडी—स्त्री० वह हुंडी जिसका रुपया देखते ही मिल जाय। [सुन्दर।
दर्शनीय—वि० देखने योग्य।
दर्शाना—सक्रि० दिखाना।
दर्शित—वि० दिखलाया हुआ।
दर्शी५—वि० देखने वाला।
दल६—पु० गरोह। पत्ता। सेना। पक्ष। मोटाई।
दलक—स्त्री० गुदड़ी। टीस, व्यथा। [क्रिया।
दलकन—स्त्री० दलकने की-
दलकना—अक्रि० काँपना।

फटना। सक्रि० डराना।
दलगंजन—वि० भारी योद्धा।
दलगत—वि० दलबन्दी में पड़ा हुआ।
दलदल—स्त्री० कीचड़।
दलदला—वि० दलदल वाला।
दलदार—वि० मोटी तह का।
दलन—पु० संहार। नाश।
दलना—सक्रि० रौंदना। कूटना। दाल बनाना।
दलनि—स्त्री० दलने की क्रिया।
दलपति—पु० मुखिया। सेनापति।
दलबल—पु० फ़ौज।
दलबादल—पु० बादलों का समूह। बादलों के समान बड़ी सेना।
दलमलना—सक्रि० मसल डालना। रौंदना।
दलवाल—पु० सेनापति।
दलवैया—वि० दलनेवाला।
दलहन—पु० वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
दलायल—स्त्री० (अ०) बहु० 'दलील' का।
दलाल—पु० (अ०) मध्यस्थ, जो कुछ कमीशन लेकर माल की ख़रीद-फ़रोख़्त में सहायता करे।
दलालत—स्त्री० (अ०) पता। दलील। शान। शोभा।
दलित—वि० मसला हुआ। पीड़ित। पु० अछूत (जाति)।
दलिया—पु० दला हुआ अन्न।
दली—वि० दल वाला। पु० वृक्ष।
दलीय—वि० दल द्वारा जो किया जाय। दल के करने योग्य। [बहस, युक्ति।
दलील—स्त्री० (अ०) तर्क,
दलेल—स्त्री० सिपाहियों की सज़ा के रूप में क़वायद।
दल्लाला—स्त्री० (अ०) दल्लाल-स्त्री। दूती। [आग।
दव—पु० वन। दावाग्नि।
दवन—पु० दमन। [पु० दौना।
दवना—सक्रि० जलाना।
दवनी—स्त्री० दाँयँ।
दवा—स्त्री० (अ०) औषध। चिकित्सा। वनाग्नि।
दवाख़ाना—पु० औषधालय।
दवाग्नि—स्त्री० दावानल।
दवान—पु० एक शस्त्र।
दवामी—वि० (अ०) स्थायी।
दवारि—स्त्री० दावाग्नि।
दविष्ठ—वि० अत्यन्त दूर।
दश—वि० १०।
दशकंठ—पु० रावण।
दशकंठजहा—पु० श्रीरामचन्द्र जिन्होंने दशकंठ को मारा था।
दशकंधर—पु० रावण।
दशक—पु० दस का समूह।
दशगात्र—पु० मृतक के दसवें दिन का कर्म।
दशन—पु० दाँत। कवच।
दशनच्छद—पु० ओष्ठ।
दशनामी—पु० शंकर मत के अनुयायी साधु।
दशबल—पु० बुद्ध। जिन।
दशभुजा—स्त्री० दुर्गा।
दशम—वि० दसवाँ।
दशमलव—पु० दशमांश। वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो।
दशमी—वि० बहुत बूढ़ा।
दशमुख—पु० रावण।
दशरथ—पु० श्री रामचन्द्रजी के पिता।
दशशीश—पु० रावण।
दशहरा—पु० ज्येष्ठ तथा आश्विन शुक्ल दशमी।
दशांग—पु० धूप, सुगंधित द्रव्य विशेष। [की बत्ती। चित्त।
दशा—स्त्री० अवस्था। दीपक
दशानन—पु० रावण।
दशावरा—स्त्री० दस सभ्यों की शासक मंडली।
दशाश्व—पु० चन्द्रमा।
दशाश्वमेध—पु० वह स्थान जहाँ दश अश्वमेध यज्ञ हुए हों।
दश्त—पु० (अ०) जंगल।
दश्त-नवर्दी—स्त्री० जंगलों आदि में मारा-मारा फिरना।
दसन—पु० दे० 'दशन'।
दसना—अक्रि० फैलना। सक्रि० बिछाना। डसाना। पु० बिछौना।
दसाना—सक्रि० बिछाना।
दसौंधी—पु० भाट।
दस्तंदाज़—वि० (फ़ा०) दख़ल देने वाला।
दस्तंदाज़ी—स्त्री० (फ़ा०) हस्तक्षेप, दख़ल देना।
दस्त—पु० (फ़ा०) हाथ। पाख़ाना।
दस्त-आमेज़—वि० (फ़ा०) पालतू। हाथों पर सधाया-

हुआ।
दस्तक—स्त्री० (फ़ा०) हाथ से खट-खटाने की क्रिया। कर,महसूल। [का कारीगर।
दस्तकार—पु० (फ़ा०) हाथ-
दस्तकारी—स्त्री० (फ़ा०) हाथ की कारीगरी।
दस्तकी—स्त्री० (फ़ा०) याद-दाश्त कापी।
दस्तख़त—पु० (फ़ा०) हस्ताक्षर। [का लिखा हुआ।
दस्तख़ती—वि० (फ़ा०)हाथ-
दस्त-गरदाँ—वि० (फ़ा०) अपने हाथ से उधार लिया हुआ (धन)।
दस्त-गाह—स्त्री० (फ़ा०) ताक़त। सम्पत्ति।
दस्तगीर२—पु० (फ़ा०) सहायक। [छुट। हथलपक।
दस्तदराज़—पु० (फ़ा०) हथ-
दस्तनिगर—वि० (फ़ा०) ग़रीब, दरिद्र। [चिमटा।
दस्तपनाह—पु० (फ़ा०)
दस्तपाक—पु० (फ़ा०) अँगोछा।
दस्तबंद—पु० (फ़ा०) हाथ का एक आभूषण।
दस्त-बदस्त—क्रि० वि० (फ़ा०) हाथों-हाथ।
दस्त-बरदार२—वि० (फ़ा०) किसी वस्तु से अपना अधिकार उठा लेने वाला।
दस्तबरदारी—स्त्री० (फ़ा०) स्वत्व-त्याग।
दस्तबस्ता—वि० (फ़ा०) हाथ जोड़े हुए तैयार।
दस्तबोस—वि० (फ़ा०)हाथ को चूमने वाला। [रूमाल।
दस्तमाल—पु० (फ़ा०)
दस्तयाब२—वि० (फ़ा०) प्राप्त।
दस्तरख़ान—पु० (फ़ा०) खाना चुनने का वस्त्र।
दस्तरस—स्त्री० (फ़ा०) रसाई। सामर्थ्य।
दस्ता—पु० (फ़ा०) मूँठ। दल। फूलों का गुच्छा। चौबीस काग़ज़ की गड्डी।
दस्ताना—पु० हाथ का मोज़ा।
दस्तार—पु० (फ़ा०) पगड़ी।
दस्तावर—वि० रेचक। जुलाब।
दस्तावेज़—पु०(फ़ा०)वह काग़ज़ जिसमें किसी व्यापार की शर्तें लिखी हों। ऋण-पत्र।
दस्ती—वि० हाथ का। स्त्री० छोटा बेंट।
दस्तूर—पु०रीति, रस्म। प्रथा।
दस्तूरी—स्त्री० कमीशन।
दस्तैशफ़ा—पु०(फ़ा०)यशस्वी।
दस्यु—पु० डाकू।
दस्र—पु० अश्विनी-कुमार।
दह—पु० कुंड। स्त्री०लपट। वि० (फ़ा०) दस, १०।
दहक—स्त्री० धधक, लपट।
दहकना९—अक्रि० धधकना, जलना।
दहक़ान—पु० (अ०) गँवार।
दहक़ानियत—स्त्री० (अ०) देहातीपन। [गँवारू।
दहक़ानी—वि० (फ़ा०)
दहन६—पु०जलन। अग्नि। (फ़ा०) मुँह। [कुढ़ना।
दहना९—अक्रि० जलना।
दहनि—स्त्री० जलन।
दहपट—वि० ढाया हुआ, कुचला हुआ।
दहपटना—सक्रि० ध्वस्त करना, रौंदना।
दहर—पु० कुंड। नरक। बालक। छोटा भाई। चूहा। छछूँदर। वि० सूक्ष्म।
दहरना, दहलना९—अक्रि० काँपना। डरना। सक्रि० डराना।
दहरिया—पु० (अ०) ईश्वर को न मानने वाला, नास्तिक। [गुलगुला।
दहरौरी—स्त्री०एक तरह का-
दहल—स्त्री० भय से सहसा काँपने की क्रिया। धाक।
दहला—पु० थाला। दस-बिन्दियों का ताश का पत्ता।
दहलाना—सक्रि० डराना, कँपा देना। [देहली।
दहलीज़—स्त्री० (फ़ा०)
दहशत—स्त्री० (फ़ा०) डर, ख़ौफ़, भय।
दहशत-अंगेज़—वि० (फ़ा०) दहशत पैदा करने वाला।
दहशत-ज़दा—वि० (फ़ा०) भयभीत।
दहा—पु० (फ़ा०) ताज़िया। मुहर्रम की १ से १० तारीख़ तक का समय।
दहाई—स्त्री० दस का समूह। दस का मान।
दहाड़—स्त्री० गरज, चीत्कार।

दहाड़ना—अक्रि० गरजना। चिल्लाकर रोना। [छेद। घाव।
दहान—पु० (फ़ा०) मुँह।
दहाना—पु० मुहाना, चौड़ा-मुख। [दायाँ।
दहिना७—वि० अनुकूल।
दही—पु० जमाया हुआ दूध।
दहुँ—अव्य० अथवा, शायद।
दहेंड़ी—स्त्री० दही रखने का पात्र।
दहे—पु० (फ़ा०) मुहर्रम के दस दिन जिनमें ताज़िये बैठाये जाते हैं।
दहेज—पु० (अ०) दायजा।
दहेज—पु० (अ०) दायजा।
दहेला७—वि० दग्ध। दुःखी।
दह्यमान—वि० जलाया हुआ।
दह्यो—पु० दही।
दाँ—पु० (फ़ा०) दफ़ा। वि० जानने वाला।
दाँकना—अक्रि० दहाड़ना।
दाँग—स्त्री० दिशा। पु० डंका। टीला।
दाँज—स्त्री० समता।
दाँड़ना—सक्रि० दंड देना।
दाँत—पु० दंत, दशन
दांत—वि० दबाया हुआ। जितेन्द्रिय। वह शब्द जिसके अंत मे 'द' अक्षर हो।
दाँतली—स्त्री० काग, डाट।
दाँता—पु० दाँत के समान-कँगूरा। [गलौज। झगड़ा।
दाँताकिटकिट—स्त्री० गाली
दांति—स्त्री० इन्द्रिय-निग्रह।
दाँती—स्त्री० हँसिया। दंत-पंक्ति।

दांपत्य—वि० पति-पत्नी-संबन्धी। [घमंडी।
दांभिक—वि० पाखंडी।
दाँयँ—स्त्री० पके अनाज को बैलों से रुँदवाने की क्रिया।
दाँवँ—पु० घात। मौक़ा। उपाय। बार। पाँसा।
दाँवरी—स्त्री० रस्सी।
दाइ—स्त्री० दे० 'दाँवँ'।
दाइया—स्त्री० (अ०) दावा। करने वाली स्त्री। पु० दावा।
दाइजा—स्त्री० दहेज। [बारी।
दाई—वि० स्त्री० दाहिनी।
दाई—स्त्री० धाय।
दाउँ—पु० दे० दाँव।
दाउ—स्त्री० दावाग्नि।
दाऊ—पु० बड़ा भाई। बलराम।
दाक्षायण—वि० दक्ष-संबंधी। पु० सोना तथा सोने की बनी चीज़ें।
दाक्षायणी—स्त्री० सती। दुर्गा। पार्वती। त्रि० सोने का।
दाक्षाय्य—पु० गृध्र, गीध।
दाक्षिण—वि० दक्षिण का। पु० अधिकार। कथन।
दाक्षिणात्य—वि० दक्षिण में रहने वाला।
दाक्षिण्य—पु० अनुकूलता। वि० दक्षिण का।
दाक्ष्य—पु० चतुरता।
दाख—स्त्री० अंगूर। मुनक्का। किशमिश। [शरीक।
दाख़िल—वि० (अ०) प्रविष्ट।
दाख़िलख़ारिज—पु० (अ० फ़ा०) किसी जायदाद के एक हक़दार का नाम काटकर उसकी जगह दूसरे का नाम लिखना।
दाख़िलदफ़्तर—वि० (अ० फ़ा०) दफ़्तर में विचार न करने योग्य (काग़ज़)।
दाख़िला—पु० (फ़ा०) प्रवेश।
दाग़—पु० (फ़ा०) दाह। चिह्न, धब्बा। कलंक।
दागना—सक्रि० जलाना।
दाग़बेल—स्त्री० (फ़ा०) सड़क आदि बनाने के लिए खोद-कर लगाया गया निशान।
दाग़ी—वि० (फ़ा०) दाग़दार। कलंकित।
दाघ—पु० गर्मी, तपन।
दाझन—स्त्री० जलन। पीड़ा।
दाझना—अक्रि० जलना। सक्रि० जलना।
दाड़िम, दाड़िमी—पु० अनार।
दाड़िमप्रिय—पु० तोता।
दाढ़—स्त्री० दहाड़। जबड़े के भीतर के चौड़े दाँत।
दाढ़ना—सक्रि० जलाना। संतप्त करना।
दाढ़ा—पु० बन की आग। जलन। दाढ़। [पर के बाल।
दाढ़ी—स्त्री० ठुड्डी तथा ठुड्डी-
दाढ़ीजार—पु० दाढ़ी जला मनुष्य। [हुआ।
दात—वि० खंडित, कटा-
दातव्य—वि० देने योग्य। पु० दान।
दाता, दातार—पु० देने-वाला।
दाती—स्त्री० देने वाली।
दातृत्व—पु० दानशीलता।

दातौन—स्त्री॰ दतुअन। मुखारी। [स्त्री॰ हँसिया।
दात्यूह—पु॰पपीहा। मेघ।
दात्र—पु॰ दाँती, हँसिया।
दात्री—स्त्री॰ देने वाली। हँसिया।
दाद—स्त्री॰ एक चर्मरोग। (फ़ा॰) इंसाफ़। प्रशंसा। वि॰ दिया हुआ।
दाद-ख़्वाह२—वि॰ (फ़ा॰) अन्याय का प्रतिकार चाहने वाला। [धन, क़र्ज़।
दादनी—स्त्री॰ (फ़ा॰) देय-
दादनीदार—वि॰ (फ़ा॰) क़र्ज़ देने वाला।
दाद-फ़रियाद—स्त्री॰ (फ़ा॰) न्याय के लिये प्रार्थना।
दादरस—वि॰ (फ़ा॰) दे॰ 'दादख़्वाह'।
दादरसी-स्त्री॰(फ़ा॰)सहायता।
दादरा—पु॰ एक गाना।
दादा७—पु॰ पितामह।
दादि—स्त्री॰ फ़रियाद। इंसाफ़। [पितामही।
दादी—पु॰फ़रियादी। स्त्री॰
दादुर—पु॰ मेंढक।
दादूदयाल—पु॰एक साधु।
दाध—स्त्री॰ जलन, गर्मी।
दाधना—सक्रि॰ जलाना।
दान६—पु॰ देने का कार्य। ख़ैरात। त्याग। महसूल। नट का ढोलिया। वि॰ (फ़ा॰) जानने वाला। रखने वाला।
दानपत्र—पु॰दान के प्रमाण में खुदवाया गया लेखपूर्ण ताम्र आदि का टुकड़ा।
दानपात्र—पु॰ जो दान के योग्य हो।
दानव७—पु॰ राक्षस।
दानवगुरु—पु॰ शुक्राचार्य।
दानवारि—पु॰ हस्तिमद। विष्णु। देवता।
दानवी—स्त्री॰राक्षसी। वि॰ दानव-संबन्धी।
दानवीर–पु॰ अत्यन्तदानी।
दानवेंद्र—पु॰ राजा बलि।
दानशाली५—वि॰ दाता।
दानशील३-४—वि॰ दान करने वाला।
दानशौंड—पु॰ बड़ा दानी।
दाना—पु॰अनाज। चबेना। माला का मनका। वि॰ (फ़ा॰) अक़्लमन्द।
दानाई—स्त्री॰ (फ़ा॰)अक़्लमन्दी। [रोज़ी।
दानापानी—पु॰ अन्नजल।
दानिश—स्त्री॰(फ़ा॰)समझ, बुद्धि। [मन्द।
दानिशमंद–वि॰(फ़ा॰)अक़्ल-
दानिस्त–स्त्री॰(फ़ा॰) समझ, जानकारी। [बूझकर।
दानिस्ता—क्रि॰ वि॰ जान-
दानी५—वि॰ दानशील।
दानेदार—वि॰ रवादार।
दानो—पु॰ दानव।
दाप—पु॰अभिमान। शक्ति। दबदबा। उत्साह। दुःख।
दापक—पु॰ दबाने वाला।
दापना—सक्रि॰ रोकना। दबाना। [रोब। शासन।
दाब—पु॰ (अ॰) बोझ।
दाबदार—पु॰ प्रतापी।
दाबना—सक्रि॰ दबाना।
दाभ—पु॰ कुश, दर्भ।
दाम—पु॰ रस्सी। जल। क़ीमत। मुद्रा। समूह। शत्रु को कुछ धन देकर वश में करने की नीति।
दामन—पु॰ (फ़ा॰) पल्ला, अंचल। पहाड़ के नीचे की भूमि।
दामनगीर—वि॰ (फ़ा॰) दावेदार। पीछे पड़ने वाला।
दामनी—स्त्री॰ रस्सी।
दामरी—स्त्री॰ रस्सी।
दामा—स्त्री॰ दावानल।
दामाद–पु॰(फ़ा॰) जामाता।
दामासाह—पु॰ दिवालिया।
दामिनी—स्त्री॰ बिजली। एक शिरोभूषण, बेंदी।
दामी—वि॰ क़ीमती।
दामोदर—पु॰ श्रीकृष्ण। विष्णु। [वाला।
दाम्भिक—वि॰ माया करने-
दाय—पु॰पैतृक-धन। दान। दहेज।
दायक१४—पु॰ देने वाला।
दायज, दायजा—पु॰दहेज।
दायन–पु॰(अ॰) ऋणदाता।
दायभाग—पु॰ पैतृक-संपत्ति का बँटवारा। [हमेशा।
दायम—क्रि॰ वि॰ (अ॰)
दायम-उल-मर्ज़—वि॰(अ॰) सदा रोगी रहने वाला।
दायम-उल-हब्स—पु॰(अ॰) कारागार का आजन्म दंड।

दायमी—वि०(अ०)सदा का, स्थायी।
दायर—वि० (फ़ा०) जारी।
दायरा—पु० (अ०) मंडल, वृत्त, घेरा।
दायाँ—वि० दाहिना।
दाया—स्त्री० दया। (फ़ा०) दाई, धाय।
दायाद४—पु० हिस्सेदार।
दायादी—स्त्री०कन्या। उत्तराधिकारिणी।
दायार्ह—पु० पितृधन पाने का अधिकार। [राधी।
दायित—वि० निश्चित अप-
दायित्व—पु० ज़िम्मेदारी।
दायी५—वि० देने वाला। ज़िम्मेदार। [ओर।
दायें—क्रि० वि० दाहिनी-
दार—स्त्री०पत्नी। लकड़ी। दाल। (अ०) सूली।
दारक१४—पु० लड़का।
दारकर्म—पु० विवाह।
दारद—पु०एक प्रकार का विष।
दारन—वि० दारुण, कठिन।
दारना—सक्रि० फाड़ना। नष्ट करना।
दारपरिग्रह—पु० विवाह।
दारमदार—पु० (फ़ा०) आश्रय, अवलंबन।
दारसंग्रह—पु० विवाह।
दारा—स्त्री० पत्नी।
दारापत्य४—पु० पुत्र।
दारिउँ,दारिव—पु० अनार।
दारिका—स्त्री० बालिका, बेटी। [पु०दरिद्रता।
दारिद, दारिद्र, दारिद्र्य—

दारिम—पु० अनार।
दारी—स्त्री० दासी।
दारु—पु० बढ़ई। लकड़ी।
दारुक—पु० देवदारु। श्री कृष्ण का सारथी।
दारुका—स्त्री० कठपुतली।
दारुण—वि० कठिन। भयंकर। असह्य।
दारुपुत्रिका—स्त्री०कठपुतली।
दारुफल—पु० चिलगोज़ा।
दारुयोषित—स्त्री० कठपुतली।
दारुल्-अमन—पु० (अ०) सुख से रहने का स्थान।
दारुल-अमारत—पु० (अ०) राजधानी। [टकसाल।
दारुल्-ज़र्ब—पु० (अ०)
दारुल्फ़ना—स्त्री० (अ०) दुनिया। [अस्पताल।
दारुल्-शफ़ा—पु० (अ०)
दारुल-सल्तनत—पु० (अ०) राजधानी।
दारुसार—पु० चंदन।
दारुस्सलाम—पु० (अ०) स्वर्ग। [राजधानी।
दारुस्सलतनत—स्त्री० (अ०)
दारुहस्तक—पु० काठ की करछुल, डोई।
दारू—स्त्री० (फ़ा०) दवा। बारूद। शराब।
दारोग़ा—पु० (फ़ा०) थानेदार, प्रबन्धक।
दार्यो—पु० अनार।
दार्विका—स्त्री० गोभी।
दार्शनिक—वि० दर्शनशास्त्र-संबंधी। दर्शन का ज्ञाता।
दार्ष्टांत—वि०जिसका दृष्टांत दिया जाय, उपमेय।
दाल—स्त्री०दला हुआ अन्न। खुरंड।
दालचीनी—स्त्री०दारचीनी।
दालना—सक्रि०दे० 'दलना'।
दालमोठ—स्त्री० तली हुई दाल आदि।
दालान—पु०(फ़ा०)बरामदा।
दालिम—पु० अनार।
दावँ—पु० दे० 'दाँवँ'।
दावँना—सक्रि० कटी फ़सल को बैलों से रुँदवाना।
दावँरी—स्त्री० रस्सी।
दाव—पु० (अ०) बन। बनकी आग।
दावत—स्त्री० भोज।
दावन—पु०दमन। हँसिया। नष्टकर्त्ता।
दावना—सक्रि० दमन करना। दाँयँ चलाना।
दावनी—स्त्री बेंदी।
दावर२—पु० (फ़ा०) न्यायकर्त्ता, हाकिम।
दावरी—स्त्री० रस्सी।
दावा—स्त्री० वनाग्नि। पु० (अ०) नालिश। अभियोग। अधिकार।
दावागीर—पु० (अ० फ़ा०) दावा करने वाला।
दावात—स्त्री० मसिपात्र।
दावादार—पु० दावा करने वाला।
दावानल—पु०बनकी अग्नि।
दाविनी—स्त्री० बिजली।
दाश—पु० धीवर, मल्लाह।

दाशरथि—पु० दशरथ के पुत्र। [परवरिश
दाश्त—स्त्री० (फ़ा०)
दाश्व—पु० दानी।
दास१-७—पु० सेवक। बिछौना।
दासता, दासत्व—पु० गुलामी।
दासवृत्ति—स्त्री० नौकरी।
दासा—पु० दीवार का पुश्ता। [भी सेवक।
दासानुदास—पु० सेवक का-
दासिका—स्त्री० दासी।
दासी—स्त्री० सेविका, टह-लनी। [की सभा।
दासीसभ—पु० दासियों-
दासेय—पु०दासीपुत्र, दास।
दासेर—पु० दास।
दास्तान—स्त्री० (फ़ा०) वृत्तांत, कथा।
दास्य—पु० दासता।
दाह—पु०शवदाह। जलन। दाह। संताप।
दाहक—वि० जलानेवाला। पु० अग्नि। चीता।
दाहकर्म—पु०शवदाह-कर्म।
दाहक्रिया—स्त्री० दे० 'दाह-कर्म'।
दाहन—पु० जलाना
दाहना—सक्रि० जलाना। नष्ट करना। वि० दायाँ।
दाहिना७—वि० दक्षिण। दायाँ। [तरफ़।
दाहिने—क्रि० वि० दहिनी-
दाहा—पु० ताज़िया।
दाही५—वि०जलाने वाला।

दिंड—पु० एक नृत्य।
दिअना—पु० दीपक।
दिउला७—पु० खुरंड। छोटा दीआ।
दिक़—पु० (अ०) तपेदिक़। वि० हैरान।
दिक़दारी—स्त्री० (अ०फ़ा०) कठिनता, विपत्ति।
दिक्—स्त्री० दिशा।
दिक़्क़त—स्त्री० (अ०) कठिनता। परेशानी।
दिक्करी—पु० दिशाओं के हाथी। [देवता।
दिक्पाल—पु० दिशाओं के-
दिक्शूल—पु० फलित ज्योतिष के अनुसार विशेष दिनों में, विशेष दिशाओं मे काल का वास, जिसमें यात्रा अशुभ मानी गई है।
दिक्साधन—पु० दिशाओं के ज्ञान करानेवाली विधि।
दिखना९—अक्रि० देख पड़ना।
दिखलाई—स्त्री० दिखाई।
दिखलाना—सक्रि० दिखाना।
दिखलावा—पु० बाहरी, ठाट-बाट।
दिखहार—पु० दर्शक।
दिखाई—स्त्री० देखने की क्रिया या मज़दूरी।
दिखाऊ—वि० बनावटी। देखने योग्य।
दिखाव—पु० दृश्य।
दिखावटी—वि०स्त्री०दिखाऊ।
दिखावा—पु० बनावट।
दिखैया—पु० दिखलाने या देखने वाला।

दिखौआ—वि० दिखाऊ।
दिगंत—पु० दिशाओं का अंत, क्षितिज।
दिगंतर—पु० दो दिशाओं के बीच का स्थान।
दिगंतराल—पु० आकाश।
दिगंबर—पु० शिव। जैन-साधु। वि० नंगा।
दिग्घ—वि० दीर्घ।
दिग्दंति, दिग्गज—पु० दिशाओं के हाथी।
दिग्दर्शकयंत्र—पु० कुतुब-नुमा। [प्रत्यक्षीकरण।
दिग्दर्शन—पु० नमूना।
दिग्देवता—पु०दे०'दिग्पाल'।
दिग्ध—वि०विषाक्त। लीपा-हुआ।
दिग्पट—पु०दिशा रूपी वस्त्र। नंगा। [दिशाओं के रक्षक।
दिग्पाल, दिग्पति—पु०
दिग्भ्रम—पु०दिशाओं का भ्रम।
दिग्मंडल—पु०सब दिशाएँ।
दिग्राज—पु० दिक्पाल।
दिग्वस्त्र, दिग्वास—पु०शिव-जी। नंगा रहने वाला जैन यती।
दिग्विजय—स्त्री० चारों दिशाओं के राजाओं से युद्ध करके विजय प्राप्त करना।
दिग्विजयी५—वि० दिग्विजय करने वाला।
दिग्विभाग—पु० दिशा।
दिग्व्यापी५—वि० सब दिशाओं में व्याप्त।
दिङ्नाग—पु० दिग्गज।
दिच्छित—वि०दे० 'दिक्षित'।

दिठादिठी—स्त्री० देखा-देखी।
दिठाना—अक्रि०नज़र लगना, सक्रि० नज़र लगाना।
दिठौना—पु०दे०'डिठौना'।
दिढ़—पु० दे० 'दृढ़'।
दिढ़ता—स्त्री० साहस, धैर्य।
दिढ़ाना—सक्रि०दृढ़ करना।
दिढ़ाव—पु० दृढ़ बनाना।
दित—वि० काटा हुआ।
दिति—स्त्री०दैत्यों की माता।
दितिसुत—पु० दैत्य।
दित्सा—स्त्री० दानेच्छा।
दिदृक्षु—वि० दर्शनेच्छुक।
दिधिक्षा—स्त्री० जलाने की इच्छा।
दिधिषु—स्त्री०दो बार ब्याही गई स्त्री।
दिन—पु० समय। दिवस।
दिनअर—पु० सूर्य।
दिनकंत,दिनकर—पु०सूर्य।
दिनकेशर—पु० अंधकार।
दिनचर्य्या—स्त्री० दिन भर का काम। डायरी।
दिनज्योति—स्त्री० धूप।
दिनदानी—पु० जो प्रतिदिन दान करे।
दिनदिन—क्रि०वि० रोज़ाना।
दिनदुखित—पु० चकवा पक्षी।
दिननाथ, दिनपति, दिनमणि—पु० सूर्य। [दिन।
दिनबदिन—क्रि०वि० प्रति-
दिनभृति—पु० रोज़ीना पर काम करने वाला नौकर।
दिनमान—पु० सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय।
दिनराई, दिनराज—पु०सूर्य।
दिनशेष—पु० संध्या।
दिनांक—पु० तिथि, तारीख़।
दिनांत—पु० सायंकाल।
दिनांध—पु० जिसे दिन में न दिखाई पड़े। उल्लू।
दिनाइ—पु० दाद।
दिनाई—स्त्री० प्राण घातक-विषैली वस्तु।
दिनादि—पु० प्रभात।
दिनार—पु० एक सोने का प्राचीन सिक्का। [प्रकाश।
दिनालोक—पु० सूर्य का-
दिनियर—पु० सूर्य।
दिनी—वि०बहुत दिनों का।
दिनेर, दिनेश—पु० सूर्य।
दिनौंधी—स्त्री० एक रोग जिसमें दिन को कम दीखता है।
दिपति—स्त्री० दे० 'दीप्ति'।
दिपना, दिपाना—अक्रि० चमकना। प्रकाश देना।
दिव—पु० दे० 'दिव्य'।
दिमाक, दिमाग़—पु० (अ०) मस्तिष्क। बुद्धि। अहंकार।
दिमाग़चट—वि० बकवादी।
दिमाग़दार—वि० (अ० फ़ा०) अभिमानी। अच्छे मस्तिष्क वाला। [फ़ा०) सुँघनी।
दिमाग़रौशन—स्त्री० (अ०
दिमाग़ी—वि० दे० 'दिमाग़-दार'। दिमाग़-संबन्धी।
दिमात—वि० दो माताओं वाला। दो मात्राओं वाला।
दियना—पु० चिराग़।
दियरा—पु० दीपक।
दिया—पु० दीपक।
दियाबत्ती—स्त्री० सायंकाल में दीप जलाने का कार्य।
दियारा—पु० कछार।
दियासलाई—स्त्री० आग प्रदीप्त करने की सलाई।
दियासा—पु० मृगतृष्णा।
दिरद—पु० द्विरद, हाथी।
दिरम—पु० मिस्र देश का-चाँदी का सिक्का।
दिरमान—पु० चिकित्सा।
दिरमानी—पु० चिकित्सक। स्त्री० वैद्यक।
दिरहम—पु० (अ०) चाँदी का एक छोटा सिक्का।
दिरानी—स्त्री० देवरानी।
दिल—पु० (फ़ा०) मन, हृदय इच्छा।
दिल-आज़ार—वि० (फ़ा०) अत्याचारी। [प्रेमिका।
दिलआरा—स्त्री० (फ़ा०)
दिलकशर—वि० (फ़ा०) मन को लुभाने वाला, मनोहर।
दिलकुशा—वि० (फ़ा०) मनोहर। [के अनुसार।
दिलख़्वाह—वि० (फ़ा०) मन-
दिलगीरर—वि० (फ़ा०) उदास। [वीर। दानी।
दिलचला—वि० (फ़ा०)
दिलचस्पर—वि० (फ़ा०) चित्ताकर्षक। [रंजीदा।
दिलज़दा—वि० (फ़ा०)
दिलजमई—स्त्री० (फ़ा०) तसल्ली, संतोष।
दिलजला—वि०(फ़ा०) दुःखी।
दिलजान—स्त्री० (फ़ा०) स्त्रियों का सखी भाव-संबंध।

दिलजोई—स्त्री० (फ़ा०) संतोष, तसल्ली।
दिलदार२—वि० (फ़ा०) उदार। प्रिय।
दिलदादा–वि०(फ़ा०) प्रेमी।
दिलदिही—स्त्री० (फ़ा०) सांत्वना। [दिलपसंद।
दिलपज़ीर—वि० (फ़ा०)
दिलपसंद—वि० (फ़ा०) मनोहर।
दिलफ़रेब२—वि० (फ़ा०) मनोहर, आकर्षक।
दिलफ़िगार—वि० (फ़ा०) ज़ख्मी।
दिलबर–वि० (फ़ा०) प्यारा।
दिलबस्तगी—स्त्री० (फ़ा०) दिल लगाना।
दिलबस्ता–वि० (फ़ा०)प्रेमी।
दिलबाज़—वि० (फ़ा०) चालाक। [माशूक़।
दिलरुबा–पु० (फ़ा०) प्यारा,
दिलरुबाई–स्त्री० (फ़ा०) प्रेम, मुहब्बत।
दिलवाना–सक्रि० दिलाना।
दिलवाला—वि० (फ़ा०) उदार, साहसी। [प्रसन्न।
दिलशाद—वि० (फ़ा०)
दिलशिकन२—वि० (फ़ा०) दिल में शिकन डालनेवाला।
दिलशिकस्ता—वि० (फ़ा०) दुःखी।
दिलसोज़२—वि० (फ़ा०) सहानुभूति रखने वाला, कृपालु। [माशूक़।
दिलारा—वि० (फ़ा०) प्रिय,
दिलाराम–वि०(फ़ा०)प्यारा।
दिलावर२—वि० (फ़ा०) बहादुर, वीर।
दिलावेज़—वि० (फ़ा०) सुन्दर, मोहक।
दिलासा—पु० धैर्य, ढाढ़स।
दिली—वि०(फा०) हार्दिक।
दिलीप—पु० इक्ष्वाकु वंशी एक राजा।
दिलेर२–वि०(फ़ा०)साहसी। उत्साही। [का सा।
दिलेराना–वि० (फ़ा०) वीरों-
दिल्लगी—स्त्री० (फ़ा०) मज़ाक़।
दिल्लगीबाज़२–पु० मसखरा।
दिल्लीवाल—पु०सलेमशाही-जूता। [दिन।
दिव्—पु० आकाश। स्वर्ग।
दिवराज—पु० इंद्र।
दिवला—पु० दीया।
दिवस—पु० दिन।
दिवसनाथ, दिवसमणि—पु० सूर्य।
दिवसमुख—पु० सवेरा।
दिवसात्यय—पु०सायंकाल।
दिवस्पति—पु० सूर्य, इन्द्र।
दिवांध—वि० जिसे दिनौंधी का रोग हो। पु० उल्लू।
दिवा—पु० दिन। दीपक।
दिवाकर—पु० सूर्य।
दिवाकीर्त्ति—पु०नाई,नाऊ। चांडाल, निषाद।
दिवान–पु० मंत्री। राज-दरबार। समूह। स्त्री०मर्यादा।
दिवाना–वि०सनकी, पागल। सक्रि० दिलवाना।
दिवाभीत–पु० उल्लू। चोर।
दिवारी—स्त्री० दीपावली।
दिवाल—वि० जो देता हो। स्त्री० दीवार।
दिवाला—पु० ऋण चुकाने की सामर्थ्य का न रहना।
दिवालिया—वि० जिसने दिवाला निकाल दिया हो।
दिवाली—स्त्री० दीपावली।
दिविषद्—पु० देवता।
दिवैया—वि० देने वाला।
दिवौकस्—पु० देवता।
दिव्—पु० स्वर्ग, आकाश।
दिव्य—वि०स्वर्गीय। सुन्दर। प्रकाशमान।
दिव्यगंध—पु०लौंग। [नेत्र।
दिव्यचक्षु—पु० ज्ञानरूपी-
दिव्यता—स्त्री० सुन्दरता।
दिव्यदृष्टि—स्त्री० ज्ञानचक्षु। सर्वज्ञता। [मिली चीज़।
दिव्यदोहद—पु०बिना माँग-
दिव्यनारी—स्त्री० अप्सरा।
दिव्यरथ—पु० देवरथ।
दिव्यरस—पु० पारा।
दिव्यलता—स्त्री० दूर्वा।
दिव्यांगना—स्त्री० अप्सरा। देवता की स्त्री।
दिव्या—स्त्री०स्वर्गीय नायिका।
दिव्यादिव्य—पु०अलौकिक-मनुष्य। नायक विशेष।
दिव्यास्त्र—पु० मंत्र से चलाया जाने वाला अस्त्र।
दिव्योदक—पु० वर्षा का जल। [की संख्या।
दिशा—स्त्री० तरफ़। दस-
दिशाशूल—दे० 'दिक्शूल'।
दिशि—स्त्री० दिशा।

दिश्—स्त्री० दिशा।
दिश्य—वि० दिशा का। दिशा-सम्बन्धी।
दिष्ट—पु० भाग्य। समय।
दिष्टबंधक—पु० एक प्रकार का रेहन, जिसमें महाजन को केवल रुपयों का सूद मिलता है और रेहन की वस्तु की आय से कोई मतलब नहीं रहता है।
दिष्टांत—पु० मृत्यु।
दिष्टि—स्त्री० दृष्टि।
दिसंबर—पु०(अं०) अंग्रेज़ी साल का बारहवाँ महीना (३१ दिन का)।
दिस—स्त्री० दिशा।
दिसना—अक्रि० दिखाई-पड़ना। [शौच।
दिसा—स्त्री० दिशा। दशा।
दिसावर—पु० परदेश।
दिसावरी—वि० बाहरी।
दिसि—स्त्री० दिशा। ओर।
दिसिनायक—पु० दिक्पाल।
दिसिप—पु० दिक्पाल।
दिसैया—वि० देखने वा दिखाने वाला।
दिहदा—वि० (फ़ा०) देने वाला। [पान।
दिहकानियत—स्त्री० देहाती-
दिहाड़ा—पु० दुर्गति। दिन।
दिहात—स्त्री० दे० 'देहात'।
दीअट, दीआ—पु० दीपक।
दीक्षक—पु० गुरु जो दीक्षा दे।
दीक्षणा—स्त्री० उपदेश।
दीक्षांत—वि० शिक्षा समाप्त हो जाने के पश्चात्, उपाधि देते समय दिया जाने वाला, (भाषण आदि)। पु० यज्ञ के अंत का स्नान।
दीक्षा—स्त्री० गुरुमंत्र। यज्ञ।
दीक्षित—वि० जिसने गुरु-मंत्र लिया हो अथवा यज्ञ का अनुष्ठान किया हो।
दीखना—अक्रि० देख पड़ना।
दीगर—वि० (फ़ा०) अन्य, दूसरा।
दीघी—स्त्री० बावली, पोखरा।
दीठ—स्त्री० दृष्टि, नज़र। कुदृष्टि। कृपा दृष्टि।
दीठना—सक्रि० देखना।
दीठबंदी—स्त्री० जादू, नज़र-बन्दी। [देखी, दर्शन।
दीद—स्त्री० (फ़ा०) देखा-
दीदा—पु० (फ़ा०) दृष्टि। आँख। साहस।
दीदार—पु० (फ़ा०) दर्शन।
दीदारबाज़र—वि० (फ़ा०) आँख लड़ाने वाला।
दीदारु—वि० (फ़ा०) देखने-योग्य, सुन्दर।
दीदारेज़ी—स्त्री० (फ़ा०) बहुत बारीक काम जिसमें आँखों पर ज़ोर पड़े।
दीदा-दानिस्ता—क्रि० वि० (फ़ा०) जान-बूझकर।
दीदी—स्त्री० बड़ी बहिन। बड़ी ननद। [उँगली।
दीधिति—स्त्री० किरण।
दीन३—वि० दरिद्र। दुःखित। नम्र। पु० (अ०) मज़हब।
दीनचेता—वि० उदार-प्रकृति।
दीनताई—स्त्री० ग़रीबी।
दीनत्व—पु० दीनता।
दीनदारर—वि० (अ०) धार्मिक।
दीन-दुनिया—स्त्री० (अ०) लोक तथा परलोक।
दीनबन्धु—पु० दुखियों का सहायक। ईश्वर।
दीनानाथ—पु० ईश्वर।
दीनार—पु० (फ़ा०) स्वर्णा-भूषण। सोने का एक सिक्का।
दीनी—वि० (अ०) दीन-सम्बंध, धार्मिक।
दीप—पु० दीपक। द्वीप।
दीपक—पु० दीया। एक राग। केसर। १४ वि० प्रकाशक। उत्तेजक।
दीपकिट्ट—पु० काजल।
दीपत, दीपति—स्त्री० कांति।
दीपदान—पु० देवमूर्त्ति को दीपक भेंट।
दीपध्वज—पु० काजल।
दीपनद्द—पु० प्रकाशन। उत्तेजन।
दीपना—अक्रि० प्रकाशित-होना। सक्रि० प्रकाशित-करना।
दीपमाला, दीपमालिका—स्त्री० जलते हुए दीपकों की क़तार।
दीपवृक्ष—पु० झाड़-फ़ानूस।
दीपशलाका—स्त्री० दिया-सलाई। [लौ।
दीपशिखा—स्त्री० चिराग़ की-

दीपावलि—स्त्री० दीपमालिका। दिवाली।
दीपित—वि० प्रकाशित। उत्तेजित।
दीपोत्सव—पु० दिवाली।
दीप्त—वि०प्रकाशित। [बिल्ली।
दीप्तलोचन—पु० बिडाल,
दीप्तांग—पु० मोर।
दीप्ति—स्त्री०प्रकाश। कांति।
दीप्तिमान्१३—वि० कांतियुक्त। प्रकाशित। [मणि।
दीप्तोपल—पु० सूर्य कान्त-
दीप्य—वि०जलने के योग्य।
दीप्यमान—वि० चमकता-हुआ।
दीबाचा—स्त्री०(फ़ा०)भूमिका।
दीमक—स्त्री० (फ़ा०) चींटी की तरह का एक कीड़ा। बँबई।
दीयट—पु० चिराग़दान।
दीया—पु० चिराग़।
दीरघ, दीर्घ—वि० बड़ा, लम्बा। पु० गुरुवर्ण (दो मात्रा का)।
दीर्घकाय—वि०बड़े क़द का।
दीर्घग्रीव—पु० ऊँट।
दीर्घजंघा—पु०सारस। ऊँट।
दीर्घजीवी५—वि० बहुत दिनों तक जीने वाला।
दीर्घदर्शी—वि० दूरदर्शी।
दीर्घदृष्टि—वि० दूरंदेश।
दीर्घनाद—पु० शंख।
दीर्घनिद्रा—स्त्री० मृत्यु।
दीर्घनिःश्वास—पु० लम्बी-साँस।
दीर्घपत्रक—पु० लहसुन।
दीर्घपृष्ठ—पु०साँप। [वाला।
दीर्घबाहु—वि० लम्बी भुजा-
दीर्घरद—पु० सूअर।
दीर्घलोचन४—वि० बड़ी आँखों वाला।
दीर्घवक्त्र—पु० हाथी।
दीर्घश्रुत—वि० जो दूर देशों तक विख्यात हो।
दीर्घसूत्र३, दीर्घसूत्री—वि० देर में काम करने वाला, आलसी।
दीर्घस्वर—पु० उच्च-शब्द।
दीर्घायु—वि० चिरजीवी।
दीर्घिका—स्त्री० छोटा जलाशय।
दीर्ण—वि० टूटा, भग्न।
दीवट—स्त्री० दे० 'दीयट'।
दीवा—पु० चिराग़।
दीवान—पु० राजसभा। मंत्री। ग़ज़लों का संग्रह।
दीवान-आम—पु० (अ०) दरबार जहाँ राजा से सब लोग मिले सकें।
दीवानख़ाना—पु०(अ० फ़ा०) बैठक। [दरबार।
दीवानख़ास—पु०(अ०) ख़ास-
दीवानहाफ़िज़—पु० (फ़ा०) वह दरबार जिसमें शृङ्गार रस के भाव ओत प्रोत हों।
दीवाना१—वि० (फ़ा०) पागल।
दीवानी—स्त्री०(फ़ा०) दीवान का पद। सम्पत्ति-सम्बन्धी-न्यायालय। स्त्री० पागल।
दीवार—स्त्री० (फ़ा०) भीत।
दीवार-क़हक़हा—स्त्री०(अ०) एक कल्पित दीवार जिसे सिकंदर ने बनवाया था और जिस पर चढ़ कर आदमी ज़ोर से हँसते हँसते मर जाता था।
दीवारगीर७—पु० (फ़ा०) दीवार में लगाने का लैम्प।
दीसना—अक्रि० दिखाई-पड़ना।
दीह—वि० लम्बा। बड़ा।
दुंद—पु० दो मनुष्यों का युद्ध। उत्पात। जोड़ा। नगाड़ा।
दुंदुभि—पु० वरुण। विष। एक राक्षस। स्त्री०नगाड़ा।
दुंदुभी—स्त्री० नगाड़ा।
दुंदुर—पु० चूहा।
दुंदुह—पु०पानी का साँप।
दुंबा—पु०भेड़ की जाति का भारी पूँछ वाला एक पशु।
दुःख—पु० कष्ट, विपत्ति।
दुःखकारक—वि० दुःख पैदा करने वाला।
दुःखद, दुःखदाता—वि०दुःख देनेवाला। [झगड़ा।
दुःखद्वंद्व—पु० क्लेश और-
दुःखपूर्ण—वि०क्लेश-युक्त।
दुःखप्रद—वि० दुःख देने वाला।
दुःखांत—पु०दुःख का अंत। वि०जिसका अंत दुःख पूर्ण हो।
दुःखित—वि० पीड़ित।
दुःखी५—वि० पीड़ित।
दुःशला—पु० जयद्रथ की स्त्री अर्थात् दुर्योधन की बहिन।

दुःशासन—पु० दुर्योधन का छोटा भाई। [स्वभाव वाला।
दुःशील३—४—वि० बुरे-
दुःसह—वि० असह्य।
दुःसाध्य ४—वि० कठिनता में साधने योग्य।
दुःसाहस—पु० कम हिम्मत। धृष्टता। [वाला।
दुःसाहसी५—वि० दुःसाहस-
दुःस्वप्न—पु० बुरा स्वप्न।
दुअन—पु० शत्रु।
दुअमली—पु० (फ़ा०) वह राज्य जिस पर दो शासक शासन करते हों। [आशीर्वाद।
दुआ—स्त्री० (अ०) प्रार्थना।
दुआएख़ैर—स्त्री० (अ०) शुभ-कामना। [शुभचिंतक।
दुआ-गो—वि० (अ० फ़ा०)
दुआबा—पु० दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दुआर—पु० द्वार।
दुआरी—स्त्री० छोटा द्वार।
दुइ—वि० दो।
दुइज—स्त्री० द्वितीया तिथि।
दुई—स्त्री० (फ़ा०) दो का भाव। [का।
दुकड़हा—वि० क्षुद्र। छदाम-
दुकड़ा—पु० जोड़ा। छदाम।
दुकना—अक्रि० छिपना।
दुकान—स्त्री० (फ़ा०) वह स्थान जहाँ बेचने के लिए चीज़ें रखी हों।
दुकानदारी—स्त्री० दुकान पर सौदा बेचने का काम।
दुकाल—पु० अकाल। [वस्त्र।
दुकूल—पु० रेशमी वस्त्र।

दुकेला७—पु० जिसके साथ कोई और भी हो।
दुक्कड़—पु० एक बाजा।
दुक्का७—पु० एक साथ दो।
दुखंडा—वि० दो मंज़िल का।
दुखंत—पु० दुष्यंत।
दुख, दुखड़ा—पु० कष्ट।
दुखद, दुखदाई, दुखदानि—वि० दुःख देने वाला।
दुखदुंद—पु० दुःखपूर्ण उपद्रव।
दुखना१९—अक्रि० दर्द करना।
दुखवना—सक्रि० दुःख देना।
दुखारा, दुखारी—वि० दुःखी।
दुखित—वि० दुःखी।
दुखिया, दुखियारा—वि० दुःखी।
दुखौहाँ७—वि० दुःखदायी।
दुख्तर—स्त्री० (फ़ा०) लड़की।
दुख्तरे-रज़—स्त्री० (फ़ा०) अंगूरी शराब, मद्य।
दुगई—स्त्री० बरामदा।
दुगदुगी—स्त्री० दे० 'धुकधुकी'।
दुगना, दुगुण, दुगुन७—वि० दूना। [जगह।
दुगासरा—पु० दुबकने की-
दुगुना—वि० दूना।
दुग्ग—पु० दुर्ग। [दूध।
दुग्ध—वि० दुहा हुआ। पु०
दुग्धी—वि० दूध वाला। स्त्री० खीर। [मुहूर्त।
दुघरा—स्त्री० दुघड़िया-
दुचंद—वि० (फ़ा०) दूना
दुचित ४—वि० दुविधा में पड़ा हुआ। [दुविधा।
दुचितई, दुचिताई—स्त्री०

दुचित्ता ७—वि० चिंतित।
दुज—पु० द्विज।
दुजन्मा—पु० ब्राह्मण।
दुजपति—पु० ब्राह्मण।
दुजराज—पु० ब्राह्मण। गरुड़। चंद्रमा। [वैश्य।
दुजाति—पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय,
दुजीह—पु० साँप।
दुज़्द २—पु० (फ़ा०) चोर।
दुडबडी—स्त्री० एक बाजा।
दुतकार—स्त्री० फटकार।
दुतकारना—सक्रि० तिरस्कार-करना, फटकारना।
दुतरफ़ा ७—वि० दोनों ओर होने वाला। [बाजा।
दुतारा—पु० दो तार का एक-
दुति—स्त्री० चमक, शोभा।
दुतिमान६—वि० सुन्दर। प्रकाशवान्। [सुन्दर।
दुतिवंत७—वि० आभायुक्त,
दुतीया—स्त्री० दूज।
दुदल—पु० दाल।
दुदलाना—सक्रि० दुत्कारना।
दुदिल—वि० संशययुक्त।
दुद्धी—स्त्री० खरिया मिट्टी।
दुद्रुम—पु० हरा प्याज़।
दुधमुख, दुधमुहाँ—पु० दूध पीने वाला बच्चा।
दुधाँड़ी—स्त्री० दूध औटाने की हाँड़ी।
दुधार—वि० दूध देने वाली। पु० जिसमें दोनों ओर धार हो।
दुधारा—पु० तलवार, छुरी-आदि जिसके दोनों ओर धार हो।

दुधारी, दुधारू—वि० दे० 'दुधार'। [स्त्री०एक घास।
दुधिया—वि० दूधमिश्रित।
दुधियापत्थर—पु० एक प्रकार का पत्थर या नग।
दुधैल—वि० अधिक दूध देने वाली।
दुनरना, दुनवना—अक्रि० नवना, लचक कर दोहरा हो जाना।
दुनवना—अकि० लचाकर दोहरा हो जाना। सक्रि० नवाना। [वाली (बन्दूक)
दुनाली—वि०स्त्री० दो नलों-
दुनियवी—वि० (अ०) सांसारिक।
दुनिया—स्त्री० (अ०) संसार।
दुनियाई—वि० (अ०) सांसारिक। स्त्री० संसार।
दुनियादार २—वि० (अ० फ़ा०) संसार-संबंधी। वि० व्यवहार-कुशल।
दुनियादारी—स्त्री० (फ़ा०) स्वार्थसाधन। बनावटी-व्यवहार। [सांसारिक।
दुनियावी—वि० (अ०)
दुनियासाज़—वि० (फ़ा०) मतलब सिद्ध करने वाला।
दुनी—स्त्री० दुनिया।
दुपटा, दुपट्टा७—पु० कंधे पर डालने का कपड़ा।
दुपद—वि० दो पाँव वाला।
दुपदी—स्त्री० बग़लबंदी।
दुपहर—स्त्री० दोपहर।
दुपहरिया—स्त्री० दोपहर। एक पौधा।
दुपहरी—स्त्री० मध्याह्न-काल। एक पुष्प।
दुफ़सली—वि० दोनों फ़सलों में पैदा होने वाली चीज़।
दुबधा—स्त्री० संशय, चिंता।
दुबराना—अक्रि० दुबला-होना। [कमज़ोर।
दुबला १·७—वि० दुर्बल,
दुबिधा—स्त्री०दे० 'दुबधा'।
दुबीचा—पु० खटका, संशय।
दुबे—पु०ब्राह्मणों का एक भेद।
दुभाखी, दुभाषिया—पु० दो भाषाओं का जानने वाला तथा आशय समझाने वाला।
दुम—स्त्री० (फ़ा०) पूँछ।
दुमची—स्त्री० (फ़ा०) घोड़े के साज़ में पूँछ के नीचे वाला तसमा। [वाला।
दुमदार—वि० (फ़ा०) पूँछ
दुमन—वि० खिन्न।
दुमाता—वि०सौतेली माँ।
दुम्बल—पु० (फ़ा०) बड़ा फोड़ा।
दुम्बा—पु० (फ़ा०) मेंढ़ा।
दुम्बाला—पु० (फ़ा०)पिछला-भाग। दुम। पतवार।
दुरंगा७—वि० दो तरह का।
दुरंत—वि०अपार। दुर्गम। प्रचंड। अशुभ।
दुर—पु०(अ०) मोती, दाँत।
दुरतिक्रम—वि० कठिनता से अतिक्रमण करने योग्य।
दुरत्यय—वि० दुस्तर।
दुरथल—पु० बुरा स्थान।
दुरद—पु० हाथी।
दुरदाम—वि० प्रचंड। दुःसाध्य, कठिन।
दुरदाल—पु० हाथी।
दुरदुराना—सक्रि० तिरस्कार-पूर्वक दूर करना।
दुरदृष्ट—वि०बुरे दर्शन वाला। दृष्टि से दूर। [दुर्बोध।
दुरधिगम—वि० दुष्प्राप्य।
दुरध्व—पु० कुमार्ग।
दुरना—अक्रि० छिपना।
दुरवार—वि० कठिनता से निवारण करने योग्य।
दुरवेस—पु० फ़क़ीर।
दुरभिसंधि—स्त्री० धोखे-बाज़ी। कुमंत्रणा।
दुरभेव—पु० बुराभाव।
दुरमुस—पु० सड़क कूटने की एक प्रकार की गदा।
दुरवस्था—स्त्री० बुरी दशा।
दुरस—वि० दुरुस्त, सही।
दुराऊ—पु० छिपाव, कपट।
दुराग्रह८—पु० अनुचित हठ।
दुराचरण—पु०बुरा बर्त्ताव।
दुराचार८—पु०बुरा आचरण।
दुराज—पु० बुरा राज्य। एक ही देश में दो राजाओं का राज्य।
दुराजी—वि०दो राजा वाला।
दुरात्मा—वि० दुष्टात्मा।
दुरादुरी—स्त्री छिपाव।
दुराधर्ष—वि०।दे० 'दुर्द्धर्ष'।
दुराना—अक्रि० दूर होना। सक्रि०दूर करना। छिपाना।
दुराराध्य ४—वि० कठिनता से प्रसन्न होने योग्य।
दुरारुह—पु०बेल। नारियल

दुरारुहा—पु० खजूर वृक्ष ।
दुरालभा—स्त्री० जवासा ।
दुराव—पु० छल । छिपाव ।
दुराशय—वि० बुरे आशय-वाला । [आशा ।
दुराशा—स्त्री० व्यर्थ की-
दुरित—पु० पाप । वि० पापी ।
दुरिष्ट—पु० पाप । [शाप ।
दुरीषणा—स्त्री० बुरी कामना ।
दुरुक्त—पु० दुर्वचन ।
दुरुक्ति—स्त्री० दो बार कहना ।
दुरुखा—वि० दो रुख वाला ।
दुरुत्तर—वि० दुस्तर ।
दुरुपयोग—पु० दुर्व्यवहार ।
दुरुस्त—वि० (फ़ा०) ठीक ।
दुरुस्ती—स्त्री० (फ़ा०) सुधार, मरम्मत ।
दुरूद—स्त्री० (फ़ा०) दुआ । मुहम्मद साहब की स्तुति ।
दुरूह—वि० कठिन । गूढ़ ।
दुरेफ—पु० भौंरा ।
दुरेशहवार—पु० (फ़ा०) बहुत बड़ा मोती जो बादशाहों के योग्य होता है ।
दुरोदर—पु० जुआरी । जुआ का दाँव ।
दुर्, दुः*—एक उपसर्ग ।
दुर्गंध, दुर्गंधि—स्त्री० बदबू ।
दुर्गंधा—स्त्री० प्याज़ ।
दुर्ग—पु० क़िला । वि० दुर्गम ।
दुर्गत—वि० बुरी गति को प्राप्त ।
दुर्गति—स्त्री० दुर्दशा ।
दुर्गपाल—पु० क़िले का रक्षक ।
दुर्गम—वि० जहाँ जाना दुष्कर हो ।
दुर्गसंचर—पु० कठिन रास्ता ।
दुर्गा—स्त्री० एक देवी । पार्वती ।
दुर्गुण—पु० दोष ।
दुर्गेश—पु० क़िलेदार ।
दुर्ग्रह—वि० दुर्बोध ।
दुर्घट—वि० कठिन, मुश्किल ।
दुर्घटना—स्त्री० वारदात ।
दुर्जन—पु० दुष्टजन ।
दुर्जय, दुर्जेय—वि० कठिनता से जीतने योग्य ।
दुर्ज्ञेय—वि० मुश्किल से-समझने योग्य ।
दुर्दम, दुर्दमनीय, दुर्दम्य—वि० कठिनता से दमन करने योग्य, प्रचंड ।
दुर्दर, दुर्धर—वि० प्रबल । जिसका पकड़ना कठन हो ।
दुर्दर्श—वि० देखने में बुरा ।
दुर्दशा—स्त्री० बुरी दशा ।
दुर्दांत—वि० दे० 'दुर्दमनीय' ।
दुर्दिन—पु० बुरा दिन । मेघाच्छादित दिन ।
दुर्दैव—पु० दुर्भाग्य ।
दुर्द्धर्ष—वि० प्रबल । दुर्जय ।
दुर्नाम—पु० बदनामी ।
दुर्नामक—पु० बवासीर ।
दुर्नाम्नी—स्त्री० सीप ।
दुर्निवार—वि० कठिनता से निवारण करने योग्य ।
दुर्बल—वि० कमज़ोर ।
दुर्बोध—वि० गूढ़ । क्लिष्ट ।
दुर्भर—वि० भारी, दूभर ।
दुर्भाग्य—पु० बदक़िस्मत ।
दुर्भाव—पु० मनमुटाव ।
दुर्भाव्य—वि० जो जल्दी ध्यान में न आवे ।
दुर्भिक्ष—पु० अकाल ।
दुर्भेद्य—वि० कठिनता से भेदन करने योग्य ।
दुर्मति—स्त्री० बुरी बुद्धि । वि० दुष्ट ।
दुर्मद—वि० उन्मत्त ।
दुर्मना—वि० उदास ।
दुर्मर्ष—वि० दुःसह ।
दुर्मिल—पु० ३२ मात्रा का सवैया ।
दुर्मुख—पु० घोड़ा । वि० कटुभाषी । [ज्येष्ठ पुत्र ।
दुर्योधन—पु० धृतराष्ट्र का-
दुर्र—पु० (अ०) मोती ।
दुर्रा—पु० (फ़ा०) कोड़ा, चाबुक ।
दुर्रानी—पु० (फ़ा०) अफ़-ग़ानों की एक जाति ।
दुर्लंघ्य—वि० कठिनता से लाँघने योग्य ।
दुर्लक्ष्य—वि० कठिनता से दीखने योग्य । पु० ख़राब-निशाना ।
दुर्लभ—वि० दुष्प्राप्य ।
दुर्वचन—पु० गाली ।
दुर्वर्ण—पु०, दुर्वर्णा—स्त्री० चाँदी । [जाने योग्य ।
दुर्वह—वि० कठिनता से ले-
दुर्वाद—पु० निंदा, कुवाक्य ।
दुर्वासा—पु० एक ऋषि ।
दुर्विदग्ध—वि० अधपका ।

नोट—*'दुर' (दुः) एक उपसर्ग है, जो शब्दों के पूर्व 'बुरा' या 'कठिन' अर्थों में प्रयुक्त होता है । जैसे—दुःशील, दुःसाध्य ।

मूर्ख, अनाड़ी।
दुर्विध—वि० भाग्यहीन।
दुर्विपाक—पु० दुष्परिणाम। बुरा संयोग।
दुर्वृत्त३—वि० दुराचारी।
दुर्वृत्ति—स्त्री० दुराचार।
दुर्व्यवस्था—स्त्री० कुप्रबंध।
दुर्व्यवहार-पु० बुरा बर्त्ताव।
दुर्व्यसन—पु० बुरी आदत।
दुर्व्रत—वि० नीच आशय।
दुर्हृद—पु० शत्रु।
दुलकना—अक्रि० मुकरना।
दुलकी—स्त्री० घोड़े का उछल-उछल कर चलना।
दुलखना—सक्रि० बार बार कहना। [माला।
दुलड़ी—स्त्री० दो लरों की-
दुलत्ती—स्त्री० चौपायों का पिछली टाँगों को उठाकर मारना।
दुलदुल—पु० (अ०) मुहम्मद साहब की खच्चरी।
दुलना—अक्रि० हिलना।
दुलभ—वि० दे० 'दुर्लभ'।
दुलरा—वि० दुलारा।
दुलराना—सक्रि० प्यार-करना। [माला।
दुलरी—स्त्री० दोलड़ की-
दुलहा—पु० वर, पति।
दुलहाई—स्त्री० विवाह के गीत। [नववधू।
दुलहिन, दुलहिया—स्त्री०
दुलहेटा—पु०दुलारा लड़का।
दुलाई—स्त्री० ओढ़ने का रुई-दार कपड़ा।
दुलाना—सक्रि दे० 'डुलाना'।
दुलार—पु० लाड, प्यार।
दुलारना—सक्रि० प्यार-करना।
दुलारा७—वि० लाडला।
दुलीचा, दुलैचा—पु० गलीचा।
दुवन—पु० शत्रु। राक्षस।
दुवादसबानी—वि० खरा, चोखा। [चिन्ता।
दुविधा—स्त्री० संशय,
दुशनाम—स्त्री० (फ़ा०) दुर्वचन, गाली।
दुशवार२—वि० (फ़ा०) मुश्किल।
दुशाला—पु०(फ़ा०) पशमीने की दुहरी चादर।
दुश्चरित,दुश्चरित्र३-४—वि० दुराचारी।
दुश्चलन—पु० बुरा आचरण।
दुश्चिकित्स्य—वि० असाध्य-रोगी।
दुश्च्यवन—पु० इन्द्र।
दुश्मन२—पु० (फ़ा०) शत्रु।
दुष्कर—वि० दुःसाध्य।
दुष्कर्म—पु० बुरा काम।
दुष्कर्मा, दुष्कर्मी—वि० पापी।
दुष्काल—पु० दुर्भिक्ष।
दुष्कीर्त्ति—स्त्री० बदनामी।
दुष्कृत—पु० पाप। [कुकर्म।
दुष्कृति—स्त्री०बुराकर्म। वि०
दुष्क्रीत—वि० महँगा।
दुष्चेष्टित—वि० बुरी चेष्टा-वाला।
दुष्ट३-४—वि०दूषित, खोटा।
दुष्टचेता—वि० कपटी।
दुष्टाचार—पु० कचाल।
दुष्टात्मा—वि० बुरी प्रकृति का।
दुष्ठु—वि० निन्दक।
दुष्प्राप्य—वि० दुर्लभ।
दुष्यंत—पु० शकुन्तला का पति (एक राजा)। [द्वन्द्वी।
दुसरिहा—वि०साथी। प्रति-
दुसह—वि० असह्य।
दुसही—वि० कठिनता से सहने वाला।
दुसाध—पु० एक नीच जाति।
दुसार, दुसाल—पु० आर-पार छेद।
दुसारहा—वि० साथी।
दुसूती—स्त्री० दुहरे तागों की चादर।
दुसेजा—पु० पलङ्ग।
दुस्तर—वि० कठिनता से पार करने योग्य। [त्यागने योग्य।
दुस्त्यज—वि० कठिनता से-
दुस्थ३—वि० दुःखी। दरिद्र।
दुहता—पु०दौहित्र, नाती।
दुहत्था७—वि० दोनों हाथों से किया गया।
दुहना—सक्रि० स्तन से दूध निकालना। निचोड़ना।
दुहनी—स्त्री० दोहनी।
दुहरा—वि० दो तह का।
दुहराना—सक्रि०दे० 'दोह-राना'।
दुहाई—स्त्री० घोषणा। क़सम। दुहने की मज़दूरी।
दुहाग—पु० दुर्भाग्य।
दुहागनि, दुहागिन—स्त्री० विधवा। [भाग्यहीन।
दुहागिल—वि० सूना।
दुहाजू—वि० पहली स्त्री के

मर जाने पर दूसरा विवाह करने वाला। [वाना।
दुहाना—सक्रि० दूध कढ़-
दुहिता—स्त्री० कन्या, पुत्री।
दुहिन—पु० ब्रह्मा।
दुहेल—पु० संकट।
दुहेला७—वि० दुःसाध्य।
दुःखित। [दौहित्र।
दुहोतरा—वि० अधिक। पु०
दूँद-पु०, दूँदि-स्त्री० अंधेर। झगड़ा।
दूक—वि० दो-एक।
दूकान—स्त्री० (फ़ा०) सौदा बेचने तथा खरीदने का स्थान।
दूखना—सक्रि० दोष देना। अक्रि० दुखना।
दूजा—वि० दूसरा।
दूत—पु० चर, जासूस।
दूतर—वि० दुस्तर।
दूतावास—पु० दूसरे राज्य के दूत का दफ़्तर।
दूतिका, दूती—स्त्री० कुटनी।
दूत्य—पु० दूत का काम।
दूध—पु० स्तन से निकला सफ़ेद रंग का एक पेय-पदार्थ। [स्तनि।
दूधपूत—पु० धन और-
दूधफेनी—स्त्री० एक पकवान।
दूधभाई—पु० एक ही स्त्री का दूध पीने वाले लड़के।
दूधिया—वि० सफ़ेद। पु० एक पत्थर तथा घास।
दून, दूना—वि० (फ़ा०) दोगुना। तपाया हुआ।
दूनर—वि० जो नव कर दुहरा हो गया हो।
दूब—पु० घास विशेष।
दूबदू—क्रि० वि० (फ़ा०) मुक़ाबले में। [दुर्बल।
दूबर, दूबरा—वि० पतला।
दूभर—वि० कठिन।
दूमना—अक्रि० हिलना।
दूरंदेश२—वि० (फ़ा०) दूरदर्शी, अग्रशोची।
दूर—क्रि० वि० अलग, फ़ासले पर।
दूरगम—पु० गधा।
दूरत्व—पु० दूरी।
दूर-दराज़—वि० (फ़ा०) बहुत दूर।
दूर-दस्त—वि० (फ़ा०) बहुत दूर का। दुर्गम।
दूरदर्शक, दूरदर्शी—वि० दूर तक देखने वाला। दूरंदेश।
दूरदर्शकयंत्र—पु० दूरबीन।
दूरदर्शन—पु० पंडित। गिद्ध।
दूरदर्शिता—स्त्री० दूर की बात सोचने का गुण। पहले ही ज्ञान प्राप्त कर लेना।
दूरदृष्टि—स्त्री० दूरंदेशी।
दूरबीन—स्त्री० (फ़ा०) दूर की चीज़ देखने का यन्त्र।
दूरवर्ती५—वि० दूर का।
दूरवीक्षण—पु० दूरबीन।
दूरशब्दन-यन्त्र—पु० टेलीफ़ोन।
दूरस्थ—वि० जो दूर हो।
दूरी—स्त्री० (फ़ा०) फ़ासला, अन्तर। [देना।
दूरीकरण—पु० दूर हटा-
दूरोहण—पु० सूर्य।
दूर्वा—स्त्री० दूब (घास)।
दूलह, दुलहा—पु० पति, वर।
दूलित—वि० हिलाया हुआ।
दूष्य—पु० तंबू। [वाला।
दूषक—पु० दोषारोपण करने-
दूषण६—पु० दोष।
दूषना—सक्रि० दोष लगाना।
दूषिका—स्त्री० आँख की कीचड़।
दूषित—वि० दोष-युक्त।
दूष्य—वि० निन्दनीय।
दूष्या—स्त्री० हाथी की कमर बाँधने की रस्सी।
दूहना—सक्रि० दुहना।
दूहनी—स्त्री० दूध दुहने का पात्र।
दृक्—पु० आँख। दृष्टि।
दृक्क्षेप—पु० दृष्टिपात, नज़र डालना।
दृक्पथ—पु० दृष्टि की पहुँच।
दृक्पात—पु० अवलोकन।
दृक्शक्ति—स्त्री० देखने की शक्ति।
दृगंचल—पु० पलक।
दृगंबु—पु० आँसू।
दृग—पु० दृष्टि। नेत्र।
दृग्गोचर—वि० आँख से दिखाई देने वाला।
दृढ़३—वि० बलवान्। मज़बूत। अतिशय।
दृढ़कर्मा—वि० धैर्यवान्।
दृढ़त्व—पु० दृढ़ता।
दृढ़प्रतिज्ञ—वि० प्रतिज्ञा का पालन करने वाला।
दृढ़मुष्टि—वि० कंजूस।

दृढ़संधि—स्त्री० मिलाप।
दृढ़ांग—वि० हृष्ट-पुष्ट।
दृढ़ाई—स्त्री० मज़बूती।
दृढ़ाना—सक्रि० दृढ़ करना।
दृति—स्त्री० चाम का दोना या मशक।
दृप्त—वि० गर्वित।
दृब्ध—वि० गूँथा हुआ।
दृशा—स्त्री० आँख।
दृशि—स्त्री० प्रकाश। दृष्टि।
दृश्—पु० दर्शन। स्त्री० दृष्टि।
दृश्य—वि० दर्शनीय। सुन्दर। पु० तमाशा।
दृश्यमान—वि० जो दिखाई दे।
दृषत्—पु० पत्थर।
दृष्ट–वि०देखा हुआ, प्रत्यक्ष।
दृष्टकूट—पु० पहेली।
दृष्टमान—वि० प्रकट।
दृष्टरजा—स्त्री० रजस्वला स्त्री।
दृष्टवाद८—पु० प्रत्यक्षवाद (दार्शनिक सिद्धांत)।
दृष्टव्य—वि० देखने-योग्य।
दृष्टांत—पु० उदाहरण।
दृष्टि—स्त्री० नज़र। परख। बुद्धि। चक्षु।
दृष्टिकूट—पु० पहेली।
दृष्टिकोण—पु० मौलिक-विचार। [पड़े।
दृष्टिगत—वि० जो दिखाई-
दृष्टिगोचर—वि० प्रत्यक्ष।
दृष्टिपथ—पु० दृष्टि का विस्तार। [चितवन।
दृष्टिपात—पु० ताकना,
दृष्टिबंध—पु० जादू, इन्द्र-जाल।
दृष्टिवंत७–वि० दृष्टि वाला। ज्ञानी।
दृष्टिवाद–पु०दे० 'दृष्टवाद'।
दृष्टिबिंदु—पु० दृष्टिकोण, विचार।
दृष्टिशीश—पु० शिव।
दे, देई—स्त्री० देवी।
देखनहारा ७—पु० देखने वाला।
देखना—सक्रि० लखना परखना। खोजना।
देखभाल—स्त्री० निगरानी।
देखरेख—स्त्री० निगरानी।
देखादेखी—स्त्री० साक्षात्कार। क्रि० वि० देखने के अनुसार। [का एक बर्त्तन।
देग—पु० (फ़ा०) चौड़े मुँह-
देगची—पु० (फ़ा०) छोटा देग। [हुआ।
देदीप्यमान४–वि० चमकता-
देन—स्त्री०ऋण। देय वस्तु।
देनदार—पु० ऋणी।
देनलेन—पु० रुपया उधार देने का व्यवसाय।
देनहार—वि० देने वाला।
देना—सक्रि०अर्पण करना। पु० क़र्ज़।
देय—वि० देने योग्य।
देयासिनि—स्त्री० झाड़-फूँक करने वाली स्त्री।
देर,देरी—स्त्री० (फ़ा०) विलंब। समय।
देरानी—स्त्री० देवरानी।
देरीना—वि० (फ़ा०) पुराना। बुड्ढा।
देव—पु० देवता। देवर। दैत्य। [माता।
देवकी—स्त्री० श्रीकृष्ण की-
देवकीनन्दन—पु० श्रीकृष्ण।
देवकुसुम—पु० लौंग।
देवखात—पु० अपने आप बनी गुफ़ा। [तालाब।
देवखातक—पु० प्राकृतिक-
देवगति—स्त्री० स्वर्गलाभ।
देवगिरि—पु० हिमालय।
देवगुरु—पु० बृहस्पति।
देवच्छन्द—पु० सौ लड़ का हार।
देवढ़ी—स्त्री० ड्यौढ़ी।
देवतरु—पु० मंदार, पारिजातक, संतान, कल्पवृक्ष, हरिचंदन—ये देववृक्ष कहलाते हैं।
देवता—पु० अमर, देव।
देवत्व—पु० देवभाव।
देवदत्त—पु० अर्जुन का शंख।
देवदार–पु०एक ऊँचा पेड़।
देवदाली—स्त्री० एक लता।
देवदासी–स्त्री०वेश्या। मंदिरों में नाचने वाली दासी।
देवदेव—पु० इन्द्र। [गंगा।
देवधुनि, देवनदी—स्त्री०
देवधूप—पु० गुग्गुल।
देवन—पु० जुआ खेलने का पासा। क्रीड़ा। व्यवहार। जीतने की इच्छा।
देवनागरी—स्त्री० संस्कृत की वर्णमाला में लिखी जाने वाली लिपि।

देवपथ—पु० आकाश ।
देवपुर—पु० देवताओं का नगर ।
देववल्लभ—पु० नागकेशर ।
देवभाषा—स्त्री० संस्कृत-भाषा ।
देवभूमि—स्त्री० स्वर्ग ।
देवभूय—पु० देव में मिल जाना या लीन होना ।
देवमातृक—पु० वर्षा के जल से सींचा जाने वाला खेत ।
देवमास—पु० गर्भ का आठवाँ महीना ।
देवमुनि—पु० नारद ।
देवयज्ञ—पु० हवन ।
देवयानी—स्त्री० शुक्राचार्य की कन्या ।
देवयुग—पु० सत्ययुग ।
देवयोनि—स्त्री० विद्याधर, अप्सर, यक्ष, रक्ष, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध और भूत—ये देवयोनि कहलाते हैं ।
देवर—पु० पति का छोटा-[भाई ।
देवरथ—पु० विमान ।
देवरा—पु० छोटा देवता ।
देवराज—पु० इन्द्र ।
देवरानी—स्त्री० देवर की स्त्री । इन्द्राणी ।
देवराय—पु० इन्द्र ।
देवर्षि—पु० नारद, अत्रि, मरीचि, आदि ।
देवल—पु० पुजारी । देवालय ।
देवलोक—पु० स्वर्ग ।
देववधू—स्त्री० देवी । अप्सरा ।
देववाणी—स्त्री० संस्कृत-भाषा । आकाश-वाणी ।
देववृक्ष—पु० कल्पवृक्ष ।
देववाहन—पु० अग्नि ।
देवव्रत—पु० भीष्म पितामह ।
देवश्रुत—पु० ईश्वर ।
देवसदन—पु० स्वर्ग मंदिर ।
देवसभा—स्त्री० देवताओं की सभा ।
देवसेना—स्त्री० प्रजापति की [कन्या ।
देवस्थान—पु० मंदिर ।
देवस्व—पु० देवधन ।
देवहरा—पु० मंदिर ।
देवांगना—स्त्री० देवता की स्त्री । अप्सरा ।
देवा—वि० देनेवाली । स्त्री० [जूट ।
देवान—पु० दरबार । मंत्री ।
देवाना—वि० पागल ।
देवान्वय—पु० देवभक्त ।
देवालय—पु० स्वर्ग । मंदिर ।
देवाला—पु० दे० 'दिवाला' ।
देवी—स्त्री० दुर्गा । देव-पत्नी ।
देवीपुराण—पु० वह पुराण जिसमें देवी का माहात्म्य वर्णित है ।
देवेंद्र—पु० इन्द्र ।
देवै—स्त्री० देवकी ।
देवोत्तर—पु० देवता को अर्पित किया हुआ धन ।
देवोत्थान—पु० कार्तिक शुक्ल एकादशी जिस दिन विष्णु शेष शय्या से उठते हैं ।
देवोद्यान—पु० नंदनवन, चैत्ररथ आदि देवताओं के बगीचे । [स्थान ।
देश—पु० राष्ट्र । मुल्क ।
देशज—वि० देश में उत्पन्न ।
देशनिकाला—पु० देश से निकालने का दंड ।
देशभक्ति—स्त्री० । देश की सेवा, स्वदेशभिमान ।
देशरूप—पु० देश के अनुसार । उचित ।
देशांतर—पु० विदेश । भूगोल में मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी ।
देशाटन—पु० देश-भ्रमण ।
देशिक—वि० पथिक । गुरु ।
देशिनी—स्त्री० सूची । तर्जनी-उँगली ।
देशी, देशीय—वि० देश का ।
देसवाल—वि० अपने देश का ।
देसावर२—पु० विदेश ।
देह—पु० (फ़ा०) शरीर ।
देहकान—पु० देहाती ।
देहत्याग—पु० मृत्यु ।
देहधारण—पु० जन्म ।
देहधारी५—वि० प्राणी ।
देहपात—पु० मृत्यु ।
देहबंदी—स्त्री० (फ़ा०) गाँवों की हल्क़ीबंदी ।
देहभृत—पु० जीव । प्राण ।
देहयात्रा—स्त्री० शरीर-रक्षा का साधन । मृत्यु ।
देहरा—पु० देवालय । शरीर ।
देहरी—स्त्री० देहली (चौकठ) ।
देहली—स्त्री० दरवाज़े की चौकठ । एक नगर जो हिन्दुस्तान की राजधानी है ।
देहवंत, देहवान्१३—वि० प्राणी ।
देहांत—पु० मृत्यु ।

देहात—पु० (फ़ा०) गाँव ।
देहाती—वि०(फ़ा०) गाँव का ।
देहात्मवाद—पु० शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत । [शरीर ।
देही—पु० प्राणी । स्त्री०
देउ—पु० देव । आकाश ।
दैतेय—पु० राक्षस ।
दैत्य—पु० राक्षस ।
दैत्यगुरु—पु० शुक्राचार्य ।
दैत्यपुरोधा—पु० शुक्राचार्य ।
दैत्या—स्त्री० मुरैठी ।
दैत्यारि—पु० इन्द्र । विष्णु ।
दैनंदिन—वि० नित्य का । क्रि० वि० प्रतिदिन ।
दैनंदिनी—स्त्री० डायरी ।
दैन—वि० देने वाला । पु० दीनता । स्त्री० देने की क्रिया । (अ०) क़र्ज़ ।
दैनदार२—वि० (अ० फ़ा०) क़र्ज़दार ।
दैनिक—वि० रोज़ाना ।
दैन्य—पु० दीनता ।
दैयत—पु० दैत्य ।
दैया—पु० दैव ।
दैर—पु० (अ०) पूजा का स्थान, मन्दिर ।
दैर्घ्य—पु० दीर्घता ।
दैव—पु० भाग्य । ईश्वर । होनहार । [भाग्य ।
दैवगति—स्त्री० होनहार ।
दैवज्ञ४—पु० ज्योतिषी ।
दैवत—वि० देवता-संबन्धी । पु० देवता ।
दैवप्रमाण—पु०भाग्य को ही प्रमाण मानने वाला ।
दैवतंत्र—वि० भाग्याधीन ।
दैवयोग—पु० इत्तिफ़ाक़ ।
दैवलक—पु० भूत-सेवक ।
दैववशात्—क्रि० वि० अकस्मात् ।
दैववादी—पु० आलसी ।
दैवविवाह—पु०एक विवाह ।
दैवागत—वि० दैवी ।
दैवात्—क्रि० वि० दैवयोग से, भाग्य से ।
दैविक—वि० ईश्वरीय ।
दैवी—वि० आकस्मिक, देवकृत ।
दैव्य—पु० भाग्य ।
दैहिक—वि० शारीरिक ।
दोंचना—सक्रि० दबाना ।
दो—वि० २
दो-अमला—वि० (फ़ा०) जो दो व्यक्तियों के अधिकार में हो ।
दो-अमली—स्त्री० (फ़ा०अ०) दो प्रकार का शासन । अराजकता ।
दो-आशियाना—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का तम्बू जिसमें दो कमरे होते हैं ।
दोआब—पु० (फ़ा०) दो नदियों के बीच का प्रदेश ।
दोआबा—दे० 'दोआब ।'
दोउ—वि० दोनों ।
दोखन—पु० दे० 'दोष' ।
दोग़ला७—वि० (फ़ा०) भिन्न-भिन्न जातियों के माता पिता से उत्पन्न, जारज ।
दोगा—पु० एक प्रकार का छपा हुआ लिफ़ाफ़ा । पानी में घुला चूना । वि०भिन्न-भिन्न
दोगाना—स्त्री० (फ़ा०) सखी । मिश्रित दो चीज़ें ।
दोचंद—वि० (फ़ा०) दूना ।
दोच—स्त्री०दबाव । दुविधा ।
दोचित्ता७—वि० अस्थिर । चित्त । [उद्विग्नता ।
दोचित्ती—स्त्री० चित्त की
दोचोबा—पु० (फ़ा०) दो चोबों का खेमा ।
दोज़२—वि० (फ़ा०) सटा-हुआ । सोनेवाला ।
दोज़ख़—पु०(फ़ा०) नरक ।
दोजग—पु० नरक ।
दोज़ानू—क्रि० वि० (फ़ा०) घुटनों के बल ।
दो-तरफ़ा—वि० (फ़ा०) दोनों तरफ़ का । क्रि० वि० दोनों ओर ।
दोतल्ला—वि०दो खंड का ।
दोतही—स्त्री० एक मोटी चद्दर ।
दोदना—अक्रि० मुकरना ।
दोधारा ७—वि० दे० 'दुधारा' ।
दोन—पु० दुआबा ।
दोना७—पु० पत्तों का बना-कटोरा । [दूसरे का योग ।
दोनों—वि० पहला और-
दोपल्ली—वि० दोपलिया ।
दोपहर—वि० मध्याह्न ।
दोपीठा—वि० दोनों ओर-एक सा ।
दोबल—पु० दोष ।
दोबा—पु० दुविधा ।

दोबारा—क्रि० वि० (फ़ा०) दूसरी बार।
दोबाला—वि० (फ़ा०) दूना।
दोभाषिया—पु० दे० 'दुभाषिया'। [दो मंज़िल का।
दोमंज़िला—वि० (फ़ा०)
दोमुँहा—वि० कपटी। पु० एक साप।
दोय—वि० दो, दोनों।
दोयम—वि० (फ़ा०) दूसरा।
दोरंगी—स्त्री० कपट।
दोराहा—पु० दो रास्ते वाला-स्थान।
दोरुखा—वि० दोनों ओर समान रंग या बेल बूटे वाला। [हिंडोला। नील।
दोल, दोला—पु० डोली,
दोलायंत्र—पु० अर्क़ उतारने का यंत्र विशेष। [हुआ।
दोलायमान—वि० हिलता-
दोलित—वि० हिलता हुआ, चंचल। [वार।
दोशंबा—पु० (फ़ा०) सोम
दोश—पु० (फ़ा०) कंधा।
दोशमाल—पु० (फ़ा०) कंधे पर रखने का रूमाल।
दोशाखा—पु० (फ़ा०) दो बत्ती वाला शमादान।
दोशीज़गी—स्त्री० (फ़ा०) कुमारित्व।
दोशीज़ा—स्त्री० (फ़ा०) कुमारी, अविवाहिता।
दोष, दोषन—पु० ऐब। कलंक। अपराध।
दोषज्ञ—पु० पंडित।
दोषना—सक्रि०दोष लगाना।
दोषपूर्ण—वि० दोषों से भरा हुआ।
दोषा—स्त्री० रात्रि।
दोषाकर—पु० चन्द्रमा।
दोषारोपण—पु० दोषी ठहराना।
दोषिल—वि० दोषी।
दोषी—वि० पापी। अपराधी। [वर्ष का।
दोसाला—वि० (फ़ा०) दो-
दोस्त—पु० (फ़ा०) मित्र।
दोस्तदार—वि० (फ़ा०) मित्रता मानने वाला।
दोस्ताना—पु० (फ़ा०)दोस्ती।
दोह—पु० द्रोह, द्वेष।
दोहगा—स्त्री० उपपत्नी।
दोहता—पु० दे० 'दौहित्र'।
दोहत्थड़—पु० दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़।
दोहत्था—क्रि० वि० दोनों हाथों से।
दोहद—स्त्री० इच्छा। गर्भिणी की लालसा। गर्भ का चिह्न (मचली आदि)। गर्भ।
दोहदवती—स्त्री० गर्भवती।
दोहन—पु० दुहना।
दोहना—सक्रि०दोष लगाना।
दोहनी—स्त्री० दुग्धपात्र।
दोहर—स्त्री० दो परतों की चादर।
दोहरा—वि० दो परत का।
दोहराना—अक्रि० दोहरा-करना। [पद्य।
दोहा—पु०दो चरण का एक-
दोहाग—पु० दुर्भाग्य।
दोहित—पु० नाती।
दोही—पु० ग्वाला।
दोह्य—वि० दुहने-योग्य।
दौं—अव्य० या। तो।
दौंकना—अक्रि० दमकना।
दौंचना—सक्रि०दबाव से लेना।
दौंरी—स्त्री० दाँयँ।
दौ—स्त्री० संताप। आग। वनाग्नि।
दौड़—स्त्री० धावा। द्रुतगति।
दौड़धूप—स्त्री० परिश्रम। परेशानी।
दौड़ना—अक्रि० तेज़ चलना।
दौड़ादौड़—क्रि० वि०दौड़ते-हुए।
दौड़ादौड़ी—स्त्री० दौड़-धूप।
दौड़ान—स्त्री० दौड़ने की क्रिया या वेग।
दौत्य—पु० दूतकर्म।
दौन—पु० दे० 'दमन'।
दौना—पु० कटोरे की तरह पत्तों का बना पात्र।
दौर—पु० (अ०) प्रभाव। बारी। गर्दिश। चक्कर।
दौरदौरा—पु० (अ०) ज़ोर, प्रधानता। प्रताप। बारी।
दौरना—अक्रि० दौड़ना।
दौरा—पु०(अ०)गश्त, फेरा।
दौरात्म्य—पु० दुर्जनता।
दौरान—पु० (फ़ा०) दौरा। सिलसिला। पारी।
दौरी—स्त्री० डलिया।
दौर्जन्य—पु० दुर्जनता।
दौर्बल्य—पु० दुर्बलता।
दौर्भाग्य—पु० बदक़िस्मती।
दौर्मनस्य—पु० दुर्जनता।
दौर्हृद—पु० दुष्टता।

दौलत—स्त्री० (अ०) धन।
दौलतख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) निवास-स्थान। [धनी।
दौलतमंद२—वि० (अ० फ़ा०)
दौल्मि—पु० इन्द्र।
दौवारिक—पु० द्वारपाल।
दौहित्र७—पु० नाती।
दौहृद—पु० दे० 'दोहद'।
द्यु—पु० दिन। स्वर्ग। अग्नि। आकाश। सूर्य। लोक।
द्युति—स्त्री० दीप्ति, शोभा।
द्युतिमंत—वि० प्रकाशवाला।
द्युतिमा—स्त्री० प्रकाश। कान्ति, शोभा। [वान्।
द्युतिमान्१३—वि० प्रकाश-
द्युतिशाली५—वि० दीप्तिमान्।
द्युपति—पु० सूर्य।
द्युपथ—पु० आकाश-मार्ग।
द्युमणि—पु० सूर्य।
द्युमान्—वि० चमकीला।
द्युम्न—पु० धन।
द्युलोक—पु० स्वर्ग-लोक।
द्यूत—पु० जुआ।
द्यूतकारक १४—पु० जुआ खिलाने वाला।
द्यो—पु० स्वर्ग।
द्योत—पु० धूप। प्रकाश।
द्योतक—वि० प्रकाशक।
द्योतन—पु० दर्शन।
द्योति—स्त्री० कान्ति, शोभा।
द्योतित—वि० प्रकाशित।
द्योत्य—पु० प्रकाश। धूप। वि० प्रकाश-योग्य।
द्योस, द्यौस—पु० दिन।
द्रंग—पु० नेत्र।
द्रप्स—पु० पतला दही।
द्रम्म—पु० एक प्राचीन चाँदी का सिक्का।
द्रवंती—स्त्री० मूली।
द्रव३—पु० तरल वस्तु (आसव आदि)। बहाव। वि० गीला। तरल।
द्रवण—पु० पिघलने, बहने की क्रिया।
द्रवत्व—पु० तरलता। [लना।
द्रवना—अक्रि० बहना। पिघ
द्रविड़—पु० दक्षिण का एक देश। [सोना।
द्रविण—पु० धन। शक्ति।
द्रवित—वि० पिघला हुआ।
द्रवीकरण—पु० पिघलना।
द्रवीभूत—वि० पानी-पानी, पिघला हुआ। [सामग्री।
द्रव्य३—पु० वस्तु। धन।
द्रव्यवाद—पु० धन का अभियोग।
द्रव्यवान्१३—वि० धनी।
द्रष्टव्य—वि० देखने-योग्य।
द्रष्टा—वि० देखने वाला।
द्रह—पु० झील, दह।
द्राक्षा—स्त्री० अंगूर।
द्राघिमा—स्त्री० लंबाई।
द्राघिष्ठ—वि० अतिशय दीर्घ।
द्राण—वि० सोया हुआ। भगेडू। पु० स्वप्न।
द्राप—पु० कौड़ी। आकाश। वि० बेवक़ूफ़।
द्राव—पु० बहाव। पिघलाव।
द्रावक—वि० पिघलाने वाला। पु० चंद्रमणि।
द्रावण—पु० पिघलाने की क्रिया या भाव।
द्राविड़—वि० द्रविड़ देश का।
द्रु—पु० वृक्ष।
द्रुघण—पु० मुग्दर।
द्रुत—वि० शीघ्रगामी। क्रि० वि० शीघ्र। [वाला।
द्रुतगामी५—वि० तेज़ चलने-
द्रुतविलंबित—पु० एक छन्द।
द्रुति—स्त्री० द्रव। गति।
द्रुपद—पु० द्रौपदी के पिता।
द्रुम—पु० वृक्ष। [लाक्षा।
द्रुमव्याधि—स्त्री० लाख,
द्रुमामय—पु० महावर।
द्रुमालय—पु० जंगल।
द्रुमोत्पल—पु० कनेर वृक्ष।
द्रुहिण—पु० ब्रह्मा।
द्रोण—पु० दोना। नाव। एक वृक्ष। कौआ। काठ का बर्त्तन द्रोणाचार्य।
द्रोणकाक—पु० डोम कौआ।
द्रोणगिरि—पु० एक पर्वत।
द्रोणमुख—पु० एक क़िला।
द्रोणाचार्य—पु० कौरव, पांडवों के गुरु।
द्रोणी—स्त्री० डोंगी। छोटा-दोना। कठवत।
द्रोह—पु० वैर, द्वेष। [वाला।
द्रोही५—वि० द्रोह करने-
द्रौपदी—स्त्री० द्रुपद-पुत्री।
द्वंद, द्वंद्व—पु० जोड़ा। रहस्य। झगड़ा। एक समास।
द्वंदर—पु० संसार। वि० झगड़ालू।
द्वंद्वयुद्ध—पु० कुश्ती।
द्वय—वि० दो।
द्वादश—वि० बारह।
द्वादशकर—पु० बृहस्पति।

कार्त्तिकेय।
द्वादशांगुल—पु० बालिश्त।
द्वादशाक्ष—पु० कार्त्तिकेय।
द्वादशात्मा—पु० सूर्य।
द्वादशी—स्त्री० पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वापर—पु० तीसरा युग। संदेह। [साधन।
द्वार—पु० मुख। दरवाज़ा।
द्वारकंटक—पु० किवाड़।
द्वारका—स्त्री० काठियावाड की एक नगरी।
द्वारकाधीश—पु० श्रीकृष्ण।
द्वारचार—पु० विवाह में, बरात पहुँचने पर, कन्या के द्वार पर, वर की पूजा आदि करने की एक रीति।
द्वारपटी—स्त्री० चिक, पर्दा।
द्वारपाल—पु० दरबान।
द्वारपूजा—स्त्री० बरात पहुँचने के समय बेटी वाले के दरवाज़े पर 'द्वारचार' नामक विवाह की एक रस्म।
द्वारयंत्र—पु० ताला।
द्वारा—पु०(अव्य०)ज़रिये से।
द्वारावती—स्त्री०द्वारका नगरी।
द्वारी—स्त्री० छोटा द्वार।
द्वि—वि० दो।
द्विक—वि०दोहरा। [कर्म हों।
द्विकर्मक—वि० जिसमें दो-
द्विगु—पु०एक समास जिसमें पूर्व पद संख्या-वाचक हो। वि० दो गाय रखने वाला।
द्विगुण—वि० दुगुना।
द्विगुणित—वि० दूना।
द्विज,द्विजन्मा—पु० जिसका दो बार जन्म हुआ हो। अंडज प्राणी, पक्षी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। दाँत। चन्द्रमा। [ब्राह्मण।
द्विजपति, द्विजराज—पु०
द्विजाति—पु० दे० 'द्विज'।
द्विजिह्व—वि० चुगुलखोर। पु०साँप। [चंद्रमा। गरुड़।
द्विजेंद्र,द्विजेश—पु०ब्राह्मण।
द्वितीय—वि० दूसरा।
द्वितीया—स्त्री० दूज।
द्वित्व—पु० दो का भाव।
द्विदल—वि० दो दलवाला अन्न, दाल। [स्त्री० संदेह।
द्विधा—वि० दो प्रकार का।
द्विप—पु० हाथी। [गीत।
द्विपदी—स्त्री० दो पदों का-
द्विपाद—वि०दो पैरों वाला।
द्विपायी—पु० हाथी।
द्विपास्य—पु० गणेश जी।
द्विभाषिया—पु० दो भाषाओं में विचार प्रकट करने वाला।
द्विमुखी—वि० स्त्री० दो मुँह वाली।
द्विरद—पु० हाथी।
द्विरसना—स्त्री० साँपिन।
द्विरागमन—पु०वधू का पति के घर दूसरी बार आना, गौना।
द्विरेफ—पु० भौंरा।
द्विविध—वि०दो प्रकार का। क्रि० वि० दो प्रकार से।
द्विविधा—स्त्री० चिंता, असमंजस।
द्विवेदी—पु० दूबे।
द्विषत्—पु० शत्रु।
द्विष्—पु० शत्रु, द्वेषी।
द्वीप—पु० टापू।
द्वीपवती—स्त्री० नदी।
द्वीपवान्—पु० समुद्र।
द्वीपी—पु० व्याघ्र, चीता।
द्वीप्य—वि०द्वीप में उत्पन्न।
द्वेष—पु० चिढ़, बैर।
द्वेषण—पु० शत्रु। शत्रुता।
द्वेषी५—पु० बैरी, विपक्षी।
द्वेष्टा—वि० द्वेष कर्त्ता।
द्वेष्य—वि० द्वेष करने योग्य।
द्वै—वि० दो। दोनों।
द्वैज—स्त्री० दौज।
द्वैत—पु० दो का भाव। मोह। अज्ञान।
द्वैतवाद—पु० एक दार्शनिक-सिद्धान्त जिसमें ईश्वर और जीव दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।
द्वैतवादी५—वि० द्वैतवाद को मानने वाला।
द्वैध—पु० विरोध। वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ भाग सरकार, और कुछ प्रजा के अधिकार में रहे।
द्वैधीकरण—पु०खंडन, भेदन।
द्वैधीभाव—पु० दो प्रकार का भाव अर्थात् एक से संधि, दूसरे से विग्रह। दुविधा।
द्वैपायन—पु० व्यास जी।
द्वैमातुर—पु० गणेश। जरासंध। [परस्पर युद्ध।
द्वैरथ—पु०दो रथ सवारों का-
द्वौ—वि० दोनों।
द्व्यष्ट—पु० ताँबा।

१९—ध

धंका—पु० चोट । धक्का ।
धंगर—पु० अहीर ।
धंगा—पु० खाँसी ।
धंध—पु० धंधा । झंझट ।
धंधक—पु० बखेड़ा ।
धंधरकधोरी—पु०हर घड़ी काम में लगा रहने वाला ।
धँधला—पु० ढोंग ।
धंधा—पु० कारबार ।
धंधार—स्त्री० ज्वाला ।
धँधारी—स्त्री० गोरखधंधा ।
धधार—पु०हालिका । लपट ।
धँवना—सक्रि० धौंकना ।
धँसना९—अक्रि० गड़ना । नष्ट होना ।
धँसान—स्त्री० धंसने की क्रिया । दलदल । [घुसाना ।
धँसाना—सक्रि० चुभाना,
धँसाव—पु० कीचड़, दलदल ।
धक—स्त्री० हृदय धड़कन का शब्द । उमंग । क्रि० वि० अचानक ।
धकधकाना—अक्रि० हृदय का ज़ोर से चलना । चमकना ।
धकधकाहट—स्त्री० धड़कन । खटका । [धड़कन ।
धकधकी—स्त्री० जी की-
धकपक—स्त्री० धकधका ।
धकपकाना—अक्रि० जी का धड़कना । [धक्कम-धक्का ।
धकपेल, धकापेल—स्त्री०
धका, धक्का—पु० टक्कर । आघात ।
धक्काधूम—स्त्री०भीड़ । धक्कम-धक्का । [जलाना ।
धकाना—सक्रि० सुलगाना,
धकारा—पु० धकधकी, शंका ।
धकियाना—सक्रि०धक्का देना
धकेलना—सक्रि० धक्का-देना । [वाला ।
धकैत—वि० धक्का देने-
धक्कमधक्का—पु० एक दूसरे को धक्का देना, रेलपेल ।
धक्का-मुक्की—स्त्री० मारपीट ।
धगड़ा—पु० यार, उपपति ।
धगड़ी—स्त्री० कुलटा स्त्री ।
धगधगाना—अक्रि०धड़कना ।
धगरिन—स्त्री० चमारिन जो नाल काटती है ।
धगरी—स्त्री० पति की मुँह-लगी स्त्री । व्याभचारिणी ।
धगा—पु० डोरा ।
धचक, धचका—पु० धक्का ।
धज—स्त्री० सजावट, शोभा । शक्ल ।
धजा—स्त्री०ध्वजा । सजावट ।
धजीला७—वि० सजीला ।
धज्जी—स्त्री० कपड़े, काग़ज़ आदि का पतला टुकड़ा ।
धटी—स्त्री० कौपीन । गर्भाधान के पश्चात् स्त्रियों के पहनने का वस्त्र ।
धड़ंग—वि० नङ्गा ।
धड़—पु० पेड़ी । शरीर का स्थूल मध्य भाग । पेड़ का तना । [खटका ।
धड़क—स्त्री० धड़कन ।
धड़कन—स्त्री० धकधकी ।
धड़कना—अक्रि० हृदय का धकधक करना ।
धड़का—पु० दे० 'धड़क' ।
धड़काना—सक्रि० डराना । धड़कन पैदा कराना ।
धड़धड़ाना—अक्रि० 'धड़धड़' शब्द करना ।
धड़ल्ला—पु० धड़ाका ।
धड़वाई—पु० तौलने वाला ।
धड़ा—पु० बटखरा । पाँच सेर की तौल । तराज़ू ।
धड़ाका—पु० धमाका ।
धड़ाधड़—क्रि०वि० लगातार । 'धड़धड़' शब्द के साथ ।
धड़ाबंदी—स्त्री०धड़ा बाँधना । आमने-सामने की सेनाओं का युद्ध के लिए सैनिक बल बराबर करना । [का शब्द ।
धड़ाम—पु० ज़ोर से गिरने-
धत—स्त्री० ख़राब आदत ।
धतकार—स्त्री० दुत्कार, फटकार ।
धता—वि० हटा हुआ ।
धतूर—पु० तुरही ।
धतूरा—पु० एक पौधा जिसके फलों के बीज विषैले होते हैं ।
धतूरिया—वि० बहुरूपिया, छली ।
धत्तूर—पु० धतूरा । [आँच ।
धधक—स्त्री०आग की लपट ।
धधकना—अक्रि० भड़कना ।
धधकाना—सक्रि० प्रज्वलित-करना ।

धनंजय—पु० अग्नि। अर्जुन। विष्णु।
धन—पु० दौलत। जोड का चिह्न (+)। स्त्री० स्त्री।
धनक, धनकि—पु० धनुष। धनेच्छा। कारचोबी या गोटे का सामान।
धनकुबेर—पु०अत्यन्त धनी।
धनकेलि—स्त्री० कुबेर।
धनतेरस—स्त्री०कार्तिक कृष्णा-त्रयोदशी। [कुबेर।
धनद—वि० दाता। पु०
धनदिशा—स्त्री० उत्तर दिशा।
धनधान्य—पु०धन और अन्न।
धनधाम—पु० धन और घर।
धनधारी—पु० कुबेर। धनी।
धनमान—वि०धनी। [धनी।
धनवंत७, धनवान् १३—वि०
धनहर—पु० चोर।
धनहीन—वि० ग़रीब।
धना—स्त्री० युवती स्त्री।
धनादेश—पु० मनीआर्डर।
धनाढ्य—वि० धनी।
धनार्थी—वि० लोभी।
धनाधिप—पु०धनी। कुबेर।
धनि—वि० धन्य। स्त्री० युवा स्त्री।
धनिक—वि० धनी।
धनिया—पु० एक मसाला।
धनिष्ठा—स्त्री० एक नक्षत्र।
धनी—वि० धनवान्। पु० पति। स्त्री० युवती।
धनीमानी—वि० धनी और प्रतिष्ठित।
धनु, धनुक—पु० धनुष।
धनुआ—पु० कमान। रुई-धुनने की धुनकी। [वाला।
धनुकार—पु० धनुष चलाने-
धनुखा—पु० सीता-स्वयंवर का स्थान जहाँ धनुष तोड़ा गया था।
धनुर्गुण—पु०धनुष की डोरी।
धनुर्ज्या—स्त्री०धनुष की डोरी।
धनुर्द्धर, धनुर्द्धारी—पु० तीरंदाज़, योद्धा। [की विद्या।
धनुर्विद्या—स्त्री० बाण चलाने-
धनुर्वेद—पु०वह शास्त्र जिसमें धनुर्विद्या का निरूपण है।
धनुष—पु० कमान।
धनुष्पट—पु० चिरौंजी।
धनुहाई—स्त्री० धनुष की लड़ाई।
धनुही—स्त्री०छोटी कमान।
धनेश—पु० कुबेर। विष्णु।
धन्ना—पु० धरना।
धन्नासेठ—पु० बडा धनी।
धन्नी—स्त्री० एक क़िस्म के बैल तथा घोड़े।
धन्य—वि० प्रशंसा के योग्य। भाग्यवान्। [वाद।
धन्यवाद—पु० प्रशंसा, साधु-
धन्यवादी—वि० कृतज्ञ।
धन्वंतरि—पु० देवताओं के एक वैद्य जो आयुर्वेद के प्रवर्त्तक थे। [(मारवाड़)।
धन्वदेश—पु० रेगिस्तान।
धन्वयास—पु० जवास।
धन्वा—पु कमान, धनुष।
धन्वाकार—वि० टेढ़ा।
धन्वाधारी—वि० धनुष धारण करने वाला।
धन्वी—वि०धनुर्धर। निपुण।
धप—पु० चपत।
धपना९—अक्रि० दौडना।
धप्पा—पु० तमाचा, थप्पड।
धब्बा—पु० दाग़। कलंक।
धम, धमक—स्त्री० भारी चीज़ के गिरने का शब्द। आघात। [करना।
धमकना—अक्रि० धमाका-
धमकाना—सक्रि० भय-दिखाना, डाँटना।
धमकी—स्त्री० डाँट।
धमरगज—पु० उपद्रव, युद्ध।
धमधूसर—वि० बेडौल।
धमना—सक्रि० धौंकना।
धमनि, धमनी—स्त्री० रक्त-वाहिनी नाड़ी।
धमसा—पु० नगाडा।
धमाका—पु० दे० 'धम'।
धमाचौकडी—स्त्री० ऊधम्।
धमाधम—क्रि० वि० 'धम धम' शब्द के साथ।
धमार—स्त्री० उछल-कूद, उपद्रव। पु० होली का एक गीत। [खेलना।
धमारी—वि० उपद्रव। होली-
धमूका—पु० घूँसा।
धम्मिल्ल—पु०बँधे हुए बाल।
धयना—अक्रि० दौडना।
धरंता—पु० पकड़ने वाला। दिल की धड़कन।
धर—वि०धारण करने वाला। पु०पर्वत। धड़। स्त्री०पृथ्वी।
धरक—स्त्री०, धरका—पु० दिल की धड़कन। खटका।
धरकना—अक्रि०। दे० 'धड़कना'।

धरण—पु० ३२ रत्ती वज़न की तौल।
धरणि, धरणी—स्त्री० पृथ्वी।
धरणिधर—पु० शेषनाग। कच्छप। पर्वत। विष्णु।
धरणीसुता—स्त्री० सीता।
धरता—पु० क़र्ज़दार। वि० पकड़ता हुआ।
धरती—स्त्री० पृथ्वी।
धरधर—पु० दे० 'धराधर'।
धरधरा—पु० धड़कन।
धरधराना—अक्रि० धड़धड़ शब्द करना।
धरन—स्त्री० धरने का क्रिया। पाटन की कड़ी। धरता।
धरना९—सक्रि० पकड़ना। रखना। पु० हठ पूर्वक किसी के दरवाज़े पर बैठना।
धरनी—स्त्री० पृथ्वी। कड़ी।
धरनैत—पु० धरना देने वाला।
धरम—पु० दे० 'धर्म'।
धरमसार—स्त्री० धर्मशाला। पु० सदावर्त।
धरषना—सक्रि० चूर्ण या मर्दन करना। दबाना।
धरसना—सक्रि० डाँटना। दबाना। [धैर्य।
धरहर—स्त्री० धर-पकड़।
धरहरना—अक्रि० धड़-धड़ाना।
धरहरा—पु० मीनार।
धरहरिया—पु० रक्षक।
धरा—स्त्री० पृथ्वी। संसार। गर्भाशय।
धराऊ—वि० क़ीमती।
धरातल—पु० पृथ्वी। रक़बा।
धराधर—पु० शेषनाग। पर्वत। विष्णु।
धराधीश—पु० राजा।
धराना—सक्रि० पकड़ाना। निश्चित कराना।
धरापुत्र—पु० मंगल।
धरामर—पु० ब्राह्मण।
धरासुर—पु० ब्राह्मण।
धराहर—पु० दे० 'धरहरा'।
धरित्री—स्त्री० पृथ्वी।
धरेजा—स्त्री० रखेली।
धरेली—स्त्री० रखी हुई स्त्री।
धरेस—पु० राजा।
धरोहर—स्त्री० अमानत।
धर्त्ता—पु० धारण करने वाला।
धर्म—पु० मज़हब। सत्कर्म। कर्त्तव्य। मुक्ति-मार्ग।
धर्मकाय—पु० बुद्ध।
धर्मक्षेत्र—पु० कुरुक्षेत्र।
धर्मघड़ी—स्त्री० धर्मार्थ देखने के लिए लगी हुई घड़ी।
धर्मचक्र—पु० बुद्ध की धर्म-शिक्षा। [चरण।
धर्मचर्य्या—स्त्री० धर्मा-
धर्मचिंता—स्त्री० उपाधि।
धर्मज्ञ४—वि० धर्म का जानने-वाला।
धर्मधक्का—पु० व्यर्थ का कष्ट।
धर्मध्वज, धर्मध्वजी—पु० ढोंगी।
धर्मनिष्ठ४—वि० धार्मिक।
धर्मनिष्ठा—स्त्री० धर्म परा-यणता। [स्त्री।
धर्मपत्नी—स्त्री० विवाहिता-
धर्मपुत्र—पु० युधिष्ठिर।
धर्मभीरु—वि० धर्म से डरने वाला अर्थात् धर्म-परायण।
धर्मयुग—पु० सत्ययुग।
धर्मयुद्ध—पु० नियमानुकूल किया जाने वाला युद्ध।
धर्मराज—पु० युधिष्ठिर। बुद्धदेव। यमराज। न्याया-धीश।
धर्मशाला—स्त्री० धर्मार्थ यात्रियों के टिकने की जगह, अतिथि-घर।
धर्मशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें धर्मसंबंधी नीति का उल्लेख हो।
धर्मशील३—वि० धार्मिक।
धर्मसंहिता—स्त्री० स्मृति। जैसे, मनुःस्मृति आदि।
धर्मसभा—स्त्री० न्याय-सभा।
धर्मसारी—स्त्री० धर्मशाला।
धर्मस्थ—पु० न्यायाधीश।
धर्मांशु—पु० सूर्य।
धर्मात्मा—वि० धर्मशील।
धर्मादाय—पु० धर्मनिमित्त-धन-समर्पण।
धर्माधिकरण—पु० न्याया-लय। [धीश।
धर्माधिकारी५—पु० न्याया-
धर्माध्यक्ष—पु० न्यायाधीश।
धर्मार्थ—क्रि०वि० धर्मार्थ।
धर्मिणी—स्त्री० पत्नी।
धर्मिष्ठ४—वि० धार्मिक।
धर्मी५—वि० धर्मात्मा।
धर्मोपाध्याय—पु० पुरोहित।
धर्म्य—वि० उचित, न्याय्य।
धर्षक, धर्षी—पु० धर्षण करने वाला, नीचा दिखाने वाला।
धर्षण६ ४—पु० अनादर।

संभोग । साहस ।
धर्षिणी—स्त्री० पुँश्चली ।
धर्षित—वि० तिरस्कृत ।
धव—पु० एक जङ्गली पेड़ । पति । पुरुष,
धवई—स्त्री० एक पुष्प वृक्ष ।
धवनी—स्त्री० दे० 'धौंकनी' ।
धवर, धवरा७—वि० उजला, सफ़ेद ।
धवरहर—पु० मीनार ।
धवल ३—वि० श्वेत । निर्मल । उज्ज्वल । पु० बैल । [बनाना ।
धवलना—सक्रि० उज्ज्वल-
धवला—वि० स्त्री० सफ़ेद ।
धवलाई—स्त्री० उज्ज्वलता ।
धवलागिरि—पु० हिमालय का एक प्रसिद्ध शिखर ।
धवलित—वि० स्वच्छ, श्वेत ।
धवली—स्त्री० सफ़ेद गाय ।
धवा—पु० पति । पुरुष ।
धवाना—सक्रि० दौड़ाना ।
धवित्र—पु० पंखा ।
धस—पु० डुबकी । [डर ।
धसक—स्त्री० सूखी खाँसी ।
धसकना—अक्रि० दब जाना । ईर्ष्या करना । [घुसना ।
धसना९—अक्रि० नष्ट होना ।
धसमसाना—अक्रि० धँस-जाना । [में बन्द करना ।
धाँधना—सक्रि० कोठरी आदि-
धाँगड़—पु० एक जाति ।
धाँधली—स्त्री० जल्दबाज़ी । धोखा । बखेड़ा । [खाँसना ।
धाँसना—अक्रि० पशुओं का ।
धाँसी—स्त्री० घोड़े की खाँसी ।
धा—पु० ब्रह्मा । तबले का एक बोल । वि० धारण करने वाला । प्रत्य० तरह । [पेड़ ।
धाई—स्त्री० दाई । धवई का-
धाऊ—पु० हरकारा ।
धाक—स्त्री० रोब, भय । ख्याति ।
धाकर—वि० दोग़ला ।
धागा—पु० डोरा ।
धाड़—स्त्री० झुंड । दहाड़, ज़ोर से रोना ।
धाड़ी—स्त्री० लुटेरा ।
धाता—पु० ब्रह्मा । विष्णु । महेश । वि० रक्षक ।
धातु—स्त्री० सोना, चाँदी आदि । वीर्य । तत्त्व । ईश्वर । [वीर्य का क्षय हो ।
धातुक्षय—पु० वह रोग जिसमें-
धातुद्रावक—पु० सुहागा ।
धातुभृत—पु० पहाड़ ।
धातुराग—पु० ईंगुर आदि रंग जो धातुओं से निकलते हैं ।
धातुराजक—पु० वीर्य ।
धातुवाद—पु० रसायन बनाने वाला ।
धातुवादी—वि० धातु-पारखी
धातुविलेपक—पु० क़लई करने वाला ।
धात्र—पु० पात्र ।
धात्री—स्त्री० माता । धाई ।
धात्रेयी—स्त्री० दाई ।
धाधि—स्त्री० लपट ।
धानक, धानुक—पु० धुनियाँ कमनैत । [एक रस्म ।
धानपान—पु० विवाह-संबंधी-
धाना—अक्रि० दौड़ना । पु० भुना हुआ जौ ।
धानाचूर्ण—पु० सत्तू ।
धानी—स्त्री० धान्य । स्थान । हलका हरा रंग ।
धान्यांश—पु० कण, किनका ।
धानुष्क—पु० धनुर्धारी ।
धान्य—पु० चार तिल की तौल । बनिया । चावल का धान ।
धान्याक—पु० धनिया ।
धान्याकृत—पु० किसान ।
धाप—पु० विस्तृत-मैदान । सन्तोष । [अघाना ।
धापना—अक्रि० दौड़ना ।
धाबा—पु० अटारी ।
धाभाई—पु० धात्री-पुत्र ।
धाम—पु० घर ।
धामक-धूमक—स्त्री० ठाट-बाट, धूमधाम ।
धामस-धूमस—स्त्री० धूम-धाम । [साँप ।
धामिन—पु० एक लम्बा-
धामनिधि—पु० सूर्य ।
धाय—स्त्री० दाई ।
धायना—अक्रि० दौड़ना ।
धार—पु० कण । स्त्री० धारा । झरना । किनारा । झुंड । तरफ़ । [वाला ।
धारक१४—वि० धारण करने-
धारका—स्त्री० स्त्री की योनि ।
धारण६—पु० थामना । ग्रहण करना ।

धारणा—स्त्री० धारण करने की क्रिया या भाव । बुद्धि । स्मृति । दृढ़ निश्चय ।
धारणिक—पु० ऋण लेने वाला । [करना ।
धारना—सक्रि० धारण-
धारयिता१०—वि० धारण-करने वाला ।
धारा—स्त्री० धार । लकीर । संतान । पानी का झरना । सेना । झुंड । नियम ।
धाराट—पु० बादल । चातक । मस्त हाथी । [तलवार ।
धाराधर—पु० बादल ।
धारायंत्र—पु० फुहारा ।
धारावाहिक, धारावाही७—वि० धारा के रूप में निरंतर चलने वाला । [वर्षा ।
धारासंपात—पु० अत्यधिक-
धारि—स्त्री० धार । सेना । समूह, झुंड ।
धारिणी—स्त्री० पृथ्वी । वि० स्त्री० धारण करने वाली ।
धारित—वि० धारण किया-हुआ ।
धारी—स्त्री० रेखा । सेना । समूह । वि० धारण करने वाला । ऋणी ।
धारीदार—वि० लकीर वाला ।
धारुजल—पु० खड्ग ।
धारोष्ण—पु० थन से निकला हुआ तुरंग का दूध ।
धार्तराष्ट्र—पु० धृतराष्ट्र का पुत्र या वंशज ।
धार्मिक३—वि० पुण्यात्मा ।
धार्य—वि० धारण करने-योग्य । [धोबी ।
धावक१४—पु० हरकारा ।
धावन—पु० दौड़ । दूत ।
धावना—अक्रि० दौड़ना ।
धावनि—स्त्री० धावा । दौड़ ।
धावा—पु० आक्रमण ।
धाह—स्त्री० चिल्लाकर रोना ।
धाही—स्त्री० धाय ।
धिंग, धिंगाई—स्त्री० ऊधम ।
धिंगरा—पु० लम्पट । मोटा-ताज़ा आदमी । [करना ।
धिंगाना—सक्रि० उपद्रव-
धिआ—स्त्री० लड़की ।
धिक्, धिग—अव्य० लानत । निंदा ।
धिकना९—अक्रि० गरम होना ।
धिक्कार—स्त्री० लानत ।
धिक्कारना—सक्रि० लानत-देना । [हुआ ।
धिक्कृत—वि० धिक्कारा-
धिय, धिया—स्त्री० बेटी ।
धिरवना, धिराना—सक्रि० डराना । धमकाना ।
धिराना—सक्रि० घुड़कना ।
धिषण—पु० बृहस्पति ।
धिषणा—स्त्री० बुद्धि ।
धींग, धींगा—वि० हट्टा-कट्टा । बदमाश । मज़बूत ।
धींगरा७—पु० बदमाश । हृष्ट-पुष्ट ।
धींगा—वि० दुष्ट । [दस्ती ।
धींगाधींगी—स्त्री० ज़बर-
धीवर, धीमर—पु० मल्लाह । कहार । [लड़की ।
धी, धीय—स्त्री० बुद्धि ।
धीजना—सक्रि० ग्रहण करना । विश्वास करना । अक्रि० संतुष्ट होना ।
धीति—स्त्री० तृष्णा । विश्वास ।
धीम, धीमा७—वि० निर्बल । मंद । हलका । तुच्छ ।
धीमान्१३—पु० बृहस्पति । बुद्धिमान् ।
धीर३·४—वि० धैर्यवान् । धीमा । पु० धैर्य । ज्ञान-दाता-गुरु ,
धीरक, धीरज—पु० धैर्य ।
धीरप्रशांत—पु० वह नायक जो विद्वान्, साथ ही कुलीन हो ।
धीरललित—पु० कोमल स्वभाव वाला नायक जो नाच-रंग में मस्त रहे ।
धीरा—स्त्री० वह नायिका जो पति पर क्रोध तो करे किन्तु उसका सम्मान न छोड़े ।
धीराधीरा—स्त्री० वह नायिका जो प्रकट एवं अप्रकट रूप से पति पर क्रोध करे ।
धीरे—क्रि०वि० आहिस्ते से ।
धीरोदात्त—पु० धीर, वीर, उदार नायक ।
धीरोद्धत्त—पु० शूर, चंचल तथा अभिमानी नायक ।
धीवर—पु० मल्लाह । कहार ।
धीसचिव—पु० बुद्धिमान्-मंत्री ।
धुँकार—स्त्री० गरज ।
धुँगार—स्त्री० छौंक ।
धुँगारना—सक्रि० छौंकना ।

धुंज—वि० धुँधला।
धुंध—स्त्री० आँख का एक रोग। अँधेरा। [का छिद्र।
धुंधका—पु० धुआँ निकलने-
धुंधकार—पु० गरज। अंधकार।
धुंधर, धुंधरि—स्त्री० धुआँ। धूल से छाया हुआ अंधकार। [का। अस्पष्ट।
धुँधला१—वि० धुएँ के रंग-
धुँधलाना—अक्रि० धुँधला होना। [देना।
धुँधुवाना—अक्रि० धुआँ-
धुँधली—स्त्री० दे० 'धुंध'।
धुँधाना—अक्रि० धुआँ देना।
धुँधार—वि० धूमिल।
धुँधुकार—पु० गरजन। धुँधलापन।
धुंधुरित—वि० धुँधली दृष्टि-वाला। [देना।
धुँधुवाना—अक्रि० धुआँ-
धुअ—पु० दे० 'ध्रुव'।
धुआँ—पु० धूम्र। नाश।
धुआँकश—पु० अग्निबोट। वि० घोर। काला। क्रि० वि० वेग के साथ।
धुआँधार—वि० धममय। प्रचंड। क्रि० वि० वेग से।
धुआँरा—पु० धुआँ निकलने का सुराख।
धुआँसा—वि० धुएँ के से स्वाद का। पु० छत में जमी हुई कालिख।
धकड़-पुकड़—स्त्री० घबराहट।
धुकधुकी—स्त्री० कलेजा। डर। गले का एक आभूषण।

धुकना१—अक्रि० झुकना। गिर पड़ना। झपटना।
धुकान—स्त्री० गरजन।
धुकाना—सक्रि० झुकाना। गिराना। धूनी देना।
धुकार—पु० नगाड़े का शब्द।
धुज—पु०, धुजा—स्त्री० दे० 'ध्वजा'।
धुजिनी—स्त्री० सेना।
धुड़ंगा७—वि० जिसके शरीर पर कोई वस्तु न हो, केवल धूल लगी हो।
धुताई—स्त्री० धूर्त्तता।
धुतारा७—वि० धूर्त्तता।
धुधुकार७—पु० गरज। [लय।
धुन—स्त्री० लगन। विचार।
धुनकना—सक्रि० रुई धुनना।
धुनकी—स्त्री० रुई धुनने की कमान।
धुनना—सक्रि० रुई साफ़ करना। बार-बार पीटना।
धुनि—स्त्री० ध्वनि।
धुनियाँ—पु० रुई धुनने वाला
धुपाना—सक्रि० धूप दिखाना।
धुपेली—स्त्री० अम्हौरी।
धुमारा, धुमिला—वि० धूमिल, मटमैला।
धुमिलाना—सक्रि० धूमिल बनाना।
धुरंधर—वि० श्रेष्ठ। प्रचंड।
धुर—पु० भार। गाड़ी का धुरा। ऊँचा स्थान। अव्य० सीधे।
धुरना—सक्रि० पीटना।
धुरवा—पु० बादल।
धुरा७—पु० गाड़ी का धुर।
धुराधुर—क्रि० वि० सीधे, एक सिरे से दूसरे सिर तक।

धुरियाना—सक्रि० धूल से लपेटना।
धुरीण—वि० मुख्य। श्रेष्ठ। भार उठाने वाला। [ना।
धुरेटना—सक्रि० धूल से लपेट-
धुर्रा—पु० कण, ज़र्रा।
धुलना१—अक्रि० धोया जाना।
धुलवाना—सक्रि० पानी से साफ़ करना।
धुलाई—स्त्री० धोने का काम या मज़दूरी।
धुलेंडी—स्त्री० होली के बाद प्रतिपदा का त्यौहार।
धुवाँस—स्त्री० उरद का आटा
धुवित्र—पु० मृगचर्म से बना-पंखा।
धुस्तूर—पु० धतूरा।
धुस्स—पु० बाँध, टीला।
धुस्सा—पु० मोटे ऊन की लोई।
धूँध—स्त्री० अँधेरा। धुंध।
धूँधर—स्त्री० अँधेरा। वि० धुँधला।
धू—पु० ध्रुव(संत तथा तारा)।
धूई—स्त्री० धूनी।
धूकना—अक्रि० बढ़ना।
धूजट—पु० शिव।
धूजना—अक्रि० काँपना।
धूत—वि० धूर्त। त्यक्त। धोया-हुआ, पवित्र।
धूतना—सक्रि० धूर्त्तता करना।
धूती—स्त्री० चिड़िया विशेष।
धूतुक, धूतू—पु० तुरही-नामक बाजा।
धूधू—पु० आग दहकने की आवाज़।

धूनना—सक्रि० धूनी देना। धुनना।
धूना—पु० एक सुगन्धित गोंद
धूनी—स्त्री० गुग्गुल की धूप। साधुओं के तापने की आग।
धूप—स्त्री० गन्धद्रव्य। घाम।
धूपघड़ी—स्त्री० धूप में समय मालूम करने का यन्त्र।
धूपछांह—स्त्री० वस्त्र विशेष।
धूपदान७—पु० धूप रखने का पात्र। [जलाना।
धूपना—अक्रि० गुग्गुल आदि-
धूपबत्ती—स्त्री० अगरबत्ती।
धूपायित—वि० दुःखी।
धूपित—वि० धूप से गर्म-किया गया। [चर्चा।
धूम—पु० धुआं। हलचल।
धूमकेतन, धूमकेतु—पु० अग्नि। पुच्छल तारा।
धूमधड़का—पु० ठाठ-बाट।
धूमज—पु० बादल।
धूम-धाम—स्त्री० चहल-पहल।
धूमपोत—पु० अगिनबोट।
धूमयोनि—पु० बादल।
धूमर, धूमल७—वि० धुँधला।
धूमवाहिनी—स्त्री० रेलगाड़ी।
धूमिल—वि० धुएँ के रङ्ग का धुँधला।
धूम्या—स्त्री० धूमों का समूह।
धूम्र—वि० धुएँ के रंग का। पु० धुआँ। [पीना।
धूम्रपान—पु० तमाखू आदि-
धूम्रयंत्र—पु० एंजिन।
धूम्रवर्ण—वि० धुएँ के रङ्ग का।
धूम्राक्ष—पु० रावण का एक राक्षस।
धूर, धूरि—स्त्री० धूल।
धूरधानी—पु० धूल का ढेर।
धूरा—पु० धूल। चूर्ण।
धूरे—क्रि० वि० निकट।
धूर्जटि—पु० शिवजी।
धूर्त३—वि० छली, चालाक। पु० धतूरा। जुआरी।
धूर्वह—पु० बलवान् बैल।
धूल, धूलि—स्त्री० गर्द।
धूला—पु० टुकड़ा।
धूसर, धूसरा—वि० मटमैला।
धूसरित—वि० धूल से भरा।
धूहा—पु० ढूहा।
धृक, धृग—अव्य० दे० 'धिक्'।
धृत—वि० पकड़ा हुआ। धारण किया हुआ। [पिता।
धृतराष्ट्र—पु० दुर्योधन का-
धृति—स्त्री० धैर्य। धारणा।
धृतिधारी५—वि० धैर्यवान्।
धृतिमान्१३—वि० धैर्य-शाली।
धृष्ट४—वि० निर्लज्ज।
धृष्टता—स्त्री० ढिठाई।
धृष्टद्युम्न—पु० द्रौपदी का भाई।
धृष्णु३—वि० धृष्ट। साहसी।
धृष्णुत्व—पु० धृष्टता।
धेनु—स्त्री० गाय।
धेनुका—स्त्री० हथिनी। नई ब्याही गाय।
धेनुमुख—पु० एक बाजा।
धेनुष्या—स्त्री० रहन रक्खी हुई गाय।
धेय—वि० धारण या पोषण करने के योग्य। ग्राह्य।
धेरिया—स्त्री० लड़की।
धेलचा, धेला—पु० आधा पैसा
धेली—स्त्री० अठन्नी।
धैताल—वि० उजड्ड।
धैना—स्त्री० काम-धंधा। स्वभाव।
धैनुक—पु० धेनुओं का समूह।
धैर्य—पु० धीरता।
धोकना—सक्रि० ऊपर डालना अग्नि को तेज़ करने के लिये हवा करना।
धोंधा—पु० लोंदा। भद्दा।
धोई—पु० राजगीर।
धोकड़—वि० मोटा-ताज़ा।
धोखा—पु० छल। भुलावा। भ्रम। [धूर्त।
धोखेबाज़—वि० छलिया।
धोटा—पु० बालक।
धोती—स्त्री० कमर के नीचे हिन्दुओं का पहनने का दुपट्टानुमा वस्त्र। योग की एक क्रिया। [करना।
धोना—सक्रि० पानी से साफ़-
धोप—स्त्री० तलवार।
धोब—पु० धुलाई।
धोबिन—स्त्री० धोबी की स्त्री। एक चिड़िया।
धोबी—पु० कपड़ा धोने वाला
धोम—पु० धुआँ।
धोर—पु० पास। किनारा।
धोरण—पु० सवारी।
धोरिणी—स्त्री० क्रमागतरीति।
धोरी—पु० बैल। प्रधान व्यक्ति।
धोरे—क्रि० वि० पास।
धोवत—पु० धोबी।
धोवती—स्त्री० धोती।
धोवन—स्त्री० धोने की क्रिया, या वह जल जिससे कोई वस्तु धोयी गई हो।

धोवाना—सक्रि० धुलाना।
धौं—अव्य० अथवा। कौन-जाने। कि, तो।
धौंक—स्त्री० धौंकना।
धौंकना—सक्रि० अग्नि प्रज्वलित करने के लिए पंखा आदि से झोंका देना।
धौंकनी—स्त्री० भाथी।
धौंका—स्त्री० लू।
धौंज—स्त्री० व्याकुलता। दौड़-धूप। [रौंदना।
धौंजना—अक्रि० धावना।
धौंताल—वि० चालाक।
धौंस—स्त्री० धमकी। घुड़की। धाक। भुलावा।
धौंसना—सक्रि० डपटना।
धौंसा—पु० नगाड़ा. सामर्थ्य।
धौंसिया—पु० धौंस बैठाने वाला। नगाड़ा बजाने वाला।
धौत-वि० धोया हुआ, साफ़।
धौतकौशेय-वि० धोया हुआ। पु० रेशमी कपड़ा।
धौति—स्त्री० शुद्धि। हठयोग की एक क्रिया। [हित।
धौम्य—पु० पांडवों का पुरो-
धौ, धौरा—वि० सफ़ेद।
धौरहर, धौराहर—पु० धरहरा, मीनार।
धौरिय—पु० बैल।
धौरी—स्त्री० सफ़ेद गाय।
धौल—वि० सफ़ेद। स्त्री० घूँसा। पु० धरहरा।
धौलधप्पड़—पु० मारपीट।
धौला७—वि० सफ़ेद।
धौलाई—स्त्री० सफ़ेदी।
ध्यात—वि० विचारा हुआ।
ध्यातव्य-वि० ध्यान के-योग्य। [वाला।
ध्याता१०—वि० ध्यान करने-
ध्यान-पु० विचार। ख़याल। समझ, बुद्धि [अंग।
ध्यानयोग-पु० योग का एक-
ध्याना-सक्रि० ध्यान करना।
ध्यानी—वि० ध्यान करने-वाला। [योग्य।
ध्यानीय—वि० ध्यान के-
ध्यायक—वि० ध्यान-कर्त्ता।
ध्येय—वि० ध्यान करने के योग्य। पु० लक्ष्य। [गीत।
ध्रुपद—पु० एक प्रकार का-
ध्रुव—वि० स्थिर। पु० ध्रुव-तारा। राजा उत्तानपाद का पुत्र। आकाश। विष्णु।
ध्रुवतारा—पु० मेरु के ऊपर रहने वाला एक तारा।
ध्रुवदर्शक—पु० कुतुबनुमा।
ध्रुवलोक—पु० एक लोक जिसमें ध्रुव का वास है।
ध्वंस—पु० विनाश। हानि।
ध्वंसक—पु० विनाशक।
ध्वंसनढ—पु० विनाश।
ध्वंसित—वि० नाश किया हुआ।
ध्वंसी५—वि० विनाशक।
ध्वज—पु० चिह्न। झंडा।
ध्वजभंग—पु० नपुंसकता।
ध्वजा—स्त्री० पताका।
ध्वजिनी—स्त्री० सेना।
ध्वजी—वि० पताका लिये हुए।
ध्वनि—स्त्री० आवाज़। लय।
ध्वनित—वि० शब्दित।
ध्वनि विस्तारक-यंत्र—पु० लाउडस्पीकर।
ध्वन्य—पु० ध्वनि मात्र से बोध होने वाला अर्थ।
ध्वस्त—वि० नष्ट। गिरा-हुआ। [कौआ।
ध्वांक्ष—पु० भिक्षुक।
ध्वांत—पु० अंधकार।
ध्वांतचर—पु० राक्षस।
ध्वान-पु० ध्वनि, शब्द।

२०—न

नंग—पु० नंगापन। वि० लुच्चा। (फ़ा०) प्रतिष्ठा। लज्जा। [नंगा।
नंग-धड़ंग—वि० बिलकुल-
नंगा—वि० निर्लज्ज। वस्त्र-रहित। [खोज।
नंगाझोली—स्त्री० कपड़ों की-
नंगाबूचा—वि० कंगाल।
नंगालुच्चा—वि० बदमाश।
नॅगियाना, नंग्यावना—सक्रि० नंगा करना।
नंद—पु० आनन्द। लड़का।

गोकुल के एक प्रमुख गोप। स्त्री० ननद।
नंदक—वि० आनन्ददायक। पु० विष्णु का खड्ग।
नंदकिशोर—पु० श्रीकृष्ण।
नंदकी—स्त्री० विष्णु।
नंदकुमार—पु० श्रीकृष्ण।
नंदग्राम—पु० भरत के तपस्या करने का स्थान।
नंदनंदन—पु० श्रीकृष्ण।
नंदनंदिनी—स्त्री० योगमाया।
नंदन४—पु० लड़का। वि० आनंददायक। पु० इन्द्र-वाटिका।
नंदनवन—पु० इन्द्रोद्यान।
नंदना—अक्रि० आनंदित होना।
नंदरानी—स्त्री० यशोदा।
नंदलाल—पु० श्रीकृष्ण।
नंदा—स्त्री० दुर्गा। ननद।
नंदि—पु० आनंद। [बैल।
नंदिकेश्वर—पु० शिव का एक-
नंदिघोष—पु० अर्जुन का रथ। चारणों की घोषणा।
नंदित—वि० आनंदित। बजता हुआ।
नंदिन, नंदिनी—स्त्री० कामधेनु की बछिया। उमा। गंगा। पुत्री। ननद।
नंदी—पु० शिव का एक बैल। शिवगण। बरगद का पेड़।
नंदीश्वर—पु० शिव।
नंदोई—पु० पति का बहनोई।
नंद्यावर्त्त—पु० गोलाकार बँगलानुमा घर।
नंबर—पु० संख्या। गज़।
नंबरदार—पु० वह ज़मींदार जो अपनी पट्टी के अन्य हिस्सेदारों से मालगुज़ारी आदि वसूल करने में सहायता दे।
नंबरवार—क्रि० वि० सिलसिलेवार। [लगा हुआ।
नंबरी—वि० प्रसिद्ध। नंबर-
नंस—वि० नष्ट।
न—अव्य (फ़ा०) नहीं।
नइहर—पु० पीहर, मायका।
नई—वि० नीतिवान्। स्त्री० नदी।
नईम—स्त्री० (अ०) स्वर्ग। नियामत। दुलार।
नउँजी—स्त्री० लीची।
नउ—वि० नौ। नया।
नउज—अव्य० न सही।
नउत—वि० दे० 'नत'।
नकचढ़ा७—वि० बदमिज़ाज।
नकघिसनी—स्त्री० ज़मीन पर नाक रगड़ना।
नकछिकनी—स्त्री० एक तरह की घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती है।
नकटा७—पु० नाककटा। वि० बेशर्म। [तैयार।
नक़द—पु० (अ०) रोकड़। वि०
नक़द-जान—स्त्री० (अ० फ़ा०) आत्मा, रूह।
नक़द-दम—क्रि० वि० (अ०) अकेले।
नक़दी—स्त्री० (अ०) रोकड़।
नकना—सक्रि० लाँघना। परेशान करना। [कील।
नकफूल—पु० नाक की-
नक़ब—स्त्री० (अ०) सेंध, छेद।
नक़ब-ज़न—पु० (अ० फ़ा०) सेंध लगाने वाला।
नक़बज़नी—स्त्री० (अ० फ़ा०) सेंध लगाना।
नकबेसर—स्त्री० छोटी नथ।
नक़ल—स्त्री० (अ०) प्रतिलिपि। स्वाँग।
नक़लनवीसर—पु० (अ०) मिसिल आदि की नक़ल से रोज़ी पैदा करने वाला।
नक़लबही—स्त्री० पक्की-रोकड़बही।
नकली—वि० (अ०) बनावटी।
नक़लेपरवाना—पु० (अ० फ़ा०) साला।
नक़ले-मज़हब—पु० (अ०) धर्म-परिवर्त्तन।
नकवानी—स्त्री० परेशानी।
नकसीर—स्त्री० नाक से अपने आप रक्त का बहना।
नकहत—स्त्री० (अ०) सुगंधि।
नकाना—सक्रि० नाक में दम करना। अक्रि० नाक में दम होना।
नक़ाब—पु० (अ०) मुँह ढकने का कपड़ा। घूँघट।
नक़ाबपोशर—वि० (अ० फ़ा०) मुँह पर नक़ाब डालने वाला।
नक़ायस—पु० (अ०) बहु० नुक़्स का। बुराइयाँ।
नकार—पु० नहीं। इनकार।
नकारा—वि० निकम्मा।
नकाशना—सक्रि० बेल-बूटे खोद कर बनाना।

नक़ाशी—स्त्री० बेलबूटे का काम। [चारण।
नक़ीब—पु० (अ०) भाट,
नकीर—स्त्री० (अ०) एक फ़रिश्ता जो क़ब्र में मुर्दे से बातें करता है।
नक़ीह—वि० (अ०) दुबला।
नकुल—पु० पांडु का एक पुत्र। बेटा। नेवला।
नकेल—स्त्री० बाग। ऊँट या रीछ की नाक में पहनायी गई रस्सी। [छिद्र।
नक्का—पु० नाका। सुई का-
नक्क़ाद—वि० (अ०) खरा-खोटा परखने वाला।
नक्कार—पु० अपमान।
नक्कारख़ाना—पु० (फ़ा०) नौबतख़ाना।
नक्कारची—पु० (फ़ा०) नगाड़ा बजाने वाला।
नक्क़ारा—पु० (फ़ा०)नगाड़ा।
नक्क़ालर—पु० (अ०) नक़लची। [करने वाला।
नक्क़ाश—पु०(अ०)नक्क़ाशी-
नक्क़ाशी—स्त्री० (अ०) बेल-बूटे का काम।
नक्कीमूठ—पु० कौड़ियों से खेला जाने वाला जूए का एक खेल।
नक्कू—वि०बड़ी नाक वाला। अपने को बड़ा समझने वाला।
नक्त—पु० रात।
नक्तक—पु० चिथड़ा।
नक्त चर—पु० राक्षस। उल्लू।
नक्र—पु० मगर, घड़ियाल। नाक।
नक़्श—वि० (अ०) चित्रित। पु० तस्वीर। मुहर।
नक़्श-ब-दीवार-वि० (अ० फ़ा०) चकित, स्तंभित।
नक़्शनिगार—पु० (फ़ा०) नक्क़ाशी। [आकृति।
नक़्शा—पु० (अ०) चित्र।
नक़्शानवीसर—पु० (अ० फ़ा०) नक़्शा बनाने वाला।
नक़्शी-वि०(अ०) नक्क़ाशी-दार। [अस्थायी वस्तु।
नक़्शेआब—पु० (अ० फ़ा०)
नक्षत्र—पु० तारों का समूह।
नक्षत्रनाथ, नक्षत्रराज—पु० चन्द्रमा।
नक्षत्रपथ—पु० आकाश।
नक्षत्रमाला—स्त्री० २७ मोतियों से बनाया गया एक लड़ का हार। [भाग्यवान्।
नक्षत्री—पु० चंद्रमा। वि०
नक्षत्रेश—पु० चन्द्रमा।
नख—पु० नाख़ून। रेशमी-सूत विशेष। [का डोर।
नख़—स्त्री०(फ़ा०)पतंग उड़ाने-
नखक्षत, नखछोलिया—पु० नाख़ून गड़ने का चिह्न।
नख़चीर—पु० (फ़ा०) जंगली जानवर जिनका शिकार किया जाता है।
नखत—पु० नक्षत्र।
नखतेस—पु० चंद्रमा।
नखना—अक्रि० लाँघा जाना। सक्रि० लाँघना। नाश-करना।
नखबान—पु० नाख़ून।
नखर, नख़रा—पु० नाख़ून।
नख़रा—पु० (फ़ा०) हाव-भाव, चोचला। [वाला।
नख़रीला७—वि० नख़रे-
नखरेखा—स्त्री० नखक्षत।
नख़रेबाज़र—वि० (फ़ा०) नख़रा करने वाला।
नखरौट—पु० दे० 'नखक्षत'।
नखशिख—पु० नख से शिख तक के अंग।
नखायुध—पु० बड़े नाख़ून वाला, शेर, चीता आदि।
नख़ास—पु० (अ०) पशुओं या ग़ुलामों के बिकने का बाज़ार।
नखियाना—सक्रि० नाख़ून-गड़ाना।
नखी—पु० नख से चीर-फाड़ करने वाले पशु-शेर, चीता आदि। [नोंचना।
नखोटना—सक्रि०नाख़ून से-
नख़ल—पु० (अ०) खजूर या छुहारे का वृक्ष। पेड़।
नख़िलस्तान—पु० (अ० फ़ा०) खजूर-वन। बाग़।
नग—पु० पर्वत। साँप। नगीना। पेड़। सूर्य। पहाड़। वि० अचल।
नगज—पु० हाथी। वि० पर्वत से उत्पन्न।
नगण्य-वि० तुच्छ, नाचीज़।
नगद—पु० दे० 'नक़द'।
नगधर—पु० श्रीकृष्ण।
नगनंदिनी—स्त्री० पार्वती।
नगनी—स्त्री० कन्या। नंगी-स्त्री।

नगपति—पु० हिमालय । शिव । चंद्र ।
नग़मा—पु० राग ।
नगर—पु० शहर ।
नगरकीर्त्तन—पु० नगर में घूम-फिर कर किया जाने वाला गाना-बजाना ।
नगरनारि—स्त्री० वेश्या ।
नगरपाल—पु० नगर रक्षक ।
नगरवासी५—पु०नागरिक ।
नगरद्द्याल—पु० कोतवाल ।
नगराई—स्त्री० चतुराई ।
नगरी—स्त्री० नगर । पु० नागरिक ।
नगवासी—स्त्री० नागपाश ।
नगाड़ा—पु० डंका ।
नगाधिप—पु० हिमालय ।
नगिचाना—अक्रि० पास-आना ।
नगीं—पु० (फ़ा०) नगीना ।
नगी—स्त्री० रत्न । पार्वती ।
नगीना—पु० (फ़ा०) नग । रत्न ।
नगीनासाज़—वि० (फ़ा०) नगीना जड़ने या बनाने वाला ।
नगेंद्र, नगेश—पु० हिमालय ।
नगेसरि—पु० नागकेशर ।
नगौक—पु० पक्षी ।
नग्न३—वि० नंगा ।
नग्निका—स्त्री०दश वर्ष की कन्या । नंगी स्त्री ।
नग़म, नग़मा—पु० (अ०) राग, गीत । मधुर-स्वर ।
नग़मासरा—वि०(अ० फ़ा०) सुन्दर गाने वाला ।
न्यग्रोध—पु० वट वृक्ष ।
नचनाΕ—अक्रि० नाचना । वि० नाचने वाला ।
नचनि—स्त्री० नाच ।
नचनियाँ—पु० नाचने वाला ।
नचीला—वि० चंचल ।
नचौहाँ७—वि० चंचल ।
नज़दीक—वि०(फ़ा०) निकट ।
नज़दीकी—वि० (फ़ा०) निकट का ।
नजफ़—पु० (अ०). ऊँचा-टीला । अरब का एक नगर ।
नज़म—स्त्री० (अ०) पद्य ।
नज़र—स्त्री० (अ०) दृष्टि । कृपादृष्टि । निगरानी । कुदृष्टि । उपहार ।
नज़र-अंदाज़—वि० (अ० फ़ा०) जिस पर नज़र न पड़ी हो । [रंगशाला ।
नज़रगाह—स्त्री० (अ०)
नज़रगुज़र—स्त्री० (अ०) कुदृष्टि ।
नजरना—अक्रि० देखना ।
नज़रबंद२—वि०(अ० फ़ा०) निगरानी में रखा हुआ ।
नज़रबाग़—पु० (अ०) बड़े मकानों के पास बनाया हुआ बाग़ ।
नज़रबाज़ २—वि० (अ० फ़ा०) नज़र लड़ाने वाला । चालाक । [पड़ताल, जाँच ।
नज़रसानी—स्त्री० (अ०)
नज़राना—पु० (अ०) भेंट, उपहार । सक्रि० नज़र-लगाना । अक्रि० नज़र लगना ।
नज़ला—पु०(अ०) जुकाम ।
नज़ाकत—स्त्री० (अ०) सुकुमारता ।
नजात—स्त्री० (अ०) मुक्ति, छुटकारा, उद्धार ।
नजाबत—स्त्री० (अ०) सज्जनता । ['नज़ीर' का ।
नज़ायर—स्त्री० (अ०) बहु०
नज़ारा—स्त्री०(अ०) दृश्य ।
नजासत—स्त्री० (अ०) गन्दगी ।
नजिकाना—सक्रि० निकट-पहुँचना ।
नजीक—क्रि० वि० निकट ।
नजीब—पु० (अ०) कुलीन ।
नज़ीर—स्त्री० (अ०) उदा-हरण, प्रमाण ।
नजूम—पु०(अ०) ज्योतिष ।
नजूमी—पु०(अ०) ज्योतिषी ।
नज़ूल—पु०सरकारी ज़मीन । नज़ला रोग ।
नज्जार२—पु० (अ०) बढ़ई ।
नट—पु० अभिनेता । एक जाति जो गाना-बजाना तथा खेल तमाशे का पेशा करती है । [घंटी ।
नटई—स्त्री० गला । गले की-
नटखट—वि० ऊधमी । चंचल ।
नटन—पु० नाच । [मुकरना
नटना—अक्रि० नाचना ।
नटनि—स्त्री० नाच ।
नटनी—स्त्री० नट की स्त्री ।
नटराज—पु० शिवजी ।
नटवना—सक्रि० अभिनय-करना ।

नटवर—पु० नाट्य-कला में प्रवीण। श्रीकृष्ण। शिवजी।
नटवा—पु० नट। नाटा बैल।
नटसारी—स्त्री० नटबाज़ी।
नटमाल—स्त्री० कसक। काँटे का वह भाग जो टूट कर शरीर के भीतर रह जाता है
नटी—स्त्री० नर्तकी। नट की स्त्री।
नटेश्वर—पु० शिवजी।
नटैया—स्त्री० गला।
नठना—अक्रि० नष्ट होना। सक्रि० नष्ट करना।
नढ़ना—सक्रि० गूँथना।
नत—वि० झुका हुआ।
नतनासिक—वि० चपटी नाक वाला।
नतपाल—पु० प्रणतपाल।
नतरु—क्रि० वि० नहीं तो।
नतांगी—स्त्री० सुन्दर स्त्री।
नताइज—पु० बहु० (अ०) परिणाम। [नमस्कार।
नति—स्त्री० झुकाव। विनय।
नतिनी—स्त्री० बेटी की बेटी।
नतीजा-पु० (अ०) परिणाम।
नतु—क्रि० वि० नहीं तो।
नतैत—पु० सम्बन्धी।
नत्थी—स्त्री० एक साथ बाँधने की क्रिया।
नथ—स्त्री० नथुनी।
नथना—पु० नाक का छेद। अक्रि० नाथा जाना।
नथनी—स्त्री० छोटी नथ।
नद—पु० बड़ी नदी।
नदना—अक्रि० नाद करना।
नदराज—पु० समुद्र।
नदामत—स्त्री० (अ०) लज्जा।
नदारद-वि० (फ़ा०) गायब।
नदी—स्त्री० दरिया।
नदीगर्भ—पु० नदी के दोनों किनारों के बीच का स्थान।
नदीदा—वि० (फ़ा०) अनदेखा। लोभी।
नदीन—पु० समुद्र। कुबेर।
नदीपति, नदीश—पु० समुद्र।
नदीम—पु० (अ०) साथी।
नदीसर्ज—पु० अर्जुन वृक्ष।
नद्दाफ़—पु० (अ०) धुनिया।
नद्ध—वि० नाथा, बँधा हुआ।
नधना—अक्रि० जुड़ना।
ननद—स्त्री० पति की बहिन।
ननदोई—पु० ननद का पति।
ननसार, ननिहाल—पु० नाना का घर।
नन्हा—वि० छोटा।
नन्हाई—स्त्री० छोटापन।
नपाई—स्त्री० नापने का काम या मज़दूरी। [नामर्द।
नपुंसक—पु० हिजड़ा,
नपुंसकत्व—पु० नामर्दी।
नपुत्री—वि० निःसंतान।
नप्ता—पु० नाती, पोता।
नफ़र—पु० (फ़ा०) सेवक।
नफ़रत—स्त्री० (अ०) घृणा।
नफ़री—स्त्री० (फ़ा०) एक मनुष्य की एक दिन की मज़दूरी या उसकी मज़दूरी का दिन।
नफ़ा—पु० (अ०) लाभ।
नफ़ाज़—पु० (अ०) जारी होना।
नफ़ायस—स्त्री० (अ०) बहु० 'नफ़ीस' का। उत्तम वस्तुएँ।
नफ़ास—पु० (अ०) प्रवृत्ति। प्रसव के बाद ४० दिन तक स्त्रियों की जननेंद्रिय से निकलने वाला रक्त।
नफ़ासत—स्त्री० (अ०) अच्छाई।
नफ़ी—स्त्री० (अ०) घटाना। न होने का भाव। दूर करना। [करने वाला।
नफ़ीर—वि० (अ०) नफ़रत-
नफ़ीरी—स्त्री० तुरही।
नफ़ीस—वि० (अ०) उमदा।
नफ़्स—पु० (अ०) आत्मा, अस्तित्व। लिंग।
नफ़्सानियत—स्त्री० (अ०) स्वार्थपरता। अभिमान।
नबात—स्त्री० (अ०) सब्ज़ी, घास, पेड़ आदि।
नबातात—स्त्री० (अ०) बहु० 'नबात' का।
नबी—पु० (अ०) रसूल, पैग़म्बर।
नबेड़ना—सक्रि० तै करना।
नबेड़ा, नबेरा—पु० फ़ैसला, निपटारा।
नबेलार—वि० नव-युवक।
नब्ज़—स्त्री० (अ०) नाड़ी।
नब्बाज़—पु० (अ०) नब्ज़ देखने वाला, हकीम।
नब्बे—वि० ९०।

नभः—पु० श्रावण। मेघ। वर्षा। आकाश।
नभ—पु० आकाश।
नभग, नभचर—पु० पक्षी। बादल। हवा। चंद्रमा।
नभधुज—पु० बादल।
नभश्चर—वि० आकाशगामी।
नभसंगम—पु० पक्षी।
नभस्थल७—पु० आकाश।
नभस्य—पु० भाद्रमास।
नभस्वान्—पु० वायु।
नभोमणि—पु० सूर्य।
नमर—वि० गीला। पु० नमस्कार।
नमक—पु० नोन।
नमकसार—पु० (फ़ा०) नमक बनने का स्थान।
नमकहरामन—पु० (फ़ा०) कृतघ्न। [स्वामिभक्त।
नमकहलालर—पु० (फ़ा०)
नमकीन—वि० (फ़ा०) सुन्दर। पु० नमक का पकवान। [शामियाना।
नमगीरा—पु० (फ़ा०)
नमदा—पु० (फ़ा०) ऊनी-कंबल विशेष।
नमन—पु० नमस्कार।
नमनाक—वि० (फ़ा०) गीला।
नमनि—स्त्री० प्रणाम।
नमनीय—वि० नमस्कार के योग्य।
नमसित—वि० पूजित।
नमस्कार—पु० प्रणाम।
नमस्कारी—स्त्री० लजालू।
नमस्ते—वा० आपको नमस्कार है।
नमस्या—स्त्री० पूजा।
नमस्यित—वि० पूजित।
नमाज़—स्त्री० (फ़ा०) मुसलमानों की ईश वंदना।
नमाज़ी—पु० (फ़ा०) नमाज़ पढ़ने वाला।
नमाना—सक्रि० झुकाना।
नमित—वि० झुका हुआ।
नमिस—स्त्री० रातभर ओस में रखे हुए दूध को मथने से प्राप्त दूध का फेन।
नमी—स्त्री० तरी।
नमुचिसूदन—पु० इन्द्र।
नमूद—स्त्री०(अ०) ज़ाहिर-होना। [ज़ाहिर।
नमूदार—वि० (फ़ा०)
नमूना—पु० (फ़ा०) बानगी। आदर्श।
नमेरु—पु० एक वृक्ष।
नम्र३—वि० विनीत।
नय—पु० नीति। नम्रता। स्त्री० नदी।
नयकारी५—पु० नाचनेवालों का मुखिया नर्तक।
नयन—पु० आँख।
नयनगोचर—वि० समक्ष।
नयनपट—पु० आँख का पलक।
नयना—अक्रि० नवना।
नयनागर—वि० नीति-कुशल।
नयनिष्ठ—वि० नीतिवान्।
नयनी—स्त्री० आँख की पुतली।
नयनीत—वि० नीतिवान्।
नयनू—पु० मक्खन।
नयर—पु० नगर।
नयशील४—वि० नीतिज्ञ।
नया१—वि० नवीन, हाल का।
नर—पु० पुरुष। नल।
नरई—स्त्री० गेहूँ की बाल आदि का डंठल।
नरकंत—पु० राजा।
नरक—पु० दोज़ख़।
नरकगामी—वि० नरक में जाने वाला।
नरकचतुर्दशी—स्त्री० कार्तिक-कृष्ण-चतुर्दशी।
नरकट—पु० सरकंडा।
नरकांतक—पु० विष्णु, श्रीकृष्ण
नरकेसरी, नरहरि—पु० नृसिंह भगवान्।
नरग़ा—पु० (यू०) भीड़। कठिनाई, विपत्ति। [बैल।
नरगाव—पु० (फ़ा०) साँड़।
नरगिस—स्त्री० (फ़ा०) एक पौधा तथा उसका फूल जिससे आँख की उपमा दी जाती है। [गिस-संबंधी।
नरगिसी—वि० (फ़ा०) नर-
नरगिसे-बीमार—स्त्री०(फ़ा०) प्रेमिका की मस्त आँखें।
नरद—स्त्री० चौसर की गोटी।
नरदन—स्त्री० गरजन।
नरदहा—पु० पनाला।
नरदा—पु० गंदी मोरी।
नरदारा—पु० ज़नाना।
नरदेव—पु० राजा। [राजा।
नरनाथ, नरनाह—पु०
नरनारि—स्त्री० द्रौपदी।
नरपति, नरपाल—पु० राजा।

नरपिशाच—पु० निर्दयी।
नरपुंगव—पु० श्रेष्ठ पुरुष।
नरभक्षी—पु० राक्षस।
नरम—वि० कोमल।
नरमट—स्त्री० मुलायम मिट्टी वाली ज़मीन।
नरमा—स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार की कपास। सेमल की रुई।
नरमाई—स्त्री० नरमी।
नरमाना—सक्रि० मुलायम करना।
नरमी—स्त्री० कोमलता।
नरमुंड-पु० मनुष्य का सिर।
नरमेध—पु० यज्ञ विशेष।
नरलोक—पु० संसार।
नरवाहन—पु० पालकी।
नरसिंघा-पु० तुरही की तरह का एक बाजा।
नरसों—क्रि० वि० परसों के पहले का (दिन)।
नरहरि— ० नृसिंहावतार।
नरांतक—पु० रावण का एक पुत्र।
नरा—पु० सूत लपेटने की नली। नाल, नारा।
नराच—पु० तीर, बाण।
नराट—पु० राजा।
नराधम-वि० नीच, पापी।
नरि—स्त्री० नदी।
नरियाना-अक्रि० चिल्लाना।
नरी—स्त्री० (फ़ा०) मुलायम चमड़ा बकरी का। एक घास। नली। नारी।
नरीना—वि० (फ़ा०) पुरुष जाति का।

नरेंद्र,नरेश—पु० राजा।
नरोत्तम—पु० श्रेष्ठ मनुष्य। श्रीकृष्ण।
नर्क—पु० नरक।
नर्तक—पु० नाचने वाला। नट। चारण।
नर्तकी—स्त्री० नटी। वेश्या।
नर्तन—पु० नाच।
नर्तना—अक्रि० नाचना।
नर्द—स्त्री० दे० 'नरद'।
नर्दक—वि० शब्द करने वाला।
नर्दन—स्त्री० गर्जन।
नर्दबान—स्त्री० (फ़ा०) ज़ीना।
नर्म—पु० परिहास, हँसी-ठट्ठा। (फ़ा०) वि० मुलायम। मन्दा, सस्ता। धीमा, सुस्त।
नर्म-गर्म—वि० (फ़ा०) ऊँच-नीच, भला-बुरा।
नर्मद—पु० मसखरा।
नर्मदा—स्त्री० मध्य प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी।
नर्मदिल—वि० (फ़ा०) दयालु, उदार।
नर्मदेश्वर—पु० नर्मदा से निकलने वाली शिवलिङ्ग की अंडाकार मूर्त्ति।
नर्मसचिव—पु० विदूषक।
नल—पु० एक राजा। लम्बी-पोली नली। तृण विशेष।
नलकूबर—पु० कुबेर का पुत्र।
नलद—पु० खस।
नलमीन—पु० भींगा मछली।
नलिका—स्त्री० चोंगा, नली।
नलिन—पु० कमल। जल। सारस। नील।

नलिनपति—पु० सूर्य।
नलिनी—स्त्री० कमलिनी। नदी। [नाल। ब्रह्मा।
नलिनीरुह—पु० कमल की-
नली—स्त्री० मालकाँगनी।
नल्व—पु० चार हाथ की दूरी।
नवंबर—पु० (अं०) अँग्रेज़ी साल का ग्यारहवाँ महीना (३० दिन का)।
नव—वि० नया। नौ।
नवका—स्त्री० नाव। भाग।
नवखंड—पु० पृथ्वी के नौ-
नवग्रह—पु० सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु—ये नौ ग्रह।
नवजात—वि० हाल का पैदा।
नवतन—वि० नया।
नवदल—पु० कमल आदि के नवीन पत्ते।
नवदुर्गा—स्त्री० नौ दुर्गा, जिनकी नवरात्र में पूजा होती है। [की भक्ति।
नवधाभक्ति—स्त्री० नौ तरह-
नवना९—अक्रि० झुकना। नम्र होना।
नवनिधि-पु० कुबेर का कोष।
नवनी—स्त्री० नैनू।
नवनीत—पु० मक्खन।
नवबाला—स्त्री० युवती।
नवम—वि० नवाँ।
नवमल्लिका—स्त्री० चमेली।
नवमालिका—स्त्री० प्रशंस-नीय माला। वर्षा की बेल।
नवमी—स्त्री० पक्ष की नवीं तिथि।
नवयुवक—पु० नौजवान।

नवयुवती—स्त्री० तरुणी।
नवयौवना—स्त्री० तरुणी।
नवरंग—वि० सुंदर, नये ढङ्ग का। पु० औरंगज़ेब।
नवरंगी—वि० खुशदिल। स्त्री० नारंगी।
नवरत्न—पु० हीरा, मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम—ये नौ रत्न हैं। विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्न—कालिदास, अमरसिंह आदि।
नवरस—पु० श्रृङ्गार, करुणा, वीभत्स आदि काव्य के नौ रस।
नवरा—पु० नेवला।
नवरात्र—पु० चैत्र और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक का समय।
नवल—वि० नया। सुन्दर। युवा।
नवलकिशोर—पु० श्रीकृष्ण।
नवला—स्त्री० युवती।
नववधू—स्त्री० दुलहिन।
नवशिक्षित—वि० हाल का पढ़ा या सीखा हुआ।
नवसंगम—पु० प्रथम-मिलन।
नवसत—वि० सोलह। पु० सोलह-श्रृङ्गार।
नवसर—पु० नौ लड़ का हार। वि० नववयस्क।
नवसूतिका—स्त्री० नई ब्यानी गाय।
नवा—स्त्री० (फ़ा०) संगीत शब्द। धन। सामान। भेंट। सेना।
नवागत—वि० अतिथि।
नवाज़—वि० (फ़ा०) कृपालु। सन्तुष्ट करने वाला।
नवाजना—सक्रि० कृपा-करना।
नवाज़िश—स्त्री० (फ़ा०) कृपा।
नवाब—पु० (अ०) एक उपाधि। राजा का प्रतिनिधि। अमीरी ढंग से रहने वाला व्यक्ति।
नवाबी—स्त्री० (अ०) नवाब का पद। अमीरी ठाट-बाट।
नवाम्बर—पु० नया कपड़ा।
नवाला—पु० (फ़ा०) कौर, ग्रास। [का बेटा।
नवासा७—पु० (फ़ा०) बेटी-
नवाह—पु० रामायण आदि का नौ दिन में समाप्त होने वाला पाठ। स्त्री० (फ़ा०) आस पास के प्रदेश।
नविश्त—स्त्री० (फ़ा०) लिखा हुआ काग़ज़ आदि। दस्तावेज़।
नविश्ता—वि० (फ़ा०) लिखित। पु० तक़दीर।
नवीन३—वि० नया। विचित्र।
नवीसर—वि० (फ़ा०) लिखने वाला, लेखक।
नवेद—पु० (फ़ा०) न्यौता।
नवेलार—वि० नवीन। तरुण।
नवोढा—स्त्री० नवविवाहिता। नवयौवना।
नवोदित—वि० हाल का निकला हुआ।
नवोद्धृत—पु० नैनू, मक्खन।
नव्य—वि० नया।
नशा—पु० (अ०) मादक-द्रव्य। अभिमान। मादक-पन।
नशाखोर—पु० (अ० फ़ा०) नशेबाज़।
नशात—स्त्री० (अ०) आनन्द, प्रसन्नता, सुख-भोग।
नशीनर—वि० (फ़ा०) बैठने-वाला। [करने वाला।
नशीला७—वि० (अ०) नशा-
नशेड़ी—वि० नशेबाज़।
नशेब—पु० (फ़ा०) निचाई।
नशेमन—पु० (फ़ा०) घोंसला। महल। आराम-गाह।
नशोहर—वि० नाशक।
नश्तर—पु० (फ़ा०) एक तेज़ छोटा चाकू जो फोड़े आदि के चीरने में काम आता है।
नश्र—पु० (अ०) प्रकट करना। प्रसार। चिन्ता। जीवन।
नश्वर—वि० नाशवान्।
नष्ट—वि० नाश हुआ। नीच। व्यर्थ।
नष्टचेष्टता—स्त्री० मुच्छा।
नष्टबुद्धि—वि० मूर्ख। [नष्ट।
नष्ट-भ्रष्ट—वि० बिलकुल-
नष्टा—स्त्री० वेश्या। व्यभिचारिणी स्त्री।
नष्टेंदुकला—स्त्री० अमावस्या।
नसंक—वि० निर्भय।
नस—स्त्री० शरीर के भीतर के तंतु।
नसकटा—पु० हिजड़ा।

नसना—अक्रि० नष्ट होना। बिगड़ जाना। भाग जाना।
नसब—पु० (अ०) वंश, कुल। वंशावली।
नसबनामा—पु० (अ०फ़ा०) वंशावली, शजरा।
नसबी—वि० (अ०) वंश-सम्बन्धी।
नस्र—स्त्री० (अ०) गद्य।
नसरानी—पु०(अ०)ईसाई।
नसल—स्त्री० (अ०) वंश।
नसवार—स्त्री० सुँघनी।
नसाना—अक्रि० नष्ट हो जाना।
नसायह—स्त्री० (अ०) बहु० 'नसीहत' का।
नसारा—पु० (अ०) ईसाई।
नसीब—पु० (अ०) भाग्य।
नसीबवर—वि० (अ० फ़ा०) भाग्यवान्।
नसीम—स्त्री० (अ०) शीतल, मंद, सुगंध वायु।
नसीर—पु०(अ०) सहायक।
नसीहत—स्त्री० (अ०) उपदेश, शिक्षा।
नसीहत-आमेज़—वि० (अ० फ़ा०) जिसमें नसीहत शामिल है।
नसूह—पु० (अ०) पक्की तौबा। वि०शुद्ध, साफ़।
नसैनी—स्त्री० सीढ़ी।
नस्क़—पु० (अ०) दस्तूर।
नस्तालीक़—स्त्री० (अ०) सुलेखन। [करना।
नस्ब—पु० (अ०) स्थापित-
नस्ब-उल-ऐन—पु०(अ०)उद्देश्य
नस्य—पु० सुँघनी।
नस्सार—पु० (अ०) अच्छा-गद्य लेखक।
नहँ—पु० नाखून।
नहँछू—पु० वर के नाखून काटने की विवाह की एक रीति।
नहना—सक्रि० नाँधना।
नहनि—स्त्री० पुरवट खींचने का रस्सा।
नहर—स्त्री० (फ़ा०) एक कृत्रिम जल-मार्ग।
नहरी—वि० (फ़ा०) नहर-संबंधी। [मक्खी।
नहल—स्त्री० (अ०) मधु-
नहलाना—सक्रि०नहवाना।
नहसुत—पु० नख-चिह्न।
नहाना—अक्रि०स्नान करना।
नहार—वि० निराहार।
नहारी—स्त्री० कलेवा।
नहिं, नहीं—अव्य० निषेध-सूचक शब्द।
नहीफ़—वि० (अ०) दुबला-पतला। [एक राजा।
नहुष—पु० प्राचीन काल के-
नहूसत—स्त्री०(अ०) उदासी।
नहो—स्त्री०(अ०) रंग-ढंग।
नाँगा—वि० नंगा।
नाँघना—सक्रि० लाँघना।
नाँठना—अक्रि०बिगड़ जाना। नष्ट होना।
नाँद—स्त्री०हौदा। पु०गर्जन
नाँदना—अक्रि० गरजना। खुश होना। [आशीर्वाद।
नांदी—स्त्री० स्तुति-संयुक्त-
नांदीमुख—पु० वह श्राद्ध जो पुत्र-जन्म तथा विवाह के अवसर पर किया जाय।
ना—अव्य० नहीं।
ना-अहल—वि० (फ़ा० अ०) असभ्य। अयोग्य।
ना-आशना—वि० (फ़ा०) अपरिचित।
नाइक—पु० नायक।
नाइत्तिफ़ाक़ी—स्त्री० (फ़ा०) विरोध, मत-भेद।
नाईं—स्त्री० समान दशा। क्रि० वि० तरह।
नाई—पु० हज्जाम।
नाउ—स्त्री० नौका।
नाउम्मेदर—वि० (फ़ा०) निराश।
नाऊ—पु० हज्जाम।
नाकंद—वि० अशिक्षित।
नाक—स्त्री०घ्राणेन्द्रिय। मान। पु० स्वर्ग। आकाश। वि० (फ़ा०) भरा हुआ, पूर्ण।
नाकड़ा—पु० नाक का एक रोग। [प्रतिष्ठा का।
नाक़दरर—वि० बिना-
नाकनटी—स्त्री० अप्सरा।
नाकना—सक्रि० लाँघना।
नाकपति—पु० इन्द्र।
ना-करदनी—वि०स्त्री०(फ़ा०) न करने योग्य (बात)।
ना करदा—वि० (फ़ा०) बिना किया। [अनाड़ी।
ना करदागार—वि० (फ़ा०)
ना-कस—वि०(फ़ा०)नीच।
नाका—पु०चौकी। फाटक। सुई का छेद।
नाकाबंदी—स्त्री०किसीरास्ते से घुसने की रुकावट।

नाक़ाबिल—वि० (फ़ा०) अयोग्य।
नाकाम—वि० (फ़ा०) असफल। [थक।
नाकारा—वि० (फ़ा०) निर-
नाक़िल—वि० (अ०) नक़ल करने वाला।
नाक़िस—वि० (अ०) बुरा।
नाक़िस-उल-अक्ल-वि०(अ०) निकृष्ट-बुद्धि वाला।
नाकू—पु० नक्र, मगर।
नाखना—सं'क्र० लाँघना। बिगाड़ना।[ख़ुदा, मल्लाह।
नाख़ुदा-पु०(फ़ा०) नाव का-
नाख़ुना-पु०(फ़ा०) वह रोग जिसमें आँख की सफ़ेदी में लाल झिल्ली पड़ जाती है। सितार बजाने का मिजराब।
नाख़ुश—वि० (फ़ा०) नाराज़।
नाख़ून—पु० (फ़ा०) नख।
नाख़ाँदा—वि० (फ़ा०) अपढ़।
नाग—पु० साँप। हाथी।
नागकेसर—पु० एक पेड़।
नागगर्भ—पु० सिन्दूर।
नागझाग—पु० अफ़ीम।
नागदत—पु० खूँटा।
नागनग-पु० गजमाती।
नागपंचमी—स्त्री० सावन सुदी पंचमी।
नागपति, नागराज—पु० शेषनाग। ऐरावत।
नागपाश—पु० एक फंदा जिससे शत्रु को बाँध लेते थे
नागफनी—स्त्री० एक पौधा। कान का एक जेवर।
नागफेन—पु० अफ़ीम।
नागबेल—स्त्री० पानकी बेल।
नागमाता—स्त्री० कश्यप ऋषि की स्त्री।
नागरंग—पु० नारंगी।
नागर-वि०नगर का। चतुर। पु० गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। [शिष्टता।
नागरता—स्त्री० नागरिकता।
नागरबेल—स्त्री०पानकी बेल।
नागरमोथा—पु० एक प्रकार की घास।
नागराज—पु० शेषनाग। श्रेष्ठ हाथी।
नागरिक—वि० नगर में रहने वाला। चतुर।
नागरिपु—पु०न्यौला। मोर। गरुड़।
नागरी—स्त्री० नगर निवासिनी। चतुरा स्त्री। देवनागरी-लिपि।
नागलोक—पु० पाताल-लोक।
नागवल्ली—स्त्री० पान।
नागवार—वि० (फ़ा०) असह्य, अप्रिय।
नागसंभव—पु० सेंदुर।
नागहाँ—क्रि० वि० (फ़ा०) अचानक।
नागहानी—वि० (फ़ा०) अचानक होने वाला।
नागा—पु० नंगे रहने वाले शैव मत के साधु। बीच। ग़ैर हाज़िरी।
नागान्तक—पु० गरुड़।
नागार्जुन—पु० सहस्रबाहु।
नागाशन—पु० गरुड़। मोर।
नागाह—क्रि० वि० (फ़ा०) अकस्मात्।
नागिन—स्त्री० सर्पिणी।
नागेंद्र—पु०दे० 'नागपति'।
नागोद—पु० छाती का कवच।
नागौरद—पु० एक नगर।
नाच—पु० नृत्य। क्रीड़ा।
नाचकूद-स्त्री० नाच तमाशा।
नाचना—अक्रि० नाच करना। भटकना।
नाचमहल—पु० नाचघर।
नाचरंग-पु०आमोद-प्रमोद।
नाचक़—वि० (फ़ा०) बीमार। बेमज़ा।
नाचाक़ी—स्त्री० (फ़ा०) अनबन। बीमारी।
नाचार-वि०(फ़ा०)लाचार।
नाचीज़—वि० (फ़ा०)तुच्छ, निःसार, निकृष्ट।
नाज-पु० अन्न। [हावभाव।
नाज़—पु० (फ़ा०) नख़रा,
नाज़नीं—स्त्री० (फ़ा०) रूपवती स्त्री।
नाज़नीन—स्त्री० (फ़ा०) सुकुमारी, सुन्दरी।
नाज़बरदारी—स्त्री० नाज़ उठाना, लाड़-प्यार।
नाज़बालिश—पु० (फ़ा०) छोटा मुलायम तकिया।
नाज़ व नियाज़—पु० (फ़ा०) नख़रा, चोचला।
नाज़ाँ—वि० (फ़ा०) अभिमानी। [अनुचित।
नाजायज़—वि० (फ़ा० अ०)

नाज़िम–पु० (अ०) प्रबंधक। कवि। लड़ी पिरोने वाला।
नाज़िर–पु० (अ०) वेश्याओं का दलाल। अदालत में लेखकों का प्रधान। निरीक्षक। स्त्री० अंतःपुर की मुख्य परिचारिका।
नाज़िरीन–पु० (अ०) दर्शकगण। पाठकगण।
नाज़िल—वि० (अ०) उतरने-वाला।
नाज़िला—पु० (अ०) संकट।
नाजुकर—वि० (फ़ा०) कोमल।
नाज़ुक-कलामर—वि० (फ़ा० अ०) सूक्ष्म और सुन्दर बातें कहने वाला।
नाज़ुक-ख़यालर–वि० (फ़ा० अ०) सूक्ष्म विचार का।
नाज़ुक-मिज़ाजर–वि० (फ़ा० अ०) चिड़चिड़ा। ज़रा भी कष्ट न सह सकने वाला।
ना-ज़ेबर—वि० (फ़ा०) भद्दा, कुरूप।
नाज़ो—स्त्री० नाज़नी, प्यारी स्त्री।
नाटक–पु० अभिनय, ड्रामा। ड्रामा की पुस्तक
नाटकशाला—स्त्री० नाटक होने का स्थान।
नाटकिया—पु० अभिनेता।
नाटकी—वि० अभिनेता।
नाटकीय—वि० नाटक-संबंधी। [करना।
नाटना—अक्रि० अस्वीकार-
नाटा ७–वि० छोटे क़द का।
नाटिका—स्त्री० स्वाँग।
नाट्य—पु० अभिनय। नृत्य। स्वाँग। [की विद्या।
नाट्यकला—स्त्री० नाटक-
नाट्यकार—पु० अभिनेता।
नाट्यशाला—स्त्री० अभिनय का स्थान।
नाठ—पु० नाश। अभाव।
नाठना–सक्रि० नष्ट करना। अक्रि० नष्ट होना।
नाठा—पु० लावारिस।
नाड—स्त्री० गर्दन।
नाड़ा—पु० इज़ारबंद।
नाड़ी—स्त्री० धमनी, नब्ज़।
नाड़ीव्रण—पु० नासूर।
नात—पु० नाता।
ना-तजुरबेकार—वि० (फ़ा० अ०) अनुभव-हीन।
ना-तमाम—वि० (फ़ा० अ०) अपूर्ण। [नीच।
नातराश—वि० (फ़ा०)
नातरि, नातरु—अव्य० नहीं तो।
नातवाँर–वि० (फ़ा०) निर्बल।
नाता—पु० रिश्ता।
नाताक़त—वि० (फ़ा०) अशक्त।
नातिक़—पु० (अ०) बोलने वाला। बुद्धिमान्। वि० स्थायी, दृढ़। [वाक्शक्ति।
नातिक़ा—पु० (अ०)
नाती—पु० (स्त्री० नातिन) बेटा या बेटी का बेटा।
नाते—क्रि० वि० संबंध से।
नातेदारर—वि० रिश्तेदार।
नाथ–पु० मालिक। चौपायों की नकेल।
नाथना—सक्रि० नकेल-डालना। नत्थी करना।
नाथवन्—पु० पराधीन।
नाद—पु० शब्द, ध्वनि।
नादना–अक्रि० गर्जन करना।
नादानर–वि० (फ़ा०) मूर्ख।
नादार–वि० (फ़ा०) निर्धन।
नादारी—स्त्री० (फ़ा०) निर्बलता।
नादित—वि० शब्दित।
नादिम–वि० (अ०) शर्मिंदा।
नादिया—पु० शिव का बैल।
नादिर–वि० (अ०) अनोखा।
नादिरशाही—स्त्री० (फ़ा०) भारी अत्याचार, अंधेर।
नादिरी—स्त्री० (फ़ा०) ताश के पत्तों में इक्का। नादिर-शाही। एक प्रकार की सदरी। [बिना-देखा।
ना-दीदा—वि० (फ़ा०)
नादिहंदर—वि० (फ़ा०) न देने वाला। [वाला।
नादी५—वि० शब्द करने-
नादेयी–स्त्री० नारंगी। अरणी
नाधना—सक्रि० जोतना। जोड़ना। आरंभ करना। गुहना।
नान—स्त्री० (फ़ा०) रोटी।
नानक—पु० सिख-संप्रदाय-के प्रवर्त्तक।
नानकपंथी—पु० नानक का अनुयायी, सिख।
नानकशाही—पु० नानक-पंथी। [(अं०) असहयोग।
नानकोआपरेशन—पु०

नानख़ताई—स्त्री० (फ़ा०) एक ख़स्ता मिठाई।
नानबाई—पु० (फ़ा०) रोटी-बनाने या बेचने वाला।
नाना—वि० अनेक। पु० माँ का बाप। सक्रि० नवाना। पु० (अ०) पुदीना। [घर।
नानिहाल—पु० नाना का-
नानी—स्त्री० माँ की माँ।
नान्ह—वि० छोटा, नन्हा।
नाप—स्त्री० परिमाण। माप।
नापजोख—स्त्री० नापतोल।
नापना—सक्रि० मापना।
नापसंद२—वि० (फ़ा०) अप्रिय। [अपवित्र।
नापाक२—वि० (फ़ा०)
नापायदार—वि० कमज़ोर।
नापित—पु० हज्जाम।
नापैद—वि० (फ़ा०) अप्राप्य। नष्ट। जो अभी पैदा न हुआ हो। [आज्ञोल्लंघन।
नाफ़रमानी—स्त्री० (फ़ा०)
ना-फ़हम—वि० (फ़ा०) नासमझ, मूर्ख।
नाफ़हमी—स्त्री० (फ़ा०) नासमझी।
नाफ़ा—पु० (फ़ा०) मृग-नाभि से निकली हुई कस्तूरी की थैली। [होने वाला।
नाफ़िज़—वि० (अ०) जारी-
नाफ़िर—वि० (अ०) नफ़रत करनेवाला। [शुद्ध।
नाब—वि० (फ़ा०) ख़ालिस,
नाबदान—पु० (फ़ा०) पनाला। [गँवार।
ना-बलद—वि० (फ़ा० अ०)
नाबालिग़२—वि० (फ़ा० अ०) जो जवान न हो।
ना-बीना—वि० (फ़ा०) अंधा।
नाबूद—वि० (फ़ा०) नष्ट।
नाभा—पु० भक्तमाल के रचयिता।
नाभि—स्त्री० तुंदी। कस्तूरी। पु० प्रधान-व्यक्ति।
नाभिज—पु० ब्रह्मा।
नामंज़ूर२—वि० (फ़ा० अ०) अस्वीकार।
नाम—पु० संज्ञा। प्रसिद्धि।
नामक—वि० नामवाला।
नामकरण—पु० नाम रखने का एक संस्कार।
नामज़द—वि० (फ़ा०) मशहूर।
नामदेव—पु० एक कृष्ण-भक्त।
नामधराई—स्त्री० अपकीर्ति।
नामधेय—पु० नाम।
नामनिशान—पु० पता। चिह्न। [वाला।
नामगोला—पु० नाम लेने-
नामर्द२—वि० (फ़ा०) नपुंसक। कायर।
नामलेवा—पु० वारिस।
नामवर२—वि० (फ़ा०) प्रसिद्ध।
नामशेष—वि० नष्ट। मृत।
नामहदूद—वि० (फ़ा०) असीम, बेहद।
नामा—पु० (फ़ा०) ख़त। रूपअड़। रेज़गारी।
नामाक़ूल—वि० (अ०) अयोग्य। ग़ैरवाजिब।
नामा निगार—वि० (फ़ा०) समाचार का लिखने वाला।
नामा-बर—पु० (फ़ा०) हरकारा। [अज्ञात।
नामालूम—वि० (फ़ा० अ०)
नामावली—स्त्री० नामों की सूची।
नामी—वि० (फ़ा०) प्रसिद्ध।
नामुनासिब—वि० (अ०) अनुचित। [असम्भव।
नामुमकिन—वि० (अ०)-
नामुराद—वि० (फ़ा०) विफल-मनोरथ।
नामूसी—स्त्री० (फ़ा०) बदनामी।
ना-मौज़ूँ—वि० (फ़ा०) अनुपयुक्त।
नाम्ना७—वि० नाम वाला।
नाय—पु० नीति।
नायक १४—पु० मुखिया। राजा। स्वामी। हार के बीच की मणि। काव्य का प्रधान पात्र।
नायका, नायिका—स्त्री० रूपवती स्त्री। कुटनी, दूती। नाटक आदि में प्रधान स्त्री-पात्र। [न्द्रिय।
नायज़ा—पु० (फ़ा०) पुरुषे-
नायब—पु० (अ०) सहायक।
नायबी—स्त्री० (अ०) नायब का कार्य या पद।
नायाब—वि० (फ़ा०) अप्राप्य।
नायिका—स्त्री० रूपवती तथा गुणवती स्त्री। प्रधान-स्त्री पात्र।
नारंग—पु० नारंगी।

नारंज—पु० (फ़ा०) नारंगी। संतरा। [के रंग का।
नारंजी–वि० (फ़ा०) नारंगी-
नार—स्त्री० स्त्री। गरदन। कपड़ा बिनने की ढरकी। पु० नाला। नारा। रस्सा। सोंठ। नर-समूह।
नारक—पु० नरक।
नारकी—वि० पापी।
नारद—पु० एक देवर्षि।
नारना–सक्रि० थाह लेना।
ना-रवा—वि० (फ़ा०) अनुचित।
नारा—पु० इज़ारबन्द। पु० (अ०) विजय-घोष। ज़ोर की आवाज़।
नाराच–पु० लोहे का बाण।
नाराची—स्त्री० सुनार का काँटा। [सन्न।
नाराज़२–वि० (फ़ा०) अप्र-
नराज़गी—स्त्री० अप्रसन्नता।
नारा-ज़न—वि० (अ० फ़ा०) नारा लगाने वाला।
नारायण–पु० विष्णु। कृष्ण।
नारायणी—स्त्री० लक्ष्मी। दुर्गा। गंगा।
नाराशंस—वि० मनुष्यों की प्रशंसा वाला। [न हो।
नारास्त–वि० (फ़ा०) जो ठीक-
नारि—स्त्री० नारी।
नारिकेल—पु० नारियल।
नारिदान—पु० पनाला।
नारी–स्त्री० औरत। नाड़ी। नाली। [रोग।
नारू—पु० जूँ। नहरुआ-
नार्थ–पु० (अ०) उत्तर-दिशा।

नार्यंग—पु० नारंगी।
नालंद—पु० प्राचीन काल में विहार का एक प्रसिद्ध शिक्षणालय।
नालंब४–वि० अवलंब-रहित, बे सहारा।
नाल—स्त्री० नली। कमल आदि का डंठल। चौपायों के पैर में जड़ा जाने वाला लोहे का गोल टुकड़ा। नव-जात शिशु की नाभि में लगा हुआ चर्म-तन्तु
नालकी–स्त्री० खुली पालकी।
नालबंद—पु० नाल ठोकने-वाला। [खिराज, कर।
नाल-बहा—पु० (अ० फ़ा०)
नालाँ–वि० (फ़ा०) रोता हुआ।
नाला—पु० बड़ी नाली। (फ़ा०) रोना-धोना।
नालायक़२—वि० (फ़ा० अ०) अयोग्य।
नालिका–स्त्री० नाली। [याद।
नालिश–स्त्री० (फ़ा०) फ़रि-
नालिशी—वि० (फ़ा०) दावेदार।
नाली—स्त्री० मोरी।
नाव—स्त्री० किश्ती।
नावक–पु० एक छोटा बाण। केवट।
ना-वक़्त—वि० (फ़ा० अ०) बे मौक़े। [एक खेल।
नावर–स्त्री० नाव। नाव का-
नावाक़िफ़—वि० (फ़ा०) अनजान।
नाविक—पु० मल्लाह।
नाव्य—वि० नौका से पार-

होने योग्य (जल)।
नाश१२–पु० (अ०) ध्वंस।
नाशक—वि० नाश करने वाला।
नाशकारी५—वि० नाशक।
नाशन—पु० नाश।
नाशपाती—स्त्री० एक फल।
नाशवान्१३—वि० नश्वर।
नाशाइस्ता—वि० (फ़ा०) असभ्य। अनुचित।
ना-शाद—वि० (फ़ा०) अप्रसन्न। [गया।
नाशित—वि० नाश किया-
नाशितव्य—वि० नाश के योग्य।
नाशी५—वि० नाशक।
नाशुक्रा२—वि० (फ़ा०) कृतघ्न।
नाश्ता–पु० (फ़ा०) जलपान।
नास—स्त्री० सुँघनी।
ना-सज़ा—वि० (फ़ा०) अनु-चित। [कुमार।
नासत्य—पु० अश्विनी-
नासना–सक्रि० नष्ट करना।
नासबूर–वि० (फ़ा०) अधीर। विकल, बेचैन
नासमझ२–वि० (फ़ा०) मूर्ख।
नासा—स्त्री० नाक। नाक-छिद्र। [अनुकूल न हो।
नासाज़२—वि० (फ़ा०) जो-
नासापुट—पु० नथुना।
नासिक, नासिका—स्त्री० नाक।
नासिख़–पु० (अ०) लेखक।
नासिर—वि० (अ०) गद्य-लेखक। मददगार।

नासीर—पु० सेना का अग्र-भाग। [पहुँचा हुआ घाव।
नासूर—पु०(अ०) नस तक-
नास्तिक३—पु० ईश्वर को न मानने वाला।
नास्य—पु० नकेल। वि० नाक का। [दुश्चरित्र।
नाहंजार—वि० (फ़ा०)
नाह—पु०नाथ, स्वामी।
नाहक़—क्रि०वि० (फ़ा० अ०) फ़िज़ूल।
ना-हमवारा—वि० (फ़ा०) जो चौरस न हो।
नाहर—पु० सिंह, व्याघ्र।
नाहरू—पु० नारू रोग। दे० 'नाहर'।
नाहिन, नाहीं—अव्य नहीं।
निंदक१४—पु० निंदा करने वाला।
निंदन६—पु० निंदा।
निंदना—सक्रि०निंदा करना।
निंदरिया—स्त्री० निद्रा।
निंदा—स्त्री० बुराई,बदनामी।
निंदाना—सक्रि० घास-पात निराना।
निंदासा—वि० उनींदा।
निंदास्तुति—स्त्री० झूठी-प्रशंसा।
निंदित—वि०बुरा' गर्हित।
निंदिया—स्त्री० नींद।
निंद्य—वि० निंदनीय।
निंब—स्त्री० नीम का पेड़।
निंबकौरी—स्त्री० निबौली।
निंबार्क—पु० वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक आचार्य।
निंबू—पु० नीबू।
निःशंक—वि० निडर।
निःशब्द—वि० शब्द-रहित।
निःशेष—वि० संपूर्ण। समाप्त
निःश्रेणी—स्त्री० सीढ़ी।
निःश्रेयस—पु० मुक्ति। कल्याण [हुआ।
निःशोध्य—वि० शुद्ध किया-
निःश्वास—पु०साँस [संकोच।
निःसंकोच—क्रि० वि० बे-
निःसंग—वि०बिना मेल का।
निःसंतान—वि०संतान रहित।
निःसंदेह—क्रि० वि० बेशक।
निःसत्व—वि० सारहीन।
निःसरण—पु० निकलना।
निःसार—वि० सारहीन।
निःसीम—वि० बेहद।
निःसृत—वि० निकला हुआ।
निःस्पृह—वि० इच्छारहित।
निःस्वार्थ—वि० स्वार्थहीन।
निअर—क्रि० वि० निकट। वि० समान।
निअराना—सक्रि० निकट-जाना। अक्रि० निकट-आना।
निआउ—पु० न्याय।
निआन—पु० परिणाम।
निआथी—स्त्री० निर्धनता।
निकंटक—वि० दे० 'निष्कंटक'
निकंदन—पु० नाश। वि० नाश करने वाला।
निकंदना—सक्रि० नाश करना। [करने वाली।
निकंदिनी—वि०स्त्री० नाश-
निकट३—क्रि० वि० पास।
निकटवर्ती५—वि० पास वाला।
निकटस्थ—वि० पास का।
निकम्मा७—वि० ख़राब, निरुपयोगी।
निकर—पु० समूह।
निकरना, निकलना—अक्रि० प्रकट होना। अलग होना। मुक्त होना। [स्थान।
निकर्षण—पु० सुंदर वास-
निकलंकी—पु० कल्कि-अवतार। [धातु।
निकल—स्त्री० (अं०) एक-
निकलना—अक्रि० प्रकट होना, बाहर होना, दूर होना।
निकलवाना—सक्रि० निका-लने का काम दूसरे से कर-वाना।
निकष, निकषण—पु० कसौटी।
निकषात्मज—पु० राक्षस।
निकसना—अक्रि० निकलना।
निकाई—स्त्री० भलाई। सुंदरता।
निकाज—वि० बेकाम।
निकाम—वि० बहुत-बुरा। पु० इच्छा।
निकाय—पु०समूह। घर।

नोट—निर (निः) एक उपसर्ग है, जो शब्दों के पूर्व लगने से 'नहीं, बिना, निश्चय, अत्यन्त, बाह्य, अधोभाव, समीप, दर्शन', आदि अर्थों की विशेषता प्रकट करता है।

निकाय्य—पु० घर।
निकार—पु० अपकार।
निकारण—पु० मारना।
निकालना—सक्रि० बाहर लाना। अलग करना। जारी करना।
निकाला—पु० निर्वासन।
निकास—पु० निकलने की क्रिया या भाव। उद्गम-स्थान। [आय। बिक्री।
निकासी—स्त्री० प्रस्थान।
निकाह—पु०(अ०) विवाह।
निकाहनामा—पु०(अ० फ़ा०) वह पत्र जिस पर निकाह और वधू को दिये जाने वाले धन का उल्लेख हो।
निकाही—वि० (अ०) जिसके साथ निकाह हुआ हो।
निकिष्ट—वि० तुच्छ।
निकुंचक—वि० मुट्ठीभर।
निकुंज—पु० लता-मंडप।
निकुंभ—पु० दँतिया।
निकुंभिला—स्त्री० लंका की एक देवी। मेघनाद का यज्ञ-स्थल।
निकुरंब—पु० समूह।
निकृत—वि० अपमानित। वंचित। कुरूप। कुटिल-हृदय
निकृति—स्त्री० पाप, कपट।
निकृष्ट३—वि० बुरा।
निकृष्टत्व—पु० नीचता।
निकेत, निकेतन—पु० स्थान।
निकोसना—सक्रि० दाँत-पीसना।[कार्य या मज़दूरी।
निकौनी—स्त्री० निराने का-
निक्वण, निक्वाण—पु०वीणा आदि का शब्द।
निक्षण—पु० चुम्बन।
निक्षिप्त—वि० फेंका हुआ। त्यक्त। बंधक रखा हुआ।
निक्षेप—पु०फेंकने,छोड़ने की क्रिया या भाव। धरोहर।
निक्षेपक—वि० उगलने वाला। फेंकने वाला।
निक्षेप-ग्रहीता—पु० जिसके पास कोई चीज़ धरोहर रक्खी हो।
निक्षेपण—पु० फेंकना। छोड़ना। [वाला।
निक्षेपी—वि०धरोहर रखने-
निक्षेप्य—वि० फेंकने या छोड़ने योग्य।
निखंग—पु०दे० 'निषंग'।
निखंड—वि० ठीक। मध्य।
निखट्टर—वि० निर्दय।
निखट्टू—वि० निकम्मा। निठल्ला। [होना।
निखरना—अक्रि० निर्मल-
निखरी—स्त्री०पक्की रसोई।
निखर्व—वि० दश सहस्र-कोटि। [सब।
निखवख—वि० बिलकुल,
निखार—पु० स्वच्छता। श्रृङ्गार। [करना।
निखारना—सक्रि० साफ़-
निखालिस—वि० मिलावट का। शुद्ध।
निखिल—वि० संपूर्ण।
निखुटना—अक्रि० घट जाना।
निखोट—वि०निर्दोष।
निगड़—स्त्री० बेड़ी।
निगड—वि० नंगा।
निगद, निगाद—पु० कहना।
निगदित—वि०कहा हुआ।
निगम—पु० मार्ग। वेद।
निगमागम—पु०वेद-शास्त्र।
निगर—वि० सब। समूह।
निगराँ—वि०(फ़ा०) रक्षक।
निगरानी—स्त्री० (फ़ा०) देख-रेख।
निगरु—वि० हल्का।
निगलना९—सक्रि० लील-जाना। [रक्षक।
निगहबान२—पु० (फ़ा०)
निगाद—पु० कथन।
निगार—पु० खाना। वि० (फ़ा०) क़लम आदि से लिखने या बेल बूटे बनाने वाला। पु० चित्र, तस्वीर। मूर्त्ति। प्यारा [चित्रशाला।
निगार-ख़ाना—पु० (फ़ा०)
निगाल—पु० घोड़े का गला।
निगाली—स्त्री० हुक्के की नली। [परख।
निगाह—स्त्री०(फ़ा०) दृष्टि।
निगिभ—वि० परम प्रिय। गोपनीय।
निगुण—वि० सत्व, रज, तम से परे। बुरा।
निगुर—वि० अदीक्षित।
निगूढ़—वि० अत्यंत गुप्त।
निगूहन—पु० छिपाव।
निगृहीत—वि० पकड़ा हुआ। पीड़ित। [दुष्ट।
निगोड़ा७—वि० अभागा,

नोट—प्राचीन कविता में 'निर्' की जगह 'नि' भी प्रयुक्त हुआ है; जैसे 'निकंटक'।

निग्रहन—पु० रोक। दमन। बंधन। चिकित्सा। दंड।
निघंटु—पु० शब्द-संग्रह। वैदिक-शब्द-कोष।
निघटना—अक्रि० कम होना।
निघरघट—वि० बिना घर-घाट का, निर्लज्ज।
निघरा—वि० निगोड़ा।
निघात—पु० प्रहार।
निघ्न—वि० वशीभूत।
निचय-पु०निश्चय। समूह।
निचल—वि०निश्चल।
निचला७—वि० नीचे का। स्थिर।
निचाई—स्त्री० नीचता।
निचान—स्त्री० ढाल।
निचिंत—वि० बेफ़िक्र।
निचुल—पु० बत।
निचै—पु० समूह।
निचोड़-पु०सार। सारांश निचोड़ने से निकाला हुआ रस आदि।
निचोड़ना—सक्रि०गारना। सार भाग निकालना।
निचोना-सक्रि० निचोड़ना।
निचोल-पु० चादर,ओढ़नी।
निचोलक—पु० कवच। अँगरखा।
निचौहाँ७—वि० नीचा।
निचौहैं—क्रि० वि०नीचे की ओर।
निछक्का—वि० निराला।
निछत्र—वि० छत्रहीन।
निछनियाँ—क्रि० वि० पूर्णतः।

निछल—वि० निश्छल।
निछान—वि० ख़ालिस। क्रि० वि० पूर्ण रूप से।
निछावर—स्त्री० उतारा। इनाम। [रहित। निर्दय।
निछोह, निछोही-वि० प्रेम-
निज, निजु—वि० अपना। ख़ास। अव्य० यथार्थ में।
निजकाना—अक्रि० समीप आना।
निजतंत्र—वि० स्वाधीन।
निजस्व-पु० अपने अधिकार का धन।
निज़ाम-पु०(अ०)बंदोबस्त।
निज़ामत—स्त्री० (अ०) व्यवस्था।
निजी, निजू—वि० अपना।
निजोर—वि० निर्बल।
निझरना-अक्रि० झड़ जाना।
निटोल—पु० मुहल्ला।
निठि-क्रि०वि०कठिनता से।
निठल्ला७—वि० बेकार।
निठाला—पु० बेकारी।
निठुर३—वि० निर्दय।
निठुरई, निठुराई—स्त्री० कठोरता।
निठोर—पु० बुरी जगह।
निडर१—वि० निर्भय।
निड़—क्रि० वि० निकट।
निढाल—वि० शिथिल
नितत—क्रि० वि० नितांत।
नितंब—पु० चूतड़।
नितंबिनी—स्त्री० सुन्दर-नितंब वाली स्त्री।
नित-क्रि० वि०रोज़, नित्य।

नितप्रति-क्रि०वि० प्रतिदिन।
नितराम्—अव्य० सर्वदा।
नितल—पु० एक पाताल-लोक।
नितांत-वि०सर्वथा, निपट।
नित्य—क्रि०वि० प्रतिदिन। सर्वदा। वि० सदैव रहने वाला।
नित्यकर्म, नित्यक्रिया—पु० प्रतिदिन किया जाने वाला नियमित कर्म—पूजा पाठ आदि।
नित्यगति—पु० वायु।
नित्यता—स्त्री०, नित्यत्व—पु० नित्य होने का भाव।
नित्यदा—अव्य० सदा।
नित्यनियम—पु० रोज़ का काम।
नित्यप्रति—क्रि० वि० हर-रोज़। [दिन। सदा।
नित्यशः—क्रि० वि० प्रति-
निथंभ—पु० खंभ।
निथरना—अक्रि० घुली हुई मैल आदि का नीचे बैठ जाने से पानी का साफ़ हो जाना।
निथारना—सक्रि० पानी आदि को घुले हुए मैल से साफ़ करके अलग करना।
निदरना—सक्रि० निरादर-करना। [उदाहरण।
निदर्शन—पु०दिखाव।
निदर्शना—स्त्री०एक काव्या-लंकार।
निदलन—पु० नाश।
निदहना—सक्रि० जलाना।

निदाघ, निदाह—पु० गरमी । ग्रीष्म-काल ।
निदाघकर—पु० सूर्य ।
निदान—पु० कारण । रोग-निर्णय । अंत । क्रि० वि० अंत में । वि० निकृष्ट ।
निदारुण—वि० कठिन, दुःसह ।
निदाह—पु० निदाघ,गरमी ।
निदिग्ध—वि० बढ़ा हुआ ।
निदिध्यासन—पु०बार बार-स्मरण करना ।
निदेश—पु०शासन । आज्ञा ।
निद्—पु० अस्त्र विशेष ।
निद्रा—स्त्री० नींद ।
निद्राण—पु० सोने वाला ।
निद्रायमान—वि० जो सो रहा हो ।
निद्रालु—वि० सोने वाला ।
निद्रित—वि० सोया हुआ ।
निधड़क—क्रि०वि० बेखटके ।
निधन—पु० नाश । मरण । वि०धनहीन ।
निधनी—वि०निर्धन ।
निधान—पु० आधार । ख़ज़ाना । घर ।
निधि—स्त्री० ख़ज़ाना । सम्पत्ति । ५० कौड़ियों का एक प्राचीन सिक्का ।
निधिनाथ, निधिपति—पु० कुबेर ।
निधीश—पु० कुबेर ।
निधुबन—पु० मैथुन ।
निधेय—वि० रखने-योग्य ।
निध्यान—पु० दर्शन ।
निध्वान—पु० शब्द ।
निनद—पु० शब्द, ध्वनि ।
निनय—स्त्री० नम्रता ।
निनरा—वि० अलग ।
निनरुई—स्त्री०अकेली कन्या ।
निनाद—पु०शब्द । [करना
निनादना—सक्रि० शब्द-
निनादित—वि० ध्वनित ।
निनादी५—वि० शब्द करने वाला ।
निनान—पु० निदान, अंत । क्रि० वि० अन्त में । वि० निकृष्ट । [दूर ।
निनार—वि० न्यारा, जुदा ।
निनावाँ—पु० मुँह के भीतरी भागों में निकलने वाले लाल दाने ।
निनाना—सक्रि० झुकाना ।
निनौरा—पु० ननिहाल ।
निपंग—वि० निकम्मा ।
निप—पु० घड़ा । [बढ़ना ।
निपजना—अक्रि० उपजना ।
निपजी—स्त्री० लाभ । उपज ।
निपट—अव्य० बिलकुल ।
निपटना—अक्रि० निबटना ।
निपटाना—सक्रि० चुकाना । पूरा करना । [फैसला ।
निपटारा—पु० समाप्ति ।
निपठ—पु० पढ़ना, पाठ ।
निपतन—पु० अधःपतन ।
निपत्र—वि० ठूँठ ।
निपाँगुर—वि० अपाहिज ।
निपात—पु० पतन । वि० पत्रहीन । [का कार्य ।
निपातन—पु० नाश । गिराने-
निपाती—वि० गिराने वाला । पत्र-हीन । [की चरबी ।
निपान—पु० कुएँ के निकट-
निपीड़क१४—पु० पीड़ित-करने वाला । [करना ।
निपीड़न ६—पु० पीड़ित-
निपीड़ित—वि० दुःखी ।
निपुण—वि० चतुर ।
निपुणाई—स्त्री० चतुरता ।
निपुत्री—वि० निःसंतान ।
निपूत, निपूता७—वि० पुत्र-हीन ।
निपोरना—सक्रि० खोलना (दाँत) । [पूर्णतया ।
निफन—वि०पूर्ण । क्रि०वि०
निफरना—अक्रि० धँस कर आर-पार होना । [करना ।
निफारना—सक्रि० आर-पार-
निफ़ाक़—पु० (अ०) विरोध ।
निफोट—वि०साफ़-साफ़ ।
निबंध—पु० बंधन । लेख । शर्त्त ।
निबंधन—पु०बन्धन । कारण ।
निब—स्त्री० (अ०)क़लम की लोहे की लिखने की नोंक ।
निबकौरी—स्त्री० निबौली ।
निबटना९—अक्रि० निवृत्त-होना । समाप्त होना ।
निबटाव—पु० निर्णय, छुट्टी ।
निबटेरा—पु० निर्णय ।
निबद्ध—वि० बँधा हुआ । गुँथा हुआ ।
निबर—वि० निर्बल ।

निबरना—अक्रि० छूटना । चुकना । पूरा होना ।
निबर्हण—पु० मारना ।
निबल—वि० अशक्त ।
निबलाई—स्त्री० निर्बलता ।
निबह—पु० समूह ।
निबहना—अक्रि० निर्वाह-होना । छुट्टी पाना ।
निबहुर-वि० वह स्थान जहाँ से कोई न लौटे ।
निबाह-पु० निर्वाह, पालन ।
निबाहना—सक्रि० गुज़ारा-करना । पालन करना ।
निबिड़—वि० घोर, घना ।
निबुआ—पु०नबू । [पाना ।
निबुकना—अक्रि० छुटकारा-
निबेड़ना, निबेरना—सक्रि० निबटाना । निर्णय करना ।
निबेड़ा, निबेरा—पु० छुटकारा । फ़ैसला ।
निबौरी—स्त्री०नीम का फल ।
निभ—पु० प्रकाश । वि० समान । [होना ।
निभना९—अक्रि० गुज़ारा
निभरम—वि० भ्रम-रहित ।
निभरोसी—वि० निराश ।
निभागा—वि० बदक़िस्मत ।
निभाना—सक्रि० पालन-करना ।
निभाव—पु० गुज़ारा ।
निभृत—वि० रखा हुआ । निर्जन । शान्त । अचल ।
निमत्रण—पु० न्योता । बुलावा । [देना ।
निमंत्रना—सक्रि० न्योता
निमंत्रयिता१०—वि० निमंत्रण देने वाला ।
निमंत्रित—वि० जिसे न्योता दिया गया हो ।
निम—पु०सलाई । [टिकिया ।
निमकी—स्त्री० नमकीन
निमग्न—वि० डूबा हुआ ।
निमज्जन—पु० डुबकी लगा कर नहाना । [लगाना ।
निमज्जना—अक्रि० डुबकी-
निमज्जित—वि०स्नान किया-हुआ । [हो ।
निमता—वि० जो उन्मत्त न-
निमय—पु० अदला-बदला ।
निमान—पु० सरोवर ।
निमाना—वि० विनीत । नीचा ।
निमि—पु०एक ऋषि । राजा जनक के पूर्वज । पलक ।
निमिख—पु० पलक गिरने में जितना समय लगता है, क्षण ।
निमित्त—पु० हेतु । चिह्न ।
निमित्तकारण—पु० प्रधान कारण ।
निमिराज—पु०राजा जनक ।
निमिष—पु० पलक । सैकंड का $\frac{4}{5}$ भाग । [बंद ।
निमिषित—वि०मिचा हुआ,
निमीलन—पु०निमेष,पलक ।
निमीलित-वि०बन्द, मुँदा-हुआ ।
निमूल—वि० जड़हीन ।
निमेख, निमेष—पु० पलक का गिरना । पलक गिरने का समय । पलक ।
निमेट-वि० न मिटने वाला ।
निमेष—पु० पलक मारना ।
निमोना—पु० चने या मटर के हरे दानों का शोरबा ।
निम्न—वि० नीचा ।
निम्नगा—स्त्री०नदी ।
निम्नस्थ-वि० नीचे स्थित ।
निम्नोच्च—क्रि०वि० नीचे-ऊपर ।
नियंता१०—पु० व्यवस्था तथा शासन करने वाला ।
नियत्रण—पु० नियमानुसार-सचालन ।
नियंत्रित-वि० नियम-बद्ध ।
निय-वि० अपना ।
नियत-वि०निश्चित मुक़र्रर ।
नियतकालिक—वि० नियत समय मे होने वाला ।
नियतात्मा—पु० जितेंद्रिय ।
नियति—स्त्री० स्थिरता । भाग्य । [क़ानून ।
नियम—पु० व्रत । दस्तूर ।
नियमन—पु० व्यवस्था ।
नियमबद्ध-वि० नियमानुसार ।
नियमशाली५-वि० नियम-पूर्वक काम करने वाला ।
नियमित—वि० नियमबद्ध ।
नियमी—पु० नियम पालन करने वाला । [योग्य ।
नियम्य—वि० नियम के-
नियर—क्रि० वि० समीप ।
नियराई—स्त्री० निकटता ।
नियराना—अक्रि० पास-पहुँचना ।

नियरे—क्रि० वि० समीप।
नियाई—वि० न्यायी।
नियाज़—स्त्री० (फ़ा०) तमन्ना, इच्छा। [कृपा पात्र।
नियाज़मंद—वि० (फ़ा०)
नियाबत—स्त्री० (अ०) स्थानापन्न होना।
नियाम—पु० (फ़ा०) तलवार का म्यान।
नियामक१.४—पु० नियम करने वाला। नौका के पीछे खड़ा लकड़ी घुमाने वाला।
नियामत—स्त्री० (अ०) दुर्लभ वस्तु। धन।
नियारना—सक्रि० हटाना।
नियारिया—वि० सोना-चाँदी साफ़ करने वाला।
नियाव—पु० इंसाफ़।
नियुक्त—वि० मुक़र्रर।
नियुक्ति—स्त्री० तैनाती।
नियुत—वि० दस लाख। एक लाख।
नियुद्ध—पु० कुश्ती।
नियोक्ता—पु० नियोजित करने वाला।
नियोग—पु० तैनाती। आज्ञा। प्रेरणा। सन्तानोत्पन्न कराने की एक रस्म। [वाला।
नियोगी—वि० नियोग करने-
नियोजक—पु० नियुक्त करने वाला। [लगाना।
नियोजन४—पु० काम में-
नियोजित—वि० नियुक्त।
नियोज्य—वि० नियुक्ति के योग्य।

नियोद्धा—पु० पहलवान।
निरंकार—पु० निराकार।
निरंकुश—वि० स्वेच्छाचारी। निडर। [बेरंग।
निरंग—वि० फीका। ख़ाली।
निरंजन—वि० मायारहित। बिना काजल का। पु० परमात्मा।
निरंतर—वि० स्थायी। क्रि० वि० लगातार। [बड़ा मूर्ख।
निरंध—वि० बिल्कुल अंधा।
निरंभ—वि० निर्जल।
निरकार—वि० निराकार।
निरकेवल—वि० साफ़, स्वच्छ।
निरक्षर—वि० अनपढ़।
निरखना—सक्रि० देखना।
निरगुन—वि० दे० 'निर्गुण'।
निरगुनी—वि० गुण-रहित।
निरजर—वि० जो जीर्ण न हो, देवता।
निरजोसन—पु० निचोड़। निर्णय, निश्चय। [नदी।
निरझरनी—स्त्री० पहाड़ी
निरत—वि० तत्पर। पु० नृत्य। क्रि० वि० निरंतर।
निरतना—अक्रि० नृत्य-करना। [अप्रीति।
निरति—स्त्री० तल्लीनता।
निरतिशय—वि० सर्वोत्तम।
निरधातु—वि० शक्तिहीन।
निरधार—पु० निश्चय। वि० बिना आधार का।
निरधारना—सक्रि० निश्चय-करना।
निरन्न—वि० निराहार।

निरपत्य—वि० निःसन्तान।
निरपना—वि० पराया।
निरपराध—वि० बेक़सूर।
निरपवाद—वि० निर्दोष।
निरपाय—पु० रक्षा।
निरपेक्ष, निरपेक्षी—वि० अपेक्षा-रहित, तटस्थ।
निरबंध—वि० बंधन-रहित।
निरबंसी—वि० निस्संतान।
निरबर्त्ती—वि० वैरागी।
निरबहना—अक्रि० निबहना।
निरबान—पु० दे० 'निर्वाण'।
निरबेद—पु० वैराग्य।
निरभिमान—वि० अभिमान-रहित।
निरभ्र—वि० बिना बादल का।
निरमना१—अक्रि० निर्माण-करना।
निरमूलना—सक्रि० उखाड़ना।
निरमोल, निरमोलिक—वि० अनमोल।
निरमोही—वि० दे० 'निर्मोही'।
निरय—पु० नरक।
निरर्गल—वि० अबाध, बिना-रुकावट।
निरर्थ—वि० व्यर्थ।
निरर्थक—वि० व्यर्थ।
निरवग्रह—पु० स्वतंत्र-मनुष्य।
निरवच्छिन्न—वि० निरंतर।
निरवद्य—वि० दोष-रहित।
निरवयव—वि० निराकार।
निरवलंब—वि० आश्रयहीन।
निरवधि—वि० असीम।
निरवार—पु० छुटकारा।

निरवारना–सक्रि० निवारण-करना।
निरशन—पु० अनशन।
निरसंक—वि० निर्भीक।
निरस—वि० रसहीन।
निरसन६—पु० हटाना। खंडन। [पराजित। त्यक्त।
निरस्त—वि० हटाया हुआ।
निरस्त्र—वि० अस्त्रहीन।
निरहंकार—वि० अभिमान-रहित।
निरा७–वि०विशुद्ध। निपट।
निराई—स्त्री० निराने की क्रिया। [निवारण।
निराकरण६—पु० खंडन।
निराकरिष्णु—वि० निरस्कार करने के स्वभाव वाला।
निराकार—पु० ईश्वर। आकाश।
निराकांक्षी—वि० निस्पृह।
निराकुल–वि० अतिव्याकुल। बे व्याकुल।
निराकृत–वि० हटाया हुआ। निरादर को प्राप्त। [परिहार।
निराकृति—स्त्री० निराकरण,
निराट–वि० निपट, अकेला।
निरातपा—स्त्री० रात।
निरादर—पु० अपमान।
निराधार—वि० आश्रयहीन।
निराधि—वि० रोग-शून्य।
निरानंद–वि० आनंद-शून्य।
निराना—सक्रि० खेत की घास अलग करना।
निरापद–वि० आपत्तिरहित, सुरक्षित।
निरापन—वि० पराया।
निरामय—वि० नीरोग।
निरामिष–वि० मांस रहित। मांस न खाने वाला।
निरायुध—वि० अस्त्रहीन।
निरार—वि० न्यारा।
निरारा—वि० न्यारा।
निरालंब—वि०आश्रयहीन।
निराला७–पु० एकांतस्थान। वि० अनोखा।
निरावना—सक्रि० निराना।
निरावृत्त—वि० खुला हुआ
निराश—वि० आशाहीन।
निराशा—स्त्री०नाउम्मेदी।
निराश्रय—वि० आश्रयहीन।
निराश्रित—वि० जिसका कोई आश्रय न हो।
निराहार—वि० आहार-रहित। [वाला।
निरीक्षक१४—पु० देखने
निरीक्षण६—पु० निगरानी।
निरीक्षा—स्त्री० देखना।
निरीक्षित—वि० जिसकी देखभाल की गयी हो।
निरीक्ष्य—वि०देखने-योग्य।
निरीक्ष्यमाण–वि० निगरानी करने योग्य। [का।
निरीश—वि० बिना स्वामी-
निरीश्वरवादी–पु०नास्तिक।
निरीह—वि० इच्छा-रहित।
निरुक्त—वि० निश्चय पूर्वक कहा गया। पु० वेद का चतुर्थ अंग।
निरुक्ति—स्त्री०एक अलंकार।
निरुच्छ्वास—वि० श्वास हीन। सँकरा।
निरुज—वि० नीरोग।
निरुत्तर—वि० उत्तर न दे सकने वाला।
निरुत्साह–वि०उत्साह-हीन।
निरुद्ध—वि० बँधा या रुका हुआ।
निरुद्यम,, निरुद्यमी—वि० उद्यम-रहित।
निरुद्योग, निरुद्योगी—वि० बेकार।
निरुद्वेग—वि० निश्चिन्त।
निरुपद्रव, निरुपद्रवी—वि० उपद्रव रहित। [रहित।
निरुपधि—वि० उपाधि-
निरुपम—वि० बेजोड़।
निरुपयोगी—वि० व्यर्थ।
निरुपाधि–वि० उपाधिहीन।
निरुपाय—वि० उपायहीन।
निरुवरना–अक्रि० सुलझना।
निरुवार—पु० छुटकारा। निर्णय। [अविवाहित।
निरूढ़४–वि० उत्पन्न।प्रसिद्ध।
निरूप—वि० रूपरहित।
निरूपक१४—वि० निरूपण-करने वाला।
निरूपण—पु० प्रकाश। विचार। निश्चय।
निरूपना—सक्रि० निश्चित-करना। [किया हुआ।
निरूपित—वि० निरूपण-
निरेखना—सक्रि० देखना।
निरै—पु० नरक।
निरोग, निरोगी—वि० स्वस्थ।
निरोध१२—पु०रोक। घेरा।

निरोधी—वि० रोकने वाला।
निर्*—एक उपसर्ग।
निर्ख़—पु०(फ़ा०)भाव, दर।
निर्ख़नामा—पु० (फ़ा०) वह पत्र जिसपर सब चीज़ों का भाव लिखा हो।
निर्ख़बंदी—स्त्री० (फ़ा०) दर निश्चय करना।
निर्गंध३—वि० गंध-हीन।
निर्गत४—वि०निकलाहुआ।
निर्गम—पु० निकास।
निर्गमन—पु० निकलने का द्वार। निकलना।
निर्गमना—अक्रि० बाहर-निकलना। [त्रि०गुणहीन।
निर्गुण—पु० परमेश्वर।
निर्ग्रंथन—पु० मारना।
निर्घंट—पु०सूची।शब्द कोश।
निर्घात—पु०हवा का शब्द।
निर्घृण—वि० नीच, निर्लज्ज। [शब्दरहित।
निर्घोष—पु० शब्द। वि०
निर्जन—वि० एकांत।
निर्जर—पु० देवता।
निर्जल—वि० बिना जल का।
निर्जला-एकादशी—स्त्री० जेठ सुदी एकादशी।
निर्जित—वि० वशीभूत। परास्त। [अशक्त।
निर्जीव—वि० प्राणहीन,
निर्झर—पु० सोता, झरना।
निर्झरिणी—स्त्री० नदी।
निर्झरी—पु० पहाड़।

निर्णय—पु०निश्चय।फ़ैसला।
निर्णायक—वि०निर्णय करने-वाला।
निर्णिक्त—वि० शोधा हुआ।
निर्णीत—वि० निर्णय किया-हुआ।
निर्णेजक—पु० धोबी।
निर्णेता१०—पु०निर्णयकर्त्ता।
निर्त१२—पु० नाच।
निर्दंभ—वि० अभिमान-रहित।
निर्दई, निर्दय३-वि०कठोर।
निर्दहना—सक्रि० जलाना।
निर्दिष्ट—वि० ठहराया-हुआ। निश्चित।
निर्देश—पु० निश्चय। उल्लेख। आज्ञा।
निर्देशक-पत्रिका—स्त्री० मार्ग दिखाने वाली पुस्तक,गाइड।
निर्दोष—वि० बेक़सूर।
निर्दोषी—वि० अपराध-रहित। [विरोधीहीन।
निर्द्वंद्व—वि० स्वच्छन्द।
निर्धन३—वि० ग़रीब।
निर्धार, निर्धारण—पु० निश्चय। [करना।
निर्धारना—सक्रि० निश्चित-
निर्धारित—वि० निश्चित।
निर्धूत—वि० धोया हुआ।
निर्निमेष—क्रि०वि०एकटक।
निर्बंध—पु० बाधा। शर्त्त।
निर्बल३—वि० कमज़ोर।
निर्बहना—अक्रि० निभना,

दूर होना।
निर्बाध—वि० बाधा-रहित।
निर्बुद्धि—वि० मूर्ख।
निर्बोध—वि० अज्ञान।
निर्भय३—वि० निडर।
निर्भर—वि० पूर्ण। युक्त। मुनहसिर।
निर्भीक—वि० बेडर।
निर्भ्रम—वि० भ्रमरहित।
निर्भ्रांत—वि० भ्रमरहित।
निर्मना—सक्रि० बनाना।
निर्मम—वि० ममतारहित, कठोर।
निर्मल३—वि०शुद्ध।निर्दोष।
निर्मला—पु० नानकपंथी-साधुओं का एक सम्प्रदाय।
निर्मली—स्त्री० रीठे का वृक्ष।
निर्माण—पु० रचना। सृष्टि।
निर्माता१०—पु० रचयिता।
निर्मात्रिक—वि० बिना मात्रा का।
निर्मायल, निर्माल्य—पु० देवता को समर्पित की गयी वस्तु।
निर्मित—वि०बनाया हुआ।
निर्मिति—स्त्री० निर्माण।
निर्मुक्त—वि० केंचुली छोड़ा हुआ (साँप)।
निर्मूल—वि०बिना जड़ का।
निर्मूलन—पु० विनाश।
निर्मोक—पु०साँप की केंचुली।
निर्मोह, निर्मोही५—वि० निर्दय। मोहरहित।

नोट*—'निर्' एक उपसर्ग है जो शब्दों के पूर्व 'निश्चय' तथा 'निषेध' अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे नियोजित, निराकार।

निर्याण—पु० हाथी का देखना।
निर्यात—पु० जो माल बिक्री के लिये विदेश भेजा गया हो। [बदला।
निर्यातन—पु० वैरशोधन,
निर्याम—पु० मल्लाह।
निर्यास—पु० बह कर निकलना। रस। गोंद। काढ़ा।
निर्युक्तिक—वि० युक्ति-रहित। अनुचित।
निर्लज्ज३—वि० बेशर्म। [हो।
निर्लिप्त—वि० जो लिप्त न
निर्लोभ—वि० लोभरहित।
निर्वंश३—वि० निस्संतान।
निर्वचन—पु० उच्चारण।
निर्वपण—पु० दान।
निर्वर्णन—पु० दर्शन।
निर्वहण—पु० निबाह।
निर्वाक्—वि० मौन।
निर्वाचक१४—पु० चुननेवाला।
निर्वाचन—पु० चुनाव।
निर्वाचन-क्षेत्र—पु० चुनाव का सीमावर्त्ती स्थल।
निर्वाचित—वि० चुना हुआ।
निर्वाण—वि० बुझा हुआ। अस्त। पु० मोक्ष।
निर्वाद—पु० निंदा, अपवाद। लोकवाद। सिद्धांत।
निर्वापण—पु० त्याग।
निर्वार्य—पु० जो दुःख में भी प्रसन्नता के साथ काम करता है। [वाला।
निर्वासक—पु० निकालने
निर्वासन६—पु० देश-निकाला। [गया।
निर्वासित—वि० निकाला-

निर्वास्य—वि० निकालने-योग्य।
निर्वाह—पु० गुज़ारा।
निर्वाहना—सक्रि० पालना, निर्वाह करना।
निर्विकल्प—वि० परिवर्त्तन-हीन। स्थिर।
निर्विकार—वि० विकार-रहित।
निर्विघ्न—वि० बाधा-रहित। क्रि० वि० बेखटके।
निर्विचार—वि० विचार-रहित। [रहित।
निर्विवाद—वि० विवाद-
निर्विशेष—पु० ईश्वर।
निर्विष्ट—वि० विवाहित। मुक्त।
निर्वीज—वि० बीजरहित।
निर्वीर्य्य—वि० वीर्यहीन। अशक्त।
निर्वृत्त—वि० सिद्ध, पूर्ण।
निर्वृत्ति—स्त्री० सिद्धि।
निर्वेद—पु० अपमान, खेद। क्रोध और घृणा से युक्त वैराग्य।
निर्वेश—पु० नौकरी। मज़दूरी। उपभोग। मूर्छा। विवाह।
निर्व्यथन—पु० छेद।
निर्व्यलीक—वि० निष्कपट।
निर्व्याज—वि० निश्छल।
निलज, निलज्ज३—वि० बेशर्म। [घर।
निलय, निलै—पु० स्थान,
निलहा—वि० नील वाला।
निलीन—वि० प्रच्छन्न, गुप्त।
निवना—अक्रि० नवना।

निवर्त्तन—पु० लौटना। रोकना।
निवसन—पु० निवास।
निवसना—अक्रि० रहना।
निवह—पु० समूह, झुंड।
निवाई—वि० नया। अनोखा
निवाज—वि० कृपालु।
निवाजना—सक्रि० कृपा-करना।
निवाड़ा—पु० छोटी नाव।
निवात—वि० वायुरहित।
निवान—पु० सरोवर।
निवाप—पु० पितृदान।
निवार—स्त्री० निवाड़ (चारपाई बिनने की)। [कर्त्ता।
निवारक—वि० निवारण-
निवारण—पु० रोक। छुटकारा।
निवारना—सक्रि० रोकना। दूर करना। बचाना।
निवारित—वि० रक्षित।
निवारी—स्त्री० चमेली की भाँति का एक पौधा।
निवाला—पु० (फ़ा०) ग्रास।
निवास—पु० रहने का स्थान। रहने की क्रिया।
निवासी५—पु० रहनेवाला।
निविड़—वि० घना, गहरा।
निविष्ट—वि० एकाग्र, लीन। घुसा हुआ।
निवीत—पु० कपड़े का छोर। मालाकार जनेऊ पहनना।
निवृत्त—वि० मुक्त।
निवृत्ति—स्त्री० मुक्ति।
निवृत्तिवेतन—पु० पेंशन।
निवेद—पु० 'दे०' नैवेद्य।

निवेदक१४—पु० प्रार्थी।
निवेदन६—पु० विनय।
निवेदना—स्त्री० निवेदन, अर्ज़।
निवेदित—वि० अर्पित। निवेदन किया हुआ।
निवेरना—सक्रि०निबटाना। अलग करना। निर्णय करना। वसूल करना।
निवेरा—वि० चुना हुआ। नया। [प्रवेश। विवाह।
निवेश—पु० डेरा, घर।
निवेष्ट—पु०सामवेद का मंत्र। किसी वस्तु के ढकने का कपड़ा।
निशक—वि० निडर।
निश—स्त्री० रात।
निशम्य—क्रि० वि० सुनकर।
निशस्त—स्त्री० (फ़ा०) बैठक।
निशांत—पु० रात्रि का अंत। घर। वि० बहुत शांत।
निशा—स्त्री०रात्रि। हलदी।
निशाकर—पु० चन्द्रमा।
निशाख़ातिर—स्त्री० (अ०) तसल्ला।
निशागम—पु० संध्याकाल।
निशाचर७—पु० राक्षस।
निशाटन—पु० उल्लू। राक्षस।
निशात—स्त्री० (अ०) आनंद, ख़ुशी। सुख भाग।
निशान—पु० (फ़ा०) चिह्न।
निशानची—पु० (फ़ा०) झंडा लेकर चलने वाला।
निशानदेही—स्त्री० (फ़ा०) पहचनवाने की क्रिया।
निशानाथ, निशापति—पु० चंद्रमा।
निशाना—पु० (फ़ा०) लक्ष्य।
निशाना-अंदाज़—पु०(फ़ा०) अचूक निशाना लगाने वाला।
निशानी—स्त्री० (फ़ा०) निशान। यादगार। [कपूर।
निशापति—पु० चन्द्रमा।
निशामणि—पु० चन्द्रमा।
निशामुख—पु० संध्याकाल।
निशास्ता—पु० (फ़ा०) गेहूँ का सत।
निशि—स्त्री० रात।
निशिकर—पु० चंद्रमा।
निशिचर—पु० राक्षस।
निशित—वि०तेज़, पैना।
निशिदिन, निशिवासर—क्रि०वि०रात दिन, सदा।
निशिनायक—पु० चन्द्रमा।
निशिपाल—पु० चन्द्रमा।
निशीथ—पु० आधी रात। रात्रि।
निशीथिनी—स्त्री० रात।
निशीद—पु० (फ़ा०) संगीत का शब्द।
निशुंभ—पु०वध।एक राक्षस।
निशेश—पु० चन्द्रमा।
निशोत्सर्ग—पु० प्रातःकाल।
निश्चय—पु० निर्णय। प्रतिज्ञा। [ठीक।
निश्चयात्मक—वि० ठीक-
निश्चल—वि० अटल।
निश्चित३—वि० बेफ़िक्र।
निश्चित—वि० निर्णीत। पक्का।
निश्चेतन—वि० चेतना-रहित। [रहित।
निश्चेष्ट—वि०बेहोश। चेष्टा-
निश्छल—वि० छल-रहित।
निश्रेणि—स्त्री० काठ की सीढ़ी।
निश्रेयस—पु० मोक्ष।
निश्वास—पु० साँस।
निश्शंक—वि० निडर।
निश्शेष—वि० जिसमें कुछ भी न बचा हो, समाप्त।
निषंगन—पु० तरकश।
निषंगी—पु० धनुषबाण धारण करने वाला।
निषण्ण—वि०दुःखी। बैठा-हुआ।
निषद्या—स्त्री० बाज़ार।
निषद्वर—पु० कीचड़, खोदा।
निषध—पु० प्राचीन कालीन एक देश।
निषाद—पु० एक प्राचीन जाति। वीणा या कंठ से उत्पन्न होने वाला स्वर। चांडाल।
निषादी—पु० महावत।
निषिद्ध—वि० ख़राब।
निषूदन—पु० मारना।
निषेध१२—पु० मनाही।
निषेधित—वि० वर्जित।
निष्कंटक—वि० बाधाहीन।
निष्क—पु० प्राचीन सुवर्ण-मुद्रा। एक सौ आठ रत्ती सोना। गले का एक गहना।
निष्कपट३—वि० छलहीन।
निष्करुण—वि० करुणारहित।
निष्कर्म—वि० कर्महीन।

निष्कर्ष—पु०निश्चय। सार।
निष्कलंक—वि० निर्दोष।
निष्कल—वि० कला-रहित। नपुंसक। वृद्ध।
निष्कला—स्त्री०रजोहीन स्त्री।
निष्काम३—वि० निःस्वार्थ।
निष्कामी—पु० जो निष्काम हो।
निष्कारण—वि० व्यर्थ।
निष्काशन, निष्कासन—पु० निकालना। बहिष्कार।
निष्काशित—वि०बहिष्कृत।
निष्किचन—वि० दरिद्र।
निष्कुट—पु० घर के पास का बगीचा।
निष्कुटी—स्त्री०बड़ी इलायची।
निष्कृति—स्त्री०प्रायश्चित्त। छुटकारा। [शक्ति।
निष्क्रम—पु० बुद्धि की-
निष्क्रमण—पु० बाहर-निकलना।
निष्क्रय—पु० वेतन। दाम। बदला। [हुआ।
निष्क्रांत—वि०बाहर निकला-
निष्क्रांति—स्त्री० गमन।
निष्क्रिय३—वि० निश्चेष्ट।
निष्ठ—वि० स्थित। तत्पर।
निष्ठा—स्त्री० स्थिति। विश्वास समाप्ति।
निष्ठावान्१३—वि० श्रद्धालु।
निष्ठीवन—पु० थूक।
निष्ठुर३-४—वि० कठिन। निर्दय। [निपुण।
निष्ण, निष्णात—वि०
निष्पंद३—वि० कंपनहीन।
निष्पक्व—वि० अच्छी तरह पकाया हुआ।
निष्पक्ष३—वि० पक्षपात-रहित।
निष्पत्ति—स्त्री० समाप्ति। निश्चय।
निष्पद—पु० बिना पहिए की सवारी।
निष्पन्न—वि० जो पूरा हो-चुका हो। संपादित।
निष्पादक१४—पु० निश्चय करने वाला। निर्वाह करने वाला। अंत करने वाला।
निष्पाप—वि० पापरहित।
निष्पीड़न—पु० निचोड़ना।
निष्प्रतिभ—वि० प्रतिभा शून्य, मूर्ख।
निष्प्रभ—वि० तेजहीन।
निष्प्रयोजन—वि० निरर्थक।
निष्प्रवाणि—पु० कोरा वस्त्र।
निष्प्रेही५—वि०इच्छारहित।
निष्फल—वि० व्यर्थ।
निसंक—वि० शंकारहित।
निसँठ—वि० ग़रीब। [दुष्ट।
निसंस—वि० मृतप्राय।
निसक—वि० दुर्बल।
निसत—वि० असत्य।
निसद्योस—क्रि० वि० रात-दिन। [संबन्ध।
निसबत—स्त्री० (अ०)
निसबती—वि० (अ०) सम्बन्धी।
निसबतीभाई—पु० (अ०) बहनोई। साला।
निसरना—अक्रि० निकलना।
निसराना—सक्रि०निकालना।
निसर्ग—पु० स्वभाव। रूप। त्याग। स्वर्ग। सृष्टि।
निसवाँ—स्त्री० (अ०) बहु० 'निसा' का। स्त्रियाँ।
निसवादला—वि० स्वाद-रहित।
निसवासर—क्रि० वि० रात-दिन, हमेशा।
निसस—वि० बेसुध।
निसाँक—वि० निःशंक।
निसाँस, निसाँसा—पु० लंबी-साँस।
निसा—स्त्री०संतोष। रात्रि।
निसान—पु० चिह्न। झण्डा। नगाड़ा।
निसानन—पु०संध्या-समय।
निसाब—पु० (अ०) मूलधन, पूँजी।
निसार—पु० (अ०) निछावर। वि० सारहीन।
निसारना—सक्रि०निकालना।
निसि—स्त्री० रात्रि।
निसिखा—वि० बिना सीखा।
निसित—वि० तीव्र, तेज़।
निसिनिसि—स्त्री० आधी-रात।
निसियर—पु० चन्द्रमा।
निसीठा७—वि० थोथा। नीरस।
निसीथ—पु० मध्यरात्रि।
निसूदक—वि० हिंसक।
निसूदन—पु० हिंसा।
निसृत—वि० निकला हुआ।
निसृष्ट—वि० छोड़ा हुआ।
निसेनी—स्त्री० सीढ़ी।
निसोग, निसोच—वि०शोक-रहित।

निसोत–वि० शुद्ध, ख़ालिस।
निस्केवल—वि० निर्मल।
निस्तंद्र—वि० तंद्रा या आलस्य-रहित।
निस्तत्व—वि० सारहीन।
निस्तब्ध३—वि० निश्चेष्ट। ख़ामोश।
निस्तरण—पु० निस्तार।
निस्तरना—अक्रि० उद्धार-पाना।
निस्तर्हण—पु० मारना।
निस्तल—वि० गोल।
निस्तार—पु० उद्धार, छुटकारा।
निस्तारण–पु० पार करना।
निस्तारना–सक्रि० छुड़ाना। उद्धार करना। [चुका हो।
निस्तीर्ण—वि०जो पार कर-
निस्तेज—वि० प्रभाहीन।
निस्तोक—पु० निपटारा।
निस्त्रप—पु० निर्लज्ज।
निस्त्रिश—पु० तलवार।
निस्पंद, निस्पंदन—पु० कम्पशून्यता। निश्चेष्टता। स्थिरता। हिलना। चलना। नीचे-ऊपर उठना।
निस्पादक–पु०कार्य-सम्पन्न-करने वाला। संचालक।
निस्पृह३—वि०इच्छारहित।
निस्प्रेही—वि०इच्छारहित।
निस्फ़—वि० (अ०)आधा।
निस्व—वि० निर्धन।
निस्वन, निस्वान–पु०शब्द।
निस्वास—पु० ठंढी साँस।
निस्संकोच–वि०संकोच-हीन।
निस्संदेह—क्रि० वि० संदेह-रहित।
निस्सत्व—वि० सारहीन।
निस्सरण—पु० निकास। बहाव।
निस्सहाय—वि० असहाय।
निस्सार—वि० साररहित।
निस्सीम—वि० असीम।
निस्वार्थ—वि०स्वार्थरहित।
निहंग, निहंगम—वि० अकेला। निर्लज्ज। नग्न। पु०(फ़ा०) मड़ियाल, मगर।
निहंगलाडला—वि० दरि-द्रता में मस्त। लाड़ से उद्दंड। [करने वाला।
निहंता१०—वि० नाश
निहकर्मी५—वि०कर्मरहित।
निहकाम–वि०कामनाहीन।
निहचै–पु०निश्चय। [नष्ट।
निहत—वि० फेंका हुआ।
निहत्था—वि० शस्त्रहीन। निर्धन।
निहनन—पु० मारना।
निहनना—सक्रि० मारना।
निहाँ—वि० (फ़ा०) गुप्त।
निहाई—स्त्री० वह लोहा जिस पर धातु को रख कर हथौड़े से पीटते है।
निहाद—स्त्री० (फ़ा०) जड़, असल, बुनियाद। मन। स्वभाव।
निहायत–वि०(अ०) अत्यंत।
निहार—पु०कुहरा। ओस। पाला। वि० निहाल।
निहारना—सक्रि० देखना।
निहाल—वि०(फ़ा०)संतुष्ट। प्रसन्न। पु० तोषक, गद्दा। शिकार। नवीन वृक्ष।
निहालचा—पु० (फ़ा०) गद्दा। [रज़ाई।
निहाली—स्त्री० (फ़ा०)
निहिंसन—पु० मारना।
निहित—वि० स्थापित।
निहीन—वि० नीच, पामर।
निहुरना९—अक्रि०झुकना।
निहुराई—स्त्री० निष्ठुरता।
निहोर—पु०कृपा। विनती। अहसान।
निहोरना—सक्रि० प्रार्थना-करना।
निहोरा—पु० अनुरोध। उपकार। भरोसा। क्रि० वि० वास्ते।
निह्नुति—स्त्री० छिपाव।
नींदना—स्त्री० सोना। निंदा।
नींदना—सक्रि०निंदा करना।
नींदर—स्त्री० निद्रा।
नीक, नीका७—वि०अच्छा।
नीके—क्रि० वि० अच्छी-तरह। [उत्तम।
नीको—वि० (फ़ा०) अच्छा,
निकोई—स्त्री० (फ़ा०) उत्तमता।
नीगने—वि० बेगिनती।
नीच३—वि० क्षुद्र। बौना।
नीचगा—स्त्री० नदी।
नीचट—पु० मज़बूत।
नीचा७—वि०गहरा। झुका-हुआ। क्षुद्र।

नोट—'निह' शब्द 'नहीं' के अर्थ में आता है। जैसे 'निहकाम'।

नीचाशय—वि० क्षुद्र।
नीचे—क्रि० वि० नीचे की ओर। कम।
नीज़—अव्य० (फ़ा०) भी।
नीजन—पु० निर्जन-स्थान।
नीझर—पु० झरना।
नीठ—क्रि०वि० कठिनाई से।
नीठा—वि० बुरा।
नीठि—स्त्री० अरुचि। क्रि० वि० कठिनता से।
नीड़—पु० घोंसला।
नीड़क, नीड़ज—पु० पक्षी।
नीड़ोद्भव—पु० पक्षी।
नीत—वि० गृहीत।
नीति—स्त्री० सदाचार। उपाय। क़ानून।
नीतिज्ञ—वि० नीति का ज्ञाता।
नीतिमान्१३—वि० नीति का पालन करने वाला।
नीतिविज्ञान—पु० नीतिशास्त्र।
नीदना—सक्रि० निंदा करना।
नीधना—वि० निर्धन।
नीध्र—पु० बरौनी।
नीप—पु० कदम्ब वृक्ष।
नीपजना—अक्रि० उपजना।
नीपना—सक्रि० लीपना।
नीवी—स्त्री० नारी।
नीबू—पु० एक फल।
नीम—पु० एक वृक्ष। वि० (फ़ा०) आधा।
नीम-कश—वि० (फ़ा०) जो आधा खींचा गया हो।
नीमखुर्दा—वि० (फ़ा०) जूठा।
नीमचा—पु० (फ़ा०) एक प्रकार की छोटी तलवार।
नीमन—वि० नीरोग। दुरुस्त। अच्छा।
नीम-निगाह—स्त्री० (फ़ा०) तिरछी नज़र।
नीम-बाज़—वि० (फ़ा०) आधा खुला आधा बन्द।
नीम-बिसमिल—वि० (फ़ा०) अधमरा। घायल।
नीमरज़ा—स्त्री० (फ़ा०) थोड़ी रज़ामंदी।
नीम राज़ी—वि० (फ़ा०) आधा राज़ी। [पहर।
नीमरोज़—पु० (फ़ा०) दो-
नीमा—पु० (फ़ा०) एक पहनावा, बुरक़ा।
नीयत—स्त्री० (अ०) भाव, मंशा।
नीयर—क्रि० वि० निकट।
नीर—पु० पानी, जल।
नीरज—पु० कमल। मोती।
नीरद—पु० बादल। वि० दंतहीन।
नीरधि—पु० समुद्र।
नीरनिधि—पु० समुद्र।
नीरस—वि० सूखा। फीका।
नीरांजन—पु० आरती।
नीरा—क्रि० वि० निकट।
नीराजना—स्त्री० पूजा।
नीरुज, नीरोग-वि० तंदुरुस्त।
नीरूप—वि० बिना रूप का।
नील—वि० नीले रंग का। सौ खरब। पु० नीला रंग। कलंक। [शिव।
नीलकंठ—पु० एक पक्षी।
नीलकांत—पु० एक चिड़िया। नीलम।
नीलगाय-स्त्री० गाय के बराबर का नीलापन लिये हुए एक हिरन। [कंठ।
नीलग्रीव—पु० शिव। नील-
नीलम—पु० (फ़ा०) नील-मणि।
नीललोहित—वि० बैंगनी। पु० शिवजी।
नीलांजन—पु० नीला थोथा।
नीलांबर—पु० नील-वस्त्र। बलराम। शनि।
नीलांबुज—पु० नील कमल।
नील—वि० गहरा आसमानी।
नीलाम—पु० (फ़ा०) बोली बोल कर बेचने की क्रिया।
नीलिनी, नीली—स्त्री० नील।
नीलिमा—स्त्री० नीलापन।
नीलोत्पल—पु० नील-कमल।
नीलोफ़र—पु० (फ़ा०) नील-कमल।
नीवँ, नीव—स्त्री० आधार। जड़।
नीवार—पु० धान विशेष।
नीवि—स्त्री० इजारबंद। पूँजी।
नीवृत्—पु० राजाओं का बसाया हुआ देश।
नीशार—पु० तंबू, शामियाना।
नीहार—पु० कुहरा, पाला।
नीहारिका—स्त्री० आकाश में धुएँ की तरह फैला हुआ मन्द प्रकाश।
नुकता—पु० (फ़ा०) बारीक बात। चुटकुला। दोष।

नुक़ता—पु० (फ़ा०) बिंदु। दोष।
नुक़ताचीनी—स्त्री० (फ़ा०) दोष निकालना।
नुक़ता-परदाज़—वि० (अ०) सुवक्ता।
नुक़ताशिनास—वि० (अ० फ़ा०) बुद्धिमान्।
नुक़ती—स्त्री० लड्डू बनाने की बुँदिया।
नुक़रा—पु० (अ०) चाँदी।
नुक़सान—पु० (अ०) हानि, घाटा।
नुक़सानदेह—वि० (अ० फ़ा०) हानिकर।
नुक़सान-रसानी—स्त्री० (अ० फ़ा०) हानि पहुँचाना।
नुकाना—अक्रि० छिपना। सक्रि० छिपाना।
नुकीला७—वि० (फ़ा०) नोंकदार।
नुक्कड़—पु० नोंक।
नुक्स—पु० (फ़ा०) दोष।
नुचना—अक्रि० नोचा जाना।
नुचवाना—सक्रि० खरोंचवाना।
नुजूम—पु० (अ०) ज्योतिःशास्त्र। तारे।
नुजूमी—पु० (अ०) ज्योतिषी।
नुति—स्त्री० स्तुति, प्रणाम।
नुत्फ़ा—पु० (अ०) वीर्य।
नुनखराह—वि० नमकीन।
नुनेरा—पु० लोनिया।
नुमा—वि० (फ़ा०) दिखाई पड़ने वाला।
नुमाइंदा—पु० (फ़ा०) प्रतिनिधि।
नुमाइश—स्त्री० (फ़ा०) प्रदर्शिनी, दिखावा।
नुमाइशी—वि० (फ़ा०) दिखाऊ। [लाना।
नुमाई—स्त्री० (फ़ा०) दिख-
नुमायाँ—वि० (फ़ा०) ज़ाहिर।
नुशूर—पु० (अ०) क़यामत के दिन फिर से सब मुर्दों का जी पड़ना।
नुसख़ा—पु० (अ०) रोगी के लिए लिखा हुआ दवा तथा सेवन-विधि का पुरज़ा।
नूत, नूतन—वि० नया अपूर्व। [वि० न्यून।
नून—पु० नमक। एक लता।
नूद—पु० शहतूत।
नूनेरी—स्त्री० लोनिया जाति की स्त्री।
नूपुर—पु० पैंजनी। [शोभा।
नूर—पु० (अ०) ज्योति।
नूर उल-ऐन—पु० (अ०) नेत्र-ज्योति। पुत्र।
नूर-बाफ़—पु० (अ० फ़ा०) जुलाहा।
नूरा—वि० तेजस्वी।
नूरानी—वि० (अ०) प्रकाशवाला।
नूर-चश्म—पु० (अ० फ़ा०) नेत्रों का प्रकाश। पुत्र।
नूह—पु० (अ०) एक पैग़म्बर।
वि० रोने वाला।
नृग—पु० एक दानी राजा।
नृतना—अक्रि० नाचना।
नृत्य—पु० नाच।
नृतकी—स्त्री० नाचने वाली।
नृत्यशाला—स्त्री० नाचघर।
नृदेव—पु० राजा। [ब्राह्मण।
नृप, नृपति—पु० राजा।
नृपलक्ष्म—पु० राजा का छत्र।
नृपसभ—पु० राज-दरबार।
नृपासन—पु० राजगद्दी।
नृयज्ञ—पु० अतिथि-सेवा।
नृशंस३—वि० क्रूर, निर्दय।
नृसिंह, नृहरि—पु० विष्णु का चौथा अवतार।
नेईं, नेई—स्त्री० नाँव।
नेउतहरि—पु० निमंत्रित-व्यक्ति। [थोड़ा।
नेक—वि० (फ़ा०) भला।
नेकक़दम—वि० (फ़ा० अ०) शुभ आगमन वाला।
नेकचलन२—वि० (फ़ा०) सदाचारी।
नेकनाम२—वि० (फ़ा०) अच्छे नाम वाला।
नेक-निहाद—वि० (फ़ा०) सुशील।
नेकनीयत—वि० (फ़ा० अ०) अच्छे विचार का।
नेकबख़्त—वि० (फ़ा०) खुशनसीब। [सुन्दर।
नेक-मंज़र—वि० (अ० फ़ा०)
नेकलेस—पु० (अं०) गले का हार।

नोट—समास में 'नृ' शब्द 'नर' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। जैसे 'नृसिंह'।

नेकी—स्त्री० (फ़ा०) भलाई, उपकार।
नेग—पु० पुरस्कार। दस्तूर।
नेगचार—पु० विवाहादि अवसरों पर दिया जाने वाला-दस्तूर।
नेगटी—पु० नेग पाने वाला।
नेगी—पु० नेग पाने वाला।
नेगीजोगी—पु० दे० 'नेगी'।
नेचर—पु० (अं०) प्रकृति। स्वभाव।
नेजन—पु० शोधन।
नेज़ा, नेजाल—पु० भाला। निशान।
नेज़ा-बरदार२—वि० (फ़ा०) भाला रखने वाला।
नेटा—पु० नाक का मैल।
नेठमी—वि० स्थिर। निश्चित
नेड़े—क्रि० वि० निकट।
नेत—पु० निश्चय। मथानी की रस्सी। स्त्री० नींव। रेशमी चादर।
नेतक—पु० चुनरी।
नेतली—स्त्री० एक प्रकार की पतली डोरी।
नेता१०—पु० नायक। स्वामी।
नेति—स्त्री० नीयत। अव्य० अंत नहीं।
नेती—स्त्री० मथानी की रस्सी।
नेतीधोती—स्त्री० आँत साफ़ करने की एक प्रक्रिया।
नेत्र—पु० आँख। मथानी की रस्सी। रथ।
नेत्रज, नेत्रजल—पु० आँसू।
नेत्रयोनि—पु० चंद्रमा। इन्द्र। [बहना।
नेत्रस्राव—पु० नेत्रों से जल-
नेत्राम्बु—पु० आँसू।
नेत्री—स्त्री० पथ-प्रदर्शिका, आगे चलने वाली।
नेनुआँ—पु० घिया तरोई।
नेपचून—पु० एक ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा करता है।
नेपथ्य—पु० सजावट नाटक आदि मे परदे के भीतर-वेश-रचना का स्थान।
नेपाली—वि० नेपाल का निवासी।
नेपुर—पु० दे० 'नूपुर'।
नेपेनेपे—क्रि० वि० धीरे धीरे।
नेफ़ा—पु० (फ़ा०) पाजामा आदि में नारा डालने का घेरा।
नेब—पु० सहायक। मंत्री।
नेम—पु० नियम।
नेमत—स्त्री० दौलत, वैभव। स्वादिष्ट-भोजन।
नेमि—स्त्री० पहिये का घेरा। कुएँ की जगत।
नेमी—वि० नियम का पालन करने वाला।
नेराना—अक्रि० पास पहुँचना
नेरे—क्रि० वि० निकट।
नेवग—पु० नेम।
नेवज—पु० नैवेद्य, प्रसाद।
नेवतना—सक्रि० न्यौता-देना।
नेवतहरी—पु० न्योंधारी।
नेवता—पु० निमन्त्रण।
नेवर, नेवल—पु० नूपुर।
नेवरना—अक्रि० समाप्त होना।
नेवला—पु० एक जन्तु।
नेवाज—वि० कृपालु।
नेवारी—स्त्री० एक पौधा।
नेश—पु० (फ़ा०) नोंक। काँटा। ज़हरीले जानवरों का डंक। [ऊख।
नेशकर—पु० (फ़ा०) गन्ना,
नेशनल—वि० (अं०) राष्ट्रीय।
नेसक वि० तनिक। क्रि० वि० थोड़ा, तनिक।
नेस्तर—वि० (फ़ा०) जो न हो। [नष्ट।
नेस्तनाबूद—वि० बिल्कुल-
नेस्ती—स्त्री० (फ़ा०) आलस्य। नाश। न होना।
नेहन—पु० स्नेह।
नै—स्त्री० नीति। नदी। हुक्के की निगाली।
नैऋत, नैऋत्य—पु० राक्षस। दक्षिण, पश्चिम का कोना।
नैकट्य—पु० निकटता।
नैगम—पु० व्यापारी।
नैच—पु० (फ़ा०) हुक्के की निगाली।
नैचाबंद—पु० (फ़ा०) नैचा बनाने वाला।
नैचिकी—स्त्री० अच्छी गाय।
नैतिक—वि० नीति-संबन्धी। नीति-युक्त। [संबंधत्व।
नैतिकता—स्त्री० नीति-
नैत्य—वि० नित्य का। पु० नित्य का कर्म।
नैन—पु० नेत्र।
नैनसुख—पु० वस्त्र विशेष।
नैनू—पु० मक्खन।

नैपुण्य—पु० निपुणता ।
नैमित्तिक—वि० जो किसी निमित्त से किया जाय ।
नैमिषारण्य—पु० ऋषियों के रहने का एक वन ।
नैमेय—पु० अदल-बदल ।
नैयर—पु० (अ०) बहुत चमकने वाला सितारा ।
नैयरे-असग़र—पु० (अ०) चन्द्रमा । [सूर्य्य ।
नैयरे-आज़म—पु० (अ०)
नैया—स्त्री० नाव ।
नैयायिक—वि० न्याय शास्त्र का ज्ञाता ।
नैरंगर—पु० (फ़ा०) छल, कपट । जादू । विलक्षण-चीज़ ।
नैरंगसाज़—वि० (फ़ा०) जादूगर । धूर्त्त ।
नैर—पु० नगर ।
नैराश्य—पु० निराशा ।
नैर्ऋति-स्त्री० दक्षिण-पश्चिम का कोना ।
नैर्मल्य—पु० निर्मलता ।
नैवेद्य—पु० देव-प्रसाद ।
नैश—वि० निशि-सबंधी । रात का ।
नैषध—वि० निषध देश का । पु० राजा नल ।
नैष्कर्म्य—पु० काम में लिप्त न होना ।
नैष्किक—पु० ख़जानची ।
नैष्ठिक७—वि० निष्ठावान् ।
नैष्ठर्य—पु० क्रूरता ।
नैसर्गिक—वि० स्वाभाविक ।
नैसा—वि० बुरा ।
नैसकि, नैसुक—वि० थोडा ।
नैस्त्रिशक—पु० तलवार-बाँधने वाला ।
नैहर—पु० पीहर ।
नोई, नोईनी—स्त्री० दुहते समय गाय के पिछले पाँव बाँधने की रस्सी ।
नोंक—स्त्री० (फ़ा०) छोर, सिरा । अनी ।
नोंकझोंक—स्त्री० ठाट बाट । छेड़-छाड़, ताना ।
नोंकदार—वि० (फ़ा०) नुकीला ।
नोंकना—अक्रि० ललचाना ।
नोखा७—वि० अनोखा ।
नोच खसोट—स्त्री० छीना-झपटा । [खरोंचना ।
नोचना—सक्रि० उखाड़ना ।
नोचानाची—स्त्री० छीना-झपटी ।
नोचू—पु० नोच-खसोट-करने वाला ।
नोट—पु० लिखने का काम । टिप्पणी । कागज़ी-सिक्का ।
नोटबुक—स्त्री० (अ०) याद-दाश्त लिखने की छोटी कापी । [सूचना ।
नोटिस—स्त्री० इत्तिला,
नोदन—पु० प्रेरणा ।
नोन—पु० नमक ।
नोनचा—पु० नमक मे डाली गयी आम की फाँकें ।
नोना७—पु० लोनी मिट्टी । वि० सुन्दर ।
नोनाचमारी—स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी ।
नोनिया—स्त्री० लोनी मिट्टी से नमक निकालने वाली एक जाति ।
नोनी—स्त्री० नोनिया भाजी। वि० स्त्री० सुन्दर ।
नोर—पु० आँसू । वि० नया ।
नोवना—सक्रि० दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बांधना ।
नोशर—वि० (फ़ा०) पीने वाला । स्वादिष्ट, प्रिय ।
नोश-दारू—स्त्री० (फ़ा०) ज़हरमोहरा । शराब ।
नोहर—वि० अद्भुत । दुर्लभ ।
नौ—पु० जहाज़ । नौका । वि० (फ़ा०) नया । स्त्री० भाँति रंग-ढंग । जाति ।
नौकर—पु० (फ़ा०) सेवक ।
नौकरशाही—स्त्री० (फ़ा०) बड़े-बड़े राज कर्मचारियों के हाथ में रहनेवाली शासन-प्रणाली ।
नौकराना—पु० दस्तूरी ।
नौकरानी—स्त्री० मज़दूरनी ।
नौकरी—स्त्री० (फ़ा०) सेवा । वैतनिक-कार्य ।
नौकरी-पेशा—पु० (फ़ा०) जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो ।
नौका—स्त्री० नाव ।
नौकादंड—पु० पतवार ।
नौख़ास्ता—वि० (फ़ा०) नौजवान [एक गहना ।
नौगिरही—स्त्री० हाथ का-
नौ-चंदा—पु० (फ़ा०) शुक्ल पक्ष की द्वितीया ।
नौचर—पु० मल्लाह ।

नौछावर—स्त्री० दे० 'निछा-वर'। [न सही।
नौज—अव्य० ईश्वर न करे।
नौजवान२—वि० (फ़ा०) नवयुवक।
नौजा—पु० बादाम।
नौजी—स्त्री० लीची।
नौतन—वि० बिल्कुल नया। पु० नम्रता।
नौतम—वि० बिल्कुल नया।
नौता—वि० नया। पु० न्यौता। [गहना।
नौनगा—पु० बाँह का एक-
नौपती—पु० मल्लाह।
नौबढ़—वि० हाल में बढ़ा हुआ।
नौबत—स्त्री० (फ़ा०) हालत। शहनाई, नगाड़ा आदि बाजा। बारी। वैभव।
नौबतख़ाना—पु० (फ़ा०) नौबत बजने का स्थान जो फाटक के ऊपर बना होता है।
नौबत-ब नौबत—क्रि० वि० (अ०) एक के बाद एक।
नौबती—पु० (फ़ा०) नौबत-बजाने वाला। पहरेदार।
नौ-बहार—स्त्री० (फ़ा०) बसन्त का आगमन।
नौमि—सक्रि० नमस्कार-करता हूँ, नमामि।
नौ-मुसलिम—वि० (फ़ा० अ०) जो हाल में मुसल-मान बना हो।
नौरतन—पु० नौ नग का-एक आभूषण।
नौरोज़—पु० (फ़ा०) पार-सियों में वर्ष का पहला दिन। त्योहार।
नौल—वि० दे० 'नवल'।
नौलखा—वि० नौ लाख मूल्य का।
नौशा—पु० (फ़ा०) दूल्हा।
नौसत—पु० सोलह-शृंगार।
नौसरा—पु० नौ लड़ का हार।
नौसादर—पु० (फ़ा०) एक तीक्ष्ण-नमक।
नौसार—पु० लोनी मिट्टी से नमक बनाने का स्थान।
नौसिखिया—वि० अनाड़ी।
नौसेना—स्त्री० जलसेना।
नौहा—पु० (अ०) रुदन, रोना-पीटना।
न्यक्ष—वि० अधम, नीच।
न्यग्रोध—पु० वटवृक्ष।
न्यग्रोधी—स्त्री० मूली।
न्यस्त—वि० रक्खा हुआ। फेंका हुआ।
न्याति—स्त्री० जाति।
न्याद—पु० भोजन।
न्याना—वि० अबोध।
न्याय१२—पु० इन्साफ़। नीति।
न्यायकर्त्ता१०—पु० न्याय करने वाला। [अनुसार।
न्यायतः—क्रि० वि० न्याय के-
न्यायपरता—स्त्री० न्याय-शीलता।
न्यायवान्१३—पु० न्यायी।
न्याय-शुल्क—पु० कोर्टफ़ीस।
न्याय-संगत—वि० उचित।
न्यायाधीश—पु० न्यायकर्त्ता, जज।
न्यायालय—पु० कचहरी।
न्यायी५—पु० न्याय पर चलने वाला।
न्याय्य—वि० उचित, न्याय-युक्त। [क्षण।
न्यारा७—वि० अलग। विल-
न्यारे—क्रि० वि० अलग।
न्याव—पु० न्याय, इन्साफ़।
न्यास—पु० रखना। अमानत।
न्युब्ज—वि० कुबड़ा। पु० कमरख। कुश।
न्यूज़—पु० (अं०) समाचार।
न्यून३—वि० कम। नीच।
न्यूनतम—वि० कम से कम।
न्योछावर—स्त्री० दे० 'निछा-वर'।
न्योजी—स्त्री० लीची।
न्योतना—सक्रि० निमंत्रित-करना।
न्योतहरी—पु० न्योथारी।
न्योता—पु० निमंत्रण।
न्योला—पु० नकुल।
न्यौरा—पु० न्योला।
न्वैनी—स्त्री० दूध दुहते समय गाय के पाँव में बाँधने की रस्सी।
न्हवाना—सक्रि० स्नान कराना।
न्हान—पु० स्नान।

२१—प

पंक—पु० कीचड़ ।
पंकचर-पु० (अं०) सूराख़ ।
पंकज—पु० कमल ।
पंकजयोनि—पु० ब्रह्मा ।
पंकजराग-पु०पद्मराग मणि ।
पंकजात—पु० कमल ।
पंकजासन—पु०ब्रह्मा ।
पंकरुह—पु० कमल ।
पंकिल—वि० कीचड़-युक्त।
पंक्ति—स्त्री० पाँत, क़तार ।
पंक्तिबद्ध—वि० श्रेणी-रूप ।
पंख—पु० पक्ष, पर ।
पँखड़ी, पँखुड़ी—स्त्री० पुष्पदल ।
पंखा—पु०बेना । [पँखड़ी ।
पँखिया—स्त्री०छोटा पंखा ।
पंखी—पु० पक्षी । स्त्री० छोटा बेना ।
पँखेरू—पु० पक्षी। [लँगड़ा।
पंग, पंगु, पंगुल—वि०
पंगत, पंगति—स्त्री० पाँत । मंडली ।
पंच—वि० पाँच। पु०पंचायत पंचायत का सदस्य। मध्यस्थ,
पंचक—पु०पाँच का समूह ।
पंचकन्या—स्त्री० कुंती, तारा, अहल्या, मंदोदरी और द्रौपदी-ये पाँच स्त्रियाँ ।
पंचकल्याण—पु० वह घोड़ा जिसके पाँचों अंग सफ़ेद हों।
पंचकोस-पु०पाँच कोस लंबी और चौड़ी काशी की भूमि ।
पंचकोसी—स्त्री० काशी की परिक्रमा ।

पंचगव्य—पु० गाय के दूध, दही, घृत,मूत्र और गोबर का संमिश्रण । [शंख ।
पंचजन्य—पु० श्रीकृष्ण का·
पंचतंत्र—पु० मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण-ये पाँच तंत्र ।
पंचतत्व—पु० पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि-ये पाँच तत्त्व ।
पंचतन्मात्र—पु०शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध—सांख्य में पाँच अतीन्द्रिय महाभूत ।
पंचता-स्त्री०,पंचत्व—पु० मृत्यु
पंचथु—पु० कोकिल ।
पंचदश—वि० पन्द्रह ।
पंचनद—पु० पंजाब देश ।
पंचनामा—पु० वह कागज़ जिस पर पंचों का फ़ैसला लिखा हो ।
पंचपात्र—पु० पाँच धातुओं का बना पूजा का पात्र ।
पंचप्राण—पु० प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान-ये पाँच वायु ।
पंचभूत—पु० पंचतत्व ।
पंचम७—वि० पाँचवाँ ।
पंचमुख—पु० शिवजी ।
पंचमुखी—पु० महादेव ।
पँचमेल—वि० पाँच प्रकार का
पँचरंग—वि० पाँच या अनेक रंग का ।
पंचरत्न—पु० हीरा, मोती, लाल, नीलम, और सोना ।

पँचलड़ी—स्त्री० पाँच लड़ों की माला ।
पंचवक्त्र—पु० शिवजी ।
पंचवटी—पु० दंडक वन में बनी राम की कुटी ।
पंचवाण—पु० कामदेव । कामदेव के पाँच वाण ।
पंचशर—पु० कामदेव ।
पंचसरा—पु० कामदेव ।
पंचहज़ारी—पु० पाँच हज़ार सैनिकों का स्वामी ।
पंचांग—पु०पत्रा । पाँच अंगों वाली वस्तु । परीक्षा का तिथि-पत्र ।
पंचानन—पु०शिव । सिंह ।
पंचामृत—पु० घी, चीनी, दूध, दही और शहद मिश्रित द्रव्य । [सभा ।
पंचायत—स्त्री० पंचों की·
पंचायतन—पु० पाँच देवों की गोष्ठी ।
पंचायती—वि०पंचायत का ।
पंचाल—पु० पंजाब देश ।
पंचालिका—स्त्री० गुड़िया। नर्तकी । [पद्यों का समूह ।
पंचाशिका—स्त्री० पचास·
पंचाली—स्त्री० द्रौपदी। पुतली।
पंचास्य—पु० पाँच मुँह वाला, शिवजी ।
पंछा—पु० फफोले से निकला हुआ पानी।
पंछाला—पु०फफोला, छाला
पंछी—पु० चिड़िया ।
पंज—वि० (फ़ा०) पाँच ।

पंजगाना—वि० (फ़ा०) पाँच-समय का।
पंजर—पु० ठठरी। पिंजड़ा।
पंजरगत—वि० पिंजड़े में बन्द
पंजरस्थ—वि० दुर्बल।
पँजरी—स्त्री० अर्थी।
पंजशंबा—पु० (फ़ा०) बृहस्पतिवार।
पंजा—पु० चंगुल। पाँचों उँगलियों का समूह।
पंजाबी—पु० पंजाब का निवासी। [वाला।
पंजारा—पु० सूत कातने-
पंजिका—स्त्री० पत्रा। रजिस्टर।
पंजी—स्त्री० (फ़ा०) पाँच बत्तियों वाली मशाल। रजिस्टर
पंजीकृत—वि० रजिस्टर्ड।
पँजीरी—स्त्री० चीनी मिश्रित धनिया आदि का भुना हुआ चूर्ण।
पंजुम—वि० (फ़ा) पाँचवाँ।
पंडल—वि० पीला। पु० देह।
पँड़वा७—पु० भैंस का बच्चा।
पंडा—पु० पुजारी। स्त्री० विवेक, बुद्धि। [मंडप।
पंडाल—पु० सभा का बड़ा-
पंडितंमन्य—वि० विद्याभिमानी।
पंडित४—वि० विद्वान्, चतुर।
पंडिताई—स्त्री० विद्वत्ता। चतुराई।
पंडिताऊ—वि० पंडितों जैसा
पंडु—वि० पीला सा।
पंडुक७—पु० कबूतर जैसा एक पक्षी।
पंडुर—पु० जल का साँप।
पँतीजना—सक्रि० रुई ओटना
पँतीजी—स्त्री० धुनकी।
पँत्यारी—स्त्री० क़तार।
पथ—पु० रास्ता। रीति।
पंथकी—पु० पथिक, यात्री।
पथान—पु० मार्ग।
पंथिक, पंथी—पु० पथिक।
पंपा—स्त्री० एक नदी।
पंपाल—वि० पापी।
पंपासर—पु० एक तालाब।
पँवर—पु० सामान। [लैना।
पँवरना—अक्रि० तैरना, थाह-
पँवरि—स्त्री० ड्योढ़ी।
पँवरिया—पु० ड्योढ़ीदार।
पँवरी—स्त्री० ड्योढ़ी। खड़ाऊँ
पँवाड़ा—पु० विस्तृत कथा।
पँवार—पु० मूँगा।
पँवारना—सक्रि० फेंकना।
पशाखा—स्त्री० दे० 'पनसाखा'।
पंसारी—पु० मसाला आदि बेचने वाला।
पंसासार—पु० चोपड़।
पंसेरी—स्त्री० पाँच सेर की तौल।
पइसार—पु० प्रवेश।
पउनार—पु० कमल का डंठल
पउनी—स्त्री० नाई, धोबी आदि प्रजा। [रोक।
पकड़—स्त्री० पकड़ने की क्रिया।
पकड़ना९—अक्रि० थामना, रोकना।
पकना९—अक्रि० पक्का होना।
पकवान—पु० घी में तला हुआ खाद्य-पदार्थ।
पका—वि० पकवान।
पकावन—पु० पकवान।
पकौड़ा७—पु० घी या तेल में तली हुई बड़ी।
पक्कड़—पु० जंगलियों का गाँव।
पक्का७—वि० पका हुआ। दृढ़।
पक्खर—वि० पक्का, दृढ़।
पक्व३—वि० पक्का, पका हुआ।
पक्वान्न—पु० पकवान।
पक्वाशय—पु० पेट में खाद्य-पदार्थ पचने का स्थान।
पक्ष—पु० पहलू। पंख। दल। सेना। पाख।
पक्षक१४—पु० मित्र, सहायक
पक्षति—स्त्री० पंख की जड़।
पक्षद्वार—पु० खिड़की।
पक्षधर—पु० चन्द्रमा।
पक्षपात—पु० तरफ़दारी।
पक्षपाती५—पु० तरफ़दार।
पक्षभाग—पु० हाथी का बग़ल या उसके पीछे का भाग।
पक्षांत—पु० अमावस्या। पूर्णमाशी।
पक्षांतर—पु० विपक्ष।
पक्षाघात—पु० लक़वा।
पक्षिणी—स्त्री० दो दिन के बीच की रात्रि।
पक्षिराज—पु० जटायु। गरुड़। [सहायक।
पक्षी५—पु० चिड़िया।
पक्षीय—वि० तरफ़दार।
पक्ष्म—पु० आँख की बरौनी पलक की कोर।
पक्ष्मिल—वि० बरौनी-युक्त।
पखंडी—पु० ढोंगी।
पख़—स्त्री० (फ़ा०) झगड़ा। अड़ङ्गा।

पखड़ी—स्त्री० पुष्प दल।
पखरना९—सक्रि० धोना।
पखरी—स्त्री०लोहे की झूल।
पखरैत—पु० लोहे की झूल-युक्त हाथी, घोड़ा आदि।
पखवारा—पु० दो सप्ताह।
पखाना—पु० कहावत।
पखारना—सक्रि० धोना।
पखाल—पु०मशक। धौंकनी-विशेष।
पखाली—पु० भिश्ती।
पखावज—पु०एक बाजा।
पखिया—वि०झगड़ालू।
पखुआ—पु०बग़ल,पार्श्व।
पखेरू—पु० पक्षी।
पखेव—पु०बच्चा पैदा होने पर गाय को दिया जाने वाला भोजन।
पखौआ—पु०पङ्ख, पर।
पखौटा—पु० डैना।
पखौरा—पु०कन्धे की हड्डी।
पग—पु०पैर। क़दम।
पगडंडी—स्त्री० मनुष्यों के चलने से बना पतला रास्ता।
पगड़ी—स्त्री० साफ़ा। प्रसिद्धि (अ०) गुडविल।
पगतरी—स्त्री० जूता।
पगदासी—स्त्री०जूता।
पगना९—अक्रि०रस में डूबना
पगनियाँ—स्त्री०जूता।
पगरा—पु०क़दम। सवेरा।
पगला—वि०बावला।
पगहा७—पु० बैल आदि के बाँधने की रस्सी।
पगा—पु०दुपट्टा। पगड़ी।
पगाना—सक्रि० पागने का काम अन्य से कराना।
पगार—स्त्री० वेतन।वह नदी जो पैदल पार की जाय।
पगाह—स्त्री० सवेरा। पग, डग।
पगिया—स्त्री० पगड़ी।
पगुराना—अक्रि० जुगाली-करना। [की मोटी रस्सी।
पघा—पु०पशुओं के बाँधने-
पघैया—पु०घूम घूम कर बेचने वाला। [बैठ जाना।
पचकना—अक्रि०दबना।
पचगुना—वि० पाँच गुना।
पचड़ा—पु० झंझट।
पचना९—अक्रि०हज़म होना।
पचपन—वि० पचास, ५५।
पचमेल—वि० मिश्रित।
पचरंग—पु० अबीर, बुक्का आदि ५ चीज़ें जिनसे चौक पूरा जाता है। वि० पांच रंगों का।
पचरङ्गा—वि०पाँच रङ्ग का।
पचलड़ी—स्त्री०पाँच लड़ की माला।
पचहत्तर—वि०७५।
पचहरा—वि०पाँच तह का।
पचानवे—वि०९५।
पचाना—सक्रि०हज़म करना। खपाना। पकाना।
पचास—वि०५०। [झुंड।
पचासा—पु० पचास का-
पचासी—वि०८५।
पचित—वि० जड़ा हुआ।
पचीसी—स्त्री० पचीस पद्यों का समूह।
पचौनी—स्त्री० पाचन। पेट के भीतर की वह थैली जिसमें भोजन रहता है।
पचौर, पचौली—पु० सर्दार, मुखिया।
पच्चर—पु० काठ का पेबंद।
पच्ची—स्त्री०जड़ाव। [काम।
पच्चीकारी—स्त्री० जड़ाव का-
पच्छ—पु० दे० 'पक्ष'।
पच्छपात—स्त्री० पक्षपात।
पच्छिम—पु०पश्चिम दिशा।
पच्छिनी—स्त्री० चिड़िया।
पछटी—स्त्री० तलवार।
पछड़ना—अक्रि० पीछे होना
पछताना—अक्रि० अफ़सोस-करना।
पछतावा—पु० पश्चात्ताप।
पछमन—क्रि० वि० पीछे।
पछरना—अक्रि० पीछे पाँव रखना, लौटना।
पछरा—पु० पछाड़।
पछलगा—वि० अनुयायी।
पछलत्त—पु० पिछली टाँगों से मारना।
पछवाँ—वि० पच्छिम का।
पछाँह—पु०पश्चिमी देश।
पछाड़—स्त्री० अचेत होकर गिरना।
पछाड़ना—सक्रि० गिरना। पटक पटक कर धोना।
पछाया—पु०पीछे का भाग।
पछावर—पु०पकवान विशेष
पछिआना—सक्रि० पीछे-चलना।
पछिउँ—पु० पश्चिम।
पछीत—स्त्री० पछवाड़ा।
पछुवा—पु० पैर का एक

गहना।
पछेला—पु० हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा।
पछेली—स्त्री० हाथ का कड़ा विशेष।
पछेवड़ा—पु० चद्दर।
पछोरना—सक्रि० फटकना।
पछ्यावर—स्त्री० एक पेय-पदार्थ। [झाया हुआ।
पज़मुरदा—वि० (फ़ा०) मुर-
पजरना—अक्रि० जलना।
पजारना—सक्रि० जलाना।
पजावा—पु० ईंटों का भट्टा।
पज़ीर—वि० (फ़ा०) क़बूल करने वाला।
पटबर—पु० रेशमी कपड़ा।
पट—पु० वस्त्र। किवाड़। पल्ला। वि० पेट के बल।
पटकन—स्त्री० पटकने की क्रिया। चपत।
पटकना—सक्रि० गिराना।
पटका—पु० कमरबंद।
पटकान—स्त्री० पछाड़।
पटकार—पु० जुलाहा।
पटकुटी—स्त्री० छोलदारी।
पटच्चर—पु० चिथड़ा।
पटझोल—पु० अंचल।
पटतर—पु० उपमा। समता।
पटतरना—सक्रि० उपमा देना।
पटतारना—सक्रि० शस्त्र सँभालना।
पटधारी—वि० वस्त्र धारण करने वाला। तोशाख़ाने का कर्मचारी।
पटन—पु० दे० 'पट्टन'।
पटना—अक्रि० भरना। तै-
होना। पु० धन।
पटनी—स्त्री० खेत के मुस्त-क़िल इंतज़ाम की प्रणाली।
पटपटाना—अक्रि० छटपटाना। 'पटपट' शब्द होना।
पटपर—वि० चौरस। उजाड़।
पटबंधक—पु० एक प्रकार का रेहन। [का इत्र।
पटवास—पु० कपड़े में लगाने-
पटबीजना—पु० खद्योत।
पटमंडप—पु० तम्बू, शामियाना।
पटराव—पु० तख़्ता।
पटरानी—स्त्री० प्रधान रानी।
पटरी—स्त्री० तख़्ती। फीता। पैदल चलने वालों के लिए सड़क के दोनों ओर के किनारे।
पटल—पु० पटरा। परत। पर्दा। तिलक। छप्पर। समूह।
पटलक—पु० पर्दा या आड़।
पटलता—स्त्री० आधिक्य।
पटलप्रांत—पु० बरोनी।
पटली—स्त्री० पंक्ति। काठ की पटरी। [वाला।
पटवा—पु० गहना गूँथने-
पटवाद्य—पु० प्राचीन कालीन एक बाजा।
पटवाना—सक्रि० पाटन-करना। तय कराना।
पटवारगरी—स्त्री० पटवारी का काम।
पटवारी—पु० भूमि का हिसाब रखने वाला गाँव का एक कर्मचारी। स्त्री०
वस्त्र पहनाने वाली दासी।
पटवास—पु० तम्बू। [चूर्ण।
पटवासक—पु० बुका, बुकनी।
पटवेश्म—पु० शामियाना।
पटसदन—पु० खेमा, तंबू।
पटसन—पु० पाट, जूट।
पटह—पु० नगाड़ा। नगाड़े का शब्द।
पटहार—पु० पटवा।
पटा—पु० पीढ़ा, चौकी। पट्टा। सौदा। एक शस्त्र।
पटाई—स्त्री० पाटने की क्रिया या मज़दूरी।
पटाक्षेप—पु० नाटक के अंत में पर्दे का गिरना।
पटाख़ा—पु० एक आतिशबाज़ी
पटाना—सक्रि० ढँकवाना। सींचना। अदा करना। सौदा तय करना।
पटापटी—स्त्री० फूलदार वस्त्र।
पटार—स्त्री० पेटी, पिटारी।
पटाव—पु० पाटन।
पटिया—स्त्री० तख़्ती। माँग।
पटी—स्त्री० कपड़े की पट्टी।
पटीमा—पु० छापने का पटरा
पटीर—पु० मेघ। कामदेव। चलनी। चन्दन।
पटोलना—अक्रि० उलटी-सीधी बातें कह कर सम-झाना।
पटुरु—वि० चतुर। [बन्द।
पटुका—पु० चादर। कमर-
पटुत्व—पु० निपुणता।
पटुली—स्त्री० चौकी, तख़्ती।
पटूका—पु० कमरबन्द।
पटेबाज़र—पु० पटा खेलने-

वाला। [वास।
पटेर—स्त्री० पानी की एक-
पटेल—पु०गाँव का मुखिया।
पटेला७—पु०पटी हुई नौका। सिल। किवाड़ बन्द करने का डंडा।
पटैत—पु० पटेबाज़।
पटैला—पु० किवाड़ बंद करने का ब्योंड़ा। [वस्त्र।
पटोर, पटोल—पु० रेशमी-
पटोरी—स्त्री० रेशमी साड़ी या चादर।
पटौनी—पु० मल्लाह।
पटौहाँ—पु० पटी हुई जगह।
पट्ट—पु० पीढ़ा, तख्ती। दुपट्टा। रेशम। वि० मुख्य।
पट्टक—पु०तख्ती। ताम्र-पत्र।
पट्टदेवी—स्त्री० पटरानी।
पट्टन—पु० बड़ा नगर।
पट्टमहिषी—स्त्री० पटरानी।
पट्टशिष्य—पु० प्रमुख शिष्य।
पट्टा—पु० भूमि आदि के उपयोग का अधिकारपत्र। सनद। पीढ़ा।
पट्टिका—स्त्री० काठ की तख्ती जिस पर प्रारंभ में बच्चों को लिखना सिखाया जाता है।
पट्टिश—पु० खाँड़ा विशेष।
पट्टी—स्त्री०पाटी। बहकावा। कपड़े का लंबा टुकड़ा। हिस्सा। काठ की तख्ती।
पट्टीदार२—पु० हिस्सेदार।
पट्टू—पु० एक ऊनी वस्त्र।
पट्ठमान४—वि० पढ़ने योग्य।
पट्ठा७—पु० जवान।
पट्ठापछाड़—वि० बलवती (स्त्री)।
पठन६—पु० पढ़ना।
पठनेटा—पु० पठान का लड़का।
पठवना९—सक्रि० भेजना।
पठान१-७—पु० मुसलमानों की एक जाति।
पठाना—सक्रि० भेजना।
पठावन—पु० दूत।
पठावनि—स्त्री० भेजने का कार्य तथा उसकी मज़दूरी।
पठित४—वि० पढ़ा हुआ।
पठिया—स्त्री०जवान औरत।
पठौना—सक्रि० भेजना।
पठ्यमान—वि०पढ़ने-योग्य।
पड़ता—पु० औसत। लागत।
पड़ताल—स्त्री० छानबीन, जाँच।
पड़तालना—सक्रि० जांचना।
पड़ती—स्त्री० वह भूमि जो कुछ काल से जोती न हो।
पड़ना—अक्रि० गिरना। लेटना। आराम करना।
पड़पड़ाना—सक्रि० जीभ पर जलन मालूम होना।
पड़ा—पु० भैंस का बच्छड़ा।
पड़ाव—पु०ठहरने का स्थान। ठहरना। [बच्चा।
पड़िया—स्त्री०भैंस का मादा-
पड़िवा—स्त्री० चांद्र मास की १ली तिथि। [पास के घर।
पड़ोसन—पु० घर के आस-
पढ़ंता७—वि० पढ़ने वाला।
पढ़ना—सक्रि० बाँचना।
पढ़वाना—सक्रि० बँचवाना।
पढ़ाई—स्त्री०पढ़ने का काम।
पढ़ाना—सक्रि०शिक्षा देना।
पण—पु० जुआ, बाज़ी लगाना, दाँव। प्रतिज्ञा। पैसा, प्राचीन काल का २० कौड़ियों का एक सिक्का। मज़दूरी।
पणक—पु० पैसा।
पणग्रंथि—स्त्री० बाज़ार।
पणन—पु० बेंचना।
पणव—पु० छोटा नगाड़ा।
पणसुंदरी—स्त्री० वेश्या।
पणायित, पणित—वि० स्तुति किया हुआ।
पणाशी५—वि० विनाशक।
पणितव्य—वि०बेचनेयोग्य।
पण्य—पु० बाज़ार। वि० बेचने योग्य।
पण्यदासी—स्त्री० लौंडी।
पण्यफल—पु० लाभ, मुनाफ़ा
पण्यवीथी—स्त्री० बाज़ार। दूकान।
पण्यशाला—स्त्री० दूकान।
पण्यस्त्री—स्त्री० वेश्या।
पण्या—स्त्री० मालकाँगनी।
पण्याजीव—पु० व्यापारी।
पतंग—पु० पक्षी। गुड्डी। पतिंगा। सूर्य। [ख़ोर।
पतंगछुरी—स्त्री० चुग़ल-
पतंगजा—स्त्री० यमुना।
पतंगम—पु० पक्षी। [मक्खी।
पतंगिका—स्त्री० छोटी मधु-
पतंचिका—स्त्री० धनुष की डोरी।

पतंजलि—पु० महाभाष्यकार एक ऋषि।
पतंग—पु० पक्षी।
पत—पु० प्रतिष्ठा। लाज। पु० पति।
पतझड़—पु० शिशिर ऋतु।
पतत्र८—पु० पंख।
पतत्रि, पतत्री—स्त्री० पक्षी।
पतन६—पु० अवनति। नाश। उड़ान। [वाला।
पतनशील४—वि० गिरने·
पतनोन्मुख—वि० जो गिरने की ओर अग्रसर हो।
पतपानी—पु०लाज, प्रतिष्ठा।
पतयालु—वि०पतित स्वभाव-वाला। [पतला।
पतर—पु० पत्ता। वि०
पतरी—स्त्री० पत्तल।
पतला७—वि० जो मोटा न हो
पतलून—पु० अँगरेज़ी ढंग का पायजामा।
पतलो—स्त्री० सरकंडा।
पतवर—क्रि० वि० पंक्ति-रूप में।
पतवार, पतवारी—स्त्री०नाव के पीछे का वह त्रिकोण भाग जिसके घुमाने से नाव घूम जाती है।
पतस—पु० चिड़िया।
पता—पु० ठिकाना। ख़बर। खोज। [का ढेर।
पताई—स्त्री०सूखी हुई पत्तियों-
पताका८—स्त्री० झंडा।
पताकिनी—स्त्री० सेना।
पताकी५—वि० निशान-बाँधने वाला रथ।
पतार—पु० पाताल।
पतावर—पु० सूखे पत्ते।
पतिंग—पु० फतिंगा।
पतिंवरा—स्त्री० स्वयं वर चुनने वाली।
पति—पु० स्वामी। मर्यादा।
पतिआना—सक्रि०विश्वास-करना।
पतिआर—पु० विश्वास।
पतिकामा—स्त्री० पति-प्राप्ति की इच्छा करने वाली स्त्री।
पतित३-४—वि० नीच, पापी।
पतितपावन७—वि० पतित को पवित्र करने वाला। पु० ईश्वर। [भाव।
पतित्व—पु० पति होने का-
पतिदेवा—स्त्री० पतिव्रता।
पतिया—स्त्री० चिट्ठी।
पतियाना—सक्रि० विश्वास-करना। [पु० विश्वास।
पतियार—वि० विश्वसनीय।
पतियारा—पु० विश्वास।
पतिवती—स्त्री० सुहागिन।
पतिवत्नी—स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा। [पातिव्रत्य।
पतिवर्त्त, पतिव्रत—पु०
पतिव्रता—वि० स्त्री० सती।
पतीजना—सक्रि० विश्वास-करना। [करना।
पतीनना—सक्रि० विश्वास-
पतीर—स्त्री० पंक्ति।
पतीला—पु० (फ़ा०)एक प्रकार का बर्त्तन।
पतीली—स्त्री०बटलोई।
पतुकी—स्त्री० पतली हाँडी।
पतुरिया—स्त्री० वेश्या।
पतूखी,पतोखा७—पु० दौना
पतोखद—स्त्री० फूलपत्ती से बनी दवा। [की स्त्री।
पतोह, पतोहू—स्त्री० लड़के-
पतौआ, पतौवा—पु० पत्ता।
पत्त—पु० पत्र, पत्ता।
पत्तन—पु० शहर। मृदंग।
पत्तर—पु० धातु की चादर।
पत्तल—पु० पतरी।
पत्ता—पु० पर्ण, पत्र। धातु की चादर। काग़ज़ का मोटा टुकड़ा।
पत्ति—स्त्री० पैदल सिपाही। चतुरंगिणी सेना। [हिस्सा।
पत्ती—स्त्री० छोटा पत्ता।
पत्थ—पु० दे० 'पथ्य'।
पत्थर—पु० पाषाण। ओला। रत्न। [की बंदूक़।
पत्थरकला—स्त्री० पुराने ढँग-
पत्थरचटा—पु० एक घास। एक साँप। कंजूस।
पत्नी—स्त्री०भार्या। गृहिणी।
पत्याट—वि० ख़ुशदिल। स्त्री के साथ सैर करने वाला। [करना।
पत्याना—सक्रि० विश्वास-
पत्यारा—पु० विश्वास।
पत्यारी—स्त्री०पंक्ति,क़तार।
पत्र—पु० चिट्ठी। पत्ता। पंख। सवारी।
पत्रक—पु० पृष्ठ, सफ़ा। रसीद, प्रामाणिक पत्र।
पत्रकार—पु० अख़बार का संपादक।

पत्रदारक—पु० आँसू। बालक वायु। आरा।
पत्रपरशु—पु० रेती, बालू।
पत्रपाश्या—स्त्री०बेंदी,टीका
पत्रपुष्प—पु० साधारण-उपहार।
पत्रभंग, पत्रभंगी—पु०सजावट के लिए मस्तक और गालोंपर चित्रकारी करना।
पत्रयौवन—पु० नवीनपत्ता
पत्ररचना—स्त्री०दे०'पत्रभंग'।
पत्ररथ—पु०पक्षी। [हरकारा
पत्रवाह—पु० पक्षी। बाण।
पत्रवाहक—पु० चिट्ठीरसा।
पत्रवेष्ट—पु० कर्णफूल (गहना)।
पत्र-व्यवहार—पु० लिखापढ़ी
पत्रांग—पु० लाल चन्दन।
पत्रा—पु० पंचांग। पन्ना।
पत्रालय—पु० डाकखाना।
पत्रावली—स्त्री० पत्रभंग। पत्रों की पंक्ति। [चिट्ठी।
पत्रिका—स्त्री०समाचारपत्र।
पत्री—स्त्री० चिट्ठी। छोटा-लेख। पु० वाण। पक्षी। पर्वत। बाज़। पेड। वि० पत्रयुक्त।
पथ—पु० मार्ग।
पथगामी—पु० बटोही।
पथदर्शक, पथ-प्रदर्शक—पु० रास्ता दिखलाने वाला।
पथरना—सक्रि० पत्थर पर औज़ार तेज़ करना।
पथराना—अक्रि० कड़ा हो जाना।
पथरी—स्त्री० पत्थर की कटोरी एक रोग।
पथरीला७—वि० पत्थरमय।
पथरौटा७—पु० पथरी।
पथिक,पथी—पु० यात्री।
पथिकाश्रय—पु०सराय,धर्मशाला। [मज़दूर।
पथिवाहक—पु० कहार।
पथेय—पु० रास्ते का कलेवा।
पथेरा—पु० पाथने वाला।
पथौरा—पु० पथ्य। सेंधा-नमक। शुभ। गोबर पाथने की जगह।
पथ्य—पु०रोगी का हलका-भोजन। हित। वि० लाभकारी।
पथ्या—स्त्री० हड।
पद—पु० दर्जा। पैर। उपाधि स्थान। प्रदेश। व्यवसाय।
पदक—पु० तमगा।
पदक्रम—पु० डग।
पदग, पदचर—पु० पैदल।
पदच्छेद—पु० पदों को अलग करने की क्रिया।
पदच्युत—वि० पद से गिरा-हुआ। [गिरना।
पदच्युति—स्त्री० पद से-
पदज—पु० पाँव से उत्पन्न। पु० शूद्र।
पदतल—पु० तलवा।
पदत्याग—पु०इस्तीफ़ा।
पदत्राण—पु० जूता।
पददलित—पु० पैर से-कुचला हुआ। [बिवाई।
पददारिका—स्त्री० पैर की-
पदन्यास—पु० चलना, पैर-रखना।
पदमैत्री—स्त्री० अनुप्रास।
पदरिपु—पु०काँटा। [पद।
पदवी—स्त्री०उपाधि,प्रतिष्ठा
पदाति,पदातिक—पु० पैदल-सिपाही।
पदाधिकारी५—पु० ओहदेदार, अफ़सर। [करना।
पदाना—सक्रि० परेशान-
पदार—पु० चरण-रज।
पदार्थ—पु०चीज़। [शास्त्र।
पदार्थविज्ञान—पु० विज्ञान-
पदार्पण—पु० पधारना। प्रवेश। [संग्रह।
पदावली—स्त्री० पदों का-
पदिक—पु० पैदल सेना। हीरा। तमग़ा। गले का एक गहना।
पदी—पु० प्यादा।
पदुम—पु० दे० 'पद्म'।
पदुमिनी—स्त्री० कमलिनी। कमल का तालाब। स्त्रियों का एक भेद। [मार्ग।
पद्धति—स्त्री०रीति। प्रणाली,
पद्धतिग्रंथ—पु० डाइरेक्टरी।
पद्म—पु०कमल। एक गहना वि० सौ नील।
पद्मकंद—पु०कमल की जड़।
पद्मक—पु० श्वेत कोढ़। एक वृक्ष, पद्मों का समूह।
पद्मगर्भ, पद्मज—पु० ब्रह्मा।
पद्मतंतु—पु० मृणाल।
पद्मनाभ, पद्मनाभि—पु० विष्णु।
पद्मपत्र—पु० पोहकरमूल।

पतंजलि—पु० महाभाष्यकार एक ऋषि।
पतंग—पु० पक्षी।
पत—पु० प्रतिष्ठा। लाज। पु० पति।
पतझड़—पु० शिशिर ऋतु।
पतत्र८—पु० पंख।
पतत्रि, पतत्री—स्त्री० पक्षी।
पतन६—पु० अवनति। नाश। उड़ान। [वाला।
पतनशील४—वि० गिरने·
पतनोन्मुख—वि० जो गिरने की ओर अग्रसर हो।
पतपानी—पु० लाज, प्रतिष्ठा।
पतयालु—वि० पतित स्वभाव-वाला। [पतला।
पतर—पु० पत्ता। वि०
पतरी—स्त्री० पत्तल।
पतला७—वि० जो मोटा न हो
पतलून—पु० अँगरेज़ी ढंग का पायजामा।
पतलो—स्त्री० सरकंडा।
पतवर—क्रि० वि० पंक्ति-रूप में।
पतवार, पतवारी—स्त्री० नाव के पीछे का वह त्रिकोण भाग जिसके घुमाने से नाव घूम जाती है।
पतस—पु० चिड़िया।
पता—पु० ठिकाना। ख़बर। खोज। [का ढेर।
पताई—स्त्री० सूखी हुई पत्तियों-
पताका८—स्त्री० झंडा।
पताकिनी—स्त्री० सेना।
पताकी५—वि० निशान-बाँधने वाला रथ।
पतार—पु० पाताल।
पतावर—पु० सूखे पत्ते।
पतिंग—पु० फतिंगा।
पतिंवरा—स्त्री० स्वयं वर चुनने वाली।
पति—पु० स्वामी। मर्यादा।
पतिआना—सक्रि० विश्वास-करना।
पतिआर—पु० विश्वास।
पतिकामा—स्त्री० पति-प्राप्ति की इच्छा करने वाली स्त्री।
पतित३-४—वि० नीच, पापी।
पतितपावन७—वि० पतित को पवित्र करने वाला। पु० ईश्वर। [भाव।
पतित्व—पु० पति होने का-
पतिदेवा—स्त्री० पतिव्रता।
पतिया—स्त्री० चिट्ठी।
पतियाना—सक्रि० विश्वास-करना। [पु० विश्वास।
पतियार—वि० विश्वसनीय।
पतियारा—पु० विश्वास।
पतिवती—स्त्री० सुहागिन।
पतिवत्नी—स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा। [पातिव्रत्य।
पतिवर्त्त, पतिव्रत—पु०
पतिव्रता—वि० स्त्री० सती।
पतीजना—सक्रि० विश्वास-करना। [करना।
पतीनना—सक्रि० विश्वास-
पतीर—स्त्री० पंक्ति।
पतीला—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का बर्त्तन।
पतीली—स्त्री० बटलोई।
पतुकी—स्त्री० पतली हाँडी।
पतुरिया—स्त्री० वेश्या।
पतूखी, पतोखा७—पु० दौना
पतोखद—स्त्री० फूलपत्ती से बनी दवा। [की स्त्री।
पतोह, पतोहू—स्त्री० लड़के-
पतौआ, पतौवा—पु० पत्ता।
पत्त—पु० पत्र, पत्ता।
पत्तन—पु० शहर। मृदंग।
पत्तर—पु० धातु की चादर।
पत्तल—पु० पतरी।
पत्ता—पु० पर्ण, पत्र। धातु की चादर। काग़ज़ का मोटा टुकड़ा।
पत्ति—स्त्री० पैदल सिपाही। चतुरंगिणी सेना। [हिस्सा।
पत्ती—स्त्री० छोटा पत्ता।
पत्थ—पु० दे० 'पथ्य'।
पत्थर—पु० पाषाण। ओला। रत्न। [की बंदूक़।
पत्थरकला—स्त्री० पुराने ढंग-
पत्थरचटा—पु० एक घास। एक साँप। कंजूस।
पत्नी—स्त्री० भार्या। गृहिणी।
पत्न्याट—वि० खुशदिल। स्त्री के साथ सैर करने वाला। [करना।
पत्याना—सक्रि० विश्वास-
पत्यारा—पु० विश्वास।
पत्यारी—स्त्री० पंक्ति, क़तार।
पत्र—पु० चिट्ठी। पत्ता। पंख। सवारी।
पत्रक—पु० पृष्ठ, सफ़ा। रसीद, प्रामाणिक पत्र।
पत्रकार—पु० अख़बार का संपादक।

पत्रदारक—पु० आँसू। बालक वायु। आरा।
पत्रपरशु—पु० रेती, बालू।
पत्रपाश्या—स्त्री० बेंदी, टीका
पत्रपुष्प—पु० साधारण-उपहार।
पत्रभंग, पत्रभंगी—पु० सजावट के लिए मस्तक और गालोंपर चित्रकारी करना।
पत्रयौवन—पु० नवीनपत्ता
पत्ररचना—स्त्री० दे० 'पत्रभंग'।
पत्ररथ—पु० पक्षी। [हरकारा
पत्रवाह—पु० पक्षी। वाण।
पत्रवाहक—पु० चिट्ठीरसा।
पत्रवेष्ट—पु० कर्णफूल (गहना)।
पत्र-व्यवहार—पु० लिखापढ़ी
पत्रांग—पु० लाल चन्दन।
पत्रा—पु० पंचांग। पन्ना।
पत्रालय—पु० डाकखाना।
पत्रावली—स्त्री० पत्रभंग। पत्रों की पंक्ति। [चिट्ठी।
पत्रिका—स्त्री० समाचारपत्र।
पत्री—स्त्री० चिट्ठी। छोटा-लेख। पु० वाण। पक्षी। पर्वत। बाज़। पेड़। वि० पत्रयुक्त।
पथ—पु० मार्ग।
पथगामी—पु० बटोही।
पथदर्शक, पथ-प्रदर्शक—पु० रास्ता दिखलाने वाला।
पथरना—सक्रि० पत्थर पर औज़ार तेज़ करना।
पथराना—अक्रि० कड़ा हो जाना।
पथरी—स्त्री० पत्थर की कटोरी एक रोग।
पथरीला७—वि० पत्थरमय।
पथरौटा७—पु० पथरो।
पथिक, पथी—पु० यात्री।
पथिकाश्रय—पु० सराय, धर्मशाला। [मज़दूर।
पथिवाहक—पु० कहार।
पथेय—पु० रास्ते का कलेवा।
पथेरा—पु० पाथने वाला।
पथौरा—पु० पथ्य। सेंधा-नमक। शुभ। गोबर पाथने की जगह।
पथ्य—पु० रोगी का हल्का-भोजन। हित। वि० लाभकारी।
पथ्या—स्त्री० हड़।
पद—पु० दर्जा। पैर। उपाधि स्थान। प्रदेश। व्यवसाय।
पदक—पु० तमग़ा।
पदक्रम—पु० डग।
पदग, पदचर—पु० पैदल।
पदच्छेद—पु० पदों को अलग करने की क्रिया।
पदच्युत—वि० पद से गिरा-हुआ। [गिरना।
पदच्युति—स्त्री० पद से-
पदज—पु० पाँव से उत्पन्न। पु० शूद्र।
पदतल—पु० तलवा।
पदत्याग—पु० इस्तीफ़ा।
पदत्राण—पु० जूता।
पददलित—पु० पैर से-कुचला हुआ। [बिवाई।
पददारिका—स्त्री० पैर की-
पदन्यास—पु० चलना, पैर-रखना।
पदमैत्री—स्त्री० अनुप्रास।
पदरिपु—पु० काँटा। [पद।
पदवी—स्त्री० उपाधि, प्रतिष्ठा
पदाति, पदातिक—पु० पैदल-सिपाही।
पदाधिकारी५—पु० ओहदे-दार, अफ़सर। [करना।
पदाना—सक्रि० परेशान-
पदार—पु० चरण-रज।
पदार्थ—पु० चीज़। [शास्त्र।
पदार्थविज्ञान—पु० विज्ञान-
पदार्पण—पु० पधारना। प्रवेश। [संग्रह।
पदावली—स्त्री० पदों का-
पदिक—पु० पैदल सेना। हीरा। तमग़ा। गले का एक गहना।
पदी—पु० प्यादा।
पदुम—पु० दे० 'पद्म'।
पदुमिनी—स्त्री० कमलिनी। कमल का तालाब। स्त्रियों का एक भेद। [मार्ग।
पद्धति—स्त्री० रीति। प्रणाली,
पद्धतिग्रंथ—पु० डाइरेक्टरी।
पद्म—पु० कमल। एक गहना वि० सौ नील।
पद्मकंद—पु० कमल की जड़।
पद्मक—पु० श्वेत कोढ़। एक वृक्ष, पद्मों का समूह।
पद्मगर्भ, पद्मज—पु० ब्रह्मा।
पद्मतंतु—पु० मृणाल।
पद्मनाभ, पद्मनाभि—पु० विष्णु।
पद्मपत्र—पु० पोहकरमूल।

पद्मपाणि—पु० ब्रह्मा । सूर्य।
पद्मभू , पद्मयोनि—पु० ब्रह्मा
पद्मराग—पु० माणिक रत्न।
पद्मरेखा—स्त्री० हथेली की एक रेखा जो भाग्यशालिनी होती है ।
पद्मलांछन—पु० राजा। कुबेर । सूर्य । ब्रह्मा ।
पद्मलांछना—स्त्री० सरस्वती । तारा ।
पद्मस्नुषा—स्त्री० लक्ष्मी । दुर्गा । गंगा ।
पद्महास—पु० विष्णु ।
पद्मा—स्त्री० लक्ष्मी ।
पद्माकर—पु० कमलयुक्त तालाब । तड़ाग ।[विष्णु ।
पद्माक्ष—पु० कमलगट्टा ।
पद्मालया—स्त्री० लक्ष्मी ।
पद्मावती—स्त्री० उज्जैन, पटना तथा पन्ना का प्राचीन नाम । एक देवी । चित्तौर की एक रानी । एक अप्सरा। एक छन्द ।
पद्मासन—पु० एक आसन। ब्रह्मा । शिव ।
पद्मिनी—स्त्री० कमलिनी । स्त्रियों का एक भेद । लक्ष्मी ।
पद्मी—पु० हाथी ।
पद्मोत्तर—पु० पुष्प ।
पद्मोद्भव—पु० ब्रह्मा ।
पद्य—पु० कविता । वि० पैर-सम्बन्धी ।
पद्या—स्त्री० मार्ग, रास्ता ।
पद्यात्मक—वि० पद्य में लिखित ।
पधरना—अक्रि० आना ।
पधराना—सक्रि० प्रतिष्ठित करना ।
पधारना—अक्रि० आना । सक्रि० प्रतिष्ठित करना ।
पन—पु० प्रतिज्ञा । भाववाचक संज्ञा की एक प्रत्यय ।
पनकपड़ा—पु० चोट बाँधने की कपड़े की गीली पट्टी ।
पनकौवा—पु० जलकौवा पक्षी
पनगनि—स्त्री० सर्पिणी ।
पनघट—पु० पानी भरने का घाट ।
पनच—पु० प्रत्यंचा ।
पनचक्की—स्त्री० पानी से चलने वाली चक्की ।
पनडिब्बा—पु० पान तथा उसका सामान रखने का एक डिब्बा ।
पनडुब्बा—पु० गोताखोर । एक पक्षी ।
पनडुब्बा—स्त्री० पानी के अंदर चलने वाली नाव ।
पनपना—अक्रि० हरा-भरा होना । पुष्ट होना ।
पनबट्टा—पु० पान के बीड़े रखने का डिब्बा ।
पनव—पु० ओंकार । ढोल ।
पनवाड़ी—पु० पान बेचनेवाला । [भर भोजन ।
पनवारा—पु० पत्तल । पत्तल-
पनस—पु० कटहल ।
पनसाखा—पु० पाँच बत्तियों की मशाल ।
पनसाल—पु० पियाऊ ।
पनस्यु—वि० प्रशंसा की-इच्छा-वाला ।
पनह—स्त्री० दे० 'पनाह'।
पनहरा, पनहारा७—पु० पानी भरने वाला ।
पनहा—पु० चौड़ाई । चोरी का पता लगाने वाला ।
पनही—स्त्री० जूता ।
पना—पु० कच्चे आम का शरबत विशेष ।
पनाती—पु० पोते, नाती का लड़का ।
पनायित,पनित—वि० स्तुति-किया हुआ ।
पनारी, पनाली—स्त्री० प्रणाली । धारा । एक खाद्य पदार्थ ।
पनाला—पु० नाबदान ।
पनासना—सक्रि० पालना ।
पनाह—स्त्री० (फ़ा०) शरण। रक्षा । [पानी में उत्पन्न ।
पनिया—पु० पानी । वि०
पनियासोत—वि० बहुत-गहरा । [हुआ ।
पनिहा—त्रि० पानी मिला-
पनिहार७—पु० पानी भरनेवाला। [निचोड़ा हुआ दही।
पनीर—पु० छेना । पानी-
पनीला—वि० पनिहा ।
पनेरी—पु० तमोली ।
पनौटी—स्त्री० पान का गिलहरा ।
पन्न—वि० गिरा हुआ ।
पन्नग७—पु० साँप । पन्नारत्न ।
पन्नगारि—पु० गरुड़ ।
पन्नगाशन—पु० गरुड़ ।
पन्ना—पु० हरे रंग का रत्न । पृष्ठ ।

पन्नी—स्त्री० सुनहला, रूपहला कागज़।
पन्नीसाज़—पु० पन्नी बनाने या पन्नी का काम करनेवाला
पपड़ा७—पु० छिलका।
पपड़िया-कत्था—पु० सफ़ेद कत्था। [पपड़ी पड़ना।
पपड़ियाना—अक्रि० सूखकर-
पपड़ीला—वि० पपड़ीदार।
पपीता—पु० एक फल।
पपीलि—स्त्री० चींटी।
पपीहा—पु० चातक पक्षी।
पपैया—पु० सीटी। आम की गुठली का बाजा।
पपोटा—पु० पलक।[ऐंठना।
पपोरना—सक्रि० भुजाएँ-
पबना—सक्रि० पाना।
पबलिक—स्त्री०(अं०)जनता।
पबलिकवर्क्स—पु० (अं०) सर्वसाधारण के लिए, सरकार की ओर से किये जाने वाले निर्माण-संबंधी कार्य।
पबारना—सक्रि० क्रोध में फेंकना।
पबि, पब्बि—पु० वज्र।
पब्बय—पु० पर्वत।
पब्लिशर—पु० (अं०)पुस्तक-प्रकाशक। [मारना।
पमावना—अक्रि० डींग-
पय—पु० दूध। जल।
पयद—पु० बादल।
पयधि,पयनिधि—पु०समुद्र।
पयस्य—पु० दूध से निकली वस्तु—दही, घी आदि।
पयस्वती—स्त्री० जल वाली-नदी।
पयस्विनी—स्त्री० दुधारू-गाय। नदी।
पयस्वी५—वि०पानी वाला।
पयहारी५—पु० जो केवल दूध पीकर रहता हो।
पयादा—पु० पैदल-सैनिक।
पयान—पु० गमन, कूच।
पयाम—पु० (फ़ा०) सदेश।
पयार,पयाल—पु० सूखी-घास, पुराल।
पयागड़,पयोगल—पु० ओला
पयोज—पु० कमल।
पयोद—पु० बादल।
पयोधर—पु०स्तन। बादल। तड़ाग। पर्वत। [समुद्र।
पयोध, पयोनिध—पु०-
पयोमुख७—वि० दुधमुँहा।
परंच—अव्य०और भी,परंतु
परंतप—वि० शत्रु को कष्ट देने वाला। जितेंद्रिय।
परंतु—अव्य० लेकिन।
परंदा—पु० (फ़ा०) पक्षी।
परंपरा—स्त्री० परिपाटी। सिलसिला। पीढ़ी।
परांपरागत—वि० जो परंपरा से चला आया हो।
पर—वि०ग़ैर। श्रेष्ठ। दूर। पु० शत्रु। ब्रह्मा। शिव। पख। अव्य० लेकिन, तौभी।
परई—स्त्री० दीए के आकार का मिट्टी का एक बर्त्तन।
परकना९—अक्रि० चसका-लगना। [होना।
परकसना—अक्रि०प्रकाशित-
परकाजी—वि० परोपकारी।
परकार—पु०प्रकार।(फ़ा०) गोलाई खींचने का एक औज़ार।
परकाला—पु०(फ़ा०) सीढ़ी। चौखट। टुकड़ा। चिनगारी।
परकासना—सक्रि० प्रकाशित करना। [प्रकृति।
परकीती, परकृति—स्त्री०
परकीय—वि० पराया।
परकीया—स्त्री०वह नायिका जो पर पुरुष से प्रेम करे।
परकोटा—पु०चहारदीवारी।
परख—स्त्री०पहचान। जाँच।
परखना९—सक्रि० जाँच-करना।[क्रिया या मज़दूरी।
परखाई—स्त्री० परखने की-
परख़ाश—पु० (फ़ा०)लड़ाई, झगड़ा।
परखैया—पु०परखने वाला।
परग—पु० डग।
परगटना—अक्रि० प्रकट-होना। सक्रि०प्रकट करना।
परगना—पु० (फ़ा०) वह भू-भाग जिसमें कई गाँव हों।
परगसना—अक्रि० प्रकाशित-होना।
परचंड—वि० दे० 'प्रचंड'।
परचइ—पु० परिचय।
परचत—स्त्री० परिचय।
परचना९—अक्रि० चसका-लगना। हिलना, मिलना।
परचम—पु० (फ़ा०) झंडा या झंडे का कपड़ा। ज़ुल्फ़, काकुल।
परचा—पु० (फ़ा०) काग़ज़-का पुर्ज़ा। प्रश्न-पत्र। परि-

परचाना—सक्रि० आदत डालना। जलाना।
परचारना—सक्रि० ललकारना। प्रचार करना।
परचूनप—पु० आटा, दाल आदि भोजन की सामग्री।
परछत्ती—स्त्री० टाँड।
परछन—स्त्री०वरकी आरती आदि उतारने की रीति।
परछना—सक्रि० बरात दरवाज़े पर आने पर वर की आरती आदि करना।
परछाईं—स्त्री० छाया।
परजन—पु० अनुचर-वर्ग।
परजन्य—पु० बादल। इन्द्र।
परजरना—अक्रि० जलना।
परजा—स्त्री०प्रजा, असामी।
परजात—वि० ग़ैर जाति का। ग़ैर से उत्पन्न। अन्य से पाला हुआ। [पुष्प।
परजाता—पु० हरसिंगार-
परजारना—सक्रि० जलाना।
परजौट—पु०सालाना किराए पर भूमि लेने देने का नियम तथा उसका वार्षिक किराया।
परज्वलना—सक्रि० प्रज्वलित करना। अक्रि० प्रज्वलित होना।
परतंत्र३—वि० पराधीन।
परतः—अव्य० बाद में।
परत—स्त्री० तह।
परतच्छ—वि० प्रत्यक्ष।
परतल—पु० लद्दू घोड़ों पर रखने का बोरा।
परतला—पु० तलवार लटकाने की पट्टी।
परता—पु० दे० 'पड़ता'।
परताप—पु० दे० 'प्रताप'।
परताल—स्त्री० जाँच।
परती—स्त्री० वह भूमि जो कुछ समय से जोती न हो।
परतीत—स्त्री० विश्वास।
परतेजना—सक्रि० छोड़ देना
परत्र—क्रि० वि० अन्यत्र। आगे। [पूर्व होने का भाव।
परत्व—पु०भिन्नता। श्रेष्ठता।
परथन—पु० पलेथन।
परद—पु० परदा।
परदनी, परदनिया—स्त्री० धोती। [चिक। परत।
परदा—पु०(फ़ा०) आड़।
परदाज़२—पु० (फ़ा०)सजावट। सजाना। चित्र आदि के चारों ओर वेल बूटे बनाना। [पिता।
परदादा७—पु० दादा के-
परदादार२—वि०(फ़ा०)परदे में रहने वाला।
परदानशीन—वि० स्त्री० (फ़ा०)पर्दा में रहने वाली।
परदापोशी—स्त्री० (फ़ा०) ऐबों पर पर्दा डालना।
परदाफ़ाश—पु० (फ़ा०) रहस्योद्घाटन।
परदार—स्त्री० परायी स्त्री। लक्ष्मी। पृथ्वी। वि० (फ़ा०) पर वाला (पक्षी)।
परदेशप—पु० विदेश।
परद्वेष्टा—पु०दूसरे की हानि-करने वाला। [वि० मुख्य।
परधान—पु० कपड़ा। मंत्री।
परधाम—पु० स्वर्गलोक।
परन—पु० प्रतिज्ञा। पत्ता।
परनगृह—पु० झोंपड़ी।
परनाना७—पु० नाना के पिता। [नतीजा।
परनाम—पु० प्रणाम।
परनाला७—पु० पनाला।
परनि—स्त्री० आदत।
परनौत—पु० प्रणाम।
परपंचक, परपंची—वि० चालबाज़, धूर्त्त।
परपट—पु० समतल-भूमि।
परपटी—स्त्री०पपड़ी।
परपरा—वि० 'परपर' शब्द से टूटने वाला।
परपराहट—स्त्री० चुनचुनाहट, जलन। [पिता।
परपाजा—पु० पितामह का-
परपिंडाद—वि० जो पराये अन्न से ही जीता हो।
परपीड़क—पु० दूसरे को सताने वाला। [विष्णु।
परपुरुष—पु० ग़ैर पुरुष।
परपुष्ट—पु० कोकिल। वि० अन्य द्वारा पोषित।
परपैठ—स्त्री० असली हुँडी की तीसरी नक़ल।
परपोता७,परपौत्र७—पु०पोते का बेटा।
परब—पु० दे० 'पर्व'।
परबल—पु० एक तरकारी। वि० प्रबल।
परबस—वि० पराधीन।
परबोधना—सक्रि० समझाना।
परब्रह्म—पु० निर्गुण ब्रह्म।
परभाग्योपजीवी—वि० दूसरे

की कमाई पर जीवित रहने वाला। [षड़ानन।
परभृत—स्त्री० कोयल। पु०
परम४—वि० बड़ा। श्रेष्ठ। प्रधान।
परमगति—स्त्री० मोक्ष।
परमटा—पु० एक प्रकार का चिकना तथा मज़बूत कपड़ा।
परमतत्व—पु०मूलतत्व। ब्रह्म
परमधाम—पु० बैकुंठ।
परमपद—पु० मोक्ष। श्रेष्ठ-स्थान।
परमपुरुष—पु० ईश्वर।
परमफल—पु० मोक्ष।
परमभट्टारक—पु० राजा की एक पुरानी उपाधि।
परममहत्—वि० व्यापक।
परमल—पु० सुगंधि। एक चबैना।[विशेष। परमेश्वर।
परमहंस—पु० संन्यासी·
परमा—स्त्री० शोभा। [अणु।
परमाणु—पु० बहुत छोटा·
परमाणुवाद—पु०परमाणुओं से संसार की उत्पत्ति मानने वाला सिद्धांत।
परमाणुवादी५—पु० जो परमाणुओं से ही जगत् की उत्पत्ति मानता है।
परमात्मा—पु० ईश्वर।
परमानन्द—पु० ब्रह्मानंद।
परमान—पु०प्रमाण। सीमा।
परमानेंट—वि०(अं०)स्थायी।
परमान्न—पु० खीर। [आयु।
परमायु—पु० बड़ी से बड़ी·
परमार—पु० राजपूतों की एक जाति।

परमारथ, परमार्थ—पु० मुक्ति। श्रेष्ठ वस्तु।
परमार्थवादी५—पु०वेदान्ती। तत्त्वज्ञ। [चाहने वाला।
परमार्थी५—पु० मोक्ष-
परमिति—स्त्री० मर्यादा। चरम सीमा।
परमुख—वि० विमुख।
परमुखापेक्षी—वि० दूसरे के मुख की अपेक्षा करने वाला।
परमेश्वर—पु० परमात्मा।
परमेश्वरी—स्त्री०दुर्गा।
परमेष्ठी—पु० ब्रह्मा।
परमोधना—सक्रि० समझाना।
परयंक—पु० पलङ्ग।
परलय, परले—पु० नाश।
परला७—वि०दूसरी ओर का
परलोक—पु० दूसरा लोक। स्वर्ग।
परवर—पु० परवल। वि० (फ़ा०) पालने वाला।
परवरदा—वि० (फ़ा०) पाला हुआ।
परवरदिगार—पु० (फ़ा०) ईश्वर। [पालन-पोषण।
परवरिश—स्त्री० (फ़ा०)
परवश३, परवश्य३—वि० पराधीन।
परवस्ती—स्त्री० परवरिश।
परवा—स्त्री० (फ़ा०) चिंता, ध्यान।
परवान—पु० प्रमाण।
परवानगी—स्त्री० (फ़ा०) आज्ञा। [पत्र। फतिंगा।
परवाना—पु०(फ़ा०) आज्ञा-
परवान्—पु० पराधीन, पर-

वशवर्त्ती।
परवास—पु० आच्छादन। प्रवास। [प्रवाह।
परवाह—स्त्री० ध्यान। पु०
परवी—स्त्री० पर्वकाल।
परवेख—पु० मंडल।
परवेज़—पु०(फ़ा०)विजयी। नौशेरवाँ का पोता बादशाह खुशरो।
परवेश्म—पु० स्वर्ग।
परश, परस—पु० पारस-मणि। स्पर्श।
परशु—पु० फ़रसा।[कि पुत्र।
परशुराम—पु० यमदग्नि ऋषि,
परश्व—अव्य० परसों।
परश्वध—पु० कल्हाड़ी।
परस—पु० स्पर्श, छूना।
परसन—पु० स्पर्श। वि० प्रसन्न। [छूना।
परसना—सक्रि० परोसना।
परसपखान—पु०पारसपत्थर।
परसा—पु० परोसा।
परसाना—सक्रि० छुआना। फैलाना। [आगामी साल।
परसाल—अव्य० गतसाल।
परसों—अव्य० गत दिन से पहिले या आगामी दिन के बाद का दिन।
परसौंहा७—वि० छूने वाला।
परस्त—वि० (फ़ा०) पूजा करने वाला।
परस्तिश—स्त्री०(फ़ा०)पूजा।
परस्तिशगाह—स्त्री० (फ़ा०) पूजा का स्थान।
परस्पर—क्रि०वि०आपस में।
परहरना—सक्रि० छोड़ना।

परहेज़—पु० (फ़ा०) संयम। बुराइयों से दूर रहना।
परहेज़गार—पु० संयमी। बुराइयों से दूर रहने वाला।
परहेलना—सक्रि० निरादर करना।
परा*—स्त्री० ब्रह्मविद्या। पंक्ति। वि० स्त्री० श्रेष्ठ।
पराकाष्ठा, पराकोटि—स्त्री० चरमसीमा।
पराक्रम—पु० पुरुषार्थ। शूरता। उद्योग।
पराग—पु०पुष्प-रज। स्नान करने का मसाला।
परागकेसर—पु० फूलों के अन्दर के तन्तु। [होना।
परागना—अक्रि० अनुरक्त-
पराङ्मुख—वि० विमुख।
पराचित—वि० जो दूसरे से पाला जाय।
पराधान—वि० विमुख।
पराजय—स्त्री० हार।
पराजित—वि० हराया गया।
पराजेता—वि० विजयी।
परात—स्त्री० थालनुमा बर्त्तन
परात्पर—पु० ईश्वर। वि० सर्वश्रेष्ठ।
पराधीन३—वि० परवश।
परान—पु०प्राण।
पराना—अक्रि०भागना।
परान्न—पु० दूसरे को दिया हुआ भोजन। वि० दूसरे के अन्न से जीने वाला।
पराभव—पु० तिरस्कार। हार
पराभिक्षु—पु० वानप्रस्थी-संन्यासी।
पराभूत—वि० परास्त, नष्ट।
परामर्श, परामर्शन—पु० सलाह, विचार।
परामर्ष—पु०निवृत्ति। क्षमा।
परामृत—वि० मुक्त।
परामृष्ट—वि० उपदेशित। पीड़ित।
परामोद—पु० फुसलावा।
परायण—वि० तत्पर। गत। अत्यासक्त।
परायत्त४—वि० पराधीन।
पराया, परावा—वि० दूसरे का। [पयाल।
परार—वि० पराया। पु०
परार्थ—वि०दूसरे के निमित्त।
परार्द्ध—वि० लक्ष करोड़।
परार्ध्य—वि०प्रधान, प्रमुख।
परावन—पु०भगदड़। पर्व।
परावर—वि० पूर्व और बाद का। सर्वव्यापक। वि० सर्वश्रेष्ठ।
परावर्तन—पु० पलटना।
परावर्त्तित—वि० पलटाया-हुआ। [बदला हुआ।
परावृत्त—स्त्री० लौटाया या-
परावृत्ति—स्त्री० लौटाने का भाव, पलटाव।
पराशर—पु० पराशर-स्मृति के रचयिता एक ऋषि।
परासन—पु० वध, क़तल।
परासु—वि० मृत्यु को प्राप्त हुआ, मृत।
परास्त३—वि० पराजित।
पराह्न—पु० तीसरा पहर।
परिंदा—पु०(फ़ा०)चिड़िया।
परि::—अव्य०एक उपसर्ग।
परिक—स्त्री० छोटी चौंटी।
परिकथा—स्त्री०अन्तर्गत कथा।
परिकर—पु० पलँग। परिवार समूह। कमरबंद। नौकर-चाकर। [लगाना।
परिकर्म—पु० उबटन आदि-
परिकल्पन—पु० दग़ाबाज़ी।
परिकल्पना—स्त्री० चिंता। उपाय। [मनगढ़ंत।
परिकल्पित—वि० चिंतित।
परिकीर्ण—वि० व्याप्त। विस्तृत। [स्तुति, प्रशंसा।
परिकीर्त्तन—पु० प्रस्ताव।
परिक्रम—पु० खेल के लिए पैदल चलना। [क्रमा'।
परिक्रमण—पु० दे० 'परि-
परिक्रमा—स्त्री० चारों ओर चक्कर लगाना।
परिक्रय—पु० मोल।
परिक्रिया—स्त्री० परिजन आदि का घेरना।
परिक्षत—वि० नष्ट।
परिक्षव—पु० छींक।
परिक्षिप्त—वि० खाई आदि

नोट—*'परा' एक उपसर्ग है जो शब्दों के पूर्व लगने से, उलटा, पीछे, बड़ाई, अनादर, अधिक, बल, आदि अर्थों की विशेषता प्रकट करता है।

:: 'परि' एक उपसर्ग है जो शब्दों के पूर्व लगने से, चारों ओर, भलीभाँति, दोषाख्यान, व्यापकता, विस्मृति, अतिशय, आदि अर्थों की विशेषता प्रकट करता है।

से घिरा हुआ ।
परिक्षीण—वि० ग़रीब, निर्धन
परिखन—त्रि० रक्षक ।
परिखा—स्त्री० खाई ।
परिख्यात—वि० प्रसिद्ध ।
परिगणन६—पु० गिनना ।
परिगणित—वि० गिना हुआ ।
परिगण्य—वि० गिनने-योग्य ।
परिगत—वि० जाना हुआ । गत । विस्मृत ।
परिगह—पु० साथी । कुटुंबी ।
परिगहना—सक्रि० ग्रहण-करना ।
परिगुंठित—वि० ढका हुआ ।
परिगृह—पु० कुटुंबीजन ।
परिगृहीत—वि० स्वीकृत । मिश्रित । [स्त्री ।
परिगृह्या—स्त्री० विवाहिता-
परिग्रह—पु० पाना । विवाह । परिवार । [पाना ।
परिग्रहण—पु० पूर्ण रूप से-
परिग्राह्य—वि० ग्रहण करने-योग्य ।
परिघ—पु० फाटक । घर । भाला । अर्गला । पर्वत । घड़ा । वज्र । जल ।
परिघात—पु० हत्या ।
परिघोष—पु० मेघ-गर्जन ।
परिचय—पु० जानकारी । प्रमाण । [कराने वाला ।
परिचयक—वि० परिचय-
परिचर—पु० सेवक ।
परिचरजा, परिचर्या—स्त्री० सेवा, उपासना ।
परिचरण—पु० सेवा ।
परिचरी—स्त्री० दासी ।
परिचायक१४—पु० परिचय-कराने वाला, सूचक ।
परिचार—पु० सेवा । भ्रमण-स्थान ।
परिचारक१४—पु० सेवक ।
परिचारण—पु० सेवा करना ।
परिचारी५—पु० सेवक ।
परिचालक१४—पु० चलाने वाला, संचालक ।
परिचालन—पु० चलाना ।
परिचालित—वि० चलाया-गया, जारी रखा हुआ ।
परिचित—वि० ज्ञात, वाक़िफ़ ।
परिचिति—स्त्री० परिचय ।
परिचेय—वि० परिचय के योग्य । [आच्छादन ।
परिच्छद—पु० पहनावा ।
परिच्छन्न—वि० ढका हुआ ।
परिच्छिन्न—वि० परिमित । विभक्त ।
परिच्छेद—पु० अध्याय । विभाजन । विचार ।
परिच्युत—वि० पतित ।
परिजन—पु० परिवार । अनुचर-वर्ग ।
परिजन्मा—पु० चंद्रमा । अग्नि
परिज्ञात—वि० भली भाँति-जाना हुआ ।
परिज्ञान—पु० पूरा ज्ञान ।
परिणत—वि० बढ़ा हुआ । झुका हुआ । [बदलना ।
परिणति—स्त्री० रूपान्तर,
परिणय, परिणयन—पु० विवाह ।
परिणाम—पु० नतीजा ।
परिणामदर्शी५—वि० दूर-दर्शी ।
परिणामी५—वि० जो निरंतर बदलता रहे ।
परिणाह—पु० कपड़े आदि की चौड़ाई । [समाप्त ।
परिणीत—वि० विवाहित ।
परिणेता—पु० वर, स्वामी ।
परिताप—पु० दुःख । भय । पछतावा । [संतुष्ट ।
परितुष्ट३—वि० प्रसन्न ।
परितुष्टि—स्त्री० खूब प्रसन्नता ।
परितृप्त—वि० छका हुआ ।
परितोष१२—पु० संतोष ।
परित्यक्त४—त्रि० छोड़ा हुआ ।
परित्यागन—पु० छोड़ना ।
परित्याज्य—वि० छोड़ने-योग्य ।
परित्राण—पु० बचाव ।
परित्राता—पु० रक्षक ।
परिदर्शन—पु० निरीक्षण ।
परिदान—पु० त्याग । लेन-देन । विनिमय । फेर लेना ।
परिदाह—पु० शोक ।
परिदेवन—पु० विलाप ।
परिधान—पु० वस्त्र । कपड़ा-पहनना । [वस्त्र ।
परिधि—स्त्री० घेरा, मंडल ।
परिधिस्थ—वि० सेना-रक्षक ।
परिधेय—वि० पहनने के योग्य । पु० वस्त्र ।
परिध्वंस—पु० हानि । नाश ।
परिनिष्ठा—स्त्री० चरम-सीमा । पराकाष्ठा ।
परिपंथक, परिपंथी—पु० शत्रु । ठग । कुमार्गी । विरुद्ध आचरण करने वाला
परिपक्व३—वि० पौढ़ । अच्छी

तरह पका हुआ ।
परिपाक—पु० पकने की क्रिया । पाचन । प्रवीणता ।
परिपाटी—स्त्री०रीति, प्रथा । अनुक्रम । [पोषण ।
परिपालन—पु० रक्षण ।
परिपाल्य—वि० रक्षणीय ।
परिपुष्ट—वि०जिसका पोषण अच्छी तरह से किया गया हो । [करनेवाला ।
परिपूरक—वि० परिपूर्ण-
परिपूरित—वि०अच्छी तरह-से पूर्ण । [हुआ,सपूर्ण ।
परिपूर्ण—वि० ,खूब भरा-
परिपोषण—पु० परवरिश ।
परिप्रेषण६—पु०चारों ओर-भेजना ।
परिप्लव—पु०तैरना। ज़ुलम ।
परिप्लुत—वि०डूबा हुआ ।
परिबंधन६—पु० जकड़ कर बाँधना ।
परिबृंहण—पु० उन्नति । कुशल ।परिशिष्ट । पूरकग्रंथ
परिबोधन३—पु० चेतावनी ।
परिभव, परिभाव—पु० तिरस्कार ।
परिभाषक१४—पु० निंदक ।
परिभाषण—पु० निंदापूर्वक-कथन ।
परिभाषा—स्त्री० तारीफ़ । व्याख्या । लक्षण । स्पष्ट-कथन । [किया गया ।
परिभाषित—वि० परिभाषा-
परिभू—पु० ईश्वर । वि० चारों ओर से घेरने वाला ।
परिभूत—वि० तिरस्कृत । पराजित । [हुआ ।
परिभूषित४—वि० सजाया-
परिभोक्ता१०—पु० दूसरे के धन का उपभोग करने वाला
परिभ्रंश—पु० पतन । पलायन ।
परिभ्रमण—पु० पर्यटन ।
परिभ्रष्ट—वि० नष्ट ।
परिमंडल—पु० घेरा, चक्कर ।
परिमन्यु—वि० अतिक्रोधी ।
परिमर्श—पु० स्पर्श ।
परिमर्ष—पु० ईर्ष्या ।
परिमल—पु०सुगंधि । उबटन ।
परिमाण—पु० तौल । नाप ।
परिमार्गी५—त्रि० अनुसधान करने वाला ।
परिमार्जक—पु०माँजनेवाला ।
परिमार्जन६—पु० धोना । माँजना,संशोधन ।
परिमार्जित—वि०साफ़,धुला-हुआ, परिष्कृत ।
परिमित—वि०सीमित, थोड़ा।
परिमिति—स्त्री०नाप । सीमा
परिमुक्त—वि० पूर्ण रीति से स्वाधीन ।
परिमूढ़—वि० व्याकुल ।
परिमृज्य—वि०शोधन-योग्य।
परिमृष्ट—वि० शुद्ध, परिमार्जित । [तौल हो सके ।
परिमेय—वि० जिसकी नाप-
परिमोक्ष—पु० मुक्ति।
परिमोक्षण—पु० परित्याग ।
परिमोष—पु० चोरी ।
परियंक—पु० पलंग ।
परिरंभन, परिरंभण६—पु० आलिंगन ।
परिरंभ्य—वि० आलिङ्गन-करने योग्य ।
परिरोध—पु० रुकावट ।
परिवंश—पु० धोखा ।
परिलेख—पु० तस्वीर । तूलिका । उल्लेख ।
परिलेखन—पु० ख़ाका, ढाँचा
परिलेखना—सक्रि० समझना
परिवर्जन—पु० वध, क़तल । छोड़ना ।
परिवर्जनीय—वि० छोड़ने-योग्य । वध-योग्य ।
परिवर्त्त—पु० अदला-बदली ।
परिवर्त्तक१४—पु० घूमने-वाला । बदलने वाला ।
परिवर्त्तन६—पु० रूपांतर, बदलने की क्रिया ।
परिवर्तित—वि०बदला हुआ ।
परिवर्ती५—वि० दे० 'परि-वर्त्तक' । [कार ।
परिवर्त्तुल—वि० पूर्ण गोला-
परिवर्द्धन६—पु०बढ़ती ।
परिवर्द्धित—वि० बढ़ाया हुआ
वरिवसथ—पु० ग्राम ।
परिवादन—पु० निंदा ।
परिवादिनी—स्त्री० निन्दा-करने वाली । वीणा ।
परिवापित—वि० मुंडन-किया हुआ ।
परिवार—पु० ख़ानदान । आवरण [रोकना ।
परिवारण—पु० माँगना ।
परिवास—पु० घर ।
परिवाह—पु० बहाव ।
परिवृढ—पु० अध्यक्ष, स्वामी ।
परिवृत—वि० घिरा हुआ ।

परिवृति—स्त्री० ढकने, घेरने वाली वस्तु।
परिवृत्त—वि० घेरा हुआ।
परिवृत्ति—स्त्री० घेरा। विनिमय।
परिवेत्ता—वि० ज्येष्ठ भाई के विवाह रहित होने पर विवाहित छोटा भाई।
परिवेदना—स्त्री० महान् क्लेश
परिवेश—पु० घेरा।
परिवेषण—पु० घेरा। परोसना
परिवेष्टन६—पु० घेरा। आच्छादन।
परिवेष्टित—वि० घेरा हुआ। आच्छादित। [घूमना।
परिव्रज्या—स्त्री० इधर-उधर-
परिव्राजक—पु० संन्यासी।
परिव्राट्—पु० संन्यासी।
परिशिष्ट—वि० बचा हुआ। पु० पुस्तक, लेख आदि का वह अंश जो बाद में जोड़ा गया हो। [पूर्वक पढ़ना।
परिशीलन—पु० विचार-
परिशीलित—वि० मनन-पूर्वक पढ़ा गया।
परिशेष—वि० बचा हुआ। पु० समाप्ति। अन्त।
परिशोध, परिशोधन६—पु० चुकता। पूरी सफ़ाई।
परिशोधित, परिशुद्ध—वि० अच्छी तरह से साफ़ किया गया। [थकावट।
परिश्रम—पु० मेहनत।
परिश्रमी—वि० मेहनती।
परिश्रय—पु० आश्रय।
परिषद्।
परिश्रांत—वि० थकित।
परिश्रुत—वि० मशहूर।
परिषद—पु० सभासद, दरबारी।
परिषेक—पु० सिंचाई।
परिषद्—स्त्री० सभा। समूह।
परिष्कंद—वि० दूसरे से पाला-हुआ।
परिष्कार—पु० सफ़ाई। शोभा
परिष्क्रिया—स्त्री० परिष्कार-करना। [स्वच्छ। अलकृत।
परिष्कृत—वि० सुसंस्कृत।
परिष्टोम—पु० हाथी का पीठ की गद्दी। [गन।
परिष्वंग—पु० रमण, आलिं-
परिसख्या—स्त्री० गणना।
परिसर—पु० पर्वत, नदी आदि के समीप की भूमि। निकास। कगर।
परिसर्प—पु० पर्यटन।
परिसीमा—स्त्री० चौहद्दी।
परिसेवना—स्त्री० विशेष सेवा।
परिस्तान—पु० (फ़ा०) परियों का देश।
परिस्पर्द्धा—स्त्री० होड़।
परिस्फुट—वि० अच्छी तरह खिला हुआ। प्रकट।
परिस्यंद—पु० माला आदि का बनाना।
परिस्राव—पु० टपकना।
परिस्रुता—स्त्री० शराब।
परिहँस—पु० ईर्ष्या।
परिहत—वि० मरा हुआ।
परिहरण६—पु० बल-पूर्वक-छीनना। त्याग।
परिहस—पु० हँसी।
परिहार—पु० त्याग।
परिहारना—सक्रि० मारना, प्रहार करना।
परिहार्य—वि० त्याज्य।
परिहास—पु० हँसी-ठट्ठा। ईर्ष्या।
परिहित—वि० आच्छादित।
परिहृत—वि० परिहरण-किया हुआ।
परी—स्त्री० अप्सरा। सुंदरी
परीक्षक१४—पु० परीक्षा-करने वाला।
परीक्षण६—पु० इम्तहान।
परीक्षा—स्त्री० इम्तहान, जाँच।
परीक्षित—वि० जाँचा हुआ। पु० एक राजा जो अभिमन्यु के पुत्र थे। [योग्य।
परीक्ष्य—वि० परीक्षा के-
परीखना—सक्रि० जाँच करना।
परीख्वान—पु० (फ़ा०) मंत्रों द्वारा परियों और देवों को वश में करने वाला।
परीछना—सक्रि० परीक्षा-लेना। [सुन्दर।
परीज़ाद—वि० (फ़ा०) बहुत-
परीत—पु० प्रेत। [गहना।
परीबंद—पु० हाथ का एक-
परीभाव—पु० अनादर।
परीरंभ—पु० आलिंगन।
परीरू—वि० (फ़ा०) बहुत-सुन्दर।
परीवाद—पु० निन्दा।
परीवार—पु० म्यान। सहायक। परिजन।
परीवाह—पु० नहर।
परीहास—पु० क्रीड़ा।

परुख३, परुष३—वि० कठोर।
परुषत्व—पु० कठोरता।
परुसना—सक्रि० परसना।
परे—अव्य० बाहर। बाद। ऊपर। [ताप। भरोसा।
परेखा—पु० परीक्षा। पश्चा-
परेड—पु० (अं०) सिपाहियों के क़वायद का स्थान।
परेत—पु० मृतक।
परेतराज—पु० यमराज।
परेता—पु० सूत लपेटने का बेलन।
परेर—पु० आकाश।
परेवा—पु० (स्त्री० परेई) कबूतर। पंडुक पक्षी।
परेश—पु० परमात्मा।
परेशान२—वि० (फ़ा०) उद्विग्न
परेष्टुका—स्त्री० बहुत बार ब्याहने वाली गाय।
परो—क्रि० वि० परसों।
परोक्ष३—पु० अनुपस्थिति। वि० अदृश्य। [भलाई।
परोपकार—पु० दूसरे की-
परोपकारी५—पु० दूसरे की भलाई करने वाला। [शब्द।
परोल—पु० सैनिकों का संकेत-
परोसना—सक्रि० परसना।
परोसा—पु० एक आदमी के खाने भर का भोजन।
परोहन—पु० सवारी तथा लादने की गाड़ी या पशु।
परोहा—पु० चरसा।
पर्जन्य—पु० बादल। इन्द्र।
पर्ण—पु० पत्ता।
पर्णकार—पु० तंबोली।
पर्णकुटी, पर्णशाला—स्त्री० झोंपड़ी।
पर्णखंड—पु० फूल न लगने वाली वनस्पति।
पर्णमणि—स्त्री० पन्ना।
पर्णमृग—पु० बन्दर।
पर्णरुह—पु० वसंत।
पर्णी—पु० पेड़।
पर्त—स्त्री० तह, परत।
पर्दनी—स्त्री० धोती।
पर्पट—पु० पापड।
पर्पटी—स्त्री० पपड़ी। मुलतानी मिट्टी।
पर्यंक—पु० पलंग।
पर्यंत—अव्य० तक।
पर्यंतभू—पु० नदी पर्वतादि के पास की भूमि।
पर्यटक—पु० पथिक।
पर्यटन—पु० भ्रमण।
पर्यवसान—पु० समाप्ति। शामिल होना। [शामिल।
पर्यवसित—वि० समाप्त।
पर्यवस्था—स्त्री० विरोध, बिगाड़।
पर्यवेक्षक—पु० निरीक्षक।
पर्यवेक्षण—पु० निरीक्षण।
पर्यस्त—वि० फेंका हुआ।
पर्याप्त—वि० काफ़ी, यथेष्ट। समर्थ। [रोकना, रक्षा।
पर्याप्ति—स्त्री० मारने से-
पर्याय—पु० समान-अर्थवाची-शब्द। सिलसिला। निर्माण
पर्यायक्रम—पु० क्रम से बढ़ती
पर्यालोचना—स्त्री० पूरी जाँच
पर्युपासक१४—पु० सेवक।
पर्युपासन—पु० सेवा।
पर्व—पु० त्योहार। पुण्यकाल। अवसर। भाग।
पर्वणी—स्त्री० पूर्णिमा। त्यौहार।
पर्वत—पु० पहाड़।
पर्वतारि—पु० इन्द्र।
पर्वती, पर्वतीय—वि० पहाड़ी
पर्वसंधि—स्त्री० अमावस्या अथवा पूर्णिमा और प्रतिपदा के बीच का समय।
पलंकषा—स्त्री० गोखरू।
पर्शु—पु० फ़रसा, कुल्हाड़ी।
पलंका—स्त्री० बहुत दूर का स्थान। (फ़ा०) शेर।
पलंग—पु० बड़ी चारपाई।
पलँगपोश—पु० पलँग पर बिछाने की चादर।
पल—पु० क्षण।
पलक—स्त्री० आँख के ऊपर का चमड़े का परदा। ढक्कन।
पलका७—पु० पलंग, सेज।
पलगंड—पु० राज, मेमार।
पलटन—स्त्री० सेना, दल।
पलटना९—अक्रि० लौटना। सक्रि० उलटना। बदलना।
पलटनियाँ—पु० सिपाही।
पलटा—पु० बदला।
पलड़ा—पु० तराज़ू का पल्ला
पलथी—स्त्री० बैठने की एक क्रिया।
पलना—अक्रि० पाला जाना पु० झूला। [तैयार करना।
पलनाना—सक्रि० जोत कर-
पलप्रिय—वि० मांसाहारी।
पलल—पु० मांस। खली। शव। राक्षस।
पलवा—पु० अंजलि।
पलवार८—पु० नाव विशेष।

पलवैया—पु०पालन-कर्ता ।
पलस्तर—पु०चूने आदि का लेप करना ।
पलहना—अक्रि०लहलहाना।
पलहा—पु० कोंपल ।
पलाँडु—पु०प्याज़।[अंचल।
पला—पु०पल । पलड़ा ।
पलातक—वि०पलने में झूलने वाला । (छोटा बच्चा) ।
पलान—पु० ज़ीन ।
पलानना—सक्रि० ज़ीन-कसना । चढ़ाई के लिये सजाना । [सांक्रि०भगाना ।
पलाना—अक्रि० भागना ।
पलानि—स्त्री०छप्पर। ज़ीन।
पलान्न—पु० पुलाव ।
पलायक—पु० भगोड़ा ।
पलायन—पु० भागना ।
पलायमान—वि० भागता-हुआ ।
पलायित—वि०भागा हुआ ।
पलाल—पु०धान आदि का-डंठल ।
पलाश—पु०टेसू। राक्षस । वि० मांसाहारी ।
पलाशिनी—स्त्री०आँबा हल्दी। राक्षसी ।
पलाशी—वि० मांसभक्षी । पु० राक्षस ।
पलिका—स्त्री० पलंग ।
पलिक्नी—स्त्री०पके केशवाली-स्त्री ।
पलित—वि०बुड्ढा । सफ़ेद ।
पलिता—स्त्री०पके केश वाली-स्त्री ।
पली—स्त्री०तेल आदि निकालने का लोहे का चम्मच ।
पलीत—वि०दुष्ट । पु० प्रेत ।
पलीता७—पु० (फ़ा०)बत्ती जिससे तोप के रंजक में आग लगाते हैं । वि०अति-क्रुद्ध ।
पलीद—वि० (फ़ा०) नीच । अशुद्ध । [भरा होना ।
पलुहना९—अक्रि० हरा-
पलेट—स्त्री० नीचे की ओर लगायी गई कपड़े की पट्टी।
पलेथन,पलोथन—पु० सूखा आटा जो रोटी बेलते समय काम में आता है ।
पलोटना—सक्रि०पैर दबाना। अक्रि० छटपटाना ।
पलोवना—सक्रि०पाँव दबाना
पल्यंक—पु० खाट, पलँग ।
पल्लव—पु०कोंपल। विस्तार। कंकड़ । [ज्ञान वाला ।
पल्लवग्राही५—पु० अधूरे-
पल्लवाद—पु० हरिण ।
पल्लवित—वि० हराभरा ।
पल्ला—पु० (फ़ा०) अंचल । तरफ़ । किवाड़ । पलड़ा । दूरी ।
पल्ली—स्त्री०कुटिया । छोटा-गाँव । विस्तुइया ।
पल्लेदार२—पु० गल्ला ढोने या तौलने वाला व्यक्ति ।
पल्वल—पु०छोटा तालाब ।
पवँरि—स्त्री०ड्योढ़ी।
पवँरिया—पु० ड्योढ़ीदार ।
पवन—पु० हवा । साँस ।
पवनकुमार—पु० हनुमान् । भीमसेन ।
पवनचक्र—पु० बवंडर ।
पवनतनय, पवनसुत—पु० हनुमान्। भीमसेन। [माता ।
पवनरेखा—स्त्री० कंस की-
पवनवाहन—पु० अग्नि ।
पवनसखा—पु०अग्नि ।
पवनायन—पु० झरोखा, खिड़की । [साँप ।
पवनाशन, पवनाशी—पु०
पवनी—स्त्री०चमार, धोबी, नाई आदि गाँव की प्रजा जो उच्च जातियों से निर्वाह के लिए कुछ पाती है ।
पवमान—पु०पवन । चन्द्रमा।
पवर—स्त्री० ड्योढ़ी । वि० प्रवर ।
पवरिया—पु० ड्योढ़ीदार ।
पवर्ग—पु०प,फ,ब,भ,म—ये पाँच वर्ण ।
पवाँर—पु० परमार ।
पवाँरना—सक्रि० फेंकना ।
पवाई—स्त्री० एक पाँव का जूता । [कराना ।
पवाना—सक्रि० भोजन-
पवि—पु०वज्र । बिजली ।
पवित्र३—वि० शुद्ध ।
पवित्रक—पु० सुतरी ।
पवित्रात्मा—वि० शुद्धात्मा ।
पवित्री—स्त्री०कुश का छल्ला
पविधर—पु० वज्र ।
पशम—स्त्री०(फ़ा०) बढ़िया मुलायम ऊन । [बना वस्त्र।
पशमीना—पु० पशम का-
पशु—पु० चौपाया, प्राणी ।
पशुता—स्त्री०, पशुत्व—पु० मूर्खता, पशुभाव ।

पशुपति—पु० शंकर जी ।
पशुपाल—पु० पशु-रक्षक ।
पशुप्रेरण—पु० गाय, भैंसों को ललकारना या खदेड़ना ।
पशुराज—पु० सिंह ।
पशुशाला—स्त्री० पशुओं के रहने का स्थान ।
पशेमान२—वि० (फ़ा०) शर्मिंदा । पछताने वाला ।
पश्चात्—अव्य० पीछे ।
पश्चात्ताप—पु० पछतावा ।
पश्चात्पद—पु० पश्चात्ताप का स्थान । पीछे क़दम न हटाने वाला । [दिशा ।
पश्चिम—पु० सूर्यास्त की ·
पश्चिमा—स्त्री० दे० 'पश्चिम' ।
पश्चिमी—वि० पश्चिम का ।
पश्चिमोत्तर—पु० पश्चिम, उत्तर का कोना ।
पश्त—पु० खंभा ।
पश्तो—स्त्री० एक भाषा ।
पश्म—स्त्री० (फ़ा०) दुशाले बनाने की बढ़िया और मुलायम ऊन । उपस्थेंद्रिय के आस पास के बाल । तुच्छ वस्तु ।
पश्यतोहर—पु० सामने से चोरी करने वाला । उठाईगीर । सुनार ।
पष—पु० पंख । तरफ़ ।
पषा—पु० दाढ़ी ।
पषारना—सक्रि० धोना ।
पसंघा—पु० पासंग ।
पसंद—वि० (फ़ा०) जो अच्छा लगे ।
पसंदा—वि० (फ़ा०) एक प्रकार का कबाब ।
पसंदीदा—वि० (फ़ा०) अच्छा । चुना हुआ ।
पस—अव्य० (फ़ा०) बस । इसलिए । पीछे । अन्त में ।
पसनी—स्त्री० चटावन ।
पसर—पु० अर्द्धांजलि । फैलाव
पसरना१—अक्रि० फैलना ।
पसरहट्टा—पु० पसारियों की दूकानों का बाज़ार ।
पसराना—सक्रि० फैलवाना ।
पसरौंहा७—वि० फैलने वाला ।
पसली—स्त्री० पाँजर की हड्डी
पसही—पु० चावल विशेष ।
पसाउ—पु० प्रसाद, प्रसन्नता ।
पसाना—सक्रि मांड निकालना । अक्रि० प्रसन्न होना ।
पसारना—सक्रि० फैलाना । बढ़ाना ।
पसारा—पु० फैलाव प्रपंच ।
पसाव—पु० माँड़ । प्रसाद ।
पसावन—पु० माँड़ ।
पसाहनि—स्त्री० अंगराग ।
पासित—वि० बँधा हुआ ।
पसीजना—अक्रि० पसीना-निकलना । दयार्द्र होना ।
पसीना—पु० परिश्रम के कारण शरीर से निकला हुआ पानी ।
पसूजना—सक्रि० सीना ।
पसेव—पु० पसीना । पसीजा-हुआ जल ।
पसोपेश—पु० (फ़ा०) सोच-विचार, दुविधा ।
पस्त२—वि० (फ़ा०) हारा-हुआ । नीच ।
पस्तक़द—वि० (फ़ा०) नाटा ।
पस्तहिम्मत—वि० (फ़ा०) कायर ।
पहँ—अव्य० पास । से ।
पहँसुल—स्त्री० साग काटने-का हँसिया की तरह का एक औज़ार ।
पह—स्त्री० पौ, किरण ।
पहचान—स्त्री० परिचय । चिह्न
पहचानना—सक्रि० जानना ।
पहटना—सक्रि० पीछा करना ।
पहन—पु० पहनाव । पत्थर ।
पहनना१—सक्रि० शरीर पर धारण करना ।
पहनवाना—सक्रि० दूसरे से पहनाने का काम कराना ।
पहनाई—स्त्री० पहनने का काम या ढंग ।
पहनावा—पु० पोशाक ।
पहपट—स्त्री० शोरगुल । गीत । निन्दा । धोखा ।
पहर—पु० तीन घंटे का समय
पहरना१—सक्रि० धारण-करना ।
पहरा—पु० रखवाली ।
पहराइत—पु० चौकीदार ।
पहरावनी—स्त्री० पोशाक जो दान या सम्मान के रूप में मिले ।
पहरावा—पु० पोशाक ।
पहरुआ, पहरू—पु० पहरेदार ।
पहल—पु० बग़ल । तह । धुनी हुई रुई ।
पहलवान२—पु० (फ़ा०) कुश्तीबाज़ । मल्ल ।
पहला—वि० प्रथम ।

कुश्तीबाज़। मल्ल।
पहला—वि० प्रथम।
पहलू—पु० (फ़ा०)पार्श्व। बाज़ू। पक्ष।
पहले—अव्य आरंभ में।
पहलेपहल—अव्य०सर्वप्रथम।
पहलौंठा७—वि० जो पहली बार गर्भ से उत्पन्न हो।
पहाँटना—सक्रि०तेज़ करना।
पहाड़—पु० पर्वत। भारी-ढेर। कठिन कार्य।
पहाड़ा—पु० गुणन-सूची।
पहाड़ी—स्त्री० छोटा पहाड़। वि० पहाड़ का।
पहिचानना—सक्रि० दे० 'पहचानना'। [हुई दाल।
पहित, पहिती—स्त्री० पकी-
पहियाँ—अव्य० पास।
पहिया—पु० चक्का। चक्कर।
पहीति—स्त्री०पका हुई दाल
पहुँच—स्त्री० पैठ, प्रवेश। शक्ति। जानकारी।
पहुँचना—अक्रि० चल कर उपस्थित होना। प्रवेश-करना।
पहुँचा—पु० कलाई।
पहुँचाना—सक्रि०ले जाना। भेजना।
पहुँची—स्त्री० कलाई पर का एक आभूषण।
पहु—स्त्री०पौ।
पहुना—पु० मेहमान।
पहुनाई—स्त्री०मेहमानदारी।
पहुप—पु० फूल।
पहुम, पहुमी—स्त्री० पृथ्वी।
पहुला—पु० कुमुदिनी।
पहेली—स्त्री० गूढ़-प्रश्न। बुझौवल।
पाँ, पाँइ, पाँऊँ—पु० पैर।
पाँक—पु० पंक, कीचड़।
पाँख, पाँखड़ा—पु० पंख।
पाँखी—स्त्री०पतिंगा। पक्षी।
पाँखुरी—स्त्री० पुष्प दल।
पाँग—पु० कछार, खादर।
पाँगुर—वि० लँगड़ा।
पाँच—वि०५।
पाँचजन्य—पु० श्रीकृष्ण या विष्णु का शंख।
पांचाल—पु० पंजाब देस। वि० पंजाबी। [गुड़िया।
पांचालिका—स्त्री० द्रौपदी।
पांचाली—स्त्री० द्रौपदी। गुड़िया।
पाँची—स्त्री० पच्चीकारी।
पाँचैं—स्त्री० पंचमी।
पाँजना—सक्रि० बर्त्तन में टाँका लगाना।
पाँजर—पु० पँसली। पंजर।
पाँजी—स्त्री० नदी का सूख-जाना।
पाँडर—पु०कुन्द। सफ़ेदरंग।
पांडव—पु०पांडुकेपाँचोंपुत्र।
पांडवनगर—पु० दिल्ली।
पांडवायन—पु० श्रीकृष्ण।
पांडित्य—पु० विद्वत्ता।
पांडु—पु० लाली लिए पीला रङ्ग। एक रोग। पांडवों के पिता।
पांडुक—पु० पंडुक।
पाँडुर—वि० पीला। सफ़ेद। पु० सफ़ेद कोढ़।
पांडुलिपि—स्त्री० लेख आदि का प्रथम रूप, मसविदा।
पांडुलेख—पु० मसौदा।
पाँड़े, पांडेय—पु० ब्राह्मणों की एक जाति।
पाँति—स्त्री० पंक्ति।
पाँथ—पु० पथिक।
पांथनिवास—पु० सराय।
पांथशाला—स्त्री० सराय।
पाँयँता—पु० खाट का वह भाग जिधर पैर किये जाते हैं।
पाँय—पु० पैर।
पाँवड़ा—पु० पायंदाज़।
पाँवडी—स्त्री०खड़ाऊँ। जूता।
पाँवर—वि० पामर, नीच।
पाँवरी—स्त्री० खड़ाऊँ। जूता। सीढ़ी। ड्योढ़ी। [खाद।
पांशु—स्त्री०धूल। गोबर की-
पांशुका—स्त्री० धूलि। रजस्वला स्त्री। [लंपट।
पांशुल—वि० धूलिमय।
पांशुला—स्त्री०व्यभिचारिणी।
पाँस—स्त्री० खाद।
पाँसा—पु० चौसर खेलने के चौपहल टुकड़े। [जाल।
पाँसी—स्त्री० डोरी का बना-
पासु, पाँसुरा—स्त्री०पसली।
पांसुचामर—पु० तंबू।
पाहीं—क्रि० वि० पास।
पा, पाइ, पाउँ—पु० पाँव।
पा—प्रत्य० (फ़ा०) तक।
पाअंदाज़—पु० (फ़ा०) पैर पोंछने का बिछावन।
पाइक—पु० पायक, दूत।
पाइका—पु० (अं०) एक प्रकार का टाइप

पाइप—पु०(अं०) पानी की-कल।
पाइरा—पु० रकाब।
पाइल—स्त्री० पायज़ेब।
पाई—स्त्री०एक सिक्का। लकीर।
पाउंड—पु० (अं०) बीस शिलिंग का एक अंग्रेज़ी-सिक्का। आधा सेर की तौल।
पाउ—पु० चौथाई।
पाउडर—पु०(अं०) बुकनी।
पाक—पु०पकाने की क्रिया। एक दैत्य। चिड़िया का बच्चा। बच्चा। वि० (फ़ा०) शुद्ध, ख़ालिस, पवित्र, स्वच्छ।
पाकक्षार—पु० जवाखार।
पाकदामन—वि० स्त्री० (फ़ा०) सती।
पाकना—अक्रि० पकना।
पाकपुटी—स्त्री० चूल्हा। भट्टी
पाकफल—पु० करौंदा।
पाकबाज़—वि० (फ़ा०) सच्चरित्र।
पाकर—पु०पाकड़ का पेड़।
पाकशाला—स्त्री० रसोईघर।
पाकशासन—पु० इन्द्र।
पाकशासनि—पु० इन्द्र का पुत्र।
पाकस्थली—स्त्री० पक्काशय।
पाकस्थान—पु० रसोईघर।
पाकस्थाली—स्त्री० बटलोई।
पाकहंता—पु० इन्द्र।
पाका—पु० फोड़ा। वि० पका हुआ।
पाकी—स्त्री० (फ़ा०) पवित्रता। उपस्थ पर के बाल।
पाकीज़ा—वि० (फ़ा०) पवित्र
पाकेट—पु० (अं०) जेब।
पाक्य—पु० खारी नमक।
पाक्या—स्त्री० सज्जी।
पाक्षिक—वि० पाख का। तरफ़दार।
पाखंड—पु०ढोंग।
पाखंडी—वि० ढोंगी।
पाख—पु० पखवाड़ा।
पाखर—स्त्री०लोहे की झूल।
पाखरी—स्त्री० गाड़ी में अनाज के नीचे बिछाने का टाट।
पाखा—पु०कोना। पाख। पंख
पाखान—पु० पत्थर।
पाख़ाना—पु० मल। मल-त्याग का स्थान।
पाग—स्त्री०पगड़ी।चाशनी।
पागना—सक्रि० चाशनी में डुबाना [उन्मत्त।
पागल१—वि० बावला,
पागलख़ाना—पु० पागलों का चिकित्सालय।
पागलिनी—स्त्री० पगली स्त्री
पागुर—पु० जुगाली।
पाचक—पु०रसोइया। पचाने वाली ओषधि। पाचन की अग्नि। [हाज़मा।
पाचन—पु० पचाने की क्रिया,
पाचयिता—पु० रसोइया।
पाचिका—स्त्री०रसोई बनाने वाली।
पाच्य—वि० पचाने-योग्य।
पाछना—सक्रि०टीका लगाना
पाछिल—वि० पिछला।
पाछु—पु० पीछा।
पाज—पु० पार्श्व।
पाजामा—पु० सुथना।
पाजी—पु० पैदल सिपाही। रक्षक। वि० दुष्ट।
पाज़ेब—स्त्री० (फ़ा०) स्त्रियों के पैर का एक गहना।
पाटंबर—पु० रेशमी-वस्त्र।
पाट—पु० रेशम। वस्त्र। गद्दी। पीढ़ा। चौड़ाई। बालों की पटियाँ।
पाटच्चर—पु० चोर।
पाटन—स्त्री० पटाव।
पाटना—सक्रि० गड्ढा भरना। छत छाना।
पाटमहादेई—स्त्री० पटरानी।
पाटमहिषी—स्त्री०पटरानी।
पाटल—पु०एक पुष्प वाला-पौधा। [प्रकार का सोना।
पाटला—पु० पल्ला। एक-
पाटलि-पुत्र—पु०पटनानगर।
पाटव—पु० पटुता। दृढ़ता।
पाटवी—वि० रेशमी। पटरानी से उत्पन्न।
पाटा—पु० पीढ़ा।
पाटी—स्त्री० पंक्ति। रीति। तख्ती। बालों की पटियाँ। चारपाई की पट्टी।
पाटीर—पु० चन्दन विशेष।
पाठ—पु० सबक़। अध्याय। पढ़ना। होम। [पढ़ने वाला।
पाठक१४—पु० पढ़ाने वाला।
पाठन—पु० पढ़ाना।
पाठना—सक्रि० पढ़ाना।
पाठशाला—स्त्री० मदरसा।
पाठांतर—पु० अन्य पाठ।

पाठा—वि० मोटा-ताज़ा।
पाठिका—स्त्री०पढ़ाने वाली।
पाठी—पु०पाठ करने वाला।
पाठीन—पु०मछली विशेष।
पाठ्य—वि० पढ़ने-योग्य।
पाड़—पु०मचान। किनारा।
पाड़ा—पु० महल्ला।
पाढ़—पु० पीढ़ा। खेत का
मचान। स्त्री० किनारा।
पाढ़र—पु० एक वृक्ष। वि०
किनारदार।
पाढ़ा—पु० चित्रमृग।
पाणि—पु०हाथ। [हुई स्त्री।
पाणिगृहीती—स्त्री० ब्याही·
पाणिग्रहण—पु० विवाह।
पाणिघ—पु० ताली बजाना।
पाणिज—पु०उँगली। नख।
पाणिनि—पु०संस्कृत व्या-
करण के रचयिता एक मुनि।
पाणिपीड़न—पु० विवाह।
पाणिमूल—पु० कलाई।
पाणिरुह—पु० नाख़ून।
पाणिवाद-पु० ताला बजाना।
पातंजल—वि० पतंजलि-
निर्मित योग-दर्शन।
पात—पु०पतन। नाश। पत्ता।
पातक—पु० पाप।
पातकी—वि० पापी।
पातन—पु० गिराना।
पातर—स्त्री० पत्तल। वेश्या।
वि० क्षुद्र।
पातशाह—पु० बादशाह।
पाता—पु० पत्ता। रक्षक।
पीने वाला।
पाताखत—पु० छोटी मोटी-
भेंट। पत्र और अक्षत।
पाताबा-पु० (फ़ा०) मोज़ा।
पाताल—पु० पृथ्वी के नीचे
का लोक। [चिट्ठी।
पाति, पाती—स्त्री० पत्ती।
पातिव्रत, पातिव्रत्य—पु०
पतिव्रता होने का भाव।
पाती—स्त्री० चिट्ठी। पत्ती।
पातुक—वि० पतनशील।
पातुर, पातुरि—स्त्री०वेश्या।
पात्र—पु० आधार। बरतन।
पत्ता। अभिनेता। [योग्यता।
पात्रता—स्त्री० पात्र होने की-
पात्रिय—वि० सहभोजी।
पाथ-पु० जल। मार्ग।
सूर्य। अग्नि। आकाश।
वायु। पत्थर।
पाथना—सक्रि० थोपना।
पाथेय—पु०रास्ते का कलेवा।
पाथोज—पु०कमल।
पाथोद—पु० मेघ।
पाथोधि—पु० समुद्र।
पाद—पु० चरण। पद्य का
चतुर्थांश। अधोवायु।
पादकंटक—पु० घूँघरू।
पादग्रहण—पु०नाम गोत्रादि
पूर्वक प्रणाम करना।
पादग्रंथि—स्त्री० गुल्फ।
पादज—पु० शूद्र।
पादटीका—स्त्री० फ़ुटनोट।
पादतल-पु० पैर का तलवा।
पादत्र, पादत्राण—पु०जूता।
खड़ाऊँ।
पादप—पु० वृक्ष।
पादपद्धति—स्त्री० पगडंडी।
पादपीठ-पु० पीढ़ा, खड़ाऊँ।
पादपूरण-पु० पद्य के किसी
चरण की पूर्ति करना।
पादप्रहार—पु०लात मारना।
पादबंधन—पु० घर में बाँधने
लायक़ गाय, भैंस आदि।
पादरी—पु० ईसाई धर्म के
गुरु। [बादशाह।
पादशाह—पु० (फ़ा०)
पादस्फोट—पु०पैर की बिवाई
पादांगद—पु० पैर का गहना
पादाक्रांत-वि० पैर से कुचला
हुआ।
पादात—पु० पैदल-समूह।
पादाति, पादातिक—पु०
पैदल-सिपाही।
पादुका—स्त्री० खड़ाऊँ।
पादू—पु० जूता।
पादूकृत—पु० चमार।
पादोदक—पु० चरणोदक।
पाद्य—पु० पैर धोने का जल
पाद्यार्घ्य—पु० पैर धोने का
पानी। भेंट।
पाधा—पु०पुरोहित, आचार्य
पान—पु० पीना। पानी।
तांबूल। [की मंडली।
पानगोष्ठी—स्त्री० शराबियों-
पानदान—पु०पान रखने का
डिब्बा। [प्याला।
पानपात्र—पु० शराब का-
पानभाजन—पु० कटोरा।
पानरा—पु० पनाला।
पानही—स्त्री० जूता।
पाना—सक्रि० हासिल करना
पानात्यय—पु० रोग विशेष।
पानि—पु०हाथ। 'आब' पानी
पानिप—पु० चमक, आब।
पानी।

पानी—पु० जल। आब, चमक। हाथ। वर्षा। लज्जा। मान। हिम्मत।
पानीदार—वि० आबदार। इज़्ज़तदार।
पानीदेवा—वि० तर्पण करने वाला। वंशज।
पानीफल—पु० सिंघाड़ा।
पानीय—पु० पानी। वि० पीने के योग्य।
पानीयशाला—स्त्री० पियाऊ।
पानीयशालिका—स्त्री० पानी पिलाने का स्थान, पियाऊ।
पानौरा—पु० पान की पकौड़ी
पान्यो—पु० पानी।
पाप—पु० गुनाह, पातक।
पापकर्मा, पापकर्मी५—वि० पापी। [दायक ग्रह।
पापग्रह—पु० ख़राब फल-
पापचेली—स्त्री० पेठा।
पापघ्न—वि० पाप-नाशक।
पापचारी—वि० पापी।
पापड़—पु० उर्द अथवा मूँग के आटे की बनी एक प्रकार की मसालेदार चपाती।
पापयोनि—स्त्री० पाप से प्राप्त होने वाली नीच योनि।
पापलोक—पु० नरक।
पापहर, पापहा—पु० पाप-नाशक।
पापाचार८—पु० दुष्कर्म।
पापात्मा—वि० पापी।
पापिष्ठ४—वि० बड़ा पापी।
पापी५—वि० पापकरनेवाला।
पापीयसी—स्त्री० पापिनी।

पापोश—पु० (फ़ा०) जूता।
पाप्यादा—वि० (फ़ा०) पैदल।
पाबंद—वि० (फ़ा०) बँधा-हुआ, क़ैद।
पाबंदी—स्त्री० (फ़ा०) मजबूरी।
पामन—पु० जिसके खुजली हो।
पामर३—वि० नीच, कमीना।
पामरा७—पु० पायंदाज़।
पामा—स्त्री० खुजली।
पामाल२—वि० (फ़ा०) पैर से कुचला हुआ, बरबाद।
पायँ—पु० पाँव।
पायँजेहरि—स्त्री० पाजेब।
पायँता, पायँती—पु० पैताना।
पायंदाज़—पु० (फ़ा०) पाँव पोंछने का बिछावन।
पाय—पु० (फ़ा०) पैर।
पायक—पु० (फ़ा०) दूत। सेवक। [गहना।
पायजेब—स्त्री० पाँव का एक-
पायड़ा—पु० रक़ाब।
पायतख़्त—पु० (फ़ा०) राज-धानी।
पायतन—पु० पैताना।
पायताबा—पु० (फ़ा०) मोज़ा।
पायदार२—वि० (फ़ा०) मज़-बूत, दृढ़। [बरबाद।
पायमाल२—वि० (फ़ा०)
पायरा—पु० रक़ाब।
पायल—स्त्री० नूपुर।
पायस—स्त्री० खीर।
पायसा—पु० पड़ोस।
पाया—पु० (फ़ा०) खंभा। पद, दरजा। सीढ़ी। खाट व चौकी का आधार।

पायाब—त्रि० (फ़ा०) कमगहरा।
पायु—पु० गुदा।
पारंगत—पु० पार पहुँचा हुआ। पूर्ण-पंडित।
पार—पु० दूसरा किनारा।
पारई—स्त्री० बड़ा कसोरा।
पारख—स्त्री० पहिचान। पु० पारखा।
पारखद—पु० अनुचर।
पारखी—पु० जाँचने वाला।
पारग—वि० पार जाने-वाला। समर्थ।
पारगत—वि० दे० 'पारंगत'।
पारचा—पु० (फ़ा०) धज्जी। वस्त्र। [दिन का भोजन।
पारण—पु० व्रत के अगले-
पारतंत्र्य—पु० पराधीनता।
पारत्रिक—वि० पारलौकिक।
पारद—पु० पारा।
पारदर्शक—वि० जिसमें आर-पार दिखाई दे।
पारदर्शी—वि० दूरदर्शी, चतुर।
पारधिपति—पु० कामदेव।
पारधी—पु० धनुष चलाने वाला। बहेलिया।
पारना—सक्रि० गिरा देना।
पारमार्थिक—त्रि० परमार्थ-संबंधी। [संबंधी।
पारलौकिक—त्रि० परलोक-
पारशव—पु० अन्य स्त्री से उत्पन्न पुत्र। लोहा। वि० लोहे का बना।
पारश्वधिक—पु० फ़रसा-बाँधने वाला।
पारषद्—पु० अनुचर।

पारस—पु० एक पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। परसा हुआ-भोजन। क्रि० वि० समीप। पु० (फ़ा०) फ़ारस देश। [साधु।
पारसा—वि० (फ़ा०) भला,
पारसाई—स्त्री० साधुता,नेकी
पारसी—पु० पारस देश का निवासी।
पारस्परिक—वि०आपस का।
पारा—पु०एक धातु। (फ़ा०) खंड। भेंट।
पारायण—पु० निश्चित-समय में किसी पाठ का पूरा करना।
पारावत—पु० कबूतर।
पारावार—पु० आर-पार। सीमा। समुद्र।
पाराशर—पु० पराशर का-वंशज। व्यास।
पाराशरी—पु० संन्यासी।
पारि—स्त्री०सीमा। दिशा। मेंड़।
पारिकांक्षी५—पु० तपस्वी।
पारिख—स्त्री० पहचान। पु० पारखी।
पारिजात, पारिजातक—पु० हरसिंगार। एक देव वृक्ष।
पारितथ्या—स्त्री० चोटी का गहना।
पारितोषिक—पु० इनाम।
पारिपार्श्विक—पु० पास में रहने वाला नौकर।
पारिभद्र—पु० बकायन।
पारिभाषिक—वि० परिभाषा द्वारा निर्दिष्ट किया हुआ-अर्थ [विशेष।
पारियात्रिक—पु० पर्वत-
पारिषद—पु० सभासद। शिव जी का गण।
पारी—स्त्री० बारी।
पारीण—वि० पारगामी।
पारुष्य—पु० कठोरता।
पार्क—पु० (अं०) बाग़।
पार्ट—पु०(अं०)भाग, खंड।
पार्टी—स्त्री० (अं०)मंडली। दावत।
पार्थ—पु० अर्जुन। राजा।
पार्थक्य—पु० पृथक्ता, जुदाई।
पार्थव—पु० भारीपन।
पार्थिव—वि० मिट्टी का। पु० राजा। [शिवलिंग।
पार्थी—पु० मिट्टी का-
पार्वण—पु० पर्व में किया-गया श्राद्ध।
पार्वत—वि० पर्वत-संबंधी। पु० शिलाजीत। [पत्नी।
पार्वती—स्त्री० गौरी, शिव-
पार्वतीनन्दन—पु० स्वामि-कार्त्तिकेय।
पार्वतीय—वि० पहाड़ का।
पार्वनेय—वि० पहाड़ पर होने वाला।
पार्श्व—पु०बग़ल,पास। तरफ़
पार्श्वकर—पु० गत साल का अवशिष्ट कर।
पार्श्वग—पु० साथी।
पार्श्वभाग—पु० हाथी की बग़ल। [वाला।
पार्श्ववर्त्ती५—पु०पास रहने-
पार्श्वस्थ—वि० पास बैठा हुआ।
पार्षद—पु० मुसाहब। पास रहने वाला अनुचर।
पार्ष्णि—स्त्री० एड़ी।
पार्सल—पु०(अं०) पुलिंदा। गठरी।
पाल—पु० नाव चलाने का चौड़ा वस्त्र। मेंड। चँदोवा। फल पकाने की एक रीति। रक्षक।
पालउ, पालव—पु० पत्ता।
पालक—पु० रक्षक। पलंग। एक साग।
पालकी—स्त्री० डोली।
पालघ्न—पु० पानी का तण।
पालतू—वि० पाला हुआ।
पालनद्—पु० परवरिश।
पालना—सक्रि० परवरिश-करना। पु० झूला। बच्चों को झूलने में सुलाते समय का गीत।
पालव—पु० पत्ता।
पाला—पु० तुषार।
पालागन—स्त्री० प्रणाम।
पालान—पु० (फ़ा०) घोड़े की पीठ पर ज़ीन के नीचे का कपड़ा। [सफ़ाई।
पालायश—स्त्री० (फ़ा०)
पालाश—वि० हरे रंग का।
पालि—स्त्री० पंक्ति, सेना। मेंड़। किनारा। सीमा। गोद।
पालिटिक्स—पु० (अं०) राजनीति।
पालित—वि० पाला हुआ।
पालिश—स्त्री०(अं०) रोग़न।

चमक और चिकनाई।
पालिसी—स्त्री०(अं०)नीति।
पाली—स्त्री० एक प्राचीन-भाषा।
पालू—वि० पालतू।
पाले—क्रि० वि० चंगुल में।
पावँड़ा—पु० पायंदाज़।
पाव—पु० चौथाई। चार-छटाँक। [पवित्रकर्त्ता।
पावक—पु०आग। वि०
पावदान—पु० पैर रखने का स्थान। [अग्नि। शुद्धि।
पावन—वि० पवित्र। पु०
पावना—पु० लहना।
पावली—स्त्री० चवन्नी।
पावस—स्त्री० वर्षाऋतु।
पावा—पु० पाया।
पाशद—पु० फंदा। फाँसी। (फ़ा०) फटना, टुकड़ा।
पाशक—पु०पासा। जल्लाद।
पाशव—वि० पशु-संबंधी।
पाशित—वि० बँधा हुआ।
पाशी—पु० वरुण।
पाशुपत—पु० शैव।
पाशुपाल्य—पु० पशुओं का पालन करना।
पाश्चात्य—वि०पश्चिम का।
पाषाण—पु० पत्थर।
पाषाणी—स्त्री० पत्थर का बटखरा।
पासंग—पु० (फ़ा०) पसंघा।
पास—पु० (फ़ा०) बग़ल। निकटता। (अं०) अधि-कार-पत्र।
पासदार२—पु०(फ़ा०)रक्षक।
पासनी—स्त्री० अन्नप्राशन।
पासपोर्ट—पु० (अं०) एक अधिकार-पत्र जो विदेश जाने वालों को सरकार की ओर से मिलता है।
पासबान—पु० (फ़ा०)चौकी-दार।
पासबुक—स्त्री० (अं०) लेन-देन का हिसाब रखने की पुस्तक। [वाला सेवक।
पासवान—पु०साथ में रहने-
पासा—पु० चौपड़ खेलने के चौपहले टुकड़े।
पासासार—पु०पासे का खेल।
पासि, पासिक—पु० फंदा।
पासी—पु०एकअछूत जाति। स्त्री०फंदा।
पासुरी—स्त्री० पसली।
पाहन—पु० पत्थर।
पाहरू—पु० पहरेदार।
पाहिं—अव्य० पास।
पाहि—वाक्य०रक्षा करो।
पाहुनार—पु० मेहमान।
पाहुर—पु० भेंट। बैना।
पिंग—वि०पीला भूरा सा।
पिंगल—वि० पीला। पु० छंदःशास्त्र। बंदर। अग्नि। एक पक्षी। [एक पक्षी।
पिंगला—स्त्री० एक नाड़ी।
पिंगाक्ष—पु० शिवजी।
पिंगूर—पु० हिंडोला।
पिंज—पु० वध, विनाश।
पिंजड़ा—पु० पक्षियों के रहने का लोहे आदि की तीलियों का बना घर।
पिंजन—पु० धुनकी।
पिंजर—पु०पिंजड़ा। अस्थि-पंजर। सोना। वि०पीला। भूरापन लिए लाल।
पिंजरापोल—पु० पशुशाला।
पिंजूल—पु० बत्ती, मशाल।
पिंजूष—पु०टिटारा।
पिंड—पु० गोला। लौंदा। ढेर। शरीर।
पिंडक—पु० लोबान।
पिंडकार—पु० नियत कर।
पिंडखजूर—पु० एक मीठा फल। [होने वाला जीव।
पिंडज—पु०पिंडके रूप में पैदा
पिंडदान—पु० पितरों को श्राद्ध में पिंड देने का कार्य।
पिंडरोग—पु० कोढ़।
पिंडली—स्त्री० घुटने के नीचे टाँग का पिछला मांसल-भाग।
पिंडा—पु० सूत आदि का गोला। खीर का लौंदा।
पिंडिका—स्त्री० पिंडली। वेदी।
पिंडित—वि० राशिकृत।
पिंडी—स्त्री० लौंदा। सूत आदि का गोला। बलिवेदी।
पिंडीशूर—वि० पेटू, खाऊ।
पिंडोल—पु० पोता मिट्टी।
पिअराई—स्त्री० पीलापन।
पिअरी—स्त्री०हल्दी में रँगी हुई धोती।
पिउ—पु० पति।
पिक७—पु० कोयल। पपीहा।
पिकबैनी—स्त्री० मिष्टभा-षिणी स्त्री।
पिकांग—पु० चातक-पक्षी।
पिकी—स्त्री० कोयल।

पिकेटिंग—स्त्री०(अं०)धरना-देना। [तस्वीर।
पिक्चर—स्त्री०(अं०)
पिघलाना१—अक्रि०गलना। रसना।
पिचंड—पु० पेट। [वाला।
पिचंडिल—वि० बड़े पेट-
पिचकना९—अक्रि०दबना।
पिचकारी—स्त्री० पानी खींच कर फेंकने वाली नली।
पिचकी—स्त्री० पिचकारी।
पिचपिचा—वि० चिपचिपा।
पिचास—पु० पिशाच।
पिचु—स्त्री० रुई।
पिचुमद—पु०नीम का वृक्ष।
पिचुल—पु०झाऊ।
पिचूका—पु० पिचकारी।
पिच्छ—पु०पूँछ। मोरपंख।
पिच्छल४—वि० चिकना, रपटने वाला। [रहना।
पिछड़ना९—अक्रि० पीछे-
पिछलगा७—पु० अनुयायी।
पिछला७—वि० पीछे का।
पिछवाडा—पु० मकान के पीछे का भाग। [भाग।
पिछाड़ी—स्त्री०पीछे का-
पिछुआर—पु० पीछे का-हिस्सा। [की ओर।
पिछौहैं—क्रि० वि० पीछे-
पिछौरा७—पु०चादर।
पिटत—स्त्री० पिटाई।
पिट—पु० टोकरी।
पिटक—पु० फोड़ा।
पिटना—अक्रि०मार खाना।
पिटपिटाना—अक्रि० लाचार होकर रह जाना।
पिटवाना—सक्रि० पिटाने का काम दूसरे से कराना।
पिटाई—स्त्री०पीटने का काम या मज़दूरी। प्रहार।
पिटारा७—पु०पेटी।
पिटीशन—स्त्री०(अं०) अर्ज़ी।
पिट्ठी—स्त्री०भिगो कर पीसी हुई दाल। [लगा।
पिट्ठू—पु०समर्थक। पिछ-
पिठर—पु० बटलोई।
पिठौरी—स्त्री०पीठी की बरी
पिड़किया—स्त्री० गुझिया नामक पकवान। फुंसी।
पिड़की—स्त्री०फुड़िया,फुंसी।
पितर—पु०पुरखा।
पितरायँध—स्त्री० पीतल का कसाव।
पिता—पु०बाप।
पितामह७—पु०दादा। ब्रह्मा
पितिया—पु०चाचा।
पितृ—पु० पिता।
पितृकर्म—पु० श्राद्धकर्म।
पितृकानन—पु० श्मशान।
पितृतिथि—स्त्री० अमावस्या।
पितृदान—पु० पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला दान। [का कृष्ण-पक्ष।
पितृपक्ष—पु०आश्विन मास-
पितृपति—पु० यमराज।
पितृपद—पु० पितर-लोक। यमराज।
पितृपिता—पु० दादा।
पितृवन—पु०श्मशान।
पितृव्य—पु० चाचा।
पितृष्वसा—स्त्री० पिता की बहिन, बुआ।
पित्त—पु०एक द्रव पदार्थ जो शरीर के यकृत् में बनता है।
पित्तज्वर—पु० वह ज्वर जो पित्त की प्रबलता से उत्पन्न होता है।
पित्तल—पु०पीतल। हरताल। वि० पित्तवर्धक।
पित्ताशय—पु० पेट के भीतर पित्त का स्थान।
पित्ती—स्त्री०एक रोग जिसमें देह पर लाल ददोरे पड़ जाते हैं।
पित्र्य—वि० पितृ-संबंधी।
पिदर—पु०(फ़ा०)पिता।
पिदरी—वि० (फ़ा०) पिता का।
पिद्दी—स्त्री०एक पक्षी।
पिधान—पु० ढकना। आवरण, पर्दा।
पिधानक—पु०कोष। म्यान।
पिधायक—पु० ढक्कन।
पिन—स्त्री० (अं०)आलपीन।
पिनच—पु०दे०'पनच'।
पिनकना—अक्रि० ऊँघना।
पिनपिनाना—अक्रि० धीमे और अनुनासिक स्वर में रोना। [पोशीदा।
पिनहाँ—वि० (फ़ा०)
पिनाक—पु० शिव-धनुष। धनुष।
पिनाकी—पु० शिव।
पिपरमिंट—पु० (अं०) एक-औषध। [जड़।
पिपरामूल—पु०पिप्पली की-
पिपासा—स्त्री० प्यास।

पिपासित—वि० प्यासा ।
पिपासु—वि०प्यासा । लालची
पिपियाना—अक्रि० मवाद पैदा होना ।
पिपीलिका—स्त्री० चींटी ।
पिप्पल७—पु०पीपल का वृक्ष
पिय, पिया—पु० प्रिय । पति ।
पियर—वि० पीला ।
पियरई, पियराई—स्त्री० पीलापन । [पड़ना ।
पियराना—अक्रि० पीला-
पियल्ला—पु० दूध पीता बच्चा
पिया—पु० प्रिय, स्वामी ।
पियानो—पु० (अं०) एक-बाजा । [वाला पौधा ।
पियाबाँसा—पु० एक फूल-
पियाल—पु० चिरौंजी का पेड़ ।
पियासी—स्त्री० एक मछली ।
पिरकी—स्त्री० फुड़िया, फुंसी
पिराई—स्त्री० पीलापन ।
पिराक—पु० एक पकवान ।
पिराना—अक्रि० दुखना ।
पिरीता—वि० प्यारा ।
पिरोजन—पु० कर्णवेध-संस्कार । [नामक पत्थर ।
पिरोजा—पु० 'फ़ीरोज़ा'-
पिरोना—सक्रि० गूँथना ।
पिलकना—सक्रि० गिराना ।
पिलकिया—स्त्री० एक पीली-चिड़िया ।
पिलना—अक्रि० ज़ोर से झपटना, झुक पड़ना ।
पिलपिला—वि० बहुत नरम ।
पिलपिलाना—सक्रि० रस के लिए दबाना ।
पिलाना—सक्रि० पान कराना
पिल्ला—पु० कुत्ते का बच्चा ।
पिल्लू—पु० एक छोटा कीड़ा ।
पिव—पु० दे० 'पिय' ।
पिशंग—पु० पिंगल या भूरा रंग । [सा (पिंगल) ।
पिशंगी—वि०भूरा या पीला-
पिशवाज़—स्त्री० (फ़ा०) वेश्याओं का नाच के समय पहनने का घाघरा ।
पिशाच७—पु० भूत । दुष्ट-मनुष्य । एक निकृष्ट देव-योनि ।
पिशित—पु० मांस ।
पिशुन—पु० चुग़लखोर । दुष्ट
पिष्ट—वि० पिसा हुआ ।
पिष्टक—पु० पूरी । पुआ ।
पिष्टपचन—पु० तवा ।
पिष्टपेषण—पु० पीसे हुए को फिर से पीसना । एक ही बात को बार-बार कहना ।
पिष्टात—वि० बुक्का, चूर्ण ।
पिसनहारी—स्त्री० आटा पीसकर जीविका पैदा करने वाली स्त्री । [दब जाना ।
पिसना९—अक्रि० चूर्णहोना
पिसर—पु० (फ़ा०) बेटा ।
पिसवाज़—पु० दे०'पिशवाज़'
पिसाई, पिसौनी—स्त्री० पीसने का काम या मज़दूरी । कठिन परिश्रम । [मनुष्य ।
पिसाच—पु० पिशाच । क्रूर-
पिसान—पु० आटा ।
पिसाना—सक्रि० चूर्ण कराना
पिसी—स्त्री० सफ़ेद गेहूँ ।
पिस्तई—वि० पिस्ते के रंग का
पिस्ताँ—स्त्री० (फ़ा०) स्तन, छाती ।
पिस्ता—पु० एक मेवा ।
पिस्तौल—स्त्री० (अं०) तमंचा
पिस्सू—पु० एक छोटा कीड़ा
पिहकना—अक्रि० कुहकना ।
पिहानी—स्त्री० ढक्कन ।
पिहित—वि० छिपा हुआ ।
पींजना—सक्रि० रुई धुनना ।
पींजर,पींजरा—पु० पिंजड़ा। अस्थिपंजर ।
पी—पु० पिय । [युक्त थूक ।
पीक—पु० पान के रस से-
पीकदान७—पु० थूकने का पात्र । [का बोलना ।
पीकना—अक्रि०कोयल आदि-
पीका—पु० कोंपल ।
पीच—पु० माँड़ी ।
पीचना—सक्रि० कुचलना ।
पीछा—पु० पीछे का भाग । अनुसरण ।
पीछू, पीछे—क्रि० वि० पीठ की ओर । बाद में ।
पीटना—सक्रि० मारना ।
पीठ—पु० पीढ़ा, चौकी । पृष्ठ । केन्द्र । आँत । शरीर का पिछला भाग ।
पीठमर्द—पु० नायक का सखा विशेष । [पकवान ।
पीठा—पु० पीढ़ा । एक
पीठि—स्त्री० दे० 'पीठ' ।
पीठिका—स्त्री० पीढ़ा । परिच्छेद । मूर्त्तिका आधार ।
पीठी—स्त्री० दे० 'पिट्ठी' ।
पीड़—पु०सिर का एक गहना ।
पीड़क१४—पु० पीड़ा देने

वाला।

पीड़न६—पु० सताना। दुःख-देना।

पीड़ा—स्त्री० कष्ट, दुःख।

पीड़ित—वि० सताया हुआ।

पीड्यमान—वि० पीड़ायुक्त।

पीढ़ा—पु० काठ का आसन

पीढ़ी—स्त्री० पुश्त। वंश-परम्परा। [हुआ।

पीत३—वि० पीला। पिया-

पीतकंद—पु० गाजर।

पीतधातु—पु० गोपी-चन्दन।

पीतम—पु० प्रियतम।

पीतमणि—पु० पुखराज।

पीतल—पु० एक प्रसिद्ध धातु

पीतवास—पु० श्रीकृष्ण।

पीतांबर—पु० पीला रेशमी-कपड़ा। श्रीकृष्ण। विष्णु।

पीता—स्त्री० हल्दी।

पीताभ—वि० पीला।

पीन३—वि० मोटा, पुष्ट।

पीनक—स्त्री० नशे में ऊँघने की क्रिया। [ताजीरात।

पीनलकोर्ट—पु० (अं०)

पीनस—पु० नाक का एक रोग। पालकी।

पीना—सक्रि० पान करना।

पीनोघ्नी—स्त्री० बड़े आयन वाली गाय।

पीप, पीब—स्त्री० मवाद।

पीपरपर्न—पु० एक कर्ण-भूषण।

पीपल—पु० एक वृक्ष।

पीपलामूल—पु०एक ओषधि।

पीपा—पु० ढोल के आकार का पात्र।

पीय—पु० प्रिय, पति।

पीयूष—पु० अमृत।

पीयूषभानु—पु० चन्द्रमा।

पीर—स्त्री० पीड़ा। पु० (फ़ा०) मुसलमानों के धर्म-गुरु। सोमवार। [का वंशज।

पीरज़ादा—पु० (फ़ा०) पीर

पीरना—सक्रि० पेलना।

पीरमुरशिद—पु० (फ़ा०) महात्मा।

पीराई—पु० (फ़ा०) पीरों के गीत गाने वाले मुसलमान जो बाजा बजाते हैं।

पीरी—स्त्री० (फ़ा०) बुढ़ापा।

पील—पु० (फ़ा०) हाथी। शतरंज की एक गोट।

पीलपाँव—पु० पाँव फूल जाने का रोग।

पीलपाया—पु० (फ़ा०) हाथी का पैर। बड़ा खंभा।

पीलपाल, पीलवान—पु० (फ़ा०) महावत।

पीलसोज़—पु० चिराग़दान।

पीला७-१—वि० सोने के रंग का। कांतिहीन। पु० (फ़ा०) हाथी। ऊँट।

पीलिया—पु० कँवल रोग।

पीलु—पु० एक पेड़। हाथी। बाण। हथेली।

पीव—पु० पिय। [भारी।

पीवर३-४—वि० मोटा।

पीवरप्राण—वि० साहसी।

पीवरी—स्त्री० जवान स्त्री।

पीसना—सक्रि०बुकनी करना

पीसू—पु० 'पिस्सू' नामक कीड़ा।

पीहर—पु० नैहर।

पीहू—पु० पिस्सू।

पुंख—पु० तीर का वह अंश जिसमें पर खोंसे जाते हैं।

पुंखित—वि० पक्षयुक्त।

पुंगव—पु० बैल। वि० श्रेष्ठ

पुंगीफल—पु० सुपारी।

पुँछार—पु० मोर पक्षी।

पुंज—पु० झुंड, ढेर।

पुंजि—स्त्री० पूँजी।

पुंड—पु० तिलक।

पुंडरीक—पु० श्वेत-कमल। तिलक। कमंडलु।

पुंडरीकाक्ष—पु० विष्णु।

पुंड्र, पुंड्रक—पु० तिलक। श्वेत-कमल। ऊख।

पुंलिंग—पु० पुरुष-वाचक-शब्द।

पंशक्ति—स्त्री० पुरुषत्व।

पुंश्चली—स्त्री० व्यभि-चारिणी।

पुंस३—पु० पुरुष।

पुंसवन—पु० दूध। गर्भ-संस्कार विशेष।

पुंस्त्व—पु० वीर्य्य, पुरुषत्व

पुआ—पु० मीठी पूरी।

पुआल—पु० पयाल।

पुकारना—सक्रि० ज़ोर से बुलाना, टेरना।

पुखराज—पु०पद्मराग-मणि।

पुख्ता—वि०(फ़ा०)मज़बूत।

पुचकारना—सक्रि० चुम-कारना।

पुचकारी—स्त्री० चुमकारी।

पुचारना—सक्रि० पोतना।

चापलूसी करना।
पुचारा—पु० हलका लेप। पोछने की क्रिया।
पुच्छ—स्त्री० दुम।
पुच्छल—वि० दुमवाला।
पुछल्ला—पु० बड़ी पूँछ। पछलगा। [वाला। मोर।
पुछार—पु० सत्कार करने-
पुछैया—वि० पूछने वाला।
पुजना—अक्रि० पूजा जाना।
पुजाई—स्त्री०पूजने की क्रिया
पुजाना—सक्रि०पूजा कराना।
पुजापा—पु० पूजा की सामिग्री। [वाला।
पुजारी—पु० पूजा करने-
पुजैया पु० पूजने वाला। स्त्री० पूजा। [आच्छादन।
पुट—पु० हल्का छिड़काव।
पुटक—पु० दाना। कमल।
पुटकी—स्त्री० पाटली।
पुटपाक—पु० किसी पात्र का मुँह बंद करके दवा पकाने की विधि।
पुटभेद—पु० भँवर पड़ कर जल के भीतर का जाना।
पुटभेदन—पु० नगर, शहर।
पुटरिया, पुटरी—स्त्री० पोटली, गठरी। [युक्त।
पुटित—वि० आच्छादित।
पुटियाना—सक्रि० फुसलाना।
पुटा—स्त्री० दौना। कौपीन।
पुटीन—पु० एक मसाला जो किवाड़ों आदि में शीशा बैठाने के काम में आता है।
पुट्ठा—पु० चूतड़ का ऊपरी-कड़ा भाग।
पुठवार—क्रि० वि० पीछे।
पुठवाल—पु० हर काम में साथ देने वाला।
पुड़ा—पु० बड़ी पुड़िया।
पुड़िया, पुड़ी—स्त्री० लपेटा हुआ कागज़ आदि।
पुण्य—पु० शुभ कर्म। वि० पवित्र।
पुण्यक—पु० चांद्रायण व्रत।
पुण्यक्षेत्र—पु० तीर्थ।
पुण्यजन—पु० राक्षस।
पुण्यजनेश्वर—पु० कुबेर।
पुण्यपुर—वि० 'पूना' का प्राचीन नाम।
पुण्यभूमि—पु० आर्यावर्त्त। (बंगाल के समुद्र से पश्चिम, अरब सागर से पूर्व, हिमाचल से दक्षिण औरविंध्याचल से उत्तर का देश।)
पुण्यश्लोक—पु० विष्णु। युधिष्ठिर। नल।
पुण्यवान् १३, पुण्यात्मा—वि० धर्मात्मा।
पुतना—अक्रि० पोता जाना।
पुतरी, पुतली, पुतरिका—स्त्री० गुड़िया। आँख का तारा।
पुतला७—पु० मिट्टी, लकड़ी आदि की प्रतिमा।
पुताई—स्त्री पोतने का काम या मज़दूरी।
पुतारा—पु० गीले कपड़े से पोंछने का कार्य।
पुत्तलिका, पुत्तली—स्त्री० मूर्त्ति, पुतली।
पुत्तिका—स्त्री० पुतली।
पुत्र७—पु० लड़का।
पुत्रवती—स्त्री० पुत्रवाली।
पुत्रवधू—स्त्री० पतोहू।
पुत्रिका—स्त्री० लड़की।
पुत्रणी—स्त्री० पुत्रवती।
पुत्रेष्टि—पु० पुत्र की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ।
पुदीना—पु० एक सुगंधित-पौधा।
पुनः—क्रि० वि० फिर।
पुनरपि—क्रि० वि० फिर भी
पुनरागमन—पु० फिर से आना या जन्म लेना।
पुनरावृत्ता—वि० दोहराया-हुआ।
पुनरावृत्ति—स्त्री० दोहराना
पुनरुक्त३—वि० फिर से कहा हुआ। [कहना।
पुनरुक्ति—स्त्री० फिर से-
पुनर्जन्म—पु० मरने के बाद का जन्म।
पुनर्नवा—पु० एक पौधा।
पुनर्भव—पु० नाखून, नख।
पुनर्भू—स्त्री०दुबारा ब्याही-स्त्री।
पुनर्वसु—पु०सातवाँ नक्षत्र।
पुनर्विवाह—पु०दूसरा विवाह। विधवा-विवाह।
पुनश्च—अव्य० फिर भी। दूसरी बार।
पुनि—क्रि० वि० फिर।
पुनिम—स्त्री० पूर्णिमा।
पुनी—स्त्री० पूर्णिमा। वि० पुण्यात्मा। क्रि० वि०पुनः।
पुनीत—पु० पवित्र।

पुन्न—पु० दे० 'पुण्य'।
पुन्नाग—पु० श्वेत-कमल। श्रेष्ठ-पुरुष।
पुन्यताई—स्त्री० पवित्रता।
पुमान्—पु०पुरुष।
पुरंदर—पु० इन्द्र।
पुरंध्री—स्त्री० पति, पुत्रादि वाली स्त्री। [सामने।
पुरः—अव्य० आगे, पहले।
पुरःसर—दे० 'पुरस्सर'।
पुर७—पु०नगर। घर। वि० (फ़ा०) भरा हुआ।
पुरइन—स्त्री० नलिनी।
पुरइया—पु० तकुआ। ताना
पुरखा—पु० पूर्वज।
पुरज़ा—पु० (फ़ा०) काग़ज़ का छोटा टुकड़ा।
पुरट—पु० सोना।
पुरतः—अव्य० आगे।
पुरत्राण—पु० परकोटा।
पुरद्वार—पु०नगरका बाहरी-फाटक।
पुरपाल—पु० कोतवाल।
पुरबा—स्त्री०पूरब की हवा।
पुरबिला—वि० पहले का।
पुरबिया—वि०पूरब का।
पुरवट—पु० मोट, चरसा।
पुरवना—सक्रि० भरना। पूरा करना।
पुरवा—पु० छोटा गाँव। कुल्हड़। पूर्वी हवा।
पुरवाई, पुरवैया—स्त्री० पूर्व की हवा।
पुरश्चरण—पु० किसी कार्य की सिद्धि के लिए नियत समय तक अनुष्ठान करना।
पुरसाँ—वि० (फ़ा०) पूछने-वाला।
पुरसा—पु० पाँच हाथ की एक नाप। (फ़ा०) मातम-पुरसी। [की क्रिया।
पुरसी—स्त्री० (फ़ा०) पूछने-
पुरस्कार—पु० इनाम, भेंट।
पुरस्कृत—वि० पूजित। जिसे इनाम मिला हो।
पुरस्तात्—अव्य०पूर्वकाल में
पुरस्सर—क्रि० वि० सहित। पु० अनुयायी। वि०सम्मुख जाने वाला। [में।
पुरा—अव्य० प्राचीन समय-पु० गाँव। वि० प्राचीन।
पुराकल्प—पु०प्राचीन समय।
पुराकृत—वि० प्राचीन काल में किया हुआ।
पुराण—वि० पुराना। पु० हिन्दुओं का धार्मिक-ग्रन्थ। ३२ रत्ती वज़न की तौल।
पुराणपुरुष—पु० विष्णु।
पुरातत्त्व—पु० प्राचीन-काल संबंधी-विद्या।
पुरातत्त्वशाला—स्त्री०प्राचीन-कला का स्थान, म्यूज़ियम।
पुरातन—वि० पुराना। पु० विष्णु।
पुराना७—वि०बहुत दिन का
पुरारि—पु० शिव।
पुराल—पु० पयाल।
पुरावृत्त—पु० पुराना हाल, इतिहास। [पुरुष।
पुरिखा, पुरिषा—पु० पूर्व-
पुरी—स्त्री० नगरी। पु० परमहंस साधुओं का एक भेद। स्त्री० (फ़ा०) पूर्णता। भरने की क्रिया।
पुरीष—पु० मैला।
पुरु—पु० देवलोक। पराग। एक राजा। [पति।
पुरुष३—पु०आदमी। आत्मा।
पुरुषकुंजर, पुरुषसिंह—पु० श्रेष्ठ पुरुष।
पुरुषत्व—पु० मरदानगी।
पुरुषानुक्रम—पु० पूर्वजों की चली आयी परंपरा।
पुरुषार्थ८—पु० पौरुष, वीरता
पुरुषोत्तम—पु० श्रेष्ठ पुरुष। विष्णु। कृष्ण।
पुरुहू—वि० बहुत।
पुरुहूत—पु० इन्द्र।
पुरोग—वि० अग्रगामी।
पुरोगम—पु०प्रोग्राम। अग्र-गामी।
पुरोगामी५—वि०अग्रगामी।
पुरोचन—पु०दुर्योधन का एक मित्र। [हवन-सामिग्री।
पुरोडाश—पु०हवि। खीर।
पुरोधा—पु० पुरोहित।
पुरोभागी५—वि० दूसरे के दोषों को देखने वाला।
पुरोवर्ती५—वि० अग्रगामी।
पुरोहित—पु० वह ब्राह्मण जो यजमान का यज्ञ आदि कर्म कराता है।
पुरौ—पु० पुरवट।
पुरौती—स्त्री० पूर्ति।
पुर्त्तगीज़—पु० पुर्तगाल का निवासी।
पुल—पु०(फ़ा०) सेतु, बाँध।
पुलक—पु० रोमांच।

पुलकावलि—स्त्री० हर्ष से प्रफुल्ल रोएँ। [रोमांचित।
पुलकित—वि० गद्गद् ,
पुलटिस—स्त्री० घाव का लेप
पुलपुला—वि० पिलपिला।
पुलपुलाना—सक्रि०दबाना। अक्रि० डरना।
पुलसरात—पु० (फ़ा०) मुसलमानों के विश्वासानुसार एक पुल जिस पर से सच्चे आदमी स्वर्ग में चले जायँगे और झूठे तथा दुष्ट नरक में गिरेंगे।
पुलस्त्य—पु० एक ऋषि।
पुलाक, पुलाव—पु० (फ़ा०) माँस के योग से पकाया हुआ चावल।
पुलिंदा—पु० बंडल।
पुलिन—पु० किनारा। जल से निकली हाल की भूमि।
पुलिस—स्त्री० (अं०) सिपाहियों का वह महकमा जो प्रजा की रक्षा के लिए है।
पुली—स्त्री० एक चिड़िया।
पुलोमजा—स्त्री० इन्द्राणी।
पुलोमही—स्त्री० अफ़ीम।
पुलोमा—स्त्री० भृगु ऋषि की स्त्री।
पुवा—पु० मीठी पूड़ी।
पुश्त—स्त्री० (फ़ा०) पीढ़ी। पीठ।
पुश्तनामा—पु० (फ़ा०) वंशावली। [हिमायती।
पुश्तपनाह—वि० (फ़ा०)
पुश्ता—पु० (फ़ा०) बाँध।
पुश्तारा—पु० (फ़ा०) उतना बोझ जो पीठ पर उठाया जा सके।
पुश्ती—स्त्री०टेक, मसनद।
पुश्तैनी—वि० (फ़ा०) कई पुश्त से चला आता हुआ।
पुषित—वि० पाला हुआ।
पुष्कर—पु० जल। तालाब। वाण। कमल। कमल का फूल। म्यान। राजा नल का छोटा भाई।
पुष्करीण—पु० हाथी।
पुष्करिणी—स्त्री० तलैया, पोखरा।
पुष्कल—पु० चार ग्रास की भिक्षा। एक नाप। वि० काफ़ी। अति सुंदर, उत्तम।
पुष्ट—वि० पाला हुआ। दृढ़। [औषध।
पुष्टई—स्त्री० शक्तिवर्द्धक·
पुष्टि—स्त्री०समर्थन। पोषण। मज़बूती।
पुष्टिकर, पुष्टिकारक—वि० ताक़त बढ़ाने वाला।
पुष्टिमार्ग—पु० वल्लभ-सम्प्रदाय।
पुष्टिका—स्त्री० सीपी।
पुष्प—पु० फूल। [फूल।
पुष्पक—पु०कुबेर का विमान।
पुष्पकरडक—पु० फूलों की डलिया।
पुष्पकेतु—पु०पीतल को तपा के घिसने से बना अंजन।
पुष्पचाप—पु० कामदेव।
पुष्पदंत—पु० एक दिग्गज जो वायुकोण में स्थित है। शिव का एक अनुचर(गंधर्व)
पुष्पधन्वा, पुष्पध्वज—पु० कामदेव।
पुष्पफल—पु० कैथा।
पुष्पमास—पु०चैत-महीना।
पुष्परज,पुष्परेणु—पु०पराग।
पुष्पसर—पु०मकरंद।
पुष्पराग—पु० पुखराज।
पुष्पवती—वि० स्त्री० फूलवाली। रजस्वला। [वारी।
पुष्पवाटिका—स्त्री० फुल·
पुष्पचर—पु० कामदेव।
पुष्पसमय—पु० चैत्र, वैशाख की ऋतु, वसंत।
पुष्पसार—पु० इत्र।
पुष्पहीना—स्त्री० बाँझ।
पुष्पागम—पु०वसंत-ऋतु।
पुष्पित—वि० खिला हुआ।
पुष्य—पु० आठवाँ नक्षत्र। पौष।
पुसाना—अक्रि० पूरा पड़ना।
पुस्त—पु० मिट्टी आदि से लीपना-पोतना। स्त्री० पीढ़ी
पुस्तक—स्त्री० किताब।
पुस्तकालय—पु० लाइब्रेरी।
पुस्तिका—स्त्री० छोटी पुस्तक
पुहनाऽ—अक्रि०गुँथा जाना।
पुहुकर—पु० तालाब।
पुहुप—पु० फूल।
पुहुपराग—पु० पुखराज।
पुहुमी—स्त्री० पृथ्वी।
पूँगफल—पु० सुपारी।
पूँछ—स्त्री० दुम।
पूँजा—स्त्री० संपत्ति। ढेर। मूलधन।
पूँजीदार—पु० धनवान्।
पूँजीपति—पु० धनवान्।

पूग—पु० सुपारी ।
पूगना—अक्रि०पूरा होना ।
पूगीफल—पु० सुपारी ।
पूछ—स्त्री० खोज । आदर ।
पूछताछ—स्त्री०जाँच-पड़ताल ।
पूछना—सक्रि०प्रश्न करना।
पूछरी—स्त्री० दुम ।
पूजक१४—पु० पुजारी ।
पूजन—पु० पूजा की कार्य ।
पूजना—सक्रि० पूजा करना अक्रि० पूरा होना । [योग्य।
पूजनीय—वि० आदर के-
पूजमान—वि० पूजने योग्य ।
पूजा—स्त्री० आराधन । आदर ।
पूजार्ह—वि० पूजने-योग्य ।
पूजित४—वि० सम्मानित ।
पूजितव्य—वि० पूजनीय ।
पूज्य—वि०पूजनीय [णीय ।
पूज्यपाद—वि० परम आदर-
पूत—वि०पवित्र । पु० बेटा ।
पूतना—स्त्री० एक राक्षसी जिसे श्रीकृष्ण ने मार डाला था ।
पूतनारि—पु० श्रीकृष्ण ।
पूतशीला—वि० स्त्री० पवित्र शील वाली ।
पूतात्मा—वि० शुद्धात्मा ।
पूति—स्त्री० पवित्रता ।
पूतिकाष्ठ—पु० देवदारु ।
पूतिगंधि—स्त्री० दुर्गन्ध ।
पूनी—स्त्री० दे० 'प्यूनी' ।
पूप—पु० पुआ ।
पूय—पु० मवाद । [धारा ।
पूर—वि० पूर्ण । पु० बाढ़ ।
पूरक—वि० पूरा करने वाला

पूरण६—वि० पूरा । पु० भरने की क्रिया ।
पूरनपूरी—स्त्री० एक प्रकार की मीठी पूरी ।
पूरना—सक्रि० पूरा करना । बनाना । भरना । अक्रि० भर जाना ।
पूरब—पु० दे० 'पूर्व' ।
पूरबला७—वि० प्राचीन । पहले जन्म का ।
पूरबी—वि० पूरब का ।
पूरा—वि० भरा । सब, तमाम । तुष्ट ।
पूरित—वि०भरा हुआ। तृप्त।
पूरी—स्त्री० पूड़ी, सुहारी ।
पूरुष—पु० पुरुष ।
पूर्ण३—वि० पूरा ।
पूर्णकाम—वि० जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो ।
पूर्णकुंभ—पु० भरा हुआ घड़ा
पूर्णतया—क्रि० वि० पूरी तरह से ।
पूर्णभूत—वि० भूत काल जिसमें कार्य समाप्त हुआ हो ।
पूर्णमासी—स्त्री० पूर्णिमा ।
पूर्णविराम—पु० वाक्य के अंत में लगाया जाने वाला चिह्न (।) ।
पूर्णायु—वि० पूरी आयु वाला
पूर्णावतार—पु०संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार ।
पूर्णाहुति—स्त्री० अन्तिम-आहुति । समाप्ति ।
पूर्णिमा—स्त्री० शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि ।

पूर्त—पु० बावड़ी, तालाब आदि खुदवाना ।
पूर्तविभाग—पु०सड़कें आदि बनाने का महकमा ।
पूर्ति—स्त्री०समाप्ति । पूर्णता।
पूर्व—पु०सूर्योदय की दिशा । वि० पहिले का ।
पूर्वक—क्रि० वि० साथ ।
पूर्वकालिक—वि० पूर्वकाल-संबंधी ।
पूर्वगंगा—स्त्री० नर्मदा नदी ।
पूर्वज—पु०बड़ा भाई ।पुरखा
पूर्वदेव—पु० राक्षस ।
पूर्वपक्ष—पु० शास्त्र-विषयक-प्रश्न । फ़रियादी का दावा ।
पूर्वपक्षी—वि० फ़रियादी । प्रश्नकर्त्ता ।
पूर्वपर्वत—पु० उदयाचल ।
पूर्वमीमांसा—पु० जैमिनि रचित एक शास्त्र ।
पूर्वरंग—पु० नाटक के आदि में विघ्न शान्ति के लिये होने वाला कृत्य । [का प्रेम ।
पूर्वराग—पु० संयोग के पूर्व-
पूर्वरूप—पु०पहिले का रूप ।
पूर्ववत—क्रि० वि० पहिले की तरह ।
पूर्ववर्त्ती—वि० पहिले का ।
पूर्ववृत्त—पु० इतिहास ।
पूर्वानुराग—पु०दे० 'पूर्वराग ।'
पूर्वापर—क्रि० वि० आगे-पीछे ।
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, पूर्वाषाढ़ा—स्त्री० नक्षत्र-विशेष ।
पूर्वार्द्ध—पु०प्रथम अर्द्धभाग ।

पूर्वाह्न—पु० सुबह से दो पहर तक का समय।
पूर्वी—त्रि० पूर्व का।
पूर्वोक्त—वि० पहिले कहा हुआ। [छोटा मुट्ठा।
पूला७—पु० घास आदि का-
पूषण, पूषा—पु० सूर्य्य।
पूषन्—पु० सूर्य। [महीना।
पूस—पु० माघ के पहिले का-
पृक्त—वि० मिश्रित।
पृच्छक१४—वि० पूँछने-वाला।
पृच्छा—स्त्री० प्रश्न।
पृतना—स्त्री० सेना। सेना का एक भाग जिसमें २४३ हाथी, इतने ही रथ, तिगुने घुड़सवार तथा पचगुने पैदल होते हैं।
पृथक्—वि० अलग।
पृथक्करण—पु० अलग करने का कार्य।
पृथक्ता—स्त्री० अलहदगी।
पृथग्विध—वि० भिन्न-भिन्न प्रकार का।
पृथिवी—स्त्री० भूमि।
पृथा—स्त्री० कुन्ती।
पृथी—स्त्री० पृथ्वी।
पृथु—वि० चौड़ा। बड़ा। पु० एक राजा।
पृथुक—पु०पक्षियों का बच्चा। साधारण बच्चा।
पृथुता—स्त्री० विस्तार।
पृथुरोमा—पु० मछली।
पृथुल३—वि० मोटा। बड़ा।
पृथ्वी—स्त्री०भूमि। [यची।
पृथ्वीका—स्त्री० बड़ी इला-

पृश्नि—वि० छोटे शरीर का
पृषत्—पु० बिन्दु। एक राजा
पृषदश्व—पु० वायु।
पृष्ट—वि० पूछा हुआ।
पृष्ठ—पु० सफ़ा। पीठ।
पृष्ठगंधि—पु० कूबड़।
पृष्ठपोषक१४—पु० समर्थक।
पृष्ठभाग—पु०पीछे का भाग। पीठ।
पृष्टभूमि—स्त्री० आधार।
पृष्ठवंश—पु० रीढ़ की हड्डी।
पेंग—स्त्री० झूले को पैर से चलाना।
पेंच, पेच—पु० चक्कर।लपेट उलझन। यंत्र। चालाकी।
पेंठ—स्त्री० बाज़ार। बाज़ार का दिन।
पेंटर—पु० (अं०) चित्रकार। रंगसाज़। [का लटकन।
पेंडुलम—पु० (अं०) घड़ी-
पेंदा७—पु० तली।
पेंशन—स्त्री० पहिले की सेवाओं के कारण मिलने वाली मासिक-वृत्ति।
पेंसिल—स्त्री० (अं०) सीसे की सलाई की क़लम।
पे—स्त्री० (अं०) वेतन।
पेखना—सक्रि० देखना।
पेच—पु० पगड़ी की लपेट। चक्कर,उलझन।
पेचक—स्त्री०तागे की गोली। पु० उल्लू। हाथी की पूँछ का मूलोपान्त भाग।
पेचकश—पु० पेच खींचने का औज़ार।
पेच-दरपेच—वि० (फ़ा०) जिसमें पेच के अंदर और भी पेच हो।
पेचवान—पु० बड़ा हुक्क़ा। हुक्क़े की लंबी सटक।
पेचिश—स्त्री० (फ़ा०) पेट में आँव पड़ने का रोग।
पेचीदा, पेचीला—वि० (फ़ा०) पेचदार।
पेज—पु०(अं०) पृष्ठ, पन्ना।
पेट—पु० गर्भ, उदर।
पेटक—पु० टोकरा, पेटिका।
पेटा—पु० मध्यांश। ब्यौरा। पिटारा।
पेटागि—स्त्री० भूख।
पेटारा—पु० टोकरा।
पेटारी—स्त्री० छोटी पेटी।
पेटार्थी—वि० खाऊ, पेटू।
पेटिका, पेटी—स्त्री० पिटारी। कमर की पट्टी।
पेटू—वि० अधिक खाने वाला
पेटेंट—वि० (अं०) रजिस्ट्री किया हुआ (पदार्थ)।
पेट्रन—पु० (अं०) संरक्षक।
पेठा—पु० सफ़ेद कुम्हड़ा।
पेड़—पु० वृक्ष, तरु।
पेड़ा—पु० एक मिठाई।
पेड़ी—स्त्री० पेड़ का तना।
पेड़ू—पु० नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का भाग।
पेनी—स्त्री० (अं०) बिलायती सिक्का।
पेन्स—पु०एक अँग्रेज़ीसिक्का।
पेन्हाना—सक्रि० पहनना। अक्रि० थन में दूध उतरना।
पेपर—पु० (अं०) काग़ज़। प्रश्नपत्र। अख़बार।

पेम—पु० प्रेम, स्नेह ।
पेमेंट—पु०(अं०) भुगतान ।
पेय—वि० पीने योग्य ।
पेयूष—पु० प्रथम सात दिन की ब्याही गाय या भैंस का दूध ।
पेरना—सक्रि० रस के लिए दबाना । प्रेरित करना ।
पेलना—सक्रि० ढकेलना । हटाना ।
पेलव—वि० विरल, अलग ।
पेला—पु० उपद्रव, झगड़ा ।
पेवँ—पु० प्रेम ।
पेवड़ी—स्त्री०एक पीला रंग ।
पेवस—पु०, पेवसी—स्त्री० ब्याही गाय, भैंस का पहला दूध ।
पेश—क्रि० वि० (फ़ा०) सामने । पु० आगे का हिस्सा।'उर्दू'अक्षरों के ऊपर लगाया जाने वाला 'उकार' का चिह्न । [बर्ताव ।
पेशआमद—स्त्री० (फ़ा०)
पेशक़दमी—स्त्री० (फ़ा०) नेतृत्व । आक्रमण । किसी काम में आगे बढ़ना ।
पेशक़ब्ज़—स्त्री०(फ़ा०)कटार
पेशकश—पु० (फ़ा०) भेंट ।
पेशकार२—पु० (फ़ा०) वह कर्मचारी जो हाकिम के सामने काग़ज़ात पेश करता है ।
पेशख़ेमा—पु० (फ़ा०) फ़ौज का अगला हिस्सा । फ़ौज रवाना होने से पूर्व भेजा जाने वाला सामान ।
पेशगी—स्त्री०(फ़ा०) अग्रिम, अगाऊ ।
पेशदस्त—वि० (फ़ा०) उद्यमी
पेशबंद—पु० (फ़ा०) घोड़े के चारजामे का बन्द ।
पेशबंदी—स्त्री०(फ़ा०) पहिले से किया गया प्रबंध ।
पेशबीनी—स्त्री० (फ़ा०) दूरदर्शिता । [वाला मज़दूर ।
पेशराज—पु० पत्थर ढोने-
पेशरौ—पु० (फ़ा०) मार्ग-दर्शक । [कोमल ।
पेशल३—वि०सुन्दर । चतुर ।
पेशवा—पु० (फ़ा०) नेता । महाराष्ट्र के प्रधान मंत्रियों की उपाधि । [वानी ।
पेशवाई—स्त्री० (फ़ा०) अग-
पेशवाज़—स्त्री० नाचते वक़्त पहना जाने वाला घाघरा ।
पेशा—पु०(फ़ा०)व्यवसाय ।
पेशानी—स्त्री० (फ़ा०)माथा । भाग्य, क़िस्मत ।
पेशाब—पु० (फ़ा०) मूत्र ।
पेशाबख़ाना—पु० (फ़ा०) मूत्रस्थान ।
पेशावर—पु० व्यवसायी ।
पेशी—स्त्री०उपस्थिति । मांस की गाँठ । बोटी । अंडा ।
पेशीनगोई—स्त्री० (फ़ा०) भविष्य की बात कहना ।
पेश्तर—क्रि० वि० पहिले ।
पेषक—पु० पीसने वाला ।
पेषण६—पु० पीसना ।
पेखना—सक्रि० देखना ।
पेषित—वि० पीसा हुआ ।
पैंचना—सक्रि० पछोरना, उलटना । [गहना ।
पैंजनी—स्त्री० पैर का एक-
पैंठ—स्त्री० बाज़ार । दुकान ।
पैंठौर—पु० दुकान ।
पैंड़—पु० क़दम । मार्ग ।
पैंड़ा—पु० रास्ता । अस्तबल ।
पैंत—स्त्री० दाँव । पाँसा ।
पैंतरी—स्त्री० जूती ।
पैंती—स्त्री०कुश की पवित्री ।
पैंफ़्लेट—पु० (अं०) बहुत छोटी पुस्तक ।
पै—अव्य० परन्तु । पीछे । अवश्य । प्रत्य० पर ।
पैक—पु० (फ़ा०) हरकारा ।
पैकरी—स्त्री० बेड़ी ।
पैका—पु० पैसा । एक प्रकार का टाइप ।
पैकार—पु०छोटा रोज़गारी ।
पैकेट—पु० (अं०) छोटी-गठरी ।
पैख़ाना—पु० (फ़ा०) मल-त्याग की जगह । मल, पुरीष । [का दूत ।
पैग़ंबर—पु० (फ़ा०) ईश्वर—
पैग—पु० पग, क़दम ।
पैग़ाम—पु० (फ़ा०) संदेशा ।
पैज—स्त्री० प्रतिज्ञा ।
पैज़ार—पु० (फ़ा०) जूता ।
पैठ—स्त्री०, पैठार—पु० पहुँच, प्रवेश ।
पैठना९—अक्रि० घुसना ।
पैड़ी—स्त्री० सीढ़ी ।
पैतरा—पु०वार करने का ढंग
पैताना—पु० चारपाई का पाँव की ओर का हिस्सा ।
पैतृक—वि० पूर्वजों का ।

पैतृष्वसेय—पु० बुआ का लड़का।
पैत्र—वि० पितृ-संबंधी।
पैदल—पु० पैदल सैनिक। क्रि० वि० पैरों से।
पैदा—वि० (फ़ा०) उत्पन्न। स्त्री० आमदनी। [उत्पत्ति।
पैदाइश—स्त्री० (फ़ा०)
पैदाइशी—वि० (फ़ा०) प्राकृतिक, जन्मजात।
पैदावार२—स्त्री० (फ़ा०) उपज। [हाँकने का डंडा।
पैना७—वि० तेज़। पु० बैल-
पैनाना—सक्रि० धार तेज़ करना। [जोड़।
पैबंद—पु० (फ़ा०) थिगली,
पैमाइश—स्त्री० (फ़ा०)माप।
पैमाना—पु० (फ़ा०) नापने का औज़ार।
पैमाल—वि० बरबाद।
पैयाँ—स्त्री० पैर।
पैर—पु० पाँव।
पैरना९—अक्रि० तैरना।
पैरवी—स्त्री० (फ़ा०) पक्ष-समर्थन, कोशिश।
पैरा—पु० चढ़ने का मार्ग। लेख का एक अंश।
पैराक—पु० तैरने वाला।
पैराव—पु०तैरने योग्य पानी
पैराशूट—पु० (अं०) एक बड़ा छाता जिससे गुब्बारा नीचे उतरता है।
पैरी—स्त्री० पीढ़ी। सीढ़ी।
पैरो—वि०(फ़ा०) अनुयायी।
पैरोकार—पु० (फ़ा०)पैरवी कार।
पैला—पु० अन्न नापने का पात्र। दूध, दही ढँकने का पात्र। वि० दूसरा।
पैलेस—पु० (अं०) महल।
पैवंद—स्त्री० (फ़ा०)थिगली, जोड़।
पैवंदी—वि० (फा०) पैवंद लगाकर पैदा किया हुआ (फल आदि) [हुआ।
पैवस्त—वि० फ़ा०) समाया-
पैशाचविवाह—पु० एक प्रकार का ब्याह जिसमें कन्या का हरण किया जाय
पैशाचिक—वि० पिशाच-संबंधी,, राक्षसी। [भाषा।
पैशाची—स्त्री० एक प्राकृत-
पैशुन्य—पु० पिशुनता।
पैसना—अक्रि० प्रवेश करना
पैसरा—पु०झंझट। उद्योग।
पैसा—पु० एक ताँबे का सिक्का। धन।
पैसार—पु० प्रवेश।
पैसिंजरट्रेन—स्त्री० (अं०) सवारीगाड़ी।
पैहारी—वि० जो केवल दूध पीकर जीवित रहे। [होना।
पोंकना—अक्रि० पतला दस्त-
पोंगा७—पु० चोंगा। वि० मूर्ख।
पोंगी—स्त्री० तुमड़ी।
पोंछ—स्त्री० पूँछ, दुम।
पोंछना—सक्रि० झाड़ना। साफ़ करना।
पोइस—स्त्री० दौड़-धूप।
पोई—स्त्री० एक लता। अंकुर। ऊख का कल्ला।
पोखर, पोखरा—पु०जलाशय
पोगंड—पु० पाँच से दश वर्ष तक का बालक।
पोच२—वि०नीच। अशक्त।
पोज़ीशन—स्त्री०(अं०)जगह। हैसियत।
पोट—स्त्री० गठरी।
पोटना—सक्रि० समेटना।
पोटरी, पोटली—स्त्री० छोटी-गठरी।
पोटा—स्त्री० कलेजा।
पोढ़ाना—सक्रि० दृढ़ करना। अक्रि० दृढ़ होना।
पोत—पु० नाव। जहाज़। पशु-पक्षी का छोटा बच्चा। मालगुज़ारी। काँच के छोटे-छोटे दाने। ढंग। पारी।
पोतदार—पु०पारखी। माल-गुज़ारी का रुपया रखने वाला।
पोतना—सक्रि० लीपना।
पोतवाह—पु० नाव के पीछे की लकड़ी घुमाने वाला।
पोता७—पु० बेटे का बेटा।
पोतादार—पु० (फ़ा०) ख़ज़ानची।
पोत्र—पु०सूअर के मुँह तथा हल का अग्रभाग।
पोत्री—पु० सूअर।
पोथी—स्त्री० पुस्तक।
पोदना—पु० नाटा मनुष्य।
पोदीना—पु० (फ़ा०) हरी वनस्पति की पत्तियाँ जो मसाले के काम आती हैं।
पोना—सक्रि० रोटी बनाना,

पकाना।
पोप—पु० (अं०) कैथलिक संप्रदायी ईसाइयों के धर्मगुरु।
पोपला—वि० पचका हुआ। बिना दांत का। [का बच्चा।
पोया—पु० नरम पौधा। साँप-
पोर—स्त्री० गाँठ या जोड़। दो गाँठों के बीच की जगह।
पोर्ट—पु० (अं०) बन्दरगाह।
पोर्टर—पु० (अं०) रेलवे तथा डाक का कुली। दरबान।
पोल—पु० खोखलापन। फाटक।
पोला—वि० खोखला।
पोलिंगस्टेशन—पु० (अं०) चुनाव के वोट लेने की जगह। [राजनैतिक।
पोलिटिकल—वि० (अं०)
पोलो—पु० (अं०) घोड़े पर चढ़कर खेला जाने वाला एक खेल।
पोश—पु० (फ़ा०) ढकने की वस्तु। वि० पहनने वाला।
पोशाक—स्त्री० (फ़ा०) पहनावा।
पोशीदगी—स्त्री० (फ़ा०) छिपाव, दुराव।
पोशीदा—वि० (फ़ा०) गुप्त।
पोष, पोषण६—पु० पालन।
पोषक१४—वि० पालन करने वाला।
पोषित—वि० पाला हुआ।
पोष्टा—वि० पालनकर्त्ता।
पोष्य—वि० पालने-योग्य।
पोष्यपुत्र—पु० गोद लिया हुआ पुत्र। [छिपाना।
पोसना—सक्रि० पालना।
पोस्टआफ़िस—पु० (अं०) डाकखाना।
पोस्टकार्ड—पु० (अं०) पत्र लिखने का मोटा काग़ज़ का टुकड़ा।
पोस्टमार्टम—पु० (अं०) लाश की चीर-फाड़ द्वारा परीक्षा। [डाकमुंशी।
पोस्टमास्टर—पु० (अं०)
पोस्टमैन—पु० (अं०) चिट्ठी-रसा।
पोस्टर—पु० (अं०) दीवार पर चिपकाने का बड़ा विज्ञापन। [महसूल।
पोस्टेज—पु० (अं०) डाक-
पोस्टलगाइड—स्त्री० (अं०) डाकखाने के नियम आदि की पुस्तक।
पोस्त—पु० (फ़ा०) अफ़ीम का पौधा। छिलका।
पोस्तकंदा—वि० (फ़ा०) जिसके ऊपर से छिलका उतार लिया गया हो। स्पष्ट, साफ़-साफ़।
पोस्ता—पु० अफ़ीम का पौधा
पोस्ती—पु० (फ़ा०) अफ़ीमची
पोस्तीन—पु० (फ़ा०) खाल का एक पहनावा।
पोहना—सक्रि० पिरोना। छेदना।
पोहमी—स्त्री० पृथ्वी।
पौंडरीक—वि० कमलसम्बन्धी
पौंडर्य—पु० गुलाब।
पौंडा—पु० मोटा गन्ना।
पौड़ी, पौरी—स्त्री० ड्योढ़ी। पाँवड़ी। खड़ाऊँ, जूता।
पौर—स्त्री० दे० 'पौरि'।
पौरना—अक्रि० तैरना।
पौ—स्त्री० पौसला। प्रकाश की रेखा। पांसे का एक दाव।
पौआ—पु० सेर का चतुर्थांश
पौगंड—पु० पाँच से सोलह वर्ष की अवस्था। अल्पवयस्क।
पौढ़ना९—अक्रि० झूलना। सोना। [बहिन।
पौत्री—स्त्री० पति की बड़ी-
पौत्तलिक—पु० मूर्तिपूजक।
पौत्र७—पु० पोता।
पौद—पु० छोटा पौधा। पाँवड़ा।
पौदर—स्त्री० पैर का चिह्न। पतला मार्ग। पुरवट या कोल्हू के बैल का मार्ग।
पौध—स्त्री० उपज।
पौधा—पु० छोटा पेड़।
पौनःपुनिक—वि० बार-बार होने वाला।
पौन—स्त्री० हवा। ¾।
पौना—पु० पौन का पहाड़ा। छेददार कलछी। [बार।
पौनापुन्य—क्रि० वि० बार-
पौनार—स्त्री० कमल-नाल।
पौनी—स्त्री० नाई, धोबी आदि प्रजा।
पौमान—पु० पवन, चंद्रमा।
पौर—वि० नगर-संबंधी। पु० नगर-निवासी। ड्योढ़ी
पौरकन्या—स्त्री० नगर की

अविवाहित लड़की।
पौरना—अक्रि० तैरना।
पौरव—पु० पुरु-वंशज।
पौरस्त्य—वि० पूर्व दिशा का
पौराणिक७—वि० पुराण-संबंधी। प्राचीन काल का
पौरि—स्त्री०ड्योढ़ी, फ़ाटक।
पौरिया—पु० ड्योढ़ीदार।
पौरी—स्त्री०ड्योढ़ी। फाटक। खड़ाऊँ।
पौरुष, पौरुष्य—पु० पुरुषार्थ
पौरुषेय—वि०पुरुष-संबंधी। पुरुष का बनाया हुआ।
पौरोहित्य—पु०पुरोहिताई।
पौर्णमास—पु० पूर्णमाशी के दिन का यज्ञ।
पौर्णमासी—स्त्री० पूर्णिमा।
पौर्वापर्य—पु० सिलसिला।
पौल—पु० रास्ता।
पौलना—सक्रि० काटना।
पौलस्त्य७—पु० पुलस्त्य की संतान। रावण, कुबेर।
पौला—पु० बिना खूँटी की खड़ाऊँ।
पौली—स्त्री० ड्योढ़ी।
पौलोमी—स्त्री० इन्द्राणी।
पौष—पु०पूस का महीना।
पौष्टिक—वि० पुष्टिकारक।
पौसरा—पु०प्याऊ।
पौहारी—पु० केवल दूध पी-कर रहने वाला।
प्याऊ—स्त्री० पानी पिलाने का स्थान।
प्याज़—स्त्री०(फ़ा०)एक मूल।
प्याज़ी—वि० (फ़ा०) प्याज़ के रंग का, हलका गुलाबी।
प्यादा—पु० (फ़ा०) दूत। पैदल।
प्यार—पु० प्रेम।
प्यारा७—वि० प्रिय।
प्याला७—पु०(फ़ा०) कटोरा
प्यावना—सक्रि० पिलाना।
प्यास—स्त्री० तृषा। तृष्णा
प्यूनबुक—स्त्री० (अं०) चपरासी द्वारा चिट्ठी-पत्री आदि चढ़ाकर भेजने वाली पुस्तक।
प्यूनी—स्त्री०कातने के लिए बनाई गई रुई की मोटी-बत्ती।
प्यो—पु० प्रिय, पति।
प्योसार—पु०नैहर, पीहर।
प्यौर—पु० प्रियतम, पति।
प्रकंप—पु० कँपकँपी।
प्रकंपन—पु० कँपकँपी, वायु
प्रकंपकारी५—वि० कँपा देने वाला।
प्रकट, प्रगट—वि० ज़ाहिर।
प्रकटित—वि०ज़ाहिर किया-हुआ।
प्रकरण—पु० प्रसंग, सर्ग।
प्रकरी—स्त्री० रंगशाला।
प्रकर्ष—पु० उत्कर्ष। आधिक्य
प्रकांड—वि० बहुत बड़ा।
प्रकाम—वि० यथेष्ट।
प्रकार—पु० भेद, क़िस्म। स्त्री० परकोटा।
प्रकाश—पु०उजाला। तेज।
प्रकाशक१४—पु० प्रकाश-करने वाला।
प्रकाशन६-पु०प्रकाश। प्रसिद्धि पुस्तक छपाई का कार्य।
प्रकाशमान—वि०चमकीला।
प्रकाशित—वि०प्रकट। दीप्त
प्रकाश्य—वि० प्रकट करने योग्य। [मिश्रित।
प्रकीर्ण—वि० बिखरा हुआ।
प्रकीर्णक—पु० अध्याय। चँवर। विस्तार।
प्रकीर्तन—पु० कथन।
प्रकुपित—वि० अधिक क्रुद्ध।
प्रकृत३—वि० असली, सच्चा
प्रकृति—स्त्री० स्वभाव। माया। क़ुदरत। पुरवासियों का समूह। राज्यांग।
प्रकृतिसिद्ध—वि० प्राकृतिक
प्रकृतिस्थ—वि० प्राकृतिक।
प्रकृष्ट—वि० आकृष्ट। श्रेष्ठ।
प्रकोप—पु० अति क्रोध।
प्रकोष्ठ—पु० बड़ा आँगन। फाटक के पास की कोठरी। पहुँचा, कलाई। [आरंभ।
प्रक्रम—पु० सिलसिला।
प्रक्रिया—स्त्री० युक्ति। क्रिया। प्रकरण।
प्रक्षालन—पु० जल से धोना
प्रक्षालित—वि०धोया हुआ।
प्रक्षिप्त—वि० फेंका हुआ।
प्रक्षेप—पु० फेंकना। बढ़ाना
प्रखर३—वि० तेज़, पैना।
प्रख्यात—वि० प्रसिद्ध।
प्रगंड—पु० कोहनी के ऊपर

नोट—'प्र' उपसर्ग 'आरंभ, आगे, उत्कर्ष, प्राधान्य, ख्याति, उत्पत्ति, अधिक, आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

का भाग।
प्रगटना९—अक्रि० प्रकट होना।
प्रगति—स्त्री० चाल, रफ़्तार।
प्रगर्भ, प्रगल्भ३—वि० चतुर। निर्भय। प्रतिभाशाली। धृष्ट
प्रगल्भा—स्त्री० प्रौढ़ा नायिका
प्रगाढ़—वि० बहुत गाढ़ा।
प्रगीतात्मक—वि० अच्छे गीत वाला, सुरीला।
प्रगुण—वि० व्याकुल।
प्रग्रह—पु० लगाम। पगहा।
प्रग्रीव—पु० झरोखा।
प्रघट्टक—पु० प्रकट करने वाला-सिद्धांत।
प्रचंड३—वि० बहुत तेज़, प्रबल।
प्रचक्र—पु० चली हुई सेना।
प्रचलन—पु० रिवाज।
प्रचलायित—वि० घूमने वाला
प्रचलित—वि० जारी।
प्रचार—पु० चलन। व्यापकता
प्रचारक—पु० प्रचार-कर्त्ता।
प्रचारना—सक्रि० प्रचार-करना। ललकारना।
प्रचारित—वि० प्रचार किया हुआ।
प्रचुर३—वि० अधिक, काफ़ी
प्रचेता—पु० वरुण।
प्रचोदन—पु० प्रेरणा।
प्रच्छन्न—वि० छिपा हुआ। पु० झरोखा।
प्रच्छर्दिका—स्त्री० वमन।
प्रच्छादन—पु० ढाँकने की क्रिया।
प्रच्छादित—वि० ढाँका हुआ

प्रच्छालना—सक्रि० धोना।
प्रच्युत—वि० पदच्युत।
प्रजंक—पु० पलंग।
प्रजन—पु० पहले पहल गर्भ धारण करना। [करना।
प्रजनन—पु० संतान पैदा-
प्रजरना—अक्रि० जलना।
प्रजल्प—पु० क़िस्सा, कहानी
प्रजवी५—वि० वेग से चलने-वाला।
प्रजांतक—पु० यमराज।
प्रजा—स्त्री० रिआया। सन्तान
प्रजागर—पु० जागरण।
प्रजातंत्र—पु० प्रजा के अधीन-शासन प्रणाली।
प्रजाता—स्त्री० जिसके बच्चा पैदा हुआ हो, प्रसूता।
प्रजापति—पु० ब्रह्मा। राजा
प्रजारना—सक्रि० जलाना। उभाड़ना।
प्रजावती—स्त्री० बड़े भाई की स्त्री। गर्भिणी। पुत्रवती
प्रजुरना—अक्रि० प्रज्वलित-होना।
प्रज्ञ—वि० विद्वान्।
प्रज्ञप्ति—स्त्री० संकेत। सूचना।
प्रज्ञा—स्त्री० बुद्धि। [धृतराष्ट्र।
प्रज्ञाचक्षु—पु० ज्ञानी।
प्रज्ञान—पु० बुद्धि, चैतन्य।
प्रज्वलन६—पु० जलना।
प्रज्वलित—वि० जलता हुआ। अति स्पष्ट।
प्रण—पु० प्रतिज्ञा, संकल्प।
प्रणत—वि० नम्र, दीन।
प्रणतपाल—वि० दीन-रक्षक।

प्रणति—स्त्री० प्रणाम। विनती।
प्रणमन—पु० प्रणाम।
प्रणय—पु० प्रणाम। प्रेम। प्रसव।
प्रणयन—पु० निर्माण।
प्रणयिनी—स्त्री० प्रेमिका।
प्रणयी५—पु० प्रेमी।
प्रणायक—पु० नेता।
प्रणव—पु० ॐकार। परमात्मा
प्रणाम—पु० सादर नमस्कार
प्रणाली—स्त्री० रीति। नाली
प्रणाशी५—वि० नाश करने-वाला। [भक्ति।
प्रणिधान—पु० समाधि।
प्रणिधि—पु० दूत, जासूस।
प्रणिपात—पु० प्रणाम।
प्रणिहित—वि० रक्षित। स्थापित। समाधिस्थ।
प्रणी—वि० दृढ़ प्रतिज्ञ।
प्रणीत—वि० रचित।
प्रणुत—वि० स्तुति किया गया
प्रणेता१०—पु० रचयिता।
प्रणेय—वि० वशीभूत।
प्रतन—वि० पुराना।
प्रतनु—वि० दुबला।
प्रतपित—वि० अधिक गर्म।
प्रतप्त—वि० अधिक तपा हुआ।
प्रतान—वि० रेशेदार। पु० मूर्च्छा विशेष। प्रतापवान्।
प्रताप८—पु० तेज, पराक्रम।
प्रतापी५—वि० यशस्वी।
प्रतारक१४—वि० ठग, धूर्त।
प्रतारणा६—स्त्री० ठगी।
प्रतारित—वि० ठगा गया।

प्रति*—अव्य० एक उपसर्ग। तरफ़। स्त्री०नक़ल। संख्या।
प्रतिकर्म—पु० अलंकार द्वारा शोभा। वेश। अंग-संस्कार।
प्रतिकार—पु०बदला। उपाय
प्रतिकूप—पु० खाई।
प्रतिकूल३—वि० विरुद्ध।
प्रतिकृत—वि०बदले में किया गया। [प्रतिकार।
प्रतिकृति—स्त्री० प्रतिमा।
प्रतिकृष्ट—वि० अधम।
प्रतिक्रिया—स्त्री० बदला। परिणामभूत क्रिया।
प्रतिक्षिप्त—वि० आक्षेप या निन्दा किया हुआ।
प्रतिख्याति—स्त्री०अति प्रसिद्धि
प्रतिगृहीता—स्त्री० ग्रहण की गयी, पत्नी।
प्रतिग्रह—पु० स्वीकार। ग्रहण। विवाह।
प्रतिग्रही, प्रतिग्रहीता—पु० दान देने वाला।
प्रतिग्राह—पु० पीकदान।
प्रतिघा—स्त्री० क्रोध।
प्रतिघात३-पु०आघात। मार के बदले मार।
प्रतिघातन—पु० मारण, वध
प्रतिघाती५—पु० शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी।
प्रतिच्छाया—स्त्री० तस्वीर। छाया। चित्र।
प्रतिज्ञा—स्त्री० प्रण, टेक।
प्रतिज्ञान—पु० प्रतिज्ञा, प्रण
प्रतिज्ञात—वि० जिसके लिए प्रतिज्ञा की हो।
प्रतिज्ञापत्र—पु० इक़रारनामा
प्रतिदत्त—वि० बदले में दिया गया। [लौटाना।
प्रतिदान—पु० बदला।
प्रतिदिन—क्रि०वि० रोज़ाना
प्रतिदेय—वि० लौटाने-योग्य
प्रतिद्वंद्व—पु० बराबर वालों का विरोध।
प्रतिद्वंद्वी—पु० बराबर का विरोधी, शत्रु।
प्रतिध्वनि—स्त्री० गूँज।
प्रतिनायक—पु० नाटक में नायक का प्रतिद्वन्द्वी।
प्रतिनिधि३—पु० वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से किसी कार्य के लिए नियुक्त किया गया हो। एवज़ी। प्रतिमा, चित्र।
प्रतिनिधिसभा—स्त्री० वह सभा जो प्रजा की ओर से चुने हुए सदस्यों द्वारा शासन करे, एसेंबली।
प्रतिन्यास—पु० एक वाक्य में किसी शब्द को हटा कर उसके स्थान पर दूसरा शब्द रखना, प्रतिनिधि-शब्द। शब्द-संकेत। चित्र-संकेत। [शत्रु।
प्रतिपक्षी५—पु० विपक्षी,
प्रतिपत्ति—स्त्री० प्राप्ति। प्रतिपादन। गौरव। यश।
प्रतिपदा—स्त्री० परिवा।
प्रतिपन्न—वि० स्वीकृत। प्रमाणित। प्रतिष्ठित।
प्रतिपादक१४—पु० प्रतिपादन करने वाला।
प्रतिपादन—पु० अच्छी तरह समझाना। प्रमाण। निरूपण। सम्पादन।
प्रतिपादित—वि० प्रतिपादन किया हुआ। निरूपण। [योग्य।
प्रतिपाद्य—वि० प्रतिपादन-
प्रतिपालक१४—पु० पालन-करने वाला। [तामील।
प्रतिपालन६—पु० पालन।
प्रतिपोषक१४—पु० सहायक
प्रतिफल—पु०नतीजा।छाया।
प्रतिफलित—वि० प्रतिबिंबित
प्रतिबंध१२—पु० रोक, बाधा
प्रतिबंधक१४—वि० रोकने-वाला। [बाधा-रहित।
प्रतिबद्ध—वि०बँधाहुआ।
प्रतिबिंब—पु० छाया।
प्रतिबिंबित—वि० झलकता-हुआ। चित्रित।
प्रतिभट—पु०समान वीर।
प्रतिभय—वि० भयानक।
प्रतिभा—स्त्री०बुद्धि की विलक्षणता।
प्रतिभात—वि०ज्ञात, प्रतीत
प्रतिभान्वित—वि०अतिधृष्ट। बुद्धिमान्। निर्भय।
प्रतिभावान्१३, प्रतिभा-शाली५—वि०प्रतिभावाला।
प्रतिभू—पु० ज़मानतदार।
प्रतिभूति—स्त्री०ज़मानत।
प्रतिभूत—वि०ज़ामिन।

नोट*—'प्रति' एक उपसर्ग है जो शब्द के आरंभ में लगने से 'विपरीत, सम्मुख, बदला हर एक, सदृश, जोड़ का, विरोध अल्प, निश्चय, आदि अर्थों की विशेषता प्रकट करता है।

प्रतिम—अव्य० समान ।
प्रतिमा—स्त्री० मूर्त्ति, चित्र
प्रतिमान—पु० प्रतिबिंब ।
प्रतिमाला—स्त्री० अन्ताक्षरी
प्रतिमुक्त—वि० कवच पहने हुए ।
प्रतिमूर्त्ति—स्त्री० प्रतिमा ।
प्रतियत्न—पु०लाभ की इच्छा
प्रतियातना—स्त्री० प्रतिबिंब
प्रतियोगिता—स्त्री० चढ़ा-ऊपरी, मुक़ाबला ।
प्रतियोगी५—वि० प्रतिद्वंद्वी। पु० शत्रु । हिस्सेदार ।
प्रतियोद्धा—पु० मुक़ाबले का योद्धा। [लड़ाकू।
प्रतिरथ—पु० बराबर का-
प्रतिरूप—पु० प्रतिमा, चित्र।
प्रतिरोध१२—पु०रोक, बाधा
प्रतिलिपि—स्त्री० नक़ल ।
प्रतिलेखक—पु० जिसे पत्र लिखा जाय ।
प्रतिलोम—वि० प्रतिकूल।
प्रतिलोमविवाह—पु० नीच जाति के पुरुष से उच्च जाति की स्त्री का ब्याह ।
प्रतिवचन-पु०उत्तर।प्रतिध्वनि।
प्रतिवाक्य—पु०उत्तर, जवाब
प्रतिवाद—पु० खंडन । विरोध । बहस । [मुद्दाअलेह।
प्रतिवादी—पु० विरोधी,
प्रतिवासी—पु० पड़ोसी ।
प्रतिविधान—पु० उपाय । प्रतिकार, निवारण।
प्रतिवेशन—पु० पड़ोस ।
प्रतिशत—क्रि० वि०हर सैकड़े पर, फ़ीसदी ।
प्रतिशब्द—पु० प्रतिध्वनि ।
प्रतिशासन—पु० नौकरों को बुलाकर आज्ञा देना ।
प्रतिशोध—पु० बदला ।
प्रतिश्याय—पु० ज़ुकाम ।
प्रतिश्रव—पु० अंगीकार ।
प्रतिश्रुत—वि० स्वीकृत ।
प्रतिषिद्ध—वि० निषिद्ध। खंडित । [खंडन ।
प्रतिषेध१२—पु० मनाही ।
प्रतिष्क—पु० दूत ।
प्रतिष्ठा—स्त्री० मर्यादा । यश । स्थापना ।
प्रतिष्ठान—पु०स्थापित करना। स्थान । संस्था ।
प्रतिष्ठापक१४—वि०प्रतिष्ठा-देने वाला । [इज्ज़तदार ।
प्रतिष्ठित—वि० स्थापित ।
प्रतिस्पर्द्धा—स्त्री० चढ़ा-ऊपरी, लागडाँट ।
प्रतिहत—वि० रुका हुआ । निराश ।
प्रतिहार—पु० दरबान । द्वार
प्रतिहारी—पु० द्वारपाल ।
प्रतिहास—पु० कनेर वृक्ष ।
प्रतिहिंसा—स्त्री० बदले में हिंसा करना ।
प्रतीक—पु० पता । निशान । शरीर का अवयव । वि० उलटा ।
प्रतीकार—पु० बदला ।
प्रतीक्षा—स्त्री० इन्तज़ार ।
प्रतीक्ष्य—वि० प्रतीक्षा के योग्य ।
प्रतीची—स्त्री०पश्चिम दिशा
प्रतीचीन—वि०पश्चिम का ।
प्रतीच्य—वि० पश्चिम का ।
प्रतीत—वि० ज्ञात ।
प्रतीति—स्त्री० विश्वास ।
प्रतीप—पु० प्रतिकूल-घटना । वि० प्रतिकूल ।
प्रतीपदर्शिनी—स्त्री० स्त्री ।
प्रतीयमान—वि० भासमान।
प्रतीर—पु० किनारा, तट ।
प्रतीहारी५—पु० द्वारपाल ।
प्रतोद—पु० चाबुक । साम-गान विशेष ।
प्रतोली—स्त्री० राजमार्ग । गढ़द्वार । चौड़ी सड़क । गली ।
प्रतोषना—सक्रि०संतोष देना
प्रत्न—वि० पुराना ।
प्रत्नतत्व—पु० पुरातत्व।
प्रत्यंचा, प्रत्यंचारी—स्त्री० धनुष की डोरी ।
प्रत्यंत—पु० म्लेच्छ देश ।
प्रत्यंतपर्वत—पु० बड़े पर्वत के निकट का छोटा पर्वत ।
प्रत्यक्ष३—वि०प्रकट। सम्मुख
प्रत्यक्षदर्शी५—पु० आँख से देखने वाला, गवाह ।
प्रत्यक्षवादी५—पु० प्रत्यक्ष को प्रमाण मानने वाला ।
प्रत्यक्षीकरण—पु० प्रत्यक्ष करा देने की क्रिया ।
प्रत्यग्र—वि० नया ।
प्रत्यभिज्ञा—स्त्री० प्रत्यभि-ज्ञान—पु० किसी वस्तु के देखने पर पहले देखी वैसी ही वस्तु का स्मरण हो आना । [करने वाला ।
प्रत्यनीक—वि० मुक़ाबला-

प्रत्यपकार—पु० अपकार के बदलेमें किया गया अपकार।
प्रत्यय—पु० विश्वास। मत। शब्द के अंत में लगने वाला शब्दांश।
प्रत्ययित—वि० विश्वसित।
प्रत्यर्थी५—पु० शत्रु।
प्रत्यर्पण—पु० दान को पुनः दे देना।
प्रत्यवाय—पु० पाप, दोष।
प्रत्याक्रमण—पु० जवाबी-हमला। [खंडन।
प्रत्याख्यान—पु०निराकरण,
प्रत्यागत—वि०वापिसआया-हुआ। [लौटना।
प्रत्यागमन—पु०वापिस आना,
प्रत्यादिष्ट—वि० अनादर-किया हुआ।
प्रत्यावर्त्तन—पु०वापस आना
प्रत्यादेश, प्रत्यादेशन—पु० निरादर करना या निकाल देना। [इंतज़ारी।
प्रत्याशा८—स्त्री० आशा।
प्रत्यासन्न—वि० सन्निकट।
प्रत्यासर, प्रत्यासार—पु० सेना का पृष्ठ भाग।
प्रत्याहार—पु० इंद्रिय-निग्रह
प्रत्युत—अव्य०बल्कि। इसके विपरीत।
प्रत्युत्तर—पु०उत्तर का उत्तर
प्रत्युत्पन्न—वि० ठीक समय पर उत्पन्न।
प्रत्युत्पन्नमति—स्त्री०हाज़िर-जवाबी। पु० जो किसी बात का फ़ौरन ठीक जवाब दे। हाज़िर-जवाब।
प्रत्युपकार८—पु० उपकार के बदले में किया गया उपकार।
प्रत्यूष—पु० सबेरा। सूर्य।
प्रत्यूह—पु० विघ्न।
प्रत्येक—वि० हर एक।
प्रथम—वि० पहिला। प्रधान
प्रथमतः—क्रि०वि० पहले से। प्रथम बार।
प्रथमपुरुष—पु०उत्तम पुरुष।
प्रथमा—स्त्री०शराब। कर्त्ता-कारक।
प्रथमातप—पु०सुबह का सूर्य
प्रथमी—स्त्री० पृथ्वी।
प्रथा—स्त्री० चलन, रीति।
प्रथित—वि० प्रसिद्ध, विदित
प्रथिति—स्त्री० प्रसिद्धि।
प्रथु—वि० बड़ा, मोटा।
प्रद—वि० देने वाला।
प्रदक्षिणा—स्त्री० परिक्रमा।
प्रदत्त—वि० दिया हुआ।
प्रदर—पु०स्त्रियों का एक रोग
प्रदर्शक—पु० दिखलाने वाला
प्रदर्शन—पु० दिखलाना।
प्रदर्शिनी—स्त्री० नुमायश।
प्रदल—पु० बाण।
प्रदाता१०—पु०बड़ा दानी।
प्रदान—पु० दान, त्याग।
प्रदायक—वि० जो दे।
प्रदायी५—वि० देने वाला।
प्रदाह—पु० जलन।
प्रदिशा—स्त्री० कोण।
प्रदीप—पु० चिराग़। उजेला
प्रदीपक१४—पु० प्रकाशक।
प्रदीपन—पु०प्रकाश करना।
प्रदीप्त—वि० प्रकाशवान्।
प्रदीप्ति—स्त्री० उजाला, प्रकाश। [उपहार।
प्रदेय—वि० देने-योग्य। पु०
प्रदेश—पु० प्रांत। स्थान।
प्रदेशन—पु० भेंट, नज़र।
प्रदेशनी—स्त्री०तर्जनी उँगली
प्रदोष—पु०सायंकाल। बड़ा-दोष। [कृष्ण का बड़ा पुत्र।
प्रद्युम्न—पु० कामदेव श्री-
प्रद्योत—पु० किरण, आभा।
प्रधन—पु० धनी। युद्ध।
प्रधर्षण—पु० अपमान। आक्रमण। बलात्कार।
प्रधान३—वि० मुख्य। पु० सरदार। प्रकृति। [हुआ।
प्रधावित—वि० खूब दौड़ा-
प्रध्वंस—पु० विनाश।
प्रपंच८—पु० संसार। उल-झन। ढोंग।
प्रपत्ति—स्त्री० अनन्य-भक्ति।
प्रपद—पु० पैर के आगे का भाग।
प्रपन्न—वि० शरणागत।
प्रपा—स्त्री०गोशाला। पियाऊ
प्रपात—पु० झरना। पर्वत का किनारा।
प्रपितामह७—पु० परदादा।
प्रपीड़न—पु० अधिक कष्ट।
प्रपुंज—पु० भारी झुंड।
प्रपूर्ण—वि० भरापूरा।
प्रपौत्र७—पु०पोते का लड़का
प्रफुल्ल—वि० विकसित।
प्रबंध—पु०लेख। इन्तज़ाम
प्रबंधक—पु० मैनेजर।
प्रबल४—वि०प्रचंड। बली।

प्रबाल—पु० मूँगा।
प्रबुद्ध—वि० जागा हुआ। पंडित। [जागना।
प्रबोध१२—पु० ज्ञान। चेतना
प्रबोधन—पु०जागरण। ज्ञान सांत्वना। [शुक्ला एकादशी।
प्रबोधनी—स्त्री० कार्त्तिक-
प्रभंजन—पु० आँधी; वायु।
प्रभव—पु० उत्पत्ति-कारण। पराक्रम। उत्पत्ति।
प्रभविष्णु३—पु०प्रभावशाली
प्रभा—स्त्री० चमक। प्रकाश
प्रभाकर—पु० सूर्य। चंद्र। समुद्र। अग्नि।
प्रभात—पु० सबेरा।
प्रभाती—स्त्री० प्रभात काल का एक गाना।
प्रभाव—पु०असर। शक्ति।
प्रभावती—स्त्री०सूर्य की स्त्री
प्रभास—पु० प्रकाश। सोमतीर्थ। [होना।
प्रभासना—अक्रि०प्रकाशित-
प्रभिन्न—वि० प्रमत्त। मतवाला।
प्रभु३—पु०मालिक। ईश्वर।
प्रभूत—वि० उत्पन्न। प्रचुर। पु० तत्व। [रता।
प्रभूति—स्त्री०उत्पत्ति। प्रचु-
प्रभृति—अव्य० इत्यादि।
प्रभेद, प्रभेव—पु० भेद। रूपान्तर। [हुई माला।
प्रभ्रष्टक—पु० चोटी में गुँथी-
प्रमत्त—वि० मतवाला।
प्रमथ—पु० मंथन या पीड़ित करने की क्रिया। शिवजी का गण।

प्रमथन—पु० मारना, वध।
प्रमथनाथ—पु० शिवजी।
प्रमथाधिप—पु० शिवजी।
प्रमद—पु० मस्ती। वि० मस्त।
प्रमदवन—पु० वह बाग़ीचा जहाँ राजा स्त्रियों सहित क्रीड़ा करे।
प्रमदा—स्त्री० युवती स्त्री।
प्रमा—स्त्री० यथार्थ ज्ञान।
प्रमाण—पु० सीमा। सबूत।
प्रमाणकुशल—वि० श्रेष्ठ-तार्किक। [मानना।
प्रमाणना—सक्रि० प्रमाणित-
प्रमाणपत्र—पु० सर्टिफ़िकेट।
प्रमाणित—वि० साबित।
प्रमातामह—पु० परनाना।
प्रमाथी५—वि० मंथन या पीड़ा देने वाला।
प्रमाद८—पु० भ्रम। नशा। मस्ती। असावधानी।
प्रमादिका—स्त्री०दूषित कन्या
प्रमानी—वि०मानने-योग्य।
प्रमार्जन—पु०पोंछना, साफ़ करना। [परिमित।
प्रमित—वि० जाँचा हुआ,
प्रमिति—स्त्री० दे० 'प्रमा'।
प्रमीत—वि० यज्ञ में मारा हुआ पशु। मृत।
प्रमीला—स्त्री० तन्द्रा, थकावट।
प्रमुख—वि० प्रधान। पु० मुखिया। क्रि०वि०सामने।
प्रमुदित—वि० हर्षयुक्त।
प्रमेय—वि० प्रमाण-साध्य।
प्रमेह—पु० मूत्ररोग।

प्रमोद—पु० हर्ष।
प्रयंत—अव्य० तक, पर्यंत।
प्रयत—वि० पवित्र।
प्रयत्न—पु० उद्योग।
प्रयत्नवान्१३—वि० प्रयत्न करने वाला। [पंडा।
प्रयागवाल—पु० प्रयाग का-
प्रयाण—पु० प्रस्थान।
प्रयास—पु० परिश्रम।
प्रयुक्त—वि० सम्मिलित।
प्रयोक्ता१०—पु० प्रयोग-कर्त्ता
प्रयुत—पु० दस लाख।
प्रयोग ८—पु० हस्तक्षेप। अनुष्ठान।
प्रयोगशाला—स्त्री० अनुष्ठान-गृह। नाटक-शाला। प्रयोग में आने वाली चीज़ों के बनाने तथा उन्हें इस्तेमाल करने का स्थान।
प्रयोगार्थ—पु० युद्ध के लिए तैयारी करना। [लाया हुआ
प्रयोगित—वि० प्रयोग में-
प्रयोजक१४—पु० प्रयोग करने वाला। [अर्थ।
प्रयोजन८—पु० आशय,
प्रयोज्य—वि० प्रयोजन के योग्य। [रोचक-कथा।
प्ररोचना—स्त्री० फुसलावा।
प्ररोह—पु०कोंपल। चढ़ाव।
प्रलंब—वि० लंबा।
प्रलंबघ्न—पु० बलदेव।
प्रलंबन—पु० अवलंबन।
प्रलंबित—वि० अधिक नीचे तक लटकता हुआ।
प्रलंबी—वि०दूर तक लटकने वाला। आश्रयदाता।

प्रलयंकर, प्रलयंकारी—वि० सर्वनाशकारी।
प्रलय—पु०तिरोभाव, नाश।
प्रलाप८—पु०व्यर्थ बकवाद।
प्रलुब्ध—वि० अधिक लोभी।
प्रलेप१२, प्रलेपन६—पु० लेप
प्रलेहन—पु० चाटना।
प्रलोभ, प्रलोभन—पु०लालच
प्रवंचना—स्त्री० ठगना। [रहित
प्रवंचित—वि० ठगाहुआ।
प्रवचन—पु० व्याख्या।
प्रवण—पु०ढालू भूमि। वि० ढलवाँ। नम्र।
प्रवत्स्यत्पतिका—स्त्री० वह नायिका जिसका पति परदेश जाने वाला हो।
प्रवय—पु० वृद्ध पुरुष।
प्रवर—वि०श्रेष्ठ। पु०संतान
प्रवर्त—पु० कार्यारंभ।
प्रवर्त्तक१४—पु० संचालक।
प्रवर्त्तन—पु० संचालन।
प्रवर्त्तित—वि० प्रेरित। चलाया हुआ। [पर्वत।
प्रवर्षण—पु० वर्षा। एक-
प्रवर्ह—वि० प्रधान।
प्रवहण—पु० पालकी, डोली। ले जाने का कार्य। नाव।
प्रवहमान—वि०बहता हुआ।
प्रवाद—पु० कलंक। अफ़वाह। कथोपकथन।
प्रवार—पु० चादर, दुपट्टा।
प्रवारण—पु०कामना करके दान देना।
प्रवाल—पु० मूँगा। कोमल-पत्ता। सितार की लकड़ी।
प्रवास८—पु०परदेश में रहना
प्रवासित—वि० निर्वासित।
प्रवाह८—पु० धारा, बहाव।
प्रवाहिका—स्त्री० संग्रहणी-नामक रोग।
प्रवाहित—वि० बहता हुआ।
प्रविश्लेष—पु० अत्यंत वियोग
प्रविष्ट—वि० घुसा हुआ।
प्रविसना—अक्रि० प्रवेश-करना।
प्रवीण४—वि० चतुर।
प्रवृत्त—वि० तैयार। नियुक्त
प्रवृत्ति—स्त्री० झुकाव। रुचि
प्रवृद्ध—वि० बढ़ा हुआ। फैला हुआ।
प्रवेक—वि० प्रधान।
प्रवेणी—स्त्री० जटा।
प्रवेश१२—पु० पैठ, दख़ल।
प्रवेशिका—स्त्री० प्रवेश-पत्र।
प्रवेष—पु० घेरा मंडल, परकोटा।
प्रवेष्ट—पु० बाँह, भुजा।
प्रव्रज्या—पु० संन्यास। पर्यटन। [वाला।
प्रशंसक—पु० बड़ाई करने-
प्रशंसना—सक्रि० प्रशंसा-करना।
प्रशंसनीय—वि० प्रशंसा के योग्य। [बड़ाई।
प्रशंसा—स्त्री० गुणगान,
प्रशंसापत्र—पु० सर्टिफ़िकेट।
प्रशमन६—पु० नाश। शांति
प्रशमित—वि० शान्त।
प्रशस्त—वि० सुन्दर। श्रेष्ठ श्लाघ्य। चौड़ा।
प्रशस्ति—स्त्री० बड़ाई। पत्र का प्रारंभिक अलक़ाब। प्राचीन राजाओं के आज्ञा-पत्र।
प्रशस्य—वि० प्रशंसनीय।
प्रशांत—वि० शांत।
प्रशाखा—स्त्री० शाखा की शाखा, टहनी।
प्रश्न—पु० सवाल।
प्रश्नदूती—स्त्री० पहेली।
प्रश्नातीत—वि० प्रश्नों के परे
प्रश्नोत्तर—पु०सवाल जवाब।
प्रश्रय—पु० सहारा, आधार।
प्रश्रित—वि० नम्र, विनीत।
प्रश्वास—पु० नासिका से बाहर निकलने वाली साँस।
प्रष्टव्य—वि० पूछने योग्य।
प्रष्टा—पु० प्रश्नकर्त्ता।
प्रष्ठ—वि० अग्रगामी।
प्रसंख्या—स्त्री०जोड़, मीज़ान
प्रसंग—पु०संबंध। अवसर। संयोग।
प्रसंसना—सक्रि० बड़ाई करना
प्रसन्न३—वि०संतुष्ट। ख़ुश।
प्रसन्ना—स्त्री० शराब।
प्रसभ—पु० हठ।
प्रसरण—पु०सरकना। फैलना
प्रसर्पण—पु०प्रसरण। प्रवेश
प्रसव—पु० जनना।
प्रसवना—अक्रि०उत्पन्न होना
प्रसविनी—वि० स्त्री०जननेवाली।
प्रसव्य—वि० विपरीत।
प्रसाद—पु०कृपा। प्रसन्नता। देवार्पित वस्तु।
प्रसादी५—स्त्री० प्रसाद। वि० प्रसन्न करने वाला।

प्रसाधन—पु० अलंकार की शोभा।
प्रसाधनी—स्त्री० कंघी।
प्रसाधित—वि० अलंकृत।
प्रसार—पु० विस्तार। संचार
प्रसारण—पु० विस्तार, फैलाव
प्रसारित—वि० फैला हुआ।
प्रसारी५—वि० पसरने या जाने वाला। [हुआ।
प्रसित—वि० आसक्त, लगा-
प्रसिद्ध३—वि० मशहूर।
प्रसिद्धि—स्त्री० ख्याति।
प्रसुप्त—वि० सोया हुआ।
प्रसू—वि० स्त्री० जनने वाली। घोड़ी। लता।
प्रसूत—वि० उत्पन्न। पु० प्रसव के बाद का स्त्रियों का एक रोग। [ज़च्चा।
प्रसूता, प्रसूतिका—स्त्री०
प्रसूति—स्त्री० जनन, प्रसव।
प्रसूतिज—पु० मनोवेदना।
प्रसून—पु० फूल।
प्रसृता—स्त्री० जंघा।
प्रसृति—स्त्री० विस्तार। संतान
प्रसेक—पु० सिञ्चन।
प्रसेद—पु० पसीना। [बोरा।
प्रसेव—पु० अनाज भरने का-
प्रस्तर—पु० पत्थर।
प्रस्तरण—पु० बिछौना।
प्रस्तार—पु० फैलाव।
प्रस्ताव१२—पु० प्रसंग। बात। मंतव्य।
प्रस्तावना—स्त्री० भूमिका। प्राक्कथन।
प्रस्तावित—वि० विचारित। जिसके लिए प्रस्ताव किया हो।
प्रस्तुत—वि० तैयार। उपस्थित
प्रस्तुति—स्त्री० प्रशंसा। प्रस्तावना।
प्रस्थ—पु० पर्वत का समभूभाग या किनारा। एक सेर वज़न का माप।
प्रस्थान८—पु० गमन।
प्रस्थापन—पु० स्थापना। प्रेरणा। [भेजा हुआ।
प्रस्थापित—वि० स्थापित तथा-
प्रस्थित—वि० प्रस्थान किया-हुआ। ठहराया हुआ।
प्रस्फुरण—पु० विकसित होना
प्रस्फोटन—पु० फूट पड़ना।
प्रस्रवण—पु० निर्झर, सोता
प्रस्राव—पु० बहाव। मूत्र।
प्रस्वेद—पु० पसीना।
प्रहर—पु० तीन घंटे का समय। [होना।
प्रहरखना—अक्रि० प्रसन्न-
प्रहरण६—पु० प्रहार, आघात
प्रहरी—पु० पहरा देने वाला
प्रहर्ष, प्रहर्षण—पु० आनन्द, हर्ष। [रस का काव्य।
प्रहसन—पु० हंसी। हास्य,
प्रहस्त—पु० विस्तृत उंगलियों वाला हाथ।
प्रहाण—पु० परित्याग। ध्यान
प्रहार८—पु० चोट। आघात
प्रहारना—सक्रि० मारना। फेंकना। [वाला।
प्रहारी५—वि० प्रहार करने-
प्रहृष्ट—वि० अति प्रसन्न।
प्रहेलिका—स्त्री० पहेली।
प्रह्लाद—पु० एक प्रसिद्ध भक्त।
प्रांगण—पु० आँगन। [एकसा
प्रांजल—वि० सरल, सच्चा,
प्रांत—पु० सूबा, प्रदेश। सीमा, अंत।
प्रांतर—पु० उजाड़ स्थान। कोटर। दो प्रदेशों का भीतरी भाग।
प्रांतिक, प्रांतीय—वि० प्रांत-संबंधी। प्रांत का।
प्रांशु—वि० ऊँचा, उन्नत।
प्राइज़—पु० (अं०) पुरस्कार
प्राइममिनिस्टर—पु० (अं०) प्रधानमन्त्री।
प्राइमर—स्त्री० (अं०) प्रारंभिक-पुस्तक। [गत। गुप्त।
प्राइवेट—वि० (अं०) व्यक्ति-
प्राकार—पु० चहार दीवारी।
प्राकृत, प्राकृतिक—वि० स्वाभाविक। [भाग्य।
प्राक्तन—वि० प्राचीन। पु०
प्राखर्य—पु० प्रखरता।
प्रागल्भ्य—पु० प्रगल्भता।
प्राङ्मुख—वि० पूर्वाभिमुख।
प्राचिका—स्त्री० एक प्रकार की बनमक्खी।
प्राची—स्त्री० पूर्व दिशा।
प्राचीन३-४—वि० पूर्व का। पुराना।
प्राचीर—पु० परकोटा।
प्राचुर्य—पु० आधिक्य।
प्राच्छित—पु० प्रायश्चित्त।
प्राच्य—वि० पूर्व का। पुराना
प्राजन—पु० पैना, चाबुक।
प्राज्य—वि० बहुत, अधिक।
प्राज्ञ३—वि० चतुर, पंडित।
प्राज्ञा, प्राज्ञी—स्त्री० बड़ी

बुद्धि वाली स्त्री ।
प्राड्विवाक—पु० न्यायकर्त्ता।
प्राण—पु० श्वास । जीवन । हृदय का वायु ।
प्राणघात—पु० हत्या।
प्राणदंड—पु० मृत्युदंड ।
प्राणद—वि० प्राण-रक्षक ।
प्राणदान—पु० जीवनरक्षा ।
प्राणधन—पु० अत्यन्तप्रिय ।
प्राणधारी—वि० जीवित-प्राणी ।
प्राणनाथ, प्राणपति, प्राण-प्रिय—पु० पति । अत्यन्त प्रिय व्यक्ति ।
प्राणप्रतिष्ठा—स्त्री० मूर्ति में मंत्रों द्वारा प्राणारोप करना
प्राणप्रद—वि० जीवनदाता ।
प्राणरंध्र—पु० नाक । मुख ।
प्राणवल्लभ—पु० अति प्यारा। पति ।
प्राणवायु—पु० प्राण आदि पाँच प्रकार की वायु ।
प्राणांत१ २—पु० मौत ।
प्राणांतक—वि० मारने वाला
प्राणाधार—वि० बहुत प्यारा
प्राणायाम—पु० योग की एक क्रिया ।
प्राणी—पु० जीव । [व्यक्ति ।
प्राणेश्वर—पु० पति । प्रिय
प्रातंब—पु० खंभा ।
प्रात, प्रातः—पु० सवेरा ।
प्रातःकर्म—पु० शौच, स्नानादि कर्म । [समय ।
प्रातःकाल—पु० सुबह का-
प्रातःस्मरणक्ष—पु० सुबह के समय की ईश-प्रार्थना ।

प्रातनाथ—पु० सूर्य ।
प्रातराश—पु० कलेवा ।
प्रातिपदिक—वि० हर स्थान में होने वाला ।
प्रातिलोमिक—वि० प्रतिलोम से उत्पन्न । विरुद्ध ।
प्रातिवेशिक—पु० पड़ोसी ।
प्राथमिक—वि० पहले का ।
प्रादुर्भाव—वि० उत्पत्ति ।
प्रादुर्भूत—पु० उत्पन्न । प्रकट
प्रादेशिक—वि० प्रांतीय ।
प्राधान्य—पु० प्रधानता ।
प्रापक—पु० पैदा करने वाला
प्रापति—स्त्री०दे० 'प्राप्ति' ।
प्राप्त—वि० मिला हुआ ।
प्राप्तकाल—पु० समुचितकाल
प्राप्तव्य, प्राप्य—वि० मिलने-योग्य ।
प्राप्ति—स्त्री० मिलना ।
प्राप्य—वि०प्राप्त होनेयोग्य।
प्राबल्य—पु० प्रबलता ।
प्रामाणिक—वि०माननेयोग्य
प्रामाण्य—वि० प्रमाण के योग्य । [लगभग । अक्सर ।
प्रायः, प्रायशः—क्रि० वि०
प्रायद्वीप—पु० वह स्थलखंड जिसके तीन तरफ़ पानी हो ।
प्रायशः—क्रि० वि० बहुधा, अक्सर ।
प्रायश्चित्त—पु०पाप-मुक्ति के लिए किया गया कर्म ।
प्रायिक—वि० प्रायः होने वाला ।
प्रायोपवेश—पु० मरण के लिए अनशन करना।
प्रारंभ—पु० शुरू।

प्रारंभिक—वि० शुरू का ।
प्रारब्धन, प्रालब्ध—पु० भाग्य । वि० आरंभ किया-हुआ ।
प्रार्थनाक्ष—स्त्री० निवेदन ।
प्रार्थनापत्र—पु० अर्ज़ी ।
प्रार्थनासमाज—पु० ब्रह्म-समाज के समान एक सम्प्र-दाय ।
प्रार्थयिता—वि० प्रार्थी ।
प्रार्थित—वि० याचित ।
प्रार्थी५—वि० निवेदक ।
प्रालेय—पु० पाला, हिम ।
प्रावरण—पु० आवरण, आच्छादन ।
प्राविंस—पु० (अं०) प्रांत ।
प्रावृट्—पु० बरसात ।
प्राशन—पु० भोजन ।
प्रासंगिक—वि० प्रसंग-संबंधी प्रसंग से प्राप्त ।
प्रासाद—पु० राजमहल । विशाल-भवन ।
प्रास्पेक्टस—पु० (अं०) विवरण-पत्रिका । [वाला ।
प्रिंटर—पु० (अं०) छापने-
प्रिंटिंग—स्त्री० (अं०) छपाई, मुद्रण ।
प्रिंस—पु० (अं०) राजकुमार
प्रिंसिपल—पु० (अं०) कालेज का प्रधान अधिकारी । मूलधन ।
प्रिथिमी—स्त्री० पृथ्वी ।
प्रियंगु—स्त्री०कँगनी अनाज ।
प्रियंवद४—वि० प्रियभाषी ।
प्रिय४—वि० प्यारा । पति ।
प्रियक—पु० कदम्ब । ककुनी

हरिण विशेष।
प्रियतम—वि०सब से प्यारा। पु० पति।
प्रियता—स्त्री० प्रेम, स्नेह।
प्रियदर्शन—वि० सुन्दर।
प्रियदर्शी५—वि० सब को प्रिय समझने वाला।
प्रियभाषी५—वि० प्रियवादी
प्रियवर—वि० अधिक प्यारा
प्रिया—स्त्री० प्यारी, स्त्री।
प्रियाल—पु० चिरौंजी।
प्रियाला—स्त्री० दाख।
प्रिवीकौंसिल—स्त्री० (अं०) राज-सभा।
प्रीत—वि०प्रसन्न। [प्यारा।
प्रीतम—पु०पति। वि०अति-
प्रीति—स्त्री० प्यार।
प्रीतिकर, प्रीतिकारी५—वि० प्रेम करने वाला।
प्रीतिभोज—पु० संबंधी तथा इष्ट मित्रों को प्रेम-पूर्वक दिया गया भोज।
प्रीत्यर्थ—अव्य०प्रेम के लिए।
प्रीमियम—पु०(अं०)क़िस्त।
प्रुष्ट—वि० जला हुआ।
प्रूफ़—पु० (अं०) सबूत। संशोधनार्थ पहले का छपा काग़ज़।
प्रेक्षक१४—पु०देखने वाला।
प्रेक्षण६—पु० देखना। नेत्र।
प्रेक्षा—स्त्री० देखना, दृष्टि। बुद्धि।
प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—पु० मंत्रणागृह। नाटकघर।
प्रेत३—पु० भूत। मृतआत्मा।
प्रेतकर्म—पु० अंत्येष्टि क्रिया।
प्रेतगृह—पु० श्मशान।
प्रेतदेह—पु० मृतक का वह कल्पित शरीर जो मरने से सपिंडी तक रहता है।
प्रेतनदी—स्त्री० वैतरणी नदी
प्रेतनाह—पु० यमराज।
प्रेतराज—पु० यम। शिव।
प्रेतलोक—पु० यमपुर।
प्रेती—पु० प्रेत-पूजक।
प्रेम—पु० मुहब्बत।
प्रेमगर्विता—स्त्री० पति-प्रेम का गर्व करने वाली स्त्री।
प्रेमपात्र—पु० प्रेम-भाजन।
प्रेमालाप—पु० प्रेम की बातें।
प्रेमिक—पु०प्यार-करने वाला
प्रेमिका—स्त्री० प्रेयसी, माशूक़ा।
प्रेमी—पु० आशिक़।
प्रेय—वि०प्रिय। पु० प्रेमी।
प्रेयसी—स्त्री० प्रेमिका।
प्रेरक१४—पु० प्रेरणा या प्रवृत्त करने वाला।
प्रेरण—पु० किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करना।
प्रेरणा—पु० प्रवृत्त करने की क्रिया। उत्तेजना। दबाव।
प्रेरणार्थक क्रिया—स्त्री० व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे कर्त्ता पर प्रेरणा समझी जाय।
प्रेरित—वि० प्रेरणा किया-हुआ। प्रेषित।
प्रेषक १४—पु०भेजने वाला।
प्रेषण ६—पु० भेजना। प्रेरणा-करना।
प्रेषना—सक्रि० भेजना।
प्रेषित—वि० भेजा हुआ। प्रेरित [प्सित।
प्रेष्ठ—वि० अतिशय अभी-
प्रेष्य—वि० भेजने-योग्य।
प्रेस—पु०(अं०) छापाखाना।
प्रेसिडेंट—पु० (अं०) सभा-पति। [अभ्यास।
प्रैक्टिस—स्त्री० (अं०)
प्रैष—पु० भेजना। मर्दन-करना। आज्ञा देना।
प्रैष्य—पु० दास, टहलुआ।
प्रोक्त—वि० कहा हुआ।
प्रोक्षण—पु० पानी छिड़कना
प्रोक्षित—वि० सींचा गया।
प्रोग्राम—पु०(अं०)कार्यक्रम।
प्रोत—वि०भली-भाँति मिला-हुआ। [खिला हुआ।
प्रोत्फुल्ल—वि०अच्छी तरह से-
प्रोत्साह, प्रोत्साहन—पु० उमंग। बढ़ावा।
प्रोप्राइटर—पु०(अं०)मालिक।
प्रोफ़ेसर—पु० (अं०) कालेज का शिक्षक।
प्रोषित४—वि० जो विदेश गया हो, प्रवासी।
प्रोषितपतिका—स्त्री० पति के परदेश में होने के कारण दुःखी स्त्री।
प्रोष्ठपद—पु० भाद्र-मास।
प्रौढ़३—वि० जवान। दृढ़।
प्रौढ़ा—स्त्री० अधिक आयु-वाली स्त्री। पूर्ण युवती।
प्रौढ़ोक्ति—स्त्री० किसी बात को बढ़ाकर कहना।
प्लवंग—पु० बानर। हिरण।
प्लवंगम—पु०बन्दर। मेंढक।

प्लव—पु० मेंढक । बानर । बगला । नौका । धन्नाई ।
प्लवक—पु० नर्तक ।
प्लवग—पु० बन्दर । मेंढक । सारथी ।
प्लवन—पु० उछलना । तैरना
प्लाट—पु० (अं०) ज़मीन का टुकड़ा । कहानी का मुख्य-भाग ।
प्लावन—पु० बाढ़ ।
प्लावित—वि० जलमग्न ।
प्लास्टर—पु०(अं०)पलस्तर ।
प्लीडर—पु० (अं०) वकील ।
प्लीहा—स्त्री० तिल्ली रोग ।
प्लुत—पु०टेढ़ी चाल । स्वर का एक भेद जिसमें तीन मात्राएँ होती हैं ।
प्लुतस्वर—पु० उच्चस्वर ।
प्लुति—स्त्री० कूदना ।
प्लुष्ट—वि० जला हुआ ।
प्लेग—पु०(अं०) एक संक्रामक रोग ।
प्लैटफ़ार्म—पु० (अं०) वह चबूतरा जिसके सहारे स्टेशन पर रेलगाड़ी खड़ी होती है । लेक्चर देने का स्थान ।

२२—फ

फंक—स्त्री० फाँक ।
फंका७—पु०फाँक । एक बार में फाँकने योग्य मात्रा ।
फंग—पु० बंधन । फंदा ।
फ़ंड—पु० (अं०) कोष ।
फंद, फंदा—पु० बंधन । जाल । धोखा । [कूदना ।
फँदना९—अक्रि० फँसना ।
फंदवार—वि० फंदा लगाने वाला । [पड़ना । उलझना ।
फँसना९—अक्रि० बंधन में-
फँसिहारा७—पु०फँसाने वाला
फ़क—वि० (अ०) सफ़ेद । बेरंग ।
फ़कड़ी—स्त्री० दुर्दशा ।
फ़क़त—अव्य० (अ०) बस ।
फका—पु० फाँक ।
फ़क़ीर२—पु०(अ०)भिक्षुक ।
फ़क़ीराना—वि० (अ०) फ़क़ीरों का सा । क्रि०.वि० फ़क़ीरों की तरह ।
फ़क्क—स्त्री०(अ०)छुटकारा ।
फ़ख़र—पु०(फ़ा०)अभिमान ।
फग—पु० जाल । बन्धन ।
फगुआ—पु० होली । होली के उपलक्ष में दी गयी-वस्तु ।
फगुहारा—पु० फाग खेलने वाला ।
फ़ज़र—स्त्री० (अ०) सबेरा ।
फ़ज़ल—पु० (अ०) कृपा ।
फ़ज़ा—स्त्री० (अ०) विस्तृत-क्षेत्र । [बड़प्पन ।
फ़ज़ीलत—स्त्री० (अ०)
फ़ज़ीहत—स्त्री० (अ०) दुर्दशा । [क्रि० वि० तुरंत ।
फटक—पु० स्फटिक पत्थर ।
फटकना९—सक्रि०पछोरना । फेंकना । अक्रि० पहुँचना ।
फटकार—स्त्री० दुतकार ।
फटकारना—सक्रि०फेंकना । अलग करना । झटका-मारना । दुतकारना ।
फटकी—स्त्री० पिंजड़ा या जाल विशेष ।
फटना—अक्रि० दरार होना ।
फटफटाना—अक्रि० छटपटाना । बकवाद करना ।
फटहा—वि० फटा हुआ ।
फटा—पु०छेद । वि०ख़राब ।
फटिक—पु० बिल्लौरी पत्थर ।
फटेहाल—वि० दरिद्री ।
फट्टा—पु० टाट । बाँस की चीरी हुई छड़ । [दिल ।
फड़—पु० जुआ-घर । दाँव ।
फड़क, फड़कन—स्त्री० फड़कने की क्रिया । [में लगाना
फड़काना—सक्रि०फड़कने-
फड़नवीस—पु० मराठों के राज-काल का एक राजपद ।
फड़फड़ाना—दे०'छटपटाना'।
फड़बाज़, फड़िया—पु० जुए के अड्डे का मालिक । फुटकर अन्न बेचने वाला ।

फ़ड़ुआ—पु० फावड़ा।
फण—पु० सर्प का फन।
फणधर, फणिक—पु०साँप।
फणा—स्त्री० सर्प का फन।
फणिमुक्ता—स्त्री०सर्पमणि।
फणींद्र,फणीश—पु० शेष-नाग।
फणी, फणीश—पु० साँप।
फ़तवा—पु० (अ०) मुसलमानों में मौलवी द्वारा दी गई धार्मिक व्यवस्था।
फ़तह—स्त्री० (अ०)विजय, सफलता।
फ़तहनामा—पु०(अ० फ़ा०) विजय-पत्र। [विजयी।
फ़तहमंद—वि० (अ० फ़ा०)
फतिंगा—पु० पतिंगा।
फ़तीलसोज़—पु० (फ़ा०) दीयट।
फ़तूरिया—वि० झगड़ालू।
फतूह—स्त्री० विजय।
फ़तूही—स्त्री०(अ०)सलूका।
फदकना—अक्रि०चुरते समय 'फदफद' करना।
फदफदाना—अक्रि० फदकना। देहमें छोटे छोटे दाने पड़ना। [हुआ सिर।
फन—पु० साँप का फैला-
फ़न—पु० (फ़ा०) हुनर, विद्या, दस्तकारी। मकर।
फनगना—अक्रि० पनपना।
फनस—पु० कटहल।
फ़ना—स्त्री० (अ०) नाश, मृत्यु।
फनिक, फनिग—पु० साँप।
फनी—पु० सर्प। सर्प का मस्तक।
फ़ंद—पु०(फ़ा०)छल, कपट।
फफदना—अक्रि० फैलना।
फफूँदी—स्त्री० नाम सड़ी हुई चीज़ पर जमी हुई एक तरह की तह, भुकड़ी।
फफोला—पु० छाला।
फबती—(स्त्री०)व्यंग्य।शोभा
फबना—अक्रि०शोभा देना।
फबाना—सक्रि० सजाना।
फबि—स्त्री० शोभा।
फबीला७—वि० शोभाशाली
फर—पु० ढाल।
फ़र—पु० (फ़ा०)शोभा। चमक-दमक। [घड़ियाल।
फ़रऊन—पु० (अ०) मगर,
फरकना९—अक्रि० स्फुरित-होना। फड़कना। काँपना।
फरका—पु०टट्टर। [उत्तम।
फ़रखुंदा—वि०(फ़ा०)शुभ।
फरचाना—सक्रि० साफ़ करना
फ़रज़ंद२—पु० (फ़ा०) पुत्र।
फ़रजाम—पु० फ़ा०) अंत। परिणाम।
फ़रद—स्त्री० (अ०) रज़ाई का पल्ला। वस्तुओं की सूची। एक व्यक्ति। वि० अकेला। [आगामी कल।
फ़रदा—क्रि० वि० (फ़ा०)
फरना—अक्रि० फलना।
फरफंदन—पु०दाँव पेच। छल
फरफराना—अक्रि० फड़फड़ाना।
फरफुंदा—पु० फतिंगा।
फ़रमा—पु० ढाँचा। काग़ज़ का पूरा तख़्ता जो एक ही बार में छपता है।
फ़रमाँबरदार२—वि० (फ़ा०) आज्ञा-पालक।
फ़रमाँ रवा—पु० (फ़ा०) आज्ञा जारी करने वाला।
फ़रमाइश—स्त्री० (फ़ा०) आज्ञा। माँग।
फ़रमान—पु० (फ़ा०) राजा का आज्ञा-पत्र।
फ़रमाना—सक्रि० (फ़ा०) आज्ञा देना। कहना।
फ़रलाँग—पु० (अ०) २२० गज़ का फ़ासला।
फ़रवरी—स्त्री०(अं०) अँग्रेज़ी वर्ष का दूसरा महीना। (२८ दिन का, सन् ४ से बँट जाने पर २९ दिन का)
फ़रशबंद-पु०गच वाला स्थान
फ़रस—पु० (अ०) घोड़ा।
फरसा—पु० फावड़ा।
फ़रसूदा—वि०(फ़ा०)निकम्मा तथा बहुत पुराना। थका-हुआ। [शब्द-कोश।
फ़रहंग—स्त्री०(फ़ा०)समझ।
फरह—स्त्री० (अ०) आनंद, खुशी।
फ़रहत—स्त्री०(अ०)आनन्द।
फरहरना—अक्रि०फहराना।
फरहरा—पु० झण्डा।
फरहरी—स्त्री० जंगली फल।
फ़रहाँ—वि० (फ़ा०) प्रसन्न।
फ़रहाद—पु० (फ़ा०) शीरीं का प्रेमी। संगतराश।
फराक—पु० मैदान। वि० विस्तृत।

फ़राख़—वि०(फ़ा०) विस्तृत।
फ़राग़त—स्त्री० (अ०) छुट्टी। मलत्याग। [प्रवृत्त करना।
फराना—सक्रि० फलने में-
फ़रामोश—वि०(फ़ा०) भूला-हुआ।
फ़रायज़—पु० (अ०)बहु० 'फ़र्ज़' का। कर्त्तव्य। [हुआ।
फ़रारद—वि० (अ०) भागा-
फ़रास—पु० दे० 'फ़र्राश'।
फ़राहमर—वि०(फ़ा०)इकट्ठा
फरिया—स्त्री० लहँगा जो सामने की तरफ़ सिला नहीं रहता। [नालिश,प्रार्थना।
फ़रियाद—स्त्री० (फ़ा०)
फ़रियादी—पु०(फ़ा०)प्रार्थी।
फरियाना—सक्रि० साफ़-करना। तै करना।
फ़रिश्ता—पु० (फ़ा०) ईश्वर का दूत। [भेजा हुआ।
फ़रिस्तादा—वि० (फ़ा०)
फरी—स्त्री०चमड़े की ढाल।
फ़रीक़—वि० (अ०)विरोधी। दूसरे पक्ष का। विवेक-शील। पु० झुंड।
फ़रीक़-अव्वल—पु० (अ०) प्रथम पक्ष, मुद्दई।
फ़रीक़-सानी—पु० (अ०) द्वितीय पक्ष। मुद्दालेह।
फ़रीक़ैन—पु० (अ०) बहु० 'फ़रीक़' का। दोनो पक्ष, वादी और प्रतिवादी।
फ़रीद—वि० (अ०)अनुपम।
फ़रूग़—पु० (फ़ा०) ज्योति, चमक।
फ़रेबद—पु० (फ़ा०) कपट।
फ़रेरा—पु० झंडा।
फरेरी—स्त्री०जंगली। मेवा।
फ़रोख़्त—स्त्री० (फ़ा०) बिक्री
फ़रोगुज़ाश्त—स्त्री० (फ़ा०) उपेक्षा, लापरवाही। टाल-मटोल। त्रुटि। [दीन।
फ़रोतन—पु० (फ़ा०)ग़रीब,
फ़रोद—क्रि० वि० नीचे। पु० ठहरना। [वाला।
फ़रोशर—वि०(फ़ा०) बेचने-
फ़र्क़—पु० (अ०) अन्तर।
फ़र्ज़—पु० (अ०) कर्त्तव्य। स्त्री की योनि। दरार।
फ़र्ज़न्—क्रि० वि० मानकर।
फ़र्ज़ी—वि० (अ०) कल्पित, झूठा। पु० शतरंज का वज़ीर। ['फ़रद'।
फ़र्द—स्त्री० (अ०) दे०
फ़र्दन्-फ़र्दन—क्रि० वि० अलल अलग। एक-एक-करके। [व्यक्ति।
फ़र्द-बशर—पु० (अ०) एक-
फ़र्द-आतिल—स्त्री० (अ०) निकम्मा, अयोग्य।
फ़र्म—पु० (अं०) कारख़ाना, कारबार।
फ़र्राटा—पु० वेग।
फ़र्रार—वि० (अ०) तेज़-भागने वाला। [गार।
फ़र्राश—पु० (अ०) ख़िदमत-
फ़र्राश ख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) तोशक, तकिया आदि रखने का स्थान।
फ़र्राशी—वि० (अ०) फ़र्श तथा फ़र्राश के कामों से संबंध रखने वाला।
फ़र्रुख़—वि० (फ़ा०) सुन्दर, उत्तम।
फ़र्श—पु० (अ०) बिछावन।
फ़र्शी—वि० (फ़ा०) फ़र्श का। स्त्री० हुक्का विशेष।
फ़र्स्ट—वि० (अं०) पहला।
फलंक—पु०फलाँग, उछाल।
फल—पु० वृक्ष आदि का फल, शस्य। मेवा। ढाल। हल में लगा हुआ खेत खोदने का लोहा। संपदा। संतान। वंश। पारि-तोषिक। परिणाम। लाभ। शस्त्र का अग्रभाग।
फलक—पु० गाँसी। ढाल। पटरा। पृष्ठ। [स्वर्ग।
फ़लकद—पु० (अ०)आकाश
फलकना—अक्रि०छलकना।
फलकपाणि—पु०ढाल धारण करने वाला।
फलका—पु० छाला।
फलतः—क्रि० वि०इसलिए। फल-स्वरूप।
फलत्रिक—पु० आँवला,हड़, बहेड़ा का समूह, त्रिफला।
फलदान—पु० विवाह पक्का करने की एक रीति।
फलदार—वि० फल-युक्त।
फलना—अक्रि० फल ल-गाना। सफल होना।
फलपूर—पु० बिजौरा नीबू।
फलफंद—पु० दे०'फरफंद'।
फलबुझौवल—पु० एक खेल जो मन में कोई अंक मान कर खेला जाता है।
फलवान्१३—वि० सफल।

फलश्रेष्ठ—पु० आम ।
फलहरी—स्त्री० जंगली फल ।
फ़लाँ—वि० (फ़ा०) अमुक ।
फलाँगना—अक्रि० फाँदना ।
फ़लाकत—स्त्री० (अ०) दरिद्रता, विपत्ति ।
फलाकना—सक्रि० छलाँग मार कर पार करना ।
फलागम—पु० फल लगने की ऋतु । शरद ऋतु ।
फलाध्यक्ष—पु० खिन्नी(फल) ।
फ़लान—स्त्री० (अ०) स्त्री की जननेन्द्रिय ।
फ़लालेन—पु० एक ऊनी वस्त्र ।
फ़लासिफ़ा—पु० (यू०) दर्शन-शास्त्र । [भोजन ।
फलाहार—पु० फल का-
फलित—वि० फला हुआ । पूर्ण ।
फलितज्ञ—पु० ज्योतिषी ।
फली—स्त्री० छीमी । पु० फला हुआ । वृक्ष ।
फ़लीता—पु० (अ०) पलीता ।
फलीभूत—वि० फलदायक ।
फ़लूस—पु० (अ०) ताँबे का सिक्का ।
फलोत्तमा—स्त्री० मुनक्का ।
फलोदय—पु० लाभ, ख़ुशी ।
फल्गु—वि० क्षुद्र, असार । पु० काला गूलर ।
फ़वायद—पु० (अ०) बहु० फ़ायदा का ।
फ़व्वारा—पु० (अ०) झरना ।
फसकना—अक्रि० दब जाना
फसड्डी—वि० पिछड़ा हुआ ।
फ़सल—स्त्री० (अ०) उपज । मौसिम ।
फ़सली—वि० (अ०) मौसिमी । पु० कृषि-संबंधी । एक संवत् । हैज़ा ।
फ़साद—पु० (अ०) उपद्रव, बिगाड़ । बलवा । [हाल ।
फ़साना—पु० (फ़ा०) क़िस्सा,
फ़साहत—स्त्री० (अ०) किसी विषय का सुन्दरता से वर्णन करना ।
फ़सील—पु० (अ०) परकोटा ।
फ़सीह—वि० (अ०) श्रेष्ठ-वक्ता ।
फ़सूगर—वि० (फ़ा०) जादू-टोना करने वाला ।
फ़स्द—स्त्री० (अ०) नस से दूषित रक्त निकालना ।
फ़स्लेबहार—स्त्री० (अ०) बसंत ऋतु ।
फ़स्साद—पु० (अ०) फ़स्द खोलने वाला, जर्राह ।
फ़हम—स्त्री० (अ०) ज्ञान, विवेक । [समझ, बुद्धि ।
फ़हमीद—स्त्री० (अ०)
फ़हमीदा—वि० (अ०) समझदार ।
फहराना—अक्रि० हवा में उड़ना तथा उड़ाना ।
फ़हश—वि० (अ०) अश्लील ।
फ़हीम—वि० (अ०) समझदार ।
फाँक—स्त्री० टुकड़ा ।
फाँकना—सक्रि० फंकी करना ।
फाँड़—स्त्री० कमर ।
फाँड़ा—पु० फेंटा ।
फाँद—स्त्री० उछाल । फंदा ।
फाँदना—अक्रि० कूदना । सक्रि० लाँघना ।
फाँदा—पु० फंदा ।
फाँफी—स्त्री० पतली झिल्ली ।
फाँस—स्त्री० फंदा । बाँस, लकड़ी आदि का कड़ा तंतु ।
फाँसना—सक्रि० फँसाना ।
फाँसी—स्त्री० फंदा गले में डालकर मारने की क्रिया ।
फ़ाइन—पु० (अं०) जुर्माना ।
फ़ाइनल—वि० (अं०) अंतिम ।
फ़ाइल—स्त्री० (अं०) मिसिल ।
फ़ाउंटेनपेन—स्त्री० (अं०) वह क़लम जिसके भीतर स्याही भरी रहती है ।
फाउंड्री—स्त्री० (अं०) ढलाई का कारख़ाना ।
फ़ाक़ा—पु० (अ०) उपवास ।
फ़ाक़ाकश—(अ० फा०) भूखा रहने वाला, निर्धन ।
फ़ाक़ामस्त—वि० (अ० फ़ा०) ग़रीबी में भी ख़ुश ।
फ़ाख़िर—वि० (अ०) फ़ख़ करने वाला । बहुमूल्य ।
फ़ाख़िरा—वि० स्त्री० (अ०) बहुमूल्य और बढ़िया ।
फ़ाख़्तई—पु० (अ०) एक प्रकार का ख़ाकी रंग । वि० ख़ाकी । [नामक पक्षी ।
फ़ाख़्ता—स्त्री० (अ०) पंडुक-
फाग—पु० होली । [मास ।
फागुन—पु० माघ के बाद का-
फ़ाजिर—पु० (अ०) व्यभिचारी । [ज़रूरत से ज़्यादा ।
फ़ाज़िल—वि० (अ०) विद्वान् ।
फाटक—पु० बड़ा द्वार ।
फाटका—पु० सट्टा ।

फाटना—अक्रि० फटना।
फाड़खाऊ—वि० कटखना।
फाड़ना—सक्रि० चीरना।
फ़ातिमा—स्त्री० (अ०) बच्चे को समय से पहले स्तन-पान बंद करा देने वाली स्त्री। मुहम्मद साहब की कन्या।
फ़ातिहा—स्त्री० (अ०) प्रार्थना। मरे लोगों के नाम का चढ़ावा।
फ़ादर—पु० (अं०) पिता।
फ़ानी—वि०(अ०) नाशवान्
फ़ानूस—पु० (फ़ा०) शीशे का एकप्रकार का दीपाधार।
फ़ानूसे-ख़याल—पु० (फ़ा० अ०) काग़ज़ का कंडील जिसमें हाथी,घोड़े घूमते हैं।
फाबना—अक्रि० फबना, शोभा देना।
फ़ाम—पु० (फ़ा०) वर्ण, रंग
फ़ायक़—वि०(अ०)श्रेष्ठ,उच्च।
फ़ायज़—वि० (अ०) पहुँचने वाला। विजयी।
फ़ायदा—पु० (अ०) लाभ।
फ़ायदेमंद—वि० लाभदायक।
फ़ायर—पु० (अ०) बन्दूक आदि का दग़ना।
फ़ायरब्रिगेड—पु० (अं०) आग बुझाने वाले कर्मचारियों का दल।
फ़ायल—वि० (अ०) फ़ेल करने वाला। पु० कर्त्ता।
फ़ायली—वि० (अ०) कार्यशील।
फ़ार—पु० (अ०) चूहा।
फार—पु० टुकड़ा।
फ़ारख़ती—स्त्री०(अ०)बेबाक़ी।
फ़ारमूला—पु० (अं०) सिद्धांत, नियम।
फ़ारसी—स्त्री०(फ़ा०) फ़ारस देश की भाषा।
फ़ारसी-दाँ—वि० (फ़ा०) फ़ारसी जानने वाला।
फ़ारिग़—त्रि० (अ०) मुक्त।
फ़ारूक़—वि० (अ०) विवेकशील। हज़रत उमर की उपाधि। [उमर का वंशज।
फ़ारूक़ी—वि० (अ०)हज़रत-
फ़ार्म—पु० (अं०)खेत। एक बार में छपने वाला काग़ज़ का तख्ता। रसीद, चिट्ठी आदि का नमूना।
फाल—पु० कपास से बना वस्त्र। हल के नीचे लगा हुआ खेत जोतने का लोहा।
फ़ाल—स्त्री० (अ०) रमल आदि से शुभ अशुभ बतलाने की क्रिया। [व्यर्थ।
फ़ालतू—वि० बचा हुआ।
फ़ालसई—वि० (फ़ा०) फ़ालसे के रंग का।
फ़ालसा—पु०(फ़ा०)एक फल।
फ़ालिज—पु० (फ़ा०)लक़वा।
फ़ालीज़—स्त्री० (फ़ा०,खेत, बाग़।
फालूदा—पु० (अ०) गेहूँ के सत्त से बनाया गया एक पेय पदार्थ।
फाल्गुन—पु० फागुन मास।
फावड़ा—पु०फरसा। [हुआ।
फ़ाश—वि० (फ़ा०) खुला-
फ़ासला—पु० (अ०) दूरी।
फ़सािद—वि० (अ०) झगड़ालू। [करने वाला।
फ़ासिल—वि०(अ०) अलग-
फ़ाहा—पु० फ़ाया।
फ़ाहिश—वि० (अ०) दुश्चरित्र। लज्जा-जनक।
फ़ाहिशा—वि० स्त्री० (अ०) कुलटा। [काम अन्य से कराना
फिकवाना—अक्रि० फेंकने का-
फ़िक़रा—पु० (अ०) वाक्य। व्यंग्य, झाँसापट्टी। [पट्टी।
फ़िक़रेबाज़ी—स्त्री० झाँसा-
फिकैत—पु० बनैटी आदि चलाने वाला। [उपाय।
फ़िक्र—स्त्री० (अ०) चिन्ता।
फ़िक्रमंद—वि० (अ०फ़ा०) चिंतित।
फ़िगार—वि० (फ़ा०) घायल।
फ़िज़ूल—वि० (फ़ा०) व्यर्थ।
फ़िट—वि० (अं०) ठीक। पु० मूर्छा। [खनिज पदार्थ।
फिटकरी—स्त्री० एक सफ़ेद-
फ़िटन—स्त्री० एक प्रकार की खुली घोड़ागाड़ी।
फिटाना—सक्रि० भगाना।
फिट्ट, फिट्टा—वि० लज्जित।
फ़ितना—पु० (अ०)झगड़ा।
फ़ितना-अंगेज़—वि० (अ० फ़ा०) उपद्रवी। [खोलना।
फ़ितर—पु० (अ०) रोज़ा-
फ़ितरत—स्त्री० (अ०) क़ुदरत। स्वभाव। बुद्धि।
फ़ितरती—वि० (अ०) स्वाभाविक। धूर्त्त।
फ़ितरा—पु० (अ०) ईद के

दिन नमाज़ के पहले दान के लिए निकाला हुआ अन्न।
क़ितीर—पु० (अ०) ताज़ा गूँधा हुआ आटा। [क़मी।
क़ितूर—पु०(अ०) झगड़ा।
फ़िदवी—वि० (अ०) आज्ञाकारी।
फ़िदा—वि०(अ०) आसक्त।
फ़िदाई—वि०(अ०)फ़िदा होने वाला। [दवा।
फ़िनायल—पु० (अं०) एक·
फ़िनिया—स्त्री० कान का एक आभूषण।
फिफरी—स्त्री० पपड़ी।
फ़िरंग—पु० (अ०) .फ्रांस। आतशक रोग।
फ़िरंगिस्तान—पु० (फ़ा०) यूरोप देश। [देशवासी।
फ़िरंगी—पु० (अ०) फ़िरंग·
फ़िरंट—वि० (अं०) विरुद्ध।
फिर—अव्य०पुनः। बाद में।
फिरकना—अक्रि० नाचना। चक्कर खाना। [शाखा।
फ़िरक़ा—पु० (अ०) जाति।
फिरकी—स्त्री०चकई खिलौना।
फिरकैयाँ—स्त्री० चक्कर।
फिरगाना—पु० फ़िरंगी।
फिरता—वि० वापिस।
फ़िरदौस—पु० (अ०) स्वर्ग। बग़ीचा।
फ़िरदौस-मकानी—वि०(अ० फ़ा०) स्वर्ग में रहने वाला।
फिरना९—अक्रि० टहलना। लौटना। घूमना।
फ़िरनी—स्त्री० (फ़ा०) खीर जो पीसे हुए चावलों से पकाई जाती है।
फ़िराऊ—वि० जाकड़।
फ़िराक़—पु० (अ०) खोज। चिन्ता। वियोग।
फ़िराग़—पु०(अ०)छुटकारा। फ़ुरसत। .ख़ुशी। संतोष। अधिकता।
फ़िराद—स्त्री० फ़रियाद।
फ़िरासत—स्त्री० (अ०) अक़्लमंदी। [फ़िलासफ़ी।
फ़िलसफ़ा—स्त्री० (अ०)
फ़िलफ़ौर—क्रि० वि० तुरंत।
फ़िलहाल—अव्य० (अ०) अभी।
फ़िलासफ़ी—स्त्री० (अं०) सिद्धांत। दर्शन-शास्त्र।
फ़िल्म—स्त्री० (अं०) सिनेमा में दिखाया जाने वाला चित्रपट।
फ़िस—वि० कुछ नहीं।
फिसड्डी—वि० जो काम में पीछे रहे। [पड़ना।
फिसफिसाना—अक्रि०शिथिल·
फिसलना—अक्रि० रपटना।
फ़िसाद—पु० (अ०) फ़साद, उपद्रव। [सूची।
फ़िहरिस्त—स्त्री० (फ़ा०)
फींचना—सक्रि० कपड़ा· पछारना।
.फ़ी—अव्य० (अ०) हर· एक। स्त्री० भेद। शक।
फीका—वि० स्वादहीन। धूमिल। अरुचिकर।
फ़ी-ज़माना—क्रि० वि० (अ० फ़ा०) आज कल के समय में।
फ़ीता—पु० (फ़ा०) पतली· धज्जी। [दोनों ओर।
फ़ी-मावैन—क्रि० वि० (अ०)
फ़ीरनी—स्त्री० चावल के आटे की खीर।
फ़ीरोज़ा—पु० (फ़ा०)हरापन लिए नीले रंग का एक पत्थर। [पन लिए नीला।
फ़ीरोज़ी—वि० (फ़ा०) हरा·
फ़ील—पु० (फ़ा०) हाथी।
फ़ीलख़ाना—पु० (फ़ा०) हस्तिशाला।
फ़ीलपा—पु० (फ़ा०) पैर का एक रोग जिसमें पैर फूल जाता है।
फ़ीलपाया—पु०(फ़ा०) खंभा
फ़ीलवान—पु० (फ़ा०) महावत।
फ़ीलमुर्ग़—पु० (फ़ा०) मोर की तरह का एक प्रकार का पक्षी।
फ़ीला—पु० (फ़ा०) शतरंज का हाथी नाम का मोहरा।
फ़ीली—स्त्री० पिंडली।
फ़ील्ड—पु० (अं०) क्षेत्र।
फ़ीस—स्त्री० शुल्क,उजरत।
फ़ीसदी—क्रि० वि० (अ० फ़ा०) हर सैंकड़ा।
फुँकना९—अक्रि० जलना।
फुँकनी—स्त्री० आग फूँकने की नली। [मारना।
फुँकरना—अक्रि० फुफकार·
फुंकार—पु० फुफकार।
फुँकैया—वि० फूँकने वाला।
फुँदना—पु० झब्बा, गुच्छा।

फुँदिया—स्त्री० नारे का झब्बा।
फुंदी—गाँठ। बिन्दी।
फुंसी—स्त्री० छोटी फुड़िया।
.फुक़रा—पु० (अ०) बहु० 'फ़क़ीर' का।
फुगना—सक्रि० खोलना।
.फुगाँ—पु० (फा०) रोना।
फुचड़ा—पु० बाहर निकला हुआ सूत या रेशा। [पैमाना।
.फुट—पु०(अं०)१२ इंच का-
फुटकर, फुटकल—वि० अकेला, अलग। कई प्रकार का।
फुटका—पु० छाला।
फुटकी—स्त्री० दूध, दही के जमे हुए कण। धब्बा। छोटा लच्छा।
.फुटनोट—पु०(अं०) पृष्ठ के नीचे लिखी जाने वाली टिप्पणी। [गेंदा। कूदना।
.फुटबाल—पु० (अं०) बड़ा-
फुटैल—वि० हतभाग्य।
फुतकार—पु० फुफकार।
फुदकना—अक्रि० उछलना, कूदना।
फुनगी—स्त्री० अंकुर।
फुनफुनी—अव्य० बारम्बार।
.फुनून—पु० (अ०) बहु० 'फन' का।
फुप्फुस—पु० फेफड़ा।
फुफकार—पु० फूत्कार।
फुफेरा—वि० फूफा से पैदा।
फुर—वि० सच्चा।
.फुरक़त—स्त्री०(अ०)वियोग।
.फुरक़ान—स्त्री०(अ०)क़ुरान-शरीफ़।
फुरती—स्त्री० शीघ्रता।
फुरतीला—वि० जिसमें फुरती हो।
फुरना१—अक्रि० सत्य ठहरना, साबित होना।
फुरफुराना—सक्रि० 'फुर-फुर' शब्द करना। पंख-फड़फड़ाना।
फुरफुरी—स्त्री० पंख फड़-फड़ाने की क्रिया।
फुरमाना—सक्रि०हुक्म देना।
.फुरसत—स्त्री०(अ०) छुट्टी, अवकाश। [होना, फड़कना।
फुरहरना—सक्रि० स्फुरित-
फुरहरी—स्त्री० कँपकँपी।
फुलका—पु०हलकी चपाती।
फुलचुही—स्त्री० फूल का रस-चूसने वाली चिड़िया।
फुलझड़ी—स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाज़ी।
फुलवाई—स्त्री० फुलवारी।
फुलवार—वि० प्रसन्न।
फुलसुंघी—स्त्री०एकचिड़िया।
फुलहारा—पु० माली।
फुलाना—सक्रि० वायु भर कर बढ़ाना। फूलयुक्त-करना।
फुलायल—पु० फुलेल।
फुलिंग—पु० अग्निकण।
.फुलिस्केप—पु० काग़ज़ की नाप (१७इं × १३½इं)
फुलेरा—पु० फूलों का छत्र।
फुलेल—पु० फूलों की महक से बसा हुआ तेल।
फुलेहरा—पु० सूत तथा फूलों का गुच्छेदार बन्दनवार।
फुलोरी—स्त्री० बेसन की पकौड़ी।
फुल्ल—वि० खिला हुआ।
फुल्लता—स्त्री० खिलने का भाव या क्रिया।
फुसफुस—पु० फेफड़ा।
फुसफुसा—वि० कमज़ोर।
फुसफुसाना—सक्रि० धीमे स्वर से बोलना।
फुसलाना—सक्रि० बहकाना।
फुहार, फुहारा—पु० जल का बारीक छींटा तथा छींटा देने वाला एक यंत्र।
फुही—स्त्री० जल-कण।
फूँक—पु० फुफकार। साँस।
फूँका—पु० फूँका मारने की नली। फोड़ा।
फूँकना—सक्रि० जलाना।
फूँदफुँदारा—वि० झब्बेदार।
फूट—स्त्री० वैर-भाव। एक-फल। [का दर्द।
फूटन—स्त्री०शरीर के जोड़ों-
फूटना—अक्रि० टूटना। अलग होना।
फूटा—वि० टूटा हुआ।
फूत्कार—पु० मुँह से वेग-पूर्वक हवा छोड़ने का शब्द।
फूफा७—पु०पिता का बहनोई।
फूल—पु० पुष्प। एक धातु। शवदाह से बची हुई अस्थियाँ। स्त्री० उमंग।
फूलकारी—स्त्री० बेल-बूटे का काम।
फूलगोभी—स्त्री० एक शाक।
फूलदान—पु० गुलदस्ता रखने का पात्र।

फूलदार—वि० जिसमे फूल पत्ते बने हों।
फूलना—अक्रि० खिलना। सूजना। कुसुमित होना।
फूलमती—स्त्री० एक देवी।
फूला—पु० नेत्र का एक रोग।
फूली—स्त्री० आँख की पुतली पर का एक सफ़ेद दाग़।
फूस—पु० सूखा तृण।
फूहड़—वि० बेढंगा, बेशऊर।
फेंकना—सक्रि० डालना। छोड़ना।
फेंकरना—अक्रि० ज़ोर से रोना। सिर का नंगा होना।
फेंट—स्त्री० कमर का घेरा। कमरबन्द। [मथना।
फेंटना—सक्रि० हाथ से-
फेंटा—पु० दे० 'फेंट,'। छोटी पगड़ी।
फेंटी—स्त्री० अटेरन पर लपेटा हुआ सूत। [पहलवान।
फेकैत—वि० फेंकने वाला।
फेट, फेर—पु० फेंटा।
फेन, फेना—पु० जलविकार, झाग।
फेनिल—वि० फेनयुक्त।
फेनी—स्त्री० सूत के आकार की एक मिठाई।
फेफड़ा—पु० शरीर के अंदर साँस लेने की थैली।
फ़ेमिली—स्त्री० (अं०) परिवार।
फेर—पु०—चक्कर। ढंग। रद-बदल। [घुमाना।
फेरना—सक्रि० लौटाना।
फेरफार—पु० उलट-फेर।
फेरक, फेरु—पु० गीदड़।
फेरा७—पु० चक्कर।
फ़ेल—वि० अनुत्तीर्ण। पु० काम, कर्म। संभोग।
फ़ेल-ज़ामिनी—स्त्री० (अ०) नेक चलनी की ज़मानत।
फ़ेल-मुतअद्दी—पु० (अ०) सकर्मक क्रिया। [क्रिया।
फ़ेल-लाज़िमी—पु० अकर्मक-
फ़ेली—वि० (अ०) धूर्त्त, चालाक। [हुआ ऊन।
फ़ेल्ट—पु० (अं०) जमाया-
फ़ैंसी—वि० ख़ूबसूरत, दर्शनीय। [कारख़ाना।
फ़ैक्टरी—स्त्री० (अं०)
फ़ैज़—पु० (अ०) कृपा।
फ़ैज़-रसाँ—वि० (अ०फ़ा०) लाभ पहुँचाने वाला।
फ़ैजे-आम—पु० (अ०) जन साधारण का हित।
फ़ैयाज़र—वि० (अ०) दानी, उदार।
फैल—पु० काम। खेल। ढोंग। समूह। विस्तार।
फैलना९—अक्रि० विस्तृत होना। बिखरना।
फ़ैलसूफ़—पु० (फ़ा०) विद्वान्। धोखेबाज़।
फ़ैलसूफ़ी—स्त्री० अपव्यय। धूर्त्तता।
फैलाव—पु० विस्तार।
फ़ैशन—पु० (अं०) चाल, तर्ज़। [शौक़ीन।
फ़ैशनेबुल—वि० (अं०)
फ़ैसल—पु० (अ०) न्याय। न्यायकर्त्ता।
फ़ैसला—पु० (अ०) निर्णय।
फोंक—पु० बाण का नुकीला भाग।
फोंदा—पु० फुँदना।
फोंफर—वि० खोखला।
फोक—पु० भूसी।
फोकला७—पु० छिलका।
फोट—पु० स्फोट।
फोटक—वि० दे० 'फोकट'।
फोटा—पु० बिंदी, टीका।
फ़ोटो—पु० (अं०) फ़ोटोग्राफ़ी यंत्र से उतारा हुआ चित्र। [चित्र।
फ़ोटोग्राफ़—पु० (अं०) छाया-
फ़ोटोग्राफ़र—पु० (अं०) फ़ोटो उतारने वाला।
फोड़ना—अक्रि० तोड़ना। फूट डालना।
फोड़ा—पु० घाव, व्रण।
फोता—पु० (फ़ा०) अंडकोष। थैला। [ख़ज़ाना।
फोताख़ाना—पु० (फ़ा०)
फ़ोतेदार—पु० (फ़ा०) ख़ज़ानची।
फ़ोनोग्राफ़—पु० एक प्रसिद्ध यंत्र जिसमें कही हुई बात तथा गाने आदि चूड़ियों-द्वारा असली रूप में सुनाई पड़ते हैं।
फ़ोरमैन—पु० (अं०) किसी कारख़ाने के कारीगरों का मुखिया।
फ़ोर्ट—पु० (अं०) क़िला।
फ़ौज़—स्त्री० (अ०) सेना। झुंड। [चढ़ाई, धावा।
फ़ौजकशी—स्त्री० (अ०फ़ा०)

फ़ौजदार—पु० (अ० फ़ा०) सेनापति ।
फ़ौजदारी—स्त्री० (अ० फ़ा०) लड़ाई दंगा । मार-पीट । फ़ौजी-अदालत ।
फ़ौजी—वि० (अ०) फ़ौज का । पु० सैनिक ।
फ़ौत२—वि०(अ०)नष्ट, मृत।
फ़ौतीनामा—पु० (अ०) किसी की मृत्यु का सूचना-पत्र । [तुरंत ।
फ़ौरन्—क्रि०वि० (अ०)
फ़ौलाद—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का उत्तम लोहा ।
फ़ौलादी—वि० (फ़ा०) फ़ौलाद का बना हुआ ।
भाले या बल्लम की लकड़ी ।
फ़ौवारा—पु०दे० 'फुहारा'।
फ़्राक-पु० (अं०) एक प्रकार का स्त्रियों का ढीला कुर्त्ता।
फ़्री—वि० (अं०) मुफ़्त । स्वतंत्र ।
फ़्रेंच—वि०(अं०)फ़्रांस देश का। स्त्री० फ़्रांसकी भाषा।

२३—ब

बंक, बंका—वि० टेढ़ा, शूर ।
बंकट—वि० दे० 'बंक' ।
बंका—वि०बाँका, टेढ़ा, वीर।
बंकाई—स्त्री० टेढ़ापन ।
बँकैयन—क्रि० वि० घुटनों के बल ।
बंग—पु० बंगाल देश ।
बँगला—वि०बंगाल देश का। पु० खुला घर विशेष । स्त्री० बंग देश की भाषा।
बंगा—वि० उद्दंड ।
बंगाली—पु० बंगाल देश का रहने वाला । बंगालियों की भाषा ।
बंचक३—पु० ठग । [ठगना ।
बंचना—स्त्री० ठगी । सक्रि०
बँचवाना—सक्रि० पढ़वाना।
बंछनाद—स्त्री० अभिलाषा ।
बंजर—पु० ऊसर भूमि ।
बंजारा—पु० व्यापारी ।
बंजुल—पु०अशोकवृक्ष । बेंत
बंझा—स्त्री० बाँझ औरत ।
बँटना१—अक्रि० विभाजित-होना ।
बँटवारा—पु० विभाजन ।
बंटा—वि०छोटे आकार का।
बँटाना—सक्रि० हिस्सा-कराना । [गठरी ।
बंडल—पु० (अं०) छोटी-
बंडा—पु० कचालू ।
बंडी—स्त्री०फतुही । [लकड़ी
बँडेरी—स्त्री० मँगरे पर की-
बंद, बंध—पु० बाँधने वाली-वस्तु । क़ैद । [सलाम ।
बंदगी-स्त्री० (फ़ा०)प्रार्थना।
बंदगोभी—स्त्री० पातगोभी।
बंदन—पु० सिन्दूर । रोली। बंदनवार । प्रणाम ।
बंदनता—स्त्री० पूजनीय-होने की योग्यता ।
बंदनवार—पु० फूल पत्तों को झालर ।
बंदना-सक्रि०प्रणाम करना।
बंदनी-स्त्री० सिरबंदी नामक गहना ।
बंदनीमाल—स्त्री० वह माला जो पैरों तक लटके ।
बंदर—पु० 'वानर' नाम का पशु । बंदरगाह ।
बंदरगाह—पु० जहाज़ों के ठहरने का अड्डा ।
बंदवान—पु०बंदीगृह-रक्षक ।
बंदसाल—पु० क़ैदख़ाना ।
बंदा७—पु० (फ़ा०) सेवक ।
बंदारु—वि० बन्दनीय ।
बंदि—स्त्री० क़ैद, बंधन । पु० बंदी, क़ैदी ।
बँदिया—स्त्री० सिर पर पह-नने का एक गहना।
बंदिश—स्त्री० (फ़ा०) उपाय । बाँधना ।
बंदी—पु० भाट । क़ैदी ।
बंदीकरण—पु० क़ैद करना ।
बंदीख़ाना, बंदीगृह—पु० जेलख़ाना ।[छुड़ाने वाला।
बंदीछोर—पु० बंधन से-

बंदीवान—पु० क़ैदी।
बंदूक़—स्त्री०एक अस्त्र। [वाला।
बंदूक़ची—पु० बंदूक़ चलाने
बँदेरा७—पु०क़ैदी। सेवक।
बंदोबस्त—पु०(फ़ा०)प्रबंध।
बंध—पु० बंधन, क़ैद।
बंधक—पु०रेहन,गिरवीं। [वाला
बंधककर्त्ता—पु०गिरवीं रखने-
बंधक-ग्रहीता—पु० जिसके पास गिरवीं रखी जाय।
बंधकी—स्त्री०व्यभिचारिणी-स्त्री। [रस्सी। क़ैद।
बंधन—पु० बाँधने का काम।
बंधनपत्र—पु० रेहननामा।
बँधना९—अक्रि०क़ैद होना। फँसना।
बंधव—पु० बांधव।
बँधवाना—सक्रि० बाँधने का काम अन्य से कराना। [बाँध।
बंधान—पु०नियत-परिपाटी।
बंधिय—पु० संबन्धी।
बंधी—स्त्री० निश्चित-प्रबंध।
बंधु३—पु० भाई। सहायक।
बँधुआ—पु० क़ैदी।
बंधुजीवक, बंदूक—पु० दुपहरिया फूल। [चारा।
बंधुता, बंधुत्व—.० भाई-
बंधुर—पु० मुकुट। हंस। वि० सुन्दर। [का फूल।
बंधूक,बंधूप—पु० दुपहरिया
बंधेज—पु० रोक। नियत समय पर देने की क्रिया।
बंध्यत्व—पु०बंध्या का भाव।
बंध्या—वि० स्त्री० बाँझ।
बंध्यापुत्र—पु०असम्भव बात।
बंपुलिस—स्त्री०आम पाख़ाना
बंब—पु० शोर। रणनाद।
बंबा—पु० पानी का नल।
बँसवाड़ी—स्त्री० बाँसों का बाग़। [बाँसुरी।
बंस—पु० वंश। बाँस।
बंसी—स्त्री० बाँसुरी, मछली फँसाने का काँटा।
बँहगी—स्त्री० काँवर।
बँहोलनी—स्त्री० आस्तीन।
बइर—पु० वैर, शत्रुता।
बईद—क्रि० वि० (अ०) दूर। अन्तर पर।
बउर—पु० बौर। [होना।
बउराना—अक्रि० पागल-
बक—पु० बगला-पक्षी। बकासुर। रटन।
बकतर—पु० कवच विशेष।
बकतार—पु० वक्ता।
ब-क़द्र—क्रि० वि० (फ़ा०) अनुसार। वि० इतना।
बकध्यानी—पु०बनावटी साधु।
बकना९—सक्रि०व्यर्थ बोलना।
बकबक—स्त्री० बकवाद।
बकमौन—पु० बुरे उद्देश्य को साधने के लिए चुप रहना।
बकरकसाव—पु० बकरों का मांस बेचने वाला।
बकरा—पु० बकरी का नर।
बकला—पु० छिलका [बात।
बकवाद—स्त्री० व्यर्थ की-
बकवास—स्त्री० बकवाद।
बकवृत्ति—स्त्री०बगले का सा-व्यवहार। वि० कपटी।
बकसना९—सक्रि० देना। माफ़ करना। [का काँटा।
बकसुआ—पु० चपरास-
बकाउ—स्त्री० बकावली।
बकायन—स्त्री० नीम जैसा एक वृक्ष।
बक़ाया—वि० (फ़ा०) शेष।
बकारि—पु० श्रीकृष्ण।
बकावल—पु०(फ़ा०)रसोइया।
बकावली—स्त्री० पुष्प का एक पौधा।
बकासुर—पु० एक राक्षस।
बकिनव—पु० बकायन।
बक़िया—वि० (अ०) शेष।
बकी—स्त्री० पूतना।
बकुचन—स्त्री० (अ०) हाथ-जोड़ना।
बकुचना—अक्रि० सिकुड़ना।
बकुचा७—पु० पोटली। ढेर।
बकुरना९—अक्रि० स्वीकार-करना। बकना।
बकुल—पु० मौलसरी।
बकेन,बकेना—स्त्री० वह गाय या भैंस जिसका बच्चा एक साल से अधिक का हो गया हो और दूध देती हो।
बकैयाँ—वि० घुटने के बल।
बकोटना—सक्रि० खसोटना।
बकौरी—स्त्री० बकावली।
बक़ौल—क्रि० वि० क़ौल या कथन के मुताबिक़।
बक्कल—पु० छिल्का।
बक़्क़ाल—पु०(अ०) बनिया।
बक्की—वि०बकबक करने वाला
बक्कुर—पु० वाक्य,वचन।
बक्षोज—पु० स्तन, कुच।
बक्स—पु० (अं०) सन्दूक़।
बखरा—पु० हिस्सा।
बखरी—स्त्री०पक्का मकान।
बखरैत—पु० हिस्सेदार।

बखान—पु०तारीफ़। वर्णन।
बखानना—सक्रि० वर्णन या बड़ाई करना।
बखार—पु० अन्न रखने का घिरा हुआ स्थान।
बखिया—स्त्री०बारीक सिलाई।
बखीर—स्त्री० मीठे रस में पकाया गया चावल।
बख़ील—वि० (अ०) कंजूस।
बखूबी*—क्रि० वि० (फ़ा०) खूबी के साथ, भली-भाँति।
बखेड़ा—पु० झगड़ा।
बखेरना—सक्रि० छितराना।
बखोरना—सक्रि० छेड़छाड़ करना।
बख़्त—पु० (फ़ा०) भाग्य।
बख़्तर—पु० (फ़ा०) कवच।
बख़्तावर—वि० (फ़ा०) भाग्यवान्। [सौभाग्य।
बख़्तावरी—स्त्री० (फ़ा०)
बख़्शना—सक्रि० (फ़ा०) प्रदान करना।
बख़्शी—पु० (फ़ा०) तनख़्वाह बाँटने वाला।
बख़्शिश—स्त्री० (फ़ा०) इनाम, भेंट।
बख़्शीश-नामा—पु० (फ़ा०) दान-पत्र, हिब्बानामा।
बग—पु० बगुला।
बगई—स्त्री० कुकुरमक्खी।
बगछुट—क्रि०वि०बड़े ज़ोर से
बगदर—पु० मच्छर।
बगदना ९—अक्रि० गिरना।
बगदहा—वि० बिगड़ैल।
बगना—अक्रि० टहलना।
बगनी—स्त्री० घास विशेष।
बगमेल—पु० बाग मिलाकर चलना। क्रि० वि० साथ-साथ।
बगर—पु० महल। आँगन। गोशाला। स्त्री० बग़ल।
बगरना९—अक्रि० फैलना।
बगरी—स्त्री०मकान,बखरी।
बगरूरा—पु० बवण्डर।
बग़ल—स्त्री० (फ़ा०) काँख। पार्श्व।
बग़लगीर—वि०(फ़ा०) बग़ल में रहना। गले लिपटना।
बग़लबंदी—स्त्री० मिरज़ई-विशेष।
बगला—पु० बक पक्षी।
बगलियाना—अक्रि० बग़ल से,या हटकर निकल जाना।
बगली—स्त्री० (फ़ा०) जेब, थैली।
बगलेंदी—स्त्री०एक चिड़िया।
बगसना—सक्रि० देना। क्षमा करना।
बगा—पु० जामा। बगुला।
बगाना—सक्रि० घुमाना।
बगार—पु० गोशाला।
बगारना—सक्रि०बिखराना। फैलाना।
बग़ावत—स्त्री०(अ०)विद्रोह।
बगिया—स्त्री० छोटा बाग़।
बग़ीचा७—पु० (फ़ा०) बाग़।
बगुदा—पु० एक शस्त्र।
बगूरा, बगूला—पु० बवंडर।
बगेदना—सक्रि० विचलित करना।
बगेरी—स्त्री० एक चिड़िया।
बग़ैर—अव्य०(अ०) बिना।
बग्घी-स्त्री०घोड़ागाड़ी विशेष।
बघनहाँ७—पु० बघनख।
बघवार—पु० बाघ की मूँछ के बाल।
बघारना—सक्रि० छौंकना।
बघूरा—पु० बवंडर।
बघेल—पु०राजपूतों की एक जाति। [औषध।
बच—पु० वचन। स्त्री० एक
बचका—पु० एक पकवान।
बचकाना७—वि० बच्चों के योग्य।
बचत—स्त्री०मुनाफ़ा। शेष।
बचन—पु० बात। प्रतिज्ञा।
बचना९—अक्रि०शेष रहना। रक्षित रहना।
बचपन—पु० लड़कपन।
बचवैया—पु० रक्षक।
बचाव—पु० रक्षा।
बच्चा७—पु० शिशु।
बच्चादानी—स्त्री० गर्भाशय।
बच्छ, बछ—पु० बछड़ा।
बछरा, बछड़ा७—पु० गाय का बच्चा। [का बच्चा।
बछेरा, बछेड़ा—पु० घोड़े-
बछेरू—पु० बछड़ा। [वाला।
बजंत्री—पु० बाजा बजाने-
बजकना—अक्रि० सड़कर पिलपिला होना।
बजट—पु० (अं०) आय-व्यय

नोट—*फ़ारसी में 'ब' अक्षर शब्दों के पूर्व 'सहित' अर्थ में प्रयुक्त होता है; जैसे 'बखूबी,' 'बखुशी' आदि।

का अनुमान-पत्र।
बजड़ा—पु० एक प्रकार की पटी हुई नाव। बाजरा।
बजना—अक्रि०आवाज़ देना। मशहूर होना। [वाला।
बजनियाँ—पु०बाजा बजाने-
बजबजाना—अक्रि० सड़ने के कारण झाग से उठना।
बजमारा७—वि० वज्र से मारा हुआ।
बजरंगबली—पु०हनुमानजी।
बजरबट्टू—पु० एक वृक्ष का बीज।
बजरा—पु० एक तरह की पटी हुई नाव। बाजरा।
बजरी—स्त्री० कंकड़ी। ओला। छोटा कँगूरा।
बजवाना—सक्रि० बजाने में प्रवृत्त करना।
बजवैया—वि०बजाने वाला।
बजा—वि० (फ़ा०)उचित।
बजा-आवरी—स्त्री० (फ़ा०) कर्तव्यपालन।आज्ञानुसार-काम करना।
बजागि—स्त्री० वज्राग्नि।
बज़ाज़२—पु० कपड़े का व्यापारी। [का बाज़ार।
बज़ाज़ा—पु० (अ०) कपड़े-
बजाना—सक्रि० बाजे से ध्वनि निकालना। पूरा-करना।
बजाय—क्रि० वि० (फ़ा०) स्थान पर। बदले में।
बजारी—पु० बकवादी।
ब-जिंस—क्रि० वि० (फ़ा०) ठीक वैसा ही।

बजुज़—अव्य० (फ़ा०) सिवा,अतिरिक्त। [सामान।
बज्ज़—पु० (अ०) वस्त्र।
बज़्म—पु० (फ़ा०) सभा।
बज़्मगाह—स्त्री०(फ़ा०)महफ़िल।
बज्री—पु० इन्द्र।
बझना९—अक्रि० फँसना।
बझाव—पु० उलझाव।
बट—पु० बरगद। पथ।
बटई—स्त्री० बटेर।
बटखरा—पु० तौलने के उपयोग में आने वाला लोहे के टुकड़ों का मान।
बटन—स्त्री० ऐंठन। कुर्त्ता, कोट आदि में लगाने की सीप आदि की घुंडी।
बटना—सक्रि० ऐंठन देकर मिलाना। अक्रि० पिसना।
बटपार,बटमार२—पु०डाकू।
बटमारी—स्त्री० राहगीरों को लूटना।
बटली,बटलोई—स्त्री०पतीली।
बटवार—पु० पहरेदार।
बटा—पु० गेंद। गोला।
बटाई—स्त्री० बटने का काम या मज़दूरी।
बटाऊ—पु० बटोही।
बटाक—वि०बड़ा।[पगडंडी।
बटिया—स्त्री० छोटा गोला।
बटी—स्त्री० गोली। बग़ीचा।
बटुआ—पु० थैली। बटलोई।
बटुई—स्त्री० देगची।
बटुक—पु० विद्यार्थी।
बटुरना—अक्रि० सिमटना।
बटुला—पु० बड़ी बटुई।
बटेर—पु० एक पक्षी।

बटेरबाज़—पु० बटेर पालने-वाला।
बटोर—पु० समूह, जमाव।
बटोरन—पु० बटोर कर इकट्ठा किया हुआ।[करना।
बटोरना—सक्रि० एकत्रित-
बटोही—पु० पथिक।
बट्ट—पु० गेंद। ऐंठन, शिकन।
बट्टा—पु०दलाली। दस्तूरी। घाटा। ७लोढ़ा।
बट्टाखाता—पु० डूबी हुई रक़म का लेखा।
बट्टाढाल—वि० चौरस।
बट्टू—पु० बजरबट्टू। बटा, गोला।
बट्टेबाज़—वि० जादूगर।
बडंगा—पु० छाजन के बीच की लकड़ी।
बड़—पु०बरगद। वि०बड़ा।
बड़क—क्रि० वि० बढ़ कर।
बड़का—वि०बड़ा।
बड़प्पन—पु० श्रेष्ठता।
बड़बड़—स्त्री० बकवाद।
बड़बड़ाना—अक्रि० बकबक-करना।
बड़बड़िया—पु० बकवादी।
बड़बोला७-वि० डींग हाँकने-वाला।
बड़भागी—वि० भाग्यशाली।
बड़रा—वि० बड़ा।
बड़वा—स्त्री० घोड़ी।
बड़वागि—स्त्री० समुद्र के भीतर की अग्नि।
बड़वानल—पु० समुद्र के भीतर की अग्नि।

बढ़वारी—स्त्री० बड़ाई।
बढ़हन—पु० धान विशेष।
बढ़हल—पु० एक फल
बढ़हार—पु० विवाह के अगले दिन का भोजन।
बढ़ा७—वि० विशाल। बढ़िया। पु० उर्द की पीठी का एक पकवान।
बड़ाई—स्त्री० बड़प्पन।
बड़ी—स्त्री०बरी, कुम्हड़ौरी।
बड़ेरा७—वि०बड़ा। प्रधान। पु० छाजन के बीच की लकड़ी।
बड़ौना—पु० बड़ाई।
बढ़ई—पु० काठ का काम करने वाला।
बढ़ती—स्त्री० तरक्क़ी,वृद्धि।
बढ़ना९—अक्रि० विस्तृत-होना। उन्नत होना। बुझना।
बढ़नी—स्त्री० झाड़ू।
बढ़वारि—स्त्री० बढ़ती।
बढ़ाव—पु० बढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि।
बढ़ावा—पु० प्रोत्साहन।
बढ़िया—वि० उत्तम।
बढ़ेला—पु० जंगली सूअर।
बढ़ैया—पु० बढ़ई।
बढ़ोतरी—स्त्री० बढ़ती।
बणिक, बणिज—पु० सौदा-गर, बनिया।
बणिकपथ—पु० बाज़ार।
बत—स्त्री० (अ०) बत्तख़। बत्तख़ के आकार की शराब रखने की सुराही।
बतकही—स्त्री० बातचीत।
बतख़—स्त्री० (अ०) एक-पक्षी।
बतचल—वि० बकवादी।
बतबढ़ाव—पु०बात बढ़ाना।
बतर—वि० बदतर।
बतरस—पु० बातचीत का आनंद। [करना।
बतराना—अक्रि० बातचीत-
बतरौंहा—वि० बातचीत के लिए इच्छुक। [बताना।
बतलाना—सक्रि० कहना।
बतास—पु० गँठिया।
बतासा—पु० एक मिठाई।
बतोली—स्त्री० भाँडपना।
बतिया—स्त्री० कच्चा नया फल। [करना।
बतियाना—अक्रि० बातचीत-
बतीसी—स्त्री० बत्तीसों दाँत।
बतौर—क्रि० वि० (अ०) तरीक़े पर। समान।
बतौरी—स्त्री०ददोरा,सूजन।
बत्ती—स्त्री० दिया। रुई की बाती।
बत्तीस—वि०३२
बत्तीसा—पु० बत्तीस चीज़ों के मेल से बना लड्डू तथा काढ़ा।
बत्तीसी—स्त्री० दाँतों की पंक्ति। ३२ का समूह।
बथुआ—पु०एक पौधा।
बद—स्त्री० एक रोग। वि० (फ़ा०) बुरा।
बदअमली—स्त्री० (फ़ा०) अशांति, अराजकता।
बदइख़लाक़२—वि० (फ़ा०) बुरे आचरण और व्यवहार का। [कुप्रबन्ध।
बदइंतज़ामी—स्त्री० (फ़ा०)
बदऐमाल२—वि० (फ़ा०) दुराचारी।
बदकार२—वि० (फ़ा०) कुकर्मी। [अभागा।
बदक़िस्मत२—वि० (फ़ा०)
बदख़त—पु० (फ़ा०) बुरा-लेख। वि० बुरा लेखक।
बद-ख़ू—वि० (फ़ा०) बुरे स्वभाव का।
बदख़्वाह२—वि० (फ़ा०) बुरा चाहने वाला।
बदगुमान२—वि० (फ़ा०) अनुचित संदेह करने वाला।
बद-गो—वि० (फ़ा०) निन्दक,चुगुलख़ोर।
बदगोई—स्त्री०(फ़ा०)निन्दा।
बदचलन२—वि० (फ़ा०) कुमार्गी। [कटुभाषी।
बदज़बान२—वि० (फ़ा०)
बदज़ात—वि०(फ़ा०) नीच
बदज़ेबर२—वि० (फ़ा०) भद्दा।
बदतमीज़—वि० (फ़ा०) बेहूदा। [भी बुरा।
बदतर—वि० (फ़ा०) और-
बदद़ियानती—स्त्री० (फ़ा०) बुरी नीयत, बेईमानी।
बददुआ—स्त्री०(फ़ा०)शाप।
बदन—पु० (अ०) शरीर। (हिं०) मुख। [अभागा।
बदनसीब२—वि० (अ०)
बदना—सक्रि० बाज़ी-लगाना। कहना।
बदनाम२—वि० (फ़ा०) कलंकित।

बदनीयतर—वि० (फ़ा०) बेईमान।
बदनुमा—वि० (फ़ा०)भद्दा।
बदपरहेज़ी—स्त्री० (फ़ा०) कुपथ्य। [अभागा।
बद-बख्त—वि० (अ०)
बदबू—स्त्री० (फ़ा०)दुर्गन्ध।
बद-मज़गी—स्त्री० (फ़ा०) मनमुटाव। बे-स्वादपन।
बदमज़ा—वि० (फ़ा०)फीका।
बदमस्तर—वि० (फ़ा०) लंपट। मत्त। [कुमार्गी।
बदमाशर—वि० (फ़ा०)
बदमिज़ाजर—वि०(फ़ा०) दुष्ट स्वभाव का।
बदरंगर—वि० (फ़ा०) भद्दे रंग का। [क्रि० वि० बाहर।
बदर—पु० बेर का फल।
बदरा—पु० बादल।
बदराह—वि० (फ़ा०) दुष्ट, कुमार्गी। [बादल।
बदरी—स्त्री० बेर का फल।
बदरीवन—पु०बेर का जंगल, बदरिकाश्रम।
बदरोबी—स्त्री० गुस्ताखी।
बदरौंह—वि० कुमार्गगामी।
बदलना—अक्रि० परिवर्तित होना। सक्रि० परिवर्त्तन करना। [एवज़।
बदला—पु०(अ०) विनिमय-
बदलाव—पु० परिवर्त्तन।
बदली—स्त्री०(अ०) तबादला।
बदशकल—वि० (फ़ा०) कुरूप, भद्दा। [दुर्व्यवहारी।
बदसलूकर—पु० (फ़ा०)
बद-सूरत—वि०(फ़ा०)कुरूप।

ब-दस्त—क्रि० वि०(फ़ा०) हस्ते, मारफ़त, द्वारा।
बदस्तूर—अव्य० (फ़ा०) ज्यों का त्यों।
बदहज़मी—स्त्री० (फ़ा०) अजीर्ण। [बेहोश।
बदहवास—वि० (फ़ा०)
बदा-वि०भाग्य में लिखा हुआ।
बदाबदी—स्त्री० लागडाँट।
बदि—स्त्री० बदला। अव्य० कृष्णपक्ष। [हिं० कृष्णपक्ष।
बदी—स्त्री० (फ़ा०) बुराई।
बदौलत—क्रि० वि० (फ़ा०) द्वारा। कृपा से।
बद्दर, बद्दल—पु० बादल।
बद्दू—पु० (फ़ा०)बदमाश। अरब की एक जाति।
बद्ध—वि० बँधा हुआ।
बद्धकोष्ठ—पु० क़ब्ज़ियत।
बद्धपरिकर—वि०तैयार।
बद्धहस्त-वि० बँधे हाथ।
बद्धी-स्त्री०डोरी।एक गहना।
बद्र—पु० (फ़ा०) पूर्णचन्द्र।
बध—पु० हत्या।
बधना—सक्रि०जान से मार देना। पु० टोंटीदार लोटा।
बधाई—स्त्री० हर्ष-सूचक-संदेश। मंगलाचार।
बधाना—सक्रि० बध करना।
बधावरा—पु० बधावा।
बधावा—पु०बधाई। मंगलोत्सव का उपहार।
बधिक-पु०जल्लाद। शिकारी
बधिया—पु०अंडकोष रहित-पशु।
बधिर—वि० बहरा।

बधू—स्त्री० बहू। पत्नी।
बधूक—पु० बंदूक़। गुल-दुपहरिया। [गिन स्त्री।
बधूटी—स्त्री० पतोहू। सुहा-
बधूरा—पु० बवंडर।
बधैया-पु०गधाई। मंगलवाद्य
बध्य—वि०बध करने योग्य।
बन—पु० जंगल। जल।
बनक—स्त्री० बनावट।
बनियों का मुहल्ला।
बनकट७—पु० एक प्रकारका बाँस।
बनखंडी—पु० बनवासी।
बनगरी—स्त्री०एक मछली।
बनगाव—पु०हिरन विशेष।
बनचर, बनचारी५—पु०बन में रहने वाला।
बनज—पु०कमल। [करना।
बनजना—सक्रि० व्यापार-
बनजारा—पु० सौदागर-विशेष।
बनजी—पु० व्यापारी। व्यापार। [लता।
बनज्योत्स्ना—स्त्री० माधवी-
बनत—स्त्री० बनावट।
बनताई—स्त्री० जंगल की भयंकरता। [नामक पौधा।
बनतुलसी—स्त्री० बबई-
बनद—पु० बादल।
बनधातु—स्त्री० गेरू।
बनना—अक्रि० तैयार होना। रचा जाना। सजना।
बननि—स्त्री० बनावट।
बननिधि—पु० समुद्र।
बनपट—पु० छाल का कपड़ा।
बनपाती—स्त्री० बनस्पति।

बनप्रिय—पु० कोयल।
बनफ़्शा—पु० (फ़ा०) एक प्रकार की वनस्पति-दवा।
बनबारी—स्त्री० बन-कन्या। फुलवारी। [रहना।
बनबासन—पु० जंगल में-
बनबाहन—पु० नाव।
बनबिलाव—पु० जंगलीबिलार
बनमानुस—पु० मनुष्य की आकृति का एक जंगली जीव
बनमाला—स्त्री०मंदार, कुंद तुलसी,पारिजात और कमल की बनी हुई माला।
बनमाली—पु०कृष्ण,विष्णु।
बनर—पु० शस्त्र विशेष।
बनरखा—पु० बन-रक्षक। एक जंगली जाति।
बनरांव—पु० बड़ा जंगल, । बड़ा वृक्ष।
बनरा—पु० दूल्हा। बानर। विवाह के समय का एक गीत।
बनराज, बनराय—पु०सिंह। बड़ा वृक्ष। [कमल।
बनरुह—पु० जगली वृक्ष।
बनवसन—पु० छाल-वस्त्र।
बनवाना—सक्रि० दूसरों से बनाने का काम कराना।
बनवारा—पु० श्रीकृष्ण।
बनवासी—पु०वन में रहने वाला। [फँसाने का काँटा।
बनसी—स्त्री०मुरली। मछली-
बना—पु० दूल्हा।
बनाइ, बनाय—क्रि० वि० भली-भाँति।
बनाउरि—स्त्री०तीरों की पंक्ति।
बनात—स्त्री० ऊनीवस्त्रविशेष।
बनाफर—पु० क्षत्रियों की एक जाति। [का मिलान।
बनाबंत—पु० जन्म पत्रियों-
बनाम—अव्य० (फ़ा०) नाम से। नाम पर।
बनाव—पु०रचना। सजावट
बनावट—स्त्री० रचना। आडंबर।
बनावटी—वि० नक़ली।
बनावरि—स्त्री० तीरों का समूह। [पत्रादि।
बनासपती—स्त्री० फल-फूल-
बनि—स्त्री० मजदूरी।
बनिक—पु० बनिया।
बनिज—पु० व्यापार।
बनिजति—स्त्री० व्यापार की चीजें। [करना।
बनिजना—सक्रि० व्यापार-
बनित—स्त्री० वेश,सजावट।
बनिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री।
बनिया—पु० व्यापारी।
बनियाइन—स्त्री० गंजी।
बनिस्बत—अव्य० (फ़ा०) अपेक्षा। [रक्षक-मज़दूर।
बनिहार—पु० खेत का-
बनी—स्त्री०जंगल। वाटिका।
बनीर—पु० बेंत।
बनूक—पु० बंदूक़।
बनेठी—स्त्री० गोल लट्टू से युक्त पटेबाज़ों की लाठी।
बनैला—वि० जंगली।
बनौटी—वि० कपासी।
बनौरी—स्त्री० ओला।
बन्नी—स्त्री० अन्न के रूप में दी जाने वाली मज़दूरी।
बप—पु० बाप।
बपतिस्मा—पु० (अं०) ईसाई बनाये जाने का एक संस्कार।
बपना—सक्रि० बोना। (बीज आदि)।
बपु—पु० शरीर। अवतार।
बपुरा—वि० बेचारा।
बपौती—स्त्री० पिता से प्राप्त जायदाद।
बफारा—पु० भाप। भाप से सेंकने की क्रिया।
बफौरी—स्त्री० भाप से पकी हुई पकौड़ी। [में बोलना।
बबकना—अक्रि० उत्तेजना-
बबर—पु० (अ०) सिंह।
बबुई—स्त्री० बेटी। छोटी-ननद, बीबी। [वृक्ष।
बबूर, बबूल—पु० कीकड़ का-
बबूला—पु०बगूला। तूफ़ान।
बभनी—स्त्री० छिपकली की तरह का एक जन्तु।
बभ्रु—पु० पीला रंग। बड़ा नौला। विष्णु। एक यादव।
बम—पु० (अं०) विस्फोटक-गोला। शैवों का 'बम' शब्द। [मारना।
बमकना—अक्रि० शेख़ी-
बमना—सक्रि०वमन करना।
बमलाना—सक्रि० बढ़-चढ़ कर बातें कहने के लिए किसी को बढ़ावा देना।
बमीठा—पु० बाँबी।
बमूजिब—क्रि० वि० (फ़ा०) अनुसार, मुताबिक़।
बय—पु० उम्र।

बयना—सक्रि० बोना।
बयससिरोमनि—पु० जवानी।
बया—पु० एक पक्षी। अनाज तौलने वाला। [मज़दूरी।
बयाई—स्त्री० अन्न तौलने की·
बयाज़—स्त्री० (अ०) बही· खाता।
बयान—पु० (फ़ा०) वर्णन। कविता की नोट बुक।
बयाना—पु० (अ०) पेशगी। अक्रि० बडबड़ाना।
बयाबान—पु० (फ़ा०) निर्जन-स्थान।
बयार—पु० हवा।
बयारी—स्त्री० हवा। रात्रि का भोजन।
बयालीस—वि० ४२।
बयासी—वि० ८२।
बरंगा—पु० छत पाटने की पटिया।
बर—पु० दूल्हा। बरगद। बल। बरदान। वि० श्रेष्ठ। अव्य० ऊपर, पर।
बरअक्स—वि० (फ़ा०) उलटा, विपरीत।
बर-आमद—वि० (फ़ा०) सामने आया हुआ।
बरई—पु० तमोली।
बरकदाज़—पु० (फ़ा०) रक्षक। बड़ी लाठी या तोड़ेदार बंदूक़ रखने वाला सिपाही।
बरकत—स्त्री० (अ०) बढ़ती। कृपा। लाभ। [बचना।
बरकना९—अक्रि० हट जाना,
बरक़रार—वि० (फ़ा०) क़ायम, मौजूद।
बरकाज—पु० शादी।
बरकाना—सक्रि० बचाना, रोकना।
बरखना—अक्रि० बरसना। सक्रि० वर्षा करना।
बरख़ास्त—वि० (फ़ा०) पद च्युत। मौक़ूफ़। [प्रतिकूल।
बरख़िलाफ़—वि० (फ़ा०)
बरखुरदार—पु० (फ़ा०) बेटा।
बरग—पु० वर्ग। वर्ण। पत्ता, बर्क।
बरगद—पु० वट-वृक्ष।
बर-गश्ता—वि० (फ़ा०) फिरा हुआ। विद्रोही।
बरछा—पु० भाला। [वाला।
बरछैत—पु० बरछा चलाने·
बरनजइआर७—पु० रोकने वाला।
बरजना—अक्रि० रोकना।
बरज़बान—वि० कंठस्थ।
बरज़ोर२—वि० प्रबल, ज़बरदस्त।
बरत—पु० व्रत। रस्सी।
बरतन—पु० पात्र।
बरतना—सक्रि० काम में लाना। अक्रि० व्यवहार· करना।
बरतरफ़—वि० (फ़ा०) किनारे। अलग किया हुआ।
बरताना—सक्रि० बाँटना।
बरताव—पु० व्यवहार।
बरतोर—पु० बाल टूटने से उत्पन्न हुआ फोड़ा।
बरद, बरदा—पु० बैल।
बरदाफ़रोश२—पु० (फ़ा०) ग़ुलाम बेचने वाला।
बरदा—पु० (तु०) ग़ुलाम, दास।
बरदाफ़रोश—वि० (फ़ा०) जो दास बेचने का व्यापार करता हो। [जाने वाला।
बरदार—वि० (फ़ा०) ले·
बरदाश्त—स्त्री० (फ़ा०) सहन।
बरदिया—पु० चरवाहा।
बरदी—पु० लदा हुआ बैल।
बरदैत—पु० भाट। शायर। गवैया। वि० आशीर्वादक।
बरधा—पु० बैल।
बरन—पु० दे० 'वर्ण', रंग। अव्य० बल्कि।
बरनन—पु० बयान।
बरनना—सक्रि० वर्णन करना।
बरना—सक्रि० ब्याहना। चुनना। अक्रि० जलना।
बरपा—वि० (फ़ा०) खड़ा।
बरबंड—वि० प्रचंड।
बरबट—क्रि० वि० बलात्।
बरबस—क्रि० वि० बलात्। वि० व्यर्थ।
बरबाद२—वि० (फ़ा०) नष्ट।
बरम—पु० कवच।
बरमला—क्रि० वि० (फ़ा०) सामने, खुले आम।
बर-महल—वि० (फ़ा०) उपयुक्त। क्रि० वि० ठीक मौक़े पर।
बरमा—पु० लकड़ी में छिद्र करने का औज़ार।
बरमी—पु० ब्रह्म देश का निवासी। [देना।
बरम्हाना—सक्रि० आशीर्वाद·

बरम्हाव—पु० आशीर्वाद ।
बररै—पु० तितैया ।
बरवट—स्त्री० तिल्ली ।
बरवै—पु० एक छंद ।
बरषाशन—पु० साल भर के खाने योग्य भोजनसामग्री ।
बरस—पु० वर्ष ।
बरसगाँठ—स्त्री० सालगिरह ।
बरसना—सक्रि० मेंह पड़ना ।
बरसाइत—स्त्री० जेठ बदी अमावस्या । बरसात ।
बरसात—स्त्री० वर्षा ऋतु ।
बरसाती—वि० बरसात-संबंधी। पु० एक प्रकार का ढाला-पहनावा । [गिराना ।
बरसाना—सक्रि० पानी-
बरसायन—स्त्री० शुभ-मुहूर्त्त । जेठ बदि अमावस्या ।
बरसी—स्त्री० वार्षिक-श्राद्ध ।
बरसीला—वि० बरसने वाला ।
बरहक़—वि० (फ़ा०) उचित, ठीक । जो हक़ पर हो ।
बरहना—वि० (फ़ा०) वस्त्र-हीन, नंगा । [जित, चकित ।
बरहम—वि० (फ़ा०) उत्ते-
बरहा—पु० सिंचाई की नाली । मोटा रस्सा ।
बरही—पु० मोर । मुर्गा । प्रसूता का बारहवें दिन का स्नान । बरगद का पेड़ ।
बरहीपीड़—पु० मोरमुकुट ।
बरहीमुख—पु० देवता ।
बरांडी—स्त्री० अंगूरी शराब
बराक—पु० शिव । वि० अधम । शोचनीय ।
बराट, बराटिका—स्त्री० कौड़ी ।
बरात—स्त्री० बरात में वर के साथियों का दल ।
बराती—पु० वर-पक्ष का ।
बरानकोट—पु० (अं०) एक प्रकार का बड़ा कोट ।
बराना—अक्रि० बचाना । सक्रि० जलाना । छाँटना ।
बराबर२—वि० (अ०) समान ।
बरामद—वि० (फ़ा०) पुनः-प्राप्त । [दालान ।
बरामदा—पु० (फ़ा०) छज्जा ।
बराय—अव्य० (फ़ा०) लिये ।
बरायन—पु० विवाह के समय का कंकण तथा घड़ा ।
बरायनाम—क्रि० वि० नाम मात्र के लिये ।
बरार—पु० घर पीछे लिया जाने वाला चंदा । एक जंगली पशु ।
बराव—पु० बचाव ।
बरास—पु० कपूर विशेष ।
बराह—पु० सूअर ।
बरिआई—स्त्री० ज़बरदस्ती । क्रि० वि० बल-पूर्वक ।
बरिआर—वि० बलवान् ।
बरिच्छा—स्त्री० फलदान ।
बरिस-पु० वर्ष । [ऊपर का ।
बरीं—वि० (फ़ा०) बहुत-
बरी—स्त्री० उर्द आदि की बड़ी । वि० (अ०) मुक्त ।
बरीद—पु० (अ०) हरकारा ।
बरीयत—स्त्री० (अ०) छुट-कारा ।
बरीस—पु० वर्ष ।
बरीसना—अक्रि० वर्षा होना ।
बरु, बरुक—अव्य० चाहे, भले ही । पु० दुलहा ।
बरुआ—पु० ब्रह्मचारी ।
बरुनी—स्त्री० पलक के बाल ।
बरूथ—पु० समूह ।
बरेंड़ा—पु० छाजन के बीच की लकड़ी । [का ठहराव ।
बरेखी, बरेच्छा—स्त्री० विवाह-
बरेठ, बरेठा—पु० धोबी ।
बरेजा—पु० पान की बाड़ी ।
बरेदी—पु० चरवाहा ।
बरेत—स्त्री० मथानीकी रस्सी ।
बरेह—पु० बरगद की जटा ।
बरोक—पु० फ़ौज । फलदान । क्रि० वि० बलपूर्वक ।
बरोठा—पु० ड्योढ़ी, बैठक ।
बरोरु—वि० स्त्री० सुन्दर-जाँघ वाली ।
बरोह—स्त्री० बरगद की जटा ।
बरौंछी—स्त्री० बालों की कूँची ।
बरौनी—स्त्री० पलक के बाल ।
बरौरी—स्त्री० बरी ।
बर्क़—स्त्री० (अ०) बिजली । बिजली की चमक ।
बर्ग—पु० (फ़ा०) पत्ता ।
बर्त्तना—सक्रि० व्यवहार-करना । [पाला ।
बर्फ़—स्त्री० (फ़ा०) हिम,
बर्फ़ानी—वि० (फ़ा०) बर्फ़ का [स्थान ।
बर्फ़िस्तान—पु० बर्फ़ीला-
बर्फ़ी—स्त्री० एक मिठाई ।
बर्फ़ीला—वि० बर्फ़ से घिरा
बर्बर—वि० जंगली । स्त्री० बकबक ।
बर्र—पु० (अ०) स्थल । जंगल

बर्रे-ए-आज़म—पु० (अ०) महाद्वीप।
बर्राक—वि०(अ०)चमकीला। तेज़। [नींद में बकना।
बर्राना—अक्रि०व्यर्थ बोलना।
बर्रें—पु० तितैया।
बर्ह—पु० मोरपंख। पत्ता। करौंदा का वृक्ष।
बर्हि—पु० अग्नि।
बर्हिःशुष्मा—पु०अग्नि।
बर्हिर्मुख—पु० देवता।
बर्ही५—पु० मोर।
बलंद—वि० (फ़ा०) ऊँचा।
बल—पु० सेना। ताक़त। ऐंठन। सहारा। बलदेव।
बलकना९-अक्रि० खौलना। जोश में आना।
बलकर—वि० बली।
बलकल—पु० पेड़की छाल।
बलकाना—सक्रि० उत्तेजित-करना।
बलकारी५—वि० बलकर।
बलगना-अक्रि०दे० 'बलकना'
बलग़मद—पु० (अ०) कफ़।
बलज—पु० क्षेत्र। दर्पण।
बलदाऊ,बलदेव-पु०बलराम।
बलदिया—पु० चरवाहा।
बलना९—अक्रि० जलना।
बलबलाना—अक्रि० बकना। ऊँट का बोलना।
बलबीर—पु० श्रीकृष्ण।
बलभद्र—पु० बलराम।
बलभी—स्त्री० सब से ऊपर की छत वाली कोठरी।
बलम—पु० पति, प्यारा।
बलय४—पु० कंगन, चूड़ी।
बलराम—पु० श्रीकृष्ण जी के बड़े भाई।
बलवंत७—वि० बलशाली।
बलवत्तर—वि०अधिक बली।
बलवा—पु० (फ़ा०) दंगा, विद्रोह।
बलवाई—पु० विद्रोही।
बलवान्१३—वि० बली।
बलविन्यास—पु० सेना की रचना,व्यूह। [वि०बलवान्।
बलशाली५, बलशील४—
बलसूदन—पु० इन्द्र।
बला—स्त्री० (अ०) आफ़त।
बलाई—स्त्री० बलैया।
बलाक४—पु० बगुला।
बलाका—स्त्री० बकपंक्ति। प्रणयिनी। बगली।
बलाग़त—स्त्री० (अ०)अच्छी तरह बोलना। जवानी।
बलाग्र—पु० सेनापति। वि० बलवान्।
बलाढ्य—वि०बली।
बलात्—क्रि० वि० बलपूर्वक
बलात्कार—पु० ज़बरदस्ती।
बलानुज—पु० श्रीकृष्ण।
बलाध्यक्ष—पु० सेनापति।
बलाय—स्त्री० आपत्ति।
बलाराति—पु० इन्द्र।
बलाहक—पु० बादल।
बलि—पु०उपहार। चढ़ावा। राजकर। देवार्पित पशु। एक राजा। स्त्री० सखी।
बलित—वि० बलिदान किया हुआ।
बलिदान—पु० देवता के उद्देश्य से किया गया पशु-वध। त्याग।
बलिध्वंसी—पु० विष्णु।
बलिपुष्ट—पु० कौआ।
बलिप्रिय, बलिभुक्—पु० कौआ।
बलिवर्द—पु० साँड़। बैल।
बलिभ—वि० जिसकी बुढ़ापे के मारे खाल सिकुड़ गई हो।
बलिभुज—पु०कौआ, काक।
बलिर—पु० भेड़ा।
बलिष्ठ४—वि० बलवान्।
बलिसद्म—पु०—पाताल।
बलिहारी—स्त्री० निछावर।
बली५—वि० बलवान्।
बलीग़—पु० (अ०) अच्छा-वक्ता।
बलीमुख—पु० बंदर।
बलूची—पु० बिलोचिस्तान का रहने वाला।
बलूत—पु०(अ०) एक वृक्ष जिसकी छाल से चमड़ा रँगा जाता है। [रेतीला।
बलूला—पु० बबूला। वि०
बलैया—स्त्री० बला।
बल्कि—अव्य० (फ़ा०) किन्तु, प्रत्युत।
बल्द—पु० (अ०) नगर।
बल्ब—पु० (अं०) बिजली की रोशनी के तार लगे शीशे के लट्टू।
बल्लभी—स्त्री० प्रिया,गोपी।
बल्लम—पु० भाला।
बल्लमटेर—पु० स्वयंसेवक।
बल्लरी—स्त्री० लता।

बल्लव–पु०रसोइया। अहीर।
बल्ला—पु० डंडा, डाँड़ा।
बल्ली—स्त्री० लता।
बवँडना—अक्रि०व्यर्थ घूमना
बवंडर,बवंडा–पु० बगूला।
बवना—सक्रि० बोना। पु० छोटे क़द का मनुष्य।
बवासीर—स्त्री० एक रोग।
बशर—पु० (अ०) मनुष्य।
बशरा—पु० (अ०) आकृति। चेहरा।
बशारत—स्त्री० (अ०) शुभ-संदेश। [देने वाला।
बशीर—पु० (अ०)शुभसंदेश-
बश्शाश—वि०(अ०) प्रसन्न।
बष्कयिणी—स्त्री० बहुत दिनों में ब्याहनेवाली गाय,बकेन।
बसंती—वि० बसंत ऋतु का। हल्के पीले रंग का।
बसंदर—पु० अग्नि।
बस–अव्य० (फ़ा०) पर्याप्त। केवल। पु० अधीनता।
बसति—स्त्री० बस्ती।
बसन—पु० वस्त्र।
बसना१—अक्रि० आबाद-होना। पु० थैला।
बसनि—स्त्री०निवास।
बसनी–स्त्री० कमर से बाँधने की रुपयों की थैली।
बसर—पु० (फ़ा०) गुज़र।
बसवार—पु० बघार।
बसवास—पु०निवास।
बसह—पु० बैल।।
बसा—पु० दे० 'वसा'। स्त्री० ततैया, बर्रे। [समझ।
बसारत—स्त्री०(अ०) दृष्टि।
बसीकत—स्त्री० बसने की क्रिया।
बसीकरन–पु०वश में करना।
बसीठ२–पु० दूत। [बस्ती।
बसीत्यौ—पु० निवासस्थान,
बसु—पु० सोना, धन। आठ की संख्या। आठ देवताओं का समूह। किरण। राव। जल। अग्नि। [पृथ्वी।
बसुधा, बसुमती—स्त्री०
बसूला—पु० बढ़ई का एक औज़ार।
बसेंडा–पु०लंबा, पतला बाँस।
बसेरा—पु०टिकनेका स्थान।
बसौंधी—स्त्री० लच्छेदार-रबड़ी।
बस्त—पु० बकरा।
बस्ता–पु० (फ़ा०) पुस्तकादि बाँधने का कपड़ा।
बस्ति—स्त्री०पेड़, मूत्रस्थान।
बस्ती–स्त्री०आबादी। गाँव।
बहँगी—स्त्री० काँवर।
बहकना१—अक्रि०भटकना।
बहकाना—सक्रि० भुलावा-देना। [की नाली।
बहतोल—स्त्री० पानी बहाने-
बहत्तर—वि० ७२।
बहन—स्त्री० बहिन। पु० बहना, झोंका।
बहना१—अक्रि० प्रवाहित होना। चलना। [संबंध।
बहनापा—पु० बहिन का-
बहनी—स्त्री०आग।
बहनु—पु० सवारी।
बहनेली—स्त्री० जिसके साथ बहन का संबंध जोड़ा जाय।
बहनोई—पु० बहिन का शौहर।
बहनौता–पु० बहिन का पुत्र।
बहबूदी—स्त्री० (फ़ा०) बेह-तरी, भलाई।
बहम—पु० भ्रम। क्रि० वि० (फ़ा०) साथ, संग।
बहमन—पु० (फ़ा०) फ़ारसी-ग्यारहवाँ महीना।
बहर—पु० (फ़ा०) समुद्र। लय। क्रि० वि० वास्ते।
बहर-हाल—क्रि०वि० (फ़ा०) जिस तरह हो। हर हालत में।
बहरा७—वि० कान से न सुनने वाला। पु० (फ़ा०) भाग्य।
बहराना—सक्रि० फुसलाना।
बहराम—पु० (फ़ा०) मंगल-ग्रह। [वान्।
बहरावर–पु० (फ़ा०) भाग्य-
बहरिया—वि० बाहर का।
बहरी—स्त्री० बाज़ की भाँति की एक चिड़िया। वि० (अ०) समुद्री।
बहल पु०, बहली—स्त्री० बैलगाड़ी विशेष।
बहलना१—अक्रि० मनो-रंजन होना।
बहलाव—पु० मनोविनोद।
बहल्ला–पु० आनन्द। [तर्क।
बहस—स्त्री० (अ०) विवाद,
बहसना–अक्रि०होड़ लगाना।
बहादुर२–वि० (फ़ा०) शूर।
बहाना—सक्रि० प्रवाहित-करना। पु०व्याज, मिस

बहार—स्त्री० (फ़ा०) बसंत ऋतु। शोभा। रौनक़।
बहारी, बहारू—स्त्री झाड़ू।
बहालर—वि०(फ़ा०)प्रसन्न। चंगा। पुनर्नियुक्त।
बहाली—स्त्री० धोखे वाली-बात।
बहाव—पु० बहने का भाव।
बहिः—अव्य० बाहर।
बहिक्रम—पु० आयु, वय।
बहित्र—पु० नाव, जहाज़।
बहिन—स्त्री० भगिनी।
बहियाँ—स्त्री० भुजा, हाथ।
बहिया—स्त्री० बाढ़।
बहिरंग—वि० बाहरी।
बहिराना—सक्रि० बाहर-निकाल देना।
बहिर्गत—वि० बाहर निकला-हुआ। [बाहर का फाटक।
बहिर्द्वार—पु० घर के-
बहिर्मुख—वि० धर्म-विमुख, विरुद्ध।
बहिर्लापिका—स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसी में न हो।
बहिश्त—पु० (फ़ा०) स्वर्ग।
बहिष्कार—पु०बाहर करना।
बहिष्कृत—वि० बाहर किया-हुआ। [की पुस्तक।
बही—स्त्री० हिसाब लिखने-
बहीर—स्त्री० भीड़। फ़ौजी-सामान। क्रि० वि० बाहर।
बहुँटा—पु० बाँह का एक गहना।
बहु—वि० बहुत।
बहुकर—वि० बुहारी। से साफ़ करने वाला।
बहुगुना—पु० चौड़े मुँह का एक बरतन।
बहुज्ञ—वि० बहुत सी बातें जानने वाला।
बहुत—वि० अधिक।
बहुतक—वि० बहुत से।
बहुतायत—स्त्री० अधिकता।
बहुतिथ—वि० बहुत। क्रि० वि० अनेक बार।
बहुतेरा७—वि० बहुत सा। क्रि० वि० बहुत प्रकार से
बहुतेरे—वि० अनेक।
बहुत्व—पु० आधिक्य।
बहुदर्शी५—वि० बहुत कुछ देखने, सुनने वाला। विशेषज्ञ।
बहुधा—क्रि० वि० अक्सर।
बहुपाद—पु०बरगद का पेड़।
बहुप्रद४—वि० अतिदानी।
बहुमत—पु० बहुत लोगों की एक राय।
बहुमूत्र—पु० एक रोग जिसमें पेशाब अधिक होता है।
बहुमूल्य—वि० बेशक़ीमती।
बहुरंगी—वि० बहुरूपिया।
बहुरना—अक्रि० लौटना।
बहुरि—क्रि० वि० फिर, पीछे।
बहुरिया—स्त्री० नववधू।
बहुरूप—पु० राल।
बहुरूपिया—पु० जो बहुत सा रूप धारण करे।
बहुल३—वि० ज़्यादा।
बहुला—स्त्री० बड़ीइलायची।
बहुवचन—पु० एक से अधिक वस्तुओं का बोध कराने वाला शब्द।
बहुवारक—पु०लसोडा(फल)।
बहुविद्य—वि० अधिक बातों का जानकार। [का।
बहुविधि—वि० बहुत प्रकार-
बहुव्रीहि—पु० एक समास जिससे अन्य पदार्थ का बोध होता है।
बहुशः—वि० बहुत सा। क्रि० वि० बहुत प्रकार से।
बहुश्रुत—वि० बहुज्ञ।
बहुसंख्यक—वि० अत्यधिक।
बहुसुता—स्त्री० शतावरी।
बहुसूति—स्त्री० बहुत बार ब्याही हुई गाय।
बहू—स्त्री० पतोहू। स्त्री।
बहून्मुखी—वि० बहुत ऊपर-मुख किये हुए। उत्सुक। उन्नत।
बहेड़ा—पु० एक फल।
बहेलिया—पु० चिड़ीमार।
बहोरना—सक्रि० लौटाना।
बहोरि—क्रि० वि० पुनः।
बाँ—पु० बार, दफ़ा।
बाँक—स्त्री० एक आभूषण। पु० टेढ़ापन। वि० टेढ़ा।
बाँकड़ा—वि० वीर।
बाँकड़ी—स्त्री० सुनहला तथा रुपहला फ़ीता विशेष।
बाँका—वि० टेढ़ा। शूर। बना ठना।
बाँकुरा—वि० टेढ़ा। चतुर।
बाँग—स्त्री० (फ़ा०) पुकार, अज़ान। [की ऊँची भूमि।
बाँगर—पु० नदी के किनारे-

बाँगड़—स्त्री० बाँगड़ प्रांत का निवासी तथा वहाँ की भाषा ।
बाँगुर—पु० जाल । फंदा ।
बाँचना—सक्रि० पढ़ना ।
बांछा—स्त्री० इच्छा, चाह ।
बाँछित—वि० इच्छित ।
बाँझ१—स्त्री० बन्ध्या स्त्री ।
बाँट—स्त्री० हिस्सा ।
बाँटना—सक्रि० भाग करना ।
बाँड—स्त्री० दो नदियों के संगम के बीच की ज़मीन ।
बाँडा—वि० कटी पूँछ वाला ।
बाँद—पु० सेवक । बन्धन ।
बाँदी—स्त्री० दासी ।
बाँध—पु० बंद । मेंड़ ।
बाँधना—सक्रि० रोकना । बंधन में डालना ।
बाँधनीपौरि—स्त्री० पशु बाँधने की जगह ।
बाँधनू—पु० मसूबा । कलंक ।
बांधव—पु० भाई । संबंधी ।
बाँबी—स्त्री० साँप का बिल ।
बाँभन—पु० ब्राह्मण ।
बाँस—पु० एक प्रसिद्ध वनस्पति ।
बाँसपूर—पु० एक पतला-कपड़ा । [बीच की हड्डी ।
बाँसा—पु० रीढ़ । नाक के-
बाँह—स्त्री० भुजा ।
बाँहमरोड़—पु० कुश्ती का एक पेच । [दफ़ा ।
बा—पु० जल । बार ।
बा—अव्य० (फ़ा०) साथ । सामने ।
बाइबिल—पु० ईसाइयों का धर्म-ग्रन्थ, इंजील ।
बाइस—वि० (अ०) कारण ।
बाइसिकिल—स्त्री० पैरगाड़ी ।
बाई—स्त्री० बातरोग । अपच । बाइन का सम्बोधन ।
बाईस—वि० २२ ।
बाउर—वि० बावला ।
बाएँ—क्रि०वि० बाईं ओर ।
बाक़—पु०(फ़ा०) भय, डर ।
बाकचाल—वि० बातूनी ।
बाक़र—पु० (अ०) बहुत-विद्वान् । बहुत धनी ।
बाकल—पु० वल्कल, छाल ।
बाक़ला—पु० एक तरकारी ।
बाक़ियात—स्त्री०(अ०) बहु० 'बाक़ी' का ।
बाक़ी—वि० (अ०) बचा हुआ
बाख़बर—वि० (फ़ा०) जानकार ।
बाखार—स्त्री० बड़ा मकान ।
बाग़—पु० बग़ीचा ।
बाग, बागडोर—पु० लगाम ।
बागना—अक्रि० कहना ।
बाग़बान२—पु० (फ़ा०,माली
बागर—पु० नदी तट की ऊँची भूमि । रस्सी । जाल ।
बागा—पु० वर का एक पहनावा ।
बाग़ात—स्त्री० (अ०) बाग़ या खेती-बारी के योग्य भूमि ।
बाग़ी—पु० (अ०) विद्रोही ।
बाग़ीचा—पु० (फ़ा०) बाग़ ।
बागुर—पु० जाल ।
बाघवर—पु० व्याघ्र-चर्म ।
बाघ—पु० व्याघ्र ।
बाच—पु० कथनीय ।
बाचाबंध—वि० प्रतिज्ञा बद्ध ।
बाज़—पु०(अ०)एक शिकारी-पक्षी । वि० रहित । कोई-कोई ।
बाज—पु० (फ़ा०) कर ।
बाज़गश्त२—वि० (फ़ा०) लौटना । [देने वाला ।
बाज़गुज़ार—पु० (फ़ा०)कर-
बाज़दावा—पु० (फ़ा०) स्वत्वत्याग ।
बाजन—पु० बाजा ।
बाजना—अक्रि० बाजे से ध्वनि निकलना । झगड़ना
बाज़-याफ़्त—वि० (फ़ा०)फिर से आया हुआ ।
बाजरा—पु० एक अन्न ।
बाजा—पु०बजाने की वस्तु ।
बाज़ाब्ता—वि० (फ़ा०) नियमानुसार ।
बाज़ार—पु०(फ़ा०) हाट, पैंठ
बाज़ारी, बाज़ारू—वि० बाज़ार-संबंधी । अशिष्ट ।
बाजि—पु० घोड़ा । पक्षी । बाण ।
बाज़िन्दगी—स्त्री० (फ़ा०) खिलवाड़ । धूर्तता ।
बाज़िन्दा—वि०(फ़ा०)खिलाड़ी
बाज़ी—स्त्री० (फ़ा०) शर्त । दाँव । [जादूगर ।
बाज़ीगर२—पु० (फ़ा०)
बाज़ीचा—पु० (फ़ा०) खिलौना । [बाहु ।
बाज़ू—पु० (फ़ा०) भुजा,
बाजूबंद—पु० भुजा पर पहिनने का एक गहना ।
बाज़ू-शिकन—वि० (फ़ा०)

ताक़तवर।
बाझ—वि० रहित।
बाझना—अक्रि० फँसना।
बाट—पु०रास्ता। बटखरा। ऐंठन।
बाटकी—स्त्री० बटलोई।
बाटना—सक्रि० पीसना।
बाटिका—स्त्री० बग़ीचा।
बाटी—स्त्री० रोटी विशेष।
बाइंडिंग—पु० (अं०) किताब, सीने का सूआ विशेष।
बाड़व—पु० बड़वानल।
बाड़ा—पु० हाता।
बाड़ी—स्त्री० फुलवारी।
बाडीगार्ड—पु० (अं०)शरीर रक्षक।
बाड़ौ—पु० दे० 'बाड़व'।
बाढ़—स्त्री० बढ़ाव। जल-धारा। किनारा। वि० अतिशय, बारंबार।
बाढ़ीवान्—पु० धार तेज़ करने वाला।
बाण—पु० तीर।
बाणासुर—पु० राजा बलि का ज्येष्ठ पुत्र।[वायु रोग।
बात—स्त्री० कथन। वचन।
बातचीत—स्त्री० कथोपकथन
बातिन—पु० (अ०) अंतःकरण, मन। भीतरी-भाग।
बातिल—वि० (अ०) झूठा।
बाती—स्त्री० रुई की बटी-बत्ती।
बातुल—वि० पागल, बक्की।
बातूनी—वि० बकवादी।
बातों-बात—क्रि० वि० शीघ्र ही।
बाद—पु० बहस। (स्त्री०) हवा अव्य०पीछे का। पु० दस्तूरी। [की धोंकनी।
बादकश—पु०(फ़ा०)लुहार-
बादना—सक्रि० तर्क करना। ललकारना।
बादनुमा—पु० वायु-दिशा-सूचक यंत्र। [का पाल।
बादबान—पु० (फ़ा०) नाव-
बाद-फ़रोश—वि० (फ़ा०) झूठी प्रशंसा करने वाला।
बाद फिरंग—स्त्री० (फ़ा०) उपदेश रोग।
बादर, बादल—पु० मेघ। कपास का बना कपड़ा।
बादरायण—पु० वेद-व्यास।
बादला—पु० कामदानी का तार।
बादशाह—पु० (फ़ा०) राजा
बादशाहत—स्त्री० (फ़ा०) राज्य।
बादशाही—वि० बादशाहों का
बादसबा—पु० प्रातःकाल की वायु। [उसका वृक्ष।
बादाम—पु० एक मेवा तथा
बादामी—वि० बादाम के रंग का।
बादि—क्रि० वि० व्यर्थ।
बादित—वि० बजाया गया।
बादियान—स्त्री० (फ़ा०) सौंफ़। [मुद्दई। शत्रु।
बादी—वि० बात रोग। पु०
बादीगर—पु० बाज़ीगर।
बादुर—पु० चमगीदड़।
बादे-सबा—स्त्री० (फ़ा०) पुरवा हवा। [रस्सी।
बाध—पु०बाधा। मूँज की-
बाधक—पु०बाधा डालने वाला
बाधना—सक्रि०बाधा डालना
बाधा—स्त्री० कष्ट, विघ्न।
बाधित—वि० रोका गया। आभारी।
बाध्य—वि०मजबूर। विवश
बान—पु० तीर। स्त्री० आदत। (फ़ा०)[प्रत्य०रक्षक
बानक—स्त्री० वेश। रेशम विशेष।
बानगी—स्त्री० नमूना।
बानना—सक्रि० बनाना।
बानर—पु० बन्दर।
बा-नवा—वि० (फ़ा०) सम्पन्न, समर्थ। अच्छी आवाज़ वाला।
बानवे—वि० ९२।
बाना—पु० वेश। स्वभाव। एक हथियार। कपड़े में चौड़ाई का सूत।
बानावरी—स्त्री०बाणविद्या।
बानि—स्त्री०आदत। वचन। चमक।
बानी—वि० (फ़ा०) जड़-जमाने वाला। संस्थापक।
बानीकार—वि० (फ़ा०) बड़ा धूर्त्त।
बानू—स्त्री० (फ़ा०) बेगम।
बानैत—पु० तीरंदाज़।
बानो—स्त्री० (फ़ा०) भद्र-महिला।
बाप—पु० पिता।
बापिका—स्त्री० बावड़ी।
बापुरा—वि० बेचारा।
बाफ़ता—पु० (फ़ा०) एक

रेशमी कपड़ा।
बाब—पु० (अ०) अध्याय। दरवाज़ा। [में। संबन्ध।
बाबत—स्त्री० (अ०) विषय-
बावरची—पु०(फ़ा०)रसोइया
बाबा—पु० दादा।
बाबी—स्त्री० संन्यासिन।
बाबुल—पु० पिता। शब्द।
बाबू—पु० एक आदर सूचक शब्द।
बाम—पु० (फ़ा०) अटारी। (हिं०) स्त्री० एक गहना। वि० उलटा।
बामा—स्त्री० स्त्री।
बा-मुहावरा—वि० (अ०) मुहावरेदार।
बाय—स्त्री० वायु।
बायक—पु० कहने तथा पढ़ने वाला। दूत। [ष्कार।
बायकाट—पु० (अं०) बहि-
बायन—पु० भेंट, बयना।
बायबिड़ंग—पु० एक लता।
बायली—वि० बाहरी।
बायस—पु० कौआ।
बायस्कोप—पु० चलती-फिरती तस्वीरोंका प्रदर्शन।
बायाँ—वि० वाम। दाहिने का उल्टा। प्रतिकूल।
बाया—वि०(अ०) बेचनेवाला।
बारंबार—क्रि०वि०बारबार।
बार—स्त्री० बारी। घेरा। (फ़ा०) भार। परिणाम। दरवाज़ा। (हिं०) बाल। बालक। द्वार। ठिकाना। किनारा। सत्तैबा।
बार-आम—पु० (फ़ा०)सार्व-जनिक-सभा।
बारक—स्त्री० (अं०) सैनिकों के रहने का स्थान।
बारकश—पु० (फ़ा०) बोझा ढोने की गाड़ी।
बारगह—स्त्री० (फ़ा०)ड्योढ़ी। डेरा। दरबार।
बारगीर—पु० (फ़ा०) बोझा ढोने वाला पुरुष।
बारजा—पु०मकान के सामनें दरवाजों के ऊपर बना हुआ बरामदा।
बारतिय—स्त्री० वेश्या।
बारदाना—पु० फ़ा०) सौदा-रखने का बोरा आदि। रसद।
बारन—पु० दे० 'वारण'।
बारना—अक्रि०मना करना। सक्रि० जलाना। बचाना।
बारनिश—स्त्री०(अं०) रोग़न
बारबधू, बारमुखी—स्त्री० रंडी
बारबरदार२—पु० (फा०) बोझ ढोने वाला।
बारह—वि० १२।
बारहखड़ी—स्त्री० 'अ' से लेकर 'अः' तक १२ स्वरों के योग से बने हुए व्यंजनों के रूप।
बारहदरी—स्त्री० बारहद्वार की हवादार बैठक।
बारह-वफ़ात—स्त्री० (फ़ा०) मुहम्मद साहब के जीवन के अंतिम बारह दिन जिन में वे बीमार थे।
बारहबाना२—वि० चोखा।
बारहमासा—पु०बारह महीने के विषय में गाया जाने-वाला गीत।
बारहमासी—वि० सदाबहार।
बारहवफ़ात—पु० (अ०). रबी उल अव्वल की वे बारह तिथियाँ जिनमें मुहम्मद साहब बीमार होकर मरे थे
बारहसिंगा—पु० हिरण की तरह का एक पशु।
बारहा—क्रि० वि० (फ़ा०) बार-बार।
बाराँ—पु० (फ़ा०) बरसने वाला पानी। वर्षा।
बारा—पु० बालक, बच्चा।
बाराह—पु० सूअर।
बारि—पु० जल।
बारिक—पु०सैनिकों के रहने का कमरा। [बाजा।
बारिगर—पु० सान चढ़ाने-
बारिगह—स्त्री०बूतं।
बारिद, बारिधर—पु० बादल
बारिधि—पु० समुद्र।
बारिवाह—पु० बादल।
बारिश—स्त्री० (फ़ा०)बरसात
बारी—स्त्री०किनारा। मेंड़। पारी। अल्प यस्क। बाग़ खिड़की। पु० एक जाति। (अ०) ईश्वर। [सूक्ष्म।
बारीक२—वि०(फ़ा०) महीन।
बारुणी—स्त्री० मदिरा।
बारू—स्त्री० बालू।
बारूद—स्त्री० (फ़ा०) एक चूर्ण जो अग्नि से भड़क उठता है।
बारे में—अव्य० विषय में।
बारोमीटर—पु० अं०)हवा का दबाव मालूम करने का

यंत्र।
बार्डर–पु० (अं०) हाशिया।
बाल–पु० केश। बालक। स्त्री०दानेदार डंठल।(फ़ा०) पंख, पर।
बालक१३–पु० बच्चा।
बालकनी–स्त्री० छज्जा।
बालखोरा–पु० सिर के बाल झाड़ने का रोग।
बालगोपाल–पु० बाल-बच्चे।
बालगोविन्द–पु० बालकृष्ण।
बालचर–पु० बाल्यावस्था का जासूस, स्काउट।
बालटी–स्त्री०(अं०) डोलची-विशेष। [की विद्या।
बालतंत्र–पु० शिशु-पालन-
बालतनय–पु० कत्था।
बालतृण–पु० नया तृण।
बालतोड़–पु०बाल के कारण पैदा हुआ फोड़ा।
बालधी–स्त्री० पूँछ।
बालना–सक्रि० जलाना।
बालबच्चे–पु० औलाद।
बालबुद्धि–वि० नादान।
बालभोग–पु० देवता को सुबह को चढ़ाया जाने वाला भोग।
बालम–पु० प्यारा। पति।
बालमूषिका–स्त्री० छोटी-चुहिया। [का खेल।
बाललीला–स्त्री० लड़कों-
बालसूर्य–पु० प्रातः काल का सूर्य।
बाला–स्त्री० नवयुवती। कन्या। वि०छोटी उम्र की। (फ़ा०)ऊँचा। अव्य०ऊपर।
बालाई–स्त्री० (फ़ा०) मलाई। वि० ऊपरी।
बालाख़ाना–पु० (फ़ा०) कोठे पर की बैठक।
बालादवी–स्त्री० टोह लेने के लिए गश्त करना।
बाला दस्त–पु० (फ़ा०) प्रधान। बलवान्। श्रेष्ठ।
बालापन–पु० बचपन।
बालानशीन–पु० (फ़ा०) बैठने का सबसे ऊँचा तथा श्रेष्ठ स्थान।
बालापोश–पु०(फ़ा०) ढकने के लिए ऊपर डाला जाने वाला कपड़ा।
बाला-बाला–क्रि० वि० (फ़ा०) ऊपर ही ऊपर।
बालि–पु० अंगद का पिता। स्त्री० मंजरी। [कन्या।
बालिका–स्त्री० लड़की,
बालिग़–पु० (अ०)। वयः-प्राप्त, जवान, वयस्क।
बालिश–पु० (फ़ा०) बालक स्त्री० तकिया।
बालिश्त–पु० (फ़ा०) बित्ता
बाली–स्त्री० कान का एक आभूषण। अन्न की बाल।
बालीदगी–स्त्री० (फ़ा०) बाढ़। [सिरहाना, तकिया।
बालीन–पु० (फ़ा०)
बालुका, बालू–स्त्री० रेत।
बालूदानी–स्त्री० बालू रखने की डिबिया। [विशेष।
बालूसाही–स्त्री० मिठाई-
बालेय–पु० गधा।
बाल्य–पु० लड़कपन।
बाव–पु०हवा। अपान वायु।
बावड़ी–स्त्री० वापी।
बावजूद–अव्य० (फ़ा०) होते हुए भी। यद्यपि।
बावन–वि०५२। [पागल।
बावरा७, बावला१–वि०-
बावर्ची–पु०(तु०) रसोइया।
बावर्चीख़ाना–पु० (तु०) पाकशाला। [स्त्री० पगली।
बावली–स्त्री०वापी। वि०।
बावस्फ़–वि०(फ़ा०) गुणी।
बाशिंदगान–पु० बहु० (फ़ा०) निवासी। [वाला।
बाशिंदा–पु० (फ़ा०) रहने-
बाष्प–पु० भाप। लोहा। अश्रु [का पत्ता।
बाष्पिका–स्त्री० हींग वृक्ष-
बासंतिक–वि० बसंत ऋतु संबन्धी।
बास–पु० रहना। बासर। गन्ध। इच्छा। कपड़ा। स्त्री० अग्नि।
बासकसज्जा–स्त्री० एक नायिका जो अपने प्रिय या पति के आने के समय क्रीडा की सामग्री सजावे।
बासठ–वि० ६२।
बासन–पु०बरतन। वस्त्र।
बासनवारा–वि० सुगंधित करने वाला।
बासना–स्त्री०इच्छा। सक्रि० सुगन्धित बनाना। [चावल।
बासमती–पु० एक सुगंधित-
बासर–पु० दिन। सवेरा।
बासव–पु० इन्द्र।
बाससी–स्त्री० वस्त्र

बासा—पु० रहने का स्थान। निवास। वि० वासी।
बासित—वि० सुगंधित।
बासी—वि०जो ताज़ा न हो।
बाह—स्त्री० जोत। पु० धारा। निकास, उपाय। स्त्री० (अ०) संभोग की इच्छा-शक्ति। [जाने वाला।
बाहक—पु०सवार। वि० ले-
बाहकी—स्त्री० कहारिन। पालकी ले जाने वाली स्त्री।
बाहन—पु० सवारी।
बाहना—सक्रि० ढोना। चलाना, हाँकना। अक्रि० बहना।
बाहनी—स्त्री०सेना। नदी।
बाहम—क्रि० वि० (फ़ा०) परस्पर।
बाहमी—वि० पारस्परिक।
बाहर—क्रि० वि० जो अंदर-न हो। अलग।
बा-हरकत—वि० गतिशील।
बाहरी—वि० बाहर का।
बाहाँजोरी—क्रि० वि० हाथ से हाथ मिलाये हुए।
बाहिज—क्रि०वि०बाहर से।
बाहु—स्त्री० भुजा।
बाहुज३—स्त्री० क्षत्रिय।
बाहुत्रास—पु०हाथ का कवच
बाहुबल—पु० वीरता।
बाहुमूल—पु० काँख।
बाहुयुद्ध—पु० कुश्ती।
बाहुरना—अक्रि०मुड़ना,लौटना
बाहुल—पु० कार्त्तिक-मास।
बाहुलेय—पु० स्वामिकार्तिकेय
बाहुल्य—पु० अधिकता।
बाह्य—वि० बाहरी। भार-ढोने वाला।
बाह्लीक—पु० बलख़ देश।
बिंग—पु० व्यंग्य।
बिंद७—पु०बूँद। गोल टीका
बिंदा—पु० बड़ी बिंदी। एक गोपी।
बिंदु—पु० बूँद। [बुंदका।
बिंदुका—पु० बड़ी बिंदी।
बिंदुरा—स्त्री० बन्दी।
बिंधना—अक्रि० बींधा जाना
बिंब, बिंबा—पु० छाया। कुंदरू। घेरा। सूर्य, चंद्र का मंडल। बाँबी। [बाँबी।
बिंबउरी—स्त्री० साँप की-
बि, बिअ—वि० दो।
बिआना—सक्रि० जनना।
बिआरना—सक्रि० विवाह-करना।
बिकट—वि० कठिन। टेढ़ा।
बिकना, बिकाना—अक्रि० बेचा जाना।
बिकरार, बिकराल—वि० व्याकुल। भयंकर।
बिकर्म—पु० कुकर्म।
बिकल३—वि० बेचैन।
बिकलाना—अक्रि०व्याकुलहोना सक्रि० व्याकुल करना।
बिकवाना—अक्रि० बेचने का काम अन्य से कराना।
बिकसना९—अक्रि० प्रफु-ल्लित होना।
बिकाऊ—वि०बिकने वाला।
बिकाना—सक्रि० ख़रीदना।
बिकार—पु० विकृत होना। परिवर्त्तन। दोष। रोग। विषय वासना।
बिकारी—वि० परिवर्त्तित। हानिकारक। स्त्री०टेढ़ा पाई।
बिकासना—सक्रि० विकसित करना।
बिक्री—स्त्री० खपत।
बिख*—पु० दे० 'विष'।
बिखरना७—अक्रि० छित-राना।
बिखान—पु० विषाण, सींग।
बिखेरना—सक्रि० फैलाना।
बिगध—स्त्री० दुर्गंधि।
बिग—पु० भेड़िया।
बिगड़ना—अक्रि० ख़राब होना
बिगड़ेदिल—वि० ज़रा सी बात में बिगड़ने वाला।
बिगड़ैल—वि० बदमिज़ाज।
बिकसना९—अक्रि०बिकसना
बिगाड़—पु० झगड़ा, द्वेष।
बिगाड़ना, बिगारना—सक्रि० ख़राब करना। नष्ट करना
बिगाना—वि० पराया।
बिगारी—स्त्री० बलपूर्वक-लिया गया काम।
बिगिर—क्रि० वि० बिना।
बिगुसाना—अक्रि० दिक्क़त में पड़ना।
बिगुरचिन—स्त्री० दिक्क़त।
बिगुरदा—पु० एक शस्त्र।
बिगुल—पु० (अं०) एक प्रकार की तुरही।
बिगुँना—अक्रि० असमंजस में पड़ना।-सक्रि० छीनना।

नोट—प्राचीन पद्य में 'ष' के लिये प्रायः 'ख' प्रयुक्त किया गया है, 'जैसे 'विष' का बिख'

बिगूचन—स्त्री० अड़चन, असमंजस। [में पड़ना।
बिगूचना—अक्रि० असमंजस-
बिगोना—सक्रि० बिगाड़ना। नष्ट करना। [युद्ध।
बिग्रह—पु० शरारत, झगड़ा,
बिघटना—सक्रि०नष्ट करना।
बिघार—पु० बाघ।
बिच—क्रि० वि० बीच में।
बिचकाना—सक्रि० बिराना। भड़काना। [निपुण।
बिचच्छन—वि० चतुर,
बिचरना—अक्रि० इधर-उधर घूमना। [डिगना।
बिचलना९—अक्रि० हटना,
बिचवानी—पु० मध्यस्थ।
बिचारना—अक्रि० सोचना।
बिचारा—वि० असहाय।
बिचाल—पु०हटाना। अंतर।
बिचुकना—वि०चौंकने वाला
बिचेत—वि० बेहोश।
बिचौहा, बिचौलिया—वि० मध्यस्थ।
बिच्छू—पु० डंक मारने वाला एक ज़हरीला जंतु।
बिछना९—अक्रि० बिछाया-जाना।
बिछलना—अक्रि० रपटना।
बिछायत, बिछावन—स्त्री० बिछौना।
बिछिया, बिछुआ—पु० पाँव की उँगलियों का एक आभूषण।
बिछुड़ना९—अक्रि० अलग होना। वियोग होना।
बिछुरंता—पु० वियोगी।
बिछूना—वि०बिछुड़ा हुआ।
बिछोई—पु० वियोगी।
बिछोय,बिछोह—पु० जुदाई।
बिछौना—पु० बिस्तर।
बिजन—पु० पंखा। वि० निर्जन।
बिजना—पु० पंखा।
बिज़न—पु० (फ़ा०)क़त्लेआम
बिजयघंट—पु० एक तरह का बड़ा घंटा।
बिजली—स्त्री० चंचला। विद्युत्। ताप तथा प्रकाश उत्पन्न करने वाली शक्ति। आम की गुठली के अन्दर की मींग।
बिजहन—वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो।
बिज़ातिही—क्रि०वि०(अ०)। स्वयं, ख़ुद।
बिजाती—वि० दूसरी जाति का। दलाल।
बिजायठ—पु० बाजूबंद।
बिजूका, बिजूखा—पु० पक्षियों को डराने के लिए खेत में रक्खा गया पुतला।
बिजोना—सक्रि०भली भाँति देखना।
बिजौरा—पु० नींबू की भाँति का एक वृक्ष तथा फल।
बिजौरी—स्त्री० कुम्हड़ौरी।
बिज्जु—स्त्री० बिजली।
बिज्जुल—पु० छिलका। त्वचा। स्त्री० बिजुली।
बिज्जू—पु० बिल्ली की आकृति का एक जन्तु।
बिझुकना९—अक्रि० भड़कना, चौंकना।
बिझुका—पु० दे० 'बिजूका'।
बिट—पु० नायक का सखा। वैश्य। वि० नीच।
बिटप, बिटपी—पु० पेड़।
बिटारना—सक्रि०गदा करना
बिटिया—स्त्री० बेटी।
बिटौरा—पु०उपलों का ढेर।
बिट्ठल—पु० विष्णु का एक नाम।
बिठलाना—सक्रि० बैठाना।
बिडंब—पु० आडंबर।
बिडंबना—स्त्री० नक़ल। तिरस्कार। लीला। हँसी।
बिड—पु० विष्टा, बीट।
बिड़ई—स्त्री०इंडुरी, कुंडली।
बिडरना९—अक्रि० चौंकना। तितर-बितर होना। [करना।
बिडवना—सक्रि० खंडित-
बिड़ा—पु० वृक्ष।
बिडारना—सक्रि० भगाना। नष्ट करना। डराना।
बिडाल७—पु० बिलाव।
बिड़ी—स्त्री० चुरुट विशेष।
बिड़ौजा—पु० इन्द्र।
बिढ़वना—सक्रि० जोड़ना।
बित—पु० शक्ति। धन, हैसियत। [होना।
बितताना—अक्रि० व्याकुल-
बितना—पु० बालिश्त। अक्रि० बीतना।
बितरना—सक्रि० वितरण-करना। फैलाना।
बिताना—सक्रि० गुज़ारना।
बितीतना—अक्रि० बीतना।
बितंड—पु० हाथी।

बित्त—पु० शक्ति। दौलत।
बित्ता—पु० बालिश्त।
बिथकना—अक्रि०मुग्ध होना
बिथरना९—अक्रि०बिखरना।
बिथा—स्त्री० पीड़ा।
बिथारना—सक्रि० छितराना।
बिथुरित—वि० बिखरा हुआ
बिदअत—स्त्री० (अ०) मुहम्मद साहेब के समय के अतिरिक्त इस्लाम धर्म में नवीन आविष्कार।अनीति। लड़ाई-झगड़ा।
बिदकना९—अक्रि० फटना, घायल होना।
बिदरना—अक्रि० विदीर्ण-होना। फटना।
बिदा, बिदाई—स्त्री० (फ़ा०) रुखसती।
बिदारना—सक्रि० फाड़ना।
बिदीरना—सक्रि० विदीर्ण-करना।
बिदुराना—अक्रि०मुसकराना।
बिदून—अव्य० (फ़ा०)बग़ैर।
बिदुरानि—स्त्री० मुसकुराहट।
बिदूरित—वि० दूरकियाहुआ।
बिदूषना—सक्रि० दूषित-करना। [(ओंठ)।
बिदोरना—सक्रि० चलाना
बिद्दत—स्त्री० (अ०) आफ़त, कष्ट।
बिद्रुम—पु०मूँगा। कोंपल।
बिधसना—सक्रि०नष्ट करना
बिध, बिधि—स्त्री० प्रकार, भाँति। पु० ब्रह्मा।
बिधना—पु० ब्रह्मा, दैव।
बिधवा—स्त्री० जिसके पति की मृत्यु हो गई हो।
बिधँसना—सक्रि० विध्वंस करना।
बिधाना—सक्रि० छिदवाना।
बिधानी—पु० विधान करने वाला। रचयिता।
बिधुंतुद—पु० राहु।
बिधु—पु० चंद्रमा। विष्णु।
बिधुर—वि०व्याकुल,दुःखित।
बिन, बिनु—अव्य० बिना।
बिनठना—सक्रि०विनष्ट होना
बिनती—स्त्री० प्रार्थना।
बिनना९—सक्रि० बुनना। चुनना। [विनय करना।
बिनयना, बिनवना९—अक्रि०
बिनसना९—अक्रि०नष्टहोना।
बिना—अव्य०बग़ैर। (फ़ा०) आधार। मकान की नींव।
बिनाई—स्त्री० बिनने की क्रिया या मज़दूरी।
बिनाती—स्त्री० बिनती।
बिनानी—वि० अनजान।
बिनावट—स्त्री० बिनाई।
बिनास—पु० नाश।
बिनासना—सक्रि० नाश करना।
बिनाह—पु० नाश।
बिनूठा—वि० अनोखा।
बिनौला—पु०कपासका बीज।
बिपणि—स्त्री० दे० 'विपणि'।
बिपति, बिपदा—स्त्री०आपत्ति
बिपथ—पु० बुरा मार्ग।
बिपाक—पु० पकना। फल।
बिबर—पु० कंदरा।
बिबस—वि० लाचार।
बिबसाना—अक्रि० विवश-होना। [फटने का रोग।
बिबाई—स्त्री०तलुएके चमड़ा-
बिबाकी—स्त्री०हिसाब चुकता करना। [करना।
बिबादना—सक्रि० विवाद-
बिबि—वि० दो।
बिभाना—अक्रि०शोभा पाना
बिभावरी—स्त्री० तारों वाली रात्रि। [करना।
बिभिनाना—सक्रि० पृथक्-
बिभीषिका—वि०स्त्री० डराने वाली।
बिभु—पु० ईश्वर, स्वामी। वि० सर्वव्यापक। महान्।
बिमर्दना—सक्रि० मसलना
बिमानी—वि०निरभिमान।
बिमानीकृत—वि० जिसने बिमान बनाया हो।
बिमोचना—सक्रि० टपकाना
बिमोहना—सक्रि० मोहित करना। अक्रि०मुग्ध होना।
बिय—वि० दो।
बियत—पु० आकाश।
बिया—पु०बीज। वि०दूसरा।
बियाधा—पु० बहेलिया।
बियाधि—स्त्री०रोग। झंझट
बियाना—सक्रि० जनना।
बियापना—सक्रि० सर्वत्र-फैलना। [उजाड़, जंगल।
बियाबान—पु० (फ़ा०) उजाड़,जंगल। [काभोजन।
बियारी, बियालू—स्त्री०रात-
बियाल—पु० साँप, शेर।
बियाहता—वि०स्त्री० विवाहिता। [फीका।
बिरंग—वि० कई रंग का।

बिरंचि—पु० ब्रह्मा।
बिरंज—पु० (फ़ा०) पीतल। चावल।
बिरंजी—वि० (फ़ा०) पीतल का।
बिरई—स्त्री० छोटा बिरवा।
बिरखभ—पु० बैल (वृषभ)।
बिरचना—सक्रि० सजाना। अक्रि० उचटना।
बिरज—वि० निर्दोष। निर्गुण।
बिरझना१—अक्रि० उलझना। क्रुद्ध होना।
बिरता—पु० शक्ति, बूता।
बिरताना—सक्रि० वितरित करना।
बिरदंग—पु० मृदङ्ग।
बिरद—पु० यश, कीर्ति।
बिरदावली—स्त्री० यश-समूह।
बिरदैत—पु० प्रख्यात-शूर। वि० नामी।
बिरमना१—अक्रि० ठहरना। मुग्ध होना।
बिरयाँ—वि० (फ़ा०) भुना-
बिरयानी—स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार का नमकीन-पुलाव।
बिरला—वि० कोई-कोई।
बिरवा—पु० पौधा, पेड़।
बिरस—वि० रसहीन। बुरा। पु० बिगाड़।
बिरहन—पु० वियोग। दुःख।
बिरहा—पु० एक गीत।
बिरहाना—अक्रि० विरह में पीड़ित होना। [होना।
बिरागना—अक्रि० विरक्त-
बिराजना—अक्रि० शोभा-देना। बैठना।
बिरादर—पु० (फ़ा०) भाई। रिश्तेदार।
बिरादराना—वि० (फ़ा०) भाइयों का सा।
बिरादरी—स्त्री० (फ़ा०) भाई-बन्धु।
बिराना—सक्रि० मुँह बनाना। वि० पराया।
बिरिख—पु० वृक्ष। बैल। वृषराशि।
बिरियाँ—स्त्री० समय। बार।
बिरी—स्त्री० पान का बीड़ा।
बिरुझना—अक्रि० उलझना।
बिरुद—पु० यशःकीर्तन।
बिरुधाई—स्त्री० बुढ़ापा।
बिरूप—वि० कुरूप। उलटा।
बिरोग—पु० दुःख, चिंता।
बिलंब—पु० देर।
बिलंबना—अक्रि० देर करना
बिलंबित—वि० लटका हुआ।
बिल—पु० छेद। (अं०) लेखापत्र। प्रस्तावित क़ानून। (अ०) अव्य० शब्दों के पूर्व 'सहित' अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे 'बिलजब्र'।
बिल-अक्स—क्रि० वि० (अ०) इसके विरुद्ध।
बिलकुल—क्रि० वि० (अ०) सम्पूर्ण। [दस्ती।
बिल-जब्र—पु० क्रि० ज़बर-
बिल-जुमला—क्रि० वि० (अ०) कुल मिलाकर।
बिलखना१—अक्रि० रोना, विलाप करना। देखना।
बिलगाना—सक्रि० अलग-करना। अक्रि० अलग होना।
बिलटी—स्त्री० (अं०) माल भेजने की रेलवे रसीद।
बिलनी—स्त्री० काली भौंरी। आँखे के पलक की गुहेरी।
बिलपना—अक्रि० विलाप करना।
बिल-फ़र्ज़—क्रि० वि० (अ०) यह फ़र्ज़ करते हुए, यह मान कर।
बिलफ़ेल—क्रि० वि० (अ०) अभी, इस अवसर पर।
बिलबिलाना—अक्रि० छटपटाना। [करना। रुकना।
बिलमना१—अक्रि० देर-
बिल-मुक़ाबिल—क्रि० वि० (अ०) मुक़ाबले में, सामने।
बिललाना—अक्रि० रोना। घबरा जाना।
बिलल्ला—वि० बेशऊर।
बिलवाना—सक्रि० बिलुप्त-करना, नष्ट करना।
बिलसना१—अक्रि० शोभा-देना। सक्रि० भोगना।
बिलहरा—पु० पान रखने का गिलहारा।
बिला—अव्य० (अ०) बिना।
बिलाई—स्त्री० बिल्ली।
बिलाना—अक्रि० नष्ट होना।
बिलार७—पु० नर बिल्ली।
बिलाव—पु० नर बिल्ली।
बिला-वजह—क्रि० वि० (अ०) बिना किसी कारण के।
बिलावल—स्त्री० पत्नी। पु० एक राग।
बिलासना—सक्रि० भोगना।

बिलासिनी—स्त्री० वेश्या।
बिलिया—स्त्री० कटोरी।
बिलुठना—अक्रि० लोटना।
बिलेशय—पु० साँप।
बिलोकना—सक्रि० देखना।
बिलोकनि—स्त्री० चितवन, कटाक्ष। [हिलाना।
बिलोडना—सक्रि० मथना।
बिलैया—स्त्री० बिल्ली। सिटकनी। कद्दूकस।
बिलोना—सक्रि० मथना।
बिलोल—वि० चंचल।
बिलोलना—सक्रि०हिलाना।
बिलौरा—पु० बिल्ली का बच्चा।
बिल्ला७—पु० नर बिल्ली। पहचान के लिये लगायी गई कपड़े तथा पीतल की पट्टी।
बिल्लौर८—पु० (फ़ा०) एक सफ़ेद पारदर्शक पत्थर।
बिल्व—पु० बेल। [जाना।
बिवछना—अक्रि० उरझ-
बिवरना९—सक्रि० सुलझाना
बिवान—पु० रथ, बिमान।
बिशप—पु० (अं०) बड़ा-पादरी।
बिषया—स्त्री०विषय-वासना।
बिसंच—पु० लापरवाही। संचय का अभाव।
बिसंभार—वि० बेसुध।
बिसकंठिका—स्त्री० बगुला की एक जाति।
बिसखपरा—पु० गोह की जाति का एक ज़हरीला-जीव।
बिसतरना—अक्रि० फैलना।
बिसद—वि० दे० 'विशद'।
बिसनन—पु०व्यसन, शौक़।
बिसप्रसून—पु० कमल।
बिसमरना—सक्रि० भूलना।
बिसमिल—वि० (फ़ा०) घायल।
बिसमिल्लाह—पु० (अ०) आरम्भ, श्रीगणेश।
बिसयक—पु० देश, राज्य।
बिसरना९—सक्रि० भूल-जाना।
बिसरात—पु० ख़च्चर।
बिसराम—पु० आराम।
बिसरामी—वि० विश्राम-देने वाला।
बिसहना— सक्रि०ख़रीदना।
बिसहर—पु०साँप। [दुर्गन्ध।
बिसाइध—पु० मछली की-
बिसात—स्त्री०(अ०) सामर्थ्य। पूँजी। चौरड़, शतरंज खेलने का कपड़ा।
बिसातखाना—पु० फुटकर चीजें जो बिक्री के लिए रखी जाती है।
बिसाती—पु० सुई, तागा आदि फुटकर चीज़ों का विक्रेता।
बिसारना—सक्रि० भुलाना।
बिसारा—वि० विषैला।
बिसाहना—सक्रि० ख़रीदना।
बिसाहनी—स्त्री० मोल ली-हुई वस्तु, सौदा।
बिसाहा—पु० सौदा।
बिसिख—पु० बाण।
बिसिनी—स्त्री० कमलिनी।
बिसियर—वि० ज़हरीला।
बिसियार—वि० (फ़ा०) बहुत, अधिक।
बिसूरना—अक्रि०खेद करना। स्त्री० चिंता।
बिसेखना—सक्रि० विशेष प्रकार से वर्णन करना।
बिस्कुट—पु० (अं०) ख़मीरी आटे की एक प्रकार की टिकिया।
बिस्त—पु० पल भर सुवर्ण।
बिस्तर—पु० बिछौना।
बिस्तारना—सक्रि० विस्तार-करना।
बिस्तुइया—स्त्री० छिपकली।
बिस्वा—पु० बीघे का बीसवाँ-भाग।
बिहंग—पु० पक्षी। बाण।
बिहंडना—सक्रि० नष्ट करना।
बिहँसना९—अक्रि०मुस्कराना।
बिहँसौहाँ—वि०हँसता हुआ।
बिहँग—पु० पक्षी। [बिहद।
बिहद—पु० बहुत ज़्यादा,
बिहरना—अक्रि० विचरण-करना।
बिहान—पु० प्रभात।
बिहाना—अक्रि० बीतना। सक्रि० बिताना। [कारना।
बिहारना—अक्रि० क्रीड़ा-
बिहारी५—वि०बिहार करने-वाला।
बिहाल—वि० व्याकुल।
बिहि—पु० ब्रह्मा।
बिहिश्त—स्त्री०(फ़ा०)स्वर्ग।
बिही—स्त्री०(फ़ा०) एक फल।
बिहीन,बिहून—वि० रहित।
बिहुरना—अक्रि० फैलना।

सक्रि० छोड़ना । [होना ।
बिहोरना—अक्रि० अलग-
बीं—वि०(फ़ा०)देखने वाला।
बींदना—अक्रि० अनुमान-
करना । बीनना ।
बींधना—अक्रि० उलझना ।
सक्रि० छेदना । [महिला ।
बी—स्त्री० (फ़ा०) स्त्री,
बीख—पु० क़दम । विष ।
बीग—पु० भेड़िया । [माप ।
बीघा—पु० बीस बिस्वा की-
बीच—पु० मध्य । अन्तर ।
बीचोबीच—क्रि० वि० ठीक-
बीच में ।
बीछना—सक्रि० छाँटना ।
बीछी—स्त्री० बीछू । पु०
बिच्छू। [हित ।
बीज—पु० बीया । वीर्य ।
बीजक—पु० सूची । बीज ।
बीजकोश—पु० कमलगट्टा ।
बीजगणित—पु० गणित की
एक शाखा, ऐलजबरा ।
बीजदर्शक—पु० अभिनय
की व्यवस्था करने वाला ।
बीजना—पु० पंखा ।
बीजपुर—पु० बिजौरा नीबू ।
बीजमंत्र—पु० ठीक रीति ।
गुर ।
बीजरी—स्त्री० बिजली ।
बीजा—पु० बीज । वि०
दूसरा ।
बीजाकुन—वि० वह खेत
जिसमें बुवाई हो गई हो ।
बीजी—स्त्री० गिरी, मींगी ।
बीजु, बीजुरी—स्त्री०बिजली ।
बीजू—पु० बिज्जु नामक
जानवर । वि० बीज से
उत्पन्न ।
बीज्य—वि० कुलीन ।
बीझना—अक्रि० फँसना ।
बीझा—वि० निर्जन, शून्य ।
बीट—स्त्री० चिड़ियों का विष्टा ।
बीडा—पु०लगा हुआ पान ।
बीड़ी—स्त्री० गड्डी । पत्ते का
बना हुआ चुरुट । मिस्सी ।
बीतना—अक्रि० गुज़रना ।
बीता—पु० बालिश्त ।
बीथिका—स्त्री० गली ।
बीधना—अक्रि० फँसना ।
सक्रि० बेधना ।
बीन—स्त्री०वीणा । [बुनना ।
बीनना—सक्रि० चुनना ।
बीनाई—स्त्री० (फ़ा०) दृष्टि,
नज़र । [नासिका ।
बीनी—स्त्री० (फ़ा०) नाक,
बीफै—पु० बृहस्पतिवार ।
बीबी—स्त्री० (फ़ा०) कुलीन-
स्त्री । पत्नी ।
बीभत्स—वि० घृणित, दुष्ट ।
बीमा—पु० (फ़ा०) किसी की
हानि का उत्तरदायित्व ।
बीमार२—वि०(फ़ा०) रोगी।
बीमारदार२—वि० (फ़ा०)
रोगी की सेवा, शुश्रूषा-
करने वाला ।
बीमारपुरसी—स्त्री० (फ़ा०)
बीमार का हालचाल पूछना।
बीया—पु०बीज । वि०दूसरा ।
बीर—वि०बहादुर ।
बीरउ—पु० पेड़ ।
बीरन—पु० भाई ।
बीरबहूटी—स्त्री० एक लाल
रंग का कीड़ा ।
बीरी—स्त्री० बीड़ा । मिस्सी
बीरौ—पु० पेड़ ।
बील—पु० मंत्र । बेल ।
बीस—पु० ज़हर । वि० २०
बीसरना—सक्रि० भूल-
जाना । अक्रि०विस्मृत होना।
बीसी—स्त्री० कोडी, बीस
का समूह ।
बीह—वि० बीस ।
बीहड—वि० ऊबड़-खाबड़ ।
बुंद—पु० बूँद ।
बुँदकी—स्त्री० छोटी बिंदी ।
बुंदा—पु० टिकुली । कान
का एक गहना ।
बुँदिया—स्त्री० एक मिठाई ।
बुँदेला—पु० क्षत्रियों की
एक शाखा ।
बुआ—स्त्री०पीता की बहन ।
बुक—पु० (अं०) किताब ।
बुककीपिंग—स्त्री० (अं०)
हिसाब लिखने की विद्या ।
बुकचा—पु० (फ़ा०) कपड़े
आदि की छोटी गठरी ।
बुकनी—स्त्री० महीन चूर्ण ।
बुकलेट—स्त्री० (अं०) पुस्तिका
बुकवा—पु० उबटन ।
बुक्का—पु० अभ्रक का चूर्ण ।
एक बाजा । हृदय के भीतर
का पद्माकार मांस ।
बुकसेलर—पु० (अं०) पुस्तक-
विक्रेता ।
बुख़ार—पु० (अ०) ज्वर ।
शोक, क्रोध आदि का
आवेग ।

बुग़्ज़—पु०(अ०) भीतरी द्वेष।
बुज़—पु० (अ०) बकरा।
बुज़दिल२—वि० (फ़ा०) डरपोक। [पु० पूर्वज।
बुज़ुर्ग२—वि० (फ़ा०) वृद्ध।
बुज़ुर्गवार—वि० (फ़ा०) पूज्य और वृद्ध, पुरखा।
बुझना९—अक्रि० बुतना।
बुझौवल—स्त्री० पहेली।
बुटना—अक्रि० भागना।
बुड़ाना—सक्रि० डुबाना।
बुड़का—स्त्री० डुबकी।
बुड़ना—अक्रि० डूबना।
बुड्डी—स्त्री० डुबकी।
बुड्ढा—वि० वृद्ध।
बुढ़ाना—अक्रि०बूढ़ा होना।
बुढ़ापा—पु० वृद्धावस्था।
बुत—पु० (फ़ा०) मूर्त्ति। प्रेमिका। चुप्पा। बेवक़ूफ़।
बुतकदा—पु०(फ़ा०)बुतख़ाना।
बुतख़ाना—पु०(फ़ा०)प्रेमिका के रहने का स्थान। वह स्थान जहाँ मूर्ति स्थापित रहती है
बुतना९—अक्रि० बुझना।
बुतपरस्त२—वि० (फ़ा०) मूर्तिपूजक।
बुतशिकन२—पु० (फ़ा०) मूर्ति तोड़ने वाला।['बुत' का।
बुतान—पु० (फ़ा०) बहु०
बुताना—सक्रि०ठंढा करना।
बुताम—पु० (अ०) बटन।
बुत्ता—पु० धोखा।
बुदबुदा—पु बुलबुला।
बुद्ध—वि० जागा हुआ। ज्ञानी। पु० बुद्धदेव।
बुद्धि—स्त्री० समझ, अक्ल।
बुद्धिचक्षु—पु० धृतराष्ट्र।
बुद्धिपर—वि० जो बुद्धि से परे हो। [अक्लमंदी।
बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी—स्त्री०
बुद्धिमान् १३—वि०समझदार।
बुद्बुद—पु० जल का विकार या बुल्ला।
बुधंगड़—वि० मूर्ख।
बुध—पु० एक ग्रह। सप्ताह का चौथा दिन। बुद्धिमान् मनुष्य।
बुधवान् १३—वि० पंडित।
बुधित—वि० जाना हुआ।
बुध्न—पु०मिट्टीकी भीतरी जड़
बुनना—सक्रि० बिनना।
बुना—स्त्री० नींव।[मज़दूरी।
बुनाई-स्त्री०बिनावट।बिनने की
बुनिया—स्त्री० बुँदिया नामक एक मिठाई। [नींव।
बुनियाद—स्त्री०(फ़ा०) मूल,
बुनियादी-तालीम—स्त्री० प्रारंभिक शिक्षा, गाँधी जी की योजना के अनुसार हस्त-कला आदि के आधार पर दी जाने वाली शिक्षा।[रोना
बुबुकना—अक्रि० चिल्लाकर-
बुबुकारी—स्त्री० ज़ोर ज़ोर से रोना।
बुभुक्षा—स्त्री० भूख।
बुभुक्षित—वि० भूखा।
बुरकना९—सक्रि०छिड़कना।
बुरक़ा—पु० (अ०) मुसलमान स्त्रियों का सर से पैर तक का एक आवरण।
बुरक़ापोश—वि० (अ० फ़ा०) जो बुरक़ा ओढ़े हो।
बुरा७—वि० ख़राब।
बुराई—स्त्री० ख़राबी।
बुराक़—पु० (अ०) मुहम्मद साहब का एक घोड़ा।
बुरादा—पु० (फ़ा०) लकड़ी का चूरा। [का।
बुरूज़—पु० (अ०) बहु०'बुर्ज़'
बुर्ज़—पु० (अ०) मीनार का ऊपरी भाग गुंबज़।
बुर्द—पु० (फ़ा०) मुफ़्त में मिलने वाली रक़म।
बुर्दबार२—वि० (फ़ा०) सहनशील।
बुर्राक़—वि० दे० 'बर्राक़'
बुलंद२—वि० (फ़ा०) ऊँचा।
बुलबुल—स्त्री० एक पक्षी।
बुलबुला—पु० बुल्ला।
बुलहवस—वि०(अ०)लोभी। लालची।
बुलाक़—पु०(अ०) नाक का एक आभूषण।
बुलाना—सक्रि० पुकारना।
बुलावा—पु० निमंत्रण।
बुलूग़—पु० (अ०) युवावस्था को प्राप्त।
बुलेटिन—पु० (अं०) सार्वजनिक मामले पर किसी अधिकारी का वक्तव्य। सूचना-पत्र।
बुल्ला—पु० पानी का बबूला।
बुस—पु० भुस।
बुहारना—सक्रि० झाड़ना।
बुहारी—स्त्री० झाड़ू।
बूँद—पु० जल-कण।
बूँदा—पु० बड़ी बूँद। बड़ी-टिकली।

बूँदाबाँदी—स्त्री० हल्की वर्षा
बू—स्त्री० (फ़ा०) गंध।
बूकना—सक्रि० चूर्ण करना।
बूगदान—पु० (फ़ा०) मदारियों का थैला।
बूचड़—पु० क़साई।
बूचा—वि० कनकटा।
बूज़ा—पु० (फ़ा०) शराब।
बूझना—सक्रि० समझना।
बूट—पु० हरा चना। अँग्रेज़ी जूता।
बूटना—अक्रि० भागना।
बूटनि—स्त्री० बीरबहूटी।
बूटा—पु० पौधा।
बूटी—स्त्री० वनस्पति, जड़ी
बूड़ना—सक्रि० डूबना।
बूढ़ा७—वि० वृद्ध।
बूता—पु० शक्ति।
बूदो-बाश—स्त्री० (फ़ा०) रहन-सहन। निवास।
बूम—पु० (अ०) उल्लू-पक्षी।
बूर—स्त्री० भूसी। [चूर्ण।
बूरा—पु० शक्कर। बारीक-
बृंहित—पु० हाथी का गर्जन।
बृक—पु० भेड़िया।
बृष, बृषभ—पु० बैल। धर्म
बृषकेतु—पु० शिवजी।
बृषल—पु० शूद्र। [डुपट्टा।
बृहतिका—स्त्री० अँगोछा,
बृहत्—वि० चौड़ा, विशाल।
बृहत्कुक्षि—वि० बड़े पेट वाला।
बृहत्तर—वि० बहुत बड़ा।
बृहदंस—पु० विशाल-स्कंध।
बृहद्भानु—पु० अग्नि।
बृहन्नला—पु० अर्जुन के अज्ञातवास के समय का नाम
बृहस्पति—पु० देवताओं के गुरु। बहुत बड़ा विद्वान्। बुध के बाद आने वाला एक दिन।
बेंग—पु० मेंढक। [चौकी।
बेंच—स्त्री० (अं०) कम चौड़ी-
बेंट—स्त्री० मूँठ।
बेंड़ना—सक्रि० घेरना।
बेंड़ा—वि० तिरछा। पु० अर्गल।
बेंत—पु० एक लता या उसके डंठल की लचीली लकड़ी।
बेंदी—स्त्री० टिकुली। बिंदी।
बेंवत—स्त्री० व्यवस्था, मौक़ा।
बे*—अव्य० बिना।
बेअक़ल—वि० (अ०) मूर्ख।
बेअदब२—वि० (अ०) अशिष्ट
बेआब—वि० कान्तिहीन।
बेइंतहा—वि० (अ० फ़ा०) बेहद, बहुत ज़्यादा।
बेइंसाफ़ी—स्त्री० (फ़ा०) अन्याय।
बेइज़्ज़त२—वि० अप्रतिष्ठित।
बेइलि—स्त्री० लता। पु० मोंगरा।
बेईमान२—वि० (अ० फ़ा०) धोखेबाज़। अधर्मी।
बेक़द्र२—वि० (फ़ा०) बे-इज़्ज़त, तुच्छ।
बेक़रार२—वि० (फ़ा०) बेचैन, विकल।
बेकल२—वि० व्याकुल।
बेकस२—वि० (फ़ा०) दीन। निराश्रय।
बेक़ाबू—वि० (अ०) विवश।
बेकाम—वि० निकम्मा।
बेक़ायदा—वि० (अ०) नियम विरुद्ध। [निठल्ला।
बेकार२—वि० (फ़ा०)
बेख—पु० दे० 'वेष'।
बेखटके—क्रि० वि० बेरोक-टोक के।
बेख़तर—वि० (अ०) निर्भय।
बेख़बर२—वि० (फ़ा०) बेहोश, अनजान।
बेख़ौफ़ २—वि० निडर।
बेग—पु० (तु०) अमीर, सम्पन्न।
बेगम—स्त्री० (तु०) रानी।
बेगर—वि० पृथक्, भिन्न।
बेग़रज़२—वि० (फ़ा०) निःस्वार्थ। [ग़ैर।
बेगाना—वि० (फ़ा०) पराया,
बेगार२—स्त्री० (फ़ा०) बेमन का काम। हठात् कराया गया काम।
बेगि—क्रि० वि० तुरंत।
बेगुनाह—वि० (फ़ा०) निर्दोष
बेग़ैरत—वि० निर्लज्ज।
बेग़ैरती—स्त्री० निर्लज्जता।
बेचना—सक्रि० विक्रय करना
बेचारा७—वि० (फ़ा०) दीन
बेचिराग़—वि० (फ़ा०) उजाड़
बेचूँ—वि० (फ़ा०) जिसकी कोई उपमा न हो।
बेचैन२—वि० (फ़ा०) व्याकुल
बेज़बान—वि० (फ़ा०) गूँगा, दीन।
बेजा—वि० (फ़ा०) अनुचित

नोट*—शब्दों के पूर्व 'बे' का प्रयोग 'बग़ैर' अर्थ में होता है।

बेजान—वि० (फ़ा०) बेदम, मुरदा। [नियम-विरुद्ध।
बेज़ाब्ता—वि० (फ़ा०)
बेज़ार२—वि० (फ़ा०) परेशान, दुःखी। [तीय।
बेजोड़—वि० अखंड। अद्वि-
बेझ—पु० निशाना।
बेझना—सक्रि० निशाना-लगाना।
बेटा७—पु० पुत्र।
बेटौना७—पु० बेटा, पुत्र।
बेठन—पु० बँधना।
बेठिकाने—वि० स्थानच्युत।
बेंड़—पु० मेंड़।
बेड़ा—पु० नावों का समूह।
बेड़िनी—स्त्री० नाचने-गाने वाली स्त्री।
बेड़ी—स्त्री० बंधन।
बेडौल—वि० भद्दा।
बेढंगा—वि० भद्दा।
बेढ़—पु० घेरना। नाश।
बेढ़ना—सक्रि०घेरना, रूँधना
बेढब—वि०भद्दा। क्रि० वि० बेतरह। [का एक गहना।
बेढ़ा—पु० क्यारी। हाथ-
बेत—पु० एक लता।
बेतकल्लुफ़२—वि० (फ़ा०) जो बनावट पसन्द न करता हो, सरल, सादा।
बेतमीज़—वि० (फ़ा०) बेशऊर।
बेतरह—वि० (फ़ा०) अत्यधिक। क्रि० वि० बुरी-तरह से। [अतिवेग से।
बेतहाशा—क्रि० वि० (फ़ा०)
बेताब२—वि०(फ़ा०) दुर्बल। विकल।
बेतुका—वि० बेमेल। भद्दा
बेद—स्त्री० (फ़ा०) बेंत का पौधा।
बेदखल२—वि० (फ़ा०) अधिकार-च्युत।
बेदन, बेदना—स्त्री० पीड़ा।
बेदम—वि० मृतप्राय, कमज़ोर।
बेदमुश्क—पु० (फ़ा०) एक डंठल जिसकी क़लमें बनाई जाती हैं।
बेदर्द२—वि०(फ़ा०) निष्ठुर।
बेदाग़—वि०(फ़ा०) साफ़। निर्दोष। [अनार।
बेदाना—पु० एक प्रकार का-
बेदार२—वि० (फ़ा०) जागृत, सावधान।
बेध—पु० छेद।
बेधक१४—वि० बेधने वाला।
बेधड़क—वि० बेरोक। निर्भय।
बेधना—सक्रि० छेदना।
बेधशाला—स्त्री० दे० वेधशाला।
बेधिया—पु० अंकुश।
बेध्य—पु० निशाना।
बेन, बेनु—पु० बाँसुरी।
बेनज़ीर—वि० (फ़ा०) अनोखा, अनुपम।
बेनवा—वि० (फ़ा०) दरिद्र, ग़रीब।
बेनसीब२—वि० अभागा।
बेना—पु० पंखा। [तार।
बेगाना—वि० (फ़ा०) लगा-
बेनिया—स्त्री० पंखी।
बेनियाज़२—वि० बिल्कुल-स्वच्छंद, सब बंधनों से रहित।
बेनी—स्त्री०स्त्रियों की चोटी।
बेनौरा७—पु० बिनौला।
बेपरद—वि० नग्न।
बेपरवाह२—वि० (फ़ा०) बेफ़िक्र। [रहित।
बे-पर्द—वि० (फ़ा०) पर्दा-
बेपर्दगी—स्त्री०(फ़ा०) पर्दे का अभाव।
बेपाइ—वि०निरुपाय, भौचक
बेपीर—वि०(फ़ा०) निर्दय। बिना गुरु का।
बेफ़ायदा—वि० (फ़ा०) व्यर्थ
बेफ़िक्र—वि०(फ़ा०)निश्चिन्त
बेबदल—वि०(फ़ा०) एक-सा, निश्चित। बेजोड़।
बेबस२—वि०(फ़ा०) लाचार
बेबहा—वि० (फ़ा०) बेशक़ीमत। [निडर।
बेबाक—वि० (अ० फ़ा०)
बेबाक़२—वि०(फ़ा०) चुकता
बेबुनियाद—वि० निर्मूल।
बेभाव—क्रि०वि० (फ़ा०) बेहिसाब [बे-मौक़े।
बे-महल—वि० (फ़ा० अ०)
बेमुरव्वत२—वि० (फ़ा०) दुःशील। [सर-रहित।
बेमौक़ा—वि० (फ़ा०) अव-
बेर—पु० एक फल। स्त्री० दफ़ा, बार। देर।
बेरवा—पु० विवरण। सोने या चाँदी का कड़ा।
बेरहम२—वि०(फ़ा०)निष्ठुर
बेरा—पु० समय। सबेरा। बार। जहाज़ों का समूह।
बेराम२—वि० बीमार।

बेरी—स्त्री॰ बेड़ी। बेर।
बेरुख़र—वि॰ (फ़ा॰) बे-मुरव्वत।
बेरोक—वि॰ निर्विघ्न।
बेरोज़गार—वि॰ बेकार।
बेरौनक़र—वि॰(फ़ा॰)उदास
बेल—पु॰ एक वृक्ष। लता। स्त्री॰(फ़ा॰)कुदाल, फावड़ा।
बेलचा—पु॰ (फ़ा॰) कुदाली
बेलज़्ज़तर—वि॰(फ़ा॰) स्वादहीन। [खोदन वाला।
बेलदारर—पु॰ (फ़ा॰) मिट्टी-
बेलन—पु॰ लकड़ी तथा पत्थर का लंबा गोल टुकड़ा।
बेलना—पु॰बेलना। सक्रि॰ बढ़ाना (रोटी)।
बेलपत्र—पु॰ 'बेल' वृक्ष की पत्तियां। [काम।
बेलबूटा—पु॰ चित्रकारी का-
बेलरी—स्त्री॰ बेल, लता।
बेला—पु॰एक पुष्प। कटोरा। लहर। समय। (फ़ा॰) दरिद्रों को रुपये बाँटने का थैला।
बेलाग—वि॰(फ़ा॰) बिल्कुल-अलग। साफ़, खरा।
बेली—पु॰ साथी। स्त्री॰ बेल
बेलौस—वि॰ खरा।
बेवक़ूफ़र—वि॰ (फ़ा॰) मूर्ख।
बेवक़्त—क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) कुसमय में।
बेवट—स्त्री॰ बेबसी।
बेवफ़ा—वि॰(फ़ा॰) बेमुरौवत
बेवरा—पु॰ विवरण।
बे-वहदत—वि॰ (फ़ा॰) निर्लज्ज।
बेवा—स्त्री॰ (फ़ा॰) रांड़।
बेवान—पु॰ विमान।
बेश—वि॰ (फ़ा॰) अधिक। श्रेष्ठ।
बेशऊरर—वि॰(फ़ा॰)मूर्ख।
बेशक—क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) निःसन्देह। [बहुमूल्य।
बेशक़ीमती—वि॰ (फ़ा॰)
बेशरम—वि॰ (फ़ा॰) बेहया।
बेशी—स्त्री॰(फ़ा॰)अधिकता।
बेशुमार—वि॰ असंख्य।
बेश्म—पु॰ वेश्म, घर।
बेस—पु॰ भेष। वस्त्र।
बेसन—पु॰ चने की दाल का आटा।
बेसब्रर—वि॰ अधीर।
बेसमझर—वि॰ (फ़ा॰)मूर्ख
बेसर—पु॰ नथ। बुलाक़।
बेसरा—पु॰ ख़च्चर।
बेसरोसामान—वि॰ (फ़ा॰) बिलकुल दरिद्र।
बेसाहना—अक्रि॰मोल लेना।
बेसाहनी—स्त्री॰ ख़रीद।
बेसुध—वि॰ बेहोश।
बेसुर—वि॰ बेमेल।
बेस्वा—स्त्री॰ वेश्या।
बेहंगम—वि॰ बेढंगा।
बेह—पु॰ छेद। पु॰ बिही-नामक फल। वि॰ (फ़ा॰) उत्तम।
बेहतरर—वि॰ (फ़ा॰) अधिक अच्छा।
बेहतरीन—वि॰दे॰ 'बेहतर'।
बेहद—वि॰ (फ़ा॰) असीम
बेहन—स्त्री॰ पौध।
बेहना—पु॰ धुनिया।
बेहनौर—पु॰ पौधा लगाने की क्यारी।
बेहया—वि॰ (फ़ा॰) निर्लज्ज।
बेहयाई—स्त्री॰ (फ़ा॰) निर्लज्जता।
बेहर—वि॰पृथक्। पु॰ बावड़ी
बेहरा—वि॰ पृथक्।
बेहराना—सक्रि॰ फाड़ना। अक्रि॰ फटना।
बेहालर—वि॰ (फ़ा॰) परेशान। [अत्यधिक।
बेहिसाब—क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰)
बेहूदगी—स्त्री॰(फ़ा॰) अशिष्टता। [अशिष्ट।
बेहूदा१—वि॰ (फ़ा॰)
बेहैफ़—वि॰ (फ़ा॰) निश्चित
बेहोशर—वि॰ (फ़ा॰)अचेत
बैंक—पु॰ (अं॰) रुपये के लेन-देन की कोठी।
बैंकर—पु॰ (अं॰) साहूकार।
बैंगन—पु॰ भटा।
बैंगनी—वि॰ बैंगनके रंगका
बैंजनी—वि॰ बैंगन केरंगका
बैंड—पु॰(अं॰)अंग्रेज़ी बाजा
बैंड़ा—वि॰ कठिन, टेढ़ा।
बैंत, बैंता—पु॰ पद्य।
बै—स्त्री॰ (अ॰) बेचना। क्रय-विक्रय। [बयाना।
बैआना—पु॰ (अ॰) साई,
बैकना—अक्रि॰ बहकना।
बैकुंठ—पु॰ स्वर्ग।
बैखरी—स्त्री॰बुलंद-आवाज़।
बैजंती—स्त्री॰ श्रीकृष्ण की माला। एक पुष्प-वृक्ष।
बैटरी—स्त्री॰ (अं॰) रासायनिक मसाला जिससे बि-

जली पैदा की जाती है।
बैठक—स्त्री०बैठने का स्थान। अधिवेशन।
बैठकबाज़२—वि० धूर्त्त।
बैठकी—स्त्री०बैठक, आसन।
बैठना१—अक्रि०स्थित होना
बैत—स्त्री० (अ०) कविता। पु० घर। [भूतयोनि।
बैताल—पु० भाट। एक-
बैतालिक—पु० स्तुत पाठ-करने वाला।
बैन—पु० वचन। [बोना।
बैना—पु० उपहार। सक्रि०
बैनामा—पु० (अ०) वह कागज़ जिस पर किसी चीज़ की बिकरी की लिखा-पढ़ी की जाती है।
बैयरबानी—स्त्री० औरत।
बैयाँ—क्रि०वि० घुटनोंके बल।
बैया—पु० कंघी। छोटी ननद
बैरंग—वि०(अं०) जिसका महसूल पहिले अदा न हुआ हो।
बैरन—पु० शत्रुता।
बैरक—पु० (तु०) झंडा, पताका।
बैरख—पु० झंडा।
बैरा—पु० (अ०) सेवक।
बैरागर—पु० खानि।
बैरागी—पु० साधु विशेष।
बैराना—अक्रि० वायु के प्रभाव से बिगड़ना
बैरिस्टर—पु० (अं०)विलायत-पासशुदा वकील। क़ानूनदाँ
बैरूनी—वि० (फ़ा०) बाहरी
बैल—पु० एक पशु।
बैलून—पु० गुब्बारा।
बैसंदर—पु० अग्नि।
बैन—स्त्री० आयु। पु० वैश्य
बैसना१—अक्रि० बैठना।
बैसर—पु० कपड़ा बिनने की कंघी। [का महीना।
बैसाख—पु० चैत्र के बाद-
बैसाखी—स्त्री० टेक कर चलने की लाठी।
बैसारना—सक्रि० बैठालना।
बैसिक—पु० वेश्या का प्रेमी, नायक। [हवा।
बैहर—वि० भयानक स्त्री०
बोंडा—पु० बारूद में आग लगाने की रस्सी।
बोक—पु० बकरा।
बोगदान—पु० (फ़ा०) मदारी का थैला।
बोजा—स्त्री० चावल से बनी शराब। [गट्ठर।
बोझ, बोझा—पु० भार,
बोझल—वि० वज़नी।
बोट—स्त्री० (अं०) नाव।
बोटी—स्त्री० मांस का टुकड़ा।
बोड़ना—सक्रि० डुबाना।
बोड़ा—पु० अजगर। लोबिया की फली। [घुँघची।
बोड़ी—स्त्री० कौड़ी, दमड़ी,
बोतल—स्त्री० बड़ी शीशी।
बोदर—स्त्री० मुलायम छड़ी।
बोदा७—वि० मूर्ख। सुस्त।
बोध—पु० ज्ञान। संतोष।
बोधक—पु० ज्ञान कराने वाला। सूचक।
बोधकर—पु० प्रातःकाल। राजा को जगाने वाला, बैतालिक। [आ सके।
बोधगम्य—वि०जो समझ में-
बोधनक्—पु० जगाना।
बोधना—सक्रि० समझाना।
बोधनीय—वि० बोधन-योग्य।
बोधित—वि० समझायागया
बोधितरु—पु० गया में स्थित पीपल का वृक्ष विशेष।
बोधिद्रुम—पु०पीपल का वृक्ष
बोध्य—वि०समझाने योग्य।
बोनस—पु० (अं०) पुरस्कार
बोना—सक्रि०वपन करना।
बोबा—पु० गठरी। स्तन।
बोय—स्त्री० गंध, बास।
बोरका—पु० दावात।
बोरना—सक्रि० डुबोना।
बोरसी—स्त्री० अँगीठी।
बोरा—पु०टाट का थैला।
बोरिया—स्त्री०(फ़ा०)चटाई। बिस्तर।
बोरी—स्त्री० छोटा बोरा।
बोर्ड—पु० (अं०) समिति। मोटी दफ़्ती।
बोर्डिंगहाउस—पु० (अं०) छात्रावास।
बोल—पु० वचन। गंध। रस। (अ०) मूत्र।
बोलचाल—स्त्री० बातचीत।
बोलती—स्त्री० वाणी।
बोलना—अक्रि० कहना।
बोलबाला—पु० दबदबा।
बोलसर—पु० मौलसिरी।
बोली—स्त्री० भाषा। वाणी।
बोश—पु० (अ०) शान-शौकत। नीच आदमी।
बोसा—पु०(फ़ा०) चुम्बन।

बोसीदा—वि०(फ़ा०) सड़ा-गला, बिल्कुल पुराना।
बोह—स्त्री० डुबकी।
बोहनी—स्त्री० प्रथम बिक्री।
बोहारना—सक्रि० झाड़ना।
बोहित—पु० जहाज़।
बौंड़—स्त्री० लता। [फैलना।
बौंड़ना—अक्रि० दूर तक-
बौंड़र—पु० ववंडर। [छदाम।
बौंड़ी—स्त्री० कली। फली।
बौखल१—वि० पागल, सनकी।
बौछार—स्त्री० हवा के साथ पानी का झोंका।
बौड़हा—वि० पागल।
बौद्ध—पु० बुद्ध का अनुयायी।
बौना७—पु० नाटा आदमी।
बौर—पु० आम का फूल।
बौरना—अक्रि० मौर निकलना।
बौरहा७—वि० पागल।
बौरा७—वि० पागल। गूँगा।
बौराना—अक्रि० पागल होना।
बौराह—वि० पागल।
बौहर—स्त्री० बहू।
ब्यंग—पु० ताना। गूढ़ अर्थ।
ब्यंजन—पु० पंखा।
ब्यलीक—वि० अप्रिय। विलक्षण। पु० डाट-डपट। अपराध।
ब्यवहरिया—पु० महाजन।
ब्याज—पु० सूद। [हुआ।
ब्याजू—वि० सूद पर दिया-
ब्याना—सक्रि० जनना।
ब्यापना—सक्रि० फैलना।
ब्यार, ब्यारि—स्त्री० हवा।
ब्याल—पु० साँप। हाथी। व्याघ्र।
ब्याह—पु० शादी।
ब्योंत—पु० काट-छाँट। व्यवस्था, उपाय। ढंग। मौक़ा।
ब्योंतना—सक्रि० पोशाक बनाने के लिए कपड़े को काटना।
ब्योपार—पु० व्यापार।
ब्योरना—सक्रि० सुलझाना।
ब्यौरा—पु० विवरण।
ब्रंद—पु० वृन्द, समूह।
ब्रज—पु० दे० 'व्रज'।
ब्रजना—अक्रि० जाना।
ब्रजभूषण—पु० श्रीकृष्ण।
ब्रध्न—पु० सूर्य।
ब्रह्म—पु० परमात्मा। ब्राह्मण। वेद।
ब्रह्मचर्य्य—पु० वीर्य-रक्षा का व्रत। प्रथम-आश्रम।
ब्रह्मचारी५—पु० ब्रह्मचर्य्य का पालन करने वाला।
ब्रह्मज्ञ—पु० ब्रह्म या वेदांत का जानने वाला। [बोध।
ब्रह्मज्ञान—पु० ब्रह्म सत्ता का-
ब्रह्मण्य—वि० ब्रह्म में लिप्त।
ब्रह्मत्व—पु० ब्रह्म में मिल जाना। [मध्यभाग।
ब्रह्मद्वार—पु० मस्तक का-
ब्रह्मपुत्र—पु० हिन्दुस्तान की एक बड़ी नदी। विष का एक भेद। [हृदय।
ब्रह्मपुरी—स्त्री० सत्यलोक।
ब्रह्मबंधु—पु० अधिक्षेप, निंदायोग्य-ब्राह्मण।
ब्रह्मभूय—पु० दे० 'ब्रह्मत्व'।
ब्रह्मभोज—पु० ब्राह्मण-भोजन।
ब्रह्ममुहूर्त्त—पु० प्रभात।
ब्रह्मयज्ञ—पु० पाठ, होम, अतिथिपूजा, तर्पण, बलि-आदि।
ब्रह्मरंध्र—पु० मस्तक के मध्य में माना गया एक गुप्त छेद।
ब्रह्मरात्रि—स्त्री० ब्रह्मा की रात (इक्कीस करोड़ ६० लाख वर्ष का समय)।
ब्रह्मराक्षस—पु० वह ब्राह्मण जो मर कर प्रेत हो गया हो।
ब्रह्मर्षि—पु० ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मलिपि—स्त्री० भाग्य-लेख।
ब्रह्मवर्चस—पु० सदाचार-पालन और वेदाभ्यास करने से पैदा हुआ तेज।
ब्रह्मवादी—पु० अद्वैतवादी। केवल ब्रह्म की सत्ता को मानने वाला।
ब्रह्मविद्या—स्त्री० ब्रह्म का ज्ञान उत्पन्न करने वाली विद्या। उपनिषद्-विद्या।
ब्रह्मवेत्ता—पु० ब्रह्म को जानने वाला। तत्त्वज्ञ।
ब्रह्मश्रव—पु० वेद।
ब्रह्मसमाज—पु० वह संप्रदाय जिसके प्रवर्त्तक राजा राममोहनराय थे।
ब्रह्मसू—पु० कामदेव।
ब्रह्मसूत्र—पु० जनेऊ। [वध।
ब्रह्महत्या—पु० ब्राह्मण का-
ब्रह्मांजलि—स्त्री० वेद पढ़ते समय की अंजलि।
ब्रह्मांड—पु० सम्पूर्ण सृष्टि। खोपड़ी।

ब्रह्मा—पु० सृष्टि का रचयिता
ब्रह्माणी—स्त्री० सरस्वती।
ब्रह्मावर्त्त—पु० सरस्वती। दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।
ब्रह्मासन—पु० ध्यान और योग्य का आसन।
ब्रह्मास्त्र—पु० मंत्र के बल से चलने वाला अस्त्र।
ब्राह्मण७—पु० भारत की एक जाति। ब्रह्म को जानने वाला।
ब्राह्ममुहूर्त्त—पु० सूर्योदय के पूर्व चार घड़ी तक का समय
ब्राह्मण्य—पु० ब्राह्मणों का समूह।
ब्राह्मी—स्त्री० दुर्गा। एक प्राचीन लिपि। एक बूटी। शिवजी की आठ माताओं में से एक।
ब्रिटिश—वि० (अं०) अंग्रेज़ी।
ब्रिटेन—पु० (अं०) इंगलैंड और वेल्स।
ब्रीड, ब्रीड़ा—स्त्री० लज्जा।
ब्रुश—पु० (अं०) कूँची।
ब्रोकर—पु० (अं०) दलाल।
ब्लाक—पु० (अं०) ठप्पा।

२४—भ

भंकार—पु० भीषण शब्द।
भंग—पु० लहर। टुकड़ा। पराजय। स्त्री० भाँग।
भंगड़, भँगेड़ी—वि० भाँग पीने वाला।
भंगा—स्त्री० भंग। पटुवा।
भँगार—स्त्री० कूड़ा-कर्कट।
भंगि, भंगिमा—स्त्री० टेढ़ापन
भंगी—पु० मेहतर। भंग-करने वाला। स्त्री० कुटिलता।
भंगुर—वि० नाशवान्।
भँगेड़ी—वि० भाँग पीने वाला
भंजक१४—पु० तोड़ने वाला
भंजन—पु० तोड़ना। नाश।
भंजना—सक्रि० तोड़ना।
भँजना९—अक्रि० बटा जाना। मोड़ा जाना। तोड़ा जाना।
भंजित—वि० खंडित।
भड़—पु० भाँड़। पात्र। वि० निर्लज्ज।
भँडरिया—स्त्री० दीवार में किवाड़दार अलमारी। पु० पाखंडी, धूर्त्त।
भडा—पु० बर्तन। गुप्तभेद।
भँडाना—सक्रि० तोड़ना। ढूँढ़ना।
भंडाफोड़—पु० रहस्योद्घाटन।
भंडार—पु० अन्न आदि रखने का घर। कोष।
भंडारा—पु० साधुओं का भोज खज़ाना।
भंडारी—पु० कोठरी। खज़ानची। दीवार में बना किवाड़दार ताख़।
भंडिल—पु० शिरिस वृक्ष।
भँडेरिया—पु० एक जाति। पंडे का नौकर।
भँड़ौआ—पु० हास्यरस के भद्दे गीत।
भँभीरी—स्त्री० पतिंगाविशेष।
भँवना९—अक्रि० मँडराना, घूमना। [का चक्र। पति।
भँवर—पु० भ्रमर। पानी-
भँवरकली—स्त्री० डोरी।
भँवरजाल—पु० संसार के झगड़े। [का चक्कर।
भँवरी—स्त्री० परिक्रमा। पानी-
भ—पु० नक्षत्र, तारा। पर्वत। भ्रम।
भकभकाना—अक्रि० चमकना।
भकुआ—वि० मूर्ख।
भकुआना—अक्रि० रुष्ट तथा घबरा जाना।
भकोसना—सक्रि० जल्दी-जल्दी खाना।
भक्त—पु० सेवक। भात।
भक्तकार—पु० रसोइया।
भक्तवत्सल—वि० भक्तों पर दया करने वाला। [श्रद्धा।
भक्ति—स्त्री० पूजा। सेवा।
भक्ष, भक्षण६—पु० खाना।
भक्षक१४—पु० खाने वाला।
भक्षित—वि० खाया हुआ।
भक्षी५—वि० खाने वाला।
भक्ष्य—वि० खाने-योग्य।

पु० खाद्य वस्तु।
भक्ष्यकार—पु० पुआ आदि बनाने वाला।
भख—पु० आहार।
भगंदर—पु०एक रोग।
भग—पु० योनि। ऐश्वर्य। सूर्य। शोभा।
भगण—पु० एक गण जिसमें प्रथम वर्ण गुरु तथा अंत के दोनों लघु होते हैं।
भगदड़—स्त्री० भागने की क्रिया। [पु० भानजा।
भगना९—अक्रि०भाग जाना।
भगवंत, भगवान्—पु० परमात्मा। वि० कांतिमान्।
भगवती—स्त्री० सरस्वती। देवी। [का भक्त।
भगवदीय—पु० भगवान्-
भगिनी—स्त्री० बहिन।
भगीरथ—पु० अयोध्या के एक राजा जो तपोबल से गंगा को पृथ्वी पर लाये थे। वि० बहुत बडा। कठिन।
भगाडा७—वि०भागने वाला।
भगौहाँ—वि० भागने को तैयार। गेरुआ। [कायर।
भग्गुल—वि० भागा हुआ।
भग्न—वि० टूटा हुआ।
भग्नावशेष—पु० खंडहर।
भचकना—अक्रि० पाँव टेढ़ा कर के चलना। भौचक्का हो कर रह जाना।
भचक्र—पु० नक्षत्र-मंडल।
भजन—पु० जप। पूजा। कीर्त्तन।
भजना—सक्रि० जपना। अक्रि० भागना।
भजनानंदी—पु० भजन में मग्न रहने वाला। [वाला।
भजनी—पु० भजन करने
भजनीक—पु०गवैया। पूजक
भजमान—वि० न्याय-पूर्वक ली जाने वाली (वस्तु)। युक्त।
भट—पु० योद्धा, वीर।
भटकटाई—स्त्री०एक कँटीला पौधा, भटकटैया। [पौधा।
भटकटैया—स्त्री०एक कँटीला-
भटकना९—अक्रि० मार्ग-भूलना। भ्रम में पड़ना।
भटका—पु० व्यर्थ घूमना।
भटमेरा—पु० मुठभेड़।
भटिहारा७—पु० सराय का प्रबंधक।
भट्ट—स्त्री० सखी। स्त्री।
भट्ट—पु० योद्धा। भाट।
भट्टार—वि० पूज्य।
भट्टारक—पु०राजा। विद्वान्। सूर्य। वि० पूज्य।
भट्टिनी—स्त्री० अभिषेक रहित-राजपत्नी। ब्राह्मणी।
भट्ठी—स्त्री० बड़ा चूल्हा।
भठियारा७—पु० सराय का प्रबंधक।
भड़क—स्त्री० चमक-दमक।
भड़कना९—अक्रि० जल-उठना। चमकना।
भड़कीला७—वि०चमकीला।
भड़भड़िया—वि० बक्की।
भड़भूँजा—पु०भुजवा।
भड़साईं—स्त्री० भाड़।
भड़िहा—पु० चोर।
भड़िहाई—स्त्री० चोरी। क्रि० वि० चोरों की तरह।
भड़ी—स्त्री० झूठा बढ़ावा।
भड़ुआ—पु०वेश्या का साथी।
भड्डर७—पु०ब्राह्मणों की एक नीच जाति।
भणना—सक्रि० कहना।
भणित—वि० कथित।
भतीजा७—पु०भाई का पुत्र।
भत्ता—पु० यात्रा आदि के लिए दिया गया दैनिक-व्यय। [संन्यासी।
भदंत—वि० पूज्य। बौद्ध-
भदेसिल—वि० भद्दा।
भद्दा७,१—वि०कुरूप।
भद्र३—वि० सभ्य, शिष्ट। पु० मुण्डन। हित।
भद्रअवज्ञा—स्त्री०सत्याग्रह। कानून को शिष्टताके साथ तोड़ना। [घड़ा।
भद्रकुंभ—वि० भरा हुआ-
भद्रदारु—पु० देवदारु।
भद्रयव—पु० इन्द्र जौ।
भद्रश्री—स्त्री०चंदन। कुंकुम शोभा। श्रृंगार।
भद्रा—स्त्री० ज्योतिष में दूसरी, सातवीं और बारहवीं तिथि। गाय। दुर्गा। पृथ्वी।
भद्रासन—पु० राजसिंहासन।
भद्री—वि० भाग्यशाली।
भनक—स्त्री०अस्पष्ट-ध्वनि।
भनकना, भनना—सक्रि० कहना। आवाज़ करना।
भनभनाना—अक्रि०गुंजारना।

भबका—पु० अर्क़ निकालने का एक नालीदार घड़ा ।
भभक—स्त्री० गर्मी, उबाल ।
भभकना९—अक्रि० उबलना । भड़कना ।
भभकी—स्त्री० घुड़की ।
भभरना—अक्रि० डरना ।
भभूका—पु० ज्वाला । आग ।
भभूत—स्त्री० भस्म ।
भम्भड़—स्त्री० भीड़भाड़ ।
भमीरी—स्त्री० झींगुर ।
भयंकर३—वि० डरावना ।
भय—पु० डर । [हुआ ।
भयद्रुत—वि०भय से भागा-
भयप्रद—वि० ख़ौफ़नाक ।
भयभीत—वि० डरा हुआ ।
भयहारी५—वि० भय छुड़ाने वाला । [पु०वीभत्स रस ।
भयानक३—वि० डरावना ।
भयारा७—वि० भयानक ।
भयावन, भयावह—वि० डरावना ।
भरंत—स्त्री० भ्रांति ।
भर—वि० पूरा । पु० भार ।
भरण६—पु० पालन, पोषण
भरण-पोषण—पु०जीविका, निर्वाह ।
भरणी—स्त्री० दूसरा नक्षत्र ।
भरण्य—पु० मज़दूरी ।
भरण्यभुक्—पु० मज़दूर ।
भरत—पु० रामचन्द्र के छोटे भाई । दुष्यंत का पुत्र । नाट्य-शास्त्र के प्रमुख-आचार्य । नट ।
भरतखंड—पु० भारतवर्ष ।
भरता—पु० चोखा । पति ।

भरती—स्त्री०दाख़िला, प्रवेश
भरद्वाज—पु० एक ऋषि । एक पक्षी । [डालना ।
भरना—सक्रि०पूरा करना ।
भरनि—स्त्री० वेश-भूषा ।
भरपाई—स्त्री०ऋण का पूरा-चुकाना ।
भरपूर—वि०परिपूर्ण । क्रि० वि०अच्छी तरह ।[घबराना।
भरभराना—अक्रि० फूलना ।
भरम—पु० संशय । रहस्य ।
भरमाना—सक्रि० भ्रम में डालना ।
भरमार—स्त्री० आधिक्य ।
भरवाना—सक्रि० भरने का काम दूसरे से कराना ।
भरसक—क्रि०वि०शक्तिभर ।
भरहराना—अक्रि० सहसा-गिरना । [या भाव ।
भराव—पु० भरने का कार्य-
भरी—स्त्री० रुपये के बराबर की तौल । दस माशा ।
भरु—पु० भार, बोझ ।
भरुहाना—सक्रि० भ्रम में डालना । अक्रि०गर्व करना
भरुही—स्त्री० एक पक्षी ।
भरैत—पु० किरायेदार ।
भरैया—पु० पालक, रक्षक ।
भरोसा—पु० विश्वास । सहारा ।
भर्ग—पु० शिव । [पति ।
भर्त्ता, भर्त्तार—पु० मालिक,
भर्तृदारक—पु० युवराज ।
भर्तृदारका—स्त्री० राज-कुमारी ।
भर्त्सक१४—वि० निन्दक ।

भर्त्सना—स्त्री० निन्दा, फटकार ।
भर्म—पु० सोना । मज़दूरी ।
भर्रा—पु० झाँसा, धोखा ।
भर्राना—अक्रि० 'भर भर' शब्द निकलना ।
भलका—स्त्री० गाँसी ।
भलपति—पु०भाला धारण-करने वाला ।
भलमनसी—स्त्री० शराफ़त ।
भला—वि० अच्छा । हित ।
भलाई—स्त्री० नेकी ।
भल्ल—पु०भाला । वध । रीछ
भल्लुक—पु० रीछ ।
भवंग, भवंगा—पु० सर्प ।
भवंगम—पु० सर्प । [शिव ।
भव—पु०उत्पत्ति । संसार ।
भवदीय—वि० आपका ।
भवन—पु० मकान ।
भवनी—स्त्री० गृहिणी ।
भवबंधन—पु० सांसारिक-झंझट ।
भवभंजन—पु० परमात्मा ।
भवभय—पु० आवागमन का भय ।
भवभूति—स्त्री० सृष्टि । एक प्रसिद्ध नाटककार ।
भवमोचन—पु० भगवान् ।
भवविलास—पु० सांसारिक-सुख । माया ।
भवाँ—स्त्री० चक्कर ।
भवानी—स्त्री० पार्वती, दुर्गा
भवितव्य—पु० होनहार ।
भवितव्यता—स्त्री० होनी, भाग्य ।
भविता१०—वि० होने की.

इच्छा वाला। होनहार।
भविष्णु—पु० होनहार। वि० होने की इच्छा करने वाला। [आने वाला समय।
भविष्य, भविष्यत्—पु०
भविष्यवाणी—स्त्री० पहले ही बतलाई गयी भविष्य की बात।
भवीला—वि० भावपूर्ण।
भवेश—पु० शंकरजी।
भव्य३—वि०सुन्दर। शुभ।
भषक—पु० कुत्ता।
भषी—पु० कुत्ता। [डूबना।
भसना९—अक्रि० तैरना।
भसमंत—वि० जला हुआ।
भसाना—सक्रि० डुबोना, बहाना।
भसिंड—पु० कमलनाल।
भसुंड—पु० हाथी।
भसुर—पु० पति का बड़ा भाई, जेठ।
भस्त्रा—स्त्री० धौंकनी।
भस्म—पु० राख। [शीशम।
भस्मगर्भा—स्त्री० काली
भस्मसात्—वि०सबजलाहुआ।
भस्मीभूत—वि० जला हुआ।
भस्सड़—वि० बेडौल।
भहराना—अक्रि० अचानक गिरना।
भांग—स्त्री० विजया बूटी।
भाँज—स्त्री०मोड़ने, घुमाने, तह करने की क्रिया।
भाँजना—सक्रि० तह करना, घुमाना, मोड़ना।
भाँजी—स्त्री० चुग़ली।
भाँटा—पु० बैंगन।
भाँड—पु० विदूषक। भंडा-फोड़। बर्त्तन।
भाँड़ना—सक्रि० घूम घूमकर देखना। दूषित करना।
भांडा—पु० बर्त्तन।
भांडागार—पु० भंडार। कोश
भांडागारिक—पु० भंडारी।
भांडारम—पु०ख़ज़ाना, कोश
भाँति—स्त्री० क़िस्म। रीति
भाँपना—सक्रि० ताड़ना।
भाँवर—स्त्री० परिक्रमा।
भा—स्त्री० शोभा। चमक। किरण। बिजली।
भाइप—पु० भ्रातृत्व।
भाई, भाउ—पु०भाव। प्रेम
भाईचारा—पु० बन्धुत्व।
भाईबंद—पु० संबन्धी और बिरादरी के लोग।
भाउ, भाऊ—पु० भाव, प्रेम
भाकसी—स्त्री० भट्ठी।
भाकुर—स्त्री० एक मछली।
भाखना—सक्रि० कहना।
भाग—पु० अंश। भाग्य।
भागड़—स्त्री०भगदड़, जल्दी
भागदान—पु० साहित्यिक-लेख। सेना के लिए चन्दा। सहायता।
भागधेय—पु० भाग्य।
भागना-अक्रि० दौड़कर जाना।
भागफल—पु० लब्धि।
भागवत—पु० एक पुराण। भगवान् का भक्त। वि० भगवत् संबंधी। [वाला।
भागवान—वि० अच्छे भाग्य-
भागिनेय—पु० भानजा।
भागी, भागीदार—पु० हिस्से-दार, साझी। ज़िम्मेदार।
भागीरथी—स्त्री० गङ्गाजी।
भाग्य—पु० तक़दीर, पूर्व जन्म के किए हुए अच्छे, बुरे कर्म।
भाग्यवान् ३—वि० अच्छी-तक़दीर वाला। [वाला।
भाजक१४—पु० भाग करने-
भाजन—पु० बरतन, पात्र।
भाजना—सक्रि० भगना।
भाजित—वि० बँटा हुआ।
भाजी—स्त्री० साग। [जाय।
भाज्य—पु०जिसमें भाग दिया-
भाट—पु०एक जाति, चारण।
भाटक—पु०भाड़ा,किराया।
भाटा—पु० समुद्र के पानी का उतार।
भाठी—स्त्री० भट्ठी।
भाड़—पु० भूँजे की भट्ठी।
भाड़ा—पु०किराया, महसूल
भात—पु०पका हुआ चावल।
भाति—स्त्री०शोभा, छवि।
भाथा—पु० तरकस।
भाथी—स्त्री० धौंकनी।
भादों, भाद्रपद—पु० सावन के बाद का महीना।
भाद्र—पु०भादों का महीना।
भाद्रपदा—स्त्री० नक्षत्र-विशेष। [ज्ञान।
भान—पु०प्रकाश। आभास।
भानजा७—पु० बहिन का पुत्र। [करना।
भानना—सक्रि० खंडित-
भानमती—स्त्री० नटी जो जादू का खेल करे।
भानवी—स्त्री० यमुना नदी।

भाना—अक्रि०अच्छा लगना। भासित होना।
भानु—पु० सूर्य।
भानुज—पु० यम। शनि। कर्ण। सुग्रीव। [यमुना नदी
भानुजा, भानुतनया—स्त्री०
भानुमती—स्त्री० विक्रमादित्य की रानी जो इन्द्रजाल विद्या में निपुण थी। जादूगरनी। दुर्योधन की स्त्री।
भाप, भाफ—स्त्री० वाष्प।
भाभी—स्त्री० भौजाई।
भाम, भामा, भामिनी—स्त्री० स्त्री। भार्या।
भामक—पु० बहनोई।
भामता—पु० दे० 'भावता।'
भामी५—वि० क्रोधी।
भाय—पु० भाव। प्रेम। भाई
भायप—पु०भ्रातृत्व।
भाया—वि० प्रिय।
भार—पु० बोझ। ज़िम्मेदारी। आठ हज़ार तोले का परिमाण।
भारत—पु०भारतवर्ष। भारत की सन्तान। घोर-युद्ध। [वाणी, भाषा।
भारती—स्त्री० सरस्वती।
भारतीय—वि० भारत का।
भारथी—वि० सैनिक, वीर।
भारद्वाजी—स्त्री० नरमा-कपास,कोकटी।
भारभूत—वि० बोझल,भारी।
भारभृत, भारवाहक—पु० बोझ ढोने वाला।
भारमुक्ति—स्त्री० भार हटाना। बरख़ास्तगी।
भारयष्टि—स्त्री० बहँगी।
भारवाहक—पु०मज़दूर। एक देश से दूसरे देश में ले जाना।
भारिक४—वि० बोझा ढोनेवाला। [विशाल।
भारी१—वि० वज़नी।
भार्गव—पु०भृगु की संतान, परशुराम। शुक्राचार्य।
भार्गवी—स्त्री० दूब (घास)।
भार्गवेश—पु० परशुराम।
भार्या—स्त्री० धर्मपत्नी।
भार्यापती-स्त्री०स्त्री-पुरुष, दंपति
भाल—पु० मस्तक।
भालचंद्र—पु० शिव। गणेश
भालदर्शन—पु० सिंदूर।
भाललोचन—पु० शिव।
भालांक—पु० शिवजी। भाग्यवान्। भाला।
भाला—पु० बरछा। [धारी।
भालाबरदार—पु० भाला-
भाली—स्त्री० बरछी या बरछी की नोंक।
भालु—पु० रीछ।
भावता—पु०भाग्य। प्रेमी।
भाव—पु० विचार। अभिप्राय। मनोविकार। स्नेह। श्रद्धा। अस्तित्व। चेष्टा।-दर। [पु० प्रेमी।
भावक—क्रि०वि०थाड़ा-सा।
भावगति—स्त्री० इरादा।
भावगम्य—वि० जो भक्ति भाव से जाना जा सके।
भावग्राह्य—वि० भक्ति द्वारा ग्रहणीय।
भावज—स्त्री० भाभी।
भावज्ञ-वि०मर्मज्ञ,रहस्य-वेत्ता।
भावता७—वि०प्रिय।पु०प्रियतम
भावन—वि० भाने वाला।
भावना६—स्त्री० इच्छा। विचार। [कता।
भावप्रवणता—स्त्री० भावु-
भावभक्ति—स्त्री० सत्कार।
भाववाचक—पु० भाव या गुण सूचित करने वाली संज्ञा। [क्रिया का रूप।
भाववाच्य—वि०भाव वाची-
भावशवलता—स्त्री० एक के बाद क्रमशः अन्य भावों का आना।
भावार्थ—पु०आशय। [मन।
भावावेश-पु०आवेग,जोश।दुःखी
भाविक—वि० मर्मज्ञ।
भावित—वि० सुगंधि में बसाया हुआ। छौंका-हुआ। सोचा हुआ। पाया-हुआ। [सदाचारिणी स्त्री।
भाविनी—स्त्री०रूपवती तथा-
भावी—स्त्री० आने वाला। समय, होनहार।
भावुक—पु० साधु पुरुष। कल्याण। वि० भावना करने वाला या जिस पर भावों का शीघ्र प्रभाव पड़े। भावना पूर्ण।
भाव्य—वि० चिंतनीय।भवितव्य
भाषण६—पु० व्याख्यान।
भाषना—सक्रि० कहना।
भाषांतर—पु० अनुवाद।
भाषा—स्त्री० बोली। हिंदी-भाषा।
भाषागत—वि० भाषा-प्रधान। देश-भाषा के अनुकूल।

भाषाबद्ध—वि०साधारणदेश-भाषा में रचित ।
भाषाविद्—वि० भाषा का जानकार,विद्वान्। [उक्ति
भाषित–वि०कथित।पु०वचन,
भाषी५—पु० कहने वाला ।
भाष्य–पु०सूत्रों की व्याख्या ।
भासंत–वि० सुंदर । प्रकाश-वान्। पु०सूर्य, चंद्र आदि ।
भास–पु०प्रभा । रुचि दीप्ति।
भासना—अक्रि० ज्ञात-होना । चमकना ।
भासमान—वि०प्रकाशमान।
भासुर—वि० चमकीला ।
भासित—वि० प्रकाशित ।
भास्कर—पु० सूर्य । अग्नि । शिव । सोना ।
भास्कर्य–पु० पत्थर पर चित्र आदि बनाने का कार्य ।
भास्वर—पु० सूर्य्य । दिन । वि० चमत्कार । [कीड़ा ।
भिंग—पु० भौंरा । बिलनी-
भिंडिपाल, भिंदिपाल—पु० एक अस्त्र । छोटा डंडा । ढेलीवाँस, गोफन ।
भिंजाना—सक्रि० भिगोना ।
भिंडी—स्त्री० एक तरकारी ।
भिक्षा–स्त्री० भीख, याचना ।
भिक्षु–पु० भिखारी । संन्यासी
भिक्षुक४—पु० भिखारी ।
भिखारी५—पु० भिखमंगा ।
भिखिया—स्त्री० भिक्षा ।
भिगोना–सक्रि० गीला करना
भिजवाना—सक्रि०किसी को भेजने में लगाना ।
भिज्ञ—वि० जानकार ।
भिटनी—स्त्री० स्तन का अग्रभाग ।
भिड—स्त्री० ततैया, बरैं ।
भिड़ना९—अक्रि० लड़ना । सटना ।
भितल्ला—पु० अस्तर ।
भिताना—अक्रि० डरना ।
भित्त—पु० खंड, टुकड़ा ।
भित्ति—स्त्री० दीवार । चित्राधार । डर ।
भिद—पु० भेद, फ़र्क़ ।
भिदना—अक्रि० घुसना । छेदा जाना ।
भिदा—पु० फटना, विदीर्ण।
भिदुर–पु० वज्र । [भिनाना ।
भिनकना—अक्रि० भिन-
भिनभिनाना–अक्रि० 'भिन-भिन' आवाज करना ।
भिनसार—पु० सबेरा ।
भिन्न—वि० अलग । पृथक् । स्त्री० इकाई से कम संख्या ।
भिन्नता–स्त्री० भेद । पार्थक्य
भिन्नाना—अक्रि० दर्द होना।
भियना—अक्रि० डरना ।
भिया—पु० भैया ।
भिलावाँ—पु० एक वृक्ष तथा उसका फल ।
भिल्ल—पु० भील ।
भिश्त—स्त्री० स्वर्ग ।
भिश्ती—पु० सक्का ।
भिषक, भिषज—पु० वैद्य ।
भिस्सा—स्त्री० भात ।
भींचना—सक्रि० खींचना ।
भी—स्त्री० डर । अव्य० एक संयोजक शब्द ।
भीख–स्त्री० माँगना, भिक्षा ।
भीगना, भीजना—अक्रि० गीला होना ।
भीटा—पु० टीला, ढूह ।
भीड—स्त्री० जनसमूह । संकट । [डरा हुआ ।
भीत—स्त्री० दीवार । ४वि०
भीतर—क्रि० वि० अन्दर ।
भीतरिया—पु० वह पुजारी जो मंदिर में मूर्ति के पास रहे ।
भीति–-स्त्री० डर । दीवार ।
भीतिकर—वि० डरावना ।
भीतिकारी५–वि० डरावना ।
भीनना—अक्रि० भर जाना
भीनी—वि० स्त्री० मीठी (गंध) [वि० भयंकर ।
भीम—पु०अर्जुन के एकभाई।
भीमा—स्त्री० दुर्गा ।
भीर—स्त्री० भीड़, आपत्ति । वि० कायर ।
भीरु३, भीरुक—वि० कायर
भीरे—क्रि० वि० पास ।
भील—पु० एक जंगली जाति,
भीलुक—वि० डरपोक ।
भीषज—पु० वैद्य ।
भीषण३—वि० भयानक।
भीष्म—पु० शान्तनु-पुत्र । वि० भयानक ।
भीष्मसू-–स्त्री० गंगाजी ।
भुँइहरा—पु० तहखाना ।
भुंडा—वि०बिना सींग का । दुष्ट ।
भुअंग, भुअंगम—पु०साँप ।
भुआल—पु० राजा ।
भुईं—स्त्री० पृथ्वी ।
भुक—पु० भोजन । अग्नि ।
भुकड़ी—स्त्री० एक प्रकार की

सफ़ेद काई जो सड़ी चीज़ों पर जमती है। [करना ।
भुकाना—अक्रि० बकवाद-
भुक्खड़—वि० बहुत भूखा ।
भुक्त—वि० भोगा हुआ ।
भुक्तभोगी५—वि० दुःखादि का अनुभवी ।
भुक्ति—स्त्री० भोजन । भोग
भुखमरा—वि० भुक्कड़ ।
भुखालू—वि० भूखा ।
भुगतना९—अक्रि० सहना ।
भुगतान—पु० निपटारा ।
भुगुत—स्त्री० शक्ति, बिसात ।
भुग्न—वि० टेढ़ा, वक्र ।
भुच्चड़—वि० बेवकूफ़ ।
भुजंग, भुजंगम७—पु० सर्प ।
भुजंगभुक्—पु० मोर ।
भुजंगा—पु० एक चिड़िया । साँप ।
भुजंगाक्षी—स्त्री० तुलसी ।
भुज—पु०, भुजा—स्त्री० बाँह । किनारे की रेखा ।
भुजग—पु० साँप ।
भुजपात—पु० भोजपत्र ।
भुजदंड—पु० लम्बी भुजा ।
भुजपाश—पु० गलबाँहीं ।
भुजबंद—पु० बाज़ूबंद ।
भुजबाथ—पु० गोद ।
भुजमूल—पु० काँख के ऊपर का भाग, पक्खा ।
भुजशिरः—पु० स्कंध, कंधा ।
भुजांतर—पु० गोद । [बरछी ।
भुजाली—स्त्री० टेढ़ी छुरी ।
भुजिया—पु० उबाले हुए धान का चावल । भून कर बनायी गई तरकारी ।
भुजिष्य—पु० दास, टहलुआ ।
भुट्टा—पु० मक्के की बाल ।
भुनगा७—पु० कीड़ा विशेष ।
भुनना९—अक्रि० भूना जाना
भुनभुनाना—अक्रि० भुन-भुन करना ।
भुनाई—स्त्री० भूँजने की क्रिया या मज़दूरी ।
भुवि—स्त्री० धरती ।
भुमिया—पु० ज़मींदार ।
भुरकना९—अक्रि० भूलना । सक्रि० बुरकना ।
भुरकुस—पु० चूर्ण । [वस्तु ।
भुरता—पु० चोखा । कुचली
भुरभुरा७—वि० कुरकुरा ।
भुरसना—अक्रि० झुलसना ।
भुराई—स्त्री० भोलापन ।
भुराना—अक्रि० भुलावे में आना ।
भुर्रा—वि० बहुत काला ।
भुलक्कड़—वि० भूलने का आदी ।
भुलसना९—अक्रि० झुलसना ।
भुलाना—अक्रि० भूल जाना, भटकना ।
भुलावा—पु० धोखा ।
भुवंग—पु० साँप ।
भुव—स्त्री० धरती । भौंह ।
भुवन—पु० संसार, लोक । जल ।
भुवनपति—पु० राजा ।
भुवि—स्त्री० भूमि ।
भुशुंडी—स्त्री० बंदूक विशेष ।
भुस—पु० भूसा ।
भुसी—स्त्री० चोकर ।
भुसुंड—स्त्री० सूँड़ ।
भूँजना—सक्रि० भूनना । कष्ट देना । भोगना ।
भूँजा—पु० चबैना ।
भूँसना—अक्रि० भूँकना ।
भू—स्त्री० भूमि । स्थान । भौंह
भूकंप—पु० भूचाल ।
भूख—स्त्री० खाने की इच्छा ।
भूखना—सक्रि० सजाना ।
भूगर्भशास्त्र—पु० पृथ्वी-संबंधिनी-विद्या ।
भूगोल—पु० भूमि । वह शास्त्र जिससे पृथ्वी की बनावट आदि का ज्ञान होता है । [वाला प्राणी ।
भूचर—पु० पृथ्वी पर रहने-
भूचाल, भूडोल—पु० पृथ्वी का हिलना ।
भूजात—पु० वृक्ष
भूड़—स्त्री० बालू मिली भुर-भुरी मिट्टी ।
भूत—पु० एक देवयोनि । प्रेत, अतीतकाल । प्राणी । मूलतत्व, जिनसे सृष्टिरचना हुई है । क्रिया का वह रूप जिससे कार्य की समाप्ति पाई जाती है । वि० बीता-हुआ । [शास्त्र ।
भूतत्वविद्या—स्त्री० भूगर्भ-
भूतधात्री—स्त्री० पृथ्वी ।
भूतनाथ—पु० शिव ।
भूतपूर्व—वि० जो पूर्वकाल में हो चुका हो ।
भूतभाषा—स्त्री० पैशाचीभाषा
भूतराज—पु० शिवजी ।
भूतल—पु० पृथ्वी की सतह । दुनिया ।

भूतभावन—पु० शिवजी ।
भूतात्मा—पु० जीवात्मा।
भूतावास—पु० बहेड़ा ।
भूति—स्त्री० भस्म । ऐश्वर्य।
भूतिनी—स्त्री० भूतयोनि में जो स्त्री है।
भूतेश—पु० शिव ।
भूतेश्वर—पु० शिव ।
भूदेव—पु० ब्राह्मण ।
भूधर—पु० पर्वत ।
भूनना—सक्रि० भूँजना । तलना । [राजा ।
भूप, भूपति, भूपाल—पु०
भूपदी—स्त्री० बेला, मल्लिका
भूपुत्र—पु० मंगलग्रह ।
भूभल, भूभुर—स्त्री० गर्म धूलि या राख
भूभुज, भूभृत्—पु० राजा।
भूमंडल—पु० पृथ्वी।
भूमि—स्त्री० पृथ्वी ।
भूमिका—स्त्री० प्राक्कथन। रचना । भूमि ।
भूमिज—पु० मंगल । सोना ।
भूमिजा—स्त्री० जानकी ।
भूमिरुह—पु० वृक्ष । पेड़।
भूमिसुत—पु० मंगलग्रह ।
भूमिहार—पु० ब्राह्मणों की एक उपजाति ।
भूर—पु० बालू, रेत। स्त्री० भूल। वि० बहुत।
भूरपुर—वि० परिपूर्ण।
भूरसी—स्त्री० वह दक्षिणा जो विवाह आदि के अवसर पर उपस्थित ब्राह्मणों में बाँटी जाती है ।
भूरा—वि० ख़ाकी । धूमिल ।
भूरि—वि० बहुत ।
भूरिमाय—पु० सियार, गीदड़
भूरिशः—क्रि०वि० बहुतबार।
भूरिश्रवा—पु० यशस्वी। महाभारत काल के एक राजा ।
भूरुह—पु० वृक्ष ।
भूर्ज—पु० भोजपत्र का वृक्ष ।
भूर्जपत्र—पु० भोजपत्र ।
भूल—स्त्री० ग़लती ।
भूलना—सक्रि० विस्मृत-करना । ग़लती करना ।
भूलभुलैयाँ—स्त्री० भ्रम में डालने वाला चक्करदार घर
भूलोक—पु० संसार ।
भूवा—पु० रुई ।
भूषण—पु० ज़ेवर । [सँवारना
भूषना—सक्रि० सजाना ।
भूषा—स्त्री० गहना । सजावट।
भूषित—वि० सजाया हुआ ।
भूष्णु—वि० होने के स्वभाव वाला । [रियासत ।
भू-संपत्ति—स्त्री० अचलसंपत्ति,
भूसना—अक्रि० भौंकना ।
भूसा—पु० भुस ।
भूसी—स्त्री० चोकर ।
भूसुर—पु० ब्राह्मण ।
भृंग—पु० भौंरा । एक पक्षी।
भृंगराज—पु० भँगरैया
भृंगी—पु० शिवगण विशेष । स्त्री० भ्रमरी ।
भृकुटी—स्त्री० भौंह ।
भृगु—पु० एक मुनि । शुक्राचार्य । शंकर । [परशुराम।
भृगुनाथ, भृगुराम—पु०
भृगुरेखा—स्त्री० विष्णु-छाती पर भृगु मुनि का पद-चिह्न।
भृत—वि० पाला हुआ । पु० नौकर । [वेतन । पोषण ।
भृति—स्त्री० नौकरी ।
भृतभुक्—पु० नौकर ।
भृत्य—पु० नौकर । [वृत्ति ।
भृत्या—स्त्री० नौकरानी ।
भृश—क्रि० वि० अत्यधिक।
भृष्ट—वि० भुँजा हुआ ।
भेंट—स्त्री० मुलाकात । उपहार
भेंटना—सक्रि० मिलना । गले लगाना ।
भेक७—पु० मेढक । [करना।
भेजना—सक्रि० रवाना।
भेजा—पु० सिर के भीतर का गूदा । मेढक ।
भेड़, भेड़ी—स्त्री० पशुविशेष
भेड़ा—पु० नर भेड़ । [पशु ।
भेड़िया—पु० एक मांसाहारी-
भेड़ियाधसान—पु० देखा-देखी करना ।
भेड़िहर—पु० गड़रिया ।
भेद—पु० रहस्य । फूट । क़िस्म । भेदने की क्रिया ।
भेदक१४—वि० छेदने वाला ।
भेदन—पु० छेदना । तोड़ना।
भेदना—सक्रि० छेदना ।
भेदबुद्धि—स्त्री० फूट ।
भेदभाव—पु० अन्तर ।
भेदित—वि० चीरा हुआ।
भेदिया—पु० जासूस ।
भेदीसार—पु० बरमा ।
भेदू—पु० भेदिया ।
भेद्य—वि० भेदने-योग्य ।
भेरी—स्त्री० नगाड़ा ।
भेरीघर—पु० नक़्क़ारख़ाना।
भेली—स्त्री० गुड़ की बट्टी ।

भेव—पु० भेद।
भेष—पु० पहनावा।
भेषज—पु० दवा।
भैंस—स्त्री० दूध देने वाला एक पशु।
भैंसा—पु० नर भैंस।
भैक्ष—वि० भिक्षा का ढेर।
भैक्ष्य—पु० भीख। [बहिन।
भैन, भैना, भैनी—स्त्री०
भैया—पु० भाई।
भैरव—वि० भयंकर। पु० शिवगण के नायक।
भैरवी—स्त्री० चामुंडा। एक रागिनी।
भैरवीचक्र—पु० देवी पूजन के लिए एकत्रित तांत्रिकों, वाममार्गियों का झुंड।
भैषज्य—पु० दवा।
भोंकना—सक्रि० घुसेड़ना। भौं भौं करना।
भोंचाल—पु० भूकंप।
भोंड़ा७—वि० भद्दा। गँवार।
भोंदू—वि० मूर्ख।
भोंपू—पु० एक बाजा।
भोकस—पु० राक्षस।
भोक्तव्य—वि० खाने योग्य।
भोक्ता१०—वि०भोगने वाला।
भोग—पु० सुख दुःख की प्राप्ति। आनन्द। नैवेद्य।
भोगना—अक्रि० भुगतना।
भोगबंधक—पु० एक प्रकार का रेहन जिसमें ब्याज न लेकर जायदाद की आय लेते हैं। [नगरी। गंगा।
भोगवती—स्त्री० सर्पों की-
भोगविलास—पु० सुख और चैन।
भोगिनी—स्त्री० पटरानी के अतिरिक्त राजा की अन्य स्त्री।
भोगी—पु० साँप। वि० भोगने वाला। सुखी।
भोग्य—वि० भोगने-योग्य।
भोग्या—स्त्री० वेश्या।
भोज१२—पु० जेवनार। दावत। प्राचीन काल के एक संस्कृत प्रेमी राजा।
भोजन—पु० खाद्यपदार्थ।
भोजनभट्ट—पु० पेटू।
भोजनालय—पु० होटल।
भोजपत्र—पु० एक वृक्ष की छाल। [कराने वाला।
भोजयिता१०—वि० भोजन-
भोजविद्या—स्त्री० जादूगरी।
भोज्य—वि० खाने योग्य। पु० भोजन-सामग्री।
भोटा—वि० सीधा-सादा, भोला।
भोंड़ल—पु० अबरक।
भोथरा—वि० कुंठित।
भोना—अक्रि० रंग जाना।
भोर—पु० सबेरा।
भोराई—स्त्री० भोलापन।
भोराना—सक्रि०भुलावा देना।
भोला१—वि० सरल।
भोलानाथ—पु० महादेव।
भोलाभाला—वि०सीधासादा
भोहरा—पु० खोह।
भौं, भौंह—स्त्री० भृकुटि।
भौंड़ा—वि० कुरूप, भद्दा।
भौंर—पु० पानी का चक्र।
भौंरा—पु० भ्रमर। एक खिलौना।
भौंराना—सक्रि० घुमाना।
भौंरी—स्त्री०बालों का चक्र। परिक्रमा। जल-चक्र।
भौंह—स्त्री० भृकुटि।
भौंहरा—पु० तहखाना।
भौगोलिक—वि० भूगोल-संबंधी।
भौचक—वि० चकित।
भौजलि—स्त्री० भवजाल।
भौजाई—स्त्री० भाभी,भौजी
भौतिक—वि०पंचभूत-संबंधी। दैहिक। [संबंधी ज्ञान।
भौतिकविद्या—स्त्री० प्रेत-
भौन—पु० भवन।
भौना—अक्रि० घूमना।
भौम—वि० पृथ्वी-संबंधी। पृथ्वी से उत्पन्न। पु० मङ्गलग्रह।
भौमवार—पु० मंगलवार।
भौमिक—पु० ज़मींदार। वि० भूमि-संबंधी। [कारी।
भौरिक—पु०सोने का अधि-
भ्रंश—वि० भ्रष्ट। पु० अधःपतन, नाश।
भ्रंकुस—पु० स्त्री-वेष-धारी नाचने वाला।
भ्रकुटि, भ्रकुटी—स्त्री०भौंह। क्रोध सहित भौंह चढ़ाना।
भ्रम—पु० धोखा। मिथ्या-ज्ञान।
भ्रमण८—पु० घूमना।
भ्रमना९—अक्रि० घूमना। भ्रम में पड़ना।
भ्रमरक—पु० ललाट पर झुके हुए बाल।

भ्रममूलक—वि० भ्रम-जनित।
भ्रमर—पु० भौंरा।
भ्रमवात—पु० बवंडर।
भ्रमात्मक—वि० संदिग्ध।
भ्रमित—वि० भ्रांत।
भ्रमी—वि० चकित।
भ्रष्ट—वि० पतित। खराब।
भ्रष्टयव—पु० भुना हुआ जौ।
भ्रांत—वि० भ्रम में पड़ा।
भ्रांति—स्त्री० भ्रम मोह।
भ्राजना—अक्रि० शोभित होना।
भ्राजमान—वि० शोभायमान।
भ्राजिष्णु—वि० शोभाशाली।
भ्रात, भ्राता—पु० भाई।
भ्रातृज—पु० भतीजा।
भ्रातृजाया—स्त्री० भौजाई।
भ्रातृत्व—पु० बधुत्व।
भ्रातृभाव—पु० भाईचारा।
भ्रातृव्य४—पु० भतीजा।
भ्रात्रीय—पु० भतीजा।
भ्रामक१४—वि० भ्रम में डालने वाला। [वाला।
भ्राम्यमान४—वि० घूमने-
भ्राश—पु० प्रकाश।
भ्राष्ट्र—पु० भाड़।
भ्रू, भ्रूव—पु० भौंह।
भ्रूण—पु० गर्भ। बहुत छोटा बच्चा।
भ्रूणहा—पु० गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला।
भ्रूभंग, भ्रूविक्षेप—पु० त्योरी चढ़ाना।
भ्रेष—पु० अन्याय।

२५—म

मंकुर—पु० आईना।
मंग—स्त्री० माँग।
मंगता, मंगन—पु० भिखारी।
मँगनी—स्त्री० माँगना। उधार। [भौमवार।
मंगल—पु० शुभ। एक ग्रह।
मंगलपाठक—पु० वंदीजन।
मंगलप्रदा—स्त्री० हल्दी।
मंगलसूत्र—पु० देवता के प्रसाद-स्वरूप कलाई में बाँधा गया धागा।
मंगला—स्त्री० पार्वती। हल्दी।
मंगलाचरण—पु० कार्यारंभ में मंगलार्थ लिखा या पढ़ा जाने वाला पद्य।
मंगलाचार—पु० बधावा। आनंद के गीत।
मंगलामुखी—स्त्री० रंडी।
मंगली—वि० जिसकी जन्म-कुंडली में मंगल ४,८ या १२वें स्थान में हों।
मंगल्य—पु० चन्दन। सोना। वि० सुन्दर।
मंगल्यक—पु० मसूर।
मंगवाना—सक्रि० माँगना।
मँगेतर—वि० जिसकी सगाई हो चुकी हो।
मंगोल—पु० मध्य-एशिया की एक जाति। चबूतरा।
मंच, मंचक—पु० उच्चासन।
मंजन—पु० दाँत साफ़ करने को बुकना। स्नान।
मँजना९—अक्रि० अभ्यास होना। माँजा जाना।
मंजरी—स्त्री० बौर। कोंपल। तुलसी। मोती।
मंजरीक—पु० अशोक।
मंजार७—पु० बिलाव।
मंजिका—स्त्री० वेश्या।
मंज़िल—स्त्री० (अ०) पड़ाव। मरातिब।
मंजिष्ठा—स्त्री० मजीठ।
मंजीर—पु० घुँघरू, नूपुर।
मंजु, मंजुल—वि० सुन्दर।
मंजुघोषा—स्त्री० कोयल।
मंज़ूर२—वि० (अ०) स्वीकृत।
मंजूषा—स्त्री० पिटारी, पेटी।
मँझार—क्रि०वि० बीच में।
मँझियाना—सक्रि० घुसकर नदी पार करना।
मंड—पु० माँड़। वि० मंडित।
मंडन—पु० सजावट, आभूषण। समर्थन करना। विवाह। मुकुट।

मंडप७—पु० मँडवा। तृण आदि का चँदोवा।
मँडराना—अक्रि० चारों ओर चक्कर देना। [समूह।
मंडल—पु० घेरा। गोलाई।
मंडलक—पु० सफ़ेद कोढ़।
मंडलनायक—पु० साधुओं के अखाड़े का आचार्य।
मंडलाकार—वि० गोल।
मंडलाकृति—स्त्री० गोलाई।
मंडलाग्र—पु० तलवार।
मंडली—स्त्री० सभा। गोष्ठी। झुण्ड।
मंडलीक—पु० मंडल का स्वामी। दास लाख की आय वाला। [नायक।
मंडलीश्वर—पु० दे० 'मंडल
मंडलेश्वर—पु० चार हज़ार कोस तक पृथ्वी के जिस राजा का नाम हो।
मंडार—पु० टोकरा। गड्ढा।
मंडित—वि० सुसज्जित। छाया हुआ।
मंडी—स्त्री० बाज़ार।
मंडील, मंदील—पु० कामदार कपड़े की पगड़ी।
मंडूक—पु० मेंढक।
मंडूर—पु० लोहे का मल।
मंतक़—पु० (अ०) तर्कशास्त्र।
मंतव्य—पु० विचार। वि० मानने-योग्य।
मंत्र—पु० प्रभावोत्पादक शब्द या वाक्य। वैदिक ऋचा। युक्ति। [रचयिता।
मंत्रकार—पु० मंत्र का
मंत्रगूढ़—पु० भेदिया।
मंत्रज्ञ—पु० तांत्रिक।
मंत्रणा—स्त्री० सलाह। मत।
मंत्रविद्या—स्त्री० तंत्र-विद्या।
मंत्रसिद्ध—वि० जिसने मंत्र को सिद्ध कर लिया हो।
मंत्रित—वि० मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ।
मंत्रित्व—पु० मंत्री का पद या कार्य।
मंत्री५—पु० वज़ीर।
मंत्रैला—पु० मंत्र का ज्ञाता।
मंथज—पु० मक्खन।
मंथन—पु० बिलोना।
मंथर—वि० सुस्त। पु० मथानी। दूत। रोक।
मंथरा—स्त्री० कैकेयी की दासी।
मंथिनी—स्त्री० दही मथने की मटकी। [नीच।
मंद३—वि० धीमा। सुस्त।
मंदक—वि० नासमझ।
मंदभाग्य—वि० अभागा।
मंदर—पु० एक पर्वत। मदार-वृक्ष।
मंदा—वि० धीमा। सस्ता।
मंदाकिनी—स्त्री० आकाश गंगा, गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है।
मंदाग्नि—स्त्री० अपच रोग।
मंदाना—अक्रि० मंद पड़ना।
मंदार—पु० एक देव वृक्ष। आक।
मंदिर—पु० देवालय। घर।
मंदिरा—स्त्री० अस्तबल।
मंद्र—पु० गंभीर घोष। वि० सुन्दर।
मंशा—स्त्री० इच्छा। आशय।
मंसब—पु० (अ०) पद। अधिकार।
मंसबदार—पु० (अ०) अधिकारी।
मंसूख़—वि० (अ०) रद्द।
मंसूबा—पु० उपाय। इरादा।
मआश—स्त्री० (अ०) जीविका।
मउनी—स्त्री० छोटी डलिया।
मकड़ी—स्त्री० जाला बुनने वाला एक कीड़ा।
मकतब—पु० (अ०) पाठशाला
मक़तल—पु० (अ०) वध-स्थान। प्रेमिका का क्रीड़ा-क्षेत्र। [हुआ, पत्र।
मकतूब—वि० (अ०) लिखा-
मकतूब-इलह—पु० (अ०) पत्र पाने वाला।
मक़तूल—वि० (अ०) क़त्ल किया गया। प्रेमी।
मक़दूर—पु० (अ०) शक्ति, वश। [रक्खा हुआ।
मक़फूल—वि० (अ०) रेहन-
मक़बरा—पु० (अ०) समाधि-मंदिर। [क़ब्र।
मक़बूज़ा—वि० (अ०) अधि-
मक़बूल—वि० (अ०) कबूल-किया हुआ। प्रिय। पु० प्रेमी। [भौंरा। कोकिल।
मकरंद—पु० मधु। पुष्परस।
मकर—पु० दसवीं राशि। माघमास। मछली। मगर। नख़रा। [कामदेव।
मकरकेतन, मकरध्वज—पु०
मकरा—पु० एक कदन्न। मकड़ा। [आकृति वाला।
मकराकृत—वि० मछली की-
मकराज—स्त्री० क़ैंची।
मकरालय—पु० समुद्र।

मकराश्व—पु० वरुण।
मक़रूज़–वि०(अ०) क़र्ज़दार।
मक़लूब—वि० (अ०) उलटा-हुआ।
मक़सद–पु०(अ०) अभिप्राय।
मक़सूद–वि०(अ०) अभीप्सित
मक़सूम—वि० (अ०) भक्त। पु० भाग्य।
मकान—पु०(अ०) घर।
मकु—क्रि०वि० चाहे, शायद
मकुट—पु० मुकुट,किरीट।
मकुना—पु०बिना दाँत का हाथी।
मकुर—पु० दर्पण।
मक़ूला—पु० (अ०) उक्ति, मसला, कहावत।
मकोइया—वि० मकोय के रंग का।
मकोड़ा—पु० छोटा कीड़ा।
मकोय—स्त्री० रसभरी।
मक्कर—पु०धोखा। नख़रा।
मक्का–पु०मकई(अन्न)।(अ०) मुसलमानों का प्रधान-तीर्थ। [ढोंगी,फ़रेबी।
मक्कार२–वि०(अ०) कपटी,
मक्खन—पु० नवनीत।
मक्खीचूस—वि० अधिक कंजूस। [व्यक्ति।
मक्खीमार—पु० घृणित-
मक्र—पु०(अ०) फ़रेब, छल
मक्षिका—स्त्री० मक्खी।
मख—पु० यज्ञ।
मख़ज़न—पु०(अ०)ख़ज़ाना।
मख़तूलन—पु०कालारेशम।
मख़दूम—वि० (अ०) सेव्य। स्वामी, मालिक।

मख़मलन—स्त्री०(अ०) एक रेशमी-कपड़ा।
मख़मूर—वि० (अ०) मतवाला, नशे में चूर।
मख़लूक़—स्त्री०(अ०) सृष्टि। वि० रचा हुआ।
मख़लूत—वि०(अ०)मिश्रित।
मखशाला—स्त्री० यज्ञशाला।
मख़सूस—वि०(अ०) विशेष रीति से पृथक् किया हुआ, विशिष्ट।
मखाना—पु० एक मेवा।
मखौल—पु० हँसी मज़ाक़।
मग—पु० रास्ता। [मँगी।
मग़ज़—पु० (अ०) दिमाग़।
मग़ज़पच्ची–स्त्री०सिर खपाना
मग़ज़ी—स्त्री० (अ०) पट्टी, गोट।
मगदल—पु०लड्डू विशेष।
मगध—पु० भाट। दक्षिणी-बिहार प्रान्त।
मगन,मग्न—वि० प्रसन्न। लीन। डूबा हुआ।
मग़फ़ूर—वि० (अ०) जो मर चुका हो।
मग़मूम—वि०(अ०)रंजीदा।
मगर—पु०घड़ियाल। अव्य० (अ०) लेकिन।
मगरमच्छ—पु० बड़ी-मछली। नाका।
मग़रिबन–पु०(अ०)पश्चिम।
मग़रूर२–वि० (अ०)घमंडी।
मग़लूब—वि०(अ०)पराजित।
मगहन, मगहर—पु० मगध-देश।
मघवा—पु० इन्द्र।

मघा—पु०दशवाँ नक्षत्र।
मघौना७—पु० इन्द्र।
मचकना—सक्रि० दबाना।
मचका–पु० धक्का। झोंका।
मचकाना—सक्रि० झुकाना।
मचना९—अक्रि० होना। फैलना।
मचर्चिका–स्त्री०प्रशस्त,अच्छा
मचलना–अक्रि० हठ करना।
मचला—वि० हठी।
मचलाई—स्त्री० हठ।
मचलाना—अक्रि० मतली-आना।
मचान—पु० ऊँची बैठक,मंच
मच्छ—पु० बड़ी मछली।
मच्छर—पु० कीड़ा विशेष।
मछली—स्त्री०एक जलजंतु।
मछुआ—पु० मल्लाह।
मज़कूर—वि० (फ़ा०) जिक्र-किया हुआ। [पूर्वोक्त।
मज़कूरवाला—वि० (फ़ा०)
मज़कूरात—पु० (फ़ा०) वह लगान जो गाँव के ख़र्च में आता है।
मज़कूरी—पु०(फ़ा०) सम्मन तामील करने वाला कर्मचारी।
मज़दूर२—पु० (फ़ा०) श्रमी, कुली।
मजनूं—पु० (अ०) पागल, दीवाना, प्रेमी। लैला के प्रेमी क़ैस का उपनाम।
मज़बूत२—वि० (अ०) दृढ़।
मजबूर२—वि०(अ०)लाचार
मजबूरन्—क्रि० वि० (अ०) लाचार होकर।
मजमा—पु०(अ०) भीड़।

मजमुआ—पु०(अ०)योगफल
मजमूई—वि० (अ०)सामूहिक, सब। [लेख।
मज़मून—पु० (अ०) विषय·
मज़रूब—वि० (अ०) चोट· पाया हुआ।
मजरूह—वि०(अ०) घायल।
मजलिसदः—स्त्री० (अ०) महफ़िल, सभा। [रङ्गशाला।
मजलिसख़ाना—पु० (अ०)
मज़लूम—वि० (अ०) जिस पर ज़ुल्म किया गया हो।
मज़हब—पु० (अ०) धर्म। पंथ। [आनन्द। लज्ज़त।
मज़ा—पु० (फ़ा०) स्वाद।
मज़ाक़—पु० (अ०) हँसी। रुचि।
मज़ाक़न्—क्रि० वि० (अ०) मज़ाक़ के तौर पर।
मज़ाक़िया—वि० (अ०) मज़ाक़ करने वाला।
मजाज़—पु०(अ०)अधिकार।
मजाज़ी—वि०(अ०)कल्पित। लौकिक।
मज़ामीन—पु० (अ०) बहु० 'मज़मून' का। [समाधि।
मज़ार—पु० (अ०) क़ब्र,
मजाल—स्त्री०(अ०) शक्ति।
मज़ाहिब—पु० (अ०) बहु० 'मज़हब' का।
मजीठी—वि० लाल।
मजीत—वि० निकम्मा।
मजीद—वि० (अ०) बड़ा, पूज्य।
मज़ीद—पु०(अ०)ज़्यादती।
मजीरा—पु० एकबाजा।जोड़ी
मजेज—पु० गर्व। हठ।
मज़ेदार२—वि० (फ़ा०) स्वादिष्ट।
मज्ज, मज्जा—स्त्री० हड्डी के भीतर का गूदा।
मज्जन—पु०नहाना। [धारा
मझधार—स्त्री०नदीको मध्य·
मझला७—वि० बीच का।
मझाना—अक्रि०प्रविष्टहोना
मझार—क्रि०वि०बीच में।
मझियारा—वि०बीच का।
मझोला—वि० मझला। औसत क़द का।
मझोली—स्त्री० बहली।
मट—पु० मटका।
मटकना९—अक्रि० नखरे से चलना या हिलना।
मटकनि—स्त्री० मटकने की क्रिया, मटक।
मटका७—पु० गगरा।
मटकीला७—वि० मटकने वाला।
मटमैला७—वि० धुँधला।
मटर—पु० एक अनाज।
मटरगश्त२—पु०व्यर्थ घूमना
मटरी—स्त्री० मटर।
मटियामसान—वि०बरबाद।
मटियामेंट—वि०तहस नहस।
मटियाला—वि० मटमैला।
मटुक—पु० मुकुट।
मट्ठर१—वि०सुस्त।
मट्ठा—पु० छाछ।
मठ७—पु० साधुसदन।
मठधारी, मठाधीश—पु० मठ का स्वामी।
मठोठा—पु०कुएँ की जगत।
मडवा—पु० मंडप।
मड़हट—पु०मरघट। [वाला।
मढ़—वि० जल्दी न हटने·
मढ़ना९—सक्रि० लपेटना। किसी के गले लगाना।
मढ़वाना—सक्रि० मढ़ने का काम करवाना। [या मज़दूरी।
मढ़ाई—स्त्री०मढ़ने की क्रिया·
मढ़ी, मड़ैया—स्त्री०झोंपड़ी।
मणि—स्त्री० रत्न विशेष।
मणिक—पु०मटका, माट।
मणिधर—पु० साँप।
मणिबंध—पु० कलाई।
मणिबीज—पु० अनार का वृक्ष।
मणियारा—पु० मणिवाला।
मणी—पु०सर्प। स्त्री० मणि
मतंग,मतंगज—पु० हाथी।
मतंगी—पु० गज-सवार।
मत—पु०सलाह। धर्म। क्रि० वि० नहीं। [वोटर।
मतदाता—पु०मत देने वाला,
मतन—पु० (अ०) मूलग्रंथ। पीठ। वि० पक्का।
मतना—अक्रि०सलाह करना
मतबा—पु० (अ०) छापाख़ाना। [छापा गया हो।
मतबूअ—वि० (अ०) जो·
मतब्ब—पु०(अ०) चिकित्सा· स्थान।
मतमतांतर—पु०अन्यमज़हब।
मतरूक—वि०(अ०) अलग· किया हुआ, त्यक्त।
मतलब—पु०(अ०)तात्पर्य।
मतली—स्त्री० क़ै होना।

मतलूब—वि० (अ०) तलब किया गया, अभीष्ट।
मतवाला७—वि० मस्त।
मता—पु० मत। उपदेश।
मतालिब—पु० (अ०) बहु० 'मतलब' का।
मति—स्त्री० समझ। अव्य० समान। [बुद्धिमान्।
मतिमंत, मतिमान्—वि०
मतिविभिन्नता—स्त्री० मुख्तलिफ़ राय होना।
मतिविभ्रम—पु० उन्माद।
मतिष्ठ—वि० अति चतुर।
मतीन—वि० (अ०) दृढ़, पक्का।
मतीरा—पु० तरबूज़।
मतेई—स्त्री० सौतेली माँ।
मतैक्य—पु० एक राय।
मत्कुण—पु० खटमल।
मत्त३—वि० मस्त। प्रमत्त।
मत्तकाशिनी—स्त्री० बहुत ही उत्तम स्त्री।
मत्सर—पु० डाह। क्रोध।
मत्सरता—स्त्री० डाह, जलन।
मत्स्य—पु० मछली। एक पुराण।
मत्स्यवेधन—पु० मछली पकड़ने का काँटा।
मत्स्याक्षी—स्त्री० ब्राह्मी।
मथना—सक्रि० बिलोना।
मथनियाँ, मथनी—स्त्री० दही बिलोने का डंडा या हाँड़ी।
मथवाह—पु० महावत। शिर की पीडा। [का डंडा।
मथानी—स्त्री० दही मथने
मथित—वि० मथा गया।
मथूल—पु० मस्तूल।
मद—पु० हर्ष। शराब। गर्व। नशा। हाथी के मस्तक का स्राव। कस्तूरी। स्त्री० (अ०) विभाग। खाता।
मदक—स्त्री० एक नशीली चीज़। [वाला।
मदकची—वि० मदक पीने-
मदकल—पु० मदांध हाथी।
मदगल—वि० मतवाला।
मदजल—पु० मस्त हाथी के मस्तक का स्राव
मदद—स्त्री० (अ०) सहायता।
मददगार—वि० सहायक।
मदन—पु० कामदेव।
मदनकदन—पु० शिव।
मदनगोपाल, मदनमोहन—पु० श्रीकृष्ण।
मदफ़न—पु० (अ०) क़ब्रिस्तान
मदनमस्त—पु० पुष्प विशेष।
मदनशलाका—स्त्री० कोकिल। मैना।
मदमत्त—वि० मतवाला।
मदर—पु० धावा।
मदरसा—पु० (अ०) स्कूल।
मद व जज़र—पु० (अ०) ज्वार और भाटा।
मदह—स्त्री० (अ०) प्रशंसा।
मदहोश—वि० (अ०) नशे में मस्त।
मदांध—वि० मतवाला।
मदाख़िलत—स्त्री० (अ०) प्रवेश। रोक। [दायिनी।
मदानि—वि० स्त्री मंगल-
मदार—पु० आक। हाथी।
मदारिस—पु० (अ०) बहु० 'मदरसा' का।
मदारी—पु० (अ०) बाज़ीगर।
मदिर—वि० उन्मत्त।
मदिरा—स्त्री० शराब।
मदीय—वि० मेरा।
मदीला—वि० नशीला।
मदोत्कट—वि० मदोन्मत्त।
मद्गु—पु० पानी के भीतर चलने वाली नाव, पनडुब्बी (मद्गुःअभ्यधावत—मज्जन् गच्छतीति—दशकुमार चरित) पक्षी विशेष।
मद्दति—स्त्री० प्रशंसा।
मद्धे—अव्य० बीच में। बाबत
मद्य—पु० शराब।
मद्यप४—वि० शराबी।
मधु—पु० शहद। बसंत। मदिरा। चैत्र। पुष्परस। वि० मीठा।
मधुऋतु—पु० वसंत।
मधुकंठ—पु० कोयल।
मधुक, मधूक—पु० महुए का वृक्ष या फूल।
मधुकर, मधुराज—पु० भौंरा
मधुकरी—स्त्री० रोटी, दाल आदि की भिक्षा। भ्रमरी। बाटी। [का छत्ता।
मधुकोष, मधुचक्र—पु० शहद-
मधुक्रम—पु० मदिरा पीने का समय।
मधुच्छदा—स्त्री० मयूर शिखा
मधुद्रुम—पु० महुआ
मधुप—पु० भौंरा। उद्धव।
मधुपति—पु० श्रीकृष्ण।
मधुपर्क—पु० शहद, घृत

और दही का मिश्रण।
मधुपुरी—स्त्री० मथुरा।
मधुपुष्प—पु० महुआ।
मधुमक्षिका—स्त्री० शहद की मक्खी।
मधुमय—वि०स्त्री०सुन्दरी।
मधुमल—पु०मोम। [लता।
मधुमालती—स्त्री० मालती-
मधुमास—पु० चैत्र मास।
मधुमेह—पु० प्रमेह रोग।
मधुर३—वि० सुन्दर। मीठा
मधुरस—पु०ईख। दाख।
मधुरा, मधुरिका-स्त्री०सौंफ़।
मधुराज—पु० भौंरा।
मधुरान्न—पु० मिठाई।
मधुरिपु—पु०श्रीकृष्ण, विष्णु
मधुरिमा—स्त्री० मिठास। सौंदर्य्य।
मधुरी-स्त्री०मिठास। सुन्दरता
मधुवन—पु० मथुरा का एक बन।
मधुव्रत—पु० भौंरा।
मधुष्ठील—पु० महुआ।
मधुसूदन—पु० श्रीकृष्ण।
मधूकरी—स्त्री०रोटी। भ्रमरी
मध्य३—पु० बीच।
मध्यगत—वि० बीच का।
मध्यम४—वि०बीच का।
मध्यमपुरुष—पु०जिससे बात कही जाय।
मध्यमा—स्त्री० बीच की उँगली। वह नायिका जो अपने पति के गुण, दोष के अनुसार उसका मानापमान करे।
मध्यवर्त्ती५—वि०बीच का।
मध्यस्थ३—वि०बीच-बिचाव-करने वाला। तटस्थ।
मध्यांतर पु०बीच का समय।
मध्या-स्त्री० बीच की उँगली। प्रथम रजोवती स्त्री।
मध्याह्न—पु० दोपहर।
मध्ये—क्रि० वि०विषय में।
मन—पु० चित्त। इच्छा। एक तौल। सर्पमणि।
मनकना—अक्रि० डिगना।
मनकरा७—वि० चमकीला।
मनका—स्त्री०माला का दाना
मनक़ूल—वि० (अ०) नक़ल किया गया।
मनक़ूला—वि० (अ०) जगम, चल। [हिता।
मनक़ूहा—वि०(अ०) विवा-
मनकेज़ा—पु० फल। बुकौवल।
मनगढ़ंत—वि०कपोलकल्पित
मनचला७—वि०रसिक साहसी
मनचाहा, मनचीता, मन-भाया—वि० दिल-पसंद।
मनज़र—पु० (अ०) दृश्य।
मनजात—पु० कामदेव।
मनन—पु० चिन्तन।
मननशील४—वि० मनन-करने वाला।
मनभावन४—वि० प्रिय।
मनमति—वि० स्वच्छंद।
मनमथ—पु० कामदेव।
मनमाना७-वि०मनोनुकूल।
मनमुटाव—पु० रंजिश।
मनमोदक-पु०मन का लड्डू।
मनमोहन—पु०श्रीकृष्ण। ७ वि० मन को मोहने वाला।
मनमौजी—वि० मन का काम करने वाला।
मनरोचन—वि० सुन्दर।
मनवाना—सक्रि० मनाने का काम अन्य से कराना।
मनसब—पु० (अ०) पद, दर्जा। [ओहदेदार।
मनसबदार—पु० (अ०)
मनसा—स्त्री० इच्छा।
मनसिज—पु०कामदेव।
मनसूबा—पु०(अ०) इरादा। युक्ति।
मनसेधू—पु० पुरुष।
मनस्कार—पु० किसी वस्तु में चित्त का तत्पर हो जाना।
मनस्ताप-पु०मानसिक पीड़ा।
मनस्वी५—पु० उच्चविचार-वाला।
मनहर—वि० चित्ताकर्षक।
मनहरण—वि० मनोहर। पु० एक छन्द।
मनहुँ—अव्य० मानों।
मनहूस—वि० (अ०) अ-शुभ, बुरा।
मना—वि० (अ०) वर्जित।
मनाई—स्त्री० निषेध।
मनाक्—वि० थोड़ा।
मनादी—स्त्री० ढिंढोरा।
मनाना—सक्रि० रूठे हुए को प्रसन्न करना। प्रार्थना-करना।
मनाही—स्त्री० निषेध।
मनित—वि० जाना गया, विदित।
मनिया—स्त्री० गुरिया।
मनियारा७—वि०सुहावना।

मनिहार७—पु० चूड़ी बेचने-
वाला। [मणि । वीर्य ।
मनी—स्त्री० अभिमान ।
मनीआर्डर—पु० (अं०)
डाक द्वारा रुपया भेजना ।
मनीबैग—पु० (अं०) रुपये-
पैसे रखने की थैली ।
मनीषा—स्त्री० बुद्धि ।
मनीषित—वि० मनचाहा ।
मनीषी५—वि० बुद्धिमान् ।
मनु—अव्य० मानों । पु०
ब्रह्मा के एक पुत्र ।
मनुज, मनुष्य—पु०आदमी ।
मनुआद—पु० राक्षस ।
मनुष्यगणना—स्त्री० मर्दुम-
शुमारी ।
मनुष्यता—स्त्री०, मनुष्यत्व—
पु० इन्सानियत । भद्रता ।
मनुष्यधर्मा—पु० कुबेर ।
मनुहार—स्त्री० प्रार्थना ।
आदर । ख़ुशामद ।
मनोकामना—स्त्री० इच्छा ।
मनोगत—वि०मन में स्थित ।
मनोज—पु० कामदेव ।
मनोज्ञ३—वि० सुन्दर ।
मनोनिग्रह—पु० मन को
वश में रखना । [पसंद ।
मनोनीत—वि० चुना हुआ ।
मनोबल—पु० मानसिक-
शक्ति, हिम्मत ।
मनोभव—पु० कामदेव ।
मनोभूत—पु० कामदेव ।
मनोयोग-पु०चित्तकी एकाग्रता ।
मनोरंजक—वि० मन को
आनन्द देने वाला ।
मनोरंजन-पु०दिल-बहलाव ।

मनोरथ—पु० इच्छा ।
मनोरम—वि० सुन्दर ।
मनोरा—पु० गोबर के बने
चित्र । [कल्पना ।
मनोराज—पु० मानसिक-
मनोवांछा—स्त्री० इच्छा ।
मनोवांछित—वि० इच्छित ।
मनोविकार—पु० मन के
काम, क्रोध आदि विकार ।
मनोविज्ञान—पु० वह शास्त्र
जिसमें चित्त की वृत्तियों
का विवेचन हो । [झुकाव ।
मनोवृत्ति—स्त्री० मन का-
मनोवेग—पु० मनोविकार ।
मनोहत—वि० व्याकुल ।
मनोहर३—वि० सुन्दर ।
मनोहारी५—वि० मन को
मुग्ध करने वाला ।
मनौती—स्त्री० विनती ।
मन्तु—पु० अपराध ।
मन्नत—स्त्री० मनौती ।
मन्मथ—पु० कामदेव ।
मन्यु—पु० क्रोध । गर्व ।
शोक ।
मन्वंतर—पु०ब्रह्मा के एक
दिन का चौदहवाँ हिस्सा ।
मफ़ऊल—पु० (अ०) कर्म-
कारक । वह जिसके साथ
कोई फ़ेल किया जाय ।
मफ़रूज़—वि० (अ०) फ़र्ज़-
किया हुआ । [हुआ ।
मफ़रूर—वि० (अ०) भागा-
मफ़लर—पु०(अं०) गलेबंद ।
मम—सर्व० मेरा ।
ममता-स्त्री०,ममत्व-पु० मोह ।
ममनून—वि०(अ०) कृतज्ञ ।

ममारखी—स्त्री० बधावा ।
ममिया—वि० मामा संबंधी ।
ममीरा—पु० एक पौधे की
जड़ जिससे सुरमा बनता है
मयंक—पु० चन्द्रमा ।
मयंद—पु० सिंह ।
मय७—प्रत्य० सहित । वि०
निर्मित । पु० ऊँट । एक दैत्य
मयगल—पु० मत्त हाथी ।
मयन—पु० कामदेव ।
मयमंत, मयमत्ता—वि०
मतवाला ।
मयसुता—स्त्री० मंदोदरी ।
मयस्सर—वि० (अ०) प्राप्त ।
सुलभ ।
मया—स्त्री० माया, मोह ।
कृपा । प्रीति । जीवन ।
संसार ।
मयार७—वि० कृपालु ।
मयारी—स्त्री० धरन, कड़ी ।
मयु—पु० किन्नर ।
मयूख—पु० किरण । शोभा ।
मयूर७—पु० मोर ।
मरक—पु० मृत्यु । स्त्री०
बढ़ावा । इशारा ।
मरंद—पु० मकरंद ।
मरकज़—पु० (अ०) केन्द्र ।
मरकत—पु० पन्ना रत्न ।
मरकना९—अक्रि० दबकर-
टूटना । [(पशु) ।
मरकहा—वि० मारने वाला-
मरक़ूम—वि०(अ०) लिखित ।
मरगजा७—वि० मर्दित ।
मरगूब—वि० (अ०) रुचि-
कर, प्रिय ।
मरघट—पु० श्मशान ।

मरचेंट—पु०(अं०)व्यापारी।
मरजिया—पु० ग़ोताख़ोर। वि० अधमरा।
मरज़ी—स्त्री० (अ०) इच्छा, ख़ुशी। आज्ञा।
मरण—पु० मौत। [बार।
मरतबा—पु० (अ०) पद।
मरतूब—वि० (अ०) नम, गोला।
मरदना—अक्रि० तेल आदि मलना। [साहस।
मरदानगी—स्त्री० (फ़ा०)
मरदाना—वि० (फ़ा०) पुरुष संबंधी। वीरोचित।
मरदूद—वि० (अ०) तुच्छ। त्यक्त।
मरना९—अक्रि० पंचत्व को प्राप्त होना, नष्ट होना।
मरफ़ा—पु० (फ़ा०) ढोल।
मरम८—पु० दे० 'मर्म'।
मरमर—पु०एक सफ़ेद पत्थर
मरमराना—अक्रि० चरचराना
मरम्मत—स्त्री० (अ०) दुरुस्ती, जीर्णोद्धार [शाक।
मरसा—पु० एक प्रकार का
मरसिया—पु० (अ०) शोकसूचक कविता।
मरहबा—अव्य० शाबाश। बहुत ख़ूब। [लेप।
मरहम—पु० (अ०) घाव का
मरहला—पु० (अ०) पड़ाव। मंज़िल। दर्जा।
मरहून—वि० (अ०) रेहन किया हुआ। [स्वर्गीय।
मरहूम—वि० (अ०) मृत,
मरातिब—पु० (अ०)दरजा। खंड, तल्ला।
मरायल—वि०मार खाने वाला
मरिंद—पु० भौंरा।
मरार—पु० खलिहान।
मराल७—पु०हंस। बादल।
मरियम—स्त्री० (अ०) कुमारी। ईसा-मसीह की माँ।
मरियल—वि० दुर्बल।
मरी—स्त्री० महामारी।
मरीच—स्त्री० मिर्च।
मरीचि—पु० एक ऋषि। स्त्री० किरण।
मरीचिका—स्त्री० मृगतृष्णा।
मरीचिमाली, मरीची—पु० सूर्य्य। चन्द्रमा।
मरीज़—वि० (अ०) रोगी।
मरु—पु० रेगिस्तान।
मरुआ—पु० छाजन के ऊपर की लकड़ी। [हनुमान्।
मरुत्—पु० वायु। देवता।
मरुत्वान्—पु० इन्द्र।
मरुभूमि—स्त्री० रेगिस्तान।
मरुस्थल—पु० मरुभूमि।
मरू—वि० कठिन।
मरूक—पु० मोर। हिरन-विशेष।
मरोड—पु० ऐंठन। [ऐंठना।
मरोड़ना—सक्रि० मसलना।
मर्क—पु० हवा। शरीर। बन्दर।
मर्कट७—पु० बन्दर।
मर्ग—पु० (फ़ा०) मृत्यु।
मर्ग़ज़ार—पु०हरा-भरा मैदान
मर्ज़—पु० (अ०) रोग।
मर्ज़ी—स्त्री० (अ०) इच्छा।
मर्तबा—पु० (अ०) पदवी। दफ़ा, बार।
मर्तबान—पु० (अ०) रोग़न लगा हुआ मिट्टी का एक बर्त्तन।
मर्त्य—पु० मनुष्य। भूलोक।
मर्द—पु० (फ़ा०) पुरुष। साहसी पुरुष।
मर्दन—पु० मलना। कुचलना। वि० नाशक।
मर्दल—पु० मृदंग के समान वाद्य विशेष। [चित।
मर्दाना—वि० (फ़ा०) वीरो-
मर्दुम—पु० (फ़ा०) मनुष्य।
मर्दुम-आज़ारी—स्त्री० (फ़ा०) अत्याचार। [संख्या।
मर्दुमशुमारी—स्त्री० जन-
मर्दित—वि० मर्दन किया गया।
मर्दुमा—स्त्री० वीरता।
मर्म—पु० भेद। रहस्य। स्वरूप। प्राण स्थान।
मर्मज्ञ, मर्मी—वि०रहस्यज्ञ। भेदी। [देने वाला।
मर्मभेदी—वि०आंतरिक कष्ट
मर्मर—पु० पत्तों के खड़खड़ाने का शब्द।
मर्मरित—वि० ध्वनित।
मर्मवचन—पु० हृदय को पीड़ित करने वाली बात।
मर्मवाक्य—पु० गूढ़ बात।
मर्मस्पर्शी—वि०हृदयस्पर्शी।
मर्मांतक—वि०दे०'मर्मभेदी'।
मर्यादा—स्त्री० सीमा। मान। रीति।

मर्यादिक—वि० मानी।
मर्षण—पु० रगड़। सहन, शांति।
मलग—पु० एक पक्षी। एक प्रकार के फ़क़ीर।
मल—पु० मैल। विकार।
मलऊन—वि० (अ०) जिस पर लानत भेजी गयी हो।
मलक—पु० (अ०) फ़रिश्ता।
मलका—स्त्री० (अ०) महारानी। [यमराज।
मलकुलमौत—पु० (अ०)
मलखम—पु० लकड़ी का कसरत करने का खम्भा।।
मलज़ूम—वि० (अ०) ज़रूरी
मलट—पु० लकड़ी का हथौड़ा।
मलदूषित—वि० मलिन।
मलद्वार—पु० गुदा।
मलना९—सक्रि० रगड़ना।
मलबा—पु० गिरे हुए मकान की ईंट आदि।
मलबूस—पु० (अ०) पोशाक।
मलमलाना—सक्रि० आलिंगन करना।
मलमास—पु० लौंद का महीना। [चन्दन।
मलय—पु० एक पर्वत। सफ़ेद-
मलयज—पु० चंदन।
मलयानिल—पु० मलयगिरि से आने वाली हवा। बसत ऋतु की वायु।
मलरुचि—वि० अधम।
मलाई—स्त्री० दूध की साढ़ी सार। मलने की क्रिया।
मलाका—स्त्री० दूती, छिनाल।
मलानि—स्त्री० दे० 'म्लानि'।
मलामत—स्त्री० (अ०) फटकार। कूड़ा।
मलार—पु० राग विशेष।
मलाल—पु० (अ०) रंज, दुःख।
मलाहत—स्त्री० अ०) सौन्दर्य
मलिंद—पु० भौंरा।
मलिक४—पु० (अ०) राजा।
मलिन४, मलीन३—वि० मैला। उदास।
मलिनी—स्त्री० रजस्वला स्त्री
मलीदा—पु० (फ़ा०) चूरमा। ऊनी वस्त्र विशेष।
मलीमस—वि० मलिन।
मलूक—पु० एक पक्षी। वि० सुन्दर।
मलोलना—अक्रि० पछताना।
मलोला—पु० शोक।
मल्ल—पु० पहलवान।
मल्लक—पु० दीपक। दाँत।
मल्लभूमि, मल्लशाला—स्त्री० अखाड़ा।
मल्लयुद्ध—पु० कुश्ती।
मल्लाह—पु० (अ०) केवट।
मल्लाही—स्त्री० मल्लाह का कार्य या उसकी मज़दूरी।
मल्लिका—स्त्री० मोतिया बेला।
मल्हराना, मल्हाना—सक्रि० पुचकारना।
मल्हार—पु० 'मलार' राग।
मवक्किल—पु० (अ०) वकील करने वाला। आसामी।
मवहिद—पु० (अ०) केवल एक ही ईश्वर का मानने वाला।
मवाद—पु० (अ०) पीब।
मवासा—पु० शरण। दुर्ग।
मवेशी—पु० (अ०) पशु।
मवेशीख़ाना—पु० पशुशाला
मश—पु० मच्छर।
मशक—पु० मच्छर। स्त्री० (फ़ा०) पानी भरने का चमड़े का थैला।
मशकहरी—स्त्री० मसहरी।
मशकूक—वि० (अ०) संदिग्ध
मशकूर—वि० (अ०) कृतज्ञ, उपकृत।
मशक्क़त—स्त्री० (अ०) मेहनत
मशग़ला—पु० (अ०) दिल-बहलाव।
मशग़ूल—वि० (अ०) लीन।
मशरफ़—पु० (अ०) उच्च या प्रतिष्ठा का स्थान।
मशरूअ—वि० (अ०) शरअ के अनुकूल।
मशरूत—वि० (अ०) जिसके बारे में शर्तें की गई हों।
मशरूह—वि० (अ०) जिसकी टीका की गई हो।
मशरिक़—पु० (अ०) पूर्व की दिशा।
मशविरा—पु० (अ०) सलाह।
मशहूर—वि० (अ०) प्रसिद्ध।
मशाल—स्त्री० (अ०) रोशनी के लिए कपड़े की मोटी बत्ती
मशालची—स्त्री० (अ०) मशाल दिखाने वाला।
मशीन—स्त्री० (अं०) यंत्र।
मशीनगन—स्त्री० (अं०) मशीन से चलने वाली बंदूक।
मश्क़—स्त्री० (अ०) अभ्यास।

मश्शाक़२—वि० (अ०) अभ्यस्त।
मष्ट—वि० चुपचाप।
मसकत—स्त्री० परिश्रम।
मसकना९—सक्रि०दबाना।
मसकरी—स्त्री० मज़ाक़।
मसकिन—वि० (अ०) बेचारा। दरिद्र। [बाज़।
मसख़रा२–पु०(अ०)दिल्लगी-
मसजिद—स्त्री० (अ०)मुसलमानों का उपासनागृह।
मसदर—पु० (अ०)उद्गम। क्रिया का धातु-रूप, जैसे-आना, जाना आदि।
मसनद—पु० (अ०) बड़ा-तकिया। [वटी , नक़ली।
मसनूई—वि० (अ०) बना-
मसमुंद—वि० धक्कम-धक्का
मसयारा—पु० मशालची।
मशरफ़—पु०(अ०) उपयोग।
मसरू—पु० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
मसरूफ़—वि० (अ०) ख़र्च-किया हुआ।
मसरूर—वि०(अ०)प्रसन्न।
मसल—स्त्री० (अ०)लोकोक्ति
मसलन्—अव्य० (अ०)जैसे, उदाहरणार्थ।
मसलना—सक्रि० रगड़ना। कुचलना। [युक्ति।
मसलहत—स्त्री० (अ०) गुप्त-
मसला—पु०(अ०) कहावत।
मसवासी—स्त्री० वेश्या।
मसविदा—पु० (अ०) ख़र्रा। ड्राफ़्ट।
मसहरी—स्त्री० मच्छरों से बचने के लिए पलँग के चारों ओर लगाया जाने वाला जालीदार कपड़ा।
मसहार—वि० मांसाहारी।
मसा—पु० मच्छर। मांस का दाना।
मसान—पु० मरघट।
मसाना—पु० (अ०)मूत्राशय।
मसाला—पु० सामग्री। साधन।
मसाहत—स्त्री०(अ०)पैमायश
मसि, मसी—स्त्री० स्याही। कालिमा, काजल।
मसिपात्र—पु० दावात।
मसिबिंदु—पु० दिठौना।
मसिमुख७—वि० दुष्कर्मी।
मसियर—पु० मशाल।
मसीत—स्त्री० मसजिद।
मसीना—पु० मोटा अन्न।
मसीह,मसीहा८—पु० (अ०) हज़रत ईसा। मित्र। दूर-देशों का भ्रमण करने वाला। [का मांस।
मसूड़ा—पु० दाँतों के ऊपर-
मसूर—पु० एक अन्न।
मसूरिका—स्त्री० मसूर के दानों की तरह चेचक।
मसूस—स्त्री०आन्तरिक पीड़ा
मसृण—वि०चिकना।कोमल
मसोसना—अक्रि० मनोवेग को दबाना। निचोड़ना।
मसोसा—पु० मनोव्यथा।
मसौदा—पु०दे०'मसविदा'
मस्कन—पु० (अ०) रहने की जगह।
मस्कर—पु० बांस।
मस्करी५—पु० संन्यासी।
मस्त२—वि० (फ़ा०)प्रसन्न। मतवाला। मग्न।
मस्तक—पु० माथा।
मस्तगी—स्त्री० (अ०) एक औषध। [वि० मस्त।
मस्ताना—अक्रि०मस्त होना।
मस्तिष्क—पु० दिमाग़।
मस्तु—पु० दही का पानी।
मस्तूर—वि० (अ०) पंक्तियों के रूप में लिखा हुआ। लिखित।
मस्तूरात—स्त्री० (अ०) औरतें। भद्र-महिलाएँ।
मस्तूल—पु० नावों के पाल बाँधने का डंडा।
महँ—अव्य० में।
महँई—वि० भारी।
महँगा२—वि० अधिक।
महंत२—वि० मठाधिपति। मुखिया। [उसकी पत्नी।
महँदी—स्त्री०एक पौधा तथा-
मह—पु० उत्सव। वि०बड़ा।
महक, महकान—स्त्री०गंध।
महकमा—पु० (अ०) सरिश्ता, विभाग।
महकीला—वि० सुगंधित।
महकूम—वि० (अ०) अधीनस्थ, आश्रित।
महकूमा—वि०(अ०)शासित।
महज़—वि० (अ०) केवल।
महज़ क़ैद—स्त्री० (अ०) सादा सज़ा।
महत७—वि० श्रेष्ठ। बड़ा।
महता७—स्त्री० घमंड। बड़प्पन।पु०गाँव का मुखिया

महताब—पु०(फ़ा०)चाँदनी। पु० चाँद।
महताबी—स्त्री० (फ़ा०) एक आतिशबाज़ी। चकोतरा-नींबू। जलाशय के पास की छोटी इमारत।
महतारी—स्त्री० माता।
महतो—पु० प्रमुख किसान।
महत्तम—वि० सब से बड़ा।
महत्ता स्त्री०, महत्त्व—पु० बड़प्पन, श्रेष्ठता।
महदूद—वि० (अ०) सीमित।
महद्रथ—पु० महारथी।
महफ़िल—स्त्री०(अ०) सभा, मजलिस। जलसा।
महफ़ूज़—वि०(अ०) सुरक्षित।
महबूब—वि०(अ०) प्रेमी।
महबूबी—स्त्री० (अ०) प्रेम।
महबूस—वि० (अ०) क़ैदी।
महमंत—वि० उन्मत्त।
महमहा७—वि० सुगंधित।
महमहाना—अक्रि० ख़ुशबू देना।
महर—वि०श्रेष्ठ। मुखिया।
महरबान—वि० कृपालु।
महरम—पु० (अ०) भेदज्ञाता। अन्तरंग-मित्र। स्त्रियों की अँगिया का वह भाग जिसके नीचे स्तन रहते हैं। कटोरी।
महराज—पु०कहार। सरदार। ज़नख़ा।
महराब—स्त्री० (अ०) द्वार आदि के ऊपर का अर्द्ध-मंडलाकार भाग।
महरि, महरी—स्त्री० श्रेष्ठ-महिला।
महरू—वि० (फ़ा०) चंद्रमा के समान मुख वाली।
महरूम—वि०(अ०)वंचित।
महरेटा—पु० श्रीकृष्ण।
महर्घ—पु० महँगो।
महर्षि—पु० श्रेष्ठ ऋषि।
महल—पु० (अ०) भव्य-भवन
महलसरा—स्त्री० (अ०) ज़नानख़ाना।
महली—पु० (अ०)अन्तःपुर का रक्षक। हिजड़ा।
महल्ला—पु० (अ०) शहर का कोई भाग।
महल्लेदार—पु० (अ०फ़ा०) महल्ले का मुखिया।
महशर—पु० (अ०) क़यामत के दिन लोगों के एकत्रित होने का स्थान।
महसिल—पु०महसूल उगाहने वाला।
महसूल—पु० (अ०) भाड़ा। कर। [अनुभूत।
महसूस—वि०(अ०) मालूम।
महांग—पु० ऊँट।
महा—वि० बड़ा, भारी।
महाकंद—पु० लहसुन।
महाकल्प—पु० ब्रह्मा की आयु का समय।
महाकाय—पु० बड़े शरीर वाला। हाथी।
महाकाल—पु० शिवजी।
महाकाली—स्त्री० दुर्गा की एक मूर्ति।
महाकाव्य—पु० वह सर्गबद्ध-बड़ा काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों,ऋतुओं,विवाह,युद्ध आदि का वर्णन हो।
महाकुल—वि०सज्जन। पु० बड़ा ख़ानदान।
महाखर्ब—वि० सौ खर्ब।
महाखाल—पु० समुद्र की खाड़ी।
महाजन—पु० धनी पुरुष।
महाजनी—स्त्री० लेन-देन। व्यवसाय। मुड़िया-लिपि।
महाजल—पु० समुद्र।
महातम—पु० महिमा।
महातल—पु० पृथ्वी के नीचे का एक तल।
महातेजा—वि० प्रतापी।
महात्मा—पु० महापुरुष, साधु।
महादण्डधारी—पु०यमराज।
महादेव—पु० शिव।
महादेवी—स्त्री० दुर्गा। पटरानी।
महाद्रुम—पु० पीपल का पेड़
महाद्वीप—पु० थल का वह बड़ा भाग जिसमें बहुत से देश हों।
महाधन—वि० क़ीमती।
महाधुनी—स्त्री० नदी।
महानवमी—स्त्री० आश्विन-शुक्ल नवमी।
महानस—पु० भोजन बनाने का स्थान।
महानाद—पु०बादल। सिंह।
महानिद्रा—स्त्री० मृत्यु।
महानिशा—स्त्री० आधी रात। प्रलय की निशा।
महानीच—पु० धोबी।

महानुभाव—पु० महाशय, महापुरुष।
महान्—वि० वड़ा, उच्च।
महापथ—पु० चौड़ी सड़क, राज-मार्ग। मृत्यु।
महापद्म—पु० सौ पद्म की एक संख्या। एक निधि।
महापातक—पु० ब्रह्म हत्या, चोरी आदि पाप।
महापात्र—पु० महाब्राह्मण।
महापुत्र—पु० पौत्र।
महापुरी—स्त्री० राजधानी।
महाप्रभ—वि० भड़कदार।
महाप्रलय—पु० सृष्टि का विनाश जो हर ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष के बाद होता है।
महाप्रसाद—पु० देव प्रसाद।
महाप्रस्थान—पु० मृत्यु। प्राण त्याग की इच्छा से हिमालय की यात्रा।
महाप्राण—पु०वर्ग का दूसरा तथा चौथा वर्ण।
महाबत—पु० (अ०) डर, भय
महाबल—वि० अत्यन्त बल-शाली। पु० वायु।
महाबाहु—वि० लंबी भुजा वाला, बली।
महाबोधि—पु० बुद्ध भगवान्।
महाब्राह्मण—पु० मृतक-संबंधी दान लेने वाला ब्राह्मण।
महाभाग—वि० भाग्यशाली।
महाभारत—पु० एक ऐति-हासिक काव्य। बड़ायुद्ध।
महामंत्री—पु० प्रधानमंत्री।
महामना—वि०बड़े दिल वाला, उदार चित्त वाला।
महामहिम—वि० अधिक महिमा वाला, प्रख्यात।
महामहोपाध्याय—पु० संस्कृत के विद्वानों की एक उपाधि। गुरुओं का गुरु।
महामांस—पु० गाय या मनुष्य का मांस।
महामात्र—पु० महावत। वि० प्रधान। धनी।
महामाया—स्त्री० दुर्गा। प्रकृति।
महामृत्युंजय—वि० शिव।
महाय—वि० बहुत। [कर्म।
महायज्ञ—पु०शास्त्रोक्त नित्य
महायात्रा—स्त्री० मृत्यु।
महायान—पु० बौद्धों का एक सम्प्रदाय।
महायुग—पु० चारों युग।
महारंभ—वि० जिसका आरंभ अधिक यत्न करने पर हो।
महार—स्त्री०(फ़ा०) ऊँट की नकेल।
महारजत—पु० सुवर्ण।
महारण्य—पु० बड़ा वन।
महारत—स्त्री० फ़ा०)मश्क़।
महारथ, महारथी—पु० भारी-योद्धा।
महाराज—पु० बड़ा राजा।
महाराजाधिराज—पु० राजाओं का राजा।
महाराज्ञी—स्त्री० महारानी।
महाराणा—पु० मेवाड़ के राजाओं की उपाधि।
महारात्रि—स्त्री० महाप्रलय की रात्रि। [का एक प्रदेश।
महाराष्ट्र—पु० दक्षिणभारत-
महारौरव—पु० एक नर्क।
महार्घ महार्घ्य—वि० मूल्य-वान्, महँगा। [पट्टी।
महाल—पु० (अ०) मुहल्ला,
महालय—पु० पितृपक्ष।
महालया—स्त्री० पितृ विस-र्जनी अमावस्या।
महावट—स्त्री०जाड़े की वर्षा।
महाव्रत—पु० हाथीवान्।
महावर—पु० एक प्रकार का लाल रंग जिसे स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं।
महावरा—पु० (अ०)अभ्यास।
महावरी—स्त्री० महावर की गोली।
महावात—पु० आँधी।
महाविद्या—स्त्री०दस देवियाँ जो तंत्र में मानी गयी हैं।
महावीर—पु० सिंह। गरुड़। हनुमान्। जैनियों के अंतिम तीर्थंकर। वि० बड़ा वीर।
महाव्रती—पु० शिवजा।
महाशंख—पु० एक बहुत बड़ा संख्या।
महाशय—पु० सज्जन।
महाशूद्री—स्त्री० अहीरिन।
महाश्वेता—स्त्री० सरस्वती।
महासंस्कार—पु० मृत्यु-संस्कार।
महासहा—स्त्री० मूँग।
महासेन—पु० स्वामिकार्त्ति-केय।
महि—स्त्री०पृथ्वी।
महिदेव—पु० ब्राह्मण।

महिपाल—पु० राजा।
महिमा—स्त्री० बड़ाई।
महियाँ—अव्य० में।
महियाउर—पु० मठे में पकाया हुआ चावल।
महिरावण—पु० रावण का एक लड़का।
महिला—स्त्री० भद्र नारी।
महिष—पु० भैंसा। एक राक्षस।
महिषघ्नी—स्त्री० दुर्गा।
महिषध्वज—पु०यमराज।
महिषी—स्त्री०पटरानी भैंस
मही—स्त्री० पृथ्वी। मट्ठा।
महीक्षित्—पु० राजा।
महीधर—पु० पहाड़। शेषनाग।
महीध्र—पु० पर्वत।
महीन—वि० सूक्ष्म, बारीक।
महीना—वि० साधारणतया ३० दिन का समय।
महीप, महीपति—पु०राजा।
महीभुज,महीभृत—पु०राजा।
महीर—स्त्री० मट्ठे की खीर।
महीरुह—पु० पेड़।
महीलता—स्त्री० केंचुवा।
महीसुत—पु० मगल।
महुअर—पु० सपेरों का बाजा। महुआ के मिश्रण से बनायी गई रोटी।
महुआ—पु० एक वृक्ष।
महुलिया—पु० महुआ।
महू—वि० (अ०) मुसलमान स्त्री को विवाह के समय ससुराल से मिलने वाला धन।
महूख—पु० महुआ।
महूम—स्त्री० चढ़ाई।
महूष—पु० महुआ। शहद।
महेंद्र—पु० विष्णु। इन्द्र।
महेच्छ—वि० महाशय, उदार-चित्त।
महेश७—पु० शिव।
महेशानी—स्त्री० पार्वती।
महेश्वर७—पु० शिव।ईश्वर
महोक्ष—पु० बड़ा बैल।
महोत्पल—पु० कमल।
महोत्सव—पु० बड़ा जलसा।
महोत्साह, महोद्यम—वि० बहुत उद्यम करने वाला।
महोदधि—पु० समुद्र।
महोदय४—पु० महाशय।
महोरस्क—वि० चौड़ी छाती वाला।
महोला—पु०व्याज,बहाना।
महौघ—पु० आँधी।
महौज, महौजस्क—वि० अति तेजस्वी।
महौषध—पु०लहसुन।सोंठ।
माँखी, माँछी—स्त्री०मक्खी।
माँग—स्त्री० याचना आवश्यकता। बालों के बीच की सीमा। [एक आभूषण।
माँगटीका—स्त्री० सिर का-
माँगना—सक्रि० याचना करना।
मांगलिक—वि०मगल-कर्त्ता
मांगल्य—वि० शुभ।
माँचना—अक्रि० फैलना।
माँजना—सक्रि० रगड कर मलना। [फेन।
माँजा—पु० पहिली वर्षा का
माँझ—अव्य० भीतर। पु० अंतर।
माँझिल—वि० बीच का।
माँझी—पु० मल्लाह।
माँट—पु० मटका। अटारी।
माँड़—पु०भात का पसावन। कलफ। [ठानना।
माँड़ना—सक्रि० सानना।
माँड़नी—स्त्री० किनारा, गोट
मांडलिक—पु० अधीनस्थ-राजा।
मांडव, माँडा—पु० मंडप।
मांडवी—स्त्री० भरत की स्त्री।
माँड़ी—स्त्री० कलफ कपड़े का।
माँत—वि० मस्त। उदास।
मांत्रिक—वि०तन्त्र-मन्त्र का काम करने वाला।
माँद—स्त्री० गुफा।
माँदगी—स्त्री० बीमारी।
माँदर—पु० मृदंग विशेष।
माँदा—वि० (फा०) थका-हुआ। रोगी।
मांद्य—पु० मंदता।
मांस—पु० गोश्त।
मांसपेशी—स्त्री० मांस का पिंड जो शरीर के भीतर रहता है।
मांसभक्षी, मांसाहारी—पु० मांस खाने वाला हृष्टपुष्ट।
मांसल३—वि० मांस-युक्त।
मांसिक—पु० क़साई।
माँह,माँहि—अव्य०में,अंदर।
मा—स्त्री० माता। लक्ष्मी। (अ०) पानी। रस। उप० जो शब्दों के पूर्व लग कर, इस, उस, तथा कौन अर्थों

को सूचित करता है।
माइ, माई—स्त्री० माता।
माइका—स्त्री० नैहर।
माक़ूल—वि० (अ०) उचित।
माक्षिक—पु० मधु, शहद।
माख—पु० क्रोध। गर्व।
माखन—पु० मक्खन।[होना
माखना—अक्रि० अप्रसन्न-
मागध—पु० एक प्रकार के भाट। जरासंध। वि० मगध देश का।
मागधी—स्त्री० जूही। पीपली।
माघ—पु० पूस के बाद का महीना।
माघ्य—पु० कुन्दपुष्प।
माचल—वि० हठी।
माचा७—पु० खाट, पलँग।
माचिस—स्त्री० (अं०) दियासलाई।
माच—स्त्री० मकान की कुर्सी।
माछर७—पु० मछली। मच्छर
माजरा—पु० (अ०) हाल। घटना, विवरण।
माज़िरत—स्त्री० (अ०) बहाना।
माजी—वि० (अ०) भूतपूर्व। पहले का। पु० भूतकाल।
माजून—पु० भाँग का बरफ़ी।
माज़ूर—वि० (अ०) लाचार।
माज़ूल—वि० (अ०) पदच्युत।
माटी—स्त्री० मिट्टी। [विशेष।
माठ—पु० मटका। मिठाई
माठा—स्त्री० कपास विशेष।
माठू—वि० हँसोड़।
माढ़ा—पु० ऊपर का कोठा।
माढ़ा—स्त्री० कुटी। मंच।
माणव—पु० मनुष्य।
माणवक—पु० नवयुवक। बालक। बीस लड़ का हार।
माणिक, माणिक्य—पु० एक रत्न, लाल मणि।
माणव्य—पु० लड़कों का समूह।
मातंग—पु० हाथी।
मात—स्त्री० माता। (अ०) हार। वि० पराजित। उन्मत्त।
मातदिल—वि० (अ०) जो न अधिक गरम हो न अधिक ठंढा।
मातना—अक्रि० उन्मत्त होना
मातबर२—वि० (अ०) विश्वस्त, सच्चा।
मातम—पु० (अ०) शोक।
मातमकदा—पु० (अ० फ़ा०) मातम करने का स्थान।
मातमपुर्सी—स्त्री० (अ०) मृतक के संबंधियों के साथ समवेदना प्रकट करना।
मातरिपुरुष—पु० माता आदि के सामने डींग मारने वाला
मातरिश्वा—पु० वायु।
मातल—वि० मतवाला।
मातलि—पु० इन्द्र का सारथी
मातहत२—वि० (अ०) अधीनस्थ।
माता, मातु—स्त्री० जननी।
मातामह७—पु० नाना।
मातुल४—पु० मामा।
मातुलपुत्रक—पु० धतूरा।
मातुलानी—स्त्री० मामी।
मातुली—स्त्री० मामी।
मातृका—स्त्री० माता। दाई।
मातृपूजा—स्त्री० विवाह में पितरों की पूजा की एक रीति।
मातृभाषा—स्त्री० माता की गोद से सीखी हुई भाषा।
मातृभूमि—स्त्री० स्वदेश।
मातृष्वसा—स्त्री० मौसी।
मातृष्वसेय—पु० मौसी का पुत्र।
मात्र—अव्य० केवल। बस।
मात्रा—स्त्री० परिमाण। स्वरसूचक-चिह्न।
मात्रिक—वि० मात्रा-संबंधी।
मात्सर्य—पु० ईर्ष्या।
माथा—पु० मस्तक।
माथुर—वि० मथुरा-निवासी।
माथे—क्रि० वि० भरोसे।
माद—पु० हर्ष। घमंड।
मादक३—वि० नशीला।
मादर—स्त्री० (फ़ा०) माँ।
मादरज़ाद—वि० (फ़ा०) जैसा माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, बिलकुल नंगा।
मादर-ब-ख़ता—वि० माता के साथ अनुचित कर्म करने वाला। [संबन्धी।
मादरी—वि० (फ़ा०) माता-
मादा, मादीन—स्त्री० (फ़ा०) स्त्री प्राणी।
माद्दा—पु० (अ०) योग्यता। मूलतत्व। [रानी।
माद्री—स्त्री० पांडु की दूसरी-
माधव—पु० विष्णु। श्रीकृष्ण। वैशाख। वसंत-ऋतु।
माधवी—स्त्री० एक चमेली की लता।

माधुरी–स्त्री०, माधुर्य—पु० मिठास। सौंदर्य।
माधो—पु० श्रीकृष्ण।
माध्यम—वि० मध्य का। पु० कार्य्य का साधन।
माध्यमिक—वि० मध्य का।
माध्याकर्षण—पु० पृथ्वी के मध्य भाग की आकर्षण-शक्ति। [संप्रदाय।
माध्व—पु० एक वैष्णव-
माध्वी—स्त्री० शराब विशेष।
मान—पु० तौल, पैमाना। घमंड। प्रतिष्ठा।
मानगृह—पु० कोप-भवन।
मानचित्र—पु० नक़शा।
मानदंड—पु० पैमाना।
मानधन—वि० स्वाभिमानी
मानना—सक्रि० स्वीकार-करना। आदर करना।
माननीय—वि० आदरणीय
मानपरेखा—पु० भरोसा।
मानमंदिर—पु० कोप-भवन। वेधशाला।
मानमरोर—स्त्री० वैमनस्य।
मानरध्रा—स्त्री० प्राचीन-काल की एक जलघड़ी।
मानव३—पु० मनुष्य।
मानवक—पु० नाटा, बौना।
मानवी—स्त्री० नारी। वि० मनुष्य-संबंधी।
मानस—पु० मन। मनुष्य। मानसरोवर। वि० मानसिक।
मानसरोवर—पु०एक झील।
मानसिक–पु० मन-संबंधी।
मानसी–वि० मन से उत्पन्न।
मानहानि—स्त्री० अपमान।
मानहुँ—अव्य० मानों।
माना—सक्रि० नापना। अक्रि० समाना।
मानिंद—वि० (फ़ा०) समान
मानित—वि० प्रतिष्ठित।
मानी५—वि० घमंडी। प्रतिष्ठित स्त्री०(अ०)अर्थ।
मानुष, मानुषिक, मानुषी—वि० मनुष्य का। मनुष्य-सम्बन्धी। [मिला।
मानूस—वि० (अ०) हिला
मानो—अव्य० जैसे, गोया।
मान्य४—वि० आदरणीय।
मान्यता—स्त्री० आदर, प्रधानता।
माप१२—पु० नाप। तौल।
मापना—सक्रि० नापना, तौलना। अक्रि० मतवाला-होना। [किया हुआ।
माफ़२—वि० (अ०) क्षमा-
माफ़कत—स्त्री० अनुकूलता।
माफ़िक़–वि० (अ०) अनुकूल
माफ़ीदार—पु० (अ० फ़ा०) वह जिसके पास बिना लगान की ज़मीन हो।
मा बैन—क्रि० वि० (अ०) इस बीच मे।
मामता—स्त्री० ममता।
मामलत–स्त्री० (अ०)मामला।
मामला—पु० (अ०)झगड़ा। विषय। मुक़दमा।
मामा, मामूँ—पु० माता का भाई। स्त्री० (फ़ा०) दासी।
मामागरी—स्त्री० (फ़ा०) दासी का पद या काम।
मामी—स्त्री०मामा की स्त्री।
मामूर—वि० (अ०) पूर्ण। नियुक्त।
मामूल–पु०(अ०)रीति। टेव।
मामूली–वि० (अ०)साधारण
माय—स्त्री० माता।
मायक—वि० छली।
मायका—पु० नैहर।
मायन—पु० मातृका पूजन का दिन। [हुआ।
मायल—वि० (अ०) मिला-
माया—स्त्री० लक्ष्मी। धन। अविद्या। प्रकृति। छल।
मायादेवीसुत—पु० गौतम-बुद्ध।
मायावादी५—वि० जो जगत् को मायामय समझता है।
मायावी५—पु० छली।
मायिक—वि० माया का।
मायी५—पु०ईश्वर। जादूगर
मायूब—वि०(अ०) दोष-पूर्ण
मायूर—वि० मोर-संबंधी। पु० मोर। [निराश।
मायूस—वि० (अ०)
मार—पु० कामदेव। स्त्री० प्रहार। युद्ध। माला।
मारक१४—वि० संहारक।
मारका—पु० निशान। (अ०) रणभूमि।
मारकाट—स्त्री० लड़ाई।
मारकीन—पु० एक मोटा-कपड़ा।
मारके का—वि० महत्वपूर्ण
मारकेश—पु० घातक-ग्रह।
मारगन—पु० तीर।

मारजित्—पु० गौतम बुद्ध।
मारण६—पु० हत्या करना। एक तांत्रिक प्रयोग।
मारतौल-पु०हथौडा विशेष।
मारना-सक्रि० हत्या करना। प्रहार करना। गिराना। दबाना। फेंकना।
मारपेच—पु० धोखेबाज़ी।
मारवाड—पु० मेवाड़ या उसके आस-पास का देश।
मारवाड़ी—पु० मारवाड का रहने वाला मारवाड़ की भाषा।
मारात्मक१४—वि० घातक।
मारामार—क्रि० वि० बहुत-जल्दी। स्त्री० मारपीट।
मारी—स्त्री०मृत्यु। महामारी
मारुत—पु० वायु।
मारुति—पु०हनुमान्। भीम
मारू-पु०बहुत बड़ा नगाडा।
मारूफ़—वि०(अ०) प्रसिद्ध।
मारे-अव्य० कारण। [ऋषि।
मार्कंडेय—पु० एक अमर-
मार्क—पु० (अं०) मारका।
मार्केट—पु० (अ०)बाज़ार।
मार्ग—पु० रास्ता।
मार्गण—पु० खोज। बाण।
मार्गशीर्ष—पु० अगहन मास
मार्गिक, मार्गी—वि० यात्री
मार्च—पु० (अं०) अँग्रेज़ी वर्ष का तीसरा महीना (३१ दिन का)। [क्षमा।
मार्जन६—पु० सफ़ाई।
मार्जनी—स्त्री० झाड़ू।
मार्जार७—पु० बिलाव।
मार्जित—वि०स्वच्छ किया।
मार्तण्ड—पु० सूर्य्य।
मार्दव—पु० मृदुता। निर-भिमानता।
मार्दुल्य—पु० मृदुलता।
मार्फ़त—अव्य०(अ०)द्वारा।
मार्मिक३—वि० प्रभाव डालने वाला। पु० मर्मज्ञ।
मार्शल-ला—पु० (अं०) फ़ौजी हकूमत।
माल-पु० पहलवान। धन। सामान। स्वादिष्ट-भोजन। स्त्री० माला। चर्खे की डोरी
मालक—पु० नीम का वृक्ष।
मालकियत—स्त्री० (अ०) स्वामित्व। [भंडार।
मालख़ाना—पु० (अ० फ़ा०)
मालगाडी—स्त्री० माल ढोने वाली रेलगाड़ी।
मालगुज़ार—पु० (अ० फ़ा०) जमींदार। [भूमि-कर।
मालगुज़ारी—स्त्री०(अ० फ़ा०)
मालगोदाम—पु०व्यापारिक-माल रखने का स्थान।
मालग्राही५—पु० ख़रीदार।
मालज़ादा२—पु० (अ०फ़ा० वेश्या-पुत्र।
मालती—स्त्री० एक लता।
मालदार२-वि०(अ०फ़ा०)धनी
मालन—स्त्री०माली की स्त्री।
मालपूआ-पु०एक पकवान।
मालमता—पु० सामान और रुपया।
मालमस्त२—वि० (अ० फ़ा०) धन होने के कारण निश्चित। [निवासी।
मालवीय—पु० मालवा-
माला—स्त्री० हार। पंक्ति। समूह।
मालाकार—पु० माली।
मालामाल—वि० धन संपन्न।
मालिक—पु० ईश्वर। पति।
मालिका—स्त्री० माला। मालिन। क़तार। चमेली।
मालिकाना—क्रि० वि० (अ०) मालिक की तरह। वि० मालिक संबंधी।
मालिन्य—पु० मलिनता।
मालियत—स्त्री० (अ०) क़ीमत। संपत्ति।
मालिश—स्त्री०(फा०)मलना
माली५—पु० (अ०) बाग़-बान। वि० आर्थिक।
मालूम—वि०(अ०) ज्ञात।
मालूर—पु० बेल, श्रीफल।
माल्य—पु० फूल-माला।
माल्यकोश—पु० एक राग।
मावा—पु०निचोड़। खोया।
माशा—पु० आठ रत्ती की तौल।
माशा अल्लाह—वा० (अ०) ईश्वर कुदृष्टि से बचावे।
माशूक़४—पु०(अ०) प्रेमी।
माशूक़ाना—वि०। (अ०) माशूक़ों का सा।
माशूक़ा—स्त्री० (अ०) सौन्दर्य प्रेम।
माष—पु० क्रोध। उड़द।
मास—पु० महीना। गोश्त।
मासना—अक्रि० मिश्रित-होना। [का नौकर।
मासभृत—पु०मासिक वेतन-
मासिक—वि० महीने में

होने वाला।
मासी—स्त्री० मौसी।
मासीन—वि० एक महीने की आयु का।
मासूम—वि० (अ०)निर्दोष। अल्पायु। निरीह।
मासूमियत—स्त्री० (अ०) मासूम होने का भाव।
मास्टर२—पु०(अं०)स्वामी। शिक्षक।
मास्य—वि० मासिक।
माह—पु० माघ मास। उड़द। (फ़ा०) महीना। चन्द्रमा।
माहज़र-वि०(अ०) वर्त्तमान
माहताब—पु० (फ़ा०) चन्द्रमा। चाँदनी।
माहताबी—स्त्री० एक प्रकार का नींबू तथा आतिशबाज़ी।
माह-ब-माह—क्रि० वि० (फ़ा०) हर महीने।
माहरू,माहलक़ा—वि० स्त्री० चन्द्रमुखी। [सेवक।
माहली—पु० अंतःपुर का
माहवार, माहवारी - क्रि० वि० (फ़ा०) प्रतिमास। वि० मासिक।
माहात्म्य—पु० महिमा।
माहियत—स्त्री०(अ०)प्रकृति। भेद। दशा। असलियत।
माहिर-वि०(अ०)जानकार।
माहिला—पु० मल्लाह।
माहिष्मती—स्त्री० दक्षिण देश की एक प्राचीन नगरी।
माहिष्य—पु०वर्णसंकरजाति।
माही—स्त्री०(फ़ा०) मछली।
माहीगीर—पु०(फ़ा०)मछुआ
माहुर—पु० ज़हर।
माहे-क़मरी—पु० (फ़ा०) चान्द्रमास।
माहेयी—स्त्री० गाय।
माहे शमसी—पु० (फ़ा०) सौर-मास।
माहेश्वर—वि०शिव-संबंधी
माहेश्वरी—स्त्री० दुर्गा। वैश्य-जाति। शिव की एक माता।
मिंत—पु० मित्र। [समय।
मिआद८—स्त्री०अवधि,
मिक़दार—स्त्री० (फ़ा०) परिमाण। [चुंबक-पत्थर।
मिक़नातीस—पु० (अ०)
मिचकी—स्त्री० छलाँग।
मिचना९—अक्रि० आँखों का बंद होना। [को होना।
मिचलाना—अक्रि० क़ै आने-
मिज़गाँ—पु० (फ़ा०) बहु० आँख की पलकें।
मिज़राब—पु० (अ०) सितार बजाने का छल्ला।
मिज़ह—स्त्री० (फ़ा०) आँख की पलक। [अभिमान।
मिज़ाज८-पु०(अ०) स्वभाव।
मिज़ाजपुर्सी—स्त्री० कुशल-पूछना।
मिटना९-अक्रि० नष्ट होना।
मिट्टी—स्त्री०धूलि। पृथ्वी लाश। भस्म। [भाषी।
मिट्ठू—पु०तोता। वि०मिष्ट-
मिठलोना—वि० जिसमें नमक कम हो। [मिष्टान्न।
मिठाई—स्त्री० मिठास।
मिठास—पु० मीठापन।
मिडिल—पु० (अं०) मध्य।
मितंपच—पु०कृपण।
मित—वि० सीमा के अंदर। थोड़ा। स्त्री० सीमा।
मितभाषी५—पु० कम-बोलने वाला।
मितव्यय८—पु० किफ़ायत।
मितव्ययता—स्त्री० किफ़ा-यतशारी।
मिताई—स्त्री० मित्रता।
मितार्थ—पु० दूत विशेष।
मिताशी५—वि० कम खाने वाला।
मिति—स्त्री०सीमा अवधि।
मिती—स्त्री० तिथि।
मितीकाटा—पु० सूद जोड़ने की एक रीति।
मित्त, मित्र४—पु० एक देवता। दोस्त। सूर्य।
मित्रता—स्त्री० दोस्ती।
मित्रवर्ग—पु० सुहृद्गण।
मिथः—क्रि० वि० परस्पर। एकांत में। [प्रान्त।
मिथिला—स्त्री० तिरहुत-
मिथुन—पु० स्त्री पुरुष का जोड़ा। संयोग। एक राशि।
मिथ्या—वि० स्त्री० झूठ।
मिथ्याचार—पु० ढोंग।
मिथ्यादृष्टि—स्त्री० नास्तिकता
मिथ्यामति—स्त्री० भ्रान्ति, भ्रम।
मिथ्यावादी५—वि० झूठा।
मिथ्याहार८—पु० प्रकृति-विरुद्ध-भोजन।
मिनकी—स्त्री० बिल्ली।

मिनजानिब—क्रि० वि० (अ०) किसी की ओर से ।

मिनजुमला—क्रि० वि० (अ०) सब में से ।

मिनट—स्त्री० (अं०) घंटे का साठवाँ भाग ।

मिनमिनाना—अक्रि० मंद-स्वर या नाक में बोलना ।

मिनहा—वि० (अ०) काटा-हुआ, घटाया हुआ ।

मिनहाई—स्त्री० घटी, कमी ।

मिनिस्टर—पु० (अं०) मंत्री।

मिन्नत—स्त्री० (अ०) प्रार्थना

मिमियाना—अक्रि० बकरी का बोलना ।

मिम्बर—पु०(अ०) मुल्लाओं के उपदेश करने के लिए बैठने का चबूतरा ।

मियाँ—पु० (फ़ा०) शौहर । महाशय । [भाषी ।

मियाँमिट्ठू—पु० मिष्ट-

मियाना—पु० (फ़ा०) पालकी । बल्ली । वि० मझोले आकार का ।

मियानी—वि० (फ़ा०) बीच का । स्त्री० पाजामे के बीच का भाग ।

मिरज़ई—स्त्री० (फ़ा०) बंडी

मिरज़ा—पु० (फ़ा०) राज-कुमार । अमीर का लड़का ।

मिरजान—पु० मूँगा ।

मिरात—स्त्री०(अ०) दर्पण ।

मिरियासि—स्त्री० पैतृक-सम्पत्ति । [मिरच ।

मिर्च—स्त्री०लाल या काली-

मिर्गी—स्त्री० अपस्मार रोग

मिलकना—सक्रि० जलाना ।

मिलन—पु० भेंट, मिलाप ।

मिलनसार२—वि० मेल-जोल रखने वाला ।

मिलना१—सक्रि०प्राप्तहोना। अक्रि०भेंट होना । शामिल-होना । तुलना होना ।

मिलवाना—सक्रि० मिलने के काम में किसी को लगाना

मिलाई, मिलौनी—स्त्री० मिलनी ।

मिलान—पु० तुलना ।

मिलाप—पु० भेंट, मेल ।

मिलावट—स्त्री० मिलाए जाने का भाव ।

मिलिंद—पु० भौंरा ।

मिलित—वि० मिला हुआ ।

मिल्क, मिल्कियत—स्त्री० (अ०) जागीर, जायदाद ।

मिल्की—पु० (अ०) ज़मींदार

मिल्लत—स्त्री० (अ०) मेल-जोल । फ़िरक़ा, धर्म ।

मिशन—पु० (अं०) किसी कार्य के लिए भेजे हुए लोगों का समूह । ईसाइयों की एक संस्था । [हुआ ।

मिश्र—वि० संयुक्त,मिलाया-

मिश्रकेशी—स्त्री० स्वर्गवेश्या

मिश्रण—पु० मिलावट ।

मिश्रित—वि० मिलाया हुआ

मिश्री—स्त्री० मिसरी ।

मिश्रया—स्त्री० सौंफ़ ।

मिष—पु० छल, बहाना ।

मिष्ट—वि० मीठा ।

मिष्टभाषी५—वि० मिठबोला ।

मिष्टान्न—पु० मिठाई ।

मिस—पु० बहाना । छल स्त्री० (अं०) कुमारी ।

मिसकीन३—वि० (अ०). दीन, दरिद्र ।

मिसना—अक्रि० मिलना । मसला जाना । [चरण ।

मिसरा—पु० (फ़ा०)छन्द का-

मिसवाक—स्त्री० (अ०) दातौन ।

मिसहा७—वि० बहानेबाज़ ।

मिसाल—स्त्री० (अ०) उदा-हरण । वि० सदृश ।

मिसिल—स्त्री० (अ०) फ़ाइल । वि० सदृश ।

मिसेज़—स्त्री०(अं०) श्रीमती

मिस्कौट—स्त्री० गुप्त परा-मर्श । भोजन । भोजन करने वालों की गोष्ठी ।

मिस्टर—पु० (अं०) महाशय

मिस्तर—पु० (अ०) लाइन खींचने को डोरे बँधी तख्ती।

मिस्तरी—पु० कारीगर ।

मिस्मार—वि० (अ०) तोड़ा, फोड़ा या ढाया हुआ ।

मिस्ल—वि० (अ०) समान

मिस्सी—स्त्री० (फ़ा०) दंत-मंजन विशेष । [परिश्रम ।

मिहनतद—स्त्री० (अ०)

मिहरी—स्त्री० औरत ।

मिहिका—स्त्री० नीहार, हिम

मिहिर—पु० सूर्य । बादल । हवा । चन्द्र । आक ।

मींगी—स्त्री० गिरी ।

मींजना, मींड़ना—सक्रि० मसलना ।

मींड़—स्त्री० संगीत में स्वर के उतार-चढ़ाव का सुन्दर-, प्रकार, गमक।
मींड़क—पु० मेंढक। [समय
मीआदन—स्त्री० (अ०) अवधि।
मीच—स्त्री० मृत्यु। [(आँख)
मीचना—सक्रि० मूँदना।
मीज़ान—स्त्री० (अ०) जोड़। तराज़ू। तुलाराशि।
मीटिंग—स्त्री० (अं०) सभा, बैठक। [प्रिय।
मीठा—वि० मधुर। स्वादिष्ट।
मीत—पु० मित्र।
मीन—पु० मछली।
मीनकेतन—पु० कामदेव।
मीना—पु० (फ़ा०) सोने, चाँदी पर किया गया रंगीन काम। एक नीले रङ्ग का पत्थर।
मीनाकारी—स्त्री० सोने, चांदी पर किया गया रंगीन-काम।
मीनार—स्त्री० स्तम्भ, लाट
मीमांसक१४—पु० मीमांसा करने वाला। मीमांसा-शास्त्र का ज्ञाता।
मीमांसा—स्त्री० विवेचना। एक दर्शन-शास्त्र।
मीमांसित—वि० विचारित।
मीयादन—स्त्री० (अ०) अवधि
मीर—पु० (फ़ा०) सरदार, प्रधान। सैयदों की उपाधि।
मीरअदल—पु० (फ़ा०) प्रधान न्यायाधीश।
मीरआतिश—पु० (फ़ा०) तोपख़ाने का मालिक।
मीर-बख़्शी—पु० वेतन बाँटने वाला प्रधान कर्मचारी
मीरमंज़िल—पु० (फ़ा०) मंज़िल पर पहले ही पहुँच कर प्रबंध करने वाला-कर्मचारी। [सभापति।
मीरमजलिस—पु० (फ़ा०)
मीर-महल्ला—पु० (फ़ा०) महल्ले का मुखिया।
मीरमुंशी—पु० (फ़ा०) प्रधानमंत्री।
मीरास—स्त्री० (अ०) बपौती
मीरासी—स्त्री० (अ०) एक जाति जो गाने-बजाने का काम करती है। वि० मीरास संबन्धी। [दूरी।
मील—पु० १७६० गज़ की-
मीलन—पु० संकुचित करना
मीलित—वि० बन्द किया-हुआ। [विशेष।
मुँगरा७—पु० काठ का हथौड़ा-
मुँगौछी—स्त्री० मूँग का पकवान।
मुंगौरी—स्त्री० मूँग की बरी।
मुंचना—सक्रि० छोड़ना।
मुंज—स्त्री० एक घास।
मुंड—पु० सिर।
मुंडक—पु० हज्जाम। सिर।
मुंडन—पु० एक संस्कार जिसमे बालक का सिर मुड़ाया जाता है।
मुँडना९—अक्रि० मूँड़ा जाना। ठग जाना।
मुंडमाला—स्त्री० कटे हुए सिरों की माला। [देवी।
मुंडमालिनी—स्त्री० काली-
मुंडमाली—पु० शिव।
मुंडा७—वि० मुँड़े सिरवाला
मुँड़ासा—पु० साफ़ा, पगड़ी
मुंडित—वि० जिसका सिर मूँड़ा गया हो।
मुँड़िया—पु० साधु।
मुंडी—पु० नाई।
मुँडेर—स्त्री० मेंड़।
मुंतक़िल—वि० (अ०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने वाला। [हुआ।
मुंतख़िब—वि० (अ०) चुना-
मुंतज़िम—वि० (अ०) प्रबन्धक। [देखने वाला।
मुंतज़िर—वि० (अ०) राह-
मुंतशिर—वि० (अ०) इधर-उधर बिखरा हुआ।
मूँदना—अक्रि० ढक जाना।
मुंदरज—वि० (अ०) दर्ज-किया हुआ।
मुंदरा—पु० जोगियों के कान का कुंडल।
मुंदरी—स्त्री० अँगूठी।
मुंशियाना—वि० (फ़ा०) मुंशियों का सा।
मुंशी—पु० (फ़ा०) लेखक।
मुंशीखाना—पु० दफ़्तर।
मुंसरिम—पु० (अ०) प्रबन्धक। कचहरी के दफ़्तर का प्रधान
मुंसिफ़—पु० (अ०) न्याय-कर्त्ता।
मुँह—पु० मुख। चेहरा। सिर।
मुँहअखरी—वि० ज़बानी।
मुँहचग—पु० एक बाजा।
मुँहज़ोर२—वि० बकवादी। उद्दंड।

मुँहदिखाई—स्त्री० नववधू के मुँह देखने की एक रस्म तथा इस अवसर पर उसे दिया जाने वाला धन ।
मुहँदेखा७—वि०सामने का । बनावटी ।
मुँहपातर—वि० मुँहफट ।
मुँहफट—वि० निःसंकोच । अंडबंड बोलने वाला ।
मुँहबोला—वि० शब्द द्वारा बनाया हुआ ।
मुँहमाँगा—वि० अभीप्सित।
मुँहाचही—स्त्री० डींगमारना
मुँहासा—पु० मुँह पर की वे फुंसियाँ जो युवाकाल में निकलती हैं ।
मुअ़इयन—वि० (अ०) तैनात, नियुक्त ।
मुअ़ज़्ज़िज़—वि० (अ०) प्रतिष्ठित ।
मुअ़ज़्ज़िम—वि० (अ०) बहुत बड़ा, प्रतिष्ठित ।
मुअ़त्तल२—वि० (अ०) किसी अपराध के कारण थोड़े से दिन के लिए अपने पद से हटाया गया ।
मुअ़न्निस—पु० (अ०) स्त्री० लिंग । [पूज्य ।
मुअ़ल्ला—वि० (अ०) मान्य,
मुअ़ल्लिफ़—पु० (अ०) ग्रंथ का रचयिता ।
मुअ़ल्लिम२—पु० (अ०) शिक्षक । [क्षमित ।
मुआ़फ़२—वि० (अ०)
मुआ़फ़िक़—वि० (अ०) अनुकूल ।
मुआ़यना—पु० (अ०) निरीक्षण, जाँच ।
मुआ़वज़ा—पु० (अ०)बदला, क्षति-पूर्ति में दिया गया धन । [क़रार ।
मुआ़हिदा—पु० (अ०)
मुक़दमा—पु० (अ०) दावा, नालिश ।
मुकद्दम—वि० (अ०) आवश्यक । पु० मुखिया ।
मुक़द्दर—पु० (अ०) भाग्य ।
मुक़द्दस—वि०(अ०) पवित्र ।
मुकम्मल—वि० (अ०) पूरा किया हुआ ।
मुकरना९—अक्रि० इनकार करना । मुक्त होना ।
मुकरी—स्त्री० पहेली के ढंग की कविता । [मित्र ।
मुक़र्रब—पु० (अ०) घनिष्ट-
मुकर्रम—वि०(अ०) प्रतिष्ठित
मुकर्रर—क्रि० वि० (अ०) दोबारा ।
मुक़र्रर२—वि० (अ०)नियुक्त
मुकल्लफ़—वि०(अ०) सजाया-हुआ ।
मुक़ाबला—पु० (अ०) तुलना । विरोध । [सामने
मुक़ाबिल—क्रि० वि० (अ०)
मुक़ाम—पु० (अ०) पड़ाव, स्थान ।
मुक़ामात—पु० (अ०) बहु० 'मुक़ाम' का । [मारना ।
मुकियाना—सक्रि० घूँसे
मुक़िर—वि० (अ०) इक़रार करने वाला । [हुआ ।
मुक़ीम—वि० (अ०) ठहरा
मुकुंद—पु० विष्णु । पारा।
मुकुट—पु० ताज । एक शिरोभूषण ।
मुकुताहल—पु० मोती ।
मुकुर—पु० आइना । दर्पण।
मुकुल—पु० कली ।
मुकुलित—वि० अधखिला ।
मुकेस—पु० एक कपड़ा जिस पर चाँदी सोने का काम हो, बादला ।
मुक्का७—पु०घूँसा । [हुआ ।
मुक्त३—वि०आज़ाद । छूटा
मुक्तकंठ—वि० स्पष्टवक्ता ।
मुक्तक—पु०फुटकर कविता ।
मुक्तहस्त४—वि० उदार ।
मुक्ता—पु० मोती ।
मुक्तागार—पु० सीप ।
मुक्ताफल, मुक्ताहल—पु० मोती । [माला ।
मुक्तावली—स्त्री०मोतियों की-
मुक्तास्फोट—पु० सीपी ।
मुक्ति—स्त्री०मोक्ष, छुटकारा
मुक्तिमानी—वि० स्वतंत्र ।
मुख—पु० मुँह । निकास ।
मुखड़ा—पु० चेहरा, मुँह ।
मुख़तार२—पु० (अ०) मुक़दमे का सलाहकार । प्रतिनिधि ।
मुख़तारआम—पु० (अ०) वह प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने का अधिकार दिया गया हो ।
मुख़तारख़ास—पु० (अ०) वह प्रतिनिधि जिसे ख़ास काम के करने का अधिकार दिया गया हो ।

मुख़तारनामा—पु० (अ०) वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा अदालती कार्यवाही आदि करने का हक़ मिले।
मुखदूषण—पु० प्याज़।
मुख़न्नस—वि०(अ०) नपुंसक
मुख़फ़फ़—वि० (अ०) संक्षिप्त
मुखबंध—पु० भूमिका।
मुख़बिर२—पु० (अ०) जासूस, भेदिया।
मुखभूषण—पु० पान।
मुखर—वि० कटुभाषी।
मुखरित—वि० शब्दायमान।
मुख़लिसा—स्त्री० (अ०) रिहाई, मुक्ति।
मुखलोम—पु० दाढ़ी।
मुखवल्लभ—पु० अनार।
मुखस्थ—वि० कंठस्थ।
मुखस्राव—पु० लार।
मुखागर,मुखाग्र-वि०ज़बानी
मुख़ातिब—वि० (अ०)रुजू। बातचीत में प्रवृत्त।
मुखापेक्षी—स्त्री० आश्रित, दूसरों का मुँह ताकनेवाला।
मुख़ालिफ़—वि० (अ०) विरोधी। [विरोध।
मुख़ालिफ़त—स्त्री० (अ०)
मुख़ासमत—स्त्री० (अ०) शत्रुता।
मुखिया—पु०नेता। अगुआ।
मुखिल४—वि० बाधक।
मुख़्तलिफ़—वि० (अ०) भिन्न-भिन्न। अलग-अलग।
मुख़्तसर—वि० (अ०) संक्षिप्त
मुख्य३—वि०प्रधान। बड़ा।
मुगदर—पु० व्यायाम की काष्ठ-गदा। [विशेष।
मुग़ल—पु०(फ़ा०) जाति-
मुग़लानी—स्त्री० (अ०) दासी। स्त्रियों के कपड़े सीने वाली स्त्री।
मुग़ालता—पु० (अ०) धोखा
मुग्धम—वि० स्पष्ट।
मुग्ध३—वि० मोहित। सुन्दर
मुग्धा—स्त्री० नवयौवन सम्पन्ना।
मुचक—पु०लाक्षा, लाख।
मुचना—सक्रि० छोड़ना।
मुचलका—पु० (तु०) अदालत में उपस्थित,या भविष्य में कोई अनुचित काम न करने का प्रतिज्ञा-पत्र।
मुचुकुंद—पु० एक राक्षस।
मुछंदर—वि०बड़ी मूँछवाला
मुज़क्कर—वि०(अ०)पुल्लिङ्ग।
मुज़तरब—वि०(अ०)बेचैन।
मुज़फ़्फ़र—वि०(अ०)विजयी।
मुजमिल—पु० (अ०)योग।
मुजरा—पु० (अ०) नृत्य-रहित वेश्या का गाना। काटी हुई रक़म। अभिवादन
मुजरिम—पु०(अ०)अपराधी।
मुजर्रद२—वि०(अ०)अकेला, अविवाहित।
मुजर्रब—वि०(अ०)परीक्षित।
मुजल्लद—वि० (अ०) जिल्ददार।
मुज़ायक़ा—पु० (अ०) हर्ज।
मुजस्सिम—वि० (अ०) सशरीर।
मुज़हिर—पु० (अ०) प्रकट करने वाला। जासूस।
मुज़ायक़ा—पु० (अ०) हर्ज, हानि।
मुजावर२—पु० (अ०) दरगाह आदि की सेवा करने वाला
मुज़िर—वि० (अ०)हानिकर
मुजौविज़ा—पु० औचित्य।
मुटाई—स्त्री० मोटापन। घमंड
मुटिया—पु० मज़दूर।
मुट्ठा—पु० मुट्ठी भर वस्तु।
मुट्ठी—स्त्री०बंद किया हुआ पंजा। [भिड़न्त
मुठभेड़—स्त्री० सामना।
मुठिका—स्त्री० मुट्ठी।
मुड़ना९—अक्रि० झुकना। लचकना। मुण्डन होना।
मुड़ला७—वि० केशरहित-सिर वाला।
मुड़हर—पु० साड़ी का सिर पर रहने वाला भाग।
मुतंजन—पु० (अ०) मांस के साथ पकाया जाने वाला चावल विशेष। [सम्बन्ध।
मुतअल्लिक़—वि० (अ०)
मुतकल्लिम—पु० (अ०) कहने वाला, वक्ता।
मुतफ़न्नी—वि० (अ०) धूर्त, चालाक। [भिन्न।
मुतफ़र्रिक़—वि०(अ०) भिन्न-
मुतबन्ना—पु०(अ०) दत्तकपुत्र
मुतलक़—क्रि० वि० (अ०) तनिक भी। वि०बिलकुल।
मुतलाशी—वि० (अ०) तलाश करने वाला।
मुतल्ला—वि० (अ०) जिस पर सोने का मुलम्मा किया गया हो।

मुतवज्जह—वि०(अ०) ध्यान देने वाला ।
मुतवफ़ा–वि० (फ़ा०)स्वर्गीय
मुतवल्ली–वि०(फ़ा०) वली ।
मुतवातिर—क्रि० वि०(फ़ा०) लगातार ।
मुतशाबह—वि० (अ०) समान आकृति वाला ।
मुतसद्दी—पु०(फ़ा०) लेखक, मुनीम । [माला ।
मुतसिरी—स्त्री०मोतियों की-
मुतसावी —वि०(अ०)समान ।
मुतहम्मिल—वि० (अ०) सहिष्णु । [अनुसार ।
मुताबिक़—क्रि० वि० (अ०)
मुतालबा–पु०(फ़ा०)पावना ।
मुताला—पु०(अ०)अध्ययन।
मुताह—पु०(अ०)अस्थायी । विवाह ।
मुताही—वि०(अ०)अस्थायी । विवाह करने वाला ।
मुतेहरा—पु० कलाई पर का एक गहना ।
मुत्तफ़िक़–वि० (अ०) सहमत
मुत्तसिल—वि० (अ०) समीप में रहने वाला । सम्बद्ध ।
मुद—पु० आनन्द, हर्ष ।
मुदकारी—वि० सुखी करने वाला ।
मुदब्बिर—पु० (अ०) परामर्श दाता, मंत्री ।
मुदर्रिस—पु०(अ०)अध्यापक
मुदल्लल—वि० (अ०) जो दलील या तर्क से सिद्ध हो
मुदवंत—वि० हर्षित ।
मुदा—अव्य० लेकिन । स्त्री० हर्ष ।
मुदाम—क्रि० वि० (फ़ा०) सदैव । [होते रहने वाला ।
मुदामी—वि०(फ़ा०) हमेशा-
मुदित—वि०प्रसन्न। [प्रेमी ।
मुदिर—पु० बादल, मेघ ।
मुदी—स्त्री० चंद्रिका । हर्ष
मुद्आ—पु० (अ०)अभिप्राय
मुद्दई—पु० (अ०) दावा-करने वाला, वादी ।
मुद्दत–स्त्री०(अ०)समय,अवधि।
मुद्दती—वि०लंबे समय का ।
मुद्दाअलेह—पु० (अ०) प्रतिवादी ।
मुद्रक—पु० छापने वाला ।
मुद्रण—पु० छपाई ।
मुद्रणालय—पु०छापाख़ाना ।
मुद्रांकित—वि० मोहर किया हुआ ।
मुद्रा—स्त्री०सिक्का । अँगूठा, छाप । चिह्न । कुंडल । आकृति ।
मुद्रापत्र—पु० स्टैम्प ।
मुद्रायंत्र—पु०छापने का यंत्र।
मुद्रास्फीति—स्त्री० सिक्के की वृद्धि ।
मुद्रिका—स्त्री० अँगूठी ।
मुद्रित—वि०छपा हुआ । बंद
मुधा—वि० मिथ्या। क्रि० वि० व्यर्थ ।
मुनअक़द—वि० (अ०) कार्य रूप में होने वाला (जल्सा आदि) ।
मुनक्क़ा—पु०बड़ी किशमिश
मुनजमिद—वि० (अ०) सर्दी आदि से जमा हुआ ।
मुनज्जिम—पु० (अ०) ज्योतिषी । [शवान् ।
मुनव्वर—वि० (अ०) प्रका-
मुनहसर—वि० (अ०)निर्भर
मुनाज़रा—पु० (अ०) वाद-विवाद, बहस ।
मुनादी—स्त्री० (अ०)ढिंढोरा
मुनाफ़ा—पु० (अ०) लाभ ।
मुनारा—पु० मीनार ।
मुनासिब—वि० (अ०)उचित
मुनासिबत—स्त्री० (अ०) सम्बन्ध,लगाव ।[बुद्ध,जिन।
मुनि—पु० महात्मा । ऋषि।
मुनींद्र—पु० बुद्ध, जिन ।
मुनीम२—पु०हिसाब लिखने वाला । स्वामी ।
मुनीश—पु० बडा ऋषि ।
मुफ़लिस२—वि०(अ०)ग़रीब
मुफ़स्सल—वि० (अ०) विस्तृत, ब्यौरेवार ।
मुफ़ीज़—वि० (अ०) फ़ायदा पहुँचाने वाला ।
मुफ़ीद—वि० (अ०) लाभ-दायक । [दाम का ।
मुफ़्त—वि० (अ०) बिना-
मुफ़्ती—पु० (अ०) धर्म-शास्त्री । वि० मुफ़्त ।
मुब्तिला—वि० (अ०) फँसा हुआ । [हुआ ।
मुबद्दल—वि० (अ०) बदला-
मुबनी—वि० (अ०) आश्रित
मुबर्रा—वि० (अ०) निरपराध, पाक ।
मुबलिग़—वि० (अ०)सीमा-बद्ध (मुक़ाम,हदूद,निहायत

"लुग़त") अंकन ।
मुबादला—पु० (अ०) परिवर्त्तन ।
मुबारक—वि० (अ०) शुभ ।
मुबारकबाद२—पु० (अ०) बधाई । [अत्युक्ति ।
मुबालग़ा—पु० (फ़ा०)
मुबाशरत—स्त्री० (अ०) मैथुन, संभोग ।
मुबाहिसा—पु० (अ०) बहस
मुब्तदी—पु० (अ०) नौसिखुआ ।
मुमकिन—वि० (फ़ा०) सम्भव
मुमतहिन—वि० (अ०) परीक्षक । [प्रतिष्ठित ।
मुमताज़—वि० (अ०)
मुमानियत—स्त्री० (अ०) मनाही ।
मुमालिक—पु० (अ०) बहु० 'मुल्क' का । बहुत से देश।
मुमुक्षु—वि० मुक्ति चाहनेवाला ।
मुमूर्षा—स्त्री० मरणेच्छा ।
मुमूर्षु—वि० मरणासन्न ।
मुरकना९—अक्रि० मोच खाना । लौटना । [हुआ ।
मुरक्कब—वि० (अ०) मिला-
मुरग़ा७—पु० एक पक्षी ।
मुरग़ाबी—स्त्री० एक जलपक्षी
मुरचंग—पु० एक बाजा ।
मुरचाना—अक्रि० मोरचा-लगना । [होना ।
मुरछाना—अक्रि० मूर्छित-
मुरज—पु० मृदंग । [लाना।
मुरझाना—अक्रि० कुम्ह-
मुरत्तब-वि० (अ०) क्रमबद्ध ।

मुरदन—पु० (फ़ा०) मरना
मुरदनी—स्त्री० (फ़ा०) शव के साथ जाना । उदासी ।
मुरदा, मुरदार—वि० (फ़ा०) मरा हुआ ।
मुरधर—पु० मारवाड़ देश ।
मुरब्बा—पु० (अ०) चीनी के शीरे में रक्षित किया हुआ फलों का पाक । वर्ग।
मुरब्बी—वि० (अ०) पालन-करने वाला ।
मुरमुराना—अक्रि० चुरमुर-शब्द होना । [बाँसुरी ।
मुरलिका, मुरली—स्त्री०
मुरलीधर—पु० श्रीकृष्ण ।
मुरवा—पु० एड़ी के ऊपर पैर की गाँठ ।
मुरवी—स्त्री० प्रत्यंचा ।
मुरव्वत—स्त्री० (अ०) शील, लिहाज़ ।
मुरस्सा—वि० (अ०) जड़ाऊ।
मुरहाँ—पु० सिर ।
मुरहा—वि० नटखट । पु० श्रीकृष्ण ।
मुराड़ा—पु० दहकती लकड़ी।
मुराद—स्त्री० (अ०) अभिलाषा ।
मुरायठ, मुरेठा—पु० पगड़ी
मुरार—पु० कमलनाल ।
मुरारि—पु० श्रीकृष्ण ।
मुरासला—पु० (अ०) चिट्ठी, पत्र । [व्यवहार ।
मुरासलात—पु० (अ०) पत्र-
मुरासा—पु० कर्णफूल ।
मुरीद—पु० (अ०) चेला, अनुयायी ।

मुरुखाई—स्त्री० मूर्खता ।
मुरैला—पु० मोर का बच्चा ।
मुर्ग़—पु० (फ़ा०) कुक्कुट ।
मुर्तकिब—वि० (अ०) करने-वाला । [रखा हुआ ।
मुर्तहन—वि० (अ०) रहन-
मुर्तहिन—पु० (अ०) रहन-रखने वाला ।
मुर्दनी—स्त्री० (फ़ा०) मृत्यु के चिह्न, उदासी ।
मुर्री७—पु० ऐंठन, मरोड़ ।
मुर्वी—स्त्री० प्रत्यंचा ।
मुर्शिद—पु० (अ०) धर्म-गुरु । पथदर्शक ।
मुलकना—अक्रि० हिलना । पुलकित होना ।
मुल्की—वि० देश-संबन्धी।
मुलज़िम—वि० (अ०) अभियुक्त, दोषी ।
मुलतजी—वि० (अ०) प्रार्थी ।
मुलतानी—स्त्री० सिर आदि धोने की एक मिट्टी ।
मुलमची—पु० मुलम्मा करने वाला ।
मुलम्मा—पु० (अ०) क़लई । सोने चाँदी का पानी ।
मुलाक़ात—स्त्री० (अ०) भेंट, मिलाप ।
मुलाक़ाती—वि० परिचित ।
मुलाज़िम—पु० (अ०) नौकर
मुलाज़िमत—स्त्री० (अ०) नौकरी ।
मुलायम—वि० (अ०) नरम ।
मुलाहज़ा—पु० (अ०) निरीक्षण । लिहाज़ ।
मुलेठी—स्त्री० घुँघची की जड़

मुल्क—पु० (अ०) देश।
मुल्की—वि० (अ०) देश-सम्बन्धी।
मुल्तवी—वि० (अ०) स्थगित
मुल्ला—पु० (अ०) मौलवी। बड़ा विद्वान्।
मुवक्किल—पु० (अ०) वकील करने वाला। [उठाना।
मुवना९—अक्रि० दुःख-
मुवर्रख़ा—वि० (अ०) लिखित
मुवैयद—वि० (अ०) समर्थक
मुशज्जर—वि० (अ०) बेल-बूटेदार।
मुशफ़िक़—वि० (अ०) दयालु
मुशब्बह—वि० (अ०) समान। पु० उपमान।
मुशरब—पु० झरना, सोता।
मुशर्रफ़—वि० उच्च, प्रतिष्ठित
मुशली—पु० बलराम।
मुशायरा—पु० (अ०) कवि-सम्मेलन।
मुशाहरा—पु० (अ०) वेतन।
मुशीर—पु० (अ०) इशारा-करनेवाला। परामर्शदाता।
मुश्क—पु० (अ०) कस्तूरी। स्त्री० भुजा, कंधा और कोहनी के बीच का भाग।
मुश्किल—वि० (अ०) कठिन। स्त्री० कठिनाई।
मुश्की—वि० (अ०) कस्तूरी के रंग का, काला।
मुश्त—पु० (अ०) मुट्ठी।
मुश्तबहा—वि० (अ०) संदिग्ध
मुश्तरका—वि० (अ०) साझे का।
मुश्तरिक—वि० (अ०) शामिल
मुश्तहर—वि० (अ०) मशहूर किया गया, प्रकाशित।
मुश्तहिर—वि० (अ०) शोहरत करने वाला।
मुश्ताक़—वि० (अ०) इच्छुक
मुषा—स्त्री० सोना गलाने की घरिया।
मुषित—वि० चुराया हुआ।
मुषुर—स्त्री० भनभनाहट।
मुष्क—पु० अंडकोश। कस्तूरी। चोर।
मुष्टि—स्त्री० मुट्ठी। वि० मौन।
मुष्टिक४—पु० घूँसा। कंस का एक मल्ल। [हुआ।
मुष्टिगत—वि० मुट्ठी में पड़ा
मुसकराना—अक्रि० मंद हँसी।
मुसना—अक्रि० चुराया जाना
मुसन्ना—पु० (अ०) असली काग़ज़ की नक़ल।
मुसन्निफ़—पु० (अ०) ग्रन्थ-कार, लेखक।
मुसफ़्फ़ा—वि० (अ०) साफ़ किया हुआ।
मुसफ़्फ़ी—वि० (अ०) साफ़ करने वाला। [दृढ़।
मुसम्मम—वि० (अ०) पक्का,
मुसम्मा—वि० (अ०) नामी, नामक।
मुसम्मात—स्त्री० (अ०) औरत। वि० नाम की।
मुसम्मी—वि० (अ०) नाम-वाला। पु० एक फल।
मुसर्रत—स्त्री० (अ०) ख़ुशी।
मुसल—वि० मूर्ख। पु० मूसल।
मुसलमान—पु० (अ०) इस्लाम का अनुयायी, मुहम्मदी।
मुसलमाना—वि० (अ०) मुसलमान-संबन्धी। स्त्री० सुन्नत।
मुसलमीन—पु० (अ०) बहु० 'मुसलिम' का।
मुसलसल—वि० (अ०) सिलसिलेवार। [लमान।
मुसलिम—पु० (अ०) मुस-
मुसली—पु० बलराम।
मुसल्लम—वि० (अ०) समूचा
मुसल्ला—पु० (अ०) नमाज़ का आसन। [चित्रकार।
मुसव्विर२—पु० (अ०)
मुसाफ़िर—पु० (अ०) यात्री
मुसाफ़िरख़ाना—पु० (अ०) यात्रियों के टिकने का स्थान
मुसाफ़िरत—स्त्री० (अ०) सफ़र। परदेश।
मुसाफ़िराना—वि० (अ०) यात्रा-संबंधी। मुसाफ़िरों का
मुसाहब२—पु० (अ०) राज-दर्बारी। पार्श्ववर्ती।
मुसीबत—स्त्री० (अ०) आपत्ति
मुस्क्यान—स्त्री० मंदहँसी।
मुस्टंडा—वि० हृष्ट पुष्ट। गुंडा
मुस्तक—पु० मोथा।
मुस्तक़बिल—पु० (अ०) भविष्यत्काल। [स्थायी।
मुस्तक़िल—वि० (अ०) दृढ़।
मुस्तक़ीम—वि० (अ०) सीधा-खड़ा हुआ।
मुस्तग़ीस—पु० (अ०) फ़रि-यादी, दावेदार।
मुस्ततील—पु० (अ०) आयत क्षेत्र। [कार-
मुस्तदीर—वि० (अ०) गोला-

मुस्तफ़ा—वि० (अ०) साफ़-किया गया। पाक।
मुस्तस्ना—वि० (फ़ा०) अप-वाद-स्वरूप। अलग किया-हुआ। [कारी।
मुस्तहक़—वि० (अ०) अधि-
मुस्तैद२—वि० (अ०) तत्पर।
मुहकम—वि० (अ०) दृढ़ मुस्तैद, पक्का। [शिष्ट।
मुहज़्ज़ब—वि० (अ०) सभ्य,
मुहतमिम—पु० (फ़ा०, प्रबंधक
मुहताज२—वि० (अ०) दरिद्र, ग़रीब। [दोस्ती।
मुहब्बत—स्त्री० (अ०) प्रेम,
मुहम्मद—पु० (अ०) इस्लाम के प्रवर्त्तक।
मुहम्मदी—पु० मुसलमान।
मुहर—स्त्री० छाप। एक-सिक्का।
मुहर्रम—पु० (अ०) अरबी सालका प्रथम मास। शोक।
मुहर्रमी—वि० (अ०) शोक-सूचक, उदास। [करने वाला।
मुहर्रिक—पु० आन्दोलन-
मुहर्रिर२—पु० (अ०) लेखक।
मुहर्रिरी—वि० (अ०) लिखित।
मुहलत—स्त्री० (अ०) अवकाश
मुहल्ला—पु० नगर का कोई भाग।
मुहसिन—वि० (अ०) हितैषी।
मुहसिल—पु० (अ०) पैदल-सैनिक। वि० उगाहने वाला।
मुहाफ़ज़त—स्त्री० (अ०) रक्षा।
मुहाफ़िज़—वि० (अ०, संरक्षक।
मुहाल—वि० (अ०) असंभव। पु० मुहल्ला।
मुहावरा—पु० (अ०) लोकोक्ति। बोलचाल। अभ्यास
मुहासबा—पु० (अ०) हिसाब। पूछ ताछ।
मुहासिब—पु० (अ०, हिसाबी, गणितज्ञ।
मुहासरा—पु० (अ०) घेरा।
मुहासिल—पु० (अ०) कर-आदि वसूल करने वाला।
मुहिम—स्त्री० (अ०) चढ़ाई। युद्ध। कठिन-कार्य।
मुहुर्भाषा—स्त्री० बारंबार-कहना।
मुहुर्मुहुः—क्रि०वि० बारबार।
मुहूर्त्त—पु० शुभकाल।
मुहैया—वि० (अ०) तैयार, प्रस्तुत। [की प्रवृत्ति।
मुह्यता—स्त्री० मूर्च्छित होने-
मुह्यमान—वि० बेसुध।
मूँग—स्त्री० एक दाल का अन्न
मूँगफली—स्त्री० चिनिया-बादाम।
मूँगरी—स्त्री० तोप विशेष।
मूँगा—पु० विद्रुम-रत्न।
मूँछ—पु० ओंठ पर के बाल।
मूँज—स्त्री० एक तृण।
मूँड़—पु० सिर। [ठगना।
मूँड़ना—सक्रि० सिर घोटना।
मूँदना—सक्रि० बन्द करना। ढाँकना।
मूँदर—स्त्री० मुँदरी, अँगूठी
मूक३—वि० गूँगा।
मूकना—सक्रि० मुक्त करना।
मूका—पु० घूँसा। झरोखा।
मूखना—सक्रि० चुराना।
मूजिद—वि० (अ०) आवि-ष्कारक।
मूजिब—पु० (अ०) कारण।
मूज़ी१—पु० (अ०) दुष्ट।
मूठ—स्त्री० बेंट। मुट्ठी।
मूढ़३—वि० बेवक़ूफ़।
मूढ़गर्भ—पु० गर्भ का विकृत होना।
मूढ़ात्मा—वि० नासमझ।
मूत—वि० बँधा हुआ। पु० मूत्र।
मूतना—अक्रि० पेशाबकरना
मूत्र—पु० मूत, पेशाब।
मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात—पु० एक रोग जिसमें पेशाब रुक-रुक कर तथा कष्ट से होता है।
मूत्राशय—पु० मूत्र का स्थान
मूनिस—पु० (अ०) मित्र। सहायक।
मूर—पु० जड़। मूलधन। बूटी। [चित्र।
मूरत, मूरति—स्त्री० सूरत।
मूरतिवंत७—वि० सशरीर।
मूरि, मूरी—स्त्री० जड़ी।
मूरुख, मूर्ख३—वि० नासमझ
मूर्च्छा—स्त्री० बेहोशी।
मूर्च्छाल—वि० बेहोश।
मूर्छित४—वि० बेहोश।
मूर्त्त—वि० आकार वाला। ठोस।
मूर्त्ति—स्त्री० प्रतिमा। आकृति
मूर्त्तिपूजक१४—पु० मूर्त्ति की पूजा करने वाला। [साक्षात
मूर्त्तिमान्१३—वि० सदेह।
मूर्द्ध, मूर्द्धा—पु० सिर।

मूर्द्धज—वि० सिर से उत्पन्न, पु० बाल।
मूर्द्धन्य-वि० मूर्द्धा-संबंधी।
मूल—पु० जड़। पूँजी। उन्नीसवाँ नक्षत्र।
मूलक-पु० मूली। [चूल्हा।
मूलकारिका—स्त्री० रसोई।
मूलद्वार—पु० सदर दरवाज़ा।
मूलद्रव्य—पु० वे आदिम-द्रव्य जिनसे अन्य द्रव्यों का निर्माण हुआ।
मूलधन—पु० पूँजी।
मूलपुरुष—पु० आदि-पुरुष।
मूलभूत—पु० जड़, असलियत वि० असली, मौलिक।
मूलस्थली-स्त्री० थाला।
मूलिका—स्त्री० जड़ी।
मूली—स्त्री० एक जड़ जिसका शाक बनता है, मूलिका
मूलोच्छेद-पु० जड़ से उखाड़न।
मूल्य—पु० क़ीमत।
मूल्यवान्१३-वि० क़ीमती।
मूल्यांकन—पु० मूल्य-निर्णय, मोल, दाम।
मूष, मूषक१४—पु० चूहा।
मूषण—पु० चोरी करना।
मूसना—सक्रि० चुराना।
मूसल-पु० धान आदि कूटने का एक डंडा। बलदेवास्त्र।
मूसलचंद—वि० मूर्ख।
मूसलधार-क्रि० वि० बड़े ज़ोर से। [मोटी जड़।
मूसला—पु० तन्तु रहित-
मूसा—पु० चूहा। यहूदियों के एक पैग़म्बर।
मृग७—पु० पशु। हिरण।
मृगछाला—स्त्री० मृगचर्म।
मृगतृष्णा—स्त्री० वायु की लहरें जो रेतीली भूमि पर जल की तरह प्यासे हरिण को दिखाई पड़ती है।
मृगदाव—पु० वह वन जिस में मृग अधिक रहते हों।
मृगधर—पु० चंद्रमा।
मृगन—पु० खोज।
मृगनाथ, मृगराज—पु० सिंह।
मृगनाभि, मृगमद, मृगरोचन—पु० कस्तूरी।
मृगनैनी, मृगलोचना—स्त्री० मृग के से नेत्र वाली स्त्री।
मृगमद-पु० कस्तूरी।[तृष्णा।
मृगमरीचिका—स्त्री० मृग-
मृगमित्र—पु० चन्द्रमा।
मृगमेद, मृगरोचन-पु० कस्तूरी।
मृगया—पु० शिकार।
मृगयु—पु० शिकारी।
मृगव्य—पु० शिकार।
मृगलांछन—पु० चन्द्रमा। सुवर्ण-भस्म।
मृगशिरा—पु० पाँचवाँ नक्षत्र
मृगांक—पु० चन्द्रमा।
मृगादन—पु० चीता।
मृगित-वि० अन्वेषित।
मृगी—स्त्री० हरिणी। कस्तूरी। अपस्मार रोग।
मृगेंद्र, मृगेश—पु० सिंह।
मृजा—स्त्री० शुद्धी-करण।
मृड—पु० शिव।
मृणा, मृड़ानी—स्त्री० दुर्गा। पार्वती। [कमलनाल।
मृणाल, मृणालिका—स्त्री०
मृणालिनी—स्त्री० कमलिनी
मृत—वि० मुर्दा।
मृतकंबल—पु० कफ़न।
मृतक—पु० मुर्दा व्यक्ति।
मृतककर्म—पु० अंत्येष्टि।
मृतप्राय-वि० मरण-तुल्य।
मृतसंजीवनी-स्त्री० एक जड़ी जो मुर्दों को जिला देती है।
मृति—स्त्री० मौत।
मृत्तिका—स्त्री० मिट्टी।
मृत्पात्र-पु० मिट्टी का बर्त्तन।
मृत्युंजय—पु० शिव का एक रूप।
मृत्यु—स्त्री० मौत। [पृथ्वी।
मृत्युलोक—पु० यमलोक।
मृथा—क्रि० वि० वृथा।
मृदंग—पु० एक बाजा।
मृदु३, मृदुल३—वि० कोमल
मृन्मय-वि० मिट्टी का बना
मृषा-वि० झूठ। अव्य० व्यर्थ।
मृष्ट-वि० शुद्ध किया हुआ।
मेंगनी-स्त्री० बकरी आदि की लेंड़ी।
मेंड़—स्त्री० बाँध, घेरा।
मेंबर—पु० (अं०) सदस्य।
मेकलकन्या—स्त्री० नर्मदानदी
मेख़-स्त्री० (फ़ा०) खूँटा।
मेख़चू—पु० (फ़ा०) हथौड़ा
मेखला७—स्त्री० करधनी।
मेखली—स्त्री० करधनी। टाट, पट्टी।
मेगज़ीन-पु० (अं०) अस्त्रागार। बारूदख़ाना। मासिक पत्र।
मेघ—पु० बादल।
मेघजीवन—पु० पपीहा।
मेघज्योति—पु० इन्द्र।
मेघडंम्बर—पु० मेघ गर्जन।

बड़ा शामियाना।
मेघनाथ—पु० इन्द्र।
मेघनाद—पु० रावण का एक पुत्र। मोर।
मेघपुष्प—पु० जल।
मेघमाला—स्त्री० घटा।
मेघयोनि—स्त्री० धुआँ।
मेघराज, मेघवाहन—पु०इन्द्र
मेघसार—पु० कपूर।
मेघा—पु० मेंढक।
मेघागम—पु० वर्षा ऋतु।
मेघानंद—पु० बक। मोर।
मेचकइ—वि० काला। पु० धुआँ। बादल। [टेबुल।
मेज़—स्त्री० (फ़ा०) चौकी,
मेज़बान२—पु० (फ़ा०) मेहमानदार।
मेजर—पु० (अं०) फ़ौज का एक अफ़सर।
मेजा—पु० मेंढक। [प्रधान।
मेट—पु० (अं०) मज़दूरों का
मेटना—सक्रि० दे०'मिटाना'।
मेडिल—पु० (अं०) पदक।
मेढ़ी—स्त्री० तीन लड़ों की चोटी।
मेथी—स्त्री० एक साग।
मेथौरी—स्त्री० मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।
मेद—पु० चरबी, मज्जा।
मेदा—पु० आमाशय।
मेदिनी—स्त्री० पृथ्वी।
मेदुर—वि० चिकना, गाढ़ा।
मेध—पु० यज्ञ। बलिदान का पशु। [बुद्धि।
मेधा—स्त्री० धारणा-शक्ति।
मेधावी५—वि० बुद्धिमान्।

मेध्य—वि० पवित्र।
मेनका—स्त्री० एक अप्सरा।
मेनकात्मजा—स्त्री० पार्वती।
मेना—सक्रि० मोयन डालना
मेम—स्त्री० यूरोपीय महिला।
मेमना—पु० भेड़ का बच्चा।
मेमार२—पु० (अ०)राजगीर,
मेमोरियल—पु० (अं०) यादगार, स्मारक।
मेरवना—सक्रि० मिलाना।
मेराउ, मेराव—पु० मिलाप।
मेरु—पु० सोने का एक पर्वत
मेरुदंड—पु० रीढ़।
मेल—पु० मिलाप। सुलह।
मेलक—पु० मेल, संगम।
मेलना—सक्रि० मिलाना। पहनाना। डालना।
मेला—पु० भीड़, जमघट।
मेलाठेला—पु० भीड़भाड़।
मेलान—पु० पड़ाव।
मेली—वि० मित्र। परिचित।
मेव—पु० एक लुटेरी जाति।
मेवा—पु० सूखे फल।
मेवाफ़रोश—पु० (फ़ा०) मेवा बेचने वाला।
मेवासा—पु० क़िला।
मेवासी—पु० गृहस्वामी।
मेष—पु० भेड़। मेंढ़ा।
मेषकम्बल—पु० ऊनी कम्बल।
मेंहदी—स्त्री० एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ पीस कर रँगने के लिए हाथ-पाँवों में लगायी जाती है।
मेह—पु० वर्षा। बादल। प्रमेह-रोग।
मेहतर—पु० (फ़ा०) भंगी।

महापुरुष, सर्दार।
मेहन—पु० लिंग।
मेहनत—स्त्री० (अ०) परिश्रम। [श्रमिक।
मेहनताना—पु०(अ०) पारि-
मेहमान२—पु०(अ०)अतिथि
मेहमानदारी—स्त्री० (फ़ा०) अतिथि सेवा।
मेहमाननवाज़२—पु० (फ़ा०) मेहमान की ख़ातिर करनेवाला।
मेहर—स्त्री० (फ़ा०) कृपा।
मेहरबान२—वि० (फ़ा०) दयालु।
मेहरा—पु० ज़नखा।
मेहराब—स्त्री० (फ़ा०) द्वार के ऊपर बना हुआ अर्द्धवृत्ताकार भाग।
मेहरारू, मेहरी—स्त्री० पत्नी, स्त्री। [एक वचन।
मैं—सर्व० उत्तम पुरुष का-
मैंड—स्त्री० सीमा, प्रतिष्ठा।
मै—दे० 'मय'। [शाला।
मैकदा—पु० (फ़ा०) मधु-
मैकशी—स्त्री० (फ़ा०) शराबपना।
मैका—पु० नैहर।
मैख़ाना—पु० (फ़ा०) शराबमिलने का स्थान।
मैगल—पु० मस्त हाथी।
मैजिस्ट्रेट—पु० (अं०) न्यायकर्ता।
मैत्रावरुणि—स्त्री० अगस्त्य-ऋषि।
मैत्री—स्त्री० दोस्ती।
मैत्र्य—पु० मित्रता।

मैथिली—स्त्री० सीताजी ।
मैथुन—पु० स्त्री-प्रसंग ।
मैदा—पु० (फ़ा०) बहुत महीन आटा ।
मैदान—पु० (फ़ा०) विस्तृत-समतल भूमि ।
मैन—पु० कामदेव । मोम ।
मैनमय—वि० कामासक्त।
मैनसिल—पु० एक धातु ।
मैना—स्त्री० सारिका पक्षी।
मैनाक—पु० एक पर्वत ।
मैनेजर—पु० (अं०) प्रबन्धक
मै-नोशी—स्त्री० (फ़ा०) मद्यपान ।
मैमंत—वि० मतवाला ।
मैमत—स्त्री० ममता ।
मैयत—स्त्री० (फ़ा०) मृत्यु । शव ।
मैया—स्त्री० माता ।
मैरेय—पु० गुड़ शीरा की शराब ।
मैल—स्त्री० धूल । मलिनता
मैलख़ोरा—पु० मैल सोखने का कपड़ा ।
मैला१—वि० गंदा । पु० विष्ठा
मैलाकुचैला—वि० गंदा ।
मोंगरा—पु० बढ़िया बेल ।
मोंड़ा७—पु० लड़का ।
मोंढ़ा—पु० बाँस, बेत आदि का आसन ।
मोकना—सक्रि० छोड़ना ।
मोकल—वि० मुक्त । दूर-करने वाला ।
मोक्ष—पु० मुक्ति । उद्धार ।
मोखा—पु० झरोखा ।
मोघ—वि० व्यर्थ । निष्फल।
मोच—स्त्री० नस का अपने स्थान से हट जाना ।
मोचक—पु० सहिंजना ।
मोचन—पु० छुटकारा ।
मोचना—सक्रि० छोड़ना ।
मोची—पु० जूता बनानेवाला।
मोजज़ा—पु० (अ०) करामात।
मोज़ा—पु० (फ़ा०) जुराब ।
मोट—स्त्री० गठरी । चरसा । वि० मोटा ।
मोटरकार—स्त्री० (अं०) इंजन से चलने वाली आधुनिक युग की एक गाड़ी ।
मोटरी—स्त्री० गठरी ।
मोटा७—वि० स्थूल । घमंडी
मोटाना—अक्रि० मोटा होना ।
मोटिया—पु० कुली । गज़ी (कपड़ा) ।
मोठ—स्त्री० एक अनाज ।
मोठस—वि० चुप ।
मोड़—पु० घुमाव ।
मोड़ना—सक्रि० घुमाना ।
मोताद—स्त्री० (अ०) औषध आदि की निश्चित मात्रा ।
मोतिया—पु० पुष्प विशेष ।
मोती—पु० रत्न विशेष ।
मोतीचूर—पु० बूँदी का लड्डू।
मोतीझरा—पु० छोटी शीतला का रोग ।
मोतीभात—पु० विशेष रीति से तैयार किया गया भात ।
मोतीसिरी—स्त्री० मोतियों की माला ।
मोथरा—वि० कुंठित ।
मोथा—पु० एक प्रसिद्ध घास
मोद—पु० हर्ष । सुगंध ।
मोदक—पु० लड्डू ।
मोदना—अक्रि० मुदित होना ।
मोदी—पु० परचूनी ।
मोधुक—पु० मछुआ ।
मोन—पु० पिटारा ।
मोना—सक्रि० भिगोना । पु० झाबा ।
मोम—पु० (फ़ा०) एक चिकनी और मुलायम वस्तु जिससे मधु-मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं ।
मोमजामा—पु० मोम का रोगन चढ़ा हुआ कपड़ा ।
मोमदिल—वि० सहृदय. कोमल ।
मोमिन—पु० (अ०) धर्मिष्ठ-मुसलमान ।
मोमियाई—स्त्री० (फ़ा०) नक़ली शिलाजीत ।
मोमी—वि० (फ़ा०) मोम का
मोयन—पु० गूँधे हुए आटे में घी मिलाना ।
मोरंग—पु० नैपाल का पूर्वी हिस्सा ।
मोर—पु० (फ़ा०) चींटी । उड़नेवाला एक बड़ा पक्षी ।
मोरचंद्रिका—स्त्री० मोर के पंखपर की चंद्रकार बूटी ।
मोरचा—पु० (फ़ा०) ज़ंग, मैल । सुरक्षित स्थान, जहाँ से लड़ाई की जाय ।
मोरछल—पु० मोरपंख का बना चँवर ।
मोरछली—स्त्री० मौलसिरी ।
मोरट—पु० ईख की जड़ ।
मोरन—स्त्री० सिखरना

मोरपंखी—स्त्री० वह नाव जिसका एक सिरा मोर के पर के समान होता है।
मोरपखौआ—पु० मोरपंख।
मोरमुकुट—पु० मोर के पर का बना हुआ ताज।
मोराना—सक्रि० घुमाना।
मोरी—स्त्री० नाली। बागडोर
मोल—पु० क़ीमत।
मोवना—सक्रि० भिगोना।
मोष—पु० मोक्ष।
मोषक—पु० लुटेरा।
मोषण—पु० लूटना।
मोह१२—पु० प्रेम। दुलार। अज्ञान। भ्रम।
मोहक१४—वि० सुंदर।
मोहड़ा—पु० सिरा।
मोहतमिम—पु० (अ०) प्रबन्धकर्त्ता।
मोहन—पु० मोहने वाला। श्रीकृष्ण। [विशेष।
मोहनभोग—पु० हलुआ-
मोहनमाला—स्त्री० सोने के दानों की माला।
मोहना—अक्रि० रीझना। सक्रि० मोहित करना।
मोहनी, मोहिनी—स्त्री० रूपवती स्त्री। माया। वि० मोहनेवाली।
मोहमिल—वि० (अ०) अर्थ-रहित। व्यर्थ।
मोहर—स्त्री० (फ़ा०) ठप्पा। स्वर्ण-मुद्रा।
मोहरा—पु० (फ़ा०) छेद। शतरंज की गोटी। सेना की अगली पंक्ति।
मोहलत—स्त्री० (अ०) अवकाश। [मधुमक्खी।
मोहार—पु० द्वार। बड़ी-
मोहित—वि० मुग्ध। आसक्त।
मोही५—वि० मोहित करने वाला।
मौंगा७—वि० मौन।
मौंड़ा७—पु० बालक।
मौक़ा—पु० (अ०) अवसर।
मौक़ूफ़—वि० (अ०) बरखास्त। निर्भर।
मौक्तिक—पु० मोती।
मौखर्य—पु० मुखरता।
मौखिक—वि० ज़बानी।
मौज—स्त्री० (अ०) लहर। आनंद।
मौज़ा—पु० (अ०) गाँव।
मौजी—वि० लहरी, स्वेच्छाचारी।
मौज़ूं—वि० (अ०) तुला-हुआ, उपयुक्त, ठीक।
मौजूद—वि० (अ०) उपस्थित।
मौजूदगी—स्त्री० (अ०) हाज़िरी।
मौजूदा—वि० (अ०) प्रस्तुत।
मौत—स्त्री० (अ०) मृत्यु।
मौताद—स्त्री० (अ०) ख़ुराक
मौन—वि० चुपचाप। पु० चुप्पी। पिटारा। मोयन।
मौनव्रत—पु० न बोलने का नियम।
मौना—पु० डिब्बा।
मौनी—वि० चुप।
मौर७—पु० बौर। दूल्हे का मुकुट। [वाला।
मौरजिक—पु० मृदंग बजाने-
मौरना—सक्रि० बौर लगना
मौरी—स्त्री० वधू के सिर पर बाँधने का छोटा मौर।
मौरूसी—वि० (अ०) पैतृक।
मौर्ख्य—पु० मूर्खता।
मौर्वी—स्त्री० प्रत्यंचा।
मौलवी—पु० (अ०) अरबी का विद्वान्। मुसलमान धर्म का आचार्य। [वृक्ष।
मौलसिरी—स्त्री० बकुल, एक-
मौला—पु० (अ०) सरदार। हमसाया। मित्र। ईश्वर।
मौलाना—पु० (अ०) बड़ा विद्वान्, मौलवी।
मौलि—स्त्री० मस्तक, चोटी।
मौलिक—वि० मूल-सम्बन्धी। असल। मस्तिष्क की उपज से संपादित (रचना या आविष्कार आदि)
मौली—वि० मुकुट पहनने-वाला।
मौलूद—पु० (अ०) मुहम्मद साहब के जन्म का उत्सव। नवजात शिशु।
मौसर—वि० सुलभ।
मौसा—पु० मौसी का पति।
मौसिम—पु० ऋतु।
मौसी—स्त्री० माँ की बहिन।
मौसूफ़—वि० (अ०) प्रशंसित। उल्लिखित।
मौसेरा—वि० मौसी के सम्बन्ध का।
म्यान—पु० तलवार आदि का घर।
म्याना—पु० पालकी। वि० मोटा। मझोला।

म्युनिसिपैलिटी—स्त्री० (अं०) किसी नगर की स्वच्छता आदि की प्रबंध कारिणी-प्रतिनिध सभा ।

म्यूज़ियम—पु० (अं०) अजायबघर ।

म्रदिमा—स्त्री० मृदुता ।

म्रियमाण—वि० मरे हुए की भाँति ।

म्लान३—वि० मलिन ।

म्लिष्ट—वि० अस्पष्ट ।

म्लेच्छ—पु० वर्णसंकर जाति । वि० नीच ।

२६—य

यंता, यंतार—पु० सारथी । दमनकारक । [वाजा ।

यंत्र—पु० जंतर । कल ।

यंत्रक—पु० यंत्रों से वस्तुएँ बनाने वाला । [संचालन ।

यंत्रण—पु० नियमपूर्वक-

यंत्रणा—स्त्री० पीड़ा ।

यंत्रनाल—पु० कुएँ से पानी निकालने का नल ।

यंत्रमत्र—पु० जादू टोना ।

यंत्रयुग—पु० मशीनों का युग ।

यंत्रालय—पु० छापाख़ाना । यंत्रादि का स्थान ।

यंत्रिका—स्त्री० ताला ।

यंत्रित—वि० रोका हुआ । ताले में बन्द ।

यंत्री—पु० तांत्रिक ।

यक—वि० (फ़ा०) एक ।

यकज़बाँ—वि० (फ़ा०) बात का पक्का, सच्चा ।

यकजा, यकजाई—वि० (फ़ा०) एक स्थान में इकट्ठा ।

यकटक—क्रि० वि० निर्निमेष दृष्टि से । [तीय ।

यकता—वि० (फ़ा०) अद्वि-

यकबयक—क्रि० वि० (फ़ा०) अचानक ।

यकमुश्त—क्रि० वि० (फ़ा०) एक साथ । [एकसा ।

यकरंग—वि० (फ़ा०)

यकसाँ—वि० (फ़ा०) एक समान । [अचानक ।

यकायक—क्रि० वि० (फ़ा०)

यक़ीन—पु० (अ०) विश्वास

यक़ीनन्—क्रि० वि० (अ०) विश्वास-पूर्वक । [श्यम्भावी

यक़ीनी—वि० (अ०) अव-

यकृत—पु० जिगर ।

यक्ष७—पु० एक देवयोनि ।

यक्षकर्दम—पु० एक अंगराग ।

यक्षतरु—पु० वट-वृक्ष ।

यक्षधूप—पु० राल ।

यक्षपति, यक्षराज—पु० कुबेर

यक्षपुर—पु० अलकापुरी ।

यक्षिणी—स्त्री० यक्ष की स्त्री ।

यक्ष्मा—पु० तपेदिक ।

यगण—पु० छन्द में आने वाला एक गण ।

यगाना—वि० (फ़ा०) अपना

यजन—पु० यज्ञ करना ।

यजमान—पु० यज्ञकर्त्ता ।

यजमानी—स्त्री० यजमान का धर्म । पुरोहित-वृत्ति ।

यज़ीद—पु० (अ०) हज़रत इमाम की हत्या करनेवाला एक व्यक्ति ।

यजुर्वेद—पु० एक वेद ।

यज्ञ—पु० हवन । याग ।

यज्ञपत्नी—स्त्री० दक्षिणा ।

यज्ञपशु—पु० बलि पशु ।

यज्ञपुरुष—पु० विष्णु ।

यज्ञशाला—स्त्री० यज्ञ-मंडप ।

यज्ञसूत्र—पु० जनेऊ ।

यज्ञांग—पु० गूलर ।

यज्ञेश्वर—पु० विष्णु ।

यज्ञोपवीत—पु० जनेऊ ।

यज्वा—पु० यज्ञ करनेवाला ।

यति—पु० संन्यासी । विश्राम ।

यतिभंग—पु० छंद में उचित स्थान पर यति न पड़ने का दोष ।

यतीम—वि० (फ़ा०) अनाथ ।

यतीमख़ाना—पु० (अ०) अनाथालय ।

यत्किंचित्—वि० थोड़ा।
यत्न—पु० उद्योग।
यत्नवान्१३—वि०उद्योगी।
यत्र—क्रि० वि० जहाँ।
यत्रतत्र—क्रि०वि० जहाँ-तहाँ।
यथा—अव्य० जैसे। [लेवार-
यथाक्रम—क्रि०वि० सिलसि-
यथाजात—पु० मूर्ख।
यथातथ्य—अव्य० ज्यों का त्यों। [अनुकूल।
यथामति—क्रि०वि० बुद्धि के-
यथायथ, यथायोग्य—क्रि० वि० यथोचित रूप से। वि० उपयुक्त।
यथार्थ३—वि०ठीक, उचित।
यथावत्—अव्य०ज्यों का त्यों
यथाविधि—क्रि० वि० विधिवत्। उचित रीति से।
यथाशक्ति—क्रि०वि० भरसक
यथासंभव—क्रि० वि० जहाँ तक हो सके।
यथेच्छ—क्रि०वि० मनचाहा
यथेच्छाचार८—पु० मनमानी करना।
यथेप्सित—वि० मनचाहा।
यथेष्ट—वि० पर्याप्त, काफ़ी।
यथोचित—वि० यथायोग्य।
यदा—अव्य० जब।
यदाकदा—क्रि०वि० जब तक।
यदि—अव्य० अगर, जो।
यदीय—वि० जिसका।
यदुनंदन, यदुपति, यदुराई, यदुराज—पु० श्रीकृष्ण।
यदृच्छा—स्त्री०स्वेच्छाचार।
यद्यपि—अव्य० अगरचे।
यद्वातद्वा—क्रि० वि० जब-तब।
यम—पु० मृत्यु के एक देवता, धर्मराज। इन्द्रिय-निग्रह। जीव।
यमक—पु०एक काव्यालंकार।
यमज—पु० जुड़वाँ बच्चे। अश्विनीकुमार। [पिता।
यमदग्नि—पु० परशुराम के-
यमदिशा—स्त्री० दक्षिण-दिशा। [दूज।
यमद्वितीया—स्त्री० भैया-
यमधार—पु०दुधारी-तलवार।
यमन—पु० बंधन, रोक।
यमनिका—स्त्री० पर्दा। क़नात।
यमपुर७—पु० यमलोक।
यमभगिनी—स्त्री० यमुना।
यमयातना—स्त्री० नरक की पीड़ा।
यमराज—पु० यमों के राजा जो प्राणी को, मरने पर उसके कर्मानुसार फल देते हैं।
यमल—पु० जोड़ा।
यमलार्जुन—पु० कुबेर के दो पुत्र जो शाप वश पेड़ हो गये थे।
यमस्वसा—स्त्री०जमुना नदी।
यमी—स्त्री० यमुना नदी। प्रकृति।
यमुना—स्त्री० भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
यमुनाभ्रात—पु० यमराज।
यव—पु० जौ। वेग।
यवन७—पु० यूनानी। मुसलमान। वेग।
यवनाल—स्त्री० ज्वार।
यवनिका—स्त्री० नाटक का परदा।
यवानी—स्त्री० अजवाइन।
यव्य—पु० जौ का खेत।
यशःपटह—पु० नगाड़ा।
यश—पु० कीर्ति। [वाला।
यशस्वी५, यशी—वि० यश-
यशुमति—स्त्री० यशोदाजी।
यशोधरा—स्त्री० गौतम बुद्ध की स्त्री।
यष्टि—स्त्री० लाठी, छड़ी।
यष्टिका—स्त्री० छड़ी। गले का हार।
यष्टियंत्र—पु० धूपघड़ी विशेष
यह—सर्व० निश्चय वाचक-सर्वनाम।
यहाँ—क्रि०वि० इस जगह।
यहूद—पु० वह देश जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए थे।
यहूदी—पु० यहूद देश का।
या—अव्य० (फ़ा०) वा। सर्व० यह।
याक़ूत—पु० (अ०) 'लाल'-रत्न। [सम्बन्धी।
याक़ूती—वि० (अ०) लाल-
याग—पु० यज्ञ। [भिक्षुक।
याचक१४—पु० प्रार्थी।
याचना—सक्रि० माँगना। स्त्री० प्रार्थना।
याचित—वि० माँगा हुआ।
याचितक—पु० माँगने की वस्तु।
याच्य—वि०माँगने के योग्य
याजक१४—पु० यज्ञकर्ता।
याजन—पु० यज्ञ कराना।

याज्ञसेनी—स्त्री० द्रौपदी।
याज्ञिक७—पु० यज्ञ करने या कराने वाला।
यातन—पु० इनाम। बदला
यातना—स्त्री० पीडा।
याता१०—पु० जाने वाला। स्त्री० जेठानी या देवरानी
यातायात—पु०गमनागमन।
यातु, यातुधान—पु० राक्षस।
यात्रा—स्त्री० सफ़र।
यात्रिक—पु० यात्री। वि० यात्रा-संबंधी।
यात्री५—पु० पथिक।
याथातथ्य—पु० यथार्थता।
यादःपति—पु० समुद्र।
याद—स्त्री० (फ़ा०) स्मृति।
यादगार२-७—स्त्री० (फ़ा०) स्मारक। [स्मरणशक्ति।
यादेदाश्त—स्त्री० (फ़ा०)
यादव७—पु० यदुवंशी। श्रीकृष्ण।
यादसांपति—पु० वरुण।
यादृश—वि० जैसा।
यान—पु० विमान। गाड़ी। गमन।
यानी—अव्य०(अ०) अर्थात्
यापन६—पु० बिताना।
यापित—वि०बिताया हुआ।
याप्य—वि० अधम।
याफ़्त—स्त्री० (फ़ा०) पाना। आय। [हुआ।
याफ़्ता—वि० (फ़ा०) पाया-
याम—पु० समय। पहर।
यामघोष—पु० मुर्ग़ा।
यामाता—पु० दामाद।
यामल—पु०जुड़वाँ संतान।
यामि—स्त्री० रात। कन्या। पतोहू। धर्मपत्नी।
यामिक—पु० पहरुआ।
यामिनी—स्त्री० रात। [जार।
यार२—पु० (फ़ा०) मित्र।
याराना—पु० दोस्ती। वि० दोस्त का सा।
यावक—पु० महावर। उड़द
यावन—पु० लोबान।
यावनी—वि० यवनसंबंधी।
यावर२—पु० (फ़ा०)सहायक।
याष्टीक—पु० लाठी-धारी।
यास—स्त्री० (अ०) निराशा
यासमन—पु० (फ़ा०) चमेली
यासीन—स्त्री०(अ०) कुरान की एक आयत जो मृत्यु के समय प्राणी को सुनाई जाती है।
यियक्षु—वि० यज्ञ करने का इच्छुक। [हुआ।
युक्त—वि० सहित। मिला-
युक्ति—स्त्री०उपाय। तर्क।
युक्तियुक्त—वि० उचित।
युक्तिसंगत—वि० उचित।
युग—पु० जोड़ा। समय। समय का एक बड़ा परिमाण। वि० दो।
युगपत्—क्रि० वि० साथ-साथ। एक ही समय में।
युगल—पु० जोड़ा।
युगांतर—पु० दूसरा युग।
युग्म, युग्मक—पु० जोड़ा।
युग्मज—पु० जुड़वाँ बच्चे।
युज्यमान—वि० मिलने-योग्य
युत—वि० सहित।
युति—स्त्री० मेल, योग।
युद्ध—पु० लड़ाई।
युधिष्ठिर—पु० पांडु के ज्येष्ठ पुत्र। [इच्छा।
युयुत्सा—स्त्री० लड़ने की-
युयुत्सु—वि० लड़ने का इच्छुक। [सात्यकि।
युयुधान—पु०योद्धा। इन्द्र।
युवक,युवा—पु० जवान।
युवती—स्त्री० जवान स्त्री।
युवराज—पु० राजा का ज्येष्ठ पुत्र जो गद्दी का उत्तराधिकारी होता है।
यूथ—पु० समूह।
यूथप, यूथपति—पु०सेनापति
यूथिका—स्त्री० जूही।
यूनानी—पु० यूनान देश का निवासी।
यूनियन—पु० (अं०) संघ।
यूनिवर्सिटी—स्त्री० (अं०) विश्व-विद्यालय।
यूनिस—पु० (फ़ा०) खंभा। एक पैग़म्बर।
यूप—पु० यज्ञ स्तम्भ।
यूरोप—पु० (अं०) एक महाद्वीप।
यूसुफ़—पु० (फ़ा०) हज़रत याक़ूब के पुत्र।
यूह—पु० झुण्ड।
येनकेन—क्रि० वि० जैसे-तैसे
यों—अव्य० इस तरह।
योग—पु० जोड़। संयोग। एक शास्त्र।
योगक्षेम—पु० ख़ैरियत।
योगदान—पु०सहायता देना
योगनिद्रा—स्त्री० युग के अंत की विष्णु की निद्रा। समाधि।

योगपट्ट—पु० साधुओं की एक उपाधि।
योगफल—पु० मजमुआ।
योगमाया—स्त्री० विष्णु की माया। क़ुदरत।
योगरूढ़ि—पु० दो शब्दों के योग से बना वह शब्द जो अपने अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ बतलावे।
योगात्मा—पु० योगी।
योगासन—पु० योग-साधन के आसन। [चंडी देवी।
योगिनी—स्त्री० तपस्विनी।
योगिराज—पु० बड़ा योगी।
योगी—पु० आत्मज्ञानी।
योगेश्वर—पु० श्रीकृष्ण। श्रेष्ठ योगी।
योगेश्वरी—स्त्री० दुर्गा।
योगेष्ट—पु० सीसा।
योग्य—त्रि० क़ाबिल। श्रेष्ठ, समर्थ। [विद्वत्ता।
योग्यता—स्त्री० सामर्थ्य।
योजक१४—वि० जोड़ने वाला।
योजन—पु० मेल। चार कोस
योजनगंधा—स्त्री० राजा शांतनु की स्त्री सत्यवती।
योजना६—स्त्री० रचना। व्यवस्था। मेल।
योजनीय, योज्य—वि० मिलने योग्य।
योद्धा—पु० सैनिक, वीर।
योध—पु० योद्धा, भट।
योधन—पु० युद्ध। अस्त्र।
योनि—स्त्री० स्त्रियों का भग। खानि। गर्भ। प्राणिवर्ग का विभाग।
योम—पु० (अ०) दिन।
योषणा—स्त्री० कुलटा स्त्री।
योषा, योषिता—स्त्री० नारी।
यों—अव्य० इस प्रकार।
यौक्तिक—वि० युक्तियुक्त।
यौगिक—वि० दो शब्दों से मिलकर बना हुआ शब्द।
यौतुक—पु० दहेज।
यौत्स्ना—स्त्री० उजाली रात
यौधेय—पु० योद्धा।
यौवन—पु० जवानी।
यौवराज्य—पु० युवराज का पद या भाव।

२७—र

रंक—वि० निर्धन।
रंग—पु० नाच-गाना। प्रभाव। दशा वर्ण (लाल काला आदि)।
रंगक्षेत्र—पु० नाट्यशाला।
रंगढंग—पु० लक्षण। [रंग।
रंगत—स्त्री० हालत। मज़ा।
रंगतरा—पु० नारंगी विशेष।
रँगना९—सक्रि० रंग चढ़ाना। अक्रि० अनुरक्त होना।
रंगबाति—स्त्री० अंगराग-विशेष।
रंगबिरंगा—वि० विभिन्न-रंगों का।
रंगभवन, रंगमहल—पु० क्रीड़ा का स्थान।
रंगभूमि—स्त्री० क्रीड़ास्थल। नाटकशाला। रणभूमि।
रंगमंच—पु० नाटक का स्टेज।
रँगरली, रँगरेली—स्त्री० क्रीड़ा, विहार, आमोद-प्रमोद।
रँगरस—पु० आनंद, क्रीड़ा।
रँगरसिया—पु० विलासी।
रँगराता—वि० शोभामय।
रँगरूट—पु० नया सिपाही।
रंगरूप—पु० छवि, हुस्न।
रँगरेज़२—पु० (फ़ा०) कपड़ा रँगने वाला।
रँगवाना—सक्रि० रँगने का कार्य दूसरे से कराना।
रंगशाला—स्त्री० रंगस्थल। पु० नाट्यशाला।
रंगसाज़२—वि० (फ़ा०) रँगने का काम करने वाला
रँगाई—स्त्री० रँगने की क्रिया या मज़दूरी।
रंगाजीव—पु० चित्रकार।
रंगामेज़ी—स्त्री० रँगाई। बढ़ा-चढ़ा कर कहना।
रंगी ५—वि० मौजी।

रंगीन—वि० (फ़ा०) रँगा-हुआ। विलासी। [सुन्दर,
रँगीला७—वि० रसिक।
रंगोपजीवी—पु० नट। अभिनेता।
रंच, रंचक—वि० थोड़ा।
रंज—पु० (फ़ा०) दुःख,शोक
रंजक—वि० ख़ुश करने वाला। स्त्री० आग लगाने के लिए बन्दूक में रखने की बारूद। पु० रँगरेज़।
रंजन६—पु० प्रसन्न करना। रँगना। [भजना।
रंजना—सक्रि० रँगना।
रंजित—वि० रँगा हुआ। आसक्त।
रंजिश—स्त्री० (फ़ा०)वैमनस्य
रंजीदगी—स्त्री० (फ़ा०) रंजिश।
रंजीदा-वि०(फ़ा०) अप्रसन्न
रँड़ापा—पु० वैधव्य।
रंडी—स्त्री० वेश्या।
रँडुआ, रँडुवा—पु० जिसकी पत्नी मर गई हो। [वाला।
रंता१०—पु० रमण करने-
रंति—स्त्री० क्रीड़ा।
रंतिदेव—पु० एक प्राचीन-राजा।
रंद—पु० रोशनदान।
रंदा—पु० लकड़ा चिकनी करने का एक औज़ार।
रंधक१४—पु० रसोइया। नाशक। [नाशकरना।
रंधन६—पु०रसोई बनाना।
रंधित—वि० पकाया हुआ।
रंध्र—पु० छिद्र।
रंभ—पु०बाँस। घोर-शब्द। केला।
रंभन—पु० आलिंगन।
रंभा—स्त्री० एक अप्सरा। केला। [बोलना।
रँभाना—अक्रि० गाय का
रंभित—वि० शब्दित।
रंभोरु—वि० स्त्री० केले के वृक्ष के सामान जंघा वाली
रँहचटा—पु० चस्का।
रइकौ—क्रि० वि० ज़रा भी।
रइनि—स्त्री० रात्रि।
रई—स्त्री० मथानी। वि० अनुरक्त।
रईसर—पु० अमीर, धनी।
रउताई—स्त्री० स्वामित्व।
रऊसा—पु० (अ०) बहु० 'रईस' का।
रक़बा—पु० (अ०) क्षेत्रफल।
रक़म—स्त्री० (अ०) धन, ज़ेवर। [पावदान।
रक़ाब—स्त्री० ज़ीन का-
रक़ाबत—स्त्री० (अ०) प्रतिद्वंद्विता।
रक़ाबदार—पु०साईस। हलवाई। खानसामाँ।
रक़ाबी—स्त्री० (फ़ा०)तश्तरी।
रक़ीब—पु० (अ०) दोस्त। प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।
रक्त—पु० केशर। ख़ून।३वि० लाल।
रक्तकंठ—पु०कोयल।[का फूल
रक्तक—पु०केशर। दुपहरिया
रक्तचूर्ण—पु० सिंदूर।
रक्तजिह्व—पु० सिंह।
रक्तपा—स्त्री० जोंक।
रक्तपात—पु० ख़ून-ख़राबी।
रक्तपायी—पु०खटमल। वि०रक्त पीने वाला।
रक्तपित्त—पु०एक रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इन्द्रियों से रक्त गिरता है।
रक्तप्रदर—पु० स्त्रियों का एक रोग। [अनार।
रक्तबीज—पुं० एक राक्षस।
रक्तसार—पु० लाल-चदन। कत्था।
रक्तांग—पु० मूँगा। केसर।
रक्ताक्त-वि० अधिक लाल। ख़ून से रँगा हुआ।
रक्ताक्ष-पु०कपोत। सारस। चकोर। महिष।
रक्तातिसार—पु० वह अतिसार जिसमें दस्त के साथ ख़ून आता हो।
रक्ति—स्त्री० प्रेम। रत्ती।
रक्तिका—स्त्री० घुँघची। रत्ती
रक्तिमा—स्त्री० लालिमा।
रक्ष—पु० रक्षक। राक्षस। एक देवयोनि।
रक्षक१४, रक्षी५—पु० रक्षा-करने वाला।
रक्षण६—पु० रक्षा, पालन।
रक्षना—सक्रि० बचाना।
रक्षा—स्त्री० हिफ़ाज़त, बचाव
रक्षागृह—पु० ज़च्चाख़ाना।
रक्षाबंधन—पु० एक त्यौहार जो श्रावण की पूर्णिमा को पड़ता है।
रक्षित-वि०रक्षा किया हुआ।
रक्षिता—स्त्री० रक्षा। पु० रक्षा करने वाला।

रक्षी५—वि० रक्षक।
रक्ष्य—वि० रक्षणीय।
रक्ष्यमाण—वि० रक्षा किया जाता हुआ।
रखना९–सक्रि० रक्षा करना। नियुक्त करना।
रखवाला२—पु० रक्षक।
रखेल, रखैल–स्त्री० उपपत्नी।
रखैया—पु० रक्षक।
रग—स्त्री० (फ़ा०) नस।
रगड़—स्त्री० हलकी चोट। झगड़ा। [पीसना।
रगड़ना९—सक्रि० घिसना।
रगड़ा—पु० झगड़ा। रगड़।
रगण—पु० एक गण।
रगदल—वि० कुबड़ा।
रग़बत—स्त्री०(अ०) इच्छा, चाह।
रगरेशा—पु० (फ़ा०) शरीर की नसें। किसी विषय का भीतरी ज्ञान।
रगीला—वि० हठी।
रगेदना—सक्रि० खदेड़ना।
रघु—पु० रामचन्द्रजी के पूर्वज अयोध्या के एक प्रतापी राजा।
रघुनंदन, रघुनाथ, रघुपति, रघुराई—पु० श्रीरामचन्द्र।
रघुवीर—पु० श्रीरामचन्द्र।
रचक—पु० रचयिता।
रचना९—सक्रि० बनाना। सजाना। पुस्तक लिखना। स्त्री० रचने की क्रिया या भाव।
रचनात्मक—वि० कार्यरूप में परिणत होने वाला, अमली।
रचयिता१०—पु० बनाने-वाला। [मेंहदी लगाना।
रचाना—सक्रि० बनाना।
रचित—वि० रचा हुआ।
रचिपचि–क्रि० वि० परिश्रम-करके।
रचौंहा—वि० अनुरक्त।
रज—पु० वह रक्त जो मासिक धर्म के समय स्त्रियों की योनि से निकलता है। पराग। धोबी। रजोगुण। स्त्री० धूल।
रज़—पु० (फ़ा०) अंगूर।
रजक—पु० धोबी।
रजतंत—स्त्री० वीरता।
रजत—स्त्री० चाँदी। वि० सफ़ेद। [वर्ष का उत्सव।
रजतजयंती—स्त्री० पचीसवें-
रजतपट—पु० सफ़ेद पर्दा।
रजना—अक्रि० रँगा जाना।
रजनी—स्त्री० रात्रि। हलदी
रजनीचर—पु० राक्षस।
रजनीमुख—पु० संध्या।
रजब—पु० (अ०) अरबी चांद्रमास का सातवाँ महीना।
रजवती–वि०स्त्री० रजस्वला।
रजवाड़ा—पु० राज्य।
रजस्वला—स्त्री० वह स्त्री जो मासिक धर्म से हो।
रज़ा—स्त्री० (अ०) इच्छा।
रजाइ, रजाय—स्त्री० आज्ञा
रज़ाई—स्त्री० रुईदार ओढ़ना
रज़ामंदर—वि० (अ० फ़ा०) सहमत।
रजायसु—स्त्री० राजाज्ञा।
रजिस्टर—पु० (अं०) अँग्रेज़ी ढँग की बही।
रजिस्ट्री—स्त्री० (अं०) क़ानून के मुताबिक़ सर-कारी रजिस्टरों में दर्ज करने का काम।
रज़ील—वि० (अ०) नीच।
रज़्ज़ाक़—पु० (अ०) रोज़ी-देने वाला। ईश्वर।
रजु, रज्जु—स्त्री० रस्सी।
रजोगुण—पु० प्रकृति का वह गुण जिसमें भोग-विलास की इच्छा उत्पन्न होती है।
रजोदर्शन, रजोधर्म—पु० स्त्रियों का मासिक-धर्म।
रज़्म—स्त्री० (फ़ा०) युद्ध।
रज़्मगाह—पु० (फ़ा०) युद्ध-क्षेत्र।
रटंत—पु० रटना।
रट, रटन—स्त्री० बार-बार-कहना। [उच्चारण करना।
रटना—सक्रि० बार बार-
रढ़ना—सक्रि० रटना।
रण—पु० जग, युद्ध।
रणक्षेत्र–पु०,रणभूमि—स्त्री० लड़ाई का मैदान।
रणन—पु० बजना।
रणमत्त—पु० हाथी।
रणलक्ष्मी—स्त्री० विजयश्री।
रणसिंघा—पु० तुरही बाजा
रणस्तंभ—पु० विजय का स्मारक स्तंभ।
रणित—वि० बजाया हुआ।
रत—पु० मैथुन। प्रेम। वि० अनुरक्त। तत्पर।

रतनाली—स्त्री० कुटनी।
रतपति—पु० कामदेव।
रतनजोत—स्त्री० मणि-विशेष।
रतनार२—वि० कुछ लाल।
रतल—स्त्री० (अ०) २५ तोले ४॥ माशे का तौल। शराब का प्याला।
रताना—सक्रि० रत करना। अक्रि० रत होना।
रतायनी—स्त्री० वेश्या।
रतालू—पु० एक कंद जिसका शाक बनता है।
रति—स्त्री० कामदेव की स्त्री। प्रेम। मैथुन। शोभा
रतिक, रतीक—क्रि० वि० रत्ती-भर।
रतिजगा—पु०रात्रि-जागरण।
रतिदान—पु० संभोग।
रतिनायक, रतिपति, रतिराज—पु० कामदेव।
रतिभवन—पु० रतिक्रीड़ा का स्थान। [तरी।
रतूबत—स्त्री०(अ०) नमी,
रतिवत—वि० शोभाशाली।
रतीक—क्रि० वि० रत्तीभर।
रतौंधी—स्त्री० रात्रि को दिखाई न देने का रोग।
रत्ती—स्त्री० आठ माशे की तौल, घुँघची।
रत्न—पु० मणि। जवाहिर।
रत्नगर्भा—स्त्री० पृथ्वी।
रत्नद्रुम—पु० मूँगा।
रत्ननिधि—पु० समुद्र।
रत्नपारखी—पु० जौहरी।
रत्नवती—स्त्री० पृथ्वी।
रत्नसानु—पु० देवालय। सुमेरु पर्वत।
रत्नसू—स्त्री० समुद्र।
रत्नाकर—पु० समुद्र।
रत्नावली—स्त्री० मणिमाला
रथ—पु० एक गाड़ी। बेंत।
रथगर्भक—पु० पालकी।
रथचक्र—पु० बाईसिकल।
रथचरण—पु० चकवा।
रथपति—पु० सारथी।
रथयात्रा—स्त्री० आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होने वाला एक त्योहार।
रथवाह—पु०सारथी। घोड़ा
रथांग—पु० पहिया। चकवा
रथांगपाणि—पु० विष्णु।
रथिक—पु० रथारोही।
रथी—पु० रथ-सवार योद्धा। एक हज़ार योद्धाओं से अकेला युद्ध करने वाला। अरथी। [सारथी।
रथ्य—पु० रथ का चक्र।
रथ्या—स्त्री० बीच गाँव की गली। रथसमूह।
रद, रदन—पु० दाँत।
रदच्छद—पु० ओंठ।
रदपट—पु० ओंठ।
रदी—पु० हाथी। [क्रम।
रदीफ़—स्त्री० (अ०) अक्षर-
रद्द—वि० (अ०) बेकार। ख़ारिज। [फेर।
रद्दबदल—पु० (अ०) हेर-
रद्दा-पु०दीवार की लंबाई में एक बार की एक ईंट का जोड़
रद्दी—वि० (अ०) निकम्मा।
रनकना—अक्रि० घुँघरू-आदि का बजना।
रनना—अक्रि० बजना।
रनबंका७—पु० बहादुर।
रनवास—पु० रानियों रहने का महल।
रनित—वि० बजता हुआ।
रपटना९—अक्रि० फ़िसलना
रफ़—वि० (अं०) खुरदरा।
रफ़रफ़—पु० (अ०) मुहम्मद साहब की एक सवारी।
रफ़ल—पु० ऊनी चादर।
रफ़ा—वि० (अ०) दूर किया-हुआ [निवृत्त।
रफ़ादफ़ा—वि० (अ०) तय।
रफ़ीक़—पु० (अ०) दोस्त,
रफ़ू—पु० (अ०) फटे कपड़े का तागे से भरना।
रफ़ूगर—वि० (अ०) रफ़ू करने वाला।
रफ़ूचक्कर—वि० ग़ायब।
रफ़्त—वि० (फ़ा०) गया-हुआ।
रफ़्तनी—स्त्री०(फ़ा०) निर्यात
रफ़्तार—स्त्री० (फ़ा) चाल
रफ़्तारफ़्ता—क्रि० वि० (फ़ा०) धीरे धीरे।
रब—पु० (अ०) ईश्वर।
रबड़ी—स्त्री० चीनी मिश्रित-लच्छेदार दूध।
रबदा—पु०कीचड़।
रबर—पु० एक लचीला पदार्थ जो वृक्षों के दूध से बनता है।
रबाब—पु० (अ०)एक बाजा
रबी—स्त्री० (अ०) बसंत

ऋतु। बसंत ऋतु की फ़सल
रबी-उल् अव्वल—पु०(अ०) अरबी साल का तीसरा-महीना।
रबी-उस्सानी—पु० (अ०) अरबी साल का चौथा महीना।
रबीब—पु० (अ०) दूसरे का पाला पोसा लड़का। स्त्री के पहले पति का लड़का।
रब्त—पु० (अ०) अभ्यास।
रभस—पु० आनंद। उत्सुकता। दुःख।
रम—वि०सुन्दर। पु०पति। कामदेव। [झकोरा।
रमक—पु० प्रेमी। स्त्री०
रमकना—अक्रि० झूला-झूलना। थिरकते हुए चलना।
रमज़ान—पु० (अ०)मुसलमानों का नवां महीना।
रमज़ानी—वि० (अ०) रमज़ान में उत्पन्न। भुक्खड़।
रमण—पु० क्रीड़ा। वि० प्रिय। सुन्दर।
रमणी—स्त्री०सुन्दरी। स्त्री
रमणीक, रमणीय३—वि० सुन्दर।
रमता७—वि० अस्थिर।
रमना—अक्रि०रमण करना। पु० चरागाह। उद्यान।
रमल—पु० (अ०) पाँसे द्वारा शुभाशुभ फल जानने की विद्या।
रमसरा—पु० एक पौधा जो [illegible] के बीच में होता है, किन्तु उसमें रस नहीं होता।
रमा—स्त्री० लक्ष्मी।
रमाकांत,रमापति—पु०विष्णु।
रमाना—सक्रि० मुग्ध करना।
रमानिवास—पु० विष्णु।
रमित—वि० मुग्ध।
रमूज़—स्त्री० (अ०) रहस्य। संकेत। सैन।
रमैती—स्त्री० खेती के काम में किसानों की सहायता।
रमैनी—स्त्री० कथा, वर्णन
रमैया—पु० राम।
रम्ज—स्त्री० (अ०) संकेत। व्यंग्य। रहस्य।
रम्माल—पु० (अ०) रमल विद्या का जानने वाला।
रम्य४—वि० सुन्दर।
रम्यसानु—पु० पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि।
रम्या—स्त्री० गंगा। रात्रि।
रय—पु० वेग। धूल। [होना।
रयना—अक्रि० अनुरक्त-
ररकना—अक्रि० कसकना।
ररना—अक्रि० रटना।
रल, रलक—पु० कोठरी, कमरा।
रलना१—अक्रि० मिलना।
रलो—स्त्री०विलास, क्रीड़ा।
रल्लक—पु०कम्बल। कमरा।
रव—पु०ध्वनि। [उमगना।
रवकना—अक्रि० लपकना।
रवण—वि० चंचल। शब्दायमान। पु० कोकिल। भाँड़।
रवताई—स्त्री० स्वामित्व।
रवना—अक्रि०रमणकरना। बोलना।
रवन्ना—पु० महसूल की रसीद। रवाना किये हुए माल का विवरण-पत्र।
रवाँ—वि० (फ़ा०) प्रवाहमय। जारी। [उचित।
रवा—पु० कण। सूजी। वि०
रवादक—पु० रेहन-वस्तु का हड़प करने वाला।
रवादार२—वि० (फ़ा०) सम्बन्धी। शुभेच्छु। दानेदार। [प्रस्थान।
रवानगी—स्त्री० (फ़ा०)
रवाना२—वि० (फ़ा०) प्रस्थित।
रवारवी—स्त्री० शीघ्रता।
रवि—पु० सूर्य्य।
रवितनय—पु० शनि। कर्ण। यम।
रवितनया—स्त्री० यमुना।
रविप्रिय—पु० कमल।
रविमंडल—पु०सूर्य का घेरा
रविमणि—स्त्री० सूर्यकान्त-मणि।
रविवार—पु० इतवार।
रविश—स्त्री० (फ़ा०) चाल, ढंग।
रवीला—वि० रवादार।
रवैया—पु० (फ़ा०) चलन।
रशना—स्त्री०करधनी।जीभ
रशनागुण—पु० करधनी (तगड़ी)। जंजीर।
रशीद—वि० (अ०) सभ्य, शिक्षित।
रश्क—पु० (फ़ा०) ईर्ष्या।
रश्मि—स्त्री०किरण। लगाम

रस—पु० स्वाद। सार। आनंद। नौ की संख्या।
रसकेलि—स्त्री० क्रीड़ा। विहार।
रसकोरा—पु० रसगुल्ला।
रसखीर—स्त्री० मीठा भात।
रसगर्भ—पु० रसौत।
रसगुनी—पु० काव्य-मर्मज्ञ।
रसगुल्ला—पु० एक मिठाई।
रसग्रह—पु० जीभ।
रसज्ञ—पु० काव्य या संगीत का ज्ञाता।
रसज्ञा—स्त्री० जीभ।
रसद—स्त्री० (फ़ा०) भोजन का सामान। हिस्सा। वि० आनन्ददाता।
रसधातु—पु० पारा।
रसना—पु० स्वाद। जीभ।
रसना—अक्रि० टपकना। अनुरक्त होना। स्त्री० जीभ। करधनी। [अग्रभाग।
रसनाग्र—पु० जिह्वा का-
रसपति—पु० चंद्रमा। पारा। शृंगार रस।
रसभरी—स्त्री० मकोइया।
रसभीना—वि० आनंद में मग्न। [रस-मग्न।
रसमसा—वि० गीला।
रसरस-क्रि० वि० धीरे-धीरे।
रसराज—पु० पारा। शृंगार रस।
रसरी—स्त्री० रस्सी।
रसवती—स्त्री० रसोई घर।
रसवाद—पु० प्रेम की बात।
रसाँ—वि० (फ़ा०) पहुँचाने-वाला।

रसा—स्त्री० पृथ्वी। जीभ। पु० शोरबा।
रसाई—स्त्री० (फ़ा०) पहुँच।
रसातल—पु० पृथ्वी के नीचे का एक लोक, पाताल।
रसात्मक—वि० रसमय।
रसादार—वि० शोरबेदार।
रसापायी—पु० जीभ से पानी पीने वाला जीव।
रसायन—पु० रस-विद्या, कीमिया।
रसायनशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के तत्व तथा उनके परिवर्तित रूप का विवेचन हो।
रसाल—पु० आम। ऊख। वि० रसीला। मीठा।
रसालय—पु० विलास स्थान।
रसाला—स्त्री० एक चटनी। दाख। जीभ।
रसिक, रसी—पु० रसज्ञ। सहृदय।
रसिका—स्त्री० जीभ। मैना।
रसित—वि० रसयुक्त। पु० ध्वनि। [गीत।
रसिया—पु० रसिक। एक-
रसीद—स्त्री० (फ़ा०) प्राप्ति-पत्र, पहुँच। [हुआ।
रसीदा—वि० (फ़ा०) पहुँचा-
रसीदी—वि० (फ़ा०) रसीद-सम्बन्धी।
रसील, रसीला—वि० रसमय
रसूम—पु० (अ०) दस्तूर, चलन।
रसूल—पु० (अ०) पैग़म्बर।
रसेंद्र—पु० पारा।

रसेश—पु० श्रीकृष्ण। पारा। नमक।
रसोई—स्त्री० भोजन।
रसोनक—पु० लहसुन।
रसोपल—पु० मोती।
रसौत—स्त्री० एक औषध।
रसौर—पु० ईख के रस की खीर। [एक जाति।
रस्तोगी—पु० वैश्यों की
रस्म—स्त्री० (अ०) चलन, व्यवहार।
रस्सा—पु० मोटी रस्सी।
रहँकला—पु० छकड़ा। तोप विशेष। [की गाड़ी।
रहट—पु० पानी निकालने
रहन, रहनि—स्त्री० रहने की क्रिया या ढंग। प्रीति।
रहनसहन—पु० रहने का ढंग।
रहना—अक्रि० निवास करना।
रहनुमा, रहबर—वि० (फ़ा०) मार्ग-दर्शक।
रहम—पु० (अ०) दया।
रहमत—स्त्री० (अ०) कृपा।
रहमदिल—वि० (अ० फ़ा०) दयालु।
रहमान, रहीम—पु० (अ०) ईश्वर। वि० दयालु।
रहल—स्त्री० पुस्तक रखने की कैंचीदार चौकी।
रहसना—अक्रि० हर्षित होना।
रहसि—स्त्री० एकांत स्थान।
रहस्य—पु० गुप्तभेद।
रहस्यवाद—पु० वह मत जिसमें अज्ञात के प्रति जिज्ञासा हो। जिसमें

दार्शनिक भाव हों।
रहाइश—स्त्री० रहन-सहन का ढंग। रहने का स्थान।
रहासहा—वि० बचाखुचा।
रहित—वि० बिना।
रहिला—पु० चना।
राँक, राँकब—वि० निर्धन।
राँगा—पु० एक धातु।
राँचना—अक्रि० प्रेम में डूबना। सक्रि० रँगना। बनाना।
राँटा—पु० टिटिहरी।
राँध—पु० पास, पड़ोस।
राँधना—सक्रि० पकाना।
राइफ़ल—स्त्री० (अं०) बड़ी बन्दूक।
राइ, राउ—पु० राजा।
राई—स्त्री० छोटी सरसों।
राउत—पु० सरदार। वीर।
राउर—सर्व० आपका।
राका—स्त्री० पूर्णिमा। पूर्णिमा की रात।
राकापति, राकेंदु, राकेश—पु० पूर्णमासी का चन्द्रमा।
राक़िम—वि०(अ०) लिखनेवाला।
राक्षस७—पु० दैत्य, दुष्ट।
राक्षा—स्त्री० महावर।
राख—स्त्री० भस्म।
राखी—स्त्री० रक्षा-बन्धन।
राग—पु० सांसारिक भोग की लिप्सा। प्रेम। लाल रँग। गाने की ध्वनि।
रागना—अक्रि० राग अलापना।
रागरंग—पु०गाना-बजाना।

रागान्वित—वि० प्रेम-युक्त।
रागिनी—स्त्री० संगीत में राग की स्त्री।
रागी५—पु० प्रेमी। वि० विषय में लिप्त। लाल। अनुरक्त।
राघव—पु० श्रीरामचन्द्र।
राछ—पु० जलूस। लकड़ी का गूदा। एक अस्त्र।
राज—पु० राज्य। राजा। राजगीर।
राज़—पु० (फ़ा०) रहस्य।
राजकीय—वि० राज्य-संबंधी। सरकारी।
राजकुमार७—पु० राजपुत्र।
राजगद्दी—स्त्री० राजसिंहासन। राजतिलक।
राजगीर—पु० मेमार।
राजत—वि० चाँदी का।
राजत्व—पु० राजा का भाव या धर्म।
राजदंड—पु० राज्य की ओर से दिया गया दंड।
राजदंत—पु० सामने के ऊपर और नीचे के दो दो बड़े दाँत।
राज़दार२—पु० (फ़ा०) रहस्य जानने वाला। साथी।
राजद्रोह—पु० बग़ावत।
राजद्वार—पु० न्यायालय। बड़ा फाटक। [केन्द्र।
राजधानी—स्त्री० शासन-
राजना—अक्रि० शोभा देना।
राजनिष्ठ—वि० राज-काज में संलग्न।

राजनीतिक, राजनैतिक—वि० राजनीति-संबन्धी।
राजन्य—पु० क्षत्रिय। राजा
राजपंखी—पु० बड़ा पक्षी।
राजपत्र—पु० गज़ट।
राजपथ, राजमार्ग—पु० चौड़ी सड़क। [कर्मचारी।
राजपुरुष—पु० राज्य का
राजबाहा—पु०बड़ी नहर जिससे छोटी नहरें निकाली जाती हैं।
राजबीजी—वि० राज वंशका।
राजभक्त—वि० राजा का सेवक।
राजमहल—पु०राज-प्रासाद।
राजमान—वि० बैठा हुआ।
राजयक्ष्मा, राजरोग—पु० क्षयरोग।
राजराज—पु० कुबेर।
राजराजेश्वर—पु० शाहंशाह
राजर्षि—पु० क्षत्रिय-ऋषि।
राजलोक—पु० राजमहल।
राजवंश्य—वि० राजा के वंश का।
राजवल्लभ—पु० बड़ा आम। खिरनी। बड़ा बेर।
राजविद्रोह—पु० बग़ावत।
राजवृक्ष—पु० अमलतास।
राजस—वि० रजोगुणी। पु० क्रोध।
राजसत्ता—स्त्री० राजशक्ति।
राजसदन—पु० राजा का महल।
राजसभा—स्त्री० राज-दरबार
राजसारस—पु० मोर।
राजसी—वि० राजा के योग्य। रजोगुणी।

राजसूय—पु० यज्ञ विशेष।
राजस्थान—पु०राजपूताना।
राजस्व—पु० राजकर।
राजहंस—पु० सुर्ख़ चोंच और सुर्ख़ पाँव का हंस।
राजहार—पु० राजा के निजी व्यय का धन।
राजा—पु० बादशाह।
राजादन—पु० चिरौंजी।
राजाधिराज—पु० राजाओं का राजा। सम्राट्।
राजानक—पु० अधीन राजा
राजाभियोग—पु० प्रजा की इच्छा के विरुद्ध उससे राज-काज कराना।
राजि,राजिका, राजी—स्त्री० श्रेणी। क़तार। रेखा। राई।
राज़िक़—पु० (अ०) रोज़ी-देने वाला। ईश्वर।
राजित—वि० सुशोभित।
राजिल—पु० दुमुँहा साँप।
राजिव, राजीव—पु० कमल
राज़ी—वि० (अ०) प्रसन्न। सहमत। [सुलहनामा।
राज़ीनामा—पु० (फ़ा०)
राजेंद्र—पु०सम्राट्। [चारी।
राजोपजीवी—पु० राजकर्म
राज्ञी—स्त्री० रानी।
राज्य—पु० शासन। राजा के अधीनस्थ देश।
राज्यतंत्र—पु० शासन-व्यवस्था। [प्रबंध। क़ानून।
राज्यव्यवस्था—स्त्री० राज्य-
राज्यांग—पु० राजा, मंत्री, मित्र, कोष, दुर्ग और सेना. राज्य के ये छः अंग हैं।

राट—पु० राजा।
राटुल—पु० बहुत बड़ी तराज़ू ,तक।
राड़, राढ़—वि० नीच।
राठौर—पु० राजपूतों की एक जाति।
राणा—पु०राजा।
रातना—अक्रि० लाल रँगा-जाना। अनुरक्त होना।
राता७—वि० लाल। रंगीन
रातिब—पु० (अ०) पशुओं का चारा। बँधा हुआ-भोजन, राशन।
रात्रि—स्त्री० रात।
रात्रिचर—पु० राक्षस।
राद्ध—वि० पकाया हुआ।
राध—पु० बैसाख मास।
राधन—पु० साधन।
राधना—सक्रि० उपासना-करना, साधना।
राधा—स्त्री० श्रीकृष्ण की प्रेयसी। विशाखा नक्षत्र। वैशाख की पूर्णिमा।
राधारमण—पु० श्रीकृष्ण।
राधिका—स्त्री० राधाजी।
राधिकारौन—पु० श्रीकृष्ण।
राधेय—पु० कर्ण।
रान—स्त्री० (फ़ा०) जंघा।
राना—पु० राजा। अक्रि० रँगना।
राब—स्त्री० गन्ने को औटा कर गाढ़ा किया हुआ रस।
राम—पु० रामचन्द्र। बल-राम। परशुराम। तीन की संख्या।
राम—वि० (फ़ा०) अनुचर।

रामकहानी—स्त्री० बड़ी, तथा दुःख पूर्ण कथा।
रामकेला—पु० एक प्रकार का आम। बड़ा केला।
रामचंगी—स्त्री०तोप विशेष
रामचेरा—पु० ग़ुलाम।
रामजना७—पु० एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या का काम करती हैं।
रामठ—पु० हींग।
रामतरोई—स्त्री० भिंडी।
रामति—स्त्री० भिक्षार्थ-भ्रमण
रामदाना—पु० चौलाई का जाति का एक पौधा[नवमी।
रामनवमी—स्त्री० चैत्र शुक्ल-
रामफल—पु० शरीफ़ा।
रामरज—स्त्री० एक पीली मिट्टी।
रामरस—पु० नमक।
रामराज्य—पु० सुख तथा समृद्धिशाली राज्य।
रामराम—पु० नमस्कार।
रामरौला—पु० शोरगुल।
रामलीला—स्त्री० राम के कार्यों का अभिनय।
रामबाण—वि० अचूक। प्रभावोत्पादक।
रामसेतु—पु० रामेश्वर के पास की समुद्री चट्टानें।
रामा—स्त्री० सुंदरी। सीता। लक्ष्मी। विहार के योग्य-स्त्री। [के सम्प्रदाय का।
रामानंदी—वि० रामानंद-
रामानुज—पु० एक वैष्णव-आचार्य।

रामायण—स्त्री० राम-कथा। वह ग्रंथ जिसमें रामकथा का वर्णन है।
रामायुध—पु० धनुष।
रामिल—पु० प्रेम पात्र।
राम्या—स्त्री० रात।
राय—स्त्री० (अ०) सलाह। पु० (हिं) राजा।
रायगाँ—वि० (फ़ा०) व्यर्थ।
रायज—वि० (अ०) प्रचलित
रायता—पु० दही का बना हुआ एक व्यंजन।
रायमुनी—स्त्री० 'लाल' पक्षी।
रायल्टी—स्त्री० (अं०) किसी पुस्तक की बिक्री पर लेखक को प्रकाशक की ओर से मिलने वाला पारिश्रमिक।
रार—स्त्री० झगड़ा।
राली—स्त्री० धूप। लार।
राव—पु० राजा। सरदार। भाट। शब्द।
राव-चाव—पु० लाड़-प्यार।
रावट—पु० महल।
रावटी—स्त्री० छोलदारी।
रावणि—पु० रावण का पुत्र
रावत—पु० छोटा राजा। सरदार। वीर।
रावल—पु० राजा। अन्तःपुर
राशि—स्त्री० ढेर, समूह।
राशिचक्र—पु० राशियों का समूह। [खोर।
राशी—पु० (अ०) रिश्वत-
राष्ट्र—पु० राज्य। देश। प्रजा
राष्ट्रपति—पु० प्रजातंत्र राज्य का अधिनायक।
राष्ट्रपतिक—वि० राष्ट्रपति-संबंधी
राष्ट्रभाषा—स्त्री० वह भाषा जिसमें राज्य का काम-काज हो।
राष्ट्रिय—पु० राजा का साला
राष्ट्रीय—वि० राष्ट्रसंबंधी।
राष्ट्रीय-महासभा-स्त्री० कांग्रेस
रास—पु० (अ०) एक प्रकार का नृत्य। लगाम। सिरा। अन्तरीप। रास्ता। राह। वि० अनुकूल। [करने वाला।
रासधारी—पु० रासलीला-
रासनशीन—वि० मुतबन्ना।
रासभ७—पु० गधा। खच्चर।
रासलीला—स्त्री० कृष्णलीला-संबंधी-अभिनय।
रासायनिक—वि० रसायन-शास्त्र का ज्ञाता। अभिनय
रासु—वि० उचित।
रासो—पु० वह काव्य जिसमें किसी राजा के युद्ध आदि की घटनाओं का वर्णन हो।
रास्त—वि० (फ़ा०) सही। सीधा। सत्य। दाहिना।
रास्ता, राह—पु० (फा०) मार्ग।
रास्ती—स्त्री० (फ़ा०) सचाई
रास्ना—स्त्री० तुलसी।
रास्य—पु० श्रीकृष्ण।
राहगीर—पु० (फ़ा०) पथिक
राहगुज़र—पु० (फ़ा०) मार्ग, सड़क।
राहज़नर—पु० (फा०) डाकू
राहत—स्त्री (अ०) चैन, आराम
राहदारी—स्त्री० सड़क का कर
राहरीति—स्त्री० व्यवहार।
राह व रब्त—स्त्री० (फ़ा०) मेल-जोल। [रखने वाला।
राहिन—पु० (अ०) रेहन-
राही—पु० (फ़ा०) मुसाफ़िर।
राहु—पु० एक ग्रह। रोहू-मछली।
राहुल—पु० बुद्ध-तनय।
रिंगण, रिंगन—स्त्री० रेंगना।
रिंगत—वि० रेंगती हुई।
रिंद—वि० (फ़ा०) मस्त। पु० स्वतंत्र-व्यक्ति।
रिआयत—स्त्री० (अ०) नरमी। दयायुक्त व्यवहार।
रिआया—स्त्री० (अ०) प्रजा।
रिकर्ड—पु० (अं०) काग़ज़-पत्र।
रिकशा—स्त्री० मनुष्य द्वारा खींची जाने वाली एक गाड़ी।
रिक्त४—वि० ख़ाली।
रिक्ता—स्त्री० चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ।
रिक्ति—स्त्री० शून्यता।
रिक्ष—पु० भालु।
रिक्षपति—पु० चन्द्रमा। जामवंत।
रिज़र्व—वि० (अं०) सुरक्षित।
रिज़वाँ—पु० (अ०) एक देवदूत जो स्वर्ग का दरबान माना गया है।
रिज़ालत—स्त्री० (अ०) नालायक़ी। [दुष्ट, पाजी।
रिज़ाला—वि० (अ०) नीच,
रिज़ाली—स्त्री० बेहयापन।
रिज़्क़—पु० (अ०) जीविका।
रिझवार—पु० रीझने वाला
रिझाना—सक्रि० प्रसन्न करना।

रिटायर्ड—वि०(अं०) अलग-हुआ।
रितवना—सक्रि० रिक्त करना
रिपु३—पु० शत्रु।
रिपोर्ट—स्त्री०(अं०) विवरण। सूचना। [दाता।
रिपोर्टर—पु० (अं०) संवाद-
रिफ़ार्म—पु० (अं०) सुधार।
रिमझिम—स्त्री० हलकी वर्षा।
रिया—स्त्री० (अ०) छल।
रियाई—वि० (अ०) धूर्त्त।
रियाज़—पु०(अ०) अभ्यास। मेहनत। तप।
रियाज़ी—स्त्री० (अ०) गणित
रियासत—स्त्री० (अ०) राज्य।
रियाह—स्त्री० (अ०) शरीर के अन्दर की आयु।
रिरिहा—पु० गिड़गिड़ा कर माँगने वाला। [चलन।
रिवाज—पु० (अ०) प्रथा,
रिश्ता—पु०(फ़ा०) नाता।
रिश्तेदार२—पु० (फ़ा०) संबंधी।
रिश्वत—स्त्री०(अ०) घूँस।
रिश्वतख़ोर२—वि० (अ० फ़ा०) घूँस लेने वाला।
रिष्ट—पु० भलाई। वि० प्रसन्न।
रिष्टि—स्त्री० तलवार।
रिस—स्त्री० क्रोध।
रिसना—सक्रि० टपकना।
रिसहा—वि० क्रोधी।
रिसाना—अक्रि० नाराज़ होना।
रिसाल—पु० ख़िराज।
रिसालत—स्त्री० (अ०) पैग़म्बरी। दूतपना।
रिसालदार—पु० (अ०) घुड़सवार-सेना का अफ़सर।
रिसाला—पु०(अ०) घुड़सवार सेना। (फ़ा०) मासिक-पत्र। गुटका।
रिसिक—स्त्री० तलवार।
रिसौहाँ—वि० क्रोध-युक्त।
रिहर्सल—पु० (अं०) नाटक आदि की तालीम।
रिहल—स्त्री० (अ०) पुस्तक रखने की क़ैंचीनुमा चौकी।
रिहलत—स्त्री० (अ०) प्रस्थान, कूच। मृत्यु।
रिहा—वि०(फ़ा०) मुक्त।
रिहाई—स्त्री० (फ़ा०) छुटकारा।
रींधना—सक्रि० पकाना।
रीछ—पु० भालू।
रीज्या—स्त्री० भर्त्सना।
रीझना—अक्रि० प्रसन्न होना। चुरना।
रीठा—पु० एक वृक्ष तथा उसका फल। [हड्डी।
रीढ़—स्त्री० पीठ के बीच की-
रीढ़ा—स्त्री० तिरस्कार।
रीतना—अक्रि० ख़ाली होना
रीता—वि० ख़ाली।
रीति—स्त्री० चलन, ढंग।
रीम—स्त्री० (अं) ५०० शीट काग़ज़ का बंडल। पु० (फ़ा०) मवाद, पीब।
रीस—स्त्री० समानता। क्रोध
रुंज—पु० एक बाजा।
रुंड—पु० बिना सिर का धड़
रुंडिका—स्त्री० रणक्षेत्र।
रुँधना९—अक्रि० उलझना। रुँधा जाना।
रु—अव्य० और। [आतंक।
रुआब—पु० (अ०) दबदबा,
रुकना—अक्रि० ठहरना। थमना।
रुकावट—स्त्री० रोक, बाधा।
रुक़्क़ा—पु० (अ०) पुरज़ा। ऋणपत्र। [कार्यकर्त्ता
रुक्न—पु० (अ०) स्तम्भ।
रुक्म—पु० सोना। धतूरा।
रुक्मकारक—पु० सोनार।
रुक्मिणी—स्त्री० श्रीकृष्ण की पटरानी।
रुक्ष३—वि० नीरस। पु० पेड़।
रुख़—पु० (फ़ा०) कपोल। मुख। प्रवृत्ति। क्रि० वि० तरफ़। [बिदाई।
रुख़सत—स्त्री०(फ़ा०) छुट्टी।
रुख़सती—स्त्री०(अ०) बिदाई।
रुख़सार—पु० (फ़ा०) कपोल।
रुख़सारा—पु० (फ़ा०) गाल का ऊपरी भाग, गाल।
रुखाई—स्त्री० रूखापन।
रुखानी—स्त्री० बढ़इयों का एक औज़ार।
रुग्ण—वि० रोगी।
रुचक—पु० माला। कबूतर। वि० ज़ायक़ेदार।
रुचना—अक्रि० इच्छानुकूल होना।
रुचि३—स्त्री० इच्छा। अनुराग। सौंदर्य। स्वाद।
रुचिकर, रुचिकारक—वि० अच्छा लगने वाला।

रुचित—वि० इच्छित।
रुचिर, रुच्य, रुचिष्य—वि० सुंदर।
रुज८—पु० रोग। पीड़ा।
रुजग्रस्त—वि० रोगी।
रुजा—स्त्री० रोग। [समूह।
रुजाली—स्त्री० रोगियों का-
रुजू—वि० (अ०) प्रवृत्त। स्त्री० प्रवृत्ति, अनुरक्ति। पुनर्विचार।
रुठाना—सक्रि०क्रुद्ध करना।
रुणित—वि० बजता हुआ।
रुत—पु० ध्वनि। [ओहदा।
रुतबा—पु० (अ०) प्रतिष्ठा।
रुदन—पु० रोना।
रुदित४—वि० रोता हुआ।
रूद्ध—वि० रुका हुआ।
रुद्र—पु० शिवजी। वि० डरावना। ग्यारह की संख्या।
रुद्रतेज—पु० षडानन।
रुद्रपति—पु० शिव।
रुद्राक्ष—पु० एक वृक्ष तथा उसका बीज।
रुद्राणी—स्त्री० पार्वती।
रुद्रावास—पु० काशी। कैलाश। श्मशान।
रुद्री—स्त्री० शिवस्तुति-सम्बन्धी-वैदिक ऋचाओं का एक संग्रह।
रुधिर—पु० खून।
रुनझुन—स्त्री० झंकार।
रुनाई—स्त्री० लालिमा।
रुनित—वि० बजता हुआ।
रुपना—अक्रि० अड़ना।
जमना। [एक हिस्सा।
रुपया—पु०सोलह आने का-
रुपहला७—वि० चाँदी के रँग का।
रुबा—वि० (अ०) चौथाई।
रुबाई—स्त्री० (अ०) उर्दू-छन्द विशेष।
रुब्ब—पु० (अ०) पका कर गाढ़ा किया हुआ रस।
रुमा—स्त्री० सुग्रीव की स्त्री।
रुमाली—स्त्री० लंगोट विशेष।
रुराई—स्त्री० सुन्दरता।
रुरुआ—पु० एक उल्लू पक्षी
रुरुखु—वि० रूखा।
रुलना—अक्रि० दबा रहना।
रुलाना—सक्रि० रोने में लगाना। [नाराज़।
रुषित, रुष्ट३—वि० रुष्ट,
रुसना, रूसना—अक्रि० रूँठना।
रुसवा—वि० (फ़ा०)बदनाम
रुसवाई—स्त्री० (फ़ा०) बदनामी।
रुसित—वि० क्रुद्ध।
रुसूख़—पु० (अ०) मेलजोल
रुस्तम२—पु० (फ़ा०) फ़ारस का एक प्रसिद्ध पहलवान। वीर।
रुहठि—स्त्री० रूँठना।
रुहिर—पु० रुधिर।
रूँधना—सक्रि० घेरना। रोकना।
रू—पु० (फ़ा०) मुख। सामना। स्त्री० कारण। तल, सतह। आशा।
रूक्ष३—वि०निष्ठुर। रूखा।
रूख—पु० पेड़। वि० रूखा।
रूखा१—वि० सूखा, नीरस
रूझना—अक्रि० उलझना।
रूठना—अक्रि० अप्रसन्न-होना। [पैदा हुआ।
रूढ़४—वि० चढ़ा हुआ।
रूढ़ि—स्त्री० प्रथा। चढ़ने का भाव। उत्पत्ति।
रूदाद—स्त्री०(फ़ा०) हाल, विवरण।
रूप-पु० आकृति। सुन्दरता। भेष। चाँदी। वि० रूपवान्
रूपक—पु० मूर्त्ति। रूप। दृश्य काव्य।
रूपगर्विता—स्त्री० वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व हो।
रूपजस्त—पु० राँगा।
रूपजीविनी—स्त्री० वेश्या।
रूपजीवी—पु० बहुरूपिया।
रूपमनी—वि० स्त्री० सुन्दरी
रूपमय७, रूपवान् १३ १३ वि० सुन्दर।
रूपरंग—पु० शकल-सूरत।
रूपरेखा—स्त्री० ढाँचा, ख़ाका
रूपसि, रूपसी—स्त्री० रूपवती स्त्री।
रूपस्वी५—वि० रूपवान्।
रूपा—स्त्री० चाँदी।
रूपाजीवी—स्त्री० वेश्या।
रूपी५—वि० समान। सुन्दर
रूपोश२—वि० (फ़ा०) गुप्त।
रूप्य—पु० चाँदी, ताँबा मिला हुआ धन।
रूप्यक—पु० रुपया।
रूबकारी—स्त्री० (फ़ा०)

मुकदमें की पेशी या सुनवाई।
रूबरू—क्रि० वि० (फ़ा०) सामने।
रूम—पु० (अं०) कमरा।
रूमाल—पु० (फ़ा०) मुँह पोंछने का कपड़ा।
रूर—वि० तप्त।
रूरना—अक्रि० चिल्लाना।
रूरा७—वि० सुन्दर।
रूल—पु०(अं०)क़ायदा।लाइन-खींचने का डंडा। लकीर।
रूलना—सक्रि० दबा देना।
रूलर—पु० (अं०) शासक। रूल खींचने का डंडा।
रूसियाह—वि० (फ़ा०) काले मुँह वाला। पापी।
रूह—स्त्री०(अ०) आत्मा। सार।
रूहना—अक्रि० छा जाना।
रूहानी—वि० (अ०) रूह का। रूह-संबंधी। [चलना
रेंगना९—अक्रि०पेट के बल
रेंड़—पु० अंडी का पेड़।
रेख—स्त्री०लकीर। चिह्न। उभरती हुई मूँछ। [गाना।
रेख़ता—पु० (फ़ा०) एक
रेखा—स्त्री० लकीर
रेखागणित—स्त्री०जामेटरी।
रेखाचित्र—पु० ख़ाका।
रेखित—वि० अंकित।
रेग—स्त्री० (फ़ा०) बालू।
रेगिस्तान—पु० (फ़ा०) बालू का मैदान।
रेचक—वि० दस्तावर। प्राणायाम की एक क्रिया।
रेचन—पु० दस्त लाना। जुल्लाब।
रेज़गारी—स्त्री० (फ़ा०) रुपये की भाँज (इकन्नी, दुअन्नी आदि)। [टुकड़ा।
रेज़ा—पु० (फ़ा०) छोटा-
रेज़ीडेंट—पु० (अं०) रज वाड़ों में ब्रिटिश राज्य का प्रतिनिधि।
रेजीमेंट—स्त्री० (अं०) सेना का एक विभाग।
रेट—पु० (अं०) भाव, दर।
रेडियो—पु०(अं०) आवाज़ फेंकने का एक यंत्र।
रेणु—स्त्री०धूल। [की माता।
रेणुका—स्त्री०बालू। परशुराम-
रेत७—स्त्री० बालू। रेतने का लोहे का एक औज़ार।
रेतना—सक्रि० रेती से घिसना
रेतीला७—वि० बालुकामय।
रेफ़—पु० रकार का यह ' ' रूप। [ट्रेन की पटरी।
रेल—स्त्री० भीड़। रेलगाड़ी।
रेलना—सक्रि०आगे को ठेलना।
रेलपेल—स्त्री० भीड़भाड़।
रेला—पु०जल प्रवाह, वेग।
रेवतक—पु० कबूतर।
रेवती—स्त्री० बलराम की पत्नी। सत्ताइसवाँ नक्षत्र।
रेवतीरमण—पु० बलराम।
रेवा—स्त्री० नर्मदा नदी।
रेशम—पु०(फ़ा०) पाट।
रेशा—पु० (फ़ा०) महीन-सूत। तंतु। [राख। रेखा।
रेह—स्त्री० खारी मिट्टी।
रेहन—पु० (फ़ा०) बंधक।
रेहननामा—पु० (अ० फ़ा०) रेहन लिखी शर्तों का काग़ज़
रेहू—स्त्री० एक प्रकार की मछली।
रैन,रैनि—स्त्री० रात। रेणु।
रैयत—स्त्री० (अ०) प्रजा।
रैल—स्त्री० समूह।
रैवत—पु० बादल। शिव।
रोंगटा—पु० रोआँ।
रोंगटी—स्त्री० बेईमानी।
रोक—स्त्री० बाधा। निषेध। पु० रोकड़।
रोकटोक—स्त्री० बाधा।
रोकड़—स्त्री० नक़दी।
रोकड़िया—पु० ख़ज़ानची।
रोकना—सक्रि० ठहराना। बाधा डालना।
रोग—पु० झंझट। बीमारी।
रोगदई—स्त्री० बेईमानी।
रोग़न—पु० तेल। पालिश
रोग़नेज़र्द—पु० (फ़ा०) घी।
रोग़ने-तल्ख़—पु० (फ़ा०) कड़वा तेल।
रोगहारी५—पु० वैद्य।
रोगी५—वि०बीमार।
रोचक३—वि० मनोरंजक।
रोचन—पु० रोली। प्याज़। वि० शोभायुक्त।
रोचना—स्त्री० गोरोचन। आकाश। श्रेष्ठ स्त्री।
रोचनी—स्त्री० कबीला।
रोचि—स्त्री० शोभा। किरण
रोचित—वि० शोभायुक्त।
रोचिष्णु—वि०शोभाशाली।
रोज़—पु० (फ़ा०) दिन। रोना। अव्य० प्रतिदिन।
रोज़गार—पु० (फ़ा०) व्य-

वसाय।
रोज़नामचा—पु० (फ़ा०) दिनचर्या लिखने की बही।
रोज़मर्रा—अव्य० (फ़ा०) प्रतिदिन। पु० बोलचाल।
रोज़ा—पु० (अ०) उपवास।
रोज़ाना—क्रि० वि० (फ़ा०) हर रोज़।
रोज़ी—स्त्री० (फ़ा०) जीविका
रोज़ीना—पु० (फ़ा०) एक दिन की मज़दूरी। मासिक-वृत्ति।
रोज़-जज़ा—पु० (फ़ा० अ०) क़यामत का दिन।
रोझ—पु० नीलगाय।
रोटिका—स्त्री० रोटी।
रोटी—स्त्री०चपाती। जीविका
रोड़ा—पु० कंकड़। बाधा।
रोदन—पु० रोना।
रोदसी—स्त्री० स्वर्ग। पृथ्वी
रोदा—पु० (फ़ा०) प्रत्यंचा।
रोदित—वि० रोता हुआ।
रोद्धा—पु० रोकने वाला।
रोध, रोधन—पु० दमन। रुकावट।
रोधित—वि० रोका हुआ।
रोना—अक्रि० आँसू बहाना पछतावा करना।
रोनी-धोनी—वि० स्त्री० शोक करने वाली।
रोप—पु०वाण।
रोपक१४—पु०जमाने वाला।
रोपण६—पु० लगाना, जमाना।
रोपना—सक्रि० जमाना।
रोपयिता१०—वि०संस्थापक।
रोपित—वि० लगाया हुआ।
रोप्ता१०—वि० रोपने वाला।
रोप्य—वि० रोपने-योग्य।
रोब—पु० (अ०) धाक, आतंक। [प्रभावशाली।
रोबदार—वि० (अ० फ़ा०)
रोमंथ—पु० जुगाली।
रोम—पु० रोआँ।
रोमकूप—पु० रोम छिद्र।
रोमपाट—पु० ऊनी कपड़ा।
रोमराजी—स्त्री० रोमावली
रोमहर्षण, रोमांच—पु० रोएँ का खड़ा होना। वि० भयंकर।
रोमांचित—वि० पुलकित।
रोमिल—वि० रोमयुक्त।
रोया—पु० (अ०) स्वप्न।
रोर—स्त्री० हल्ला। ग़रीबी। वि० प्रबल।
रोरी, रोली—स्त्री० चहल-पहल। एक लाल रंग।
रोलर—पु० (अं०) बेलन।
रोवासा७—वि० रोने ही वाला।
रोशन—वि० (फ़ा०) प्रकाशित। प्रत्यक्ष। प्रसिद्ध।
रोशन-चौकी—स्त्री० नफ़ीरी
रोशन-ज़मीर—वि० (फ़ा० अ०) समझदार।
रोशनदान—पु० (फ़ा०) गवाक्ष, झरोखा।
रोशनाई—स्त्री० (फ़ा०) स्याही। [उजाला।
रोशनी—स्त्री० (फ़ा०)
रोष—पु० क्रोध, चिढ़।
रोषित, रोषी५—वि० क्रोधी।
रोह—पु० अंकुर। चढ़ना। नीलगाय
रोहना—अक्रि० चढ़ना। सक्रि० चढ़ाना।
रोहिणी—स्त्री० बलदेव की माता। गाय। बिजली। चौथा नक्षत्र। [इन्द्र धनुष।
रोहित—वि० लाल। सीधा-
रोहिताश्व—पु० आग। राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र।
रोही५—वि० चढ़ने वाला।
रोहू—स्त्री० एक बड़ी मछली।
रौंदना—सक्रि० पाँव से कुचलना।
रौंस—पु० चिह्न।
रौ—स्त्री० (फ़ा०) प्रवाह। वेग। पु० आवाज़।
रौक्ष्य—पु० रुक्षता।
रौज़न—पु० (फ़ा०) छिद्र, झरोखा। [बाग़।
रौज़ा—पु० (अ०) समाधि।
रौताइन—स्त्री० ठकुराइन।
रौताई—स्त्री० सरदारी।
रौद्र३—वि० प्रचंड। भयावना। पु० क्रोध।
रौनक़—स्त्री० (अ०) शोभा।
रौनक़-अफ़ज़ा, रौनक़ अफ़रोज़—वि० (अ०फ़ा०) रौनक़-बढ़ाने वाला।
रौनक़-अफ़ज़ाई—स्त्री० (अ० फ़ा०) शोभा बढ़ाना।
रौप्य—पु० चाँदी। वि० चाँदी का।
रौर, रौला—पु० शोर-गुल।
रौरव—पु० एक भीषण-नरक।

रौरा—सर्व० आपका। पु० शोर।
रौरि—स्त्री० कोलाहल।
रौस—स्त्री० चाल-ढाल।
पौधों की क़तार।
रौहिणेय—पु० बलराम।

२८—ल

लंक—स्त्री० कमर। लंका।
लंकलाट—पु० एक कपड़ा।
लंका—स्त्री० भारत के दक्षिण में एक द्वीप। [विभीषण।
लंकापति—पु० रावण।
लंग—पु० (फ़ा०) लँगड़ा। काँछ। [चलना।
लँगड़ाना—अक्रि० लँगड़ाकर-
लंगर—पु०(फ़ा०) एक बहुत भारी लोहे का काँटा जिससे पानी में बड़ी नाव, जहाज़ आदि रुकते हैं।
लंगरख़ाना—पु० वह स्थान जहाँ ग़रीबों को पक्का भोजन मिले।
लँगराई—स्त्री० शरारत।
लंगूर—पु० बन्दर। दुम।
लंगूरफल—पु० नारियल।
लंगूल—पु० दुम।
लंगोट—पु० कटिवस्त्र विशेष
लँगोटी—स्त्री० कौपीन।
लंघक—पु० लाँघने वाला।
लंघनद—पु० उपवास। लाँघना।
लंज—पु० दुम।
लंजिका—स्त्री०वेश्या।
लंठ—वि० उजड्ड।
लँतरानी—स्त्री० डींग।
लंप—पु० (अं०) चिराग़।
लंपट३—वि० व्यभिचारी।
लंब—पु० समकोण बनाने वाली रेखा। वि० लंबा।
लंबकर्ण—वि० लंबे कान-वाला।
लंबग्रीव—पु० ऊँट।
लंबतड़ंग—वि०अधिक लंबा।
लंबन—पु०सहारा। [हुआ।
लंबमान—वि० लबा गया-
लंबा—वि० ऊँचा। बड़ा।
लंबाई—स्त्री० लंबान।
लंबित—वि० लंबा।
लंबोदर—पु० गणेश।
लंबोष्ठ—पु० ऊँट।
लंभन—पु० कलंक। प्राप्ति।
लकड़बग्घा—पु० एक मांस-भक्षी पशु।
लकड़हारा७—पु० जो लकड़ी द्वारा अपनी जीविका चलाता हो।
लकड़ी—स्त्री० ईंधन। छड़ी
लक़ब—पु० (अ०) उपाधि।
लक़वा—पु० एक वात रोग।
लकसी—स्त्री० वह लंबी छड़ जिसके सिरे पर फल आदि तोड़ने के लिए तिरछी लकड़ी बँधी हो।
लक़ा—पु० (अ०) चेहरा। मुख। कबूतर विशेष।
लकीर—स्त्री० रेखा।
लकुच—पु० बड़हर।
लकुट, लकुटी—स्त्री० छड़ी, लाठी। [लकड़ी।
लक्कड़—पु०. बहुत मोटी-
लक्तक—पु० महावर।
लक्ष—वि० लाख। पु० उद्देश्य। निशाना।
लक्षण-पु०। चिह्न परिभाषा
लक्षणग्रंथ—पु०वह ग्रंथ जिस में अलकारों का वर्णन हो।
लक्षणा—स्त्री० वह शब्द-शक्ति जो उसका अभिप्राय सूचित करे।
लक्षना—सक्रि० देखना।
लक्षि—स्त्री० लक्ष्मी। [हुआ।
लक्षित—वि०देखा या जाना-
लक्षिता—स्त्री० एक पर-कीया नायिका।
लक्ष्म—पु० चिह्न।
लक्ष्मण—पु० दशरथ-पुत्र।
लक्ष्मणा—स्त्री०सारस-पत्नी।
लक्ष्मी—स्त्री० विष्णुपत्नी। धन। शोभा।
लक्ष्मीकांत—पु० विष्णु।
लक्ष्मीपुत्र—वि० धनी।

लक्ष्मीधर—पु० विष्णु ।
लक्ष्मीवान्१३—वि० शोभा-शाली । धनी ।
लक्ष्य—पु० उद्देश्य। निशाना। निशाना लगाने की वस्तु ।
लक्ष्यग्रंथ—पु० वह काव्य जिसमें अलंकार पाये जाते हैं
लक्ष्यभेद—पु० चलती हुई वस्तु पर निशाना लगाना ।
लक्ष्यवेधी—पु० लक्ष्य भेदने वाला ।
लक्ष्यार्थ—पु० लक्षणा-शक्ति से निकलने वाला अर्थ ।
लखन—पु० लक्ष्मण ।
लखना—सक्रि० ताड़ना ।
लखपती—पु० लाख रुपया वाला । [के पेड़ों का बाग़ ।
लखराउँ—पु० लाख आमों-
लखलखा—पु० (फ़ा०) मूर्च्छा दूर करने का एक सुगंधित पदार्थ ।
लखाउ—पु० लक्षण, चिह्न ।
लखाना—अक्रि० दिखाई-पड़ना । सक्रि० दिखलाना ।
लखेरा—पु० चुड़िहार ।
लखौटा—पु० लाख की चूड़ी । लेख ।
लखौरी—स्त्री०एक प्रकार की पतली ईंट । भ्रमरी का घर।
लख्त—पु० (फ़ा०) टुकड़ा ।
लग, लगि—स्त्री० लगन । पतलीछड़ी । अव्य०वास्ते । तक । [फ़िसलना ।
लग़ज़िश—स्त्री० (फ़ा०)
लगन, लगनि—स्त्री० धुन। लगाव । प्रेम । पु० ब्याह का मुहूर्त्त ।
लगनपत्री—स्त्री० वह पत्र जिसमें विवाह की तिथि का निश्चय लिखा रहता है।
लगना—अक्रि० जुड़ना । मिलना।जान पड़ना ।[प्रायः।
लगभग—क्रि०वि०अन्दाज़न।
लगर—पु० बाज़ पक्षी ।
लगव—वि० झूठ ।
लगवार—पु० जार । [सिलेवार
लगातार—क्रि० वि० सिल-
लगान—पु० भूमि-कर ।
लगाना—सक्रि० नियुक्त-करना । प्रवृत्त करना । लेप-करना । छुवाना ।
लगाम—स्त्री० (फ़ा०) बाग, रास । नियंत्रण ।
लगाय, लगार—स्त्री० लगन ।
लगालगी—स्त्री० लगन ।
लग़ायत—क्रि० वि० (अ०) सहित । पर्यंत, तक ।
लगाव—पु० संबंध ।
लगुड—पु० डंडा ।
लग़ो—वि० (अ०) व्यर्थ, वाहियात । [बाँस ।
लग्गा७—पु० कार्यारंभ।लंबा-
लग्घड़—पु० बाज़ ।
लग्न—पु० मुहूर्त्त । विवाह-का समय । वि०लगा हुआ ।
लग्नक—वि० ज़ामिन ।
लघिमा—स्त्री० लघु होने का भाव । एक सिद्धि जिससे मनुष्य छोटा बन सकता है ।
लघिष्ठ—वि० छोटा, लघु ।
लघु३—वि० छोटा । थोड़ा । क्रि० वि० शीघ्र ।
लघुकालीन—वि०थोड़े समय
लघुपुस्तिका-स्त्री०किसी कार्य प्रचारार्थ निकली छोटी पुस्तक । पैम्फलेट ।
लघुक्रम—पु० तेज़ चलना ।
लघुचेता—वि० छोटे विचार का । [वाला भोजन ।
लघुपाक—पु० जल्दी पचने-
लघुमति—वि० मूर्ख ।
लघुशंका—स्त्री० मूत्र-त्याग ।
लघ्वी—स्त्री० छोटी । थोड़ी ।
लचकना९,लचना९—अक्रि० झुकना ।
लचर—वि० तर्कहीन ।
लचीला—वि० आसानी से झुकने वाला ।
लच्छ—पु०उद्देश्य। सौ हज़ार।
लच्छा—पु०एक आभूषण । सूत आदि का गुच्छा ।
लच्छि—स्त्री० लक्ष्मी ।
लच्छेदार—वि० लच्छों-वाला । मज़ेदार (बात) ।
लछमनझूला—पु० तार या रस्सों आदि से बना पुल ।
लछारा—वि० लंबा ।
लजना९—अक्रि०शरमाना ।
लज़ीज़—वि० (अ०) स्वा-दिष्ट । [वि० लज्जाशील ।
लजीला, लजोर, लजोहाँ—
लजौना—वि० लज्जावान् ।
लज़्ज़त—स्त्री०(अ०) स्वाद ।
लज्जा—स्त्री० लाज ।
लज्जाजनक—वि० लज्जा पैदा करने वाला ।
लज्जालु—वि० लज्जाशील । स्त्री० एक पौधा । [शील ।
लज्जावान्१३—वि० लज्जा-

लज्जाशून्य—वि० बेशर्म।
लज्जित—वि० शर्मिन्दा।
लट—स्त्री०बालों का गुच्छा, अलक। सूत का गुच्छा।
लटक—स्त्री० नखरा। लचक
लटकन—पु० लटकने वाली वस्तु। स्त्री० लटक।
लटकना९—अक्रि० झुकना। झूलना। टँगना।
लटका—पु० छोटा नुसखा। बातचीत का ढंग। [हुआ।
लटकीला७—वि० झूमता
लटजीरा पु० 'चिचड़ा' नामक पौधा।
लटना—अक्रि०दुर्बल होना। थकना। ललचाना।
लटपटा७—वि० शिथिल।
लटपटाना—अक्रि० लड़खड़ाना। लुभाना।
लटा—वि० दुबला।
लटापटा—स्त्री० भिड़ंत।
लटापोट—वि० मोहित।
लटी—स्त्री० बुराई। भक्तिन। वेश्या। वि० दुबली।
लट्टू, लट्टू—पु० भौंरा (खिलौना)।वि० मुग्ध।
लटूरी—स्त्री० केश, अलक।
लट्ठ—पु० बड़ी लाठी।
लट्ठमार—वि० लट्ठबाज़। कर्कश। [कपड़ा।
लट्ठा—पु० शहतीर। एक-
लठैत—वि० लट्ठमार।
लड़ंत—स्त्री०लड़ने की क्रिया। मुठभेड़। [पंक्ति।क्रम।
लड़, लड़ी—स्त्री० माला,
लड़कपन—पु० बचपन।
लड़कबुद्धि—स्त्री० नादानी।
लड़का७—पु० बालक। पुत्र।
लड़काबाला—पु० संतान।
लड़कौरी—स्त्री० वह स्त्री जिसकी गोद में बच्चा हो।
लड़खड़ाना—अक्रि० डगमगाना। [युद्ध करना।
लड़ना९—अक्रि० झगड़ना।
लड़बौरा—वि० नासमझ।
लड़ाई—स्त्री० वैर। युद्ध।
लड़ाका ७—वि० योद्धा। झगड़ालू।
लडीला७—वि० लाड़ला।
लड़ैता७—वि० लाडला।
लढ़ा—पु०, लढ़िया—स्त्री० बैलगाड़ी।
लत—स्त्री० कुटेव, बान।
लतमर्दन—पु० पैरों से रौंदना
लतर—स्त्री० बेल।
लता—स्त्री० बेल, बल्ली।
लताकुंज, लतागृह, लतामंडप—पु० लताओं के छाया हुआ स्थान।
लताड़—स्त्री० फटकार।
लताड़ना—सक्रि०कुचलना।
लतामणि—पु० मूँगा।
लतिका—स्त्री० छोटी लता।
लतियाना—सक्रि० लातों से मारना।
लतीफ़—वि० (अ०) सुन्दर।
लतीफ़ा—पु०(अ०) चुटकुला।
लत्ता—पु० कपड़ा, चीथड़ा।
लत्ती—स्त्री०पशुओं का पाद-प्रहार। धज्जी।
लथपथ—वि० तराबोर।
लथाड़—स्त्री० फटकार। चपेट।
लथाड़ना—सक्रि० कीचड़ आदि से गंदा करना। डाँटना।
लदना९—अक्रि०बोझ भरा जाना। [क्रिया। बोझ।
लदाव—पु० लादने की
लद्दू—वि० बोझ ढोने वाला
लद्धड़—वि० आलसी।
लपक—स्त्री० लपट। कांति।
लपकना—अक्रि० झपटना।
लपट—स्त्री० लौ, अग्नि।
लपना९—अक्रि० झुकना, झटके के साथ लचना।
लपलपाना—सक्रि० वेग से इधर-उधर हिलाना। अक्रि० लचना, चमकना।
लपसी—स्त्री० कम घी का हलुवा।
लपेट—स्त्री०घेरा। उलझन।
लपेटना—सक्रि० समेटना। घुमाकर फँसाना।
लफंगा—वि० (फ़ा०) लंपट, दुश्चरित्र, दुष्ट।
लफलफानि—स्त्री० झोंका खाने को क्रिया। चमक।
लफ़्ज़—पु० (अ०) शब्द।
लफ़्ज़ी—वि०(अ०)शाब्दिक
लफ़्फ़ाज़२—वि० (अ०) शेखी मारने वाला।
लब—पु० (फ़ा०) ओष्ठ।
लबड़धोंधों—स्त्री० अव्यवस्था
लबरेज़—वि० (फ़ा०) मुँह तक भरा हुआ। [चोग़ा।
लबादा—पु०(फ़ा०) रुईदार-
लबार२—वि० झूठा।

लबालब—क्रि० वि० (फ़ा०) किनारे तक। [सन्न।
लबेदम—वि०(फ़ा०) मरणा-
लबेदरिया—पु० नदी का किनारा। [मधुर होंठ।
लबेशीरीं—पु० (फ़ा०)
लब्ध—वि० प्राप्त। पु० भागफल
लब्धकाम—वि० जिसकी इच्छा पूरी हो चुकी हो।
लब्धकीर्त्ति—वि० प्रसिद्ध।
लब्धप्रतिष्ठ—वि० प्रतिष्ठित।
लब्धि—स्त्री० प्राप्ति।
लभन—पु० पाना।
लभस—पु० धन। भिक्षुक।
लभ्य—वि० पाने-योग्य।
लमछड़—वि०छड़ के समान-लंबा। पु० बरछी। पुरानी चाल की बंदूक़।
लमधी—पु० समधी का पिता।
लमहा—पु० (अ०) क्षण।
लमाना—सक्रि० लंबा करना
लय—स्त्री० धुन, गाने का स्वर। लीन होने का भाव। विनाश।
लयन—पु० विश्राम।
लरकना—अक्रि० झुकना।
लरज़ना—अक्रि० (फ़ा०) काँपना। डरना।
लरज़ा—पु० (फ़ा०) कँपकँपी
लरझर—वि० अत्यधिक।
लरनि—स्त्री० लड़ाई।
लरिकसलोरी—स्त्री०खिलवाड़।
लरिया—पु० दुपट्टा।
ललक—स्त्री० ललसा।
ललकना—अक्रि० मग्न होना। अधिक इच्छा करना।
ललकार—स्त्री० चुनौती।

ललचना९—अक्रि० लालच करना। [पूर्ण।
ललचौहाँ७—वि० लालच-
ललन, लला७—पु० प्रिय लड़का या पति।
ललना—स्त्री०रमणी, स्त्री।
ललनी—स्त्री० बाँस की नली
ललाई—स्त्री० लालिमा।
ललाट—पु० मस्तक।
ललाटाक्ष—पु० शिवजी।
ललाटाक्षी—स्त्री० दुर्गाजी।
ललाटिका—स्त्री० सिर का एक गहना। तिलक।
ललाना—अक्रि० ललचना।
ललामर—वि०सुन्दर। लाल रंग का। पु० भूषण। चिह्न।
ललित—वि० सुंदर
ललितकला—स्त्री० संगीत, चित्रकारी, भवन-निर्माण आदि कलाएँ जो सुन्दरता तथा सजावट की अपेक्षा करती हों।
ललित साहित्य—पु० वह साहित्य जिसमें कहानी, उपन्यास, नाटक आदि हों।
ललिता—स्त्री० कस्तूरी। राधिका जी की एक सहचरी।
लली—स्त्री० लाड़ली लड़की।
ललौहाँ७—वि० सुर्ख़ी-मायल।
लल्जो—स्त्री० जीभ।
लल्लोचप्पो, लल्लोपत्तो—स्त्री० चापलूसी।
लवंग—पु० लौंग।
लव—पु० अत्यल्प मात्रा। एक राम तनय।
लवकना—अक्रि० चमकना।
लवका—स्त्री० चमक।

लवण—पु० नमक।
लवन—पु० नमक। काटना।
लवनाई—स्त्री० लावण्य।
लवनी—स्त्री० खेत- कटाई। नवनीत।
लवर—स्त्री० लपट।
लवली—स्त्री० एक पेड़ तथा उसका फल। [लगन।
लवलासी—स्त्री० प्रेम की
लवलीन—वि० तल्लीन।
लवलेश—पु० बहुत थोड़ी मात्रा।
लवहर—पु० यमज बालक।
लवा—पु०एक पक्षी। [गाय।
लवाई—स्त्री०हाल की ब्याई
लवाज़मा—पु० (अ०) लगाव। साथ में रहने वाली आवश्यक सामग्री।
लवारा—पु०गाय का बच्चा।
लवासी—वि० झूठा। छली
लशुन—पु०लहसुन। [दल।
लश्कर—पु० (फ़ा०) सेना,
लश्करी—वि० सेना का। पु० सिपाही। जहाज़ का कार्यकर्त्ता।
लषित—वि० चाहा हुआ।
लस—पु० चिपचिपाहट।
लसना—अक्रि०शोभित होना सक्रि० चिपकाना।
लसम—वि० ख़राब।
लसलसा—वि० लसदार।
लसित—वि० शोभित।
लसी—स्त्री०दूध, पानी तथा दही, पानी का शरबत। लस।

लसीला७—वि० लसदार। चिपचिपा।
लसोड़ा—पु० एक फल।
लस्टमपस्टम—क्रि० वि० किसी न किसी प्रकार
लस्त—वि० थका, अशक्त।
लस्सी—स्त्री दे० 'लसी'।
लहँगा—पु० स्त्रियों का घेरदार एक पहनावा।
लहकना९—अक्रि० लहराना। भभकना।
लहकौरि—स्त्री० विवाह की एक रस्म जिसमें वर, कन्या एक दूसरे के मुँह में कौर डालते हैं।
लहज़ा—पु० (अ०) गाने का ढङ्ग। स्वर, लय।
लहज़ा, लहमा—पु० (अ०) क्षण।
लहद—स्त्री० (अ०) क़ब्र।
लहना—सक्रि० पाना। ७पु० पावना।
लहबर—पु० चोग़ा। पताका।
लहर—स्त्री०तरंग। टेढ़ीगति
लहरपटोर—पु० लहरदार एक रेशमी कपड़ा। [धन।
लहरबहर—स्त्री० सौभाग्य।
लहराना—अक्रि० हिलना-डोलना। टेढ़ा चलना।
लहरिया—पु० टेढ़ी मेढ़ी-लकीर।
लहरा—पु० तरंग, लहर।
लहरी—स्त्री० लहर। पु० मौजी।
लहलहा७—वि० हराभरा।
लहलहाना—अक्रि० हराभरा-होना। प्रसन्न होना।
लहसुन—पु० एक पौधा।
लहसुनिया—पु० एक मूल्यवान् पत्थर।
लहाछेह—पु० नाच का एक ढङ्ग। [हुआ मोहित।
लहालोट—वि०विशेष हँसता·
लहासी—स्त्री जहाज़ या नाव बाँधने की रस्सी।
लहि, लहु—अव्य० तक।
लहुरा७—वि० छोटा।
लहू—पु० खून।
लहेरा—पु० लाख का काम करने वाला।
लांगली—पु० सर्प।
लांगूल—पु० पूँछ।
लांगूली—पु० बन्दर।
लाँघना—सक्रि० पार करना।
लाँच—स्त्री० रिश्वत।
लांछन—पु०कलंक। चिह्न।
लांपट्य—पु० लंपटता।
लाँबा७—वि० लंबा।
ला—पु० (अं०) क़ानून।
*अव्य०(अ०)नहीं, बग़ैर।
लाइ—स्त्री० अग्नि।[क़तार।
लाइन—स्त्री० (अं०) लकीर।
लाइब्रेरी—स्त्री० (अं०) पुस्तकालय।
ला-इलाज—वि० (अ०) इलाज के अयोग्य।
ला-इल्म—वि० (अ०) अज्ञान
लाइसेंस—पु०(अं०)अनुमति-पत्र।
लाई—स्त्री० धान का लावा।
लाउडस्पीकर—पु० (अं०) ध्वनि-विस्तारक-यंत्र
लाकलाम—क्रि० वि० (अ०) निस्संदेह।
लाक्षणिक४—वि० लक्षण प्रकट करने वाला।
लाक्षा—स्त्री० लाख, लाह।
लाक्षारस—पु० महावर।
लाक्षिक—वि० लाख का।
लाख—वि० सौ हज़ार। स्त्री० लाह, चपड़ा।
लाख़िराज—वि० बिना लगान वाली (ज़मीन)।
लाखी—वि०लाख के रंग का
लाग—स्त्री० लगाव, संबंध। प्रेम। होड़। रसद।
लागडाँट—स्त्री० शत्रुता।
लागत—स्त्री०तैयारी का व्यय।
लागि—अव्य० कारण, लिए
लागू—वि० लगने-योग्य।
लाघव—पु०लघुता। फुर्ती।
लाचार२—वि० (अ०) विवश, मजबूर।
लाज—स्त्री० शर्म।
लाजक—पु०धान की खील।
लाजना—अक्रि० लज्जित-होना। सक्रि०लज्जित करना।
लाजवंत—वि० लज्जा वाला
लाजवंती—स्त्री० छुईमुई।
लाजवर्द—पु० एक बहुमूल्य-पत्थर। [रँग का।
लाजवर्दी—वि० हल्के नीले-
लाजवाब—वि० (अ०) बेजोड़। उत्तर-रहित।
लाजा—स्त्री० लावा, खील।

नोट:—* अरबी 'ला' अव्यय अभाव' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे ला-जवाब।

लाजवर्त्त—पु० सायबान ।
लाज़िम—वि०(अ०) उचित ।
लाज़िमी—वि० (अ०) आव-श्यक । [खभा ।
लाट—स्त्री०ऊँचा तथा मोटा·
लाटरी—स्त्री० एक प्रकार का जुआ, चिट्ठी ।
लाठी—स्त्री० डंडा ।
लाड़—पु० दुलार ।
लाड़लड़ैता७—वि० लाड़ला।
लात—स्त्री० पैर । पैर का प्रहार ।
लाथ—पु० बहाना।
लादना—सक्रि० बोझा भरना
लादी—स्त्री० पशु पर लादी गयी गठरी ।
लाधना—सक्रि० पाना ।
लानत—स्त्री० धिक्कार ।
लाना—सक्रि० पेश करना। लेकर आना ।
लापता—वि० ग़ायब ।
लापरवाह२—वि० असावधान
लाभ—पु० फ़ायदा, प्राप्ति ।
लाभदायक—वि० लाभकारी।
ला-मकान—वि० (अ०) बे घर बार का।[धर्म-च्युत ।
ला-मज़हब—वि० (अ०)
लामन—पु०लहँगा के अस्तर की ओर की गोट ।[चार्य ।
लामा—पु०तिब्बत का धर्मा-
लाय—स्त्री० ज्वाला ।
लायक—पु० धान का लावा।
लायक़२—वि० (अ०) सुयोग्य । उचित । [क़तार ।
लार—पु०लसदार थूक ।
लारू—पु० लड्डू ।

लाल—पु० पुत्र । एक रत्न । एक पक्षी । वि० सुर्ख़ ।
लालचन्द—पु० लोभ ।
लालटेन—स्त्री०दीपक विशेष
लालड़ी—स्त्री० नथ के मोती के दोनों ओर लगाया जाने वाला नग विशेष ।
लालनद्द—पु०दुलार । प्रिय-पुत्र ।
लालना—सक्रि० दुलार करना
लालबुझक्कड़—पु० बातों का अनुमान से अर्थ लगाने वाला ।
लालबेग—पु० भंगी और चमारों के एक पीर का नाम । [श्रीकृष्ण ।
लालमन—पु० एक तोता ।
लालमी—स्त्री० ख़रबूज़ा ।
लालसिखा—पु० मुर्ग़ा ।
लालसी—वि० उत्सुक, इच्छुक
लाला—पु० वैश्य, कायस्थ, देवर तथा बच्चे के लिए संबोधन । पोस्त का फूल ।
लालाफ़ाम—वि० (फ़ा०) लाल रंग का ।
लालायित—वि० उत्सुक ।
लालारुख़—वि० (फ़ा०) बहुत सुन्दर । [लारगिरना ।
लालास्रव—पु० मकड़ा ।
लालास्राव—पु० मकड़े का जाला । लार गिरना ।
लालित—वि० प्यारा ।
लालित्य—पु० सौंदर्य ।
लालिमा—स्त्री० लाली ।
लाली—वि०स्त्री० लाड़ली । सुर्ख़ी ।

लालुका—स्त्री०हार विशेष ।
लाले, लालो—पु० लालसा । तमन्ना ।
लाव—स्त्री० आग । रस्सी ।
लावक—पु० लवा पक्षी ।
लावण्य—पु० सुन्दरता ।
लावनी—स्त्री० छन्द विशेष ।
लावलश्कर—पु० (फ़ा०) साथियों का दल। [संतान ।
लावल्द२—वि० (फ़ा०) निः-
लावा—पु० खील ।
लावा-परछन—पु० विवाह के समय की एक रीति ।
लावारिसन—वि० (अ०) जिसका कोई वारिस न हो
लाश—स्त्री० (तु०) मृतक देह
लास१२—पु० नृत्य विशेष ।
लासा—पु० लुआब ।
लासानी—वि० (फ़ा०) अद्वितीय, बेजोड़ ।
लास्य—पु०वह नाच जिससे श्रृंगार आदि कोमल रस उद्दीप्त होते हैं ।
लाह—पु० नफ़ा । स्त्री० लाक्षा
लाही—वि० लाख के रंग का स्त्री० सरसों । लाह बनाने वाला कीड़ा ।
लाहौल—पु० (अ०) नहीं है क़ुव्वत । यह घृणा प्रकट करने के लिए बोला जाता है ।
लिंग—पु० पुरुष चिह्न । चिह्न । शिव की एक मूर्ति ।
लिंगदेह—पु० सूक्ष्म-शरीर ।
लिंगायत—पु० शैव-संप्र-दाय विशेष ।

लिंगी—वि० चिह्न वाला। आडंबर रचने वाला।
लिक्षा-स्त्री० जूँ का अंडा,लीख
लिखतम-पु० प्रामाणिक-लेख
लिखधार—पु० मुहर्रिर।
लिखना९—अक्रि० अंकित करना।
लिखाई—स्त्री० लिखावट।
लिखापढ़ी-स्त्री०पत्र-व्यवहार
लिखास—स्त्री० लिखावट।
लिखित—वि० लिखा हुआ।
लिखितव्य—वि० लिखने-योग्य। [साहित्य।
लिटरेचर—पु० (अं०)
लिटाना—सक्रि० सुलाना।
लिट्ट७—पु० बाटी।
लिपटना९-अक्रि० चिपटना।
लिपना९-अक्रि० लीपा जाना
लिपि—स्त्री० लेख,हस्ताक्षर।
लिपिबद्ध—वि० लिखित।
लिपिसज्जा—स्त्री०क़लमदान
लिप्त-वि० लीन। लिपा-हुआ।
लिप्सा-स्त्री० वांछा। लालच
लिप्सु—वि० इच्छुक। लोभी
लिफ़ाफ़ा—पु० (अ०) काग़ज़ की थैली। बाहरी तड़क-भड़क।
लिबरल-वि० (अं०) उदार।
लिबास-पु० (अ०) पोशाक।
लिबासी—वि०(अ०)नक़ली, जाली। [योग्यता।
लियाक़त—स्त्री० (अ०)
लिलाट, लिलार—पु० मस्तक
लिलोही—वि० लोभी।
लिल्लाह—अव्य० (अ०) ईश्वर के लिए। ख़ुदा के नाम पर।
लिव—स्त्री० लौ। [संकोच।
लिहाज़—पु० (अ०) मुरव्वत।
लिहाज़ा—क्रि० वि० (अ०) इसलिए।
लिहाड़ा—वि० नीच।
लिहाड़ी—स्त्री० उपहास।
लिहाफ़—पु० (अ०) रज़ाई।
लिहित—वि० चाटता हुआ।
लीक—स्त्री०लकीर। [अंडा।
लीख—स्त्री० लीक। जूँ का
लीग—स्त्री० (अं०) संघ।
लीचड़—वि० निकम्मा।
लीची—स्त्री० फल विशेष।
लीझी—स्त्री० सीठी। वि० नीरस, निकम्मा।
लीडर—पु० (अं०) नेता, मुखिया, अगुआ। [छापा।
लीथो—पु० (अं०) पत्थर का
लीथोग्राफ़र—पु० (अं०) लीथो का काम करने वाला
लीद—स्त्री०पशुओं का विष्ठा
लीन३—वि० तन्मय।
लीपना—सक्रि० पोतना।
लीबर—वि० गन्दा।
लीर—स्त्री० धज्जी।
लीलना—सक्रि० निगलना।
लीला—स्त्री०खेल। चरित्र। गोदना।
लीलावती—स्त्री० ज्योतिशास्त्र के प्रसिद्ध पंडित भास्कराचार्य की पत्नी जिन्होंने 'लीलावती' नाम की गणित की पुस्तक बनायी थी। क्रीड़ा करने वाली। एक छंद।
लुंगाड़ा७—पु० लुच्चा।
लुंगी—स्त्री०(फ़ा०) तहमद।
लुंचन—पु०नोचना। उखाड़ना। [नोचा हुआ।
लुंचित—वि० उखाड़ा या
लुंज—वि० लूला। ठूँठ।
लुंठक—पु० चोर।
लुंठन—पु० लुढ़कना।
लुंठित—वि० लुढ़का या लोटता हुआ। अपहृत।
लुंबिनी—स्त्री० बुद्ध का जन्म-स्थान। [हुई लकड़ी।
लुआठा,लुकाट—पु० जलती
लुआब—पु० (अ०) लसदार-गूदा। थूक। लार।
लुआर—स्त्री० लू।
लुकंजन—दे० 'लोपांजन'।
लुक—पु० वार्निश।
लुकना९—अक्रि० छिपना।
लुक़मा—पु० (अ०) ग्रास।
लुक़मान—पु० (अ०)यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान्।
लुकार—स्त्री० अग्नि।
लुकोना—सक्रि० छिपाना।
लुग़त—स्त्री० (अ०) शब्द-कोष [का लौंदा।
लुगदी—स्त्री० गीली वस्तु
लुगरा२—पु० ओढ़नी। वि० चुग़लख़ोर।
लुगाई—स्त्री० औरत।
लुग्गा, लूगा—पु० कपड़ा।
लुचई-स्त्री० मैदे की पतली-पूरी।
लुच्चा७—वि० पाजी।
लुटंत—स्त्री० लूट।

लुटना९—अक्रि० लूटा जाना।
लुटिया—स्त्री० छोटा लोटा।
लुटेरा—पु० डाकू।
लुठना—अक्रि० लोटना।
लुढ़कना९—अक्रि० ढलकना, गिरना।
लुत्फ़—पु० (अ०) मज़ा।
लुनना—अक्रि० फ़स्ल काटना
लुनाई—स्त्री० सुन्दरता।
लुप्त—वि० गुप्त, अदृश्य।
लुबरी—स्त्री० गोंद।
लुब्ध—वि० लुभाया हुआ।
लुब्धक—पु० बहेलिया।
लुब्धना—अक्रि० लुब्ध होना।
लुब्बेलुबाब—पु० (फ़ा०) सार, तत्व, निचोड़।
लुभाना—अक्रि० मोहित होना। सक्रि० मोहित करना, रिझाना। [पड़ना।
लुरना—अक्रि० झूलना, झुक
लुरियाना—अक्रि० सहसा आ जाना। प्रेमसहित स्पर्श करना। झपटना। [गाय।
लुरी—स्त्री० हाल की ब्याही
लुवार—स्त्री० लू।
लुहार२—पु० लोहे की चीज़ें बनाने वाला।
लू—स्त्री० अधिक गर्म वायु।
लूक—पु० टूटा हुआ तारा। स्त्री० लू, लपट।
लूकना—सक्रि० जलाना। अक्रि० छिपना। [लकड़ी।
लूका७—पु० जलती हुई
लूट—स्त्री० डकैती। [झपटी।
लूटखसोट—स्त्री० छीना
लूटना—सक्रि० बलात् छीनना। नष्ट करना।
लूत, लूता—स्त्री० मकड़ी।
लूती—स्त्री० चिनगारी।
लूम—स्त्री० पूँछ।
लूमना—अक्रि० लटकना।
लूला७—वि० लुंजा। असहाय
लूलू—पु० (अ०) बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित जीव। [आदि की मेंगनी।
लेंड़ी—स्त्री० बकरी, ऊँट
लेंहड़ा—पु० दल, समूह (चौपायों का)।
लेकिन—अव्य० परन्तु, पर।
लेक्चर—पु० (अं०) व्याख्यान।
लेख—पु० लिखावट। निबंध देवता [क्लार्क। ग्रंथकार।
लेखक१४—पु० लिखनेवाला,
लेखन६—पु० लिखना। हिसाब लगाना।
लेखनी—स्त्री० क़लम।
लेखपत्र—पु० दस्तावेज़।
लेखर्षभ—पु० इन्द्र।
लेखा—पु० गणना। अनुमान। रेखा। खाता।
लेख्य—वि० लिखने-योग्य।
लेख्यप्रमाण पु० सबूती काग़ज़।
लेख्य संग्रह—पु०
लेज़म—स्त्री० (फ़ा०) व्यायाम करने की एक ज़ंजीरदार कमान। [खींचने की रस्सी
लेजुर, लेजुरी—स्त्री० पानी
लेट—स्त्री० गच। [सोना।
लेटना९—अक्रि० पौढ़ना,
लेटरबाक्स—पु० (अं०) चिट्ठी छोड़ने का संदूक़।
लेनदेन—पु० व्यवहार।
लेनहार७—वि० लेने वाला।
लेना—सक्रि० ग्रहण करना।
लेप—पु० लेपने की वस्तु। उबटन।
लेपना—सक्रि० पोतना।
लेफ़्टिनेंट—पु० (अं०) सहायक कर्मचारी।
लेबिल—पु० (अं०) चिट।
लेमनेड—पु० (अं०) नींबू का शरबत।
लेरुआ, लैरू—पु० बछड़ा।
लेलिहा—वि० लपलपाता हुआ।
लेवा—पु० लेप। वि० लेने-वाला।
लेवाल—पु० ख़रीदार।
लेश—पु० अणु। वि० थोड़ा
लेसना—सक्रि० जलाना। पोतना।
लेहन—पु० चाटना।
लेहाज़ा—क्रि० वि० इस-लिए, अतः
लेह्य—वि० चाटने-योग्य।
लै—अव्य० तक। [टालमटोल।
लैत व लअ़ल७—पु० (अ०)
लैस—वि० सुसज्जित। पु० कपड़े पर चढ़ाने का फ़ीता।
लों, लौं—अव्य० तक। समान
लोंदा—पु० गीला वस्तु का पिंडा। [का।
लोअर—वि० (अं०) नीचे-
लोई—स्त्री० ऊनी-चादर-विशेष। गुँधे हुए आटे की गोली। पु० लोग।
लोकंजन—पु० वह काल्पनिक सुरमा जिसके विषय में यह कहा जाता है कि इसके

लगाने वाला अदृश्य हो जाता है ।
लोकंदी—स्त्री० विवाह में लड़की के साथ ससुराल जाने वाली दासी ।
लोक—पु० संसार । लोग । विश्व का कोई भाग ।
लोकजित्—पु० बुद्ध, जिन ।
लोकटी—स्त्री० लोमड़ी ।
लोकतंत्रवाद—पु० पंचायती-राज्य ।
लोकधुनि—स्त्री० अफ़वाह ।
लोकना—सक्रि० बीच में ही पकड़ना ।
लोकनाथ, लोकप, लोकपाल—पु० ब्रह्मा । राजा । दिग्पाल ।
लोकप्रिय—वि० प्रसिद्ध
लोकबांधव—पु० सूर्य ।
लोकमाता—स्त्री० लक्ष्मी ।
लोकयात्रा—स्त्री० रोज़ी ।
लोकरव—पु० अफ़वाह ।
लोकल—वि० (अं०) स्थानीय।
लोकलोचन—पु० सूर्य ।
लोकसंग्रह—पु० सब का भला चाहना ।
लोकसत्तात्मक—वि० वह राज्य जिसमें शासन-शक्ति जनता के हाथ में हो ।
लोकहार—वि० लोक-नाशक
लोकांतर—पु० परलोक ।
लोकांतरित—वि० मृत ।
लोकाचार—पु० लोकव्यवहार
लोकाट—पु० एक फल ।
लोकापवाद—पु० बदनामी ।
लोकायत—पु० नास्तिकवाद, परलोक को न मानने वाला।
लोकेश—पु० ब्रह्मा ।
लोकोक्ति—स्त्री० कहावत ।
लोकोत्तर—वि० असाधारण ।
लोग—पु० मनुष्य । [लता ।
लोच—स्त्री० लचक । कोम-
लोचन—पु० नेत्र ।
लोचना—सक्रि० चाहना । अक्रि०ललचाना। बिराजना।
लोचून—पु० लोहे का चूर्ण ।
लोटन—पु० कबूतर विशेष ।
लोटना—अक्रि० लेटना ।
लोटा—पु० जलपात्र विशेष।
लोड़ना—सक्रि० चाहना ।
लोढ़ना—सक्रि० तोड़ना । चुनना । चाहना ।
लोढ़ा७—पु० बट्टा ।
लोथ, लोथि—स्त्री० लाश ।
लोथड़ा—पु० मांसपिंड ।
लोन—पु० नमक । सुन्दरता
लोना७—वि० नमकीन । सुन्दर । पु० खार । सक्रि० लुनना ।
लोनिया—पु० एक जाति ।
लोनी—स्त्री० एक साग । नवनीत ।
लोप—पु० नाश । छिपना ।
लोपन—पु० लुप्त करना ।
लोपना—सक्रि० छिपाना । नष्ट करना । अक्रि० लुप्त-होना । [लुप्त करने वाला ।
लोपक१४, लोप्ता१०—वि०
लोपनीय, लोप्य—वि० लोप-करने-योग्य ।
लोपांजन—पु०दे० 'लोकंजन'
लोबान—पु० (अ०) एक सुगन्धित गोंद ।
लोबिया—पु० (फ़ा०) एक अन्न तथा उसकी फली ।
लोभन—पु० लालच ।
लोभना, लोभाना—अक्रि० लुब्ध होना । सक्रि०लुभाना
लोभनीय—वि० सुन्दर ।
लोभित—वि० मुग्ध ।
लोम—पु० रोआँ । लोमड़ी ।
लोमकर्ण—पु० खरगोश ।
लोमकूप—पु० रोएँ का छिद्र ।
लोमड़ी—स्त्री० जन्तु विशेष ।
लोमश—पु० एक ऋषि । भेड़ । अधिक रोएँ वाला ।
लोमहर्षण—वि० भीषण ।
लोय—पु० लोग ।
लोयन—पु० आँख ।
लोरवा—पु० आँसू ।
लोरी—स्त्री० बच्चे के सुलाने का गीत ।
लोल—पु० चंचल । उत्सुक
लोलक—पु० झुमका ।
लोलकी—स्त्री० कान के नीचे का भाग ।
लोलना—अक्रि० हिलना । सक्रि० हिलाना ।
लोला—स्त्री० जीभ । पु० बच्चों का एक खिलौना ।
लोलुप—वि० लालची ।
लोवा—स्त्री० लोमड़ी ।
लोष्ट—पु० पत्थर । ढेला ।
लोहँड़ा७—पु० लोहे का तसला
लोह—पु० लोहा ।
लोहकिट्ट—पु० लोहे का मैल
लोहभांड—पु० इमामदस्ता ।

लोहसार—पु० फौलाद ।
लोहा—पु० एक धातु । धाक ।
लोहाना—अक्रि० किसी वस्तु में लोहे का स्वाद, या रंग आ जाना । [रक्त ।
लोहित—वि० लाल । पु०
लोहिताश्व—पु० अग्नि ।
लोहिया—पु० लोहा बेचनेवाला । [लली ।
लोही—स्त्री० उषाकाल की
लोहू—पु० रुधिर ।
लौं—अव्य० समान । तक ।
लौकना—अक्रि० चमकना । दिखाई देना ।
लौंग—स्त्री० एक मसाला । नाक या कान की कील ।
लौंडा—पु० लड़का ।
लौंडी—स्त्री० दासी ।
लौंद—पु० अधिक मास ।
लौ—स्त्री० लपट । दीपशिखा । चाह, लगन ।
लौकिक—वि० सांसारिक, व्यवहारी ।
लौकी—स्त्री० कद्दू ।
लौट—स्त्री० लौटने की क्रिया ।
लौटना९—अक्रि० वापिस आना । पलटना । [में ।
लौटानी—क्रि० वि० वापिसी
लौना७—वि० सुन्दर ।
लौनी—स्त्री० नवनीत । खेत की कटाई ।
लौरी—स्त्री० बछिया ।
लौस-पु०(अ०)मिलावट। सम्पर्क
लौह—पु० लोहा । (अ०) पुस्तक का मुख्य पृष्ठ । तख्ती
लौहकार—पु० लुहार ।
लौहतंतु—पु० लोहे का तार
लौहसार—पु० एक नमक ।
लौहित्य—पु० ब्रह्मपुत्र नद । लालसागर ।
ल्यौ—स्त्री० लौ, लगन ।
ल्वारि—स्त्री० लू ।

२९—व

वंक, वंकट—पु० टेढ़ा ।
वंकनाली—स्त्री० सुषुम्ना-नाड़ी ।
वंकिम—वि० टेढ़ा ।
वंग—पु० राँगा । कपास ।
वंगज—पु० सिंदूर । पीतल ।
वंचक—वि० धूर्त्त, ठग ।
वंचना—स्त्री० ठगना छल
वंचित—वि० ठगा हुआ । रहित । [वृक्ष ।
वंजुल—पु० बेंत । अशोक
वंटक—पु० बाँटने वाला ।
वंठ—पु० भाला । नाटा-व्यक्ति ।
वंडा—स्त्री० कुलटा स्त्री ।
वंदन४६—पु०स्तुति, प्रणाम
वंदनमाला—स्त्री० बंदनवार
वंदित—वि० आदरणीय ।
वंदी—पु० चारण । क़ैदी ।
वंदीक—पु० इन्द्र ।
वंदीजन—पु० चारण ।
वंद्य—वि० वंदना के योग्य ।
वंश—पु० बाँस । कुल ।
वंशज—पु० औलाद ।
वंशधर—पु० संतान ।
वंशकपूर,–वंशलोचन–पु० बाँस का सार भाग, बंसकपूर । [आया हुआ ।
वंशानुगत–वि० परंपरा से ।
वंशावली—स्त्री० वंश में उत्पन्न पुरुषों की क्रमागत सूची, कुर्सीनामा ।
वंशिका, वंशी–स्त्री० मुरली ।
वंशीधर—पु० श्रीकृष्ण ।
वंशीय—वि० कुलोत्पन्न ।
वंशीवट—पु० वह वट वृक्ष जिसके नीचे श्रीकृष्ण जी वंशी बजाया करते थे । [रीढ़ ।
वंश्य—वि० कुलीन । पु०
वक—पु० बगलापक्षी ।
वक़अत—स्त्री० (अ०) इज्ज़त । शक्ति ।
वकयंत्र—पु० अर्क निकालने का यंत्र
वकवृत्ति—स्त्री० घात में रह-

कर धोखे से काम निकालना ।
वक़ार—पु० (अ०) रोब । वैभव । उत्तम स्वभाव ।
वकालत—स्त्री० (अ०) वकील का पेशा ।
वकालतन्—क्रि० वि० (अ०) वकील के द्वारा ।
वकालतनामा—पु० (अ०) वकील को मुक़दमे में पैरवी करने का अधिकार-पत्र ।
वकील—पु०(अ०) वह व्यक्ति जो अदालत में मवक्किलों का पक्ष समर्थन करे । प्रतिनिधि ।
वकुल—पु० अगस्त का वृक्ष ।
वक़ूफ़—पु० (अ०) समझ ।
वक़्त—पु० (अ०) समय । अवसर ।
वक़्तनफ़वक़्तन्—क्रि० वि० (अ०) कभी कभी ।
वक्तव्य—वि० कहने योग्य ।
वक्ता१०—वि० कहने वाला ।
वक्तृता—स्त्री० भाषण ।
वक्तृत्व—पु० भाषण, कथन ।
वक्त्र—पु० मुख ।
वक़्फ़—पु०(अ०) धर्म के लिए दान की हुई सम्पत्ति ।
वक़्फ़नामा—पु० (अ०फ़ा०) सम्पत्ति वक़्फ़ करने के लिए लिखा गया पत्र ।
वक्र—वि० टेढ़ा ।
वक्रग्रीवा—पु० ऊँट ।
वक्रतुंड—पु० गणेश जी ।
वक्रदृष्टि—स्त्री०क्रोध की दृष्टि ।
वक्रधर—पु० शिव ।
वक्री—पु० वक्र अंग वाला ।
वक्ष, वक्षःस्थल—पु० छाती ।
वक्षोज, वक्षोरुह—पु० स्तन ।
वक्ष्यमाण—वि० कहने-योग्य । कहा जाता हुआ ।
वगर—अव्य० (अ०) यदि ।
वग़ैरह—अव्य० (फ़ा०) इत्यादि ।
वचन६—पु० कथन, बात ।
वचनकारी—वि०आज्ञाकारी ।
वचनविदग्धा—स्त्री० वह नायिका जो वचन चातुर्य से नायक का प्रेम संपादन करे ।
वज़न, वज़नदार—पु० (अ०) भार । तौल । गौरव, मान।
वज़नी—वि० भारी ।
वजह—स्त्री० (अ०) कारण ।
वज़ा—स्त्री० (अ०) बनावट, शक्ल । [दर्शनीय, सुन्दर ।
वज़ादार—वि० (फ़ा०)
वज़ारत—स्त्री० (फ़ा०) वज़ीर का पद या कार्य । [सौंदर्य ।
वजाहत—स्त्री० (अ०)
वज़ीफ़ा—पु० (अ०) वृत्ति ।
वज़ीर२—पु० (अ०) मंत्री ।
वज़ीरआज़म—पु० (अ०) प्रधान मंत्री ।
वज़ू—पु० (अ०) नमाज़ के पूर्व मुँह हाथ धोना ।
वजूद—पु० (अ०) अस्तित्व । कार्य-सिद्धि । शरीर ।
वजूहात—स्त्री० (अ०) बहु० 'वजह' का ।
वज्र—पु० इन्द्र का प्रधान-शस्त्र, बिजली । हीरा । वि० कठिन ।
वज्रक—पु० हीरा । [गरुड़ ।
वज्रतुंड—पु० गणेश जी ।
वज्रदंत—पु० सूअर । चूहा ।
वज्रधर, वज्रपाणि—पु० इन्द्र
वज्रसार—पु० हीरा ।
वज्री—पु० इन्द्र ।
वट—पु० बरगद का वृक्ष ।
वटसावित्री—स्त्री० स्त्रियों का वट पूजन का एक व्रत ।
वटिका, वटी—स्त्री० गोली ।
वटु, वटुक—पु० बालक । विद्यार्थी । ब्रह्मचारी ।
वडवानल—दे० 'बड़वानल' ।
वणिक्—पु० वैश्य । रोज़गार
वतन—पु० (अ०)जन्म-भूमि ।
वतनी—वि० (अ०) देश का
वतीरा—पु०(अ०) सिद्धान्त । रंग-ढंग ।
वत्स—पु० बछड़ा । बालक ।
वत्सर—पु० साल, वर्ष ।
वत्सल४—वि०बच्चे के प्रेम से युक्त । प्यारा । दयालु ।
वदती—स्त्री० कथा ।
वदन—पु० मुख । [मृदुभाषी
वदान्य—वि० उदार ।
वद, वदी—स्त्री० कृष्णपक्ष ।
वदुसाना—सक्रि० दोष देना ।
वध१२—पु० हत्या ।
वधजीवी—पु०क़साई ।
वधत्र—पु० हथियार ।
वधभूमि—स्त्री०क़साईख़ाना । फाँसीघर ।
वधिक—पु० वध करने वाला
वधुका—स्त्री० बहू, दुलहिन
वधू, वधूटी—स्त्री० दुलहिन,

स्त्री ।
वध्य–वि० मार डालने योग्य ।
वध्यभूमि—स्त्री० फाँसीघर ।
वन—पु० जङ्गल । पानी ।
वनचारी५—पु० वन में रहने वाला ।
वनज, वनरुह—पु० कमल ।
वनदेवी—स्त्री० वन की अधिष्ठात्री देवी ।
वनप्रिया—स्त्री० कोयल ।
वनमाला—स्त्री० वन-पुष्पों की माला ।
वनमाली—पु० श्रीकृष्ण ।
वनराज—पु० सिंह । वरुण ।
वनराजि—स्त्री० वृक्षों का समूह ।
वनवास८—पु० वन में रहना
वनश्री—स्त्री० वन की शोभा ।
वनस्थली—स्त्री० जंगल ।
वनस्पति—स्त्री० पेड़ पौधा ।
वनहास—पु० काँस ।
वनिता—स्त्री० स्त्री, प्रिया ।
वनोत्सर्ग—पु० कुएँ, मंदिर आदि का दान ।
वनौषध—स्त्री० जड़ी बूटी ।
वन्द–अव्य० (फ़ा०) 'वाला' अर्थ में लगने वाली प्रत्यय ।
वन्य—वि० जङ्गली । पु० शंख ।
वपन—पु० बीज बोना ।
वपु, वपुष—पु० शरीर ।
वप्र—पु० मिट्टी का बहुत बड़ा ढेर जो किले आदि के चारों ओर लगाया जाता है ।
वफ़ा–स्त्री० (अ०) सुशीलता बात का पूरा करना ।
वफ़ात—स्त्री० (अ०) मृत्यु ।
वफ़ादार२—वि० कर्त्तव्य-पालक ।
वबा—स्त्री० (अ०) मरी । भयंकर रोग । [भार ।
वबाल—पु० (अ०) आपत्ति ।
वमन—पु० कै ।
वमि—स्त्री० कै का रोग ।
वयःक्रम—पु० उम्र ।
वयःसंधि—स्त्री० बाल्य और यौवन काल के बीच की स्थिति ।
वय, वयस—स्त्री० उम्र ।
वयन—पु० बनना ।
वयवती, वयोवती—स्त्री० बूढ़ी स्त्री । [बालिग़ ।
वयस्क४—वि० सयाना ।
वयस्य४—वि० हमउमर । सखा । [बुज़ुर्ग ।
वयोवृद्ध—वि० बूढ़ा ।
वरंच–अव्य० परन्तु । बल्कि
वर–पु० पति । मनोरथ सिद्धि वि० श्रेष्ठ । (फ़ा०) शब्दों के अन्त में 'वाला' अर्थ में लगी प्रत्यय ।
वरक़–पु० (अ०) पत्र, पन्ना । सोने चाँदी आदि का पत्तर ।
वरक़साज़र—वि० (अ०) वरक बनाने वाला ।
वरग़लाना—सक्रि० बहकाना
वरजना—सक्रि० मना करना
वरज़िश—स्त्री० (फ़ा०) व्यायाम, कसरत ।
वरण६—पु० वर रूप में स्वीकार करना । चुनना ।
वरत्व—पु० श्रेष्ठता ।
वरद४—वि० वरदाता ।
वरदान८—पु० वर देना ।
वरना—अव्य० नहीं तो ।
वरन्—अव्य० बल्कि ।
वरम—पु० (अ०) सूजन ।
वरयात्रा—स्त्री० बरात ।
वरवर्णिनी—स्त्री० सुन्दरी ।
वरसा–पु० (अ०) उत्तराधिकार से प्राप्त धन । बहु० 'वारिस' का ।
वराक—वि० बेचारा ।
वराट—पु० डोरी । कौड़ी ।
वराटिका—स्त्री० कौड़ी ।
वरानना—स्त्री० सुन्दरी ।
वराल—पु० लौंग ।
वरासत–स्त्री० (अ०) बपौती, उत्तराधिकार ।
वरासतन्—क्रि० वि० (अ०) उत्तराधिकार के रूप में ।
वराह—पु० सूअर ।
वराहमिहिर—पु० ज्योतिष के एक प्रकांड पंडित ।
वरिष्ठ४—वि० श्रेष्ठ ।
वरुण–पु० जल । जलदेवता ।
वरुणात्मजा—स्त्री० शराब ।
वरुणालय—पु० समुद्र ।
वरूथ—पु० फ़ौज । कवच । ढाल ।
वरूथिनी—स्त्री० सेना ।
वरेण्य–वि० पूज्य । [वाली ।
वरोरू—स्त्री० सुन्दर जंघा-
वर्ग—पु० श्रेणी । समूह । वह क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ बराबर और चारों कोण समकोण हों ।

वर्गफल—पु० दो समान राशियों का गुणनफल।
वर्गमूल—पु० वह अङ्क जिस का वर्ग किया हो। [लाना।
वर्ग़लाना—सक्रि० (फ़ा०) फुसलाना।
वर्गवाद—पु० वह सिद्धांत जो श्रेणी-विभाग को माने।
वर्गीय—वि० वर्ग का।
वर्गीकरण—पु० श्रेणी में रखना।
वर्चस्वी—त्रि० तेजस्वी।
वर्जनक्ष—पु० निषेध। त्याग।
वर्जित—वि० निषिद्ध। त्यक्त
वर्ज्य—वि० वर्जन योग्य।
वर्ण—पु० रंग। जाति। अक्षर
वर्णतूलिका—स्त्री० क़लम।
वर्णनक्ष—पु० बयान।
वर्णमाला—स्त्री० अक्षर-सूची।
वर्णविचार—पु० अक्षरों की उत्पत्ति आदि पर विचार करना। [सजावट।
वर्णविन्यास—पु० अक्षर-रचना।
वर्णवृत्त—पु० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु-क्रम समान हो।
वर्णसंकर—पु० दोगला।
वर्णिका—स्त्री० रंग भरने की कूँची।
वर्णित—वि० कथित।
वर्ण्य—वि० वर्णन के योग्य।
वर्त्तनक्ष—पु० बरताव।
वर्त्तनी—स्त्री० मार्ग। पीसना
वर्त्तमान—वि० मौजूद।
वर्त्ति—स्त्री० बत्ती। उबटन।
वर्त्तिका—स्त्री० बत्ती, सलाई।
वर्त्तित—वि० चलाया हुआ। स्त्री० बत्ती।
वर्त्ती५—वि० बरतने वाला।
वर्त्तुल—वि० गोल। [पलक।
वर्त्म—पु० मार्ग। आँख की-
वर्दी—स्त्री० पोशाक-विशेष।
वर्द्धक—त्रि० बढ़ाने वाला।
वर्द्धनक्ष—पु० वृद्धि। [हुआ।
वर्द्धमान४—वि० बढ़ता-
वर्द्धित—वि० बढ़ा हुआ।
वर्म—पु० कवच।
वर्महर—पु० कवचधारी।
वर्मा—पु० क्षत्रियोंकी उपाधि
वर्य्य—वि० श्रेष्ठ।
वर्वर—वि० असभ्य।
वर्ष—पु० साल।
वर्षगाँठ—स्त्री० सालगिरह।
वर्षणक्ष—पु० बरसना।
वर्षधर—पु० बादल।
वर्षफल—पु० वह कुंडली जिससे एक वर्ष का शुभाशुभ फल जाना जाता है।
वर्षा—स्त्री० वृष्टि। [बहूटी।
वर्षाभू—पु० मेंढक। वीर-
वर्षिष्ठ—वि० अत्यंत वृद्ध। टिकाऊ।
वर्ह—पु० मोरपंख।
वर्हो५—पु० मोर।
वलंब—पु० सहारा।
वलक्ष—वि० गोरा, सफ़ेद।
वलय—पु० कंकण। घेरा।
वलयित—वि० वेष्टित।
वलवला—पु० (अ०) जोश। उमंग। शोर।
वलाक४—पु० बगला।
वलाहक—पु० बादल।
वलि—स्त्री० लकीर। पंक्ति। एक राजा। चढ़ावा।
वलित—त्रि० जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों। घेरा हुआ। सहित। जुड़ा हुआ।
वलिमुख—पु० बंदर।
वली—स्त्री० (अ०) झुर्री। पु० मालिक, हाकिम। साधु
वलीअह्द—पु० (अ०) युवराज।
वले—अव्य० (फ़ा०) लेकिन।
वल्कल—पु० वृक्ष की छाल।
वल्गित—पु० घोड़े की एक चाल।
वल्द—पु० (अ०) पुत्र, बेटा।
वल्दियत—स्त्री (अ०) पिता के नाम का परिचय। [ऋषि।
वल्मीक—पु० बाँबी। एक-
वल्लकी स्त्री० लता। वीणा।
वल्लभ४—वि० प्यारा। पु० पति
वल्लरी—स्त्री० बेल, लता।
वल्लाह—अव्य० (अ०) खुदा की क़सम। सचमुच।
वल्लिका, वल्ली—स्त्री० लता
वशंवद४—वि० वश में रहने वाला।
वश—पु० क़ाबू। [रहने वाला
वशवर्त्ती५—त्रि० वश में
वशानुग—पु० दास।
वशिता—स्त्री०, वशित्व—पु० अधीनता।
वशी५—वि० वशीभूत।
वशीकरण—पु० वश में करने का ढंग।
वशीभूत—त्रि० अधीन।
वश्य३—वि० अधीन।
वश्यवाक्—वि० वाणी पर

अधिकार रखने वाला।
वसंत—पु० मौसिम बहार जो फाल्गुन और चैत्र में होता है। [कोकिल।
वसंतदूत७, वसंतव्रत—पु०
वसंतपंचमी—स्त्री० माघ-शुक्ल पंचमी।
वसंतबंधु—पु० कामदेव।
वसंतव्रत—पु० कोयल।
वसंतसखा—पु० कामदेव।
वसंती—पु० हल्का पीला रंग।
वसंतोत्सव—पु० वसंतपंचमी के अगले दिन होने वाला एक प्राचीनकालीन उत्सव, मदनोत्सव।
वसन—पु० वस्त्र।
वसवास८—पु० भ्रम। मोह
वसह—पु० बैल।
वसा—स्त्री० चरबी, मज्जा
वसायल—पु० (अ०) बहु० 'वसीला' का। [ऋषि।
वसिष्ठ—पु० एक प्राचीन-
वसी—पु० (अ०) जिसके नाम वसीयत की गई हो।
वसीअ—वि० (अ०) विस्तृत।
वसीका—पु० (अ०) वह धन जो सूद की गरज़ से सरकारी खज़ाने में जमा किया जाय। ऐसे धन का सूद।
वसीयत—स्त्री० (अ०) मरने या यात्रा के समय, अपनी सम्पत्त के संबंध में लिखी गयी व्यवस्था।
वसीयतनामा—पु० (अं०) वह काग़ज़ जिस पर वसीयत की व्यवस्था लिखी हो

वसीला—पु० (अ०) ज़रिया।
वसुंधरा—स्त्री० पृथ्वी।
वसु—पु० रत्न। धन। एक देवता। आठ की संख्या।
वसुदेव—पु० श्रीकृष्ण के पिता
वसुधा, वसुमती—स्त्री० पृथ्वी
वसुप्रद—पु० कुबेर। [पहर।
वसुयाम—क्रि० वि० आठों-
वसूल२—वि० (अ०) प्राप्त।
वसूल-बाक़ी—पु० (अ०) प्राप्त और प्राप्य धन।
वस्त—पु० (अ०) बीच।
वस्तव्य—वि० रहने योग्य।
वस्ति—स्त्री० मूत्राशय।
वस्तिकर्म—पु० लिंग तथा गुदा में पिचकारी द्वारा पानी चढ़ाना।
वस्तु—पु० चीज़, पदार्थ।
वस्तुतः—क्रि० वि० वास्तव में
वस्तुस्थिति—स्त्री० सच्ची दशा (हालत)।
वस्त्र—पु० कपड़ा।
वस्फ़—पु० (अ०) गुण।
वस्ल—पु० (अ०) मिलन।
वहदत—स्त्री० (अ०) एकत्व
वहन८—पु० ले जाना, ढोना
वहम—पु० (फ़ा०) भ्रम।
वहमान४—वि० ले जाता-हुआ। [भयता।
वहशत—स्त्री० (अ०) अस-
वहशी—वि० (अ०) असभ्य, जंगली।
वहाबी—पु० (अ०) मुसलमानों का एक सम्प्रदाय तथा इसका अनुयायी।
वहिः—अव्य० बाहर।

वहित वि० वहन किया हुआ।
वहित्र—पु० जहाज़।
वहिरंग—पु० बाहरी भाग। वि० बाहरी। [हुआ।
वहिर्गत—वि० बाहर गया-
वहिर्भूत—वि० जो बाहर हुआ।
वहिर्मुख—वि० बाग़ी। विमुख
वहिर्लापिका—स्त्री० पहेली विशेष।
वहिष्कार—पु० त्याग।
वहिष्कृत—वि० बाहर किया-हुआ। त्यक्त। [बेजोड़।
वहीद—वि० (अ०) अनुपम,
वह्नि—पु० अग्नि।
वह्निमित्र—पु० वायु।
वांछनीय—वि० चाहने योग्य
वांछा—स्त्री० इच्छा।
वांछित—वि० इच्छित।
वा—अव्य० अथवा।
वाइसराय—पु० (अं०) सम्राट् का प्रतिनिधि।
वाक़ई—अव्य० (अ०) सच-मुच। वि० सच। [जानकारी
वाक़फ़ियत—स्त्री० (अ०)
वाक़या—पु० (अ०) घटना।
वाक़िफ़—वि० (अ०) जानकार।
वाक्—पु० वाणी। [चतुर।
वाक्पटु—वि० बातचीत में-
वाक्य—पु० वचन। जुमला
वागीश४—वि० श्रेष्ठ-वक्ता। कवि। वृहस्पति।
वागीश्वरी—स्त्री० सरस्वती।
वागुरिक—पु० शिकारी
वाग्दंड—पु० फटकार।

वाग्दत्ता–स्त्री० वह कन्या जिसके विवाह का वचन दिया जा चुका है।
वाग्दान—पु० (कन्या) देने का वचन।
वाग्मित्व–पु० श्रेष्ठ-वक्तृता।
वाग्मी—वि० श्रेष्ठ-वक्ता।
वाग्विलास—पु० आनन्द पूर्वक वार्त्तालाप करना।
वाग्वीर—वि० ख़ूब तथा साहस के साथ बोलने वाला।
वाङ्मय—पु० साहित्य। वाणी से किया हुआ।
वाच, वाचा—स्त्री० वचन।
वाचक—पु० कहने वाला।
वाचन६—पु० पढ़ना।
वाचनालय—पु० अख़बार, पुस्तकें आदि पढ़ने का स्थान।
वाचस्पति—पु० वृहस्पति।
वाचाबद्ध—वि० वचन-बद्ध।
वाचाल३–वि० बकवादी।
वाची—वि० सूचक।
वाच्य—वि० कथनीय।
वाच्यार्थ—पु० मूलशब्द का अर्थ।
वाजपेय८–पु० यज्ञ विशेष।
वाज़ह—वि० (अ०) रोशन, ज़ाहिर। [उचित।
वाजिब, वाजिबी–वि० (अ०)
वाजी—पु० घोड़ा।
वाजीकरण–पु० वीर्य वर्द्धक ओषधि।
वाट—पु० मार्ग।
वाटिका—स्त्री० बाग़ीचा।
वाडव—पु० समुद्राग्नि।
वाण–पु० तीर। वाणासुर।
वाणिज्य—पु० व्यापार।
वाणी—स्त्री० वचन।
वात—पु० वायु।
वातज—वि० वायु से पैदा।
वातजात—पु० हनुमान्।
वातायन—पु० खिड़की, झरोखा। [मौसम।
वातावरण—पु० वायुमंडल,
वातुल—वि० उन्मत्त।
वातूल—पु० तूफ़ान। वात का रोगी, उन्मत्त। [प्यार।
वात्सल्य—पु० संतान का-
वात्स्यायन–पु० एक मुनि।
वाद—पु० तर्क, बहस। निश्चित सिद्धान्त।
वादक१४–पु० वक्ता। बाजा बजाने वाला।
वादन६–पु० बाजा बजाना।
वादप्रतिवाद—पु० बहस।
वादरंग—पु० पीपल का वृक्ष
वादरायण—पु० व्यास ऋषि
वादविवाद—पु० बहस।
वादा—पु० (अ०) इकरार।
वादानुवाद—पु० शास्त्रार्थ।
वादि—पु० विद्वान्।
वादित४–वि० बजाया गया।
वादित्र—पु० बाजा।
वादी५–पु० वक्ता। मुद्दई।
वाद्य—पु० बाजा।
वानप्रस्थ—पु० गृहस्थ के बाद का आश्रम।
वानर–पु० बन्दर। [संबंधी।
वानस्पत्य—वि० वनस्पति-
वानीर—पु० बेंत।
वाप, वापन—पु० बोना।
वापिस२—वि० (फ़ा०) लौटा हुआ।
वापिका, वापी–स्त्री० बावली
वाबिस्ता–वि० (फ़ा०) संबद्ध
वाम३—वि० बायाँ। टेढ़ा।
वामदेव—पु० शिव। एक ऋषि। [विष्णु का अवतार।
वामन–वि० बौना। पु० एक
वाममार्ग८—पु० तांत्रिकों का मत।
वामा—स्त्री० स्त्री।
वामांगिनी—स्त्री० स्त्री।
वायक—पु० जुलाहा।
वायन—पु० बयना, भेंट।
वायव्य—पु० उत्तर पश्चिम का कोण।
वायस—पु० कौआ।
वायु—पु० हवा। [दिशा।
वायुकोण–पु० पश्चिमोत्तर-
वायुभक्ष—पु० साँप।
वायुमंडल—पु० हवा का घेरा, वातावरण।
वायुवाह—पु० धुआँ।
वायुसखा—पु० अग्नि।
वारंट—पु० (अं०) पकड़ने का आज्ञापत्र।
वार—पु० द्वार। रोक। आक्रमण। अवसर। दिन। समूह। किनारा। [वेश्या।
वारकन्या, वारवधू—स्त्री०
वारण–पु० निषेध। हाथी।
वारतिय—स्त्री० वेश्या।
वारदात–स्त्री० (अ०) दुर्घटना
वारन–स्त्री० निछावर। हाथी।
वारना–सक्रि० बलि जाना।

वारनारी—स्त्री० वेश्या।
वारपार—पु० अंत। अव्य० इस किनारे से उस किनारे तक।
वारफेर—पु० निछावर।
वारफ्त—वि० (फ़ा०) आपे से बाहर।
वारमुखी—स्त्री० वेश्या।
वारांगना—स्त्री० वेश्या।
वारा—पु० बचत।
वाराणसी—स्त्री० काशी।
वारान्यारा—पु० फ़ैसला।
वाराह—पु० सूअर।
वाराही—स्त्री० अष्ट माताओं में से एक।
वारि—पु० जल।
वारिचक्र—पु० भँवर।
वारिज—पु० कमल। शंख।
वारित—वि० रोका हुआ।
वारिद—पु० मेघ। वि० (अ०) आगन्तुक।
वारिधि—पु० समुद्र।
वारियाँ—स्त्री० निछावर।
वारिवारण—पु० पुल।
वारिवाह—पु० बादल।
वारिस—पु० (अ०) उत्तराधिकारी।
वारींद्र, वारीश—पु० समुद्र।
वारुण—पु० पानी। वि० वरुण का। [पश्चिम दिशा।
वारुणी—स्त्री० शराब।
वार्त्त—वि० स्वस्थ। [संवाद।
वार्त्ता—स्त्री० बात, वृत्तान्त,
वार्त्तायन, वार्त्तावह—पु० दूत
वार्त्तालाप—पु० बातचीत।
वार्त्तिक—पु० वह ग्रंथ या वाक्य जिसमें सूत्रों की व्याख्या हो। [उन्नति।
वार्द्धक्य—पु० बुढ़ापा। बढ़ती
वार्य्य—वि० रोकने-योग्य।
वार्षिक—वि० सालाना।
वार्षिकी—स्त्री० सालाना पत्रिका।
वार्ष्णेय—पु० श्रीकृष्ण।
वालंटियर—पु० (अं०) स्वयंसेवक। [पिता।
वालदैन—पु० (अ०) माता-
वाला—वि० (फ़ा०) उच्च। श्रेष्ठ। [उच्च-पदस्थ।
वालाजाह—वि० (फ़ा०)
वालिद—पु० (अ०) पिता।
वालिदा—स्त्री० (अ०) माता।
वालिदैन—पु० (अ०) माता-पिता। [राजा। सहायक।
वाली—पु० (अ०) मालिक।
वालुका—स्त्री० बालू।
वाल्मीकि—पु० एक ऋषि जो रामायण के रचयिता, और आदि कवि भी हैं।
वावैला—पु० (अ०) हल्ला-गुल्ला। रोना-पीटना।
वाष्प—पु० भाप। आँसू।
वासंतिक—वि० वसंत सम्बन्धी पु० विदूषक।
वासंतिकता—स्त्री० वसंत का आनंद। [माधवीलता।
वासंती—स्त्री० मदनोत्सव।
वास—पु० गंध। निवास। घर।
वासकसज्जा—स्त्री० वह नायिका जो नायक से मिलने के लिए सज धज कर बैठी हो।
वासन—पु० वस्त्र। सुगंधित-करना। [इच्छा। संस्कार।
वासना—स्त्री० भावना,
वासर—पु० दिन।
वासव—पु० इन्द्र।
वासित—वि० सुगंधित।
वासिल—वि० (अ०) मिलने-वाला।
वासी५—पु० रहने वाला।
वासुकी—पु० एक नागराज।
वासुदेव—पु० श्रीकृष्ण।
वास्तव—वि० यथार्थ।
वास्तविक—वि० यथार्थ।
वास्तव्य—वि० रहने-योग्य।
वास्ता—पु० (अ०) सम्बन्ध।
वास्तु—पु० घर बनाने की भूमि। मकान।
वास्तुकला, वास्तुविद्या—स्त्री० भवन-निर्माण-कला।
वास्तोष्पति—पु० इन्द्र।
वास्ते—अव्य० (अ०) प्रशंसा, आनंद, तथा आश्चर्य-सूचक-शब्द। [सारथी।
वाहक—पु० बोझ ढोने वाला-
वाहन—पु० सवारी।
वाहवाही—स्त्री० प्रशंसा।
वाहिक—पु० गाड़ी।
वाहित—वि० ले जाया गया
वाहिद—पु० (अ०) एक-वचन।
वाहिनी—स्त्री० सेना। नदी
वाहिब—वि० (अ०) क्षमा करने वाला।
वाहियात—वि० (अ०) ख़राब
वाही५—वि० ले जाने वाला।

(अ०) निकम्मा। मूर्ख। आवारा।
वाहीतबाही—वि० (अ०) बेहूदा। स्त्री० गाली गलौज।
वाह्य—क्रि० वि० बाहर। वि० बाहरी। [भीतर का।
वाह्यांतर—वि० बाहर और
वाह्लीक—पु० गांधार के निकट का एक देश।
विंदक—वि० लाभयुक्त।
विंदु—पु० बूँद, कण।
विंदुपत्र—पु० भोजपत्र।
विंध्य—पु० पर्वत विशेष।
विंश—वि० बीसवाँ।
वि*—एक उपसर्ग।
विकच३—वि० खिला हुआ। सुन्दर।
विकट३—वि० भयंकर। टेढ़ा।
विकराल—वि० भयंकर।
विकर्म—पु० दुराचार।
विकर्षण—पु० आकर्षण।
विकल३—वि० व्याकुल।
विकलांग७—वि० जिसका कोई अंग खराब हो।
विकला—स्त्री० कला का साठवाँ भाग।
विकलित—वि० बेचैन।
विकल्प—पु० भ्रम। आगा-पीछा। दो में से एक।
विकल्मष—वि० निष्पाप।
विकसन६—पु० खिलना।
विकार८—पु० परिवर्त्तन। ख़राबी।
विकाश, विकास—पु० खिलना। फैलाव।
विकीरण—पु० छितराना।
विकीर्ण—वि० छितराया हुआ। [वाला।
विकीर्णकारी—वि० फैलाने-
विकुक्षि—वि० बड़ी तोंद वाला
विकृत—वि० बिगड़ा हुआ।
विकृति—स्त्री० ख़राबी।
विक्टोरिया—स्त्री० (अं०) घोड़ागाड़ी विशेष।
विक्रम—पु० बल, शौर्य। विक्रमादित्य। वि० श्रेष्ठ।
विक्रमण—पु० चलना।
विक्रमी—वि० प्रतापी। वि० विक्रमादित्य-संबंधी।
विक्रय, विक्रयण—पु० बेचना
विक्रांत—पु० वीर, शूर।
विक्रांति—स्त्री० वीरता।
विक्रायक—पु० बेचने वाला
विक्री—स्त्री० बेचना।
विक्रीत—वि० बेचा हुआ।
विक्रेता—पु० बेचने वाला।
विक्रेय—वि० बिकने योग्य।
विक्लांत—वि० परेशान।
विक्लिन्न—वि० जीर्ण।
विक्षत—वि० जिसको चोट लगी हो, घायल।
विक्षिप्त३—वि० फेंका हुआ। पागल। व्याकुल।
विक्षुब्ध—वि० चंचल मन का
विक्षेप—पु० फेंकना। बाधा
विक्षोभ—पु० घबराहट, शोक।
विख्यात—वि० प्रसिद्ध।
विख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि।
विगंध—दुर्गन्ध।
विगत—वि० बीता हुआ। रहित।
विगति—स्त्री० दुर्गति।
विगम—पु० नाश। प्रस्थान। समाप्ति।
विगर्हण४—पु० निंदा। डाँट
विगर्हित—वि० डाँटा गया। बुरा।
विगलन—पु० नाश।
विगलित—वि० बिगड़ा हुआ
विगुण—वि० गुण-रहित।
विग्रह—पु० युद्ध। कलह। शरीर। रूप। [वाला।
विग्रही—वि० युद्ध करने-
विघटन—पु० तोड़-फोड़।
विघटनात्मक१४—वि० नाश होने वाला।
विघातन—पु० चोट।
विघ्न—पु० बाधा।
विघ्ननाशक, विघ्ननायक—पु० गणेश जी।
विघ्नराज—पु० गणेश जी।
विचकित—वि० घबराया-हुआ।
विचक्षण—वि० अतिचतुर।
विचयन—पु० इकट्ठा करना। जाँच।
विचरण६—पु० भ्रमण।
विचरना—अक्रि० घूमना।
विचल४-३—वि० अस्थिर।
विचलना९—अक्रि० स्थान-भ्रष्ट होना। घबराना।
विचलित—वि० अस्थिर।

नोट—*'वि' एक उपसर्ग है जो 'विशेष, थोड़ा, निश्चय, वियोग, हेतु, शुद्ध और अवलंबन' अर्थों की विशेषता प्रकट करता है।

विचार—पु० ख़याल, भावना
विचारक-१४—पु० विचार-करने वाला।
विचारणा६—स्त्री० विचार।
विचारधारा—स्त्री० विचारों का समूह।
विचारना—अक्रि० सोचना।
विचारपति—पु० निर्णायक।
विचारवान्, विचारशील—पु० जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो।
विचारालय—पु० कचहरी।
विचिकित्सा—स्त्री० शक।
विचित्त—वि० बेसुध।
विचित्र३—वि० अद्भुत।
विचित्रांग—पु० मोर। व्याघ्र
विचित्रित—वि० कई रँग का
विचूर्ण—वि० बिल्कुल नष्ट।
विचेता—पु० नीच। मूर्ख।
विचेष्ट—वि० चेष्टाहीन।
विच्छर्दन—पु०, विच्छर्दिका—स्त्री० क़ै, वमन।
विच्छाय—वि० छाया रहित, विशेष छाया वाला।
विच्छिन्न३—वि० अलग। विभक्त। [वियोग। विनाश।
विच्छेद, विच्छेदन—पु०
विछोह—पु० वियोग।
विजन३—वि० एकांत। पु० पंखा। [क्रिया।
विजनन—पु० जनने की-
विजना—पु० पंखा।
विजन्मा—पु० जार संतान।
विजय—स्त्री० जीत।
विजयपताका—स्त्री० जीत का झंडा।
विजयलक्ष्मी—स्त्री० विजय की अधिष्ठात्री देवी।
विजया—स्त्री० दुर्गा। भाँग।
विजयादशमी—स्त्री० आश्विन शुक्लदशमी।
विजयी५—वि० जीतने वाला
विजयोत्सव—पु० विजय के उपलक्ष में होने वाला उत्सव। [हो।
विजर—वि० जो पुराना न-
विजातीय—वि० दूसरी जाति का। [इच्छा।
विजिगीषा—स्त्री० जीतने की-
विजिगीषु—वि० जीतने का इच्छुक। [गया, हारा हुआ
विजित—वि० जो जीत लिया-
विजृंभण—पु० जँभाई लेना।
विजेता१०—वि० जीतने वाला
विज्जु—स्त्री० बिजली।
विज्ञ३—वि० चतुर, पंडित।
विज्ञप्त—वि० सूचित।
विज्ञप्ति—स्त्री० विज्ञापन।
विज्ञात—वि० जाना हुआ।
विज्ञाति—स्त्री० जानकारी।
विज्ञान८—पु० शास्त्र। विशिष्ट ज्ञान।
विज्ञानवादी५—वि० वह दार्शनिक जो विज्ञान के अतिरिक्त किसी की हस्ती न माने। [इश्तिहार।
विज्ञापन४, ६—पु० सूचना,
विज्ञापित—वि० सूचित-किया गया [वाला।
विज्ञापी५—वि० सूचित करने-
विट—पु० लंपट। विष्ठा।
विटप—पु० वृक्ष। कोंपल।
विटपी—पु० वटवृक्ष। वृक्ष।
विडंबक—पु० नक़ल उतारने वाला तथा हँसी करने वाला। [फटकार।
विडंबना६—स्त्री० हास्य।
विडरना९—अक्रि० तितर-बितर होना।
विडाल७—पु० नर बिल्ली।
विडौजा—पु० इन्द्र।
वितंडा—पु० व्यर्थ का झगड़ा
वितंडावाद—पु० कहा-सुनी।
वितंत—पु० बेतार का बाजा।
वित—पु० शक्ति। वि० चतुर
वितत—वि० फैला हुआ, लंबा।
वितति—स्त्री० विस्तार।
वितथ—वि० व्यर्थ।
वितरक१४—पु० बाँटनेवाला
वितरण६—पु० बाँटना।
वितरित—वि० बाँटा हुआ।
वितरेक—क्रि० वि० अतिरिक्त। [दूसरा तर्क। शक।
वितर्क—पु० तर्क के बाद-
वितल—पु० एक पाताल।
वितस्ता—स्त्री० झेलम नदी।
वितस्ति—स्त्री० बालिश्त।
वितान—पु० चँदोवा। फैलाव
वितानना—सक्रि० तानना, फैलाना।
वितुंड—पु० हाथी।
वितृष्ण—वि० तृष्णा रहित।
वित्त—पु० धन।
वित्तेश्वर—पु० कुबेर। [हुआ
विथकित—वि० खूब थका-
विथराना—सक्रि० फैलाना।
विदग्ध—वि० पंडित। जला-हुआ।

विदरना—अक्रि० फटना। सक्रि० फाड़ना।
विदल—वि० खिला हुआ।
विदलन—पु० दबाना, कुचलना। [करना।
विदलना—सक्रि० दलन-
विदा,विदाई—स्त्री० प्रस्थान
विदारक१४—वि० फाड़नेवाला। [हनन।
विदारण६—पु० फाड़ना।
विदारित—वि०फाड़ा हुआ।
विदारी५—वि० फाड़ने वाला
विदित—वि० जाना हुआ।
विदिशा—स्त्री० दो दिशाओं के बीच का कोण।
विदीर्ण—वि०फाड़ा हुआ।
विदुर—पु० जानकार। धृतराष्ट्र के एक भाई।
विदुष७—पु० विद्वान्।
विदूरित—वि०दूर किया हुआ
विदूषक—पु० मसख़रा।
विदेश८—पु० परदेश।
विदेह—पु० राजा जनक। वि० अचेत।
विदेही—पु० ब्रह्म।
विद—पु० जानकार।
विद्ध—वि०छेद किया हुआ।
विद्यमान३—वि० मौजूद।
विद्या—स्त्री० इल्म, ज्ञान, हुनर।
विद्यादेवी—स्त्री० सरस्वती।
विद्याधर—पु० पंडित।
विद्याधरी—स्त्री०एक देवांगना।
विद्यापीठ—पु० शिक्षणस्थान, गुरुकुल।
विद्यार्थी५—पु० छात्र।
विद्यालय—पु० स्कूल।
विद्यावान्१३—पु०विद्वान्।
विद्युत्—स्त्री० बिजली।
विद्युन्माला—स्त्री० बिजली का समूह। एक छंद
विद्युल्लेखा—स्त्री० बिजली।
विद्रावण—पु० गलना। उड़ना। भागना।
विद्रावक—वि० टरवाने वाला
विद्रुम—पु० मूँगा।
विद्रोह—पु० बलवा।
विद्रोही—पु० बाग़ी।
विद्वत्ता—स्त्री० पांडित्य।
विद्वान्—पु० पंडित।
विद्वेष—पु० शत्रुता।
विध—पु० ब्रह्मा।
विधन—वि० ग़रीब।
विधना—पु० ब्रह्मा। स्त्री० होनहार। सक्रि०प्राप्तकरना
विधर्म—वि० अन्य धर्म।
विधर्मी—वि० ग़ैरधर्म का।
विधवा१—स्त्री० बेवा।
विधवाश्रम—पु० वह स्थान जहाँ असहाय विधवाएँ आश्रय पाती हैं।
विधातव्य—वि० करने योग्य।
विधाता—१०पु० प्रबंधक। ब्रह्मा। [व्यवस्था। नियम।
विधान—पु० अनुष्ठान।
विधायक१४, विधायी५—पु० विधान करने वाला। मुंसिफ़। [पु० ब्रह्मा।
विधि—स्त्री० ढंग, नियम।
विधिरानी—स्त्री०सरस्वती।
विधिवक्ता—पु०वकील।
विधिवत्—क्रि० वि० यथानियम। [पूर्वक।
विधिविहित—वि० नियम-
विधुंतुद—पु० राहु। [विष्णु।
विधु—पु० चन्द्रमा। ब्रह्मा।
विधुदार—स्त्री० चन्द्र-स्त्री।
विधुबंधु—पु० कुमुद।
विधुबनी—वि० स्त्री० चन्द्रमुखी। [रँडुआ।
विधुर—वि०व्याकुल,दुःखी।
विधुवदनी—स्त्री० सुन्दर-स्त्री
विधून—वि० कंपित।
विधूनित—वि० चलायमान, कंपित।
विधूम्र—वि० मटमैला।
विधेय—वि० विधान करने योग्य। पु० वह जो किसी के विषय में कुछ कहा जाय।
विध्वंसन—पु० नाश।
विध्वस्त—वि० नष्ट किया हुआ।
विनत—वि० झुका हुआ।
विनति—स्त्री०।झुकाव।प्रार्थना
विनती—स्त्री०प्रार्थना।
विनमन—पु० झुकाना।
विनम्र३, विनयी—वि० सुशील, नम्र।
विनय—पु० विनती।
विनयशील३—वि०नम्र।
विनशना—अक्रि० नष्टहोना
विनश्य—वि०नाश्यकेयोग्य।
विनश्वर—वि०नष्टहोने वाला
विनष्ट—वि० बरबाद, मृत।
विनसना९—अक्रि० नष्ट-होना।
विना—अव्य० बग़ैर।

विनायक—पु० गणेशजी । बुद्ध ।
विनाश१२—पु० नाश ।
विनाशन६—पु० नष्ट करना ।
विनाशोन्मुख—वि० नाश की ओर बढ़ता हुआ ।
विनिंदक१४—पु० विशेष निंदा करने वाला ।
विनिद्र—वि० निद्रारहित ।
विनिपात—पु० नाश । पतन
विनिमज्जित—वि० डूबा-हुआ, मग्न । [बदला ।
विनिमय—पु० परिवर्त्तन,
विनियोग—पु० प्रयोग । स्थिर करना । [हुआ ।
विनिर्गत–वि० बाहर निकला-
विनिर्मुक्त—वि०बन्धन-रहित
विनिर्वेश—पु० प्रवेश ।
विनिर्हित—वि०चुटैल,मृत ।
विनीत३—वि० नम्र ।
विनोदन—पु०हँसी । कौतुक
विनोदित—वि० आनन्दित ।
विन्यस्त—वि० स्थापित । सुसज्जित । [स्थापना,रचना
विन्यास—पु० यथास्थान-
विपंची–स्त्री०क्रीड़ा । वीणा
विपक्व—वि० कच्चा । खूब पका हुआ ।
विपक्षन—पु० विरुद्ध पक्ष ।
विपणि—स्त्री०छोटा बाज़ार।
विपत्ति—स्त्री० संकट ।
विपद्, विपदा–स्त्री० आपत्ति
विपन्न४—वि० विपत्तिग्रस्त ।
विपरीत—वि० उलटा ।
विपरीता—स्त्री० छिनाल-
विपर्यय—पु० गड़बड़ी । उलटफेर ।
विपर्यस्त—वि० अस्तव्यस्त ।
विपर्यान—पु० उलटफेर ।
विपल—पु०पल का साठवाँ-भाग ।
विपश्चित्—पु० विद्वान् ।
विपाक—पु०पकना ।कर्मफल
विपादिका—स्त्री० पहेली ।
विपिन—पु० वन ।
विपिन-विहारी–पु०श्रीकृष्ण।
विपुल३—वि० बहुत ।
विपुला—स्त्री० पृथ्वी ।
विपोहना—उक्रि० छेद-करना । पोहना । संहार-करना ।
विप्र—पु० ब्राह्मण ।
विप्रतिपत्ति—स्त्री० विरोध ।
विप्रलंभ—पु० वियोग । इच्छित वस्तु का न मिलना
विप्रलब्ध—वि० ठगा हुआ ।
विप्रलब्धा—स्त्री० वह ना-यिका जो संकेत-स्थान में प्रिय से भेंट न होने पर दुःखी हो ।
विप्लवन—पु० बलवा ।
विप्लावक,विप्लावी–पु०बागी
विप्लुत—वि० उपद्रवों से भरा हुआ ।
विफल३—वि० निष्फल ।
विबुध–पु० देवता । पंडित । चन्द्रमा । [देवांगना ।
विबुधविलासिनी—स्त्री०
विबोध—पु० जागरण ।
विबोधक१४—वि० समझाने
विभंग३—वि० चंचल ।
विभक्त—वि० बँटा हुआ ।
विभक्ति—स्त्री० विभाग । कारक-चिह्न ।
विभव—पु० ऐश्वर्य ।
विभांडक—पु० एक ऋषि ।
विभाँति—स्त्री० प्रकार । वि० कई तरह का ।
विभा—स्त्री० शोभा, कांति ।
विभाकर—पु० सूर्य । [क्रमा।
विभाग—पु० हिस्सा मह-
विभाजन६—पु० बँटवारा । हाईफन '–' ।
विभाजित—वि० बाँटा हुआ।
विभाज्य—वि० बाँटने-योग्य।
विभात—पु० प्रभात ।
विभाति—स्त्री० शोभा ।
विभाना–अक्रि० शोभा देना
विभारना—अक्रि० चमकना
विभाव–पु०रस का उद्दीपन । उमंग ।
विभावरी—स्त्री०रात्रि । दूती
विभावसु–पु० सूर्य । मदार । अग्नि ।
विभास—पु० चमक ।
विभासना—अक्रि० झलकना
विभिन्न—वि० बिलकुल भिन्न, कई प्रकार का ।
विभीति—स्त्री० डर, शंका ।
विभीषण—पु० रावण का एक भाई । ३ वि० अति-भयंकर ।
विभीषिका—स्त्री० भय-दिखाना । [पु० ईश्वर ।
विभु—वि० सर्वव्यापक ।

(अ०) निकम्मा। मूर्ख। आवारा।
वाहीतबाही—वि० (अ०) बेहूदा। स्त्री०गाली गलौज।
वाह्य—क्रि० वि० बाहर। वि० बाहरी। [भीतर का।
वाह्यांतर—वि० बाहर और
वाह्लीक—पु० गांधर के निकट का एक देश।
विंदक—वि० लाभयुक्त।
विंदु—पु० बूँद, कण।
विंदुपत्र—पु० भोजपत्र।
विंध्य—पु० पर्वत विशेष।
विंश—वि० बीसवाँ।
वि*—एक उपसर्ग।
विकच३—वि० खिला हुआ। सुन्दर।
विकट३-वि० भयंकर। टेढ़ा।
विकराल—वि० भयकर।
विकर्म—पु० दुराचार।
विकर्षण—पु० आकर्षण।
विकल३—वि० व्याकुल।
विकलांग७—वि० जिसका कोई अंग ख़राब हो।
विकला—स्त्री० कला का साठवाँ भाग।
विकलित—वि० बेचैन।
विकल्प—पु० भ्रम। आगा-पीछा। दो में से एक।
विकल्मप—वि० निष्पाप।
विकसन६—पु० खिलना।
विकार२—पु० परिवर्त्तन। ख़राबी।
विकाश, विकास—पु० खिलना। फैलाव।
विकीरण—पु० छितराना।
विकीर्ण—वि० छितराया हुआ। [वाला।
विकीर्णकारी—वि० फैलाने-
विकुक्षि-वि०बड़ी तोंद वाला
विकृत—वि० विगड़ा हुआ।
विकृति—स्त्री० ख़राबी।
विक्टोरिया—स्त्री० (अं०) घोड़ागाड़ी विशेष।
विक्रम—पु० बल, शौर्य। विक्रमादित्य। वि० श्रेष्ठ।
विक्रमण—पु० चलना।
विक्रमी—वि०प्रतापी। वि० विक्रमादित्य-संबंधी।
विक्रय, विक्रयण—पु० बेचना
विक्रांत—पु० वीर, शूर।
विक्रांति—स्त्री० वीरता।
विक्रायक—पु० बेचने वाला
विक्री—स्त्री० बेचना।
विक्रीत—वि० बेचा हुआ।
विक्रेता—पु० बेचने वाला।
विक्रेय—वि० बिकने योग्य।
विक्लांत—वि० परेशान।
विक्लिन्न—वि० जीर्ण।
विक्षत—वि० जिसको चोट लगी हो, घायल।
विक्षिप्त३—वि० फेंका हुआ। पागल। व्याकुल।
विक्षुब्ध—वि०चंचल मन का
विक्षेप—पु० फेंकना। बाधा
विक्षोभ-पु०घबराहट, शोक।
विख्यात—वि० प्रसिद्ध।
विख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि।
विगंध—दुर्गन्ध।
विगत—वि० बीता हुआ। रहित।
विगति—स्त्री० दुर्गति।
विगम—पु०नाश। प्रस्थान। समाप्ति।
विगर्हण४—पु०निंदा। डाँट
विगर्हित—वि० डाँटा गया। बुरा।
विगलन—पु० नाश।
विगलित—वि० बिगड़ा हुआ
विगुण—वि०गुण-रहित।
विग्रह—पु० युद्ध। कलह। शरीर। रूप। [वाला।
विग्रही—वि० युद्ध करने-
विघटन—पु० तोड़-फोड़।
विघटनात्मक१४—वि० नाश होने वाला।
विघातन—पु० चोट।
विघ्न—पु० बाधा।
विघ्ननाशक, विघ्ननायक—पु० गणेश जी।
विघ्नराज—पु० गणेश जी।
विचकित—वि० घबराया-हुआ।
विचक्षण—वि० अतिचतुर।
विचयन—पु०इकट्ठा करना। जाँच।
विचरण६—पु० भ्रमण।
विचरना—अक्रि० घूमना।
विचल४-३—वि० अस्थिर।
विचलना९—अक्रि० स्थान-भ्रष्ट होना। घबराना।
विचलित—वि० अस्थिर।

नोट—*'वि' एक उपसर्ग है जो 'विशेष, थोड़ा, निश्चय, वियोग, हेतु, शुद्ध और अवलंबन' अर्थों की विशेपता प्रकट करता है।

विचार—पु० ख़याल, भावना
विचारक-१४—पु०विचार-करने वाला।
विचारणा६—स्त्री० विचार।
विचारधारा—स्त्री० विचारों का समूह।
विचारना—अक्रि० सोचना।
विचारपति—पु०निर्णायक।
विचारवान्, विचारशील—पु० जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो।
विचारालय—पु० कचहरी।
विचिकित्सा—स्त्री० शक।
विचित्त—वि० बेसुध।
विचित्र३—वि० अद्‌भुत।
विचित्रांग—पु०मोर। व्याघ्र
विचित्रित—वि० कई रंग का
विचूर्ण—वि० बिल्कुल नष्ट।
विचेता—पु० नीच। मूर्ख।
विचेष्ट—वि० चेष्टाहीन।
विच्छर्दन—पु०, विच्छर्दिका—स्त्री० क़ै, वमन।
विच्छाय—वि० छाया रहित, विशेष छाया वाला।
विच्छिन्न३—वि० अलग। विभक्त। [वियोग। विनाश।
विच्छेद, विच्छेदन—पु०
विछोह—पु० वियोग।
विजन३—वि० एकांत। पु० पंखा। [क्रिया।
विजनन—पु० जनने की-
विजना—पु० पंखा।
विजन्मा—पु० जार संतान।
विजय—स्त्री० जीत।
विजयपताका—स्त्री० जीत का झंडा।
विजयलक्ष्मी—स्त्री० विजय की अधिष्ठात्री देवी।
विजया—स्त्री० दुर्गा। भाँग।
विजयादशमी—स्त्री०आश्विन शुक्लदशमी।
विजयी५—वि० जीतने वाला
विजयोत्सव—पु० विजय के उपलक्ष में होने वाला उत्सव। [हो।
विजर—वि० जो पुराना न-
विजातीय—वि०दूसरी जाति का। [इच्छा।
विजिगीषा—स्त्री०जीतने की-
विजिगीषु—वि० जीतने का इच्छुक। [गया, हारा हुआ
विजित—वि०जो जीत लिया-
विजृंभण—पु० जँभाई लेना।
विजेता१०—वि०जीतने वाला
विज्जु—स्त्री० बिजली।
विज्ञ३—वि० चतुर, पंडित।
विज्ञप्त—वि० सूचित।
विज्ञप्ति—स्त्री० विज्ञापन।
विज्ञात—वि० जाना हुआ।
विज्ञाति—स्त्री० जानकारी।
विज्ञान—पु० शास्त्र। विशिष्ट ज्ञान।
विज्ञानवादी५—वि० वह दार्शनिक जो विज्ञान के अतिरिक्त किसी की हस्ती न माने। [इश्तिहार।
विज्ञापन४,६—पु० सूचना,
विज्ञापित—वि० सूचित-किया गया [वाला।
विज्ञापी५—वि०सूचित करने-
विट—पु० लंपट। विष्ठा।
विटप—पु० वृक्ष। कोंपल।
विटपी—पु०वटवृक्ष। वृक्ष।
विडंबक—पु० नक़ल उतारने वाला तथा हँसी करने वाला। [फटकार।
विडंबना६—स्त्री० हास्य।
विडरना९—अक्रि० तितर-बितर होना।
विडाल७—पु० नर बिल्ली।
विडौजा—पु० इन्द्र।
वितंडा—पु०व्यर्थ का झगड़ा
वितंडावाद—पु०कहा-सुनी।
वितंत—पु०बेतार का बाजा।
वित—पु० शक्ति। वि० चतुर
वितत—वि०फैला हुआ, लंबा।
वितति—स्त्री० विस्तार।
वितथ—वि० व्यर्थ।
वितरक१४—पु० बाँटनेवाला
वितरण६—पु० बाँटना।
वितरित—वि० बाँटा हुआ।
वितरेक—क्रि० वि० अतिरिक्त। [दूसरा तर्क। शक।
वितर्क—पु० तर्क के बाद-
वितल—पु० एक पाताल।
वितस्ता—स्त्री० झेलम नदी।
वितस्ति—स्त्री० बालिश्त।
वितान—पु० चँदोवा। फैलाव
वितानना—सक्रि० तानना, फैलाना।
वितुंड—पु०हाथी।
वितृष्ण—वि०तृष्णा रहित।
वित्त—पु० धन।
वित्तेश्वर—पु०कुबेर। [हुआ।
विथकित—वि० ख़ूब थका-
विथराना—सक्रि०फैलाना।
विदग्ध—वि०पंडित। जला हुआ।

विदरना—अक्रि० फटना। सक्रि० फाड़ना।
विदल—वि० खिला हुआ।
विदलन—पु० दबाना, कुचलना। [करना।
विदलना—सक्रि० दलन-
विदा,विदाई—स्त्री० प्रस्थान
विदारक१४—वि० फाड़नेवाला। [हनन।
विदारण६—पु० फाड़ना।
विदारित—वि०फाड़ा हुआ।
विदारी५—वि० फाड़ने वाला
विदित—वि० जाना हुआ।
विदिशा—स्त्री० दो दिशाओं के बीच का कोण।
विदीर्ण—वि०फाड़ा हुआ।
विदुर—पु० जानकार। धृतराष्ट्र के एक भाई।
विदुष७—पु० विद्वान्।
विदूरित—वि०दूर किया हुआ
विदूषक—पु० मसख़रा।
विदेशन—पु० परदेश।
विदेह—पु० राजा जनक। वि० अचेत।
विदेही—पु० ब्रह्म।
विद—पु० जानकार।
विद्ध—वि०छेद किया हुआ।
विद्यमान३—वि० मौजूद।
विद्या—स्त्री० इल्म, ज्ञान, हुनर।
विद्यादेवी—स्त्री० सरस्वती।
विद्याधर—पु० पंडित।
विद्याधरी—स्त्री०एक देवांगना।
विद्यापीठ—पु० शिक्षणस्थान, गुरुकुल।
विद्यार्थी५—पु० छात्र।
विद्यालय—पु० स्कूल।
विद्यावान्१३—पु०विद्वान्।
विद्युत्—स्त्री० बिजली।
विद्युन्माला—स्त्री० बिजली का समूह। एक छंद
विद्युल्लेखा—स्त्री० बिजली।
विद्रावण—पु० गलना। उड़ना। भागना।
विद्रावक—वि० टरकाने वाला
विद्रुम—पु० मूँगा।
विद्रोह—पु० बलवा।
विद्रोही—पु० बाग़ी।
विद्वत्ता—स्त्री० पांडित्य।
विद्वान्—पु० पंडित।
विद्वेष—पु० शत्रुता।
विध—पु० ब्रह्मा।
विधन—वि० ग़रीब।
विधना—पु० ब्रह्मा। स्त्री० होनहार। सक्रि०प्राप्तकरना
विधर्म—वि० अन्य धर्म।
विधर्मी—वि० ग़ैरधर्म का।
विधवा१—स्त्री० बेवा।
विधवाश्रम—पु० वह स्थान जहाँ असहाय विधवाएँ आश्रय पाती हैं।
विधातव्य—वि० करने योग्य।
विधाता—१०पु० प्रबंधक। ब्रह्मा।[व्यवस्था। नियम।
विधान—पु० अनुष्ठान।
विधायक१४, विधायी५—पु० विधान करने वाला। मुंसिफ़। [पु० ब्रह्मा।
विधि—स्त्री० ढंग, नियम।
विधिरानी—स्त्री०सरस्वती।
विधिवक्ता—पु०वकील।
विधिवत्—क्रि० वि० यथानियम। [पूर्वक।
विधिविहित—वि० नियम-
विधुंतुद—पु० राहु [विष्णु।
विधु—पु० चन्द्रमा। ब्रह्मा।
विधुदार—स्त्री० चन्द्र-स्त्री।
विधुबंधु—पु० कुमुद।
विधुबनी—वि० स्त्री० चन्द्रमुखी। [रँडुआ।
विधुर—वि०व्याकुल,दुःखी।
विधुवदनी—स्त्री० सुन्दर-स्त्री
विधून—वि० कंपित।
विधूनित—वि० चलायमान, कंपित।
विधूम्र—वि० मटमैला।
विधेय—वि० विधान करने योग्य। पु० वह जो किसी के विषय में कुछ कहा जाय।
विध्वंसन—पु० नाश।
विध्वस्त—वि० नष्ट किया हुआ।
विनत—वि० झुका हुआ।
विनति—स्त्री०।झुकाव।प्रार्थना
विनती—स्त्री०प्रार्थना।
विनमन—पु० झुकाना।
विनम्र३, विनयी—वि० सुशील, नम्र।
विनय—पु० विनती।
विनयशील३—वि०नम्र।
विनशना—अक्रि० नष्टहोना
विनश्य—वि०नाश्यकेयोग्य।
विनश्वर—वि०नष्टहोने वाला
विनष्ट—वि० बरबाद, मृत।
विनसना९—अक्रि० नष्ट-होना।
विना—अव्य० बग़ैर।

विनायक—पु० गणेशजी । बुद्ध ।
विनाश१२—पु० नाश ।
विनाशन६-पु० नष्ट करना ।
विनाशोन्मुख—वि० नाश की ओर बढ़ता हुआ ।
विनिंदक१४—पु० विशेष निंदा करने वाला ।
विनिद्र—वि० निद्रारहित ।
विनिपात—पु० नाश । पतन
विनिमज्जित—वि० डूबा-हुआ, मग्न । [बदला ।
विनिमय—पु० परिवर्तन,
विनियोग—पु० प्रयोग । स्थिर करना । [हुआ ।
विनिर्गत-वि० बाहर निकला-
विनिर्मुक्त—वि०बन्धन-रहित
विनिवेश—पु० प्रवेश ।
विनिर्हित—वि०चुटैल,मृत ।
विनीत३—वि० नम्र ।
विनोदन—पु०हँसी । कौतुक
विनोदित—वि० आनन्दित ।
विन्यस्त—वि० स्थापित । सुसज्जित । [स्थापना,रचना
विन्यास—पु० यथास्थान-
विपंची-स्त्री०क्रीड़ा । वीणा
विपक्व—वि० कच्चा । खूब पका हुआ ।
विपक्ष८—पु० विरुद्ध पक्ष ।
विपणि—स्त्री०छोटा बाज़ार ।
विपत्ति—स्त्री० संकट ।
विपद, विपदा-स्त्री० आपत्ति
विपन्न४—वि० विपत्तिग्रस्त ।
विपरीत—वि० उलटा ।
विपरीता—स्त्री० छिनाल-स्त्री ।
विपर्यय—पु० गड़बड़ी । उलटफेर ।
विपर्यस्त—वि० अस्तव्यस्त ।
विपर्यान—पु० उलटफेर ।
विपल—पु०पल का साठवाँ-भाग ।
विपश्चित्—पु० विद्वान् ।
विपाक—पु०पकना ।कर्मफल
विपाटिका—स्त्री० पहेली ।
विपिन—पु० वन ।
विपिन-विहारी—पु०श्रीकृष्ण ।
विपुल३—वि० बहुत ।
विपुला—स्त्री० पृथ्वी ।
विपोहना—उक्रि० छेद-करना । पोहना । संहार-करना ।
विप्र—पु० ब्राह्मण ।
विप्रतिपत्ति—स्त्री० विरोध ।
विप्रलंभ—पु० वियोग । इच्छित वस्तु का न मिलना
विप्रलब्ध—वि० ठगा हुआ ।
विप्रलब्धा—स्त्री० वह ना-यिका जो संकेत-स्थान मे प्रिय से भेंट न होने पर दुःखी हो ।
विप्लवन—पु० बलवा ।
विप्लावक,विप्लावी—पु०बाग़ी
विप्लुत—वि० उपद्रवों से भरा हुआ ।
विफल३—वि० निष्फल ।
विबुध-पु० देवता । पंडित । चन्द्रमा । [देवांगना ।
विबुधविलासिनी—स्त्री०
विबोध—पु० जागरण ।
विबोधक१४—वि० समझाने वाला । जगाने वाला ।
विभंग३—वि० चंचल ।
विभक्त—वि० बँटा हुआ ।
विभक्ति—स्त्री० विभाग । कारक-चिह्न ।
विभव—पु० ऐश्वर्य ।
विभांडक—पु० एक ऋषि ।
विभाँति—स्त्री० प्रकार । वि० कई तरह का ।
विभा—स्त्री० शोभा, कांति ।
विभाकर—पु० सूर्य । [कमा।
विभाग—पु० हिस्सा मह-
विभाजन६—पु० बँटवारा । हाईफ़न '–' ।
विभाजित—वि० बाँटा हुआ।
विभज्य —वि० बाँटने-योग्य।
विभात—पु० प्रभात ।
विभाति—स्त्री० शोभा ।
विभाना-अक्रि० शोभा देना
विभारना—अक्रि० चमकना
विभाव-पु०रस का उद्दीपन । उमंग ।
विभावरी—स्त्री०रात्रि । दूती
विभावसु-पु० सूर्य । मदार । अग्नि ।
विभास—पु० चमक ।
विभासना—अक्रि० झलकना
विभिन्न—वि० बिलकुल भिन्न, कई प्रकार का ।
विभीति—स्त्री० डर, शंका ।
विभीषण—पु० रावण का एक भाई । ३ वि० अति-भयंकर ।
विभीषिका—स्त्री० भय-दिखाना । [पु० ईश्वर ।
विभु—वि० सर्वव्यापक ।
विभुता—स्त्री० ऐश्वर्य ।

विभूति—स्त्री० ऐश्वर्य, धन।
विभूषण—पु० अलंकार।
विभूषना—अक्रि० सजाना।
विभूषा-स्त्री० अलंकार आदि से सजाना।
विभूषित—वि० अलंकृत।
विभेद—पु० अंतर।
विभेदना—सक्रि० छेदना। घुसना। [लन।
विभोर—वि० डूबा हुआ,
विभ्रम—पु० भ्रांति। भ्रमण।
विभ्रात—वि० भ्रांति में पड़ा हुआ। [मान।
विभ्राज—वि० अति शोभाय-
विभ्राट्-पु० आपत्ति। झगड़ा
विमडन—पु० सजाना।
विमडित-वि० सुशोभित युक्त।
विमत—पु० विमुख-मत।
विमत्सर—पु० अधिक गर्व।
विमन—वि० अनमना।
विमनस्क—वि० उदास।
विमर्दन—पु० मसलना। नष्ट करना।
विमर्श—पु० विचार, विवेचन
विमल४—वि० निर्मल।
विमला—स्त्री० सरस्वती।
विमलापति—पु० ब्रह्मा।
विमाता—स्त्री० सौतेली माँ।
विमान-पु० वायुयान। अनादर
विमानना—स्त्री० निरादर।
विमुक्त—वि० खुला स्वतंत्र।
विमुक्ति—स्त्री० छुटकारा।
विमुख३—वि० विरुद्ध।
विमुग्ध—वि० उन्मत्त, बेहोश
विमुद, विमुदित—वि० उदास
विमूढ़४—वि० मूर्ख।
विमूर्छ—वि० सचेत।
विमृश्यकारी५-वि० परिणाम सोचकर काम करने वाला।
विमोघ—वि० अमोघ।
विमोचन६—पु० छोड़ना।
विमोचित—वि० छोड़ा गया
विमोह—पु० मोह।
विमोहना—सक्रि० मोहित करना। अक्रि० मुग्ध होना।
विमोही५—वि० मोहित करने वाला।
विमौट—पु० बाँबी।
वियग—पु० शिवजी।
विय—वि० दो। [गंगा।
वियद्गंगा—स्त्री० आकाश-
वियुक्त—वि० बिछुड़ा हुआ।
विया—वि० दूसरा।
वियोग—पु० जुदाई।
वियोगी—५वि० विरही।
वियोजक—पु० अलग करने वाला। [हुआ।
वियोजित—वि० अलग किया
वियोज्य-वि० अलग करने योग्य
विरंग—वि० बई रग का।
विरचि—पु० ब्रह्मा।
विरक्त३—वि० उदासीन। पु० वैरागी। [वैराग्य।
विरक्ति—स्त्री० उदासीनता।
विरचना—सक्रि० रचना। अक्रि० उदासीन होना।
विरचित—वि० रचित।
विरज—वि० बेदाग़।
विरत—वि० वैरागी।
विरति—स्त्री० वैराग्य।
विरथ—वि० रथहीन।
विरद—पु० यश, नाम।
विरदावली—स्त्री० यश-कथा
विरदैत—वि० प्रसिद्ध।
विरमना९—अक्रि० रमना। रुकना। [अनुपम।
विरल—वि० अलग-अलग।
विरस३—वि० रसहीन
विरह८—पु० जुदाई।
विरहिणी—स्त्री० पति-वियोग से दुःखी स्त्री।
विरहित—वि० रहित।
विराग८—पु० वैराग्य।
विराजना—अक्रि० शोभित होना। [भित। उपस्थित।
विराजमान४—वि० सुशो-
विराट—वि० बहुत बड़ा।
विराध—पु० कष्ट।
विराम—पु० विश्राम, रुकना
विराव८—पु० शोरगुल।
विरासत—स्त्री० (अ०) उत्तराधिकार। उत्तराधिकार में मिला हुआ धन।
विरामी—वि० विलासी।
विरिंचि—पु० ब्रह्मा।
विरुज—वि० नीरोग।
विरुझना९—अक्रि० उलझना
विरुद—पु० गुणगान।
विरुदावली—स्त्री० विस्तार-पूर्वक यश आदि का वर्णन
विरुद्ध३—वि० प्रतिकूल।
विरूढ़३—वि० चढ़ा हुआ। अंकुरित।
विरूप४—वि० कुरूप। उलटा
विरूपाक्ष—पु० शिवजी। वि० भयानक आँखों वाला।
विरेचक—वि० दस्तावर।
विरेचन—पु० जुलाब।

विरोचन—पु० सूर्य । चंद्र । प्रह्लाद का पुत्र और राजा बलि का पिता ।
विरोध५,२—पु० शत्रुता ।
विरोधी५—पु० शत्रु ।
विरोपण—पु० पौधा रोपना। लेप चढ़ाना ।
विरोहण—पु० एक स्थान से हटा कर दूसरी जगह लगाना
विर्द—स्त्री०(अ०)दैनिककृत्य।
विलंघित—वि० विफल ।
विलंब—पु०देर ।
विलंबित—वि० जिसमे देर हुई हो । लटकता हुआ ।
विलंभ—पु० भेंट ।
विलक्षण३—वि० अनोखा ।
विलखना-अक्रि०ताड़ जाना । दुःखी होना ।
विलग—वि० अलग । [करना
विलगाना—सक्रि० अलग-
विलपना९—अक्रि० रोना ।
विलय,विलयन—पु० नाश । मेल ।
विलयित—वि०नष्ट हुआ । समाया हुआ । [होना।
विलसना—अक्रि० शोभित
विलाप—पु० रुदन ।
विलायत—पु० विदेश ।
विलास—पु०सुखभोग।आनन्द।
विलासिनी स्त्री०वेश्या [कामी
विलासी५-पु० आरामतलब।
विलीक—वि० अनुचित ।
विलीन—वि० लुप्त । नष्ट ।
विलीनीकरण—पु०नष्ट होना। समाना, मिलना । मिलावट
विलुप्त—वि० लिपा-पुता ।
विलुंठित—वि० लोटा हुआ ।
विलुलित—वि० लहराता-हुआ । [वाला जीव
विलेशय—पु०बिल में रहने-
विलोकना—सक्रि० देखना।
विलोचन-पु०नेत्र ।[हिलाना ।
विलोड़ना—सक्रि० मथना ।
विलोडित—वि० मथा हुआ ।
विलोप—पु० नाश । विघ्न ।
विलोपी—वि०लोपकरने वाला
विलोम-वि०उलटा । पु०उतार
विलोल३—वि० चंचल ।
विल्व—पु०बेल का पेड़ ।
विल्वपत्र—पु० बेल का पत्ता
विवंधक—पु०रोकलगानेवाला
विवक्षा—स्त्री० कथनेच्छा।
विवक्षित—वि० अपेक्षित । विवक्षा किया हुआ ।
विवदना—अक्रि०विवादकरना
विवर—पु० बिल, गुफा ।
विवरण—पु० ब्यौरा, हाल ।
विवरण-पत्र—पु०वह पत्र जिस पर किसी चीज़ का ब्यौरा (तफ़सील) लिखा हो ।
विवर्जित—वि० वर्जित ।
विवर्ण-वि० कांतिहीन । नीच
विवर्त—पु० समुदाय ।
विवर्तन-पु० घूमना ।[हुआ ।
विवर्तित—वि०बदला या उखड़ा
विवर्द्धन६—पु० बढ़ना ।
विवर्द्धित—वि० बढ़ा हुआ ।
विवश—वि० लाचार ।
विवस्त्र—वि० नंगा ।
विवाद—पु०तर्क,झगड़ा ।
विवादग्रस्त-वि० विवाद में पड़ा हुआ ।
विवादास्पद—वि० विवाद के योग्य ।
विवाह—पु० शादी ।
विवाहित, विवाही—वि० जिसका विवाह हो चुका हो । [के योग्य ।
विवाह्य—वि० शादी करने-
विविक्त-वि०छोड़ा हुआ।पवित्र
विविध—वि०बहुत प्रकार का
विवृत्त—वि० विस्तृत ।
विवृत्ति-स्त्री० व्याख्या।विस्तार
विवेक—पु०ज्ञान, विचार ।
विवेचन४-६—पु०व्याख्या । विचार ।
विवेचित—वि०विचारा हुआ
विवेच्य—वि० विवेचना के योग्य । [कराने वाला ।
विवोधक१४—वि० बोध-
विव्वोक—पु० एक हाव ।
विश—स्त्री० कन्या । पु० चाँदी । [सफ़ेद । विस्तृत ।
विशद—वि० स्वच्छ ।
विशांपति—पु० राजा ।
विशाख-पु० स्वामिकार्त्तिकेय
विशाखा-पु०सोलहवाँ नक्षत्र
विशारद—वि०पंडित । चतुर
विशाल३—वि० सुविस्तृत ।
विशालाक्ष—पु० शिव ।
विशालाक्षी—स्त्री० पार्वती ।
विशिख—पु० बाण ।
विशिष्ट३—वि० विलक्षण । उत्तम । मिला हुआ ।
विशीर्ण—वि० जीर्ण ।
विशुद्ध३—वि० पवित्र ।
विशुद्धतः—क्रि० वि० शुद्ध-रूप से ।

खालिस।
विशूचिका—स्त्री० हैज़ा।
विशृङ्खल३—वि० बेसिलसिले। [पु० भेद।
विशेष३—वि० ख़ास। अधिक
विशेषज्ञ—वि० विशेष ज्ञानवाला।
विशेषण—पु०संज्ञा की विशेषता बतलाने वाला शब्द।
विशेष्य—पु० वह शब्द जिसकी विशेषता प्रकट की जाती है। [वैश्य।
विश्—स्त्री० कन्या। प्रजा।
विश्रंभ—पु० विश्वास।
विश्रब्ध—वि० विश्वासी। निडर।
विश्रम—पु० आश्रम।
विश्रांत—वि०आराम किया-हुआ।
विश्रांति—स्त्री० विश्राम।
विश्राम—पु० आराम।
विश्री—वि० शोभाहीन।
विश्रुत—वि० प्रसिद्ध।
विश्लिष्ट—वि० पृथक् पृथक् किया हुआ, खिला हुआ।
विश्लेषण—पु० वियोग, अलग करना।
विश्वंभर—पु०ईश्वर। विष्णु
विश्वंभरा—स्त्री० पृथ्वी।
विश्व—पु०संसार। [बढ़ई।
विश्वकर्मा—पु० ईश्वर।
विश्वकेतु—पु० कामदेव।
विश्वकोश—पु० वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।
विश्वनाथ—पु० शिवजी।
विश्वविद्यालय—पु० वह संस्था जिसमें सब प्रकार के विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती है। [पात्र।
विश्वसनीय—स्त्री०विश्वास-
विश्वसृज्—पु० ब्रह्मा।
विश्वस्त—वि०विश्वसनीय।
विश्वाधार—पु० ईश्वर।
विश्वामित्र—पु० एक ऋषि।
विश्वासन—पु० यक़ीन।
विश्वासघात१२—पु०धोखा।
विश्वासपात्र—वि० विश्वसनीय।
विश्वेदेव—पु० अग्नि।
विश्वेश्वर—पु० ईश्वर।
विष—पु० ज़हर।
विषण्ण—वि० दुःखी।
विषदंड—पु० कमलनाल।
विषधर—पु० सर्प।
विषमंत्र—पु० विष उतारने का मंत्र जानने वाला।
विषम३—वि० असमान। कठिन। [बुख़ार।
विषमज्वर—पु० जाड़े का
विषमबाण—पु० कामदेव।
विषय—पु०मज़मून। वस्तु। भोग विलास। स्त्री-संभोग।
विषयक—वि० विषय का।
विषयी—पु० कामी।
विषाक्त—वि० ज़हरीला।
विषाक्तधुआँ—पु० गैस।
विषाण—पु० सींग।
विषाद—पु० शोक। दुःख
विषादित—वि० दुःखी।
विषानन—पु० सर्प।
विषुवतरेखा—स्त्री० वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के ठीक बीच से होकर जाती है।
विष्टंभ—पु० प्रतिबन्ध। बाधा
विष्टरश्रवा—पु० विष्णु।
विष्टि—स्त्री०बेगार। मज़दूरी
विष्ठा—स्त्री० मल।
विष्णु—पु०एक प्रधान देवता जो विश्व के पालक माने गये हैं।
विष्णुपदी—स्त्री० गंगाजी।
विष्णुरथ—पु० गरुड़।
विष्फार—पु०धनुष का शब्द
विष्वक्सेन—पु० विष्णु।
विसंवाद—पु० आशाभंग। धोखा।
विसदृश—वि० विरुद्ध।
विसयना—अक्रि०अस्त होना
विसर्ग—पु० दान। त्याग। व्याकरण में एक वर्ण (:)।
विसर्जन—पु० त्याग। विदा
विसर्पी५—वि० फैलने वाला
विसाल—पु० (अ०) मिलना
विसूचिका—स्त्री०हैज़ा।
विस्तर—पु० विस्तार। समूह
विस्तार—पु० फैलाव।
विस्तीर्ण, विस्तृत—वि० लंबा चौड़ा। विशाल
विस्तृति—स्त्री० विस्तार।
विस्फारित—वि० विकसित।
विस्फुलिंग—पु० चिनगारी।
विस्फोट—पु० फूट पड़ना। फोड़ा। [विषैला फोड़ा।
विस्फोटक—पु० भभकनेवाला
विस्मय—पु०आश्चर्य।
विस्मित—वि०चकित।
विस्मृत—वि०भूला हुआ।

विस्मृति—स्त्री० भूलना।
विस्रंभ—पु० यक़ीन।
विस्र-पु०कच्चे मांस की गंध
विहग, विहंगम, विहग—पु० पक्षी। वाण।
विहंगमदृश्य—पु० वह दृश्य जो सरसरी तौर पर या पक्षी की तरह तेज़ी से देखा जा सके। [नज़र।
विहगमदृष्टि—स्त्री०सरसरी-
विहरण६—पु० विहार करना
विहाना—सक्रि० त्यागना।
विहायस—पु० आकाश। पक्षी। [भ्रमण।
विहार—पु० रतिक्रीड़ा।
विहारी५—पु० विहार करने वाला। श्रीकृष्ण।
विहित—वि०विधान वाला। किया हुआ।
विहीन३,विहून—वि० रहित
विह्वल३—वि० व्याकुल।
वीक्षण६—पु० देखना।
वीक्षित—वि० देखा हुआ।
वीक्ष्य—वि० देखने योग्य।
वीचि, वीची—स्त्री० लहर।
वीचिमाली—पु० समुद्र।
वीज—पु०वार्य बीज।मूलतत्व
वाजगणित—पु०एलजेबरा।
वीजन—पु० पखा।
वीजोरक—पु० बनौरी।
वीटिका—स्त्री०पान का बीड़ा
वीणा—स्त्री० बीन।
वीणापाणि—स्त्री० सरस्वती
वीत—वि० छोड़ा हुआ।
वीतराग—वि० वैरागी।
वीतहोत्र—पु० अग्नि।
वीथिका, वीथी—स्त्री० गली। रास्ता। पंक्ति।
वीप्सा—स्त्री०व्यापकता।
वीर३-४ै—पु०योद्धा। भाई। वि० साहसी।
वीरकर्मा—पु० वीरतापूर्ण-कार्य करने वाला।
वीरकाम—पु० पुत्रेच्छु।
वीरगति—स्त्री० रण में वीरता-पूर्वक मरने से प्राप्त हुई गति।
वीरधन्वा—पु० कामदेव।
वीरन—पु० प्यारा भाई।
वीरप्रसू - स्त्री० दे० वीरसू'
वीरलोक—पु० स्वर्ग।
वीरव्रत—वि० पक्का इरादा रखने वाला।
वीरशय्या—स्त्री० रणभूमि।
वीरसू—स्त्री० वह स्त्री जो वीर-संतान उत्पन्न करे।
वीरांगना—स्त्री०बहादुर स्त्री।
वीरा—स्त्री० पति पुत्र वाली स्त्री। शराब।
वीरान—वि० (फ़ा०) उजाड़।
वीराना—पु०(फ़ा०) उजाड़-स्थान।
वीर्य—पु० बल बीज। शुक्र
वुराना—अक्रि०समाप्त होना
वृंत—पु० गुच्छा।
वृंद—पु० समूह। [जी।
वृंदा—स्त्री० तुलसी। राधिका-
वृंदारक—पु० देवता।
वृक—पु० भेड़िया। सियार।
वृकदंश—पु० कुत्ता।
वृकोदर—पु० भीमसेन।
वृक्ष—पु० पेड़।
वृक्षक—पु० छोटा पेड़।
वृक्षराज—पु० बड़ा या पीपल का वृक्ष।
वृजन—पु०संग्राम। आकाश शत्रु नीच कर्म।
वृजन्य—पु० सीधा-सादा-आदमी। [रुधिर।
वृजिन—पु० दुःख। चर्म।
वृत्त—पु० चरित्र, हाल। गोल घेरा।
वृत्तखंड,वृत्तचूड़—पु० मेहराब
वृत्तचूड—वि० मेहराबदार।
वृत्तांत—पु०समाचार।
वृत्ति—स्त्री० रोज़ी। वज़ीफ़ा स्वभाव।
वृत्य—वि० वर्णनीय।
वृत्र—पु० अँधेरा। मेघ। शत्रु। एक राक्षस।
वृत्रघ्न, वृत्रहा—पु० इन्द्र।
वृथा—वि० व्यर्थ।
वृथामांस—पु० किसी देवी या देवता को चढ़ाया गया मांस
वृद्ध३-४—वि० बुड्ढा।
वृद्धश्रवा—पु० इन्द्र।
वृद्धांत—पु० प्रतिष्ठित व्यक्ति
वृद्धि—स्त्री० तरक्क़ी।
वृश्चिक—पु० बिच्छू।
वृष, वृषभ—पु० बैल। सांड़
वृषकेतु, वृषध्वज—पु० शिव
वृषण—पु० अंडकोष।
वृषभानु—पु० राधिका जी के पिता।
वृषल—पु० शूद्र। पापी।
वृषली—स्त्री०शूद्रा। पुँश्चली
वृषवाहन—पु० शिवजी।
वृषा—पु० इन्द्र।

वृषी—पु० मोर।
वृषोत्सर्ग—पु० मृत-व्यक्ति के नाम पर साँड़ दागना।
वृष्टि—स्त्री० वर्षा। [इन्द्र
वृष्णि—पु० मेघ। कृष्ण।
वृहत्—त्रि० बड़ा।
वृहद्रथ—पु० इन्द्र।
वृहस्पति—पु० देव-गुरु।
वैंकट—पु० विदूषक। जौहरी
वेक्षण६—पु० ध्यान पूर्वक देखना।
वेगन—पु० तेज़ी। प्रवाह।
वेगधारण—पु० मल-मूत्र का वेग रोकना।
वेगवान्१३—वि० शीघ्रगामी
वेणि, वेणी—स्त्री० जल-धारा। बालों की गूँथी हुई चोटी।
वेणिका—स्त्री० चोटी।
वेणु—पु० बाँस। बाँसुरी।
वेणुक—पु० ठग। बाज़ीगर।
वेणुका—स्त्री० बाँसुरी।
वेतन—पु० तनख्वाह।
वेतनभोगी—पु० वैतनिक नौकर।
वेतस७—पु० बेंत।
वेताल—पु० ड्योढ़ीवान्।
वेत्ता—वि० जानने वाला।
वेत्र—पु० बेंत।
वेत्रधर, वेत्री—पु० पहरेदार।
वेत्रवती—स्त्री० बेतवा नदी।
वेत्री—पु० पौरिया।
वेद—पु० यथार्थ ज्ञान। ऋगु, साम, यजुः और अथर्व—ये चार धार्मिक-ग्रंथ।
वेदन—पु०, वेदना६—स्त्री० पीड़ा।
वेदवाक्य—पु० वेदों का वचन। प्रामाणिक बात।
वेदव्यास—पु० महाभारत के रचयिता एक ऋषि।
वेदांग—पु० शिक्षा, कल्प, व्याकरण ज्योतिप, छन्द और निरुक्त—वेद के ये छः अंग।
वेदांतन—पु० अध्यात्म शास्त्र।
वेदिका, वेदी—स्त्री० हवनादिक रने के लिए बनायी गयी भूमि।
वेदित—वि० बताया हुआ।
वेद्य—वि० जानने योग्य।
वेधन, वेधन६—पु० छेदन
वेधनी—स्त्री० बेधने का औज़ार।
वेधशाला—स्त्री० वह स्थान जहाँ ग्रहादि की जाँच के लिए उपयुक्त साधन रहते है। [विष्णु।
वेधा—पु० ब्रह्मा। सूर्य।
वेन—पु० वेणु। वेश।
वेपथु, वेपन—पु० कंपन।
वेला—स्त्री० समय। समुद्र की लहर।
वेल्लि, वेल्ली—स्त्री० बेल, लता
वेश—पु० पोशाक। पोशाक से अपने आपको सजाना।
वेशधारी—पु० ढोंगी।
वेशवधू, वेश्या—स्त्री० रंडी
वेश्म—पु० घर।
वेष्टन६—पु० लपेटने की क्रिया
वेष्टित—वि० लपेटा हुआ।
वेसर—पु० खच्चर।
वै—अव्य० निश्चय सूचक।
वैकत्थ्य—पु० विकत्थना।
वैकल्पिक—त्रि० इच्छानुसार ग्रहण किया जाने वाला।
वैकल्य—पु० विकलता।
वैकुण्ठ—पु० विष्णु। स्वर्ग।
वैकृत—त्रि० विकार से उत्पन्न
वैक्रमीय—वि० विक्रम का।
वैक्रिय—वि० जो विक्री के लिए हो।
वैक्लव्य—पु० व्याकुलता।
वैखानस—पु० वानप्रस्थी।
वैगुण्य—पु० गुणहीनता।
वैचक्षण्य—पु० चतुरता।
वैचित्र्य—पु० विचित्रता।
वैजन्य—पु० निर्जनता।
वैजयंत—पु० इन्द्रप्रासाद। इन्द्र। पताका।
वैजयंती—स्त्री० पताका।
वैजात्य—पु० विजातीयता।
वैज्ञानिक—वि० विज्ञान-संबंधी। पु० विज्ञान का ज्ञाता।
वैतनिक—वि० वेतनभोगी।
वैतरणी—स्त्री० एक कल्पित नदी। [करने वाला।
वैतालिक—पु० स्तुति पाठ-
वैदग्ध्य—पु० चातुर्य।
वैदिक—वि० वेद-सबंधी।
वैदूर्य—पु० नीलम।
वैदेशिक—वि० विदेश-संबन्धी
वैदेही—स्त्री० सीताजी।
वैद्य—पु० हकीम। पंडित।
वैद्यक—पु० चिकित्सा-शास्त्र।
वैद्रुम—वि० मूँगे का।
वैध—वि० विधि-विहित।

वैधव्य—पु० रँड़ापा ।
वैधात्र—पु० सनत्कुमार ।
वैधानिक—पु०विधानसंबंधी
वैनतेय—पु० गरुड़ ।
वैपरीत्य—पु० विपरीतता ।
वैफल्य—पु० असफलता ।
वैभव—पु० ऐश्वर्य ।
वैभवशाली५-पु० ऐश्वर्यवान्
वैमनस्य—पु० द्वेष ।
वैमात्रेय—वि० सौतेला ।
वैमुख्य—पु०विमुखता।[वाला।
वैमानिक वि० विमानचलाने-
वैयक्तिक—वि० व्यक्तिगत ।
वैयाकरण—पु० व्याकरण का पंडित।
वैर—पु० शत्रुता ।
वैरागी—पु० विरक्त-संन्यासी
वैराग्य—पु० विरक्ति।
वैराज्य—पु० संयुक्त-शासन का देश। विदेशी-शासन ।
वैरी—पु० दुश्मन ।
वैरूप्य—पु० विरूपता ।
वैलक्षण्य—पु० विलक्षणता।
वैवर्ण्य—पु० कांतिहीनता।
वैवस्वत—पु० यमराज ।
वैवाहिक—वि० विवाह-संबंधी । [के एक शिष्य ।
वैशंपायन—पु० व्यास जी-
वैशाख—पु० चैत्र के बाद का महीना । [नगरी ।
वैशाली—स्त्री० एक प्राचीन-
वैशेषिक—पु० एक दर्शन ।
वैश्य—पु० बनिया जाति ।
वैश्रवण—पु० कुबेर । शिव ।
वैश्वानर—पु० अग्नि ।
वैषम्य—पु० विषमता।

वैष्णव७—वि०विष्णु-संबंधी । पु०एक सम्प्रदाय। [मातृका।
वैष्णवी—स्त्री०एक शक्ति। एक-
वैसा—वि० उस तरह का ।
वोक—अव्य० तरफ।
वोट—पु० (अं०) राय, मत।
वोटर-पु०(अं०)रायदेनेवाला
वोड़ना-सक्रि०हाथ पसारना
वोद—वि० गीला ।
वोदर—पु० पेट ।
वोहित्थ—पु० नाव ।
व्यंग्य—पु० तानाज़नी ।
व्यंग्यचित्र—पु० कारटून ।
व्यंजक—पु० प्रकाशक । भावबोधक शब्द ।
व्यंजन—पु० बनाया गया-खाद्य पदार्थ । 'क' से 'ह' तक के वर्ण । प्रकटीकरण ।
व्यंजना—स्त्री० प्रकट करने की क्रिया । वह शब्द-शक्ति जिससे शब्दों का विशिष्ट अर्थ निकलता है।
व्यंजित—वि० प्रकट किया-गया । सूचित ।
व्यक्त३—वि० प्रकट, स्पष्ट ।
व्यक्ति—पु० मनुष्य । स्त्री० प्रकटीकरण । [निजी।
व्यक्तिगत—पु० अकेला ।
व्यक्तित्व-पु०व्यक्तिका भाव।
व्यक्तिवाद-पु० व्यक्तित्व आतमा-भिमान । [धारण करना।
व्यक्तीकरण-पु०बनावटीरूप
व्यग्र३—वि० परेशान ।
व्यजन—पु० पंखा । [भंग ।
व्यतिक्रम—पु० विघ्न । क्रम-
व्यतिचार—पु० पापाचार ।

व्यतिपात—पु० उपद्रव ।
व्यतिरिक्त—क्रि० वि० अति-रिक्त। वि० भिन्न ।
व्यतिरेक—पु० अभाव । भेद । अतिक्रम ।
व्यतीत—वि० बीता हुआ ।
व्यतीतना—अक्रि० बीतना ।
व्यतीपात—पु०भारी उत्पात।
व्यतीहार—पु० बदला । गाली-गलौज करना ।
व्यत्यय—पु० उलटा-पुलटा, व्यतिक्रम ।
व्यत्ययस्त—वि० व्यतिक्रम-वाला, बे सिलसिले का ।
व्यथक—वि० कष्टप्रद ।
व्यथा—स्त्री० पीड़ा ।
व्यथित—वि०दुःखी । [छल ।
व्यपदेश—पु० बहाना, मिस ।
व्यभिचार—पु० दुराचार, छिनाला । [गामी ।
व्यभिचारी५—पु० परस्त्री-
व्यभिचारीभाव-पु० संचारी-भाव ।
व्यय८—पु० ख़र्च ।
व्यर्थ—वि० बेमतलब । क्रि० वि० फ़िज़ूल । [वि०अप्रिय ।
व्यलीक—पु०अपराध, दुःख।
व्यवकलन—पु० घटाना ।
व्यवच्छिन्न—वि० काटा या अलग किया हुआ ।
व्यवच्छेद—पु० भेद, विभाग
व्यवदान—पु०सफ़ाई ।[अंतर
व्यवधान—पु० परदा, आड़,
व्यवसाय८—पु० रोज़गार ।
व्यवस्था—स्त्री० प्रबंध, क़ानून । शास्त्रमत ।

व्यवस्थाता, व्यवस्थापक—पु० प्रबंधक। [बनाना।
व्यवस्थापन-पु० व्यवस्था,क़ानून
व्यवस्थित—वि० जिसकी व्यवस्था की गयी हो।
व्यवहार—पु० बरताव। रोज़गार। महाजनो। प्रयोग। [आने योग्य।
व्यवहार्य—वि० व्यवहार में·
व्यवहित—वि० व्यवधान-युक्त। [हुआ
व्यवहृत-वि० काम में लाया·
व्यवाय—पु० मैथुन। बाधा।
व्यष्टि—स्त्री० एक अंश। व्यक्ति
व्यसनन—पु० शौक़। खोटा-काम। [में उलझा हुआ।
व्यस्त-वि० व्याकुल। कार्य-
व्याकरण—पु० वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शुद्ध बोलने और लिखने के नियमों का निरूपण हो।
व्याकीर्ण—वि० विशेष रूप से फैलाया हुआ। [हुआ।
व्याकुल३—वि० घबराया-
व्याकृति—स्त्री० आकृति में परिवर्त्तन।
व्याख्या—स्त्री० टीका।
व्याख्यात—वि०टीका किया-हुआ। [कार। लेक्चरार।
व्याख्याता१०—पु० टीका-
व्याख्यान—पु० भाषण।
व्याघात—पु० विघ्न, बाधा।
व्याघ्र—पु० बाघ।
व्याज१२—पु०बहाना, छल
व्याजनिंदा—स्त्री० स्तुति के रूप में निंदा।
व्याजस्तुति—स्त्री० निंदा रूप में स्तुति। [बात।
व्याजोक्ति—स्त्री० कपट की-
व्यादन—पु० मुँह फाड़ना।
व्यादान—पु० खोलना, फैलाना।
व्याध—पु० बहेलिया।
व्याधि—स्त्री०रोग,आपत्ति।
व्याधित—वि० रोग ग्रस्त।
व्यान—पु० प्राण वायु जो सारे शरीर में रहता है।
व्याप—पु० प्रवेश, फैलना।
व्यापक३,व्यापी—चारों ओर फैला हुआ।
व्यापत्ति—स्त्री० मृत्यु।
व्यापन—पु० फैलाव।
व्यापना—अक्रि० सर्वत्र-फैलना। [पड़ा हुआ।
व्यापन्न—वि० विपत्ति में
व्यापमान—वि० सर्वत्र फैलता हुआ।
व्यापादन—पु०क़त्ल,नाश।
व्यापादित—वि०क़त्ल किया-हुआ। [काम।
व्यापारन—पु० रोज़गार,
व्यापी—वि० व्यापक।
व्याप्त—वि० फैला हुआ।
व्याप्ति—स्त्री० फैलाव।
व्याप्य—वि०व्याप्ति के योग्य।
व्यामोह—पु० माया-जाल।
व्यायाम—पु० कसरत।
व्याल—पु०सर्प। दुष्ट हाथी।
व्यालिक—पु० सँपेरा।
व्यालू—पु०रात्रि का भोजन
व्यावहारिक—वि०व्यवहार-संबंधी।
व्यावृत्त—वि० खंडित। चुना हुआ।
व्यासंग—पु०अधिक आसक्ति, मनोयोग।
व्यास—पु० एक ऋषि। वृत्त के केन्द्र से दोनों सिरों तक जाने वाली रेखा।
व्याहत—वि० रुद्ध। व्यर्थ।
व्याहार—पु० वचन।
व्याहृत—वि० कथित।
व्याहृति—स्त्री०कथन, वर्णन,
व्युत्क्रम—वि० क्रमहीन।
व्युत्पत्ति—स्त्री० शास्त्र-ज्ञान। शब्दादि का मूलरूप।
व्युत्पन्न—वि०शास्त्र-प्रवीण। पंडित। [करने वाला।
व्युत्पादक—पु० व्युत्पत्ति·
व्युपदेश—पु० धोखेबाज़ी।
व्यूढ—वि० दृढ़, सन्नद्ध।
व्यून—वि० बुना हुआ।
व्यूति—स्त्री० बुनना।
व्यूह—पु०समूह। निर्माण। सेना। सेना की रचना-विशेष।
व्यूहन—पु० क़िलाबंदी।
व्योम—पु०आकाश।बादल। जल। एक दैत्य।
व्योमकेश—पु० शिवजी।
व्योमचारी—पु० पक्षी।देवता
व्योमयान—पु० विमान।
व्योमरत्न—पु० सूर्य।
व्योमस्थली—स्त्री० पृथ्वी।
व्रज—पु० समूह। गमन। मथुरा, आगरा, ग्वालियर आदि के चारों ओर का स्थान।

व्रजनद्—पु० भ्रमण, जाना।
व्रजनाथ—पु० श्रीकृष्ण।
व्रजभाषा—स्त्री० व्रज के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।
व्रजमंडल—पु० व्रज तथा उसके आसपास का प्रदेश।
व्रजराज—पु० श्रीकृष्ण।
व्रजांगना—स्त्री व्रज की स्त्री। राधा, गोपी।
व्रजेश्वर—पु० श्रीकृष्ण।
व्रज्या—स्त्री० भ्रमण। संग्राम-भूमि।
व्रण—पु० ज़ख्म। फोड़ा।
व्रत—पु० उपवास। संकल्प।
व्रतति, व्रती—स्त्री० लता।
व्रतसंग्रह—पु० यज्ञोपवीत के समय दी जाने वाली दीक्षा।
व्रतादेश—पु० जनेऊ।
व्रतिक, व्रत्य—पु० व्रत करने वाला। [गमन।
व्राज—पु० कुत्ता। मंडली,
व्रात—पु० भीड़ [वर्ण-संकर।
व्रात्य—पु० संस्कार-विहीन,
व्रीडा—स्त्री० लज्जा।
व्रीडित—वि० लज्जित।
व्रीहि—स्त्री० धान, चावल।

३०—श

शं—पु० कल्याण।
शंक४—पु० भय, संदेह।
शंकनीय—वि० शंका के योग्य
शंकर—वि० मंगलकारी। पु० शिव।
शंकराचार्य्य—पु० अद्वैत मत के प्रवर्त्तक एक आचार्य।
शंकरी—स्त्री० पार्वती जी।
शंकित४—वि० डरा हुआ।
शंकु—पु० कील, खूँटी, मेख़
शंकुला—स्त्री० सरौता।
शंख—पु० बड़ा घोंघा। सौ पद्म की संख्या।
शंखक्षीर—पु० असम्भव बात
शंखचरी—स्त्री० ललाट।
शंखचूड़—पु० एक दैत्य।
शंखधर, शंखपाणि—पु० विष्णु, श्रीकृष्ण। [वाला।
शंखध्मा—पु० शंख बजाने-
शंखनख—पु० बाघ का नख।
शंखलिखित—पु० इंसाफ़ी राजा।
शंखविष—पु० संखिया।
शंखिनी—स्त्री० एक वनौषधि। स्त्रियों का एक भेद।
शठ—वि० मूर्ख। पु० हिजड़ा
शंड—पु० साँड़। हिजड़ा।
शंपा—स्त्री० विद्युत्।
शंब—पु० वज्र। [एक मृग।
शंबर—पु० युद्ध। जल।
शंबरारि—पु० कामदेव।
शंबल—पु० पाथेय। किनारा।
शंबुक, शंबूक—पु० घोंघा। सीप के भीतर का कीड़ा।
शंभु—पु० शिव।
शंभुतेज, शंभुबीज—पु० पारा
शंभुभूषण—पु० चंद्रमा।
शंयु—वि० प्रसन्न।
शंव—वि० पुण्यात्मा।
शंस—पु० प्रशंसा।
शंसित—वि० कथित।
शंस्य—वि० प्रशंसा के योग्य
शअबान—पु० (अ०) मुसलमानों का आठवाँ महीना।
शऊर—पु० (अ०) तमीज़। बुद्धि।
शऊरदार२—वि० (अ० फ़ा०) योग्य, दक्ष, बुद्धिमान्।
शक—पु० (अ०) संदेह। (सं०) संवत्। शालिवाहन-राजा।
शकट—पु० गाड़ी। एक दैत्य
शकटव्यूह—पु० गाड़ी के आकार की व्यूह-रचना।
शकटिका—स्त्री० गाड़ी।
शकठ—पु० मचान।

शकर—स्त्री० दे० 'शक्कर'।
शकरक़ंद—पु० एक कंद।
शकरख़ोर—पु० (फ़ा०) एक पक्षी जो सदा अच्छी चीज़ें खाता है।
शकरपारा—पु० एक पकवान
शकल—स्त्री० आकृति, चेहरा, गढ़न। (सं०) पु० टुकड़ा।
शकाब्द—पु० राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।
शकारि—पु० विक्रमादित्य।
शकील—वि० (अ०) अच्छी शक्ल का।
शकुंत—पु० पक्षी। [पक्षी।
शकुंतला—स्त्री० दुष्यंत की·
शकुन—पु० सगुन। पक्षी।
शकुनि—पु० पक्षी। कौरवों के मामा।
शकृत्—पु० मल, विष्ठा।
शकोह—पु० (फ़ा०) बड़प्पन, आतंक।
शक्कर—स्त्री० चीनी, खाँड़।
शक्की—वि० जिसे शक करने की आदत हो।
शक्त—वि० बली। समर्थ।
शक्ति—स्त्री० बल। वश। दुर्गा। एक शस्त्र।
शक्तिधर—पु० कार्तिकेय।
शक्तिपूजक—पु० तांत्रिक।
शक्तिपूजा—स्त्री० शक्ति की उपासना।
शक्तिमान्१३—वि० बलवान्
शक्तु—पु० सत्तू।
शक्र—वि० प्रियवादी।
शक्य—वि० समर्थ, योग्य।
शक्र—पु० इन्द्र।
शक्रसुत—पु० जयंत।
शक्ल—स्त्री० (अ०) सूरत, चेहरा, आकृति।
शख्श—पु० (अ०) व्यक्ति।
शख्सियत—स्त्री० (अ०) व्यक्तित्व।
शख्सी—वि०(अ०)व्यक्तिगत
शग़ल—पु० (अ०) व्यापार। मनोविनोद।
शग़ाल—पु० (अ०) गीदड़।
शगुफ्तगी—स्त्री० (फ़ा०) प्रफुल्लता। [खिला हुआ।
शगुफ्ता—वि० (फ़ा०)
शगून—पु० (फ़ा०) काम होने के पूर्व दिखाई पड़ने वाले लक्षण।
शगूफ़ा—पु० फूल। कली। (फ़ा०) विचित्र घटना।
शचान—पु० बाज़ पक्षी।
शचि, शची—स्त्री० इंद्राणी
शचीपति—पु० इन्द्र।
शजर—पु० (अ०) पेड़।
शजरा—पु० वंश-वृक्ष। वृक्ष। पटवारी के खेतों का नक़शा
शठ३—वि० धूर्त, कपटी।
शणसूत्र—पु० कुश की अँगूठी।
शत—पु० सौ की संख्या।
शतक१४—पु० सौ का समूह
शतकोटि—पु० वज्र।
शतक्रतु—पु० सौ यज्ञ करने वाला, इंद्र।
शतखंड—पु० सोना, सुवर्ण।
शतघ्नी—स्त्री० तोप विशेष।
शतदल, शतपत्र—पु० कमल। मोर।
शतद्रु—स्त्री० सतलज नदी।
शतधा—वि० सैकड़ों टुकड़े।
शतपथ—वि० बहुत सी शाखाओं वाला।
शतपदी—स्त्री० गोजर।
शतपुष्प—पु० सौंफ़।
शतमख—पु० इन्द्र। उल्लू।
शतमन्यु—वि० ग़ुस्सैल। पु० इन्द्र।
शतमान—पु० एक पल वज़न
शतरंज—पु० एक प्रसिद्ध खेल।
शतरंजी—स्त्री० (फा०) कई रंग के सूतों से रँगी हुई दरी। शतरंज खेलने की बिसात। शतरंज का खिलाड़ी।
शतांश—पु० सौवाँ हिस्सा।
शतानंद—पु० जनक के पुरोहित।
शतानीक—पु० वृद्ध पुरुष। सौ सिपाहियों का नायक।
शताब्दी—स्त्री० सौ वर्षों का समय।
शतायु—पु० वह जिसकी सौ वर्ष की आयु हो।
शतावधानर—पु० श्रेष्ठ स्मरण शक्ति वाला व्यक्ति
शती—स्त्री० सौ का समूह।
शत्रु३—पु० दुश्मन।
शत्रुघ्न—पु० राम के एक भाई। बैरी का नाशक।
शत्वरी—स्त्री० रात्रि।
शद्रि—स्त्री० बिजली। पु० हाथी। मेघ। [पहचान।
शनाख्त—स्त्री० (फ़ा०)

शनास—स्त्री० (फ़ा०) पहचानने वाला। [दिन।
शनि—पु० एक ग्रह । एक-
शनिप्रिय—पु० नीलम रत्न।
शनिश्चर—पु० शनिवार।
शनैःशनैः—क्रि० वि० धीरे-धीरे।
शपथ—स्त्री० क़सम।
शपथपत्र-पु० हलफ़नामा।
शपन—पु० दुर्वचन।
शफ़क़—स्त्री० (अ०) लाली जो सुबह और शाम को आकाश में दिखाई पड़ती हैं। [दया, कृपा।
शफ़क़त—स्त्री० (अ०) प्रेम।
शफ़तालू—पु० एक फल।
शफर७—पु० मच्छ।
शफ़ा—स्त्री० (अ०) आरोग्य।
शफ़ाअत—स्त्री० (अ०) इच्छा। सिफ़ारिश।
शफ़ाख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) चिकित्सालय। [करने वाला।
शफ़ी—वि० (अ०) शफ़ाअत-
शफ़ीक़—वि० (अ०) कृपालु।
शब—स्त्री० (फ़ा०) रात।
शबकोर—वि० (फ़ा०) जिसे रतौंधी आती हो।
शब-चिराग़—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का लाल रत्न जो रात को बहुत चमकता है।
शबनम—स्त्री० (फ़ा०) ओस।
शबनमी—स्त्री० (फ़ा०) मसहरी।
शबबरात—स्त्री० (फ़ा०) शअबान मास की पन्द्रहवीं रात जिसमें आतशबाज़ी छोड़ी जाती है।
शबल—वि० चितकबरा।
शबाब—स्त्री० (अ०) जवानी। बहुत अधिक सौंदर्य
शबाहत—स्त्री० (अ०) आकृति, शक्ल।
शबिस्ताँ—पु० (फ़ा०) शयनागार। [सादृश्य।
शबीह—स्त्री०(अ०) चित्र।
शबे-ज़फ़ाफ़—स्त्री० (फ़ा०) वर, वधू के प्रथम मिलन की रात। [अँधेरी रात।
शबे-तार—स्त्री० (फ़ा०)
शबे-माह—स्त्री० (फ़ा०) चाँदनी-रात। [रातदिन।
शबोरोज़—अव्य० (फ़ा०)
शब्द—पु० ध्वनि। लफ्ज़।
शब्दप्रमाण—पु० मौखिक-प्रमाण।
शब्दब्रह्म—पु० वेद।
शब्दवेधी—पु० जो केवल शब्द सुनकर ही निशाना मारे।
शब्दशास्त्र—पु० व्याकरण।
शब्दागम—पु० शब्द-शास्त्र, व्याकरण।
शब्दातीत—पु० ईश्वर।
शब्दावली-स्त्री० शब्द-समूह।
शब्दित—वि० ध्वनित।
शब्बीर—वि०(फा०) सुन्दर। नेक।
शम३—पु० शांति। क्षमा।
शमन६—पु० दमन। शांति। यमराज।
शमलोक—पु० स्वर्ग।
शमशाद—पु० (फ़ा०) एक वृक्ष जिससे प्रेमी और प्रेमिका के क़द की उपमा दी जाती है।
शमशेर—स्त्री०(फ़ा०) तलवार।
शमा—स्त्री० (अ०) मोमबत्ती। मोम।
शमादान—पु० मोमबत्ती लगाने का आधार।
शमित-वि० शांत किया हुआ
शमी—पु० एक वृक्ष।
शम्बा—पु० (फ़ा०) शनिवार
शम्स—पु० (अ०) सूर्य।
शम्सा—पु० (अ०) माला आदि के बीच में लगाया जाने वाला फुँदना।
शम्मी—वि० (अ०) सूर्य-संबधी।
शयन—पु० सोना। शय्या।
शयनगृह, शयनागार—पु० सोने का स्थान।
शयनीय—पु० खाट, बिछौना वि० शयन करने के योग्य।
शयाना—वि० स्त्री० सोतीहुई
शयालु—वि० निद्राशील। सियार।
शयित—वि० सोया हुआ।
शयिता१०—वि०सोने वाला
शय्या—स्त्री० पलंग, सेज।
शय्यादान—पु० मृतक के निमित्त दिया गया बिछौना आदि दान।
शरड—पु० गिरगिट। लंपट।
शर—पु० बाण। सरकंडा।
शरअ्—स्त्री०(अ०) कुरान में दी हुई आज्ञा। मज़हब।

शरअन्—क्रि० वि० शरअ के अनुकूल ।
शरअ-मुहम्मदी—स्त्री०(अ०) इस्लाम का नियम ।
शरई—वि० (अ०) शरअ पर चलने वाला । [केय ।
शरजन्मा—पु० स्वामिकीर्त्ति-
शरघा—स्त्री०मधुमक्खी ।
शरण—स्त्री० रक्षा, आश्रय ।
शरणागत—वि० शरण में आया हुआ ।
शरणि—स्त्री० मार्ग ।
शरणी—वि०शरण देने वाली
शरण्य—वि० शरण के योग्य
शरता—स्त्री० बाण-विद्या ।
शरत्—स्त्री० आश्विन और कार्त्तिक मास की ऋतु ।
शरदपूर्णिमा—स्त्री० कुँआर मास की पूर्णमासी ।
शरफ़—पु० (अ०) बड़प्पन ।
शरबत—पु० (अ०) मीठा पेय । रस ।
शरबती—पु० हलका पीला रंग । वि० रसदार ।
शरभ—पु० टिड्डी । ऊँट । एक मृग ।
शरम—स्त्री०(फ़ा०)दे० 'शर्म ।
शरमगाह—स्त्री० (अ०) स्त्री की जननेन्द्रिय ।
शरमसार—वि० (अ०) लज्जाशील ।
शरम-हुज़ूरी—स्त्री० (अ० फ़ा०) मुँह देखे की शरम ।
शरमाना—अक्रि० लज्जित होना । [(अ०) लज्जावश ।
शरमा-शरमी—क्रि० वि०

शरमिंदगी—स्त्री० (अ०)लाज
शरमिंदा७—वि० (अ०) लज्जित ।
शरमीला७—वि० लज्जाशील
शरर—पु० (अ०) चिनगारी
शरह—स्त्री० (अ०) दर, भाव । भाष्य, टीका ।
शरहबंदी—स्त्री० (अ० फ़ा०) दर का सूची ।
शराकत—स्त्री० (फ़ा०)साझा
शराफ़त—स्त्री० (अ०) भल-मनसी ।
शराब—स्त्री० (अ०) मदिरा
शराबख़ोरी—स्त्री० मदिरा-पान । [भीगा हुआ ।
शराबोर-वि०(अ०) बिलकुल
शरायत—पु०(बहु०अ०)शर्तें
शरारत—स्त्री० (अ०) पाजी-पन । [शरारत से ।
शरारतन्—क्रि० वि० (अ०)
शरारा—पु० (अ०) चिनगारी
शरावाप—पु० धनुष ।
शरास, शरासन—पु० धनुष
शरिष्ठ—वि० श्रेष्ठ ।
शरीअत—स्त्री० (अ०) मुस-लमानों का धर्मशास्त्र । ईश्वरीय-नियम ।
शरीक—वि०(अ०) शामिल ।
शरीफ़—पु० (अ०) कुलीन मनुष्य ।
शरीफ़ा—पु० सीताफल ।
शरीर—पु० देह । वि०(अ०) दुष्ट ।
शरीरपात—पु० मृत्यु ।
शरीरांत—पु०मृत्यु ।
शरीरी५—पु० प्राणी, आत्मा ।

शरु—पु० हिंसक । क्रोध । वि० नुकीला ।
शर्क़—पु० (अ०) सूर्योदय । पूरब दिशा ।
शर्करा—स्त्री० शक्कर । बालू।
शर्करावान्—पु० बालुका-मय प्रदेश ।
शर्करी—स्त्री० लेखनी । नदी
शर्क़ी—वि०(अ०)पूरब का ।
शर्त्त—स्त्री० (अ०) दाँव । नियम । होड़ ।
शर्त्तिया—क्रि० वि० (अ०) शर्त्त बद कर । वि०निश्चित
शर्त्ती—वि० (अ०) शर्त्त-संबंधी ।
शर्म—स्त्री० (अ०) लज्जा ।
शर्मसार५—वि० (अ०) लज्जावाला ।
शर्म्म—पु० सुख । घर ।
शर्म्मा—पु० ब्राह्मणों की उपाधि । हर्ष ।
शर्व—पु० शिवजी । विष्णु
शर्वर—पु० सायंकाल । कामदेव । अंधकार । [स्त्री ।
शर्वरी—स्त्री०रात । संध्या ।
शर्वाणी—स्त्री० पार्वती ।
शल—पु०कंस का एक मल्ल । ऊँट । साही का काँटा ।
शलजम—पु० एक कंद ।
शलभ—पु० टिड्डी ।पतिंगा ।
शलल—पु० साही का पर।
शलवार—पु० (फ़ा०) पेशा-वरी पायजामा । पाजामे के नीचे पहनने का जाँघिया ।
शलाका—स्त्री०सलाई । बाण ।
शलाटु—पु० कच्चा फल ।

शली—स्त्री० साही जन्तु।
शलीता—पु० टाट का बोरा।
शल्क—पु० बकला। टुकड़ा।
शल्य—पु० अस्त्रचिकित्सा। एक अस्त्र। [का इलाज
शल्यक्रिया—स्त्री० चीर-फाड़
शव—पु० लाश।
शवच्छादन—पु० कफ़न।
शवदाह—पु० लाश का जलाना।
शवपेटिका—स्त्री० ताबूत।
शवमंदिर—पु० मरघट।
शवयान—पु० अरथी, टिकटी।
शवसान—पु० पथिक।
शवान्न—पु० मुर्दे का मांस।
शश—पु० खरहा वि० (फ़ा०) छः।
शशक—पु० खरगोश।
शशधर—पु० चन्द्रमा।
शशमाही—वि० (फ़ा०) छः माही।
शशलक्षण—पु० चन्द्रमा।
शश-व-पंज—पु० (फ़ा०) जूआ। सोच-विचार। अगा-पीछा।
शशशृंग—पु० असंभव बात।
शशांक—पु० चन्द्रमा।
शशादन—पु० बाज़।
शशि—पु० चंद्रमा।
शशिकांत—पु० कोईं। चन्द्रमा।
शशिज—पु० बुध। [शिव।
शशिधर शशिभाल—पु०
शशिपोषक—पु० शुक्ल पक्ष।
शशिप्रभा—स्त्री० चाँदनी।
शशिभूषण—पु० शिवजी।

शशिमुखी—वि० खूबसूरत।
शशिलेखा—स्त्री० गिलोय।
शशिशाला—स्त्री० वह महल जिसमें बहुत शीशे जड़े हों।
शशिशेखर—पु० शिवजी।
शशिशोषक—पु० कृष्णपक्ष।
शशिहीरा—पु० चंद्रकांत मणि
शष्कुली—स्त्री० पूरी। सुहारी
शष्प—पु० हरी घास के तिनके।
शस्त—वि० प्रशंसित।
शस्त्र—पु० हथियार।
शस्त्रक—पु० लोटा।
शस्त्रक्रिया—स्त्री० चीरफाड़।
शस्त्रधारी—वि० शस्त्र धारण करने वाला सैनिक।
शस्त्रशाला—स्त्री० शस्त्रागार।
शस्त्राजीव—पु० जो शस्त्र के द्वारा जीविका करता है।
शस्त्री—स्त्री० छुरी। पु० शस्त्र चलाने वाला।
शस्य—पु० नई घास। धान। फल।
शहंशाह—पु० सम्राट्।
शह—पु० (फ़ा०) बादशाह। वर। शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना। वि० चढ़ा-बढ़ा।
शहज़ादा—पु० राज-पुत्र।
शहज़ोर—वि० (फ़ा०) मज़बूत।
शहतीर—पु० (फ़ा०) लकड़ी का लंबा लट्ठा।
शहतूत—पु० (फ़ा०) एक वृक्ष तथा उसका फल।

शहद—पु० (अ०) मधु।
शहना—पु० (अ०) कोतवाल
शहनाई—स्त्री० (फ़ा०) नफ़ीरी।
शहबाला—पु० वर का छोटा भाई जो विवाह के समय दूल्हा के साथ बैठता है।
शहर—पु० (फ़ा०) नगर।
शहरपनाह—स्त्री० (फ़ा०) परकोटा।
शहवत—स्त्री० (अ०) मैथुन। ख़ाहिश। [सबूत।
शहादत—स्त्री० (अ०) गवाही
शहाबन—पु० (अ०) लालरंग
शहामत—स्त्री० (अ०) बड़प्पन
शहीद—पु० (अ०) धर्म के लिये बलिदान होने वाला व्यक्ति। [पु० माँड।
शांकर—वि० शंकर-संबंधी।
शांडिल्य—पु० बेल।
शांत—वि० स्थिर। चुप। ठंडा
शांतनु—पु० भीष्म पितामह के पिता।
शांति—स्त्री० चुप्पी। धैर्य।
शांबरी—स्त्री० इन्द्रजाल, माया। [शिष्टता।
शाइस्तगी—स्त्री० (फ़ा०)
शाइस्ता—वि० (फ़ा०) शिष्ट, सभ्य।
शाकंभरी—स्त्री० दुर्गा देवी
शाक—पु० भाजी।
शाकट—पु० गाड़ी खींचने वाला। वि० गाड़ी का।
शाकल—पु० खंड। हवन-सामग्री।

शाकाहार—पु० बिना मांस-का भोजन।
शाकिनी—स्त्री० डाइन।
शाकिर—वि० (अ०) कृतज्ञ।
शाकी—वि०(अ०) शिकायत करने वाला। चुग़लख़ोर।
शाकुन—पु० व्याधा।
शाकुनिक—पु० चिड़ीमार।
शाक्त—वि० शक्ति का उपासक
शाक्यमुनि—पु० गौतम बुद्ध।
शाक्यसिंह पु० गौतम बुद्ध
शाख़—स्त्री० (फ़ा०) टहनी।
शाखा—स्त्री० टहनी। विभाग
शाखानगर—पु० छोटा शहर।
शाखामृग—पु० गिलहरी। बंदर।
शाखी—पु० साक्षी। वृक्ष।
शाखोच्चार—पु० विवाह में वंशावली का कथन।
शागिर्द२—पु०(फ़ा०) शिष्य
शागिर्दपेशा—पु० (फ़ा० अ०) अहलकार। नौकर-चाकरों के रहने का स्थान।
शाटिका—स्त्री० साड़ी।
शाठ्य—पु० शठता।
शाण—पु० सान रखने का पत्थर। कसौटी। [हुआ।
शाणित—वि० पैना किया-
शात—पु० हर्ष। वि० सान पर रखा हुआ।
शातिर—पु० (अ०) शतरंज का खिलाड़ी। वि० चतुर। धूर्त।
शातोदर—वि० दुर्बल।
शात्रव—पु० शत्रुता।
शाद—वि० (फ़ा०) .खुश। पु० (सं०) कीचड़। घास।
शादमान२—वि० (फ़ा०) प्रसन्न। [बधावा।
शादियाना—पु० (फ़ा०)
शादी—स्त्री० (फा०) .खुशी। विवाह।
शाद्वल—पु० हरी घास वाला-प्रदेश। वि० हरा-भरा।
शान—स्त्री० (अ०) तड़क-भड़क। इज़्ज़त। विशालता।
शानदार—वि० (अ० फ़ा०) शानवाला। [ठाटबाट।
शानशौकत—स्त्री० (अ०)
शाप—पु० बद्दुआ।
शापित—वि० जिसे शाप दिया गया हो।
शाबान—पु० (अ०) अरबी-साल का आठवाँ महीना।
शाबाश२—अव्य० (फ़ा०) .खुश रहो।
शाब्द, शाब्दिक, शाब्दी—वि० शब्द संबंधी। शब्द-शास्त्र का ज्ञाता। वैयाकरण।
शाम—स्त्री (फ़ा०) साँझ। पु० श्याम। [विपत्ति।
शामत—स्त्री०(अ०) दुर्भाग्य,
शामतज़दा—वि० अभागा।
शामित—वि० शांत किया गया। [बड़ा तंबू।
शामियाना—पु० (फ़ा०)
शामिल—वि० (अ०) मिला-हुआ।
शामिलहाल—वि० (अ०) सब दशा में सम्मिलित।
शायक—पु० बाण। खड्ग।
शायक़—वि०(अ०) शौक़ीन, इच्छुक। प्रेमी। [कदाचित्
शायद—अव्य० (फ़ा०)
शायर—पु० (अ०) कविता
शायस्ता—वि० शिष्ट।
शायी—वि०(अ०) प्रकाशित, प्रकट, ज़ाहिर।
शायी५—वि० सोने वाला।
शारंग—पु० दे० 'सारंग'।
शारद, शारदीय—वि० शरत्काल का। [दुर्गा।
शारदा—स्त्री० सरस्वती,
शारिका—स्त्री० मैना।
शारीर, शारीरिक—वि० शरीर-संबंधी।
शार्कर—पु० रेतीला-स्थान।
शार्ङ्ग—पु० धनुष। [विष्णु।
शार्ङ्गपाणि, शार्ङ्गी—पु०
शार्दूल—पु० सिंह। व्याघ्र। वि० सर्वश्रेष्ठ।
शाल—पु० साखू। दुशाला। एक प्रकार की मछली। वृक्ष। प्रधान शाखा।
शालग्राम—पु० विष्णु की पत्थर की मूर्ति विशेष।
शालबाफ़—वि० (फ़ा०) शाल बनाने वाला।
शाला—स्त्री० घर। स्थान।
शालांक—पु० प्राचीन चिन्हां-कित मुद्रा।
शालि—पु० एक धान। बासमती चावल।
शालिवाहन—पु० शक संवत् चलाने वाला एक राजा।
शालिहोत्र—पु० घोड़ा। [शिष्ट।
शालीन३—वि० विनीत।

शालूर—पु० मेंढक।
शालेय—पु० सौंफ।
शालमलि—पु० सेमलवृक्ष।
शावक—पु० पशु या पक्षी का बच्चा।
शावर—पु० अपराध। पाप।
शाश्वत—वि० नित्य रहनेवाला
शासक१४—पु० हाकिम।
शासन—पु० हुकूमत, दण्ड।
शासनधर, शासनवाहक—पु० राजदूत।
शासनात्मक—वि० शासन-सम्बन्धी। [किया हुआ।
शासित४—वि० शासन-
शास्ता—पु० शासनकर्त्ता। बुद्ध।
शास्ति—स्त्री० शासन। दंड
शास्त्र—पु० धार्मिक ग्रंथ।
शास्त्रज्ञ—पु० शास्त्रवेत्ता।
शास्त्री—पु० शास्त्र का ज्ञाता।
शास्त्रीय—वि० शास्त्र संबंधी
शाहंशाह—पु० सम्राट्।
शाह—पु० (फ़ा०) महाराज। स्वामी। दूल्हा। वि० महान्। [राजपुत्र।
शाहज़ादा७—पु० (फ़ा०)
शाहदरा—पु० (फ़ा०) क़िले या महल के नीचे की आबादी।
शाहाना, शाही—वि० (फ़ा०) राजसी। पु० वर को विवाह के समय पहनाये जाने वाले वस्त्र।
शाहनामा—पु० (फ़ा०) राजाओं का इतिहास।
शाहिद२—पु० (अ०) साक्षी। वि० सुंदर।

शिंजित—पु० आभूषणों तथा नूपुरों की ध्वनि। [घुँघरू।
शिंजिनी—स्त्री० प्रत्यंचा।
शिंबी—स्त्री० छीमी, फली।
शिंशपा—पु० शीशम या अशोक का वृक्ष।
शिकंजा—पु० (फ़ा०) दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र
शिकन—स्त्री० (फ़ा०) सिकुड़न।
शिकम—पु० (फ़ा०) पेट।
शिकमपरवर—वि० (फ़ा०) स्वार्थी। [यशी। भीतरी।
शिकमी—वि० (फ़ा०) पैदा-
शिकमीकाश्तकार—पु० (फ़ा०) वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।
शिकरा—पु० (फ़ा०) एक शिकारी पक्षी, बाज़।
शिकवा—पु० (अ०) शिकायत
शिकस्त—स्त्री० (फ़ा०) हार।
शिकस्ता—वि० (फ़ा०) टूटा हुआ। घसीट लिखावट।
शिकायत—स्त्री० (अ०) चुग़ली, उलहना।
शिकार—पु० (फ़ा०) आखेट।
शिकारी—वि० (फ़ा०) शिकार करने वाला।
शिक्षक—पु० शिक्षा देनेवाला।
शिक्षण—पु० शिक्षा।
शिक्षा—स्त्री० तालीम, सीख।
शिक्षार्थी—पु० विद्यार्थी।
शिक्षाविभाग—पु० शिक्षा के प्रबंध का महकमा।
शिक्षित—वि० पढ़ा-लिखा।

शिखंड—पु० मोर पुच्छ। चोटी। काकपक्ष।
शिखंडी१—पु० मोर। बालों की लट। राजा द्रुपद का एक पुत्र।
शिख, शिखा—स्त्री० चोटी।
शिखर—पु० चोटी, कँगूरा।
शिखरन—स्त्री० दही चीनी का शर्बत।
शिखरि—पु० पहाड़।
शिखरिणी—स्त्री० स्त्रियों में श्रेष्ठ। शिखरन। एक छन्द
शिखा—स्त्री० आग की लपट। मोर की चोटी। चोटी। किरण।
शिखाधर—पु० मोर।
शिखापाश—पु० चोटी।
शिखामणि—पु० सर का एक रत्न।
शिखावल—पु० मोर कटहल
शिखावान्—पु० अग्नि।
शिखावृद्धि—स्त्री० सूद-दरसूद
शिखि—पु० मोर।
शिखिध्वज—पु० धुआँ। कार्त्तिकेय। [कार्तिकेय।
शिखिवाहन—पु० स्वामि-
शिखी१—वि० शिखा वाला। पु० मोर। मुर्ग़ा।
शिगाफ़—पु० (फ़ा०) चीरा, नश्तर। [अनोखी बात।
शिगूफ़ा—पु० (फ़ा०) कली।
शिताब२—क्रि० वि० (फ़ा०) जल्द।
शिति—वि० सफ़ेद। काला।
शितिकंठ—पु० शिव। चातक। मोर।

शिथिल३—वि० थका हुआ, ढीला।
शिद्दत—स्त्री० (अ०) सख्ती। तेज़ी, वेग। [पहचान।
शिनाख्त—स्त्री० (फ़ा०)
शिनास—वि० (फ़ा०) पहचानने वाला। [पहचान।
शिनासाई—स्त्री० (फ़ा०)
शिफा—स्त्री० कोड़ा। जड़।
शिफाकंद—पु० कमल की जड़।
शिबिका—स्त्री० पालकी।
शिबिर—पु० डेरा।
शिया—पु० (अ०) एक मुसलिम-संप्रदाय। वि० सहायक।
शिर—पु० सिर। माथा।
शिरकत, शिराकत—स्त्री० (अ०) साझा, हिस्सा।
शिरज, शिरसिज—पु०बाल।
शिरमौर—पु० मुकुट। वि० श्रेष्ठ। [सिर का कवच।
शिरस्त्र, शिरस्त्राण—पु०
शिरस्य—पु० साफ़ बाल।
शिरहन—पु० तकिया।
शिरा—स्त्री० रक्त की नाड़ी। नस। टोपी।
शिरीष—पु० सिरस-वृक्ष।
शिरोगृह—पु० अटारी।
शिरोदाम—पु० पगड़ी।
शिरोधरा—स्त्री० गर्दन।
शिरोधार्य—वि० सिर पर धारण करने योग्य।
शिरोभूषण, शिरोमणि—पु० सिर पर पहनने का एक गहना। श्रेष्ठ-व्यक्ति।
शिरोरत्न—पु० चूड़ामणि।
शिरोरुह—पु० केश।
शिला—स्त्री० पत्थर का बड़ा टुकड़ा, चट्टान। [विशेष।
शिलाजीत—पु० औषधि-
शिलान्यास—पु० किसी मकान की नींव रखने का उत्सव।
शिलापट—पु० सिलेट।
शिलालेख—पु० पत्थर पर खुदा हुआ लेख। [कंदरा।
शिलावेश्म—पु० गुफ़ा,
शिलासार—पु० लोहा।
शिलिंग—पु० (अ०) इंगलैंड का एक सिक्का।
शिली—स्त्री० देहरी। भाला।
शिलीमुख—पु० भ्रमर। बाण
शिलोच्चय—पु० पर्वत।
शिल्प—पु०दस्तकारी,हुनर।
शिल्पकला—स्त्री०कारीगरी।
शिल्पकार२, शिल्पी—पु० दस्तकार। चित्रकार। राज
शिल्पिक—पु० शिल्पजीवी।
शिल्पिशाला—स्त्री०कारखाना
शिव—पु० शुभ, कल्याण। शंकर जी।
शिवक—पु० खूँटा।
शिवद्रुम—पु०बेल का वृक्ष।
शिवनंदन—पु० गणेशजी।
शिवनिर्माल्य—पु० शिवार्पित-वस्तु। ग्रहण न करने योग्य पदार्थ।
शिवपत्र—पु० रक्त-कमल।
शिवपुरी—स्त्री० काशी।
शिवरात्रि—स्त्री० फाल्गुन-बदी चतुर्दशी।
शिवरानी—स्त्री० पार्वती।
शिवलोक—पु० कैलाश।
शिववाहन—पु० नन्दी।
शिवा—स्त्री० दुर्गा। पार्वती। शृगाली। हड़। आँवला।
शिवालय—पु० शिवाला।
शिवि—पु० एक राजा। हिंस्र पशु। [डोली।
शिविका—स्त्री० पालकी,
शिविर—पु० डेरा। पड़ाव।
शिशिर—पु० एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन में होती है, हिम।
शिशिरकर—पु० चन्द्रमा।
शिशु—पु० छोटा बच्चा।
शिशुता—स्त्री० बचपन।
शिशुमार—पु० सिरस।
शिश्न—पु० पुरुषेंद्रिय।
शिष्ट३—वि० सभ्य, सज्जन।
शिष्टमंडल—पु० डेपुटेशन।
शिष्टाचार—पु० सज्जनोचित-व्यवहार। सत्कार।
शिष्टि—स्त्री० आज्ञा। दंड।
शिष्य३—पु० शागिर्द।
शिहाब—पु० (अ०) तारा जो आकाश से टूटता है। आग की लपट।
शीआ—पु०(अ०)सहायक। मुसलमानों का एक फ़िरक़ा।
शीकर—पु० जलकण।
शीघ्र—क्रि० वि० जल्द।
शीघ्रकारी—वि० फुर्तीला।
शीघ्रता स्त्री०, शीघ्रत्व—पु० जल्दी, फ़ुरती।
शीत३—वि० ठंडा। (पु०)

जाड़ा । ओस । तुषार ।
शीतक—पु० आलसी ।
शीतचंपक—पु० दर्पण । दीपक। [बुख़ार ।
शीतज्वर—पु० जाड़े का-
शीतभानु—पु० चंद्रमा ।
शीतभीरु—पु० बेला, मल्लिका
शीतल३—वि० ठंडा । [देवी ।
शीतला—स्त्री०चेचक । एक-
शीर—पु० (फ़ा०) दूध ।
शीरख़ोरा—पु०दुधमुँहा बच्चा।
शीर व शकर—वि० (फ़ा०) दूध-चीनी की तरह मिश्रित ।
शीरा—पु०शर्बत । चाशनी।
शीराज़ा—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का फ़ीता । प्रबंध ।
शीरीं—वि०(फ़ा०)मीठा । प्रिय
शीरीनी—स्त्री०(फ़ा०)मिठाई।
शीर्ण—वि० टूटा-फूटा, जीर्ण दुबला ।
शीर्य—वि० नश्वर ।
शीर्ष—पु० सिर । चोटी ।
शीर्षक—पु० चोटी । टोप । परिचय कराने वाला शब्द या वाक्य (हेडिंग)।[योग्य ।
शीर्षच्छेद्य—वि०सिर काटने-
शीर्षण्य—पु० साफ़ बाल ।
शील—पु० अच्छा स्वभाव । मुरौवत ।
शीलचक्षु—वि०मुरौवतदार ।
शीलवान्१३—वि० सुशील ।
शीश—पु० सिर । माथा ।
शीशम—पु० एक पेड़ ।
शीशमहल—पु० (फ़ा०) वह मकान जिसमें बहुत से शीशे जड़े हों । [दर्पण ।
शीशा—पु० (फ़ा०) काँच ।
शीशी—स्त्री० छोटी बोतल ।
शुंठि—स्त्री० सोंठ ।
शुंड—पु० सूँड़ ।
शुंडादंड—पु० सूँड़ ।
शुंडाल,शुंडी—पु० हाथी ।
शुंडिक—पु० मद्य उतारने वाली एक जाति ।
शुंभ—पु० एक असुर ।
शुक—पु० तोता ।
शुकदेव—पु० व्यास-पुत्र ।
शुकराना—पु० नज़राना ।
शुक्—स्त्री० शोक ।
शुक्त—पु० सिरका, खटाई । वि० खट्टा ।
शुक्ति—स्त्री०सीप । अर्श रोग
शुक्तिका—स्त्री० सीपी ।
शुक्तिज,शुक्तिबीज—पु० मोती
शुक्र—पु० वीर्य । एक मुनि । अग्नि । एक दिन । (अ०) धन्यवाद ।
शुक्रदोष—पु० नामर्दी ।
शुक्रगुज़ार२—वि० कृतज्ञ ।
शुक्रशिष्य—पु० राक्षस ।
शुक्रांग—पु० मोर ।
शुक्राचार्य्य—पु० यह दैत्यों के गुरु थे ।
शुक्रिया—पु०(अ०) धन्यवाद
शुक्ल—वि० सफ़ेद । पु० शुक्ल-पक्ष । ब्राह्मणों की एक पदवी ।
शुक्ला—स्त्री० सरस्वती ।
शुचि३—वि०पवित्र, स्वच्छ । पु० अग्नि ।
शुचिकर्मा—पु०सदाचारी ।
शुजा—वि० (अ०) वीर ।
शुजाअत—स्त्री०(अ०)वीरता ।
शुतुर—पु० (फ़ा०) ऊँट ।
शुतुरमुर्ग़—पु० (फ़ा०) ऊँट की गर्दन की तरह एक बड़ा पक्षी ।
शुदनी—स्त्री०(फ़ा०)होनहार
शुद्ध—वि० पवित्र । साफ़ । सही । ख़ालिस ।
शुद्धांत—पु० अन्तःपुर ।
शुद्धि—स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता । शुद्ध करने के समय का संस्कार । [पत्र ।
शुद्धिपत्र—पु०अशुद्धि सूचक-
शुद्धोदन—पु० गौतम बुद्ध के पिता ।
शुन७,शुनि—पु० कुत्ता ।
शुनक—पु० कुत्ता ।
शुनासीर—पु० इन्द्र ।
शुबहा—पु० (अ०) शक,भ्रम
शुभ—वि० अच्छा । पु० कल्याण ।
शुभचिंतक१४—वि० हितैषी ।
शुभदर्शन—वि० सुंदर ।
शुभा—स्त्री० कांति । चाह ।
शुभ्र३—वि० सफ़ेद । निर्मल ।
शुभ्रांशु—पु० चंद्रमा ।
शुमार—पु० (फ़ा०) गणना ।
शुमार-कुनिंदा—वि० (फ़ा०) गिनती करने वाला ।
शुमाल८—पु० (अ०) उत्तर-दिशा ।
शुरू—पु० (अ०) आरंभ ।
शुल्क—पु० फ़ीस । भाड़ा ।
शुश्रू—स्त्री० माँ ।

शुश्रूषा८—स्त्री० सेवा।
शुष्क३—वि०सूखा, नीरस।
शुष्म—पु० पराक्रम।
शुष्मा—पु० अग्नि।
शूकर—पु० सूअर।
शूक्त—पु० सिरका।
शूद्र ४-७—पु० चौथे वर्ण का व्यक्ति।
शूद्राणी—स्त्री० शूद्र-स्त्री।
शून्य—पु०आकाश। सिफ़र। निर्जन-स्थान। वि० ख़ाली।
शून्यवाद—पु० नास्तिकता।
शून्यवादी—पु० बौद्ध। नास्तिक।
शूर३—वि०वीर। पु०सिंह। सूर्य। [गर्व करने वाला।
शूरमानी५—वि० शूरता का-
शूरवीर—पु० बहादुर।
शूरलोक—पु० वीरोचित-कार्यों का वर्णन।
शूर्प—पु० सूप, छाज।
शूर्पणखा—स्त्री० रावण की बहिन
शूल—पु० सूली। पीड़ा,दर्द
शूलधारी, शूलपाणि—पु० शिव।
शूलि—स्त्री० सूली।
शूलिक—पु० जल्लाद।
शूली—पु० शिव। स्त्री०सूली
शृखल—पु०करधनी। साँकल
शृखलता—स्त्री० क्रमबद्धता।
शृंखला—स्त्री०क्रम। ज़ंजीर। मेखला। श्रेणी। [वार।
शृंखलाबद्ध—वि० सिलसिले-
शृंग—पु० शिखर। सींग। एक बाजा।
शृंगबेर—पु० अदरख।
शृंगार—पु० साहित्य में एक-रस। सजावट। [करना।
शृंगारण—पु० प्रेम व्यक्त
शृंगारित—वि०सजाया हुआ।
शृंगि—पु० सींग वाला पशु। सोने का बना ज़ेवर।
शृंगी—पु० शिवजी। हाथी। एक ऋषि। सींग का बाजा।
शृगाल—पु० गीदड़।
शेख़—पु० (अ०) मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि।
शेख़चिल्ली—पु० बड़े बड़े मसूबे बाँधने वाला। वि० मूर्ख। मसख़रा।
शेखर—पु० सिर। मुकुट। चोटी। [डींग।
शेख़ी—स्त्री० (फ़ा०)गर्व।
शेख़ीबाज़—वि०अभिमानी।
शेफाली—स्त्री० काले फूल की नेवारी।
शेमुषी—स्त्री० बुद्धि।
शेयर—पु० (अ०) हिस्सा।
शेर—पु० सिंह। (अ०) उर्दू फ़ारसी की कविता के दो चरण।
शेर-आबी—पु० घड़ियाल।
शेर-गोई—स्त्री० (अ०) कविता पढ़ना।
शेरपंजा—पु० (फ़ा०) बघ नहा शस्त्र।[असली सिंह।
शेरबबर—पु० (फ़ा०)
शेर-मर्द—वि० (अ०) बड़ा-वीर।
शेरवानी—स्त्री० एक प्रकार का लंबा, घुटनों तक का कोटनुमा पहनावा।
शेल—पु० भाला। बर्छा।
शेलु—पु० लसोढ़ा।
शेवधि—पु० ख़ज़ाना।
शेवा—पु० (फ़ा०) प्रथा। तरीक़ा।
शेवाल—पु० सिवार।
शेष—पु०बाक़ी। नागराज। वि० बचा हुआ।
शेषधर—पु० शिवजी।
शेषशायी—पु० विष्णु।
शेषोक्त—वि० अंत का कथन
शै—स्त्री० (अ०) चीज़।
शैक्य—पु० छींका।
शैक्ष—पु० छोटा विद्यार्थी।
शैक्षणिक—वि० शिक्षा सम्बन्धी।
शैतान२—पु०(अ०)तमोगुणी देवता। शरारतीपुरुष।
शैत्य—पु० शीतलता।
शैथिल्य—पु० शिथिलता।
शैदा, शैदाई—वि० (फ़ा०) आशिक़।
शैल—पु० पर्वत।
शैलजा, शैलसुता—स्त्री० पार्वती। गंगा। [तराई।
शैलतटी—स्त्री० पहाड़ की
शैलबाला—स्त्री० पार्वती।
शैलराज—पु० हिमालय।
शैलाट—पु०सिंह भील।काँच।
शैलाली—पु० नट।
शैली—स्त्री० प्रणाली, प्रकार। लिखने का तरीक़ा।
शैलूष—पु० नट। बेल-वृक्ष।
शैलेंद्र—पु० हिमालय।
शैलेय—वि०पर्वतसे उत्पन्न।

पथरीला।
शैव—पु० शिवोपासक।
शैवल, शैवाल—पु० सिवार।
शैवलिनी—स्त्री० नदी।
शैवी—स्त्री० पार्वती।
शैशव—पु० बचपन।
शोक—पु० रंज, ग़म।
शोख़२—वि० (फ़ा०) ढीठ। चंचल। गहरा-चमकीला-रंग।
शोच—पु० दुःख, चिंता।
शोचनीय—वि० शोक के योग्य।
शोचिष्केश—पु० अग्नि।
शोच्य—पु० चिंतनीय।
शोण—पु० लाल रंग। सिंदूर। माणिक रत्न।[ख़ून।
शोणित—वि० लाल। पु०
शोथ, शोफ़—पु० सूजन।
शोध१२—पु० खोज। संशोधन, बदला।[शुद्ध करना।
शोधन६—पु०तलाश करना।
शोधनी—स्त्री० झाड़ू।
शोधित—वि० शोधा हुआ।
शोव—पु० (फ़ा०) धुलाई।
शोभन६—वि० सुंदर।
शोभना—स्त्री० सुंदरी स्त्री। अक्रि० शोभित होना।
शोभांजन—पु० सहिंजना।
शोभा—स्त्री० छवि, छटा।
शोभायमान—वि० सुंदर।
शोभित—वि० शोभायुक्त।
शोर—पु० (फ़ा०) हल्ला। धूम
शोरबा—पु० (फ़ा०) रसा, झोल।[प्रकार का क्षार।
शोरा—पु० (फ़ा०) एक-
शोरा-पुश्त—वि० (फ़ा०) उद्दंड।[गड़बड़ी।
शोरिश—स्त्री० (फ़ा०)
शोरीदा—वि० (फ़ा०) व्याकुल।[पागल।
शोरीदा-सर—वि० (फ़ा०)
शोला—पु० (फ़ा०)अंगारा।
शोशा—पु० (फ़ा०) चुटकुला, व्यंग्य।
शोष—पु० ख़ुश्क होना।क्षय।
शोषक, शोषी—पु० सोखनेवाला।
शोषण६—पु० सोखना।
शोषणपत्र—पु० ब्लाटिंग।
शोहदा१—पु० (अ०) विलासी। गुंडा। लंपट।
शोहरत—स्त्री० (अ०) ख्याति, अफ़वाह।
शोहरा—पु० (अ०) ख्याति।
शौंड—पु० मतवाला।
शौक़—पु० (अ०) व्यसन, चसका।
शौकत—स्त्री० (अ०)ठाटबाट।
शौक़िया—वि० (अ०) शौक़पूर्ण। क्रि० वि० शौक़ के कारण।[करने वाला।
शौक़ीन२—पु० (अ०) शौक़
शौक्तिक—पु० मोती।
शौच—पु० शुद्धता, पवित्रता। पाख़ाना, स्नानादि-कृत्य।
शौत—स्त्री० सौत।
शौद्धोदनि—पु० बुद्ध।
शौरसेनी—स्त्री० प्राकृत-भाषा विशेष।
शौरि—पु०श्रीकृष्ण। विष्णु।
शौर्य—पु० शूरता।
शौल्क—वि० शुल्क-संबंधी।
शौहर—पु० (फ़ा०) पति, स्वामी।
शौहरा—पु० (फ़ा०) वर के मस्तक पर बाँधा जाने वाला सेहरा।
श्मशान—पु० मरघट।
श्मश्रु—पु० दाढ़ी, मूँछ।
श्मश्रुकर—पु० नाई।
श्याम—पु० श्रीकृष्ण। मेघ। ३ वि० काला। साँवला।
श्यामकंठ—पु० शिव। मोर।नीलकंठ।
श्यामकर्ण—पु०घोड़ा विशेष।
श्यामटीका—पु० दिठौना।
श्यामपट—पु० तख्तास्याह, जिस पर लिखकर स्कूलों में लड़कों को समझाया जाता है।
श्यामल३—वि० साँवला।
श्यामसुंदर—पु० श्रीकृष्ण।
श्यामा—स्त्री० राधा। कोयल। युवती स्त्री। साँवली-स्त्री। एक देवी।
श्याल—पु० साला। गीदड़
श्यालक७—पु० साला।
श्याव—वि० काला पीला-मिश्रित।
श्येत—पु० सफ़ेद रंग।
श्येन—पु० बाज़ पक्षी।
श्रद्धांजलि—स्त्री० श्रद्धापूर्वक जलदान की क्रिया। श्रद्धा से हाथ जोड़ना।
श्रद्धा—स्त्री० पूज्यभाव-भक्ति। विश्वास।

श्रद्धातव्य—वि० श्रद्धा के-योग्य।
श्रद्धान—पु० श्रद्धा।
श्रद्धालु—वि० श्रद्धावान्।
श्रद्धास्पद—वि० पूजनीय।
श्रद्धेय—वि० श्रद्धा-योग्य।
श्रम—पु० मेहनत। थकावट।
श्रमजल—पु० पसीना।
श्रमजित—वि० जो अधिक परिश्रम करने पर भी न थके
श्रमजीवी—पु० मज़दूर।
श्रमण—पु० बौद्ध संन्यासी। कुली। [विभाजन।
श्रमविभाग—पु० कार्य का-
श्रमसना—वि० थका हुआ।
श्रमसाध्य—वि० मेहनत से सम्पन्न होने योग्य।
श्रमसीकर—पु० पसीना।
श्रमित—वि० थका हुआ।
श्रमी—पु० मेहनती। श्रमजीवी।
श्रयण—पु० सहारा। भरोसा।
श्रवण—पु० सुनना। कान
श्रवणागत—वि० सुना हुआ।
श्रवित—वि० बहा हुआ।
श्रविष्ठा—स्त्री० धनिष्ठा नक्षत्र।
श्रव्य—वि० सुनने-योग्य।
श्रांत—वि० थका हुआ। शांत।
श्रांति—स्त्री० थकावट आराम
श्राद्ध—पु० श्रद्धापूर्वक किया-गया कर्म।
श्राद्धदेव—पु० यमराज।
श्राप—पु० शाप।
श्रावक—पु० बौद्धसाधु। नास्तिक। १४ वि० सुनने वाला।
श्रावगी—पु० जैनी।
श्रावण—पु० सावन मास।
श्रावणिक—पु० श्रावण मास।
श्रावणी—स्त्री० रक्षाबंधन।
श्रावा—स्त्री० माँड़।
श्राव्य—वि० सुनने-योग्य।
श्रिय—स्त्री० मंगल। शोभा।
श्रिया—स्त्री० लक्ष्मी।
श्री—स्त्री० लक्ष्मी। शोभा। श्वेत-चंदन।
श्रीकंठ—पु० शिवजी।
श्रीकांत—पु० विष्णु।
श्रीखंड—पु० हरिचंदन।
श्रीगणेश—पु० प्रारम्भ।
श्रीघन—पु० बुद्धदेव।
श्रीचूर्ण—पु० रोरी, कुंकुम।
श्रीद—पु० कुबेर।
श्रीदाम—पु० सुदामा।
श्रीधर, श्रीपति—पु० विष्णु।
श्रीनामा—पु० पत्र के प्रारंभ में लिखा जाने वाला कुशल-समाचार, सिरनामा।
श्रीनिकेतन—पु० बैकुंठ।
श्रीनिवास—पु० बैकुंठ। विष्णु
श्रीपंचमी—स्त्री० बसंत-पंचमी
श्रीपाद—वि० पूज्य।
श्रीफल—पु० नारियल। खिरनी। बेल। आँवला। धन।
श्रीफली—स्त्री० नील।
श्रीमंत—वि० शोभावान्। धनी। पु० बालों की माँग। सिर का एक गहना।
श्रीमान्१३—वि० धनी। शोभाशाली। पु० आदर-सूचक शब्द।
श्रीमाल—स्त्री० गले की माला
श्रीमुख—पु० सुंदर मुख।
श्रीयुत—वि० श्री या शोभा-सहित।
श्रीरंग, श्रीरमण—पु० विष्णु
श्रील—वि० शोभावान्।
श्रीवत्स—विष्णु की छाती पर भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न। विष्णु।
श्रीवत्सलांछन—पु० विष्णु।
श्रीवास, श्रीवेष्ट—पु० देव-दारु-धूप।
श्रीश—पु० विष्णु।
श्रीहत—वि० निस्तेज।
श्रीहरि—पु० मुख।
श्रीहस्तिनी—स्त्री० घुइयाँ।
श्रुत—वि० सुना हुआ। प्रसिद्ध
श्रुतकीर्ति—स्त्री० शत्रुघ्न की स्त्री।
श्रुति—स्त्री० वेद। कान। सुनी हुई बात। चार की संख्या।
श्रुतिकटु—वि० कठोर (वचन)।
श्रुतिगोचर—वि० जो सुनाई दे
श्रुतिद्रष्टा१०—वि० वेदपाठी।
श्रुतिपथ—पु० कान। वेदोक्त मार्ग। [योग्य।
श्रुत्य—वि० प्रसिद्ध। सुनने-
श्रुवा—पु० दे० 'स्रुवा'।
श्रेणी—स्त्री० पंक्ति, माला।
श्रेणीबद्ध—वि० क़तार बाँधे-हुए।
श्रेय—त्रि० शुभ। पु० कल्याण।
श्रेयसी—स्त्री० हड़। पेठा। गजपीपल।
श्रेयस्कर७—वि० कल्याण-

दायक। [प्रधान।
श्रेष्ठ३—वि० बहुत अच्छा।
श्रेष्ठी—पु० सेठ, महाजन
श्रोंण—वि० लँगड़ा।
श्रोणि—स्त्री० कमर, नितम्ब
श्रोणित—पु० रुधिर,।
श्रोत—पु० कान।
श्रोतव्य—वि० सुनने-योग्य।
श्रोता१०—पु० सुनने वाला।
श्रोत्र—पु० कान।
श्रोत्रिय—पु० वेदपाठी
श्रौत—वि० वेदानुकूल।
श्लक्ष्ण—वि० कोमल, सुंदर
श्लथ—वि० शिथिल, मंद।
श्लाघन—पु० डींग हाँकना।
श्लाघनीय—वि०प्रशंसनीय।
श्लाघा—स्त्री० प्रशंसा।
श्लाघ्य—वि० प्रशंसनीय, श्रेष्ठ
श्लिष्ट३—वि० मिला हुआ।
श्लीपद—पु० पैर सूजने का रोग।
श्लील—वि० उत्तम।
श्लेष१२—पु० मिलान।
श्लेषण३—पु० आलिंगन।
श्लेष्मा—पु० बलग़म।
श्लोक—पु०छन्द विशेष। शब्द।
श्वःश्रेय—पु० कल्याण।
श्वदंष्ट्रा—पु०गोखरू।
श्वपच—पु० चांडाल।
श्वभ्र—पु० छेद।
श्ववृत्ति—स्त्री० पर-सेवा।
श्वशुर—पु० ससुर।
श्वश्रू—स्त्री० सास।
श्वसन—पु०वायु। साँस।
श्वान—पु० कुत्ता।
श्वापद—पु० हिंसक पशु।
श्वास—पु० नाक से हवा लेना तथा छोड़ना।
श्वासा—स्त्री० प्राण वायु।
श्वासोच्छ्वास—पु० वेग से साँस खींचना तथा निकालना।
श्वित्र—पु० छाजन, कुष्ठ।
श्वेत३—वि० सफ़ेद। पु० चाँदी। सफ़ेद रंग।
श्वेतपत्र—पु० प्रस्तावित मसविदा जो पार्लियामेंट आदि बड़ी सभाओं में उपस्थित किया जाता है। (अं०) व्हाइट पेपर।
श्वेतिमा—स्त्री० सफ़ेदी।
श्वेतभानु—पु० चन्द्रमा।
श्वेतांबर—पु० जैनियों का एक फ़िरक़ा।
श्वेता—स्त्री० कौड़ी। फिटकिरी। मिश्री। चीनी।
श्वेतिका—स्त्री० सौंफ़।
श्वेतिमा—स्त्री० सफ़ेदी।
श्वेत्र—पु०कुष्ठ रोग विशेष।

३१—ष

षजन—पु० भेंट, मिलन।
षंड,षढ—पु० नामर्द। साँड़
षट्—वि० छः। [समूह।
षट्क—पु० छः वस्तुओं का
षट्कर्म—पु० ब्राह्मणों के छः कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान, प्रतिग्रह। मनुष्यों के छः कर्म-दान, जप, तर्पण, देव-पूजन। स्नान, संध्या,।
षट्चक्र—पु० षड्यंत्र। शरीरस्थ छः चक्र।
षट्पद७—पु० भौंरा। छप्पय
षट्राग—पु० संगीत के छः राग। बखेड़ा।
षट्शास्त्र—पु० छः शास्त्र—न्याय, वैशेषिक, मीमांसा वेदान्त, सांख्य और पातंजल।
षडंग—पु० वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त। शरीर के छः अंग—दो हाथ, दो पैर, सिर और धड़।
षडंघ्रि—पु० भ्रमर।
षडभिज्ञ—पु० बुद्धदेव।
षडानन—पु० कार्तिकेय।
षड्गुण—पु० राजनीति के छः गुण—सन्धि, विग्रह.

यान, आसन, द्वैधीभाव और संश्रय ।
षड्यंत्र—पु० साज़िश, गुप्त आयोजन ।
षड्रस—पु० छः रस—मधुर, लवण, कटु, तिक्त। कसैला और खट्टा ।
षड्रिपु—पु० छः मनोविकार—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर ।
षष्ठ—वि० छठवाँ । [दुर्गा ।
षष्ठी—स्त्री० छठी तिथि ।
षांड्य—पु० क्लीवता ।
षाण्मातुर—पु० स्वामि कार्तिकेय ।
षाण्मासिक—वि० छमाही ।
षोडश—पु० सोलह की संख्या।
षोडशभुजा—स्त्री० १६ भुजा वाली देवी की मूर्ति ।
षोडशसंस्कार—पु० गर्भाधान से मृतक-कर्म तक के सोलह संस्कार—गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म आदि।
षोडशी—स्त्री० सोलह बरस की स्त्री । श्राद्ध विशेष । वि० सोलहवीं ।
षोडशोपचार—पु० पूजन के वस्त्राभरण, धूप, दीप, आदि १६ अंग।
ष्ठीवन—पु० थूकना ।

३२—स

संक—स्त्री० शंका । भ्रम ।
संकट—पु० विपत्ति । दुःख ।
संकर—पु० दो चीज़ों का मिलना । दोग़ला ।
सँकरा—वि० तंग । पु० कष्ट ।
संकरी—पु० वर्णसंकर ।
संकर्षण—पु० खींचने या जोतने की क्रिया । बलराम।
संकल—स्त्री० ज़ंजीर ।
संकलन—पु० संग्रह ।
संकलित—वि० संगृहीत ।
संकल्प—पु० दृढ़ निश्चय ।
संका—पु० संकट।
सँकाना—अक्रि० डरना ।
सँकारना—सक्रि० संकेत करना । [पु० कांति ।
संकाश—वि० सदृश । समीप।
संकीर्ण—वि० तंग । पु० विपत्ति । [कथन ।
संकीर्तन—पु० भजन । कीर्ति
संकु—स्त्री० बर्छी ।
संकुचित—वि० लज्जित। सिकुड़ा हुआ । [पु० झुंड ।
संकुल—वि० परिपूर्ण । घना ।
संकुलित—वि० परिपूर्ण ।
संकुसक—वि० चंचलस्वभाव का । [संकीर्ण ।
संकेत—पु० इशारा । चिह्न ।
सँकेतना—सक्रि० संकट में डालना । सकुचित होना ।
संकोच—पु० खिंचाव । लज्जा हिचक । कमी ।
संकोचित—वि० लज्जित ।
सकोची—वि० संकोच करने वाला
संक्रंदन—पु० इन्द्र । रोना ।
संक्रमण—पु० गमन । घूमना ।
संक्रमित—वि० गया हुआ ।
संक्रांत—वि० मिला हुआ । गुज़रा हुआ ।
संक्रांति—स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना । संकट, अव्यवस्था ।
संक्रामक—वि० छूत से फैलने वाला
संक्रामीय—वि० सम्पर्क से फैलने वाला (रोग) ।
सक्रीड़—पु० हँसी-मज़ाक़ ।
संक्षिप्त—वि० थोड़ा ।
संक्षुब्ध—वि० व्याकुल । अधीर । [घटाना, सार ।
संक्षेप—पु० थोड़े में कहना ।
संक्षेपण—पु० संक्षेप । करना ।

नोट—'सम्' (सं) एक उपसर्ग है, जो 'भली-भाँति, सब तरह से, बहुत, पास, सामने, शुद्ध' अर्थों की विशेषता प्रकट करता है ।

संक्षेपतः—अव्य० थोड़े में।
संक्षोभ—पु० विप्लव। कम्पन
संखिया—पु० एक विष।
संख्य—पु० युद्ध।
संख्यक—वि०संख्या वाला।
संख्या—स्त्री०तादाद।
संख्यात—वि०गिना हुआ।
संग—पु० सोहबत, साथ। सॉगी। (फ़ा०) पत्थर।
संगठन—पु०बिखरी शक्तियों को एकत्रित करना। [गया।
संगठित—वि०संगठन किया·
संगत—स्त्री०संसर्ग। उदासी-साधुओं का मठ। वि० संयुक्त।
संगतरा—पु० संतरा।
संगतराशर—पु० (फ़ा०) पत्थर काटने वाला। [सभा।
संगति—स्त्री० मेल। संग।
संगतिया—पु० गाने आदि के साथ साज बजाने वाला।
संगदिलर—वि० (फ़ा०) कठोर-हृदय। निर्दय।
संगम—पु० मिलाप।
संगमर्मर—पु० (फ़ा०)एक सफ़ेद चिकना पत्थर।
संगमूसा—पु० (फ़ा०) एक काला चिकना पत्थर।
संगर—पु०युद्ध। प्रण। विष। आपदा।
संगसार—पु० पत्थर मारकर प्राणदंड देने की सज़ा।
सँगाती, संगी—पु० साथी।
संगीत—पु० नाच तथा गाना-बजाना।
संगीति—स्त्री० बातचीत।
संगीन—पु० (फ़ा०) एक अस्त्र। २ वि० पाषाण-निर्मित। मज़बूत। विकट।
संगीनदिल—वि० (फ़ा०) कठोर-हृदय।
संगीर्ण—वि० गिना हुआ।
संगृहीत—पु० संग्रह किया हुआ।
संगृहीता—पु० संग्रहकर्त्ता।
संग-असवद—पु० (फ़ा० अ०) काबे में रखा हुआ वह काला पत्थर जिसे मुसलमान हज करते समय चूमते हैं।
संगे सुलेमानी—पु० (फ़ा० अ०) दुरंगा पत्थर जिसकी मुसलमान फ़क़ीर माला पहनते हैं।
संगसन—पु०अधिक खाना,
सगोपन—पु० छिपाव।
संग्रह—पु० संचय।
संग्रहणी—स्त्री० एक रोग जिसमें भोजन बिना पचा हुआ ही पाख़ाना के रास्ते से निकल जाता है।
संग्रहना—सक्रि०संग्रह करना
संग्रहीत—दे० 'संगृहीत'।
संग्रही, संग्रहीता१०—वि० संग्रह करने वाला।
संग्राम—पु० युद्ध।
संग्राह—पु०ढाल की मूँठ।
संग्राहक१४—पु० संग्रहकर्त्ता
संग्राह्य—वि० संग्रह करने-योग्य [समाज।
संघ—पु० समूह। दल।
संघचारी५—वि० बहुमत के पीछे चलने वाला।
संघट—पु० झगड़ा। [रचना।
संघटन—पु० मेल, संयोग।
संघटित—वि०संगठन किया हुआ
संघट्ट—पु० बनावट।
संघर्षन, संघर्षण—पु० रगड़। प्रतिद्वन्द्विता।[हुआ
संघर्षित—वि० रगड़ खाया·
संघाट—पु० दल बाँध कर रहने वाला। [संग।
संघात—पु० समूह। हत्या।
संघातक१४-पु०नाश करनेवाला
सँघाती—पु० साथी, मित्र।
संघारना—सक्रि०नाशकरना
संघोष—पु०ज़ोर की आवाज़
संचकर-पु०संचय करनेवाला।
संचयन—पु० संग्रह, ढेर।
संचयन—पु० जमा करना।
संचरण—पु०जाना, गमन।
संचरना—अक्रि० फैलना। चलना।
संचान—पु०बाज़। [वाला।
संचायक-वि० संचय करने-
संचार१२-पु०गमन। फैलाव
संचारना—सक्रि० प्रचार-करना। जन्मदेना।[दूती।
सचारिका—स्त्री० कुटनी,
सचारित—वि०चलाया हुआ।
संचारी—वि० गतिशील।
संचालक—पु० प्रवर्त्तक। व्यवस्थापक। [व्यवस्था।
संचालन६—पु०जारी रखना।
संचालित—वि० संचालन किया हुआ।
संचित—वि० एकत्रित।
संछाय—वि०प्रतिबिम्ब वाला दर्पण आदि।

संजात—वि० उत्पन्न ।
संजाफ़न—स्त्री०झालर,गोट ।
संजीदगी—स्त्री० गंभीरता ।
संजीदा-वि० (फ़ा०) गंभीर। समझदार । [वाला ।
संजीवन७—पु०जीवन देने-
संजीवी५—वि० मुर्दा को जिलाने वाला।
संजुग—पु० संग्राम ।
सँजूत—वि० सावधान ।
सँजोइ—क्रि० वि० साथ में ।
सँजोइल, सँजोवल—वि० सुसज्जित ।
संजोगिनी—स्त्री०अपने प्रेमी के साथ रहने वाली स्त्री ।
सँजोना—सक्रि० सजाना ।
संज्ञक—वि० नाम वाला ।
संज्ञा—स्त्री० चेतना, बुद्धि । नाम ।
संज्ञान—पु० इशारा ।
संज्ञापन६—पु० जताना ।
संज्ञाहीन—वि० बेसुध ।
संज्वर—पु० आग जलाना ।
सँझला—वि० चार पाँच भाइयों में तीसरा । संध्या का ।
सँझवाती—स्त्री० संध्या को जलाया जाने वाला दीपक। संध्या का गीत ।
संझोखा—पु० सायकाल ।
संझौखै—अव्य० संझा समय में ।
संडमुसंड—वि० हट्टा-कट्टा ।
सँड़सा७—पु० लोहे का एक औज़ार ।
संडास—पु०पाखाना विशेष ।
संत—पु० साधु, सज्जन ।
संतत—क्रि० वि० सर्वदा । निरंतर ।
संतति—स्त्री० संतान ।
संतप्त—वि० जला हुआ । दुःखी ।
संतमस—पु० चारों ओर फैला हुआ अंधकार ।
संतरण—पु० भली भाँति-तैरना ।
संतरी—पु० पहरेदार ।
संता—वि० बिगड़ा हुआ ।
संतान—स्त्री० औलाद । पु० देव-वृक्ष ।[आग जलाना।
संताप१२—पु० जलन।दुःख।
संतापना—सक्रि०दुःख देना ।
संतापित—वि० सताया हुआ
संतापी५—पु० संताप देने वाला ।
संती—अव्य०एवज़ में ।
संतुष्ट—वि० तृप्त, प्रसन्न ।
संतुष्टि—स्त्री० संतोष ।
संतोष८—पु० सब्र । सुख ।
संतोषित—वि० संतुष्ट ।
संथा—स्त्री० पाठ ।
संदंश—पु० सँड़सी ।
संद—छिद्र । [लेख ।
संदर्भ—पु० रचना, निबंध,
संदर्शन—पु० जाँच ।
संदलन—पु०(फ़ा०)चन्दन ।
संदिग्ध—वि० संदेहपूर्ण ।
संदिष्ट—वि० कहा हुआ ।
संदीपन६—पु० उद्दीपन । श्रीकृष्णजी के गुरु का नाम।
संदूक़—पु० पेटी, बक्स ।
संदेश,संदेशा—पु० समाचार
संदेशहर—पु० दूत ।[वाला ।
संदेशी—पु० संदेश ले जाने-
संदेह—पु० संशय, शंका ।
संदोह—पु० राशि, समूह ।
संद्राव—पु० भागना ।
संधान—पु०निशाना लगाना खोज । मिलावट ।
संधानना—सक्रि० निशाना-लगाना । धनुष पर बाण चढ़ाना ।
संधाना—पु० अचार ।
संधानी—स्त्री०प्राप्ति, खोज
संधि—स्त्री० मेल । जोड़ । सुलह । सेंध, दरार ।
संधिराग—पु० सिंदूर ।
संधेय—वि० संधि के योग्य ।
संध्या—स्त्री० संधिकाल । शाम । एक उपासना ।
संध्यावधू—स्त्री० रात ।
संनिवेश—पु० रखा जाना । घर । आसन । इकट्ठा-होना । रखने या बैठाने का कार्य ।
संन्यास—पु० चौथा आश्रम । विराग । [त्यागी ।
संन्यासी—पु०यती । योगी ।
संपत्ति—स्त्री०धन, ऐश्वर्य ।
संपद्,संपदा—स्त्री०सम्पत्ति।
संपन्न—वि० पूर्ण । सहित। धनी ।
संपर्क—पु० लगाव । संसर्ग ।
संपा—स्त्री० बिजली ।
संपाक—वि० थोड़ा । पु० भली-भाँति-पकना। [स्पर्श।
संपात—पु०एक साथगिरना।

संपादक३—पु० तैयार या पूरा करने वाला। पत्रकार, एडीटर। [का।
संपादकीय—वि० संपादक-
संपादन६—पु० पूरा करना। पुस्तक, पत्र आदि का क्रम-ठीक करना। निरूपण। कथन। [किया हुआ।
संपादित—वि० संपादन-
संपाद्य—वि०संपादन के योग्य।
संपुट—पु० डिब्बा। अंजली वि० बन्द।
संपुटक—पु०दोना। पिटारी।
संपुटी—स्त्री० कटोरी, प्याली
संपूज्य—वि० भली भाँति-पूजने योग्य।
संपूर्ण३—वि०परिपूर्ण, सारा
संपूर्णतः, संपूर्णतया—क्रि० वि० पूरी तरह से।
संपृक्त—वि० मिला हुआ।
सँपेरा—पु०साँप खिलानेवाला।
संपै—स्त्री० सम्पत्ति।
सँपोला—पु०साँप का बच्चा।
सँपोलिया—पु० साँप पकड़ने वाला [करने वाली।
संपोषिका—वि०स्त्री०पालन-
संप्रक्षालन—पु० अच्छी तरह धोना।
संप्रति—अव्य० इस समय।
संप्रदान—पु०दान। दीक्षा। चौथा कारक। [फ़िरका।
संप्रदाय—पु० धार्मिक-मत,
संप्रधारणा—स्त्री०समर्थन।
संप्रयोगी-वि०ऐन्द्रजालिक,लंपट
संप्रहार—पु० युद्ध।
संप्रेषित—वि० भेजा गया।

संफुल्ल—वि० खिला हुआ।
संबंध—पु० लगाव। नाता। विवाह।
संबंधी—वि० विषयक। पु० रिश्तेदार। समधी।
संबद्ध—वि० बँधा हुआ।
संबरारि—पु० कामदेव।
संबल—पु० रास्ते का कलेवा। सफ़र खर्च।
संबुक—पु० घोंघा।
संबुद्ध—पु० ज्ञानी।
संबोधन—पु० जगाना। पुकारना। समझाना।
संबोधित—वि० जताया गया
संभरण—पु० पालन-पोषण।
सँभलना—अक्रि० सावधान-होना। रुका रहना।
संभव—पु० उत्पत्ति। उपाय। वि० मुमकिन।
संभवतः—अव्य०मुमकिन है।
संभार—पु०संचय। तैयारी। धन। रक्षा। [रक्षा प्रबंध।
सँभाल—स्त्री०देखभाल।
सँभालना—सक्रि० रक्षा-करना। थामना, रोकना।
संभावना६—स्त्री० संभव-होना। कल्पना। दुविधा। आदर। [संभव।
संभावित—वि० कल्पित।
संभाव्य—वि० संभावना के योग्य, होने-योग्य।
संभाषण—पु० बातचीत।
संभाषी५—वि०कहने वाला।
संभाष्य—वि० बातचीत के योग्य।
संभूत—वि० उत्पन्न। सहित

संभूत—वि०एकत्रित। रचित। प्रतिष्ठित। [का संगम।
संभेद—पु० भेदनीति। नदी-
संभोग—पु० रतिक्रीड़ा। सुख-पूर्वक-व्यवहार।
संभोज्य—वि० खाने योग्य।
संभ्रम—पु० घबराहट। भ्रांति। आदर। [सम्मानित।
संभ्रांत—वि० उद्विग्न।
संभ्रांति—स्त्री० घबराहट।
संभ्राजना—अक्रि० पूर्णतः शोभित होना।
संमत—वि० सहमत।
संमति—स्त्री० राय, सलाह।
संमद—पु०आनन्द। [झाड़ू।
संमार्जनी—स्त्री० बुहारी,
संमर्जन—पु०मिलाना।
संमित—वि० समान।
संयत-वि० बँधा हुआ। संयमी।
संयम—पु० रोक। इन्द्रिय-निग्रह। परहेज़। [संयन।
संयमन—पु० वशीकरण,
संयमनी—स्त्री० यमपुरी।
संयमी—वि० इन्द्रिय-निग्रही। नियम से रहने वाला।
संयात—वि० साथ में गया हुआ।
संयातात्मा—वि० चित्त को वश में करने वाला।
संयुक्त, संयुत—वि० मिला-हुआ। सहित।
संयुग—पु० युद्ध।
संयोग—पु० मेल। दैवयोग।
संयोजक१४—पु० मिलाने-वाला। आयोजन करने

वाला। [आयोजन।
संयोजन४—पु० जोड़ना।
संयोना—सक्रि० लजाना।
संरंभ—पु० आरम्भ। चाह। क्रोध। [आश्रयदाता।
संरक्षक—पु० अभिभावक।
संरक्षण६—पु०देखरेख। रक्षा
संराधन—पु० भलीभाँति-सेवा करना। [आरूढ़।
संरूढ़—वि० जमा हुआ।
संरोधन६—पु०बाधा डालना।
संलक्षित—वि०जाना हुआ।
संलग्न—वि०संयुक्त, मिला-हुआ।
संलाप१२—पु० वार्तालाप।
संलिप्त—वि० लीन।
संवत्—पु० वर्ष, साल,सन्।
संवत्सर—पु० वर्ष।
संवर—पु० चाहना। मनो-निग्रह।
संवरण—पु० हटाना। छिपाना। रोकना। पसंद-करना। वर चुनना।
सँवरना—अक्रि० सजना।
संवर्त्त—पु० चक्कर। प्रलय।
संवर्द्धक—पु० बढ़ाने वाला।
संवर्द्धन६—पु० बढ़ना। बढ़ाना। [बढ़ाया हुआ।
संवर्द्धित—वि० बढ़ा या-
संवलित—वि० शत्रु से भिड़ा हुआ।
सँवाँ—वि० सदृश। [खबर।
संवाद१२—पु० बातचीत।
संवाददाता१०—पु० खबर भेजने वाला।
संवादिता—स्त्री०समानता।
सँवारना—सक्रि० सँभालना, ठीक करना, सजाना।
संवारित—वि० रोका हुआ।
संवास—पु० मकान। साथ-रहना।
संवाहन—पु० ले जाना।
संविग्न—वि० उद्विग्न।
संविद्—स्त्री०संकेत। ज्ञान।
संविधा—स्त्री० आचरण।
संविधान—पु०प्रबन्ध। रीति।
संविष्ट—वि० बैठा हुआ।
संवीक्षण—पु० खोज।
संवीत—वि० रुद्ध, वेष्टित।
संवृत्त—वि० घिरा हुआ। रक्षित। [बोध। अनुभव।
संवेद, संवेदन—पु०वेदना।
संवेदना—स्त्री० हमदर्दी।
संवेदित—वि० बनायाहुआ।
संवेश—पु० प्रवेश। सोना।
संवेष्ट—पु० बेठन।
संशय८—पु० संदेह।
संशयात्मक—वि० संदिग्ध।
संशयात्मा—पु० शक्की।
संशयालु—वि० शक करने वाला। [चतुर।
संशित—वि० कठोर। तेज़।
संशिष्ट—वि० अवशिष्ट।
संशोधक—पु०सुधारने वाला
संशोधन६—पु० शुद्ध करना, तरमीम। [हुआ।
संशोधित—वि० सुधारा-
संश्रय—पु० संयोग। सहारा
संश्राव—पु० स्वीकार करना
संश्रित—वि० परावलंबी।
संश्लिष्ट—वि० मिला हुआ।
संश्लेष—पु० आलिंगन।
संश्लेषित—वि० आलिंगन-किया हुआ।
संस, संसइ—पु० संदेह।
संसक्त—वि० संबद्ध, सहित।
संसद—स्त्री० सभा।
संसरण—पु० गमन।
संसर्ग८—पु०संबंध। संगति।
संसर्प—पु० रेंगकर चलना।
संसाध्य—वि० दमनीय।
संसार—पु० जगत्, सृष्टि।
संसारचक्र—पु० मायाजाल।
संसारी—वि० लौकिक। व्यवहार-कुशल।
संसिक्त—वि० अच्छी तरह-सींचा हुआ।
संसिद्ध—वि० अच्छी तरह-किया हुआ। चतुर [संसार।
संसृति—स्त्री० आवागमन।
संसृष्ट—वि० शामिल।
संसृष्टि—स्त्री० मिलावट। सम्बन्ध। घनिष्ठता।
संस्करण—पु० सुधारना। पुस्तकों को एक बार की छपाई।
संस्कार—पु० मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। शुद्धि। सुधार
संस्कृत—वि० परिमार्जित। स्त्री० देवभाषा। [सभ्यता।
संस्कृति—स्त्री० शुद्धि।
सँस्खलन—पु० गिरना।
सँस्खलित—वि०गिरा हुआ।
संस्तभ—पु० रोग। हठ। लक़वा। [हुआ।
संस्तब्ध—वि०एकाएक रुका-
संस्तर—पु० तह।

संस्तरण—पु० बिछावन।
संस्तवन—पु० यश-वर्णन।
संस्था—स्त्री० स्थिति। सभा
संस्थान—पु० घर। बस्ती। बनावट। ढाँचा।[प्रवर्त्तक।
संस्थापक—पु० स्थापनकर्त्ता,
संस्थापित—वि० पक्की स्थापना किया गया।
संस्थित—वि० ठहरा हुआ।
संस्पर्श—पु० लगाव। स्पर्श।
संस्फोट—पु० लड़ाई।
संस्मरण—पु० ख़ूब स्मरण।
संस्रव—पु० बहना।
संहत—वि० मिला हुआ। ठोस। एकत्रित। [मेल।
संहति—स्त्री० समूह, दल।
संहनन—पु० वध, संहार।
संहरणद—पु० संहार।
संहर्षण—पु० प्रतिस्पर्धा, होड़। प्रसन्न होना।
संहार—पु० नाश। अंत। संग्रह। एक नरक।
संहारक—पु० नाशक।
संहारना—सक्रि० नाश करना
संहित—वि० एकत्रित।
संहिता—स्त्री० स्मृति आदि ऋषि-प्रणीत ग्रंथ। संधि।
सआदत—स्त्री० (अ०) सौभाग्य। भलाई।
सई—स्त्री० वृद्धि। सखी।
सईद—वि०(अ०)भाग्यवान्। शुभ।
सकता—स्त्री० शक्ति। पु० (अ०) मिरगी। चकित-अवस्था।
सकना—अक्रि० समर्थ होना
सकपकाना—अक्रि० हिचकना
सकरना—अक्रि० स्वीकृत होना।
सकरा—वि० संकीर्ण।
सकरुण—वि० करुणायुक्त।
सकर्मक—पु० कर्मयुक्त क्रिया
सकल—वि० सब, समस्त।
सक़लात—पु० उपहार।
सक़लाती—वि० मख़मल का
सकाना—अक्रि०शंका करना
सकाम—वि०कामना-सहित।
सकारना—सक्रि० स्वीकार करना।
सकारे—क्रि० वि० सबेरे।
सकाश—पु० पास, निकट।
सकिलना—अक्रि० सिमटना। संकुचित होना। फ़िसलना
सक़ील—वि० (अ०) भारी, गरिष्ठ।
सकुच—स्त्री० शर्म्म, संकोच।
सकुचना—अक्रि० लजाना। संकीर्ण होना।
सकुचाना—अक्रि० संकोच करना। सक्रि० लज्जित करना [ने वाला।
सकुचीला—वि०संकोच कर-
सकुचौहाँ७—वि०संकोची।
सकुन७—पु०पक्षी। शकुन।
सकून—पु० (अ०) ठहरना।
सकूनत—स्त्री०(अ०)निवास-स्थान।
सकृत्—अव्य० एक बार।
सकेतना—अक्रि० संकुचित होना। [करना।
सकेलना—सक्रि० इकट्ठा-
सकेला—स्त्री०तलवार विशेष-
सकोतरा—पु० चकोतरानीबू
सकोरा—पु०मिट्टी का प्याला
सक़्क़ा—पु० (अ०) भिश्ती।
सक़्क़ाबा—पु० (अ०) पानी की टंकी।
सक्तु—पु० सत्तू।
सक्थी—स्त्री० हड्डी। जाँघ।
सक्रिय—वि० अमली,क्रिया-सहित।
सक्षम—वि० समर्थ।
सखरस—पु०नवनीत, नैनू।
सखरी—स्त्री०कच्ची रसोई।
सखा—पु० मित्र, साथी।
सख़ावत—स्त्री०(अ०) दान-शीलता, उदारता।
सखी—स्त्री०सहेली, सहचरी
सख़ी—वि० (अ०) दानी, उदार। [कथन।
सख़ुन—पु० (फ़ा०) वचन।
सख़ुनचीनर—वि० (फ़ा०) चुग़लख़ोर।
सख़ुनतकिया—पु० (फ़ा०) मुहावरा, बोलचाल
सख़ुनसाज़र—पु० कवि, शायर। [स्त्री०दुःख।
सख़्तर—वि० (फ़ा०) कठोर
सख़्तजान—वि० (फ़ा०) कठोर-हृदय।
सख्य—पु० दोस्ती।
सग—पु० कुत्ता। वि० सगा।
सगबगाना—अक्रि० भीगना सकपकाना। [वंशी राजा।
सगर—पु० एक प्रसिद्ध सूर्य-
सगरा७—वि० सब, तमाम।
सगर्भा—स्त्री० सगी बहिन। गर्भवती स्त्री।

सगर्भ्य—पु० सगा भाई।
सगल—वि० सब
सगा१—वि० सहोदर।
सगाई—स्त्री० विवाह का-निश्चय। रिश्ता।
सग़ीर—वि० (अ०) छोटा।
सगुण—पु० ईश्वर का साकार रूप।
सगुन—दे० 'शकुन'।
सगुनौती—स्त्री० शकुन विचारने का कार्य।
सगोत्र, सगोती—वि० एक ही गोत्र का।
सगौती—स्त्री० गोश्त।
सघन—वि० बहुत घना।
सच—वि० सत्य, ठीक।
सचन—पु० सेवा-शुश्रूषा।
सचना—सक्रि० संचितकरना।
सचमुच—क्रि० वि० यथार्थ में
सचरना—अक्रि० फैलना।
सचराचर—पु० चर, अचर-सब वस्तुएँ।
सचल३—वि० चंचल।
सचाई—स्त्री० सत्यता।
सचारना—सक्रि० फैलाना।
सचिक्कण—वि० विशेष-चिकना।
सचिव—पु० मंत्री। [धान।
सचेत, सचेतन—वि० साव-
सचेष्ट—वि० क्रियाशील।
सच्चरित्र३—वि० नेकचलन।
सच्चा—वि० सत्यवादी। असली।
सच्चिदानंद—पु० परमात्मा
सज—स्त्री० शोभा।
सजग—वि० सावधान।
सजदार—वि० सुडौल।
सजधज—स्त्री० सजावट।
सजन—पु०पति। प्रियतम।
सजना—सक्रि०शृंगार करना।
सजनी—स्त्री० सखी।
सजबज—स्त्री० सजधज।
सजल—वि०अश्रुपूर्ण। [दंड।
सज़ा (फ़ा०), सजाई—स्त्री०
सजा—स्त्री० (अ०) पक्षि-कलरव।
सज़ाए-क़त्ल—स्त्री० (फ़ा० अ०) प्राण-दंड।
सजागर—वि० सावधान।
सजातीय—वि० एक जाति का
सजाना—सक्रि० क्रम से लगाना। अलंकृत करना।
सज़ायाफ़ता, सज़ायाब—वि० (फ़ा०) दंडित।
सज़ा-याब—वि० (फ़ा०) सज़ा पाने-योग्य। दंडित।
सजाव—पु० एक प्रकार का दही। [क्रिया। शोभा।
सजावट—स्त्री० सजाने की-
सजावन—पु० सजाना।
सजावार—वि० (फ़ा०) दंडनीय।
सजीला—वि० सुन्दर।
सजीव—वि० प्राण वाला।
सज्जन३—पु०भलाआदमी।
सज्जा—स्त्री० वेष-भूषा। शय्या। तैयारी।
सज्जादा—पु० (अ०) नमाज़-पढ़ने का कपड़ा।
सज्जित—वि० सजा हुआ।
सर्ज्जी—स्त्री० खारी मिट्टी विशेष।
सज्ञान—वि० ज्ञानयुक्त। चतुर।
सटक—स्त्री० लंबा लचीला-नैचा। [चल देना।
सटकना—अक्रि० धीरे से-
सटकाना—सक्रि० कोड़े आदि से मारना। [चिकना
सटकारा—वि० लंबा तथा-
सटकारी—स्त्री०पतली छड़ी।
सटक्का—पु० दौड़। छड़ी।
सटना१—अक्रि० चिपकना।
सटपट—स्त्री० संकट। भय। घबराहट।
सटपटाना—अक्रि० सिकुड़-जाना। भौचक्का होना।
सटरपटर—वि० मामूली।
सटा—स्त्री० जटा, अयाल। वि० चिपका हुआ।
सटाकी—स्त्री० कोड़ा (चाबुक) की चमड़े की पट्टी। [मिलाना।
सटाना—सक्रि० चिपकाना।
सटिया—स्त्री० छड़ी।
सटीक—वि०व्याख्या-सहित। बिल्कुल ठीक।
सट्टा—पु० इक़रारनामा। बाज़ार।
सट्टा बट्टा—पु० मेलजोल।
सट्टी—स्त्री० बाज़ार।
सठियाना—अक्रि० साठ बरस का होना।
सठोरा—पु०सोंठ का लड्डू।
सड़क—स्त्री० चौड़ा रास्ता।
सड़ना१—अक्रि० गलना। बिगड़ जाना।

सड़सठ—वि० ६७। [दुर्गंधि।
सड़ायँध—स्त्री० सड़न की-
सड़ाव—पु० सड़ने की क्रिया।
सड़ासड़—क्रि० वि० 'सड़' शब्द के साथ। [निकम्मा।
सड़ियल—वि० सड़ा हुआ।
सतत—क्रि०वि० हमेशा।
सत—पु० सार। बल। सत्य। ईश्वर। वि० सौ।
सतत—क्रि० वि० हमेशा।
सततगति—पु० पवन।
सतनजा—पु० सात प्रकार का अन्न का संमिश्रण।
सतयुग—पु० दे० 'सत्ययुग'।
सतरंगा—वि० सात रंगों का
सतर—स्त्री० (अ०) रेखा। पंक्ति। वि० टेढ़ा। [करना।
सतराना—अक्रि० क्रोध-
सतरौंहा७—वि० क्रोधपूर्ण।
सतर्क—वि० सावधान। युक्तिपूर्ण।
सतलड़ा—स्त्री० सात लड़ का हार। [पतिव्रता।
सतवंती—वि० स्त्री० सती।
सतसई, सतसैया—स्त्री० सात सौ पद्यों वाली पुस्तक।
सतह—स्त्री० (अ०) ऊपरी-भाग, धरातल।
सतह-ज़मीन—स्त्री० (अ० फ़ा०) मैदान।
सतहत्तर—वि० ७७।
सतांग—पु० रथ।
सताना—सक्रि० दुःख देना।
सतासी—वि० ८७।
सती—स्त्री० साध्वी। पति-व्रता। दक्ष प्रजापति की कन्या।
सतीनक—पु० मटर।
सतीत्व—पु० पातिव्रत्य।
सतीर्थ, सतीर्थ्य—वि० सहपाठी।
सतून—पु० खम्भा।
सतोगुणी—पु० अच्छे गुण वाला। सात्विक।
सत्—पु० सत्य। सार। वि० सच्च। उत्तम।
सत्कार—पु० आदर।
सत्क्रिया—स्त्री० सत्कार। उत्तम काम।
सत्कीर्ति—स्त्री० सुयश।
सत्त—पु० सारभाग। सत्य।
सत्तम—वि० अत्युत्तम।
सत्तर—वि० ७०।
सत्तरह—वि० १७।
सत्ता—स्त्री० अस्तित्व, हस्ती, शक्ति। अधिकार।
सत्ताईस—वि० २७।
सत्ताधारी—पु० अधिकारी।
सत्तावन—वि० ५७। [चूर्ण।
सत्तू—पु० भूने अनाज का-
सत्पथ—पु० उत्तम मार्ग।
सत्पात्र—पु० योग्य-व्यक्ति।
सत्य३—वि० यथार्थ, सही। पु० सचाई। [प्रेमी।
सत्यकाम४—वि० सत्य का-
सत्यतः—अव्य० वास्तव में।
सत्यनारायण—पु० विष्णु।
सत्यनिष्ठ—पु० सत्यनारा-यण। वि० सत्य में लगा हुआ।
सत्यपर—वि० ईमानदार।
सत्यप्रतिज्ञ—वि० वचन का सच्चा।
सत्यभामा—स्त्री० श्रीकृष्ण की स्त्री। [पहला युग।
सत्ययुग—पु० सब से-
सत्यलोक—पु० ब्रह्मलोक।
सत्यवादी५—वि० सच बोलने वाला।
सत्यवान्—पु० सावित्री के पति। १३ वि० सच्चा।
सत्यव्रत, सत्यसंध—वि० सत्यप्रतिज्ञ। [भामा।
सत्या—स्त्री० सचाई। सत्य-
सत्याग्रह—पु० सत्य के मार्ग में डटे रहना।
सत्यानाश—पु० सर्वनाश।
सत्यानृत—पु० वाणिज्य-व्यापार।
सत्यापन—पु० बयाना, साई।
सत्र—पु० सदावर्त। घर। यज्ञ। आच्छादन।
सत्रशाला—स्त्री० धर्मशाला।
सत्रि—स्त्री० हाथी। मेघ। यज्ञ करने वाला।
सत्री—पु० यज्ञकर्ता। गृहस्थ।
सत्व—पु० सार। तत्त्व। प्राणशक्ति। सचाई, सद्‌गुण।
सत्वर—क्रि० वि० तुरंत।
सत्वशाली५—वि० बली।
सत्संग—पु० साधु-संगति।
सथशव—पु० युद्ध में मरे हुए की लाश। [जर्राह।
सथिया—पु० स्वस्तिक चिह्न।
सदंबुता—स्त्री० ताज़गी।
सद—वि० ताज़ा। स्त्री० (अ०) परदा, आड़।
सदक़ा—पु० (अ०) दान।

निछावर ।
सदन—पु० घर, धाम ।
सदफ़—स्त्री० (अ०) सीपी ।
सदबर्ग—पु० हज़ारा गेंदा ।
सदमा—पु० (अ०) आघात । रंज। चोट ।
सदय३—वि० दयालु ।
सदर—वि० (अ०) प्रधान । बड़ा । पु० कलेजा । आँगन ।
सदरआला—पु० (अ०) छोटा जज ।
सदरी—स्त्री० (अ०) बिना आस्तीन की बंडी ।
सदर्थ—पु० धनी व्यक्ति । ख़ास बात ।
सदसि—स्त्री० सभा ।
सदस्य—पु० सभासद, मेम्बर
सदहा—वि० सैकड़ों । पु० सदस्य ।
सदा—अव्य० नित्य, हमेशा । स्त्री० (अ०) आवाज़, प्रतिध्वनि ।
सदाक़त—स्त्री (अ०) सचाई ।
सदागति—पु० वायु ।
सदाचरण—पु० सदाचार ।
सदाचारी—पु० अच्छे आचरण वाला, धर्मात्मा ।
सदातन—वि० दे० 'सनातन।'
सदानीरा—स्त्री० गौरी के विवाह में शंकरजी के हाथ से जलदान के समय उत्पन्न हुई नदी ।
सदाफल—वि० सदा फलने वाला । पु० गूलर । बेल । नारियल । एक नीबू ।
सदाबर्त—पु० नित्य अन्न-वितरण करना ।
सदाबहार—वि० जो सदा हरा-भरा रहे [पतित्व ।
सदारत—स्त्री० (अ०) सभा-
सदाशय—वि० श्रेष्ठ, सज्जन।
सदाशिव—पु० महादेव ।
सदासुहागिन—स्त्री० एक-पुष्प । वेश्या (व्यंग्य) ।
सदी—स्त्री० (अ०) शताब्दी
सदूर—पु० शार्दूल, सिंह ।
सदृश—वि० समान ।
सदेश—वि० पास, समीप ।
सदेह—वि० देह-सहित ।
सदैव—क्रि० वि० हमेशा ।
सद्‌गति—स्त्री० अच्छी गति। मोक्ष ।
सद्‌गुण—पु० अच्छा गुण ।
सद्दल—पु० गिरोह ।
सद्भाव—पु० सच्चा भाव ।
सद्म—पु० घर ।
सद्मनी—स्त्री० बड़ा-भवन ।
सद्यः—क्रि० वि० तुरंत, अभी ।
सद्यःप्रसूता—स्त्री० जिसने अभी प्रसव किया हो ।
सधना—अक्रि० सिद्ध होना । सँभलना ।
सधर—पु० ऊपर का ओष्ठ ।
सधर्म—वि० समान-धर्मा ।
सधवा—स्त्री० सुहागिन ।
सधावर—पु० गर्भवती स्त्री के लिए भेजा हुआ उपहार.
सध्रीची—स्त्री० सहचरी ।
सन—पु० एक पौधा । (अ०) वर्ष, संवत् । अव्य० से, साथ । वि० सन्न ।
सनअत—स्त्री० (अ०) कारीगरी । [एक पुत्र ।
सनक—स्त्री० झक । ब्रह्मा के·
सनकाना—सक्रि० पागल· बनाना । [करना ।
सनकारना—सक्रि० संकेत·
सनत्कुमार—पु० ब्रह्मा के एक पुत्र ।
सनद—स्त्री० (अ०) प्रमाण । प्रमाण-पत्र । बड़ा तकिया । आदर्श ।
सनदी—स्त्री० वृत्तान्त ।
सनना—अक्रि० गूँथा जाना । लीन होना [प्रियतम ।
सनम—पु० (अ०) प्रिय,
सनमख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) प्रिय, प्रेमिका का स्थान । [करना ।
सनमानना—सक्रि० सम्मान·
सनसनाहट—स्त्री० 'सनसन' शब्द ।
सनसनी—स्त्री० खलबली ।
सनागर—पु० (अ० फ़ा०) प्रशंसक ।
सनाढ्य—वि० तपस्या से युक्त । पु० ब्राह्मणों का एक भेद ।
सनातन—वि० सदा रहने वाला । अत्यन्त प्राचीन ।
सनातनपुरुष—पु० विष्णु ।
सनातनी—वि० जो हमेशा से चला आया । पु० सनातन धर्म का अनुयायी ।
सनाथ—वि० सपक्ष । सफल ।
सनाय—स्त्री० दवा के काम आने वाला एक पौधा ।

सनाह—पु० कवच।
सनित—वि० सना हुआ।
सनीड़—वि० पास का।
सनेहन—पु० स्नेह। तेल।
सन्—पु० वर्ष, संवत्।
सन्न—वि० स्तब्ध। संज्ञाशून्य
सन्नद्ध—वि० तैयार, प्रस्तुत।
सन्नाटा—पु० नीरवता।
सन्निकट—क्रि० वि० पास।
सन्निकर्ष—पु० संबन्ध। निकटता।
सन्निकाश—वि० सदृश।
सन्निकृष्ट—वि० समीप।
सन्निधान—पु० निकटता।
सन्निधि—स्त्री० समीपता।
सन्निपात—पु० सरसाम रोग
सन्निरुद्ध—वि० रोका हुआ।
सन्निविष्ट—वि० एक साथ बैठा हुआ। प्रतिष्ठित।
सन्निवेश—पु० स्थिति। घर। समाना। [समाया हुआ।
सन्निवेशित—वि० स्थापित।
सन्निहित—वि० पास रखा-हुआ।
सन्यास—पु० त्याग। अस्वीकार
सपक्ष—वि० तरफ़दार, सहायक।
सपत, सपाद—क्रि० वि० तत्क्षण।
सपत्न—पु० विरोधी। शत्रु।
सपत्नी—स्त्री० सौत।
सपत्नीक—वि० स्त्री-सहित।
सपदि—क्रि० वि० शीघ्र।
सपरदाई—पु० वेश्या के नाच मे तबला, सारंगी आदि बजाने वाला। [होना।
सपरना९—अक्रि० पूरा-
सपर्या—स्त्री० पूजा।
सपाट—वि० समतल।
सपाटा—पु० झोंका, तेज़ी।
सपिंड—वि० सगोत्र।
सपीति—स्त्री० साथ पीना।
सपेद—वि० (फ़ा०) सफ़ेद।
सपूत२—पु० अच्छा पुत्र।
सप्त—वि० सात।
सप्तक—पु० सात का समूह।
सप्तकी—स्त्री० करधनी, मेखला। [अग्नि।
सप्तज्वाल, सप्तजिह्व—पु०
सप्ततंतु—पु० यज्ञ।
सप्तद्वीप—पु० पृथ्वी के सात मुख्य-विभाग।
सप्तपदी—स्त्री० भाँवर।
सप्तम—वि० सातवाँ।
सप्तमी—स्त्री० सातवीं तिथि।
सप्तर्षि—पु० गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि।
सप्तला—स्त्री० वर्षा की बेल, नेवारी।
सप्तशती—स्त्री० सतसई।
सप्तार्चि—पु० अग्नि।
सप्ताह—पु० हफ़्ता।
सफ़—पु० (अ०) क़तार। सीतलपाटी।
सफ़र—पु० (अ०) यात्रा। अरबी साल का दूसरा महीना। [वाला।
सफ़रदाई—पु० साज बजाने-
सफ़रमैना—स्त्री० (अ०) सेना के सिपाही जो आगे पहुँच कर खाई आदि खोदने का काम करते हैं।
सफ़री—स्त्री० सौरी मछली।
अमरूद। [सार्थक।
सफल२—वि० फल-सहित।
सफलक—वि० ढाल वाला।
सफलीभूत—वि० कामयाब।
सफ़हा—पु० (अ०) पृष्ठ, पन्ना
सफ़ा—वि० साफ़। पु० पृष्ठ।
सफ़ाई—स्त्री० (अ०) स्वच्छता। ख़ात्मा।
सफ़ाचट—वि० बिलकुल साफ़
सफ़ीना—पु० (अ०) परवाना, इत्तिलानामा। नाव।
सफ़ीर—पु० (अ०) एलची, राजदूत। परन्दों की आवाज़
सफ़ील—स्त्री० शहरपनाह।
सफ़ूफ़—पु० (अ०) बुकनी।
सफ़ेद२—वि० (फ़ा०) श्वेत, उजला। बिना लिखा, कोरा।
सफ़ेदपोश—पु० (फ़ा०) श्वेत-वस्त्रधारी। भद्रपुरुष।
सफ़ेदा—पु० (फ़ा०) जस्ते का चूर्ण या रंग।
सब—वि० समस्त। (अं०) छोटा। गौण। [शिक्षा।
सबक़—पु० (अ०) पाठ।
सबक़त—स्त्री० (अ०) बढ़ौती
सबब—पु० (अ०) कारण, साधन, हेतु।
सबल—वि० बली, सेनायुक्त।
सबा—स्त्री० (फ़ा०) सुबह की हवा। [उपाय।
सबील—स्त्री (अ०) यत्न,
सबीह—वि० (अ०) गोरा। सुन्दर।
सबूत—पु० (अ०) प्रमाण। स्थिरता। मज़बूती।
सवेरा—पु० प्रातःकाल।

सबेरे—क्रि० वि० शीघ्र।
सब्ज़—वि० (फ़ा०) कच्चा। ताज़ा। हरा।
सब्ज़क़दम—वि०(फ़ा० अ०) जिसका आगमन अशुभ हो।
सब्ज़-पोशर—वि० (फ़ा०) हरे रंग के कपड़े पहनने वाला।
सब्ज़ा—पु० (फ़ा०) एक घोड़ा। एक रत्न। हरियाली। भाँग।
सब्ज़ी—स्त्री० (फ़ा०) हरियाली। हरी तरकारी। भाँग।
सब्र-पु० (अ०) संतोष, धैर्य।
सभर्तृका—स्त्री० सुहागिन स्त्री
सभा—स्त्री० मंडली, मजलिस। समूह।
सभागा७—वि० भाग्यवान्।
सभाजन—पु० आलिंगन, कुशलप्रश्न। [अध्यक्ष।
सभापति३—पु० सभा का-
सभासद—पु० सभ्य, सदस्य
सभास्तार—पु० सभा में बैठने वाला, सदस्य।
सभिक—पु० जुआ खिलाने वाला।
सभ्य—पु० सदस्य। वि० शिष्ट, भला। [शिष्टता।
सभ्यता—स्त्री० सदस्यता।
समंत—पु० सीमा। वि० सारा। [जिन।
समंतभद्र—पु० बुद्धदेव,
समंतात्—अव्य० सर्वत्र।
समंद—पु० घोड़ा विशेष।
सम—वि० समान। स्त्री० समता।
समकक्ष—वि०बराबर।
समकालीन३—वि० एक ही समय में होने वाला।
समकोण—वि०बराबर कोण का। पु०९०अंश का कोण।
समक्ष—क्रि० वि० सामने।
समग्र—वि०समूचा।
समचर—वि० समान आचरण करने वाला।
समचित्त, समचेता—पु० हर हालत में समान चित्त-वृत्ति रखने वाला पुरुष।
समज-पु० पशुओं का समूह।
समज्ञा—स्त्री० कीर्ति।
समज्या—स्त्री० सभा।
समझ—स्त्री० बुद्धि। विचार
समझना१—अक्रि० विचारना। जानना।
समझौता—पु० राज़ीनामा।
समतल—वि० चौरस।
समता—स्त्री० बराबरी।
समतूल—वि० समान।
समत्थ—वि० समर्थ।
समत्व—पु० समता।
समदन—पु० लड़ाई। भेंट।
समदना—सक्रि० भेंटना। सौंपना।
समदर्शी—वि०सबको समान देखने वाला, निष्पक्ष।
समदाना—सक्रि० धरना, समर्पण करना।
समधिक—वि० बहुत ज़्यादा
समधी—पु० पुत्र या पुत्री का ससुर।
समन—पु० (अ०) क़ीमत। हाज़िरी के लिये अदालत का आज्ञापत्र। स्त्री० (फ़ा०) चमेली।
समन-अन्दाम—वि० (फ़ा०) चमेली के समान गोरे शरीर वाला या वाली।
समन्वय—पु० संयोग, मेल।
समन्वित—वि० संयुक्त।
समपृष्ठ—वि० समतल।
समय—पु० वक़्त। मौक़ा।
समर—पु० युद्ध। (अ०) फल। लाभ। संतान। धन।
समरभूमि—स्त्री०रण-क्षेत्र।
समराना—सक्रि० सजाना। पहनाना।
समशीतोष्ण-वि० मातदिल।
समर्थ३—वि०योग्य।बली।
समर्थक—वि० समर्थन करने वाला, हिमायती।
समर्थन६-पु०मत की पुष्टि।
समर्पण—पु० भेंट, उपहार, दान।
समर्पना—सक्रि० सौंपना।
समर्पित-वि० समर्पण किया हुआ।
समवर्ती—वि० समान रूप से स्थित। पु० यमराज।
समवाय—पु० मिलावट, मेल। भीड़, समूह।
समवेत—वि० एकत्रित।
समवेदना—स्त्री० विपत्ति में समान रूप से साथ देना, हमदर्दी। [समाज।
समष्टि—स्त्री० सब का समूह,
समसर—स्त्री० बराबरी।
समस्त—वि० सब, सारा।

समस्या—स्त्री० मिलाने की क्रिया। टेढ़ा प्रश्न। पद्य का अन्तिमांश।
समा—पु० समय। एक नय। चावल विशेष। पु० (अ०) आकाश। [वाई।
समाअ़त—स्त्री० (अ०) सुन-
समाई—स्त्री० हैसियत। वि० (अ०) सुना हुआ।
समाकर्षण६—पु० संचय।
समाकर्षी—वि० जिसकी दूर से ही गंध आवे [राया हुआ।
समाकुल—वि० अधिक घब-
समागत—वि० आया हुआ।
समागम—पु० भेंट, मिलना। मजमा, भीड़।
समाघात—पु० युद्ध।
समाचार—पु० ख़बर।
समाचारपत्र—पु० अख़बार।
समाजन—पु० समूह। मंडली
समाजी—पु० तबलची।
समादर—पु० सम्मान।
समादृत—वि० सम्मानित।
समादेय—वि० आदरणीय।
समाधान—पु० शंका रफ़ा करना, तसल्ली।
समाधि—स्त्री० योगाभ्यास की क्रिया विशेष। ध्यान, चित्त की एकाग्रता। समाधान। [लगाये हुए।
समाधित—वि० समाधी-
समाधिस्थ—वि० समाधि लगाये हुए।
समान३—वि० बराबर, सदृश। पु० नाभि का वायु।
समाना—अक्रि० प्रवेश करना

समानान्तर—वि० बराबर फ़ासले का।
समानोदर्य—पु० सगा भाई।
समापक१४—पु० पूरा करने-वाला। [करना।
समापन६—पु० समाप्त-
समापन्न—वि० समाप्त। प्राप्त।
समाप्त—वि० जो पूरा हो चुका हो, पूर्ण।
समाप्ति—स्त्री० ख़ात्मा।
समाप्य—वि० पूर्ण करने योग्य। [का ज्ञाता।
समाम्नायिक—पु० शास्त्र-
समारंभ—पु० अच्छी तरह शुरू होना।
समारंभण६—पु० आलिंगन।
समारोह पु०—बड़ा उत्सव। धूमधाम। [उपासना।
समाराधन—पु० पूजा,
समालंभ—पु० तिलक लगाना
समालोचक—पु० समालोचना करने वाला।
समालोचना—स्त्री० गुण-दोषों की भली-भाँति विवेचना करना।
समावर्तन—पु० वापस आना। एक संस्कार जो विद्याध्ययन की समाप्ति पर होता है।
समाविष्ट—वि० समाया हुआ।
समावृत्त—वि० गुरु से ग्रहस्थाश्रम में रहने की आज्ञा प्राप्त वेद-वेदांग का पढ़ा हुआ विद्यार्थी।
समावेश—पु० प्रवेश। संग्रह
समास—पु० संक्षेप। दो या अधिक पदों के योग से बना हुआ शब्द। [योग्य।
समासाद्य—वि० प्राप्त करने-
समाहत—वि० मारा हुआ।
समाहर्त्ता—पु० इकट्ठा करने वाला। कर वसूल करने वाला।
समाहार—पु० संग्रह। समूह
समाहित—वि० स्थिरीकृत। समाधिस्थ। सावधान।
समाहृति—स्त्री० संग्रह।
समाह्वय—पु० मुर्ग़ा आदिक जानवरों के लड़ाने की बाज़ी।
समिर्निजय—पु० विजयी।
समिति—स्त्री० सभा।
समिथ—पु० लड़ाई। अग्नि।
समिध,समिधा—स्त्री० हवन-का ईंधन।
समीक—पु० लड़ाई। [करना।
समीकरण—पु० समान-
समीकृत—वि० समान किया-हुआ।
समीक्षा—स्त्री० समालोचना।
समीचीन३—वि० ठीक। उत्तम।
समीप३—वि० पास।
समीपवर्त्ती—वि० पास का।
समीर, समीरण—पु० वायु।
समीहा—स्त्री० इच्छा, चेष्टा।
समुंद—पु० समुद्र।
समुचित—वि० बहुत ठीक।
समुच्चय—पु० समूह। संग्रह।
समुच्छेद—पु० विध्वंस।
समुज्झित—वि० त्यक्त।
समुत्थान—पु० भली-भाँति उठाना, उदय।
समुत्सुक—वि० अति उत्कंठित।

समुद—वि० आनन्द-सहित। पु० समुद्र।
समुदय, समुदाय—पु० समूह।
समुदित—वि० उठा हुआ। उत्पन्न।
समुद्धत—वि० अन्यायी।
समुद्भव—पु० उत्पत्ति।
समुद्यत—वि० तैयार।
समुद्र—पु० सागर।
समुद्रगा—स्त्री० नदी।
समुद्रमेखला—स्त्री० पृथ्वी।
समुद्रांता—पु० जवासा। कपास।
समुद्वाह—पु० विवाह।
समुन्नत—वि० भीगा हुआ।
समुन्नत—वि० भली-भाँति-उन्नत।
समुन्नद्ध—वि० अपने को पंडित मानने वाला। गर्वित।
समुल्लास—पु० खुशी। परिच्छेद। [होना।
समुहाना—अक्रि० सामने-
समूढ़—वि० विवाहित। हाल का पैदा हुआ। इकट्ठा-किया हुआ। [हवा, लू।
समूम—स्त्री० (अ०) गर्म-
समूल—वि० जड़ सहित।
समूह—पु० भीड़। ढेर।
समृद्ध—वि० धनवान्, समर्थ। उन्नत।
समृद्धि३—स्त्री० ऐश्वर्य। उन्नति।
समेटना—सक्रि० बटोरना।
समेत—अव्य० सहित, युक्त।
समोखना—सक्रि० समझा कर कहना। [मिलाना।
समोना—सक्रि० सानना,
समोह—पु० युद्ध।
समौरिया—वि० समवयस्क।
सम्त—स्त्री० (अ०) सीधा, तरफ़, दिशा।
सम्बुल—पु० (अ०) जटा-माँसी, बालछड़।
सम्मत—वि० सहमत।
सम्मति—स्त्री० राय।
सम्मर्द—पु० भीड़। झगड़ा।
सम्मन—पु० अदालत का आज्ञा-पत्र।
सम्मान—पु० इज्ज़त।
सम्मानित—वि० प्रतिष्ठित।
सम्मिलन—पु० मिलाप।
सम्मिलित—वि० शामिल।
सम्मिश्रण—पु० मिलावट।
सम्मुख—अव्य० सामने।
सम्मेलन—पु० समाज, सभा। मिलाप।
सम्यक्—क्रि० वि० भलीभाँति
सम्राज्ञी—स्त्री० महारानी।
सम्राट्—पु० चक्रवर्ती राजा।
सयाना१—वि० धूर्त्त। चतुर। बालिग़।
सर—पु० तालाब। चिता। सिरा। बाण। सरकंडा। वि० विजय। पु० (फ़ा०) सिर। सरदार। आरम्भ। शक्ति।
सरअंजाम—पु० (फ़ा०) सामिग्री, तैयारी। व्यवस्था।
सरकंडा—पु० नरकट।
सरक—स्त्री० ख़ुमार। मद्य-पात्र। खिसकना। [कना।
सरकना९—अक्रि० खिस-
सरकश२—वि० (फ़ा०) उद्दंड।
सरक़ऽ-बिलजब्र३—पु० (अ०) डाका।
सरक़ा—पु० (अ०) चोरी।
सरकार—स्त्री० (फ़ा०) मालिक। गवर्नमेंट।
सरकारी—वि० (फ़ा०) राजकीय।
सरख़त—पु० (फ़ा० अ०) वह काग़ज़ जिस पर किराये आदि की शर्तें लिखी जाती हैं। आज्ञापत्र, परवाना।
सर-ख़ुश—वि० (फ़ा०) सुखी।
सरग़ना—पु० (फ़ा०) अगुआ।
सरगम—पु० संगीत में स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम।
सरगर्म२—वि० (फ़ा०) जोशीला।
सर-गुज़श्त—स्त्री० (फ़ा०) सर पर बीती बात। हाल। जीवन-चरित्र।
सरघा—स्त्री० मधुमक्खी।
सरज़मीन—स्त्री० (फ़ा०) मुल्क, वतन, देश।
सरजा—पु० सरदार। सिंह।
सरज़ोर२—वि० (फ़ा०) उद्दंड। बलवान्। दुष्ट।
सरट—पु० गिरगिट। [मार्ग।
सरणि, सरणी—स्त्री०
सरताज—पु० (फ़ा० अ०) सर्वश्रेष्ठ, पूज्य।
सर-ता-पा—क्रि० वि० (फ़ा०) सर से पैर तक।
सरतारा—वि० निश्चित।
सरदा—पु० (फ़ा०) एक प्रकार का ख़रबूज़ा।
सरदावा—पु० (फ़ा०)

तहखाना ।
सरदार२—पु० (फ़ा०) नायक, अगुआ ।
सरधन—वि० धनी ।
सरना—अक्रि० निकलना, चलना ।
सरनाम-वि०(फ़ा०)प्रसिद्ध ।
सरनामा-पु०(फ़ा०)शीर्षक । पत्र का आरंभ । पता ।
सरनी—स्त्री० रास्ता ।
सरपंच—पु० पंचों में बड़ा व्यक्ति । प्रधान ।
सरपट-क्रि० वि० तेज़-दौड़ ।
सरपत—पु० तृण विशेष ।
सरपरस्त२—पु० (फ़ा०) संरक्षक ।
सरपेच—पु० (फ़ा०) पगड़ी के ऊपर लगाने का एक गहना ।
सरपोश—पु० (फ़ा०) तश्तरी ढकने का कपड़ा ।
सरफ़रोज़२—वि० (फ़ा०) गौरवान्वित ।
सरबधी—पु० तीरंदाज़ ।
सर-ब-मुहर—वि० (फ़ा०) मुहरबन्द । तमाम, सब ।
सरबराहर, सरबराहकार—पु० (फ़ा०) कारिंदा, प्रबंधक
सर-ब सर—वि० (फ़ा०) एक सिरे से । बिल्कुल ।
सर-बस्ता—वि० (फ़ा०) छिपा हुआ ।
सर-बाज़—वि० (फ़ा०) जान पर खेलने वाला, वीर ।
सर मग्ज़न—स्त्री० (फ़ा०) माथापच्ची । चिंता ।
सरमा—स्त्री० कुतिया । पु० (फ़ा०) जाड़ा, शीतकाल ।
सरमाया—पु० (फ़ा०) पूँजी
सरल३-वि० सीधा । साधु ।
सरव—पु० दे० 'सराव' ।
सरवर—पु० सरोवर ।
सरवरि—स्त्री० बराबरी ।
सरवाक-पु० प्याला, कटोरा
सरवान—पु० तंबू ।
सरविस-स्त्री० (अं०) नौकरी
सरशार—वि० (फ़ा०) लबालब । [भावपूर्ण ।
सरस३—वि० रसीला ।
सरसना९-अक्रि० पनपना । रसयुक्त होना । हराभरा ।
सरसब्ज़—वि० (फ़ा०)
सर सर—स्त्री०(अ०) आँधी, तेज़ हवा ।
सरसराना—अक्रि० वायु की ध्वनि, सनसनाना ।
सरसरी—क्रि० वि० (फ़ा०) जल्दी में ।
सरसाई—स्त्री० सरसता । सुंदरता । अधिकाई ।
सरसाना-सक्रि०सरस करना अक्रि० रसयुक्त होना ।
सरसाम—पु० त्रिदोष रोग ।
सरसिज—पु० कमल ।
सरसी-स्त्री० छोटा सरोवर ।
सरसीरुह—पु० कमल ।
सरसों-स्त्री०राई जैसा बीज ।
सरसौहा७—वि० सरस ।
सरस्वती—स्त्री० एक नदी । वाग्देवी । भारती । विद्या । शारदा ।
सरहंग—पु० (फ़ा०) सेनापति । मल्ल ।
सरह—पु० पतंग, टिड्डी ।
सरहज—स्त्री० साले की स्त्री
सरहद८—स्त्री०(फ़ा०) सीमा
सरा—स्त्री० चिता । सराय।
सराग—पु० सींक ।
सराना—सक्रि० हटाना ।
सरापा—क्रि० वि० (फ़ा०) सिर से पैर तक ।
सरापना-सक्रि० शाप देना ।
सराफ़२—पु० (अ०) सोने चाँदी का व्यापारी ।
सराफ़ा—पु० सराफ़ों का बाज़ार । सराफ़ी का काम ।
सराफ़ी—स्त्री० सोने-चाँदी का व्यापार । रुपये पैसे का लेन-देन । महाजनी लिपि ।
सराबोर—वि० तरबतर ।
सराय—स्त्री० (अ०) मुसाफ़िरख़ाना ।
सराव—पु० मद्यपात्र । दीया
सरास—पु० भूसी ।
सरासर—अव्य० (फ़ा०) एक सिरे से दूसरे सिरे तक । प्रत्यक्ष ।
सरासरी—स्त्री० (फ़ा०) आसानी । शीघ्रता । क्रि० वि० जल्दी में ।
सराहत—स्त्री० (अ०) व्याख्या, टीका ।
सराहना—सक्रि० तारीफ़ करना । ६ स्त्री० तारीफ़ ।
सरि—स्त्री० नदी । समता । माला । अव्य० तक ।
सरित, सरिता—स्त्री० नदी ।

सरित्पति—पु० समुद्र ।
सरिश्ता—पु० (फ़ा०) अदालत । दफ़्तर । महकमा । ताल्लुक़ । नौकर-चाकर ।
सरिश्तेदारर—पु० (फा०) अदालतों में देशी भाषा में मुक़दमों की मिसलें रखने वाला कर्मचारी । किसी विभाग का प्रधान कर्म्मचारी ।
सरिस,सरीखा—वि० सदृश
सरीसृप—पु० रेंग कर चलने वाला जीव ।
सरीह—वि० (अ०) प्रकट ।
सरीहन्—क्रि० वि० स्पष्ट रूप से, ज़ाहिरा ।
सरुज—वि० रोगी ।
सरुष, सरोष—वि० क्रुद्ध ।
सरुहना९—अक्रि० अच्छा होना ।
सरूप—वि० रूपवान् ।[नशा
सरूर—पु० ख़ुशी । हलका-
सरेआम—क्रि० वि० (फ़ा०) खुल्लमखुल्ला ।
सरेख—वि० चालाक ।
सरेखना—सक्रि० सहेजना ।
सरेदस्त—क्रि० वि० (फ़ा०) इस समय । तुरन्त ।
सरे नौ—क्रि० वि० (फ़ा०) नये सिरे से ।[सबके सामने।
सरेबाज़ार—क्रि०वि० (फ़ा०)
सरेशाम—क्रि० वि० संध्या होते ही, शाम ।
सरेस—पु० (फ़ा०) एक लसदार पदार्थ जो चिपकाने के काम में आता है ।
सरोट—स्त्री० सिकुड़न ।
सरो—पु० (फ़ा०) बाग़ीचों में शोभा के लिये लगाया जाने वाला एक सीधा पेड़ ।
सरो-क़द—वि० (फ़ा० अ०) सरो के समान सुंदर आकार का [वास्ता ।
सरोकार—पु० (फ़ा०) संबंध,
सरोज—पु० कमल ।
सरोजना—सक्रि० पाना ।
सरोजिनी—स्त्री० कमल । कमल-पुंज । कमलों से भरा तालाब ।
सरोधा—पु० श्वास के आधार पर भविष्य कहना ।
सरोरुह—पु० कमल ।
सरोवर—पु० तालाब ।
सरोसामान—पु० (फ़ा०) सामग्री । असबाब ।
सरौता—पु० सुपारी काटने की कैंची ।
सर्कस—पु० (अं०) वह स्थान या मंडली जहाँ सिंह आदि जानवरों का खेल दिखाया जाता है । [चिट्ठी ।
सर्क्युलर—पु० (अं०)गश्ती-
सर्ग—पु० अध्याय, प्रकरण । सृष्टि, उत्पत्ति ।
सर्गबंध—पु० महाकाव्य ।
सर्ज—पु० शाल-वृक्ष । राल ।
सर्जन—पु० (अं०) जर्राह । डाकटर । [चिकित्सा।
सर्जरी—स्त्री० (अं०) अस्त्र-
सर्टिफ़िकेट—पु०(अं०) सनद ।
सर्द—वि० (फ़ा०) ठंढा ।
सर्दमिज़ाज—वि० (फ़ा०) उत्साह-हीन । [जुकाम ।
सर्दी—स्त्री० (फ़ा०) ठंढक ।
सर्प—पु० साँप ।
सर्पण—पु० रेंगना ।
सर्पफेन—पु० अफ़ीम ।
सर्पभुक्—पु० मोरपक्षी ।
सर्पराज—पु० शेषनाग । वासुकि ।
सर्पहा—पु० नेवला ।
सर्पावास—पु० चंदन ।
सर्पिणी—स्त्री० साँपिन ।
सर्पिस्—पु० घृत । [वाला ।
सर्पी—पु० घी । ५ वि० रेंगने-
सर्फ़—वि० (अ०) ख़र्च किया हुआ । पु० व्यय ।
सर्फ़ा—पु० (अ०) व्यय ।
सर्रक—पु० सरकना ।
सर्राफ़र—पु० दे० 'सराफ़' ।
सर्वसहा—स्त्री० पृथ्वी ।
सर्व—वि० सब ।
सर्वकाम—पु० शिव ।
सर्वक्षार—वि० बिल्कुल नष्ट ।
सर्वगत—वि० सर्वव्यापक ।
सर्वग्रास—पु० पूर्ण-ग्रहण ।
सर्वजनीन—वि० सार्वजनिक
सर्वजित्—वि० सबको जीतने वाला ।
सर्वज्ञ—वि० सब जाननेवाला । पु० ईश्वर । बुद्ध । शिव । [मान्य सिद्धांत।
सर्वतंत्र—पु० सब शास्त्रों को-
सर्वतः—अव्य० सब ओर । सब प्रकार से ।
सर्वतोभद्र—वि० सब ओर से मंगल । पु० दुमहला या पंचमहला मकान । नीम

सर्वतोभाव—अव्य० अच्छी तरह। [व्यापक।
सर्वतोमुख—वि० सर्वत्र
सर्वत्र—अव्य० सब जगह।
सर्वथा—क्रि० वि० सब प्रकार से।
सर्वदा—क्रि० वि० हमेशा।
सर्वनाम—पु० वह शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है।
सर्वनाश—पु० विध्वंस।
सर्वोपरि—वि० सर्वश्रेष्ठ।
सर्वमंगला—स्त्री० दुर्गा। लक्ष्मी। पार्वती।
सर्वरस—पु० राल।
सवला—स्त्री० गँड़ास, तोमर।
सर्वव्यापी—वि० सब में रहने वाला। पु० ईश्वर।
सर्वश्रेष्ठ—वि० सब से उत्तम
सर्वसंहार—पु० पूर्ण विनाश
सर्वसाधारण—पु० जनता।
सर्वस्व—पु० सारी संपत्ति।
सर्वांग—पु० सारा बदन।
सर्वांगीण—वि० सब अंगों में व्यापक। [जी।
सर्वात्मा—पु० ईश्वर। शिव
सर्वाधिकार८—पु० पूर्ण अधिकार।
सर्वान्नीन—वि० जो सब वर्णों का भोजन ग्रहण कर लेता हो।
सर्वाभिसार—पु० सेना की तैयारी। [बुद्ध।
सर्वार्थसिद्ध—पु० गौतम
सर्वाशी—वि० सर्वभक्षी।
सर्वेश, सर्वेश्वर—पु० ईश्वर। चक्रवर्ती राजा।
सर्वेसर्वा—वि० सब कुछ। पूर्ण अधिकारी।
सर्षप—पु० सरसों।
सलई—स्त्री० चीड़।
सलग—वि० सम्पूर्ण।
सलज्ज४—वि० लज्जावान्।
सलतनत—स्त्री० राज्य। साम्राज्य। [छिदना।
सलना—अक्रि० गड़ना।
सलब—वि० नष्ट।
सलमा—पु० (अ०) सोने या चाँदी का तार, बादला।
सलाई—स्त्री० पतली छड़। सीक।
सलाख़—स्त्री० (फ़ा०) शलाका।
सलाम२—पु० (अ०) प्रणाम, बंदगी। [रार, स्वस्थ।
सलामत२—वि० (अ०) बरक़
सलाह—स्त्री० सम्मति। परामर्श।
सलाहकार—पु० रायदिहंदा
सलि—स्त्री० चिता।
सलिल—पु० जल।
सलिलाशय—पु० तालाब।
सलीक़ा—पु० (अ०) शऊर।
सलील—वि० लालासहत।
सलीस—वि० (अ०) मुहावरेदार, सरल। [नेकी।
सलूक—पु० (अ०) बरताव।
सलूनों—पु० सावन की पूनों।
सलैना—सक्रि० सालना।
सलैला—वि० फिसलने वाला
सलोक—पु० नगर। [सुन्दर।
सलोना—वि० नमकीन।
सव—पु० यज्ञ।
सवया—पु० समवयस्क।
सवर्ण—वि० समान। सजातीय।
सवा—वि० चौथाई-सहित।
सवाक्चित्र—पु० बोलती हुई तस्वीर।
सवाब—पु० (अ०) पुण्य।
सवाई—वि० सवा। बढ़कर। चौथाई ब्याज पर ऋण देने की प्रणाली।
सवार—पु० अश्वारोही।
सवारा—पु० प्रातःकाल।
सवारी—स्त्री० लूस। वाहन।
सवाल—पु० (अ०) प्रश्न, माँग।
सवाल-जवाब—पु० बहस।
सविकल्प—वि० संदिग्ध।
सविता—पु० सूर्य्य।
सविधि—वि० विधि-पूर्वक।
समीक्ष्यकारिता—स्त्री० जान-बूझ कर काम करना।
सावध, सवेश—वि० पास।
सवेरा—पु० सुबह।
सवैया—पु० सवा सेर की तौल। एक छंद।
सव्य—वि० बायाँ, उलटा।
सव्यसाची—पु० अर्जुन।
ससाना—अक्रि० काँपना।
ससुर—पु० दे० 'श्वसुर'।
ससुराल—पु० ससुर का घर।
सस्ता२—वि० थोड़े दाम का
सस्त्रीक—वि० अपनी स्त्री के सहित।
सस्पेंड—वि० (अ०) मुअत्तल
सस्फोट—वि० धड़ाका-सहित
सस्य—पु० धान्य।

सहँगा—वि० सस्ता।
सह—अव्य० सहित।
सहकार३—पु० सहायक, सहयोग, सहायता। अति सुगन्धित-आम।
सहकारी५—पु० सहायक।
सहगमन—पु० सती होना। साथ जाना।
सहगामी५—पु० साथी।
सहचर—पु० सेवक। मित्र।
सहचरी—स्त्री० पत्नी। सखी।
सहचारी५—पु० संगी।
सहज—वि० स्वाभाविक। सरल। [जुड़वाँ।
सहजन्मा—वि० सहोदर।
सहजात—वि० सगा।
सहजानि—स्त्री० पत्नी।
सहताना—अक्रि० सुसताना।
सहदानी—स्त्री० निशानी।
सहधर्मिणी—स्त्री० पत्नी।
सहन६—पु० बरदाश्त करना, क्षमा। (फ़ा०) आँगन।
सहनक—स्त्री० (अ०) छोटा सहन। छोटी रक़ाबी।
सहनची—स्त्री०(अ०)दालान के अगल बग़ल की कोठरी।
सहनभंडार—पु० ख़ज़ाना।
सहनशील३—वि० सहिष्णु।
सहना—सक्रि० भोगना। अक्रि० बरदाश्त करना।
सहनाई—स्त्री० एक बाजा।
सहपाठी—पु० साथ पढ़ने वाला। [वाला'।
सहबाला—पु० दे० 'शह-
सहभागी५—पु० साझीदार।
सहभोजन—पु० एक साथ बैठ कर खाना। [संकोच।
सहम—पु० (फ़ा०) डर।
सहमत—वि० एक मत।
सहमति—स्त्री० एक राय।
सहमरण—पु० सती होना।
सहमाना—सक्रि० डराना।
सहमृता—स्त्री०सती। [यता।
सहयोग—पु०साथ देना,सहा-
सहयोगी—पु० सहायक।
सहर—पु०(अ०)सबेरा।जादू।
सहरगही—स्त्री० (अ० फ़ा०) निर्जल व्रत करने के दिन बहुत तड़के किया जाने वाला भोजन।
सहरा—पु० (अ०) जंगल।
सहराई—वि०(अ०) जंगली।
सहराना—सक्रि० धीरे धीरे हाथ फेरना।
सहरी—स्त्री० मछली।
सहलंगी—पु० साथी।
सहल—वि० (अ०) आसान।
सहल अंगार—वि० (अ० फ़ा०) आलसी, आराम-पसंद।
सहलाना—सक्रि० धीरे-धीरे हाथ फेरना, खुजलाना।
सहवास८—पु० साथ। संभोग।
सहवासी५—पु० पड़ोसी।
सहव्रत—स्त्री० पत्नी।
सहस,सहस्र—वि० हज़ार।
सहसा—क्रि० वि० एकाएक।
सहसानन—पु० शेषनाग।
सहस्रकर, सहस्रकिरण—पु० सूर्य्य। [कमल।
सहस्रदल, सहस्रपत्र—पु०
सहस्रदृग—पु० इन्द्र।
सहस्रनाम—पु० हज़ार नाम का स्तोत्र।
सहस्रपाद—पु० सूर्य। विष्णु
सहस्रबाहु—पु० शिव। कृत-वीर्य का पुत्र।
सहस्ररश्मि—पु० सूर्य।
सहस्रवीर्या—स्त्री० दूब।
सहस्रशीर्ष—पु० विष्णु।
सहस्रांशु—पु० सूर्य।
सहस्राक्ष—पु० इन्द्र। विष्णु
सहाइ, सहाई—पु० सहायक। स्त्री० सहायता।
सहाध्यायी—पु० सहपाठी।
सहानुभूति—स्त्री० हमदर्दी।
सहाब—पु० (अ०) बादल।
सहाबा—पु० (अ०) दोस्त। मुहम्मद साहब के घनिष्ट मित्र।
सहाय८—पु० मदद।
सहायक—वि० मददगार।
सहायता—स्त्री० मदद।
सहारना—सक्रि० सहना।
सहारा—पु० भरोसा।
सहालग—पु० लगन, विवाह। लगन, विवाह के दिन।
सहावल—पु० राजगीरों का दीवार की सिधाई नापने का लट्टूनुमा एक यंत्र।
सहास—वि० हर्ष सहित।
सहिजन—पु० वृक्ष विशेष।
सहित—अव्य० साथ।
सहिथी—स्त्री० बरछी।
सहिदान७—पु० निशानी।
सहिष्णु३—वि० सहनशील।
सही—वि०(अ०)सत्य,ठीक।

सहीसलामत—वि० (अ०) स्वस्थ । [ज्यों का त्यों ।
सही-सालिम—वि० (अ०)
सहुँ—अव्य०सामने, तरफ़ ।
सहूलियत—स्त्री० (फ़ा०) सुगमता । [रसिक ।
सहृदय३—वि०दयालु ।
सहेजना९—अक्रि० समझा कर सुपुर्द करना ।
सहेट—पु० मिलन-स्थान ।
सहेतुक—वि० जिसका कुछ हेतु हो । [स्त्री० सखी ।
सहेलरी; सहेलिका,सहेली—
सहैया—वि० सहने वाला ।
सहोढ़—पु० वह जिसकी माता का विवाह गर्भावस्था में हुआ हो । पु० साहू ।
सहोदर—वि० सगा ।
सह्य—वि० सहने-योग्य ।
साँकर—स्त्री० ज़ंजीर । कष्ट ।
सांकेतिक—वि०संकेत वाला ।
सांख्य—पु० एक शास्त्र ।
साँग, साँगी—स्त्री० बर्छी-विशेष । [रूप से ।
सांगोपांग—क्रि० वि० पूर्ण-
सांघाटिका—स्त्री० दूती ।
सांघात—पु० दल । [वाला ।
सांघातिक—वि० इकट्ठा करने-
साँच—वि० सत्य ।
साँचा—पु० ढाँचा ।
साँचिला—वि० सच्चा ।
साँझ—स्त्री० संध्या ।
साँटा—पु० कोड़ा । ईख ।
साँटिया—पु०डुग्गी पीटने वाला ।
साँटी—स्त्री० छड़ी । बदला ।
साँठना—सक्रि०पकड़े रहना ।
साँठि, साँठी—स्त्री० पूँजी ।
साँड़—पु० दाग़ कर छोड़ा हुआ बैल ।
साँड़नी—स्त्री० ऊँटनी ।
साँड़िया—पु० शीघ्रगामी-ऊँट । ऊँटिनी का सवार ।
सांत्वना—स्त्री० ढारस । तसल्ली । [के गुरु ।
सांदीपनि—पु० श्रीकृष्णजी-
सांद्र—पु० अरण्य । वि० सुन्दर । घना ।
साँध—पु० लक्ष्य ।
सांधिक—पु० संधिकर्त्ता ।
सांधिविग्रहिक—पु०वह राज कर्मचारी जिसे संधि या विग्रह करने का अधिकार हो ।
सांध्य—वि० संध्या का ।
सांध्र—वि० गाढ़ा ।
सांपत्तिक—वि० आर्थिक ।
सांपद—वि० धन-संबंधी ।
सांप्रत—अव्य० इसी समय ।
सांप्रदायिक—वि० संप्रदाय-संबंधी ।
सांवरी—स्त्री० जादूगरी ।
साँभर—पु०एक नमक । एक प्रकार का हरिन.सफ़र-खर्च ।
साँवला—वि० श्याम रँग का । पु० श्रीकृष्ण ।
साँवाँ—पु० एक कदन्न ।
साँसत—स्त्री० दम घुटने का सा कष्ट । झंझट ।
साँसतघर—पु०कालकोठरी ।
साँसना—सक्रि० शासन-करना । कष्ट देना ।[संबंधी
सांसारिक—वि० संसार-
सांस्कृतिक—वि० संस्कृति-संबंधी ।
साइंस—स्त्री०(अ०)विज्ञान ।
साइक़ा—स्त्री० (अ०) बिजली
साइक्लोपीडिया—स्त्री०(अं०) विश्वकोष ।
साइक्लोस्टाइल—पु० (अं०) हाथ की लिखावट छापने की एक मशीन ।
साइत—स्त्री० (अ०) मुहूर्त । एक घंटे का समय ।
साइनबोर्ड—पु० (अं०) वह तख्ता जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में दूकान आदि का पता लिखा रहता है ।
साइयाँ—पु० पति, स्वामी ।
साईं—पु०स्वामी । [उद्योगी ।
साई—स्त्री०(अ०) पेशगी ।पु०
साउ—पु० शाह, महाजन ।
साक़—स्त्री० (अ०) घुटने के नीचे का भाग, पिंडली ।
साकट—वि० विना गुरु का । मांस-भक्षी ।
साकल—स्त्री० ज़ंजीर ।
साकल्य—पु० हवन-सामग्री । समूह । [ख्याति ।
साका—पु० संवत् । शौक़ ।
साकार—वि० साक्षात् ।
साकिन—वि० (अ० निवासी । हलन्त (अक्षर)
साक़ी पु० (अ०) शराब पिलाने वाला । माशूक़ ।
साकेत—पु० अयोध्यानगरी ।
साक्षर—वि० शिक्षित ।
साक्षात्—अव्य० सामने । प्रत्यक्ष ।
साक्षात्कार—पु० भेंट ।

साक्षी—स्त्री० गवाही। पु० गवाह
साक्ष्य—पु० गवाह।
साख—स्त्री० मर्यादा। कीर्त्ति।
साखी—स्त्री० गवाही। कबीर आदि के पद्य।
साख्त—स्त्री० (फ़ा०) बनावट।
साख़्ता—वि० (फ़ा०) बनाया हुआ
साग—पु० शाक, भाजी।
सागर—पु० समुद्र। ताल।
साग़र—पु० (अ०) प्याला।
साग़री—स्त्री० अ०) गुदा।
साज़—पु० (फ़ा०) बाजा। सामग्री। तैयारी। सजावट।
साज़गार२—वि० (फ़ा०) ठीक। शुभ।
साजन—पु० पति। प्रेमी।
साजना—सक्रि० सजाना।
साज़बाज़—पु० (फ़ा०) तैयारी। मेल-जोल।
साज़सामान—पु० (फ़ा०) सामग्री। ठाटबाट।
साजा—वि० सुंदर साफ़।
साज़िंदा—पु० (फ़ा०) साज़ बजाने वाला।
साज़िश—स्त्री० (फ़ा०) षड्यंत्र।
साझादार—पु० शराकत।
साटक—पु० भूसा।
साटन—पु० एक रेशमी कपड़ा
साटा—पु० बदला।
साटिका—स्त्री० साड़ी।
साटोप—वि० घमंडी।
साठ—वि० ६०।
साठनाठ—वि० निर्धन।
साठा—पु० ईख। वि० साठ वर्ष की आयु वाला।
साठी—पु० धान विशेष।
साड़ी—स्त्री० ज़नानी धोती।
साढ़साती—स्त्री० शनि की साढ़े सात वर्ष की दशा।
साढ़ा—वि० आधा।
साढ़ी—स्त्री० मलाई।
साढ़ू—पु० साली का पति।
सात—वि० ७।
साति—स्त्री० शासन, दंड।
सात्म्य—पु० सारूप्य।
सात्व—वि० सतोगुणी।
सात्विक७—वि० सतोगुणी।
साथ—पु० संग। अव्य० सहित।
साथरी—स्त्री० बिछौना।
साथी—पु० दोस्त, संगी।
सादगी—स्त्री० (फ़ा०) सादापन। [रण। ख़ालिस।
सादा१—वि० (फ़ा०) साधा-
सादात—स्त्री० (अ०) बहु० 'सैयद' का।
सादिक़—वि० (अ०) सच्चा।
सादिर—वि० (अ०) निकलने वाला।
सादी—स्त्री० शादी। पु० रथी, सवार। एक पक्षी।
सादूर—पु० सिंह।
सादृश्य—पु० समानता।
साध—स्त्री० इच्छा। [योगी।
साधक—पु० साधने वाला।
साधन६—पु० सिद्धि। विधान, उपकरण।
साधना—सक्रि० सिद्ध करना। अभ्यास करना। स्त्री० सिद्धि। [उपाय।
साधनिका—स्त्री० साधना,
साधयिता१०—पु० साधक।
साधर्म्य—पु० गुण की समानता।
साधस—पु० डर।
साधारण—वि० मामूली।
साधारणतया—क्रि० वि० मामूली तरीक़े से, प्रायः।
साधित—वि० साधा गया। दण्डित।
साधु३—पुं० कुलीन। सज्जन, संत। वि० अच्छा।
साधुवाद—पु० वाह-वाही।
साधुसाधु—अव्य० धन्यधन्य।
साध्य—वि० साधनीय। आसान।
साध्वी—वि० स्त्री० शुद्ध-आचरण वाली, पतिव्रता।
सानंद—वि० आनंदपूर्वक।
सान—पु० सिल्ली। प्रतिष्ठा।
सानना—सक्रि० उत्तरदायी बनाना। गूँधना।
सानी—वि० (अ०) दूसरा। बराबरी का। स्त्री० पशुओं का चारा विशेष।
सानु—पु० पर्वत की चोटी।
सानुकूल—वि० दयालु, प्रसन्न
सानुपातिक—वि० अनुपात-सहित। [मुक्ति।
सान्निध्य—पु० समीपता।
सान्निपातिक—वि० सन्निपात-सम्बंधी।
सापत्न्य—पु० सौत का लड़का।
सापना—सक्रि० शाप देना।
सापेक्ष, सापेक्ष्य—वि० आश्रित
साफ़—वि० (अ०) स्वच्छ। शुद्ध।
साफल्य—पु० सफलता।

साफ़ा—पु० (अ०) मुड़ासा, पगड़ी। [छनना।
साफ़ी-स्त्री० (अ०) रूमाल।
साबर—पु० एक मंत्र। एक प्रकार का हिरन।
साबल—पु० भाला।
साबिक़—वि० (अ०) पूर्व का
साबिक़ा—पु० (अ०) मुलाक़ात। संबंध।
साबित—वि० (अ०) प्रमाणित। पूरा, कुल। दृढ़।
साबिर—वि० (अ०) सब्र करने वाला, संतोषी।
साबुन—पु० (अ०) शरीर, कपड़े आदि साफ़ करने का एक पदार्थ।
साबूत—वि० समूचा
सामंजस्य—पु० औचित्य।
सामंत—पु० वीर, योद्धा।
सामंतशाही-स्त्री०निरंकुशता।
साम—पु० सामवेद। मधुर-भाषण। वि० श्याम।
सामग्री-स्त्री०सामान।साधन।
सामत—स्त्री० विपत्ति।
सामध—पु० समधियों का आपस मे मिलना।
सामना—पु० मुक़ाबला।
सामने—क्रि० वि० सन्मुख।
सामयिक—वि० समयानुकूल
सामरिक—वि०समर-संबन्धी। लड़ाकू
सामर्थ्य-पु० शक्ति। योग्यता
सामवायिक—वि० समूह-सम्बन्धी [वाला।
सामा—पु० (अ०) सुनने-
सामाजिक-वि० समाज से संबंध रखने वाला।
सामान-पु०(फ़ा०)असबाब।
सामान्य३—वि० साधारण।
सामान्यतः, सामान्यतया—क्रि०वि०साधारणरीति से।
सामान्या—स्त्री० वेश्या।
सामिष-वि०मांस मिलाहुआ।
सामीप्य—पु० समीपता।
सामुद्रिक—पु० हस्तरेखा-विज्ञान। वि०समुद्र-संबंधी
सामुहै—क्रि० वि० सामने।
सामृद्धय-पु०बढ़ती, तरक्क़ी।
साम्नाय—पु० सदुपदेश।
साम्मुख्य—पु० सामना।
साम्य—पु० समानता।
साम्यवाद—पु० एक सामाजिक सिद्धान्त जिसका उद्देश्य सब मनुष्यों में समानता स्थापित करनाहै।
साम्राज्य—पु० सार्वभौम-राज्य। आधिपत्य।
साम्राज्यवाद—पु० साम्राज्य को बढ़ाने का सिद्धान्त।
सायंकाल-पु० संध्या-वेला।
सायक—पु०बाण। खड्ग।
सायत—स्त्री० शुभमुहूर्त।
सायबान-पु०(फ़ा०)ओसारा।
सायर—पु० सागर।
सायल-पु० (अ०)प्रार्थी, प्रश्नकर्त्ता। [लहँगा।
साया-पु० (फ़ा०) छाया।
सायादार—वि० (अ०) छाया वाला। [साथ।
सायास—वि० परिश्रम के-
सायुज्य३—पु० एक हो जाना। मुक्ति विशेष।
सारंग-पु० मृग। कोकिल। बाज़। सूर्य। हंस। मोर। चातक। सिंह। हाथी। घोड़ा। छाता। शंख। कमल। सोना। गहना। तालाब। भ्रमर। कपूर। श्रीकृष्ण। चन्द्रमा। एक राग। समुद्र। पानी। बाण। दीपक। मेघ। केश। खंजन। सर्प। धनुष। वस्त्र। चंदन। मेंढक। कामदेव। काजल। शोभा। स्त्री। पुष्प। दिन। रात्रि। मधुमक्खी। रंग विशेष।
सारंगपानि—पु० विष्णु।
सारंगिक—पु० बहेलिया।
सारंगी—स्त्री० एक बाजा।
सार—पु० तत्त्व। निष्कर्ष। रस। बल। रक्षा। जुआ। सुधि। तलवार। धैर्य। लोहा। लाभ। वि० उत्तम।
सारगंध—पु० चंदन।
सारगर्भित—वि० तत्त्वपूर्ण।
सारजंट—पु०(अं०) सिपाहियों का जमादार।
सारण-पु० मक्खन। गंध।
सारणी, सारिणी—स्त्री० तालिका,सूची।
सारथि—पु० रथवान्
सारथ्य—पु० रथ हाँकना। सवारी। [शरद-ऋतु।
सारद-स्त्री० सरस्वती। पु०
सारना-सक्रि० पूर्ण करना। लगाना। निकालना।
सारभाटा—पु० ज्वार भाटा का उलटा।

सारभुक्—पु० अग्नि।
सारमेय—पु० कुत्ता।
सारल्य—पु० सरलता।
सारव—वि० सरयू नदी में होने वाला।
सारस—पु० एक पक्षी। हस। कमल। चंद्रमा। एक गहना।
सारसन—पु० कटिभूषण।
सारस्य—पु० सरसता।
सारस्वत—वि० सरस्वती-संबन्धी। पु० ब्राह्मणों का एक भेद [तात्पर्य।
सारांश—पु० .खुलासा,
सारा–वि० समस्त। [गोटी।
सारि—पु० पाँसा। स्त्री०
सारिउँ—स्त्री० मैना।
सारिका–स्त्री०मैना। [मैना।
सारी—स्त्री०साडी। पाँसा।
सारूप्य—पु० एकरूपता।
सार्रो—स्त्री० मैना पक्षी।
सार्थ, सार्थक ३–वि० सफल।
सार्थवाह—पु० व्यापारी।
सार्द्ध—वि० .डेवढ़ा। अव्य० साथ।
सार्द्र—वि० गोला।
सार्वकालिक–वि० सब काल में होने वाला।
सार्वजनिक, सार्वजनीन—वि० सब से सम्बन्ध रखने वाला। [वाला।
सार्वत्रिक–वि० सर्वत्र रहने-
सार्वदेशिक—वि० समस्त-देश-सम्बन्धी। सब देशों का
सार्वभौम—पु० चक्रवर्ती राजा।
सार्षप—पु०सरसों का तेल। सरसों।
साल १२—स्त्री०छेद। दुःख। पु० वर्ष [गाँठ।
सालगिरह–स्त्री० (फ़ा०) वर्ष-
सालतमाम–पु० (फ़ा०) वर्ष की समाप्ति
सालन–पु०मांस, मसालेदार तरकारी।
सालना–अक्रि० दुःख देना। चुभना। सक्रि० चुभाना।
सालसा—पु० .खून साफ़ करने की एक दवा।
साला७—पु०पत्नी का भाई वि० (फ़ा०) साल का।
सालाना–वि० (फ़ा०) वार्षिक
सालार—वि०प्रधान नेता। पथ-प्रदर्शक।
सालिम—वि० (अ०) पूर्ण।
सालिस—वि० (अ०) ती-सरा। पु० पंच।
सालिसनामा–पु० (अ०फ़ा०) पंचनामा।
साली—स्त्री० स्त्री की बहिन
साले-क़बीसा—पु० (फ़ा०) लौंद का साल।
सालोक्य—पु० एक मोक्ष जिसमें भक्त अपने इष्ट देव के लोक में रहता है।
साव—पु० साहु।
सावकाश—पु० फ़ुर्सत।
सावज—पु० जंगली पशु।
सावद्य—वि० दोषी। पु० योग की एक शक्ति।
सावध—वि० सावधान।
सावधान२-३—वि० सजग।
सावन—पु० श्रावणमास।
सावर्त्त—वि० गोलाकार।
सावित्र—पु० सूर्य्य। यज्ञोपवीत। शिव।
सावित्री—स्त्री० एक प्रसिद्ध सती स्त्री। सधवा स्त्री।
साष्टांग—वि० आठों अंग सहित प्रणाम।
सास—स्त्री०ससुर की स्त्री।
सासति—स्त्री० दंड।
सास्ना—स्त्री० गाय के गले में लटकने वाला मांस।
साह—पु० सेठ। शाह।
साहचर्य—पु० संगति।
साहनी—स्त्री० सेना।
साहब२—पु० (अ०) महाशय। स्वामी। वि० रखने-वाला [पुत्र।
साहबज़ादा–पु० (अ० फ़ा०)
साहबदिल२—वि० उदार।
साहबसलामत—स्त्री० (अ०) परस्पर-अभिवादन।
साहस्न—पु० हिम्मत।
साहसिक—पु० चोर। निर्भीक। लंपट।
साहस्र—पु० सहस्र सिपाहियों का मालिक।
साहाय्य—पु० मदद।
साहित्य—पु०मिलना। किसी भाषा के गद्य तथा पद्य के ग्रंथों का समूह।
साहित्यिक—वि० साहित्य-संबंधी। पु० साहित्य-सेवी
साहिर४–पु० (अ०) जादूगर
साहिल–पु० (अ०) किनारा
साही—स्त्री० जंतु विशेष।

साहु—पु० साहूकार ।
साहुल—पु० दीवार की सिधाई नापने का पत्थर का राजगीरों का एक यंत्र ।
साहूकारी—स्त्री० लेन-देन ।
सिंकना—अक्रि०गरम होना ।
सिंगा७—पु० तुरही ।
सिंगारदान—पु० शृंगार की वस्तुएँ रखने का बक्स ।
सिंगारना—सक्रि० शृंगार करना । सँवारना ।
सिंगी, सींगी—स्त्री० एक मछली । सींग की नली । सींग का बाजा ।
सिंघाड़ा—पु० एक फल ।
सिंघेला—पु० शेर का बच्चा ।
सिंचनद—पु० सींचना ।
सिंचाई—स्त्री० सींचने की क्रिया या मज़दूरी ।
सिंचित—वि० सींचा हुआ ।
सिंजाफ़—पु० (फ़ा०) कपड़ों की गोट, किनारा ।
सिंदूर—पु० एक लाल रंग ।
सिंदूरदान—पु० विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर डालना । [रंग का ।
सिंदूरिया—वि० सिंदूर के
सिंदोरा, सिंधोरा—पु०सिंदूर रखने की डिबिया ।
सिंधु—पु० समुद्र । नदी । गजमद ।
सिंधुजा—स्त्री० लक्ष्मी ।
सिंधुर४—पु० हाथी ।
सिंधुरमणि—पु० गजमोती ।
सिंधुरवदन—पु० गणेश ।
सिंधुराज—पु० जयद्रथ ।
सिंधुसंगम—पु० समुद्र में नदी मिलने का स्थान ।
सिंधुसुतासुत—पु० मोती ।
सिंह७—पु० शेर । एक राशि
सिंहद्वार—पु० सदर दरवाज़ा ।
सिंहनाद—पु० घोर-गर्जना ।
सिंहल—पु० लंका ।
सिंहलक—पु० पीतल ।
सिंहावलोकन—पु० सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना । विषय का संक्षिप्त-वर्णन ।
सिंहासन—पु० राजगद्दी ।
सिंहोदरी—स्त्री० सिंह के समान पतली कमर वाली ।
सिअरा—वि० ठंढा । पु० छाया ।
सिकंजबीन—स्त्री० (फ़ा०) नीबू के रस में पका हुआ शरबत ।
सिकंदरा—पु० रेल का सिगनल । [करधनी ।
सिकड़ी—स्त्री० ज़ंजीर ।
सिकत, सिकता—स्त्री० बालू ।
सिकतिल—वि० रेतीला ।
सिकर—स्त्री० ज़ंजीर । सियार
सिकरम—स्त्री० अँगगाड़ी ।
सिकली—स्त्री० (अ०) हथियारों पर सान चढ़ाना ।
सिकहर—पु० छींका ।
सिकुड़ना—अक्रि० शिकन-पड़ना ।
सिकोही५—वि० अभिमानी ।
सिक्का—पु० (अ०)मुहर । ठप्पा । रुपया, पैसा आदि प्रभाव ।
सिक्ख—पु० नानक-पंथी ।
सिक्त—वि० सिंचित ।
सिक्थ—पु० भात का पिंड ।
सिख—स्त्री० सीख ।
सिखाना—सक्रि०शिक्षा देना ।
सिखावन—पु० शिक्षा ।
सिगरा, सिगरो—वि० सब, सारा ।
सिजदा—पु० (अ०) प्रणाम । सिर झुकाना ।
सिजदा-गाह—पु० (अ०) सिजदा करने का स्थान ।
सिझना९—अक्रि० आँच पर पकना ।
सिटकिनी—स्त्री० चटखनी ।
सिटपिटाना—अक्रि० भय खाना । स्तब्ध होना ।
सिट्टी—स्त्री० वाक्पटुता ।
सिठाई—स्त्री० फीकापन ।
सिड़—स्त्री० झक, धुन ।
सिड़ी—वि० पागल, सनकी ।
सित३—वि० श्वेत । बँधा-हुआ । समाप्त ।
सितच्छत्रा—स्त्री० सौंफ़ ।
सितपक्ष—पु० हंस । सुदी ।
सितभानु—पु० चन्द्रमा ।
सितम—पु० (फ़ा०) ज़ुल्म ।
सितमगर—वि० (फ़ा०) ज़ालिम ।
सितम-ज़दा—वि० (फ़ा०) जिस पर सितम हुआ हो ।
सितम-शिआर—वि० (फ़ा०) (अ०)अत्याचारी ।
सितांभोज—पु०उज्ज्वल-कमल
सितांशु—पु०चन्द्रमा । कपूर
सिता—स्त्री० चीनी, शक्कर

चाँदी। चमेली।
सिताखंड—पु० मिश्री।
सिताब—क्रि०वि० जल्दी।
सिताभा—स्त्री० श्वेतता।
सिताभ्र—पु० कपूर।
सितार—पु० एक बाजा।
सितारा—पु० (फ़ा०) तारा। भाग्य। [ज्योतिषी।
सितारा-शनास—पु० (फ़ा०)
सितारेहिन्द—पु० (फ़ा०) सरकार की ओर से दी जाने वाली एक उपाधि।
सितिकंठ—पु० शिवजी।
सितूल—पु० मीनार।
सितोपल—पु०बिल्लौर पत्थर।
सिदक़ा—पु० ख़ैरात।
सिदरी—स्त्री० तिदरी।
सिदौसी—क्रि०वि० शीघ्र।
सिद्क़—पु० (अ०) सत्यता।
सिद्दीक़—वि० (अ०) बहुत सच्चा।
सिद्ध३—पु० योगी। वि० प्रमाणित। समाप्त। तैयार। एक देवयोनि।
सिद्धगुटिका—स्त्री० अदृश्य बना देने वाली बटी।
सिद्धपीठ—पु० योग, तप आदि की शीघ्र सिद्धि करने वाला स्थान।
सिद्धहस्त—वि० निपुण।
सिद्धांजन—पु०अंजन विशेष जिसे आँख में लगाने से ज़मीन के अन्दर की चीज़ें दिखलायी पड़ती हैं।
सिद्धांत—पु० निश्चित, मत, उसूल।
सिद्धार्थ—पु० गौतम-बुद्ध।
सिद्धासन—पु० हठयोग का एक आसन।
सिद्धि—स्त्री० सफलता।
सिद्धेश्वर७—पु० महादेव। बड़ा सिद्ध।
सिधाई—स्त्री० सीधापन।
सिन—पु० (अ०) उम्र।
सिन-रसीदा—वि० (अ० फ़ा०) वृद्ध।
सिनेमा—पु० (अ०) बिजली द्वारा असलीरूप में दिखाये जाने वाले आधुनिक युग के चित्रपट।
सिन्नी—स्त्री० मिठाई। [आड़।
सिपर—स्त्री० (फ़ा०) ढाल।
सिपह—स्त्री० (फ़ा०) सेना।
सिपहसालार—पु० (फ़ा०) सेनापति।
सिपारा—पु० (अ०) क़ुरान का कोई भाग या अध्याय।
सिपास—स्त्री०(फ़ा०) कृतज्ञता
सिपासनामा—पु० (फ़ा०) अभिनन्दन-पत्र।
सिपाह—स्त्री०(फ़ा०) फ़ौज।
सिपाही—पु० (फ़ा०) सैनिक। चपरासी।
सिप्पा—पु० तदबीर। एक प्रकार की छोटी तोप।
सिप्र—पु० पसीना। चन्द्र।
सिप्रा—स्त्री० भैंस। कुटनी।
सिफ़त—स्त्री०(अ०)विशेषता। लक्षण। स्वभाव।
सिफ़र—पु० (अ०) शून्य।
सिफ़ला—वि०(अ०) नीच।
सिफ़ली—वि०(अ०) घटिया।
सिफ़ात—स्त्री० (फ़ा०) बहु० 'सिफ़त' का, गुण।
सिफ़ारिश—स्त्री० अनुरोध। प्रशंसा।
सिमटना९—अक्रि०बटुरना।
सिय,सिया—स्त्री० सीताजी।
सियरा७—वि० ठंढा।
सियापा—पु० (फ़ा०) मरे हुए व्यक्ति के लिये स्त्रियों का मिलकर रोना-पीटना।
सियार—पु० गीदड़।
सियासत—स्त्री० (फ़ा०) हुकूमत करना, शासन।
सियासी—वि०(फ़ा०) राजनैतिक।
सियाह—वि०(फ़ा०) काला।
सियाहत—स्त्री०(अ०) यात्रा।
सियाहबख़्त—वि० (फ़ा०) अभागा।
सियाह-नवीस—पु० (फ़ा०) मालगुज़ारी आदि का विवरण लिखने वाला कर्मचारी।
सियाहा—पु० (फ़ा०) आय-व्यय की बही। लगान तथा मालगुज़ारी दर्ज करने का काग़ज़।
सिरका—पु० (फ़ा०) आसव-विशेष। [टट्टी।
सिरकी—स्त्री० सरकंडे की
सिरचंद—पु०हाथी के मस्तक का एक गहना।
सिरचढ़ा७—वि० घमंडी।
सिरजनहार—पु०रचयिता। ईश्वर [वि० शिरोमणि।
सिरताज—पु० मुकुट।

सिरनामा—पु० शीर्षक ।
सिरनेत—पु० पगड़ी। कलगी
सिरपेच—पु० पगड़ी
सिरपोश—पु० सिर का एक टोप।
सिरबंद—पु० साफ़ा ।
सिरमग़ज़न—पु० माथापच्ची ।
सिरमाथे—वि० शिरोधार्य ।
सिरमौर—पु० मुकुट । श्रेष्ठ-व्यक्ति ।
सिरस—पु० एक वृक्ष ।
सिरा—पु० छोर, अंत ।
सिराज—पु० (अ०) सूर्य । दीपक ।
सिराना-सक्रि० ठंढा करना । सक्रि० ठंढा होना । बीतना ।
सिरावन—पु० हेंगा
सिरिश्क—पु०(फ़ा०)आँसू ।
सिरोना-पु० इँडुरी, बिड़ई ।
सिरोरुह—पु० बाल
सिरोही—स्त्री० तलवार । एक पक्षी ।
सिर्फ़—क्रि० वि० केवल ।
सिल—स्त्री० पत्थर, शिला । (अ०) क्षयरोग ।
सिलक—स्त्री० (अ०) लड़ी ।
सिलकी—पु० बेल, श्रीफल ।
सिलगना९—अक्रि० जलना ।
सिलपट—वि० घिसा हुआ ।
सिलवट-स्त्री० शिकन । सिल
सिलसिला-पु० (अ०) क्रम । श्रेणी । शृंखला, लड़ी ।
सिलसिलेवार—वि० क्रमानुसार ।
सिलह—पु० (अ०) शस्त्र ।
सिलहख़ाना—पु० (अ० फ़ा०) शस्त्रागार
सिलहिला७-वि० चिकना ।
सिला—स्त्री०शिला । अनाज का दाना जो फसल कट जाने पर खेत में गिर जाता है । पारिश्रमिक । इनाम ।
सिलाई-स्त्री०सीने की क्रिया
सिलावट—पु० संगतराश ।
सिलाह-पु० (फ़ा०) कवच । हथियार ।
सिलाहसाज-पु० (फ़ा०) शस्त्र बनाने वाला ।
सिलाही—पु० सैनिक ।
सिल्क—पु० (अं०) मोती आदि की लड़ी, हार । पंक्ति, क्रम । रेशम या रेशमी वस्त्र ।
सिवा-क्रि० वि० (अ० फ़ा०) अतिरिक्त । वि० अधिक । स्त्री० शृगाली । पार्वती ।
सिवान—पु०हद । [नागरिक
सिविल-वि० (अ०) सभ्य ।
सिविलकोर्ट—पु० (अं०) अदालत-दीवानी ।
सिविलियन—पु० (अं०) सिविल सर्विस की परीक्षा पास शुदा व्यक्ति ।
सिसु३—पु० शिशु, बच्चा ।
सिसकना—अक्रि० भीतर ही भीतर रोना ।
सिसकारी—स्त्री० सीटी की तरह आवाज़ करना ।
सिसकी—स्त्री० सिसकने की ध्वनि ।
सिसोदिया—पु० राजपूतों का एक भेद, सूर्यवंशी ।
सिस्टम—पु० (अं०) क़ायदा
सिहरना—अक्रि० काँपना ।
सिहरा—पु० मौर ।
सिहरी—स्त्री० कँपकँपी ।
सिहाना—अक्रि० ईर्ष्या-करना । ललचना
सिहारना—सक्रि० ढूँढ़ना ।
सिह्टि—स्त्री० सृष्टि ।
सींक—स्त्री० तीली, सलाई ।
सींका—पु० छींका ।
सींग—पु० विषाण, शृंग ।
सींचना—सक्रि० पानी से तर करना ।
सी—वि० (फ़ा०) तीस ।
सीउ—पु० शीत
सीकर—पु० जलकण ।
सीकस—पु० बंजर-भूमि ।
सीका—पु० छींका । सिर का एक गहना ।
सीख—स्त्री० शिक्षा ।
सीख़—स्त्री० (फ़ा०) शलाका, तीली ।
सीख़चा-पु० (फ़ा०) लोहे की छड़
सीखना-सक्रि०शिक्षा पाना ।
सीग़ा—पु० (अ०) पेशा । महकमा । व्याकरण में पुरुष, लिंग, वचन ।
सीझना—अक्रि० पकना ।
सीठा-वि० फीका । [छूँछ ।
सीठी—स्त्री० निःसार वस्तु,
सीढ़ी-स्त्री०ज़ीना । [चटाई ।
सीतलपाटी—स्त्री० एक-
सीता—स्त्री० जनक की

कन्या। हल का फाल।
सीताफल—पु० शरीफ़ा।
सीत्कार—पु० सिसकारी।
सीत्य—पु० जोता हुआ खेत।
सीथ—पु० अन्न का दाना। भोजन का अवशिष्ट-भाग।
सीदना—अक्रि०दुःख पाना।
सीध—स्त्री० सामने की लंबाई
सीधा—वि० सरल। दायाँ। आसान। पु० बिना पका आटा, दाल आदि।
सीधे—क्रि० वि० सम्मुख।
सीन—पु० (अं०) दृश्य।
सीनरी—स्त्री० (अं०) प्राकृतिक-दृश्य।
सीना—सक्रि० सिलाई करना। पु० (फ़ा०) छाती।
सीनाज़ोर२—वि० (फ़ा०) ज़बरदस्त। [अँगिया।
सीनाबंद—पु० (फ़ा०)
सीना-सिपर—क्रि० वि० मुक़ाबले में।
सीनियर—वि०(अं०)उच्च।
सीप—पु० शुक्ति, घोंघा।
सीपसुत, सीपज—पु० मोती
सीमंत—पु०बालों की माँग।
सीमंतिनी—स्त्री० स्त्री।
सीम, सीमा—स्त्री० हद।
सीम८—स्त्री० (फ़ा०) चाँदी। धन
सीमाब—पु० (फ़ा०) पारा।
सीमांत—पु० सरहद।
सीमाबद्ध—पु० परिमित।
सीमावर्त्ती५—वि० सीमा में रहने वाला।
सीर—स्त्री० वह ज़मीन जिसे ज़मींदार स्वयं जोतता है। वि० ठंढा। पु० हल।
सीरक—पु० सूर्य। हल। ठंढ। [स्वभाव।
सीरत—स्त्री० (अ०) गुण।
सीरध्वज—पु० राजा जनक।
सीरपाणि—पु० बलराम।
सील—स्त्री० सीड़, तरी।
सीवन—स्त्री० सिलाई।
सीसक—पु० 'सीसा' धातु।
सीसताज—पु० शिकारी-जानवरों की टोपी।
सीह—पु० सिंह।
सुँघनी—स्त्री०नास। [हाथी।
सुँडमुसुंड, सुंडाल—पु०
सुंदर७-३—वि० ख़ूबसूरत।
सु*—एक उपसर्ग।
सुअन—पु० पुत्र, बेटा।
सुआ—पु० तोता।
सुआर—पु० रसोइया।
सुआसिनी—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री। [पिन।
सुई—स्त्री० कपड़े सीने की—
सुकंठ—वि० सुरीला। पु० सुग्रीव
सुकनासा—वि० जिसकी नाक तोते की नाक की तरह सुंदर हो।
सुकर३—वि० सहज।
सुकर्मी—वि० धार्मिक।
सुकल—पु० दानी और भोगी पुरुष।
सुकवाना—अक्रि० चकित-होना।
सुकाल—पु० अच्छा समय।
सुकाशन६—वि० विशेष-चमकीला। [कोमलांग।
सुकुमार७—वि० नाज़ुक,
सुकृत८—पु० पुण्य।
सुकेशी—स्त्री० सुंदर केशों वाली स्त्री। [रोग।
सुखंडी—स्त्री० सूखने का-
सुखद—वि० सुखद।
सुख८—पु० आराम, शांति।
सुखकंद७—वि० सुखद।
सुखकंदर—वि० सुख-स्थान।
सुखद४—वि० सुखदायी।
सुखदायक, सुखदायी—वि० सुख देने वाला।
सुखपाल—पु० पालकी।
सुखमन—स्त्री०सुषुम्ना नाड़ी।
सुखमानी५—वि० जो प्रत्येक दशा में सुख मानता हो।
सुखवार७—वि० प्रसन्न।
सुखसाध्य—वि० सहज।
सुखसार—पु० मोक्ष।
सुखांत—पु० वह नाटक या जीवन जिसका अंत सुखमय हो। [बनाना।
सुखाना—अक्रि० शुष्क-
सुखारा७—वि० सुखी।
सुखावह—वि० सुख देने वाला।
सुखिर—पु० साँप का बिल।
सुखेन—क्रि० वि० सुखपूर्वक।
सुखैना७—वि० सुखप्रद।

नोट*सु' एक उपसर्ग हैं,जो शब्दों के पूर्व 'श्रेष्ठ,बढ़िया अच्छी तरह,अर्थों में प्रयुक्त होता है।

सुखोपवेशनी—स्त्री०आराम कुर्सी
सुख्याति—स्त्री० नामवरी।
सुगंध, सुगधि—स्त्री० खुशबू।
सुगंधित—वि० खुशबूदार।
सुगत-वि० सुगम। पु० बुद्ध
सुगना, सुग्गा—पु० तोता।
सुगम३—वि० सरल, सहज।
सुगम्म—वि० सुगमता से जाने योग्य।
सुग़रा—स्त्री० (अ०) छोटी-कन्या। छोटी वस्तु।
सुगल—पु० सुकंठ, सुग्रीव।
सुगाध—वि० सुखपूर्वक स्नान या पार करने योग्य नदी।
सुगैया—स्त्री० अँगिया।
सुग्गा—पु० तोता।
सुग्रीव—वि० अच्छी गर्दन-वाला। छोटा भाई। शिव। इन्द्र। शंख।
सुघट-वि० सुंदर। [सुडौल।
सुघड़३ ७—वि० सुंदर।
सुचक्षु—पु० पंडित। वि० सुंदर नेत्रों वाला।
सुचना-सक्रि०इकट्ठा करना।
सुचरित्रा—वि० स्त्री० सती।
सुचाना—सक्रि० किसी को सोचने में प्रवृत्त करना।
सुचारु—वि० बहुत सुंदर।
सुचाली५—वि० सदाचारी।
सुचित्त३—वि० निश्चिंत, शांत।
सुचिमंत७—वि० पवित्र।
सुचिर—वि० पुराना।
सुचेलक-पु० महीन कपड़ा।
सुजन३—पु० सज्जन।
सुजनी—स्त्री० चादर विशेष।
सुजन्मा-वि० श्रेष्ठ-कुलोद्भव।
सुजल—पु० कमल।
सुजागर—वि० सुशोभित।
सुजात—वि० कुलीन।
सुजान,सुजानी-वि० चतुर।
सुजिह्व—वि० मिष्टभाषी।
सुज्ञ—वि० पंडित।
सुझाना—सक्रि० दिखाना।
सुठ,सुठि-वि० सुंदर। क्रि० वि० बहुत।
सुठोना—वि०सुंदर। [का।
सुडौल—वि० सुंदर आकृति-
सुढर—वि० प्रसन्न। सुंदर।
सुढार—वि० सुडौल,सुंदर।
सुत४—पु० पुत्र, बेटा।
सुतरनाल—स्त्री० तोप विशेष
सुतरां—अव्य० इसलिए।
सुतरी, सुतली—स्त्री० डोरी, रस्सी।
सुतल—पु० एक लोक।
सुतश्रेणी—स्त्री० मूली।
सुतहर—पु० कारीगर।
सुतहा—पु० सीपी। सूत का व्यापारी।
सुतही—स्त्री० सीपी।
सुता—स्त्री० पुत्री।
सुतात्मजा—स्त्री० पौत्री।
सुतार—पु० बढ़ई। शिल्पी। वि० सुंदर। [सूआ।
सुतारी—स्त्री० मोचियों का-
सुतिनी—स्त्री० पुत्रवती स्त्री।
सुतून—पु० (फ़ा०) खंभा।
सुत्ता—वि० सोया हुआ।
सुत्रामा—पु० इन्द्र।
सुथना७—पु० पायजामा।
सुथरा१—वि०स्वच्छ, साफ़।
सुदंत७—वि०सुंदर दाँत का
सुदर्शन—पु०विष्णु या कृष्ण का चक्र। ४ वि० सुंदर
सुदामा-पु० श्रीकृष्ण के एक मित्र। वि० अच्छा दानी।
सुदाय—पु० दहेज।
सुदी—स्त्री० शुक्ल पक्ष।
सुदीप्ति—स्त्री० तेज, प्रकाश।
सुदूर—वि० बहुत दूर। पु० (फ़ा०) जारी होना।
सुदृढ़—वि० खूब मज़बूत।
सुदेश-पु० सुन्दर देश। वि० सुन्दर।
सुदेह—वि० सुन्दर।
सुद्दा—स्त्री० पेट के अन्दर का सूखा मल।
सुध—स्त्री० दे० 'सुधि,।
सुधन्वा-पु० श्रेष्ठ-तीरंदाज़।
सुधबुध—स्त्री० होश-हवास।
सुधरना—अक्रि० बनना। सँभलना। [पु० धर्मी
सुधर्मा—स्त्री० देवसभा।
सुधर्मी५—वि० धर्मनिष्ठ।
सुधांग, सुधांशु—पु० चन्द्रमा। [रस। क़लई।
सुधा—स्त्री० अमृत। जल
सुधाकर, सुधाधार, सुधानिधि—पु० चन्द्रमा।
सुधाधी-वि० सुधा के समान
सुधार—पु० संशोधन, मरम्मत। [करने वाला।
सुधारक१४—पु० सुधार-
सुधारना—सक्रि० संशोधन

करना ।
सुधाश्रवा—पु० अमृत बरसाने वाला । [की घंटी ।
सुधास्रवा—स्त्री० गले के भीतर-
सुधि—स्त्री० होश, चेत ।
सुधी—पु० विद्वान्, पंडित ।
सुनगुन—स्त्री० टोह । कानाफूँसी ।
सुनति—स्त्री० ख़तना ।
सुनना—सक्रि० श्रवण करना।
सुनबहरी—स्त्री० फ़ीलपा-रोग । [सुंदर नेत्र वाला ।
सुनयन—पु० हरिन । वि०
सुनसान—वि० निर्जन । पु० सन्नाटा ।
सुनहरा७—वि० सोने का बना । सोने के रंग का ।
सुनहा—पु० कुत्ता ।
सुनाभ—पु० सुदर्शन-चक्र ।
सुनार—पु० सोने आदि का आभूषण बनाने वाला ।
सुनासीर—पु० इन्द्र ।
सुनिद्र—वि० सोया हुआ ।
सुनीति—स्त्री० शिष्टाचार ।
सुन्न—वि० निश्चेष्ट । पु० शून्य ।
सुन्नत—स्त्री० (अ०) ख़तना। प्रथा, प्रणाली । [अकेला ।
सुन्नसान—वि० निर्जन,
सुपक्व—वि० ख़ूब पका हुआ।
सुपच—पु० चांडाल ।
सुपत—वि० इज़्ज़तदार ।
सुपथ—पु० उत्तम पथ । वि० समतल । [रक्तिकर ।
सुपरटैक्स—पु० (अ०) अति-
सुपर्ण—पु० गरुड़ ।
सुपर्वन्—पु० देवता ।
सुपात्र—पु० योग्य-व्यक्ति ।
सुपारी—स्त्री० पूँगीफल ।
सुपास७—पु० सुभीता ।
सुपुंसी—स्त्री० भलेमानुस की स्त्री ।
सुपुर्द—पु० सौंपना ।
सुप्त—वि० सोया हुआ ।
सुप्ति—स्त्री० निद्रा ।
सुफ़रा—पु० (अ०) खाद्य-पदार्थ रखने का पात्र । दस्तरख़्वान । (फ़ा०) गुदा ।
सुफलक—पु० अक्रूर के पिता
सुबस—अव्य० अपनी इच्छा से । वि० अच्छी तरह बसा हुआ ।
सुबह, सुबू—स्त्री० सबेरा ।
सुबह-सादिक़—स्त्री० (अ०) सूर्योदय से पूर्व का समय, प्रभात । [रनी, तसबीह ।
सुबहा—स्त्री० (अ०) सुमि-
सुबहान—वि० (अ०) पवित्र। स्वतंत्र ।
सुबास—स्त्री० सुगंधि ।
सुबाहु—स्त्री० सेना । वि० सुंदर बाहुओं वाला ।
सुबुक—वि० (फ़ा०) हलका।
सुबुक-दस्तर—वि० (फ़ा०) फुरतीला ।
सुबुक-पोशर—वि० (फ़ा०) उत्तरदायित्व के काम से मुक्त ।
सुबोध—वि० अच्छी समझ वाला । पु० अच्छी समझ ।
सुब्रह्मण्य—पु० शिव। विष्णु।
सुभग—वि० सुंदर ।
सुभगा—वि० स्त्री० सुंदरी । सौभाग्यवती ।
सुभट—पु० भारी योद्धा ।
सुभर—वि० शुभ्र । ख़ूब-भरा हुआ । [हड़ ।
सुभा—स्त्री० शोभा । सुधा ।
सुभाषित—वि० अच्छी तरह कहा हुआ ।
सुभाषी५—वि० मिष्ट-भाषी ।
सुभिक्ष—पु० सुकाल ।
सुभीता—पु० सहूलियत ।
सुभौटी—स्त्री० शोभा ।
सुमंत्र—पु० राजा दशरथ का मंत्री ।
सुम—पु० खुर । पुष्प ।
सुमदुम—वि० मोटा ।
सुमन—पु० देवता । पुष्प, फूल ।
सुमनचाप—पु० कामदेव ।
सुमनराज—पु० इन्द्र ।
सुमना—स्त्री० चमेली-पौधा ।
सुमरना—सक्रि० स्मरण-करना ।
सुमरनी—स्त्री० जपनी ।
सुमाली—पु० रावण के नाना।
सुमित्रा—स्त्री० लक्ष्मण की माता । [स्वादिष्ट ।
सुमिष्ट—वि० मीठा और-
सुमुख७—वि० सुन्दर । प्रसन्न।
सुमेधा—वि० प्रतिभाशाली।
सुमेरु—पु० एक सोने का पर्वत । उत्तरी ध्रुव । माला के सिरे का दाना ।
सुयोग—पु० सुंदर मौक़ा।
सुयोग्य—वि० क़ाबिल ।
सुयोधन—पु० दुर्योधन ।

सुरंग—स्त्री० ज़मीन के भीतर का रास्ता। वि० अच्छे रंग का। सुंदर।
सुरंज़िता—वि० स्त्री० सुन्दर-रंग वाली।
सुर७—पु० देवता। स्वर।
सुरकना—सक्रि० नाक या नली द्वारा खींच कर पानी पीना।
सुरकेतु—पु०इन्द्र। [रक्षित।
सुरक्षित—वि० भली भाँति-
सुरख़ाब—पु० (फ़ा०) चकवा।
सुरगुरु—पु० बृहस्पति।
सुरचाप—पु० इन्द्र-धनुष।
सुरजन—पु० देव-समूह। वि० भला।
सुरज्येष्ठ—पु० ब्रह्मा।
सुरटीप—स्त्री० स्वरालाप।
सुरत, सुरति—पु० संभोग। स्त्री० स्मरण।
सुरतरु—पु० कल्पवृक्ष।
सुरता—पु०श्रोता। ध्यानी।
सुरतिवंत७—वि० कामातुर।
सुरती—स्त्री० खाने का तंबाकू
सुरत्राता—पु० विष्णु। इन्द्र।
सुरद्विष—पु० राहु। राक्षस।
सुरदीर्घिका—स्त्री० देवगंगा जो स्वर्ग में हैं।
सुरधुनी—स्त्री० गंगा।
सुरधेनु—स्त्री० कामधेनु।
सुरना—पु० (फ़ा०) नफ़ीरी।
सुरनाई—पु० (फ़ा०) नफ़ीरी बजाने वाला।
सुरपति—पु० इन्द्र। विष्णु।
सुरपथ—पु० आकाश।
सुरपुर—पु० स्वर्ग।
सुरबहार—पु० एक प्रकार का बाजा।
सुरबाला—स्त्री० देवांगना।
सुरभान—पु० सूर्य। इन्द्र।
सुरभि—स्त्री० पृथ्वी। गौ। सुगंधि। सोना। वसंत-ऋतु। वि० सुन्दर।
सुरभित—वि० सुगंधित।
सुरभिता—स्त्री० सुगंधि।
सुरभी—स्त्री० गाय। सुगंध
सुरभोग—पु० अमृत।
सुरमई—वि० (फ़ा०) सुरमे के रंग का।
सुरमणि—पु० चिन्तामणि।
सुरमा—पु० एक खनिज-पदार्थ। आँख का अंजन।
सुरम्य—वि० सुंदर।
सुरराज—पु० इन्द्र।
सुरली—स्त्री० सुन्दर क्रीड़ा।
सुरलोक—पु० स्वर्ग।
सुरवैद्य—पु० अश्विनी-कुमार।
सुरसर—पु० मानसरोवर।
सुरसरि—स्त्री० गंगाजी।
सुरसा—स्त्री० एक नाग-माता। तुलसी। जूही।
सुरसालु—वि० देवताओं को सताने वाला।
सुरसिंधु—पु० गंगा नदी।
सुरसुंदरी—स्त्री० अप्सरा।
सुरसुरभी—स्त्री० कामधेनु।
सुरसुराना—अक्रि० खुजली होना।
सुरही—स्त्री० सुरागाय।
सुरांगना—स्त्री० देवताओं की स्त्री, अप्सरा।
सुरा—स्त्री० शराब।
सुराग़—पु० (फ़ा०) टोह।
सुरागाय—स्त्री० एक गाय।
सुरागार—पु० देव-मंदिर।
सुराजीवी—पु०शराब-विक्रेता।
सुरापी—वि० शराबी।
सुरारि—पु० राक्षस।
सुरालय—पु० सुमेरु-पर्वत।
सुरावती—स्त्री० अदिति।
सुराही—स्त्री० (अ०) जल रखने का पात्र विशेष।
सुरीला—वि० सुंदर स्वर-वाला।
सुरुख२—वि०अनुकूल। सुर्ख़।
सुरुचि३—स्त्री० अच्छी रुचि।
सुरुज—पु०सूर्य। वि० रुग्ण।
सुरूप४-३—वि० सुंदर।
सुरेन्द्र, सुरेश—पु० इन्द्र।
सुरैतिन—स्त्री० उपपत्नी।
सुरैया—पु० (अ०) कृत्तिका-नक्षत्र।
सुरोश—पु० (फ़ा०) शुभ समाचार लाने वाला। देव-दूत।
सुर्ख़२—वि० (फ़ा०) लाल।
सुर्ख़रू—वि० (फ़ा०) प्रतापी, तेजस्वी। [थैली, तोडा
सुर्रा—पु० (अ०) रुपयों की-
सुलक्षण४—वि० अच्छे लक्षणों वाला।
सुलगना९—अक्रि० जलना।
सुलच्छ—वि० सुंदर।
सुलझना९—अक्रि०खुलना, हल होना।
सुलटा—वि० सीधा।
सुलतान२—पु० (अ०) बादशाह।

सुलताना—स्त्री० (अ०) सम्राज्ञी।
सुलफ—वि० कोमल।
सुलफ़ा—पु० (फ़ा०) चरस।
सुलभ३—वि० सुगम।
सुलभ्य—वि० सुलभ,सुगम।
सुलह—स्त्री० (अ०) मेल, संधि। [संधि-पत्र।
सुलहनामा—पु०(अ० फ़ा०)
सुलाखना—सक्रि० सूराख़-करना। [कराना।
सुलाना—सक्रि० शयन-
सुलूक—पु० व्यवहार।
सुलेखक—पु० खुशख़त।
सुलेमान—पु० (अ०) यहूदियों का एक प्राचीन-बादशाह।
सुलेमानी—पु० रंग विशेष।
सुलोचन—पु० चकोर। हरिन। ७ वि०सुन्दर नेत्रों वाला।
सुलोचना—स्त्री०एक अप्सरा वि० सुन्दर नेत्रों वाली।
सुवन—पु० बेटा, पुत्र।
सुवना, सुना—पु० तोता।
सुवनारा—पु० पुत्र।
सुवर्ण—पु० सोना, कनक।
सुवर्णकार—पु० सुनार।
सुवादी—पु० स्वाद लेने वाला।
सुवार—पु० रसोइया।
सुवासित—वि० सुगंधित।
सुवासिनी—स्त्री०सधवा स्त्री
सुविधा—स्त्री० सुभीता।
सुवीर्य—वि० बड़ा वीर, शक्तिशाली। पु० बेर।

सुवेश—वि०सुन्दर वेशवाला।
सुव्यवस्थित—वि० भली-भाँति से व्यवस्था किया गया।
सुशिक्षित—वि० सुन्दर-शिक्षा पाये हुए। [वाला।
सुशील—वि० उत्तम शील·
सुशोभित—वि० अधिक-शोभित। [सुन्दर।
सुश्राव्य—वि० सुनने में·
सुश्री—वि० बहुत सुन्दर। धनी।
सुश्रुत—वि० विख्यात। चिकित्सा शास्त्र के एक आचार्य। [वाला, धर्मात्मा।
सुश्लोक—वि० सुन्दर यश-
सुषमा—स्त्री०अधिक शोभा।
सुषुप्त—वि० घोर निद्रा मे सोया हुआ।
सुषुप्ति—स्त्री०घोर निद्रा।
सुषुम्ना—स्त्री० एक नाड़ी।
सुष्ठ, सुष्ठु३—वि० अच्छा। भला। [सजा हुआ।
सुसज्जित—वि० भली भाँति-
सुसताना—अक्रि० विश्राम-करना।
सुस्तर—वि० (फ़ा०) निस्तेज, उदास। कमज़ोर। आलसी
सुस्थ—वि० नीरोग, प्रसन्न।
सुस्मित—वि० मुसकराता-हुआ।
सुस्वादु—वि० बहुत स्वादिष्ट
सुहंगम—वि० सरल।
सुहटा—वि० सुन्दर।
सुहल—पु० तारा विशेष।
सुहाग—पु० सौभाग्य।

सुहागा—पु० क्षार विशेष।
सुहाता—वि० सहनीय।
सुहाना—अक्रि० शोभा देना।
सुहावना—वि० सुन्दर।
सुहासन—वि० मृदुहास।
सुहृत,सुहृद्—पु० मित्र।
सुहेलरा—वि०प्रिय, सुन्दर।
सुहेला—वि० सुन्दर। पु० मित्र।
सूँ—अव्य०से।
सूँघना—सक्रि० वास लेना।
सूँवा—पु० भेदिया।
सू—वि० (अ०) बुरा। स्त्री० बुराई।
सूकट—वि०दुबला।
सूका—पु० चवन्नी।
सूक्त—पु० ऋचाओं का समूह। उत्तम-कथन।
सूक्ति—स्त्री० अच्छा कथन।
सूक्ष्म३—वि० छोटा, बारीक
सूक्ष्मदर्शकयंत्र—खुर्दबीन।
सूक्ष्मदर्शी५—वि० कुशाग्र-बुद्धि। गंभीर विषयों को सोचने वाला।
सूक्ष्मा—स्त्री० जूही। छोटी-इलायची। बालू।
सूखना—अक्रि० दुर्बल-होना। शुष्क होना।
सूखा—वि० तेज-रहित। शुष्क। पु० अवर्षण।
सूचक१४—वि० बताने-वाला।
सूचना—स्त्री० इत्तिला।
सूचनापत्र—पु० इश्तिहार।
सूचिक—पु० दरज़ी।
सूचिका—स्त्री० सुई।

सूचित—वि० जताया हुआ ।
सूचिभेद्य—वि० बहुत घना ।
सूची—स्त्री० सुई । फ़िहरिस्त
सूचीपत्र—पु० फ़िहरिस्त ।
सूच्य—वि० सूचित करने-
योग्य । [फूल जाना ।
सूजना—अक्रि० शोथ होना ।
सूजा—पु० बहुत मोटी सुई,
सूआ । [का एक रोग ।
सूज़ाक—पु० (फ़ा०) मूत्रेंद्रिय-
सूझ—स्त्री० दृष्टि, परख ।
अनोखी कल्पना ।
सूझबूझ—स्त्री० समझ ।
सूत—पु० तागा । बढ़ई ।
सारथी । पौराणिक ।
सूतक—पु० जन्म, मरण के
बाद का अशौच ।
सूतधार—पु० बढ़ई ।
सूतना—अक्रि० सोना ।
सूतपुत्र—पु० सारथि । कर्ण ।
सूति—स्त्री० जन्म ।
सूतिका—स्त्री० ज़च्चा ।
सूतिकागार, सूतिकागृह—
पु० सौरी । [स्त्री० सीपी ।
सूती—वि० सूत का बना ।
सूत्र—पु० डोरा । जनेऊ ।
विलक्षण अर्थ का कहने
वाला ऋषि-प्रणीत वाक्य ।
सूत्रक—पु० सुत ।
सूत्रकर्मन—पु० रफ़ू तथा
क़सीदे का काम ।
सूत्रकार—पु० सूत्र रच-
यिता । बढ़ई । जुलाहा ।
सूत्रधर—पु० नाटक का
मुखिया । बढ़ई ।
सूत्रपात—पु० प्रारंभ ।

सूत्रेतनी—पु० जीवात्मा ।
सूद—पु० (फ़ा०) लाभ ।
ब्याज । (सं०) रसोइया ।
सूदक१४—पु० विनाशक ।
सूदन—पु० मारना ।
सूदना—सक्रि० नष्ट करना ।
सूदशास्त्र—पु० पाक-विद्या ।
सूदित—वि० घायल । निहत ।
सून—पु० प्रसव । पुत्र ।
सूर्य । वि० सूना ।
सूना१—वि० सुनसान ।
सूनु—पु० पुत्र ।
सूनू—स्त्री० पुत्री । [वचन ।
सूनृत४—वि० प्रिय औरसत्य-
सूप—पु० रसोइया । छाज ।
सूपकार—पु० रसोइया ।
सूफ़—पु० (अ०) ऊन ।
सूफ़ियाना—वि० (अ०)
सूफ़ियों का सा । हल्का
और सुंदर ।
सूफ़ी—पु० (अ०) उदार-
शील मुसलमानों का एक
संप्रदाय । कम्बल ओढ़ने
वाला ।
सूबा—पु० (अ०) प्रांत ।
सूबाजात—पु० (अ०) बहु०
'सूबा' का ।
सूबेदार—पु० (अ० फ़ा०)
सूबे का शासक । फ़ौज का
एक ओहदेदार ।
सूम३—वि० कंजूस ।
सूर३—पु० अंधा । सूर्य ।
वीर । सूरदास । (अ०)
नरसिंह नाम का बाजा ।
सूरज—पु० सूर्य । सुग्रीव ।
शनि ।

सूरजमुखी—पु० एक पौधा ।
सूरत—स्त्री० (अ०) शक्ल ।
सूरत-दार—वि०(अ० फ़ा०)
सुन्दर ।
सूरत-परस्त२—वि० (अ०
फ़ा०) मूर्त्ति-पूजक ।
सूरन—पु० ज़मींकंद ।
सूरमा१—पु० योद्धा ।
सूरसावंत—पु० युद्ध-मंत्री ।
सरदार ।
सूरसुत—पु० सुग्रीव ।
सूराख़—पु० (फ़ा०) छेद ।
सूरि—पु० पंडित ।
सूर्य्य—पु० सूरज ।
सूर्य्यकांत—पु० मणि विशेष ।
सूर्य्यपत्नी—स्त्री० छाया ।
सूर्य्य पुत्र—पु० शनि । सु-
ग्रीव । कर्ण । यम ।
सूर्या—स्त्री० सूर्य-पत्नी ।
सूर्य्यास्त—पु० सूर्य का डूबना
सूर्य्योदय—पु० सबेरा ।
सूलना—सक्रि० पीड़ित-
करना । छेदना ।
सूली—स्त्री० फाँसी ।
सूहार—वि० लाल रंग का ।
सृंग—पु० सींग । [बाण ।
सृक,सृग—पु० शूल । माला ।
सृजक—पु० रचयिता ।
सृजनहार—पु० रचने वाला
सृजित—वि० रचा हुआ ।
सृत—वि० गया हुआ ।
सृति—स्त्री० मार्ग ।
सृष्ट—वि०उत्पन्न । [संसार ।
सृष्टि—स्त्री०उत्पत्ति । रचना ।
सृष्टिकर्त्ता—पु० ईश्वर ।
सृष्टिविज्ञान—पु० वह शास्त्र

जिसमें सृष्टि-रचना का विषय हो।
सेंकना—अक्रि० गरम करना। भूँजना। [पदार्थ।
सेंट—पु०(अ०)एक सुगन्धित-
सेंटर—पु० (अं०) केन्द्र।
सेंत—स्त्री० खर्च न होना।
सेंतना—अक्रि० सुरक्षित रखना।
सेंथी—स्त्री० बरछी, शक्ति।
सेंध—स्त्री० सुरंग।
सेंधा—पु० नमक विशेष।
सेंहुड़—पु० थूहर।
से—प्रत्य० कर्ण, अपादान की विभक्ति।
सेकंड—पु० (अं०) मिनट का साठवाँ भाग। वि० दूसरा।
सेक—पु० छिड़काव।
सेकपात्र—पु० जल फेंकने की चमड़े की डोलची।
सेक्रेटरी—पु० (अं०) मंत्री।
सेचक१४—पु०सींचने वाला।
सेचनक्—पु०सींचना, छिड़काव।
सेज—स्त्री०शय्या।बिछौना।
सेजपाल—पु०शयनागार का रक्षक।
सेट—पु०(अ०) एक प्रकार की कई चीज़ों का समूह।
सेटना—अक्रि०, समझना, मानना।
सेठ—पु० महाजन, धनी।
सेत—वि०श्वेत। पु० पुल।
सेतकुली—पु० एक सर्पकुल।
सेतदुति—पु- चन्द्रमा।
सेती—अव्य० से।
सेतु—पु० बाँध, पुल।
सेतुक—क्रि० वि० सामने। पु० पुल।
सेतुपथ—पु० पहाड़ आदि दुर्गम स्थानों में गयी हुई सड़क।
सेतुबंध—पु०पुल की बँधाई।
सेतुशैल—पु० दो देशों के बीच का पर्वत।
सेद—पु० पसीना। [सेना।
सेन—पु०बाज़पक्षी। शरीर।
सेनप—पु० सेनापति।
सेना—स्त्री० फ़ौज।
सेनाजीवी—पु० सैनिक।
सेनानी—पु० सेनापति। कार्तिकेय।
सेनापति—पु० सिपहसालार।
सेनापत्य—पु० सेनापति का कार्य या उसका अधिकार।
सेनावास—पु० छावनी, शिविर। [श्रेणी, पंक्ति।
सेनी—स्त्री०तश्तरी। सीढ़ी।
सेब—पु० फल विशेष।
सेम—स्त्री० एक शाक।
सेमीकोलन—स्त्री० (अं०) अर्द्धविराम (;)।
सेर—पु० १६ छटाँक।
सेरबच्चा—पु०बंदूक़ विशेष।
सेराना—सक्रि० ठंढा करना। बहा देना।
सेरी—स्त्री० रास्ता। तृप्ति।
सेल७—पु०भाला। [विशेष।
सेलखड़ी—स्त्री० खड़िया-
सेला—पु० चादर विशेष।
सेल्ह७—पु० साँग, भाला।
सेवक१४—पु०नौकर, भक्त।
सेवती—स्त्री०सफ़ेद-गुलाब।
सेवनक्—पु०सेवा। प्रयोग।
सेवाना—स्त्री० सेवा।
सेवा—स्त्री० ख़िदमत।
सेवा:बंदगी—स्त्री० पूजा।
सेवावृत्ति—स्त्री० नौकरी।
सेविंगबैंक—पु० (अं०) वह बैंक जो छोटी-छोटी रक़में ब्याज पर लेता है।
सेवित—वि० सेवा किया हुआ।
सेवी५—पु० सेवक, दास।
सेव्य—वि० सेवा करने-योग्य। स्वामी। [मुक्ति।
सेहत—स्त्री० (अ०) रोग से-
सेहतख़ाना—पु० पाख़ाने, पेशाब की कोठरी।
सेहरा—पु० मौर। दूल्हे के मस्तक पर बाँधने का फूल तथा गोटे की मालाओं की लड़। [विशेष।
सेहुँआँ—पु० चर्म रोग-
सैथी, सैंहथी—स्त्री० शक्ति, भाला।
सैंधव—पु० सेंधा नमक।
सैबल—पु० सेमर वृक्ष।
सैकड़ा—पु० सौ (१००)।
सैकड़े—क्रि० वि० फ़ीसदी।
सैकत—वि० रेतीला।
सैकतिक—वि० बालु सम्बन्धी। पु० संन्यासी।
सैक़ल—पु० (अ०) हथियारों को साफ़ करने तथा सान चढ़ाने का काम।
सैथी, सैहथी—स्त्री० भाला।

सैद्धांतिक—वि० सिद्धांत-संबंधी। [बाज़पक्षी।
सैन—स्त्री० संकेत। सेना।
सैनामैनी—स्त्री० इशारेबाज़ी
सैनिक—पु० सिपाही।
सैनेय—वि० लड़ने-योग्य।
सैन्य—पु० सेना।
सैफ़—स्त्री० खड्ग। [की दासी।
सैरंध्री—स्त्री० द्रौपदी। घर-
सैर—स्त्री० भ्रमण।
सैल—पु० पहाड़। स्त्री० बाढ़। सैर। साँग।
सैलानी—वि० मनमौजी।
सैलाब—पु० (फ़ा०) बाढ़।
सोंटा—पु० डंडा।
सोंठ—स्त्री० एक मसाला।
सोंधा—वि० सुगन्धित।
सोंह—स्त्री० शपथ।
सोखना—सक्रि० सुखाडालना
सोख़्त—पु० (फ़ा०) सूजन। वि० निकम्मा।
सोख़्तगी—स्त्री० (फ़ा०) सूजन। कष्ट। रज।
सोख़्ता—पु० (फ़ा०) स्याही-सोख। वि० जला हुआ।
सोगन—पु० दुःख, शोक।
सोच—पु० चिंता। ख़याल।
सोचना९—अक्रि० विचार-करना। फ़िक्र करना।
सोचविचार—पु० ग़ौर।
सोज़—पु० (फ़ा०) जलन। कष्ट। मरसिया पढ़ने का एक ढंग।
सोज़न—स्त्री० (फ़ा०) सुई।
सोज़नकारी—स्त्री० (फ़ा०) सुई का काम।
सोज़नी—स्त्री० (फ़ा०) वह कपड़ा जिस पर सुई से बारीक काम हुआ हो। सुजनी।
सोज़िश—स्त्री० (फ़ा०) सूजन
सोझा—वि० अनुकूल। सीधा
सोडा—पु० (अं०) क्षार-विशेष
सोढ—वि० सहन-शील।
सोढर—वि० भोंदू। [योग्य।
सोढ्य,सोढव्य—वि० सहने-
सोता—पु० पानी का झरना
सोती—स्त्री० सोता। स्वाति-नक्षत्र।
सोदर७—पु० सगा भाई।
सोधना९—सक्रि० शुद्ध-करना। खोजना।
सोन, सोना—पु० सुवर्ण।
सोनकेला—पु० पीला केला।
सोनचिरी—स्त्री० नटी।
सोनहा—पु० श्वान। [पक्षी।
सोनहार—पु० एक समुद्री-
सोनामक्खी—स्त्री० एक खनिज पदार्थ।
सोपकार—पु० मिश्रधन।
सोपान—पु० सीढ़ी।
सोफ़ियाना—वि० (अ०) सादा और अच्छा।
सोफ़्ता—पु० (फ़ा०) एकांत-स्थान। [होना।
सोभना—अक्रि० शोभित-
सोम—पु० एक लता। चन्द्रमा। सोमवार।
सोमरस—पु० एक लता जिसका रस वैदिक काल में पिया जाता था।
सोमपायी५—वि० सोम रस पीने वाला।
सोमयाजी—पु० सोमयज्ञ करने वाला।
सोमराज—पु० चंद्रमा।
सोमसुत—पु० बुध।
सोयम—वि० (फ़ा०) तीसरा
सोरठा—पु० एक छंद।
सोवनार—पु० शयनागार।
सोवियट—पु० (अं०) सभा, पंचायत।
सोशल—वि० (अं०) सामाजिक। [नीले रंग का।
सोसनी—वि० सुर्ख़ीमायल-
सोसाइटी—स्त्री० (अं०) गोष्ठी।
सोहगी—स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म। सुहाग की चीज़ें।
सोहन७—वि० रूपवान्।
सोहना—अक्रि० शोभित-होना। ७ वि० सुन्दर।
सोहनी—स्त्री० झाड़ू।
सोहबत—स्त्री० (अ०) संगति। सभोग।
सोहबत-दारी—स्त्री० (अ० फ़ा०) स्त्री-प्रसंग।
सोहबत याफ़्ता—वि० (अ० फ़ा०) शिक्षित, सभ्य तथा अनुभवी।
सोहला—पु० मांगलिक-गीत
सोहारी—स्त्री० पूड़ी।
सोहावना—अक्रि० अच्छा-लगना। वि० सुन्दर।
सोहिल—पु० अगस्त्य-तारा।
सौंधाई—स्त्री० आधिक्य।
सौंचना९—सक्रि० मलत्याग

करना ।
सौंचर—पु० काला नमक ।
सौंज, सौज—स्त्री०सामग्री ।
सौंतुख—क्रि० वि० सामने ।
सौंदर्य—पु० सुन्दरता ।
सौंध—स्त्री० सुगंध ।
सौंपना—सक्रि० सहेजना ।
सौंफ़—स्त्री० एक पौधा ।
सौंरना—सक्रि० स्मरण-करना । [सामने ।
सौंह—स्त्री०शपथ । क्रि०वि०
सौकर्य—पु०सुभीता ।
सौकुमार्य—पु० सुकुमारता ।
सौख्य—पु० सुख ।
सौगंध—स्त्री० (फ़ा०) शपथ ।
सौगत—पु० बुद्ध अनुयायी, बौद्ध ।
सौग़ात—स्त्री०(तु०) उपहार ।
सौग़ाती—वि० (तु०) बहुत-बढ़िया ।
सौघा—वि० सस्ता ।
सौजन्य—पु० सुजनता ।
सौतेला७—वि० सौत से उत्पन्न ।
सौदर्य—वि०सोदर-समान ।
सौदा—पु० (अ०) चीज़ । लेन-देन । उन्माद । प्रेम । खयाल । क्रय-विक्रय । वि० काला ।
सौदाई—पु० (अ०) दीवाना ।
सौदागर२—पु० (फ़ा०) व्यापारी ।
सौदामिनी—स्त्री० बिजली ।
सौदा-सुल्फ़—पु० (अ०) खरीदने की वस्तुएँ ।
सौध—पु० राजभवन ।
सौधकार—पु० राजगीर ।
सौधर्म—पु० साधुपना ।
सौन—क्रि० वि० सामने । पु० क़साई ।
सौना—पु० सुवर्ण ।
सौप्तिक—पु० शयन-काल का आक्रमण । [सुन्दरता ।
सौभग—पु० अच्छा भाग्य ।
सौभद्र—पु० अभिमन्यु ।
सौभाग्य-पु० अच्छा-भाग्य । अहिवात । वैभव ।
सौभाग्यवान्१३—वि०अच्छे भाग्य वाला ।
सौभिक्ष्य—पु० सुकाल ।
सौमनस—पु०सुमन-संबंधी । पु० प्रसन्नता ।
सौमित्र, सौमित्रि—पु० लक्ष्मण । शत्रुघ्न ।
सौम्य३—वि० शांत । सुन्दर । सुशील । पु० बुध ग्रह ।
सौम्यदर्शन—वि० सुन्दर ।
सौर—वि० सूर्य-संबंधी । पु० चादर । सूर्यवंशी ।
सौरज—पु० शूरता ।
सौरत—वि० रति-संबंधी ।
सौरभ—पु० सुगंध । आम ।
सौरभि—स्त्री० गाय ।
सौरभीला—वि० सुगंधित ।
सौरस्य—पु० सुरसता ।
सौराष्ट्र—पु० सूरत के इधर-उधर का देश ।
सौरि—पु० कृष्ण, वसुदेव ।
सौरी—स्त्री० प्रसूतिगृह ।
सौर्य—वि० सूर्य-सम्बन्धी ।
सौवर्ण—वि० सोने का ।
सौवस्तिक—वि० शुभेच्छु । पु० पुरोहित ।
सौविद—पु०अंतःपुर-रक्षक ।
सौवीर—पु० सफ़ेद सुरमा । सिंध नदी के आस-पास का प्रदेश ।
सौष्ठव—पु० सुन्दरता ।
सौहार्द, सौहार्य, सौहृद—पु० मित्रता ।
स्कंद—पु० कार्तिकेय ।
स्कंदन—पु० रेचन । पतन ।
स्कंदित—वि० पतित ।
स्कंध—पु० कंधा । शाखा । पुस्तक का भाग । युद्ध ।
स्कंध-पथ—पु० पगडंडी ।
स्कंधरुह—पु० वट-वृक्ष ।
स्कंधावार—पु० छावनी । सेना । राजधानी ।
स्काउट—पु०(अं०) बालचर, भेदिया, जासूस ।
स्कीम—स्त्री० (अं०) योजना
स्खलन—पु० पतन, गिरना
स्खलित—वि० गिरा हुआ ।
स्टाक—पु० (अं०) बिक्री का माल ।
स्टूल—पु० (अं०) तिपाई ।
स्टेज—पु० (अं०) रंगमंच ।
स्टेट—स्त्री०(अं०) रियासत ।
स्टेशन—पु० (अं०) अड्डा ।
स्तंब—पु०गुच्छा,झाड़ी,खंभा ।
स्तंभ—पु० खंभा ।
स्तंभक—वि० वीर्य रोकने वाला ।
स्तंभन६—पु० रुकावट ।
स्तन—पु० कुच, थन ।
स्तनन—पु० मेघ-गर्जन । ध्वनि ।

स्तनप, स्तनपायी—वि० माता के स्तन से दूध पीने वाला।
स्तनयित्नु—पु० बादल।
स्तनित—वि० ध्वनित।
स्तन्य—पु० दूध।
स्तब्ध३—वि० निश्चल।
स्तब्धमति—वि० कुन्दज़हन।
स्तर, स्तरण—पु० तह।
स्तरिमा—स्त्री० शय्या।
स्तरीकरण—पु०तह बनाना। माप-निर्धारण।
स्तव, स्तवन—पु० स्तुति।
स्तवक—पु० स्तोत्र। गुच्छा।
स्तविता—पु०स्तुति करने वाला।
स्तावक—पु० स्तुति-कर्त्ता।
स्तीर्ण—वि० विस्तृत।
स्तुति—स्त्री० प्रशंसा।
स्तुतिपाठक—पु० भाट।
स्तुतिवाद—पु० यश-वर्णन।
स्तुत्य—वि० प्रशंसनीय।
स्तूप—पु० ऊँचा ढूह, टीला।
स्तेयन—पु० चोरी।
स्तैन्य—पु० चोर। चोरी।
स्तोक—पु०चातक।वि०थोड़ा।
स्तोता१०—वि०स्तुतिकर्त्ता।
स्तोत्र—पु० स्तुति।
स्तोम—पु० स्तुति। ढेर।
स्त्री—स्त्री० औरत। पत्नी।
स्त्रीधन—पु० स्त्री के अधिकार का धन।
स्त्रीसभ—पु० स्त्रियों की सभा।
स्त्रीव्रत—पु० अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री से प्रेम न करने का संकल्प।
स्त्रैण—वि० स्त्री के अधीन।
स्थंडिल—पु० यज्ञ के लिए साफ़ किया गया स्थान। सीमा।
स्थकित—वि० क्लांत, दुःखी।
स्थगन—पु०स्थगित करने का कार्य
स्थगित—वि० रोका हुआ।
स्थपित—पु० शिल्पी। बढ़ई। वि० श्रेष्ठ।
स्थल७—पु०भूमि।
स्थलीय—वि०स्थल-संबंधी।
स्थविर—पु० वृद्ध, वयोवृद्ध।
स्थाणु—पु०स्तंभ।ठूंठ।पु०शिव।
स्थान—पु० जगह।
स्थानच्युत—वि०स्थानभ्रष्ट।
स्थानांतर—पु० अन्य-स्थान।
स्थानांतरित—वि०एकस्थान से दूसरे स्थान पर हटाया गया
स्थानापन्न—वि० एवज़ी।
स्थानिक, स्थानीय—वि० स्थान का। [कर्त्ता।
स्थापक१४—वि० स्थापन-
स्थापत्य—पु० राजगीरी, भवन-निर्माण-कला।
स्थापन६—पु० स्थापना। स्त्री० रखना, क़ायम करना।
स्थापयिता१०—पु० स्थापित-करने वाला।
स्थापित—वि०क़ायम।
स्थायित्व—पु० स्थिरता।
स्थायी५—वि० ठहरने वाला।
स्थाल—पु० थाली। आधार
स्थाली—स्त्री० हाँडी, बटलोई। थाली।
स्थालीपुलाक—पु० हाँडी का एक दाने से ही सब के पक जाने का अनुमान लगाने वाला न्याय।
स्थावर—वि० अचल।
स्थाविर—पु० बुढ़ापा।
स्थित—वि० ठहरा हुआ।
स्थितप्रज्ञ—वि० स्थिर बुद्धि-वाला।
स्थिति—स्त्री०ठहराव। दशा
स्थितिस्थापक—पु० प्रथमावस्था में लाने वाला गुण।
स्थिर३—वि० निश्चल, शांत
स्थिरचित्त, स्थिरबुद्धि—वि० स्थिर-बुद्धि वाला।
स्थिरायु—वि० दीर्घायु।
स्थिरीकरण—पु० स्थिर-करना।
स्थूणा—स्त्री०लोहे की प्रतिमा।
स्थूल३—वि० मोटा।
स्थूलहस्त—पु०हाथी की सूँड़
स्थैर्य—पु० स्थिरता।
स्थौल्य—पु० स्थूलता।
स्ना—पु० गाय, बैल के गले में लटकने वाला मांस।
स्नात—वि० नहाया हुआ।
स्नातक—पु० ब्रह्मचारी।
स्नान—पु० नहाना।
स्नानागार—पु० स्नान करने का कमरा। [संबंधी।
स्नायविक—वि० स्नायु-
स्नायु—स्त्री० नस, नाड़ी।
स्निग्ध३—वि० चिकना। दयालु।
स्नुषा—स्त्री० बहू, पतोहू।
स्नेह—पु०प्रेम। तैल।
स्नेहन—पु०चिकनाना। बलगम। मक्खन।
स्नेहित—वि० चिकनाया-हुआ। प्रेमी।

स्नेही—पु० प्रेमी, मित्र।
स्पंद, स्पंदन—पु० काँपना। स्फुरण।
स्पर्द्धा—स्त्री० संघर्ष। बराबरी, हिर्स। डाह, जलन। होड़।
स्पर्शन—पु० छूना।
स्पर्शजन्य—वि० छूत का।
स्पर्शन—पु० वायु।
स्पर्शमणि—पु० पारसपत्थर।
स्पर्शास्पर्श—पु० छूआछूत।
स्पष्ट३—वि० साफ़। प्रकट।
स्पष्टवादी—पु० स्पष्टवक्ता।
स्पष्टीकरण—पु० स्पष्ट करने की क्रिया।
स्पीच—स्त्री०(अं०) भाषण।
स्पर्शेंद्रिय—स्त्री० वह इंद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान हो। त्वचा।
स्पृश्य—वि० छूने-योग्य।
स्पृष्ट—वि० छुआ हुआ। कामना।
स्पृहा६—स्त्री० इच्छा।
स्पृही—वि० इच्छुक।
स्पृह्य—वि० वांछनीय।
स्पेशल—वि० (अं०) ख़ास।
स्फटिक—पु० बिल्लौर पत्थर।
स्फटिका, स्फटी—स्त्री० फिटकरी।
स्फाल—पु० फ़ुरती।
स्फीत—वि० वर्द्धित। [कर।
स्फुट—वि०खिला हुआ। फुट-
स्फुटित—वि० विकसित।
स्फुरण—पु० फड़कना। उदय
स्फुरित—वि०फड़का हुआ।
स्फुर्तना—स्त्री० स्फूर्ति।
स्फुलिंग—पु० चिनगारी।
स्फूर्ति—स्त्री० तेज़ी, फुर्ती।
स्फोट—पु० फूटना। फोड़ा।
स्फोटक—पु० फोड़ा।
स्फोटन—पु० फोड़ना।
स्मय—पु० अभिमान। वि० विचित्र।
स्मर—पु० कामदेव।
स्मरण६—पु० याद, सुधि।
स्मरणशक्ति—स्त्री० याददाश्त
स्मरहर—पु० शिव।
स्मर्त्ता—पु० याद रखने वाला
स्मशान—पु० मरघट।
स्मारक—पु० यादगार।
स्मार्त—पु० स्मृति का अनुयायी।
स्मित—पु० मुसकराना।
स्मृत—वि० याद किया गया
स्मृति—स्त्री० स्मरण। धर्म्मशास्त्र। [बनाने वाला।
स्मृतिकार—पु० धर्मशास्त्र
स्यंदन—पु० रथ। सारथी।
स्यद—पु० वेग।
स्यात्—अव्य० शायद।
स्याद्वाद—पु० जैन-दर्शन का एक अंग। [वयस्क।
स्याना१—वि० चालाक।
स्याबास—अव्य० शाबाश।
स्यामल३—वि० साँवला।
स्यार७—पु० गीदड़। वि० कायर।
स्याल७—पु० साला। गीदड़
स्याह२—वि० काला।
स्यून—वि० सिया हुआ।
स्यों, स्यो—अव्य० सहित।
स्रंस—पु० [illegible] पास।
स्रक्, स्रग, स्रज—पु० पुष्पों की माला। माला।
स्रवण६—पु० बहाव, प्रवाह।
स्रवना—अक्रि० बहना, चूना।
स्रष्टा—पु० ब्रह्मा। वि० निर्माता।
स्रस्त—वि० चुआ हुआ।
स्राव१२—पु० बहना, झरना।
स्रावक, स्रावी—वि० बहने-वाला।
स्रोत—पु० धारा, सोता।
स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी—स्त्री० नदी।
स्लेट—स्त्री० पत्थर की तख्ती।
स्व—वि० अपना। पु० धन।
स्वकीय—वि० अपना।
स्वकीया—स्त्री० अपने ही पति से प्रेम रखने वाली।
स्वगत—क्रि० वि० आपही-आप।
स्वच्छंद३—वि० स्वतंत्र।
स्वच्छ३—वि० निर्मल, शुभ्र।
स्वजन—पु० संबंधी। कुटुंबी।
स्वजनि—स्त्री० सहेली।
स्वजन्मा—पु० ईश्वर।
स्वतंत्र३—वि० स्वाधीन।
स्वतः—अव्य० स्वयंही।
स्वत्व—पु० अधिकार।
स्वत्वाधिकारी—पु० स्वामी, पूर्ण अधिकारी।
स्वत्वापहरण—पु० बेदखली
स्वदेशी—वि० अपने देश का
स्वधा—अव्य० एक शब्द जिसका उच्चारण पितरों

देवों को हवि देने के समय किया जाता है।
स्वधीत—वि० सुपठित।
स्वन—पु० ध्वनि।
स्वनामधन्य—वि०जो अपने नाम के अनुसार कार्य चरितार्थ करे।
स्वनामा—वि० जो अपने से ही प्रसिद्ध हो।
स्वप्न—पु० सपना, ख्वाब।
स्वप्नदोष—पु० निद्रावस्था में वीर्यपात होना।
स्वबीज—पु० आत्मा।
स्वभाव—पु० तासीर,आदत
स्वभावज—वि० प्राकृतिक।
स्वभावतः—क्रि० वि० स्वभाव से, सहज ही।
स्वयं—अव्य० स्वतः।
स्वयंप्रकाश—पु० ईश्वर।
स्वयंभू—पु० ब्रह्मा। कामदेव
स्वयंभूत—वि० अपने आप पैदा हुआ। [आपही चुनना
स्वयंवर—पु० अपना वर-
स्वयंवरा—स्त्री० स्वयं पति चुनने वाली स्त्री। [सिद्ध हो।
स्वयंसिद्ध—वि० जो स्वयं-
स्वयंसेवक१४—पु० विना पारिश्रमिक के सेवा करने वाला।
स्वभू—पु० विष्णु।
स्वयमेव—क्रि० वि० स्वयं ही
स्वर—पु० सुर, शब्द। 'अ' से 'अः' तक के अक्षर।
स्वरतार-पु० ऊँची आवाज़। सुरीली आवाज़। [बैठना।
स्वरभंग—पु० आवाज़ का-
स्वरस—पु० पत्तों आदि से कूट या पीस कर निकाला गया रस।
स्वराज्य-पु०अपना शासन।
स्वराट्—पु०ईश्वर। [गंगा।
स्वरापगा—स्त्री० आकाश-
स्वरित—वि० स्वर से युक्त।
स्वरु—पु० वज्र।
स्वरूप-पु० आकार। शोभा। अव्य० तौर पर।
स्वरूपवान्१३-वि० सुन्दर
स्वरूपी५—वि० दूसरे का रूप धारण करने वाला। स्वरूपवाला, सुन्दर।
स्वरोदय—पु० श्वास द्वारा फल जानने की विद्या।
स्वर्—पु० स्वर्ग। आकाश।
स्वर्ग—पु० देवलोक।
स्वर्गगामी५—वि० मृत।
स्वर्गत—वि० स्वर्गीय।
स्वर्गतरु—पु० कल्पवृक्ष।
स्वर्गवधू—स्त्री० अप्सरा।
स्वर्गवासन—पु० मृत्यु।
स्वर्गारोहण-पु० स्वर्ग जाना
स्वर्गीय—वि० स्वर्ग का। मृत।
स्वर्ण—पु० सोना, कनक।
स्वर्णकमल—पु० लाल रंग का कमल।
स्वर्णकार—पु० सुनार।
स्वर्णचूड़—पु० नीलकंठ।
स्वर्णजयंती—स्त्री० पचासवें वर्ष का उत्सव। [स्वर्ग में है।
स्वर्णदी—स्त्री० देवगंगा जो-
स्वर्णमुद्रा—स्त्री० अशरफ़ी।
स्वर्नगरी—स्त्री० स्वर्ग।
स्वर्धुनी—स्त्री० गंगा।
स्वर्वेश्या—स्त्री० स्वर्ग की वेश्या।
स्वर्वैद्य—पु० अश्विनीकुमार
स्वल्प—वि० बहुत थोड़ा।
स्ववश्य—वि० इन्द्रियजित्।
स्वश्रू—स्त्री० सास।
स्वसा—स्त्री० बहिन।
स्वस्ति—अव्य० कल्याण हो
स्वस्तिक—पु० सथिया चिह्न।
स्वस्तिवाचन-पु०मंगल पाठ।
स्वस्तिवाद—पु० आशीर्वाद।
स्वस्त्ययन—पु० मंगलाचरण
स्वस्थ—वि० नीरोग।
स्वाँगन—पु० ढोंग, नक़ल।
स्वांत—पु०अंतःकरण। गुफ़ा
स्वाक्षर—पु० हस्ताक्षर।
स्वागत—पु०आदर।
स्वागतपतिका—स्त्री० परदेश से पति के लौट आने पर प्रसन्न होने वाली स्त्री।
स्वातंत्र्य—पु० स्वतंत्रता।
स्वाति—स्त्री० पन्द्रहवाँ नक्षत्र
स्वातिसुत—पु० मोती।
स्वाद१२—पु० ज़ायक़ा।
स्वादन६—पु० स्वाद लेना।
स्वादिष्ट, स्वादु—वि० ज़ायक़ेदार। सुरस, मीठा।
स्वाद्य—वि०स्वाद लेने योग्य
स्वाधीन३—वि० स्वतंत्र।
स्वाधीनपतिका—स्त्री० पति को वश में रखने वाली नायिका। [अध्ययन।
स्वाध्याय—पु० अनुशीलन,
स्वाप—पु० निद्रा। अज्ञान।

स्वापन—पु० एक अस्त्र ।
स्वाभाविक-वि० प्राकृतिक ।
स्वाभिमान—पु० अपना बड़प्पन, कुलोत्पन्न गर्व ।
स्वामिकार्तिक—पु० कार्तिकेय । [प्रभुत्व ।
स्वामित्व, स्वाम्य—पु०
स्वामी५—पु० मालिक । पति । ईश्वर । गुरु ।
स्वायत्त—वि० अपने अधीन ।
स्वारस्य—पु० सरसता ।
स्वराज्य—पु० स्वाधीन-राज्य ।
स्वाराट्—पु० इन्द्र ।
स्वार्थ३—पु० मतलब ।
स्वार्थपर३, स्वार्थपरायण, स्वार्थी—वि० खुदग़रज़ ।
स्वार्थ-संपादन—पु० अपना प्रयोजन पूरा करने का कार्य । [''स्वार्थ-संपादन'' ।
स्वार्थ-साधन—पु० दे०
स्वास्थ्य—पु० तन्दुरुस्ती ।
स्वास्थ्यकर—वि० तन्दुरुस्त-करने वाला ।
स्वाहा—अव्य० यज्ञ के समय हवि देने का शब्द । वि० नष्ट ।
स्विन्न—वि० प्रस्वेदयुक्त ।
स्वीकरण३—पु० मंज़ूर-करना
स्वीकार—पु० ग्रहण । मंज़ूर
स्वीकारोक्ति—स्त्री० क़सूर को मंज़ूर करना ।
स्वीकार्य—वि० स्वीकार करने योग्य ।
स्वीकृत—वि० मंज़ूर ।
स्वीकृति—स्त्री० मंज़ूरी ।
स्वीय—वि० अपना । [कुश ।
स्वेच्छाचारी५—वि० निरं-
स्वेद—पु० पसीना । ताप ।
स्वेदक—पु० पसीना लाने वाली वस्तु ।
स्वेदज—वि० पसीने से उत्पन्न होने वाला ।
स्वेदित—वि० पसीने से युक्त ।
स्वोपार्जित—वि० स्वयं पैदा किया हुआ ।
स्वैर७—वि० स्वच्छन्द ।
स्वैरवृत्त-वि० स्वेच्छाचारी ।
स्वैराचार८—पु० स्वेच्छाचार
स्वैरिता-स्त्री० स्वेच्छाचारिता
स्वैरिणी—स्त्री० कुलटा-स्त्री ।

३३—ह

हंक—स्त्री० पुकार ।
हँकड़ना—अक्रि० ललकारना
हँकराना—सक्रि० बुलाना । बुलवाना ।
हंका—स्त्री० हुंकार ।
हँकाई-स्त्री० हाँकने का कार्य ।
हँकारना—सक्रि० ललकारना । पुकारना ।
हँकारी—पु० दूत । वि० अहंकारी ।
हंग—पु० (फ़ा०) भारीपन । विचार । शक्ति । सेना । बुद्धिमत्ता । [ऋतु ।
हंगाम—पु० (फ़ा०) समय ।
हंगामा—पु० (फ़ा०) झगड़ा, बलवा । भीड़-भाड़ । दंगल
हंजार—पु० (फ़ा०) मार्ग । रंग-ढंग । गति ।
हंटर—पु० (अं०) कोड़ा ।
हंडा७—पु० पात्र विशेष ।
हंत—अव्य० शोक-सूचक-शब्द ।
हंतव्य—वि० मारने-योग्य ।
हंता१०-वि० मारने वाला ।
हंस७—पु० बतख़ के आकार का एक जल-पक्षी । जीव । सूर्य । सन्यासी विशेष ।
हंसक—पु० हंस । बिछुआ ।
हंसगति—स्त्री० हंस की सी सुंदर मंद चाल ।
हंसगामिनी—स्त्री० हंस के समान धीरे चलने वाली स्त्री ।
हँसना९—अक्रि० प्रसन्न-होना । उपहास करना ।
हँसमुख७-वि० ख़ुशमिज़ाज ।

हँसली—स्त्री० एक गहना।
हंसवाहन७—पु० ब्रह्मा।
हंससुता—स्त्री० जमुना नदी।
हँसाई—स्त्री० उपहास।
हँसारूढ़४—पु० ब्रह्मा।
हँसिया—स्त्री० खेत काटने का एक औज़ार।
हँसी—स्त्री० मज़ाक़। निन्दा
हँसोड़—वि० हास्य-प्रिय।
हक़—पु० (अ०) अधिकार। दस्तूरी। ईश्वर। वि० उचित। [हक़मारना।
हक़तलफ़ी—स्त्री० (अ०)
हक़ताला—पु० (अ०) ईश्वर।
हकदक—वि० चकित।
हक़दार—वि० (अ०) अधिकारी
हक़नाहक़—क्रि० वि० (अ०) ज़बरदस्ती, व्यर्थ।
हक़परस्त—वि० (फ़ा०) सत्य-प्रेम। आस्तिक। [जाना।
हकबकाना—अक्रि० घबरा-
हक़रसी—स्त्री० (अ०) न्याय।
हकला१—वि० हकला कर-बोलने वाला।
हकलाना—अक्रि० रुक-रुक कर बोलना।
हक़शफ़ा—पु० (अ०) ज़्यादा हक़ जो पड़ोसी होने के नाते होता है।
हक़शिनास२—वि० (अ० फ़ा०) गुणग्राहक।
हक़ारत—स्त्री० (अ०) घृणा।
हक़ीक़त—स्त्री० (अ०) सचाई
हक़ीक़ी—वि० (अ०) सच्चा, सगा। ईश्वर-सम्बन्धी।
हकीम२—पु० (अ०) वैद्य।
हक़ीर—वि० (अ०) तुच्छ। दुर्बल। [हक़।
हक़ूक़—वि० (बहु० अ०)
हक्काबक्का—वि० भौंचक्का।
हक्क़ियत—स्त्री० (अ०) हक़दारी।
हक्क़ेतसनीफ़—पु० (अ० फ़ा०) लेखक का पुस्तक आदि पर अधिकार।
हचकाना—सक्रि० धक्का दे-कर हिलाना।
हज—पु० (अ०) मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिए मक्का जाना।
हज़—पु० (अ०) ख़ुशी, सौभाग्य। मजा। स्वाद।
हज़म—पु० (अ०) पाचन।
हजर—पु० (अ०) पत्थर।
हज़रत—पु० (अ०) महापुरुष
हज़रात—पु० (अ०) बहु० 'हज़रत' का।
हज़ल—पु० (अ०) फूहड़-मज़ाक़। [बनवाना।
हजामत—स्त्री० (अ०) बाल-
हज़ार—वि० (अ०) सहस्र, १०००।
हज़ारहा—वि० (अ०) हज़ारों
हज़ारा—पु० (फ़ा०) फुहारा। एक प्रकार का गेंदा। वि० हज़ार का।
हज़ारी—पु० (फ़ा०) हज़ार-सैनिकों का सर्दार।
हजूम—पु० भीड़, मजमा।
हजो—स्त्री० (अ०) निंदा।
हज्जाम—पु० (अ०) नाई।
हटकना—सक्रि० मना करना।
हटना९—अक्रि० दूर होना। अलग होना। [वाला।
हटबया७—पु० सौदा बेचने-
हटवा—पु० दूकानदार।
हटवार२—पु० व्यापारी।
हटौती—स्त्री० शरीर की गठन।
हट्ट—पु० बाज़ार।
हट्टाकट्टा—वि० मोटा-ताज़ा
हठ—पु० ज़िद।
हठधर्म—पु० दुराग्रह। कट्टरपन।
हठयोग—पु० वह योग जिसमें शरीर-साधन-निमित्त आसनों का विधान है।
हठात्, हठाहठ—क्रि० वि० हठपूर्वक।
हठीला७—वि० ज़िद्दी। धीर
हड़कंप—पु० हलचल।
हड़क—स्त्री० गहरी-चाह। धुन। [कुत्ता।
हड़काया—पु० पागल-
हड़ताल—स्त्री० बाज़ार की बन्दी। [ग़ायब करना।
हड़पना—सक्रि० खा जाना।
हड़फूटन—पु० हड्डियों में दर्द होना। [होना।
हड़बड़ाना—अक्रि० आतुर-
हड़बड़िया—वि० जल्दबाज़।
हड़बड़ी—स्त्री० उतावली।
हड़ावरि, हड़ावल—स्त्री० ठठरी, अस्थि-समूह।
हड़ीला—वि० अति दुर्बल।
हत—वि० वध किया हुआ।

विहीन। [वि० पापी।
हतक–स्त्री० (अ०) बेइज्ज़ती।
हतचेत—वि० बेहोश।
हतना—सक्रि० वध करना। पीटना।
हतप्रभ—वि० कांतिहीन।
हतबुद्धि—वि० मूर्ख।
हतबोध—वि० विवेकहीन।
हतभागी५, हतभाग्य—वि० अभागा।
हताश—वि० निराश।
हताहत–वि० मृत और घायल
हतोत्साह–वि०उत्साहहीन।
हत्तुलइमकान—क्रि० वि० (अ०) यथासंभव। इच्छा-पूर्वक।
हत्थ—पु० हाथ।
हत्था—पु० मूँठ, दस्ता।
हत्थि—पु० हाथी।
हत्या—स्त्री० हिंसा।
हत्यारा७–वि०हिंसक। पापी
हतकंडा—पु० हाथ की सफ़ाई। चालाकी।
हतछुट—वि० तुरंत मार-बैठने वाला।
हथफूल—पु० हाथ की पीठ पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना।
हथलेवा—पु० विवाह में पाणिग्रहण की रीति।
हथवास—पु० पतवार, डाँड़ आदि। [लेना।
हथवासना–सक्रि० हाथ में-
हथसार—पु० हस्तिशाला।
हथाहथी–अव्य० हाथों-हाथ
हथियाना—सक्रि० हाथ में करना।
हथियार–पु० शस्त्र। औज़ार
हथेरा—पु०पानी खींचने का एक औज़ार। [सीमा।
हद—स्त्री० (अ०) मर्यादा,
हदका—पु० धक्का।
हदफ़–पु० (अ०) निशाना।
हदीस—स्त्री० (अ०) मुसल-मानों का एक धार्मिक-ग्रंथ। नई बात।['हद' का।
हदूद—स्त्री० (अ०) बहु०
हनन६—पु० वध।
हनना–सक्रि० वध करना। प्रहार करना।
हननी–स्त्री० मारने वाली।
हनु—स्त्री० ठुड्डी, चिबुक।
हनुमंत, हनुमान्–पु० पवन-पुत्र महावीर।
हनोज़—क्रि० वि० (फ़ा०) अभी, अभी तक।
हफ़्त—वि० (फ़ा०) सात।
हफ़्तम–वि० (फ़ा०) सातवाँ।
हफ़्ता–पु० (फ़ा०) सप्ताह।
हफ़्ताद—वि० (फ़ा०) सत्तर।
हब–पुं० (अ०) दाना, बीज।
हबन्नक़—वि० (अ०) मूर्ख।
हबरहबर—क्रि० वि० जल्दी-जल्दी।
हबशी—पु० हबश देश का।
हबाब–पु० (अ०) बुलबुला।
हबीब—पु० (अ०) दोस्त। प्रेमी।
हबूड़ा–पु० ख़ानाबदोश जाति
हबूब—पु० (अ०) बुलबुला।
हब्बा—पु० (अ०) दाना।
रत्ती भर। [देश-प्रेम।
हब्बुलवतनी—स्त्री० (अ०)
हब्स–पु० (अ०) क़ैदख़ाना।
हब्सदम—पु० (अ० फ़ा०) प्राणायाम। दमा का रोग।
हम—प्रत्य० (फ़ा०) साथ, समान। क्रि०वि० परस्पर। भी। सर्व० (हिं०) बहु० 'मैं' का।
हमउम्र—वि० समवयस्क।
हमक़दम—वि० (फ़ा० अ०) साथी।
हम-कलाम२—वि० (फ़ा०) साथ में बातें करने वाला।
हम-क़ौम—वि० (फ़ा०) एक जाति का।
हम-चश्म—वि० (फ़ा०) बराबरी का दर्जा रखने-वाला। [एक भाषी-भाषी।
हमज़बान—वि० (फ़ा०)
हमजिंस—वि० (अ०) एक ही प्रकार का।
हमजुल्फ़–पु० (फ़ा०) साढ़ू
हमजोली–पु० साथी। स्त्री० सहेली।
हमता—स्त्री० अहंकार।
हमदम—पु० (फ़ा०) साथी, मित्र।
हमदर्द—वि० (फ़ा०) सहानुभूति रखने वाला।
हमदोसना—पु० तारीफ़।
हम-दीवार—वि० (फ़ा०) पड़ोसी। [समान पेशे वाला।
हमपेशा—वि० (फ़ा०)
हम-मकतब—वि० (फ़ा० अ०) सहपाठी।

हमराह—अव्य० (फ़ा०) साथ। वि० साथी।
हमल—पु० (अ०) गर्भ।
हमला—पु० (अ०) धावा।
हमला-आवर—वि० (अ० फ़ा०) आक्रमणकारी।
हमवतन—वि० (फ़ा० अ०) एक ही देश का।
हमवार वि० (फ़ा०) चौरस, समतल। क्रि० वि० सदा।
हमवारा—क्रि० वि० (फ़ा०) हमेशा। लगातार।
हमशक्ल—वि० (फ़ा० अ०) सूरत में मिलता-जुलता।
हमशीरा—स्त्री० (फ़ा०) बहिन। [सहपाठी।
हमसबक़—वि० (फ़ा० अ०)
हमसर२-वि०(फ़ा०)समान।
हमसाज़—पु०(फ़ा०) दोस्त।
हमसाया-पु०(फ़ा०) पड़ोसी।
हमा—वि० (फ़ा०) सब,कुल
हमा-तन—क्रि० वि० (फ़ा०) सिर से पैर तक, तमाम।
हमा-दाँ-वि० (फ़ा०) सर्वज्ञ।
हमाल—पु० (अ०) मज़दूर।
हमाशुमा—वि० साधारण।
हमेल—स्त्री० स्त्रियों के गले की सिक्कों की माला।
हमेव—पु० अहंकार।
हमेशा—क्रि० वि० (फ़ा०) सब दिन।
हम्द—स्त्री० (अ०) तारीफ़। ईश्वर-स्तुति।
हम्माम—पु० (अ०) स्नानागार जहाँ गर्म पानी रहताहै।
हयंद—पु० श्रेष्ठ घोड़ा।
हय४-७—पु० घोड़ा।
हयग्रीव—पु० विष्णु का एक अवतार। एक दैत्य।
हयन—पु० स्त्रियों के आने-जाने का डोला। वध। साल।
हयना—सक्रि० वध करना।
हयनाल—पु० घोड़े पर खींची जाने वाली तोप।
हया—स्त्री० (अ०) लज्जा।
हयात—स्त्री० (अ०) जीवन।
हयी—पु० घुड़सवार।
हर—वि० (फ़ा०) हरने वाला। प्रत्येक। (सं०) पु० शिव। हल। भिन्न में अंश के नीचे की संख्या।
हरउद—पु० गीत विशेष।
हरएँ—क्रि० वि० धीरे से।
हरकत—स्त्री०(अ०) गति। चेष्टा। बुरा-व्यवहार।
हरकना—सक्रि० रोकना।
हरकारा—पु० (फ़ा०) डाँकिया। दूत।
हरगाह—क्रि० वि० (फ़ा०) जब कभी। चूँकि।
हरगिज़—क्रि० वि० (फ़ा०) कदापि, कभी।
हरगुणी५—वि० गुणवान्।
हरचंद—क्रि० वि० (फ़ा०) बहुत बार।
हरजा—पु० हानि।
हरजाई—वि० (फ़ा०) अवारा। स्त्री० कुलटा स्त्री।
हरजाना-पु० (अ०)क्षतिपूर्ति
हर-दिल-अज़ीज़-वि० (फ़ा०) सर्व-प्रिय।
हरट्ट—वि० मज़बूत।
हरण्ड-पु० चुराना। छीनना
हरतेज—पु० पारा।
हरद—स्त्री० हल्दी।
हरना—सक्रि० छीनना। चुराना। पु० हिरन।
हरनौटा—पु०हिरन का बच्चा।
हरपा—पु० सिंधोरा।
हरबर—क्रि० वि० शीघ्र।
हरबा—पु० (अ०) अस्त्र-शस्त्र। आक्रमण।
हरबोंग—पु० मूर्ख।
हरम—पु० (अ०) ज़नानख़ाना। २खेज़ी स्त्री। काबे की चार-दीवारी।
हरम-सरा—स्त्री० (अ०) अंतःपुर।
हरवल—पु० दे० 'हरावल'।
हरवली—स्त्री० सेनाध्यक्षता।
हरवा-पु० हार। वि० हल्का
हरवाहा—पु० हल चलानेवाला।
हरवाही—स्त्री० हल चलाने का कार्य या उसकी मज़दूरी
हरवीर्य—पु० पारा।
हरसू-क्रि० वि० चारों ओर।
हरहा—वि० परेशान करने वाला।
हरहार—पु० सर्प।
हरा७—पु० सब्ज़। कच्चा। पु० हार। स्त्री० पार्वती।
हराना-सक्रि० परास्त करना
हराम—वि० (अ०) बुरा, निषिद्ध। पु० सूअर।
हरामख़ोर२-पु० मुफ़्तख़ोर।
हरामज़ादा-वि०(अ०फ़ा०)

दोग़ला। दुष्ट।
हरामी—वि० (अ०) ग़ैर माता-पिता से उत्पन्न। दुष्ट
हरारत-स्त्री० (अ०) हलका-ज्वर।
हरावल—पु० (तु०) सेना का अगला हिस्सा। अगुआ
हराहरि—स्त्री० थकावट।
हरि—पु० विष्णु। कृष्ण। बंदर। घोड़ा। सिंह। यम। सूर्य। चन्द्र। सर्प। पति।
हरिकीर्त्तन—पु० हरि का गुण-गान।
हरिगीतिका—स्त्री० २८ मात्राओं का एक छंद।
हरिचंदन—पु०एक चन्दन। चाँदनी। एक देव-वृक्ष।
हरिजन—पु० भगवद्भक्त। शूद्र (आधुनिक)।
हरिजान—पु० गरुड़।
हरिण७—पु० मृग, हिरण।
हरिणहृदय—वि० डरपोक।
हरिणाक्षी—स्त्री०मृग सदृश-सुन्दर नेत्रों वाली।
हरित—वि० हरा। [पन्ना।
हरितमणि—पु० मरकत।
हरिद्रा—स्त्री० हल्दी।
हरिधाम—पु० बैकुण्ठ।
हरिनग—पु० सर्पमणि।
हरिप्रिया—स्त्री० लक्ष्मी। तुलसी। पृथ्वी।
हरिबोधिनी—स्त्री० कार्तिक-शुक्ला एकादशी।
हरियाना-अक्रि०हरा होना
हरियाली—स्त्री० हरापन।
हरिवर्ष—पु० जंबु द्वीप का एक खंड।
हरिसौरभ—पु० कस्तूरी।
हरिहय—पु० इन्द्र।
हरिहित—पु० इन्द्र-वधू।
हरीतकी—स्त्री० हड़।
हरीतिमा—स्त्री० हरियाली।
हरीफ़—पु० (अ०) शत्रु।
हरीर—पु० (अ०) रेशमी-कपड़ा।
हरीरा—पु० (अ०) एक प्रकार का पतला हलुआ।
हरीस-वि० (अ०) लालची।
हरुअ, हरुआ—वि० हलका
हरू—वि० हलका।
हरूफ़—पु० (अ०) अक्षर।
हरें, हरैं—क्रि० वि० धीरे से
हरेरी—स्त्री० सब्ज़ी।
हर्ज—पु० (अ०) बाधा। हानि।
हर्त्तव्य—वि० लेने-योग्य।
हर्त्ता१०—पु० हरने वाला।
हर्फ़-गीर२—वि० (अ० फ़ा०) दोष देखने वाला।
हर्फ़-ब-हर्फ़—क्रि० वि० (अ०) अक्षरशः।
हर्म्य—पु० हवेली। अटारी।
हर्राफ़—वि० (अ०) धूर्त्त।
हर्ष—पु० ख़ुशी।
हर्षणद्द—पु० आनन्द।
हर्षवर्द्धन—पु० एक प्राचीन बौद्ध सम्राट्।
हर्षाना-अक्रि०प्रसन्न होना। सक्रि० प्रसन्न करना।
हर्षित—वि० प्रसन्न।
हर्सौहवा—पु०लोभ-लालच।
हलंत—पु० स्वरहीन-व्यंजन
हल—पु०खेत जोतने का यंत्र। (अ०) मुश्किल चीज़ को आसान करना तथा उसकी क्रिया।
हलकंप—पु० हलचल।
हलक़—पु० (अ०) कंठ।
हलकना—अक्रि० छलकना। हिलना। [छोटा। फीका।
हलका१-७—वि० घटिया।
हलक़ा—पुं० (अ०) मंडल। दल। वृत्त। परिधि।
हलचल—स्त्री० खलबली।
हलधर—पु० बलदेव।
हलफ़—पु० (अ०) शपथ।
हलबल—पु० हलचल।
हलब्बी—वि० हलब देश का, मोटा, बढ़िया (शीशा)।
हलराना—सक्रि० हिलाना-डुलाना।
हलवाई—पु० (अ०) मिठाई बनाने तथा बेचने वाला।
हलवाए-मग़ज़ी—पु० (अ० फ़ा०) बहुत मेवे का हलुआ।
हलाक—वि० (अ०) मारा-हुआ।
हलाकत-स्त्री०(अ०) विनाश
हलाकान२—वि० परेशान।
हलाभला—पु० नतीजा।
हलायुध—पु० बलराम।
हलाल-वि० (अ०) जायज़।
हलालख़ोर२—पु० मिहनत से पैदा करके खाने वाला। भंगी।
हलावत—स्त्री० (अ०) मिठास, स्वाद।
हलाहल—पु० तेज़-विष।

हली—पु० बलराम।
हलीम—वि० (अ०) सहनशील। [फटकना।
हलोरना—सक्रि० मथना।
हल्क़—पु० (अ०) गला। गर्दन। ज़बान, मुँह।
हवन६—पु०होम। [अफ़सर।
हवलदार—पु० एक फ़ौजी-
हवस—स्त्री० (अ०) तृष्णा। इच्छा। हौसला। [इच्छा।
हवा—स्त्री० (अ०) वायु।
हवाई—वि० (फ़ा०) हवा में उड़ने वाला। निर्मूल।
हवादार२—वि० (अ०फ़ा०) इच्छुक। प्रेमी। खुला-हुआ। सवारीविशेष।
हवा-परस्तर—वि० (अ० फ़ा०) इंद्रियों का सुख चाहने वाला।
हवाल—पु० (अ०) हाल।
हवाला—पु० (अ०) प्रमाण का उल्लेख। अधिकार।
हवालात—स्त्री० (अ०) नज़रबंदी।
हवाली—स्त्री० (अ०) आसपास का स्थान।
हवास—पु० (अ०) होश।
हवि—पु० हवन-सामग्री।
हविभुज—पु० अग्नि।
हविष्य—वि० हवन करने योग्य। पु० हवि।
हविष्यान्न—पु०यज्ञ के समय का भोजन। [मकान।
हवेली—स्त्री० बड़ा पक्का-
हव्य—पु० हवन-सामग्री।
हव्यवाहन—पु० अग्नि।
हव्वा—स्त्री० (अ०) मनुष्यों की आदि-माता।
हशमत—स्त्री० (अ०)बड़ाई।
हश्त—वि० (फ़ा०) आठ।
हश्र—पु० (अ०) क़यामत। शोक। हल्ला।
हसद—पु० (अ०) ईर्ष्या।
हसन६—पु० हँसना। वि० (अ०) उत्तम। पु० उत्त-मत्ता। मुसलमानों के दूसरे इमाम का नाम।
हसब—पु० (अ०) ननिहाल।
हसब-नसब—पु० (अ०) नाना तथा बाबा का कुल।
हसरत—स्त्री० (अ०) दिला-इच्छा। [हँसी किया गया।
हसित—वि० जो हँसा हो।
हसीन—वि० (अ०) सुंदर।
हसीर—पु० (अ०) चटाई।
हसील—वि० सीधा।
हस्त—पु० हाथ। सूँड़। स्त्री० (फ़ा०) जीवन। अस्तित्व।
हस्तक—पु० हाथ। ताल।
हस्तकौशल—पु० हाथ की कारीगरी।
हस्तक्रिया—स्त्री० दस्तकारी। हस्तमैथुन। [दख़ल देना।
हस्तक्षेप—पु० दस्तंदाज़ी,
हस्तगत—वि० प्राप्त।
हस्तत्राण—पु० हाथ का कवच। दस्ताना। [सफ़ाई।
हस्तलाघव—पु० हाथ की-
हस्तलिपि—स्त्री० लिखावट।
हस्तांरित—वि० एक हाथ से दूसरे हाथ में दिया हुआ।
हस्ताक्षर—पु० दस्तख़त।
हस्तामलक—पु० भलीभाँति-जाना हुआ विषय। आसान
हस्तिदंतक—पु० मूली।
हस्तिपाल—पु० महावत।
हस्ती५—पु० हाथी। स्त्री० (फ़ा०) अस्तित्व। संपत्ति।
हस्ते—अव्य० मारफ़त।
हस्ब—अव्य० (अ०) मुताबिक़
हहरना९—अक्रि० डर से काँपना। ईर्ष्या करना।
हाँकना—सक्रि० गरजना। ललकारना। खदेड़ना।
हाँगी—स्त्री० स्वीकृति।
हाँड़ी—स्त्री० मिट्टी या काँच की हँड़िया।
हाँता—वि०दूर किया हुआ।
हाँफना—अक्रि० तेज़ श्वास-लेना।
हाँसल—पु० एक घोड़ा।
हाँसी—स्त्री० दिल्लगी, मज़ाक़, परिहास। निंदा।
हाइफ़न—पु० (अं०) यह चिह्न (-)। [वि०(अं०) ऊँचा
हाई—स्त्री० तरीक़ा, ढंग।
हाईकोर्ट—पु० बड़ीकचहरी।
हाउस—पु० (अं०) घर।
हाऊ—पु० हौआ।
हाकिम२—पु० (अ०) शासक
हाजत—स्त्री० (अ०) ज़रूरत। इच्छा। [शक्ति।
हाज़मा—पु० (अ०) पाचन-
हाजरा—स्त्री० (अ०) ठीक दोपहर का समय (चील के अंडे देने का समय)।

हाज़ा—सर्व० (अ०) यह ।
हाज़िम—वि०(अ०) पाचक ।
हाजिर—वि० (अ०) हिजरत (भगना) वाला ।
हाज़िर–वि०(अ०) मौजूद ।
हाज़िरजवाबर—वि० (अ०) तुरंत उत्तर देने वाला ।
हाज़िरबाशर—वि० (अ० फ़ा०) उपस्थित रहने वाला।
हाज़िरी—स्त्री० (अ०) उपस्थिति ।
हाजी—पु० (अ०) जो हज कर आया हो । [निंदा-करने वाला ।
हाट—स्त्री० बाज़ार, दूकान ।
हाटक—पु० स्वर्ण । भाडा ।
हाटकपुर—पु० लंका ।
हाड—पु० हड्डी ।
हातव्य—वि०छोड़ने योग्य ।
हाता—पु० घेरा, बाडा ।
हातिम—वि० (अ०) उदार । चतुर । पु० अरब का एक प्रसिद्ध दानी । [वाणी ।
हातिफ़—पु० (अ०) आकाश-
हाथापाई—स्त्री० मारपीट ।
हाथीवान—पु० महावत ।
हादसा—पु० (अ०) दुर्घटना । नई बात । [कर्त्ता ।
हादिम—वि० (अ०) नाश-
हादिस—वि० (अ०) नया । नश्वर ।
हादी—पु० (अ०) हिदायत-करने वाला । नेता ।
हानि—स्त्री० नुक़सान ।
हाफ़िज़—पु० (अ०) जिसे क़ुरान कंठस्थ हो ।
हाफ़िज़ा—पु० (अ०) स्मरण-शक्ति । [गर्भवती ।
हामिला—वि० स्त्री० (अ०)
हामी—स्त्री० (अ०) स्वीकृति । वि० हिमायती ।
हामूँ—पु० (अ०) उजाड़-मैदान ।
हायतोबा—स्त्री० रोना-पीटना
हायन—पु० वर्ष ।
हार—स्त्री० पराजय । पु० माला । हाल । वि० (अ०) हरारत रखने वाला ।
हारक—पु० हरण करने वाला, चोर । हार ।
हारना—अक्रि० पराजित होना । [का पेड़ ।
हारसिंगार—पु० एक फूल-
हारिज—वि० (अ०) बाधक ।
हारित—पु० हरा रंग । वि० छीना हुआ ।
हारिल—पु० एक चिड़िया ।
हारीप—वि० हरण करने वाला
हारीत—पु० चोर, लुटेरा ।
हारूँ—पु० (अ०) दुष्ट घोड़ा। नेता । एक पैग़म्बर । बग़दाद के एक ख़लीफ़ा । दूत । रक्षक ।
हारूत—पु० (अ०) ज़ोहरा का प्रेमी एक फ़रिश्ता ।
हारौल—पु० सेना का अग्र-भाग [हृदय-संबंधी ।
हार्द—पु० स्नेह । वि०
हार्दिक–वि० हृदय का,सच्चा।
हाल—पु० (अ०) दशा । ब्यौरा । धक्का । अव्य० तुरंत ।
हालगोला—पु० गेंद ।
हालत—स्त्री० (अ०) दशा ।
हालते-नज़ा—स्त्री० (अ०) मरने के समय की दशा ।
हालना—अक्रि० हिलना ।
हालाँकि—अव्य० (अ०फ़ा०) यद्यपि, अगरचे ।
हाला—स्त्री० शराब । पु० (अ०) कुंडल । चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई पड़ने वाला मंडल । [‘हाल’ का ।
हालात—पु० (अ०) बहु०
हालाहल—पु० विष ।
हाली—क्रि० वि० शीघ्र ।
हाव–पु० नखरा, चोचला ।
हावन—स्त्री० (अ०) लोहे की दवा आदि कूटने का पात्र ।
हावभाव—पु०नाज-नखरा ।
हावी—वि० (अ०) वश में रखने वाला । चतुर ।
हाशिया—पु० (अ०) किनारा, गोट ।
हासन, हास्य—पु० हँसी, दिल्लगी । [ईर्ष्यालु ।
हासिद—वि० (अ०)
हासिल—वि० (अ०) प्राप्त । पु० उपज ।
हासिल-जमा—पु० (अ०) जोड़, मीज़ान । [योग्य ।
हास्यास्पद—पु० हँसी के-
हाहाकार—पु० कुहराम ।
हाहूबेर—पु० जंगली बेर ।
हिंकार–पु०गाय का रँभाना।

हिंगु—पु० हींग।
हिंगोट—पु० इंगुदी वृक्ष।
हिंडोला७—पु० झूला।
हिंद*—पु० हिंदोस्तान।
हिंदवी—स्त्री० हिंदी भाषा।
हिंदी—वि० भारतीय। स्त्री० भाषा विशेष। [या धर्म।
हिंदुत्व—पु० हिंदू का भाव-
हिंदुस्तान८—पु० भारतवर्ष।
हिंदुस्तानी—पु० हिंदुस्तान का निवासी। स्त्री० हिंदुस्तान की भाषा। वह भाषा जो महा० गाँधी की योजना के अनुसार हिन्दी, उर्दू के योग से बनी है।
हिंदू—पु० आर्यधर्मावलंबी। (अ०) हिन्दसा का ज्ञाता, गणितज्ञ।
हिंदोल—पु० हिंडोला।
हिंसक—पु० हत्यारा।
हिंसन६—पु० हिंसा।
हिंसना—अक्रि० हिन-हिनाना। सक्रि० सताना।
हिंसा—स्त्री० जीववध।
हिंसालु—वि० हिंसक।
हिंस्र, हिंस्रक—वि० खूँख़ार
हिकमत८—स्त्री० (अ०) युक्ति। कला। विद्या। हकीमी।
हिकमत-अमली—स्त्री० (अ०) होशियारी। कूटनीति।
हिकायत—स्त्री० (अ०) कहानी, क़िस्सा।
हिक़ारत—स्त्री० (अ०) घृणा।
हिचकना, हिचकिचाना—अक्रि० हिचकी लेना। आगा-पीछा करना।

हिजड़ा—पु० नपुंसक।
हिजरत—पु० (अ०) देश छोड़ना
हिजराँ—पु० (अ०) वियोग।
हिजरी—स्त्री० मुसलमानी सन्। मुहम्मद साहब का मक्का छोड़ कर मदीना जाना। [ओट। लज्जा।
हिजाब—पु० (अ०) परदा।
हिज्जे—पु० (अ०) बरतनी।
हिज्र—पु० (अ०) जुदाई।
हित३—पु० लाभ। प्रेम।
हितकर, हितकारी, हितकारक—पु० भलाई करनेवाला, उपयोगी
हितचिंतक—पु० हितैषी।
हितचिंतन—पु० मंगल-कामना। [कहने वाला।
हितवादी—वि० भले की-
हिताना—अक्रि० अच्छा लगाना।
हिताहित—पु० लाभ-हानि।
हिती, हितू—पु० ख़ैरख़ाह।
हितेच्छु—वि० शुभचिंतक।
हितैषणा—स्त्री० भलाई।
हितैषिता—स्त्री० शुभचिंतना
हितैषी५—पु० हितू, मित्र।
हितोपदेश—पु० भली सीख।
हिदायत—स्त्री० (अ०) आदेश
हिदायत-नामा—पु० (अ० फ़ा०) हिदायतें लिखा हुआ पत्र।
हिनहिनाना—अक्रि० हींसना
हिना—स्त्री० (अ०) मेंहदी।
हिनाई—वि० (अ०) मेंहदी का सा लाल।
हिफ़ाज़त—स्त्री० (अ०) रक्षा।
हिफ़्ज़—क्रि० वि० (अ०) कंठस्थ, ज़बानी। [रक्षा।
हिफ़्ज़े-सेहत-पु० (अ०) स्वास्थ्य-

हिब्बा—पु० (अ०) दान, इनाम। [दानपत्र।
हिब्बानामा—पु० (अ० फ़ा०)
हिमंचल—पु० हिमालय।
हिम—पु० बर्फ़। जाड़ा।
हिमकूट—पु० शिशिर-ऋतु।
हिमउपल—पु० ओला, पत्थर।
हिमकर, हिमकरण, हिम-भानु—पु० चन्द्रमा।
हिमयानी—स्त्री० (अ०) कमर में बाँधने की रुपये-पैसे रखने की थैली।
हिमांशु—पु० चन्द्रमा।
हिमाकत—स्त्री० (अ०) मूर्खता
हिमाचल—पु० हिमालय।
हिमामदस्ता—पु० लोहे का खरल विशेष। [पक्षपात।
हिमायत८—स्त्री० (अ०)
हिम्मत८—स्त्री० (अ०) साहस।
हिय, हियरा—पु० हृदय।
हियाव—पु० साहस। [जाना
हिरकना९—अक्रि० निकट-
हिरण्य—पु० स्वर्ण।
हिरण्यगर्भ—पु० ब्रह्मा, विष्णु
हिरण्यनाभ—पु० विष्णु।
हिरण्यमय—पु० स्वर्ण-निर्मित। पु० ब्रह्मा।
हिरण्यरेता—पु० अग्नि। सूर्य। शिवजी। [बच्चा।
हिरनौटा—पु० हिरन का-
हिरफ़त—स्त्री० (अ०) पेशा। हुनर। चालाकी।
हिरफ़ा—पु० (अ०) कारीगरी।
हिरमज़ी—स्त्री० (अ०) एक लाल मिट्टी।
हिराना—अक्रि० खो जाना।

हिरावल—पु० सेना का अग्रभाग। [स्मेदी।
हिरास—स्त्री० (अ०)नाउ-
हिरासत—स्त्री० (अ०)पहरा। नज़रबंदी। [भीत।
हिरासां—वि० (फ़ा०) भय-
हिर्स—स्त्री०(अ०)लालच।स्पर्द्धा।
हिलकी—स्त्री० हिचकी।
हिलकोरा—पु० हिलोर।
हिलग—पु०अथाह-प्रेम।
हिलगना१—अक्रि० उरझना
हिलना१—अक्रि० काँपना, डोलना।
हिलसा—स्त्री० मछली विशेष
हिलाल—पु० (अ०) दूज का चाँद।
हिलार—स्त्री० तरंग।
हिसका—पु० स्पर्द्धा, ईर्ष्या।
हिसाब—पु० (अ०)लेखा। गणित। दर।
हिसार—पु०(अ०) क़िला। नगर का परकोटा।
हिस्सा—पु०(अ०)टुकड़ा,भाग।
हिस्सा रसद—क्रि० वि० (अ० फ़ा०) हिस्से के मुताबिक़।
हिस्सेदार२—वि०(अ०फ़ा०) किसी हिस्से का मालिक।
हींसना—अक्रि०हिनहिनाना
हीक—स्त्री०दुर्गंध।
हीन३—वि० रहित। घटिया। क्षुद्र। पु०(अ०) समय। [जाति का।
हीनयोनि—पु० नीच-
हीनवर्ण—वि० नीच।
हीनवाद—पु० मिथ्या-कथन
हीनवीर्य्य—वि० कमज़ोर।
हीनहयात—स्त्री० (अ०) जीवनकाल।
हीनार्थ—वि० असफल।
हीर—पु० हीरा। सार-भाग। गूदा।
हीरक, हीरा—पु० एक रत्न
हीरकजयंती—स्त्री० किसी घटना का साठ वर्ष या उसके बाद में मनाया जाने वाला उत्सव।
हीराकसीस—पु० लोहे का विकृत रूप जो औषधादि के काम आता है।
हीला—पु० (अ०) बहाना।
हीसका—स्त्री० होड़।
हुंकार—पु० ललकार, गर्जन
हुँकारी—स्त्री० स्वीकृति।
हुँडार—पु० भेड़िया।
हुंडी—स्त्री० चेक।
हुँत—प्रत्य० से। लिये।
हुक—पु०टेढ़ी कँटिया।
हुकना—पु० (अ०) गुदा के मार्ग से दस्त लाने के लिए दवा चढ़ाना, वस्ति-कर्म।
हुक़ूक़—पु० (अ०) बहु० 'हक़' का। [शासन।
हुकूमत—स्त्री०(अ०) प्रभुत्व।
हुक़्क़ा—पु० (अ०) गड़गड़ा।
हुक्क़ाबरदार—वि० (अ० फ़ा०) हुक़्क़ा भरने तथा पिलानेवाला।['हाकिम का।
हुक्काम—पु०(अ०) बहु०
हुक्म—पु० (अ०) आज्ञा।
हुक्म-अंदाज़—वि० (अ० फ़ा०) अचूक-निशाना-लगाने वाला।
हुक्मनामा,—पु० (अ० फ़ा०) आज्ञापत्र,फ़रमान।
हुक्मबरदार—पु० (अ० फ़ा०) आज्ञाकारी।
हुक्मराँ—वि० (अ० फ़ा०) हुक्म देने वाला,शासक।
हुक्मरानी—स्त्री० (अ० फ़ा०) राज्य, शासन।
हुक्मी—वि० (अ०) अचूक।
हुजूम—पु० (अ०) भीड़।
हुज़ूर—पु० (अ०) स्वामी। सामने होना। बड़े लोगों के संबोधन का शब्द। बादशाह या हाकिम का दरबार। [श्रीमान्।
हुज़ूर-वाला—पु० (अ०)
हुज़ूरी—पु० (अ०) सेवा में रहने वाला नौकर। वि० सरकारी। पु० सामीप्य, निकटता।
हुज्जत—स्त्री० (अ०) झगड़ा। व्यर्थ-तर्क।
हुड़का—पु० वियोग व्यथा।
हुड़काना—सक्रि० तरसाना।
हुत—वि०हवन किया हुआ।
हुतभुक्—पु० अग्नि।
हुताशन—पु० अग्नि।
हुति—स्त्री० हवन।
हुदकाना—सक्रि०उभाड़ना।
हुदूद—स्त्री० (अ०) बहु० 'हद' का। [चौहद्दी।
हुदूद-अरबा—पु० (अ०)
हुन—पु० अशरफ़ी, सोना।
हुनर—पु०(फ़ा०) कला, गुण।

हुनर-मंद—वि० (फ़ा०) गुणी। ['हिन्दू' का।
हुनूद—पु० (अ०) बहु०
हुब—स्त्री० (अ०) प्रेम। दोस्ती। चाह।
हुबाब—पु० (अ०) पानी का बुलबुला। छत आदि में लटकाया जाने वाला शीशे का गोला।।
हुब्ब—पु० (अ०) प्रेम।
हुब्ब-उल्-वतनर—स्त्री० (अ०) देश-प्रेम।
हुमकना—अक्रि० उछलना।
हुमसाना—सक्रि० उठाना।
हुमा—स्त्री०एक फ़र्ज़ी पक्षी।
हुमायूँ—वि० (फ़ा०) शुभ। पु०अकबर का पिता।
हुरमत—स्त्री०(अ०) इज्ज़त।
हुलकी—स्त्री०वमन, कै।
हुलसना९—अक्रि० ख़ुश होना। शोभित होना।
हुलसी—स्त्री० उल्लास।
हुलाना—सक्रि० चुभाना।
हुलास—पु०उमंग, उल्लास। सुँघनी।
हुलिया—पु० (अ०)आकृति, रूपरेखा। गहना।
हुल्लड़—पु० शोर-गुल।
हुसैन—पु० (अ०) मुहम्मद साहब के दामाद अली के लड़के।
हुस्न—पु० (अ०)सौन्दर्य्य।
हुस्नदान—पु० (अ० फ़ा०) एक प्रकार का छोटा पानदान। [सुंदरता का प्रेमी।
हुस्नपरस्तर—पु०(अ०फ़ा०)
हुस्नशिनास—पु० सुन्दरता का उपासक।
हुस्नेमहफ़िल—पु० (अ०) एक प्रकार का हुक़्क़ा।
हूँकना—अक्रि० गर्जना।
हूँठ—वि० साढ़े तीन।
हूँठा—पु० साढ़े तीन का पहाड़ा।
हू—पु० (अ०) ईश्वर का एक नाम। हिं० डर। (अव्य०) भी।
हूक—स्त्री० दर्द, कसक।
हूकना—अक्रि० दर्द होना।
हूटना—अक्रि० मुड़ना। हटना।
हूति—स्त्री० बुलावा।
हूदा—वि० (फ़ा०) ठीक।
हूनना—सक्रि० आग में डालना, झोंकना।
हूबहू—वि० (अ०) वैसा ही
हूर—स्त्री०(अ०) परी। वि० बहुत सुन्दर। [कोलाहल।
हूल—स्त्री० कसक, पीड़ा।
हूश—वि० असभ्य।
हूह—स्त्री०हुंकार।
हूहू—पु० एक गन्धर्व।
हृत—वि०हरण किया हुआ।
हृत्कंप—पु०हृदय को धड़कन
हृत्पिंड—पु० कलेजा।
हृदयंगम—वि० हृदय में बैठा हुआ।
हृदय—पु० उर, दिल।
हृदयग्राही५—पु० मन को मुग्ध करने वाला।
हृदयनिकेत—पु० कामदेव।
हृदयस्पर्शी—वि० हृदय पर प्रभावडालने वाला।
हृदयहारी५—वि० चित्ताकर्षक। [प्यारा। पति।
हृदयेश, हृदयेश्वर७—पु०
हृद्गत—वि० आंतरिक।
हृद्धाम—पु० हृदय।
हृषीक—पु० इन्द्रिय।
हृषीकेश—पु० विष्णु, कृष्ण।
हृष्ट—वि० प्रसन्न।
हृष्टपुष्ट—वि० मोटा-ताज़ा। प्रसन्न और स्वस्थ।
हृष्टि—स्त्री० प्रसन्नता।
हेंगा—पु० खेत बराबर करने का पटला।
हेकड़र—वि० ज़बरदस्त।
हेच—वि० (फ़ा०) तुच्छ।
हेच-कस—वि० (फ़ा०) निकम्मा। [२वि० तुच्छ।
हेठ—क्रि० वि० नीचे।
हेठा७—वि० तुच्छ, क्षुद्र।
हेठी—स्त्री०मानहानि।
हेड—पु० (अं०) सिर। प्रधान।
हेति—स्त्री०शस्त्र। आग की लपट। सूर्य का तेज। पु० संबंधी।
हेतु—पु० कारण। तर्क।
हेतुवाद८—पु० तर्क-विद्या। नास्तिकवाद। [कारण-भाव
हेतुहेतुमद्भाव—पु० कार्य्य-
हेत्वाभास—पु० जो देखने में कारण सा प्रतीत हो।
हेमंत—पु० शरद-ऋतु।
हेम—पु० हिम। सुवर्ण।
हेमकार—पु० सुनार।
हेममाली—पु० सूर्य।

हेमांगद—पु० सोने का बिजायठ।
हेमा—स्त्री० (फ़ा०) ईंधन।
हेमाद्रि—पु० सुमेरु-पर्वत।
हेमियानी—स्त्री० कमर में बाँधने की रुपयों की थैली।
हेय—वि० त्याज्य। पु० हृदय।
हेरंब—पु० गणेश जी।
हेर—स्त्री० तलाश। [देखना।
हेरना—सक्रि० खोजना।
हेरफेर२—पु० अदल-बदल।
हेरिक—पु० भेदिया।
हेरी—स्त्री० पुकार।
हेलना-अक्रि० क्रीड़ा करना।
हेलमेल—पु० घनिष्टता।
हेला—स्त्री० अवज्ञा। क्रीड़ा। पु० मेहतरों की एक जाति।
हेलाल—पु० दूज का चाँद।
हेलिनी—स्त्री० मेहतरानी।
हेली—स्त्री० सहेली।
हैकल—पु० गले का एक गहना। [मासिक-धर्म।
हैज़—पु० (अ०) स्त्रियों का-
हैज़ा—पु० (अ०) कै और दस्त की बीमारी।
हैज़ान—पु० (अ०) जोश। वेग। [दोग़ला।
हैज़ी—वि० (अ०) दुष्ट।
हैट—पु० (अं०) टोप।
हैफ़—पु० (अ०) अफ़सोस। ज़ुल्म।
हैबत—स्त्री० (अ०) भय।
हैबतज़दा—वि० (अ० फ़ा०) भयभीत।
हैबत-नाक—वि० (अ० फ़ा०) भयानक।
हैबर—पु० अच्छा घोड़ा।
हैम—त्रि० स्वर्णमय। पु० हिम-संबंधी।
हैमवती—स्त्री० पार्वती। गंगा।
हैरत—स्त्री० (अ०) आश्चर्य।
हैरान२—वि० (अ०) परेशान
हैवान२—पु० (अ०) पशु। प्राणी। मूर्ख। उजड्ड।
हैसियत—स्त्री० (अ०) सामर्थ्य। प्रतिष्ठा। दर्जा। संपत्ति। [एक क्षत्रिय-वंश।
हैहय—पु० यदु से उत्पन्न-
होंठी—स्त्री० किनारा।
होटल—पु० (अं०) भोजनालय।
होड़—स्त्री० शर्त। प्रतिस्पर्धा
होड़ाहोड़ी—स्त्री० लागडाँट।
होतव्य—वि० होनहार।
होता१०—पु० हवनकर्त्ता।
होनहार—स्त्री० होनी। वि० भावी उत्कर्ष का सूचक।
होनी—स्त्री० उत्पत्ति। भावी।
होम८—पु० हवन।
होमना—सक्रि० हवन करना। त्याग करना।
होमियोपैथी—स्त्री० (अं०) एक चिकित्सा-पद्धति।
होरिल—पु० नवजात-शिशु।
होरिहार७—पु० होली खेलने वाला।
होरी, होलिका, होली—स्त्री० होली का त्योहार।
होला—पु० फली समेत सेंके हुए चने।
होलाष्टक—पु० होली के पहले के आठ दिन।
होल्डर—पु० (अं०) क़लम।
होश—पु० (फ़ा०) चेतना।
होशियार२—वि० (फ़ा०) धूर्त्त। चतुर।
होस्टल—पु० (अं०) छात्रालय
हौंस—स्त्री० उमंग। इच्छा।
हौज़—पु० (अ०) कुंड।
हौदा—पु० हाथी का आसन
हौरे-हौरे—क्रि० वि० धीरे-धीरे
हौल—पु० (अ०) भय, घबराहट।
हौलखौल—स्त्री० शीघ्रता।
हौलदिल—पु० (अ० फ़ा०) कलेजे की धड़कन।
हौलदिला२—वि० (अ०) डरपोक।
हौली—स्त्री० शराब की दूकान
हौवा—स्त्री० सबसे पहली स्त्री जो हज़रत आदम की स्त्री थी। [उत्कंठा।
हौसला—पु० (अ०) इच्छा।
ह्यो—पु० हृदय।
ह्रद—पु० ताल। झील।
ह्रदिनी—स्त्री० नदी।
ह्रसित—वि० घटाया हुआ।
ह्रस्व३—वि० छोटा, लघु।
ह्रादिनी—स्त्री० वज्र।
ह्रास—पु० कमी, घटती।
ह्री—स्त्री० लज्जा।
ह्लाद—पु० आनन्द।
ह्लादन—पु० प्रसन्न करना।
ह्लादित—त्रि० प्रसन्न।
ह्लादिनी—स्त्री० बिजली

परिशिष्ट

अदालती उर्दू शब्द हिन्दी में

अ० इ० ए० ऐ० औ

अक़ली—वि० युक्ति-संगत।
अख़लाक़ी—वि० नैतिक।
अजज़ा—पु० अवयव।
अज़रुए-क्रि० वि० अनुसार।
अज़रुए-क़ानून—वि० विधानानुसार।
अतिया—पु० दान।
अदना—वि० साधारण।
अदमहाज़िरी—स्त्री० अनुपस्थिति।
अदल—पु० व्यवस्था।
अदालत-आला—स्त्री० उच्च-न्यायालय।
अदालत-ख़फ़ीफ़ा—स्त्री० लघुवाद न्यायालय।
अदालत-दीवानी—स्त्री० सम्पत्ति संबंधी-न्यायालय।
अदालत-फ़ौजदारी—स्त्री० दण्ड-न्यायालय।
अदालत-माल—स्त्री० राजस्व-न्यायालय। [न्यायालय।
अदालत-सालसी-स्त्री० पंच-
अदालत-सेशन—स्त्री० सत्र-न्यायालय।
अबतरी—स्त्री० दुर्दशा।
अमर-बादिही—वि० स्वयं-सिद्ध।

अमल—पु० व्यवहार, प्रयोग।
अमल-दरामद—पु० व्यवहार।
अम्र-मफरूज़ा—पु० काल्पनिक-विषय।
अयानत—पु० प्रोत्साहन।
अरायज़-नवीसर—पु० नीतिपत्र-लेखक।
अर्ज़—पु० भूमि-प्रार्थना।
अर्ज़ी—स्त्री० भूमिसंबंधी। प्रार्थनापत्र।
अर्ज़ीदावा—पु० स्वत्व-प्रार्थना
अर्दली—पु० दौवारिक।
अलल-तरतीब—क्रि० वि० यथाक्रम।
अलहदगी—स्त्री० पृथक्त्व।
अलातीभाई—पु० वैमात्रेय-भाई। [वैकल्पिक।
अलासबील-उल-बदल—वि०
असनाद-मिल्कियत—स्त्री० स्वत्वाधिकार-पत्र।
असासा—पु० मालमत्ता।
अहतमाल—पु० शंका।
अहम—वि० महत्वपूर्ण।
अहमियत—स्त्री० महत्व।
अहले-मुक़दमा—पु० पक्षकार।
अहलियान ख़ानदान—पु० कुटुम्बी।

अहसास—पु० आभास
आदतन्—क्रि० वि० स्वभावतः। [प्रकोप।
आफ़त-नागहानी—स्त्री० दैवी-
आफ़त-समावी—स्त्री० आकाशी आपत्ति।
आबाओ-इजदार—पु० पूर्वज।
आम इश्तहार—पु० सार्व-जनिक सूचना। [जाने वाले।
आयन्द-रवन्दगान—पु० आने-
आरज़ी—वि० अस्थायी।
आराज़ी—स्त्री० भूमि।
आराज़ी-ग़ैर-दख़लिकारी—स्त्री० अस्थायी-जोत।
आराज़ी-दख़ीलकारी—स्त्री० चिरस्थायी-जोत।
आराज़ी-साक़ितुल-मिल्कियत—स्त्री० स्वामि-त्यक्त-जोत।
आरिज़ी—वि० ऊपरी।
आलम-ज़ईफ़ी—पु० बुढ़ापा।
आल-औलाद—स्त्री० संतान।
आलातरीन—वि० सर्वोच्च।
इकतरफ़ा—वि० एक पक्षीय।
इक्तजाए-राय—स्त्री० विवेक।
इकदाम—पु० प्रयत्न।
इक़बाल-दावा—पु० स्वत्व-स्वीकार।

नोट—अरबी, फ़ारसी (उर्दू) के अधिकांश-शब्द इसी कोश के अन्दर यथा स्थान हैं।

इक़रार—पु० प्रतिज्ञा ।
इख़राज़ात—पु० बहु०व्यय ।
इख़लाक़—पु० शिष्टाचार।
इजबार—पु० दबाव ।
इजरा—पु० प्रवर्त्तन ।
इज़हार—पु० कथन ।
इजाले-हैसियत-उर्फ़ी—पु० मानहानि ।
इजाज़त-नामा—पु०आज्ञापत्र।
इजाज़तनामा-तबनियत—पु० गोद का आज्ञापत्र ।
इत्तिफ़ाक़-नागुज़ीर—पु० अचानक-आपत्ति ।
इनफ़िक़ाक़-रेहन—पु० बंधक-त्याग ।
इन्तज़ामिया—वि०प्रबन्धक ।
इन्तकाल-कुनिन्दा—पु० हस्तांतरकर्त्ता।
इन्तख़ाब-कुनिन्दा—पु० निर्वाचक । [कारिणी।
इन्तज़मिया—वि०स्त्री०प्रबन्ध-
इन्तहाई—वि० अधिकतम।
इन्दुलतलब—क्रि०वि० माँगने-पर । [स्वत्व।
इमकानी-हक़—पु० सम्भव-
इरादतन्—क्रि० वि० जान-बूझ कर ।
इर्स—पु० पैतृक-सम्पत्ति।
इल्मे-सियासत—पु०राजनीति
इस्तग़ासा—पु०अभियोग ।
इस्तबाती—वि० अर्थापत्ति-जनक ।
इस्तसना—स्त्री० अस्वीकार ।
इस्तिलाही—वि०पारिभाषिक ।
इस्तेदाद—पु० सामर्थ्य ।
ईजाब—पु० प्रस्ताव ।

उनवान—पु० शीर्षक ।
उमूमियत—स्त्री०व्यापकता ।
एक मुश्त—वि० इकट्ठा ।
एजाज़—पु० मान ।
औल—स्त्री० वृद्धि ।
औलाद-अनास—स्त्री० पुत्री-संतति ।
औलाद-ज़कूर—स्त्री० पुत्र-संतति ।

क

कंदा—वि० अंकित ।
क़तई—अव्य०सर्वथा ।
क़ब्ज़ा-आराज़ी—भूमि-अधिकार ।
क़ब्ज़ा-वाक़ई—पु०वास्तविक-अधिकार ।
क़ब्ज़ा-मूरिस—पु०पैतृक-ऋण।
क़ब्ल-अज़-वक़्त—क्रि० वि० समय से पूर्व।
कम-अज़-कम—वि०न्यूनतम ।
क़रारदाद—पु० निश्चय ।
क़रीनेमसलहत—वि०उचित।
कल-अदम—वि०व्यर्थ ।
क़लमज़द—पु० मिटाना ।
कसरत—स्त्री० अधिकता ।
कसरतराय—स्त्री० बहुमत।
कसीरुल-तादाद—वि० बहु-संख्यक ।
कातिब-दस्तावेज़—पु० कर्णिक
क़ानून-असली—पु० मूल-विधान।
क़ानून-मुख़्तस्सुल-वक़्त—पु०सामयिक-विधान ।
क़ानून-साज़ी—स्त्री० विधान-निर्माण ।

क़ानूनी—वि० वैधानिक,वैध।
क़ाबिलअमल—वि० साध्य ।
क़ाबिल एतबार वि० विश्वासनीय ।
क़ाबिल-ऐतराज़—वि०आपत्ति-जनक ।
क़ाबिल-नालिश—वि० व्यवहार्य । [योग्य ।
क़ाबिल-नफ़ाज़—वि०व्यवहार-
क़ाबिल पाबन्दी—वि० माननीय । [विचारणीय ।
क़ाबिल-लिहाज़—वि०
क़ाबिल-वसूल—वि० प्राप्त-योग्य ।
क़ाबिल-सज़ा—वि० दंडनीय।
क़ायम-मुक़ाम—पु०प्रतिनिधि।
क़ायमी—स्त्री०स्थिति ।
कारगुज़ार—वि० दक्ष ।
कारिंदा—पु० कार्यभारी ।
काल-अदम—वि०प्रचार के योग्य ।
काश्तकार-ग़ैर-दख़ीलकार—पु० अस्थायी-कृषक ।
काश्तकार-दख़ीलकार—पु० चिरस्थायी कृषक।
काश्तकार-ग़ैर-मौरूसी—पु० अस्थायी-कृषक।
काश्तकार-मौरूसी—पु० चिरस्थायी कृषक ।
काश्तकार-साक़ितुल-मिल-कियत—पु० भूमिस्वत्व-त्यक्त-कृषक। [रूप से।
किनायतन्—क्रि० वि०अप्रत्यक्ष-
क़ासिद—पु० वाहक ।
क़िफ़ायतशारी—स्त्री० मित-व्ययता ।

किफ़ालत—स्त्री०आड़ ।
किफ़ालत-नामा-पु०आड़-पत्र
क़िस्त—स्त्री० अंशांश ।
क़ुतबा—पु० लेख ।
क़ुतबा-क़ब्र—पु०समाधि-लेख ।
क़ुरा—पु०(अ०)भाग ।वर्ग ।
क़ुर्क़ी—स्त्री० आसेध ।
क़ैद-महज़-स्त्री० कारावास ।
क़ैद बा-मशक़्क़त-स्त्री०
सपरिश्रम-कारावास ।
कैफ़ियत—स्त्री० विवरण ।
क़ौलनामा—पु०प्रतिज्ञा-पत्र।

खग

ख़तरनाक—वि० भयप्रद ।
ख़यानत-स्त्री० विश्वासघात।
ख़सरा-पु० क्षेत्र-पुस्तक ।
ख़ानदान-मुनक़सिमा-पु०
विभक्त-कुल । [भक्त कुल।
ख़ानदानमुश्तर्का—पु०अवि-
ख़ाना—पु० कोष्ठ ।
ख़ालिस-मुनाफ़ा-पु० शुद्धलाभ
ख़िलाफ़-क़ानून—वि० नीति-
विरुद्ध ।
ख़िलाफ़-तहज़ीब—वि०
अशिष्ट । [स्वाधीनता ।
ख़ुद-इख़्तियारी—स्त्री०
ख़ुद-काश्त—स्त्री० निजी खेती
ख़ुदादाद-हक़—पु० ईश्वर-
प्रदत्त-स्वत्व ।
ख़ुरो-नोश—पु० खान-पान ।
ख़ैरात—वि० धर्मादाय ।
ग़ज़ब-इलाही—पु० दैवी-
प्रकोप । [असावधानी ।
ग़फ़लत-शहीद—स्त्री० घोर-
ग़बन—पु० चोरी ।
ग़र्क़आब—वि० जलमग्न ।
ग़लत-इन्दराज—पु० मिथ्या-
लेख । [कथन ।
ग़लत-बयानी—स्त्री०मिथ्या-
गवाहचश्मदीद-पु० प्रत्यक्ष-
दर्शी साक्षी । [साक्षी।
गवाहसरकारी—पु० राज-
गश्ती-हुक्म—पु० प्रसिद्धि-
पत्र ।
गायकुशी—स्त्री० गोवध ।
गिरफ़्तारी—स्त्री०बन्दीकरण
गिरोह—पु० संघ, टोली ।
गुस्ताख़ी—स्त्री० धृष्टता ।
ग़ैर-अहम—वि०महत्व-हीन
ग़ैर-काफ़ी—वि०अपर्याप्त ।
ग़ैर-ज़रूरी—वि०अनावश्यक।
ग़ैर-तरफ़दारी—स्त्री० निष्प-
क्षता ।
ग़ैर-महदूद—वि० असीमित ।
ग़ैर-मुअय्यन—वि० अनि-
निश्चित । [वाद ।
ग़ैर-मुतनाज़ा—वि० निर्वि-
ग़ैर-ज़रई—वि० बे जुतऊ ।
ग़ैर-मज़रूआ—वि०बेजुतऊ ।
ग़ौर-परदाख़्त—पु०देखभाल।

चजड

चंदा—पु० अंशदान ।
चरागाह-स्त्री० पशु-चारन-
भूमि ।
चश्मपोशी—स्त्री० उपेक्षा।
चाराजोई—स्त्री० उपाय ।
चालू—वि० प्रचलित ।
ज़ईफ़-उल-उम्र—वि० वृद्ध।
ज़ईफ़-उल अक़्ल-पु०दुर्बलमति
जनून—पु०पागलपन ।
ज़ब्त—पु० नियंत्रण ।
जब्र-पु०बल। हिंसा । वेग ।
दबाव ।
ज़मानत-स्त्री०लग्नक,प्रतिभूति
ज़मानत-नामा-पु०लग्नक-
पत्र ।
ज़माना-मुस्तक़बिल—पु०
भविष्यत्काल । [काल।
ज़मानाहाल—पु० वर्तमान-
ज़रई—वि० जुतऊ ।
ज़र-पेशगी-पु०अग्रिम-द्रव्य ।
ज़र-रसदी-पु०परता का धन।
ज़रिया-माश—पु० आजी-
विका ।
ज़रेख़रीद—पु० क्रयधन ।
जलसा—पु० अधिवेशन ।
जवाबदावा—पु० प्रत्युत्तर ।
ज़हन-नशीन-वि०हृदयंगम ।
ज़ात—स्त्री० व्यक्तित्व ।
जा नशीन-वि० स्थानापन्न ।
ज़ाब्ता-दीवानी-पु० आर्थिक-
व्यवहार-विधान ।
ज़ाब्ता-फ़ौजदारी—पु० दंड-
विधान । [त्रिचौजिया।
ज़ामिन—पु० प्रतिभू,
ज़ामिन-शरीक-वि० सह-
प्रतिभू । [सम्मति ।
जायदाद अमानत-स्त्री० न्यास-
जायज़—वि० उचित ।
जायदाद-आबाई-स्त्री०पैतृक-
सम्पत्ति ।
जायदाद-आयन्दा—स्त्री०
आगामी-सम्पत्ति ।
जायदाद-आराज़ी—स्त्री०भू-
सम्पत्ति।
जायदाद-इजमाली—स्त्री०
संयुक्त सपत्ति ।
जायदाद इस्तमरारी—स्त्री०

स्थायी-भू-सम्पत्ति।
जायदाद-ज़रई—स्त्री० जुतऊ-सम्पत्ति। [रहित-भूमि।
जायदाद-मुआफ़ी—स्त्री०कर-
जायदाद-मुतनाज़आ—स्त्री० विवाद-ग्रस्त-सम्पत्ति।
जायदाद-मुनक़समा—स्त्री० विभक्त-सम्पत्ति।
जायदाद-मुश्तर्का—स्त्री० संयुक्त-सम्पत्ति।
जायदाद-मौजूदा—स्त्री० वर्त्तमान-सम्पत्ति।
जायदाद-सकनी—स्त्री० रहायशी-सम्पत्ति।
ज़िना-बिलजब्र—पु० बलात्कार। [प्राप्त।
ज़ी-इख़्तियार-वि०अधिकार-
जुज़—पु०अंश। [भाग।
जुज़-मज़ीद—पु० अतिरिक्त-
जुर्म-क़ाबिल-दस्तंदाज़ी—पु० हस्तक्षेप-योग्य-अपराध।
ज़ेर-निगरानी—वि० निरीक्षणाधीन।
जेलख़ाना—पु० कारागृह।
ज़ैली—वि० नम्र। अधीन।
ज़्यादा से ज़्यादा—त्रि० अधिकतम।
डिग्रीदार—पु०निर्णीत-धनी।

त द न

तअक़्क़ुब—पु० अनुसरण।
तअर्रुज़—पु० प्रतिरोध।
तकमील—स्त्री०सम्पादन,निर्वा.
तकमील शुदा—वि०सम्पादित।
तक़सीम-तलब—वि० विभाज्य। [करण।
तक़सीम-अक़साम—पु०वर्गी-
तख़वीफ़—पु०भय-प्रदर्शन।
तख़्त-नशीनी—स्त्री० राज्यारोहण।
तजदीद—पु० नवीनता।
तक्मिला—वि० परिशिष्ट, पूरक।
तनसीख़—स्त्री० खंडन।
तनासुब—पु० अनुपात।
तफ़तीश-पुलीस—स्त्री० अनुसंधान।
तबादलानामा—पु० स्थानान्तरण-पत्र। [विनिमय।
तबादला-माल—पु० वस्तु-
तब्दील-मज़हब—पु० धर्म-परिवर्तन।
तमलीक—पु० समर्पण।
तमलीक-कुनन्दा—पु० समर्पण-कर्त्ता।
तमलीक-नामा—पु० समर्पण-पत्र। [टीप।
तमस्सुक—पु० ऋणपत्र।
तमहीदी—वि० प्रारंभिक।
तयशुदा—वि० निर्णीत।
तरतीबी—वि० क्रमिक।
तरीक़-ए-अमल—पु० कार्य-प्रणाली।
तर्क फ़ेल—पु०चूक।
तर्ज़—पु० शैली। [शुल्क।
तलबाना—पु० आज्ञापत्र-
तलबीस-शख़्सियत—स्त्री० व्यक्तीकरण।
तवक़्क़ुफ़—पु० विलम्ब।
तसदीक़-शुदा—वि० प्रमाणित। [योग।
तसर्रुफ़-बेजा—पु० दुरुप-
तसव्वुर—पु० अनुमान।
तसहीह—स्त्री० सुधार।
तसहीह-नामा—पु० शुद्धि-पत्र। [संधान।
तहक़ीक़ात—स्त्री० अनु-
तहती-क़वायद—स्त्री० उपनियम।
ताकीदी—वि०आदेशात्मक।
ताज़ीरी—वि०दण्डात्मक।
तानाशाह—पु०एकाधिपति।
ताबीर—स्त्री० व्याख्या।
तामीर—स्त्री० भवन-निर्माण।
तावान—पु०दंड। [रिक
तिजारती—वि० व्यापा-
तिफ़्ल-कुशी—स्त्री० शिशु-वध। [लेना।
तिबनियत—स्त्री० गोद-
तैयारी—स्त्री० आयोजन।
तौज़ीह—स्त्री० व्याख्या।
तौहमत-आमेज़-वि० निन्दात्मक।
दस्तावेज़—पु० पत्र।
दस्तावेज़-किफ़ालत—पु०आड़-पत्र।
दयून—पु० ऋण। [प्रभाव।
दबाव-बेजा—पु०अनुचित-
दरबाब—क्रि०वि० विषय में।
दरमियानी—वि०मध्यवर्त्ती।
दरामद—पु०आयात।
दर्जाबन्दी—स्त्री० वर्गीकरण।
दस्तावेज़-अमानत—पु०न्यास-पत्र।
दस्तूरी—स्त्री० आढ़त।
दाख़िल-ख़ारिज—पु० नामान्तर
दादरसी—स्त्री० सहायता

दीवानी—वि० सम्पत्ति-सम्बन्धी।
दौरान—पु० काल, समय।
दौरान-तहक़ीक़ात—क्रि० वि० विचार काल में।
नक़्ज़-अमन—पु० शान्ति-भंग।
नक़्शा—पु० सारिणी। विवरण-पत्र।
नक़्शा-इमारत—पु० मानचित्र
नख़ुद—पु० चना।
नज़र-अंदाज़—पु० उपेक्षा करना।
नज़्म व नस्क—पु० प्रबन्ध और व्यवस्था।
नबीरा—स्त्री० पोती।
नमूद—पु० विकास।
नविश्त—पु० लिपि :
नसलन बाद-नसलन—क्रि० वि० पीढ़ीदर-पीढ़ी।
नस्ब-उल-ऐन—पु० उद्देश्य।
नस्ल-कशी—स्त्री० वंश-वृद्धि।
नाकाफ़ी—वि० अपर्याप्त।
नाकामयाब—वि० असफल।
ना-गुज़ीर—वि० अनिवार्य।
नाक़ाबिल-वक़्त—वि० तत्कालीन, प्रचलित।
ना-बालिग़—वि० अवयस्क।
नामज़द—वि० नियुक्त।
नामुकम्मिल—वि० अपूर्ण।
नालिश—स्त्री० वाद।
नावाक़फ़ियत—स्त्री० अनभिज्ञता।
निफ़ाज़—पु० प्रचलन।
निस्फ़-हिस्सा—पु० अर्द्ध-भाग।
नीलाम—पु० घोष-विक्रय।
नुक़रई—वि० रौप्य।
नौकरशाही—स्त्री० कर्मचारी-राज्य।

प फ

परदाख़्त—स्त्री० देख-भाल।
पिसर-मुतबन्ना—पु० दत्तक-पुत्र।
पुख़्तगी—स्त्री० परिपक्वता।
पेशनामा—पु० कार्य-क्रम।
पेशरौ—पु० पूर्वज।
पैमाना—पु० माप।
फ़क्क-उर-रेहन—पु० त्यक्त-बंधक।
फ़रीक़—पु० पक्षकार, पक्ष।
फ़रीक़-इब्तिदाई—पु० प्रारंभिक पक्ष।
फ़रीक़-मुख़ालिफ़—वि० विरोधी-पक्षकार।
फ़रीसिन्दा—वि० प्रेषक।
फ़रेबाना—वि० कपटमय।
फ़र्द-क़रारदाद-जुर्म—पु० आरोप-पत्र।
फ़ासिद—वि० दूषित।
फ़ितूरे-अक़्ल—वि० अमित-मत।
फ़िसाद-अंगेज़ी—स्त्री० राज-द्रोह। [कार्य।
फ़े'ल-नाजायज़—पु० अवैध-
फ़ैसला-अदालत—पु० न्यायालय का निर्णय।
फ़ोहश—वि० अश्लील।
फ़ौजी अदालत—स्त्री० सैनिक-न्यायालय।

ब

बतदरीज—क्रि० वि० शनैः शनैः। क्रमशः।
बदइंतज़ामी—स्त्री० अव्यवस्था।
बदचलनी—स्त्री० दुराचरण।
बदनज़मी—स्त्री० कुप्रबन्ध।
बनाम—वि० विरुद्ध।
बनावटी—वि० कृत्रिम।
बन्द-सवालात—पु० लिखित-प्रश्न। [परिशोध।
बन्दोबस्त—पु० राजस्व-
बमंज़िला—वि० समान, सदृश। [वक्तव्य।
बयान-तहरीरी—पु० लिखित-
बयान-हलफ़ी—पु० शपथ-पत्र। [पातिक।
बहिसाब-रसदी—वि० आनु-
बा-असर—वि० प्रभावशाली।
बा-क़ायदा—वि० नियम-पूर्वक।
बाकिरा—स्त्री० कुमारी।
बाक़ी-मांदा—वि० शेष।
बानी—पु० संस्थापक।
बार-मुक़द्दम—पु० पूर्वभार।
बा-लिहाज़-ओहदा—क्रि० वि० पद के अनुसार।
बावजूद—अव्य० यद्यपि।
बाहमी—वि० पारस्परिक।
बाहरकत—वि० गतिशील।
बिनायदावा—पु० वाद-हेतु।
बिरादरी से ख़ारिज—वि० जातिच्युत। [भाई।
बिरादर-हक़ीक़ी—पु० सगा-
बिला-इजमाल—वि० संयुक्त।
बिला-इख़्तियार—वि० अनधिकृत।

म

मक़रूज़—वि० ऋण-ग्रस्त।
मजमुआ-ताजीरात-हिन्द—पु० भारतीय-दंड-विधान-संग्रह।
मज़मून-तौजीही—पु०उद्धरण।
मजर्रत—वि० हानिकर।
मज़हका—पु० उपहास।
मज़हबी—वि० धार्मिक।
मजाज़—वि० अधिकृत।
मज़ारा—पु० किसान।
मतरूका—स्त्री०मृत-सम्पत्ति।
मदयूनीडिग्री—वि० निर्णीत-ऋणी।
मदाख़लत—स्त्री०हस्तक्षेप।
मदाख़लत-बेजा—पु० अतिक्रम।
मदार—पु० आधार।
मफ़हूम—पु० भाव।
ममदूह—वि०उक्त, उल्लिखित।
ममनूअ—वि०वर्जित।
ममलूका—वि० स्वत्व प्राप्त।
मशक्क़त-ताजीरी—स्त्री० सपरिश्रम-कारादंड।
मशरूत—वि० नियमबद्ध।
मसकूना—वि० रहायशी, निवासी।
मसौदा—पु० प्रारूप, कच्ची-लिपि, आलेख।
महवर—पु०धुरी। [कर।
महसूल-आमदनी—पु०आय-
महारत—स्त्री० अभ्यास।
मा-क़ब्ल—वि० पूर्ववर्त्ती।
मातूफ़ा—वि० संलग्न।
माद्दी—वि०प्राकृतिक।
माद्दी-शहादत—स्त्री० गौण-साक्षी।
मानीदार—वि० अर्थपूर्ण।
माफ़ीदार—पु० अकरद।
मावाद—वि० परवर्ती।
मामला—पु०व्यवहार।
मालिक-ग़ालिब—पु० प्रमुख-स्वामी। [संबंधी।
मालिकाना—वि० स्वामित्व-
माहिर—वि० चतुर।
मिल्क—स्त्री०स्वत्व। भूसम्पत्ति
मिसिल—स्त्री० पत्र-संग्रह
मुअय्यन—वि० निश्चित।
मुआहदा—पु०प्रतिज्ञा।
मुआहदा-बै—पु० विक्रय-निश्चय। [प्रतिज्ञा।
मुआहदा-रेहन—पु० आड़-
मुक़ामी—वि० स्थानीय।
मुक़ामे-मक़सूद—पु० निर्दिष्ट-स्थान।
मुक़िर—वि० प्रणकर्त्ता।
मुक़िरलहू—वि० वचन-ग्रहीता।
मुख़्तारनामा-आम—पु० सर्वाधिकार-पत्र।
मुख़्तारनामा-ख़ास—पु० मुख्याधिकार-पत्र।
मुख़्तार-मुतलक़—पु० पूर्णाधिकारी।
मुजरिमियत—स्त्री०अपराध-सिद्धि।
मुतज़म्मिन—वि०सम्मिलित।
मुजस्सिम-हाज़िरी—स्त्री० सशरीर-उपस्थिति।
मुजामअत—स्त्री० मैथुन।
मुज़ाहमत—स्त्री० बाधा।
मुतअद्दी—स्त्री० स्पर्श-जन्य
मुतमत्ता—वि० लाभ-उठानेवाला। [अनुवादक।
मुतरज्जिम—पु० द्विभाषिया।
मुतल्लक़ीन—वि० संबंधित।
मुतवफ़्फ़ी—वि० मृत।
मुतवल्ली—पु० प्रबंधक संरक्षक।
मुतहर्रिक—पु० चालक।
मुतालबा—पु० ऋण।
मुतालबा-मुक़द्दम—पु० प्रथम ग्राह्य-ऋण। [धन।
मुतालबा रेहन—पु० बन्धक-
मुतास्सिब—वि० पक्षपाती।
मुत्तहिदा—वि०संयुक्त।
मुनअक़िद—वि०आयोजित।
मुन-फ़रदन—क्रि० वि० पृथक् पृथक्।
मुनाफ़ा रसदी—पु०लाभांश।
मुबलिग़—पु० धन संख्या।
मुबाहसा—पु०वाद-प्रतिवाद।
मुरतहिन—पु०बन्धककर्त्ता।
मुरव्विज—वि० प्रचलित।
मुराफ़िक़—वि० आश्रित।
मुलहक़—वि० मिला हुआ, सम्बद्ध। [राज्य।
मुल्क-मातहत—पु० अधीन-
मुल्तबिस—वि० नक़ली, अनुकृत।

मुवक्किल—पु० व्यवहारी ।
मुवाख़ज़ा—पु० ऋण-भार ।
मुशाबहत—स्त्री० अनुरूपता।
मुशर्रह—वि० ब्यौरेवार ।
मुश्तहर—वि० प्रकाशित ।
मुश्तरकन्—क्रि० वि० मिल-कर ।
मुश्तरी—पु०ग्राहक, क्रेता ।
मुसद्दका—वि० प्रमाणित ।
मुस्तग़रक़-वि० ऋण-ग्रसित।
मुस्तग़ीस—पु० न्याय-प्रार्थी।
मुस्तफ़ीद—वि० उपयोग-गृहीता ।
मुसन्ना—पु०प्रतिरूप ।
मुहमिल—वि० अस्पष्ट ।
मुहलिक—वि० घातक ।
मूरिस—पु० पूर्वज ।
मैंबर-खानदान मुनक़समा—पु० विभक्त-कुल-सदस्य।
मैंबर-खानदान-मुश्तर्का-पु० अविभक्त-कुल सदस्य।
मौसूमा—वि० नामक ।
मौसूल—वि० प्राप्त ।
मौहूबा—वि०प्रदत्त ।

र ल व

रंजदिही—स्त्री० उद्वेजन, खिजाना ।
रज़ा—स्त्री० सहमति ।
रज़ामंदी—स्त्री० स्वीकृति।
रसूमअदालत—स्त्री० न्याय-शुल्क ।
रहज़न—पु० बटमार।
रहज़नी—स्त्री० बटमारी ।
रहनुमाई—स्त्री०पथ-प्रदर्शन ।
राज़-पोशीदा—पु० गुप्तभेद।
राय—स्त्री० मत ।
रायजसिक्का—पु०चालू मुद्रा
रायदिहन्दा—पु० मतदाता।
राह—पु०मार्ग । [कार ।
रिफ़ाह-आम—पु० परोप-
रिश्ता मुनक़ता करना-वा० सम्बन्ध-विच्छेद करना ।
रूबकार—पु० प्रस्तुति-पत्र।
रूहानी—वि० आध्यात्मिक ।
रेहन-देखली—पु०भोग बन्धक।
रेहननामा—पु० बन्धक-पत्र ।
रेहनबिलक़ब्ज़—पु० भोग-बन्धक । [बिक्री-सदृश ।
रेहन-बै-उल-वफ़ा—पु०बंधक-
रेहन-सादा—पु०दृष्टि-बंधक।
रोज़नामचा—पु० दैनंदिनी।
वकालत—स्त्री० अभिभाषण।
वकालतनामा—पु० अभि-भाषक-पत्र ।
वकील—पु० अभिभाषक।
वक़्फ़नामा—पु० पुण्यपत्र ।
वती-हैवान—पु० पशु-मैथुन।
वली—पु० संरक्षक।
वलीया—वि०स्त्री०संरक्षिका।
वसीक़ा—पु० अधिकार-पत्र।
वसीयत—स्त्री०उत्तराधिकार।
वसीयतनामा—पु०निष्ठापत्र, मृत्युलेख।
वसीला—पु० साधन।
वाक़अ—वि० स्थित ।
वाक़ा-नागहानी—पु० आक-स्मिक-घटना ।
वा-गुज़ाश्त—वि० मुक्त।
वाजिबुल-अदा—वि० देय।
वाजिबुल-वसूल—वि० प्राप्य । [उत्तराधिकारी ।
वारिस-माक़बल—पु० पूर्व-
वारिस-शरीक—पु० सह-उत्तराधिकारी ।
वारिस-अदी—वि० भावी-उत्तराधिकारी ।
वारिस-ज़ाहिर—पु० प्रत्यक्ष-उत्तराधिकारी ।
वारिस-माबाद—पु० पश्चात-उत्तराधिकारी ।
वाहिब—वि० दाता।

श स ह

शराकत-नामा—पु० साझा-पत्र ।
शदीद—वि० गंभीर ।
शबीह—स्त्री० छवि ।
शरायत-अबरा—पु० निष्कृ-ति । हानि-रक्षा
शरायत-कंपनी—स्त्री० संघ-नियम। [बंध ।
शर्त्त—स्त्री० निबन्ध, प्रति-
शर्त्त-खारिजी—स्त्री० बाह्य-नियम ।
शर्त्त-माक़बल } स्त्री०
शर्त्त-मुक़द्दम } पूर्वप्रतिज्ञा।
शर्त्त-माबाद | स्त्री०
शर्त्त-मवख्ख़र | उत्तरप्रतिज्ञा
शर्त्त-लाज़िमी—स्त्री० अनि-वार्य-नियम।
शहरी—पु० नागरिक ।
शहादत-नक़ली—स्त्री० गौण-साक्ष्य । [खित-साक्षी ।
शहादत-तहरीरी—स्त्री० लि-
शाया-कुनिन्दा—पु० प्रका-शक । [घोषणा ।
शाही-ऐलान—पु० राज-
शिकमी—वि० अधीन ।
संगीन—वि० गंभीर ।

ाए-मौत—पु० मृत्यु-
ड। [स्थान।
ए-मुक़ाम—पु० प्रधान-
द-यापता—वि० प्रमाणित
ात-अक़्ल—स्त्री० स्थिर-बुद्धि
बूत-क़तई—पु० अकाट्यप्रमाण
मन—पु० आह्वान-पत्र।
ारकार—पु० शासन-तंत्र।
ारकारी-वकील—पु० राज-
पक्ष अभिभाषक।
सरकारी-साल—पु० कर्म-
संवत्सर। [देश।
सरकारी-हुक्म—पु० राज्या-
समावी—वि० आकाशी।
सरीहन्—क्रि० वि० प्रत्यक्ष-
रूप स
सरीही—वि० प्रत्यक्ष।
सलतनत-खुद-मज़ाज—स्त्री०
स्वायत्त-शासन। [तंत्र।
सलतनत-जम्हूरी—स्त्री० प्रजा-
सलामती—स्त्री० सुरक्षा।
सवाल-फ़रीक़-अव्वल—पु०
मुख्य-परीक्षण।
सवालात-जिरह—पु० कूट-
परीक्षण। [स्थ-बुद्धि।
सही-उल-अक़्ल—वि० स्व-

सही-उल-नसब—वि० औरस।
साक़ित—वि० नष्ट।
साक़ितुल-मिल्कियत—वि०
भूमि-स्वत्व-त्यक्त।
साख़्ता व परदाख़्ता—वि०
किया हुआ। [क वृत्ति।
सालाना-वज़ीफ़ा—पु० वार्षि-
सिने-बुलूग़—पु० वयस्क-काल।
सियासत—स्त्री० राजनीति।
सीग़ा—पु० वर्ग।
सुबुक-दोष—वि० भार-मुक्त।
सुल्स—पु० भाग।
सेहते-नफ़्स—वि० स्वस्थ-
चित्त। [हित।
हक़्महदूद—पु० सीमित-
हक़्क़-जनाशोई—पु० वैवा-
हिक-स्वत्व। [स्वत्व।
हक़्क़-ख़ारिजी—पु० बाह्य-
हक़्क़-दाख़िली—पु० भीतरी-
स्वत्व। [प्रमुख-स्थल।
हक़्क़ियत-ग़ालिब—स्त्री०
हतक-आमेज़—वि० निंद्य।
हदीस—स्त्री० परम्परा।
हदूद-इख़्तियार—पु० अधि-
कार क्षेत्र।
हब्स—स्त्री० अवरोध।

हब्स-दवाम—पु० आजन्म-
कारावास।
हम-बिस्तरी—स्त्री० संभोग।
हर्जा—पु० हानि।
हलक़ा-इंतख़ाब—पु० निर्वा-
चन-क्षेत्र। [भंग।
हलफ़-दरोग़ी—पु० शपथ-
हलफ़नामा—पु० शपथ-
पत्र। [लिखित।
हस्बज़ैल—वि० निम्न-
हिदायत—स्त्री० निर्देश।
हिन्दसा—पु० अंक।
हिफ़ाज़त-ख़ुद—स्त्री० आत्म-
रक्षा। [रक्षा।
हिफ़्ज़-अमन—पु० शान्ति-
हिसाब-फ़हमी—पु० गणन-
वाद। [सानुपात।
हिस्सा-रसदी—पु० भागदान-
हीन-हयात—क्रि० वि०
आजन्म।
हुकूमत-बिलाक़ैद—स्त्री० निरं
कुश-शासन। [धाज्ञा।
हुक्म-इम्तनाई—पु० निषे-
हुक्मनामा—पु० आज्ञापत्र।
हौसला-अफ़ज़ाई—पु० प्रोत्सा-
हन।

—

अँग्रेज़ी शब्द हिन्दी में

Absent—अनुपस्थित ।
Accident—आकस्मिक-दुर्घटना ।
Account (एकाउंट)—लेखा, खाता ।
Accountant(एकाउंटेंट)—मुनीम, गणक ।
Acid—अम्ल ।
Acknowledgement (एकनालिजमेंट)—प्राप्ति-स्वीकार ।
Acquisition—प्राप्ति ।
Act—विधान, कार्य ।
Action—कार्यवाही ।
Active—सक्रिय ।
Actual—वास्तविक ।
Additional—अतिरिक्त ।
Administration—शासन-प्रबन्ध ।
Admission—स्वीकरण ।
Adult—वयस्क ।
Advance—अग्रिम ।
Advantage—सुविधा ।
Advertisement—विज्ञापन ।
Advice—परामर्श ।
Advocate(एडवोकेट)—अभिभाषक ।

Affidavit—शपथ-पत्र ।
Age—आयु ।
Agent (एजेंट)—आढ़ती, प्रतिनिधि ।
Agenda(एजेंडा)—कार्य-क्रम ।
Agreement—प्रतिज्ञा-पत्र ।
Agriculture—कृषि ।
Allowance(अलांउस)—उपवेतन, भत्ता ।
Ambassador (एम्बेसेडर) राजदूत ।
Amendment—संशोधन
Amount(एमाउंट)—परिमाण ।
Analysis—विश्लेषण ।
Ancestor—पूर्वज ।
Annual—वार्षिक ।
Appeal(अपील)—पुनर्विचार-प्रार्थना ।
Appellant(अपीलांट)—पुनर्विचार-प्रार्थी ।
Applicant—प्रार्थी ।
Application—आवेदन-पत्र ।
Appointment—नियुक्ति ।
Approver—राज-साक्षी ।

Area(एरिया)—क्षेत्र ।
Arrest—निरोध ।
Artificial—कृत्रिम ।
Assembly—मंडल ।
Assessor(असेसर)—परामर्शदाता ।
Association(एसोसियेशन)—संघ ।
Auction—घोष विक्रय ।
Auditor—(आडीटर) आय-व्यय-परीक्षक ।
Authorized—अधिकृत ।
Average—मध्यमान ।
Bail—प्रतिभूति ।
Balance—शेष ।
Banker(बैंकर)—महाजन ।
Barcouncil—अभिभाषक-सभा ।
Bench—न्यायाधीश-वर्ग ।
Bill—हुंडी-आलेख ।
Bond—प्रतिज्ञा पत्र ।
Bonus (बोनस)—लाभांश ।
Boundary—सीमा ।
Branch—शाखा ।
Broker (ब्रोकर)—दलाल ।

नोट—अँग्रेज़ी के प्रचलित अधिकांश शब्द इसी कोष के अंदर हैं ।

Budget (बजट)—अनुमान-पत्र।
Business—कारबार।
Cabinet—मंत्रि-मंडल।
Canal—नहर, कुल्या।
Candidate—पदाभिलाषी।
Capital—पूँजी।
Care—सावधानी।
Case—अभियोग।
Cash—रोकड़।
Cashier (कैशियर)—रोकड़िया।
Catalogue—सूचीपत्र।
Census—जन गणना।
Certificate—प्रमाणपत्र
Chairman(चेयरमैन)—अध्यक्ष।
Challan—(चालान) प्रेषण। [योग-पत्र।
Charge-sheet—अभि-
Chief court—(चीफ़कोर्ट) प्रधान न्यायालय।
Circular (सर्कुलर)—परिपत्र।
Citizen—नागरिक।
Civil-court—नागरिक-न्यायालय।
Civil war—गृहयुद्ध।
Class—वर्ग।
Classifieation—वर्गीकरण।
Client—व्यवहारी, पक्ष्य।
Club—गोष्ठी।
Coin—मुद्रा।
Colony—उपनिवेश।
Column—(कालम) स्तंभ।
Commission(कमीशन)-कटौती।
Committee—समिति।
Company—व्यापार-समिति। [समझौता।
Compromise—
Compulsory—अनिवार्य।
Conduct—आचरण।
Confidential—गोपनीय। [हीता।
Consignee—प्रतिग्र-
Consignment—प्रेषित-वस्तु।
Constitution-विधान।
Contex—प्रसंग।
Contract-अनुबंध, ठेका
Control—नियंत्रण।
Correspondence—पत्र व्यवहार।
Cost—मूल्य, व्यय।
Court (कोर्ट)—न्यायालय। [न्याय-शुल्क।
Court fee(कोर्टफ़ी)—
Crime—अपराध।
Criminal court—दंड-न्यायालय।
Criminal law—दंड-विधान।
Current-प्रचलित।
Custody—संरक्षण।
Dairy—दुग्धशाला।
Dangerous—संकटमय।
Daughter—पुत्री।
Day-book-रोज़नामचा।
Decision—निर्णय।
Decree—निर्णय।
Delay—विलम्ब।
Delivery—प्रसव।
Demand—माँग। [शुल्क।
Demurrage—विलम्ब-
Department—विभाग।
Deposit—धरोहर।
Deputation(डेपुटेशन)-शिष्टमंडल। [बनावट।
Design (डिज़ाइन)—
Detail—विवरण।
Development—संवर्द्धन। [दैनंदिनी।
Diary (डायरी)—
Dictator—(डिक्टेटर) एकाधिपति।
Difference—अंतर।
Director (डाइरेक्टर)—संचालक।
Discount—बट्टा।
Discus—तर्क। [करना।
Dismiss—निराकरण-
Distribution—वितरण।
District—मंडल।
Document—लेख-पत्र।
Donation—दान।
Draft—(ड्राफ़्ट) आलेख।
Due (ड्यू)—प्राप्य, लेना।
Duty—(ड्यूटी) धर्म। कर्त्तव्य।

Edition(एडीशन)—संस्करण।
Editor(एडीटर)—संपादक।
[शिक्षा।
Education-(एजुकेशन)
Election(इलेक्शन)—निर्वाचन।
Endorsement—समाणी-करण।
Enquiry (इन्क्वायरी)—जाँच, खोज।
Enter—प्रवेश।
Estate-(इस्टेट) सम्पत्ति।
Estimate—आँकना।
Exchange—विनिमय।
Expert (एक्सपर्ट)—विशेषज्ञ।
Export—निर्यात।
Face-value—प्रत्यक्ष-मूल्य।
Fact(फैक्ट)—तथ्य।
False—मिथ्या।
[संघ।
Federation(फेडरेशन)—
Fee(फी)—शुल्क।
File—(फाइल)पत्रावली।
Final—अंतिम।
Fine(फाइन)—अर्थ-दंड।
Firm (फ़र्म)—कोठी।
Fit—उचित।
Flag(फ्लैग)—ध्वजा, पताका।
[विदेशी।
Foreign—(फ़ारेन)
Form(फ़ार्म)—रूप।
Fullbench—पूर्ण न्यायालय।

Fund (फ़ंड)—कोषनिधि।
Future—भविष्य।
Gazette(गज़ट)—विज्ञप्ति-पत्र।
General(जनरल)—सामान्य। व्यापक।
Generalmeeting—सार्वजनिक-सभा।
Gift—भेंट।
Godown—गोदाम।
Good—(गुड)अच्छा।
Goods (गुडस)—सामग्री।
Goodwill(गुडविल)—पगडी, साख।
Government—(गवर्नमेंट)शासन-सत्ता।
Government-revenue—राजस्व।
Grade—(ग्रेड) श्रेणी।
Grant—प्रदान।
Ground—भूमि।आधार।
Guarantee (गारंटी)—संरक्षण।
Guard(गार्ड)—रक्षक।
Guardian(गार्जियन)—संरक्षक।
[मार्गदर्शक।
Guide (गाइड)—
Gun (गन)—बन्दूक़।
Head(हेड)—प्रधान।
Heading(हेडिंग)—शीर्षक।
Health-officer–स्वास्थ्य-विभागाधिकारी।
High court (हाई-कोर्ट)—उच्च-न्यायालय।

Honourable (आनेरबिल)—सम्मान्नीय।
[अवैतनिक।
Honorary(आनेररी)—
Husband—पति।
Idea—विचार।
Illegal—अवैध।
Imperial (इम्पीरियल)—राजकीय।
Imperialism—साम्राज्यवाद।
Imports—आयात पदार्थ।
Income—आय।
Income-tax (इनकम् टैक्स)—आयकर।
Indemnity-क्षतिपूर्त्ति।
Independent (इंडिपेंडेंट)—स्वतंत्र।
Index—सूची।
Industry—उद्योग-धंधा।
In order—व्यवस्थित।
Insalvent (इनसालवेंट)—दिवालिया।
Inspection (इंस्पेक्शन)—निरीक्षण।
Instalment (इंस्टालमेंट)—अंशांश।
Institution (इंस्टीट्यूशन)—संस्था।
Insult (इनसल्ट)—अपमान।
[बीमा।
Insurance—(इंश्योरेंस(
Inter cast—अन्तर्जातीय।
Interest—वृद्धि। हित,

Intermarriage—अन्तर्जातीय-विवाह ।
Interpreter—दुभाषिया ।
Interval(इंटरवल)—मध्यान्तर ।
Interview(इंटरव्यू)—समागम ।
Intimation (इंटीमेशन)—सूचना ।
Introduction–परिचय।
Invalid—अवैध ।
Invention–आविष्कार ।
Invitation(इंवीटेशन)—निमन्त्रण ।
Inwriting—लिखित ।
Invoice(इनवायस)—बीजक ।
Item—विषय । धारा ।
Jail (जेल)—कारागृह ।
Joint family—संयुक्त-परिवार ।
Judge-(जज)न्यायाधीश।
Judgment(जजमेंट)—निर्णय ।
Judicial—न्याय-संबधी।
Junior(जूनियर)—लघु ।
Jury (जूरी)—न्याय-सभा
Justice(जस्टिस)—न्याय ।
King (किंग)-राजा ।
Label (लेबिल)—लेपपत्र ।
Labour—श्रम ।
Landlord—भूस्वामी ।
Language—भाषा ।
Law(ला)—राजनियम।
Lawful—नियम-संगत ।
Leader(लीडर)—नेता ।
Leading article—अग्रलेख ।
Lease(लीस)—पट्टा ।
Ledger(लेजर)—खाता।।
Legal(लीगल)—वैध ।
Legislative—विधान-निर्मात्री ।
Liberal(लिबरल)—उदार ।
Licence(लाइसेंस)—अनुमति-पत्र ।
Limited company (लिमिटेड-कंपनी)—परिमित-संघ ।
Lingua franca—राष्ट्रभाषा ।
Local(लोकल)—स्थानीय
Loyal—राजभक्त ।
Magazine—शस्त्रागार।
Magistrate(मैजिस्ट्रेट)—न्यायधिकारी ।
Majority—बहुमत ।
Manager(मैनेजर)—प्रबन्धक ।
Management—प्रबन्ध ।
Manuscript—पांडुलिपि ।
Marriage(मैरिज)—विवाह ।
Martial law (मार्शल-ला)—सैनिक-विधान ।
Medium—माध्यम ।
Meeting—सभा ।
Member(मैंबर)—सदस्य।
Memo(मीमो)—स्मृति-पत्र ।
Memorandum—स्मरण-लेख ।
Memorial(मेमोरियल)—स्मारक ।
Military—सेना ।
Ministry(मिनिस्ट्री)—मंत्रिमंडल ।
Money order(मनीआर्डर) —धनादेश ।
Monopoly–एकाधिकार।
Movement–आन्दोलन।
Municipality(म्युनिसिपैलिटी)–नगर-परिषद् ।
Museum (म्युज़ियम)—संग्रहालय ।
Mutiny—विद्रोह ।
Nation (नेशन)—राष्ट्र ।
National(नेशनल)—राष्ट्रीय ।
Newspaper—समाचार-पत्र ।
Normal—साधारण ।
Note (नोट)—टिप्पणी ।
Notice (नोटिस)—सूचना ।
Notification–विज्ञप्ति।
Nurse (नर्स)—धात्री ।
Oblige —आभारी ।
Octroi—चुंगी ।
Office (आफ़िस)—कार्यालय ।
Officer (आफ़िसर)—अधिकारी ।
Oral—मौखिक ।
Order (आर्डर)–आदेश ।